

DAMAGE BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176258

UNIVERSAL
LIBRARY

श्रीधरभाषाकोष



संग्रहकर्त्ता:—
परिणत श्रीधर त्रिपाठी ।



लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९१६ ई०

चौथी बार }
५०००

{ जिल्द सहित ३)
{ बिना जिल्द २॥)

श्रीधरभाषाकोष । ७

—:०:—

जिसमें

संस्कृत और भाषाके शब्द, शब्दार्थ, अनेकार्थ,
धातु, धात्वर्थ, शब्दलक्षण और उनके प्रमाणिक
उदाहरण व्याकरणसंयुक्त पाठकजनों की
विद्योन्नति और सहायार्थ लिखे गये हैं

सकलगुणाकर वीरेश नरेश विज्ञातिविज्ञ श्रीमान् टामस सी ल्यूस
एम्, ए, डैरेक्टर शिक्षाविभाग मुमालिक मुत्तहदा आगरा व
अवध तथा श्रीयुत मार्लबरो कास साहब बहादुर एम्, ए,
इन्स्पेक्टर अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष के अधिकार में

सद्गुणसम्पन्न

पण्डित बदरीनारायण मिश्र हेडमास्टर सेण्ट्रल
नार्मलस्कूल लखनऊ की प्रेरणा से
कान्यकुब्ज पण्डित श्रीधरत्रिपाठि उक्त से-
ण्ट्रल नार्मलस्कूल के संस्कृत और भाषा
के अध्यापक ने रचना किया

—:॥:—

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ

सन् १९१६ ई०

सर्वाधिकार संरक्षित हैं ।

चौथी बार }
५००० }

{ जिल्द सहित ३)
{ बिना जिल्द २॥}

ॐ श्रीसच्चिदानन्दपूर्तये नमः ।

श्लोकः ।

परमानुग्रहाकारं गणाध्यक्षं सुखप्रदम् ।

बुद्धिराशिं गुणागारं प्रणमामि गजाननम् ॥ १ ॥

भूमिका

प्रकट हो कि वर्तमानकाल में जो शिक्षाप्रकरण अर्थात् सरिस्ता तालीम में जो पुस्तकें पठन पाठन में आती हैं वे प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकों से संग्रह कीजाती हैं बहुधा अंगरेजी भाषाकी पुस्तकों से भी अनुवाद कीजाती हैं उन में ऐसे अपूर्व शब्द आजाते हैं कि जिनको सर्व साधारण लोग और पाठकजन नहीं समझसक्ते अद्यावधि भाषा में कोई उत्तम कोष ऐसा निर्मित किया गया कि जिसकी सहायता से शब्दों की धातु धात्वर्थ लक्षण अर्थों का प्रमाण और वाच्यादिशब्द सम्बन्धी बातोंका बोध भली भांति ज्ञात होता यद्यपि एक दो कोष भाषा के बनाये भी गये हैं तथापि उनमें केवल शब्द और शब्दार्थ लिखा गया है पर उपस्थित काल में जो पुस्तकें शिक्षाविभाग में प्रचलित हैं उनमें बहुत से शब्द ऐसे प्रयोग किये गये हैं कि जो इन कोषों में नहीं मिलते हैं ऐसे अभिधान अर्थात् कोष के अवलोकन से पाठकजनों का चित्तोत्साह मन्द होजाता है इस दशा को देख खेद होता है अतएव एक भाषा का अभिधान लिखना समयानुसार उचित जान पड़ा मैं चौतीस वर्ष से अवधशिक्षाविभाग का सेवक अर्थात् मुलाजिम हूं इतने समय की सेवकाई में संस्कृत और भाषा कोष और नाना समाचारपत्रों में जो २ विलक्षण और अपूर्वशब्द दृष्टिगोचर हुए उनको संग्रह करता रहा इनसे अतिरिक्त सर्वगुण-गणालंकृत महाशय बाबू मधुसूदन मुकरजी हेडमास्टर हाईस्कूल सुलताँपुर कि जिनकी मातृहती में मैं चौदहवर्ष आनन्दपूर्वक रहा पूर्वोक्त महोदय से वंग-देशीय कोषों का उत्तमोत्तम आशय ग्रहण किया अब मातृभाषा के संशोधनार्थ और पाठकजनों के उत्साहवर्द्धन हेतु इस संग्रहको मुद्रित कराया पुनः इस स्थल पर इस बात को भी सूचित करना योग्य है कि भाषा का प्रचार कबसे

और किस प्रकार से हुआ इतिहासों से विदित हुआ है कि संवत् ७७० में अवन्तिकापुरी अर्थात् उज्जैननगर में राजा भोज के पिता राजा मान काव्य विद्या में अतिनिपुण थे उन्होंने पुष्पनामक बन्दीजन को संस्कृत काव्य और अलङ्कारादि पढ़ाये उसने उनको भाषा दोहों में अनुवाद किया उसी समय से भाषा काव्य की नींव पड़ी तब से दिनप्रति भाषा की उन्नति होती गई सूरदास, तुलसीदास, केशवदास, बिहारीलाल आदि कवियों ने भाषा के उत्तमोत्तम ग्रंथ निर्माण किये उनके शब्दों का ज्ञानदाता केवल कोषही होसक्ता है यद्यपि बहुत प्रकार की विद्या हैं और उनके विषय भिन्न २ हैं यथा व्याकरणविद्या से वर्णविचार, शब्दविचार, वाक्यरचना, छन्दरचना, उनकी विवेचना, योजना और शुद्धाशुद्ध का ज्ञान होता है परन्तु वाक्य और छन्द का भावार्थ और तर्क वितर्क का ज्ञान न्यायशास्त्र से होता है और साहित्य अर्थात् काव्य विद्या शब्दों की सजावट लालित्य और विचित्रता के काम में आती है परन्तु सर्वोपरि कार्य अभिधान से निकलता है अभिधान में एक २ शब्द के नानार्थ दिखलाये जाते हैं एकही शब्द है पर स्थानान्तर से भिन्न २ अर्थ दिखलाता है इन बातों के विचार का भार कोषसंग्रहक पर रहता है क्योंकि वह शब्दों को श्रेष्ठतम रीतियों से चुन २ कर एकत्रित करता है वह शब्दों को इस ढब से क्रमबद्ध करता है कि जिस शब्द या उसके अर्थ को जो लोग देखना चाहें तुरन्त निकल आवे वह शब्दों की योनि अर्थात् धातु, धात्वर्थ, प्रत्ययादि की रचना का विषय ठीक २ लक्षण या पहचान और उपसर्गादि के संयोग से जो अर्थों में भेद होजाता है प्रकट करदेता है इसका वर्णन आगे विस्तार सहित होगा अब कोष के उपयोगी संकेतों का उल्लेख किया जाता है ॥

इस कोष में निम्नलिखित संकेत ठहराये गये हैं ॥

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
सं०	संस्कृत	अं०	अंगरेजी
प्रा०	प्राकृत वा हिन्दी	()	शब्दोत्पत्ति वा माहा
अ०	अरबी	पु०	पुंल्लिङ्ग
फा०	फारसी	स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
ब० व०	बहुवचन	गु० उपस०	गुणवाचक उपसर्ग
गु०	गुणवाचक	समुच्च०	समुच्चयिक अव्यय
सर्वना०	सर्वनाम	वि० बो०	विस्मयादिबोधक
सं० सर्वना०	सम्बन्धी सर्वनाम	बोल०	बोलचाल वा मुहावरा
नित्य सं०	नित्य सम्बन्धवान् वा कृतसम्बन्धी	अव्य०	अव्यय
		क०	कर्तृवाचक
क्रि० अ०	क्रियाअकर्मक	र्म०	कर्मवाचक
क्रि० स०	क्रियासकर्मक	भा०	भाववाचक
क्रि० वि०	क्रियाविशेषण	ण०	करणवाचक
उपस०	उपसर्ग	धि०	अधिकरणवाचक

उक्त संकेतों का स्फुट विचार ॥

पु० जिस नाम से पुरुषत्व का बोध हो उसे पुँल्लिङ्ग कहते हैं जैसे पुरुष, लड़का, घोड़ा ॥

स्त्री० जिस नाम से स्त्रीत्व का बोध हो उसे स्त्रीलिङ्ग कहते हैं जैसे स्त्री, लड़की, घोड़ी ॥

भाषा में नपुंसक शब्द पुँल्लिङ्ग ही मानेगये हैं जैसे सागर, जल, रत्न, कुल इत्यादि पर ये संस्कृत में नपुंसक लिङ्ग हैं ॥

वचन—संख्या को कहते हैं वे दो हैं एकवचन और बहुवचन जिस रूप से एक का बोध हो उसे एकवचन जैसे लड़का, घोड़ा इत्यादि ॥

१ सत्त्वरजस्तमोगुणानामुपचयोपचयसमत्वामिह क्रमेण पुंस्त्वं स्त्रीत्वं नपुंसकत्वं च विवक्षितं तेना-
चेतने लब्धान्वनिकादी न दोष इति ॥

जिस नाम से एक से अधिक का बोध हो उसे बहुवचन जानो जैसे लड़के, घोड़े इत्यादि ॥

गुणवाचक—गुणवाचकसंज्ञा वह है जो पदार्थ के गुण वा धर्म को बतावे जैसे काला घोड़ा, धनी पुरुष, प्रतापी मनुष्य इस स्थलपर काला, धनी, प्रतापी गुणवाचक हैं भाषा में गुणवाचक शब्द बहुधा संज्ञा और कर्तादि के विशेषण होते हैं जैसे खट्टा नींबू, ऊंची भीत, प्रतापी मनुष्य, सुखी जन, खजानची मोहनलाल इत्यादि ॥

सर्वनाम—संज्ञा उसे कहते हैं जो सब नामों के बदले में आवे सर्वनाम का प्रयोजन वहाँ पड़ता है जहाँ नामको एकवार कहकर फिर कहना हो तब उसकी जगह सर्वनाम आता है इससे वाक्य बुरा नहीं लगता और न वह संज्ञा बारबार कहने पड़ती है जैसे देवदत्त आया और उसने पोथी पढ़ी यहाँ (उसने) सर्वनाम है, सर्वनामों में लिङ्ग के कारण कुछ विकार नहीं होता जिन संज्ञाओं के स्थान में वे आते हैं उनके अनुसार सर्वनामों का लिङ्ग समझा जाता है जैसे देवदत्त ने कहा मैं पढ़ता हूँ यहाँ देवदत्त पुँल्लिङ्ग है उसके बदले में मैं आया है तो मैं पुँल्लिङ्ग हुआ, लड़की कहती है कि मैं जाती हूँ यहाँ लड़की स्त्रीलिङ्ग है अतएव मैं भी स्त्रीलिङ्ग हुआ ॥

सर्वनामों के कई भेद हैं जैसे पुरुषवाची जमीर शरत्सी, निश्चयवाचक वा दर्शक जमीर इशारह, अनिश्चयवाचक जमीर मुबहम, सम्बन्धवाचक इस्म मौसूल, प्रश्नवाचक इस्तफहाम, आदरसूचक इज्जत बतानेवाले । मैं तू वह पुरुषवाचक सर्वनाम हैं यह, वह निश्चयवाचक कोई, कुछ अनिश्चयवाचक जो, जौन, सो, तौन सम्बन्धवाचक क्या, कौन प्रश्नवाचक आप आदरसूचक ॥

सम्बन्ध उसे कहते हैं जिससे स्वत्व और रिश्ता जाना जाता है वह दो में रहता है एक कृतसम्बन्धी अर्थात् मुजाफअलेह दूसरा सम्बन्धी अर्थात् मुजाफ जैसे राजा का घोड़ा राजा कृतसम्बन्धी घोड़ा सम्बन्धी इत्यादि ॥

क्रिया के विषय में ॥

क्रिया उस कहत है जिससे कृति स्थिति और देह मन के व्यापार का बोध हो क्रियापद में लिङ्ग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, प्रयोग अवश्य होते हैं और इनका ज्ञान क्रियापद के रूप से होता है इन भेदों से क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं ॥

क्रिया धातु से बनती है इस हतु धातुका वर्णन करत हैं ॥

क्रिया की योनि या मूल जो प्रत्ययादि कार्यरहित शुद्धरूप है उसे धातु कहते हैं क्रिया दो प्रकार की है सकर्मक और अकर्मक सकर्मक क्रिया में कर्ता के व्यापार का फल कर्म में पाया जाता है यथा पण्डित पोथी को पढ़ता है पण्डित कर्ता, पोथी कर्म, पढ़ता है क्रिया । अकर्मक क्रिया में कर्ता के व्यापार का फल कर्ताही में रहता है यथा बालक होता है या रोता है बालक के व्यापार का फल बालकही में रहा संस्कृतज्ञ धातुके दो भेद कहते हैं सकर्मक अकर्मक जो धातु वस्त्वन्तरसापेक्ष है वह सकर्मक है यथा राम भोजन करता है श्याम दर्शन करता है इस स्थल में क्या भोजन करता है और किसका दर्शन करता है इसकी जानने की अपेक्षा है राम कोई वस्तु भोजन करता है और श्याम कोई द्रव्य का दर्शन करता है अतएव सापेक्षत्व प्रयुक्त भुज धातु एवं दृश धातु सकर्मक हैं जो धातु वस्त्वन्तरसापेक्ष नहीं है वह अकर्मक है यथा शिशु शयन करते हैं बालक क्रीड़ा करते हैं इस स्थल में शी एवं क्रीड धातु किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं करती हैं केवल कर्तृनिष्ठ हैं ॥

* अकर्मक धातु जानने के निमित्त संस्कृत में कोई संकेतिक चिह्न नहीं दिया जाता है वह अनायास ज्ञात होती है ॥

द्वितीय बात यह है कि इ, औ, इत्यादि वर्णों को अनुबन्ध कहते हैं जिस धातु के परे इ, वर्ण दृष्ट होवे तिस धातु के उपान्त में न अक्षर का आगम होगा पश्चात् वही नकार वर्ग के अनुसार सन्धि के नियम से ङ, अ, ण, म से बदल जाती है यथा अक् + इ + त = अङ्कित, अच् + इ + त = अङ्कित, उत्कट् + इ + त = उत्कटिष्ठत, कप् + इ + त = कम्पित ॥

स्वाभाविक धातु संवलित नकार का भी यही नियम है यथा अन्ज = अञ्जन एवं जिस धातु के पश्चात् औ होगा उसके उत्तर त (तव्य) आदि प्रत्यय के परे इकार का आगम नहीं होगा यथा गमऔ = गंत, गम औ = गन्तव्य तृतीय बात यह है धातु का नानाप्रकार का अर्थ होने से भी व्यवहारानुसार एक दो तीन पर्यन्त धात्वर्थ लिखे गये हैं ॥

इस ग्रन्थ में धातु निष्पन्न शब्द का अकारादिवर्ण प्रबन्ध में प्रत्यय और वाच्य का यथोचित उल्लेख रहेगा वाच्य का सङ्केतिक एक २ वर्ण होगा अर्थात् कर्तृवाच्य का क० कर्मवाच्य का कर्म० करणवाच्य का क० अधिकरणवाच्य का धि० भाववाच्य का भा० लिखा गया है ॥

प्रत्यय

अन, अ, ति, अ,

(संस्कृत में अनट, अल, क्ति, घञ्,) इन प्रत्ययों के योगसे क्रियावाचक शब्द निष्पन्न होता है (कहीं २ संज्ञा शब्द भी होता है) प्रकट हो कि अनट, अल प्रत्यय के ट, ल, काम में नहीं आते इस कारण अनट, अल के स्थान में अन, अ को लिखते हैं अन, अ, (अनट, अल) के प्रायः सब धातु के उत्तर भाववाच्य में अन, अ, प्रत्यय होता है अन, अ के योग से धातु का अन्त्य वर्ण पूर्ववर्ती इ, उ, ऋ के स्थान में ए, ओ, अर् होजाता है एवं धातु के अन्त स्थित इ, ई के स्थान में अय्, उ ऊ के स्थान में अव्, ऋ ॠ के स्थान अर् होजाता है यथा क्षिप + अन = क्षेपन । विक्षिप + अ = विक्षेप । चि + अन = चयन । सञ्चि + अन = सञ्चयन इत्यादि ॥

ति (क्ति)

प्रायः सब धातु के अन्त में भाववाच्य में ति प्रत्यय होता है ति कभी २ धातु में युक्त होजाता है यथा शक् + ति = शक्ति । कभी २ ति प्रत्यय के परे धातु के अन्तिम, एवं न, का लोप हो जाता है यथा गम् + ति = गति । आहन् + ति = आहति और कभी २ ति के परे धातु के अन्त स्थित म को न होजाता और प्रथम स्वर दीर्घ होजाता है अम् + ति = अन्ति इत्यादि ॥

अ (घञ्)

धातु के उत्तर भाववाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय के योग से धातु के उपान्त अ को आ होजाता है और इ के स्थान में ए और उ को ओ ऋ को अर् होजाता है यथा स्वाद + अ = स्वाद एवं अ प्रत्यय के योग से धातु के अन्त इ ई के स्थान में आय् उ ऊ के स्थान में आव्, ऋ ॠ के स्थान में आर् होजाता है यथा अधि इ + अ = अध्याय इत्यादि निम्न लिखित प्रत्ययों के योग से विशेषण शब्द कदाचित् संज्ञा शब्द निष्पन्न होते हैं

अक, तृ, इन, इष्णु, अन, उक, र, अ, आन, स्यमान, क्तिप्, त, तव्य, अनीय, य, स, इ, ष (संस्कृत क्रम से) अक, तृण्, णिन्, इष्णु, अन, उक, र, (ण, यण, श, उ,) आन, स्यमान ॥

क्तिप्, त, तव्य, अनीय, य, क्यप्, ध्यण्, सत्, भि, यङ् उक्त प्रत्ययों का प्रयोग अर्थात् इस्तेमालः—

(अक=एक)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्यमें अक प्रत्यय होता है अर्थात् धातु के साथ अक प्रत्यय के योग से कर्तृबोधक शब्द निष्पन्न होता है अक प्रत्यय के योग से धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् इत्यादि होजाता है एवं उपान्त का अ दीर्घ आ होजाता है और इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है, एवं आकारान्त अकारान्त धातु के पीछे अकप्रत्यय के पूर्व में य का आगम होजाता है यथा नी + अक=नायक, पठ् + अक=पाठक, भिद् + अक=भेदक, कृ + अक=कारक, दा + अक=दायक ॥

(तृ=तृण्)

धातु के उत्तर तृ प्रत्यय होने से कर्तृवाच्य होता है तृ प्रत्यय के योगसे धातु के अन्त्य और उपान्तिम इकारादि के स्थान में एकारादि होता है यथा जि + तृ=जेता, नी + तृ=नेता, स्तु + तृ=स्तोता, कृ + तृ=कर्ता, हृ + तृ=हर्ता, आ, हृ + तृ=आहर्ता, छिद् + तृ=छेत्ता, भिद् + तृ=भेत्ता ॥

(इन=णिन्)

धातु के परे कर्तृवाच्य में इन् प्रत्यय होता है इन् प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् प्रभृति होजाता है एवं उपान्त के अ को आ होजाता है और इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है एवं अकारान्त धातु के उत्तर इन् प्रत्यय के परे यकार का आगम होता है यथा शी + इन्=शायी, वद + इन्=वादी, भिद + इन्=भेदी, स्था + इन्=स्थायी, दा + इन्=दायी, पा + इन्=पायी, या + इन्=यायी ॥

(इष्णु)

चर, सह, वृष्, निर, आ, कृ और कई एक धातु के उत्तर में कर्तृवाच्य में इष्णु प्रत्यय होता है इष्णु प्रत्यय के योगसे धातु के अन्त और उपान्त इकारादि एकारादि होजाता है यथा चर् + इष्णु=चरिष्णु, वृष् + इष्णु=वृद्धिष्णु, अलं, कृ + इष्णु=अलंकरिष्णु इत्यादि ॥

(अन)

ई (नि) युक्त पद प्रभृति कई एक धातु के परे कर्तृवाच्य में अन होता है यथा नद् + इ + अन=नन्दन, नश् + अन=नाशन, हन् + अन=घातन, मर्द् + अन=मर्दन, तृ + अन=तारण, भू + अन=भावन, मुह् + अन=मोहन, पू + अन=पावन, भिन्न उक्तरूप सब उपपद पूर्व में व्यवहार किये जाते हैं यथा विपन्नाशन, पतितपावन, गोपीमोहन इत्यादि ॥

(उ, उक्)

कई एक धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें उक् होता है कम् + उक्=कामुक इत्यादि ॥

(र)

दीप्, नम्, कम्, हिम् प्रभृति कई एक धातु के परे कर्तृवाच्यमें र होता है यथा नम् + र=नम्र, हिस् + र=हिंस ॥

† ‡ अ (ण्, यण्, श्, उ)

विशेष्य विशेषण किंवा अव्यय शब्द के पूर्ववर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय कई एक धातु में संयुक्त होजाता है और अ प्रत्यय के परे कई एक धातु का अन्त्य इकारादि एकारादि से परिवर्तित होजाता है अर्थात् बदल जाता है और अ प्रत्यय के कई एक धातु का अन्त्य वर्ण और तत्पूर्ववर्ती स्वर का लोप होजाता है वा धातु का अन्त्य अकार लुप्त होजाता है यथा मनस् रम् + अ=मनोरम, कुम्भ कृ + अ=कुम्भकार, पङ्क + जन् + अ=पङ्कज, सुख + दा + अ=सुखद ॥

(आन)

कई एक धातु के परे वर्तमान काल में कर्तृवाच्य में आन प्रत्यय होता है । जिस धातु के परे अकार आता है तदुत्तर आन के स्थान में मान होजाता है अन्यप्रकार के धातु के परे केवल आन प्रत्यय होता है कर्म और भाववाच्य धातु के उत्तर यकार का आगम आता है और आन के स्थान में मान होजाता है यथा धाव् + आन=धावमान, शी + आन=शयान, कृ + आन=कुर्वाण, क्रिय + आन=क्रियमाण ॥

(स्यमान)

कर्तृ एवं कर्मवाच्य भविष्यत्काल में धातु के उत्तर स्यमान प्रत्यय होता है किसी धातु के परे स्यमान प्रत्ययके पीछे इकार का आगम होता है यथा दा + स्यमान=दास्यमान, जन + स्यमान=जनिष्यमाण ॥

(क्तिप्)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्तिप् होता है । क्तिप् का कुछ नहीं रहता है इस कारण शून्यमात्र प्रदर्शित होता है क्तिप् प्रत्यय के परे वच् धातु प्रभृति का अकार दीर्घ होजाता है और च् के स्थान में क् होजाता है एवं क्तिप् प्रत्यय के परे ज् और श् के स्थान में क् होजाता है यथा वच् + ० = वाक्, आखु + भुज् = आखुभुक्, दृश् + ० = दृक् ॥

(त = क्त)

गम् प्रभृति कई एक धातु एवं अकर्मक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में त प्रत्यय होता है और इससे भिन्न धातु के उत्तर कर्मवाच्य और प्रयोग विशेष उभयवाच्य में त प्रत्यय होता है यथा अकर्मक गम् + त = गत, भी + त = भीत, सकर्मक कृ + त = कृत, परिच्छिद् + त = परिच्छिन्न, भिद् + त = भिन्न ॥

जिस धातु का औ अनुबन्ध नहीं है तिससे परे त प्रत्यय के पूर्व इकार का आगम होता है एवं कृ, भू इत्यादि धातु के उत्तर त प्रत्यय के पूर्व इकार का आगम नहीं होता यथा इकार का आगम लिख् + त = लिखित ॥

अनागम भू + त = भूत, कृ + त = कृत, त प्रत्यय के योग में मकारान्त और नकारान्त धातु के म् और न् का लोप होजाता है कभी २ म को न होजाता है तब प्रथम स्वर दीर्घ होजाता है यथा लोप का उदाहरण गम् + त = गत, हन् + त = हत, म को न और दीर्घ होने का उदाहरण भ्रम् + त = भ्रान्त, त प्रत्यय के योग में धातु का अन्त्य हकार ग से परिवर्तित होजाता है अर्थात् बदल जाता है एवं त प्रत्यय का तकार ध से बदल जाता है और यह ग के साथ मिल जाता है किसी २ धातु का ह और त प्रत्यय दोनों मिलकरके एक ढकार से बदल जाते हैं और धातु का ह्रस्व स्वर दीर्घ होजाता है यथा मुह् + त = मुग्ध, मुह् + त = मूढ ॥

त प्रत्यय के योग में मदधत्तु छोड़कर दकारान्त धातु के द के स्थान में न और त प्रत्यय के त को भी न होजाता है यथा छिद् + त = छिन्न, डी प्रभृति धातु के परे त प्रत्यय के त के स्थान में न होजाता है यथा डी + त = डीन, उड्डी + त = उड्डीन ॥

शुष्, पच् धातुओं के उत्तर त प्रत्यय के तकार को क वा व होजाता है यथा शुष् + त = शुष्क, पच् + त = पक् त प्रत्यय के योग में ऋकारान्त धातु

के ऋ को इर् होजाता है एवं त प्रत्यय के त को न होजाता है यथा आ-
कृ + त=आकीर्ण, उत्-तृ + त=उत्तीर्ण ॥

योग्यार्थ और कर्मवाच्य ।

(तव्य)

यह प्रत्यय प्रायः बहुत धातुओं के साथ योग किया जाता है प्रायः योग्यार्थ और कर्मवाच्य में तव्य होता है तव्य के योग में धातु के अन्त्य किंवा उपान्त स्थित इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है । एवं जिस धातु का (औ) अनुबन्ध नहीं है ऐसे धातु के उत्तर एवं वृ, शिव, श्रि, डी, शी, पू, रु, नु, स्तु, क्षि, क्षण धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकार का आगम होजाता है तद्भिन्न एक स्वर आ, इ ई, उ ऊ और ऋकारान्त धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकार का आगम नहीं होता है यथा चि + तव्य=चेतव्य, बुध + तव्य=बोद्धव्य, दा + तव्य=दातव्य ॥

कर्मवाच्य और योग्यार्थ ।

(अनीय)

यह प्रत्यय प्रायः सकल धातु के उत्तर कर्मवाच्य और योग्यार्थ में होता है अनीय प्रत्यय के योग में धातु के अन्त्य इ ई, उ ऊ, ऋ के स्थान में अय्, अव्, अर् होजाता है एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है यथा चि + अनीय=चयनीय, भिद् + अनीय=भेदनीय, भज्, यज्, जप्, आ, नम् धातु के उत्तर एवं जिन सब धातुओं के साथ (य=ध्यप्) किंवा (य=क्यप्) प्रत्यय का योग नहीं किया जाता है तिसके पश्चात् प्रायः कर्मवाच्य में और योग्यार्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के योग में तव्य प्रत्ययान्त धातु के अनुसार स्वर का परिवर्तन होता है अर्थात् बदलजाता है एवं धातु का अन्त्य आ एकार से परिवर्तित होता है यथा चि + य=चेय, भिद् + य=भेद्य, दा + य=देय, धा + य=धेय, ज्ञा + य=ज्ञेय, वि-ज्ञा + य=विज्ञेय ॥

(य=क्यप्)

वृ, वृ, भृ, स्तु, इ, शास् एवं ऋकारान्त धातु के उत्तर एवं और कई एक धातु के उत्तर प्रायः कर्मवाच्य नित्य (य, क्यप्) प्रत्यय होता है कृ, वृष्, मृज्, गुद्, दुद्, शंस्, संप्रभृति वा अपि अभिपूर्वक ग्रह धातु के उत्तर विकल्प से (य, क्यप्) होता है य प्रत्यय के योगमें धातु के स्वर का परिवर्तन नहीं होता अर्थात् नहीं बदलता यथा भृज् + य=भृज्य, गुह् + य=गुह्य परन्तु वृ,

आ, ह, भृ, स्तु, कृ धातु के उत्तर (य, क्यप्) प्रत्यय के पूर्व त का आगम होजाता है यथा भृ + य = भृत्य, आ-ह + य = आहत्य ॥

इकारान्त वा उकारान्त एवं हलन्त अथवा ऋकारान्त धातु के उत्तर कर्म-वाच्य में (य, घ्यप्) होजाता है य प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अन्त्यस्वर आय् आदि के रूप में बदलजाता है एवं उपान्त्य का इकारादि स्वर एकारादि में परिवर्तित होजाता है एवं जन्, वध् धातु को छोड़ अन्य धातुका उपान्त्य अ को आ होजाता है यथा श्रु + य = श्राव्य, दुह् + य = दोह्य, क्रम् + य = क्राम्य ॥

(इ, जि)

धातु के परे प्रेरणार्थ में और स्वार्थ में इ प्रत्यय होता है इस प्रत्यय के होने में शब्द निष्पन्न नहीं होता है धातु के उत्तर इ प्रत्यय किया जाय तिसके परे और कोई एक प्रत्यय करते हैं इ प्रत्यय के परे धातु के अन्त्य इकारादि के स्थान में आय् इत्यादि एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है परन्तु कभी २ इ प्रत्यय का लोप होजाता है वा कभी इ प्रत्यय का परिवर्तन अय् से होजाता है यथा कृ + इ + त = कारित, कृ + इ + त् = कारयिता, चुर् + इ + त = चोरित ॥

(स, सन्)

धातु से परे इच्छार्थ में स प्रत्यय होता है इस स प्रत्यय के करने में और एक प्रत्यय का योग होता है स प्रत्यय के परे एकस्वर के सहित धातु के आद्य अक्षर की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विरुक्ति के क को च होजाता है और ग को ज और भ को व एवं ध को द होता है यथा कृ + स — आ = चिकीर्षा, पा + स — आ = पिपासा, गुप् + स — आ = जुगुप्सा ।

स प्रत्यय के परे लभ्, दा, आप् के स्थान में क्रमशः लिप्, दित्, इप् होजाता है यथा लभ् + स — आ = लिप्सा, दा + स — आ = दित्सा, वि — आप् + स — आ = वीप्सा ॥

(°य, यङ्)

धातु के उत्तर पुनः पुनः अर्थात् वारंवार अर्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के परे एक प्रत्यय और होता है य प्रत्यय के परे एकस्वर सहित धातु के आद्यवर्ण की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विरुक्ति के क को च होजाता है ग को ज और ध को द एवं भ को व होजाता है यथा दीप् + य — आन = देदीप्यमान इस य प्रत्यय का किसी २ स्थान में लोप होजाता है किन्तु

य प्रत्यय का कार्य्य समुदाय होता है पीछे अभ्य प्रत्यय का योग होजाता है
यथा क्रम् + अन = चक्रमण ॥

तद्धित प्रकरण ।

तद्धित उसे कहते हैं जो शब्दार्थमें विशेषता प्रकट करे जिससे संज्ञाके अन्त में प्रत्ययों के लगाने से अनेक शब्द बनते हैं जो भाषा में व्यवहृत प्रत्यय हैं उन्हें नीचे लिखते हैं तद्धित के प्रत्यय से अपत्यवाचक, कर्तृवाचक, भाववाचक, ऊनवाचक, गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती है जैसे :—

१ अपत्यवाचक संज्ञा नामवाचक से निकलती है । नामवाचक के पहले स्वर को वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होनेसे जैसे शिव से शैव, विष्णु से वैष्णव, गौतम से गौतम, मनुसे मानव, वशिष्ठ से वाशिष्ठ, महानन्द से महानन्दी, रामानन्द से रामानन्दी हुआ है ॥

२ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार का कर्त्ता है उसे बतावे संज्ञा से वाला, हारा, इया, इन प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे चुड़िहारा, दूधवाला, आदितिया इत्यादि ॥

३ भाववाचक संज्ञा और संज्ञाओं से इन प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे ता, त्व, आई, ई, पन, पा, वट, हट, स इत्यादि उदाहरण ये हैं चतुराई, बोआई, लड़काई, लम्बाई, पशुत्व, उत्तमता, मित्रता, बालकपन, बुढ़ापा, बनावट, चिकनाहट ॥

४ ऊनवाचक संज्ञा अक, इया, आ, वा लगाने से और आ को ई आदेश करने से बनती है जैसे मानव से मानवक, वृक्षसे वृक्षक, घोड़ी से घोड़िया, बच्चा से बचुआ, मर्दसे मर्दक, पलँग से पलँगड़ी ॥

५ गुणवाचक संज्ञा नीचे के प्रत्ययों के लगाने से बनती है आ, इक, इत, इय-या-ई-इला, एला, ऐला, लु, लू, ल, वन्त, वान्, जैसे प्यास से प्यासा, भूख से भूखा, शरीर से शारीरिक, स्वभावसे स्वाभाविक, आनन्द से आनन्दित, समुद्रसे समुद्रिय, भाँभ से भाँभिया, ऊन से ऊनी, साज से सजीला, घरसे घरेला, बन से बनेला, दयासे दयालु, भगड़ा से भगड़ालू, कृपा से कृपालू, कुल से कुलवन्त, आशा से आशावान् ॥

इति तद्धितप्रकरणम् ॥

कृदन्त के विषय में ।

क्रिया से परे जो प्रत्यय होते हैं कि जिनसे कर्तृत्व या व्यापार का बोध

होता है उन्हें कृत् कहते हैं उनके आने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त अथवा क्रियावाचक संज्ञा कहते हैं इस हेतु से कि प्रायः क्रियाके सदृश अर्थ को प्रकाश करते हैं ॥

भाषा में पाँच प्रकार की संज्ञा क्रिया से बनती हैं अर्थात् कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक और क्रियाद्योतक उनके बनाने की रीति नीचे लिखी है ॥

१ जिससे कर्तापन का बोध हो वह कर्तृवाचक है उसके बनाने की रीति यह है कि क्रिया के साधारण रूप के अन्त्य आ को ए करके आगे हारा, वाला लगा देते हैं यथा करनेवाला मारनेहारा इत्यादि स्त्रीलिङ्ग में अन्त आ को ई से बदल देते हैं यथा करनेवाली मारनेहारी दान देनेवाली ॥

धातु के न चिह्न का लोप करके अक, इया, वैया प्रत्यय करने से कर्तृवाचक संज्ञा होजाती है, यथा पालना से पालक, जड़ना से जड़िया, जीतना से जितवैया जिस धातु का स्वर दीर्घ हो तो वैया प्रत्यय के लगाने पर उसे ह्रस्व कर देते हैं यथा खाना से खवैया गाना से गवैया आदि जानो ॥

२ जिस संज्ञा से कर्मत्व जाना जाता है उसे कर्मवाचक संज्ञा कहते हैं वह सकर्मक क्रिया से बनती है और उसके बनाने की यह रीति है कि धातु के न चिह्न को पुँल्लिङ्ग में आ से और स्त्रीलिङ्ग में ई से बदल देते हैं उसके पूर्व स्वर का लोप करके आ आर ई को मिला देते हैं वही कर्मवाचक संज्ञा होजाती है अथवा उस रूप के आगे हुआ लगा देते हैं यथा देखना से देखा मारना से मारा अथवा मारा हुआ देखा हुआ स्त्रीलिङ्ग में मारी हुई देखी हुई आदि ॥

३ भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं कि जिसके कहने से पदार्थका धर्म वा स्वभाव समझा जाय अथवा जिससे किसी व्यापार का बोध हो व्यापार की भाववाचक संज्ञा कई प्रकार से बनाई जाती है यथा कहीं धातु के ना के लोप करदेने से कहीं ना को आव् आदेश करने से कहीं २ धातु के ना के आ का लोप करने से और कहीं आ का लोप करके आ, ई लगाने से और कहीं ना का लोप करके आवट आहट अथवा वट हट लगाने से बनती है यथा बोलना से बोल चढ़ना से चढ़ाव देना लेना से देन लेन मारना पीटना से मार पीट और बोना से बोआई ठगनासे ठगाई सिखना से सिखावट लिखना से लिखावट ॥

४ करणवाचक वह है जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करता है उस के बनाने का नियम यह है कि धातु के ना के आ को ई कर देने से कहीं २ ना का लोप करके ना से पूर्व अक्षर में आ लगाने से कोई २ धातुही करणवाचक का काम देती है यथा कतरना से कतरनी खोदना से खोदनी घेरना से घेरा फेरना से फेरा बेलना यह धातु ही करण का काम देती है ॥

५ क्रियाद्योतक संज्ञा वह है जो संज्ञा का विशेषण होके निरन्तर क्रिया को जनावे उसके बनाने की रीति है कि धातु के न चिह्न को ता करने से और स्त्रीलिङ्गमें ती करने से बनती है अथवा उसके आगे हुआ लगाने से बनती है यथा देखता देखताहुआ इत्यादि ॥

इति कृदन्तप्रकरणम् ॥

१ अव्यय अ=नहीं व्यय=नाश, क्षय, खर्च ।

अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिङ्ग वचन कारक के कारण विकार नहीं होता है सदा एक सा रहता है अव्यय चार प्रकार के हैं क्रियाविशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, विस्मयादिबोधक देशभाषा में क्रियाविशेषण बारंबार आते हैं वे पांच सर्वनामों से बने हैं उनका एक कोष्ठ आगे दिया गया है यह वह कौन जौन तौन इन पांच सर्वनामों से स्थलवाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक, क्रियाविशेषण-अव्यय बनते हैं ॥

यह	वह	कान	जौन	तौन	
१ अब	०	कब	जब	तब	} कालवाचक
०	०	कद	जद	तद	
२ यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	} स्थलवाचक
३ इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४ यों	वों	क्यों	त्यों	ज्यों	} गुणवाचक वा
५ ऐसा	वैसा	कैसा	तैसा	जैसा	
६ इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	} परिमाणवाचक
७ इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

समुच्चय बोधक या उभयान्वयी अव्यय जो दो शब्दों या दो वाक्यों के बीच में आते हैं और प्रत्येक पद को भिन्न २ क्रिया सहित अव्यय का

संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं जैसे राम और कृष्ण आये ॥

संयोजक अव्यय

औ यथा

और यदि

एवं जो

अथ भी

कि पुनर

तो पुनः

फिर

विभाजक अव्यय

वा

अथवा

क्या

परंतु

किन्तु

पर

चाहे

जो

शब्दयोगी अव्यय जब नाम या सर्वनाम के संग न आवे तो क्रिया-विशेषण होते हैं जैसे नाम या सर्वनाम के साथ उदाहरण जिस लिये उस बिना किस लिये इत्यादि गोपीसहित कृष्ण आये गोपालसमेत कृष्ण आये क्रिया विशेषण जैसे बाहर गया पीछे गया ॥

शब्दयोगी अव्यय ।

आगे पीछे भीतर ऊपर बाहर बराबर बदल बदले समीप बीच पास तले ऊपर बिना साथ सहित समेत समक्ष लिये प्रभृति ॥

विस्मयादिबोधक या केवल प्रयोगी अव्यय जिन अव्ययों से कहनेवाले का दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि के भाव या दशा का बोध होता है वे विस्मयादिबोधक हैं ॥

दुःख और धिक्कार बोधक वापरे, हाय हाय, अरे, रे, हा, धिक्, दूर दूर, झुप, छी, त्राहि, हर्ष और धन्यताबोधक जय जय, शाबाश, बाह वाह, धन्य धन्य, सम्मुखीकरणबोधक अय, ओ, अरे, अवे ॥

नीचे के अव्यय संस्कृत और भाषा में उपसर्ग कहाते हैं (उप=ऊपर + सृज् =सर्ग, सृज्=बनाना) उपसर्ग प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्वयुक्त होके क्रिया के भिन्न २ अर्थ का प्रकाश करते हैं वे एक से ले चार तक क्रिया के पूर्व में आते हैं यथा विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, समभिव्यवहार उपसर्ग चोतक हैं वाचक नहीं संयुक्त होकर दूसरे का अर्थ प्रकाश करते हैं असंयुक्त

रहने से निरर्थक रहते हैं उपसर्ग से धातु का अर्थ बदल जाता है यथा हारं
आहार, प्रहार संहार इत्यादि ॥

अब मैं अपना संक्षेप वृत्तका उल्लेख करता हूँ ।

मेरे पितामह पण्डित रामप्रसाद जी जोकि पौराणिक और अपने समय में वैद्य शिरोमणि थे कान्यकुब्ज मुहल्ला मकरंदनगर शुक्रनटोला के निवासी थे और मेरे पिता श्रीपण्डित लालमणिजी पुराण, ज्योतिष, वैद्यक के ज्ञाता थे उन्होंने सरकारी नौकरी भी १४ वर्ष पर्यन्त की और समयानुसार मुझे सात वर्ष की अवस्था से १६ वर्ष पर्यन्त संस्कृत अध्ययन कराकर फ़ारसी और गणितविद्या पढ़ने को उपदेश किया उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने कुछ सीख पाया जिसका फल आप सज्जनों की सेवा में अर्पण किया जाता है ॥

इस अभिधान के बनाने में निम्न कोषों और समाचार पत्रों की सहायता ली गई है ॥

फैलन साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष ।

फार्व साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष ।

बेट साहेब का हिन्दी अंगरेजी कोष ।

पण्डित तारानाथ वाचस्पति का शब्दस्तोम महानिधि ।

बावन शिवराम आश्रित संस्कृत अंगरेजी कोष ।

बाबू राधालाल साहेब का शब्दकोष ।

प्रतिष्ठित बंगवासी समाचार पत्र कलकत्ता और राजा रामपालसिंह काले-कांकर का हिन्दोस्तान नामक समाचार पत्रादि ।

इस कोष के मुद्रित कराने में मेरे चित्त में कई कारणों से नाना प्रकार के संकल्प विकल्प उत्पन्न होते थे पर श्रीकश्यपवंशोद्भव लखीमपूरनिवासी पण्डित बेचेलालात्मज मनीषिमाननीय पण्डित बदरीनारायण मिश्र हेडमास्टर नार्मलस्कूल लखनऊ की निर्भर सहायता और प्रेरणा से कटिबद्ध होकर इसको मुद्रित कराया ॥

सन्धिप्रकरण ॥

- १ अक्षरों के मेलको सन्धि कहते हैं ॥
- २ उनमें आगम और आदेशादि होते हैं ॥
- ३ पदके बीचमें ऊपर से जो अक्षर आता है वह आगम कहा जाता है ॥
- ४ जो किसी वर्णके स्थानमें दूसरा वर्ण बनाया जाता है उसे आदेश कहते हैं ॥

स्वरसन्धिः ॥

- ५ जब इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ से कोई असवर्ण * स्वर परे होता है तब उक्त वर्णों के स्थान में क्रम से य् व् र् ल् आदेश किये जाते हैं उदाहरण यथा—यदि अपि=यद्यपि । देवी आगता=देव्यागता । यहां इ ई को य् और मधु अत्र=मध्वत्र । वधू आगमन=वध्वागमन । यहां उ ऊ को व् और पितृ अर्थ=पित्रर्थ यहां ऋ को र् और लृ इत्=लित् यहां लृ को ल् आदेश होजाता है ॥
- ६ जब ए ऐ ओ औ के पीछे कोई स्वर आता है तब चारों वर्णों को क्रम से अय् आय् अव् आय् आदेश होजाने हैं । यथा—जे अति=जयति । शे आते=शयाते । विनै अक=विनायक । भो अन=भवन । पौ अक=पावक इत्यादि ॥
- ७ परन्तु जब पदके अन्त में ए ओ से परे अकार ह्रस्व आनेपर अकार का लोप होजाता है यथा—ते अत्र=तेऽत्र । पटो अत्र=पटोऽत्र इत्यादि ॥
- ८ जिस सञ्ज्ञा अर्थात् नाम के अन्त में विभक्ति हो उस (विभक्ति सहित) को पद कहते हैं ॥
- ९ अ इ उ ऋ लृ ये ह्रस्व और आ ई ऊ ऋ ए ऐ ओ औ दीर्घ और अ ३ इ ३ उ ३ ऋ ३ लृ ३ ए ३ ऐ ३ ओ ३ औ ३ ये प्लुत कहते हैं एकमात्रिक को ह्रस्व द्विमात्रिकको दीर्घ और त्रिमात्रिक को मुत कहते हैं । मात्राका अर्थ परिमाण है ॥
- १० पर गवादिकों के मध्य में अ का आगम होजाता है यथा—गो इन्द्रः=गो अ इन्द्रः यहां अकार का आगम हुआ=गअइन्द्रः यहां ओ का अव् आदेश होकर स्वरहीन वर्ण पर अक्षर में मिल गये और नियम ११ के अनुसार गवेन्द्रः सिद्ध हुआ । गो अग्रम्=गवाग्रम् । गोऽग्रम् नियम ७ के अनुसार हुआ ।

- ११ अ आ से परे इ ई हो तो दोनों मिलके ए और अ आ से उ ऊ परे हो तो ओ और अ आ से ए ऐ परे हो तो ऐ और अ आ से परे ओ औ हो तो औ बनजाता है । यथा-उप + इन्द्र = उपेन्द्र । महा + उदय = महोदय । एक + एक = एकैक । महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य । जल + ओघ = जलौघ । महा + औदार्य = महौदार्य ॥
- १२ अ आ अ ३ ये तीनों आपस में सवर्ण कहे जाते हैं इसी प्रकार इ ई इ ३ इत्यादि स्वर सवर्ण कहाते हैं ॥
- १३ जब अ इ उ ऋ वर्णों से कोई इनकाही सवर्ण स्वर परे हो तो दोनों मिलके एक दीर्घ आदेश बनजाता है । यथा-शशञ्ज = शशांज । देव आलय = देवालय । क्षितिर्इश = क्षितीश । विधु उदय = विधूदय । स्वयम्भू उदय = स्वयम्भूदय । पितृ ऋण = पितृण ।
- १४ जब पदके अन्त में ई या ऊ होवे इनके परे सवर्ण स्वर छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो तो ये ह्रस्व हो जाते हैं । यथा-चक्री अत्र = चक्रिअत्र दूसरा रूप नियम ५ से चक्रचत्र होता है ।
- १५ जब आ से परे ऋ हो तो आ को अ भी होता है यथा-ब्रह्मा ऋषि = ब्रह्मऋषि दूसरारूप नियम १६ से ब्रह्मर्षि होता है ॥
- १६ अ आ से परे ऋ हो तो दोनों मिलके अर् और कभी आर् भी होजाता है । यथा-देवऋषि = देवर्षि महाऋषि = महर्षि शीतऋत = शीतार्त इत्यादि ॥
- १७ अकार से परे लृ हो तो दोनों को अल् हो जाता है यथा-तव लृकारः = तवल्कारः । इति स्वरसन्धिः ॥

अथ प्रकृतिभावः ॥

प्रकृतिभावका अर्थ सन्धि न होना ज्योंका त्यों रहना ॥

- १८ अम् वा अमी शब्द से परे स्वर हो तो सन्धि नहीं होगी । यथा-अम् आसाते । अमी अश्वाः यहाँ नियम ५ से ऊ को व् और ई को य् आदेश नहीं हुआ इत्यादि ॥
- १९ किसी शब्द द्विवचनके अन्त में ई, ऊ, ए, स्वर हों और इनके आगे कोई स्वर आवे तो सन्धि नहीं होगी । यथा-अग्नीअत्र । पटूअत्र । माले आनय इत्यादि यहाँ अग्नी पटू माले द्विवचनान्त हैं ॥ इन शब्दों के स्वरों को य् व् अय् नियम ५ और ६ से आदेश नहीं हुए । परन्तु

मणीवादि शब्दों में नियम १३ के अनुसार सन्धि होगई । यथा—मणी
इव=मणीव । दम्पतीइव=दम्पतीव इत्यादि ॥

२० आकार ओकार की निपात सञ्ज्ञा है इनमें और एक स्वर में सन्धि नहीं
होती है । यथा—आ एवं मन्यसे । नो अत्रस्थातव्यम् । उ उत्तिष्ठ । इन
उक्त शब्दों में निपात और एक स्वर होने से सन्धि नहीं हुई ॥

२१ जब किसी सम्बोधनान्त (दूरसे बुलाने) में स्वर हो तो वह प्लुत
होजाता है और प्लुतको अगले स्वर से सन्धि नहीं होती । यथा—देव-
दत्त ३ एहि यज्ञदत्त ३ आगच्छ यहां अ ए मिलके ऐ और अ आ
मिलकर आ नहीं हुआ । इति प्रकृतिभावः ॥

व्यञ्जनसन्धिः ॥

२२ स और त वर्गको शकार चवर्ग के परे क्रमसे शकार चवर्ग बनजाता है ।
यथा—कस्चरति=कश्चरति । कस्शूरः=कश्शूरः । तत् चित्रम्=तच्चि-
त्रम् । राजन्जय=राजञ्जय इत्यादि ॥

२३ यदि पदके अन्त में त अथवा द परे श हो तो त द के स्थान में च
और श के स्थान में छ आदेश हो जाता है । यथा—जगत् शरणम्=जग-
च्छरणम् । तत्शास्त्रम्=तच्छास्त्रम् । तत्शरीरम्=तच्छरीरम् ॥

२४ श से परे तवर्गको चवर्ग नहीं होता है यथा—विशन्ः=विश्नः । प्रश्नः=प्रश्नः ॥

२५ स और तवर्ग के परे ष और टवर्ग हो तो क्रमसे ष और टवर्ग हो
जाता है । यथा—तट्टीका=तट्टीका । कस्टीकते=कट्टीकते । कस्पष्टः=
कष्पष्टः । उट्टीनम्=उट्टीनम् । पेप्ता=पेष्टा । शिष्टः=शिष्टः ।

२६ यदि तवर्ग से ष परे हो तो टवर्ग न होगा । यथा—सन्ष्टः यहां
नियम २५ से न् को ण नहीं बना ॥

२७ पदके अन्त में किसी वर्गका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ वर्ण और य
व ल से परे य म ङ ण न हों तो पूर्वोक्तवर्णों में से जो जिस वर्गका
हो उसको उसीका पञ्चमवर्ण होजाता है । यथा—वाक्मयम्=वाङ्मयम् ।
चित्मयम्=चिन्मयम् । एतत् मुरारिः=एतन्मुरारिः । यहां क् और त्
को उसीका पञ्चम ङ् और न् बनगया ॥

२८ तवर्ग से लकार परे हो तो त को ल होजाता है परन्तु नकार को लँ अनुना-
सिक बनजाता है यथा—तल्लीला=तल्लीला । महान्लाभः=महार्ल्ललाभः ॥

- २६ वर्ग के प्रथम तृतीय अक्षरों से किसी वर्गका पञ्चम अक्षर परे हो तो इनको भी अपने वर्गका पञ्चमवर्ण प्रायः बनजाता है । यथा-त्वक्मांसम्=त्व-
ब्धांसम् । दूसारूप नियम ३० से त्वग्मांसम् । तत्प्रित्रम्=तन्मित्रम् ॥
- ३० च ट त क प को ज ङ द ग व आदेश होजाते हैं यदि स्वर वा ह य
व र वा वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्ण परेहो तो । यथा-वाक् ईश्वरः=वागी-
श्वरः । धिक् लोभिनम्=धिग्लोभिनम् । वाक् दानम्=वाग्दानम् ।
जगत् ईशः=जगदीशः । महत् धनुः=महद्धनुः । अच् अन्तः=अजन्तः ।
षद् अत्र=षडत्र । ककुप् ऐन्द्री=ककुबैन्द्री इत्यादि ॥
- ३१ किसी वर्गके दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को उन २ का प्रथम अक्षर
भी होजाता है यदि वर्गके प्रथम द्वितीयवर्ण वा श ष स परेहों तो ।
यथा-उद् थानम्=उत्थानम् । त्वग् तत्र=त्वक्त्र इत्यादि ॥
- ३२ यदि किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थवर्ण से परे ह हो तो ह
को उसी का चतुर्थ अक्षर होजावेगा पीछे नियम ३० के अनुसार
कार्य होगा । यथा-वाक् हासः=वाग्हासः । त्वच् हीनः=त्वज्हीनः । षद्
हसन्ति=षड्वसन्ति । तत् हविः=तद्धविः । ककुप् हासः=ककुब्हासः ॥
- ३३ ह्रस्व स्वर से परे छ होवे तो उसके पूर्व च का आगम होता है अर्थात्
च अधिक होजाता है ॥ परन्तु दीर्घस्वर से परे च होता और नहीं
भी होता । यथा-परिच्छदः=परिच्छदः । वृक्षच्छाया=वृक्षच्छाया । लक्ष्मी-
च्छाया । लक्ष्मीच्छाया ।
- ३४ अनुस्वार से परे किसी वर्गका कोई अक्षरहो तो अनुस्वार को उसी
वर्गका पञ्चमवर्ण बनजाता है । यथा-अंक=अङ्क । पंच=पञ्च । कंठ=
कण्ठ । अंत=अन्त । अंध=अन्ध । अंब=अम्ब । सम्वत्=संवत् ।
इत्यादि भाषाके ज्ञाता अनुस्वारको अनुस्वारही लिखते हैं और संस्कृ-
तज्ञ अनुस्वार के बदले वर्गका पञ्चमवर्ण काममें लाते हैं परन्तु लेख
दोनों रीति से प्रचलित है ॥
- ३५ ह्रस्व स्वरसे परे ङ् ण् न् हों और इनके परे स्वर हो तो इनको द्वित्व
होजाता है । यथा-प्रत्यङ् आत्मा=प्रत्यङ्कात्मा । सुगण् इह=सुग-
णिएह । धावन् अश्वः=धावन्नश्वः । इति व्यञ्जनसन्धिः ॥

अथ विसर्गसन्धिः ॥

- ३६ जब किसी वर्गसे त, थ, स, परे हों तो (:) को सू-आदेश होता है ।

यथा—उन्नतः तरुः=उन्नतस्तरुः । नद्याः तीरम्=नद्यास्तीरम् । रामः थं
वदति=रामस्थं वदति । यज्ञदत्तः सनोति=यज्ञदत्तस्सनोति ॥

३७ यदि विसर्ग से ट ठ ष परे हों तो विसर्गको प् आदेश हो जाता है । यथा—
धनुः टङ्कारः=धनुष्टङ्कारः । भग्नः ठकुरः=भग्नष्टकुरः । कः षष्ठः=कषष्ठः ॥

३८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श हों तो (:) को श आदेश होता है ।
यथा—पूर्णः चन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः । रवेः छविः=रवेश्छविः । नरः शङ्कते=
नरश्शङ्कते ॥

३९ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होजाता है जब
कि वर्गोंका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श ष स ह परे हों तो ।
यथा यशान्सि=यशांसि । किम् करोपि=किंकरोपि ॥

४० यदि पदके अन्तमें म् होवे उससे परे व्यञ्जनहो तो म् को अनुस्वार
होजाताहै । यथा—हरिम् वन्दे=हरिंवन्दे । चन्द्रम् पश्यति=चन्द्रंपश्यति ॥

४१ यदि अकार के नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्व अकार होवे तो
पूर्व अकार सहित विसर्ग को ओ आदेश होजाता है उस ओ में पूर्व वर्ण
को मिला देते हैं ओ से परे अकार का लोप करके ऽ ऐसा रूप लिख
देते हैं यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः । नरः अयम्=नरोऽयम् ॥

४२ यदि अः के परे वर्गका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, व, र, ल, न, म, हों
तो अः को ओ बनजाता है यथा—चौरः हरति=चौरोहरति । नरः
याति=नरोयाति । पण्डितः भवति=पण्डितोभवति इत्यादि ॥

४३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई
स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ वर्ण
हो तो विसर्ग को र हल बनजाता है, यथा—कविः अयम्=कविरयम् ।
शत्रुः हतः=शत्रुर्हतः । हरेः वचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥

४४ यदि सः और एषः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण
हो तो सः और एषः की विसर्ग का लोप हो जाता है और लोप होने
पर सन्धि नहीं होती है । यथा—सः आगतः=स आगतः । सः इच्छति=
सइच्छति । सः करोति=सकरोति । सः हसति=सहसति । एषः आ-
याति=एष आयाति । एषः शेते=एषशेते इत्यादि ॥

४५ यदि श्लोक वा ऋचाका पाद ३ चौथाई पूर्ण करना हो तो सन्धि
हो जावेगी ॥

यथा-सःएषदाशरथीरामः=सैषदाशरथीरामः । सःएषराजा युधिष्ठिरः=सैषराजायुधिष्ठिरः । सः एषकर्णोमहात्यागी=सैषकर्णोमहात्यागी । सः एष भीमो महाबलः=सैषभीमो महाबलः । यहां विसर्ग का लोप होने पर भी सन्धि होगई ॥

४६ अ से परे विसर्ग का लोप हो जाता है जब कि अ को छोड़ कोई अन्य स्वर परे हो । यथा-देवः आगच्छति=देवआगच्छति । तथा आ से आगे विसर्ग का भी लोप होजाता है यदि कोई स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वा ह य व र ल परे हों । यथा-मनुष्याः निवसन्ति=मनुष्या निवसन्ति । वाताः वान्ति=वातावान्ति इत्यादि ॥

४७ यदि अ इ उ के नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे र हो तो विसर्ग को हल रू आदेश होकर लोप हो जाता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है यथा-पुनःरमते=पुनर्रमते=पुनारमते । शुक्तिःरूप्यात्मना-भाति=शुक्तिरूप=शुक्तीरूप्यात्मनाभाति इत्यादि ॥

४८ यदि स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण वा य र ल व ह भोः पद के परे होवें तो भोः के नीचे विसर्ग का लोप होजाता है लोप होने पर सन्धि नहीं होती है ॥

यथा-भोःगदाधर=भोगदाधर । भोःअम्बरीष=भो अम्बरीष इत्यादि ॥

४९ कभी स्वर के परे भोः शब्द की विसर्ग को य् भी बन जाता है यथा-भोः ईशान=भोयीशान । भोः उमापते=भोयुमापते ।

इति विसर्गसन्धिः ॥

(एत्वविधान)

५० ऋ ऌ र प इनके परे न को ण आदेश होता है । यथा-नृ नाम्=नृ-णाम् । मातृनाम्=मातृणाम् । सर्वेन=सर्वेण । पूरुने=पूरुणे । इत्यादि यदि स्वर वर्ण वा कवर्ग पवर्ग वा य, व, ह और अनुस्वार मध्य में व्यवधान अर्थात् रोकनेवाले हों तो भी न को ण बनजावेगा यथा-मूर्खेन=मूर्खेण । दर्पेन=दर्पेण । मृगेन=मृगेण । पूर्वोक्त वर्णों को छोड़ और वर्णों के व्यवधान होनेसे न को ण कभी न होगा । यथा-अर्वना । दृढेन । अर्थेन इत्यादि में न को ण नहीं हुआ ।

५१ पदके अन्त में न् हो तो ण कभी न होगा । यथा-इरीन् । गुरुन् । इतरान् । इत्यादि ॥

(षत्वविधान)

५२ अ आ भिन्न स्वर और क, र, ल, के परे प्रत्यय का जो सकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य षकार होजाता है । यथा—मुनिसु=मुनिषु । साधुसु=साधुषु । भ्रातृसु=भ्रातृषु । सर्वेसाम्=सर्वेषाम् इत्यादि अनु-स्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य ष हो जाता है यथा—धनूंसि=धनूंषि । हवींसि=हवींषि । धनुःसु=धनुःषु । आशीःसु=आशीःषु इत्यादि ॥

५३ संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः । नित्या समासे वाक्ये तु, साविबक्षामपेक्षते ॥

(अर्थ)

सन्धि एक पद में और धातु उपसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के अधीन है ॥

(इति सन्धिव्याख्यानम्)

विभक्तिहीन शब्दों को नाम कहते हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहाता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं ।

समास ६ प्रकार का है ।

- १ अव्ययीभाव २ तत्पुरुष ३ द्वन्द्व ४ बहुव्रीहि ५ कर्मधारय ६ द्विगु ॥
- १ अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें समीप, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जावें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में प्रथम पद अव्यय होता है । यथा—निर्दोष । यथाशक्ति । उपकूल । निर्विष । आसमुद्र । प्रतिगृह । सजल ॥
- २ तत्पुरुष उसे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्तहो और परे के पद में प्रथमाविभक्तिहो । यथा—घर गया । लोभजित । धनलोभी । सर्पभय । राजपुत्र । पुरुषोत्तम इन शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त हैं ॥
- ३ द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिसमें परस्पर पद विशेष्य विशेषण न हों पर प्रथमाविभक्ति युक्त अनेक पद हों इस समास के मध्य में संस्कृत में च अक्षर और भाषा में च के स्थान में और आता है पर समास बनने

से उसका लोप होजाता है । यथा—राम लक्ष्मण । माता पिता इनके मध्य में और शब्द का लोप होगया ॥

४ बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिसमें कई पदों से समास बनायाजावे पर पदोंका अर्थ ठीक २ न पाया जावे उनसे दूसरी वस्तु वा व्यक्ति का अर्थ समझा जावे बहुव्रीहि में संस्कृत में येन, यस्य-पद आते हैं भाषा में यद् का वाचक जिस शब्द का रूप अवश्य आता है यथा—दीर्घ-बाहू इस स्थल में बड़ी दो भुजा न समझी जावेगी बल्कि बड़ी हैं दो भुजा जिस पुरुषकी वह पुरुष समझा जावेगा अर्थात् पुरुष दो भुजावाला । चन्द्रशेखर । त्रिशूलपाणि । चक्रपाणि । जलज । वंशीधर । निर्मलजला । ये समासान्त पद अपना अर्थ त्याग विशेष अर्थ बताते हैं इससे दूसरे के विशेषण होते हैं ॥

५ कर्मधारय समास उसे कहते हैं जो विशेष्य और विशेषण के योगसे बने मुख्य संज्ञाको विशेष्य और उसके गुण धर्म को बतावे वह विशेषण है यथा—उन्नततरु । नीलकमल । श्वेतवस्त्र । सुन्दरपुरुष । पूर्व-पद विशेषण और परे का पद विशेष्य से मिलके कर्मधारय बना ॥

६ द्विगु समास उसे कहते हैं जिसमें पूर्वपद संख्यावाचक परे का पद समाहार अर्थात् अनेक वस्तुओं का बोधकहो यथा — त्रिभुवन । पञ्च-पात्र । त्रिनेत्र । चतुर्युग । पञ्चदश ॥

इति समासः ॥

श्रीधरभाषाकोष ।

अ देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर, जिस शब्द के आदि में आता है, उसका अर्थ पलट जाता है, जैसे धर्म से अधर्म और शोक से अशोक और जब शब्द का प्रथम अक्षर स्वर होता है तो अ के स्थान में अन् होजाता है और न् शब्द के आदि स्वर में मिला देते हैं जैसे अन् + अंत = अनंत, अन् + एक = अनेक इत्यादि ।

सं० अ (अव = बचाना) पु० रक्षक, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पिता, गुरु, वायु, कृपा, समर्थ, अधिपति, मालिक ।

प्रा० अऊत } (सं० अपुत्र, अ = नहीं, ऊत } पुत्र = बेटा) पु० जिसके लड़काबाला न हो, निर्वंश, २ अनव्याहा, मूर्ख, जाहिल ।

सं० अंश (अंश् = बांटना) भा० पु० भाग, बांट, बांटा, टुकड़ा, २ हिस्सा, दर्जा, अंश, भिन्न में उसे

कहते हैं कि एक पूरी चीज के बराबर टुकड़े करके उसमें से जितने लेवें उसे शुमारकुनिन्दा कहते हैं ।

सं० अंशक (अंश् + अक) क० पु० बांटनेवाला, हिस्सेदार ।

सं० अंशांश (अंश् + अंश्) अंश् का अंश्, भागका भाग, हिस्सा दर हिस्सा ।

सं० अंशी (अंश् + ई) क० पु० बटाऊ, बांटनेवाला, बटवैया, सांझी, हिस्सेदार ।

सं० अंशु (अंश् + उ) पु० सूर्य की किरन, रतेज, उजाला, प्रकाश ।

सं० अंशुक (अंश् + क) पु० वस्त्र, रेशमी वस्त्र, टसर, रेशम ।

सं० अंशुजाल (अंश् = किरण, जाल = समूह) पु० किरन समूह, शुआर्ये ।

सं० अंशुधर (अंश् = किरन, धर = धरनेवाला) क० पु० किरनधारी, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप, दिया, देवता, ब्रह्मा, प्रतापी ।

सं० अंशुमान क० पु० सूर्य, चन्द्रमा,
नाम सूर्यवंशी राजाका असमंजस
का पुत्र सगर राजाका पोता ।

सं० अंशुमालिन् } (अंशु=किरन,
अंशुमाली } माला=पांति)
क० पु० सूर्य, आफ़ताव ।

प्रा० अंसनि (सं० अंश, अंस्=बाँटना)
पु० किरन, २ भाग, ३ कंधे ।

प्रा० अंसल (सं० अंशल=बाँटने-
वाला) गु० साभी, हिस्सेदार ।

सं० अंहति (अंह=जाना + ति) भा०
स्त्री० त्याग, दान, २ रोग ।

सं० अंहस् (अंह + अस्) पु० पाप,
स्वधर्म त्याग, गुनाह, दुःख ।

सं० अंहि ना० पु० चरण, पांव, हाऊ-
बेर ।

सं० अकच्छ (अ=नहीं, कच्=वां-
धना) गु० नंगा, मेहरा, लंपट,
हरैला ।

प्रा० अकड़ (अकड़ना) भा० स्त्री०
ऐंठ, टेढ़ापन, बांकापन, शेखी ।

प्रा० अकड़बाज बोल० अकड़ैत,
झैला, यांका, झैलचिकनियां ।

प्रा० अकड़मकड़ बोल० ऐंठ कर
चलना, घमंड, अभिमान, शेखी ।

प्रा० अकड़ना (सं० आकुंचन, आ=
उलटा, कुञ्च=सिमटना) क्रि० अ०
ऐंठना, टेढ़ाहोना, २ दुखना, दर्द
करना, ३ कड़ा होना ।

प्रा० अकड़ैत (अकड़ना) गु० बांका,

झैला, घमंडी, अभिमानी, शेखीबाज ।

सं० अकण्टक (अ=नहीं + कण्ट-
क=कांटा) गु० शत्रुहीन, निरुपाधि,
चैनसे, बेखतर, बेखरखशा ।

प्रा० अकथ (सं० अकथ्य, अ=नहीं,
कथ्=कहना) गु० जो कहनेमें न
आवे, जिसका वर्णन न होसके ।

सं० अकथनीय (अ + कथ् + अ-
नीय) र्ममं० जो कहने योग्य न हो,
वयानसे बाहर ।

प्रा० अकनि (सं० आकर्ण्य, आ=
चारोंओरसे, कर्ण=पैठना) धा०
सा० अव्य० सुनकर ।

सं० अकम्पन (अ=नहीं, कम्प=
कांपना) गु० दृढ़, कठोर,
मजबूत, पु० राक्षसविशेष ।

प्रा० अकरन (सं० अ + करण, कृ=
करना) अयोग्य, बिना हथियार,
बेसवव ।

प्रा० अकरा (सं० अनर्घ, अन्=
नहीं, अर्घ=मोल होना) गु० महंगा,
बहुत मोलका, बढ़िया, बहुमूल्य,
कीमती ।

सं० अकर्म (अ=नहीं वा बुरा, कर्म
=काम) पु० बुराकाम, पाप, अधर्म,
अपराध, बुराई, कुकर्म, कारबद ।

सं० अकर्मक (अ=नहीं, कर्म=कर्म-
कारक) गु० ऐसी क्रिया जिसमें
कर्म न हो जैसे आना, रहना
आदि, फेल लाजिमी ।

सं० अकल (अ + कला) गु०
अङ्गहीन, परमात्मा ।

प्रा० अंकवार } स्त्री० गोद, गोदी,
अंकवार } बगल, कांख, २
छाती ।

प्रा० अंकवारभरना बोल० गले
लगाना, गोदमें लेना, मिलना ।

अ० अकस (अकस=उलटा) पर-
छाई, वैर, विरोध, अदावत ।

प्रा० अकसर गु० अकेला, २ तनहा,
बहुधा ।

सं० अकस्मात् (अ=नहीं, कस्मात्=
किससे वा किसकारण) क्रि० वि०
अचानक, अनचिते, अकारण,
एकाएक, संयोग से, दैवात्,
इत्तिफाकन् ।

प्रा० अकाज (सं० अकार्य, अ=
नहीं, कार्य=काम) र्म० पु०
बिगाड़, हानि, घटी, घाटा, अनरथ,
नुकसान ।

सं० अकाण्ड (अ + काण्ड) गु०
कुसमय, वेवक, अचानक, बेफ़्तल ।

सं० अकापट्य भा० पु० निश्चल-
ता, ईमानदारी, बेमक ।

प्रा० अकाम (सं० अकर्म वा
अकार्य) वृथा, निष्फल, बेफायदे,
२ इच्छारहित, ३ कामहीन, ४ बे
मुहब्बत, बे उल्फत ।

सं० अकाल (अ=नहीं वा बुरा,
काल=समय) पु० मँगी, काल,

कुसमय, दुकाल, दुर्भिक्ष, कहत, २
गु० विनसमयका, बेचतु, बेफ़्तल ।

सं० अकिञ्चन गु० निर्धन, तिही-
दस्त, मुफ़लिस ।

प्रा० अकीरति (अ + कीर्ति, कृत्
=गाना) भा० स्त्री० अयश, बदनामी ।

प्रा० अकुण्ठा (सं० अ + कुण्ठ=
गुठिला) गु० नाशहीन, तीक्ष्ण,
तेज, पैना ।

सं० अकुल गु० कुलटुट, नीच, २ अशिव
शिव, बे हसब नसब ।

प्रा० अकुलाना (सं० आकुल) क्रि०
अ०, घवराना, दुखीहोना, व्या-
कुलहोना, थकना, मुजतरिबहोना,
परेशान होना ।

सं० अकुलीन (अ=नहीं, कुलीन=
अच्छे घरानेका) गु० नीच, कुजात,
कुलहीन, कमीना ।

प्रा० अकेला (सं० एक) गु० अकेला,
केवल, निराला, तनहा ।

सं० अकूर (अ=नहीं, कूर=कठोर)
गु० कोमलस्वभाव, नम्र, नर्मदिल,
पु० श्रीकृष्णका चचा और भित्र ।

सं० अक्ष (अक्ष=फैलना) पु० पहिया,
२ धुरी वा कील, ३ पांसा, ४
जुआ, ५ गाड़ी, रथ, ६ आंख, ७
रुद्राक्ष, ८ बहेड़ा, ९ सर्प, १० गरुड़,
११ रावणका पुत्र, १२ आत्मा ।

सं० अक्षत (अ=नहीं, क्षत=टूटा हुआ
क्षण=नाशकरना, तोड़ना) गु० पु०

बिनटूटा चावल जो पूजाके काममें आता है, बिनाटूटाहुआ ।
 सं० अक्षय (अ=नहीं, क्षय=नाश, क्षि=नाशहोना) गु० अमर, चिरं-जीव, स्थिर, लाजवाल ।
 सं० अक्षर (अ=नहीं, क्षर=नाश होना) पु० अकारादिवर्ण, आखर, हर्फ, २ ब्रह्म, गु० जिसका नाश न हो, अविनाशी ।
 सं० अक्षांश (अक्ष=पृथ्वी की कील, अंश=भाग) पु० पृथ्वीके उत्तर वा दक्षिण केन्द्रतक नब्बे नब्बे अंशपर रेखा, अर्जुलबलद, लैटीच्यूड ।
 सं० अक्षि (अक्ष=फैलना) स्त्री० आंख, चरम ।
 सं० अक्षोभ (अ + क्षुभ=डरना) गु० निर्भय, बेखौफ ।
 सं० अक्षौहिणी (अक्ष=रथ, ऊ-हिणी=भीड़, ऊह=तर्ककरना) स्त्री० सेना जिसमें १०६३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २७८७० हाथी हों ।
 प्रा० अखड़ गु० गँवार, अनसीखा, अनघड़, जंगली ।
 सं० अखण्ड (अ=नहीं, खण्ड=टुकड़ा) गु० पूरा, सारा, सब, सम्पूर्ण, तमाम ।
 सं० अखण्डित (अ=नहीं, खण्डित=टूटाहुआ) गु० पूरा, बिनटूटा, सारा, तमाम ।

प्रा० अखाड़ा } पु० मल्लों के कुश्ती
 अखारा } करनेकी जगह, सभा ।
 सं० अखिल (अ=नहीं, खिल=नाश, खिल=कण, कण=लेना) गु० पूरा, सारा, सब, सम्पूर्ण, कुल ।
 प्रा० अखैवृक्ष } (सं० अक्षयवृक्ष,
 अक्षैवृक्ष } अक्षय=अमर, वृक्ष=पेड़) पु० ऐसा पेड़ जिसका कभी नाश न हो, दरख्त लाजवाल ।
 सं० अग (अ=नहीं, गम्=चलना वा जाना) पु० पहाड़, २ वृक्ष ।
 सं० अगणित (अ=नहीं, गण=गिनना) गु० अनगिनत, अपार, असंख्यात, बेशुमार ।
 सं० अगद (अ + गद=बोलना) गु० गूंगा, २ नीरोग, पु० ओषधि वा दवा ।
 प्रा० अगम (सं० अगम्य, अ=नहीं, गम्य=जानेयोग्य, गम्=जाना) गु० नहीं जाने योग्य, विकट, औघट, अपहुँच, दुर्गम, २ गहरा, अथाह ।
 प्रा० अगर (सं० अगुरु, अ=नहीं, गुरु=भारी) पु० एकप्रकारकी सुगंधित लकड़ी ।
 प्रा० अगरोवाला (अगरोहा एक जगहका नाम जो दिल्लीके पश्चिम की ओर है) पु० बनियोंकी एक जाति जो अगरोहा से निकले हैं ।
 प्रा० अगला (अग्रय, अग्र=आगे) गु० आगेका, पहलेका, पहला, २ मुखिया, प्रधान ।

प्रा० अगलौन गु० गिनती में पहला, अव्वल ।

प्रा०अगवा } (सं० अग्रम वा
अगुवा } अग्रगामी, अग्र=
आगे, गम्=जाना) गु० आगे चलने
वाला, २ मार्ग बतलानेवाला पु०
दूत, अगवानी ।

सं० अगस्ति (अग=पहाड़ अस्=
फेकना) पु० एक ऋषि का नाम
जो मित्रावरुणका पुत्र था जिस
ने विन्ध्याचलपहाड़को गिरादिया
था कहते हैं कि यह ऋषि घड़े से
जन्मा था और जब समुद्रपर कोप
किया था तो सारे समुद्र को पी
गया, एक वृक्ष का नाम, ३ एक
तारे का नाम है ।

सं०अगस्त्य (अग=पहाड़, विन्ध्या-
चल, स्तयै=शब्दकराना) पु० अ-
गस्ति ऋषि ।

प्रा०अगहन (सं०अग्रहायण, अग्र=
पहले, हायन=बरस, हा=झोड़ना
अर्थात् पुरानी रीति से बरस का
पहला महीना) पु० मंगसर, मृग-
शिर, बरसका आठवां महीना ।

प्रा०अगहुड़ गु० अगला, अव्वल ।

प्रा०अगाऊ (सं०अग्र=आगे) क्रि०
वि०अगाड़ी, आगे, पहले, सामने ।

प्रा० अगाऊजाना बोल० सामने
जाना, किसी के मिलनेको जाना ।

प्रा० अगाड़ी (सं० अग्र=आगे)

क्रि० वि० आगे, सामने और
बढ़के, स्त्री०रस्सी जिससे घोड़े के
अगले पैर बांधते हैं, २ अगला
हिस्सा, अगवाड़ा, आगा ।

प्रा०अगाड़ी पिछाड़ीलगाना बोल०
रोकना, बन्दकरना (घोड़ेको), घोड़े
के अगले पिछले पैर बांधना ।

प्रा०अगाड़ीमारना बोल० मोहरा
मारना, बैरी की अगली सेना
को हराना ।

सं०अगाध (अ=नहीं, गाध=थाह,
जगह, गाध=ठहराना) गु० अथाह,
बहुतही गहरा, बेपाँयाँ ।

प्रा० अगिया पु० एक पक्षी वा
कीड़ा का नाम ।

सं० अगुण (अ=नहीं, गुण=हुनर,
विद्या, वा रज, तम, सत ये तीन
गुण) गु० निर्गुणी, बेहुनर, २ नि-
र्गुण, ब्रह्म ।

सं०अगेन्द्र (अग=पहाड़ + इन्द्र=
राजा, पु० सुमेरु, २ हिमालय ।

सं०अगोचर (अ=नहीं, गोचर=
इन्द्रियों के सामने, गो=इन्द्री, चर=
चलना) जो देखने में नहीं आवे,
अदृश्य, अलख, गायब ।

प्रा०अगौनी (सं० अग्रगमन, अग्र=
आगे, गमन=जाना) स्त्री० मिलाप
के लिये आगेजाना, पेशवाईकरना ।

प्रा० अगौनीकरना बोल० दुलहा
के मिलने के लिये सामने जाना,

बरात के सामने जाना, मिलनी करना ।
 सं० अग्नि (अग्नि=जाना जो ऊपर जाती है) स्त्री० आग, आगी, अनल,
 २ दक्षिण पूर्वकोनका दिक्पाल ।
 सं० अग्निकोण (अग्नि=आग, कोन =खूंट वा गोशा) स्त्री० पूर्व दक्षिण के बीच का कोन जिसका स्वामी आग है ।
 सं० अग्निक्रीड़ा (अग्नि + क्रीड़ा = खेलना) भा० स्त्री० आतशबाजी ।
 सं० अग्निचूर्ण (अग्नि + चूर्ण = पीसना) र्म० पु० वारूढ़ ।
 सं० अग्निबाण (अग्नि + बाण = तीर) पु० आगका तीर ।
 सं० अग्निसंस्कार (अग्नि + संस्कार = पवित्रता) पु० मुर्दे को आग देना, जलाना, दाग देना ।
 सं० अग्निहोत्री (अग्नि + होत्री = होम करनेवाला) क० पु० अग्नि-पूजक, होम करनेवाला, सदा आग रखनेवाला, आतशपरस्त ।
 सं० अग्र (अग्नि=जाना) गु० आगे, पहले, मुख्य, प्रधान, मुखिया, पहला ।
 सं० अग्रगण्य (अग्र=आगे, गण्य = गिना जाय, गण = गिनना) र्म० सबसे पहला और बहुत अरुद्धा गिना जाय, प्रधान, मुखिया, मुख्य ।
 सं० अग्रगामी (अग्र=आगे, गामी =

चलनेवाला, गम्=जाना) क० पु० सबसे आगे चलनेवाला, अग्रुआ, सरदार, प्रधान, नायक, मुखिया, पेशवा ।
 सं० अग्रज (अग्र=आगे, जन्=पैदा होना) पु० बड़ा भाई ।
 सं० अग्रदूत (अग्र=आगे, दु=चलना दूत=चलनेवाला) क० पु० नक्कीब, जो आगे सवारीके तारीफ करता चलता है ।
 सं० अग्रसर (अग्र=आगे, सृ=जाना) गु० आगे चलनेवाला, अग्रगामी पु० सरदार ।
 सं० अग्रिम गु० अगौड़ी, पेशगी ।
 सं० अघ (अघ=पाप करना) पु० पाप, अपराध, अधर्म, गुनाह, २ दोष, चूक, दुःख ।
 सं० अघवानि (अघ=पाप, खानि = उत्पत्तिस्थान, खन्=खोदना) गु० पाप की खानि, पापी, गुन-हगार ।
 सं० अघटित (अ + घटित, घट = होना वा चेश करना) गु० अयोग्य, अनहोनी, नाशुदनी, गैर-मुमकिन ।
 सं० अघमर्षण (अघ=पाप, मर्षण मृष=छुटाना) भा० पु० पापना-शक मंत्र जो सन्ध्योपासन में पढ़ा जाता है ।
 प्रा० अघाई (अघाना) भा० स्त्री०

पेटभराव, तृप्ति, आसूदगी ।
 प्रा० अघाना क्रि० अ० पेट भर
 जाना, ढकना, अफरना, भरपूर
 होना, तृप्त होना, आसूदा होना ।
 सं० अघासुर (अघ=पाप, असुर=
 राक्षस) पु० एक राक्षसका नाम
 जिसको कंसने श्रीकृष्ण के मारने
 के लिये भेजा था ।
 सं० अघोर (अ=नहीं, घोर=डरावना
 अर्थात् शांत वा जिससे अधिक
 कोई डरावना नहीं) पु० शिव,
 गु० डरावना, भयानक ।
 प्रा० अघोरी (सं० अघोर) गु०
 अघोरपंथी, जो सब चीज बल्कि
 मैला और मुर्दा भी खाते हैं ।
 सं० अंक (अङ्क=चिह्न करना, गिनना)
 पु० आंक, चिह्न, संख्या, संकेत,
 नम्बर, २ गोद ।
 प्रा० अंकना (सं० अङ्क=चिह्न करना
 क्रि० स० छापना, मोहर देना,
 लिखना, २ मोलकरना, जांचना ।
 सं० अंकविद्या (अङ्क=संख्या, विद्या)
 स्त्री० गणितविद्या, हिसाब ।
 प्रा० अंकाना (सं० अङ्क=चिह्न
 करना) क्रि० स० मोल ठहराना,
 जचाना, परखाना ।
 सं० अंकित (अङ्क=चिह्न करना)
 र्भ० चिह्न किया हुआ, आंका
 हुआ, मोल ठहराया हुआ, जांचा
 हुआ, लिखा हुआ ।

सं० अंकुर (अङ्क=चिह्न करना वा
 जाना) पु० अंखुआ, आंकुर,
 कोपल, गाछी, फुनगी ।
 सं० अंकुश (अंक=चिह्न करना) पु०
 लोहे का कांटा जिससे हाथी को
 चलाते हैं, आंकुश, आंकड़ी ।
 प्रा० अँकोर पु० घूस, रिशवत ।
 प्रा० अँग्विया (अक्षि) स्त्री० व० व०
 आंखें ।
 सं० अङ्ग (अङ्ग=चिह्न करना) पु०
 शरीर, देह, शरीर का एक भाग,
 अवयव, अङ्गो, २ देशविशेष वा
 भागलपुर ।
 सं० अंगजनित (अंग=शरीर +
 जनित=उत्पन्न, जन्=पैदाहोना)
 क० पु० देहसे पैदा ।
 प्रा० अङ्गड़ाई (सं० अङ्ग) भा० स्त्री०
 देह मरोड़ना, जम्हाई ।
 सं० अङ्गण { (अंगि=जाना) पु०
 अङ्गन { आँगन, अँगनाई, चौक
 चौगान, आँगन, सहन ।
 सं० अङ्गद (अङ्ग=शरीर, दै=शुद्धकर-
 ना, वा, दा=देना) पु० बहूँटा, भुज-
 बन्द, बाजूबन्द, २ बालि वानरका
 बेटा ।
 सं० अङ्गना (अंग=शरीर, अर्थात्
 सुन्दर शरीरवाली) स्त्री० सुन्दर स्त्री,
 सुन्दरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई ।
 प्रा० अङ्गना, पु० { (सं० अंगन)
 अङ्गनाई, स्त्री० { आँगन, चौक ।

सं० अङ्गन्यास (अंग=शरीर, न्यास= धरना) भा० पु० मंत्र पढ़कर अंग स्पर्श करना ।

सं० अङ्गपक्ष पु० सहायक, मददगार ।

प्रा० अङ्गरखा (सं० अंगरक्षा, अंग= शरीर, रक्षा=वचाना) पु० चपकन, पहनने का एक कपड़ा ।

प्रा० अङ्गरी स्त्री० कवच, बखतर ।

प्रा० अंगुली (सं० अंगुली, अंग= चिह्नकरना, गिनना)
अंगुरी } स्त्री० हाथका वा पांव
अंगुलि } का अंग, हाथ पैर

की अंगुली ।

प्रा० अंगुली काटना बोल० अचम्भे में होना, अचम्भा करना ।

सं० अङ्गव (अंग + अव=रक्षाकरना) पु० मेवा ।

प्रा० अङ्गवनिहारा गु० सहनेवाला, बरदाश्त करनेवाला ।

प्रा० अङ्गा (सं० अंग=शरीर) पु० अंगरखा, कुरता, कुरती ।

सं० अङ्गाङ्गीभाव भा० पु० शारीरक सम्बन्ध, वाहमी मदद ।

सं० अङ्गार (अंग=चिह्न करना) पु० अंगारा, जलता हुआ कोयला ।

प्रा० अङ्गारा (सं० अंगार) पु० जलता हुआ कोयला, अंगार ।

प्रा० अङ्गारोंपरलोटना बोल० डाहसे जलना, दुखपाना, कलपना ।

प्रा० अङ्गिया (सं० अंगिका, अंग=

शरीर) स्त्री० चोली, कांडुली, कंचुकी ।

सं० अङ्गिरा (अंगिरस, अंगि= जाना) पु० एक ऋषि का नाम जो ब्रह्मा के मुँह से पैदा हुआ ।

सं० अङ्गी (अंग + ई) क० पु० शरीर वाला ।

सं० अङ्गीकार (अंग=स्वीकार, कृ= करना) भा० पु० मानना, स्वीकार, अंगेजना, कबूल, मंजूर ।

प्रा० अङ्गीकारकरना बोल० मानना, स्वीकार करना, अंगेजना, मंजूर करना ।

प्रा० अङ्गीठी } स्त्री० आग रखने
अङ्गेठी } का बर्तन, आगकी बरोसी, कांगड़ी ।

सं० अंगुल (अङ्ग=चिह्न करना) पु० आठ जौ का नाप, एक गिरह का तीसरा हिस्सा ।

सं० अंगुलित्राण (अंगुलि + त्राण रक्षा) हाथका मोजा, दस्ताना ।

प्रा० अंगूठा (सं० अंगुष्ठ, अंगु=हाथ, स्था=ठहरना) पु० मोटी अंगुली ।

प्रा० अंगूठी (सं० अंगुलीय) स्त्री० मुँदरी, छल्ला, अंगुरी में पहनने का गहना ।

प्रा० अङ्गोछा (सं० अङ्ग=शरीर, उच्छ=बांधना वा अङ्ग पोंछना) पु० गमछा, शरीर पोंछने का कपड़ा ।

सं० अंघ्रि (अधि=जाना) पु० पांव,

पैर, २ दृक्ष की जड़ ।
 सं० अच पु०स्वर (अच=गुप्तकरना)
 छिपाकर करना ।
 प्रा० अचगरी स्त्री० अनुचित काम,
 धींगार्थीगी, अत्याचार ।
 सं० अचञ्चल (अ=नहीं + चञ्चल=
 चपल) गु० स्थिर, कायम ।
 प्रा० अचंभा { (सं० आश्चर्य) पु०
 अचरज { आश्चर्य, विस्मय,
 ताज्जुब ।
 सं० अचर (अ=नहीं, चर=चलना)
 गु० नहीं चलनेवाला, अचल, अटल ।
 सं० अचल (अ=नहीं, चल=चलना)
 गु० नहीं चलनेवाला, ठहराहुआ,
 अटल, पु० पहाड़, पर्वत ।
 सं० अचला स्त्री० पृथ्वी, धरती,
 भूमि, जमीन ।
 प्रा० अचानक { (सं० अकस्मात्)
 अचानचक { कि० वि० एका-
 एकी, संयोग से, अनुचित, विन
 कारण, दैवयोग से, दकञ्चतन् ।
 प्रा० अचाना { (सं० आचमन, आ,
 अचवाना { चमु=खाना) कि०
 सं० खाने के पीछे मुँह साफ करना,
 आचमन करना ।
 प्रा० अचार (सं० आचार, आ, चर=
 चलना) भा० पु० चलन, चाल-
 चलन, रीतिभांति, व्यवहार,
 धर्मव्यवहार, तरीका ।
 सं० अचिन्त (अ=नहीं, चित्ति=

सोचना) गु० अचेत, बेसुध, निर्बुद्धि ।
 सं० अचिर (अ=नहीं + चिर=देर)
 तुरन्त, जल्द ।
 प्रा० अचीता (सं० अ=नहीं, चित=
 सोचना) गु० विनचाहा, २ (सं० अ=
 नहीं, चित, बेल बूटा वा तसवीर)
 विन तसवीर वा बेल बूटों के ।
 प्रा० अचेत (सं० अचेतस्, अ=नहीं,
 चित=सोचना) गु० बेसुध, निर्बुद्धि,
 सुन, मूर्च्छित, बेहोश ।
 प्रा० अचेत होना बोल० बेसुध
 होना, सुन होजाना, मूर्च्छा खाना,
 मूर्च्छित होना ।
 प्रा० अचैन (सं० अ=नहीं, चैन=
 सुख) गु० बेकल, व्याकुल, दुखी,
 बे आराम ।
 सं० अच्युत (अ=नहीं, च्युत=गिरना)
 गु० ठहरा हुआ, अटल, अचल,
 नित्य, अमर, स्थिर, पु० विष्णु
 का नाम ।
 प्रा० अच्छुना { (सं० अस्=होना)
 अच्छुना { कि० अ० जीता
 रहना, होना, रहना ।
 जैसे “तुमहिअछतअसहालहमारी”
 “सुखतजिभइउँशोकअधिकारी”
 तुलसीकृत रामायण ।
 “अच्छतपतिभभूतिकिनलाई”
 “कहो कहाँकी रीति चलाई”
 प्रेमसागर ।
 प्रा० अच्छुर (सं० अक्षर) पु० आखर,

वर्ण, हर्फ, अक्षर, अकार आदि
वर्ण, २ नाशरहित ।

प्रा० अच्छा (सं० अच्छ, अ=नहीं,
छो=काटना) गु० भला, उत्तम,
सुन्दर, स्वच्छ, साफ, मनोहर, चंगा ।

प्रा० अच्छाकरना बोल० चंगा क-
रना, भला चंगा करना, बीमारी
से चंगा करना ।

प्रा० अच्छालगना बोल० मोहना,
फवना, खुलना, पसन्द आना, भाना ।

प्रा० अच्छाहोना बोल० चंगाहोना,
भला चंगाहोना, बीमारी से आ-
राम पाना ।

प्रा० अच्छेसे अच्छा बोल० सबसे
अच्छा, उत्तम, बहुतही अच्छा, श्रेष्ठ ।

प्रा० अच्छतानापछताना बोल०
क्रि० अ० पछताना, पस्तावाकरना,
पश्चात्ताप करना, अफसोस करना ।

प्रा० अच्छूता (सं० अ=नहीं हिं०
छूना) गु० नहीं छुआहुआ जो चीज
जूठी न हो, पवित्र, देवता अथवा
ऋषिमुनिके लिये शुद्धभोगआदि ।

प्रा० अज { (सं० अज, इदम्, यह)
आज } क्रि० वि० आजकादिन,
वर्त्तमान दिन ।

सं० अज (अ=नहीं, ज=पैदाहुआ,
जन्=पैदाहोना, वा अ=विष्णु, ज=
पैदाहुआ) पु० ब्रह्म, विष्णु, ब्रह्मा,
शिव, जीव, २ राजा दशरथ के
बाप का नाम ।

सं० अज (अज्=चलना) पु० बकरा,
मेषराशि ।

सं० अजा (अज्=चलना) स्त्री०
बकरी, २ माया ।

सं० अजगर (अज=बकरा, गर=
निगलनेवाला, गृ=निगलना) पु०
बड़ासांप, अजदहा ।

सं० अजगव (अजगु=शिव, अजो-
ऽजन्मा गौर्यस्य असौ अजगुः
शिवः तस्य धनुः अजगवं आजगवं
वा) न० शिवका धनुष ।

सं० अजय (अ=नहीं, जि=जीतना)
गु० जिसकी जीत नहीं हुई हो, २
जो जीतानहींजाय, अजीत, स्त्री० हारा ।

सं० अजर (अ=नहीं, जरा=बुढ़ापा
जृ=बूढ़ा होना) गु० जो बूढ़ा न
हो सदा जवान बनारहे ।

प्रा० अजहूँ { (अज=आज, हू=
अजहूँ } भी, तक) क्रि० वि०
अवभी, आज भी,
अजो } अवतक, आजतक ।

प्रा० अजान { (सं० अज्ञान) गु०
अनज्ञान } मूर्ख, अनसमझ,
अवूझ ।

सं० अजामिल एक पापी ब्राह्मण
का नाम जो कन्नौज में रहताथा जि-
सके पुत्र का नाम नारायण था मरते
समय नाम लेनेसे तरगया ।

सं० अजिन (अ=नहीं, जित=जी-
तना) गु० जो जीता नहीं जाय, अपेल,

बली, सबको जीतनेवाला ।	सं० अज्ञानी (अज्ञान) गु० मूर्ख,
सं० अजिन (अज्=जाना वा च- मकना) पु० मृगछाला, हरिण की खाल जिसपर ब्रह्मचारी और संन्यासीलोग बैठा करते हैं ।	अजान, अबूझ, अनसमझ, बेव- कूफ, नादान ।
सं० अजिर (अज्=जाना) पु० आँगन, चौक, अँगना, अँगनाई ।	सं० अञ्चल (अञ्च्=जाना वा माँगना) पु० अंचल, आंचल, कपड़े का किनारा ।
प्रा० अजीन (सं० अजित) गु० सब को जीतनेवाला, बली, जो जीता नहीं जाय ।	सं० अञ्जन (अञ्ज्=आंजना, सुरमा लगाना) पु० सुरमा, काजल ।
सं० अजीर्ण (अ=नहीं, जीर्ण=पु- राना, जृ=पुराना होना, पचना) गु० अपच, नहींपचना, हजम न होना ।	सं० अञ्जना (अञ्ज्=शोभना) स्त्री० हनुमान् की मा ।
प्रा० अयोध्या (सं० अयोध्या, अ= नहीं, युद्ध=लड़ना अर्थात् जहाँ कोई लड़नेको नहीं आसक्ता) स्त्री० अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी ।	सं० अञ्जलि (अञ्ज्=मिलाना) स्त्री० दोनों हाथों का मिलाना, हाथ का सम्पुट, दोनों हाथों को इस तरह से मिलाना कि बीच में जगह खाली रहे जिसमें पानी आदि लिया जाय, २ एक तरहका नाप, इतनी चीज कि दोनों हाथों में अटसके ।
सं० अज्ञ (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) गु० अजान, अनजान, अनसमझ, अबूझ, मूर्ख, बेवकूफ ।	सं० अञ्जसा (अञ्ज्=जाना, सा= साधारण) २ शीघ्र, सारा ।
सं० अज्ञात (अ=नहीं, ज्ञात=जाना हुआ, ज्ञा=जानना) गु० अन- जाना, नहीं जाना हुआ, २ अस- मझ, मूर्ख ।	फ्रा० अञ्जुमन स्त्री० सभा, मंडली ।
सं० अज्ञान (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) गु० मूर्ख, अजान, अनजान, असमझ, अबूझ, स्त्री० मूर्खता, बेवकूफी ।	प्रा० अञ्भा (अन्=नहीं + अध्याय= पढ़ना) छुट्टी तातील ।
सं० अज्ञानता (अज्ञान) भा० स्त्री० मूर्खता, अज्ञानपन, बेवकूफी, ना- फहमी ।	प्रा० अटक (अटकना) स्त्री० रोक, रुकाव, आड़, २ सिंधु नदीका नाम ।
	प्रा० अटकना क्रि० स० रोकना, बंदकरना, क्रि० अ० रुकना, बंद होना, ठहरना, रहना ।
	प्रा० अटकल (अटकलना) स्त्री० अनुमान, अंदाजा, कूत ।
	प्रा० अटकलपच्चू बोल० बे

अंदाज, वे हिसाब, ऊटक नाटक,
वे ठौर ठिकाने, योंहीं ।

प्रा० अटकलना क्रि० स० अंदाजा
करना, अनुमान करना, सोचना,
बिचारना, कूतना ।

प्रा० अटका पु० श्रीजगन्नाथ के
प्रसादके लिये भात बनाने का
मिठी का वरतन ।

प्रा० अटकाना क्रि० स० रोकना,
ठहराना, बँकना, बंदकरना ।

प्रा० अटकाव (अटकाना) भा०
पु० रोक, रुकाव, प्रतिबन्ध ।

प्रा० अटखेल } (सं० अटखेला
अठखेल } अट=बहुत, खेल=
खेल) गु० चंचल
खिलाड़, खिलाड़ी, शोख ।

प्रा० अटखेली } (सं० अटखे-
अठखेली } ला) स्त्री० चंच-
लता, खिलाड़-
पन, ठिठाई, चंचलाई, शोखी ।

सं० अटन (अट=फिरना) भा०
पु० फिरना, चलना, भ्रमण, यात्रा,
घूमना, सफर, सैयाही, २ अटारी ।

प्रा० अटना (सं० अट=फिरना,
जाना) क्रि० अ० समाना, भर
जाना, २ फिरना ।

प्रा० अटपट, पु० } गु० टेढ़ा,
अटपटी, स्त्री० } टेढ़ी, बांका,
अटपटांगी, स्त्री० } बांकी, टर्ग,
टर्ग, एढ़ी,

टेढ़ी, बेठिकाने, बेढंगी, कठिन,
व्यंगयुत, पेचीदा ।

सं० अटल (अ=नहीं, टल=घब-
राना) गु० अचल, जो टले नहीं,
ठहराहुआ, दृढ़, पायदार ।

सं० अटवि } (अट=जाना, फिर-
अटवी } ना) स्त्री० वन, जंगल ।

प्रा० अटा } (सं० अट, अट=ऊंचा
अटारी } होना, बढ़जाना या
निरादर करना) स्त्री० अटारी,
ऊपरकी कोठरी ।

प्रा० अटाला ढेर, असबाब, सा-
मान, खटला, सामग्री ।

प्रा० अटूट (सं० अ=नहीं, हिं०
टूटना) गु० बहुतही बहुत जो टूटे
नहीं, सम्चा, पूरा, कुल ।

प्रा० अटेरन (भा० स्त्री० चरखी,
आठी) २ घोड़े की एक चाल ।

सं० अटहास (अट=बहुत, हास
=हँसी) भा० पु० बहुत हँसना,
खिलखिलाकर हँसना, कहकहा
मारना ।

सं० अटालिका (अट=ऊंचाहोना
बढ़ना वा निरादर करना) स्त्री०
अटारी, अटा, ऊपरकी कोठरी,
वालाखाना ।

प्रा० अठतालीस } (सं० अष्टचत्वा-
अड़तालीस } रंशत्, अष्ट=
आठ, चत्वा-
रंशत्=चालीस) गु० चालीस और

आठ ।

प्रा० अठतीस } (सं० अष्ट=आठ
अड़तीस } त्रिंशत्=तीस) गु०
तीस और आठ ।

प्रा० अठवारा सं० अष्टवार, (अष्ट=
आठ, वार=दिन) पु० आठवांदिन,
२ हफ्ता, सप्ताह ।

प्रा० अठसठ } (सं० अष्टषष्टिः अष्ट
अड़सठ } =आठ, षष्टि=साठ)
गु० साठ और आठ ।

प्रा० अठहत्तर (सं० अष्टसप्ततिः
अष्ट=आठ, सप्तति=सत्तर) गु०
सत्तर और आठ ।

प्रा० अठाईस } (सं० अष्टविंशतिः
अट्ठाईस } अष्ट=आठ, विं-
शति=बीस) गु० बीस और आठ ।

प्रा० अठानवे (सं० अष्टनवति, अष्ट
=आठ, नवति=नव्वे) गु० नव्वे
और आठ ।

प्रा० अठारह (सं० अष्टादशः, अष्ट=
आठ, दशन्=दश) गु० दश और
आठ ।

प्रा० अठावन (सं० अष्टपञ्चाशत्,
अष्ट=आठ, पञ्चाशत्=पचास) गु०
पचास और आठ ।

प्रा० अठासी } (सं० अष्टाशीतिः,
अट्ठासी } अष्ट=आठ, अशीति
=अस्सी) गु० अस्सी और आठ ।

प्रा० अठोत्तरसौ (सं० अष्टोत्तरशत,
अष्ट=आठ, उत्तर=आगे, शत=सौ)

गु० एक सौ आठ ।

प्रा० अड़ भा० स्त्री० भगड़ा, विरोध,
हठ, जिद ।

प्रा० अड़ंग स्त्री० मंडी, दिसावर
की चीज़ का उतार, २ हठ, जिद ।

प्रा० अड़ना } क्रि० अ० रुकना,
अड़करना } थमना ।

प्रा० अड़बंगा गु० बांका, तिरछा,
बराबर नहीं, ऊँचानीचा, नाहमबारा ।

प्रा० अड़बड़ंग पु० बावलापन ।

प्रा० अड़सा पु० एक औषधि का
नाम, रूसा, वासा ।

प्रा० अडोल (सं० अ=नहीं, डुल्=
हिलना, झूलना, डोलना) गु० जो
नहीं हिलसके, अचल, अटल,
दृढ़, बेहकत ।

प्रा० अड़ोसपड़ोस पु० बोल० प-
ड़ोस, पासवसना, प्रतिवास ।

प्रा० अड़ु सेनाकी जगह, ठहरनेकी
जगह, छावनी, छतुरी ।

प्रा० अड़ाई (सं० अर्द्धद्वयः अर्द्ध=
आधा, द्वि=दो) गु० दो और
आधा ।

सं० अणि } (अण्=शब्द करना)
अणी } स्त्री० धार, नोक, बाह,
तीखीधार, तेजधार ।

सं० अणिमा (अणु=छोटा) स्त्री०
आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि,
जिससे बहुतही छोटा रूप बनाके
सब जगह जासके, छोटा बनजाने

की शक्ति, बहुतही सूक्ष्मता, बहुत बारीकी ।

सं० अणु (अणु=शब्द करना, जीना) पु० कन, कनिका, परमाणु, गु० बहुतही छोटा, महीन, सूक्ष्म, बारीक, खुरद, जर्ग ।

सं० अणुमात्र गु० छोटासा, जरासा । प्रा० अण्डा (सं० अण्ड=अंडा) पु० गोली, खेलने की गोली ।

सं० अण्ड (अम्=जाना, अर्थात् जिसमें से बच्चा निकलता है) पु० अंडा ।

सं० अण्डकटाह (सं० अण्ड + कटाह) पु० ब्रह्माण्ड ।

सं० अण्डज (अण्ड=अण्डा, ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० अण्डे से पैदा होनेवाले जानवर जैसे पखेरू, साँप, मछली, और गोह, गिरगिट, विसखपरा आदि ।

प्रा० अण्डा (सं० अण्ड) पु० पखेरू आदि के पैदा होने की जगह ।

सं० अतः क्रि० वि० इससे, इसलिये, लिहाजा ।

सं० अनएव क्रि० वि० इसीलिये, पस ।

सं० अतसी (अत्=जाना) स्त्री० तीसी, सन, अलसी ।

सं० अतत्त्वज्ञ (अ=नहीं + तत्त्व=मूल + ज्ञा=जानना) क० पु० मूल का न जाननेवाला, गलत-फहम, बेसमझ ।

सं० अतत्त्वज्ञता भा० स्त्री० नास-मभी, गलतफहमी ।

सं० अतन (अ=नहीं + तन=श-अतनु) रीर) गु० शरीररहित, पु० कामदेव ।

सं० अतन्द्रित गु० आलस्यरहित, सुस्त ।

सं० अतल (अ=नहीं + तल=थाह) गु० अथाह पु० नीचे के सात लोकों में से पहिला लोक ।

प्रा० अताई पु० गवैया, बजंत्री, बजानेवाला ।

सं० अति (अत्=जाना) गु० उप० बहुत, अधिक, बहुतही बहुत, बड़ा, बीताहुआ, होचुका, उलांघना, पारा ।

सं० अतिकाय (अति=बड़ी, काय=देह) पु० बड़ा शरीर, २ रावणका पुत्र जिसे लक्ष्मण ने मारा था अथवा गु० बड़ी देहवाला, दानवरूपी, भयानक ।

सं० अनिक्रम (अति=पार + क्रम=चलना) भा० पु० पारजाना, उल्लंघन, अपराध, जुर्म ।

सं० अनिक्रान्त (अति + क्रान्त, क्रम=चलना) क० पु० पार गया हुआ, बहुत बढ़ गया, सबकत पाया हुआ ।

सं० अनिधि (अत्=जाना अर्थात् जो एक जगह नहीं ठहरता फिरता रहता है) पु० पाहुना, महिमान,

२ अभ्यागत, योगी, संन्यासी ।
 सं० अतिथिभक्त (अतिथि + भक्त
 भज्=सेवा करना) क० पु० अतिथि-
 पूजक, महिमानपरस्त, मेजबान ।
 सं० अतिथिभक्ति भा० स्त्री० अ-
 तिथिसेवा, मेजबानी ।
 सं० अतिरिक्त (अति + रिक्त) गु०
 छूटा हुआ, सिवाय, अलावह ।
 सं० अतिरेक (अति + रेक, रिच्=जुदा
 होना) भा० पु० अधिकता, कसरत ।
 सं० अतिशय (अति=बहुत, शी=
 सोना) गु० बहुतही बहुत, अत्यन्त,
 अधिक, निहायत ।
 सं० अतिसार (अति=बहुत, सृ=
 जाना) पु० पेट चलना, संग्रहणी-
 रोग, पेटोखा रोग, पेट की बीमारी ।
 सं० अतीत (अति=बीता हुआ, इ=
 जाना) क० पु० बीता हुआ, हो-
 चुका, परे, गुजरा हुआ ।
 प्रा० अतीत } (सं० अतिथि) पु०
 अतीथ्य } योगी, संन्यासी ।
 सं० अतुल { (अ=नहीं, तुल=तो-
 अतुलित } लना) गु० जिसका
 प्रा० अतोल } तोल नहीं, अपार,
 जो तोला नहीं जाय, अप्रमाण,
 २ अनूप, उत्तम, जिसकी बराबरी
 न होसके ।
 सं० अत्यन्त (अति=उल्लाघना, अन्त=
 पार) गु० बहुतही बहुत, अतिशय,
 अधिक ।

सं० अत्यय (अति=पार + अय=
 जाना, इ=जाना) भा० पु० समाप्ति,
 नाश, अपराध, गुनाह ।
 सं० अत्याचार (अति=विरुद्ध +
 आचार=चलन) भा० पु० अन्याय,
 जुल्म, विद्वत् ।
 सं० अत्युक्ति (अति=बहुत, उक्ति=
 कहना, वच्=बोलना) भा० स्त्री०
 बहुत बढ़ावा देकर कहना, भूठी
 सराह करना, एक अलंकार का
 नाम, मुवालिगा ।
 सं० अत्र (इदम्=यह) क्रि० वि० यहाँ,
 इस जगह, इस ठौर ।
 सं० अत्रि (अद्=खाना वा बचाना)
 पु० सात ऋषियों में का एक ऋषि
 ब्रह्मा का बेटा ।
 सं० अथ (समुच्च० अव्य० फिर, उप-
 रांत) इसके पीछे, शुरू, आरंभ,
 इस तरह से ।
 सं० अथवा (अथ=फिर, वा, या)
 समुच्च० या, वा, किंवा, प्रकारा-
 न्तर ।
 प्रा० अथाई (सं० अ=नहीं, स्था=
 रहना) भा० स्त्री० जगह जहाँ
 लोग बातचीत और हँसी ठट्ठा
 करने के लिये इकट्ठे होते हैं, बैठक,
 २ सभा, जमाव ।
 प्रा० अथाह (सं० अ=नहीं, स्थान=
 जगह, वा अगाध) गु० गहरा,
 गंभीर, बहुतही गहरा, बेधाह ।

प्रा० अद् { (सं० अर्द्ध) गु० आधा ।
अध }

सं० अदन (अद्=खाना) भा० पु०
भोजन, खाना ।

सं० अदनीय (अद्+अनीय) र्म्म०
पु० भोजन योग्य, खर्दनी ।

अ० अदब कायदा, आचार ।

सं० अदभ्र गु० बहुत, पूर्ण ।

प्रा० अदमूआ { (सं० अर्द्धमरण,
अर्द्ध=आधा, मृ=
अदमरा { मरना) गु० बोल०
अधमूआ { बहुतही सुस्त,
अधमरा { बहुतही अशक्त,

आधामरा हुआ, नीम मुर्दा ।

प्रा० अदल बदल बोल० एराफेरी,
पलटा ।

प्रा० अदलाबदला करना बोल०
बदलना, पलटना, एक चीज के
पलटे में दूसरी चीज लेना ।

प्रा० अदहन (सं० आदहन आ=
अधिक, दहन=जलाना) पु० दाल
चावल अथवा और चीज पकाने
के लिये बहुतही गर्म पानी ।

सं० अदार (अ=नहीं, दारा=स्त्री)
पु० कल्याणभार्य, रँडुवा ।

सं० अदिति (अ=नहीं, दा=देना,
जो दुःख नहीं देवे वा, दो=काटना)
स्त्री० देवताओं की मा और दक्ष
की बेटी और कश्यप मुनि की स्त्री ।

सं० अदिन (अ=नहीं, वा बुरा, दिन=

समय) पु० बुरादिन, बुरी दशा,
खोटे दिन, खोटे ग्रह, कुदिन ।

सं० अदूरदर्शी क० पु० अल्पदृष्टि,
कोताह नज़र ।

सं० अदृश्य { (अ + नहीं, दृश=
अदृष्ट { देखना) गु० अलख,
जो देखने में न आवे, अगोचर,
गुप्त, अदेख ।

सं० अदेय (अ=नहीं, देय=देनेयोग्य,
दा=देना) गु० नहीं देने योग्य ।

सं० अद्धा अव्य० साक्षात्, सन्मुख ।

प्रा० अद्धी (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री०
आधीदमड़ी, २ एकप्रकार की तनजेब ।

सं० अद्भुत (अत्=अचंभा, भू=
होना वा, भा=चमकना) गु० अ-
नोखा, अपूर्व, अजीब ।

सं० अद्यापि (अद्य + अपि) क्रि०
वि० आजतक, अबतक ।

सं० अद्यावधि (अद्य + अवधि)
क्रि० वि० अभीतक, इस समयतक ।

प्रा० अद्रक (सं० आर्द्रक, आर्द्र=
गीला) पु० आदा, आद, कच्ची
सोंठ ।

सं० अद्रि (अद्=खाना) पु० पहाड़,
पर्वत, २ वृक्ष, पेड़, सात ।

सं० अद्वितीय (अ=नहीं, द्वितीय=
दूसरा) गु० केवल, निकेवल, एक
ही, २ अनूप, अतुल्य, लासानी ।

सं० अद्वैत (अ=नहीं, द्वैत=दूसरा)
गु० जिसके समान दूसरा नहीं है,

भेदरहित, वे मिश्र ।

प्रा० अधकपाली (सं० अर्द्धकपाल, अर्द्ध=आधा, कपाल=शिर)
स्त्री० अधशीशी, अधेशिर में पीड़ा ।

प्रा० अधवर (सं० अर्द्ध=आधा) गु०
आधीदूर, बीचमें, मध्य, दर्भियान ।

सं० अधम (अव=वचाना) गु०
नीच, कमीना ।

सं० अधमर्ण (अधम + ऋण) क०
पु० ऋणी, खादक, कर्जदार ।

सं० अधर (अ=नहीं, धृ=रखना)
पु० होठ, नीचेका होठ, २ बीच,
शून्य, स्वर्ग और धरती के बीच
की जगह, गु० नीच, कमीना,
छोटा, लघु ।

सं० अधरामृत (अधर=होठ, अमृत
=अमी) पु० होठों में की अमी ।

सं० अधर्म (अ=नहीं, धर्म=पुण्य)
पु० पाप, अन्याय, अपराध, अन्धेर,
बुराकाम, दोष, गुनाह ।

सं० अधर्मी (अ=नहीं, धर्मी=
धर्म करनेवाला) क० पु० पापी,
दुराचारी, अन्यायी, दुष्ट, दोषी,
अपराधी, बदकार ।

प्रा० अधवाड़ (सं० अर्द्ध=आधा)
पु० कपड़े का आधा थान, आधे
घर के लोग ।

सं० अधस् { अव्य० नीचे, तले ।
अधः }

प्रा० अधार (सं० आधार) भा० पु०

आसरा, आड़, २ खाना, आहार,
भोजन ।

सं० अधार्मिक (अ=नहीं, धार्मिक
=धर्मी) क० पु० अन्यायी, पापी,
दुष्ट, बुरा ।

सं० अधि उप० पर, ऊपर, ऊंचा,
२ मुख्य, प्रधान, ३ बहुत, अधिक,
४ सामने, ५ वशमें, यह उपसर्ग
अप का उलटा है ।

सं० अधिक (अधि=ऊपर) गु०
बहुत, विशेष, ज़ियादह ।

सं० अधिकता (अधिक) भा० स्त्री०
अधिकाई, बहुतायत, बढ़ती ।

सं० अधिकरण (अधि=ऊपर, कृ=
करना) पु० आधार, आसरा, २
व्याकरणमें सातवां कारक, जर्क ।

प्रा० अधिकाई (सं० आधिक्य, अ-
धिक=बहुत) स्त्री० बहुतायत, बढ़ती ।

सं० अधिकार (अधि=ऊपर, कृ=
करना) भा० पु० हक, बर्पाती,
२ योग्यता, स्वामीपन, ३ राज,
४ अस्तित्वार, ५ ओहदा, काम ।

सं० अधिकारी (अधिकार + ई)
क० पु० अधिकार रखनेवाला,
स्वामी, मालिक, धनी, वारिस,
हकदार, २ पुजारी, पण्डा ।

सं० अधिकृत र्म० पु० अधिकार पाया
हुआ, अधिकार किया हुआ, मक-
बूजा ।

सं० अधित्यका (अधि + त्यक्

- त्यज=छोड़ना) स्त्री०टीला, तराई,
 दामन कोह, २ कुडरी ।
 सं० अधिप { (अधि=ऊपर, पा=
 अधिपति) पालना) क० पु०
 राजा, मालिक, स्वामी, प्रभु ।
 सं० अधिमास (अधि=अधिक,
 मास=महीना) पु० मलमास,
 लौंद का महीना ।
 सं० अधिराज (अधि=ऊपर वा
 प्रधान, राजन्=राजा) पु० महाराज,
 राजाधिराज ।
 सं० अधिरूढ़ (अधि=ऊपर, रूढ़
 रूह=जमना) क० पु० आरूढ़,
 सवार ।
 सं० अधिवास (अधि + वास वस्=
 रहना) भा० पु० रहनेकी जगह,
 सकूनत ।
 सं० अधिवेशन (अधि=ऊपर, वे-
 शन विश=बुसना, जाना) बैठक,
 दरबार, इजलास ।
 सं० अधिष्ठाता (अधि=ऊपर, स्था=
 ठहरना) क० पु० स्वामी, मालिक,
 रक्षक, पालनेवाला, अध्यक्ष, मुखर,
 अगुवा ।
 सं० अधिष्ठान (अधि + स्थान) भा०
 पु० स्थिति, क्रयाम, मुक्ताम ।
 सं० अधीन (अधि + इत इ=जाना)
 र्म० पु० पदाहुआ, पठित ।
 सं० अधीनि (अधि + इति इ=
 जाना) भा० स्त्री० पढ़ना, अध्ययन,

- ख़ाँदगी ।
 सं० अधीन (अधि=पर अथवा वश
 इन=स्वामी) गु० बसमें, आज्ञा-
 कारी, दबेल, ताबेदार ।
 सं० अधीनता (अधीन) स्त्री०
 ताबेदारी, चाकरी, दबाव, हुक्म
 मानना ।
 सं० अधीर (अ=नहीं, धीर=धीरज
 वाला) गु० चंचल, उतावला,
 घबरायाहुआ, असंतोषी, चपल,
 अस्थिर, हड़बड़िया, चटपटा,
 जल्दबाज, वे सत्र ।
 सं० अधीरता (अधीर) भा० स्त्री०
 घबराहट, चंचलाहट, उतावली,
 वेसवरी, हड़बड़ी, चटपटी ।
 सं० अधीश { (अधि=ऊपर वा अ-
 अधीश्वर { धिक, ईश वा ईश्वर
 =स्वामी) पु० राजाधिराज,
 राजाओं का राजा, महाराज,
 शाहन्शाह ।
 सं० अधुना कि० वि० अब, इसवक्क ।
 प्रा० अधूरा (अधपूरा) गु० अधवना,
 अनवना, पूरानहीं, नामुकम्मिल ।
 प्रा० अधूराजाना बोल० कच्चाजा-
 ना, कच्चेबच्चे का गिरना ।
 प्रा० अधेड़ (अर्द्ध=आधा) गु०
 अधबूढ़ा, जिसकी आधी उमर बीत
 गई हो यह शब्द स्त्री के लिये
 बहुत वार बोलाजाता है ।
 प्रा० अधेन (सं० अध्ययन) भा०

पु० पढ़ना, पढ़ाई ।
 प्रा० अधेला (सं० अर्द्ध=आधा)
 पु० आधा पैसा, पैसेका आधा ।
 प्रा० अधेली (सं० अर्द्ध=आधा)
 स्त्री० आधा रुपया, अठनी, आठ
 आना ।
 सं० अधोमुख गु० नीचे मुख किये
 हुये, शिर झुकाये हुये, उदास,
 सरनगुं ।
 प्रा० अधौड़ी (सं० अर्द्ध=आधा)
 स्त्री० आधी खाल, मोटा और
 गाढ़ा चमड़ा जिसके जूते के तले,
 डोल, डोलची और घोड़े के साज
 आदि बनते हैं ।
 सं० अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अक्ष=
 फैलाना) पु० स्वामी, मालिक,
 प्रधान, मुखिया, मुख्य, अधिकारी ।
 सं० अध्ययन (अधि + इ=पढ़ना)
 पु० पढ़ना, पवित्र पोथियों का
 पाठकरना, ब्राह्मणों के षट्कर्म में
 का एक कर्म ।
 सं० अध्यवसाय (अधि + अव +
 सै=नाश होना) पु० उद्यम,
 उपाय, रोजगार ।
 सं० अध्यापक (अधि + इ=पढ़ना)
 पु० पाठक, गुरु, उपाध्याय, आ-
 चार्य, शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ाने-
 वाला ।
 सं० अध्यापन (अधि + इ=जाना)
 भा० पु० पढ़ाना, सबकु देना ।

सं० अध्याय (अधि + इ=पढ़ना)
 पु० पाठ, पर्व, सर्ग, प्रकरण, बाव,
 परिच्छेद ।
 सं० अध्यास (अधि + आस=बैठना)
 भा० पु० भाव, खयाल, सम्बन्ध,
 ताल्लुक, २ सत्य असत्य वस्तुकी
 जो अभेद प्रतीति है उसीका नाम
 अध्यास है ।
 सं० अध्यासीन (अधि + आसीन
 आस=बैठना) क० पु० बैठा हुआ ।
 सं० अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=
 देना अर्थात् जो सच्चा रस्ता बत-
 लाता है) पु० यज्ञ, होम, बलि-
 दान ।
 सं० अध्वा (अध्वन्=मार्ग) स्त्री०
 राह ।
 सं० अन्=निषेधवाचक अव्यय,
 संस्कृत में जिस शब्द का पहला
 अक्षर स्वर हो उसके पहले अ
 नहीं आता बल्कि ऐसी जगह पर
 अ को अन् होजाता है जैसे अन-
 न्त, पर हिन्दी में व्यंजन के पहले
 भी अन आता है जैसे अनदेखा ।
 अं० अन्कवनांत्यड वह नौकर
 जिन्हें सरकार नौकरी देने की
 जिम्मेदार नहीं ।
 प्रा० अनख (अनखाना) भा० स्त्री०
 रिस, कोप, क्रोध, गुस्सा, २ डाह,
 ईर्ष्या ।
 सं० अनख (अ + नख) नखहीन,

जिसके नख न हो ।

प्रा० अनखाना क्रि० अ० कोप करना, खिसियाना, क्रोध करना, गुस्सा होना, चिढ़ना, खुनसाना, खफाहोना ।

प्रा० अनगढ़, अनगढ़ा, पु० अनगढ़ी, स्त्री० (अन= नहीं, गढ़-ना=बनाना) गु०

अनबना, अड़वग, अनसीखा, नहीं गढ़ा हुआ ।

प्रा० अनगढ़ीबात बोल० बे ठिकाने बात, बे मेल बात, बे सिर पांव की बात, बेहंगीबात ।

प्रा० अनगणित, अनगिणत, अनगिणती (सं० अगणि-त, अ = नहीं, गण = गिनना) गु० अपार, बे

शुमार, असंख्यात, बहुत, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना (सं० अगणित) गु० नहीं गिना हुआ, बे गिना, २ अनगणित, अपार, बेशुमार, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना महीना बोल० स्त्री को गर्भ का आठवां महीना, जब लुगाई पेट से होती है उस समय का आठवां महीना ।

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=पाप) गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सादा, शद्ध. बेगनाह ।

प्रा० अनङ्ग (अन=नहीं, अङ्ग=देह) पु० कामदेव, एकवार महादेव ने अपनी तीसरी आंख की आग से कामदेव को जला दिया था उसी दिन से इसका नाम अनङ्ग हुआ, यमराज और श्रद्धा का पुत्र ।

प्रा० अनचाहत (अन=नहीं, चाहना) गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित ।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चित्=सोचना) गु० अचानक, एकाएक, अचीता ।

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु० नहीं जाना हुआ, २ निर्वुद्धि ।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि० वि० विनजाने, बे जाने बूझे, नहीं जानके, अजान ।

प्रा० अनजीवित (सं० अजीवित) क० पु० मृतक, मुर्दा ।

सं० अनडुह (अनः=छकड़ा + वह=लेजाना) पु० बैल ।

सं० अनड्वान् (सं० अनडुह) पु० बैल ।

प्रा० अनन (सं० अन्यत्र) क्रि० वि० और जगह ।

सं० अनन्त (अन=नहीं, अन्त=पार) गु० अपार, जिसका अन्त नहीं, असीम, बेहद, पु० शेषजी, शेष-नाग जिनके एक फनपर हिंदू लोग पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चांदह गांठका एक धागा जिसको भादों

सुदी १४ अर्थात् अनन्तचौदसके दिन पूजा करके हिंदूलोग अपने दहिने हाथ पर बांधते हैं, रे विष्णु, धरणी, नक्षत्र, जीव, ब्रह्म, लाङ्गतिहा ।

सं० अनन्य (अन्=नहीं, अन्य=दूसरा) गु० एकही, जिसको दूसरेका भरोसा नहीं ।

सं० अनपत्य (अन्=नहीं + अपत्य=पुत्र) पुत्रहीन, लावल्द ।

प्रा० अनपावनी (सं० अप्रापणीय) गु० जिसको कोई न पावे, दुर्लभ, अप्राप्त ।

प्रा० अनबनाव (अन=नहीं, बनाव=मेल) भा० पु० अनरस, बिगाड़, फूट, नाचाकी, ऐंठाऐंठी, नाङ्गित्ताकी ।

प्रा० अनवेधा (सं० अविद्ध, अ=नहीं व्यथ=बीधना) र्म० पु० अनवेदा, अवेधा, नहीं वेदा हुआ, नहीं बीधा हुआ ।

प्रा० अनबोल (अन=नहीं + बोल=बोलना) गु० चुपचार, अवाक, अबोल, अनबोला, चुपका, गुंगा ।

प्रा० अनभल (अन=नहीं, भला=अच्छा) पु० बुरा, दुख ।

सं० अनभिज्ञ (अन् + अभि + ज्ञा=जानना) गु० नादान, नावाक्कि ।

प्रा० अनमना (सं० अन्यमनस्, अन्य=दूसरा, मनस्=मन वा उन्म-

नस्, उत्=ऊपर, मनस्=मन) गु० घबराया हुआ, उदास, चिंता में, चिंतित, किकरमंद, मुतककिर ।

प्रा० अनमोल (अन=नहीं, मोल=कीमत वा सं० अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अमोल, बढ़िया, उत्तम, जिसका मोल न हो सके ।

प्रा० अनरस (अन=नहीं, रस=स्वाद) पु० अनवनाव, मित्रों के आपस में ऐंठाऐंठी, फूट, नाचाकी, बिगाड़ ।

प्रा० अनरीति (अन=नहीं, रीति=चाल) स्त्री० कुचाल, कुदंग, बुरीरीति ।

सं० अनर्थ (अन्=नहीं, अर्थ=मतलब, लाभ) गु० वृथा, बेफायदा, अनुचित, निरर्थक, अकारथ, निष्फल, बेमतलब, पु० हानि, नुकसान ।

सं० अनर्थकारी (अनर्थ + कारी) क० पु० हानिकारक, मुजिर ।

सं० अनल (अन्=नहीं, अल=पूरा होना, अर्थात् जिसमें चाहे जितना डालो पर पूर्ण नहीं होवे वा अन्=जीता, जिससे सब जीते हैं) पु० आग, आगी, अग्नि ।

सं० अनवश (अन्=नहीं, अवश=दोष) गु० निर्दोष, बेचूक, बेगुनाह, बेखता ।

सं० अनवधान (अन्=नहीं + अव=निश्चय + धा=धरना) भा० पु० आसक्तिरहित, बेतवज्जुह, बे मुहब्बत, बे इत्ताहिश ।

सं० अनवस्थित (अन् + अव +
स्था = ठहरना) गु० अचेत, बेखबर,
असावधान, गाफिल ।

प्रा० अनसिख } (सं० अशिक्षित
अनसीखा } अ = नहीं, शिक्षि-
त = सीखा) गु० अनपढ़ा, मूर्ख,
अज्ञान, गैर तालीमयाफ़ा ।

प्रा० अनसुना (अन = नहीं, सुनना)
गु० नहीं सुना, नहीं ध्यान दिया,
अनाकानी ।

प्रा० अनसुनी करना } बोल० कि-
सुनीअनसुनीकरना } सीकी बात
पर कुछ ध्यान नहीं देना, नहीं
सुनने का बहाना करना ।

प्रा० अनहित (सं० अहित, अ = नहीं,
हित = भला) क० पु० बैरी, द्वेषी,
बुरा करनेवाला, २ बुरा ।

प्रा० अनहोना (अन = नहीं, होना)
गु० नहीं होनेवाला, असंभव, गैर
मुमकिन ।

सं० अनाचार (अन् = नहीं, आचार =
चालचलन) भा० पु० बुरा चाल
चलन, कुचाल, कुरीति, बुरा व्यव-
हार, बदचलनी, बदचलन ।

प्रा० अनाज } (सं० अन्न) पु० अन्न,
नाज } नाज, गल्ला ।

प्रा० अनाड़ी (सं० अनार्य, अन् = नहीं,
आर्य = सभ्य) गु० गँवार, मूर्ख,
भोंदू, फूहड़, बेढौल, बेढंगा, सिख-
नौत, कच्चा ।

सं० अनाथ (अ = नहीं, नाथ = स्वामी)
गु० विन मालिक, विन मा बाप
का, मुरहा, यतीम, विन पतिकी
लुगाई, २ दुखी, दीन ।

सं० अनाथालय (अनाथ + आ-
लय) धि० पु० मुहताजखाना,
यतीमखाना ।

सं० अनादर (अन् = नहीं, आदर =
मान, आ + द = फाड़ना) पु० अप-
मान, हलकापन, बेइज्जती ।

सं० अनादि (अन् = नहीं, आदि = पह-
ले) गु० जिसका शुरुअ नहीं,
अविनाशी, सदा रहनेवाला ।

सं० अनामय (अन् = नहीं, आमय =
रोग, अम् = बीमार होना) गु०
नीरोग, भला चंगा, विन रोग, भा०
पु० अरोग्यता, नीरोगपन, नीरो-
गता, सेहत ।

सं० अनायास (अन् = नहीं, आयास
= मिहनत, आ = सब तरह में, यस् =
मिहनत करना) गु० विनमिहनत,
सहज, सुगम, भा० पु० सुगमता,
आसानी, चैन, सुख ।

सं० अनाहार (अन् = नहीं, आहार =
खाना) पु० उपास, लंघन, भूखा
रहना, फाकाकशी ।

सं० अनित्य (अ = नहीं, नित्य = सदा)
गु० जो सदा नहीं रहे, नाशवान्,
नाश होनेवाला, भूठा ।

सं० अनित्यता भा० स्त्री० अस्थि-

रता, फना, नापायदारी ।

सं० अनियत (अ=नहीं, नियत=निश्चित, नि + यम्) र्म० पु० अनिश्चित, संदिग्ध, इत्तिफाकिया ।

सं० अनिरुद्ध (अ=नहीं, निरुद्ध=रोका हुआ नि, रुद्ध=रोकना अर्थात् जो किसी से नहीं रोका जाय) पु० प्रद्युम्न का बेटा श्रीकृष्णका पोता और ऊषा का पति, कहते हैं कि अनिरुद्ध शत्रुघ्न का अवतार था, गु० जो रोका नहीं जाय ।

सं० अनिर्वचनीय (अ + निः + अनिर्वाच्या) वचनीय=कहने योग्य) जो कहने योग्य न हो, अकथ्य ।

सं० अनिशम् क्रि० वि० प्रतिदिन, रोजमर्रा ।

सं० अनिल (अन्=जीना) पु० पवन, हवा, वायु, बाव, बयार, बतास, संख्या ४६ ।

सं० अनिष्ट (अन् + इष्ट, इष्=चाहना) अप्रिय, अनिच्छित, खराब, बे चाहा ।

प्रा० अनी (सं० अणी) स्त्री० नोक, तीखी धार, २ सं० अनीक) स्त्री० फौज, सेना, दल, कटक ।

सं० अनीक (अन्=जीना अर्थात् जिससे रक्षा होती है) स्त्री० सेना, फौज, कटक ।

सं० अनीति (अ=नहीं + नीति=

अच्छा चलन) स्त्री० अन्याय, कुचाल, बुरा चलन ।

सं० अनीप (अनी=सेना, पा=रक्षा करना) क० पु० सेनापति, सरदार ।

सं० अनीह (अन्=नहीं + ईहा=सुध, इच्छा, चेष्टा) गु० जिसको कुछ चाह नहीं, चेष्टारहित, २ निर्गुण, बेरूप, ३ आलसी, ढीला, बोदा, अयोध्याके एक राजा का नाम ।

सं० अनीहा (अन् + ईहा) भा० स्त्री० उदासीनता, बेपरवाही ।

सं० अनु उप० पीछे, साथ, अनुसार, बराबर, पास, अनुकरण, नकल, हरएक, कम, थोड़ा ।

सं० अनुकथन (अनु=पीछे + कथ्=कहना) भा० पु० कहे के पीछे कहना, वारंवार कहना, ताईद करना ।

सं० अनुकम्पा (अनु + कम्प=कांपना) भा० स्त्री० दया, कृपा, मेहरबानी ।

सं० अनुकरण (अनु=नकल, कृ=करना) पु० नकल करना, अनुरूप

सं० अनुकूल (अनु=साथ, कूल=घेरना) गु० सहाय करनेवाला मददगार, कृपालु, दयालु, मेहरबान, अनुसार, मुवाफिक ।

सं० अनुक्रम (अनु=पीछे, क्रम=चलना) गु० क्रमानुसार, तर्तुबिवार क्रमशः, भा० पु० प्रबंध, सूचीपत्र फेहरिस्त ।

सं० अनुग (अनु=पीछे + गम्=जाना) क० पु० अनुचर, सेवक, तावेदार ।

सं० अनुगति (अनु=पीछे, गति=चाल) भा० स्त्री० अनुमति, सम्मति, मर्जी, आज्ञा ।

सं० अनुगामी (अनु=पीछे, गामी=चलनेवाला, गम्=चलना) क० पु० पीछे चलनेवाला, पु० साथी, २ नौकर, पैरोकार ।

सं० अनुग्रह (अनु=पीछे, ग्रह=लेना) भा० पु० कृपा, मेहरवानी, प्रसन्नता, दया ।

सं० अनुगृहीत (अनु=पीछे+गृहीत, ग्रह=लेना) र्म० पु० दया किया गया, निवाजा गया, इहसानमन्द ।

सं० अनुचर (अनु=पीछे, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पीछे चलनेवाला, २ साथी ।

सं० अनुचरी (अनुचर) स्त्री० दासी, लौंड़ी, बांदी ।

सं० अनुचित (अनु=नहीं, उचित=ठीक) गु० अयोग्य, ठीक नहीं, नामुनासिब ।

सं० अनुज (अनु=पीछे, ज=पैदा हो, जन्=पैदाहोना) पु० छोटा भाई ।

सं० अनुजा (अनुज) स्त्री० छोटी बहन ।

सं० अनुजीवी (अनु=पीछे, जीविन्=जीनेवाला, जीव=जीना) क० पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पराधीन ।

सं० अनुज्ञा (अनु=पीछे, ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति, हुक्म, चिताना, ताकीद ।

सं० अनुतप्त (अनु=पीछे + तप्त=तपा हुआ) क० पु० दुःखसे भरा हुआ, रंजीदा ।

सं० अनुताप (अनु + तप=तपना) भा० पु० पश्चात्ताप, अप्रसोस ।

सं० अनुदिन (अनु=हर एक दिन) क्रि० वि० हर एक दिन, दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोजमर्रा ।

सं० अनुनय (अनु + नी=लेजाना) भा० पु० विनय, शिक्षा, अदब, नसीहत ।

सं० अनुनासिक (अनु=पीछे, नासिका=नाक) गु० सानुनासिक, जो अक्षर मुँह और नाक से बोलें जायँ, जैसे (ङ, ज, ण, न, म) और अनुस्वार ।

सं० अनुपकारी (अनु + उप + कारी, कृ=करना) क० पु० उपकाररहित, बेकैज ।

सं० अनुपम (अनु=नहीं, उपमा=वरावरी) गु० अनूष, उत्तम, अपूर्व, जिसकी वरावरी न हो सके, बेमिसाल, बेनज़ीर ।

सं० अनुपयुक्त र्म० पु० अयोग्य,
नामुनासिब ।

सं० अनुपल (अनु=कम, थोड़ा,
पल=निमेष) पु० पल का
साठवां हिस्सा, सेकण्ड ।

सं० अनुपात (अनु=पीछे, वरा-
वर, पत्=गिरजा) पु० त्रैराशिक,
वरावर, सम्बन्ध ।

सं० अनुपान (अनु + पा=पीना)
ण० औपधिका सहकारी, सह-
योगी, जरिया, बदर्का ।

सं० अनुबन्ध (अनु + बन्ध=वां-
धना) वांधना, मिलाना, मेल,
मिलाप, धातुका गणसूचक पूर्व
पर अक्षर ।

सं० अनुभव (अनु=पीछे, भू=होना)
भा० पु० ज्ञान, यथार्थज्ञान, विचार,
अनुमान, सोचना, समझना,
बूझना, तजरुबा ।

सं० अनुमत (अनु + मत, मन्=
सोचना) र्म० पु० सलाह दिया
गया ।

सं० अनुमति भा० स्त्री० सलाह,
सम्पति ।

सं० अनुमान (अनु=पीछे, मा=
मापना) भा० पु० अन्दाजा, अट-
कल, विचार, कयास, तखमीना ।

सं० अनुमानी क० पु० विचारने
वाला, अन्दाज करनेवाला ।

सं० अनुमित (अनु + मित, मा=

मापना) र्म० पु० अटकला गया,
कयास किया गया ।

सं० अनुमेय (अनु + मेय, मा=
मापना) र्म० पु० अन्दाज के
लायक ।

सं० अनुमोदन (अनु + मुद=
हर्षित होना) प्रशंसा, समर्थन,
ताईद करना ।

सं० अनुमोदित (अनु + मुद) क०
पु० आह्लादित, आनन्दित, खुश ।

सं० अनुयायी (अनु=पीछे, यायी=
जानेवाला, या=जाना) क० पु०
पीछे जानेवाला, दास, नौकर,
अनुचर, पैरोकार ।

सं० अनुयोग (अनु + युज्=मि-
लना) भा० पु० तिरस्कार, निरा-
दर, वेकदरी ।

सं० अनुयोजन भा० पु० पूंछपांछ,
अपील ।

सं० अनुयोक्ता ((अनु + युज्=मि-
अनुयोजक) लना, मिलाना)
पूंछपांछ करनेवाला, अपीलांट,
अर्थात् अपील दायर करनेवाला ।

सं० अनुयोज्य र्म० पु० निन्दा-
योग्य, काबिल हिकारत, रिस्पां-
डेंट अर्थात् वह जिसपर अपील
कीजाय ।

सं० अनुरक्त (अनु=साथ, रज्ज्=
रंगना) क० पु० प्रेमी, अनुकूल,
शायक, आशिक ।

सं० अनुराग (अनु=साथ, रञ्ज=रंगना) भा० पु० प्यार, स्नेह, प्रीति, ब्योह, मोह, मुहब्बत ।

सं० अनुरागी क० पु० प्रेमी, स्नेही, मुहब्बती ।

सं० अनुराधा (अनु=पीछे, राधा=विशाखा नक्षत्र, राधू=पूरा करना) स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र ।

सं० अनुरुद्ध (अनु+रुध्=रोक-अनुरोधित) ना) र्म० पु० रोका गया, कैद किया गया ।

सं० अनुरूप (अनु=बराबर, रूप=ढौल) गु० बराबर, तुल्य, समान, एकसा, सदृश, अनुसार, अनुहार ।

सं० अनुशासक (अनु+शास्=सिखाना) क० पु० हाकिम ।

सं० अनुरोध (अनु+रुध्) भा० अनुरोधन) पु० अपेक्षा, निस्वत, २ रोकना, ३ आज्ञापालन, आशय, सम्मति, तामील लिहाज ।

सं० अनुरोधक (अनु+रुध्) क० पु० रोकने अनुरोधी) वाला, आज्ञापालक, फर्मावरदार ।

सं० अनुलेप (अनु+लिप्=लगा-अनुलेपन) ना) भा० पु० उवटन लगाना, तेल लगाना, सुगंधादिक लेप ।

सं० अनुलोम (अनु=पीछे, लोम=बाल) गु० बालसहित, यथाक्रम, विलोम ।

सं० अनुवाद (अनु+वद्=कहना) भा० पु० बारबार कहना, उल्था, तर्जुमा ।

सं० अनुवृत्ति (अनु+वृत्ति=वर्तना) मार्ग, सेवा, जरिया, तामील ।

सं० अनुवेदना (अनु+विद्=विचारना) भा० स्त्री० सहानुभूति, हमदर्दी ।

सं० अनुवर्जन (अनु+वृज्=अनुवर्तन) वर्जना, वर्तना) पीछेचलना, अनुगमन, पैरवी करना ।

सं० अनुशासन (अनु=पास, शास्=सिखाना) भा० पु० आज्ञा, हुक्म, शिक्षा, सीख ।

सं० अनुशीलन (अनु+शील=अभ्यास करना) भा० पु० आलोचन, अभ्यास करना, सेवन ।

सं० अनुशोचन (अनु+शुच=रंज करना) भा० पु० पश्चात्ताप करना, अप्रसोस करना ।

सं० अनुष्ठान (अनु+स्था=ठहरना) भा० पु० आरम्भ, आगाज, अमल ।

सं० अनुसन्धान (अनु=पीछे, सम्=अच्छी तरह से, धा=रखना) पु० खोज, पता, खोजना, तलाश, अन्वेषण, साजिश, तहकीकात, पूछ-पाँछ, कसद, प्रबन्ध, इन्तिजाम ।

प्रा० अनुसरना) सं० (अनु+अनुहरना) सरण, अनु=

पीछे, सृ=जाना) क्रि०अ० पीछे
चलना, २ साथ चलना ।
सं०अनुसार(अनु=पीछे, सृ=जाना)
भा०पु० बराबर, मुताबिक, समान।
सं०अनुस्यूत=ओतप्रोत, परस्पर,
बाह्य, खलतमलत ।
सं०अनुस्वार (अनु=पीछे, बराबर,
सृ=शब्द करना) पु० स्वरके सिर
पर की बिंदी — ।
प्रा० अनूठा पु० अनोखा, नया,
अपूर्व ।
प्रा०अनूप (सं० अनुपम) गु०
अनुप) जिसकी बराबरी नहीं,
उत्तम, श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, बेमिसल,
२ दलदल ।
सं०अनृत (अन्=नहीं, ऋत=सांच,
ऋ=जाना) गु० झूठा, खीं० झूठ ।
सं०अनेक (अन्=नहीं, एक) गु०
बहुत, ढेर, अधिक, कईएक,
एकनहीं ।
प्रा०अनैसे क्रि० वि०कुदृष्टिसे, टेढ़े ।
प्रा०अनोखा गु० अनूठा, अद्भुत ।
सं०अन्त (अम्=जाना) पु० सीमा,
आखिर, सिरा, खूंट, सींव, समाप्ति,
पूराहोना, २ नाशहोना, मौत, गु०
पिछला, शेष, निदान ।
सं० अन्तःकरण (अन्तर=भीतर,
करण=इन्द्रिय) पु० मन, चित्त,
हृदय, जी ।
सं० अन्तःपुर पु० स्त्रियों के रहने

का घर, जनानखाना, हरम ।
सं० अन्तकाल (अन्त=पिछला,
काल=समय) पु० मरनेका समय,
मौत का समय, मौतकी घड़ी ।
प्रा० अन्तड़ी (सं० अन्त्र, अति=
वांधना) स्त्री० आंत, अन्तरी ।
सं०अन्तर(अन्त=सीमा, रा=देना)
पु० भीतर, बीच, बीचकी जगह,
दूरी, २ मन, ३ भेद, फरक, गु०
और क्रि० वि० भीतर, बीच में ।
सं० अन्तरकथा (अन्तर=बीचकी,
कथा=बात) स्त्री० बात में बात ।
सं०अन्तरङ्गमित्र पु० दिली दोस्त ।
सं०अन्तरङ्गसभा (अन्तर + ग +
सभा) सभा के अन्तरसभा,
छोटीसभा ।
प्रा०अन्तरा (सं० अन्तर) पु० भ-
जन अथवा गीत आदि का चरण,
पद, गु० बीचका, पास ।
प्रा०अन्तरिया (सं० अन्तर) पु०
तिजारी, जो तय एक दिन बीचमें
आकर तीसरे दिन फिर आवे,
अन्तरा, तय ।
सं०अन्तरिकगु०भीतरी, अन्दरूनी ।
सं०अन्तरिक्ष (अन्तर=स्वर्ग और
अन्तरीक्ष) पृथ्वी के बीच,
ईक्ष=देखना वा अन्तर=भीतर,
ऋक्ष=तारा अर्थात् जिसमें तारे हैं)
पु० आकाश, शून्य, अधर ।
सं०अन्तरित (अन्तर + इत=गया

हुआ) मध्यका, बीचका, दमियानी ।
 सं० अन्तरितकृषक (अन्तरित +
 कृषक, कृष्=जोतना) क० पु०
 शिकमी काश्तकार, वह किसान
 जो मौरूसी काश्तकार से लेकर
 जमीन जोतता है ।

प्रा० अन्तररी (सं० अन्त्र, अति=बांध-
 ना) स्त्री० आंत, अन्तड़ी ।

प्रा० अन्तरियांजलना बोल० बहुत
 भूख लगना, भूखों मरना ।

प्रा० अन्तरीकाबलग्बोलना बोल०
 भूख में पेट भरके खाना ।

प्रा० अन्तरियों में आग लगना
 बोल० बहुत भूखा होना, बहुत भूख
 लगना, बहुत भूखों मरना ।

सं० अन्तररीप (अन्तर=भीतर, आप=
 पानी) पु० धरती का वह टुकड़ा
 जो समुद्र में दूर तक चला गया हो
 जैसे कन्याकुमारी ।

प्रा० अन्तर्जामी } (अन्तर=मन,
 सं० अन्तर्यामी } यम्=ठहरना,
 फैलना) गु० मन की वात जानने
 वाला, घटघटनिवासी, पु० परमे-
 श्वर, ईश्वर, परमात्मा ।

प्रा० अन्तर्धानहोना } (सं० अ-
 अन्तर्धानहोना } न्तर्धान, अ-
 न्तर=भीतर, धा=रखना, पकड़ना)
 कि०अ० अलख होना, छिपजाना,
 नहीं दीखना, बिलाजाना, गुप्तहोना,
 गायब होना ।

सं० अन्तःपट (अन्तर=बीचमें, पट=
 कपड़ा) पु० परदा, ओट, आड़,
 कनात, टट्टी ।

सं० अन्तर्वृत्ति भा० स्त्री० दिलीहाल ।

सं० अन्तर्हित (अन्तर=भीतर, धा=
 रखना) गु० अन्तर्द्धान, छिपा, अ-
 लख, अदृश्य ।

सं० अन्तिक पु० समीप, मित्र, चूल्हा,
 जेठी वहिन ।

सं० अन्तिम गु० पिछला, आखिरी ।

सं० अन्त्रावलि (अन्त्र=आंत, अति=
 बांधना, अवलि=पांत) स्त्री० बहुत
 सी अन्तड़ियां, अन्तड़ियों की पांत ।
 जैसे, धरि गाल फारहिं उरविदारहिं
 गलअंत्रावलि मेलहीं रामायणलं० ।

सं० अन्ध (अन्ध=अंधा होना) गु०
 अंधा, सूरदास, विन आंखका, पु०
 अंधेरा ।

सं० अन्धकार (अन्ध=अन्धा, कार=
 करनेवाला, कृ=करना) पु० अंधेरा,
 अंधियारा ।

सं० अन्धकूप (अन्ध=अन्धा, कूप=
 कुआं) पु० अन्धाकुआं, ऐसा कुआं
 जिसमें घास पात जमजाता है और
 पानी नहीं होता ।

प्रा० अन्धड़ (सं० अन्ध) पु० आंधी,
 तूफान ।

सं० अन्धपरम्पराग्रस्त र्म० पु०
 पुरानी रीतों में फँसा हुआ, कदीम
 रस्मों में मुब्तिला ।

प्रा० अन्धला } (सं०अन्ध) गुं
 अन्धा } विन आंख का,
 सूरदास, आंख फूटा, नेत्रहीन ।
 प्रा० अन्धाधुन्ध बोल० अंधेर, बेहि-
 साब, बेठिकाना, बहुतही बहुत
 अन्धों की तरह, आंख मूंदे ।
 प्रा० अन्धाधुन्धलुटाना बोल० उ-
 डाना, बेहिसाब खर्च करना, बेठि-
 काने खर्च करना, बेफायदह खर्च
 करना, आंख मूंदे खर्च करना ।
 सं०अन्धसुत (अन्ध=अन्धा, सुत=
 बेटा) पु०अन्धेका बेटा,अन्धे राजा
 धृतराष्ट्र का बेटा दुर्योधन ।
 प्रा० अन्धियारा (सं० अन्धकार)
 पु० अंधेरा, अन्धकार ।
 प्रा० अंधेरा (सं०अन्धकार) पु०अंधे-
 रा,अन्याय, बखेड़ा, उपद्रव,अन्धाधु-
 न्ध, उत्पात, अनीति, बलवा,दंगा ।
 प्रा० अंधेरकरना बोल० अन्याय
 करना,अनीति करना,उपद्रव करना,
 अन्धाधुन्ध करना ।
 प्रा० अंधेरा (सं०अन्धकार) पु०अं-
 धियारा, अन्धकार ।
 प्रा० अंधेरीकोठरी बोल० ऐसी
 कोठरी जिसमें अंधेरा हो, २ पेट,
 गर्भस्थान, कोख, धरन ।
 सं० अन्न (अद्=खाना वा अन्=
 जीना) पु० नाज,अनाज,खाना ।
 सं० अन्नकूट (अन्न=खाना, कूट=
 ढेर) पु० दीवाली के दूसरे दिन

का पर्व, जिसमें हिन्दूलोग बहुत
 सा खाना और तरकारियां बनाकर
 अपने देवताओं को भोग चढ़ाते हैं ।
 सं० अन्नजल } बोल० दानापानी ।
 अन्नपानी } संयोग, पु० खाना
 पीना ।
 सं० अन्नदाता (अन्न=अनाज, दाता=
 देनेवाला, दा=देना) बोल०पाल-
 नेवाला, बचानेवाला, मालिक,
 दयावन्त, उपकारी, दाता ।
 सं० अन्नपूर्णा (अन्न=खाना, पूर्णा=
 भरनेवाली) स्त्री० दुर्गा का नाम,
 योगमाया, देवी ।
 सं० अन्नप्राशन (अन्न=अनाज वा
 खाना, प्राशन=खिलाना, प्र=शुरू-
 अ, अश्=खाना) पु० जब बालक
 छः महीने का होता है तब पहली
 बार अनाज अथवा खीर आदि
 खिलाना ।
 सं० अन्य (अन्=जीना) गु०और,
 दूसरा, गैर ।
 सं० अन्यतर गु० कोई एक ।
 सं० अन्यथा (अन्य=और, था=
 प्रकार अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि०और
 प्रकार से, और तरह से, नहीं तो
 गु० उलटा ।
 सं० अन्याय (अ=नहीं, न्याय=इ-
 न्साफ, धर्म) बेइन्साफी, अधर्म,
 उपद्रव, जुल्म ।
 सं० अन्यायी (अन्याय) गु०

अन्याय करनेवाला, अधर्मी, दुष्टात्मा,
जालिम ।

सं० अन्योन्य (अन्यः+अन्य) गु०
आपस में, एक दूसरे को, परस्पर,
बाह्य ।

सं० अन्योन्याश्रित गु० एक दूसरे
के साथ संबंध रखनेवाला, लाजिम
मलजूम ।

सं० अन्वय (अनु=पीछे, इण्=
जाना) पु० वंश, कुल, २ पदच्छेद,
श्लोकके पदों का संबंध मिलाना,
तरकीबनहवी ।

सं० अन्विता र्ममं पु० युक्त, शामिल,
पूरा ।

सं० अन्वेषण (अनु=पीछे, इप्=
जाना) पु० खोजना, पता लगाना,
हेरना, हूँदना, तलाश करना ।

प्रा० अन्हवाना (अन्हाना) क्रि०
स० नहलाना, अंग धोना, स्नान
कराना ।

प्रा० अन्हान (सं० स्नान वा अव-
गाहन) पु० स्नान, अन्हाना ।

प्रा० अन्हाना (सं० अवगाहन वा
स्नान (क्रि० अ० अन्हाना, स्नान
करना, शरीर साफ करना ।

सं० अप, उप० से, उलटा, हानि,
नहीं, बुरा, भेद, छिपाव, बुरीतरह
से, अलग, भिन्न ।

सं० अपकर्ष (अप+कृष्=खींचना)
भा० पु० खींचना, न्यूनता, निरादर ।

सं० अपकार (अप=उलटा वा बुरा
वा हानि, कृ=करना) भा० पु०
बिगाड़, बुरा करना, हानि ।

सं० अपकारी क० पु० हानि करने
वाला, नुकसान करनेवाला ।

सं० अपकीर्त्ति (अप=बुरा, कीर्त्ति
=यश) भा० स्त्री० बुराई, बद-
नामी, अपयश, कुयश ।

सं० अपक्व गु० कच्चा, खाम ।

सं० अपगति भा० स्त्री० दुर्दशा
बुरीहालत ।

सं० अपगा (अप=नीचे, गम्=जाना)
स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० अपचय (अप+चि=चुनना)
भा० पु० गिरना, हानि, नुकसान ।

प्रा० अपडर भा० पु० मिथ्याडर,
अपना से डर ।

प्रा० अपन गु० पापी, अमतिष्ठित,
वेइङ्गृत ।

प्रा० अपति (सं० आपत्ति) भा० स्त्री०
अपमान, मुसीबत, वेइङ्गृती, २ पति-
रहित, उपपत्ति ।

सं० अपत्य (अ=नहीं, पत्=गिरना)
जिसके द्वारा पितर न गिरनेपावें,
पुत्र, सन्तान, औलाद ।

प्रा० अपना सं० सर्वना० निजका,
आपका ।

प्रा० अपनीगाना, बोल० अपनी
तारीफ करना, अपनेतई सराहना ।

प्रा० अपनाना क्रि० स० अपना करना ।

प्रा० अपनायन स्त्री०नाता, सबन्ध,
भाईचारा, घराना ।

सं० अपनीत (अप + नीत, नी=ले
जाना) र्म० पु० हटायागया, दूर
कियागया ।

सं० अपभ्रंश (अप=से, भ्रंश=गिरना)
भा० पु० गँवारी बोलचाल, व्या-
करण की रीति से अशुद्ध शब्द,
व्याकरणविरुद्ध शब्द, बिगड़ाहुआ
शब्द ।

सं० अपमान (अप=उलटा, मान=
आदर) पु० अनादर, निरादर,
तिरस्कार, हलकापन, बेइज्जती ।

सं० अपयश (अप=उलटा, यश=
नामवरी) पु० बुराई, बदनामी,
अपकीर्ति, बुरानाम ।

सं० अपर (अ=नहीं, पृ=भरना वा
अ=नहीं, पर=दूसरा) गु० और,
दूसरा, एक और, दूसरा कोई ।

सं० अपरमित (अ + पर + मित,
मा=नापना, मापना) बेपरिमाण,
बेहद, अनगिनत ।

सं० अपरम्पार (अ=नहीं, पर=दू-
सरा, पार=अन्त) गु० अपार,
अनंत, बेहद, जिसका पार नहीं ।

सं० अपराध (अप=बुरीतरह से,
राध=पूरा करना) पु० पाप, दोष,
अधर्म, अन्याय, जुर्म, गुनाह ।

सं० अपराधी (अपराध) क० पु०
पापी, दोषी, अधर्मी, गुनाहगार,

मुजरिम ।

सं० अपराह्न (अपर=पिछला, अह्न
=दिन) पु० तीसरापहर,सेपहर ।

सं० अपरिचित गु० बेजान पाहि-
चान, अनजान, अजनबी ।

सं० अपरिष्कार भा० पु० अप-
वित्रता, मैलापन ।

सं० अपवर्ग (अप=भिन्न, अलग,
वर्ग=पद, दर्जा, अर्थात् सब दर्जों
से अलग और बढ़कर है) पु०
मुक्ति, मोक्ष, परम्पद, परमगति, छुट-
कारा, निस्तारा, उद्धार, नजात ।

सं० अपवाद (अप=बुरा, वद्=क-
हना) पु० गाली, निन्दा, दोष, बुराई,
बदनामी ।

सं० अपवाहन (अप + वह=लेजा-
ना, फुसलाना, लोगों को बहका
लेजाना) एक राज्यसे दूसरे राज्य
में लेजाकर बसाना ।

सं० अपवित्र (अ=नहीं, पवित्र=
शुद्ध) गु० अशुद्ध, मैला, अपावन,
नापाक ।

सं० अपशकुन (अप=बुरा, शकुन
=सगुन) पु० बुरासगुन, बुरा जत-
लानेवाला, अशुभ जतलानेवाला
चिह्न ।

सं० अपशब्द (अप=बुरा, शब्द)
पु० बुराशब्द, अशुद्धशब्द, ऐसा
शब्द जिसका कुछ अर्थ नहीं, मुह-
मिल, २ पाद, गोज़ ।

सं० अपहरण (अप=अलग, ह=ले-जाना) भा० पु० कर्की ।

सं० अपहरित मर्म० पु० छीनलियागया, हरलियागया ।

सं० अपहारी क० पु० हरनेवाला ।

सं० अपहृत मर्म० पु० कर्कृतहसील ।

सं० अपादान (अप=से, आदान=लेना) भा० पु० जुदाकरना, विभाग, २ व्याकरण में पांचवां कारक ।

सं० अपान (अप=नीचे + अन्=जीना) पु० शरीर के पांच पवनों में से एक जो गुदा से निकलती है, अधोवायु, गोत्र, २ कहार, ३ वरुण गु० अपना, २ पानरहित ।

सं० अपाय (अप=बुरीतरहसे, इण्=जाना) पु० बिगाड़, नाश, हानि, २ जुदा होना ।

सं० अपार (अ=नहीं, पार=अन्त) गु० अनन्त, अपरम्पार, अनमिलत, बेहद ।

सं० अपावन (अ=नहीं, पावन=पवित्र) गु० अशुद्ध, अपवित्र, मैला ।

प्रा० अपाहज गु० लूला, लँगड़ा, सुस्त ।

सं० अपि उप० भी, तिसपर भी, इसके सिवाय, इसपर भी, बल्कि, यहांतक, तोभी, तब भी, जोभी, यद्यपि, निश्चय, केवल, और भी, पास, मिला हुआ ।

अं० अपील अनुयोजन, मुराफा, दु-

बारा नालिश, बड़े हाकिम से फरयाद ।

अं० अपीलॉट अनुयोजक, अपील करनेवाला ।

प्रा० अपूत (सं० अपुत्र, अ=नहीं, पुत्र=बेटा) गु० बिन लड़केवाला, निर्वंश, २ कुपूत ।

सं० अपूत (अ=नहीं, पू=पवित्रकरण) मर्म० पु० अपवित्र, नापाक ।

सं० अपूर्ण (अ=नहीं, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा नहीं, अधूरा, नातमाम ।

सं० अपूर्व (अ=नहीं, पूर्व=पहले, अर्थात् जो पहले न देखा गया) गु० जिसको पहले कभी नहीं देखा हो, उत्तम, अनूप, अनोखा, नया, अजीब ।

सं० अपृष्ट (अ=नहीं, प्रच्छ्=पूछना) मर्म० पु० बे पूछे ।

सं० अपेक्षा (अप + ईक्ष्=देखना) स्त्री० आशा, भरोसा, इच्छा, इत्वाहिश, जरूरत, २ सम्बन्ध, निश्चय ।

सं० अपेय (अ+पेय, पा=पीना) मर्म० पु० नहीं पीने योग्य ।

प्रा० अपेल (अ=नहीं, पेलना=टालना) गु० अचल, अटल, अमिट ।

सं० अप्रकाशित मर्म० पु० प्रकाशहीन, अंधेरा, तारीक ।

सं० अप्रचारित मर्म० पु० चलन बाहर, गैर मुरौबज ।

सं० अप्रतिष्ठा (अ=नहीं, प्रतिष्ठा=

बड़ाई) भा० स्त्री० अपयश, अप-
मान, बुराई, बदनामी ।
सं० अप्रतिहत र्म० पु० बेरोक, नाश
रहित, सावधान ।
सं० अप्रधान (अ=नहीं, प्रधान=
मुख्य) गु० जो मुख्य नहीं, अमुख्य,
२ आधीन ।
सं० अप्रमाणिकोन्नति (अ+प्र-
माणिक+उन्नति) भा० स्त्री० श-
र्तीतरकी ।
सं० अप्रमाणीय गु० अविश्वासीय,
बे एतिवार ।
सं० अप्रमेय (अ=नहीं, प्रमेय=मापने
योग्य, प्र=बहुत, मा=मापना)
र्म० पु० अपार, अनन्त ।
सं० अप्रसन्न (अ=नहीं, प्रसन्न=खुश,
हर्षित) गु० दुखी, मलीन, उदास,
नाराज ।
सं० अप्रिय (अ=नहीं, प्रिय=पि-
यारा) गु० दुःखदायी, नापसन्द,
नागवार, पु० शत्रु, दुश्मन ।
सं० अप्रीतिकर क० पु० निदुर, बे
मुहब्बत, बे खुल्क, बे उन्स ।
सं० अप्सरा (अप्=पानी, सृ=
चलना, अर्थात् जो समुद्र से पैदा
हुई, वा जिसको न्हानेकी बहुत
रुचि हो) स्त्री० स्वर्ग की स्त्री, इंद्रकी
सभा में नाचनेवाली, उर्वशी,
रम्भा आदि ।
प्रा० अफल (अ=नहीं, फल=लाभ)

गु० वृथा, निष्फल, बे फायदा ।
प्रा० अफसोस अहः ओह, अचम्भा,
पछताव ।
प्रा० अब (सं० अत्र) क्रि० वि०
इस घड़ी, इस समय, अभी २,
इसके पीछे ।
प्रा० अबका बोल० इस बार का ।
प्रा० अबकी बोल० इस बार, इस
वरस ।
प्रा० अबनक } बोल० इस घड़ी
अबनलक } तक, इस समय
अबतोड़ी } तक ।
प्रा० अबनव होना बोल० मौतका
समय पास आना, मरनेपे होना ।
सं० अबन्धन (अ=नहीं, बन्ध=
बांधना) र्म० पु० बन्धनरहित,
अयुक्त, स्वच्छन्द, मुक्त ।
सं० अबल अ=नहीं, बल=जोर,
गु० पु० निबल, निर्बल, दुबला,
कमजोर ।
सं० अबला (अबल) गु० स्त्री०
निबली, दुबली, कमजोर, स्त्री०
लुगाई, स्त्री, नारी ।
सं० अवाक् अ=नहीं, वाक्=बोल,
गु० अबोल, चुप, गूंगा, मौन ।
सं० अबुध (अ=नहीं, बुध=पण्डित)
गु० अबूझ, मूर्ख, असमझ, अ-
ज्ञानी, बेवकूफ, जाहिल ।
प्रा० अबूझ (सं० अबुध) गु० मूर्ख,
असमझ, अनसमझ, अज्ञानी ।

प्रा० अवेर (सं० अवेला, अ=नहीं, वेला=समय) स्त्री० देरी, देर, ढील, विलम्ब, कुवेला ।

प्रा० अबोल (अ=नहीं, बोल=बोलना) गु० चुपचाप, अवाक्, खामोश ।

सं० अब्ज (अप्=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, पद्म, २ चाँद, चौदह रत्न जो समुद्र से निकले ।

सं० अब्द (अप्=पानी, दा=देना) पु० बादल, मेघ, २ बरस, साल ।

सं० अब्धि (अप्=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, सातकी गिनती ।

सं० अभय (अ=नहीं, भय=डर) गु० निडर, निर्भय, निधड़क ।

सं० अभयदान भा० पु० शरण-देना, जानवखशी ।

प्रा० अभाग (सं० अभाग्य) पु० बुराभाग, दुर्दशा, खोटी दशा, बद किस्मती ।

प्रा० अभागा (सं० अभाग्य) गु० मन्दभागी, भाग्यहीन, कमबख्त, अभागी ।

सं० अभाग्य (अ=नहीं, भाग्य=भाग) पु० अभाग, बुरा भाग, बुरी दशा, दुर्दशा, कुदशा, गु० अभागा, मंदभागी, कमबख्त ।

सं० अभाव (अ=नहीं, भाव=होना, भू=होना) पु० नहीं होना, नाश, अदममौजूदगी ।

सं० अभि उप० पास, को, इच्छा, चाह, बार बार, चारों ओर से, बहुत, साम्हने, ऊपर, अधिक, पहिले ।

सं० अभिक्या स्त्री० शोभा, सुन्दरता, खूबसूरती ।

सं० अभिगमन भा० पु० निकट जाना, पास जाना ।

सं० अभिजित् पु० नाम नक्षत्र जो उत्तराषाढ के चतुर्थ चरण और श्रवण के प्रथम चरण से बनता है, योधा, जीतने वाला ।

सं० अभिधान पु० कोष, शब्द-संग्रह, लुप्त ।

सं० अभिनय पु० नाटक का खेल ।

सं० अभिप्राय (अभि=चाह, प्र=बहुत, इण्=जाना वा अभि=चाह, प्रिञ्=पूरा करना) पु० मत-लव, प्रयोजन, अर्थविचार, इरादा, मनोरथ, आशय, इच्छा, चाह, सम्मति ।

सं० अभिप्रेत र्म० पु० वाञ्छित, मुराद मकसूद ।

सं० अभिमन (अभि=बहुत, मन्=मानना वा जानना) र्म० पु० चाहाहुआ, मानाहुआ, पसंद कियाहुआ, सम्मत, वाञ्छित ।

सं० अभिमर्षण (अभि+मृप्=छूना) भा० पु० सम्भोग, सुहवत, परस्त्रीगमन, छूना ।

सं० अभिमान (अभि=ऊपर, अधिक, मन्=जानना) पु० घमंड, अहंकार, मद, दाप, दर्प, गरूर, शेखी, अकड़ ।

सं० अभिमानी (अभिमान) क० पु० घमंडी, अकड़वाज, शेखी-वाज, अहंकारी ।

सं० अभियुक्त } (अभि=सामने,
अभियोग्य } युज्=जोड़ना)
र्म० पु० प्रतिवादी, मुद्दआअलेह ।

अभियोग पु० नालिश, मुकदमा ।

सं० अभियोगी } अभियोक्ता, क०
अभियोजक } पु० वादी, मुद्ई ।

सं० अभिमुख (अभि=सामने,
मुख=मुँह) शब्दयो० अव्य०
सामने, रूबरू, पेश ।

सं० अभिराम (अभि=सामने, रम्
=खेलना) गु० सुन्दर, प्यारा,
मनोहर ।

सं० अभिलाष } (अभि=वहुत, लष=
अभिलाषा } चाहना) भा० स्त्री०
इच्छा, चाहना, कामना, चाह ।

सं० अभिलाषी } क० पु० चाहने
अभिलाषुक } वाला, लोभी,
इत्वाहिशमन्द आर्जुमन्द ।

सं० अभिवादन (अभि+वद्=
कहना) स्तुति, नमस्कार, वंदगी ।

सं० अभिषिक्त (अभि=सामने,
सिच्=सींचना) र्म० पु० तिलक
किया गया ।

सं० अभिषेक (अभि=ऊपर, सिच्
=सींचना) भा० पु० राजतिलक
देने के समय का स्नान, २ मन्त्र
देते समय शिरपर पानी डालना,
शान्तिस्नान ।

सं० अभिसन्धान भा० पु० मि-
लाप, २ कपट ।

सं० अभिसन्धि भा० स्त्री० खूब
मेल, धोखा ।

सं० अभिसम्पात पु० संग्राम, युद्ध,
नाश ।

प्रा० अभी (अव+ही) क्रि० वि०
इसी घड़ी, इसी दम, इसी समय,
तुरन्त ।

सं० अभीरु (अ=नहीं, भीरु=
डरनेवाला) गु० निर्भय, निर्दोष,
पु० महादेव, भैरव, शतावरि ।

सं० अभीष्ट (अभि=वहुत, इष्ट=
चाहाहुआ, इप्=चाहना) र्म०
पु० चाहाहुआ, वहुत चाहाहुआ,
मनमाना, प्यारा, चहीता, पसन्द ।

सं० अभूतपूर्व र्म० पु० जैसा कभी
पहले नहीं हुआ, अद्भुत, अजीब ।

सं० अभ्यन्तर गु० भीतरी, अंदरूनी ।

सं० अभेद (अ=नहीं, भेद=द्विषी
बात) गु० जिसका भेद नहीं
जाना जाय, २ जाना हुआ, ३
जो नहीं टूटसके, जिसमें कुछ
नहीं घुससके, पु० मेल ।

सं० अभ्यर्थना (अभि=सामने,

अर्थना=मांगना) भा० स्त्री०
निवेदन, दरखास्त ।
सं० अभ्यस्त र्म्यं पु० आदी, खूगर ।
सं० अभ्यागत अभि=सामने, पास,
आगत=आयाहुआ, आ, गम्=
आना) पु० पाहुना, अतिथि,
मेहमान गु० आया हुआ ।
सं० अभ्यास (अभि=बारबार, अस्
=फेंकना, और अभि उपसर्ग के
साथ आनेसे इसका अर्थ दोह-
राना होता है) पु० साधन, चिंतन,
बारबार करना, रत्न, मश्क ।
सं० अभ्यासक { क० पु० अभ्यास
अभ्यासी } करनेवाला ।
सं० अभ्युदय (अभि + उदय, उत्
+ इ=जाना) भा० पु० वृद्धि,
ऐश्वर्य्य, हश्मत ।
सं० अभ्र (अभ्र=जाना) पु० वा-
दल, मेघ, २ आकाश, अब्र ।
सं० अमङ्गल (अ=नहीं, मङ्गल=
कुशल, कल्याण) गु० अशुभ,
बुरा, पु० अकल्याण, अशुभ ।
प्रा० अमचूर (सं० आम्रचूर्ण,
आम्र=आम, चूर्ण=चूर) पु० सुखाये
आम के टुकड़े वा फाँक ।
सं० अमत गु० मतरहित, धर्महीन,
लामजहब ।
सं० अमर (अ=नहीं, मृ=मरना) गु०
जो कभी नहीं मरे, अविनाशी,
सदा जीतारहनेवाला पु० देवता,

२ अमरकोष का बनानेवाला ।
सं० अमरपति (अमर=देवता, पति=
स्वामी) पु० इन्द्र, देवताओं का
राजा ।
प्रा० अमरपुर { (अमर=देवता,
अमरलोक } पुर, लोक=जगह)
पु० स्वर्ग, बहिश्त ।
प्रा० अमराई (सं० आम्रराजि
आम्र=आम, राजि=कतार) स्त्री०
आंवों का बाग ।
सं० अमरावती (अमर=देवता, वत्
=वाली) अर्थात् जिसमें देवता
रहते हैं, स्त्री० स्वर्ग, इन्द्रकी राज-
धानी, देवलोक ।
प्रा० अमरूत (सं० अमृत) पु० एक
फलका नाम, अमरूद ।
सं० अमरेश (अमर=देवता, ईश=
राजा) पु० देवताओं का राजा,
इन्द्र ।
प्रा० अमर्याद { (अ=नहीं, मर्यादा
सं० अमर्यादा } =मान, इङ्गित)
स्त्री० अनादर, अप्रतिष्ठा, अवज्ञा,
हलकाई, हलकापन ।
सं० अमर्ष (अ=नहीं, मर्ष=क्षमा)
भा० पु० क्रोध, असह्य, गुस्सा ।
सं० अमात्य पु० भूमिका मंत्री, वजीर
आराज्जी ।
सं० अमल (अ=नहीं, मल=मैल)
गु० निर्मल, शुद्ध, साफ, पवित्र,
स्वच्छ ।

प्रा० अमलतास पु० एक औषध का नाम ।

सं० अमान (अ=नहीं, मान=गर्व) गु० मानरहित, निरहंकार, बेग़रूर ।

प्रा० अमाना (सं० मान, मा=मापना) क्रि० अ० समाना, भरजाना ।

सं० अमाय गु० कपटरहित, बेमक्र ।

सं० अमाया भा० स्त्री० सच्चाई, दियातदारी ।

प्रा० अमावस } (अमा=साथ
सं० अमावस्या } वस्=रहना, अ-
सं० अमावस्या } र्थात् जिस दिन
सूर्य और चांद एक राशिमें रहते हैं, अमा सह वसतोऽस्याश्चन्द्राकौ अमावस्या, अमावास्या) स्त्री० अंधेरे पक्षकी पंद्रहवीं तिथि, मावस ।

सं० अभित (अ=नहीं, मित=मापा हुआ, मा=मापना) गु० अममाण, अपार, बेहद, बेठिकाने, जो नापने में नहीं आवे ।

प्रा० अमिय } (सं० अमृत) पु० अ-
अमी } मृत, सुधा, पीयूष,
आबहयात ।

सं० अमुक (अदस्=यह) गु० वह, यह कोई, अमकाठमका, फलाना, फुलां ।

सं० अमूलक (अ=नहीं, मूल=जड़) बेजड़, बेबुनियाद, निर्मूल ।

सं० अमृत (अ=नहीं, मृ=मरना) पु० अमी, सुधा, पीयूष, देवताओं

का खाना अथवा रस जिसको पीने से अमर होजाते हैं) आबहयात ।

सं० अमोघ (अ=नहीं, मोघ=वृथा, मुद्=अचेत होना) गु० सफल, सच्चा, फलदाता, जो खाली न जाय, बेखता ।

प्रा० अमोल (सं० अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अनमोल, उत्तम, बहुतही बढ़िया, अनोखा, अपूर्व ।

प्रा० अम्ब } (सं० आम्र, अम्
आंब } =खाना, जाना) पु०
आम } आमका पेड़, आम
का फल ।

सं० अम्बक (अम्ब=जाना) पु० आंख, लोचन, नेत्र, नयन ।

सं० अम्बर (अवि=शब्द करना) पु० आकाश, आस्मान, २ कपड़ा, वस्त्र, नृप अम्बर=राजाओं के कपड़े, ३ सुगन्धित चीज़, ४ अभ्रकधातु ।

सं० अम्बा } (अवि=जाना, जोष्यार
अम्बिका } के साथ अपने लड़के के पास जाती है) स्त्री० मा, माता, जननी, २ दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती, जगज्जननी ।

सं० अम्बु (अवि=शब्द करना) पु० पानी ।

सं० अम्बुकण पु० ओस, शबनम ।

सं० अम्बुज (अम्बु=पानी, ज=पैदा हुआ, जन=पैदा होना) पु० क

मल, पद्म २ चांद ।
 सं० अम्बुद (अम्बु=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, बदल, मेघ, घन, घटा, अब्र ।
 सं० अम्बुधि (अम्बु=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, सिंधु ।
 सं० अम्बुनिधि (अम्बु=पानी, निधि=जगह वा खजाना) पु० समुद्र, सागर, सिंधु ।
 सं० अम्बुनाथ (अम्बु=पानी, नाथ=मालिक) पु० समुद्र, सागर ।
 सं० अम्बुवाह (अम्बु=पानी, वह=लेजाना) बादल, मेघ, अब्र ।
 सं० अम्भस (अभि=शब्द करना) पु० पानी, जल, नीर, तोय, वारि ।
 सं० अम्भोज (अम्भस्=पानी, जन्=पैदा होना) पु० जलज, कमल, पद्म ।
 सं० अम्भोद (अम्भस्=पानी, द=देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ ।
 सं० अम्भोधर (अम्भस्=पानी, धा=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल ।
 सं० अम्भोधि (अम्भस्=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर ।
 सं० अम्भोनिधि (अम्भस्=पानी, निधि=जगह वा भंडार) पु० समुद्र ।
 प्रा० अम्मा (सं० अम्बा) स्त्री० मा, माता ।

सं० अम्ल (अम्=जाना) गु० खट्टा ।
 प्रा० अम्लि (सं० अम्ल=खट्टा) स्त्री० इमली, अमली, चिंचा ।
 प्रा० अय (सं० अयस् इ=जाना) पु० लोहा, शोग, प्रेम से पुकारने के लिये संबोधन, यह ।
 सं० अयन (अय्=जाना) पु० मार्ग, रस्ता, २ चाल, ३ आधा बरस, विपुवत् रेखा के उत्तर वा दक्षिण की ओर सूर्य का रस्ता, ४ घर, स्थान ।
 सं० अयश (अ=नहीं, यश=नाम-वरी) पु० अपयश, बुराई, बदनामी, अपकीर्ति ।
 प्रा० अयशी (सं० अयशस्वी) गु० बदनाम ।
 प्रा० अयाना (सं० अज्ञान) गु० मूर्ख, अवूझ, अनसमझ, भोला ।
 सं० अयुक्त (अ=नहीं, युक्त=ठीक) गु० अनुचित, अयोग्य, अनरीत, अन्याय ।
 सं० अयुत (अ=नहीं, युत=मिलना, गिनना) गु० दशहजार ।
 सं० अयोग्य (अ=नहीं, योग्य=ठीक) गु० अयोग, अनुचित, नामुनासिब ।
 सं० अयोध्या (अ=नहीं, युध्=लड़ना) स्त्री० अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी जो सरयू नदी के तीर पर है ।

प्रा० अरई { स्त्री० बड़ा, कंदा, एक
अरवी { तरकारी का नाम, यु-
इयाँ, कच्चा ।

प्रा० अरगजा पु० सुगंधित चीज ।

प्रा० अरगा (सं० अलग्न, अ=नहीं,
लग्न=मिलना) गु० अलग, अ-
लगा, जुदा, न्यारा, भिन्न ।

प्रा० अरगाई { गु० अलग, चुप ।
अलगाई {

प्रा० अरगाना (सं० अलग्न) क्रि०
सं० अलग करना, जुदा करना ।

प्रा० अरभना क्रि० अ० उलभना,
फँसना, बभना ।

प्रा० अरणा (सं० आरण्य=जंगली)
पु० जंगली भैंसा ।

सं० अरणि (ऋ=जाना) स्त्री०
एक तरह की लकड़ी जिसको
यिसकर होम करने के लिये आग
निकालते हैं, आग मथने की
लकड़ी ।

सं० अरण्य (ऋ=जाना) पु० वन,
जंगल ।

सं० अरविन्द (अरा=पहिये का
एक भाग उसी के समान दल,
विद्=पाना वा होना) पु० कमल,
कैवल, पद्म ।

प्रा० अरहट पु० रहट, रेंटा, पानी
चढ़ाने की कल ।

प्रा० अरहर (सं० आढ़की, आ=
चारों ओर से, दौरू=जाना) पु०

अरहर, तूर, एक प्रकार का नाज
जिसकी दाल होती है ।

सं० अराति (अ=नहीं, रा=देना,
जो सुख नहीं देता) पु० बैरी,
शत्रु, दुश्मन ।

प्रा० अराधना (सं० आराधन)
क्रि० सं० पूजना, सेवा करना,
मन्त्र जपना ।

सं० अरि (ऋ=जाना) पु० बैरी,
शत्रु, दुश्मन, अराति ।

सं० अरिष्ट (रिप्=हिंसा करना)
गु० अशुभ, पु० विघ्न, कौआ,
वृषभासुरदैत्य, नींबूवृक्ष ।

प्रा० अरहू (सं० अ०) स्त्री० ति-
उरी, भृकुटी ।

प्रा० अरु समुच्चय, और, फिर ।

सं० अरुचि भा० स्त्री० नफरत,
वृणा, अनिच्छा ।

सं० अरुण (ऋ=जाना) पु० सूर्य,
२ सूर्य का सारथी, ३ सूर्य का
रथ, ४ सिंदूर, कुंकुम, गु० लाल ।

सं० अरुणचूड़ { पु० मुर्गा, कुकुर ।
अरुणशिखा {

प्रा० अरुणाई (सं० अरुणता, अ-
रुण=लाल) स्त्री० ललाई, बि-
हान की ललाई, सुखी ।

सं० अरुणोदय (अरुण=सूर्य, उ-
दय=निकलना) पु० भोर, तड़का,
बिहान ।

सं० अरुणोपल (अरुण=लाल,

उपल=पत्थर) पु० लाल चुन्नी,
पद्मराग, २ लाल पत्थर ।
सं० अरुन्तुद (अरु=मर्मस्थल, तुद=
काटना) क्लेशकारक, मर्मच्छेदक ।
सं० अरुन्धती स्त्री० वशिष्ठमुनि
की स्त्री ।
सं० अरूप (अ=नहीं, रूप=डौल)
गु० निराकार, २ कुरूप, भोंड़ा,
कुडौल ।
सं० अरोग (अ=नहीं, रोग=बीमारी)
गु० भलाचंगा, नीरोग, अच्छा ।
सं० अर्क (अर्च=पूजना वा अर्क=
गर्म होना) पु० सूर्य, २ अकवन,
आक, मदार ।
सं० अर्गल पु० विलाई, जंजीर,
बेलहन ।
सं० अर्घ (अर्ह=पूजना वा अर्घ=
मोल होना) पु० आठ चीज मि-
लाकर ईश्वर को अथवा सूर्य
चांद आदि देवता के लिये अर्पण
करना, पूजा में सूर्य चांद आदि
देवताओं को पानी देना, २ मोल,
कीमत ।
प्रा० अर्घा (सं० अर्घ) पु० अर्घ
देने का बरतन जो नाव के आ-
कार बनता है ।
सं० अर्चक (अर्च=पूजना) पु०
पूजनेवाला, पुजारी, सेवक ।
प्रा० अर्चना (सं० अर्चन) क्रि०
स० पूजना, पूजा करना, स्त्री० पूजा ।

सं० अर्चा (अर्च=पूजना) भा० स्त्री०
पूजा, सेवा, आराधना ।
सं० अर्चिन (अर्च=पूजना) र्म०
पु० पूजा किया हुआ, सेवा किया
हुआ ।
सं० अर्जन (अर्ज=इकट्ठा करना)
भा० पु० इकट्ठा, कमाई, संग्रह,
सञ्चय ।
सं० अर्जुन (अर्ज=इकट्ठा करना
वा जीतना) पु० पाण्डु का ती-
सरा बेटा, युधिष्ठिरका भाई जो इन्द्र
के अंश से पैदा हुआ, २ एक पेड़
का नाम, श्वेत, दिशा ।
सं० अर्णव (अर्णस्=पानी, ऋ=
जाना) पु० समुद्र, सागर ।
सं० अर्थ (अर्थ=मांगना वा ऋ=
जाना) पु० अभिप्राय, मतलब,
तात्पर्य, कारण, प्रयोजन, विचार,
इरादा, मनोरथ, लिये, वास्ते, नि-
मित्त, २ धन, मुनाफा ।
सं० अर्थकारी (अर्थ + कृ=करना)
क० पु० कार्यसाधक, उपयोगी,
मुफ्तीद ।
सं० अर्थशास्त्र पु० राजनीति, हि-
कमतअमली, पालिसी ।
सं० अर्थात् (अर्थ) समुच्च० अव्य०
अर्थ से, जानो, याने ।
सं० अर्थी (अर्थ) गु० धनी, धन-
वान्, २ मांगनेवाला, याचक, ३
वाद करनेवाला, मतलबी, फरयादी,

४ मुर्दे की खाट, रथी ।

प्रा० अर्दाचा पु० मोटाआटा, द-
लिया ।

सं० अर्दित (अर्द्=पीड़ितहोना)
र्म० पु० दुःखित, कष्टित, मुसीबत-
जदा ।

सं० अर्द्ध(अध्=बढ़ाना) गु० आधा ।

सं० अर्द्धचन्द्र (अर्ध=आधा, चन्द्र
=चांद) पु० आधाचांद, चंद्रबिंदु ।

सं० अर्द्धनिमेष पु० आधापल,
आधाक्षण ।

सं० अर्द्धवन्य गु० नीमवहशी ।

सं० अर्द्धरात्र (अर्द्ध=आधी, रात्रि=
रात) स्त्री० आधीरात ।

सं० अर्द्धाङ्ग (अर्द्ध=आधा, अंग=
शरीर) पु० आधा शरीर, २ पक्षा-
घात, शीतांग, एक बीमारी जिसमें
आधा अंग रहजाता है ।

सं० अर्द्धाङ्गी (अर्द्धांग) स्त्री० लुगाई,
स्त्री, नारी, पत्नी, गु० पक्षाघाती ।

सं० अर्पण (ऋ=जाना) पु० देवता
की भेंटदेना, भेंट, दान, समर्पण,
नजर ।

प्रा० अर्पणकरना } (सं० अर्पण)
अर्पना } क्रि० सं० भेंट
चढ़ाना, ईश्वरको या देवताको भेंट
देना, सिपुर्द करना, चारज देना ।

प्रा० अर्ब (सं० अर्बुद, अर्ब=जाना)
पु० सौकरोड़, और कहीं कहीं अ-
र्बुद का अर्थ दशकरोड़ भी लिखा है ।

प्रा० अर्ब खर्ब बोल० अपार, बे
शुमार, अनगिनत, असंख्यात ।

सं० अर्भ } (ऋ=जाना) पु०
अर्भक } लड़का, बालक, पुत्र,
शिशु, गु० छोटा ।

प्रा० अर्राटा पु० बड़ाभारीशब्द, म-
कान आदिके गिरपड़ने का शब्द,
अथवा बाण व गोले का शब्द ।

सं० अर्वाचीन० गु० नया, जदीद ।

सं० अर्हन्त (अर्ह=पूजना) पु०
बौद्धमती, जैन, जैनियों के एक
मुनि का नाम ।

सं० अलक (अल्=संवारना) स्त्री०
घूंघरवालेबाल, झुल्फ, लटूरी, लट,
घूंघरेबाल, अँगूठिये बाल ।

सं० अलका स्त्री० कुबेरपुरी, दशवर्ष
की कन्या ।

सं० अलकावलि (अलक=घूंघर-
वाले बाल, अवलि=पांत) स्त्री०
पेणी, घूंघरवालेबाल, झुल्फ, घूंघरे
बाल, अँगूठिये बाल ।

प्रा० अलक्षि (सं० अलक्ष्मी) गु०
धनहीन, दरिद्री, कंगाल, मुफलिस ।

सं० अलक्ष्य (अ=नहीं, लक्ष=देखना)
र्म० पु० अलख, अगोचर, जो
देखने में नहीं आवे ।

प्रा० अलक (सं० अलक्ष्य) गु०
अनदेखा, अगोचर, जो देखने में
नहीं आवे ।

प्रा० अलखित (सं० अ=नहीं,

लक्षित=देखागया) र्म० पु०
नहीं देखा, नहीं जाना गया,
बेपता, अबूझा ।

प्रा० अलग { (सं० अलग्न, अ=
अलगा) नहीं, लग्न=लगा
हुआ, लग्न=मिलना) गु० जुदा,
अरगा, न्यारा, भिन्न, अलहदा ।

प्रा० अलगाना (सं० अलग्न) क्रि०
स० जुदा करना, अलग करना,
न्यारा करना, भिन्न २ करना ।

सं० अलङ्कार (अलम्=शोभा,
कार=करना, कृ=करना) पु० ग-
हना, भूषण, शोभा, आभरण,
२ साहित्य शास्त्र का एकभाग
कविताका गुण दोष बतानेवाला
ग्रन्थ, शब्दभूषण, सनअत ।

सं० अलंकृत (अलम्=शोभा, कृ=
करना) र्म० शोभायमान, शोभित,
भूषित, सँवाराहुआ, सुधाराहुआ,
बनायाहुआ, मुजैयन ।

प्रा० अलङ्ग स्त्री० ओर, तर्फ, छोर,
पार, इसअलङ्ग=इसओर, इसपार ।

प्रा० अलता (सं० अलक्त, अ=नहीं,
रक्त=लाल अर्थात् जिससे अधिक
और कोई लाल नहीं यहां २ को
ल होगया है) पु० लाखके रंगमें
खूब गहरी रंगी हुई रूई जिससे
स्त्रियां हाथ पैर रचाती हैं, महौरी ।

प्रा० अलबेला गु० बैला, बांका,
बैलबबेला, बैल चिकनिया ।

सं० अलम् (अल् + अम्) अव्य०
भूषण, योग्य, निषेध, निवारण,
अवधारण, पूरा, सब, काफी,
बेफायदा, बस, फकत ।

सं० अलभ्य (अ=नहीं, लभ्=
मिलना) र्म० पु० जो मिल न
सके, दुर्लभ, अप्राप्य, नायाब ।

प्रा० अलान (सं० आलान) स्त्री०
हाथी के बाँधने की रस्सी, जं-
जीर आदि ।

प्रा० अलाप (सं० आलाप) भा०
पु० राग, तान, स्वर, २ बातचीत,
बोल चाल ।

प्रा० अलापना { (सं० आलाप)
आलापना } क्रि० अ० स्वर
मिलाना, रागछेड़ना, गाना, तान
छेड़ना ।

प्रा० अलापी (अ=बहुत, लप्=
कहना) कहनेवाला, बकनेवाला,
गुल मचानेवाला ।

प्रा० अलाव पु० धूनी ।

सं० अलि { (अल्=समर्थ होना,
अली } अर्थात् डंक मारने में
और गूंजने में जो समर्थ होता है)
पु० भौर, भँवरा, २ बिच्छू, ३
कोयल, ४ काग, ५ शराब,
मदिरा ।

सं० अलिनी स्त्री० भ्रमरी, भौरी ।

सं० अलीक (अल्=रोकना) गु०
भूठा, मिथ्या, असार, असत्य,

स्त्री० भूठ ।
 सं० अलीन (अ=नहीं, ली=मिलना वा गलना) अयोग्य, हराम, नाजायज़ ।
 प्रा० अलीहा (सं० अलीक) गु० भूठ, मिथ्या, दरोह ।
 प्रा० अलैक पलवा (सं० अलीक प्रलाप) बेहूदा बकना, बाहियात बकना, बेठौर ठीक कहना ।
 प्रा० अलैया बलैया (सं० अलि, काग, बलि=बलिदेना) स्त्री० निछावर ।
 प्रा० अलोना (सं० अलवण, अ=नहीं, लवण=नमक) गु० बिन लोन का, बे सवाद, फीका ।
 सं० अलोभ (अ=नहीं, लुभ=चाहना) गु० निर्लोभ, संतुष्ट, बेतमअ ।
 प्रा० अलोला गु० नासमझ, बे अकल, स्थिर, बेहरकत ।
 सं० अलौकिक (अ=नहीं, लौकिक=संसार का) गु० अनोखा, अद्भुत, जो इस लोक का नहीं परलोक का ।
 सं० अल्प (अल्प=समर्थ होना, वा रोकना) गु० थोड़ा, कुछ, छोटा, क्लील ।
 सं० अल्पबुद्धि (अल्प=थोड़ी, बुद्धि=समझ) गु० कमसमझ, मंदबुद्धि, मूर्ख ।

प्रा० अल्लहड़ गु० अनाड़ी, अनसीखा, २ जवान ।
 सं० अव उप० से, नीचे, दूर, बीच में, बुरा, नहीं, अनादर, जुदा, फैलाव, निश्चय, आसरा, शुद्ध, हार ।
 सं० अवकाश (अव=बीचमें, काश्=चमकना) पु० अवसर, सुबीता, सावकाश, फुरसत, बीचका समय ।
 प्रा० अवगाहना (सं० अवगाहन, अव + गाह्=मथना) क्रि० सं० मथना, थाहपाना, २ नहाना ।
 सं० अवगुण (अव=बुरा, गुण) पु० दोष, खोट, औगुन ।
 सं० अवग्रह (अव=नीचे, ग्रह=पकड़ना) भा० पु० रुकावट, रोक, २ समास के पदों का विभाग, ३ हाथियोंका भुंड, ४ आँकुश ।
 सं० अवज्ञा (अव=बुरी, ज्ञा=जानना) स्त्री० अनादर, अपमान, २ धिन, नफरत ।
 सं० अवतंस (अव=निश्चय, तसि=शोभना) पु० गहना, भूषण, २ कान का गहना, भुमका, कर्णफूल ।
 प्रा० अवतरना (सं० अवतरण, अव=नीचे, तृ=पारहोना) क्रि० अ० अवतार लेना, उतरना, विष्णु का अवतार लेना ।
 सं० अवतार (अव=नीचे, तृ=पार

होना) भा० पु० जन्म, प्रकट,
उत्पन्न, विष्णुका जन्म लेना,
विष्णु के चौबीस अवतार हैं उन
में से दश अवतार बहुत प्रसिद्ध
हैं जैसे १ मत्स्य, २ कच्छप, ३
वराह, ४ नृसिंह, ५ वामन, ६
परशुराम, ७ रामचन्द्र, ८ श्रीकृष्ण,
९ बुध, १० कल्की ।

सं० अवदान (अव=नीचे, दा=
काटना) भा० पु० वध, कत्ल,
मारहालना, पराक्रम, उल्लंघन ।

प्रा० अवदीच (सं० उदीचि=उत्तर
दिशा, उत्=ऊपर, अञ्च=जाना)
पु० गुजराती ब्राह्मणों की एक
जाति ।

सं० अवद्य (अ=नहीं, वद्य=कहने
योग्य, वद्=कहना) पु० पाप,
दोष, अपराध, गु० नीच, पापी,
निन्दा करने योग्य, नहीं कहने
योग्य ।

प्रा० अवध (सं० अवधि, अव=दूर,
धा=रखना) स्त्री० वचन, सीमा,
सीव, २ समय, मुद्दत, ३ (सं०
अयोध्या) पु० अवध देश, ४
(सं० अवध्य, अ=नहीं, वध्य=
मारने योग्य, वध्=मारना) गु०
नहीं मारने योग्य ।

सं० अवधान (अव + धा=रखा)
भा० पु० कृपा, दया, तवज्जुह ।

प्रा० अवधारी पु० निश्चय किया

गया, सोचा गया ।

सं० अवधीर्य धा० अव्य० विचार
कर, सोचकर ।

सं० अवधीरित र्म० पु० अनादृत,
अपमानित, गफलत कीगई, जाया
कीगई ।

सं० अवनति (अव=नीचे, नम्=
झुकना) भा० स्त्री० घटती, तन-
झुली, उतार ।

सं० अवनि ((अव=बचाना) स्त्री०
अवनी) धरती, पृथ्वी, जमीन,
भूमि ।

सं० अवनिकुमारी (अवनि=धर-
ती, कुमारी=बेटी) स्त्री० सीता,
जानकी, जनकराजा यज्ञ के लिये
धरती जोतते थे उस समय धरती
में से एक घड़ा निकला उसमें से
सीता जी निकलीं (इसका पूरा
वर्णन रामचरित्र में देखो) ।

सं० अवनिप (अवनि=पृथ्वी, प=
रक्षाकरना) क० पु० राजा, बादशाह ।

सं० अवनिपरमणि स्त्री० रानी,
मलका ।

सं० अवनीत (अव=नहीं, नी=ले-
जाना) र्म० पु० बेढंगा, बदचलन,
बदसलीका, कुमार्गी ।

सं० अवनीश ((अवनि=धरती,
अवनीश्वर) ईश वा ईश्वर=
राजा) पु० राजा, महाराजा,
राजाधिराज ।

सं० अवन्ति (अव्=बचाना) स्त्री०
मालवादेश ।

सं० अवन्तिका (अव्=बचाना)
स्त्री० मालवादेश की राजधानी
उज्जैन, सात पवित्र पुरियोंमें की
एक पुरी थी अयोध्या, मथुरा,
माया, गया, काशी, कांची, अव-
न्तिकापुरी ।

सं० अवयव (अव्=जुदाजुदा, यु=
मिलना) पु० अंग, शरीर का
कोई भाग ।

सं० अवराधक (अव्=निश्चयही,
राध्=पूराकरना) क० पु० सेवक,
सन्त, आराधना करनेवाला, आ-
विद ।

प्रा० अवराधना (सं० अवराधन)
भा० स्त्री० सेवा, खिदमत ।

प्रा० अवरेख स्त्री० लेख, लकीर,
गिनती, शुमार ।

सं० अवरोध (अव् + रुध्=रोकना)
पु० रोक, रुकाव, अटकाव, र-
ननिवास ।

प्रा० अवर्त (सं० आवर्त) पु०
पानी का चक्र, भँवर, गिर्दाव ।

सं० अवलम्ब { अव् + लब्धि=ठह-
अवलम्बन रना) पु०
सहारा, आसरा, आधार, आड़ ।

प्रा० अवली (सं० आवलि) स्त्री०
पांत, पंक्ति, लकीर ।

सं० अवलेह (अव् + लिह्=चाटना)

पु० चाटना, चटनी ।

सं० अवलोकन (अव् + लोक=दे-
खना) भा० पु० दृष्टि, दीठ,
नज़र, देखना, दर्शन, मुलाहिजा
करना ।

प्रा० अवलोकना (सं० अवलोकन)
क्रि० सं० देखना ।

सं० अवश (अव्=नहीं, वश=चाहना)
बेवश, बेइस्तिथार, बेक्राबू ।

सं० अवशिष्ट (अव् + शिष्ट=बाकी
रहना) क० पु० बाकी, अधिक,
शेष ।

सं० अवशेष भा० पु० बाकी ।

सं० अवश्य (अव्=निश्चयही,
श्यै=जाना) क्रि० वि० निश्चय
ही चाहिये, जरूर ।

सं० अवश्यक (अवश्य) गु० जरूरी ।

सं० अवश्यकता (अवश्य) स्त्री०
जरूरत, प्रयोजन, निश्चय ।

सं० अवसर (अव्=निश्चय, सृ=
जाना) पु० औसर, अवकाश,
समय, मौका, विराम, ठहराव ।

सं० अवसन्न (अव् + सन्न, सद्=
बैठना) क० पु० थका हुआ, गिरा
हुआ, समाप्त, उदास, गमगीन,
हारा हुआ ।

सं० अवसान (अव् + सो=नाशक-
रना) पु० अन्त, समाप्ति, मौत,
र हद्द ।

प्रा० अवसेरी स्त्री० देर, प्रत्याशा,

इन्तिजारी ।

सं० अवस्था (अव + स्था = ठहरना)
स्त्री० दशा, उमर, आयुर्दा, हा-
लत ।

सं० अवस्थित क० पु० ठहराहुआ,
मुक्तीम ।

सं० अवहित (अव + हित, धा =
रखना) मनोयोगी, सावधान,
मुतवज्जेह, २ प्रख्यात, मशहूर ।

प्रा० अवाई (आना) स्त्री० आने
की खबर, आना, २ मैलखोरा
वा जीनपोश भालर समेत ।

सं० अविकारी (अ = नहीं, विकार
= दोष) क० पु० विकाररहित,
बेऐव ।

सं० अविगत (अ + वि + गत,
गम् = जाना) क० पु० व्यापक,
सब जगह मौजूद ।

सं० अविचल (अ = नहीं, विचल =
चलना) गु० अचल, अटल, जो
चले नहीं, दृढ़, मजबूत ।

सं० अविद्या (अ = नहीं, विद्या =
ज्ञान) स्त्री० अज्ञान, मूर्खपन, २
माया ।

सं० अविनय (अ + वि + नी =
लेजाना) भा० पु० ठिठाई,
शोखी, बेअदबी ।

सं० अविनाशी (अ = नहीं, विनाशी
= नाश होनेवाला, नश्व = नाश
होना) गु० जिसका कभी नाश

न हो, सदा रहनेवाला, परमेश्वर ।

सं० अविरल (अ = नहीं, विरल =
महीन, विल् = ढकना, छिपाना)
गु० गहरा, गाढ़ा, मोटा, निबिड़,
निरन्तर, सदा, हमेशा ।

सं० अविरोध (अ + वि + रोध,
रुध् = रोकना) भा० पु० मेल,
इत्तिफाक, सम्मति ।

सं० अविवेक (अ = नहीं, विवेक =
विचार) पु० अज्ञान, अधिचार,
मूर्खपन, बेतमीजी ।

सं० अविवेकता भा० स्त्री० अज्ञान-
पन, बेतमीजी, जिहालत ।

सं० अविवेकी (अविवेक) क० पु०
अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारने-
वाला, बेतमीज ।

सं० अव्यक्त (अ = नहीं, व्यक्त = प्र-
कट) र्म० पु० अलख, अदृश्य,
छिपाहुआ, पु० विष्णु, परमेश्वर ।

सं० अव्यय (अ = नहीं, व्यय = नाश
वा खर्च) पु० व्याकरण में ऐसा शब्द
जो किसी तरह से बदलता नहीं
वैसाही बना रहता है जैसे और,
अथवा, फिर, पुनि, आदि, २
विष्णु, परमेश्वर, गु० अविनाशी
३ कृपण, कंजूस ।

सं० अव्यवस्थित (अ = नहीं, व्य-
वस्थित = अचल) गु० चंचल,
उतावला, अचेत, बेहोश, २
अनुचित, तित्तर तित्तर ।

सं० अव्याहत (अ=नहीं, व्याहत =निराश, वि + आ + हन् = मारना) र्म० पु० जो नहीं रोका जाय, आशावान् ।

सं० अशकुन (अ=नहीं वा बुरा, शकुन=सगुन) पु० बुरे सगुन, अपसगुन ।

सं० अशक्त (अ=नहीं, शक्त=समर्थ) क० पु० निबल, कमजोर, दुबला, असमर्थ ।

सं० अशक्य (अ=नहीं, शक्=सकना) असम्भव, गैरसुमकिन, जो नहीं होसका ।

सं० अशंक गु० निर्भय, बेखौफ ।

सं० अशन (अश्=खाना) भा० पु० खाना, भोजन ।

सं० अशनि (अश्=ताड़ना, मारना) पु० वज्र, बिजली, इन्द्रका शस्त्र ।

सं० अशिक्षित (अ=नहीं, शिक्षित=सीखाहुआ, शिक्ष=सीखना, सि-खाना) गु० अनसीखा, मूर्ख ।

सं० अशित (अश्=खाना) र्म० पु० खायाहुआ, भुक्त, खुर्दा ।

सं० अशिव (अ=नहीं, शिव=शुभ) गु० अशुभ, अमंगल, बुरा ।

सं० अशुद्ध (अ=नहीं, शुद्ध=पवित्र) गु० अपवित्र, ठीक नहीं, गलत ।

सं० अशुद्धता भा० स्त्री० भूल, गलती, गलतफहमी, नापाकी ।

सं० अशुभ (अ=नहीं, शुभ=अच्छा) गु० बुरा, अमंगल, पु० बुराई, आपदा, दुःख ।

सं० अशुभचिन्तकता भा० स्त्री० बुरा सोचना, बदअंदेशी ।

सं० अशोक (अ=नहीं, शोक=शोच) पु० सुख, चैन, आराम, २ एक वृक्ष का नाम, गु० प्रसन्न, चैनसे, ख़ुश, बे फ़िक्र ।

सं० अश्म { पु० पत्थर ।
अश्मन् }

सं० अश्व (अश्=फैलना वा खाना) पु० घोड़ा, तुरंग ।

सं० अश्वतर पु० खच्चर, वह जानवर जो घोड़ी और गधे से पैदा हो ।

सं० अश्वपति (अश्व=घोड़ा, पति=मालिक) पु० घोड़े का मालिक, २ सवार, घुड़चढ़ा ।

सं० अश्वमेध (अश्व=घोड़ा, मेध=यज्ञ) पु० घोड़ेका यज्ञ, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाता है ।

सं० अश्ववार (अश्व=घोड़ा, वृ=पसंद करना वा ढकना) पु० सवार, घुड़चढ़ा ।

सं० अश्वशाला (अश्व=घोड़ा, शाला=जगह) स्त्री० घुड़साल, घोड़ों का तबेला ।

सं० अश्वशिक्षक क० पु० चाबुक-

सवार ।

सं० अश्वसेवक क० पु० साईस ।

सं० अश्विनी (अश्व=घोड़ा अ-
र्थात् जिसका आकार घोड़े के
शिरसा है) स्त्री० एक नक्षत्र का
नाम, पहला नक्षत्र ।

सं० अश्विनीकुमार (अश्विनी=
घोड़ी, कुमार=बेटा अर्थात् सूर्य
की स्त्री एकबार घोड़ीका रूप बन
गई थी तब घोड़े का रूप सूर्य
बना था उस समय के पैदा हुए
दो लड़कों का नाम अश्विनीकु-
मार है) पु० देवताओं के वैद्य ।

सं० अषाढ़ (अषाढ़ा, एक नक्षत्र
का नाम जो इस महीने की पूर्ण-
मासी को होता है और इस महीने
में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास
रहता है) पु० बरस का तीसरा
महीना ।

सं० अष्टधातु (अष्ट=आठ, धातु=
धात) स्त्री० आठधातु की धातु
जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ तांबा,
४ पीतल, ५ रांगा, ६ कांसा,
७ सीसा, ८ लोहा ।

प्रा० अष्टधाती (सं० अष्टधातु)
गु० आठ धातुका बना हुआ ।

सं० अष्टमी (अष्टम=आठवां, अष्ट
=आठ) स्त्री० पक्षकी आठवीं
तिथि ।

सं० अष्टसिद्धि (अष्ट=आठ, सिद्धि=

मन का मनोरथ) स्त्री० आठ प्र-
कार की सिद्धि १ अणिमा बहुत
छोटा बनजाने की शक्ति, २ मै-
हिमा बहुत बड़ा बनजाने की
शक्ति, ३ लघिमा हलका बनजाने
की शक्ति, ४ प्राप्ति चाहे जितनी
दूर पर जो चीज हो उसको ले
लेने की शक्ति, ५ प्राकाम्य
चाहे जैसे मनोरथ को पूरा करना,
६ ईशित्व ऐश्वर्यरखना, ७ वशित्व
सबके वश करने की शक्ति, ८
कामावसायिता सांसारिक सारी
इच्छा को पूरा करना अर्थात्
किसी बात की इच्छा नहीं र-
खना ॥ अणिमा लघिमा प्राप्तिः
प्राकाम्यं महिमा तथा । ईशित्वं च
वशित्वं च तथा कामावसायिताः ॥

सं० अष्टांगप्रणाम (अष्टांग=आठ
अंग, प्रणाम=नमस्कार) पु० आठ
अंगों से दंडवत् करना अर्थात् १
हाथों २ पैरों ३ जांघ ४ हिरदा ५
आंखों ६ शिर ७ वचन ८ मन
से प्रणाम करना ।

सं० असंख्य (अ=नहीं, संख्या=
गिन्ती) गु० अनगिनत, अगणित,
बेशुमार, बेहिसाब ।

सं० असंग्रह (अ=नहीं, सं=सब,
ग्रह=लेना) गु० पु० संचयहीन,
नहीं इकट्ठा ।

प्रा० अस गु० ऐसा, ऐसी, कि०

वि० इस तरह से, इस प्रकार से ।
 सं० असत्य (अ=नहीं, सत्य=सांच) गु० झूठा, मिथ्या, पु० झूठ, दरोग ।
 सं० असत्यसंध गु० कपटपरायण, दगाबाज ।
 सं० असफल (अ=नहीं, स + फल=सहित फल) गु० पु० फलरहित, असिद्ध, फल न देनेवाला, बेकाम, बेमुराद, बेमकसद ।
 सं० असभ्य (अ=नहीं, सभ्य=सभा के योग्य) गु० भँवार, अनाड़ी, जो सभा के योग्य न हो, बेतहजीब ।
 सं० असमंजस (अ=नहीं) सम-अस=ठीक, सम=साथ, अंजसा=सचाई से, अंज=शुद्ध करना) पु० संदेह, द्विविधा, अनिश्चय, शक, श्रवहा, पशोपेश, राजासगर के पुत्रका नाम ।
 सं० असमर्थ (अ=नहीं, समर्थ=बलवान्) गु० दुबला, निबला ।
 सं० असमर्थता भा० स्त्री० लाचारी, बेताकती, निर्वलता ।
 सं० असमय, (अ=नहीं, समय=काल) गु० कुसमय, बेव्रत, बेवक़ ।
 सं० असमशर (असम=विषम, शर=तीर) पु० कामदेव ।
 सं० असम्भव (अ=नहीं, सम्भव=होने योग्य) गु० अनहोना, नहीं

होनेवाला, नहीं होसकनेवाला, गैरमुमकिन ।
 सं० असत्यवादी (अ=नहीं, सत्य=सांच, वद्=कहना) क० पु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, दरो-सगो ।
 सं० असह्य (अ=नहीं, सह=सहने योग्य, सह=सहना) गु० जो सहा नहीं जाय, कठोर, कड़ा, कड़वा, बेवरदाश्त ।
 प्रा० असवार } (सं० अश्ववार)
 भवार } पु० गुड़घड़ा ।
 सं० असाधु (अ=नहीं, साधु=सीधा) गु० अधर्मी, पापी, दुष्ट, बुरा ।
 सं० असाध्य (अ=नहीं, साध्य=सिद्ध होनेयोग्य) गु० कठिन, २ असम्भव, ३ जिसका इलाज नहीं होसके, लादवा ।
 सं० असार (अ=नहीं, सार=गूदा, तत्त्व) गु० छूड़ा, पोला, सूखा, २ वृथा, बेफायदह, निष्फल, जिसमें कुछ सार न हो ।
 सं० असावधान (अ=नहीं, सावधान=चौकस, होशियार) गु० अचेत, बेसुध, बेसुरत, बेखबर, ग्राफिल ।
 सं० असावधानी भा० स्त्री० बेचौकसाई, बेखबरी, गफलत ।
 सं० असि (अस्=फेंकना वा चमकना) स्त्री० तलवार, खांडा, खड्ग,

शमशेर ।
 सं० असित (अ=नहीं, सित=धौला) गु० काला, कृष्णपक्ष ।
 सं० असिद्ध (अ=नहीं, सिद्ध=पूरा) गु० अधूरा, अनवना, २ विनपका, ३ भूठ, झूठा ।
 सं० असिद्धता भा० स्त्री० नाकामयाबी, झूठाई ।
 प्रा० असीम } (सं० आशिम्) स्त्री०
 आसीस } आशीर्वाद, दुआ ।
 सं० असु (अस्=फेंकना) भा० पु० प्राण, श्वास, रुह, जान ।
 सं० असुर (अस्=फेंकना, जो देवताओं को फेंकते हैं) पु० दिति के बेटे, राक्षस, दैत्य, दानव ।
 सं० असुरसेन गयातीर्थ ।
 सं० अमृयक (अस् + य + अक, अस्=निरादर करना) क० पु० निन्दक, चुगुलखोर, बुराई बतलाने वाला ।
 सं० असूया भा० स्त्री० गुणमें दोष लगाना, ऐवजोईकरना, निन्दा करना ।
 अ० असोसियेशन=मेल, सभा, समाज, मजलिस ।
 सं० अस्त्रलित (अ=नहीं, स्त्रल=गिरना) र्म० पु० अच्युत, अपतित ।
 सं० अस्त (अस्=फेंकना) पु० सूर्य का झिपना वा डूबना, गुरुबहोना ।
 प्रा० अस्तहोना कि० अ० बोल०

सूर्य का डूबना, सूर्य झिपना ।
 सं० अस्तव्यस्त (अस्=फेंकना) गु० तित्तर वित्तर, जुदाजुदा, उलटा पुलटा, तीनतेरह, इधर उधर, जहां तहां, झिन्नभिन्न, तहोवाला ।
 सं० अस्ताचल (अस्त=सूर्य डूबना, अचल=पहाड़) पु० पश्चिम की ओर एक पहाड़ जहां हिन्दू लोग मानते हैं कि सूर्य डूबता है ।
 सं० अस्ति स्त्री० विद्यमान, मौजूद ।
 प्रा० अस्तुत } सं० (स्तुति) स्त्री० स-
 अस्तुनि } राह, तारीफ, प्रशंसा, भजन ।
 सं० अस्त्र (अस्=फेंकना) पु० ऐसा हथियार जिसको फेंकके मारें जैसा बाण तोपका गोला आदि, २ तलवार आदि सब हथियारों को भी कभी कभी अस्त्र कहते हैं ।
 सं० अस्थि (अस्=फेंकना) पु० हाड़, हड्डी ।
 प्रा० अस्सी (सं० अशीति) गु० चारवीसी ।
 सं० अहमिति स्त्री० अहंकार, अभिमान, गरूर, खुदी ।
 सं० अहंकार (अहम्=मैं, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० घमंड, अभिमान, अकड़मकड़, गर्व, मद, ऐंठ, मरोड़, शेखी ।
 सं० अहंकारी (अहंकार) पु० घमंडी, अकड़बाज, अकड़ैत, शेखी-

बाज, अभिमानी ।
 सं० अहन् पु० दिन, रोज, अहर् ।
 सं० अहर्निशि स्त्री० रातदिन, श-
 बवरोज ।
 सं० अहल्या (अहल्य, अ=नहीं,
 हल्य=वैरूप्य) स्त्री० गौतम ऋषि
 की स्त्री ।
 प्रा० अहार (सं० आहार) पु०
 खाना, भोजन ।
 प्रा० अहाहाहा } (अहह, अहम्=
 सं० अहह } मैं, हा=छोड़ना)
 वि० बो० अचंभा, दुःख और
 खुशी आदिको जतलानेवाला
 शब्द, आहा, आह, हाय ।
 प्रा० अहहिं (सं० अस्ति=है, अस्
 =होना) क्रि० अ० है, विद्य-
 मान है, मौजूद है ।
 सं० अहिंसा (अ=नहीं, हिंसा=
 मारना) स्त्री० दया, किसी को
 नहीं मारना, किसीको नहीं
 सताना ।
 सं० अहि (अ=चारों ओर से,
 हन्=मारना) पु० सांप, सर्प,
 नाग ।
 सं० अहिगति (अहि=सांप, गति=
 चलना, जाना) स्त्री० सांप की
 चाल, टेढ़ीचाल, कजरप्रनारी ।
 प्रा० अहिलार (सं० अहिक्षार)
 पु० सांप का विष ।
 सं० अहित (अ=नहीं, हित=प्यार,

भला) पु० वैरी, शत्रु, २ वैर,
 विरोध ।
 सं० अहितकारी (अ=नहीं, हित=
 भलाई, कारी=कृ=करना) क०
 पु० अप्रिय करनेवाला, बुराई
 करने वाला ।
 सं० अहिनी स्त्री० सांपिन, सर्पिणी ।
 सं० अहिपति (अहि=सांप, पति
 =मालिक) पु० सांपोंका राजा,
 शेषजी, २ वासुकी ।
 सं० अहिफेन पु० अफीम ।
 प्रा० अहिलव (अभिलव, अभि=
 सामने, लव=डुवाना) बाढ़,
 २ संपोला, सांपका बच्चा ।
 प्रा० अहिवान (सं० अस्तिपति,
 अस्ति=है, पति=भर्ता, स्वाविंद)
 पु० सुहाग, पतिके जीनेका चिह्न ।
 सं० अहीन (अहि=सांप, इन=मा-
 लिक) पु० सांपोंका राजा, शेषजी,
 शेषनाग ।
 सं० अहीश (अहि=सांप, ईश=
 मालिक) पु० सांपोंका राजा,
 शेषजी ।
 प्रा० अहीर (सं० आभीर आ=
 चारों ओर से, भी=डर, रा=देना
 वा आ, ईर=भेजना) पु० ग्वाला ।
 प्रा० अहीरणी } (अहीर) स्त्री०
 अहीरी } ग्वालिनी ।
 सं० अहे } वि० बो० संबोधन का
 अहो } सूचक, शोच, दुःख,

दया, अर्चना, बड़ा, सराह आदि
अर्थों में बोले जाते हैं ।

प्रा० अहेर (सं० आखेट) स्त्री०
शिकार, मृगया, आखेट ।

प्रा० अहेरिया (सं० आखेटकी)
अहेरी) पु० शिकारी, व-
हेलिया, आखेटकी ।

प्रा० अहो (सं० अहह) वि० बो०
आश्चर्य, तअज्जुब, कष्ट, हर्ष,
दुःख ।

सं० अहोरात्रि (अहन्=दिन, रात्रि
=रात) क्रि० वि० रातदिन,
दिनरात ।

आ

सं० आ, वि० बो० हाय, आह, दुःख
अथवा दया को जतानेवाला शब्द ।

सं० आ, उपस० से (जैसे आकौ-
मारम्=बालकपन से) २, तक,
तलक, लग, तोड़ी (जैसे आगो-
पाल=बाल तक, अथवा आमर-
णम्=मरनेतक) ३, चारों ओर से,
४ कुछ, कुछेक, सा (जैसे आ-
पीत=कुछेक पीला, अथवा पीला
सा), ५ पहले, ६ वाक्य के
उलटे अर्थ में ।

सं० आ पु० शिव, महादेव, २ ब्रह्मा ।

प्रा० आंक (सं० अङ्क) पु० अङ्क,
संख्या, रकम, २ चिह्न, निशान,
३ कपड़े के थानपर का चिह्न
जिससे उसका मोल जाना जाता

है, निश्चय ।

प्रा० आंकना (सं० अङ्क=चिह्न क-
रना (क्रि० सं० जांचना, पर-
खना, २ मोल करना, मोल ठ-
हराना, ३ चिह्न करना ।

प्रा० आंकुश (सं० अंकुर) पु०
अंकुश, आंकड़ी, लोहे का कांटा
जिससे हाथी को चलाते हैं ।

प्रा० आंकुश मारना बोल० वश
करना ।

प्रा० आंग्व (सं० अक्षि) स्त्री० नेत्र,
नयन, चक्षु, चपु ।

प्रा० आंग्व आना बोल० आंख में
जलन होनी, आंख लाल होजाना ।

प्रा० आंग्व खटकना बोल० आंख
दुखना, आंखमें दर्द होना ।

प्रा० आंग्व चढ़ाना बोल० क्रोध क-
रना, गुस्सा करना, २ मस्त होना,
मतवाला होना, नशेमें होना ।

प्रा० आंग्व चीर चीरके देखना
बोल० खूब ध्यान लगाके देखना,
२ अथवा क्रोध से देखना ।

प्रा० आंग्व चुराना बोल० ध्यान
नहीं देना, २ शर्मसे आंख फेर
लेना, ३ किसी से आंख बचाना ।

प्रा० आंग्व छिपाना बोल० किसी
बुरे काम के करने से लजाना ।

प्रा० आंग्व ठंडीकरना बोल०
मित्रों के मिलने से प्रसन्न होना,
प्रसन्न होना ।

प्रा० आंखडबडबाना बोल० आंखों में आंसू भरलाना ।

प्रा० आंखदिग्वाना } बोल० धम-
आंखदिग्वलाना } काना, घुर-
कना ।

प्रा० आंखपथराना बोल० चका-
चोंदा होना, चौंधियाना ।

प्रा० आंखफड़कना बोल० आंख फटकना, आंख के पपोटों का हिलना (जब कि पुरुष की दाहिनी और स्त्री की बाईं आंख फड़कती है तो हिन्दू लोग उसको अच्छा सगुन मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ अच्छा होनेवाला है पर जब पुरुष की बाईं और स्त्री की दाहिनी आंख फड़कती है तब सोचते हैं कि कुछ बुरा होनेवाला है) ।

प्रा० आंखफूटना बोल० अंधा होना ।

प्रा० आंखफूटी पीरगई बोल० यह मुहावरा उस समय बोला जाता है कि जब दो आदमी किसी एक चीज के लिये झगड़ते हों और उस चीज के खोय जानेपर उनका झगड़ा बन्द हो जाय ।

प्रा० आंखफेरना } बोल० मित्रों से
आंखमोड़ना } मित्रताई तो-
ड़ना, मित्रों से बैर करना ।

प्रा० आंखबंदकरलेना } बोल०
आंख मूंदना } दूसरे से
मुँह मोड़ना, दूसरे की खबर न लेना, २ मरना ।

प्रा० आंखबचाना बोल० आंख-
चुराना, आंख बराबर न कर स-
कना, शर्माना ।

प्रा० आंखभरके देखना बोल० किसी अनोखी चीज को खूब दे-
खना कि संतोष होजावे ।

प्रा० आंखभरलाना बोल० आंखों में आंसू भरलाना, आंखडबड-
बाना, रोनी सूरत बनाना ।

प्रा० आंखमारना बोल० आंख मटकाना, सैन करना, इशारा करना, आनाकानी करना ।

प्रा० आंखमिचजाना बोल० म-
रना, मरजाना ।

प्रा० आंखमिचौवल } (आंखमि-
प्रा० आंखमिचौली } चौलना, मूँ-
प्रा० आंखमुंदौरा } दना) बोल०
एक खेलका नाम ।

प्रा० आंखभिलाना बोल० मित्र-
ताई करना, दोस्ती करना ।

प्रा० आंखरखना बो० प्यार करना,
प्यार की बातें करना, २ आशा
करना, ३ देखना, ताकना, ४
किसी स्त्री को बुरी दृष्टि से देखना ।

प्रा० आंखलगाना बोल० किसी
के प्यार में फँसना, प्यार करना,

दोस्ती करना ।

प्रा० आंखलड़ना बोल० अपने
प्यारे से अचानक मिलजाना,
अपने प्यारे के देखने से उसके
प्रेमके वश होना ।

प्रा० आंखलड़ाना बोल० आंख
मारना, सैन करना, इशारा करना,
२ छिपी बात को इशारों से जत-
लाना ।

प्रा० आंखलालकरना बोल० क्रोध
करना, खिसियाना, गुस्सा करना ।

प्रा० आंखसेंकना बोल० किसी
के रूपको अथवा सुन्दरता को
देखना ।

प्रा० आंख से गिरना बोल० हलका
होना, तुच्छ होजाना, बेकदर
होना ।

प्रा० आंखें नीली पीली करना
बोल० बहुत गुस्से से मुंह का रंग
बदलना ।

प्रा० आंखोंपरबैठना बोल० प्यारा
होना, ऊंचा बैठना, प्रतिष्ठित
होना, आंखों में जगह पाना ।

प्रा० आंखोंमें आना बोल० नशेमें
होना, मदिरा के नशेमें मस्त होना ।

प्रा० आंखों में घर करना बोल०
प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

प्रा० आंखों में चरबीछाना बोल०
धनके मदसे धमंड करके अपने
पुराने मित्रों को नहीं पहँचानना,

जानबूझ के अन्धा होना ।

प्रा० आंखोंमें फिरना } बोल०
आंखों में बसना } सदा याद
रहना, मन में सदा किसी का
ध्यान बँधा रहना ।

प्रा० आंखोंमेंरातकाटना } बोल०
आंखोंमेंरातलेजाना } सवरात
जागते बिताना ।

प्रा० आंग (सं० अङ्ग) पु० शरीर,
देह, अंग, शरीर का एक भाग ।

प्रा० आंगन } (सं० अङ्गन) पु०
आंगना } चौक, अंगनाई, स-
हेन ।

प्रा० आंच स्त्री० गरमी, आग का
लूका भभूका ।

प्रा० आंचर } (सं० अंचल) पु०
आंचल } अंचला, कपड़े का
किनारा, २ लुगाई की छाती ।

प्रा० आंजना (सं० अञ्जन) क्रि०
स० अंजन डालना, सुरमा ल-
गाना, काजल लगाना ।

प्रा० आंट (सं० आनद्ध, आ=चारों
ओर से, नह=बांधना) स्त्री=गांठ,
२ वैर, विरोध, डाह ।

प्रा० आंत (सं० अन्त्र) स्त्री०
अंतड़ी ।

प्रा० आंधी (सं० अन्धकार) स्त्री०
भकड़, तूफान, तेज हवा ।

प्रा० आंव (सं० आम, अम्=बीमार
होना) स्त्री० पेट में एक तरह का

रोग, २ आमाशय, शूल ।

प्रा० आंस् (सं० अश्रु, अश्=फै-
लना) पु० आंख का पानी ।

प्रा० आंस् भरलाना बोल० आंख
डबडवाना, रोनी मूरत बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक
पेड़ का नाम, अकवन, मदार ।

सं० आकर (आ=चारों ओर से,
कृ=बिखरना अर्थात् जहां धातु
बिखरी रहती हैं) स्त्री० खान,
खानि ।

सं० आकर्णित र्म० पु० सुना
गया, श्रुत ।

सं० आकर्ण्य अव्य० सुनकर ।

सं० आकर्ष (आ + कृप्=खींचना)
भा० पु० खींचना, ऐंचना, बटोरना ।

सं० आकर्षक (आ=से, कृप्=
खींचना) पु० चुम्बक पत्थर, खींचने-
वाली चीज, क० पु० खींचने-
वाला ।

सं० आकर्षण (आ=से, कृप्=
खींचना) भा० पु० खिंचाव,
खींचने की शक्ति ।

सं० आकर्षित (आ=से, कर्ष +
इत्, कृप्=खींचना) र्म० पु०
खींचा गया ।

सं० आकांक्षा (आ=चारों ओर
से, कांक्ष=चाहना) स्त्री० चाह,
चाहना, इच्छा, वांछा, अभिलाष,
त्वाहिश ।

सं० आकांक्षक (आ=से, कांक्ष +
अक, कांक्ष=चाहनेवाला) क० पु०
इच्छुक, वांछक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ=से, कांक्ष +
इ) क० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ=करना) ए०
पु० रूप, ढाँल, स्वरूप, मूरत,
मूरत, २ चिह्न, निशान, ३ आ
अक्षर ।

सं० आकाश (आ=चारों ओर से,
काश्=चमकना) पु० आस्मान,
गगन, शून्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश=आ-
स्मान, वृत्ति=जीविका) स्त्री०
जो आजीविका नियत नहीं है,
अस्थिर जीविका, बेक्यामरोजी ।

सं० आकाशवाणी (आकाश=
आस्मान, वाणी=शब्द) स्त्री०
आकाश से जो कुछ बात सुनी
जाती है, वाणी जो आकाश से
होती है ।

सं० आकीर्ण (आ=चारों ओर से,
कृ=बिखरना वा फैलना) र्म० पु०
परिपूर्ण, व्याप्त, भराहुआ ।

सं० आकुञ्चन (आ=चारों ओर से,
कुञ्च=सिमटना) भा० पु० संको-
चन, सिकुड़ना ।

सं० आकुल (आ=चारों ओर से,
कुल=दुःखी होना) गु० घबराया
हुआ, व्याकुल, दुःखी, परेशान ।

सं० आकुलित (आ=से, कुल् + इत) र्म० दुःखित, क्लेशित, रंजीदा ।

सं० आकृति (आ, कृ=करना) स्त्री० रूप, स्वरूप, मूर्त, मूर्त, ढौल ।

सं० आकृष्ट (आ=चारों ओर से, कृप् + त, कृप्=खींचना) र्म० पु० खींचाहुआ, आकर्षित ।

सं० आकृष्टि (आ=से, कृष् + ति) भा० पु० आकर्षण, खींचना, घसीटना ।

सं० आक्रमक (आ=सब ओर से, क्रम् + अक, क्रम्=जाना) क० पु० घेरनेवाला, हमला करनेवाला ।

सं० आक्रमण (आ=से, क्रम् + अन, क्रम्=जाना वा हमला करना) भा० पु० व्यापन, घेरना, हमला करना, मुहासरा करना ।

सं० आक्रम्य (आ=से, क्रम् + य) धा० अव्य० घेरकर, हमला करके ।

सं० आक्रान्त (आ=से, क्रम् + त) र्म० पु० घेराहुआ, घेरा गया, हमला किया गया, क० २ श्रान्त, थका हुआ ।

सं० आक्रीड (आ=चारों ओर से, क्रीड्=खेलना) पु० राजाका उपवन, बादशाहीबाग ।

सं० आक्रोश (आ=चारों ओर से, कुश=रोना) भा० पु० क्रोध, रोना, गुस्सा, गिरियावजारी ।

सं० आक्षेप (आ, क्षिप्=फेंकना) पु० बुरीबात, निन्दा, दुर्वचन, २ फेंकना, ३ एक अर्थालंकारकानाम ।

प्रा० आखर (सं० अक्षर) पु० अक्षर, वर्ण, हर्फ ।

सं० आखु मूषक, मूश, मूसा, चूहा ।

सं० आखुभुक (आखु = मूश, भुज्=भक्षण करना) क० पु० बि, लार, मार्जार, गुर्वा ।

सं० आखेट (आ=से, खिर्= डराना, सताना) स्त्री० शिकार, अहेर, मृगया ।

सं० आख्य { (आ=सबप्रकार से, आख्या } ख्या=कहना, प्रसिद्ध होना) पु० नाम, संज्ञा, इस्म ।

सं० आख्यात (आ=से, ख्या + त) र्म० उक्त, मजकूर, कहाहुआ ।

सं० आख्यायिका स्त्री० कहानी, कथा, रवायत, फिसाना ।

सं० आख्यान (आ=से, ख्या= प्रसिद्ध होना) पु० बात, कथा, वृत्तान्त, वर्णन, इतिहास ।

प्रा० आग (सं० अग्नि) स्त्री० आगी, अग्नि, अनल ।

प्रा० आगउठाना बोल० बखेड़ा मचाना, क्रोधितकरना, गुस्सा बढ़ाना, खिजलाना ।

प्रा० आगकरना बोल० बहुतही बहुत गर्म करना, २ क्रोध अथवा ढाह बढ़ाना ।

प्रा० आगदेना बोल० मुर्दाजलाना ।

प्रा० आगपड़ना बोल० गुस्से होना,
खिसियाना, क्रोध करना, भड़कना ।

प्रा० आगवरसना बोल० यह मुहा-
वरा उस समय बोला जाता है जब
बहुत गर्मी पड़ती है, अथवा लड़ाई
में तोप के गोले चलते हैं ।

प्रा० आगबुझाना {

आगमें पानी डालना }

बोल० ठंढा करना, भगड़ा बंद
करना, बखेड़ा मिटाना ।

प्रा० आगभग्वना { बोल० निक-
आगफांकना } म्मीयातें कर-
ना, वृथा बकवाद करना, २ डींग
मारना, शेखी करना, अपनी बड़ाई
करना, धमंड करना ।

प्रा० आग में लोटना बोल० सोच
से दुःखी होना ।

प्रा० आगलगना बोल० जलना,
क्रोधित होना, खिसियाना, गुस्से
होना, २ बहुत भूख लगना ।

प्रा० आगलगाके पानी ले दौड़ना
बोल० जिस भगड़े को आप खेंड़ा
हो उसके मिटानेका बहाना करना,
२ छल करना, छलना, ठगना ।

प्रा० आगलगाना बोल० जलाना,
फूंकना, गुस्से में करना, क्रोधित
करना, भड़कना ।

प्रा० आगसुलगाना बोल० आग
जलाना, बखेड़ा मचाना, छुपे छुपे

दंगा बखेड़ा उठाना ।

प्रा० आगहोना बोल० गुस्से होना ।
क्रोधित होना, खिसियाना ।

सं० आगन (आ=चारों ओर से,
ग + त, गम्=जाना) क० पु० आया
हुआ, पहुँचा, उपस्थित, आयात ।

सं० आगन्ना (क० पु० आनेवाला,
आगन्तुक) अजनबी ।

सं० आगम (आ, गम्=जाना, और
आ उपसर्ग के साथ आने से अर्थ
हुआ आना) पु० शास्त्र, तन्त्रशास्त्र
जिसमें मन्त्रों का वर्णन है, और
उसको महादेव ने बनाया है सं-
स्कृत में आगम का यह लक्षण
लिखा है “ आगतं शिववक्त्रेभ्यो,
गतञ्च गिरिजाश्रुतौ । मतञ्च वासु-
देवस्य तस्मादागम उच्यते ” अर्थ
महादेव ने कहा और पार्वती ने
सुना और विष्णु ने माना इस
लिये इसको आगम कहते हैं और
यहां आ का अर्थ आया (महादेव
से) ग का अर्थ गया (पार्वती के
पास) और म का अर्थ माना
(विष्णु ने) है २ आना, ३ भ-
विष्यत्, आनेवाला, आमदनी ।

प्रा० आगमबांधना बोल० अगली
बात को ठीक करना, वा अगली
बातका विचार करना, २ आगे से
जताना, आगमकहना ।

सं० आगमन (आ, गम्=जाना)

भा० पु० आना, अवाई ।
 प्रा० आगा (सं० अग्र) पु० अग-
 वाड़ा, साम्हना ।
 प्रा० आगा पीछा करना बोल०
 दुविधा में होना, संदेह रखना,
 हिचकना, ठिठकना, झझकना ।
 सं० आगामी (आ + गम् + ई,
 गम्=जाना) क० पु० आनेवाला,
 भावी, जो आगे आनेवाला है ।
 सं० आगार (आ, गृ=निगलना)
 धि० पु० घर, स्थान, जगह, मकान ।
 सं० आगुल्फ (आ=तक, गुल्फ=
 टखना) गु० टखनातक ।
 प्रा० आगे (सं० अग्रे) क्रि० वि०
 पहले, साम्हने, सम्मुख, इसके
 पीछे, बढ़के २ तब, फिर ।
 प्रा० आगेधरलेना बोल० आगे
 बढ़ना, आगे जाना, किसी को
 पीछे छोड़ना ।
 सं० आग्रह (आ=चारों ओर से,
 ग्रह=ग्रहण करना, वा लेना) भा०
 पु० पकड़ना, छीनना, लेना, क-
 सना, छेड़ना, घेरना, हठकरना,
 कोशिश, ज़िद पकड़ना, मिहर-
 बानी, मुरब्बीपन ।
 सं० आघात (आ=से, हन्=मारना)
 पु० चोट, खड़का, मारना, भिड़ना
 २ मारने की जगह ।
 सं० आघातित (आ=सब प्रकारसे,
 घात् + इत, हन्=मारना) र्म० पु०

मारा हुआ, चोट खाया हुआ ।
 सं० आघूर्णन (आ=से, घूर्ण=
 घूमना वा ताकना) भा० पु०
 देखना, घूरना, ताकना ।
 सं० आघूर्णित (आ + घूर्ण + इत)
 र्म० पु० देखागया, घूरागया ।
 सं० आघ्राण (आ=से, घ्रा=सूंघना)
 भा० पु० सूंघना, गंधलेना ।
 सं० आघ्रात (आ + घ्रा + त) र्म०
 पु० सूंघाहुआ, गंधग्रहण ।
 सं० आघ्रेय र्म० पु० सूंघनेयोग्य ।
 सं० आचमन (आ, चम्=खाना)
 भा० पु० खाने के पीछे हाथ मुँह
 पानी से साफ करना, २ संध्या
 करने के समय चुल्हू से तीनबार
 मुँहमें पानी लेना ।
 सं० आचरण (आ, चर्=चलना)
 भा० पु० चालचलन, व्यवहार,
 रीति भांति, चलन ।
 सं० आचरित (आ + चर् + इत)
 र्म० पु० मानलीजाय, तसलीम
 करलीजाय ।
 सं० आचार (आ, चर्=चलना)
 भा० पु० आचरण, व्यवहार,
 रीति, चलन, २ पवित्रता, सफाई,
 शुद्धता, तरीका ।
 सं० आचारी (आचार) क० पु०
 आचार रखनेवाला, शास्त्रके अनु-
 सार चलनेवाला ।
 सं० आचार्य्य (आ, चर्=चलना)

पु० गुरु, पढ़ानेवाला, शिक्षक,
उपदेश करनेवाला, वेदशास्त्र प-
ढ़ानेवाला ।

सं० आच्छादक (आ + छद् +
अक) क० पु० ढांकनेवाला,
छिपानेवाला, मूंदनेवाला ।

सं० आच्छादन (आ=से, छद्=
ढकना) भा० पु० ढकनेका कपड़ा,
चदर, २ ढकना ।

सं० आच्छादित } र्म० पु० मुँदा
आच्छिन्न } हुआ, ढका-
हुआ, आवृत ।

प्रा० आछें } (सं० अच्छ अच्छा)
आछें } गु० अच्छा ।

प्रा० आज (सं० अद्य) आजका
दिन, वर्तमान दिन ।

प्रा० आजकल बोल० इनदिनों में
कुछ दिनों से ।

प्रा० आजकल करना } बोल०
आजकल बताना } टालना,
हां हूं करना ।

प्रा० आज्ञा (सं० आर्य्यक) पु०
दादा, पितामह ।

सं० आजीव (आ + जीव=जीना)
रोजगार, जीविका, पेशा ।

सं० आजीविका (आ=से, जीव
=जीना) स्त्री० जीविका, निर्बाह,
जीने का उपाय, रोजी, रिजक ।

सं० आज्ञा (आ=से, ज्ञा=जानना)
स्त्री० हुक्म, आदेश, आयसु ।

सं० आज्ञाकारी (आज्ञा=हुक्म,
कारी=पूरा करनेवाला, कृ=करना)

गु० आज्ञा माननेवाला, हुक्ममान-
नेवाला, सेवक, आधीन, ताबेदार ।

सं० आज्ञानुवर्ती (आज्ञा=हुक्म,
अनु=पीछे, वृत्=मानना) क० पु०
आज्ञाकारी, फर्मावरदार, वशी-
भूत, आधीन ।

सं० आज्ञापक (आ=सब प्रकारसे,
ज्ञापक=हुक्म करनेवाला) आदेशक-
रनेवाला, हुक्म करनेवाला, हाकिम ।

सं० आज्ञापन (आ=से, ज्ञापन=
जताना) भा० पु० विज्ञापन, चि-
ताना, इत्तलाअ देना, हुक्म देना ।

सं० आज्ञप्त (आ + ज्ञप्त) र्म०
पु० आज्ञापाया हुआ, महकूम ।

सं० आज्ञापत्र (आज्ञा=हुक्म, पत्र
=कागज) पु० हुक्मनामा लि-
खी हुई आज्ञा फर्मान ।

सं० आज्य (अज्ज् + य, अज्ज्=
लेप करना) पु० घृत, घी, घीव,
सर्पिष्, रोगनज्जर्द ।

सं० आटोप (आ=चारों ओर से,
तुप्=ढकना, मारना) पु० घमण्ड,
अभिमान, दर्प, अहङ्कार ।

प्रा० आठ (सं० अष्ट) गु० अष्ट,
एक गिन्ती का नाम ।

प्रा० आठ आठ आंसू रोना बोल०
बहुत रोना, फूट २ के रोना ।

प्रा० आठपहर बोल० रात दिन,

हर घड़ी, हर आन, सदा, नितउठ।

प्रा० आइ स्त्री० ओट, परदा, रोक।

सं० आइम्बर (आ=चारों ओर से, डम्ब + अरन्, डम्ब=फेंकना)

पु० हर्ष, घमंड, गरूर, पाखंड,

छत्र, मेघ, नकारा, तुरहीका शब्द,

खटला, उद्योग, वनावट, वनाव,

आयोजन, आरम्भ, मेघका गर-

जना, संरम्भ, लिबास, भेष ।

प्रा० आड़ा गु० तिरछा, टेढ़ा, बांका।

प्रा० आड़ी गु० रक्षक, मुहाफिज, स्वरविशेष ।

प्रा० आड़े आना बोल० बचावना, बीच में पड़ना ।

सं० आढ़क परिमाणविशेष, अढ़ैया, द्रोण का चौथा भाग ।

सं० आढ़की स्त्री० अरहर ।

प्रा० आढ़त स्त्री० अड़ा, माल का चलान ।

प्रा० आढ़निया पु० वैपारी, महा-जन, दलाल ।

सं० आतङ्क (आ=से, तकि=दुख से जीना) पु० डर, भय, खौफ,

२ दुख, ३ पीड़ा, रोग, सन्ताप ।

सं० आततायी अग्निलगाना, विष देना, शस्त्रघात करना दूसरे का

धन स्त्री भूमि अन्याय से लेलेना

इन ६ कर्म करनेवाले को आत-

तायी कहा है ।

सं० आतप (आ=चारों ओर से,

तप्=तपाना) ग० पु० धूप, घाम, सूर्य की गर्मी ।

सं० आतपत्र (आतप=धूप, त्रै=बचाना) पु० छतरी, छाता, छत्र ।

सं० आतर (आ=से तृ=जाना वा, तैरना) ग० पु० अन्तर, बीच,

फर्क, उतराई ।

सं० आतिथेय पु० अतिथि के निमित्त भोजनादि देनेवाला, अतिथि,

सेवक, महमानिवाज, मेजवान ।

सं० आतिथ्य भा० पु० अतिथि सेवा, सम्मान, महिमानदारी, म-

हमानिवाजी ।

सं० आतुर (आ, तुर=जल्दी क-रना) गु० घबराया हुआ, व्या-

कुल, बेचैन, दुखी, २ रोगी, क्रि०

वि० शीघ्र, झटपट जल्दी ।

सं० आत्मघात (आत्मन्=अपने को, घात=नाश, मारना) पु०

आत्महत्या, अपने तई मारडालना,

खुदकुशी ।

सं० आत्मज (आत्मन्=अपनी आ-त्मासे जन्=पैदा होना) पु० पुत्र,

बेटा, सन्तान ।

सं० आत्महत्या (आत्मन्=अपने को हन्=मारना) स्त्री० आत्म-

घात, अपने तई मारडालना ।

सं० आत्महन क० पु० आत्मघाती, खुदकुश, आश्रमान, वायुरोग ।

सं० आत्मा (आ, अत्=जाना)

स्त्री० जीव, प्राण, आप, मन ।
 प्रा० आदिअन्त (सं० आचन्त,
 आदि=पहले, अन्त=पीछे) गु०
 पहले से पीछेतक, आरंभ से स-
 माप्ति तक, अव्वलसे आखिरतक ।
 सं० आदर (आ + दृ=आदरकरना)
 पु० मान, सन्मान, प्रतिष्ठा, खातिर ।
 सं० आदरणीय (आदर + अ-
 नीय) र्म० पु० सन्मानयोग्य,
 खातिर के लायक ।
 प्रा० आदा (आर्द्र वा आर्द्रक) पु०
 आर्द्रक, कच्ची और गीली सोंठ ।
 सं० आदान (आ + दान, दा=
 देना) भा० पु० ग्रहण, लेना,
 स्वीकार, मंजूर ।
 सं० आदानप्रदान भा० पु० देन
 लेन, दादसितद ।
 सं० आदि (आ=पहले, दा=देना,
 लियाजाना) गु० पहला, प्रथम, आर-
 म्भ, मूल, २ और, इत्यादि, वगैरह ।
 सं० आदिकवि (आदि=पहला,
 कवि=कविता बनानेवाला) पु०
 पहला कवि, ब्रह्मा, वाल्मीकि ।
 सं० आदित्य (अदिति=देवताओं
 की मा, अर्थात् अदिति का बेटा)
 पु० सूर्य, रवि, भानु, २ देवता ।
 सं० आदित्यवार (आदित्य=सूर्य
 वार=दिन) पु० एतवार ।
 सं० आदिपुरुष (आदि=पहला, पुरुष)
 पु० पहला पुरुष, विष्णु, परमेश्वर ।

सं० आदिष्ट (आ + दिश् + त,
 दिश्=देना) र्म० पु० आज्ञप्त,
 अनुमत, हुक्म दियागया, आज्ञा
 पाया हुआ, महकूम ।
 सं० आदेश (आ + दिश्=देना) पु०
 आज्ञा, हुक्म, २ योगियों का प्र-
 णाम, ३ व्याकरण में एक अक्षर
 को दूसरे अक्षर से बदलना ।
 सं० आदेशी (आ + दिश् + इन्)
 आदेशा (आ + दिश् + त)
 क० पु० आज्ञादायक, हाकिम ।
 सं० आद्योपान्त (आद्य + उपान्त)
 गु० अव्वल से आखिरतक ।
 सं० आहत (आ + दृ + त) र्म० पु०
 मान कियागया, इज्जत कियागया ।
 प्रा० आधा (सं० अर्द्ध) गु० अर्द्ध,
 दो बराबर हिस्सों में का एक,
 निष्क, नीम ।
 सं० आधान (आ + धा=रखना)
 पु० गर्भधारण, गर्भ, गाभ, हमल ।
 सं० आधार (आ + धृ=रखना) पु०
 आसरा, २ पालनेवाला, ३ आहार,
 खाना, ४ पात्र, अधिकरण ।
 प्रा० आधासीसी (सं० अर्द्ध=
 आधा, शीर्ष=शिर) स्त्री० अध-
 कवाली, आधे शिर में पीड़ा ।
 सं० आधिस्त्री० मनकी पीड़ा, उदासी ।
 सं० आधिक्य (भा० स्त्री० बहुता-
 आधिक्यता) यत्, अधिकाई,
 कसरत ।

सं० आधिपत्य भा० पु० प्रधानता,
अधिकार, स्वामित्व, वश, अ-
स्तित्यार ।
प्रा० आधीन (सं० अधीन) गु०
आज्ञाकारी, वश, ताबेदार ।
सं० आधेय (आ + धा = धरना) र्म०
धरने योग्य, जो वस्तु धरीजाय ।
प्रा० आन स्त्री० कान, मर्याद, लाज,
संकोच, २ यश ।
प्रा० आन (सं० अन्य = और) गु०
और, दूसरा ।
प्रा० आन (सं० आज्ञा) स्त्री०
आज्ञा, २ प्रतिज्ञा, सौगन्द ।
सं० आनक (आ + नी = लाना जो
खुशी को लाता है) पु० नगारा,
नकारा, दुंदुभी ।
सं० आनन (आ = से, अन् = जीना)
पु० मुँह, मुख ।
सं० आनन्द (आ = चारों ओर से,
नन्द = प्रसन्न होना) पु० हर्ष,
सुख, चैन, खुशी ।
सं० आनन्ददायी (आनन्द + दा-
यी, दा = देना) क० पु० आनन्द-
दाता, खुशी देनेवाला ।
सं० आनन्दपूर्वक (आनन्द = हर्ष,
पूर्वक = सहित) शब्दयो० अव्य०
हर्ष सहित, खुशीके साथ ।
सं० आनन्दित (आ + नन्द् + इत्)
र्म० पु० प्रसन्न, हर्षित, खुश,
बशशास ।

सं० आनन्दी (आ + नन्द् + इन्)
क० पु० आनन्दयुक्त, प्रसन्न ।
प्रा० आनना (सं० आनयन, आ +
नी = लाना) क्रि० स० लाना ।
अं० आनरेञ्जल प्रतिष्ठित, इज्जतदार ।
प्रा० आना (सं० आगमन) क्रि०
आवना) अ० पहुँचना, आव-
ना, पु० रुपये का सोलहवाँ भाग ।
प्रा० आनिहौं (आनना, लाना)
क्रि० स० लाऊंगा लेआऊंगा ।
सं० आनीत र्म० पु० लाया हुआ ।
सं० आनेता (आ + नी + त, नी =
लाना) क० पु० लानेवाला ।
सं० आन्दोलन (आन्दोल् + अन,
दोल = फेंकना) भा० पु० चलन,
खिसकाना, हिलाना, हरकतदेना,
ध्यान, भूलना, भूला, अनुसंधान ।
प्रा० आप सर्वना० अपने आप, स्व,
अपना, खुद, २ बड़े आदमी को
तुम की जगह आप बोलते हैं ।
सं० आप (आप = फैलना) पु० पानी ।
प्रा० आपकाजी (आप = अपना,
कार्य = काम) गु० स्वार्थी, आप
मतलबी ।
सं० आपक क० पु० थोड़ापका हुआ ।
सं० आपण (आ + पण् = वाणिज्य)
धि० दूकान, हाट, हट ।
सं० आपणिक (आ + पण् + इक)
क० पु० वणिक्, बनिया, दूकान-
दार ।

सं० आपत्ति (आ, पद्=जाना)
 आपद् } स्त्री० विपत्ति, वि,
 आपदा } पत, अभाग, बला,
 बुरे दिन, दुख ।

सं० आपन्न (आ, पद्=जाना)
 क० पु० अभागा, विपत्त में फंसा
 हुआ, दुखी, २ पायाहुआ, ३
 शरण में आयाहुआ, शरणागत ।

प्रा० आपस (आप) सर्वना० एक
 दूसरे को, परस्पर, भाई बन्द ।

सं० आस (आप्=फैलना, लाभ)
 र्म० पु० विश्वासित, लब्ध, सत्य,
 यथार्थ, अमरहित ।

सं० आपाक (आ=चारों ओर से,
 पाक=पच्=पकाना) धि० पु०
 आवा, पजावा, मिट्टी के बरतनों
 के पकाने की जगह ।

सं० आपान (आ + पान, पा=
 पीना) धि० मद्यपानस्थान, शराब
 की दूकान पु० मद्यप मतवालों
 का भुंड ।

अं० आफ्रिस धि० पु० कार्यशाला,
 कचहरी ।

प्रा० आफू (सं० अ=नहीं, फेन=
 भाग, स्फायी=फूलना) पु० अ-
 फीम, अमल ।

सं० आफूक=अफीम ।

सं० आभरण (आ=चारों ओर से
 भृ=धारण करना वा पहनना) पु०
 गहना, भूषण, अलङ्कार, जेवर,

आभरण १२ बारह हैं ? नूपुर
 २ किंकिणी ३ चूरी ४ मुंदरी
 ५ कङ्कन ६ वाजूबंद ७ हार ८
 कंठश्री ९ बेसर १० बिरिआ ११
 टीका १२ शीशफूल ।

सं० आभा (आ=चारों ओर से, भा
 =चमकना रोशनी) भा० स्त्री०
 चमक, शोभा, भड़क ।

सं० आभाष (आ=चारों ओर से
 भाष्=कहना) पु० भूमिका, मुख
 बन्ध, तमहीद, पेशबन्दी ।

सं० आभाषण (आभाष् + अन)
 भा० पु० कथन, कहना, बोलना ।

सं० आभूषण (आ=चारों ओर से
 भूष्=शोभना) पु० गहना, आभ-
 रण, अलंकार ।

सं० आभास (आ=से, भास=च-
 मकना) भा० पु० प्रकाश, रोशन
 होना, अभिप्राय, समाजाना ।

सं० आभिज्ञ (आभि + ज्ञ=जानना)
 क० पु० ज्ञाता, जनुका, आगाह,
 वाक्कि ।

सं० आभीर अहीर, गोप, ग्वाल ।

प्रा० आम (सं० आम्र) पु० एक
 फलका नाम ।

सं० आम (अम=बीमार होना)
 पु० एक प्रकार का रोग, पेटका
 रोग अपच, अजीर्ण कच्चा ।

सं० आमय (आमरोग या जाना
 अथवा अम बीमार होना) पु० रोग

बीमारी, पीड़ा ।

सं० आमर्ष (अ=नहीं, मृप्=अमर्ष) सहना) पु० क्रोध, गुस्सा, कोप, २ डाह ।

प्रा० आमला (सं० आमलक, आआवला) = चारों ओर से, मल्=धारणकरना, पकड़ना) पु० एक पेड़ और उसके फल का नाम आंवरा ।

सं० आमाशय (आम=आंव आशय=जगह) पु० पेटमें एक थैली सी होती है जो खाना खाते हैं पहले उसमें पहुँचता है. ओभरी, पचौनी ।

सं० आमिष (अम्=खाना) पु० मांस, २ खाने की चीज, भोजन ।

सं० आमिषाशी (आमिष + अश = भोजनकरना, खाना) क० पु० मांसभक्षी, मांसाहारी ।

सं० आमोद (आ, मुद्=प्रसन्न होना) भा० पु० सुगन्ध, सुवास, २ आनन्द, हर्ष, खुशबू, खुशी ।

सं० आमोदिन (आमोद् + इत्) र्म्यं पु० हर्षित, खुश, प्रसन्न ।

सं० आमोदी (आमोद् + ई) क० हर्षयुक्त, खुश होनेवाला ।

सं० आम्र (अम्=जाना, खाना) पु० आम, आंवका फल वा पेड़ ।

प्रा० आम्राई (सं० आम्रराजि, आम्र=आम, राजि=पांत) स्त्री०

आंवों का बाग ।

सं० आमन्त्रण भा० पु० निमन्त्रण, न्योता, दावत ।

सं० आय (आ + इ=फैलना) पु० लाभ, धनागम, आमदनी, फायदा ।

सं० आयत्त (आ, यम्=रोकना, पर आ के साथ आनेसे इसका अर्थ फैलना होजाता है) गु० लंबा, चौड़ा, फैला हुआ पु० ऐसा खेत जिसकी आमने सामने की भुजा बराबर हों और सब कोने भी समकोन हों ।

सं० आयतन (आ, यत्=जतन करना अथवा रखाना) धि० पु० घर, जगह, स्थान ।

प्रा० आयसु (सं० आदेश) स्त्री० आज्ञा, हुक्म ।

सं० आयान (आ, यात, या=जाना) क० पु० आगत, आया, पहुँचा ।

सं० आयास (आ, यस्=मिहनत करना) स्त्री० मिहनत, परिश्रम, यतन ।

सं० आयु (इण्=जाना) स्त्री० उमर, आयुर्दा, जीवनकाल ।

सं० आयुध (आ=से, युध्=लड़ना) पु० शस्त्र, हथियार ।

प्रा० आर पु० कांटा, पैना, २ आंकुश ३ मंगल, शनिश्चर ४ लोहार ५ चमार, तांवा, रीति ।

सं० आरण्य (अरण्य=जंगल)
गु० जंगली, बनका, बमैला ।

प्रा० आरज (सं० आर्य्य) गु० बड़ा,
श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज, पु० ससुर ।

प्रा० आरत (सं० आर्त्त, आ, ऋ=
जाना) गु० दुखी, घबराया
हुआ, पीड़ित, व्याकुल ।

प्रा० आरति (सं० आर्त्ति, आ,
ऋ=जाना) स्त्री० दुख, पीड़ा,
रोग, कष्ट ।

प्रा० आरती स्त्री० } (सं० आरात्रि
आरता पु० } क, अ=नहीं,
रात्रि=रात, अर्थात् जो दिन में
भी दिखाई जाती है) पूजा में
देवता के साम्हने दीपक दिखाना,
दीपदर्शन, २ व्याह की एक रीति
विशेष ।

सं० आरब्ध र्म० पु० उपक्रांत,
आरम्भित, शुरूआ किया गया ।

सं० आरम्भ (आ, रभि=शुरूआ
करना) पु० शुरूआ, आरम्भ,
उपक्रम ।

सं० आरा स्त्री, क्रकच, करांत,
खेदनी, सूजा ।

सं० आरात् अव्य० दूर, समीप ।

सं० आराति (आ=चारों ओर से,
रा=देना दुखको) पु० बैरी, शत्रु,
दुश्मन ।

सं० आराधक (आ, राधू=सिद्ध
करना, पूराकरना) क० पु० आ-

राधना करनेवाला, पूजनेवाला,
सेवक, भक्त, आबिद ।

सं० आराधन भा० पु० } (आ,
आराधना स्त्री० } राधू=
पूराकरना) पूजा, सेवा, इबादत,
भक्ति ।

सं० आराम (आ=चारों ओर से,
रम्=खुशी करना) पु० बाग, बा-
गीचा, फुलवाड़ी, उपवन ।

सं० आरूढ़ (आ, रूहू=चढ़ना)
गु० चढ़ाहुआ, सवार ।

सं० आरोग्य (अरोग=निरोग)
पु० निरोगता, आराम, तंदुरुस्ती,
कुशल !

सं० आरोप } (प्रा० रूहू=उगना,
आरोपन } चढ़ना) भा० पु०
जमाना, स्थापन करना, कायम
करना ।

सं० आरोपित (आ, रूहू=उगना,
चढ़ना) र्म० पु० सौंपा हुआ,
रक्खा हुआ, २ रोपा हुआ, बोया
हुआ, ३ बदला हुआ ।

सं० आर्द्र (अर्द्र=जाना) गु० गीला,
भीगा, ओदा, तर, सीला ।

सं० आर्य्य (ऋ=जाना) गु० बड़ा,
श्रेष्ठ, कुलीन, अच्छे घराने का,
पूज्य, पूजनीय, महाराज, पु० हिंदू ।

सं० आर्यावर्त्त (आर्य्य=हिंदू वा
उत्तमकुल के मनुष्य, आवर्त्त=ढका
हुआ, दृत्=होना) पु० हिंदुस्थान

की वह पवित्र धरती जो पूर्व स-
मुद्रसे पश्चिम समुद्रतक फैली हुई
है और उत्तर और दक्खिन की
ओर हिमालय और विंध्याचल
से घिरी हुई है मनु ने इसी को
आर्यावर्त्त लिखा है जैसे “ आ
समुद्रात्तु वै पूर्वार्वादासमुद्रात्तु पश्चि-
मात् । हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये आर्या-
वर्त्तप्रचक्षते ॥ १ ॥ आर्यावर्त्तः
पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः”।

सं० आलम्ब (आ=से, लवि=
आलम्बन) ठहरना) पु० आसरा,
सहारा, अवलंब ।

सं० आलय (आ=चारों ओरसे, ली
=लेना, मिलना) पु० घर, स्थान,
जगह ।

सं० आलवाल (आ=चारों ओरसे,
ला=लेना) पु० थाला, घेरा,
पेड़की जड़के आस पास का घेरा ।

सं० आलस्य (अलस, अ=नहीं
प्रा० आलस) लस्=शोभना, खे-
लना) पु० सुस्ती, आस्कृत, ढील ।

प्रा० आलसी गु० सुस्त, काहिल ।

प्रा० आला (सं० आलय) पु० दीप
रखने के लिये भीत में वा खंभे में
बोटा सा खोद, दीया का ताक,
ताक, ताखा ।

सं० आलान (आ=से, ला वा ली=
लेना) पु० हाथी के बांधने का खूंटा
अथवा रस्सा, बेड़ी, जंजीर आदि ।

अ० आलान इशितहार, विज्ञापन ।

सं० आलाप (आ, लप्=बोलना)
भा० पु० बातचीत, बोलचाल,
कहना बोलना, २ स्वरका मिलान ।

सं० आलापनीय (आलाप्+अ-
नीय) र्म० पु० भाषण योग्य,
कहने लायक ।

सं० आलिंगन (आ=चारों ओर
से, लिंगि=झाती से लगाना, मि-
लना) पु० प्यार से मिलना, गले
लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का
आपस में मिलना ।

प्रा० आली (सं० आलि, अल्=
शोभना) स्त्री० सखी, सहेली,
सहचारिणी ।

सं० आलीङ्ग (आ, लिङ्=स्वाद
लेना) र्म० पु० चारा, भुक्त,
स्वाद लिया ।

सं० आलेख्य (आ, लिख्=लि-
खना) र्म० पु० लिखा ।

सं० आलोक (आ, लोक=देखना)
पु० दर्शन, दृष्टि, देखना, २ चमक,
ज्योति, बड़ाई, यश, बखानना,
विरद, झरोखा, रोशनदान ।

सं० आलोकन भा० पु० दर्शन,
देखना ।

सं० आलोचना (आ, लोच्=दे-
खना) भा० पु० विचारना, शुद्ध
करना, चर्चाकरना, नज़रसानी
करना ।

सं० आलोच्य, धातु, अव्य० विचारकर।

सं० आलोड़न (आ, लुड्=मथना वा घोटना) भा० पु० मथना, तलाश करना, अन्वेषण ।

सं० आलोल गु० चंचल, अति चंचल ।

प्रा० आल्हा पु० एक हिंदू शूरवीर और कवि का नाम जिसके नामसे एक प्रकार की कविता का नाम भी आल्हा है ।

सं० आवरण (आ=से, ढ=ढकना) पु० ढाल, २ ढकना, ढकनेकी कोई चीज़, पर्दा, आच्छादन ।

प्रा० आवभक्ति (हि० आना, सं० आवभगत) भा० पु० भक्ति=सेवा)
आवभगति (स्त्री० आदर मान, सत्कार ।

सं० आवर्जन (आ, वृज्=फेंकना) मना करना, रोकना ।

सं० आवर्त्त (आ=चारों ओर, वृत्=होना, घूमना) पु० भँवर, चक्र, फेर, घुमाव ।

सं० आवलि (आ=चारों ओर से बल्=घेरना, ढकना) स्त्री० पांत, पंक्ति, श्रेणी, अवली ।

सं० आवश्यक (अवश्य) गु० निश्चय, जरूरी, कर्तव्य ।

सं० आवश्यकता भा० स्त्री० जरूरत ।

प्रा० आवर्दा (सं० आयुर्दाय, आव) इगू=जाना) स्त्री०

उमर, अवस्था ।

प्रा० आवागमन (हि० आना आवागमन) सं० गमन=जाना) पु० आना जाना, आमद रप्रत ।

सं० आवाहन (आ, वह्=लेजाना, पास लाना) भा० पु० बुलाना, पूजा अथवा होम के समय देवता को मंत्रों से बुलाना ।

सं० आविर्भाव भा० पु० प्रकट होना, जाहिर होना ।

सं० आविर्भूत (आविर्=प्रकट, भू=होना) गु० प्रकट, जाहिर, प्रत्यक्ष ।

सं० आविष्कार (भा० पु० प्रकट आविष्कृत) होना, र्म० निकला हुआ ।

सं० आविष्ट (आ, विष्=प्रवेश करना) क० पु० बैठा, घुसा ।

सं० आवृत (आ, वृत्=होना, ढाकना) र्म० पु० आच्छादित, वेष्टित, ढाका हुआ, घेरा हुआ ।

सं० आवृत्ति (आ, वृत्=लौटना पौटना) भा० पु० अभ्यास, बार २ कहना, उधरना ।

सं० आवेदन (आ, विद्=ज्ञान वा समझ) भा० पु० निवेदन, गुजारिश ।

सं० आवेद्यसंग्रह पु० वाजिबुल् अर्ज, वह पत्र जिसमें जमींदार अपना स्वत्व अर्थात् हकूक सरकार में दाखिल करते हैं ।

सं० आवेश (आ, विष्=घुसना)
 पु० प्रवेश, घुसना, २ घमंड, ३
 क्रोध, गु० पकड़ा हुआ, ग्रस्त ।
 सं० आवेशन प्रवेश, २ शिल्पशाला ।
 सं० आशंसा (आ, शंस्=सराहना,
 पर आ उपसर्ग के साथ आने से इस
 का अर्थ चाहना होता है) भा० स्त्री०
 इच्छा, चाह, चाहना, अभिलाष ।
 सं० आशक्त (आ=से, सञ्ज्=मि-
 आसक्त) लना) क० पु०
 लगाहुआ, मोहित, लीन, आशिक ।
 सं० आशङ्का (आ=से, शक्ति=संदेह
 करना) स्त्री० डर, भय, २ संदेह ।
 सं० आशय (आ, शी=सोना) पु०
 मतलब, अभिप्राय, तात्पर्य, २
 स्थान, जगह, शरण ।
 सं० आशा (आ=चारों ओर, अश्=
 फैलना) स्त्री० आस, भरोसा, आ-
 सरा, उम्मेद, २ दिशा, ओर, तरफ ।
 सं० आशातीत (आशा + अतीत)
 गु० आशा से अधिक, उम्मेद से
 ज़ियादा ।
 सं० आशिष् (आ, शाम्=सिखाना
 पर आ उपसर्ग के साथ आने से
 इसका अर्थ चाहना होता है) स्त्री०
 आशीर्वाद, आसीस, वर, दुआ ।
 सं० आशीर्वचन (आशिम्=अ-
 आशीर्वाद) सीस, वचन
 वा बात कहना) पु० असीस,
 आशीस, दुआ ।

सं० आशु (अश्=फैलना) कि०
 वि० शीघ्र, जल्द, तुरन्त, झटपट ।
 सं० आशुतोष (आशु=तुरंत, तोष
 =प्रसन्न होनेवाला, तुष्=प्रसन्न
 होना) पु० महादेव, शिव ।
 सं० आश्चर्य (आ, चर=चलना)
 पु० अचंभा, अचरज, विस्मय, गु०
 अनोखा, अद्भुत ।
 सं० आश्रम (आ, श्रम्=तपकरना)
 धि० पु० ऋषियों के रहने की
 जगह, मठ, २ धर्म के अनुसार
 अवस्था के चार भेद १ ब्रह्मचर्य
 २ गृहस्थ ३ वानप्रस्थ ४ संन्यास,
 कलियुग में केवल गृहस्थ और
 संन्यास ये दोही आश्रम हैं, जैसे
 “ गृहस्थी भिक्षुकश्चैव, आश्रमौ
 द्वौ कलौयुगे ” ।
 सं० आश्रय (आ=चारों ओरसे, श्रि
 =सेवा करना) भा० पु० आसरा,
 शरण, अवलम्ब, २ घर, जगह,
 ३ पास, समीपता ।
 सं० आश्रयभूत (आश्रय + भूत)
 गु० आसरागीर ।
 सं० आश्रयस्थान (आश्रय + स्थान,
 स्था=ठहरना) धि० पु० सहारा
 की जगह, उम्मेदगाह ।
 सं० आश्रित (आ, श्रि=सेवा करना)
 र्म्म० पु० शरणागत, आधीन,
 ताबेदार ।
 सं० आश्रितस्वत्वाधिकारी क०

पु० हकदार, मातहत ।
 सं० आश्लेष (आ, श्लिष्=मिलना)
 पु० आलिंगन, जुड़ना, मिलना ।
 सं० आश्वासन } (आ, श्वासन,
 आश्वास } श्वस्=समभा-
 ना) भा० पु० प्रबोध करना, भरोसा
 देना, शिक्षा करना ।
 सं० आश्वास्य धा० अग्य० सम-
 भाकर ।
 सं० आश्विन (अश्विनी एक नक्षत्र
 का नाम, इस महीने में पूरा चांद
 इस नक्षत्र के पास रहता है और
 पूर्णों के दिन अश्विनी नक्षत्र होता
 है) पु० कुँआर, आसोज, बरस
 का छठा महीना ।
 प्रा० आषर (सं० अक्षर) पु० हर्फ, चिह्न ।
 सं० आषाढ़ (आषाढ़ा एक नक्षत्र
 का नाम इस महीने में पूरा चांद इस
 नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णों
 के दिन आषाढ़ा नक्षत्र होता है)
 पु० बरस का तीसरा महीना,
 असाढ़ ।
 प्रा० आस } (सं० आशा) स्त्री०
 आसा } आसा, भरोसा, आ-
 सारा, २ दिशा ।
 सं० आसन (आस्=बैठना) धि०
 पु० डाभ वा ऊनकी बनी हुई
 चीज, जिसपर हिंदूलोग सन्ध्या
 पूजा करने के समय बैठते हैं, २
 बैठना, योगियों के बैठने का ढंग

जैसे पद्मासनादि योग का एक
 अंग, ३ जांघ के भीतर की ओर ।
 प्रा० आसनतलेआना बोल० बस
 होना, आधीन होना, ताबे होना ।
 प्रा० आसन से आसन जोड़ना
 बोल० दूसरे आदमी के बहुतपास
 बैठना ।
 सं० आसन्न (आ, सद्=बैठना)
 गु० पास, नगीच, समीप, निकट ।
 सं० आसव (आ, सू=पैदा होना,
 मदिरा बनाना) स्त्री० मदिरा,
 मद्य, दारू, शराब, मद, प्राण ।
 प्रा० आसावसन भा० पु० नंगा,
 तृष्णाहीन, बेतमन्न ।
 प्रा० आसिख (सं० आशिष्) स्त्री०
 असीस, आशीर्वाद, दुआ ।
 प्रा० आसिन (सं० आश्विन)
 पु० बरसका छठा महीना, कुँआर,
 आश्विन, आसोज ।
 प्रा० आसीन (आस्=बैठना) गु०
 बैठाहुआ ।
 सं० आस्तिक (अस्=होना) क०
 पु० जो लोग ईश्वर का और
 परलोक का होना मानते हैं,
 ईश्वरवादी, परमेश्वर में विश्वास
 रखने वाला, विश्वासी ।
 सं० आस्पद धि० पु० पद, स्थान,
 उपाधि, उहदा, जीना, मर्तबा ।
 सं० आस्य (अस्=फेंकना, जिसमें
 खाना फेंका जाता है) पु० मुँह, मुख ।

सं० आस्वाद { (आ, स्वद=स्वाद
आस्वादन) भा० पु०

रस, स्वाद, चाट ।

सं० आस्वादक (आ, स्वद + अ-
क) क० पु० स्वादग्राहक, स्वाद
लेनेवाला ।

प्रा० आहट पु० खटका, शब्द, आ-
वाज़, पैरों का शब्द ।

प्रा० आहर जाहर बोल० आना
जाना ।

सं० आहार (आ, ह=लेना, आ
उपसर्ग के साथ आने से इसका
अर्थ खाना होता है) पु० खाना,
भोजन ।

प्रा० आहि (सं० अस्ति, अस्=होना)
क्रि० अ० है ।

सं० आहुति (आ, हु=होम करना)
स्त्री० मन्त्रसे देवताओं के लिये होम
की सामग्री को आगमें होमना, देव-
ताओं के लिये होमने की सामग्री ।

सं० आह्निक (अहन्=दिन) पु०
हर एक दिनका धर्मका काम स्नान
संध्या तर्पण आदि, २ हर एक दिन
का, दिनसम्बन्धी, रोजमर्रा ।

सं० आह्लाद (आ, ह्लाद=प्रसन्न
होना) पु० आनन्द, हर्ष, हुलास,
खुशी ।

सं० आह्वान (आ, ह्वे=बुलाना)
आवाहन, बुलाना ।

इ

सं० इ पु० कामदेव का नाम विष्णु,
निन्दा, सम्बोधन, खेद वि० बो०
आह ।

प्रा० इन्दारा (सं० अन्धकुआं, अन्ध
=अंधा होना, नहीं दीखना वा अम
=जाना वा शब्द करना) पु०
कुआं, पका बँधा हुआ कुआं ।

प्रा० इक (सं० एक) गु० एक ।

प्रा० इकछतराज (सं० एकछत्ररा-
ज्य) पु० चक्रवर्ती राज, सारे
संसार का राज ।

प्रा० इकटक (इक=एक, टकना
वा तकना, देखना) पु० एकताक,
टकटकी ।

प्रा० इकट्टा { (सं० एकत्र वा एक
इकठौर } स्थान) गु० संग्रह,
इकठौरा } संचय, एकजगह ।

प्रा० इकलौता (सं० एक) गु० एक
ही केवल ।

प्रा० इकसार (सं० एकसार, एक,
सृ=जाना) गु० बराबर, सारीखा,
सरीखा, समान, सहश ।

प्रा० इकसंग (सं० एकसंग) गु०
एकसाथ ।

प्रा० इक्का (सं० एक) गु० अकेला,
अनूठा, अनूप, उत्तम, पु० एक
घोड़े की हलकी गाड़ी, इक्का, बघी
और पालकी गाड़ी आदि सवा-

रियों से बहुत ही हलके दर्जे की सवारी है और पटना में इसकी सवारी का बहुत चलन है ।

सं० इक्षु (इप्=चाहना) स्त्री० ऊख, ईख, केतारी, गन्ना ।

सं० इक्षुरस (इक्षु=ऊख, रस) पु० ऊख का रस, राब ।

सं० इक्ष्वाकुवंशी (इक्ष्वाकु=सूर्य-वंशियों का पहला राजा, वंशी=घराने के) गु० इक्ष्वाकु राजा के घराने के, सूर्यवंशी, अयोध्या के राजा ।

प्रा० इक्षुन (सं० ईक्षण, ईक्ष=इच्छुन) देखना) पु० आंख, नेत्र, २ दृष्टि, देखना ।

सं० इच्छा (इप्=चाहना) स्त्री० चाह, वांछा, आकांक्षा, चाहना, अभिलाष, कामना, स्वाहिश, चाह ।

सं० इच्छुक (इप् + उक्) क० पु० चाहनेवाला, आकांक्षी, अभिलाषी, स्वाहिशमन्द ।

सं० इज्या (यज्ञ=पूजना) स्त्री० पूजा, सेवा, यज्ञ ।

सं० इडा (इल्=जाना) स्त्री० गौ, पृथ्वी, वाणी, नाड़ी, स्वर्ग, वाम नासिका ।

प्रा० इत (सं० अत्र=यहां) क्रि० वि० यहां, इधर ।

सं० इतर अव्य० अन्य, भिन्न, नीचा

सं० इति (इण्=जाना) क्रि० वि०

इस प्रकार, ऐसे, २ यहां तक, पूरा, संपूर्ण, समाप्त, यह शब्द अध्याय और पुस्तक और चिट्ठी पत्री के अन्त में लिखा जाता है और इस का अर्थ यह है कि यह अध्याय अथवा बात पूरी हो गई, खत्म ।

सं० इतिहास (इतिह=परंपरा की बात, इति=ऐसा, ह=निश्चय, अस्=होना वा आसु=रहना) पु० पुरानी कथा जैसे महाभारतआदि, वृत्तान्त, तवारीख ।

सं० इत्थम् (इदम्=यह) क्रि० वि० इस प्रकार, इस तरह ।

सं० इत्यादि (इति=ऐसा, आदि=और भी) क्रि० वि० इससे लेके और सब, वगैरह ।

सं० इदानीम् क्रि० वि० अबहीं, अभी, इसी वक्त ।

सं० इन (इण्=जाना) क० पु० सूर्य, समर्थ, राजा, पति, ईश, हस्त नक्षत्र, १२ गिनती ।

अं० इनकम् टैक्स आय पर कर, आमदनी पर महसूल ।

सं० इङ्ग (इग्=जाना वा चिह्न करना) चराचर, अभिप्रायानुसार, चेष्टा, अद्भुत, ज्ञान ।

सं० इङ्गित (इग् + इत) भा० पु० सैन, इशारा, चिह्न ।

सं० इन्दिरा (इदि=ऐश्वर्य रखना) स्त्री० लक्ष्मी ।

सं० इन्द्रविर (इन्दी=लक्ष्मी, वर =चाहा हुआ) पु० नीलकमल, नीलोत्पल ।

सं० इंदु (उन्द्=भिगोना, जो अपनी किरणों से धरती को ठंडा करता है) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर ।

सं० इन्दुर पु० मूस, चूहा ।

सं० इन्द्र (इदि=ऐश्वर्य रखना) पु० देवताओं का राजा, स्वर्ग का राजा, शक्र, २ परमेश्वर, ३ राजा, सबसे बड़ा अथवा श्रेष्ठ, ऐश्वर्य ।

सं० इन्द्रजाल (इन्द्र=ऐश्वर्य अर्थात् चतुराई, जाल आंखों को ढकना, जल्=ढकना) पु० मन्त्र अथवा औषधी से चीजें और तरह से दीखना, बाजीगरी, छल कपट, फरफंद, धोखा ।

सं० इन्द्रजित् (इन्द्र=देवताओं का राजा, जित्=जीतनेवाला, जि=जीतना) पु० रावण का बेटा, मेघनाद ।

सं० इन्द्रधनुष (इन्द्र=देवताओं का राजा, धनुष=धनुष, कमान) पु० धनुष, पनसूखा, बरसात के दिनों में मेह के कणों पर सूर्य की किरण पड़ने से जो आकाश में धनुष के आकार रंग दिखाई देता है, कौस कुजा ।

सं० इन्द्रप्रस्थ (इन्द्र=देवताओं का राजा, प्रस्थ=पहाड़ पर रहने के

योग्य जगह, अर्थात् इन्द्र का स्थान जो सुमेरु पहाड़ पर है उसके बराबर) पु० दिल्ली ।

सं० इन्द्रवधू (इन्द्र=देवताओं का राजा, वधू=स्त्री) स्त्री० इन्द्राणी, २ लाल कीड़ा, बीरबहूटी ।

सं० इन्द्राणी (इन्द्र) स्त्री० इन्द्र की स्त्री, शची, २ एक प्रकार की ओपधि ।

सं० इन्द्रासन (इन्द्र=देवताओं का राजा, आसन=सिंहासन) पु० इन्द्र का सिंहासन, राजा इन्द्र का तख्त ।

सं० इन्द्रिय } (इन्द्र परमेश्वर अ-
प्रा० इन्द्री } र्थात् जिनके द्वारा परमेश्वर का ज्ञान होता है, या परमेश्वर की बनाई हुई) स्त्री० जिनसे रूपरस अथवा करना चलना आदिका ज्ञान होता है अर्थात् १ हाथ २ पांव ३ वाक् ४ लिङ्ग ५ गुदा ये पांच कर्मेन्द्रिय कहलाती हैं और १ आंख २ नाक ३ कान ४ जीभ और ५ शरीर पर का चमड़ा ये पांच ज्ञानेन्द्रिय कहलाती हैं ।

सं० इन्धन } (इन्ध=जलाना) पु० प्रा० ईधन } जलावन, लकड़ी ।

प्रा० इम्ली (सं० अम्लीका, अम्ल =खट्टा) स्त्री० अम्ली, एक पेड़ का नाम ।

प्रा०इमि क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार से, इस तरह से ।

प्रा०इम्रती- (सं०अमृत) स्त्री० एक इमरती) भांतिकी मिठाई ।

प्रा० इलायची (सं० एला, इल्=जाना, फेंकना) स्त्री० एलाची, एला, एकभांति का गरम मसाला ।

सं० इव (इव=फैलना) क्रि० वि० बराबर, जैसे, सदृश, समान, बराबरी को जतलानेवाला शब्द ।

अ०इस्तआरा (सं० लक्षणा) मांगना, ऊपर से लेना ।

फ्रा०इस्तकता (सं०प्रज्ञापत्र) किसी बातका निर्णय चाहना ।

सं० इषु पु० वाण, शर ।

सं०इषुधि (इषु=बाण, धा=रखना) धि० पु० तूण, तरकश, बाणाधार ।

सं० इष्ट (इष्=चाहना) र्म० पु० चाहाहुआ, पूजनेयोग्य, माना हुआ, प्यारा, पु० अपना देवता, २ अपना प्यारा, आदमी ३ चाही हुई चीज ।

सं० इष्टदेव (इष्ट=चाहाहुआ, देव=देवता) पु० माना हुआ देवता, अपना देवता, पूज्य देवता, पूजनीय ।

प्रा०इहि (सं० इह=यहां) क्रि० वि० इहां, इसमें, इस जगह, २ इस तरह ।

ई

सं० ई पु० कामदेव, स्त्री० लक्ष्मी, वि० बो० आह ।

प्रा०ईट (सं० इष्टका, इष्=चाहना) स्त्री० ईटा, मिट्टी की बनाई हुई चीज जिससे मकान बनाये जाते हैं ।

प्रा०ईहुआ पु० सिरपर बोझा रखने के लिये टेकन जो कपड़े वा सन का बनाया जाता है, उड़कन, टेकन ।

सं०ईक्षक (ईक्ष+अक) क० पु० दिखैया, देखनेवाला, नाज़िर ।

सं०ईक्षण (ईक्ष=देखना) पु०आंख, नेत्र, २ देखना, दर्शन, दृष्टि ।

सं० ईक्षित (ईक्ष+इत) र्म० दर्शित, देखा हुआ ।

प्रा०ईख (सं०इधु) स्त्री०ऊख, गन्ना ।

प्रा०ईठ (सं०इष्ट) र्म० पु० वाञ्छित, इष्ट, चाहा हुआ ।

सं०ईड़ा (ईड़=स्तुति करना) भा० स्त्री० स्तुति करना, बढ़ाई करना, तारीफ करना ।

सं०ईति (ई=जाना) स्त्री० उपद्रव, आपदा, “ अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषिकाः खगाः । अत्यासन्नाश्च राजानः षडेताईतयः स्मृताः ” ।

अर्थ—१ बहुत पानी बरसना, २ पानी नहीं बरसना, ३ टिड्डी आना, ४ चूहों के बहुत होने से अथवा, ५ पखेरुओं की बहुतायत से खेतीका बिगाड़, ६ अपने देशके राजा पर दूसरे देशके राजा का चढ़ आना, इन छः भांति की विपत् को ईति कहते हैं ।

सं० ईदृश } (इदम्=यह, दृश्=दे-
ईदृक्ष } खना) गु० ऐसा, इस
भांति का, इस प्रकार का ।

सं० ईप्सा (आप्=चाहना) स्त्री०
पाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।

सं० ईप्सित (ईप्स् + इत) र्म० पु०
चाहाहुआ, अपेक्षित, वाञ्छित ।

सं० ईर्ष्या } (ईर्ष्य=डाहकरना)
प्रा० ईर्षा } स्त्री० डाह, द्रोह, द्वेष,

किसी की बढ़ती देख कर जलना,
हसद ।

सं० ईर्षी (ईर्ष्य + ई) क० पु० द्रोही,
द्वेषी, हासिद ।

सं० ईश (ईश्=ऐश्वर्यरखना) पु०
ईश्वर, परमेश्वर, २ शिव, महा-
देव, ३ राजा, स्वामी, प्रभु, धनी,
मालिक ।

सं० ईशान (ईश=महादेव) पु० शिव,
महादेव, २ पूर्व उत्तर के बीच का
कोन, जिसका दिक्पाल महादेव है ।

सं० ईशिता स्त्री० } (ईश्=ऐश्वर्य
ईशित्व पु० } रखना) बढ़-
प्पन, बढ़ाई, आठ सिद्धिमें की
एक सिद्धि ।

सं० ईश्वर (ईश्=ऐश्वर्य रखना)
पु० परमेश्वर, सृष्टिकर्ता, प्रभु, २
महादेव, ३ मालिक, धनी ।

सं० ईश्वरता (ईश्वर) स्त्री० प्रभुता ।

सं० ईश्वरकृत र्म० पु० ईश्वर र-
चित, ईश्वरनिर्मित ।

सं० ईश्वरोक्त (ईश्वर + उक्त) र्म०
पु० ईश्वरकथित, ईश्वर का कहा
हुआ, वेद, कलामइलाही ।

प्रा० ईस (सं० ईश) पु० परमेश्वर,
२ महादेव, ३ राजा, स्वामी ।

सं० ईषत् क्रि० वि० थोड़ा, किंचित् ।

सं० ईहा (ईह्=यतन करना) स्त्री०
यतन, चेष्टा, उपाय, २ इच्छा ।

उ

सं० उ (उ=शब्द करना) पु० महा-
देव, डालना, नियोग, कोपवचन,
२ वि० बो० संबोधक का सूचक
है, ३ तर्क अर्थ में बोला जाता है ।

प्रा० उकटना (सं० उत्=ऊपर, कद्=
तोड़ना) क्रि० स० गड़ी हुई चीज
को खोदना, २ उखाड़ना, ३ भेद
लेना, ४ बिपीबात को खोल देना ।

प्रा० उकसना (उत्=ऊपर, कस=
जाना) क्रि० अ० ऊंचा होना,
उठना, चलना ।

सं० उक्त (वच्=बोलना) र्म० पु०
कहा हुआ बोला हुआ, कथित ।

सं० उक्ति (वच्=बोलना) भा०
स्त्री० कहना, बोलना, बोलने की
शक्ति, भाषण, बोलचाल, वचन,
कलाम, दलील ।

प्रा० उकताना (सं० उत्=ऊपर, कद्=
दुखसे जीना, शोच करना) क्रि०
अ० घबराना, उदासहोना, थकना ।

प्रा० उखड़ाना } (सं० उत्=ऊपर,
उखाड़ना } खड़=तोड़ना,
क्रि० स० जड़से तोड़ डालना, २
उजाड़ना, नाश करना ।

प्रा० उखल, पु० } (सं० उदूखल,
उखली, स्त्री० } वा उलूखल,
उत्=ऊपर, ख=शून्य, ला=लेना)
ऊखली, ओखली, जिसमें चावल
आदि कूटते हैं ।

प्रा० उगना (सं० उत्=ऊपर, गम्=
जाना) क्रि० अ० पैदा होना,
बढ़ना, निकलना ।

प्रा० उगतेही जलजाना बोल०
यह मुहावरा उस जगह बोला जाता
है कि जब किसी की आश शुरू
ही में टूट जाय ।

प्रा० उगलना (सं० उत्=ऊपर, गृ=
निगलना) क्रि० स० मुँह में कोई
चीज लेके पीछे निकाल देना, वमन
करना, उलटी करना, क्य करना ।

प्रा० उगाहना (सं० उत्, ग्रह=
लेना) क्रि० स० इकट्ठा करना, बटो-
रना, जमाकरना, तहसीलकरना ।

सं० उग्र (उच्=इकट्ठा होना वा
वज्र=कठोर होना) गु० कठोर,
डरावना, भयंकर, क्रोधित, कड़ा,
पु० महादेव का नाम ।

सं० उग्रता भा० स्त्री० कठोरता,
तेज़ी, सहृती ।

सं० उग्रस्वभाव (उग्र + स्वभाव)

कठोर चित्त, तेज़ मिर्जाज ।

सं० उग्रसेन (उग्र=डरावनी, सेना
=फौज) पु० मथुरा का राजा, आ-
हुक राजा का बेटा देवक का भाई
और पवनरेखा का पति जिसके द्रुम-
लिकनामराक्षस से कंस पैदा हुआ ।

प्रा० उघड़ना } क्रि० अ० खुल
उघरना } जाना, प्रकट होना,
२ नज़ा होना ।

प्रा० उघाड़ना } क्रि० स० खोल-
उघारना } ना, प्रकट करना,
२ नज़ा करना ।

प्रा० उचकना क्रि० अ० कूद उ-
ठना, कूदना, उछलना ।

प्रा० उचक्का पु० ठग, उठाईगीरा,
गांठकट्टा, जेबकतरा, चौर, छली,
पाखण्डी ।

प्रा० उचटना (सं० उत्, चट्=
तोड़ना) क्रि० अ० अलग अलग
होना, उखड़ना, बिखरना, पिछ-
लना, उदास होना, मन नहीं
लगना, २ नींद का टूटना ।

प्रा० उचरना } (सं० उच्चरण,
उचरना } उत्=ऊपर, चर=
चलना, पर उत् उपसर्ग के साथ
आनेसे अर्थ बोलना होता है)
क्रि० स० बोलना, कहना, शब्दों
का उच्चारण करना ।

प्रा० उचाटना (सं० उच्चाटन, उत्=
ऊपर, चट्=तोड़ना) क्रि० स०

जुदा २ करना, अलग २ करना ।
प्रा० उचाट होना बोल० उदास
होना, जी नहीं लगना, उचाटी
लगना ।

सं० उचित (उच्=इकट्ठाहोना वा
वच्=बोलना) क० पु० योग्य,
ठीक, चाहिये, मुनासिब ।

सं० उच्च (उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा
करना) गु० ऊँचा, लम्बा, उन्नत,
प्रांशु, उदग्र, तुंग, उच्छ्रित ।

प्रा० उच्चशिखाकी शिक्षा स्त्री०
आलादर्जा की तअलीम ।

सं० उच्चस्वर पु० बड़ा शब्द, बुलन्द
आवाज ।

सं० उच्चार (उत्=ऊपर, चर्=चल
ना) पु० उच्चारण, कथन, वर्णन,
मल, विष्टा ।

सं० उच्चारण (उत्=ऊपर, चर्=
चलना, उत् उपसर्ग के साथ आने
से अर्थ, बोलना होता है) भा०
पु० बोलना, तलप्रफुज ।

सं० उच्चरित (उत् + चर् + इत)
र्म० पु० कथित, कहा हुआ ।

सं० उच्छिन्न (उत्=ऊपर, छिद्=
काटना) र्म० पु० कटा हुआ,
खड़ा हुआ, निर्मूल ।

सं० उच्छिन्नता भा० स्त्री० नाश,
खराबी, बरबादी ।

सं० उच्छिष्ट (उत्, शिष्=बाकी
रहना) र्म० पु० जूठा, खाने के

पीछे बचाहुआ खाना, भुक्तावशिष्ट ।

सं० उच्छेद (उत् + छिद्=काटना)
भा० पु० विनाश, खराबी, का-
टना, कतरना ।

सं० उच्छेदी (उच्छेद् + ई) क०
पु० नाशक, काटनेवाला ।

प्रा० उच्छंग (सं० उत्सङ्ग, उद्=ऊपर,
षञ्ज=मिलना) स्त्री० गोदी, गोद ।

प्रा० उल्लरना } (सं० उत्=ऊपर,
उल्लरना } चल=चलना)

क्रि० अ० कूदना, कूद उठना,
ऊपर उठना, कुदकना ।

प्रा० उल्लाह (सं० उत्साह, उद्, सह=
सहना) पु० आनंद, हर्ष, खुशी ।

प्रा० उजागर गु० नामवर, नामी,
प्रतापी, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी ।

प्रा० उजाड़ना (सं० उत्पाटन, उत्
=ऊपर, पद्=जाना, अथवा, उत्=
ऊपर, जद्=इकट्ठा होना) क्रि० सं०
नाश करना, चौपटकरना, बर-
बाद करना ।

प्रा० उजाला } (सं० उज्ज्वल, उत्
उजियारा } =ऊपर, ज्वल्=चम
कना) भा० पु० प्रकाश, तेज, चमक ।

प्रा० उज्जल } (उद्, ज्वल्=चम-
सं० उज्ज्वल } कना) क० पु०
साफ, स्वच्छ, निर्मल, चमकीला,
प्रकाशित, दीप्तिमान् ।

सं० उज्ज्वलन भा० पु० उद्दीपन,
प्रकाश करना, चमकना ।

प्रा० उभकना क्रि० सं० ताकना,
भांकना ।

प्रा० उभड़ { गु० गँवार, अनघड़,
उजभड़ } अखड़, मूर्ख ।

प्रा० उलभना (सं० उज्जलन,
उद्भ=छोड़ना) क्रि० सं० एक
बरतन से दूसरे बरतन में डालना ।
सं० उज्जलित मर्म० छोड़ा हुआ,
डाला हुआ ।

सं० उट पु० तृण, तिनका, ऊर्ण,
पत्ता ।

सं० उटज (उट + जन्=पैदा होना
वा बनाना) पु० पर्णशाला, पत्तों
का घर, मुनिगृह ।

प्रा० उठना (सं० उत्थान, उद्=
ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० अ०
खड़ा होना, २ उगना, ३ दूर
होना, मौकूफ होना, अवालिश
होना ४ खर्च होना, वरखास्त
करना ।

प्रा० उठबैठ बोल० बेचैनी, उठना
बैठना, कसरत ।

प्रा० उठाईगीरा गु० चोट्टा, ठग,
उचक्का, हथमार ।

प्रा० उठाना (सं० उत्थापन, उद्=
ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० सं०
खड़ा करना, ऊँचा करना, २
उगाना, ३ दूर करना, ४ खर्च
करना, ५ सहना, ६ उभारना,
भड़काना ।

प्रा० उठादेना बोल० दूर करना,
२ उभारना, भड़काना ।

प्रा० उड़ना (सं० उत्=ऊपर, डी=
उड़ना) क्रि० अ० पखेरू का
आकाश में चलना ।

प्रा० उड़ाऊ (उड़ाना) गु० लुटाऊ,
बहुत खर्च करने वाला, वृथा खर्च
करने वाला ।

प्रा० उड़ाना (सं० उत्=ऊपर, डी=
उड़ना) क्रि० सं० पखेरूको उड़ने
के लिये छोड़ना, २ लुटाना, गँ-
वाना, फेंकना, नशाना, वृथा खर्च
करना, ३ चुराना, ले लेना, ४
किसी चीज़ को हवा में छोड़ना ।

प्रा० उड़ाना पुड़ाना बोल० लु-
टाना, गँवाना, नशाना, वृथा
खर्च करना

सं० उड़ूनि भा० पु० उड़ना, पर-
वाज़ होना ।

सं० उड़ूयिमान (उत्=ऊपर, डी=
उड़ना) क० पु० उड़नेवाला,
आकाशगामी, नभचर ।

सं० उड्डु (उद्=मिलना, वा उत्=
ऊपर डी=उड़ना) पु० तारा, नक्षत्र ।

सं० उड्डुगण (उड्डु=तारा, गण=
समूह) पु० तारों का समूह ।

सं० उड्डुप (उड्डु=नक्षत्र, जल, पा=
पीना वा पालना) क० पु० चन्द्र,
चांद, २ डोंगा, सव, कोल ।

प्रा० उढ़ाना (सं० ऊर्ण, ढकना)

क्रि० स० ढकना, कपड़ा पहनाना ।
 प्रा० उँदैया (सं० ऊर्णु, ढकना)
 क० पु० ओढ़ने वाला, पहननेवाला
 प्रा० उतंग (सं० उत्तुङ्ग, उद्=ऊपर, तुङ्ग ऊँचा) गु० बहुत ऊँचा ।
 प्रा० उत क्रि० वि० उधर, वहाँ ।
 प्रा० उतरनहोना (सं० उत्तीर्ण, उद्=ऊपर, तृ=पार होना) क्रि० अ० उच्छ्रय होना, उच्छ्रय से छूटना कर्ज से रिहा होना ।
 प्रा० उतरना (सं० उत्तरण, उद्=ऊपर, तृ=पार होना) क्रि० अ० नीचे आना, २ ठहरना, ठिकना, डेरा करना, वासलेना, विश्राम करना, ३ किनारे पहुँचना, पार होना, लांघना, ४ घटना, कम होना, मंदाहोना ५ उदास होजाना, फीका पड़ना, (जैसे “उसका रंग उतरगया ”) ६ उच्छ्रय होना, कर्ज से छुटना, ७ नशा कम होजाना, ८ किसी पद अर्थात् ओहदे से मौकूफ होजाना ।
 सं० उत्कट गु० मत्त, अधिक, तीव्र, क्रोधी, गर्वी, भयानक, पु० क्रोध, गर्व, कठोर, उग्र, दुःसह ।
 सं० उत्कण्ठा (उद्=ऊपर, कठ=सोचना, वा चाहसे याद करना) भा० स्त्री० लालच, चाह, चाहना, इच्छा, अभिलाषा ।
 सं० उत्कण्ठित क० पु० उत्सुक,

अभिलाषी, इवाहिशमन्द ।
 सं० उत्कर्ष (उद्=ऊपर, कृष्=खँचना) भा० पु० बढ़ाई, सराह, प्रशंसा, उत्तमता, श्रेष्ठपन ।
 सं० उत्कर्षता=भा० स्त्री० श्रेष्ठता, प्रबलता, उत्तमता ।
 सं० उत्कृष्ट (उद्=ऊपर, कृष्=खँचना) गु० उत्तम, सबसे अच्छा वा बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान ।
 सं० उत्खात (उत्=ऊपर, खन्=खोदना) र्म० पु० उन्मूलित, उखड़े हुये ।
 सं० उत्तम (उद्=ऊपर, तम=बहुत ही बहुत) गु० श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, मुख्य, पहला, प्रधान, मुखिया ।
 सं० उत्तमर्ण पु० उच्छ्रयदाता, ब्योहरा, कर्ज देनेवाला ।
 सं० उत्तमांग (उत्तम=सबसे अच्छा वा मुख्य, अंग=शरीर का एकभाग) पु० शिर, माथा, मस्तक ।
 सं० उत्तर (उद्=ऊपर, तृ=पार होना) पु० जवाब, उत्तर दिशा, प्रतिवाक्य, दिक्, सिम्त, गु० पिछला, पीछे ।
 सं० उत्तराधिकारी (उत्तर=पीछे, अधिकारी=वारिस अथवा मालिक) पु० वारिस, जानशीन ।
 सं० उत्तानपात्र पु० तवा, तावा ।
 सं० उत्तरायण (उत्तर=उत्तरदिशा, अयन=चाल) पु० आधा बरस

जब कि सूर्य विषुवत् रेखा के उत्तर की ओर रहता है, माघ से असाढ़ तक के छः महीने ।
 सं० उत्तरार्द्ध (उत्तर=पिछला, अर्द्ध=आधा) पु० पिछला आधा ।
 सं० उत्तीर्ण (उत्=ऊपर, =पार जाना) क० पु० उल्लंघन, पारगत, पारपहुँचा, कामयाब ।
 प्रा० उत्तू पु० परत, तह, चुनत घड़ी ।
 प्रा० उत्तूकरना बोल० तह जमाना, चुनना ।
 सं० उत्तेजक क० पु० धमकानेवाला, प्रेरणा करनेवाला ।
 सं० उत्तेजना (उत्=ऊपर, तिज्=तीक्ष्णकरना) भा० स्त्री० प्रेरणा करना, व्यग्रता करना, तीक्ष्णकरना, धमकाना, भड़काना, तेजकरना ।
 सं० उत्तेजित पु० प्रेरित, धमकाया गया, भड़काया गया ।
 सं० उत्तोलन (उद्=ऊपर, तुल्=तोलना) पु० तोलना, ऊपर को उठाना ।
 सं० उत्थान (उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाव, उद्योग ।
 सं० उत्थान एकादशी (सं० उत्थान =उठना, एकादशी ग्यारहवीं तिथि) स्त्री० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु नींद से उठते हैं ।
 सं० उत्थापन (उद्=ऊपर, स्था=

ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाकर रखना ।
 सं० उत्पत्तन (उत्=ऊपर, पत्=गिरना) भा० पु० ऊपर से गिरना ।
 सं० उत्पत्ति (उद्=ऊपर, पद्=जाना स्त्री० जन्मना, पैदा होना, पैदावारी, उगना ।
 सं० उत्पन्न (उद्=ऊपर, पद्=जाना) गु० पैदा हुआ, जन्माहुआ २ लाभ पाया हुआ ।
 सं० उत्पल (उद्=ऊपर, पल=जाना) पु० कमल, कँवल, नीलाकमल ।
 सं० उत्पाटन (उत्=पट=लपेटना वा उखाड़ना) भा० पु० उखाड़ना ।
 सं० उत्पात (उद्=ऊपर, पत्=गिरना) पु० उपद्रव, बखेड़ा, बिगाड़, हानि, अन्धेर ।
 सं० उत्पादक क० पु० जनक, उत्पन्नक० ।
 सं० उत्पादन भा० पु० जनना, पैदा करना ।
 सं० उत्प्रेक्षा (उद्=ऊपर, प्र=बहुत, ईक्ष्=देखना भावना करना) भा० स्त्री० बराबरी, उपमा, तुल्यता, एक अलंकार का नाम, ढील, देर ।
 सं० उत्प्लुत (उत् + प्लु=कूद जाना) क० पु० तर ऊपर होजाना, लौट पौटजाना ।
 सं० उत्सव (उद्=ऊपर, सू=पैदा होना) पु० आनन्द का काम, जैसे

व्याह, नाच, राग, रंग, आदि,
पर्व, त्योहार, बड़ादिन ।

सं० उत्सर्ग (उत् + सृज् = छोड़ना
वा पैदाकरना) भा० पु० न्याय,
त्याग, दान, रोकना, अर्पणकरना ।

सं० उत्साह (उद् = ऊपर, सह = स-
हना) पु० आनन्द, उद्वाह, खुशी,
२ यतन, उद्योग ।

सं० उत्सुक (उद् + सू = पदाहोना)
गु० चाहनेवाला ।

प्रा० उथलना क्रि० स० उलटना,
औंधाना, तलेऊपर करना ।

प्रा० उथलपुथल बो० उलट पुलट,
उलटा पुलटा, ऊपर नीचे, तले
ऊपर, गटपट गड़वड़, इधर का
उधर उधर का इधर ।

सं० उद् (उ = शब्द करना) उप०
उत् (ऊपर, ऊंचा, ऊपर की
ओर, ऊंचाकिया हुआ, प्रकट,
बड़ाई बल आदि अर्थों में भी आता
है और जगह बल और पद अर्थात्
दर्जे की अधिकाई में भी बोला
जाता है और अधः का उलटा है ।

सं० उद् (उन्द् = भिगोना) पु०
उदक (पानी, जल ।

सं० उदग्र (उद् = ऊपर, अग्र = सिरा
वा नोक) गु० ऊंचा, तीखा,
डरावना ।

सं० उदधि (उद = पानी, धा = रखना)
पु० समुद्र, सागर, जलनिधि ।

सं० उदय (उद् = ऊपर, इ = जाना)

पु० एक पहाड़ का नाम जहाँ से
हिंदू मानते हैं कि सूर्य निकलता
है, २ उगना, निकलना, ३ जोत,
प्रकाश, ४ बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि,
उन्नति, भागमानी ।

सं० उदयास्तावधि (उदय +
अस्त + अवधि) स्त्री० निकलने
और डूबने की सीमा ।

प्रा० उदयहोना क्रि० अ० सूर्य का
निकलना, २ वृद्धि होना, उन्नति
होना, भाग जागना, फूलना
फलना ।

सं० उदर (उद् = ऊपर, ऋ = जाना, वा
उद, द = फाड़ना) पु० पेट ।

सं० उदरम्भरि पु० पेटार्थी, पेटू ।

सं० उदार्चि पु० अग्नि, अग्निकी
चिनगारी ।

सं० उदात्त (उत् = ऊपर, आ = से,
दा = देना) पु० ऊंचा स्वर, ऊंचे-
स्वर से बोलना, २ दान, ३ एक
प्रकार का अलंकार ।

सं० उदार (उद् = ऊपर, आ = से,
रा = देना) गु० दातार, दाता,
दानी, देनेवाला, बड़ा, सीधा,
सरल, गंभीर ।

सं० उदारता (उदार) भा० स्त्री०
दातारी, सखावत ।

सं० उदास (उद् = ऊपर, आस् =
बैठना) पु० बैराग्य, एकान्त में

बैठना, गु० मलिन, अनमना,
चिंता करता हुआ, दुःखित, दुःखी,
संतापी, २ बे परवाह ।

सं० उदासी (उदास) गु० वैरागी,
एकांत में रहनेवाला, मित्र और
बैरी की बराबर देखने वाला, २
मलिन, स्त्री० शोच, मलिनता,
चिंता, फिक्र, दुःख, संताप ।

सं० उदासीन (उद्=ऊपर, आस्=
बैठना) पु० संन्यासी, वैरागी,
योगी, अतिथि, वनवासी, तपसी,
जिसने संसार छोड़ दिया और
जिसके मित्र और बैरी बराबर हों,
त्यागी, वानप्रस्थ ।

सं० उदाहरण (उद्=ऊपर, आ=
से, ह=लेना) पु० दृष्टान्त, मिसाल ।

सं० उदित (उद्=ऊपर, इ=जाना)
र्म० पु० कहा हुआ, निकला हुआ,
प्रकाशित, प्रकट, बढ़ा हुआ ।

सं० उदीची=उत्तरदिशा ।

सं० उदीरण (उद्, ईर्=प्रेरणा क०)
भा० पु० कथन, कहना ।

सं० उदीरित र्म० पु० कथित, कहा
गया ।

सं० उद्गार (उद्=ऊपर, गृ=निग-
लना) पु० वमन, ढकार, सुख,
दुःख, बिस्मय ।

प्रा० उधारना (सं० उद्घाटन, उत्
=ऊपर, घट=खोलना) क्रि० सं०
खोलना, उधारना ।

सं० उद्दाल (उद्=ऊपर, दल्=दो
दुकड़े करना) पु० एक अधिक
नाम जो छः महीने में एकबार
खाता था ।

सं० उद्दिष्ट र्म० पु० लक्षित, दि-
खाया गया ।

सं० उद्देश (उद्=ऊपर, दिश्=
देना) पु० चाह, २ अनुसंधान,
खोज, पता, प्रयोजन, मतलब,
जिसके विषय में कुछ कहा जाय ।

सं० उद्धारण (उद्=ऊपर, ह=लेना)
भा० पु० उद्धार करना, मुक्ति देना ।

सं० उद्धार (उद्=ऊपर, ह=लेना)
पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, नि-
स्तारा ।

सं० उद्धृत र्म० पु० ऊंचा किया
गया, उठाया गया ।

सं० उद्भव (उद्=प्रकट, भू=होना)
पु० पैदा होना, जन्म, उत्पत्ति ।

सं० उद्यत (उद्=ऊपर, यम्=रो-
कना) गु० तैयार, लगा हुआ,
प्रवृत्त, पु० अध्याय ।

सं० उद्यम (उद्=ऊपर, यम्=रो-
कना, पर उद् उपसर्ग के साथ
आनेसे यत्न करना होता है) भा०
पु० यत्न, उपाय, परिश्रम, मिह-
नत, कोशिश, उद्योग, पेशा ।

सं० उद्यान (उद्=ऊपर, या=जाना)
भा० पु० बाग, बगीचा, उपवन,
२ मतलब, प्रयोजन ।

सं० उद्यानपाल (उद्यान=फुल-
वाड़ी, पाल=पालना) क० पु०
माली, बागवान ।

सं० उद्योग (उद्=ऊपर, युज्=मि-
लना) पु० उपाय, उद्यम, यत्न,
परिश्रम, चेष्टा ।

सं० उद्योत (उद्=ऊपर, द्युत्=च-
मकना) पु० चमक, उजाला,
प्रकाश ।

सं० उद्वाह पु० बिवाह, व्याह ।

सं० उद्विग्न (उद्=ऊपर, विज्=
हरना, कांपना) गु० व्याकुल,
उदास, शोच में ।

सं० उद्वेग (उद्=ऊपर, विज्=हरना,
कांपना) पु० घबराहट, व्याकु-
लता, चिंता, शोच, डर ।

प्रा० उधारना (सं० उद्धारण, उद्
=ऊपर, ह्=लेना) क्रि० स०
मुक्ति देना, छुटकारा करना, पार
करना, बचाना, तारना ।

प्रा० उधेड़ना क्रि० स० खेलना,
मुलभाना ।

प्रा० उधेड़बुन (उधेड़ना + बुनना)
बोल० मिहनत, भ्रंश, काम,
धंधा ।

सं० उन्नत (उद्=ऊपर, नम्=भु-
कना) गु० ऊंचा, लम्बा, वर्द्धित ।

सं० उन्नति (उद्=ऊपर, नम्=भु-
कना) स्त्री० उँचाई, २ बढ़ती,
बढ़ति, वृद्धि, उदय, तरकी ।

सं० उन्नमित (उत्=ऊपर, नम् +
इत) र्ममे० पु० भुकायागया, ल-
चायागया ।

सं० उन्मत्त (उद्=ऊपर, मद्=
उन्मद) मस्त होना) क० पु०
मतवाला, पागल, सिड़ी, बौराहा,
नशेबाज, प्रमादी ।

सं० उन्माद (उद्=ऊपर, मद्=मस्त
होना) क० पु० सिड़ीपन, बौ-
राहापन, पागलपन, अचेतता ।

सं० उन्मान तुत्तादि की तौल त-
राजू की तौल ।

सं० उन्मीलन (उत्, मील=मींचना)
भा० पु० खिलना, फूलना, बि-
कसना ।

सं० उन्मुख अभिमुख, सन्मुख,
सामने, उत्सुक, उत्कंठित ।

सं० उन्मूलन (उत्=ऊपर, मूल=
जमाना, रोपना, उत् उपसर्ग से
उखाड़ना अर्थ होगया) भा० पु०
उत्पाटन, उखाड़ना, ऊपर खींचना ।

सं० उप उपस० समीप, पास, बरा-
बर, छोटा, कम, न्यून, अधिक,
आरंभ, पूजा, शुरूअ, नाश, यह
उपसर्ग दुर् का उलटा है ।

सं० उपकार (उप=पास, कृ=करना)
पु० कृपा, भला, सहायता ।

सं० उपकारी (उपकार) क० पु०
उपकार करनेवाला, भला करने
वाला, सहायक, कृपाल ।

सं० उपकारिणी स्त्री० उपकार करनेवाली ।

सं० उपक्रम (उप=आरंभ, क्रम्=जाना अर्थात् शुरू होना) भा० पु० प्रारंभ, आरंभ, शुरू, ति-तिम्मा, जमीमा, सूचना, भूमिका, उपधा ।

प्रा० उपग्वान (सं० उपाख्यान, ख्या=कहना) पु० कथा, इतिहास ।

सं० उपगम (उप=समीप, गम्=जाना) पु० यात्रा, प्राप्ति, स्वीकार, पासजाना, उदय ।

सं० उपगुरु छोटा पाठक, छोटा मास्टर, मानीटर ।

सं० उपचार (उप=पास, चर=चलना) पु० सेवा, मन्त्र का जपना, २ वैद्यका काम, इलाज, चिकित्सा, उपाय, यत्न, ३ घूस, रिश्वत ।

प्रा० उपज (सं० उप=पास, जन्=पैदा होना) स्त्री० बिन सोचने के जो कुछ बात उसी दम कही जाय वा कुछ गाया जाय, गान, तान, अन्तरा ।

प्रा० उपजना (सं० उप=पास, जन्=पैदा होना वा उत्पन्न होना) क्रि० सं० उगना, बदना, पैदा होना, अंकुर निकलना ।

प्रा० उपजाऊ (उपजना) गु० उर्वरा ।

सं० उपजाप (उप=पास, जप्=जपना) भा० पु० मक, फरेब, कपट ।

सं० उपजीवी (उप + जीव=जीना) क० पु० आश्रयी, आसरागीर, अवलम्बी ।

प्रा० उपड़ना (सं० उत्पाटन, उद्=ऊपर, पद्=जाना) क्रि० अ० उखड़ना ।

प्रा० उपदंश (उप + दंश=काटना) पु० गर्मीका रोग, सांपका काटना ।

सं० उपदा (उप, दा=देना) स्त्री० भेंट ।

सं० उपदेश (उप=पास, दिश्=देना) भा० पु० शिक्षा, सीख, सिखावन, नसीहत, सम्मति, सलाह, २ मन्त्रदेना ।

सं० उपदेशक (उपदेश) क० पु० उपदेशी } उपदेश देनेवाला, उपदेष्टा } शिक्षक, गुरु, आचार्य ।

सं० उपद्रव (उप=पास, दु=जाना) पु० बखेड़ा, उत्पात, उपाधि, बिगाड़, अन्धाय, अन्धेर ।

सं० उपद्वीप (उप=छोटा, द्वीप=धरती का टुकड़ा) पु० टापू, छोटा द्वीप ।

सं० उपधान (उप=पास वा ऊपर, धा=रखना) पु० तकिया ।

सं० उपनयन पु० यज्ञोपवीत, उपनीत, जनेऊ ।

सं० उपनिषद् (उप=पास, नि=अच्छी तरहसे, सद्=पाना) पु० वेद का उत्तम भाग, वेद का अंग, वेदान्त शास्त्र ।

सं० उपनेत्र (उप=पास, नेत्र=आंख) पु० चश्मा, आंखों का सहायक कांच ।

सं० उपन्यास (उप=ऊपर, न्यास=रखना) भा० पु० त्याग, हाथ, कथन करना, रखना, स्थापन ।

सं० उपपत्ति (उप=पास, पद्=जाना) स्त्री० युक्ति, योग्यता, २ सबूत, शोधन, समाधान, प्रमाण ।

सं० उपपातक (उप=छोटा, पातक=पाप) पु० छोटा पाप, पाप जैसे गोहत्या, लड़की की बेचना आदि ।

सं० उभयपक्षीय गु० तर्कैः, दोनों ओर के ।

सं० उपमा (उप=बराबर, मा=नापना) भा० स्त्री० बराबरी, समानता, सादृश्य, तुल्यता, दृष्टांत, मिसाल, एक अलंकार का नाम ।

सं० उपमान (उप=बराबर, मान=माप) पु० पूर्णगुण वाला, मुशब्बा बिही, अवर्ण्य ।

सं० उपमेय (उप=बराबर, मेय=क्रियाजाय) न्यून गुणवाला, मुशब्बा, वर्ण्य ।

सं० उपयुक्त (उप=बराबर, युज्=मिलना) गु० योग्य, ठीक, उचित, शामिल ।

सं० उपयोग पु० इस्तमाल, युक्त करना ।

सं० उपयोगी (उप=बराबर, युज्=

मिलना) गु० अनुकूल, सहायक, योग्य, ठीक, इस्तमाल के लायक।

प्रा० उपरना पु० दुपट्टा, एकपट्टा, २ ओढ़नी, अचला ।

सं० उपराम (उप+रम) स्त्री० शान्ति, स्थिरता, सुख ।

सं० उपराग (उप=पास, रञ्ज=रँगना) पु० ग्रहण, गहन ।

प्रा० उपरांत (सं० उपरि=ऊपर, अन्त=सिरा) क्रि० वि० पीछे, फिर, इसके पीछे ।

सं० उपरोक्त (ऊपर + उक्त, वच्=कहना) र्म० ऊपर कहा हुआ, मज़कूरवाला ।

प्रा० उपरोहित (सं० पुरोहित) पु० कुलगुरु, पुरोधा, पुरोहित ।

सं० उपल (उप=पास, ला=देना या लेना उप उपसर्ग के साथ आने से अर्थ फैलाना हुआ अर्थात् जिससे पहाड़ फैल जाता है) पु० पत्थर, पाषाण ।

सं० उपलब्धि (उप=ऊपर, लभ्=लाभ) भा० स्त्री० प्राप्ति, हासिल, मिलना ।

सं० उपलसित (उपल=पत्थर, सित=सफ़ेद) पु० संगमरमर ।

सं० उपवन (उप=बराबर, वन=जंगल) पु० बाग, बगीचा, फुलवाड़ी, बाड़ी, बाटिका ।

सं० उपवास (उप, वस्=रहना,

पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ उपास करना होता है) भा० पु० व्रत, लंघन, उपास, अनाहार, भूखों रहना ।

सं० उपवीत (उप=पास, अज्=जाना) पु० जनेऊ, यज्ञसूत्र ।

सं० उपवेद (उप=बराबर, वेद) पु० १ आयुस् २ गन्धर्व ३ धनुष ४ स्थापत्य इन्हीं चार विद्याओं को उपवेद कहते हैं जो वेद से निकली हैं । इनमें से आयुस्विद्या ब्रह्मा, इन्द्र और धन्वन्तरि आदि से फैली है । उसमें रोगों की पहचान और औषधी आदि का वर्णन है । दूसरी गन्धर्वविद्या को भरत ने निकाली और फैलाई । और तीसरी धनुषविद्या को विश्वामित्र ने राजपूतों को शस्त्रों के काम में लाने के लिये निकाली । और चौथी स्थापत्यविद्या को ६४ कलाओं के काम में लाने के लिये विश्वकर्मा ने निकाली ।

सं० उपवेष्टन (उप=ऊपर, विष्=लपेटना) भा० पु० लपेटना, बसना, जामा ।

सं० उपशम (उप + शम्=रोकना, वा दबाना) भा० पु० शान्ति, शमता, समाई, इन्द्रियनिग्रह ।

सं० उपसर्ग (उप=पास, सृज्=पैदा

होना) पु० अव्यय जो क्रिया के साथ लगाये जाते हैं, जैसे प्र, परा, अप, सम, अनु, अव आदि, २ उपद्रव, पीड़ा, प्रेत, ग्रह, उत्पात, अमंगल, उत्पत्ति ।

सं० उपस्थान (उप=पास, स्था=ठहरना) भा० पु० उपस्थित, मौजूदगी, सेवा, नजदीकी, हाजिरी, स्तुति, पूजा ।

सं० उपस्थित (उप=पास, स्था=ठहरना) गु० तैयार, हाजिर, सामने, पास ठहरा हुआ, पास आया हुआ ।

सं० उपस्थिति यत्र पु० नकशाहाजिरी ।

सं० उपहार (उप=पास, ह=लेना) पु० भेंट, पूजा ।

सं० उपहास (उप=दोषकहना, हास=हँसी, हस्=हँसना) भा० पु० ठट्ठा, हँसी, निन्दा के साथ हँसी करना, बोली ठोली बोलना, परिहास, ठट्ठा ।

सं० उपहासक (उप + हास् + अक) क० पु० हँसनेवाला, मसखरा ।

सं० उपहास्य (उप + हास् + य) र्म० पु० हँसने योग्य, निन्दा योग्य, निन्दनीय ।

सं० उपाख्यान (उप, आ, ख्या=प्रकट करना) पु० पुरानी कहानी इतिहास, बात, कहानी, कथा ।

प्रा० उपाङ्गना (सं० उत्पाटन, उद्=

ऊपर, पद=जाना) क्रि० स०
उखाड़ना ।
प्रा० उपाध (सं० उप, आ, धा=
रखना) स्त्री० बखेड़ा, बिगाड़,
उपद्रव, अन्याय ।
सं० उपाधान (उप+आधान)
धि० तक्रिया, वालीन ।
सं० उपाधि (उप=पास, आ=से,
धा=रखना) स्त्री० धर्मकी चिन्ता,
२ विशेषण, नाम, पदवी, ३ छल,
कपट ।
सं० उपाधिकारक (उपाधि+
कारक, कृ=करना) क० पु०
भगड़ालू, मुफसिद, फसादी ।
सं० उपाध्याय (उप=पास, आ=
से, अधि+इ=पढ़ना) पु० अ-
ध्यापक, पढ़ानेवाला, पाठक,
शिक्षक, मुद्दरिस, गुरु ।
सं० उपानह (उप, आ, नह=बांधना)
पु० जूता, पारखी, पनही, पापोश ।
प्रा० उपाना (सं० उत्पन्न) क्रि० स०
पैदाकरना, इकट्ठाकरना, कमाना ।
सं० उपाय (उप=पास, अय=जाना
वा, उप, आ, इण=जाना) पु०
यन्त्र, तदवीर, उद्यम, उद्योग,
मिहानत, साधन, २ इलाज ।
सं० उपार्य (क० साधक, यन्त्री, तदवीर) ।
सं० उपायन पु० भेंट, नज़र, उपहार,
पास जाना ।
सं० उपाज्जन (उप=पास, अर्ज=

इकट्ठाकरना) भा० पु० इकट्ठा
करना, संग्रह, संचय, कमाई ।
सं० उपार्जित मर्म० पु० संचित,
जोड़ा हुआ ।
सं० उपार्जनीय (उपार्जन+
अनीय) मर्म० संग्रहयोग्य, जोड़ने
लायक ।
सं० उपालम्भ (उप+आ, लभ्=
कठोर वचन क०) भा० पु० शिका-
यत, गिला, उरहना, वार्ता, वार्ते ।
सं० उपालम्भन भा० पु० लानत,
मलामत, फिड़की ।
सं० उपासक (उप=पास, आस्=
बैठना) क० पु० उपासनाकरनेवाला,
पूजनेवाला, सेवक, दास, भक्त ।
सं० उपासना (उप=पास, आस्=
बैठना) स्त्री० सेवा, पूजा, टहल,
भक्ति, देवता की पूजा, आराधना ।
प्रा० उपास (सं० उपवास) पु०
व्रत, लंघन, अनाहार, उपास,
भूखारहना ।
सं० उपासनीय (उप+आस्+
अनीय, मर्म० संवायोग्य, आराध्य,
सेव्य, खिदमत के लायक ।
सं० उपास्य (उप=पास, आस्=
बैठना) मर्म० उपासना करने योग्य,
पूजने योग्य, आराधनाकरने योग्य ।
सं० उपेक्षा (उप=पास+ईक्ष्=
देखना, उपके लगने से छोड़ना
अर्थ होगया) भा० स्त्री० त्याग,

ढील, गफलत ।
 सं० उपेक्षित (उप + ईक्षित) र्म०
 पु० छोड़ा गया, त्यक्त ।
 सं० उपेत (उप + इ + त, इ = जाना)
 क० शामिल, युक्त ।
 सं० उपेन्द्र (उप = छोटा, इन्द्र = देव-
 ताओं का राजा) पु० वामन,
 इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु ने जब
 वामन अवतार लिया तब इन्द्र के
 छोटे भाई हुये थे ।
 प्रा० उपनना (सं० उद् = ऊपर,
 फण = जाना) क्रि० अ० बहुत
 आंच लगने से दूध अथवा और
 किसी चीज का हांडी अथवा बट-
 लोही से बाहर निकल आना ।
 सं० उबकना क्रि० अ० वमन होना,
 कै होना, उलटी होना, रद्द करना ।
 प्रा० उबटन { (सं० उद् वर्त्तनः उद्,
 उबटना) वृत् = होना) पु०
 शरीर का मैल उतारने के लिये
 आटा सरसों बेसन आदि की
 बनी हुई चीज ।
 प्रा० उबलना (सं० उद् = ऊपर, बल =
 जाना) क्रि० अ० उबलना, खौ-
 लना, ओटना, मीलना, खलब-
 लाना, उसीजना ।
 प्रा० उबसना क्रि० अ० सड़ना,
 गलना, पचना, भिगड़ना ।
 प्रा० उबारना (सं० उद्धारण) क्रि०
 सं० बचाना, छुड़ाना, रखना ।

सं० उभय { गु० दो०, दोनों,
 प्रा० उभौ } आपस में ।
 प्रा० उभरना (सं० उद् = ऊपर, भृ
 = भरना) क्रि० अ० उमड़ना, ब-
 ढना, बहुत भरना, निकलना,
 निकल आना, उठना, उठ आना ।
 प्रा० उभारना क्रि० सं० फुलाना,
 उकसाना, खड़ा करना, भड़काना ।
 प्रा० उमंग स्त्री० बहुत खुशी, आ-
 नंद, मग्नता, २ चाह, इच्छा,
 अभिलाष, ३ धुन, तरंग, लहर ।
 प्रा० उमंडना { क्रि० अ० छलकना,
 उमंडना } बहुत भरने से फूट
 निकलना, झलकना, बहना, जल
 थल होना ।
 प्रा० उमंड उमंड कर रोना बोल०
 फूट फूट के रोना ।
 सं० उमा (उ = शिव, मा = मानना,
 वा “ ओः शिवस्य मा = लक्ष्मीः ”
 शिव की लक्ष्मी, वा उ = हे, मा =
 मत “ हे वत्स मा कुरु ” जैसे
 कुमारसंभव काव्य में लिखा है “ उ-
 मेति मात्रा तपसो निषिद्धा, पश्चा-
 दुमाखां सुमुखी जगाम ” अर्थात्
 जब पार्वती तप करने को जाती
 थीं तब उनकी मां ने कहा कि हे
 बेटी ! तप मत कर) स्त्री० पार्वती,
 दुर्गा, शिवा, शिवरानी, गिरिजा,
 भवानी, रुद्राणी ।
 सं० उमापति (उमा = पार्वती, पति

=भर्ता) पु० महादेव, शिव ।
 सं० उमासुत (उमा=पार्वती, सुत
 =बेटा) पु० कार्तिकेय, देवताओं
 का सेनापति ।
 सं० उमेश (उमा=पार्वती, ईश=पति)
 पु० महादेव, शिव ।
 प्रा० उर (सं० उरस्, ऋ=जाना)
 पु० छाती, हिरदा, हृदय, वक्षस्थल ।
 सं० उरग (उरस्=छाती, गम्=च-
 लना जो छाती से चले) पु०
 सांप, नाग, सर्प, भुजंग ।
 सं० उरगाद् (उरग=सांप, अद्=
 खाना) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।
 सं० उरगारि (उरग=सांप, अरि=
 वैरी) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।
 सं० उरु (ऊर्णु=ढकना) गु०
 चौड़ा, विशाल, बड़ा, बहुत,
 अधिक ।
 प्रा० उरिण (सं० अनृण, अन्=
 नहीं, ऋण=कर्ज) गु० बिन कर्ज,
 ऋण से छूटना, उतरना, उद्धार ।
 सं० उर्वरा (उरु=बड़ा, चौड़ा, ऋ=
 जाना) स्त्री० उपजाऊ धरती ।
 सं० उर्वशी उरु=बहुत, अश्व=वश
 करना, जो अपने रूप से बहुतों
 को वश कर लेती है, स्त्री० एक
 अप्सरा का नाम, स्वर्ग की वेश्या ।
 सं० उर्वी (उरु=बड़ा, चौड़ा)
 स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन ।
 सं० उर्व्विजा (उर्व्वी=धरती, जन्

=पैदा होना) स्त्री० सीता, जान-
 की, कहते हैं कि जब राजा जनक
 यज्ञ के लिये धरती जोतते थे तब
 जमीन में से सीताजी निकली थीं ।
 प्रा० उलभना क्रि० अ० फँसना,
 लिपटना, २ भगड़ना ।
 प्रा० उलटना क्रि० स० फेरना,
 पलटना, दोहराना, मोड़ना, तले
 ऊपर करना, नीचे ऊपर करना,
 औंधाना ।
 प्रा० उलट पुलट बो० उथल पुथल,
 ऊपर नीचे, तले ऊपर, गटपट,
 गड़बड़, इधर का उधर, उधर का
 इधर ।
 प्रा० उल्था पु० तर्जुमा, अनुवाद ।
 प्रा० उलहना (सं० उपालम्भ, उप
 आ, लभ्=पाना) पु० शिकायत,
 पुकार, निन्दा, दोष ।
 प्रा० उलहना देना बो० शिकायत
 करना, पुकारना ।
 प्रा० उलीचना क्रि० स० उड़ेलना,
 जल सींचना, पानी लेना ।
 सं० उलूक (वल्=घेरना) पु० उल्लू,
 घुघुआ ।
 सं० उल्का (उप्=जलाना) स्त्री०
 लूका आग वा तारा जो आकाश
 से गिरता है ।
 सं० उल्लङ्घन (उद्=ऊपर, लधि=
 पार होना) पु० उलटा करना,
 रीति तोड़ना, २ लांघना ।

सं० उक्तास (उद्=ऊपर, लम्= खेलना, खुशी करना) पु० हर्ष, आनंद, हुलास, खुशी, प्रसन्नता, २ अध्याय, परिच्छेद ।

सं० उलङ्घन (उद्=ऊपर, लघ्+अन, लघ=जाना) भा० पु० पारहोना, पार उतरना, लांघजाना, फांद-जाना ।

प्रा० उल्ल (सं० उल्लूक) पु० घुघुआ, पेचा, उल्लूक, एक जानवर का नाम, २ गँवार, मूर्ख, उज्जड़ ।

सं० उल्लेख (उद्, लिख्=लिखना) भा० पु० वर्णन, बखान, २ एक अलंकार का नाम ।

सं० उशना (वश्+उशन, वश्= रहना) पु० शुक्राचार्य, दैत्यगुरु ।

सं० उषा (उष्=चमकना) पु० भोर, तड़का, पोह, प्रभात, स्त्री० वाणासुर की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री ।

सं० उष्ट्र (उष्=मारना) पु० ऊंट ।

सं० उष्ण (उष्=जलाना) पु० गरम ।

सं० उष्णीष पगड़ी, सिरबन्द ।

सं० उष्णता (उष्ण=गरम) स्त्री० गरमी ।

सं० उष्मा (उष्=जलाना, वा गरम होना) स्त्री० गरमी, धूप, ताप ।

प्रा० उसरना (सं० अपसरण, आप=पीछे, सृ=जाना) क्रि० अ० टलना, पीठदेना, हटना ।

प्रा० उसारा पु० ओसारा, दिहुड़ी,

बराम्दा ।

प्रा० उसास (सं० उच्छ्वास, उद्= ऊंचा, श्वास=सांस) पु० सांस, ऊंचा सांस ।

प्रा० उसीसा (सं० उच्छीर्षक, उद्=ऊपर, शीर्ष=सिर) पु० सिर-हाना तकिया ।

सं० ऊ (अच्=बचाना) पु० महादेव, ब्रह्मा, (प्रश्नवाक्य) बन्धन, मोक्ष प्रधान, २ चांद, वि० बो० हे ।

प्रा० ऊंघना क्रि० अ० निद्रालु होना, झपकी लेना, आँख लगाना ।

प्रा० ऊंच { (सं० उच्च) गु० लंबा, ऊंचा } ऊपर ।

प्रा० ऊंचा बोलबोलना बोल० घमंड से बोलना, अभिमान से बोलना ।

प्रा० ऊंचासुनना बोल० कमसुनना ।

प्रा० ऊंचाकानी बो० बहरापन ।

प्रा० ऊंचेबोलका बोल नीचा बोल० जो कोई किसीको घमंड का बोल बोलता है वह अन्त में आप हलका और नीचा होता है ।

प्रा० ऊंट (सं० उष्ट्र, उष्=मारना) पु० एक जानवर का नाम ।

प्रा० ऊंटकटारा पु० एक तरह के कैंटीले पेड़ का नाम जिसको ऊंट चरते हैं, भरभांड, ऊंटकटाई ।

प्रा० ऊख (सं० इक्षु) स्त्री० ईख, केतारी, गन्ना ।

प्रा० ऊद } (सं० उद्र, उन्द=

ऊदबिलाव) भिगोना) पु=एक

पानी के जानवर का नाम ।

प्रा० ऊदा (सं० अवदात, अव, दै

=शुद्ध करना) गु० भूरा, धुंधला ।

प्रा० ऊधो (सं० उद्धव) पु० श्रीकृष्ण

का मित्र और चचा ।

प्रा० ऊन (सं० ऊर्ण, ऊर्णु=ढकना)

स्त्री० भेड़ी बकरी के पीठ पर के

बाल, पेशम ।

सं० ऊन } (ऊन=कम होना) गु०

प्रा० ऊना } कम, कमती, थोड़ा,

न्यून, हीन ।

प्रा० ऊपर (सं० उपरि) क्रि० वि०

ऊंचा, ऊर्ध्व, २ अधिक ।

प्रा० ऊपरसे बोल० ऊपरके ऊपर ।

प्रा० ऊपरी (ऊपर) गु० विदेशी,

परदेशी, २ ऊपर का ।

प्रा० ऊघट (सं० अववाट, अव=

बुरा, वाट=रास्ता) पु० औघट,

विकट रास्ता, बुरा रास्ता ।

सं० ऊरु पु० जंघा, जांघ ।

सं० ऊर्ध्व (उद्=ऊपर, हा=छोड़ना)

गु० ऊपर, ऊंचा, लंबा ।

प्रा० ऊर्ध्वपुण्ड्र (सं० ऊर्ध्वपुण्ड्र, ऊर्ध्व

=लंबा-पुण्ड्र=तिलक, पुण्ड्रि=म-

लना) पु० लंबातिलक जो वै-

ष्णवर्तुल्य करते हैं, वैष्णवीतिलक ।

सं० ऊर्ध्वबाहु (ऊर्ध्व=ऊंची, बाहु

=भुजा) गु० ऊंचा हाथ रखने

वाला, तपसी, तपस्वी जो अपनी

हाथ ऊंचा रखता है ।

प्रा० ऊर्ध्वसांस (सं० ऊर्ध्वश्वास,

ऊर्ध्व=ऊपर, श्वास=सांस) पु०

उसास, ऊपरका दम, सांस, दम ।

सं० ऊर्मि (ऋ=जाना) स्त्री०

लहर, तरंग ।

सं० ऊषर (ऊष्=बीमार होना) गु०

खारी धरती, बनजर धरती, ऐसी

धरती जिसमें बोनसे कुछ नहीं

उपजता ।

सं० ऊषा (ऊष्=चमकना) स्त्री०

बाणासुर की बेटी और अनिरुद्ध

की स्त्री, पु० भोर, तड़का, पोह,

प्रभात ।

सं० ऊषाकाल (ऊषा=भोर, काल

=समय) पु० प्रातःकाल, बिहान,

भोर, प्रभात ।

सं० ऊहा (ऊह्=तर्क करना) स्त्री०

तर्क, वितर्क, दलील ।

ऋ

सं० ऋ स्त्री० अदिति, देवताओं की

मा, पु० सूर्य, गणेश, विष्णु ।

सं० ऋक् (ऋच्=सराहना) पु०

ऋग्वेद, पहला वेद ।

सं० ऋक्ष (ऋष्=जाना) पु० रीझ,

भालू, २ नक्षत्र । [ला वेद ।

सं० ऋग्वेद (ऋक् + वेद) पु० पह-

सं० ऋचा (ऋच्=सराहना) स्त्री०

वेदका मन्त्र, वेदका कांड, काण्डिका ।

प्रा० ऋक्षेश (सं० ऋक्षेश, ऋक्ष=रीक्ष, ईश=राजा) पु० जामवन्तरीक्षों का राजा ।

सं० ऋजु (ऋज्=जाना, इकट्ठा करना) (वा, अर्ज=इकट्ठा करना)

गु० सीधा, सरल, सूधा, सोभा ।

सं० ऋण (ऋ=जाना) पु० उधार, कर्ज देना, २ बीजगणित में घटाव का चिह्न, मनफ्री ।

सं० ऋणपत्र तमस्सुक ।

सं० ऋणमुक्तपत्र फारिगखती ।

प्रा० ऋणिया (ऋण=कर्ज) गु०

सं० ऋणी कर्जदार, देनदार,

प्रा० ऋनियाँ जिसके शिर कर्ज हो, २ इहसानमंद, धन्यवाद करनेवाला, शुकलगुजार ।

प्रा० ऋनी हो, २ इहसानमंद,

सं० ऋत (ऋत=जाना, दान=देना,)

पु० सत्य, मोक्ष, जल, पूजन,

इतर, दीप्त, और शिलोद्ध, कटे

खेत से बाली धीनना ।

सं० ऋतु (ऋ=जाना) स्त्री० मौसम,

वसंतआदि छः ऋतु १ वसन्त (चैत

और वैशाख) २ ग्रीष्म (ज्येष्ठ

और आषाढ़) ३ वर्षा (सावन

और भादों) ४ शरद् (कुंवार

और कातिक) ५ हिम (अगहन

और पूस) ६ शिशिर (माघ और

फागुन) एक ऋतु दो महीने रहती

है, २ स्त्रीधर्म, स्त्रियोंके कपड़ों से

होने का समय ।

सं० ऋते अव्य० क्रि० वि० विना, छोड़के, रहित, बिदून ।

सं० ऋतुमती (ऋतु=स्त्रीधर्म, मती=वाली) स्त्री० कपड़ों से, रज-स्वला, हैज से ।

सं० ऋतुराज (ऋतु=मौसम, राजन्=राजा) पु० वसंत ऋतु, मौसम बहार,

सं० ऋतुस्नान (ऋतु=स्त्रीधर्म, स्नान=न्हाना) पु० स्त्रियोंका कपड़ोंमें होनेके पीछे चौथे दिनका न्हाना वा स्नान ।

सं० ऋत्विज् (ऋतु=समय, यज्=यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करनेवाला, पुरोहित, याजक ।

सं० ऋद्धि (ऋध्=बढ़ना) स्त्री० संपदा, संपत्ति, धन, दौलत, बढ़ती, २ एक औषधी का नाम, ३ पार्वती, गिरिजा, रुद्राणी ।

सं० ऋषि (ऋप्=जाना) पु० मुनि, तपस्वी, यती, ऋषि सात प्रकार के हैं १ श्रुतर्षि जिसने पवित्र कथा सुनी हो, २ काण्डर्षि जो वेदका कोई मुख्यकाण्ड लिखलात्ता है, ३ परमर्षि जिसमें मुनि भेलआदि हैं, ४ महर्षि जिस में व्यास आदि हैं, ५ राजर्षि जैसे विश्वामित्र, ६ ब्रह्मर्षि जिसमें बसिष्ठ हैं, ७ देवर्षि जिस में नारद आदि हैं ।

सं० ऋषीश (ऋषिमुनि, ईश=स्वामी)

राजा) पु० ऋषियों में मुख्य वा प्रधान ।

सं० ऋष्यमूक (ऋष्य=हरिण, ऋषू=जाना, मूक=गूंगा) पु० एक पहाड़ का नाम जोकिष्किन्धापुरी के पास है ।

ऋ

सं० ऋ स्त्री० देवताओं की मा, २ दानवों की मा, पु० शिव, भैरव, राक्षस, वि० बो० भय और निन्दा को जतलानेवाला, अव्यय ।

ए

सं० ए (इण्=जाना) पु० विष्णु, वि० बो० हे, संबोधन का सूचक ।
सं० एक (इण्=जाना) गु० गिन्ती का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम, पहला, प्रधान, केवल, सिर्फ ।

प्रा० एकआध बोल० कुछ, थोड़ा, एक या आधा ।

प्रा० एककी दशसुनाना बोल० यह बोल चाल वहाँ बोला जाता है जब कि कोई आदमी किसी को एक बुरी बात कहे अथवा एक गालीदे तो उसके बदले में बहुत सी बुरी बातें कहें और बहुतेरी गालियाँ दें ।

सं० एकचित्त (एक, चित्त=मन) गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी एकही चीज पर हो ।

सं० एकत्र (एक + त्र, जगह अर्थमें

प्रत्यय) क्रि० वि० इकट्ठा, एक-ठौरा, एक जगह । [हुआ ।

सं० एकत्रित र्म० पु० इकट्ठाकिया
सं० एकदा (एक + दा, समय अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक बार, एक समय ।

सं० एकधा (एक + धा, प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक भांति, एक प्रकार ।

प्रा० एकनएक बोल० एकया दूसरा ।

प्रा० एकरत्ती बोल० बहुत थोड़ा ।

सं० एकरस पु० जो एकसा रहै, जन्ममरण रहित ।

सं० एकरूप (एक, रूप=ढौल) पु० बराबर, एकसा, सरीखा, सदृश ।

प्रा० एकला } (सं० एकल, एक, एकेला } ला=लेना) गु० अकेला, केवल, निराला, सिर्फ, तनहा । [एकही (बेटा) ।

प्रा० एकलौता (सं० एकल) गु०

सं० एकसर (एक, सृ=जाना) क्रि० वि० एक साथ ।

प्रा० एकसे दिन न रहना बोल० सदा कोई धनवान् रहता है न गरीब, दशा का फेरफार होना ।

प्रा० एका (सं० एक्य=एकपन) पु० मेल, मिलाप किसी काम के करने के लिये आपस में एक सलाह करना, साजिश ।

अं० एकाउण्ट लेखा, हिसाब ।

प्रा० एकाएकी (सं० एक) क्रि०
वि० अचानक, एकबार में, दफा-
अतन् ।

सं० एकाक्ष (एक, अक्षि=आंख)
पु० काना, एक आंख वाला, एक
चश्म, कोर, २ कागा, कौआ ।

सं० एकाग्र (एक, अग्र=आगे) गु०
एकचित्त, एकमन, एकदिल, किसी
काम में लगाहुआ ।

सं० एकादशी (एक + दशन्=
दश) स्त्री० ग्यारहवीं तिथि, हिंदी
महीने के पख में ग्यारहवां दिन ।

सं० एकाधिपति (एक, अधिपति,
राजाधिराज) पु० चक्रवर्तीराजा ।

सं० एकान्त (एक, अन्त=हृद्)
गु० एक ओर, एक तरफ, अलग,
निराला, किनारे, जुदा, आपही
आप, भिन्न, निर्जन ।

अं० एमीकलचरलकान्फ्रेंस कृषी
विषयक सभा, खेतोंके बारे में
कमेटी ।

अं० एञ्जिनियर यन्त्रज्ञ, इमारत ब-
नानेवाला ।

अं० एज्युकेशनल शिक्षा, तत्कालीन ।

प्रा० एड़ स्त्री० एड़ी, २ एड़ी की
मार, घोड़े के चलाने के लिये
एड़ी की ठोकर ।

प्रा० एड़मारना बोल० ठोकर मा-
रना, एड़ी की ठोकर मारके घोड़े
को चलाना ।

प्रा० एड़ी स्त्री० पैरका पिछला भाग ।
अं० एड़स अभिवादनपत्र, सिपास-
नामा, पता, सिरनामा, लिफाफा,
बयान करना, अर्ज करना ।

सं० एतत् सर्वना० यह ।

सं० एतदर्थ इस वास्ते ।

प्रा० एतवार (सं० आदित्यवार)
पु० इतवार, रविवार, आदित्यवार ।

सं० एतादृश गु० इसी तरहसे, ऐसाही ।

सं० एतावत् गु० इतना, इतनी ।

सं० एरण्ड (ईर=जाना) पु० अ-
रंड, रेंड, एक पेड़ का नाम ।

सं० एला (इल्=जाना, भेजना)
स्त्री० इलायची, एलाची ।

सं० एवम् (इण्=जाना) समुच्च०
इस प्रकार, इस भांति, इस तरह ।

ऐ

सं० ऐ पु० शिवाबुलाना, संबोधन ।

अं० ऐक्ट नियम, कायदा ।

सं० ऐक्यता भा० पु० मेल, इत्ति-
फाक, एकमत । [उर्दू ।

अं० ऐंग्लोवर्नाक्यूलर अंगरेजी-

प्रा० ऐचना क्रि०स० खेंचना, तानना ।

प्रा० ऐंठ (ऐंठना) स्त्री० बल, बट,
मरोड़, अकड़, २ गांठ ।

प्रा० ऐंठना क्रि०स० कतना, तानना,
खेंचना, जकड़ना, क्रि० अ० अ-
कड़ना, मरोड़खाना, बलखाना,
२ इतराना, फूलना, ऐंठ के च-
लना, अकड़ के चलना ।

सं० ऐरावण } (इरावत् समुद्र, इरा
ऐरावत } = पानी, इर=जाना
अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुआ)
पु० इन्द्र का हाथी ।

सं० ऐरावती (इरा=पानी) स्त्री०
एक नदी का नाम, रावी नदी
का नाम, २ एक नदी जो ब्रह्मा
देश में है ।

सं० ऐरेय बुद्धिवर्द्धक मदिरा जो
कम नशा करती है अंगूर आदि
से बनती है ।

सं० ऐश्वर्य्य (ईश्वर) पु० प्रताप,
बड़ाई, सम्पदा, सम्पत्ति, विभव,
हशमत जाह व मनाल ।

प्रा० ऐसा (इस + सा, स=ईदृश)
गु० इस प्रकार का, इसके बराबर ।

प्रा० ऐसा तैसा { बोल० कुछ यों
ऐसावैसा } हीं, न भला न
बुरा, न वाहवाह, न खीझी ।

प्रा० ऐहैं (ब्रजभाषा) क्रि० अ०
आवेंगे ।

ओ

सं० ओ पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव, वि०
बो० आह, आहा, संबोधन का
सूचक, मन्त्रराज ।

सं० ओं पु० प्रणव, ओंकार जो
अ + उ + म् से बना है, अ=विष्णु
का वाचक, उ=महेश्वर का वाचक,
म्=ब्रह्मा का वाचक है ।

प्रा० ओंठ { (सं० ओष्ठ) पु० होंठ,
ओंठ } अधर, लब ।

प्रा० ओंड़ा { गु० गहरा, गंभीर,
ओंड़ा } अभीक ।

प्रा० ओंधा { गु० उलटा, तले ऊपर ।
ओंधा }

प्रा० ओग्वली (सं० उलूखल)
स्त्री० ऊखली ।

सं० ओघ (उच्=इकट्ठा करना) पु०
समूह, इकट्ठा, २ जल का वेग ।

प्रा० ओछा गु० हलका, नीच ।

सं० ओज { पु० बल, दीप्ति, तेज,
ओजरा } प्रकाश, २ विषम, प्रथम,
तृतीय, पांचवाँ, सातवाँ आदि ।

सं० ओङ्कार (ओम् तीनों देवताओं
का मन्त्र, अच्=वचाना, कार, कृ=
करना) पु० बीजमन्त्र, ब्रह्मा, विष्णु,
शिव इन तीनों देवताओं का नाम ।

प्रा० ओभल स्त्री० ओट, आड़, प-
रदा, टट्टी, छिपाव, एकान्त ।

प्रा० ओभलकरना बो० छिपाना,
ओट करना, परदा करना, आड़
करना ।

प्रा० ओभल होना बो० छिपना ।

प्रा० ओट (सं० वट्=घेरना) स्त्री०
वचाव, छांव, आड़, परदा, ओ-
भल, टट्टी, छिपाव, २ पक्ष ।

प्रा० ओटकरना बो० छिपाना,
ओभल करना, आड़ करना, प-
रदा करना ।

प्रा० ओढहोना बोल० झिपना ।

प्रा० ओढ़न स्त्री० ढाल, फरी ।

प्रा० ओढ़ा पु० टोकरा, खाँचा ।

प्रा० ओढ़ना (सं० ऊर्णु=ढकना)

क्रि० सं० पहनना, पहरना, पु०

चदर, पद्द, लोईआदि ओढ़ने

की चीज ।

प्रा० ओढ़नी (सं० ऊर्णु=ढकना)

स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा,

साड़ी ।

सं० ओढ़न (उद्=भिगोना) पु०

भात, रींथे हुए चावल । [गीला ।

प्रा० ओढ़ा (सं० आर्द्र) गु० भीगा,

प्रा० ओप स्त्री० चमक, झलक,

दमक, चमचमाहट, सुन्दरता, घोट,

चिकनाहट ।

प्रा० ओपदेना बोल साफ करना,

चिकना करना, ओपना, घोटना ।

सं० ओम् (अच्=बचना, या अ

विष्णु, उ शिव, म् ब्रह्मा) पु०

तीनों देवताओं का मंत्र ॐकार का

बीजमंत्र प्रणव ।

प्रा० ओर स्त्री० तरफ, अलग, पार,

२ रस्ता, ३ हद्द, सीमा ।

फ्रा० ओल बदला, एवज, बदले

में किसी आदमी को देना ।

अं० ओरीयंटलकम्पनीपूरीसमूह,

पूरी गिरोह ।

प्रा० ओला (सं० ओल=भीगा,

अ, उन्डू=भिगोना) पु० पानीके

बने हुए पत्थर जैसे टुकड़े जो

कभी कभी बरमते हैं, २ चीनी

की बनीहुई मिठाई जिसको गर्मियों

में ठंढाई के लिये पानी में धोल

कर पीते हैं ।

प्रा० ओलाहोजाना बोल० खूब

ठंढा होजाना ।

प्रा० जों मिरमुड़ायातोंओलेपड़े

बो० यह मुहावरा उस समय बोला

जाता है जब कोई आदमी किसी

काम को शुरूअ करे और शुरूअ

करतेही बिगड़ जाय ।

सं० ओषधि } (ओष=गरमी, उष्

औषधि } =गर्म करना, धा=

रखना) स्त्री० ओषद, दवा दारू,

रोग दूर करने की चीज ।

सं० ओषधालय } धि० पु० दवा

औषधालय } खाना, हास्पि-

टन ।

सं० ओष्ठ (उष्=गर्म करना) पु०

होंठ, ओंठ, ओठ, लव ।

प्रा० ओस पु० शीत जो रात को

छोटी २ फुहार पड़ती है, शवनम् ।

प्रा० ओसरा (सं० अवसर) पु०

बारी, पारी ।

प्रा० ओसीसा पु० तकिया ।

प्रा० ओहो वि० बो० वाहवाह, आहा ।

औ

सं० औ पु० अनन्त, वि० बो० ओह,

आहा ।

प्रा० औंगी चुप, गुंगापन, मौन ।
 प्रा० औंगुण (सं० अवगुण) पु०
 दोष, कलंक, खोट, चूक, बुराई ।
 प्रा० औघट (सं० अवघट्ट, अव=
 बुरा वा कठिन, घट्ट=रस्ता, घट्ट=
 जाना) गु० ऊबट, खराब रस्ता,
 अगम्य रस्ता ।
 प्रा० औतार (सं० अवतार) पु०
 जन्म, प्रकट, (अवतार शब्द को
 देखो)
 प्रा० औदात (सं० अवदात) गु०
 धौला, सफेद, श्वेत, शुक्ल ।
 प्रा० औनेपौने बोल० कमती बढ़ती ।
 प्रा० औषट (सं० अववाट, अव=
 बुरा वा कठिन, वाट=रस्ता) गु०
 ऊबट, औघट, बुरारस्ता, दुर्गम ।
 प्रा० और समुच्च० फिर, पुनि, भी
 गु० अधिक, २ दूसरा ।
 प्रा० औरएक बोल० दूसरा कोई,
 और कोई, और भी ।
 प्रा० औरही बोल० बिलकुल दूसरा,
 अनूठा, जुदा बिलकुल, फरक ।
 सं० औरस (उरस्=हृदय) पु०
 व्याही हुई स्त्री से पैदा हुआ
 लड़का ।
 सं० और्ध्वदैहिकक्रिया स्त्री० दश-
 गात्र, सर्पिणी, तेरही ।
 सं० और्ध्व गु० बड़वानल, दावा-
 नल ।
 प्रा० औसर (सं० अवसर) पु०

समय, मौका, अवकाश, फुरसत ।
 प्रा० औसान पु० चेतना, चेत, हौ-
 सिला, सुरत, साहस, हिम्मत,
 होशियारी ।
 प्रा० औसेर स्त्री० चिंता, खटका ।

क

सं० क पु० ब्रह्मा, २ पवन, हवा,
 ३ सूर्य, ४ आत्मा, ५ यम, ६ आग,
 ७ विष्णु, ८ शिर, ९ पानी, १०
 सुख, ११ शुभ, सुन्दर, १२ दम्भ,
 १३ मयूर, १४ कामदेव, १५ दक्ष,
 १६ गरुड़ ।
 सं० कङ्क (कक्=जाना) पु० कौआ,
 २ केकड़ा, ३ कपट, ४ ब्राह्मण,
 ५ युधिष्ठिर, ६ देशविशेष, म्ले-
 च्छजाति, ८ बूतीमार, बगुला ।
 प्रा० कंकर (सं० कर्कर, कुट्ट=हानि
 पहुँचाना) पु० छोटे छोटे पथर
 के टुकड़े, कांकर, रोड़ा ।
 प्रा० कंक्रेला (कङ्कर) गु० पथरेल,
 पथरीला, किरकिरा, कंक्रीला,
 बलुवा ।
 प्रा० कङ्कन (सं० कङ्कण) पु० स्त्रियों
 के पहुँचे में पहनने का गहना,
 बाला, कड़ा ।
 प्रा० कङ्कनी स्त्री० एक प्रकार का
 अनाज, २ चूड़ी, कङ्कन, कङ्कना,
 ककनी ।
 प्रा० कङ्गार (स्कन्धधार) क० कहार ।
 प्रा० कङ्गाल गु० दरिद्री, दीन, दुखी,

गरीब ।

प्रा० कङ्कालबाँका बोल० गरीब और घमंडी ।

प्रा० कङ्कालता भा० स्त्री० दरिद्रता, गरीबी, दीनता ।

प्रा० कंघी (सं० कंकती, ककि = जाना) स्त्री० बाल भाड़ने की चीज, कंधा, केशमार्जनी ।

प्रा० कंघीकरना बोल० बाल सँवारना ।

प्रा० कंजर पु० एक जाति के मनुष्य जिनका धंश डोरी बेचने का है और वे साँप को भी पकड़ते हैं और खाते हैं ।

प्रा० कंजूस पु० सूम, मक्खीचूस, कृपण ।

प्रा० कंठला (सं० कण्ठमाला) कंठला पु० माला, कंठी, सोने कंठा चाँदी आदि की माला जो गले में पहनते हैं, २ गण्डा ।

प्रा० कंठी (सं० कण्ठीय, कण्ठ) स्त्री० छोटी माला ।

प्रा० कँवल (सं० कमल) पु० कमल, पद्म ।

सं० कंस (कम् = चाहना, वा कस = दुख देना) पु० मथुरा के राजा उग्रसेन का बेटा, और श्रीकृष्ण का मामा और बैरी जिसको श्रीकृष्ण ने मारा, २ काँसा, ३ पान-पात्र, सुरापात्र, ४ मंजीरा, भाँझ ।

सं० कंसकार (कंस = काँसा, कृ = करना) क० पु० काँसे की वस्तु

बनानेवाला ।

प्रा० ककड़ी एक प्रकार का फल ।

प्रा० ककनी (सं० कङ्कण) स्त्री० पहुँची, कंगनी, स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना ।

प्रा० ककरेजा पु० वैजनीरंग, वैजनीरंगा

प्रा० ककहरा पु० क ख ग आदि वर्णमाला ।

प्रा० कखौरी (सं० कक्ष) स्त्री० कांख का फोड़ा ।

सं० कक्षा (कष् = मारना, कश् = जाना) स्त्री० कटिवंध, रज्योतिषचक्र, दफ्तर

सं० कङ्कण (क = सुन्दर, कण् = शब्द करना, वा कम् = चाहना) पु० कङ्कन, बाला, कड़ा ।

सं० कच (कच् = बांधना) पु० केश, बाल, रोम ।

प्रा० कचनार (सं० काञ्चनार, वा कांचनाल, कांचन = चमक, ऋ = जाना, वा कांचन सोने सी चमक, अल् = पाना) स्त्री० एक वृक्ष का नाम ।

प्रा० कचूमर पु० एक तरह का अचार ।

प्रा० कचूमरकरडालना बोल० ठु-कड़े ठुकड़े कर डालना, गड़बड़ कर डालना ।

प्रा० कचा सञ्चय खाम तहसील ।

सं० कच्छप (कच्छ = किनारा, पा = पीना) पु० कछुआ, कमठ, कूर्म ।

प्रा० कछु (सं० कच्छप) पु० क-कच्छु } लुआ, कड़ा ।

प्रा० कछुनी स्त्री० जाँघिया ।

प्रा० कछुलम्पट (सं० कक्ष=काछ, लम्प=भूटा) गु० व्यभिचारी, लुब्धा, बदमस्त, रंडीबाज ।

प्रा० कछुवाहा पु० राजपूतों की एक जाति जो अपने को रामचन्द्र के बेटे कुश के वंश में बतलाते हैं, जैपुर के राजा इस वंशके हैं ।

प्रा० कछु (सं० किञ्चित्) पु० कुछ, थोड़ा ।

प्रा० कछौटी (सं० कच्छोटिका, कच्छ=काछा, वद्=घेरना) स्त्री० लंगोटी, कोपीन ।

प्रा० कजर (सं० कज्जल) पु० काजल, अंजन ।

सं० कज्जल (कत्=बुरा वा थोड़ा, जल=पानी) पु० काजल, सुरमा, अंजन ।

प्रा० कंचन (सं० काञ्चन, कचि=चमकना) पु० सोना, सुवर्ण, २ जाति विशेष ।

प्रा० कञ्चु (सं० कञ्चुक, कचि कञ्चुकी) =बांधना स्त्री० चोली, कांचुली, अंगिया, कुरती ।

सं० कञ्ज (कं=पानी और शिर, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल, २ ब्रह्मा, ३ बाल, केश ।

प्रा० कञ्जा गु० जिसकी आंखें भूरी हों ।

सं० कट=भाँप काठकी ।

सं० कटक (कट्=घेरना) पु० सेना, फौज ।

प्रा० कटना (सं० कृत्=काटना)

क्रि० अ० कटजाना, २ बीतना, चलाजाना ।

प्रा० कटनी (कटना) स्त्री० कटाई, अनाज कटने का समय ।

प्रा० कटरा पु० चौक, शहरका बीच ।

प्रा० कटहल (सं० कण्टकफल) पु० कटहर, एक प्रकार का फल ।

प्रा० कटा (कटना) पु० मारना, कतल ।

प्रा० कटाकरना बोल० कतल करना, मारना ।

सं० कटाक्ष (कट्=जाना, आक्षि=आंख वा कट=गाल, अक्ष=फैलना) पु० टेढ़ी आंख से देखना, तिरछी चितवन ।

प्रा० कटार (सं० कटार, कट्=जाना) पु० खंजर, कटारी ।

सं० कटि (कटि=घेरना) स्त्री० कमर ।

सं० कटिबन्ध (कटि=कमर, बन्ध=बांधना) भा० पु० कमरबँधे, २ पृथ्वी के ठंढे गर्म आदि भाग ।

सं० कटिबद्ध र्म्यं पु० कमरबांधे हुये, तैयार, मुस्तैद ।

सं० कटु (कट्=घेरना, जाना) गु० तीव्र, कड़ुवा, तीखा, तीता, २ डरावना, प्रचंड ।

प्रा० कट्टर गु० काटने वाला, २ पक्का ।

सं० कटोल (कट्=ढाँपना) पु० चंडाल, बद, बुरा ।

सं० कठ=ऋग्वेद ।

प्रा० कठंदर (सं० काष्ठोदर, काष्ठ=

काठ, उदर=पेट) पु० एकरोग का नाम ।

सं० कठिन (कट्=दुख से जीना)
गु० कठोर, कड़ा, निदुर, मुश्किल, सख्त ।

सं० कठिनता (कठिन) भा० स्त्री०
कठोरता, निदुरता, मुश्किलता,
कठिनाई ।

सं० कठोर (कट्=दुख से जीना)
गु० कड़ा, कठिन, निदुर, सख्त ।

प्रा० कठौती (सं० काष्ठ) स्त्री० क-
ठौवा, कठड़ा, काठ का बरतन ।

प्रा० कड़क (कड़कना) स्त्री० ध-
ड़ाका, चटाका, गर्ज, कड़कड़ाहट,
कड़ाका ।

प्रा० कड़खा पु० लड़ाई में पुराने
समय के शूरवीरों की बड़ाई कर
के लड़नेवालों को साहस देना,
लड़ाई का गीत जिसमें लड़नेवालों
की हिम्मत बढ़ाने के लिये उनका
यश गाया जाता है ।

प्रा० कड़खैत पु० भाट, लड़ाई में
बढ़ावा देनेवाला, एक जाति के
भाट अथवा चारण जो लड़ाई में
कड़खा गाकर लड़नेवालों की
हिम्मत बढ़ाते हैं ।

प्रा० कड़ा { (सं० कठोर) गु०
कड़ी } कठोर, दृढ़, सख्त,
स्त्री० धवी, धरण ।

प्रा० कड़ा (सं० कटक, कट्=घेरना)

पु० एक तरह का हाथ का गहना,
२ दरवाजे का अथवा कड़ाह क-
ड़ाही के पकड़ने की चीज, हत्था,
बैट ।

प्रा० कड़ाका पु० किसी चीज के
टूटने का धड़ाका वा शब्द, २ उ-
पास, उपवास, फाका ।

प्रा० कड़ाड़ा पु० नदी का ऊंचा
किनारा ।

प्रा० कड़ाह (सं० कटाह) पु०
एक तरह का लोहे का बरतन ।

प्रा० कड़ुवा { (सं० कटु) गु० तीता,
करुवा } तेज ।

प्रा० कड़ोड़ { (सं० कोटि) गु० सौ
कड़ोर } लाख, करोड़पति=
करोड़ { जिसके पास करोड़
करोर } रुपये हों, बड़ा सेठ ।

प्रा० कड़ी स्त्री० भोजन विशेष ।

सं० कण (कण्=जाना) पु० अनाज
का दाना, कना, कनिका, पर-
माणु, लव ।

सं० कण्टक (कण्ट्=जाना) पु० कांटा,
२ बैरी, शत्रु, ३ नीच, ४ कृपण ।

सं० कण्टकमय काँटे से भरा, कांटे
का रूप ।

सं० कण्ठ (कण्=शब्द करना)
पु० गला, गरदन, घांटी, २ आ-
वाज, स्वर, गु० मुखस्थ, कंठस्थ,
जबानी याद ।

सं० कण्ठस्थ (कण्ठ=गला, स्था=

ठहरना) गु० मुखस्थ, मुखाग्र,
जबानी याद ।

प्रा० कण्ठा पु० सोने की बड़ी गु-
रियों की माला ।

सं० कण्ठाग्र (कण्ठ=गला, अग्र=
आगे) गु० मुखाग्र, कंठस्थ, ज-
बानी याद ।

सं० कण्ठ्य (कण्ठ) गु० जो अ-
क्षर कंठ से बोला जाय, कंठका ।

सं० कण्ठन (कड़=काँड़ना, कूटना)
भा० पु० छरना, काँड़ना ।

सं० कण्ठनी { स्त्री० उखली, ओ-
कण्डार } खली, काँड़ी ।

सं० कण्डु (कड़ि=भेदना) स्त्री०
खुजली, खाज ।

प्रा० कत (सं० कुत्र) क्रि० वि०
कहाँ, किधर, २ (कथम्) क्यों,
क्योंकर, कैसे, ३ कितना ।

सं० कतम गु० कौन, कौनसा ।

प्रा० कतरना (सं० कर्त्तन, कृत्=
काटना) क्रि० सं० कैंचीसे काटना,
झाँटना, झाँट छूट करना, तराशना ।

प्रा० कतरनी (सं० कर्त्तरी, कृत्=
काटना) स्त्री० कैंची ।

सं० कतिधा अव्य, गु० कितने प्र-
कार से ।

सं० कतिपय गु० चंद, थोड़े, कम ।

प्रा० कतिरा पु० एक प्रकार का गौद ।

प्रा० कतेक { (सं० कति+किम्) गु०
कति } कितना ।

प्रा० कत्था (सं० खदिर, खद=दड़
होना) पु० कत्था जो पान के
साथ खाया जाता है ।

सं० कत्थक (कत्थ=सराइना) क०
पु० एक प्रकार के गानेवालों की
जाति, पंवारिया, यश बखानने
वाला ।

सं० कथक (कथ्=कहना) क० पु०
कथा बाँचनेवाला, पौराणिक, क-
हने वाला ।

सं० कथन (कथ्=कहना) भा० पु०
कहना, वर्णन, कथावार्त्ता कहना ।

सं० कथा (कथ्=कहना) स्त्री० बात,
कहानी, वृत्तान्त, इतिहास ।

सं० कथित (कथ्=कहना) र्म्यं०
पु० कहा हुआ ।

सं० कथनीय (कथ् + अनीय, कथ्
=कहना) र्म्ये० पु० कहने योग्य ।

सं० कथोपकथन भा० पु० कहेहुये
का कहना, दोबारा कहना ।

प्रा० कद् (सं० कदा, किम्, क्या)
क्रि० वि० कब, किस समय ।

सं० कदन (कद्=मारना) क० पु०
मारनेवाला, २ मारना, ३ पाप ।

प्रा० कदम् { (सं० कद्=मारना
सं० कदम्ब } वा काटना) पु० एक
वृक्ष का नाम, २ समूह ।

सं० कदली (क=हवा, दल्=फटना,
जो हवा से फटता है) स्त्री० केले
का वृक्ष ।

सं० कदलीफल पु० केलेका फल ।

सं० कदाचित् (कदा=कब, चित्
कदापि) वा अपि=भी) क्रि०

वि० कभी, कभी कभी, शायद ।

सं० कद्रू (कद्रू=मारना, वा कम्=
चाहना) स्त्री० कश्यपमुनि की
स्त्री और नागों की माता ।

प्रा० कदराई (सं० कातरता) भा०
स्त्री० कायरपन ।

प्रा० कदराना (सं० कातर) क्रि०
अ० कायर होना, डरपोक होना,
डरना, हिम्मत हारना ।

सं० कदर्य्य गु० कायर, डरपोक,
बुज्जदिल, निन्दित, बदनाम, धूर्त ।

सं० कनक (कन्=चाहना वा चम-
काना) पु० सोना, कंचन, सुवर्ण,
स्वर्ण, २ धतूरा ।

सं० कनककशिपु (कनक=सोना,
कशिपु=कपड़) पु० हिरण्यकश्यप,
एक दैत्यका नाम, प्रह्लादका पिता ।

सं० कनकलोचन (कनक=सोना,
लोचन=आँख) पु० हिरण्यक्ष,
एक दैत्यका नाम ।

सं० कनकाचल (कनक=सोना,
अचल=पहाड़) पु० सुमेरु पहाड़,
सुमेरु गिरि ।

प्रा० कनखजूरा पु० कनशलाई, एक
जानवर का नाम ।

प्रा० कनपट्टी (सं० कर्णपट्टिका,
कर्ण=कान, पट्टिका=पट्टी) स्त्री०

पटपड़ी, कान के पास की जगह ।

प्रा० कनफटा पु० एक प्रकार के
योगी जिनके कान फटे होते हैं ।

प्रा० कनागत (सं० कन्यागत,
कन्या राशिमें आगत आना, जिस
में सूर्य कन्याराशि के आते हैं) २
(कना + आगत=कनागत) पु०
आद्यपक्ष पितृपक्ष, आश्विन का
पहला पक्ष ।

सं० कनिष्ठ (कन्=चाहना) गु०
छोटा, लहुरा, अनुज, पु० छोटा
भाई, युवन् शब्द को बहुत अर्थ
में कनिष्ठ होजाता है ।

सं० कनिष्ठा (कनिष्ठ) स्त्री० छोटी
कनिष्ठिका (अंगुली, छिंगुली ।

प्रा० कने पास, समीप, साथ ।

प्रा० कनंटी (कान ऐंठना) स्त्री०
कान ऐंठना, कान खँचना ।

प्रा० कनेर (सं० करवीर) पु० कनै-
ल, एक प्रकार का फूल ।

प्रा० कनौजिया (सं० कान्यकुब्ज)
पु० कनौज देश का रहनेवाला,
२ ब्राह्मणोंकी एक जाति जो क-
नौज से निकले हैं ।

अं० कन्टीन्यु मुसलसल, श्रेणीबद्ध,
जारी, संचलित ।

अं० कन्ट्रेक्टर कारखानादार, ठे-
काधिकारी ।

प्रा० कन्त (सं० कान्त, कम्=चाह-
ना) पु० पति, स्वामी, भर्ता,

प्यारा, प्रियतम, शौहर ।
 सं० कन्था (कम्=चाहना) स्त्री०
 गुदड़ी, कथड़ी, कमरी ।
 सं० कन्द (कदि=भिगोना, वा कं=
 पानी, दा=देना) पु० मूल, जड़
 २ गंठीली जड़, जैसे प्याज और
 लहसुन आदि ।
 सं० कन्दरा (कं=पानी, द=फाड़ना,
 जो जलसे फटती है) स्त्री० खोह,
 गुफा, गुहा ।
 सं० कन्दर्प (कन्द्=व्याकुल होना,
 वा कम्=बुरा, दर्प=घमंड अर्थात्
 जिसके होनेसे बुरा घमण्ड होता
 है) पु० कामदेव, काम, मदन ।
 सं० कन्दु पु० कड़ाही, गुंरसोईदार ।
 सं० कन्दुक (कन्द्=मारना) पु० गेंद
 सं० कन्ध ((कं=शिर, धा, वा धृ=
 कन्धर) रखना) कांधा, गला,
 कंधा, ग्रीवा, गर्दन, २ मेघ ।
 सं० कन्धि (कं=जल, धि=धरना)
 पु० समुद्र, मेघ, स्त्री० ग्रीवा, गला ।
 सं० कन्यका (कन्=चहना) स्त्री०
 छोटी लड़की, दश बरस तक की
 लड़की ।
 सं० कन्या (कन्=चाहना) स्त्री०
 लड़की, २ बेटी, ३ कुमारी, ४
 बारह राशि में की छठी राशि,
 ५ जीर्णवस्त्र, ६ प्रिकुआर, कन्या-
 दान (कन्या=बेटी, दान=देना)
 लड़की को ब्याह देना ।

प्रा० कन्हैया (सं० कृष्ण) पु० श्री
 कृष्णका नाम ।
 सं० कपट (क=शिर, पट्=ढकना)
 पु० बल, धोखा, खोटाई, फरेब,
 ठगई, दगा ।
 सं० कपटी (कपट) गु० बली,
 धोखा देने वाला, फरेबी, ठग,
 दगाबाज, पाखण्डी ।
 प्रा० कपड़ा (सं० कर्पट, कृ=बिखेरना,
 फैलाना) पु० लूगा, लत्ता, वस्त्र ।
 प्रा० कपड़ोंसे होना बोल० रज-
 स्वला होना, स्त्रीधर्म होना, हैज
 होना ।
 सं० कपर्द (क=जल, पर्द=पूर्ण कर
 देना) पु० हरजटा, महादेव की
 जटा जिसमें गंगाजीने वास किया ।
 सं० कपर्दिन् ((क + पर्द + इन्)
 कपर्दी) पु० महादेव ।
 सं० कपर्दिका स्त्री० बराटिका,
 कौड़ी ।
 सं० कपाट (क=हवा, पट्=जाना,
 वा बाहर निकलना अर्थात् कि-
 याड़ बन्द करनेसे हवा भीतर नहीं
 जाती) पु० किवाड़, किवाड़ी,
 २ द्वार ।
 सं० कपाल (क=शिर, पाल्=बचाना)
 पु० खोपरी, कपार, २ शिर, ३
 ललाट, ४ भाग, भाग्य, किस्मत,
 कपालक्रिया करना=कपाल फो-
 डना, हिन्दुओं में एक रीति है कि

जब मुर्दे को जलाते हैं और जब मुर्दा जल चुकता है तब उसका बेटा अथवा और कोई उसका सम्बन्धी उसकी खोपरी फोड़ता है और उसमें घी डालता है ।

सं० कपाली क० पु० महादेव ।

प्रा० कपास (सं० कर्पास, कृ=करना) पु० रुई, रुई का पेड़ ।

सं० कपि (कप्=कैपाना) पु० बन्दर, वानर ।

सं० कपिकुञ्जर (कपि=बन्दर, कुञ्जर=हाथी) पु० बन्दरों का राजा, बन्दरों का प्रधान ।

प्रा० कपिन्दा (सं० कपीन्द्र, कपि=बन्दर, इन्द्र=राजा) पु० वानरों का राजा, सुग्रीव, हनुमान्, अंगद ।

सं० कपिपति (कपि=बन्दर, पति=राजा) पु० वानरों का राजा, सुग्रीव ।

सं० कपिध्वज (कपि=बन्दर, ध्वजा=झंडा, अर्थात् जिसके झंडे में बन्दर का निशान है) पु० अर्जुन ।

सं० कपिपोत (सं० कपि + पुत्र) पु० वानर का बच्चा ।

सं० कपिल (कप्=सराहना) पु० एक मुनिका नाम जिसने सांख्य शास्त्र बनाया ।

सं० कपिला (कप्=सराहना) स्त्री० पीली गाय, कपिला गाय ।

सं० कपीश (कपि=बन्दर, ईश कपीश्वर) वा ईश्वर=राजा) पु०

सुग्रीव, हनुमान्, वानरों का राजा ।

प्रा० कपुत्र (सं० कुपुत्र, कु=बुरा, कपूत) पुत्र=बेटा) पु० बुरा लड़का, कुबुद्धि लड़का ।

प्रा० कपूर (सं० कर्पूर, कृप्=सामर्थ्य रखना वा कर्पूर सुगन्धित होना) पु० एक सुगन्धित चीज, काफूर ।

सं० कपूरतिलक नाम हाथी का जो ब्रह्मावर्त्त अर्थात् चिटूर में था ।

सं० कपोत (क=हवा, पोत=जहाज जिसके लिये हवा जहाज के तुल्य है, वा कव्=रंगरंग का होना) पु० कबूतर, परेवा ।

सं० कपोल (कप्=कांपना, वा क=पानी, पुल्ल=बढ़ना) पु० गाल, रुखसारा ।

सं० कफ (क=पानी, फल्=बढ़ना, जो पानी से बढ़ता है) पु० खखार, थूक, बलगम ।

प्रा० कब (सं० कदा) क्रि० वि० कदा, किससमय ।

प्रा० कबतक (क्रि० वि० किस कबतलक मयतक, कहांतक, कबलों) कितनी देरतक ।

प्रा० कबकब बोल० किस किससमय ।

प्रा० कबड्डी स्त्री० लड़कों के एक खेल का नाम जिसमें सब लड़के अपने दो झुण्ड बनाते हैं और जमीन पर खेलते हैं ।

सं० कबन्ध (क=शिर, बन्ध=काटना वा मारना) पु० बिन शिरका धड़, २ एक राक्षस का नाम ।

प्रा० कघरा (सं० कर्बुर, क्व=रंगना वा कर्क्=जाना) गु० चितकबरा, रंग रंग का, रंग बरंग ।

प्रा० कचारू पु० गुन, हुनर, धंधा, काम ।
सं० कमठ (क=जल, अद्=जाना, वा कम्=चाहना) पु० कछुवा, कच्छप, कूर्म ।

प्रा० कमठा पु० एक प्रकार का धनुष ।

प्रा० कमण्डल (सं० कमण्डलु, क=पानी, मण्ड=शोभा, ला=लेना) पु० दंडी और संन्यासी लोगों के पानी रखने का काठ का अथवा मिट्टी का बरतन, खप्पर, २ कासा, प्याला ।

सं० कमनीय (कम्=चाहना) र्म्भ० पु० सुन्दर, सुथरा, सुघड़, सुहावना, मनोहर, मनभावन, दिलचस्प, दिलगीर ।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरङ्ग, कर्म=काम (भोजनआदि) रङ्ग=प्यार) पु० एक प्रकार का फल ।

सं० कमल (कं=पानी को, अल्=शोभा देना, वा कम्=चाहना, शोभना) पु० कमल, पद्म, जलज ।

सं० कमला (कमल, अर्थात् जिसके हाथ में कमल है) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत ।

सं० कमलापति (कमला=लक्ष्मी, पति=भर्ता) पु० विष्णु, भगवान्, नारायण ।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री० कुमोदिनी, २ कमलों का समूह ।

प्रा० कमाई (कमाना) भा० स्त्री० प्राप्ति, लाभ, उपार्जन, २ काम ।

प्रा० कमाऊ (कमाना) गु० कमाने वाला, मिहनती, उद्यमी, परिश्रमी ।

अं० कमाएडनचीक प्रधान सेनाध्यक्ष, फौजका आला हाकिम ।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म, कृ=करना) क्रि० स० कमाई करना, पाना, प्राप्ति करना, पैदा करना, उपार्जन करना, २ काम करना, ३ साफ करना (चमड़ा या पाखाना) ४ (कम) कम करना, घटाना ।

अं० कमीशन नियुक्ताण, किसी मुख्य बात के हेतु चुने मनुष्य अन्य देश में भेजे जाते हैं, २ मुस्लिमरानामा, ३ मेहन्ताना ।

अं० कमनांटयडसिविलसर्विस वह पास या सनद जिसमें सरकार नौकरी देने की जिम्मेदार है ।

प्रा० कमेरा (काम) पु० काम करने वाला, मजदूर, २ सहायक, मददगार ।

प्रा० कमोदनी (सं० कुमुदिनी, कु=धरती, मुद्=हर्षित करना) स्त्री०

कमलिनी जो रात को खिलती है
और दिन को बंद हो जाती है ।
प्रा० कमोरी स्त्री० मटकी, गगरी ।
सं० कम्प } (कम्प=काँपना) भा०
कम्पन } पु० थरथराहट, कम्प
कम्पी, लर्जा ।
प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प=
काँपना) क्रि० अ० थरथराना,
काँपना ।
सं० कम्पित (कम्प=काँपना) र्म०
कांपता हुआ, थरथराता हुआ,
कम्पायमान ।
सं० कम्बल (कम्ब=जाना वा कम्
=चाहना) पु० कामरी, लोई,
ऊनी कपड़ा, दोशाला ।
सं० कम्बु (कम्=चाहना) पु० शंख,
हस्ती, शम्बूक, घोंघा, सूती चूड़ी
गु० चित्रवर्ण, अर्थात् चितकवड़ा ।
सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा
=गरदन) गु० जिसकी गरदन
शंख ऐसी हो ।
सं० कर (कृ=करना) पु० हाथ, २
हाथी की सूंड, ३ (कृ=विखेरना,
फैलाना) किरन, ४ महसूल, मा-
लगुजारी, ५ जड़, हस्तनक्षत्र ।
प्रा० कर्करा (सं० कर्कर, कृ=क-
रना) पु० खोटा सिक्का, २ एक
पखेरूका नाम गु० कठोर, कड़ा ।
प्रा० करगहना (सं० कर=ग्रहण,
कर=हाथ, ग्रह=लेना, पकड़ना)

क्रि० सं० व्याह करना, व्याह में
दुलहिन का हाथ पकड़ना ।
सं० करटक पु० नाम शृगाल, सि-
यार, कलेला ।
सं० करघर्षण (कर=हाथ, घर्षण=
मलना, घृष्=घिसना, गलना)
भा० पु० हाथमलना, हाथमीजना ।
सं० करज (कर + जन=पैदा होना)
पु० नख, नाखून ।
सं० करण (कृ=करना) पु० साधन,
काम सिद्ध करने का उपाय, हथि-
यार, औजार, २ व्याकरण में ती-
सरा कारक, ३ इंद्रिय, ४ काम,
५ काया, शरीर, ६ कारण, ७
छत्र, ८ करण, कायस्थ, ९ ज्यो-
तिष में एक तरह के समय के वि-
भागों को करण कहते हैं वे ११ हैं,
उनमें से ७ चल हैं और ४ स्थिर
हैं और दो करण मिलके एक
चन्द्र दिनके बराबर होते हैं ।
प्रा० करणी (सं० करणीय, करने
योग्य, कृ=करना) स्त्री० काम,
धंधा, २ थापी ।
सं० करणी (कृ=करना) स्त्री० ग-
णितविद्या में ऐसी राशि को
कहते हैं जिसका ठीक मूल नहीं
मिले ।
सं० करण्ड (कृ + अण्डन्) पु० काक
पक्षी, कौवा, २ डिब्बा, डिविया,
पात्र, मधुचक्र, शहद का छत्ता,

पानपात्र, पुष्पपात्र ।

प्रा० करतब (सं० कर्तव्य, कृ=करना) पु० काम, करनेयोग्य काम, २ चाल, ३ गुण, हुनर, ४ परख, तजरूबा ।

सं० करतल (कर=हाथ, तल=नीचा) पु० हथेली, हाथ का तल ।

सं० करताल (कर=हाथ, ताल=एक बाजे का नाम) पु० एक बाजे का नाम, कठताल ।

सं० करताली (कर=हाथ, तड्=पीटना, वजाना) स्त्री० हाथ बजाना, हाथ बजाने का शब्द ।

प्रा० करतूनि (सं० कर्तव्यता) स्त्री० काम, धंधा, करतव ।

सं० करदपत्र खिराजनामा ।

प्रा० करना (सं० करण, कृ=करना) क्रि० सं० बनाना, रचना, सुधारना, २ पु० एक खट्टे फल का नाम ।

सं० करनिकर गु० करसमूह, हस्त-समूह ।

सं० करपाल (कर=हाथ, पाल्=बचाना) पु० तलवार, खड्ग, मोजा, दस्ताना ।

सं० करपुट हाथ जोड़ना, दोनों हाथ मिलाना ।

सं० करवाल (कर=हाथ, वल्=जाना वा ढकना) पु० तलवार ।

सं० करवालिका स्त्री० छुरी, कटारी ।

प्रा० करबी, स्त्री० जुआर अथवा

बाजरे के पुवाल ।

सं० करभ पु० ऊंट, हाथीका बच्चा ।

सं० करभूषण पु० कंकण, विजायठ ।

प्रा० करम (सं० कर्म, कृ=करना) पु० काम, धंधा, २ भाग, भाग्य, किस्मत ।

प्रा० करचट स्त्री० पसवाड़ा, पांजर, तरफ ।

सं० करचीर (कर=जड़, चीर=प्रकट होना, वा कर=हाथ, चीर=पराक्रम करना) पु० कंडीर का फूल अथवा पेड़, कनेल, २ तलवार ।

सं० करशाला धि० स्त्री० चुंगीघर, महसूलघर ।

प्रा० करांत } (सं० करपत्र, कर=करोत) हाथ, पत्=गिरना, जो हाथ से लकड़ी पर गिरता है) पु० आरा, अर्रा, क्रकच, लकड़ी चीरने का एक औजार ।

प्रा० करारा } पु० नदी का ऊंचा करार } किनारा, २ (सं० कर्कर) गु० कठिन कड़ा, सख्त, भयंकर, काला कौवा ।

सं० कराल (कृ=हिंसा करना, मारना) गु० भयानक, भयंकर, डरावना, २ बड़ा लम्बा ।

सं० करालाकृति (कराल + आकृति) स्त्री० भयंकर स्वरूप, खौफनाकमूर्त ।

प्रा० कराहना क्रि० अ० किसी

पीड़ा अथवा दुःखके कारण आह
मारना, कहरना ।

सं० करिण (कर=सूँड़ अर्थात् सूँड़
वाला) पु० हाथी, गज, मतंग ।

सं० करीर (कृ=फैलाना, वा मा-
रना) पु० वांसका अंकुर, २ क-
रील, एक प्रकार का कँटीला वृक्ष
जो मरुस्थल में उगता है और
उसको ऊंट खाते हैं ।

सं० करुणा (कृ=करना, वा कृ=
फेंकना) स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह,
२ नाम वृक्षका, ३ नवरसमें एकरस ।

सं० करुणानिधान (करुणा=दया,
निधान=खजाना) गु० करुणा के
खजाना, कृपालु, दयालु ।

सं० करुणामय (करुणा=दया, मय
=रूप) गु० दया के रूप, दयामय,
दया करनेवाला, दयालु, कृपालु ।

सं० करुणायतन (करुणा + आ-
यतन) पु० दया के स्थान ।

सं० करुणार्द्र (करुणा=दया, आर्द्र
=गीला) पु० करुणानिधान, क-
रुणामय, दयालु ।

प्रा० करुवा (सं० करक, कृ=करना)
पु० कमंडलु, करवा, कठारी, मिट्टी
का कोरा बरतन, करवाचौथ=एक
पर्व अथवा त्योहार जो कातिक
के महीने में होता है ।

सं० करेणु पु० हाथी, हस्ती ।

प्रा० करेला (सं० कटिल्ल, कद्=पे-

रना) पु० एक तरकारी का नाम
जो कुछ कड़वी होती है ।

प्रा० करोनी स्त्री० दूध की खुर्चन

प्रा० करौंदा (सं० करमर्दक, का
=हाथ, मृद्=मलना) पु० एक
फल का नाम ।

सं० कर्क (कृ=करना, वा कृ=फै-
लना) पु० कैंकड़ा, २ चौथी राशि ।

सं० कर्कट (कृ=करना) पु० कैंकड़ा,
गिंगटा, २ चौथी राशि, सर्प ।

सं० कर्कश (कर्क=कठिनता, वा कृ
=फेंकना, कश्=मारना) गु० कठोर,
कठिन, कड़ा, निर्दय, लड़ाका ।

सं० कर्कशा स्त्री० लड़ाका, भगड़ा
करनेवाली, कलही ।

सं० कर्कन्धु स्त्री० बदरी वृक्ष, बेरका पेड़ ।

सं० कर्ण (कृ=करना, अर्थात् शब्द
का ज्ञान करना) पु० कान, २
(कर्ण=भेदना, वा कृ=फैलाना)
पतवार, ३ त्रिभुज खेत में भुज और
कोटि को छोड़े तीसरी भुजा का
नाम, ४ चौकोने खेत में उस ल-
कीर का नाम जो सामने के कोनों
से खींची जाती है, आध काट,
५ कुंती का बेटा जो सूर्य के अंश
से पैदा हुआ ।

सं० कर्णधार (कर्ण=पतवार, धृ=
रखना) पु० मांझी, चढ़नदार,
जहाज चलानेवाला, नाविक,
केवट, मल्लाह ।

सं० कर्णफूल (कर्ण=कान, फूल,
अर्थात् कानका फूल) पु० कान में
पहनने का गहना, कर्णभूषण ।

सं० कर्णवेध (कर्ण=कान, विध्=
कर्णवेधन) छेदना) पु० कान
बिन्धाना, कानबिदाना ।

सं० कर्णमण्डक (मण्ड=शोभा
देना) क० पु० कर्णफूल, विरिया,
२ मधुरशब्द ।

सं० कर्णाट पु० कर्णाटक देश ।

सं० कर्णिका (कर्ण + इक, कर्ण
छेदना) स्त्री० हाथी की सूँड़ की
नोक, हाथ की बीच की अंगुली,
मध्यमा, कलम, लेखनी, कुट्टिनी,
कर्णभूषण, कर्णफूल ।

सं० कर्त्तन (कृत्=काटना) पु० क-
तरन, काटना, छांटना ।

सं० कर्त्तरिका (कृत्=काटना) स्त्री०
कर्त्तरी) कतरनी, कैची ।

सं० कर्त्तव्य (कृ=करना) कर्म० पु०
करने योग्य, जो कुछ करना चा-
हिये, अवश्य उचित, योग्य, वाजिव ।

सं० कर्त्ता (कृ=करना) पु० करने
वाला, बनानेवाला, २ सृष्टिपैदा
करनेवाला, ईश्वर, ३ व्याकरण
में पहला कारक, ४ ग्रन्थ बनाने
वाला, ५ पति, मालिक, स्वामी,
अधिकारी ।

प्रा० कर्त्तार (सं० कर्त्ता) पु० करने
वाला, २ पैदा करनेवाला, ईश्वर,

सिरजनहार, सृष्टिकर्त्ता ।

सं० कर्द (कर्द्=बुरा शब्दकरना)
कर्दम } पु० कीचड़, काँदो, चहला ।

प्रा० कर्धनी (सं० कटिधारणीय,
कटि=कमर, धारणीय=पहनने यो-
ग्य, धृ=धारणकरना वा कटिवन्धन,
कटि=कमर, बन्धन=बांधना) स्त्री०
कंधनी, कमर में पहनने का गहना ।

सं० कर्पूर (कृप्=समर्थ होना) पु०
कर्पूर, बाहुभूषण ।

सं० कर्बूर (कर्व=जाना) पु० स्वर्ण,
हरिताल, राक्षस ।

सं० कर्म (कृ=करना) पु० काम,
धंधा, २ धर्मसंबंधी काम, जैसे यज्ञ,
होम, दान आदि, ३ पहले जन्म में
किया हुआ, ४ कर्मकारक, दूसरा
कारक (व्याकरण में), ५ भाग,
किस्मत ।

सं० कर्मकाण्ड (कर्म=काम, कांड
=समूह) पु० कर्मों का समूह, २
जप होम यज्ञ आदि, ३ वेद का
एक भाग ।

सं० कर्मकार (कर्म=काम, कार
=करनेवाला, कृ=करना) पु०
काम करनेवाला, २ लुहार ।

सं० कर्मनाशा (कर्म=अच्छे काम,
वा पुण्य, नाश=नष्ट करना) स्त्री०
एक नदी जो बनारस और बिहार
के बीच में है ।

सं० कर्मनिपुणार्ह भा० स्त्री०

कर्मकुशलता, काम की चतुराई,
कारीगरी ।

सं० कर्मपथ स्त्री० कर्ममार्ग, वेद
की रीति, तरीक़ै शरई ।

सं० कर्मभोग (कर्म=पहले जन्म
में किये हुये काम का फल, भोग
=भोगना) पु० भले बुरेका फल,
प्रारब्ध के फल का भोग ।

सं० कर्मैन्द्रिय (कर्म=काम, इं-
द्रिय=इंद्रि) स्त्री० काम करने की
इंद्रि जैसे हाथ पांव आदि (इंद्रिय
शब्द को देखो) ।

सं० कर्ष (कृप्=खींचना) पु० वैर,
विरोध, रोष, ईर्ष्या, जैसे “ बातहि
बात कर्ष बढ़ि आई ” (रामायण)
२ सोलह मासे का तोल ।

सं० कर्षक (कृप्=खींचना, हल
जोतना) पु० किसान, जोता,
जोतनेवाला ।

सं० कर्षण (कृप्=खींचना, हल
जोतना) पु० खेंच, तान, २ जो-
तना, खेती करना ।

प्रा० कल (सं० कल्य, कल्=गिन-
काल) पु० आजका पहला
वा पिछला दिन ।

प्रा० कलकीबात बोल० थोड़े दिनों
की बात, जो कुछ थोड़े दिन पहले
हुआ हो ।

प्रा० कल स्त्री० चैन, आराम, सुख,
राहत ।

प्रा० कलमकल बोल० बेचैनी, बे-
आरामी, बेकली, दुःख, तकलीफ ।

प्रा० कल (सं० कला, कल्=शब्द
करना) स्त्री० जन्त्र, यन्त्र, २ बंदूक
की कल, चाप, ३ दांव, पेंच ।

प्रा० कलकाआदमी बोल० बहुत
दुबला आदमी, २ पुतला ।

प्रा० कलका घोड़ा बोल० बहुत
अच्छा सिखाया हुआ और अधीन
घोड़ा ।

सं० कल (कल्=शब्द करना) पु०
मीठा शब्द, २ (कद्=प्रसन्नहोना)
वीर्य, बीज, गु० मीठा, सुन्दर ।

सं० कलकण्ठ (कल=मीठा वा
सुन्दर, कंठ=गला) स्त्री० कोयल,
कोकिला, गु० सुन्दर वा मीठे
कण्ठवाली ।

सं० कलकल (कल्=शब्द करना)
पु० कोलाहल, कलकल, ऐसा
शब्द कचकच, भकभक, वकवक ।

सं० कलङ्क (क=मुख, वा आत्मा,
लङ्कि=बिगाड़ना, वा कल्=जाना)
पु० दाग, दोष, चिह्न, लज्जनत,
लाञ्छन ।

प्रा० कलजिभा (सं० कालजिह्वा,
काल=काली, जिह्वा=जीभ) गु०
बुरा चीतनेवाला, दुर्जन, बुरा चा-
हनेवाला ।

सं० कलत्र (कल=वीर्य, त्रा=वचा-
ना वा गद्=खींचना, यहां ग को

- क और ड को ल हो जाता है)
 स्त्री० पत्नी, भार्या, लुगाई, स्त्री ।
 सं० कलधौत (कल=मैल, धौत=
 धो गया) गु० मलरहित, रसोना ।
 सं० कलन (कल्=गिनना) भा०
 पु० गिनना, चिह्न ।
 [प्रा० कलप पु० बालों के रंगने का
 रंग, खिजाव, माँड़, लेई ।
 प्रा० कलपना (सं० कल्पन, कृप्=
 दुबला होना) क्रि० अ० कुढ़ना,
 पड़ताना, बिलखना, दुःखीहोना,
 दुःख पाना ।
 प्रा० कलपाना (कलपना) क्रि०
 स० कुढ़ाना, सताना, दुःख देना ।
 सं० कलभ (कल्=शब्द करना)
 पु० हाथी का बच्चा ।
 अ० कलम लेखनी ।
 प्रा० कलमकल स्त्री० घवरानि, दुःख ।
 प्रा० कलमलाना क्रि० अ० चुल-
 बुलाना, छटपटाना, कुलबुलाना,
 हिलना ।
 प्रा० कलघार पु० कलाल, कलार,
 मुंड़ी, मदिरा खींचनेवाला और
 बेचनेवाला ।
 सं० कलश (कल=शब्द, श=जाना)
 पु० घड़ा, गगरा, पानी रखने का
 बरतन, २ मन्दिरों के ऊपर का
 शिखर ।
 प्रा० कलशिरा { (सं० काल=काला,
 कलसिरा) शीर्ष=शिर) गु०
- काले शिरवाला, काले शिर का,
 पु० मनुष्य, आदमी ।
 सं० कलस (क=पानी, लस=शो-
 भना) पु० घड़ा, कलश, २ मन्दिर
 का शिखर ।
 सं० कलहंस (कल=सुन्दर, हंस)
 पु० राजहंस ।
 सं० कलह (कल=मीठा शब्द, हन्
 =मारना) पु० लड़ाई, भगड़ा,
 विरोध, गु० कलहकार=भगड़ालू,
 लड़ाई करनेवाला, २ कलहका-
 रिणी=भगड़ालू स्त्री, लड़ाई कर-
 नेवाली ।
 सं० कला (कल्=गिनना, जाना)
 स्त्री० बहुत छोटा भाग, अंश का
 साठवां हिस्सा, २ चन्द्रमण्डल का
 सोलहवां भाग, ३ समयका हिस्सा,
 साठ सेकंड, ४ छल, कपट, बहाना,
 फरेब, ५ गुण, हुनर, गाना बजा-
 ना आदि ६४ कला ।
 कला चौंसठ हैं—
 १-गीत गाना अर्थात् स्वरों रागों
 और रागिणियों को जानना और
 उनको अभ्यास करना ।
 २-वाद्य वाजा बजाना ।
 ३-नृत्य नाचना ।
 ४-नाट्य नकल करना, नाटक खे-
 लना ।
 ५-आलेख्य लिखना और चित्र-
 कारी यानी मुसव्वरी करना ।

- ६-विशेषक छेद्य अनेक प्रकार के खोर और तिलक लगाने के सांचे बनाना ।
- ७-तण्डुलकुसुमबलिविकारक्रिया विना दूटे चावल और फूलों के चौक देवमंदिरों में पूरना ।
- ८-पुष्पास्तरण फूलों की सेज बनाना ।
- ९-दशनवसनांगराग दांतों के मंजन मिस्सी आदि और वस्त्र और अंगराग बनाना और लगाना ।
- १०-मणिभूमिकाकर्म गर्मी के दिनोंमें रहने के लिये गृह विशेष बनाना ।
- ११-शयनरचन पलंग बिछाना ।
- १२-उदकवाद्य पानीमें बाजा बजाना या जलतरंग ।
- १३-उदकघात पानीके खेल, बींटा देना या पानी हाथों से दवाकर ऊपर उठाना ।
- १४-चित्रयोग १ नपुंसक करना, २ जवान को बुढ़ा और ३ बुढ़ा को जवान करना ।
- १५-माल्यग्रन्थनविकल्प देवपूजा के लिये अनेकप्रकार के माला और वस्त्र बनाना ।
- १६-शेखरापीड़योजन शिर में अनेक प्रकारके फूलों की रचना ।
- १७-नेपथ्यप्रयोग देशकालानुसार वस्त्र पहिनना ।
- १८-कर्णपत्रभंग हाथीदांत और शंखादि के कर्णफूल बनाना ।
- १९-गन्धियुक्ति अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थ बनाना और लगाना ।
- २०-भूषणयोजना गहने पहनना ।
- २१-ऐन्द्रजाल बाजीगरोंकी तरह शोविदे अर्थात् लीला दिखलाना ।
- २२-कौचुमारयोग कुरूप को सुन्दर करना ।
- २३-हस्तलाघव हाथको फुरती और हलकेपने से काम में लाना ।
- २४-चित्रशाकापूपभक्ष्य विकार क्रिया अनेक प्रकार की तरकारियां और भोजन के व्यंजन बनाना ।
- २५-पानकरसरागासवयोजन अनेक प्रकार के पीने के शर्वत या अर्क और शराब बनाना ।
- २६-सूचीकर्म सीना और बुनना ।
- २७-सूत्रक्रीड़ा रंग वरंग के तागे दिखलाना साबित को दृष्ट और दूटे को साबित दिखाना ।
- २८-प्रहेलिका पहेली सीखना और कहना ।
- २९-प्रतिमाला बैतवाजी या श्लोक के अन्तिम अक्षर से दूसरा श्लोक कहना ।
- ३०-दुर्वाचकयोग कठिन शब्दोंका पढ़ना ।

- ३१-पुस्तकवाचन शृंगारादि अलं-
कार और गान के साथ पुस्तक
पढ़ना ।
- ३२-नाटकाख्यायिकादर्शन छोटे
बड़े नाटक देखना और दिख-
लाना ।
- ३३-काव्यसमस्यापूर्ण दी हुई,
समस्या से श्लोक को पूराकरना ।
- ३४-पट्टिकावेत्रबाणविकल्प तरह-
की खाट चुनना ।
- ३५-तर्कवातक्षकर्म दलीलें क-
रना वा शिल्पकारी वा शान
चढ़ाना ।
- ३६-तक्षण बढ़ईका काम करना ।
- ३७-वास्तुविद्या घरवगैरह बनाना,
सामान रखना ।
- ३८-रूप्यरत्नपरीक्षा सोना, चांदी
और रत्नों का पहिंचानना ।
- ३९-धातुवाद कच्ची धातु का साफ
करना ।
- ४०-मणिरागकरज्ञान मणियों के
रंग और उनकी खानि जानना
और पहिंचानना ।
- ४१-वृक्षायुर्वेदयोग वृक्षों का तर-
तीबवार जमाना और पालन पो-
षण करना ।
- ४२-मेषकुक्कुटलावकयुद्ध विधि
मेढ़े मुर्गे लावक के युद्धकी रीति ।
- ४३-शुकसारिकाप्रलापन सुआ और
मैना को पढ़ाना ।
- ४४-उत्सादन उपटन बनाना और
लगाना और शरीर का दाबना ।
- ४५-केशमार्जनकौशल बालों का
मलना और तेल लगाना ।
- ४६-अक्षरमुष्टिकाकथन संक्षेप
लिखा हुआ पढ़ना ।
- ४७-म्लेक्षितविकल्प शब्दों का गूढ़
अर्थ समझना जैसे अग्नि से ३
की संख्या और वेद से ४ की
संख्या आदि ।
- ४८-देशभाषाविज्ञान देशदेशकी
भाषा जानना ।
- ४९-पुष्पशकटिका बालकोंकेलिये
फूलों की गाड़ी बनाना ।
- ५०-निमित्तज्ञान शुभाशुभदेश प-
रिज्ञान फल-गुप्त बात का वर्त्त-
मान दशा देखकर बतलाना ।
- ५१-यन्त्रमात्रिका लड़ाई के लिये
यन्त्रों की घटना जानना ।
- ५२-धारणमात्रिका स्मरणशक्ति का
बढ़ाना जिससे सुनते ही याद
होजावे ।
- ५३-समवाच्यसमपाठ्य विना पढ़े
हुये को दूसरे का पढ़ना सुनकर
उसके समानही पढ़ते या बांचते
जाना ।
- ५४-मानसीकाव्यक्रिया उसी क्षण
काव्य बनाना दूसरे के मन की
बात जानना ।
- ५५-अभिधान कोष कोषबनाना ।

५६-छन्दोज्ञान तरह तरह के छन्दों का पहिचानना ।

५७-क्रियाविरुद्ध काव्यों के अलङ्कार जानना ।

५८-छलितक योग बंचन करने या मोहने के हेतु वेप बदलना अर्थात् ऐयारी ।

५९-चम्त्रगोपन फटे कपड़ों का ऐसा पहिनना कि मालूम न पड़े या इच्छित प्रकार से पहिनना ।

६०-चूनविशेष जुआ खेलना ।

६१-आकर्ष्यक्रीड़ा पाँसा खेलना ।

६२-बालक्रीड़न कर्म बालकों के लिये खिलौने बनाना ।

६३-वैनयिकी वैजयिकी विद्या विनय और विजय के उपाय ।

६४-वैतालिकीव्यायामिकीविद्या भूत प्रेत और दाँव पेंच आदि ।

प्रा० कलाई स्त्री० पहुँचा ।

सं० कलाधर (कला + धृ = धरना) क० पु० चन्द्रमा, महताव ।

सं० कलाप (कला = भाग, आप = पाना) पु० समूह, २ संस्कृत भाषा का व्याकरण, ३ मोरकी पूंछ ।

सं० कलापक (कला + अक) क० मोर, मयूर, ताऊस ।

सं० कलापी (कला + मोर की पूंछ) पु० मोर, मयूर ।

प्रा० कलाबचून पु० सोना चांदी का तार ।

प्रा० कलार { पु० कलवार, मदिरा कलाल } खेंचनेवाला और बेंचनेवाला ।

प्रा० कलारिन स्त्री० कजार की स्त्री ।

प्रा० कलावंत पु० गानेवाला, ग-वैया, ठाढ़ी ।

सं० कलि (कल् = गिनना) पु० चौथा युग, कलियुग, कल्युग, (युगशब्द को देखो) २ लड़ाई, भगड़ा ।

सं० कलिका { (कल् = जाना, वा कली) गिनना } स्त्री० कोंपल, बिन लिला हुआ फूल ।

सं० कलिङ्ग (कलि = भगड़ा, गम् = जाना) पु० कटक से मंदराजतक का देश ।

सं० कलियुग (कलि, युग = समय) पु० चौथा युग, कलियुग (युग शब्द देखो) ।

सं० कलुष (क = सुख वा आत्मा, लुप् = नाश करना) पु० पाप, गंदला, नाराज ।

प्रा० कलेंऊ { (सं० कल्याहार, कलेवा) कल्य = कल, आहार = खाना) पु० कल का बचा खाना, ठंढा खाना, बासी खाना, भोर का खाना, नाश्ता ।

प्रा० कलेजा पु० कलेजा, जिगर, २ साहस, हिम्मत ।

प्रा० कलेजा उलटना बोल० बहुत

कै करने से थक जाना ।

प्रा० कलेजाफटना बोल० दुख
अथवा डाह से बेकल होना ।

प्रा० कलेजाटंटाकरना बोल० अ-
पनी चाह पूरी करना, आराम
पाना, चैन करना ।

प्रा० कलेजाजलना बोल० दुख
पाना, कुटना, पड़ताना, सोचकरना ।

प्रा० कलेजाकांपना बोल० डरना,
सहमना, थरथराना ।

प्रा० कलेजेपरसांपफिरना बोल०
डाह से जलना ।

प्रा० कलेजेसेलगारखना (बोल०
कलेजेसे लगालेना) प्यार
करना, गलेलगाना, बहुतही बहुत
प्यार करना ।

प्रा० कलेजेमेंडालरखना बोल०
बहुत प्यार करना, बहुतही बहुत
चाहना ।

सं० कलेवर (कल=वीर्य, वर=
श्रेष्ठ, वा, कल्=जाना) पु०
देह, शरीर ।

प्रा० कलेश (सं० क्लेश, क्लिश
कलेस) = दुःख पाना) पु०
दुख, कष्ट, पीड़ा, २ भगड़ा, दंगा ।

प्रा० कलोल (सं० कल्लोल, कल्=
शब्द करना) स्त्री० खेलकूद, क्रीड़ा,
चञ्चलाहट, आनन्द, बड़ीलहर ।

प्रा० कलौंजी स्त्री० मंगरेला, एक
तरह का बीज जो दवाई में काम
आता है ।

सं० कल्की पु० विष्णुका दशवां
अवतार ।

सं० कल्प (कृप्=समर्थ होना वा
नाश होना) पु० वेद के छःअंगों
में का एक अंग, २ ब्रह्मा का एक
दिन रात जो मनुष्यों के हजार
चौयुगी अथवा ४३२००००००००
का होता है, ३ प्रलय, ४ विकल्प,
संदेह, ५ अभिप्राय, मतलब, का-
मना, मनोरथ, ६ योग्यता, उचितता ।

सं० कल्पनक } कल्प=मनोरथ, वा
कल्पद्रुम } कामना, तरु वा द्रुम
कल्पवृक्ष } वा वृक्ष का अर्थ पेड़)
पु० मनोकामना देनेवाला वृक्ष जो
इन्द्र के वाश में है ।

सं० कल्पना (कृप्=विचारना) स्त्री०
विचार, बनावट, मानना, युगत,
जालसाजी, नकल ।

सं० कल्पान्त (कल्प=ब्रह्माका दिन
रात, अन्त=पूरा होना) पु० प्रलय,
युगान्त, कल्प का अन्त ।

सं० कल्पित (कृप्=विचारना) र्म०
बनाया हुआ, माना हुआ, कृत्रिम,
२ झूठा, असत्य ।

सं० कल्मष (कर्म=अच्छा काम
वा पुण्य, सो=नाश करना यहां
र को ल्, और स को ष होगया)
पु० पाप, नरक, मल ।

सं० कल्याण (कल्प=नीरोग, अण्
=जीना, वा कल्प=प्रभात, अण्=

शब्द करना) पु० कुशल, मंगल, शुभ, २ एक रागिनी का नाम ।

सं० कल्ल पु० बधिर, बहिरा ।

प्रा० कल्लर गु० ऊपर, खारी ।

प्रा० कल्ला पु० जवाड़ा, जवड़ा ।

सं० कवच (क=हवा, वंच=ठगना, वा कु=शब्द करना) पु० झिलम, बख्तर, वर्म ।

सं० कवल (क=पानी, वल्=ढकना) पु० ग्रास, कवर, कवा, कौर, लुकमा ।

सं० कवि (कु=शब्द करना) पु० काव्यवनानेवाला, जैसे वाल्मीकि, कालीदास आदि, शास्त्रर, पंडित, बुद्धिमान्, २ भाट, चारण ।

प्रा० कवित्त (सं० कवित्व, कवि) पु० कविता, काव्य, शस्त्र ।

सं० कविना (कवि) स्त्री० कवि की बनाई हुई रचना, काव्य, पद्य, श्लोक, छन्द आदि, शास्त्री ।

प्रा० कविताई (कविता) स्त्री० पद्यरचना, तसनीफ ।

सं० कवीश्वर (कवि, ईश्वर=स्वामी) पु० बड़ा कवि, वाल्मीकि ।

सं० कव्य (कु=शब्द करना) पु० पितरों के लिये जो अन्न आदि पदार्थ ।

सं० कश्मल पु० मोह, अज्ञानता ।

सं० कश्य पु० मदिरा, घोड़ेका तंग ।

सं० कश्यप (कश्य=सोमलता, सोमवल्ली, पा=पीना) पु० एक मुनि का नाम, मरीचि ऋषि का बेटा और देवता राक्षस और मनुष्यों का पुरुषा, प्रजापति, कश्यप शब्द यथार्थ में पश्यक था आदि अन्त अक्षरों के विपर्यय अर्थात् बदलने से कश्यप बना इसका अर्थ हुआ सर्वज्ञ, २ अज्ञाननाशक, ३ विशेपज्ञानवान्, ४ आत्मज्ञानी, ५ परब्रह्म, ६ सृष्टिकर्ता ।

सं० कष्ट (कप्=मारना, हानि पहुँचाना) पु० दुख, कलेश, पीड़ा, तकलीफ, संकट ।

प्रा० कस गु० कैसा, पु० परख, ताव, २ जोर, बल, कैसा ।

प्रा० कसक स्त्री० पीड़ा, दुख, टसक, टीस ।

प्रा० कसना (सं० कृप्=खेंचना, वा कप्=जांचना) क्रि० सं० खेंचना, तानना, जकड़ना, २ सोनेकी कसौटी पर घिसके परखना, जांचना, परखना, ३ तलना, घीमें भूनना ।

प्रा० कसमसाना क्रि० अ० हिलना, अंग मरोड़ना, कलमलाना ।

प्रा० कसार पु० एक तरह की मिठाई जो चावल और शकर से बनाई जाती है ।

प्रा० कसेरा (सं० कांस्यकार, कांस्य-

कांसा, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० ठेरा, भरतिया ।
 प्रा० कसौटी (सं० कप्=कसना, जांचना) स्त्री० एक पत्थर जिस पर सोना चांदी कसा जाता है, धातु परखने का पत्थर ।
 सं० कस्तूरी (कस्=जाना, अर्थात् जिससे सुगन्ध निकलती है) स्त्री० सुगन्धित चीज जो हरिण की नाभि में मिलती है, मृगमद, मुश्क ।
 प्रा० कहना (सं० कथन, कथ्=कहना) क्रि० स० बोलना, जताना, आज्ञा करना ।
 प्रा० कहदेना बोल० जता देना, आज्ञा देना ।
 प्रा० कहनावन (सं० कथावत्, कहावत्) कथा=वात, वत्=वरावर, तुल्य) स्त्री० वात, दृष्टांत, मिसाल, मसल ।
 प्रा० कहरना (क्रि० अ० कराहना, कहारना) किसी दुख अर्थात् पीड़ा के कारण आह मारना ।
 प्रा० कहाँ (सं० क) क्रि० वि० किस जगह ।
 प्रा० कहाँतक क्रि० वि० कितनी दूर तक, २ कितनी देरतक, ३ कितना ।
 प्रा० कहाँसे क्रि० वि० किस जगह से, किस तरफ से, किधर से ।
 प्रा० कहाँका कहाँ बोल० कितना,

२ हृद से बाहर, बहुतही बहुत ।
 प्रा० कहानी (सं० कथन, कथ्=कहना) स्त्री० वात, कथा, किस्सा ।
 प्रा० कहार (सं० कर्मकार, कर्म=काम, कार=करनेवाला) पु० महारा, भोई, पालकी उठानेवाला ।
 प्रा० कहीं (सं० कापि, क=कहाँ, अपि=भी) क्रि० वि० किसी जगह, जहाँ कहीं, कहुँ ।
 प्रा० कहीं न कहीं बोल० इस जगह या उस जगह, यहाँ अथवा वहाँ, किसी न किसी जगह ।
 प्रा० कहुँ क्रि० वि० कहीं, किसी जगह ।
 प्रा० कांकर पु० कंकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे २ टुकड़े ।
 प्रा० कांक्व (सं० कक्ष) स्त्री० वगल, कक्ष, पार्श्व ।
 प्रा० कांचुली (सं० कञ्चुक, कचि=बांधना) स्त्री० अंगिया, चोली, कंचुकी ।
 प्रा० कांजी (सं० काञ्जिक) पु० खट्टा मांड, तुरानी पीछ ।
 प्रा० कांटा (सं० कण्टक) पु० शूल, शाल, कण्टक, २ सोना अथवा दवाई आदि तोलने की छोटी तराजू, पर्यानी, ३ मछली पकड़ने की बंसी, ४ मछली की हड्डी ।
 प्रा० कांटासा निकल जाना बोल० दुख अथवा हानि से छुटजाना ।

प्रा० कांटोंपर घसीटना बोल० ब-
हुत सराहना, किसी की योग्यता
से अधिक बढ़ाई करना (जब
कोई किसी आदमी की बहुत स-
राहना करता है तब वह आदमी
नम्रता से ऐसा कहता है) ।

प्रा० कांटेबोने बोल० अपने लिये
आपही दुख पैदा करना, अपनी
बुराई आप करना, किसी को
दुख देना ।

प्रा० कांठा (सं० कण्ठ) पु० पास,
नगीच, निकट ।

प्रा० कांदा (सं० कन्द) पु० प्याज ।

प्रा० कांदू (सं० कान्दविक) पु०
भड़भूजा, २ चीनी का हंडा ।

प्रा० कांधा (सं० स्कन्ध) पु०
कंधा, कांध, कंध ।

प्रा० कांधादेना बोल० सहायता
देना, २ मुर्दे को लेजाना ।

प्रा० कांपना (सं० कंपन, कंप=
कांपना) क्रि० अ० हिलना, थर-
थराना, दुलना, कंपना, धड़धड़ाना ।

प्रा० कांस (सं० काश, काश=चम-
कना) पु० एक प्रकार की घास ।

प्रा० कांसा (सं० कांस्य) पु० एक
प्रकार की धातु ।

सं० काक (कै=शब्द करना) पु०
कौवा, काग, वायस ।

सं० काकनालन्याय कौवा श्रमकर
ताड़ के वृक्षपर जाकर फल को

खाता है तात्पर्य यह है कि श्रम
से सब पदार्थ प्राप्त होते हैं ।

सं० काकपक्ष (काक=कौवा, पक्ष
=पंख, अर्थात् कौवे का पंख जैसे)
पु० पट्टा, जुल्फी ।

प्रा० काका { पु० चचा, बाप का
कका } छोटा भाई, पितृव्य ।

सं० काकिणी स्त्री० बदाम, कच्ची
दो दमड़ी ।

प्रा० काकी स्त्री० चची, चचा की
स्त्री, किसकी ।

प्रा० काकानूआ पु० सूये की जात
का पक्षी ।

प्रा० काकबधू कबयी ।

प्रा० काग { (सं० काक) पु० कौवा
काग }

प्रा० कागर पु० किनारा, कोर, आँठ,
२ सर्प की केंचली ।

सं० कांक्षा (कांक्ष=चाहना) स्त्री०
चाह, इच्छा, चाहना, अभिलाष,
त्वाहिश ।

अं० कांग्रेस मेल, मिलान ।

सं० काच (कच्=चमकना) पु०
शीशा, आईना, २ एक तरह की
आंखों की बीमारी ।

प्रा० काचा गु० कच्चा, २ अधूरा,
अज्ञानी ।

प्रा० काछु (सं० कच्छ, कच्=बां-
धना) स्त्री० धोती का पल्ला जो
पीछे खेंचकर बांधा जाता है, लांग,

२ जांघ के ऊपर का भाग ।
 प्रा० काळुन स्त्री० काळी की स्त्री ।
 प्रा० काळुनी स्त्री० लंगोटी, कोपीन,
 जांघिया ।
 प्रा० काळी पु० कुंजरा, माली ।
 प्रा० काज { (सं० कार्य) पु०
 काजा } काम, धंधा, कारज ।
 प्रा० काजल (सं० कज्जल) पु०
 सुरमा, अंजन ।
 सं० काञ्चन (काचि=चमकना)
 पु० सोना, सुवर्ण, स्वर्ण, तिला ।
 प्रा० काट (काटना) पु० चीरा,
 जखम, घाव, २ मैल, छांटन, तल-
 छट, ३ कड़वाहट, तेजी, ४ धार ।
 प्रा० काटकरना बोल० घायल क-
 रना, जखमी करना, काटना ।
 प्रा० काटकूट बोल० छांटछूट, कत-
 रन, छांटन, छीलन, टुकड़ा ।
 प्रा० काटकूटकरना बोल० कतरना,
 काटना, तराशना, काट डालना,
 २ काटलेना, लेलेना, मुजरा लेना ।
 प्रा० काटखाना बोल० दांतमारना,
 दांत काटना, भंभोड़ना, पकड़ना,
 काटना, डसना, मुँह डालना ।
 प्रा० काटना (सं० कर्तन, कृत्=
 काटना) क्रि० स० छेदना, तो-
 ड़ना, कतरना, चीरना, टुकड़े
 टुकड़े करना, २ काटखाना, खाना,
 खाजाना, खालेना, ३ लौनी, क-
 टनी करना, ४ आरे से चीरना,

आरा चलाना, ५ बिताना (समय),
 चलना, जाना, तै करना (रस्ता) ।
 प्रा० काटडालना बोल० काटका-
 ढना, साफ करना, उतार डालना,
 छांट डालना ।
 प्रा० काठ (सं० काष्ठ) पु० लकड़ी ।
 प्रा० काठकबाड़ बोल० लकड़ी
 की चीजें ।
 प्रा० काठका उल्लू बोल० मूर्ख, बे-
 वकूफ, घामड़, विलग्ला, भुच,
 मिशमिटू, मसखरा, गावदी ।
 प्रा० काठकीभंवा बोल० मूर्ख, वि-
 लल्ली, भुच स्त्री, बेवकूफ लुगाई ।
 प्रा० काठचबाना बोल० दुख से
 निवाह करना, दुख से जीना, क-
 ठिनता से गुजरान करना ।
 प्रा० काठमें पांच देना बोल० कैद
 होना, कैदी होना ।
 प्रा० काठहोना बोल० कड़ा होना,
 सूखजाना, पथराना, पत्थर होजाना ।
 प्रा० काठपुतली { (सं० काष्ठपुत्तली)
 कठपुतली } स्त्री० लकड़ीकी
 बनी हुई मूरत ।
 प्रा० काठकीड़ा (सं० काष्ठकीट)
 पु० खटमल, उड़ीस, खाटकीड़ा,
 २ घुन, एक कीड़ा जो लकड़ीको
 काटता है और खाता है ।
 प्रा० काठड़ा { (सं० काष्ठ) पु०
 कठड़ा } लकड़ी का बरतन ।
 प्रा० काठी (सं० काय, वा काष्ठ)

स्त्री० जीन, २ शरीर, ३ डीलडौला।

प्रा० काढ़ना क्रि० अ० निकालना,
खेंचना, बाहर लेना, उधेड़ना,
याहर निकालना, कपड़े पर सूई
से फूल बनाना, कसीदा निका-
लना ।

प्रा० काढ़ा पु० जोश दिया हुआ
दवाईका पानी, काथ, कसैलारस ।

प्रा० काणा (सं० काण, कण्=आंख
ढकना) गु० एक आंखवाला,
एकाक्ष, २ (फल) जिसका गूदा
सड़ गया हो, अथवा जिसमें कुछ
गूदा न हो, ३ मूर्ख, बेवकूफ, पु०
काग, कौवा ।

सं० काण्ड (कण्=शब्दकरना, वा
जाना, वा कई विभाग करना)
पु० सर्ग, खंड, प्रकरण, अध्याय,
भाग, बाब, विभाग, २ समूह, ३
डंठल, ४ समय, ५ बाण, ६ सेन,
७ घोड़ा, ८ तन्ना ।

प्रा० कानना (सं० कर्त्तन, कृत=
लपेटना) क्रि० सं० सूत कातना,
चरखे पर रूई से सूत बनाना ।

सं० कातर (का=थोड़ा, तृ=पार
होना, यहां कु=को का होगयाहै)
गु० कायर, डरपोक, व्याकुल,
घबराया हुआ ।

प्रा० कान्तिक (सं० कार्तिक) पु०
सातवां हिंदी महीना, कार्तिक ।

प्रा० कादर (सं० कातर) गु०

कायर, डरपोक ।

प्रा० कांदा (सं० कर्दम) पु०
कांदों कीचड़, चहला, पंका

प्रा० कान (सं० कर्ण, कृ=करना,
शब्द ज्ञान को) पु० सुनने की
इन्द्रिय, श्रवण, सुनने की राह ।

प्रा० कान गेंठना (बोल० कान
कानअमेठना) खेंचना, ताड़ना
करना, सजा देना ।

प्रा० कान भरना बोल० विरोध डा-
लना, चुगली खाकर भगड़ा
खड़ा करना, बखेड़ा डालना, तोड़
फोड़ करना ।

प्रा० कानपर जून चलना बोल०
बहुत असावधान होना, बहुत
ढीला होना ।

प्रा० कानपर रखना बोल० याद
रखना ।

प्रा० कानपर हाथ धरना बोल०
मुकरना, नहीं करना, न मानना,
ऊंहें करना, न करना ।

प्रा० कान पकड़ना बोल० अपने तई
छोटा मान लेना, अपनी छोटई
अथवा निचाई को मान लेना ।

प्रा० कान फूटना बोल० बहिरा होना ।

प्रा० कान फोड़ना बोल० शोर क-
रना, गुल करना, गुहार करना,
हल्ला करना, हा हू करना ।

प्रा० कान फूंकना बोल० चुगली
खाना, भेद कहना, भगड़ा उठाना,

रमंत्र देना, सिखाना, शिक्षा देना।
 प्रा० कान झुकाना बोल० सुनने को
 चाहना, सुना चाहना।
 प्रा० कान दबाकर चले जाना
 बोल० भागजाना, पलाना,
 रमजाना।
 प्रा० कान धरना बोल० सुनना,
 ध्यान देना।
 प्रा० कान दे सुनना बोल० ध्यान
 देकर सुनना।
 प्रा० कान देना बोल० सुनना, ध्यान
 देना।
 प्रा० कान काटना बोल० बड़ निक-
 लना, बड़ चलना, थकाना, हराना,
 पीछे देना।
 प्रा० कान खड़े होना बोल० चौं-
 कना, डरना, भड़कना।
 प्रा० कान ग्वोल देना बोल० जताना,
 चिताना, सावधान करना, सुचेत
 करना।
 प्रा० कान लगना बोल० भरोसे
 वाला होना, विश्वासी होना।
 प्रा० कान मलना बोल० ताड़ना
 करना, सजा देना, डाटना, कान
 ऐंठना, कान अघेठना।
 प्रा० कान में उँगली दे रहना
 बोल० कान बंद करना, बहिरा
 वनना, सुनी अनसुनी करना।
 प्रा० कान में बात मारना बोल०
 नहीं सुनने का बहाना करना,

कान में तेल डालना।
 प्रा० कान में तेल डालना बोल०
 नहीं सुनने का बहाना करना,
 कान में बात मारना।
 प्रा० कान में तेल डालके सो
 रहना बोल० असावधान होना,
 अचेत होना, बे परवाह होना,
 गाफिल होना।
 प्रा० कान में कहना (बोल० काना-
 कान में डालना) फूँसी करना
 कानाकानी करना, कानाबाती
 करना, कह देना।
 प्रा० कान न हिलाना बोल० चुप
 रहना।
 प्रा० कान हिलाना बोल० राजी
 होना, प्रसन्न होना, हाँ हूँ करना।
 प्रा० कान होने बोल० समझना,
 बूझना, पहुँचना।
 प्रा० कानाबाती करना बोल० कान
 में बात कहना, कानाफूँसी करना,
 कानाकानी करना, खुस फुस
 करना, २ सलाह करना।
 प्रा० कानाफूँसी बोल० कानाबाती,
 कानाकानी, फुसफुसाहट, खुसर
 फुसर।
 प्रा० कानाकानी करना काना-
 बाती करना, कानाफूँसी करना,
 खसफस करना।
 प्रा० कानो कान कहना बोल० काना-
 बाती करना, कानाफूँसी करना।

प्रा० कान स्त्री० लाज, संकोच, मर्यादा, मान, परदा, अदब ।

प्रा० कान करना बोल० शरमाना, लजाना ।

प्रा० कान छोड़ना बोल० वेशरम होना, निर्लज्ज होना, ढीठ होना, गुस्ताख होना ।

प्रा० कान न करना (बोल० ढिठाई कान न मानना) करना, गुस्ताखी करना, अदब नहीं मानना ।

सं० कानन (कन्=चमकना, शोभना, वा क=पानी, अन्=जीना, अर्थात् जो पानी से फलता फूलता है) पु० जंगल, वन, विपिन, २ (क=ब्रह्मा, आनन=मुँह) ब्रह्मा का मुँह ।

प्रा० कानी (सं० काणी) स्त्री० गु० एक आंखवाली स्त्री ।

प्रा० कानीकौड़ी (सं० काणी=कानी, कौड़ी=कपर्द) स्त्री० बोल० ऐसी कौड़ी जिसमें छेद हो, फूटी कौड़ी ।

प्रा० कानी स्त्री० वैर, द्वेष, डाह ।

सं० कान्त (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) पु० स्वामी, भर्ता, पति, कंत, गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, प्रिय, चाहा हुआ ।

सं० कान्ता (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) स्त्री० पत्नी, लुगई, स्त्री, भार्या, घरवाली, प्यारी,

प्रिया, सुन्दरी, २ कान्ति, सुन्दरता ।

सं० कान्ति (कम्=चाहना) स्त्री० शोभा, सुन्दरताई, चमक, दमक, खूबसूरती, दीप्ति, प्रकाश, २ चाह, इच्छा ।

अं० कान्फ्रेन्स सभा, समाज, मजलिस, जलसा ।

सं० कान्यकुब्ज (कन्या=लड़की, कुब्जा=कुवड़ी) पु० कनौजदेश, २ ब्राह्मणों की एकजाति, कनौजिया ।

प्रा० कान्ह (सं० कृष्ण) पु० कान्हूर (श्रीकृष्ण का नाम ।

प्रा० कान्हड़ा पु० एक राशिणी का नाम ।

सं० कापुरुष (का=बुरा, पुरुष=मनुष्य) पु० खोटा मनुष्य, बुरा मनुष्य, २ डरपोक ।

अ० काफ़ी पर्याप्त, अलम् ।

सं० काम (कम्=चाहना) पु० चाह, मत्सद, इच्छा, कामना, मनोरथ, चाही हुई चीज, चाहा हुआ विषय, २ कामदेव, प्यार का देवता, ३ सुख, ४ शहवत ।

प्रा० काम (सं० कर्म) पु० काज, कार्य, धंधा ।

प्रा० कामआना बोल० काम में आना, बरता जाना, २ मारा जाना, लड़ाई में मारा जाना ।

प्रा० काम पूरा करना बोल० काम

सिद्ध करना, काम पार करना,
निवेड़ना, निपटाना, भुगताना,
२ मार डालना, जान से मार
डालना, खपाना ।

प्रा० काम पूरा होना बोल० काम
सिद्ध होना, काम पार होना,
निवेड़ना, निपटना, काम होचुकना,
२ मरना, मारा जाना, मर जाना,
खपना ।

प्रा० काम चलाना बोल० काम
निकालना, काम जारी रखना ।

प्रा० काम में लाना बोल० बरतना,
इस्तश्माल करना ।

प्रा० काम निकालना बोल० काम
चलाना, २ किसी की चाह पूरी
करना ।

प्रा० कामकाज (सं० कर्म +
कार्य) बोल० काम, धंधा, कार-
वार ।

सं० कामकेलि (काम=कामदेव, वा
स्त्रीसंग, केलि=खेल, किल्=
खेलना) स्त्री० रंगरस, दुलार,
प्यार, स्त्रीसंग, रति, मैथुन, सुरत,
स्त्री पुरुष कामिलाप, केलि करना ।

सं० कामद (काम=इच्छा, कामना,
दा=देना) गु० मनोर्वाञ्छित फल
का देनेवाला, चाहेहुए का देनेवाला ।

प्रा० कामद गाई (सं० कामदगो,
कामद=चाहे हुए को देनेवाली,
गो=गाय) स्त्री० कामधेनु ।

सं० कामदेव (काम=इच्छा, वा
प्यार, देव=देवता) पु० प्यार का
देवता, मदन ।

सं० कामधेनु (काम=मनोरथ, धेनु
=गाय) स्त्री० इंद्र की गाय जिससे
जो कुछ मांगो सो देती है, २ गाय
जो बहुत दूध देती हो ।

सं० कामना (कम्=चाहना) स्त्री०
चाहना, चाह, इच्छा, अभिलाष,
वासना, इवाहिश ।

प्रा० कामरि } (सं० कम्बल)
कामरी } स्त्री० लोई, कम्बल ।

सं० कामरूप (काम=इच्छा, रूप
=आकार) गु० चाहे जैसा रूप
वना लेनेवाला, २ सुन्दर, सुहा-
वना, मनोहर, पु० एक देश का
नाम जो आसामका एक भाग है ।

सं० कामरूपी (काम + रूप) गु०
सुन्दर, सुहावना, २ स्वेच्छाचारी,
बहुरूपिया ।

सं० कामातुर } (काम=प्यार, इश्क,
कामार्त्त) आतुर वा आर्त्त=
घबराया हुआ) गु० कामी, मस्त,
काम से पीड़ित ।

सं० कामारि (काम=कामदेव, अरि
=वैरी) पु० महादेव, शिव, २
काम को नाश करनेवाली धातु ।

सं० कामिनी (कामी, कम्=चाहना)
स्त्री० परमसुन्दरी, रमणीक स्त्री,
प्यारी, प्रिया ।

सं० कामी (काम) पु० कामातुर,
कामके वश, शहवतपरस्त ।

सं० कामुक क० कामी, ऐयाश, मस्त ।

सं० काम्य र्म० कम्पीय, सुन्दर ।

सं० काय पु० { (चि=इकट्ठाकरना)

काया स्त्री० } शरीर, देह, तन ।

प्रा० कायफल (सं० कटुफल) पु०
एक दवाई का नाम ।

प्रा० कायर (सं० कातर) गु०
हरपोक, हेठा ।

सं० कायस्थ (काय=शरीर, स्था=
ठहरना अर्थात् जो ब्रह्माके शरीर
से पैदाहुए) पु० कायथ, एक जाति
के मनुष्य=सप्तका धंथा लिखने
पढ़ने का ह; २ (काय=शरीर में,
स्था=ठहरना) ब्रह्म, परमात्मा ।

सं० कायिक (काय) गु० शरीर
का, शारीरिक, काया का, देह
का, देही, शरीरी ।

सं० कारक (कृ=करना) क० पु०
करनेवाला, २ (व्याकरण में)
क्रिया से संबंध करनेवाला जैसे
कर्त्ता कर्म आदि ।

प्रा० कारज (सं० कार्य) पु० कामकाज ।

सं० कारण (कृ=करना) पु० सबब,
हेतु, निमित्त, लिये ।

सं० कारणकरण क० पु० महत्त-
त्वादिका कर्त्ता, पंचतत्त्व से सृष्टि
का करनेवाला ।

सं० कारागार (कारा=दीघग क

=मारना, आगार=स्थान) पु०
कैदखाना, जेलखाना, बंदीखाना,
बंधिगृह ।

सं० कारी (कृ=करना) क० पु० क-
रनेवाला, कर्त्ता ।

सं० कारुणिक (करुणा=दया) क०
पु० दयालु, कृपालु, करुणानिधान,
दयावान् ।

सं० कार्तिक (कृत्तिका एक नक्षत्र
का नाम, इस महीने की पूर्णमासी
के दिन कृत्तिका नक्षत्र होता है
और इस महीने में पूरा चांद इस
नक्षत्र के पास रहता है) पु०
कातिक ।

सं० कार्पण्य { भा० स्त्री० कृपणता,
कार्पण्यता } बखीली ।

सं० कार्य्याधिकारी क० पु० का-
रिन्दा, कारकुन ।

सं० काम्मुक (कृ=करना) पु०
धनुष्, इपुधि ।

सं० कार्य्य (कृ=करना) पु० काम,
काज, कारज, २ प्रयोजन, ३
कारण, हेतु ।

सं० कार्य्यकलाप } काररवाई,
कार्य्यप्रवृत्ति } कारगुजारी ।
कार्य्यवाही }

सं० कार्य्यदक्ष गु० कारगुजार ।

सं० कार्य्यदक्षता भा० स्त्री० कार-
गुजारी ।

सं० कार्य्यनिष्ठ (कार्य्य=काम,

निष्ठ=लगा,स्था=ठहरना)र्ममं काम
में लगा हुआ, काम में मशगूल ।
सं० काल (क=कुत्तिसत,वुरा,अल्=
पाना) गु० काला, कृष्णवर्ण,
असित (कल्=गिनना, बिताना,
वा भ्रंश करना, चलाना)
यमराज, २ मौत, मृत्यु, ३ समय,
ऋतु ।

प्रा० कालविताना } बोल० समय
कालकाटना } विताना, दिन
कालगँवाना } काटना, ब्रू
काटना ।

प्रा० काल (सं० अकाल)पु० महँगी ।

प्रा० काल (सं० काल, काला)
पु० साँप ।

प्रा० काल (सं० कल्य) पु० कल,
कल का दिन (ब्रजभाषा में) ।

सं० कालकूट (काल=मौत,कूट=
ढेर, कूट=ढकना, अर्थात् मौतका
ढेर वा काल=यमराज, कूट=ज-
लाना, जो यम को भी जलासके)
पु० विष, जहर, हलाहल, २
साँप का विष ।

सं० कालक्षेप (काल=समय,क्षिप्
=फेंकना) पु० समय बिताना,
दिन काटना, ब्रू काटना ।

सं० कालनेमि (काल=मौत,नेमि=
पहिये का घेरा) पु० एक राक्षस
का नाम ।

सं० कालरात्रि (काल=मौत वा

अंधेरी, रात्रि=रात) स्त्री० मौतकी
रात, प्रलय की रात, कल्पान्त-
रात्रि, २ दुर्गा का एक नाम, ३
दिवाली, दीपमालिका की रात्रि ।

प्रा० काला (सं० काल) गु०
काला रंग, कृष्णवर्ण, कलोट्रा,
कलझौहा, पु० साँप, २ समय,
३ श्रीकृष्ण का नाम ।

प्रा० कालाचोर बोल० नहीं जाना
हुआ मनुष्य, बेजान पहुँचान का
आदमी, चाहे जैसा आदमी ।

प्रा० काला मुँह करना बोल०
फिटकारना, निकाल देना, हाँकना,
खिखड़ेना, २ बेचाहे करना ।

सं० कालेकोस बोल० बहुत दूर ।

सं० कालिका (काल=काला)
काली } स्त्री० काली देवी,
काली माई, दुर्गा देवी, शक्ति ।

सं० कालिदास (काली=दुर्गा,
दास=सेवक) पु० एक कवि का
नाम जिसके रघुवंश, कुमारसंभव,
नलोदय और शकुन्तलानाटक
आदि बहुत से काव्य प्रसिद्ध हैं ।

सं० कालिन्दी (कलिन्द एक प-
हाड़ का नाम जहाँ से यमुना नदी
निकली, अथवा कलिन्द सूर्य,
अर्थात् सूर्य की बेटी) स्त्री०
यमुना नदी, २ सूर्य की बेटी जो
श्रीकृष्णको व्याही थी ।

सं० कालिन्दीभेदन (कालिन्दी=

यमुना, भेदन=तोड़ना, मोड़ना) पु० श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेव जी जिन्होंने अपने हलसे यमुना को मोड़ली थी ।	सं० काशीराज { काशी=बनारस, काशीनाथ } राजा वा नाथ= स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ काशी का राजा ।
प्रा० कालिमन { गु० कारिख, स्या- कालिमा } ही, कालापन ।	सं० काश्मीर (काश्मीर अर्थात् जो काश्मीर में पैदा हो) पु० केशर ।
प्रा० कालिया { (सं० कालिय, काली } काल=काला) पु० एक साँप का नाम जिसके एक सौ दश फन थे जिसको श्री कृष्ण ने कालीदह से बाहर निकाला ।	सं० काष्ठ (काश्=चमकना) पु० काठ, लकड़ी, ईंधन ।
प्रा० कालीदह (सं० कालियहद, कालिय=साँप, हृद=गहरापानी) पु० यमुना नदी में एक भँवर जिसमें काली साँप रहता था ।	प्रा० काहू गु० सर्वना० किसीको, कोई, कौन, कुछ ।
प्रा० कावादेना बोल० घोड़ेको चकर देना, घोड़ेको गोलाकार घुमाना ।	प्रा० काहे सर्वना० किसलिये, क्यों ।
सं० कावेरी (क=पानी, बेर=शरीर) स्त्री० एक नदी का नाम ।	प्रा० कि समुच्चयक अव्यय, पूर्वोक्त वर्णन, काफ बयानिया ।
सं० काव्य (कवि, अर्थात् कविका) पु० कविता, रचना, छन्द, पद्य, कविका बनाया हुआ ग्रन्थ ।	सं० किंवदन्ती (किम्=कुछ, वद= कहना) स्त्री० लोगों का कहना, गप, अफवाह ।
सं० काश (काश=चमकना) पु० कांस, एक प्रकारकी घास, २ खांसी, खोखी ।	सं० किंशुक (किम्=कुछ, शुक= जाना) पु० पलाश, टेसू, छिउल ।
सं० काशि क० पु० सूर्य ।	प्रा० किकियाना क्रि० अ० चिल्ला- ना, चिचियाना ।
सं० काशी (काश्=चमकना) स्त्री० बनारस, जो वरुणा और असी नदी के मध्य में बसी है ।	सं० किङ्कर (किम्=कुछ, कर=करने वाला, कृ=करना) पु० दास, नौकर, चाकर, सेवक, तावेदार ।
	सं० किङ्किणी (किम्=कुछ, किण =शब्द) स्त्री० कंदोरा, कंधनी, कटिबंधन, क्षुद्रघंटिका, कर्धनी ।
	प्रा० किचकिचाना क्रि० अ० दांत पीसना ।
	प्रा० किचपिच पु० कांदा, कीचड़, पड़्डा
	सं० किश्चित् (किम्=क्या, कुछ)

गुं थोड़ा, कुञ्ज, कुक्षेक, अल्प, कम।
प्रा० किड़किड़ाना क्रि० अ० क्रोध
से दांत पीसना ।

प्रा० कित (सं० कुञ्ज, कहां) क्रि०
वि० कहां, किधर, २ कितना ।

प्रा० कितना गुं किस अंदाज़का,
प्रमाणवाचक ।

प्रा० कितनाही बोल० चाहे जितना ।

प्रा० किदारा (सं० केदार) पु०
एक रागिणी का नाम जो गर्मी में
आधीरातके समय गाई जाती है ।

प्रा० किधर क्रि० वि० किसतरफ, कहां ।

प्रा० किनारी स्त्री० गोटा, कोर ।

सं० किन्तु (किम्=क्या, तु=फिर)
समुच्च० पर, परन्तु, लेकिन ।

सं० किन्नर (किम्=कुञ्ज, अथवा
बुरा, नर=मनुष्य) पु० गन्धर्व,
देवताओं का गवैया, कुबेर के से-
वक जिनके घोड़े का मुँह और
आदमी की धड़ है ।

सं० किम् सर्वना० क्या, कौन, कैसा ।

सं० किम्पुरुष (किम्=कुञ्ज, पुरुष=
मनुष्य) पु० किन्नर, गन्धर्व, देव-
ताओं का गवैया ।

सं० किंवा (किम्=क्या वा अथवा)
समुच्च० अथवा ।

प्रा० कियारी } (सं० केदार, क=
क्यारी } पानी, दृ=फटना)

स्त्री० फूलों का तखता, मेंड़ ।

सं० किरण (कृ=फैलना प्रकाशका)

स्त्री० सूर्य का तेज, चांदका प्रकाश,
रश्मि, शुष्मा ।

सं० किरात (कृ=मारना, हिंसा क-
रना) पु० भील, निषाद, जंगली
मनुष्यों की एक जाति ।

प्रा० किराना (सं० क्रयण, क्री=लेन
देन करना) पु० चीज जो पंसरि
बेचते हैं, मसाला ।

प्रा० किरिया (सं० क्रिया, कृ=
करना) स्त्री० सोंह, सौगंद,
शपथ, कसम ।

सं० किरिट (कृ=विखेरना प्रकाश
का) पु० मुकुट, शिरका गहना,
ताज ।

प्रा० किर्च स्त्री० फांस, खपाच,
तलवार ।

सं० किल क्रि० वि० निश्चयही,
सुनते हैं ।

प्रा० किलकिलाना (सं० किल-
किला, किल्=खेलना) क्रि० अ०
चिड़चिड़ाना, चिड़चिड़ा होना,
गर्जना, गुर्गना ।

प्रा० किलकारी (सं० किलकिला)
स्त्री० चिल्ली मारना, बहुत जोर
से पुकारना, वानर का शब्द ।

सं० किसलय (किम्=कुञ्ज, पल्=
जाना) पु० नये पत्ते, नई डाली,
नवपल्लव ।

सं० किल्बिष पु० अपराध, पाप,
रोग, अनिष्ट ।

सं० किशोर (किम्=कुञ्ज, शूरवीर, अर्थात् इस अवस्था में कुञ्ज कुञ्ज वीरता देखी जाती है) पु० दश बरस से पंद्रह बरस तक की उमर का लड़का, २ जवानी की शुरूआत अवस्था, तरुणावस्था ।

सं० किष्किन्धा (किष्क्=मारना) स्त्री० एक पुरी का नाम जिसका राजा बालि वानर था फिर उस को मारके श्रीरामचन्द्र ने उस पुरी का राज्य सुग्रीव को दिया ।

प्रा० किसनई (सं० कृषि=खेती) स्त्री० किसान का काम, खेती ।

प्रा० किसान (सं० कृपाण वा कृ-पिमान्) पु० खेती करनेवाला, जोतहार ।

प्रा० किसानमात्र महज कारतकार ।

प्रा० किसारी स्त्री० एक प्रकार का नाज जिसकी दाल बनती है, चटरी ।

प्रा० कीकड़ पु० बबूल, कटीला पेड़ ।

सं० कीचिक पु० नाम दैत्य का, २ वेणुगन्ध, अंकुररहित बांस जो वायु लगने से बोलते हैं, बांस बिद्र ।

प्रा० कीच (सं० कचर) पु० कांदा, कीचड़ (पांका, मैला ।

सं० कीट (कीट्=रंग रंग का होना) पु० कीड़ा, पतंग, लखेरी ।

प्रा० कीड़ा (सं० कीट) पु० कीट, पिलुआ ।

सं० कीटक् (गु० कैसा, किस कीटक्ष) प्रकार ।

प्रा० कीना (करना) क्रि० स० कीन्हा (किया ।

सं० कीर (की=पेसा शब्द, ईर्=भेजना) पु० तोता, सूगा, सूआ ।

प्रा० कीरति (कृत्=सराहना)

सं० कीर्त्ति (स्त्री० यश, नामवरी, सराह, सुयश ।

सं० कीर्त्तिन (कृत्=सराहना) भा० पु० गुणवर्णन, यश बखानना, सराह, २ गाना, ३ कहना ।

सं० कील (कील्=बांधना) स्त्री० कीला, खूँटी, कांटा, मेख, खूटा ।

सं० कीलक (कील् + अक) क० पु० खूँटा, बन्धक, गौओं के बांधने का खंभा ।

सं० कीलकाँटा बोल० औजार, साज सामान, कल कांटा ।

प्रा० कीलना (सं० कीलन, कील्=बांधना) क्रि० स० मंत्र फूंकना, बंध करना, साँपको मंत्र से बंध करलेना ।

सं० कीश (कि=हनुमान्, क=हवा अर्थात् हवा का धेरा, और ईश=मालिक अर्थात् जिनका मालिक हनुमान् है) पु० बन्दर, वानर ।

सं० कु उपस० बुरा, अधम, नीच, निंदित, २ कम, थोड़ा, ३ झूठा, (जैसे कृतर्क, झूठी तर्क) ।

सं० कु स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन ।	सं० कुक्कुर (कुक्=लेना वा कुर=
प्रा० कुंगड़ा गु० बलवान्, संड मु-	शब्द करना) पु० कुत्ता, श्वान ।
संड, पहलवान ।	सं० कुक्षि (कुष्=निकालना) स्त्री०
प्रा० कुंचकी (सं० कंचुक, कचि=	पेट, कोख ।
बांधना) स्त्री० चोली, अँगिया,	सं० कुंकुम (कुक्=लेना अथवा लिया
कांचुली ।	जाना) पु० केशर, सुगन्धितद्रव्य-
प्रा० कुंजड़ा पु० एक जाति, जि-	विशेष, २ रोरी ।
सका काम तरकारी और फलफ-	प्रा० कुंकुमा (सं० कुंकुम) पु०
लारी बेचने का है ।	गुलाल रखने का बरतन ।
प्रा० कुंजी (सं० कुंचिका, कुञ्च=	सं० कुच (कुच्=बांधना, वा मि-
टेढ़ा होना वा खींचना, कसना)	लाना) पु० छाती, चूंची, थने,
स्त्री० चाबी, ताली ।	स्तन, पिस्तां ।
प्रा० कुंदी स्त्री० कपड़ों का घोटना ।	सं० कुचन्दन (कु=कम अर्थात् बिन
प्रा० कुंदीकरना बोल० कपड़ों का	सुगन्ध, चन्दन) पु० लालचन्दन,
घोटना, पीटना ।	रक्तचन्दन ।
प्रा० कुंवर (सं० कुमार) पु० बेटा,	सं० कुचकुडमल पु० कुचकली,
लड़का, २ राजा का बेटा, राज-	चूंची की घुंड़ी ।
कुमार, राजपुत्र ।	प्रा० कुचर गु० निंदक, दोष ढूँढ़ने-
प्रा० कुंवरी (सं० कुमारी) स्त्री०	वाला ।
बेटी, लड़की, २ राजा की बेटी,	प्रा० कुचलना कि० स० चूर करना,
राजकन्या, राजपुत्री ।	मसलाना ।
प्रा० कुंबारा (सं० कुमार) पु०	प्रा० कुचला पु० एक जहरीली औ-
अनव्याहलड़का, गु० अनव्याहा ।	पथ का नाम ।
प्रा० कुंवारी (सं० कुमारी) स्त्री०	प्रा० कुचाल (कु=बुरी, चाल=रीति)
अनव्याहीलड़की, गु० अनव्याही ।	स्त्री० कुरीति, बुरा चलन, कुटव,
सं० कुकर्म (कु=बुरा, कर्म=काम)	बुरा चालचलन ।
पु० बुरा काम, अन्याय, पाप,	प्रा० कुचाह स्त्री० बुरी खबर, बद
दुष्कर्म ।	खबर, २ न चहना, स्नेह ।
सं० कुक्कुट (कु=शब्द करना, वा	प्रा० कुचेला गु० मैला, मैले कपड़े
कुक्=लेना) पु० मुर्गा, कुकड़ा ।	पहने हुए ।

प्रा० कुल (सं० किञ्चित्=थोड़ा)

गु० थोड़ा, कम, कुछ, एक आध,
जो कुछ, थोड़ा बहुत ।

प्रा० कुल और गाना बोल० भूठी
बात बनाना, २ औरही बात कहना ।

प्रा० कुल्लेक बोल० थोड़ा बहुत, कुछ
कुल्ले, कुछ ।

प्रा० कुल्लेसे कुल्ले होना } बोल०
कुल्लेका कुल्ले होना } बिलकुल
बदल जाना, सबका सब बदल
जाना ।

प्रा० कुल्लेकुल्ले बोल० थोड़ासा,
कुल्लेक, थोड़ाएक, थोड़ाबहुत, कुछ ।

प्रा० कुल्ले न कुल्ले बोल० थोड़ा
बहुत, थोड़ासा ।

प्रा० कुल्ले नहीं बोल० कोई और
चीज नहीं, कुछ और नहीं, २
निकम्मा, काम का नहीं ।

प्रा० कुल्लेहो बोल० चाहे सो हो,
जो कुछ हो ।

सं० कुज (कु=पृथ्वी, जन्=पैदा
होना) क० पु० पृथ्वीपुत्र, मंगल,
भौम, सेशम्बा ।

प्रा० कुजलीबन } (सं० कुञ्जरवन,
कजलीबन } कुञ्जर=हाथी,
वन=जंगल) पु० हाथियों का वन,
जिस जंगल में हाथी बहुत हों ।

सं० कुजाति (कु=बुरी, जाति=जात)
गु० नीचजातिका, कमीना, नीच,
अधम ।

सं० कुञ्जित (कुञ्च्=टेढ़ा होना)

र्म० टेढ़ा, सिमटा हुआ, घुँघराला ।

सं० कुञ्ज (कु=धरती, जन्=पैदा
होना) पु० वह जगह जहां सघन
पेड़ और बेली आदि हों, गुंजान,
२ हाथी की टुड्डी ।

सं० कुञ्जर (कुञ्ज=हाथी की टुड्डी
वा कुञ्ज=सघन वृक्षों की जगह,
रा=लेना, अर्थात् जो कुञ्जमें रहता
है) पु० हाथी, हस्ती, मतंग ।

प्रा० कुटकी (सं० कटुका, कटु=क-
ट्टा) स्त्री० एक दवाई का नाम ।

प्रा० कुटकी स्त्री० एक प्रकार का
मच्छर, एक जानवर का नाम ।

सं० कुटज (कुट=पहाड़, जन्=पैदा
होना) पु० एक दवाई व कुरैया
का नाम ।

प्रा० कुटनी (सं० कुटनी, कुट=का-
टना, निंदा करना) स्त्री० दूती,
पराई स्त्री को पराये पुरुष से मि-
लानेवाली, दलाला !

सं० कुटिल (कुट्=टेढ़ा होना) क०
पु० टेढ़ा, कपटी, खोटा, कड़ा,
क्रूर, मगरा ।

सं० कुटी (कुट्=टेढ़ा होना) स्त्री०
कुटीर } भोपड़ी, मढ़ी ।

प्रा० कुटुम (सं० कुटुम्ब, कुटुम्ब=कुल
का पालन करना) पु० कुनवा, परि-
वार, घराना, कुल, खानदान ।

सं० कुटुम्बी (कुटुम्ब) पु० घरवाला,

घरवारी, गृहस्थ, खानदानी ।
 प्रा० कुटेव (सं० कु=बुरी, हिं० टेव=स्वभाव) स्त्री० कुचाल, बुराचलन ।
 सं० कुठार (कुठ=वृक्ष, कुट्=काटना और ऋ=जाना, अर्थात् जो वृक्षों पर काटने के लिये चलाया जाता है) पु० कुलहाड़ी, बसूला, टांगी ।
 प्रा० कुठाहर (सं० कुस्थान, कु=बुरी, स्थान=जगह) स्त्री० बुरी जगह ।
 प्रा० कुड़कना क्रि० अ० कुड़कुड़ाना, कुटकुटाना, कड़कड़ाना, २ क्रोधसे बोलना ।
 सं० कुड़व पु० प्रस्थ का चौथाभाग, चारपल, आधपाव ।
 प्रा० कुड़ना (सं० कुभ्=क्रोध करना) क्रि० अ० कलपना, दुख करना, शोच करना, २ गुस्सा करना, क्रोध करना, ३ जलना, दूसरे की बढ़ती देखकर मनमें दुख करना ।
 सं० कुण्डक (कुण्ड्+अक) क० पु० मूर्ख, मन्द, जाहिल, रुठनेवाला ।
 सं० कुण्डित (कुण्ड्=भोथा होना, वा सुस्त होना) क० पु० भोथा, २ आलसी, ३ लज्जित, खफाहुआ ।
 सं० कुण्ड (कुडि=जलाना, वा वचाना) पु० जल के रहनेकी जगह, होज, चश्मा, २ होम की आग रखने का गड़हा, होम का कुण्ड ।
 सं० कुण्डल (कुडि=वचाना, वा जलाना) पु० कानमें पहननेका ग-

हना, कर्णभूषण, २ घेरा, मंडल ।
 प्रा० कुंडलिया (सं० कुण्डलिका) पु० एक छंद का नाम १४४ मात्रा का छन्द ।
 सं० कुण्डली (कुण्डल घेरा) स्त्री० घेरा, २ सांप, ३ जन्मपत्री, ज्ञायचह ।
 प्रा० कुण्डी (सं० कुण्ड्=वचाना) स्त्री० दरवाजे की सिकली या जंजीर ।
 प्रा० कुनरना (सं० कर्त्तन, कृत्=काटना) क्रि० स० दाँतोंसे काटना ।
 सं० कुतर्क (कु=बुरी, वा झूठी, तर्क=दलील) स्त्री० बुरी तर्क, झूठी तर्क, हुज्जत ।
 सं० कुतूहल (कुतू=कुत्पा, हल्=लिखना, अर्थात् कुछ खेल करना) पु० खेल, कौतुक ।
 प्रा० कुत्ता (सं० कुकुर) पु० एक जानवर का नाम, श्वान ।
 सं० कुत्सा (कुत्स=निंदा करना) भा० स्त्री० निंदा, बुराई, अवज्ञा, अपमान ।
 सं० कुत्सित (कुत्स=निंदा करना) र्मम० निंदित, नीच, बुराई करने योग्य, नीचा, कमीना ।
 प्रा० कुदार { (सं० कुट्टाल, कु=कुदाल } धरती, उद्=दल, दु-कड़ा करना) स्त्री० मिट्टी खोदने का औजार, कुदाली, बेल, बेलचा ।
 सं० कुट्टाष्टि (कु=बुरी, पापकी, दृष्टि=दीठ) स्त्री० बुरी दीठ, पापदृष्टि,

पांप से देखना, बदनजर, बुरी निगाह ।

सं० कुधर (कु=धरती, धृ=रखना)
कुधर { पु० पहाड़, पर्वत, शैल ।

सं० कुधातु (कु=बुरी, अथवा सब से नीच, धातु=धात) स्त्री० लोहा, लोह ।

प्रा० कुनवा (सं० कुटुम्ब) पु० घराना, कुटुम्ब, कुल, खानदान ।

सं० कुनारी (कु=बुरी, नारी=स्त्री) स्त्री० दुष्टनारी, खराब औरत ।

सं० कुनीति (कु=बुरी, नीति=चान) स्त्री० कुचाल, बुरी चाल, कुरीति ।

सं० कुन्त (कु=बुरा, अन्त=आखिर) पु० बरखी, भाला ।

सं० कुन्ती (कम्=चाहना) स्त्री० शूरसेन की बड़ी बेटी, श्रीकृष्ण की फूफी, पांडु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीमसेन की मां ।

सं० कुन्ड (कु=धरती, दो=काटना, वा दै=शुद्ध करना, वा क=पानी, उन्ड=भिगोना अर्थात् जो पानी से सींचा जाता है) पु० सोगरा, एक तरह का सफेद फूल ।

प्रा० कुन्दन पु० अच्छा सोना, सारु सोना, उत्तम सोना ।

सं० कुपथ (कु=बुरा, पथ=रास्ता) पु० कुमार्ग, बुरी राह, बुरारास्ता, कुपंथ, २ बुराई, बुरा चलन ।

सं० कवात्र (क=बरा, पात्र=दान

देने योग्य ब्राह्मण, वा बरतन) गु० अयोग्य, नालायक ।

सं० कुपित (कुप्=कोपना) गु० क्रोधित, कोपित ।

सं० कुपुरुष (कु=बुरा, पुरुष=मनुष्य) गु० बंद आदमी, निषिद्ध मनुष्य ।

प्रा० कुप्पा (सं० कुत, कु=बुरी तरह से, तन्=फैलाना) पु० घी अथवा तेल रखने वा चमड़े का बरतन ।

प्रा० कुप्पा होना बोल० बहुत मोटा होना ।

सं० कुफल (कु=खराब, फल=नतीजा) गु० खराब नतीजा, बुरा फल ।

प्रा० कुब (सं० कौब्ज, कुब्ज) कुब { पु० कुबड़, पीठ का झुकाव ।

प्रा० कुब्जां (सं० कुब्ज, कु=बुरी तरह से अथवा थोड़ा, उब्ज=सीधा होना) स्त्री० कुबड़ी कुबड़ा, टेढ़ी पीठका, जिसकी पीठ झुकी हुई हो, २ स्त्री० कंस की एक दासी का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने सीधी की थी ।

सं० कुभार्या (कु=बुरी, भार्या=पत्नी) स्त्री० बुरी लुगई, कल-हिनी, लड़ाका स्त्री, कुलटा ।

सं० कुमति (कु=बुरी, मति=बुद्धि) स्त्री० बुरी समझ, कमत, २ ग०

पूर्व, दुर्बुद्धि, कुबुद्धि ।

सं० कुमार (कुमार=खेलना, वा कु
=बुरा अथवा थोड़ा, मार=काम-
देव) पु० कुंवर, कुमार, बालक,
विम्व्याहा, कुंवारा ।

सं० कुमार्ग (कु=बुरा, मार्ग=रास्ता)
पु० कुपथ, बुरी राह, कुचाल ।

सं० कुमार्गगामी (कुमार्ग=बुरी
मार्ग, गम् + ई, गम्=जाना) क०
पु० बुरीराह चलनेवाला, बदराह
चलनेवाला ।

सं० कुमुद (कु=धरती, मुद्=प्रसन्न
होना या करना) पु० कुमोदनी,
कोई, धौला कमल जो रात को
खिलता है और दिन को मुंद
जाता है, २ एक वानर का नाम ।

सं० कुमुदबन्धु पु० चन्द्र, चांद ।

सं० कुमुदिनी (कुमुद) स्त्री० कम-
लिनी, २ कमलों का समूह, ३
वह जगह जहाँ कमल पैदा हो ।

सं० कुम्भ (कु=पृथ्वी, उम्भ=भ-
रना, वा क=पानी, उम्भ=भरना,
वा कुम्भ=ढकना) पु० घड़ा, कलश,
कलसा, २ हाथी का शिर, ३ ज्यो-
तिष में ग्यारहवीं राशि-कुम्भ का
मेला=मेला जो हरिद्वार में बारहवें
दरस होता है, कुम्भी=मेला जो
छठे वरस होता है ।

सं० कुम्भकर्ण (कुम्भ=हाथी का
शिर वा घड़ा, कर्ण=कान, जिसके

कान हाथी के शिर के बराबर हों)
पु० रावण का भाई ।

सं० कुम्भकार (कुम्भ=घड़ा, कार=
करनेवाला) पु० कुम्हार, कुलाल ।

सं० कुम्भज (कुम्भ=घड़ा, जन्=पैदा
होना) पु० अगस्ति ऋषिका नाम ।

सं० कुम्भशाला स्त्री० घड़ा रखने
की जगह, घनौची ।

सं० कुम्भसंभव (भू=होना) पु०
अगस्ति ऋषि, वशिष्ठ ऋषि, द्रोणा-
चार्य, ये मित्रावरुण के पुत्र हैं ।

सं० कुम्भिका (कुम्भ=ढकना)
कुम्भी स्त्री० एक वृक्षका
नाम ।

सं० कुम्भीपाक (कुम्भी=तेल का
कड़ाह, पाक=पचाना) पु० एक
नरक का नाम, जहाँ पापी गर्भ
तेल के कड़ाहों में डाले जाते हैं ।

सं० कुम्भीर (कुम्भिन्=हाथी, ईर्
=पीड़ा देना) पु० मगरमच्छ,
घड़ियाल, ग्राह ।

प्रा० कुम्हार (सं० कुम्भकार) पु०
मिट्टी के बरतन बनानेवाला, कुलाल ।

सं० कुयोग (कु=बुरा, योग=मेल)
पु० कुसंगत, बुरी संगत, बुरा
संयोग ।

सं० कुर पु० शब्द, आवाज, शब्द-
कर्त्ता, राजा, जमींदार, किसान ।

सं० कुररी स्त्री० चील्ह, भेड़ी ।

सं० कुरंग (कु० पृथ्वी, रज्जु=खुशी

करना) पु० हिरन, मृग ।
 प्रा० कुरी पु० सबलोग, सबजाति,
 जाति, कुल ।
 सं० कुरीर (कुर + ईर, कुर = बोलना)
 जिम्मा, मारफ्त ।
 सं० कुरीति (कु = बुरी, रीति = चाल)
 पु० कुचाल, कुदेव, बुरीचाल ।
 सं० कुरु (कृ = करना) पु० दिल्ली के
 एक पुराने राजा का नाम ।
 सं० कुरुक्षेत्र (कुरु = एक राजा का
 नाम, क्षेत्र = जगह, वा कुरु = पाप,
 कु = बुरी तरह से, रु = रोना, क्षेत्र =
 जगह, अर्थात् पाप को दूर करने
 वाली जगह) पु० दिल्ली के पास
 एक जगह है जहां कौरवों और
 पाण्डवों में लड़ाई हुई थी ।
 सं० कुरूप (कु = बुरा, रूप = स्वरूप)
 गु० भोंड़ा, कुडौल, भदेसा, बुरी
 सूरत का ।
 प्रा० कुर्मी पु० एक जाति का नाम
 जो खेती का धन्धा करते हैं ।
 प्रा० कुर्याल स्त्री० पखेरूके चैन और
 बचाव से बैठने की दशा, कि जब
 वह चोंचसे अपने पंखोंको सँवारता
 है, (इसीसे) २ चैन, सुख,
 आराम, बचाव ।
 प्रा० कुर्याल में गुलेला लगना
 बोल० निराश होना, अथवा चैन
 के समय दुख में गिरना ।
 प्रा० कुरी स्त्री० चबनी, नरमहड़ी ।

सं० कुल (कुल = इकट्ठा होना, वा
 बांधना) पु० वंश, घराना, कुनवा,
 जाति, वर्ण ।
 सं० कुलघाती (कुल = वंश, हन् =
 नाश करना, ह का घ होजाता
 है) क० पु० कुलनाशक ।
 सं० कुलतारण (कुल = वंश, तारण =
 पार करनेवाला) पु० कुल को
 बचानेवाला लड़का, सपूत लड़का,
 गुणवान् लड़का जिससे कुल
 शोभता है ।
 सं० कुलद्रोही (कुल = वंश, द्रोही =
 विरोधी) गु० कुलका नाश करने
 वाला, बुरे काम करने से अपने
 कुलकी निन्दा करानेवाला ।
 सं० कुलधर्म (कुल = वंश, धर्म =
 मत) पु० अपने वंशका धर्म, कुल-
 व्यवहार, कुलकी चाल ।
 सं० कुलपालक (कुल = वंश, पाल =
 पालना) क० पु० कुटुम्बपोषक,
 खानदानपरवर ।
 सं० कुलपूज्य (कुल = वंश, पूज्य =
 पूजने योग्य) गु० सब घराने का
 पूजनीय, २ कुलदेवता, ३ अपने
 घराने का पुरोहित ।
 प्रा० कुलबुलाना क्रि० अ० खुज-
 लाना, २ कलमलाना ।
 सं० कुलवन्ती (कुल = घराना, वन्ती
 = वाली) स्त्री० अच्छे घराने की
 स्त्री, पतिव्रता, सती, सुशीला ।

सं० कुलवान् (कुल=घराना, वान्=वाला) गु० अच्छे घराने का, कुलीन, श्रेष्ठ ।

सं० कुलक्षण (कु=बुरा, लक्षण=चिह्न) पु० बुरा चलन, कुस्वभाव, कुचाल ।

प्रा० कुलांचस्त्री० कूद, फांद, उछाल, लपक, छलांग ।

प्रा० कुलांचमारना बोल० छलांग मारना, फांदना ।

प्रा० कुम्हलाना क्रि० अ० मुरझाना, सूखना ।

फ्रा० कुलह { टोपी, ऊंचीटोपी ।
कुलाह }

सं० कुलाचार (कुल=घराना, आचार=चलन, वा धर्म) पु० कुलधर्म, कुलव्यवहार, खानदानी रस्म ।

सं० कुलाल (कुल्=इकट्ठा करना) पु० कुम्हार, मिट्टी के बरतन बानेवाला, कुम्भकार ।

प्रा० कुल्हिया स्त्री० कुलहड़ी, मिट्टी का एक छोटा गोल बरतन ।

प्रा० कुल्हिया में गुड़ फोड़ना बोल० किसी काम को छुपे २ करना, जो काम बहुतों से होता है उसको थोड़े आदमियों के साथ करने के लिये परिश्रम करना ।

प्रा० कुल्हाड़ी (सं० कुठारी) स्त्री० बसूला, कुल्हाड़ी ।

सं० कुलिश (कु=बुरी तरह से, लिश=थोड़ा करना, वा कुलित=पहाड़, शी=नाश करना, वा कुलि=हाथ, शी=सोना) पु० वज्र, इन्द्रका शस्त्र ।

सं० कुलीन (कुल) गु० कुलवान्, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ, शरीफ ।

सं० कुवलय (कु=धरती, वलय=कंकण) पु० कमल, कोई, सफेद या नीला कमल, नीलोफर ।

सं० कुवलयपीड (कुवलय=कोकावेली आपीड=मर्दनेवाला) पु० कंस के हार्थ का नाम जिसमें १०००० हाथियों का बल था जिसको श्रीकृष्णने मारा

सं० कुविहङ्ग (कु=बुरा, विहम्=आकाश, गम्=जाना) पु० बाज, जुर्रा, शाहीन ।

सं० कुबेर (कुब्=फैलाना अपने धन को, वा कु=१२वीं, वृ=ढकना, अपने धन से, वा कु=बुरा, वेर=शरीर) पु० धन का देवता, यक्षों का राजा, उत्तर दिशाका दिक्पाल ।

सं० कुश (कु=पृथ्वी, शी=सोना, वा कु=पाप, शो=नाश करना, वा कुश=मिलना) पु० एक प्रकारकी घास, दर्भ, डाभ, कुशा, २ रामचन्द्र का वेटा ।

सं० कुशल (कुश=मिलना, वा कु=पृथ्वी, शल्=जाना) पु० कल्याण, मंगल, चैन चान, गु० चतुर ।

सं० कुशलक्षेम (कुशल+क्षेम)

पु० कुशल मंगल, चैनचान ।
 प्रा० कुशलात { (सं० कुशल) स्त्री०
 कुसरान } कुशल क्षेम, चैन
 चान, अमन अमान ।
 सं० कुशाग्रबुद्धि (कुश + अग्र +
 बुद्धि) स्त्री० तेजःअकल, पैनीबुद्धि,
 तीव्रबुद्धि ।
 सं० कुशूला पु० डहरी, कुठिली ।
 सं० कुष्ठ (कुप्=निकालना) पु०
 कोढ़, एक प्रकार का रोग जो
 अठारह प्रकार का है, उनमें से
 सात तरह का तो बड़ा कठोर
 और दुःखदायी होता है, और ??
 तरह का हलका और थोड़ा दुःख
 देता है ।
 सं० कुष्ठनाशिनी (कुष्ठ=कोढ़, ना-
 शिनी=नाश करनेवाली) स्त्री०
 एक बेली का नाम, सोमराज बेली ।
 सं० कुष्ठी (कुष्ठ) पु० कोढ़ी ।
 सं० कुष्माण्ड { (कु=थोड़ी, उष्मा
 कूष्माण्ड } =गरमी, अण्ड=
 बीज, अर्थात् जिसके बीच में
 थोड़ी गरमी है) पु० कोहड़े का
 फल ।
 सं० कुसंग (कु=बुरा, सङ्ग=साथ)
 पु० बुरी संगति, बुरों का साथ,
 बंद सोहबत ।
 सं० कुसुम (कुस्=मिलना, वा
 कु=पृथ्वी, स्मि=खिलना) पु०
 फूल, २ लाल फूल जिससे कपड़े

लाल रंगे जाते हैं ।
 सं० कुसुमशर (कुसुम=फूल, शर
 =चाण) पु० कामदेव ।
 सं० कुसुमिन (कुसुम) पु० खिला
 हुआ, फूलाहुआ, प्रफुल्लित ।
 सं० कुसुम्भ (कुस्=मिलना, वा
 कु=पृथ्वी, शुम्भ=चमकता) पु०
 कुसुम, लाल फूल जिससे कपड़े
 लाल रंगे जाते हैं, स्वर्ण, सोना ।
 प्रा० कुसुम्भा (सं० कुसुम्भ) पु०
 कुसुमका रंग, २ छानी हुई भंग ।
 सं० कुस्वप्न (कु=बुरा, स्वप्न=सपना)
 पु० बुरा सपना ।
 सं० कुहक (कुह + अक, कुह=आ-
 श्चर्य) क० पु० कुठिल, फरेबी, खली,
 मायावी, इन्द्रजाली, वार्जागर ।
 प्रा० कुहड़ { (सं० कूष्माण्ड) पु०
 कुम्हड़ } कोहड़े का फल ।
 प्रा० कुहराम पु० धिलाप, रोना,
 कलपना ।
 प्रा० कुहाव भा० स्त्री० रुठना, रुठ
 जाना ।
 प्रा० कुहासा (सं० कुहेलिका, कु
 =धरती, हेड=घेरना) पु० कुहर,
 कोहर, धूँध ।
 प्रा० कुहुक { (कुह=अचंभा करना)
 सं० कुहू } स्त्री० कोयलकी बोली ।
 प्रा० कुआँ { (सं० कूप) पु० कुवा,
 कुआ } इन्दारा ।
 प्रा० कूंची (सं० कूची, कू=शब्द

करना) स्त्री० भाड़ने की चीज,
पोचारा देनेकी बढनी ।
प्रा० कूंडी स्त्री० भांग आदि पीसने
का बरतन, लोहे की टोपी ।
प्रा० कूंतना (क्रि० स० मोलतहर-
कूतना) ना, मोल जांचना,
मोल अटकलना ।
प्रा० कूकना (सं० कू=शब्द करना)
क्रि० अ० चिल्लाना, बोलना,
कुहकुह करना ।
प्रा० कूकर (सं० कुक्कुर) पु० कुत्ता ।
प्रा० कूजना (सं० कूजन, कूज्=शब्द
करना) क्रि० अ० शब्द करना,
बोलना ।
सं० कूट (कूट्=जलना, वा ढकना)
पु० पहाड़ की चोटी, २ ढेर, ३
छल, कपट, भ्रूट ।
प्रा० कूट पु० गला हुआ कागज
जो दफती बनाने के काम में
आता है, २ स्त्री० नकल, भईंती,
बंदरवाजी ।
प्रा० कूटना (सं० कुटन, कुट्=
काटना) क्रि० स० ठुकड़े २
करना, चूरना, कुचलना, तोड़ना,
२ पीटना, मारना, लठियाना ।
प्रा० कूड़ा पु० भाड़न, बुहारन,
कर्कट, घास पात, अगड़ बगड़,
घास फूस, कचरा ।
प्रा० कूडि स्त्री० लोहे की टोपी ।
प्रा० कूड़ पु० मूर्ख, मूढ़, भोंदू, गँवार ।

प्रा० कूदना (सं० कूर्दन, कूर्द=
कुदकना) खेलना) क्रि० अ०
उछलना, फांदना, २ प्रसन्न
होना, खुश होना ।
सं० कूप कू=शब्द करना, जिसमें
मेढ़क शब्द करते हैं, वा कु=
थोड़ा, आप=पानी (जिसमें)
पु० कूवा, कूआं, इंदारा ।
प्रा० कूर (सं० क्रूर) गु० नितुर,
निर्दयी, कठोर, २ मूर्ख, भोंदू, गँवार,
कूड़ ।
सं० कूर्म (कु=बुरा वा थोड़ा, उर्मि=
वेग जिसका) पु० कलुवा, कच्छप,
कमठ ।
सं० कूल (कूल्=घेरना, ढकना, वा
रोकना) पु० तीर, तट, किनारा ।
सं० कूलद्रुम, पु० तटस्थवृक्ष, नदीके
किनारे के वृक्ष ।
प्रा० कूला पु० पूठ, चूतड़, नितम्ब ।
प्रा० कूली (पु० मजदूर, बोझा ढोने
कुली) वाला, पोटिया, मोटिया ।
सं० कृच्छ्र भा० पु० कठिनता, सख्ती ।
सं० कृत (कृ=करना) र्म्य० किया
हुआ, बनाया हुआ, रचित, पु०
सतयुग, २ फल ।
सं० कृतकार्य्य (कृत=किया,
कार्य्य=काम) र्म्य० पु० फलीभूत,
कामयाव, काम पूरा हुआ ।
सं० कृतकार्य्यता भा० स्त्री० काम-
यात्री, काम की पूर्णता ।

सं० कृतकृत्य (कृत=किया, कृत्य=करने योग्य, कृ=करना) र्म० पु० योग्य काम को जिसने किया हो, कृतार्थ, कृतकार्य, धन्य ।

सं० कृतघ्न } (कृत=किया हुआ, प्रा० कृतघ्नी } हन्=मारना) क० पु० जो उपकार को नहीं माने, गुण नहीं माननेवाला, नमकहराम, नाशुकरा, इहसानफरामोश ।

सं० कृतघ्नता भा० स्त्री० इहसान-फरामोशी, उपकारहन ।

सं० कृतज्ञ (कृत=किया हुआ, ज्ञा=जानना) क० पु० जो उपकार को माने, गुण माननेवाला, उपकार माननेवाला, नमकहलाल ।

सं० कृतविद्य (कृत=किया हुआ, विद्=जानना) र्म० पु० मशकूर, धन्यवादित, शास्त्रज्ञ, अधीतविद्या ।

सं० कृतवीर्य पु० पिता, नृपविशेष ।

सं० कृतान्त (कृत=किया, अन्त अर्थात् नाश करनेवाला) पु० यम, काल, मौत ।

सं० कृतार्थ (कृत=किया, अर्थ=प्रयोजन) र्म० पु० जिसने अपना प्रयोजन पूरा किया हो, जिसकी इच्छा पूरी होगई हो, कामयाब, संतुष्ट ।

सं० कृति (कृ=करना) स्त्री० कार्य, काम, हिंसा, आचरण, उपकार, कारण ।

सं० कृत्ति स्त्री० चर्म, चमड़ा, भोजपत्र, कृत्तिका नक्षत्र, चमड़े की रस्सी ।

सं० कृत्तिकर (कृत्ति=काम, कृ=करना) क० पु० सेवक, किंकर, उपकारी ।

सं० कृत्तिका (कृत्=काटना) स्त्री० तीसरे नक्षत्र का नाम ।

सं० कृतिन } क० स्त्री० पण्डित, कृती } योग्य, लायक, पुण्यवान्, निपुण, साधु, कृतार्थ ।

सं० कृत्य (कृ=करना) पु० काम करने योग्य काम, कर्तव्य कर्म, र्म० करने योग्य, कर्तव्य ।

सं० कृत्रिम (कृ=करना) र्म० पु० किया हुआ, बनाया हुआ, बना-वट का, कल्पित, जो असली न हो, मसनुई ।

सं० कृत्रिमपुत्र (कृत्रिम=किया हुआ, पुत्र=बेटा) पु० गोद लिया हुआ लड़का, धर्मशास्त्र में बारह प्रकार के पुत्र गिनाये हैं उनमें से एक प्रकार का बेटा ।

सं० कृत्स गु० मध्यगत, आवृत, ढका हुआ, जलान्तर्गत, ढबा हुआ, पु० संपूर्ण, जल, गंडूष अर्थात् कुल्ला ।

सं० कृत्स पु० सम्पूर्ण, सब, जल, कुक्षि, पुट्टा, कूला, समग्र ।

सं० कृपण (कृप=दुबला होना) पु० कंजूस, सूम, चुष्ट, बखील ।

सं० कृपणता भा० स्त्री० चुष्टता,
कंजूसी, बखीली ।

सं० कृपा (कृप्=कृपा करना) स्त्री०
दया, अनुग्रह, मिहरबानी ।

सं० कृपाण (कृप्=समर्थ होना, वा
कृपा=दया, नुद्=जाना) स्त्री० तल-
वार, खड्ग, खाड़ा, शमशेर ।

सं० कृपानिधान (कृपा=दया, नि-
धान=जगह) धि० पु० कृपा के
घर, दयालु, कृपालु, कृपा करने
वाला, जायमिहरबानी ।

सं० कृमि (क्रम्=जाना) पु०
किमि) कीड़ा, पतंगा, मकोड़ा,
परवाना ।

अं० कृमिनल फाँजदारी ।

सं० कृश (कृश्=पतला होना) गु०
दुबला, पतला, दुर्बल, क्षीण,
लागर, नकीह ।

सं० कृशाक्षी (कृश्=मन्द, अक्षि=
आंख) गु० मन्ददृष्टि, कोताहनजर ।

सं० कृशानु (कृश=पतला करना)
पु० आग, अग्नि, आगी, अनल ।

सं० कृषक (कृप्=हल जोतना)
कृषाण (पु० किसान, हल जो-
तनेवाला ।

सं० कृषि (कृप्=हल जोतना) स्त्री०
खेती, २ धरती ।

सं० कृषिकर्म पु० खेती, काश्तकारी ।

सं० कृषिकारक (कृषि + कारक)
क० पु० किसान, काश्तकार ।

सं० कृष्ण (कृप्=खेंचना, वा काला
रंग होना) गु० काला, अंधेरा,
पु० विष्णु का आठवां अवतार,
वासुदेव, देवकीनंदन । “ कृपिर्भू-
वाचकः शब्दः एतच्च निर्वृत्तिवाच-
कः । तयोरैक्यं परब्रह्म कृष्ण इत्य-
भिधीयते ” वायस, कौवा, कलियुग,
कोकिल ।

सं० कृष्णपक्ष (कृष्ण=अंधेरा, वा
काला, पक्ष=पख) पु० अन्धेरा
पख, बदि ।

सं० कृष्णमय (कृष्ण=श्रीकृष्ण, मय
=रूप वा मिलाहुआ) गु० कृष्ण
के ध्यान में लगा हुआ, श्रीकृष्णरूप ।

सं० क्लृप्त (कृप्=कल्पना करना)
पु० नियमित, बाकायदा ।

सं० कृष्णसार पु० काला मृग ।

प्रा० केंचुवा (सं० किंचुलुक, किम्
=कुञ्ज, चुलुम्प=हिलाना, वा का-
टना) पु० जमीन का कीड़ा, एक
मकार का कीड़ा ।

प्रा० केकड़ा (सं० कर्कट) पु० गें-
गटा, एक जानवर का नाम ।

सं० केकयी (केकय एक राजा का
कैकयी नाम) स्त्री० केकयराजा
कैकेयी की बेटी, राजा दशरथ
की स्त्री, और भरत की मा ।

सं० केकी (केका=मोर की बोली)
पु० मोर, मयूर ।

प्रा० केतकी (सं० केतक, किन्=

रहना) स्त्री० एक फूल का नाम ।
 प्रा० केता (सं० कति) क्रि० वि०
 कितना, कित्ता ।
 प्रा० केतिक (सं० कति) गु० थोड़े,
 दोचार,अल्प,कितना, कितनाही ।
 सं० केतन धि० पु० गृह, २ ध्वजा,
 ३ निमंत्रण, ४ आलस, ५ क्रीड़ा,
 ६ कोड़ा, ७ काम, ८ चिह्न ।
 सं० केतु (चाय्=पूजना, वा कित्=
 जानना) पु० नवां ग्रह, २ भंडा,
 ध्वजा, पताका, ३ पूंछल तारा,
 धूमकेतु ।
 सं० केन्द्र पु० जहां से पृथ्वी का
 नाप होता है और वे दो हैं ?
 उत्तर केन्द्र, दक्षिण केन्द्र, २ वृत्त
 का बीच, मर्कज ।
 सं० केयूर पु० अंगद, बहूँटा, वि-
 जायट ।
 सं० केरल पु० मालवादेश, २ ग्रंथ,
 स्त्री० ३ नवीनविद्या, देशविद्या,
 देश का इल्म ।
 प्रा० केला (सं० कदली) पु० एक पेड़
 का अथवा उसके फल का नाम ।
 सं० केलि (केल्=हिलना, वा किल्=
 खेलना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार ।
 प्रा० केवड़ा (सं० केतक) पु० एक
 केओड़ा) फूल का नाम ।
 प्रा० केवट (सं० कैवर्त्त) पु० धीवर,
 मझवा, मल्लाह, नाव चलानेवाला ।
 सं० केवल (केव्=सेवाकरना) गु०

एकही, निराला, अकेला, मुख्य,
 खास ।
 प्रा० केवाड़ (सं० कपाट) पु०
 किंवाड़) किंवाड़ी, दरवाजा ।
 प्रा० केवान पु० कैवल, कमल ।
 सं० केश (क्लिश्=दुःख देना, वा रो-
 कना, वा क=शिर, ईश=मालिक,
 वा क=शिर, शी=सोना) पु०
 बाल, रोम, लोम, कच ।
 सं० केशर (के=पानी में, अथवा शिर
 पर, शृ=फूटना, वा विकसना,
 वा फैलना) पु० कुंकुम, जाकरान,
 एक सुगंधित चीज, २ सिंह की
 गरदन पर के बाल ।
 सं० केशरी (केशर) पु० सिंह, मृग-
 राज, शेर, हनुमान् के वापका नाम ।
 सं० केशव (के=पानी में, शी=सोना,
 वा केश, बाल, वन्त=वाला) पु०
 श्रीकृष्ण, विष्णु ।
 सं० केशी (केश) पु० एक राक्षस
 का नाम जिसको कंसने श्रीकृष्ण
 के मारने के लिये भेजा था उसको
 श्रीकृष्ण ने मारा, गु० अच्छे बालों
 वाला, जिसके अच्छे और बहुत
 बाल हों ।
 सं० केसर (के=पानी, सृ=जाना)
 स्त्री० केशर, कुंकुम, नागकेशर, जा-
 करान ।
 प्रा० केसरिया (सं० केसर) गु०
 केसर में रँगा हुआ, पीला ।

प्रा० केहरी (सं० केशरी) पु० सिंह,
मृगराज, शेर, एक बंदर का नाम ।
प्रा० कैचली (सं० कंचुक, कचि=
बांधना, वा चमकना) स्त्री० सांप
की खाल, सांप की खोल ।
सं० कैटभ (कीट=कीड़ा, भा=च-
मकना जो कीड़े के बराबर चम-
कताहो) पु० एक राक्षस का नाम ।
सं० कैतव पु० कपट, २ झूत, जुआं,
३ वैद्यार्थमणि, ४ धतूर का फूल ।
प्रा० कैथी (सं० कायस्थ) स्त्री०
हिंदी अक्षर जो कायथ लोग लि-
खते हैं, कायथी हिंदी अक्षर जो
सूबे बिहार के पटना, गया आदि
जिलों में लिखे जाते हैं ।
सं० कैरव (के=पानी में, रु=शब्द
करना) पु० कुमुदिनी, कैवलनी,
कमोदनी, सफेद कैवल ।
प्रा० कैरी स्त्री० बिन पकाहुआ छोटा
आम ।
सं० कैलास (कैल=खेल, वा आ-
नंद, आस्=रहना या बैठना,
अर्थात् जहां आनंद से रहते हैं)
पु० एक पहाड़ हिमालय की
श्रेणी में है जो महादेव और कु-
बेर के रहने की जगह है ।
सं० कैवर्त (के=पानी में, वृत्=रह-
कैवर्तक) ना) पु० केवट, धीवर,
मछवा, मल्लाह, नावचलानेवाला ।
सं० कैवल्य (केवल एकही) पु०

मुक्ति, मोक्ष, परमगति, निर्वाण ।
प्रा० कैसा (किस + सा, सं० की-
दृश) क्रि० वि० किस प्रकार का,
किस तरह का ।
प्रा० कैसाही बोल० चाहे जैसाही,
कितनाही, किसी ही तरह का ।
प्रा० को (सं० कः, कौन) सर्वना०
कौन, २ कर्म और संप्रदानकारक
का चिह्न ।
प्रा० कोई (सं० कोपि, कः=कौन,
कोऊ) अपि=भी) सर्वना०
अनिश्चयवाचक ।
प्रा० कोईसा बोल० कोई आदमी,
कोई चीज ।
प्रा० कोई न कोई बोल० यह अथ-
वा वह, कोई एक ।
प्रा० कोईदममें बोल० तुरन्त, अभी,
थोड़ी देर में, बहुत जल्द ।
प्रा० कोणड़ी (पु० एक जाति जिसका
कोणरी) धंधा खेती करनेका है ।
प्रा० कोपल (सं० कोरक, कुर=शब्द
करना) स्त्री० अंकुर, मंजरी, कली ।
सं० कोक (कुक्=लेना) पु० चकवा,
चक्रवाक, —कोकी=चकवी ।
प्रा० कोका पु० दूधभाई, धायभाई,
कटिया, कमल ।
सं० कोकिल (कुक्=लेना) स्त्री०
कोयल ।
प्रा० कोख (सं० कुक्षि) स्त्री० गर्भ,
पेट ।

प्रा० कोखबंध (सं० कुक्षि=बन्ध्या)

गु० बांझ, बंध्या, जिस स्त्रीके लड़का बाला न हो ।

प्रा० कोट (सं० कोट्ट, कुट्ट=काटना)

पु० गढ़, किला, दुर्ग ।

सं० कोटर (कोट=टेढ़ापन, कुट्ट=टेढ़ा

होना, और रा=लेना) स्त्री० पेड़ में खोखली जगह, खोंड़कल, खोढ़रा ।

सं० कोटि (कुट्ट=टेढ़ा होना, वा हि-

रसा करना) स्त्री० त्रिभुज की एक भुजा, २ धनुष का अगला भाग, गु० करोड़, सौ लाख ।

प्रा० कोठरी (सं० कोष्ठ, कुप्=

निकालना) स्त्री० छोटा घर, कमरा ।

प्रा० कोठा (सं० कोष्ठ) पु० घर,

पटा हुआ घर, पक्का घर, ऊपर का मकान ।

प्रा० कोठी (सं० कोष्ठ) स्त्री० छोटा,

पक्का घर, २ भंडार, अम्बार, गोदाम, चीज वस्तु रखने की जगह, गोला, अनाज रखनेकी जगह, ३ हुंडीवाल की दूकान, महाजनी घर, ४ बड़ा मकान, बंगला, ५ कारखाना, ६ कोख, गर्भ-कोठीवाल=हुंडीवाल, बड़ासेठ, बड़ासौदागर, बड़ा व्यापारी, साहूकार, महाजन ।

प्रा० कोड़ना क्रि० स० खोदना,

खखोरना, खोखला करना, गढ़ा

करना, खुरचना ।

प्रा० कोड़ा पु० चावुक ।

प्रा० कोड़ा करना बोल० कोड़ा मारना, चावुक लगाना, २ वश में करना, ३ कोड़ा मार के घोड़े को तेज करना ।

प्रा० कोड़ामारना चावुक लगाना ।

प्रा० कोड़ी स्त्री० बीसी, बीस २० ।

प्रा० कोढ़ (सं० कुष्ठ) पु० एक प्रकार का रोग, महारोग ।

प्रा० कोढ़ में ग्वाज निकलाना बोल० एक दुख में दूसरे दुख का आना, दुख पर दुख गिरना ।

प्रा० कोढ़ी (सं० कुष्ठी) गु० जिसके कोढ़ निकला हो, कुष्ठी, महारोगी ।

सं० कोण (कुण=बुलाना) पु० कोना, दो लकीरों का झुकाव ।

प्रा० कोतल पु० खाली घोड़ा ।

प्रा० कोथमीर पु० कच्ची धनियां, धनियां की हरी पत्ती ।

प्रा० कोतली स्त्री० थैली, बटुआ ।

प्रा० कोदो (सं० कोद्रव, कु=धर-कोदों) ती, द्रु=जाना) स्त्री० एक तरह का धान ।

सं० कोदण्ड (को=बांस, कु=शब्द करना, दंड=डंडा) पु० धनुष, कमान ।

प्रा० कोना (सं० कोण) पु० खूंट, कोन, दो लकीरों का झुकाव ।

प्रा० कोनाकुथरा बोल० कोई कोना
किधरहो, किसी जगह, कहीं ।

सं० कोप (कुप्=क्रोध करना) पु०
क्रोध, गुस्सा, रोस, खिसियाहट ।

प्रा० कोपना (सं० कुप्=कोप करना)
क्रि० अ० क्रोध करना, गुस्सा होना ।

प्रा० कोपर पु० कटोरा, कटोरी,
पियाला ।

सं० कोपि (कः + अपि) सर्वना०
कौन ।

सं० कोपित (कोप् + इत) क० पु०
कुद्ध, कोपयुक्त ।

सं० कोपी (कोप) गु० क्रोधी, तामसी ।

प्रा० कोपीन (सं० कौपीन) स्त्री०
लंगोटी ।

प्रा० कोबी } स्त्री० एक तरकारी का
गोबी } नाम ।

सं० कोमल (कम्=चाहना, वा कु=
शब्द करना) गु० नर्म, नम्र मृदु,
मुलायम, मृदुल, मनोहर, पु०
पानी, जल ।

सं० कोमलता (कोमल) भा० स्त्री०
नरमाई, मृदुलता, कोमलताई ।

प्रा० कोयण } (सं० कोन) पु०
कोये } आंखका सफेद डेला,
आंखका कोना ।

प्रा० कोयल (सं० कोकिला) स्त्री०
एक पक्षी का नाम, कोकिला,
पिक, २ एक फूल का नाम ।

प्रा० कोर स्त्री० किनारा, छोर, कगर ।

प्रा० कोरा गु० नया, टटका, नहीं
बरता हुआ, जो काम में नहीं
आया हो (यह शब्द मिट्टी के बर-
तन, और कपड़ा और कागज के
लिये बहुत बार बोला जाता है) ।

प्रा० कोरेरहना बोल० निराश होना,
योंही रहजाना, कुछ नहीं मिलना ।

अं० कोर्टे आफ इन्काइरी पूंछ जां-
चकी सभा, तहकीकात का दरबार ।

प्रा० कोल पु० खाड़ी, खाल, २
सकड़ी गली, ३ जंगली मनुष्यों
की जाति, पर्वतनिवासी, म्लेच्छ
भेद ।

सं० कोलाहल (कोल्=ढेर, हल्=
करना) पु० कलकल, कलाहल,
बहुत मनुष्यों का शब्द, रौला,
कलमल, धूमधाम, गुलगपाड़ ।

प्रा० कोल्हू पु० तेल निकालने की
कल, धानी ।

सं० कोविद (क=ब्रह्म, अथवा वेद,
विद्=जानना) पु० पण्डित, बुद्धि-
मान् ।

प्रा० कोशना } (सं० क्रोशन, कुश=
कोसना } रोना) क्रि० स०
सरापना ।

सं० कोशला } (कोश वा कोष=
कोषला } भंडार, ला=लेना)
पु० स्त्री० अयोध्यापुरी, अवध ।

सं० कोष (कुप्=निकालना) पु०
भंडार, खजाना, २ डिक्शनरी, अने-

कार्थ, अभिधान, ऐसी पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ मिलें, ३ अंड-कोष, ४ मियान, नियाम, खाप, तलवार का घर ।
 सं० कोषलाधीश } (कोपला वा कोशलाधीश) कोशला=अयोध्या, अधीश=राजा) पु० श्री-रामचन्द्र, २ अयोध्या के राजा ।
 सं० कोषाध्यक्ष (कोप=खजाना, अध्यक्ष=मालिक) पु० खजांची, भंडारी ।
 सं० कोष्ठ (कुप्=निकालना) पु० कोठा, खता, कोठरी, जगह ।
 प्रा० कोस (सं० क्रोश, कुश्=बुलाना) पु० आठ हजार हाथ का रस्ता, दो मील, कोई कोई चार हजार हाथ का भी कोस मानते हैं ।
 प्रा० कोह (सं० कोप) पु० क्रोध, गुस्सा ।
 प्रा० कुहवर } पु० ब्याह का घर, कोहबर } कौतुकघर, देवताघर ।
 प्रा० कोहाना (सं० कोप) क्रि० अ० रूठना, कोप करना, क्रोध करना, रिसियाना ।
 प्रा० कोही (पं० कोपी) गु० क्रोधी ।
 प्रा० कौंधना क्रि० अ० चमकना, प्रकाश होना ।
 प्रा० कौंधा (कौंधना) स्त्री० बिजली ।
 प्रा० कौंला पु० शन्तरा एक फल का नाम ।

प्रा० कौड़ा (सं० कपर्द) पु० बड़ी कौड़ी, नारंगी ।
 प्रा० कौड़ियाला पु० एक प्रकार का साप ।
 प्रा० कौड़ी (सं० कपर्दिका, क=पानी, वा सुख, परा=पूर्णता, दा=देना) स्त्री० छोटा शंख जो व्यवहार में लेने देने में चलता है, २ धन, दौलत, ३ कमाई ।
 प्रा० फूटीकौड़ी } बोल० कुछ नहीं, कानी कौड़ी } कौड़ी नहीं ।
 सं० कौतुक (कुतुक) पु० कुतूहल, हँसी खुशी, आनंद, हर्ष, खेल, मन बहलाना ।
 सं० कौतुकी (कौतुक) गु० खेल खिलाड़ी, हँसमुख, कौतुक करनेवाला ।
 सं० कौतुकशाला स्त्री० तमाशाघर ।
 प्रा० कौन (सं० कः) प्रश्नवाचक सर्वनाम ।
 प्रा० कौनसा बोल० कैसा, किस तरह का ।
 अ० कौंसिल सभा, दरबार ।
 सं० कौमार (कुमार=बालक) पु० बालकपन, लड़कपन, युवावस्था, जवानी ।
 सं० कौमुदी (कुमुद=चांद, अथवा कुमुद=कमोदनी अर्थात् जिसमें कमोदनी खिलती है, कु=पृथ्वी, मुद्=प्रसन्न करना) स्त्री० चांदनी, चंद्रिका, २ एक व्याकरण का ग्रंथ ।

प्रा० कौर (सं० कवल) पु० ग्रास,
कवा, लुकमा, नवाला ।

सं० कौरव (कुरु=एक राजा का
नाम) पु० कुरुवंशी, धृतराष्ट्र और
पांडु दोनोंके बेटे पोतों को कुरुवंशी
कह सके हैं पर विशेष करके धृत-
राष्ट्र के बेटों को कौरव, और पांडु
के बेटों को पांडव कहते हैं ।

सं० कौलिक (कुल) गु० कुलका,
अपने कुल के धर्ममें चलानेवाला,
२ शक्ति, ३ वाममार्गी ।

प्रा० कौवा (सं० काक) पु० काग,
कागा, वायस ।

सं० कौशल्या (कोशल) स्त्री०
कोशल देश के राजा की बेटी, और
राजा दशरथ की पत्नी और श्री-
रामचन्द्र की मा ।

सं० कौशिक (कुशिक=विश्वामित्र का
बाप, गाधि) पु० विश्वामित्र मुनि
का नाम, उल्लू, गीध, इन्द्र, नेवला ।

सं० कौशिकी (कुशिक) स्त्री० एक
नदी का नाम जो विश्वामित्र की
बहिन कौशिकी के नाम से प्रसिद्ध है ।

सं० कौस्तुभ (कुस्तुभ=विष्णु, वा
समन्दर, कु=पृथ्वी, स्तु वा स्तुम्=स-
राहना, वास्तुम्भ=रोकना) पु० विष्णु
की मणि जो समन्दर में से निकली ।

प्रा० क्या (सं० किम्) प्रश्नवाचक
अव्यय ।

प्रा० क्यों (सं० किम्) क्रि० वि०
किस लिये, काहेको ।

प्रा० क्योंकर क्रि० वि० किस प्रकार
से, कैसे ।

प्रा० क्योंकि क्रि० वि० किसलियेकि ।

प्रा० क्यों नहीं बोल० किसलिये
नहीं, निश्चयही ।

सं० क्रतु (कृ=करना) पु० यज्ञ, याग ।

सं० क्रम (क्रम्=जाना) पु० रीति,
परिपाटी, राह, सिल्सिला ।

सं० क्रमशः क्रि० वि० क्रमसे, सिल-
सिलेवार, तरतीब से ।

सं० क्रमुकी स्त्री० सुपारी, डली,
पूंगीफल ।

सं० क्रय (क्री=मोल लेना) पु०
मोल लेना, खरीदना, वस्तु ।

सं० क्रयविक्रय (क्रय + विक्रय ,
क्री=मोल लेना) भा० पु० लेन
देन, वणिज्, ब्यौपार, खरीद
फरोख्त, जिन्स ।

सं० क्रयणीय (क्री + अनीय) र्म०
खरीदने लायक ।

सं० क्रयिक (क्री + इक) क० पु०
क्रयी) क्रेता, खरीददार ।

सं० क्रय्य भा० वस्तु, जिन्स बाजारी
वस्तु जो दूकान में धरी है ।

सं० क्रव्य पु० मांस, गोश्त ।

सं० क्रव्याद क० पु० राक्षस, मांस-
भक्षक ।

प्रा० क्रान्ति (सं० क्रान्ति) स्त्री०
चमक, प्रकाश, दीप्ति ।

सं० क्रान्ति (क्रम्=जाना) स्त्री०
जाना, चढ़ना, २ खगोल में सूर्य
का रस्ता, खगोलके गोले में टेढ़ी
गोल रेखा ।

सं० क्रान्तिमण्डल (क्रांति + म-
ण्डल) पु० खगोलमें उस वृत्त का
नाम जो सूर्यका मार्ग जतलाता है ।

सं० क्रामक } क० क्रेता, खरीददार ।
क्रायक }

सं० क्रियमाण र्भ० करने योग्य ।

सं० क्रिया (कृ=करना) स्त्री० काम,
काज, व्यवहार, २ क्रिया कर्म,
३ धर्मसंबंधी काम, ४ व्याकरण में
ऐसा शब्द जो धातु से बना हो और
उसमें कोई समय पाया जाय,
५ सौगन्द, शपथ ।

सं० क्रियादक्ष पु० काममें निपुण ।

सं० क्रीडा (क्रीड्=खेलना) भा०
क्रीडन } स्त्री० खेल, हँसीखुशी,
मन बहलाना, कौतुक ।

सं० क्रीडक } क० पु० खिलाड़ी ।
क्रीडित }

सं० क्रुद्ध (क्रुध्=क्रोध करना) क०
पु० क्रोध किये हुए, क्रोधित ।

सं० क्रूर (कृत्=काटना) गु० निदुर,
निर्दयी, कठोर, कड़ा ।

सं० क्रूरता भा० निदुराई, कठोरपना ।

सं० क्रोडपत्र (क्रुड्=जोड़ना, चप-

काना, जमा करना) पु० संयोजित,
जमीमा, पीछे से लगाया गया ।

सं० क्रोध (क्रुध्=क्रोध करना) पु०
कोप, रिस, गुस्सा ।

सं० क्रोधवान् } (क्रोध=कोप, वान्
क्रोधवन्त } =वाला) गु० क्रोधी,
कोप करनेवाला ।

सं० क्रोधावेश (क्रोध=कोप, आवेश
=धुसना, आ, विश्=धुसना) गु०
क्रोधयुक्त, क्रोधके वश ।

सं० क्रोधी (क्रोध) गु० कोप करने
वाला, गुस्सा करनेवाला, रिसहा ।

सं० क्रोधना क० स्त्री० कोपवती,
कोप करनेवाली ।

सं० क्रोश (कुश्=बुलाना) पु० कोस,
कोई ८००० हाथ और कोई ४०००
हाथ का कोस मानते हैं ।

सं० क्रोष्टा (कुश्=बोलना, चिल्लाना)
क० पु० शृगाल, सियार, २ गधा ।

सं० क्रौञ्च (कुञ्च=जाना) पु०
बगुला, २ एक द्वीपका नाम ।

सं० क्लान्त (क्लम्=थकना) क० पु०
थका, मांदा, थकित, थका हुआ ।

सं० क्लान्ति (क्लम्=थकना) भा०
स्त्री० थकावट, क्लेश, परिश्रम ।

सं० क्लिन्न (क्लिद्=भीगना, रोना) क०
पु० आर्द्र, ओदा, सजल, तर, दुखी ।

सं० क्लिष्ट (क्लिश्=दुखपाना) क०
पु० कड़ा, सलत, कठिन ।

सं० क्लीब (क्लीब्=नपुंसक होना)

पु० नपुंसक, नामर्द, खोजा, हिज-
ड़ा, गु० डरपोक, कायर ।
सं० क्लेद (क्लिद्=बसाना) ए० पु०
पूय, पीब, मवाद ।
सं० क्लेश (क्लिश्=दुख पाना) पु०
दुख, कष्ट, पीड़ा ।
सं० क्लेशक क० पु० क्लेशयुक्त, क्लेश-
दाता, दुःखदाता ।
सं० क्लेशन भा० पीड़ा, दुःख ।
सं० क्लेशित र्म० पु० दुखी, पीड़ित,
कष्टित ।
सं० कचित् (क=कहाँ) क्रि० वि०
कहीं, कहीं २ ।
सं० कणन (कण=बोलना) भा०
पु० शब्द, आवाज ।
सं० काथ पु० निर्यास, गोंद, काढ़ा ।
सं० काथित (कथ्=पचाना) र्म०
पु० पचाया हुआ ।
प्रा० क्षई (सं० क्षय) स्त्री० क्षय
रोग, राजरोग, दम की बीमारी ।
सं० क्षण (क्षण्=नाश करना) स्त्री०
पल, दम, दश पल का समय, चार
मिनट का समय ।
सं० क्षणिक क० पु० थोड़ी देर का ।
सं० क्षत (क्षण्=नाश करना) पु०
घाव, चोट, चीरा, जखम, व्रण ।
सं० क्षत पु० व्रण घाव, जखम, चोट,
र्म० नष्ट, घातित, विदीर्ण, भग्न ।
सं० क्षत्ता पु० शूद्र, दासीपुत्र ।
सं० क्षति (क्षण्=नाश करना) स्त्री०

हानि, घटी, नुकसान, बिगाड़,
अपकार ।
सं० क्षत्र पु० शरीर, जिस्म ।
सं० क्षत्रिय (क्षत=घाव, त्रै=ब-
क्षत्री) चाना) पु० राजपूत,
दूसरा वर्ण, राजन्य ।
सं० क्षत्रीकुलद्रोही क० पु० क्षत्री
कुल का वैरी, परशुराम ।
सं० क्षयण (क्षय्+अण, क्षय=फें-
कना) क० पु० निर्जञ्ज, बेशरम
बेहया, प्रेरण, गैड़ा, गिरगिट ।
सं० क्षमता (क्षम्=सहना) स्त्री०
सहनशीलता, सहना, योग्यता,
सामर्थ्य ।
प्रा० क्षमना (सं० क्षम्=सहना)
क्षमाकरना) क्रि० सं० माफ कर-
ना, सहना, छोड़ना ।
सं० क्षमा (क्षम्=सहना) भा० स्त्री०
माफी, माफ करना, संतोष, माफ,
शान्ति, २ रहम, गम, बरदाश्त ।
सं० क्षमित (क० पु० शान्त, क्षमा-
क्षमी) शील, गमख्वार ।
सं० क्षय (क्षि=नाश करना) भा०
पु० नाश, २ हानि, नुकसान,
घटी, ३ क्षयरोग, क्षयी ।
सं० क्षरण (क्षर्+अण, क्षर्=ब-
हना, टपकना) भा० पु० च्युत
होना, गिरना ।
सं० क्षान्त (क्षम्=सहना) गु०
सहनेवाला, धीरजवान्, क्षमावान्,

सन्तोषी ।

सं० क्षान्ति (क्षम्=सहना) स्त्री०
क्षमा, धीरज, संतोष ।

सं० क्षाम पु० क्षीण, दुर्बल, भूरा ।

सं० क्षार (क्षर=गिरना, नाशहोना)
स्त्री० खार, २ राख, भस्म ।

सं० क्षालन (क्षल्=शुद्ध करना)
पु० धोना, पोंछना, साफ करना,
खँगालना ।

सं० क्षालक (क्षल् + अक) क०
पु० धोनेवाला ।

सं० क्षालित (क्षल् + इत) र्म०
पु० धोया हुआ, धौत ।

सं० क्षिति (क्षि=रहना, बसना)
स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन, धरणी ।

सं० क्षितिधर (क्षिति=धरती, धर=
रखनेवाला, धृ=रखना) पु०
पहाड़, पर्वत ।

सं० क्षितिप (क्षिति=धरती, पा
क्षितिपति) =बचाना) पु० राजा ।

सं० क्षितिपाल (क्षिति=पृथ्वी, पा-
ल्=बचाना) पु० राजा, महाराज ।

सं० क्षिपक (क्षिप् + अक) क० पु०
योद्धा, बहादुर ।

सं० क्षिप्र (क्षिप्=फेंकना) गु०
जल्द, तुरंत, शीघ्र ।

सं० क्षीण (क्षि=नाश करना) गु०
दुबला, निर्बल, दुर्बल, गरीब ।

सं० क्षीर (घस्=खाना) पु० दूध,
२ पानी ।

सं० क्षुष्म (क्षुद् + त, क्षुद्=पीसना)
र्म० पु० पीसा हुआ, चूर्णीकृत ।

सं० क्षुद्र (क्षुद्=चूर, चूर=होना) गु०
छोटा, नीच, अल्प, सूक्ष्म ।

सं० क्षुद्रा स्त्री० वेश्या, नटी, मधु-
मक्षिका, भटकटैया ।

सं० क्षुधा (क्षुप्=भूखा होना) भा०
स्त्री० भूख, खाने की चाह ।

सं० क्षुधातुर क० पु० भूख से
व्याकुल, भूखा ।

सं० क्षुधार्त्त (क्षुधा=भूखा, आर्त्त=
घबराया हुआ) गु० भूखा, बहुत
ही भूखा ।

सं० क्षुधावन्त (क्षुधा=भूख, वत्=
वाला) गु० भूखा ।

सं० क्षुधित (क्षुधा=भूख) क० पु० भूखा ।

सं० क्षुभित (क्षुभ=काँपना) क०
क्षुब्ध) पु० डरा हुआ, घब-
राया हुआ, व्याकुल ।

सं० क्षुर (क्षुर्=काटना) भा० पु०
उस्तरा, छुरा, २ खुर ।

सं० क्षुरभाण्ड (क्षुर=छुरा, भाण्ड
=पिठारी) धि० पु० किस्वत,
नाइयों की किस्वत ।

सं० क्षेत्र (क्षि=बसना, रहना) पु०
खेत, २ पवित्रधरती, पुण्यभूमि,
३ देह, शरीर, ४ स्त्री, पत्नी, भार्या ।

सं० क्षेत्रज (क्षेत्र=स्त्रीउदर, जन्=पैदा
करना) क० पु० अपनी स्त्री में दूसरे
से पुत्र जन्माना, जारपुत्र, पाण्डवा ।

सं० क्षेपक (क्षिप्=फेंकना) क० पु०
फेंका हुआ, २ फेंकनेवाला ।

सं० क्षेपण (क्षिप्=फेंकना) भा०
पु० फेंकना, प्रेरण ।

सं० क्षेपणी (क्षिप् + अन + ई) क०
स्त्री० गुफनी, ढिलवासी ।

सं० क्षेम (क्षि=रहना) पु० कुशल,
कल्याण, चैन, बचाव, चैनचान ।

सं० क्षेमकरी स्त्री० सफेद मूड़की
चील ।

सं० क्षोणि (क्षु=शब्दकरना) स्त्री०
क्षौणि १ पृथ्वी, धरती, जमीन ।

सं० क्षोभक (क्षुभ् + अक) क० पु०
भयकर्त्ता, डरवानेवाला ।

सं० क्षोभ (क्षुभ्=कांपना, डरना)
पु० डर, मोह, झोह, घबराहट,
हड़बड़ाहट, हिलाव हुलाव ।

सं० क्षोभित मर्म० पु० डराहुआ,
खौफ खायाहुआ ।

सं० क्षौर (क्षुर=उत्तरा) स्त्री०
हजामत, मुण्डन, नाई का काम ।

सं० क्षमा (क्षम्=सहना) स्त्री०
पृथ्वी, धरती, जमीन ।

ख

सं० ख पु० आकाश, आस्मान, स्वर्ग,
शून्य, २ इन्द्रिय, ३ गृह, खेत ।

प्रा० खंगालना (सं० प्रक्षालन)
क्रि० स० धोना, साफ करना ।

प्रा० खंगार १ स्त्री० थूक, कफ,
खखार २ श्लेष्मा, ज़ुकाम ।

प्रा० खागे गु० कमपड़े, कमहुये ।

प्रा० खंजर पु० कटार, कटारी ।

प्रा० खंजरी स्त्री० एक बाजेका नाम ।

प्रा० खंडर १ (सं० खंड=टुकड़ा) पु०
खंडहर २ टूटे फूटे मकान ।

प्रा० खखोरना क्रि० स० कोड़ना,
खुरचना ।

सं० खग (ख=आकाश, गम्=
जाना) पु० पक्षी, पखेरू, २ ग्रह,
३ हवा, ४ तीर, ५ मन ।

सं० खगपति (खग=पखेरू, पति
=राजा) पु० गरुड़ ।

सं० खगान्तक (खग=पखेरू, अंतक
=नाशकरनेवाला) पु० बाजपक्षी ।

सं० खगेन्द्र (खग=पखेरू, इंद्र=
राजा) पु० गरुड़ ।

सं० खगेश (खग=पखेरू, ईश=
राजा) पु० गरुड़ ।

सं० खगोल (ख=आकाश, गोल=
गोला) पु० आकाशमण्डल ।

सं० खगोलविद्या (खगोल +
विद्या) स्त्री० तारा नक्षत्र आदि
की चाल जानने की विद्या ।

प्रा० खगग (सं० खग्न) पु० तलवार,
खग्न ।

प्रा० खचना (सं० खच्=बांधना,
हड़ करना) क्रि० स० जड़ना,
मिलाना, साटना ।

प्रा० खचित (खच्=बांधना, हड़
करना) मर्म० पु० जड़ित, जड़ाहुआ ।

प्रा० खच्चर पु० घोड़े और गधे की
जात का जानवर ।
प्रा० खजूर (सं० खज्जूर) पु० छुहारा,
छुहारे या खजूर का वृक्ष ।
सं० खञ्ज पु० लंगड़ा, लूला, पंगु ।
सं० खञ्जन (खञ्ज=लंगड़ाके चलना)
पु० एक पखेरू का नाम ।
सं० खञ्जरी स्त्री० बाद्यविशेष, ख-
ञ्जरी, डफुली ।
प्रा० खटकना क्रि० अ० लगना,
चुभना, गड़ना, खुभना, सालना,
२ बाजना, आहत होना ।
प्रा० खटका, पु० } (खटकना) सं-
खटक, स्त्री० } देह, डर, शंका,
धोखा, दुविधा, मीन मेख, २ पैर
का आहत, खड़का ।
प्रा० खटखटाना क्रि० स० ठक-
ठकाना, ठोंकना, खट खट करना,
थपथपाना ।
प्रा० खटछप्पर (सं० खट्टा=खाट,
छप्पर) पु० छप्परखट, सेज, मस-
हरी समेत पलंग ।
प्रा० खटना } क्रि० अ० ठिकना,
खटाना } रहना, ठहरना ।
प्रा० खटपट स्त्री० भगड़ा, लड़ाई,
तकरार, भंभट, बिगाड़, रगड़ा,
भगड़ा, अनरस, खेंचातानी, खट-
राग, खटापटी ।
प्रा० खटमल (सं० खट्टामल्ल, खट्टा
=खाट, मल्ल=पहलवान) माकड़,

खटकीड़ा, उड़ीस ।
प्रा० खटमीठा पु० खट्टा और मीठा
मिला हुआ स्वाद, गु० खट्टा और
मीठा, मनभावन, मनमान्ता, सुस्वाद,
मजेदार ।
प्रा० खटराग (सं० षट्पराग, षट्=
छः, राग=काम क्रोध आदि) पु०
फूट, अनवनत, अनमेल, भगड़ा,
रगड़ा, भंभट, जंजाल ।
प्रा० खटापटी स्त्री० लड़ाई, भगड़ा,
तकरार, भंभट, बिगाड़, खटपट ।
प्रा० खटास भा० स्त्री० खट्टापन,
खटाई, तुर्शी ।
प्रा० खटिया (सं० खट्टा) स्त्री०
खाट, चारपाई, २ रथी ।
प्रा० खटीक (सं० खट्टिक, खट्ट=
ठकना) पु० अहेरी जिसका काम
जानवरों के मारने और बेचने
का है ।
प्रा० खटोला (सं० खट्टा) पु० छोटी
खाट, २ पालना, भूलना ।
प्रा० खट्टा गु० तुर्श, चूक, अम्ल,
जैसे इम्ली आदि ।
सं० खट्टा (खट्ट=चाहना, वा खट्ट
=ठकना) खाट, पलंग, चारपाई ।
प्रा० खट्टख गु० सूखा, सूखा हुआ ।
प्रा० खट्टक स्त्री० गोशाला, गौखाना,
२ आहत ।
प्रा० खट्टकना क्रि० अ० खट्टखट्टाना,
भंभटाना, बाजना ।

प्रा० खड़कजाना बोल० सावधान
होजाना, खबर पाना, संदेशापाना।

प्रा० खड़खड़ाना क्रि० अ० ठक-
ठकाना, भंभनाना, बाजना, २
दांत पीसना, ३ खर्राटा मारना,
घुरघुराना ।

प्रा० खड़ा गु० सीधा, उठा, ऊंचा ।

प्रा० खड़ा करना बोल० उठाना,
ठहराना, ऊंचा करना ।

प्रा० खड़ाहोना बोल० उठना,
सीधा होना ।

प्रा० खड़ेखड़े बोल० अभी, तुरन्त,
भटपट, इसीदम ।

प्रा० खड़ाऊं स्त्री० पादुका ।

प्रा० खड़िया (सं० खटिका, खद्
=चाहना, वा खड़िका, खद्=टुकड़े २
करना) स्त्री० खड़ी, खल्ली, चाक ।

सं० खड़ी (खद्=टुकड़े २ करना)
स्त्री० खड़िया, खड़ी मिट्टी, खल्ली,
चाक ।

सं० खड़ (खद्=फाड़ना, चीरना)
स्त्री० तलवार, तरवार ।

सं० खण्ड (खद्=तोड़ना) पु० टुकड़ा,
भाग, हिस्सा, २-खन, मकान का
कोई हिस्सा, ३ जमीन का कोई
टुकड़ा, देश, ४ पुस्तक का एक
भाग, ५ खांड ।

सं० खण्डखण्ड पु० टुकड़ाटुकड़ा ।

सं० खण्डक (खद् + अक) क० पु०
तोड़नेवाला ।

सं० खण्डन (खद्=तोड़ना) भा० पु०
तोड़ना, टुकड़े करना, बिन्न भिन्न
करना, २ किसी की बात को रद्द
करना, झुठलाना, बात में हराना,
मात करना, भंजन करना, तरदीद
करना ।

प्रा० खण्डन करना (सं० खण्डन)
क्रि० स० तोड़ना, टुकड़े २ करना,
२ मात करना, झुठलाना ।

सं० खण्डना भा० स्त्री० आपत्ति,
आफत ।

सं० खण्डित (खद्=टुकड़े २ करना)
र्म० पु० टूटा हुआ, टुकड़े २ किया
हुआ, कटा हुआ, बिन्न भिन्न,
तित्तर बित्तर, बिखरा हुआ, २
मात किया हुआ, शिकस्त ।

प्रा० खत्ता (सं० खात, खन्=खो-
दना) पु० कोठा, नाज रखनेका
खड्डा, गड्डा ।

प्रा० खत्री (सं० क्षत्रिय) पु०
राजत, २ एक जाति ।

प्रा० खदबदाना क्रि० अ० सनस-
नाना, सीजना, छनछनाना ।

प्रा० खदेड़ना क्रि० स० पीछाक-
रना, रगेदना ।

सं० खद्योत (ख=आकाश, ध्रुव=
चमकना) पु० जुगुनू, अगिया,
चमकनेवाला कीड़ा ।

प्रा० खन (सं० खण्ड) पु० घरका
हिस्सा, कोठड़ी, कपरा, महला ।

सं० खनक (खन् + अक, खन् = खोदना) क० पु० मूषक, मूश, चूहा ।
 प्रा० खनकना क्रि० अ० ठनठनाना, शब्द करना, बाजना ।
 सं० खनन (खन् + अन, खन् = खोदना) भा० पु० खोदना ।
 सं० खनि (खन् = खोदना) र्भ्य० स्त्री० खानि, आकर ।
 सं० खनित्र (खन् = खोदना) पु० कुदाल, कुदाली, खोदने का औजार ।
 सं० खनित्री (खन् = खोदना) स्त्री० कुदाली, कसी, फावड़ा, पटुहा, खेती ।
 प्रा० खपत (खपना) स्त्री० बिक्री, बिकाव, खर्च, उठान ।
 सं० खपना क्रि० अ० सोख जाना, सूखना, २ मरना, ३ बिकना, खर्च होना, उठना ।
 प्रा० खपरा पु० नरिया, पटरी, चौका जिससे मकान ढाया जाता है ।
 प्रा० खपरैल (खपरा) स्त्री० खपरे का घर ।
 प्रा० खपाच स्त्री० फांस, किर्च, बांस का टुकड़ा ।
 प्रा० खपाना क्रि० स० नाश करना, पूरा करना, मार डालना ।
 प्रा० खप्पर (सं० खर्पर, कृप = सामर्थ्य रखना) पु० खोपरी, २ योगी लोगों का मिट्टी का बरतन, योगियों का पात्र ।

प्रा० खम (सं० स्तम्भ) पु० ताल, भुजा, खम्भ ।
 प्रा० खम ठोकना बोल० ताल ठोकना, कुश्ती करने के समय अपने हाथों से बाहु को ठोकना ।
 सं० खमणि (ख = आकाश, मणि = रत्न) पु० सूर्य ।
 प्रा० खम्बा } सं० स्तम्भ पु० थंभा, खम्भ } धूनी, खंभा, लाठ, मीनार ।
 सं० खर (खड् = तोड़ना) पु० तीखा, कठोर ।
 सं० खर (ख = शून्य, रा = लेना) पु० गधा, खच्चर, २ एक राक्षस का नाम, ३ तीक्ष्ण, चतुर, ४ तृण ।
 प्रा० खर } सं० खड् = टुकड़े करना खड् } पु० तिनका, तृण, घास ।
 सं० खरतर } गु० अतितीक्ष्ण, बहुत खरतल } तेज, कड़ा मिर्जाजा ।
 सं० खरधार } गु० तेजधार = बड़ी खरधारा } धार ।
 प्रा० खरवर, स्त्री० } हलबल, खड़- खरभर, स्त्री० } बड़, खलब- खलबल, स्त्री० } ली, हलचल, खभार, पु० } खड़बड़ी ।
 प्रा० खरल (सं० खल्ल, खल = गिरना) स्त्री० औषध पीसने के लिये पत्थर का बरतन ।
 प्रा० खरहा पु० खरगोश, शशा ।
 प्रा० खरा गु० सच्चा, सीधा, सरल,

उत्तम, श्रेष्ठ, चोखा, प्रमाणिक ।
 सं० खरी स्त्री० गधी, खली ।
 प्रा० खज्जुर पु० खजूर, छुहारा,
 २ जुकाम, श्लेष्मा ।
 सं० खर्च (खर्च=जाना) पु० सौअरव,
 गु० वामना, नाटा, छोटा, २ नीच ।
 सं० खर्वित मर्म० अल्पीकृत, सं-
 क्षिप्त, मुल्लसर ।
 सं० खल (ख=शून्य, ला=लेना, वा
 खल्=चलना, वा गिरना) गु० दुष्ट,
 नीच, कठोर, निर्दयी, क्रूर, बेरहम ।
 प्रा० खल (सं० खलि, खल्=जाना,
 वा गिरना) स्त्री० खरी, तिल
 की सीठी ।
 सं० खल गु० दुष्ट, अधम, नीच, निंदक,
 क्रूर, पु० कल्क, खली ।
 सं० खलन (खल् + अन) भा०
 पु० खालीकरना, रीता करना ।
 प्रा० खलबलाना क्रि० अ० उब-
 लना, खौलना ।
 सं० खलिन (खल् + इत्) क० पु०
 पतित, गिरा, खाली हुआ ।
 प्रा० खलियान (सं० खल्या, खल्
 =जाना, वा गिरना) पु० उसजगह
 का नाम जहां भूसे में से अनाज नि-
 कालकर ढेर लगाते हैं, खलिहान ।
 सं० खलु अव्य० निश्चय, हेतु,
 यकीन, विश्वास, वीप्सामान,
 निषेध, प्रश्न ।
 सं० खल्वाट गु० गंजा, चंदुला,

जिसके शिर में बाल न हों ।
 प्रा० खवा } पु० कंधा ।
 खंबा }
 प्रा० खसकाना क्रि० स० दूर करना,
 सरकाना, हटाना, पीछे खेंचना,
 २ ले भागना ।
 प्रा० खसखस (सं० खस्=खस)
 पु० पोस्त का दाना, खशखाश ।
 प्रा० खसना क्रि० अ० गिरना,
 गिरपड़ना ।
 प्रा० खसरा पु० वही, खेत के हिसाब
 की किताब, खरी, किसी हिसाब
 का खरी, २ खुजली ।
 प्रा० खांड (सं० खण्ड) स्त्री० शकर ।
 सं० खाण्डव पु० इन्द्रप्रस्थनगर के
 निकट का वन ।
 प्रा० खाडा (सं० खड्ग) पु० एक
 तरह की तलवार, तेगा ।
 प्रा० खांडे की धार पर चलना
 बोल० न्याय पर चलना, न्याय
 करना ।
 प्रा० खांसी (सं० काश, कश्=शब्द
 करना) स्त्री० खोखी, धांसी ।
 प्रा० खाई (सं० खात, खन्=खो-
 दना) स्त्री० खंदक, नाला, गड़हा,
 गढ़ के बाहर का नाला ।
 प्रा० खाऊ (खाना) गु० पेट, पेटार्थी,
 बहुत खानेवाला ।
 प्रा० खाग (सं० खग) पु० गैंडे
 का सींग ।

प्रा० खाज (सं० खज्ज, खज्ज=दुख देना) स्त्री० खजली ।

प्रा० खाजा (सं० खाद्य=खानेयोग्य) पु० एक तरह की मिठाई ।

प्रा० खाट (सं० खट्टा) स्त्री० चार-पाई, खटिया ।

सं० खान (खन्=खोदना) र्म० पु० खाई, खेय, परिखा, दुर्गवेष्टन, खन्दक ।

प्रा० खाला पु० लेखावही, रोजके हिसाब की वही, खसरा, हिसाब ।

प्रा० खाली पु० बड़ई, मिस्तरी ।

सं० खादक (खाद् + अक) क० पु० ऋणी, कर्जदार, खर्चवा ।

सं० खादन (खाद् + अन्) भा० पु० भक्षण, भोजन, खुराक ।

सं० खाद्य (खाद्=खाना) र्म० खाने योग्य, पु० खाना, खानेकी चीज ।

प्रा० खान { (सं० खानि वा खनि, खानी) खन्=खोदना) स्त्री० खानि, आकर, मादन, २ ढेर, ३ घर ।

प्रा० खाना (सं० खादन, खाद्=खाना) क्रि० स० भोजन करना, २ खाजाना, उड़ाना, चोरीकरना, मारखाना, चाटजाना, निगलना, डकार जाना, हजम करजाना, चट करना, हाथ मारना, पु० खानेकी चीज, भोजन, आहार ।

प्रा० खाजाना बोल० खालेना, डकारना, चट करना, हजम करना, मारखाना, निगलना, उड़ाना ।

प्रा० खानार्पाना बोल० भोजन, खुराक, खाना ।

सं० खानिक (खन्=खोदना) क० जो खानि में पैदा हो, स्त्री० खानि ।

प्रा० खार (सं० क्षार) पु० लोना, एक सफेद खारी चीज जिससे बहुत बार धोबी कपड़े साफ करते हैं ।

प्रा० खारा (सं० क्षार) गु० लोना, नमकीन ।

प्रा० खारुआ { पु० एक तरह का खारुआ } गोटा-लालकपड़ा ।

प्रा० खाल (सं० खल्ल) स्त्री० चमड़ा, २ धौंकनी, ३ खाड़ी, कोल ।

प्रा० खालखैचना बोल० मनुष्य की देह से चमड़ा उतारलेना, बहुत दुख देकर मारडालना, चमड़ा लेना, चमड़ा उधेड़ना, खलियाना ।

प्रा० खिचना क्रि० अ० तनना, ऐंठना ।

प्रा० खिजलाना { (सं० खिद्=दुख ग्विजाना) देना) क्रि० स० सताना, चिड़ाना, बेड़ना, दुख देना, तकलीफ देना, क्रोधित करना ।

प्रा० खिड़की स्त्री० झरोखा, दरीची ।

सं० खिन्न (खिद्=दुखदेना वा दुख पाना) र्म० पु० दुखी, दुखित,

- थका हुआ, थकित, सताया हुआ ।
 प्रा० खिरनी (सं० क्षीरिणी, क्षीर = दूध) स्त्री० एक फल और उसके पेड़ का नाम ।
 प्रा० खिलखिलाना (सं० किल-किला) क्रि० अ० बहुत जोर से हँसना ।
 प्रा० खिलना क्रि० अ० फूलना, २ हर्षित होना, प्रसन्न होना, हँसना ।
 प्रा० खिलाड़ { (खेल) गु० चं-
 खिलाड़ी } चल, चपल ।
 प्रा० खिलौना (खेल) पु० खेलने की चीज ।
 प्रा० खिसलना क्रि० अ० फिसलना, खिसकना, सरकजाना ।
 प्रा० खिसियाना (सं० क्रिश्=दुख पाना) क्रि० अ० चिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खीसना ।
 प्रा० खीजना (सं० खिद्=दुखदेना वा दुखपाना) क्रि० अ० क्रोधित होना, क्रोध करना, दुखित होना, दुखी होना ।
 प्रा० खीर (सं० क्षीर) पु० दूध और चाँवल सेवनी हुई एक खाने की चीज, जाउर, पायस ।
 प्रा० खीरा स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी ।
 प्रा० खील स्त्री० भूना हुआ चाँवल, लावा ।
 प्रा० खीली स्त्री० पान की बीड़ी ।
- प्रा० खीसना क्रि० स० नाशकरना, उजाड़ना, बिगाड़ना, २ खिचियाना ।
 प्रा० खीस भा० स्त्री० खराब हुई, २ दाँत निकालना ।
 प्रा० खीसा (फा० खीसह) पु० जेब, खलीता ।
 प्रा० खुजलाना (सं० खर्ज=दुखदेना) क्रि० अ० कलकलाना, चुलचुलाना, सहलाना, खरोटना, खरोंचना ।
 प्रा० खुजलाहट { (सं० खर्ज, खर्ज
 खजलाहट } = दुख देना) स्त्री० खुजलाना, खुजली, मुरसुरी, गुदगुदी ।
 प्रा० खुजली (सं० खर्ज, खर्ज=दुख देना) स्त्री० खाज, पामा, खारिश ।
 प्रा० खुटाना क्रि० अ० कम होना, घटजाना ।
 प्रा० खुटानी स्त्री० क्षीण हुई, कम हुई, नाश हुई ।
 प्रा० खुदवाना (सं० खन्=खोदना वा क्षुद्=चूर २ करना) क्रि० स० खुदाना ।
 प्रा० खुनस स्त्री० रोष, वैर, क्रोध, कोप, लाग, रिस ।
 प्रा० खुनसाना क्रि० अ० क्रोधित होना, खिसियाना, क्रोध करना, कोप करना, रिसाना ।
 प्रा० खुबना { क्रि० अ० चुभना,
 खुभना } बिंधना, पैठना, असर

करना, मन में जँच जाना ।
 सं० खुर (खुर=काटना) पु० सुम,
 घोड़े गाय आदि के पैरका नख ।
 प्रा० खुरपा (सं० खुर=काटना) पु०
 घास खोदने का औजार ।
 प्रा० खुरमा (फा० खर्मह) पु० एक
 तरह की मिठाई ।
 प्रा० खुलना क्रि० अ० खुल जाना,
 प्रकट होना, नहीं ढकना, बिखरना
 (जैसे बादल), साफ होजाना,
 स्वच्छ होजाना (जैसे आकाश),
 इटना, छूटना (जैसे ध्यान) ।
 प्रा० खूँट पु० कोना, कोन, २ कान
 का मैल ।
 प्रा० खूँदना (सं० क्षुब्ध=चूर करना)
 क्रि० स० पैरों से धरती को खो-
 दना, टाप मारना ।
 सं० खेचर (खे=आकाशमें, चर=
 चलनेवाला, चर=चलना) पु०
 ग्रह, वायु, तारागण, पक्षी, प्रेत, २
 विद्याधर देवता, गु० आकाश में
 चलनेवाला ।
 सं० खेट (खिद्=सताना) पु० ग्रह,
 २ पक्षी, ३ अधम, ४ भय, ५ खेत,
 ६ शिकार ।
 सं० खेटक (खिद्=डराना, सताना)
 क० पु० शिकार, अहेर, २ दाल,
 ३ भय, ४ कुत्सित, ५ ग्राम, ६
 कफ, ७ अधम ।
 प्रा० खेड़ा (सं० खेट, खेद्=खाना)

पु० पुरवा, गाँव ।
 प्रा० खेड़ी स्त्री० अच्छा लोहा,
 फौलाद, ईस्पात ।
 प्रा० खेत (सं० क्षेत्र) पु० जगह
 जहाँ अनाज तरकारी आदि बोते
 हैं, २ पवित्र धरती, ३ धरती,
 जमीन, ४ लड़ाई का मैदान ।
 प्रा० खेतछोड़ना बोल० लड़ाई से
 भाग जाना ।
 प्रा० खेत रहना बोल० लड़ाई में
 रहजाना, माराजाना ।
 प्रा० खेती (खेत) स्त्री० किसनई,
 काश्तकारी, जिराअत, फसल ।
 प्रा० खेतीबाड़ी बोल० खेतीकाधंधा,
 किसनई, काश्तकारी, जिराअत ।
 सं० खेद (खिद्=दुखपाना) पु० दुख,
 शोच, शोक, पछतावा, कष्ट, तक-
 लीफ, पीड़ा, व्यथा ।
 सं० खेदित (खिद्=दुखपाना) र्भ०
 दुःखित, दुःखी, पीड़ित ।
 प्रा० खेप (सं० क्षेत्र, क्षिप्=फेंकना,
 भेजना) स्त्री० सफर, समंदर की
 यात्रा, २ जहाज का बोझा ।
 प्रा० खेप हारना बोल० नुकसान
 उठाना, हानि होना ।
 प्रा० खेल (सं० खेला, खेल=हिलना,
 चलना) पु० क्रीड़ा, बिहार ।
 प्रा० खेवट (सं० कैवर्त्त) पु० नाव
 खेवटिया) चलनेवाला, माँभी,
 मल्लाह, डाँडी, खेवक ।

प्रा० खेवना (सं० क्षेण) क्रि० स०
डॉड मारना, नाव चलाना ।

प्रा० खेवा (सं० क्षेप्य) पु० उतराई,
नाव की उतराई का भाड़ा,
२ नदी पार होना ।

प्रा० खेस पु० एक कपड़े का नाम ।

प्रा० खैचना क्रि० स० तानना,
कसना, ऐँचना, २ तसवीर में रंग
भरना, तसवीर उतारना, तसवीर
वनाना ।

खैचाखैची घोल० खैचातानी,
खै मारामारी ।

(सं० खदिर) पु० एक
नाम, खदिर पेड़ का गूदा ।

॥ पु० घोंसला, पखेरू का

।

प्रा० खोंसना क्रि० स० ठाँसना,
ठाँसना, भरना ।

प्रा० खोंग्वला (सं० कोटर) गु०
खाली, छूड़ा, थोथा, पोला ।

प्रा० खोंगवा पु० वह हुंड़ी जिसके
रूपये दिये जा चुके हों ।

प्रा० खोंज पु० पता, निशान, ठि-
काना, चिह्न ।

प्रा० खोंट स्त्री० चूक, भूल, दोष,
अवगुण ।

प्रा० खोंटा गु० झूठा, नमकहराम,
खराब ।

प्रा० खोदना (सं० खन्=खोदना
वा क्षुद्र=चूर चूर करना) क्रि०

स० खनना, गोड़ना, कुरेदना ।

प्रा० खोना (सं० क्षय) क्रि० स०
गँवाना, उड़ाना, नाश करना,
हारना ।

प्रा० खोंपरा (सं० खर्पर) पु०
नारियल की गरी ।

प्रा० खोंपरी (सं० खर्पर) स्त्री०
कपाल की हड्डी, शिर की हड्डी,
खोपड़ी ।

प्रा० खोंह स्त्री० गुफा, गुहा, गड़हा ।

प्रा० खोरि } (सं० खोइ=खेड़ी
खोरी } चाल) भा० स्त्री०
खुटाई, दोप, कमूर ।

प्रा० खोल स्त्री० खोखला, २ मिथान ।

प्रा० खोंह स्त्री० गुफा, कंदला ।

प्रा० खोंड़ स्त्री० तिलक, त्रिपुंड्र ।

प्रा० खौलना क्रि० अ० उबालना,
उबलना, बहुत गर्म होना ।

सं० ख्यात (ख्या=प्रसिद्ध होना)
र्मम० नामवर, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित,
विदित, मगहूर, उजागर ।

सं० ख्याति (ख्या=प्रसिद्ध होना)
भा० स्त्री० यश, नाम, कीर्ति,
सराह, नामवरी ।

अं० खीष्ट ईसवी ।

प्रा० ख्याल (खेल) पु० तमाशा,
कौतुक, नकल, स्वाँग, खेल ।

प्रा० ख्याहिश कामना, चाह ।

ग

सं० ग (गै=गाना) पु० गन्धर्व,

२ गणेशजी, ३ यात्री, ४ गीत ।
 प्रा० गंग (सं० गङ्गा) स्त्री० गंगा
 नदी ।
 प्रा० गंज स्त्री० चाईचूई, बादखोरा ।
 प्रा० गंजा (गंज) गु० जिसके
 शिर में गंज हो, चँदला ।
 प्रा० गंजना क्रि० स० नाशकरना ।
 प्रा० गँठजोरा (सं० ग्रन्थिजोड़,
 ग्रंथि=गँठ, जुड़=बाँधना) पु०
 गँठ बाँधना ।
 प्रा० गँठजोड़ाबाँधना बोल० ब्याह
 में दुलहा दुलहिन के आँचल से
 गँठ बाँधना ।
 प्रा० गँठकटा { (सं० ग्रन्थि=गँठ,
 गठकटा) कृत्=काटना) पु०
 जेब कतरा ।
 प्रा० गंङा (सं० गण्डक) पु० घेरा,
 २ चार कौड़ी, चार, ३ गँठीला
 तागा जो बालकों के गलेमें बाँधा
 जाता है, तावीज ।
 प्रा० गंङामा पु० फरसा, तबल ।
 प्रा० गंङेरी (सं० ग्रन्थि) स्त्री०
 ऊख का टुकड़ा ।
 प्रा० गंधी (सं० गान्धिक) पु० अ-
 तरगुलावजल आदि बेचनेवाला ।
 प्रा० गँव { पु० अवसर, दाँव, सु-
 गौं } भीता, अवकाश, मौका ।
 प्रा० गँवाना (सं० गम्=जाना)
 क्रि० स० खोना, उड़ाना, फेंकना,
 खर्च करना ।

प्रा० गँवार (सं० ग्राम्य) गु० गाँव
 में रहनेवाला, २ अनपढ़, मूर्ख ।
 प्रा० गँवी { (ग्राम्य) गु० गाँव का,
 गँवई } गँवेला, दिहाती, पु०
 गाँव, दिहात ।
 सं० गगण { (गम्=जाना) पु० आ-
 गगन } काश, आस्मान ।
 प्रा० गगरी { (सं० गगरी, गर्गऐसा
 गागरी) शब्द, स=लेना)
 स्त्री० मटकी, कलशी, छोटाघड़ा,
 ठिलिया ।
 सं० गङ्गा (गम्=जाना) स्त्री० एक
 नदी का नाम, भागीरथी, जाह्नवी,
 सुरसरी ।
 प्रा० गङ्गाजमुनी (सं० गङ्गा + य-
 मुना) स्त्री० कानका गहना, बाली,
 २ घोड़े अथवा बैलों की धौली
 और काली भूल, ३ धौला और
 काला मिलाहुआ रंग ।
 सं० गङ्गाजल (गङ्गा=नदी का नाम,
 जल=पानी) पु० गङ्गाका पानी ।
 सं० गङ्गाद्वार (गङ्गा=नदी का नाम,
 द्वार=दरवाजा) पु० गंगोत्तरी,
 हरिद्वार, वह जगह जहाँ गङ्गा
 निकल कर बहती है ।
 सं० गङ्गाधर (गङ्गा=नदी का नाम,
 धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु०
 शिव, महादेव, जिन्होंने पहले
 गङ्गा को अपनी जटा में रखलिया था ।
 सं० गङ्गासागर (गङ्गा, सागर=

समुद्र) पु० वह जगह जहाँ गङ्गा
समुद्र से मिलती है ।
प्रा० गचपच बोल० भीड़भाड़, घना,
गहरा, कश्मकश ।
सं० गज (गज्=मस्त होना, शब्द
करना) पु० हाथी ।
फ्रा० गज्ज पु० दो हाथ का नाप,
३३ इंच वा ३६ इंच का नाप ।
सं० गजगामिनी (गज=हाथी,
गम्=जाना) स्त्री० जिस स्त्री की
चाल हाथी कीसी हो ।
प्रा० गजगाह (गज=हाथी, गाह=
गहना) पु० हाथी व घोड़ों का
गहना ।
सं० गजपति (गज=हाथी, पति=
मालिक) पु० राजा, २ हाथी का
मालिक अथवा हाथी पर चढ़ने
वाला, ३ बड़ा हाथी ।
सं० गजपाल (गज=हाथी, पाल=
पालनेवाला, पाल्=पालना) पु०
महावत, हाथीवान ।
प्रा० गजमोती (सं० गजमुक्ता) पु०
हाथी के शिर का मोती, गजमणि ।
सं० गजयूथ (गज=हाथी, यूथ=
टोला, भुण्ड) पु० हाथियों का
टोला, हाथियों का भुण्ड ।
प्रा० गजर (सं० गर्जर) पु० गाजर
का पत्ता, २ हाथ में पहनने का
गहना ।
सं० गजराज (गज=हाथी, राजन्=

राजा) पु० बड़ा हाथी, गजेन्द्र ।
सं० गजवदन (गज=हाथी, वदन=
मुँह) पु० गणेशजी ।
सं० गजानन (गज=हाथी, आनन
=मुँह) पु० गणेशजी ।
सं० गजारि (गज=हाथी, अरि=
वैरी) सिंह, शेर ।
सं० गजेन्द्र (गज=हाथी, इन्द्र=
राजा) पु० हाथियों का राजा,
गजराज, २ इन्द्र का हाथी ।
सं० गज्ज (गज्=मस्त होना वा
शब्द करना) पु० ढेर, मञ्जाना,
भंडार, २ हाट, बाजार ।
सं० गज्जना भा० स्त्री० यातना,
पीड़ा, तकलीफ, जॉकन्दनी ।
सं० गज्जित (गज्ज् + इत) र्म०
लांबित, दूषित ।
प्रा० गटपट कि० वि० उलटपुलट,
गड़वड़ ।
सं० गठक (गट् + अक, गठ=नि-
र्माण करना, बनाना) क० पु०
बनानेवाला, मुसन्निफ ।
सं० गठन (गट् + अन) भा० पु०
निर्माण करना, तसनीफ करना ।
सं० गठित (गट् + इत) र्म० नि-
र्मित, बनी हुई ।
प्रा० गट्टा (सं० ग्रन्थि) पु० गठ्ठी,
बस्ता, २ लहसुन व प्याज आदि
की गाँठ अथवा जड़, ३ जरीब का
बीसवाँ हिस्सा, गट्टा ।

प्रा० गठड़ी (सं० ग्रन्थि) स्त्री०
गठरी (गाँठ, मोट, मोटरी ।

प्रा० गठिया (सं० ग्रन्थि) स्त्री०
गठड़ी, गाँठ, एक प्रकार का वात
रोग, फुलाव ।

प्रा० गठीला (गाँठ) क० गाँठदार,
गाँठवाला, २ हरमुस्टा, संहमुसंड ।

प्रा० गड़गड़ाना क्रि० अ० गर्जना,
गुड़गुड़ाना ।

प्रा० गड़गूदड़ पु० चिथड़ा, फटा
पुराना कपड़ा ।

प्रा० गड़बड़ क्रि० वि० गटपट, उलट
पुलट ।

प्रा० गड़रिया (गाडर=भेड़ी) पु०
भेड़ी बकरी को चरानेवाला, रख-
वाला, चरवाहा, मेघपाल ।

प्रा० गड़हा (सं० गर्त) पु० ग-
गढ़ा (देला, खड्डा ।

प्रा० गड़्डी स्त्री० कागजके दश दस्ते ।

प्रा० गढ़ पु० कोट, दुर्ग, गढ़ा ।

प्रा० गढ़ना क्रि० सं० ठोंकना, ब-
नाना, सुधारना ।

प्रा० गढ़वार (सं० गाढ) गु०
मोटा, गाढ़ा ।

सं० गण (गण=गिनना) पु० समूह,
थोक, झुंड, २ शिव के दूत, ३ सेना
जिसमें २६ रथ = १ घोड़े और
१३५ पैदल हों, ४ गण आठ हैं
जिनका काम वर्णरूप छंदमें पड़ता है
१ भगण २ जगण ३ सगण ४ यगण

५ रगण ६ तगण ७ मगण ८ न-
गण इनके जानने के वास्ते दोहा-
आदि मध्य अवसान में, भजस
होहिं गुरु जान । यरत होहिं लघु
क्रमहिं सो, मन गुरु लघु सब जाना ।

सं० गणक (गण=गिनना) क० पु०
गिनेनेवाला, गणितज्ञ, ज्योतिषी,
नजूमी ।

सं० गणता भा० समूहत्व, जमाअत ।

सं० गणना (गण=गिनना) स्त्री०
गिन्ती, संख्या ।

सं० गणनाथ (गण=शिव के दूत,
नाथ=स्वामी) पु० गणेशजी ।

सं० गणनायक (गण, नायक=मा-
लिक) पु० गणेशजी ।

सं० गणपति (गण, पति=मालिक)
पु० गणेशजी, गजानन ।

प्रा० गणराऊ (सं० गणराज) पु०
गणेशजी ।

सं० गणाधिप (गण + अधिप=मा-
लिक) पु० गणेशजी, गणराज ।

सं० गणिका (गण=समूह, अर्थात्
जिसके बहुत से पति हों) स्त्री०
वेश्या, पतुरिया, कंचनी ।

सं० गणित (गण=गिनना) पु०
हिसाब, अङ्कविद्या ।

सं० गणितज्ञ (गणित=हिसाब, ज्ञा=
जानना) पु० हिसाब जाननेवाला ।

सं० गणेश (गण=महादेव के दूत,
ईश=स्वामी) पु० गजानन, गणपति,

महादेव का वेटा ।
 सं० गण्ड (गडि, मुँह का एक भाग होना) पु० गाल, २ हाथी का गाल ।
 सं० गण्डकी (गडि=सींचना)स्त्री० एक नदी का नाम ।
 सं० गुण्य (गण्=गिनना) र्म० गिनने योग्य ।
 सं० गन (गम्=जाना) क० गया हुआ, २ पाया हुआ, प्राप्त, ३ जाना हुआ ।
 प्रा० गत (गम्=जाना)स्त्री० चाल-
 सं० गति) चलन, २ दशा, हाल, ३ रीति, राह, रास्ता, ४ ज्ञान, ५ उपाय, ६ क्रिया कर्म, ७ मोक्ष, मुक्ति ।
 सं० गतागन (गत + आगत) भा० पु० जाना आना, आमदरप्रत ।
 सं० गताक्ष (गत=गई, अक्षि=आँख) गु० वह मनुष्य जिसकी आँख की रोशनी जाती रही, अंधा ।
 सं० गतानुगतिक (गत=गया, अनु-गतिक=पीछे चलनेवाला) क० एक के पीछे चलनेवाला, अनुयायी, अनुगामी, उमर खतम होगई ।
 सं० गतायुः (गत=गई, आयुस्=उमर) गु० वह मनुष्य जिसकी उमर पूरी होगई ।
 सं० गतिपरिपाटी स्त्री० फौजी कवायद ।
 सं० गद पु० रोग, बीमारी, मर्ज ।

प्रा० गदका (सं० गदा) पु० पटा ।
 प्रा० गदहा (सं० गर्दभ, गर्द=गधा) शब्द करना) पु० एक जानवर का नाम, खर ।
 सं० गदहा (गद=रोग, हन्=नाश करना)क० पु० वैद्य, हकीम, डाक्टर ।
 सं० गदा (गद्=शब्द करना)स्त्री० सोंटा, लाठी, चोब ।
 सं० गदाधर (गदा=सोंटा, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० विष्णुका नाम ।
 सं० गदिन (गद् + इत्, गद्=कहना) र्म० कहाहुआ ।
 सं० गद्दी (गद् + इ) क० पु० विष्णु, २ रोगी, मरीज ।
 प्रा० गदेली पु० मोटा बिछौना, बिछौना जिसमें रूई बहुत भरी हुई हो ।
 सं० गद्गद् (गद्=स्पष्ट, और गद्=बोलना वा गद्द पूरा बोल नहीं निकलना) पु० मारेखुशी के पूरा बोल नहीं निकलना, गु० आनन्दित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, बागबाग, खुश ।
 प्रा० गद्दी (स्त्री० बिछौना, २ गादी) आसन, ३ राजा का सिंहासन, तख्त ।
 सं० गद्य (गद्=बोलना) पु० छन्द-रहित वाक्य, विना छन्द का वाक्य, वार्त्तिक, नस्र ।
 प्रा० गनना (सं० गणना, गण्=गिनना) क्रि० सं० गिनना, शुमार

करना, गिन्ती करना ।

सं० गन्ता (गम् + ता, गम्=जाना)
क० पु० गमनकर्ता, जानेवाला ।

सं० गन्तु क० पु० पथिक, मुसाफिर ।

सं० गन्ध (गन्ध=धूमना) स्त्री० वास,
महक, सुगन्ध, सौरभ ।

सं० गन्धक (गन्ध) पु० एक पीले
रंग की धातु ।

सं० गन्धमादन (गन्ध=महक, मादन
=मस्त करनेवाला, मद्=मस्त
करना) पु० एक पहाड़ का नाम,
२ वंदरों के एक सरदार का नाम,
३ गन्धक ।

सं० गन्धराज (गन्ध=महक, राज=
शोभना) पु० चन्दन, २ सुगन्धित
फूल ।

सं० गन्धर्व (गन्ध=सुगन्ध, अर्व=
जाना) पु० सर्ग का गवैया ।

सं० गन्धवह (गन्ध=सुगन्ध, वह=
गन्धवाह) लेजाना) पु० हवा,
पवन, वायु, २ कस्तूरिया हरिण,
३ नाक, नासिका ।

सं० गन्धसार (गन्ध=सुगन्ध, सार=
तत्त्व) पु० चन्दन, श्रीखण्ड ।

सं० गन्धार (गन्ध=सुगन्ध, ऋ=जाना)
पु० एक राग का नाम, २ कन्धार
देश ।

प्रा० गन्धारी (सं० गान्धारी, गा-
न्धार=कंधारदेश) स्त्री० कंधारदेश
के राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की पत्नी

और दुर्योधन की मां ।

प्रा० गप स्त्री० इधर उधर की भूठ
सच बात, बक-बक, भक-भक ।

प्रा० गपमारना बोल० भूठी सच्ची
बातें करना ।

प्रा० गपशप बोल० भूठी सच्ची
बात, गप ।

सं० गर्भार (गम्=जाना) गु०
गम्भीर (गहरा, अथाह, अव-
गाह, २ धीर, धीमा, सोची, भारी,
गस्वा, निगूढ़, अभीक, हलीम) ।

सं० गमन (गम्=जाना) भा० पु०
चलना, जाना, चलन, यात्रा ।

सं० गमनागमन (गमन + आगमन)
भा० पु० आना जाना, आमदरफ्त ।

सं० गर्मा क० पु० जानेवाला ।

प्रा० रार्मा क० पु० गम करनेवाला,
रंज करनेवाला ।

सं० गम्य (गम्=जाना) र्म्य० जाने
योग्य, पाने योग्य, जानने योग्य ।

प्रा० गयन्द्र (सं० गजेन्द्र) पु० बड़ा
गेंद (हाथी, गजेन्द्र) ।

सं० गया (गै=गाना वा गय एक
राक्षस का नाम) स्त्री० सूवे विहार
में एक नगर है जो हिंदुओं का
बड़ा तीर्थस्थान है ।

प्रा० गयाली (सं० गयालय, गया
गयावाल) नगर का नाम, आ-
लय=घर) पु० गयाके ब्राह्मण जो
यांत्रियों को पिएड श्राद्ध आदि

कराते हैं ।

सं० गर (गृ=निगलना वा निकाल देना) पु० विष, जहर, रोग, गला ।

प्रा० गरजना (सं० गर्जन) क्रि० अ० गूँजना, घड़घड़ाना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना ।

सं० गरल (गृ=निगलना वा निकाल देना) पु० विष, जहर, माहुर, हलाहल ।

प्रा० गरवा (सं० गौरव) गु० भारी, गम्भीर, धीर, सुतहम्मिल, बुद्धि-वार, बड़ा, प्रतिष्ठित ।

सं० गरिमा (गुरु=बड़ा) स्त्री० गुस्ता, बड़ाई, गरुआई, बोझ, अहंकार ।

सं० गरिष्ठ { गरीय गु० भारी, गरुआ ।
गरीयान् }

प्रा० गरी स्त्री० नारियल का गूदा, खोपरा ।

प्रा० गरुआई { (सं० गुस्ता) भा०
गरुआई स्त्री० भार, बोझ ।

सं० गरुड़ (गरुत्=पंख, डी=उड़ना) पु० पक्षियों का राजा, विष्णुका वाहन, एक तरह के पखेरू का नाम ।

सं० गरुडध्वज (गरुड़=पखेरूओं का राजा, ध्वजा=पताका, अर्थात् जिसकी ध्वजा में गरुड़ का चिह्न है) पु० विष्णु भगवान् ।

सं० गरुत् (गृ=शब्द करना वा निकालना) पु० पंख, पाख, पर ।

सं० गर्ग (गृ=बोलना वा जानना वा जतलाना) पु० एक मुनि का नाम जो ब्रह्मा का बेटा और वसुदेव जी का कुलगुरु था ।

सं० गर्ज { (गर्ज=गर्जना) पु० बा-
गर्जन } दलों का शब्द, सिंहका शब्द, गाजना ।

सं० गर्त (गृ=निकालना वा निगलना) पु० गढ़ा, गड़हा, खड्डा ।

सं० गर्दभ (गर्द्=शब्द करना) पु० गधा ।

सं० गर्व { (गर्व वा गर्व=घमंड
गर्व } करना) पु० घमंड, अहं-
कार, दर्प, अभिमान, गरूर ।

सं० गर्भ (गृ=शब्द करना) पु० गाभ, पेट, कोख, हमल, सन्धि, कटहर, कंटक ।

सं० गर्भवर्त्ता { (गर्भ) स्त्री० पेट
गर्भिणी } से, गाभिन, दो-
जीवा, दो जीव से ।

सं० गर्भश्राव { (गर्भ=गाभ, श्रु वा
गर्भश्राव } सु=गिरना) पु० गर्भ का गिरना, गाभ गिरना, गर्भपात ।

सं० गर्व भा० घमंड, गरूर ।

सं० गर्वित (गर्व=घमंड करना) गु० घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, मगरूर ।

सं० गर्हक (गर्ह+अक, गर्ह=निन्दा करना) क० पु० निन्दक, चुगुल ।

सं० गर्हण (गर्ह + अण) भा० पु०
निन्दा, मज्जम्मत ।

सं० गर्हित (गर्ह + इत्) र्म० नि-
न्दित, मज्जमूम ।

सं० गल् (गल्=खाना, वा गृ=नि-
गलना) पु० गला, गरदन ।

प्रा० गलदेना बोल० फाँसी देना ।

प्रा० गलबहियाँ (सं० गलबाहु,
गल्=गला, बाहु=भुजा) स्त्री०
गलवाँह, गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलबहियाँ डालना बोल०
किसी के गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलना (सं० गलन, गल्=
गिरना) क्रि० अ० पिघलना, नर्म
होना, २ सड़ना, बिगड़ना ।

प्रा० गला (सं० गल) पु० कण्ठ,
गरदन, ग्रीवा, नरेटी, २ स्वर, आ-
वाज, गु० सड़ाहुआ, पिघलाहुआ ।

प्रा० गलाबैठना (बोल० आवाज
गलापड़ना) बैठना, भारी
शब्द होना, गला घनघनाना,
गला खर्खराना ।

प्रा० गलाफाँसना बोल० फाँसी
देना, गलदेना, गला दवाना,
दम बन्द करना ।

प्रा० गलादवाना बोल० गला घों-
टना, नरेटी दवाना, फाँसी देना ।

प्रा० गलाघोंटना बोल० नरेटी द-
वाना, गला दवाना, दम बन्द करना ।

प्रा० गलेपड़ना बोल० खुशामद

करना, जो मनुष्य प्रीति नहीं करना
चाहता उससे प्रीति किया चाहना ।

प्रा० गलेपड़ी बजायेसिद्ध बोल०
जो काम आपड़े उसको करनाही
चाहिये ।

प्रा० गले का द्वार होना बोल०
किसीसे बड़ी लगन के साथ प्यार
करना, मन हर लेना, सदा मन
में वसना ।

प्रा० गलेलगना बोल० मिलना,
झाती से लगाना ।

प्रा० गलाना (गलना) क्रि० सं०
पिघलाना, २ सड़ाना ।

सं० गलित (गल्=गिरना) क०
गलाहुआ, पड़ाहुआ, सड़ाहुआ,
गिरा हुआ, जो गिर पड़ा हो ।

प्रा० गली स्त्री० छोटा रास्ता, तंग
रास्ता ।

प्रा० गलीगली बोल० एक गलीसे
दूसरी गली तक, हर गली ।

प्रा० गवन (सं० गमन) भा० पु०
जाना, चलना, कूच ।

सं० गवय (गो=गाय) पु० गायके
जैसा जानवर, वन की गाय, २
एक वानर का नाम ।

अं० गवर्नमेण्ट राजकीय नियम
जो पार्लिमेण्ट और लेजिसलेटिव
कौंसिल या सभा में बनते हैं उन्हीं
नियमों के अनुसार राज काज किये
जाते हैं ।

प्रा० गवहि (सं० गमन) भा० मौके
से जाना, गौं से जाना ।

सं० गवाक्ष (गो=गाय वा किरण,
अक्षि=आँख वा छेद) पु० भरोखा,
मोखा, भँभरी, जाली, २ गाय की
आँख, ३ एक खानर का नाम ।

प्रा० गवाभा (सं० गवाश, गो=
गाय, अश=खाना) पु० गाय को
खानेवाला, कसई ।

प्रा० गवैया (सं० गायक) क० पु०
गानेवाला ।

सं० गव्य (गो=गाय) पु० दूध
आदि, गु० गाय का ।

प्रा० गहगहाना (सं० गह=गहरा
होना) क्रि० अ० वाजना, नकारों का
वाजना, २ हिलोरना, लटकना ।

प्रा० गहण (सं० ग्रहण) भा० पु०
ग्रहण, लेना ।

सं० गहन (गह=घना होना वा
गाह=मथना) पु० वन, कुंज, भाड़ी,
गु० गहरा, सघन, विकट ।

प्रा० गहना (सं० ग्रहण, ग्रह=लेना)
क्रि० स० पकड़ना, लेना, ग्रहण
करना ।

प्रा० गहना पु० जेवर, भूषण, २
गिरो, गिरवी, बंधक ।

प्रा० गहनेधरना (बोल० गिरो
गहनीधरना) रखना, गिरवी
रखना, बंधक रखना ।

प्रा० गहरा (सं० गम्भीर) गु०

गम्भीर, अथाह ।

प्रा० गहरू स्त्री० देरी, देर, विलम्ब ।

प्रा० गहवा (गहना=पकड़ना) पु०
संडसी, चिमटा ।

प्रा० गहवर (सं० गहर, गाह=
मथना वा पैठना) स्त्री० गुफा,
गुहा, कंदरा, गु० सघन, कुंज ।

प्रा० गाँजा (सं० गज्जिका, गज्=
मस्त होना) पु० एक नशेकी चीज ।

प्रा० गाँठ (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गिरह,
जोड़, बंध, २ गिल्टी, फुसड़ी,
फुन्सी, ३ गठड़ी, मोटड़ी ।

प्रा० गाँठ उगवड़ना बोल० जोड़
का सरक जाना, जोड़का उतरना,
जोड़का खुल जाना, गाँठ या हड्डी
या नस का विचलना ।

प्रा० गाँठ पड़ना बोल० किसी के
मन में किसी के साथ दुश्मनी अ-
थवा वैर अथवा विरोधका जमना ।

प्रा० गाँठ का धरा बोल० धनवान,
दौलतमन्द, धनवान्त, धनी, मालदार ।

प्रा० गाँठका खोना बोल० अपनी
हानि करना, अपना नुकसान
आप करना ।

प्रा० गाँठखोलना बोल० बहुत खर्च
करना, थैली खोलना, २ पक्षपात
का छोड़ना ।

प्रा० गाँठगठीला बोल० गाँठदार
(जैसे लकड़ी), ठोस, गाढ़ा ।

प्रा० गाँठना (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ=

जोड़ना) क्रि० स० बाँधना, जकड़ना, मिलाना, जोड़ना, जुटाना, लगाना, साटना, २ वश में करना, वश में लाना, अपना करना, लुभाना, मोहलेना ।

प्रा० गाँडर पु० काँस, एक तरह की घास ।

प्रा० गाँड़ा पु० गन्ना, ईख, ऊख ।

प्रा० गाँव (सं० ग्राम) पु० बस्ती, गाम (खेड़ा ।

प्रा० गाई (सं० गौ) स्त्री० गाय, गैया ।

प्रा० गागर (सं० गर्गरी) स्त्री० गागरी (गगरी, मटकी, कलशी ।

प्रा० गाछ (सं० गच्छ, गम्=जाना) पु० पेड़, वृक्ष ।

प्रा० गाजना (सं० गर्जन) क्रि० अ० गर्जना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना, २ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

प्रा० गाजर (सं० गर्जर) स्त्री० एक तरह का कन्द अथवा मूल जिसकी तरकारी होती है और ऐसे भी खाते हैं ।

प्रा० गाजाबाजा (गाजनाबाजना) बोल० कई एक बाजों का शब्द, आनन्द ।

प्रा० गाड़ना (सं० गर्तन, गृ=निकालना या निगलना) क्रि० स० तोपना, मिट्टी देना, समाप्त देना,

२ जमाना, खड़ा करना, पक्का करना, दृढ़ करना, लगाना ।

प्रा० गाड़ (सं० गर्त) गड़हा, खत्ता, खौ ।

प्रा० गाडर स्त्री० भेड़ी, भेड़ ।

प्रा० गारुड़ (गारुड़ अर्थात् जिसका देवता गरुड़ है) पु० साँप के विष उतारने का मन्त्र, विष भाने का मन्त्र ।

प्रा० गाड़ा (सं० गन्त्री) पु० छकड़ा, लहड़, शकट, २ (गर्त) खाई, गड़हा, ३ घात, दाँव ।

प्रा० गाड़ी (सं० गन्त्री, गम्=जाना) स्त्री० मंझोली, शकटी, रथ, वहल ।

प्रा० गाड़ीवान (गन्त्रीवाह) पु० गाड़ीवाला, कोचवान, सारथि ।

प्रा० गाढ़ा (सं० गाढ, गाढ=मथना) पु० मोटा, पोंदा, २ मजबूत, दृढ़, ३ पक्का, चतुर, होशियार ।

सं० गाण्डिव (गाण्डि=गाँठ, अर्थात् जिसमें गाँठ हो) पु० अर्जुन का धनुष, २ कोई धनुष, चाहे जैसा धनुष ।

प्रा० गान (सं० गात्र) पु० शरीर, देह, अंग, तन, २ कपड़ा, वसन, वस्त्र ।

प्रा० गान्ता पु० पूठा, पिठाँता, गत्ता, जिल्द ।

सं० गात्र (गा=जाना) पु० शरीर, देह, तन, अंग ।

सं० गाथक (गै=गाना) क० पु०

गाने वाला, गवैया, गायक, कथक।
सं० गाथा (गै=गाना) स्त्री० गीत,
गाना, कथा, २ श्लोक, पद्य,
छन्द ।

प्रा० गाढ़ स्त्री० तलछट, मैल, भाग ।

प्रा० गाथना { (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ=
गाँथना) जोड़ना) क्रि० सं०
गँथना, बनाना ।

सं० गाधि (गाध्=ठहरना वा चाहना)
पु० विश्वामित्र ऋषि का बाप ।

सं० गाधितनय (गाधि + तनय=
बेटा) पु० विश्वामित्र ऋषि ।

प्रा० गाधिसूचन (सं० गाधिसूनु,
गाधि + सूनु=बेटा, सू=पैदा होना)
पु० विश्वामित्र ऋषि ।

सं० गान (गै=गाना) भा० पु०
गीत, नगमा, गाना ।

प्रा० गाना (सं० गान) क्रि० सं०
अलापना, राग उच्चारना, रकहना ।

सं० गान्धर्व (गन्धर्व) गु० गन्धर्व
का, पु० गाना, गीत, २ एकतरह
का व्याह जो केवल दुलहा और
दुलहिन की मर्जी से होजाता है ।

सं० गान्धार (गन्ध=सुगन्ध, ऋ=
जाना) पु० एक रागका नाम, २
कंधार-देश ।

सं० गान्धारी स्त्री० गान्धार राजा
की बेटी, धृतराष्ट्र की स्त्री ।

प्रा० गाभ (गर्भ) पु० गर्भ, पेट ।

प्रा० गाभा (गर्भ) पु० केले के

पेड़ का नया पत्ता ।

प्रा० गाभिन (सं० गर्भिणी) स्त्री०
गर्भवती (जैसे गाय भैंस आदि) ।

सं० गामी { (गम्=जाना) क०
गामुक } पु० जानेवाला, च-
लनेवाला, गामिनी=चलनेवाली ।

प्रा० गाय (सं० गौ) पु० गैया,
गाय, धेनु ।

प्रा० गायगोट { (सं० गो + गोष्ठ
गाइगोट } गो=गाय, स्था=
ठहरना) स्त्री० गोशाला ।

सं० गायक (गै=गाना) पु० गाने-
वाला, गवैया ।

सं० गायत्री (गायन=गानेवाले को,
त्रै=वचाना) स्त्री० एक प्रकारका
मन्त्र, वेदमाता, सूर्य की वन्दना, २
एक छन्द का नाम जिसके हर एक
पाद में छः अक्षर होते हैं ।

सं० गायन (गै=गाना) पु० गाने-
वाला, गवैया ।

अ० गारन बरवाद, नष्ट, तबाह ।

प्रा० गार { (सं० गालि, गल्=गि-
गारी) रना) स्त्री० बुरी बात,
बुरावचन, गाली ।

प्रा० गारि पु० तावा, तवा ।

प्रा० गारुड़ी (सं० गारुडिक, गरुड)
पु० विष उतारनेवाला, विष भा-
ड़ने वाला ।

प्रा० गाल (सं० गल, गल्=खाना)
पु० कपोल, आँखों के नीचे का

भाग, २ चोचला ।
 प्रा० गालकरना } बोल० चोचला
 गालबजाना } करना, बकवाद
 करना ।
 सं० गालव पु० एक ऋषि का नाम ।
 प्रा० गाली (सं० गालि, गल्=गिर-
 ना) स्त्री० गार, गारी, बुरी बात,
 बुरा वचन ।
 प्रा० गालीगलौज बोल० आपस
 में गाली देना, झगड़ा, लड़ाई,
 तकरार ।
 प्रा० गालीदेना बोल० गाली ब-
 कना, बुराभला कहना, झिड़कना,
 बुरा कहना, थुथकारना ।
 प्रा० गावदी गु० भोला, मूर्ख,
 बेवकूफ, अज्ञानी ।
 प्रा० गावाघी (सं० गोवृत) पु०
 गाध का घी ।
 प्रा० गाह (सं० ग्राह) पु० मगर, ग्राह ।
 प्रा० गाहक (सं० ग्राहक, ग्रह=लेना)
 पु० मोल लेनेवाला, सौदा खरी-
 देनेवाला, खरीददार, लेनेवाला ।
 प्रा० गाहना (सं० गाह=मथना)
 क्रि० सं० ढूँढ़ना, खोजना, तलाश
 करना, कुचलना, मलना, दबाना ।
 प्रा० गाहा (सं० गाथा) स्त्री० कथा,
 २ समूह ।
 प्रा० गिड़गिड़ाना क्रि० अ० धिधि-
 य ३, विनती करना, चिरौरी

प्रा० गिण्णी } (सं० गणित, गण=
 गिन्ती } गिनना) स्त्री० संख्या,
 गिनना, हिसाब ।
 प्रा० गिणना } (सं० गणन) क्रि०
 गिनना } स० गिन्ती करना,
 हिसाब करना, शुमार करना ।
 प्रा० गिद्ध (सं० गृध्र) पु० गीध,
 एक पखेरू का नाम, शकुनी ।
 प्रा० गिरगिट पु० एक कीड़ा, छिप-
 कली, टिकटिकी ।
 प्रा० गिरना क्रि० अ० पड़ना, गिर-
 पड़ना ।
 प्रा० गिरनेपड़ने बोल० बहुत
 कठिनता से ।
 सं० गिरा (गृ=निगलना वा निका-
 लना) स्त्री० वाणी, वचन, २
 सरस्वती, शारदा, ३ कविताई ।
 सं० गिरि (गृ=निगलना वा निका-
 लना) पु० पहाड़, पर्वत, २ सं-
 न्यासी, गु० पूज्य, पूजनीय, प्रति-
 ष्ठित, मान्य ।
 सं० गिरिजा (गिरि=पहाड़, जन=
 पैदा होना) स्त्री० पार्वती, गौरी,
 उमा, हिमालय की बेटी ।
 सं० गिरिधर } (गिरि=पहाड़, धर
 गिरिधारी } वा धारी=उठाने
 वाला, धृ=रखना) पु० श्रीकृष्ण,
 गु० पहाड़ को उठानेवाला ।
 प्रा० गिरिन्दा (सं० गिरीन्द्र) पु०
 बड़ा पहाड़, सुमेरु पहाड़, हिमा-

ल्य पहाड़ ।

सं० गिरिराज (गिरि=पहाड़, राज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, गोवर्द्धन, हिमालय, सुमेरु, २ श्रीकृष्ण का नाम ।

सं० गिरिवर (गिरि=पहाड़, वर=बड़ा) पु० बड़ा पहाड़ ।

सं० गिरिसुता (गिरि=पहाड़, सुता=बेटी) स्त्री० पार्वती, गौरी, गिरिजा, उमा ।

सं० गिरीन्द्र (गिरि=पहाड़, इन्द्र=राजा) पु० हिमालय, सुमेरु, गिरीश ।

सं० गिरीश (गिरि=पहाड़, ईश=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ हिमालय ।

प्रा० गिल्ई भा० स्त्री० निगलजाइ ।

सं० गिलन (गृ=निगलना वा खाना) भा० पु० भक्षण, खाना ।

अं० गिलन छः दोतलका पैमाना ।

सं० गिलित (गिल् + इत) र्म्य० स्त्री० खादित, भक्षित, खाई हुई ।

सं० गीनिका एक छन्द का नाम ।

प्रा० गिलहरी स्त्री० एक जानवर का नाम, रूखी, चीखुर ।

प्रा० गिलौरी स्त्री० पान की बीड़ी ।

सं० गीन (गै=गाना) पु० गान, भजन ।

सं० गीता (गै=गाना) स्त्री० एक पुस्तक का नाम जिसमें श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद है और उस

को भगवद्गीता कहते हैं इसके सिवाय रामगीता, पाण्डवगीता आदि और भी गीता हैं पर इन सबमें भगवद्गीता बहुत प्रसिद्ध है ।

प्रा० गीदड़ पु० शियाल, शृगाल ।

प्रा० गीध (सं० गृध्र) पु० गिद्ध, गृध्र ।

प्रा० गीला गु० आंदा, भीगा, सीला ।

सं० गु र्म्य० विष्टा, गलीज ।

प्रा० गुंजान गु० गहरा, सघन, घना, पासपास ।

प्रा० गुजरात (सं० गुर्जर) स्त्री० एक देशका नाम, हिंदुस्तान का एक सूबा ।

प्रा० गुजरानी गु० गुजरात का ।

सं० गुञ्जन भा० गुँजना ।

सं० गुञ्ज (गुजि=गुजरना) गु० पुष्पस्तवक, गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा ।

प्रा० गुञ्ज (गुजि शब्द करना) पु०

सं० गुञ्जा (गुंघची लाल, एक बेली का नाम ।

सं० गुटिका (गु=शब्द करना) स्त्री० दवाई की गोली, २ चाहे जैसी गोली ।

सं० गुड़ (गुद=चूर्ण करना) पु० मीठा, ऊखके रस से बनी हुई मीठी चीज ।

सं० गुडाकेश (गुडाका + ईश) क० पु० गुडाका=निद्रा, ई जीतने वाला, नि नी ाला,

बेदार, महाराज अर्जुन का नाम ।
 प्रा० गुडंवा { (सं० गुडाम्र) पु०
 गुडंवा } केरी पाक, गुड के
 रस में पकाया हुआ कच्चा आम ।
 प्रा० गुडगुड़ी स्त्री० छोटा हुका ।
 प्रा० गुड़िया स्त्री० लड़कियों का
 खिलौना ।
 प्रा० गुड्डी स्त्री० पतंग, तिलंगी,
 कनकौवा ।
 सं० गुण (गुण=बुलाना वा गुणना)
 पु० स्वभाव, विशेषण, २ हुनर,
 चतुराई, प्रवीणता, विद्या, ३ रस्सी,
 डोरी, ४ सत्त्व रज तम ये तीन
 गुण, ५ कृपा, मेहरबानी, भला,
 भलाई, ६ गुना हुआ, बार ।
 प्रा० गुणकरना बोल० भला करना,
 भलाई करना ।
 प्रा० गुणका पलटा देना बोल०
 भलाई का बदला देना, भलाई
 के पलटे भलाई करना ।
 प्रा० गुणमानना बोल० भला मा-
 नना, अहसान मानना ।
 सं० गुणक (गुण=गुनाकरना) क०
 पु० वह श्रंक जिससे गुणा किया
 जाता है, मज़रूबकीह ।
 प्रा० गुणगाहक (सं० गुणग्राहक)
 क० पु० गुण जाननेवाला, गुण-
 ग्राही, कदरदान ।
 सं० गुणग्राही { (गुण=विद्या, हु-
 गुणग्राहक } नर, ग्राही=लेने

वाला, ग्रह=लेना) क० पु० गुण
 को जाननेवाला, गुणग्राहक ।
 सं० गुणज्ञ (गुण, ज्ञा=जानना) क०
 पु० गुण को जाननेवाला ।
 सं० गुणन { (गुण=गुणना) भा०
 गुणना } पु० गुना करना, सम-
 भना, अभ्यास करना ।
 सं० गुणवान् { (गुण=हुनर, वत्=
 गुणवन्त } वाला) गु० गुणी,
 चतुर, प्रवीण, पण्डित ।
 सं० गुणित (गुण=गुणना) र्म०
 गुणा हुआ ।
 सं० गुणी (गुण) गु० गुणवान्, विद्या-
 वान्, निपुण, प्रवीण, हुनरमन्द ।
 सं० गुण्य (गुण=गुणना) र्म० पु०
 जो श्रंक गुणाजाय, मज़रूब ।
 प्रा० गुन (सं० गुण) पु० (गुण
 शब्द को देखो) ।
 प्रा० गुनगुना गु० थोड़ा गर्म ।
 सं० गुप्त { (गुप्=छिपाना वा बचाना)
 गोपित } र्म० छिपा हुआ, ढका हुआ,
 लुका हुआ, २ बचा हुआ, रक्षित ।
 सं० गुप्ति भा० स्त्री० रक्षण, पोशीदगी ।
 प्रा० गुप्ती (सं० गुप्त) स्त्री० छिपी
 हुई तलवार, लाठी के भीतर
 छोटी तलवार ।
 सं० गोप्ता (गुप्+ता) क० पु०
 रक्षक, मुहाफिज़ ।
 सं० गोप्य र्म० गुप्त, छिपाने योग्य ।
 प्रा० गुफा (सं० गुहा) स्त्री० खोह,

कंदरा, गुहा, पहाड़ के बीच की जगह ।
 सं० गुरु (गृ=निकालना, अज्ञान को) वा (गृ=उपदेश करना, धर्मका)
 पु० मंत्र देनेवाला, मंत्र उपदेशक, धर्म सिखानेवाला, आचार्य, उपदेशक, बाप, अथवा अपना और कोई बड़ा पुरुषा, शिक्षक, पढ़ानेवाला, ४ बृहस्पति, देवताओं का गुरु, ५ द्विमात्रिक अक्षर, दीर्घस्वर, अनुस्वार और विसर्गवाला स्वर, संयोगी, अक्षरों के पहले का स्वर, गु० भारी, बड़ा, पूज्य, पूजनीय ।
 सं० गुम्फ (गुम्फ=गुहना, पिराना)
 भा० पु० गूँथना, ग्रंथन, बाहुभूषण ।
 सं० गुम्फित र्मं० ग्रंथित, गुही हुई ।
 सं० गुरुतर गु० अतिगुरुआ ।
 सं० गुरुतम गु० अत्यन्त गुरुआ, बहुतही भारी ।
 प्रा० गुरुमुख होना बोल० गुरु से मंत्र लेना, किसीका चेला होना ।
 सं० गुरुजन (गुरु=बड़े, जन=मनुष्य)
 पु० बड़े लोग, बुजुर्ग लोग ।
 सं० गुरुत्व (गुरु) भा० पु० बोझ, भार, २ बड़ाई, गंभीरता, हिलम, बुर्दवारी ।
 सं० गुरुवार (गुरु=बृहस्पति, वार=दिन) पु० बृहस्पतिवार, जुमेरात ।
 सं० गुर्विणी (गुरु=भारी, अर्थात् गुर्वी) जिसके गर्भ हो)
 स्त्री० गर्भवती, गर्भिणी, हामिला ।

प्रा० गुलाई (सं० गोलता) भा० स्त्री० गोलाई, गोलापन, मुहीत ।
 प्रा० गुलाबजामन पु० एक तरह की मिठाई, एक तरह का फल ।
 प्रा० गुल्ले (स्त्री० एक तरह का गुल्ले) धनुष ।
 सं० गुल्फ पु० पैर की गाँठ, टखना ।
 सं० गुल्म (गुह=रक्षा करना, लपेटना) पु० वायुगोला, लीहा, रफाड़, लता, ३-६ गज ८ रथ ८ अश्व ४५ पदाति सेना की संख्या, ४ विष्णु, ५ आवरण ।
 सं० गुह (गुह=ढकना) पु० निपाद, शृंगवेरपुरका राजा और श्रीरामचन्द्र का मित्र, २ कार्तिकेय ।
 प्रा० गुहना (सं० गुम्फन, गुम्फ=गूँथना) क्रि० स० गूँथना, पिराना ।
 सं० गुहा (गुह=ढकना) स्त्री० गुफा, खोह, कंदरा ।
 प्रा० गुहार स्त्री० पुकार, शोर, हाहू, २ सहाय ।
 सं० गुह्य (गुह=ढकना, छिपाना) र्मं० छिपाने योग्य, गुप्त, पु० शरीर के ढके हुए अंग ।
 सं० गुह्यक (गुह=छिपाना) पु० कुवेर के दूत, एक प्रकार के देवता ।
 प्रा० गुसाई (सं० गोस्वामी) गंसाई पु० मालिक, स्वामी, २ संन्यासी ।
 प्रा० गूंगा गु० मुँहबंथा, अनबोलता,

मूक, मौन ।

प्रा० गूँजना (सं० गुञ्जन, गुजि= शब्द करना) क्रि० अ० भिन- भिनाना, २ पीछी आवाज आना, प्रतिध्वनि होना, गूँज रहना, ३ गर्जना, गुर्राना ।

प्रा० गूँझा पु० एक तरहकी मिठाई ।

प्रा० गूँथना (सं० गुम्फन, गुम्फ= गूँथना) क्रि० स० पिरोना, लड़ियाना, गुहना ।

प्रा० गूजर (सं० गुर्जर=गुजरात) पु० एक जाति जिसका धंधा दूध बेचने का है और जो गुजरात से फैली है, ग्वाला, गोप, अहीर, स्त्री० गूजरी=अहीरी, गोपी, गूजर की स्त्री ।

प्रा० गूजरी स्त्री० लुगाइयों के हाथ में पहनने का एक गहना ।

सं० गूढ़ (गुह=छिपाना) गु० सूक्ष्म, कठिन, २ छिपा, गुप्त ।

प्रा० गूदा (सं० गोर्द) पु० सार, भेजा ।

प्रा० गूलर पु० अंजीर, डूमर, एक फल का नाम ।

सं० गूधु क० पु० लोभी, लालची ।

सं० गूध्र (गूध्=चाहना) पु० गीध, गिद्ध ।

सं० गूध्रराज (गूध्र=गीध, राज= राजा) पु० जटायु पक्षी जिसका वर्णन रामायण में है ।

सं० गृह (ग्रह वा गृह=लेना) पु० घर, वासा, गेह, मकान, वास करने की जगह, रहने की जगह, डेरा, २ स्त्री, घरवाली ।

सं० गृहस्थ (गृह=घर, स्था=ठहरना) पु० घरवाला, घरवारी, दूसरा आश्रम, २ किसान ।

सं० गृहस्थाश्रम (गृहस्थ + आश्रम) पु० गृहस्थ का धर्म अथवा काम, दूसरा आश्रम (आश्रम शब्द को देखो) ।

सं० गृहागत (गृह + आगत, आ + गम् + त) क० पु० आगन्तुक, अतिथि, मेहमान, पाहुन, प्रायुण ।

सं० गृहिणी (गृह=घर) स्त्री० घरवाली, लुगाई, जोरू, भार्या, स्त्री, पत्नी ।

सं० गृही (गृह) पु० घरवाला, गृहस्थ ।

सं० गृहीत (गृह=लेना) कर्म० पु० लिया हुआ, पकड़ा हुआ, स्वीकार किया हुआ, ग्रहण किया हुआ ।

प्रा० गेंडा (सं० गण्ड) पु० एक जानवर का नाम जिसके पुटों पर के चाम की ढाल उत्तम बनती है ।

प्रा० गेंद (सं० गेण्डु, गम् वा गा= जाना) स्त्री० लड़कों के खेलनेकी कपड़े की या चमड़े की गोल चीज, कन्दुक ।

प्रा० गेंदतड़ी खेलना बोल० डंडे

से गेंद को मारके खेलना ।
 प्रा० गेंदा (सं० गेण्डक, गम् वा
 गा=जाना) पु० एक फूल का
 नाम, २ गेंद ।

सं० गेय (गा=गाना) र्भ्म० गाने
 योग्य ।

प्रा० गेरू (सं० गैरिक, गिरि=पहाड़)
 स्त्री० पहाड़ की लाल मिट्टी ।

प्रा० गेरुआ (गेरू) गु० गेरू से
 अथवा गेरू जैसा रंगा हुआ ।

सं० गेह (ग=गणेशजी, ईह=चाहना
 अर्थात् घर की नेव डालने के दिन
 ही से घर में गणेशजी को स्थापन
 करते हैं) पु० घर, मकान ।

प्रा० गेहूँ (सं० गोधूम, गुधू=ढकना)
 पु० गोहूँ, एक प्रकार का अनाज,
 गंदुम ।

प्रा० गेहूँआ { (गेहूँ) पु० गेहूँ का
 गेहूँवा { रंग, २ एक प्रकार
 की घास, गु० गेहूँवरणा, साँवला,
 गेहूँ के रंग जैसा ।

प्रा० गेगली स्त्री० बोटी, फूहड़,
 लुथरी, बेसलीका ।

प्रा० गैया { (सं० गौ, गम्=जाना)
 गइया { स्त्री० गाय ।

प्रा० गैल पु० रास्ता, मार्ग, पैँडा,
 बाट ।

सं० गो (गम्=जाना) पु० स्त्री०
 गाय, गैया, धेनु, २ स्वर्ग, ३ कि-
 रण, ४ पृथ्वी, धरती, ५ पानी,

६ वाणी, बोली, ७ इन्द्रिय, ८
 स्वर्ग, किरण, ९ वज्र ।

प्रा० गोई (सं० गुप्त) गु० छिपा
 हुआ, गुप्त, क्रि० स० छिपाया ।

सं० गोकर्ण पु० पुरुष विशेष, मृग ।

सं० गोकुल (गो=गाय, कुल=स-
 मूह वा घर) पु० व्रज, मथुरा
 के पास एक गाँव जहाँ नन्दजी
 रहते थे और जहाँ श्रीकृष्ण
 ने अपना बालपन बिताया,
 श्रीकृष्ण का जन्मस्थान, २ गायों
 का समूह, ३ गायों के रहने की
 जगह ।

प्रा० गोखरू (सं० गोखुर, गो=
 गाय, खु=खुर) पु० एक पौधेका
 नाम, २ एक प्रकार का गहना ।

सं० गोचर (गो=इन्द्रिय, चर=च-
 लना जिसमें इन्द्रियाँ जाती हैं)
 पु० इन्द्रियों के विषय जैसे रूप,
 रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श, गु०
 जो इन्द्रियों से जाना जाय ।

प्रा० गोठ (सं० गुटिका) स्त्री०
 चौपड़ वा शतरंज की गोटी, २ सं-
 जाफ, कोर ।

प्रा० गोटा पु० सोना या चाँदी के
 बुने हुए तार, किनारी, तागतोड़ ।

प्रा० गोटी (सं० गुटिका) स्त्री०
 शीतला का दाग, चेचक का दाग ।

प्रा० गोड़ पु० पाँव, पैर, पिंडली,
 टाँग ।

प्रा० गोड़ना क्रि० स० खोदना,
खुर्चना ।

प्रा० गोण (सं० गोणी, गुण=बढ़ा-
ना) स्त्री० थैला, बोरा, अनाज
डालने का थैला ।

प्रा० गोत (सं० गोत्र) पु० वंश,
जात, कुल ।

सं० गोतम पु० एक ऋषिका नाम,
जिसने न्यायशास्त्र बनाया ।

सं० गोतमनारी स्त्री० गोतम की
स्त्री, अहल्या ।

प्रा० गोतिया { (गोत)गु० जातिभाई,
गोती } सम्बन्धी, कुटुम्बी ।

सं० गोत्र (गो=पृथ्वी, त्र=बचाना)
पु० गोत, कुल, वंश, जाति, रपहाड़ ।

सं० गोत्रज (गोत्र=गोत, जन्=पैदा
होना) पु० गोतिया, गोती, एक
गोत का, संबंधी ।

सं० गोतीति (गो=इन्द्रिय, अतीत=
परे) गु० जो इन्द्रियोंसे नहीं देखा
जाय, अगोचर ।

प्रा० गोद { (सं० क्रोड) स्त्री०
गोदी } अँकवार ।

सं० गोदान (गो=केश, गौ, दान=
देना) पु० मुण्डन, केशान्तरूप,
संस्कार भेद, अथास्य गोदानविधे-
रन्तरमितिरयुः, गौपुण्यकरना ।

प्रा० गोदपसारना बोल० माँगना,
जाँचना ।

प्रा० गोदलेना बोल० ले पालना,

बेटा करलेना, पोस पूत करना ।

सं० गोदावरी (गो=स्वर्ग, दा=देना)
स्त्री० एक नदी का नाम जो
दक्षिण में है ।

सं० गोधन (गो + धन) पु० गोरूप धन ।

सं० गोधूम पु० गेहूँ ।

सं० गोधूलि (गो=गाय, धूलि=रज,
अर्थात् जिस समय जंगल से शहर
में आने से गायों के पैर से रज
उड़ती है) स्त्री० संध्या, सायं-
काल, सूर्य के अस्त होनेका समय ।

प्रा० गोना { (सं० गोपन) क्रि०
गोचना } स० छिपाना ।

सं० गोप (गो=गाय, पा=पालना)
पु० ग्वाला, अहीर, घोसी ।

प्रा० गोप पु० गले में पहनने का
एक गहना ।

सं० गोपन (गुप्=छिपाना, बचाना)
पु० छिपाव, लुकाव, दुराव, बचाव ।

सं० गोपनीय (गुप्=छिपाना) र्म्य०
छिपाने योग्य, गुह्य ।

सं० गोपाल { (गो=गाय, पाल्=
गोपालक } पालना) पु० गोप,
ग्वाला, अहीर, गायों को पालने
वाला ।

सं० गोपी (गोप) स्त्री० ग्वालिन,
अहीरी ।

सं० गोपीनाथ (गोपी=ग्वालिन,
नाथ=स्वामी) पु० श्रीकृष्ण, गो-
पियों का पति ।

सं० गोप्य (गुप् + य, गुप् = छिपाना)

र्म० छिपाने योग्य ।

प्रा० गोबरगणेश गु० मोटा, स्थूल ।

प्रा० गोभी स्त्री० एक तरकारी और पौधे का नाम ।

सं० गोमती (गो = गाय वा पानी, मती = वाली) स्त्री० एक नदी का नाम ।

सं० गोमय (गो = गाय) पु० गोबर ।

सं० गोमायु (गो = बुरी वाणी, मा = फेंकना वा शब्द करना) पु० सियाल, गीदड़, शृगाल ।

सं० गोमुखी (गो = गाय, मुख = मुँह, जिसका मुँह गाय कासा है) स्त्री० बनातकी बनी हुई थैली जिसमें हिंदू लोग माला डालकर जप करते हैं, २ हिमालय पहाड़ों में एक गुफा जहाँसे गङ्गा निकली है, गङ्गोत्तरी ।

सं० गोमेध (गो = गाय, मेध = यज्ञ) पु० गायकी बली, गोवध यज्ञ ।

सं० गोरस (गो + रस) पु० दूध दही मट्ठा आदि ।

प्रा० गोरा (सं० गौर) गु० उजला, श्वेत, गौर ।

प्रा० गोरू (सं० गौ) पु० बैल, बछड़ा, गौ ।

सं० गोलक (गुल् + अक) पु० विधवासे जार पुत्र, २ कन्दुक, ३ गोलोक, ४ गुड़, ५ कलश, घड़ा जिसमें महसूल के रुपये पैसे डाले

जाते हैं, ६ नेत्रस्थान ।

प्रा० गोला (सं० गोल, गुल् = बचाना) पु० घेरा, मंडल, वृत्त, २ तोप का गोला, लोहे का गोल गोल पिंडा, ३ नारियलका गूदा, ४ अनाज रखनेका कोठा, खत्ता, अनाजकी मंडी ।

प्रा० गोलाकार (गोल + आकार) पु० गोलरूप ।

प्रा० गोली (सं० गोल) स्त्री० छोटा गोला ।

प्रा० गोलीमारना बोल० गोली चलाना, बंदूक चलाना, बंदूक छोड़ना, मारना ।

सं० गोवर्द्धन (गो = गाय, वर्द्धन = बढ़ानेवाला) पु० वृन्दावन में एक पहाड़ है जिसको जब इन्द्र ने कोप करके मूसलाधार मेह बरपाया था तब श्रीकृष्णने सब व्रजवासियों को बचाने के लिये अपनी अंगुली पर उठाया था ।

सं० गोविन्द (गो = वेद की भाषा, विद् = पाना अर्थात् जो वेदसे जाने जाते हैं अथवा गो = गाय, विद् = पाना अथवा गो = स्वर्ग, विद् = पाना अर्थात् जिसकी भक्ति करनेसे स्वर्ग पाते हैं) पु० श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु भगवान्, वेदलभ्य ।

सं० गोशाला (गो = गाय, शाला = जगह) स्त्री० गाय बाँधने की

जगह, खड़क, गाय का घर, गाय का बाड़ा ।

सं० गोष्ठ (गो=गाय, स्था=ठहरना) पु० गोशाला, गाय का बाड़ा ।

सं० गोष्ठी (गो=बोली, स्था=ठहरना अर्थात् जहाँ बहुत बातचीत होती है) स्त्री० सभा ।

प्रा० गोसैयाँ (सं० गोस्वामी) गुसैयाँ (पु० ईश्वर, परमेश्वर)

सं० गोस्वामी (गो=स्वर्ग वा इन्द्रिय वा गाय, स्वामी=मालिक) पु० ईश्वर, २ गुरु, महन्त, ३ गुसाई ।

प्रा० गोह (सं० गोधा, गुध=ढकना) पु० बिसखपरा, टिकटिकी ।

प्रा० गोहार पु० हल्लड़, रौला ।

प्रा० गोहूँ (सं० गोधूम) पु० गेहूँ ।

प्रा० गौ पु० अवसर, सुभीता, अवकाश, दौंव, घात ।

सं० गौड़ पु० मध्य बंगाला, २ एक पुराने शहर का नाम जो पहले बंगाले की राजधानी था, ३ ब्राह्मणों की एक जात ।

सं० गौड़ी (गुड़) स्त्री० गुड़की बनी हुई मदिरा ।

सं० गौण भा० पु० अमुख्य, जो ठीक नहीं ।

प्रा० गौन (सं० गमन) पु० जाना, गवन, गमन, कूच, बढ़ाई ।

प्रा० गौना (सं० गमन) पु० ब्याह के कुछ महीने अथवा बरस के

पीछे दुलहिन को अपने घर लाना, रखसती ।

सं० गौर (गु अथवा गुरु=जाना अर्थात् जिसमें मन जाता है) गु० गोरा, श्वेत, उजला ।

सं० गौरव (गुरु=बड़ा) भा० पु० बढ़ाई, गुरुता, मान ।

प्रा० गौरिया स्त्री० चिड़िया ।

सं० गौरी (गौर) स्त्री० पार्वती, गिरिजा, २ आठ बरस तककी कन्या, ३ एक रागिणी का नाम, ४ गोरेश्वर की, ५ तुलसी, ६ गोरोचन ।

सं० गौरीश (गौरी=पार्वती, ईश=पति) पु० महादेव, शिव ।

प्रा० ग्यारह (सं० एकादश) गु० इगारह (ग्यारह, एकादश, ११)

सं० ग्रथित (ग्रन्थ=गूँथना) र्म० गूँथा हुआ, बँधा हुआ, पिरोया हुआ, मुनसलिक ।

सं० ग्रन्थ (ग्रन्थ=जोड़ना, इकट्ठा करना) पु० पुस्तक, शास्त्र, २ गुरु नानक की बनाई हुई सिक्खों की धर्मपुस्तक ।

सं० ग्रन्थकर्त्ता (ग्रन्थ=शास्त्र, कर्त्ता ग्रन्थकार) वा कार=बनानेवाला, कृ=करना) पु० शास्त्र बनानेवाला, पुस्तक बनानेवाला ।

सं० ग्रन्थि (ग्रन्थ=जोड़ना, बाँधना) स्त्री० गाँठ, सन्धि, जोड़ ।

सं० ग्रस्त (ग्रस=खाना) र्म० खाया

हुआ, लियाहुआ, पकड़ाहुआ ।
 सं० ग्रह (ग्रह=लेना) पु० सूर्य,
 चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र,
 शनैश्चर, राहु और केतु ये नवग्रह,
 नौग्रह, ग्रहदशा=शनैश्चरी, बुरे
 दिन, ग्रहपीड़ा ।

सं० ग्रहण (ग्रह=लेना) पु० लेना,
 पकड़ना, २ गहन, सूर्य और चाँद
 को राहु के ग्रसन का समय, सूर्य
 और चाँदके बीच में धरती के आने
 से जब धरती की छाया चाँद में
 पड़ती है तब चन्द्रग्रहण होता है
 और जब धरती और सूर्य के बीच
 में चाँद आजाता है तब उसको
 सूर्यग्रहण कहते हैं ।

सं० ग्राम (ग्रस्=खाना, अर्थात् जहाँ
 खाने पीने के लिये कुछ मिले)
 पु० गाँव, बस्ती, खेड़ा, पुरा, २
 समूह, बहुतायत ।

सं० ग्राम्य (ग्राम=गाँव) गु० गाँव
 का वासी, गाँवार, असभ्य, मूर्ख,
 ग्राम्य भाषा, गाँवरू बोलचाल,
 गाँव की बोली ।

सं० ग्रास (ग्रस्=खाना) पु० कवल,
 कौर, कवर, लुकमा ।

सं० ग्राह (ग्रह=लेना) पु० हाँगर,
 मगरमच्छ, घड़ियाल, कुम्हीर ।

सं० ग्राहक (ग्रह=लेना) क० पु०
 लेनेवाला, मोल लेनेवाला, ग्राहक,
 खरीदार ।

सं० ग्राही क० पु० लेनेवाला, खरी-
 दार ।

सं० ग्राह्य (ग्रह=लेना) र्म० लेने
 योग्य, ग्रहण करने योग्य ।

सं० ग्रीवा (गृ=निगलना) स्त्री०
 गरदन, गला, कंठ ।

सं० ग्रीष्म (ग्रस्=खाना वा पक-
 डना) स्त्री० गर्मी की ऋतु (ऋतु
 शब्द को देखो) ।

सं० ग्लानि (ग्लै=मलिन होना वा
 हर्ष का नाश करना) स्त्री० धिन,
 नफरत, घृणा, २ थकावट, माँदगी ।

प्रा० ग्वाल } (सं० गोपाल) पु०
 ग्वाला } अहीर, गोप ।

प्रा० ग्वालिन (ग्वाल) स्त्री० गोपी,
 अहीरी ।

प्रा० ग्वैड़ } क्रि० वि० पास, समीप,
 ग्वैड़े } निकट ।

प्रा० ग्वैड़ा पु० नगर का आसपास ।

सं० ग्लौ पु० प्रकाश, कपूर, चन्द्रमा,
 हर्ष, आनन्द ।

घ

सं० घ पु० घंटा, २ वर्षरशब्द, ३
 मेघ, घाम ।

प्रा० घर्घरा पु० घाँघरा, लहँगा, साया ।

सं० घट (घट्=बनाना) पु० घड़ा,
 २ देह, कूट, कपट, कुम्भराशि ।

सं० घटक (घट् + अक) क० पु०
 मध्यस्थ, दलाल, बिचवैया, फलोत्प-
 त्ति, कार्यकर्ता, योजक, मिलानेवाला ।

प्रा० घट पु० मन, जी, अन्तःकरण ।
सं० घटज (घट=घड़ा, जन्=
पैदा होना) पु० अगस्त्य ऋषि,
कुंभज ।

सं० घटयोनि (घट=घड़ा, योनि=
पैदा होनेकी जगह) पु० अगस्त्य
ऋषि जो घड़े में पैदा हुए ।

प्रा० घटती (घटना) स्त्री० कमती,
घटी, टोटा ।

प्रा० घटना क्रि० अ० कम होना,
कमती, न्यून होना, २ योजना,
हादसा, वाकिया, संयोग ।

प्रा० घटाव } (घट=इकट्ठा होना)
घटनि } स्त्री० बादलोंका समूह,
बादलोंका उमड़ना, बादल,
२ समूह, आडम्बर ।

सं० घटाटोप (घटा=समूह, आटोप
=ढकना) पु० पालकी अथवा रथ
के ढकनेका कपड़ा, बहुत बादल ।

प्रा० घटाना क्रि० स० कम करना,
थोड़ा कर देना ।

प्रा० घटाव भा० पु० कमती, न्यूनता,
उतार, २ घटाने का चिह्न, ऋण ।

प्रा० घटिया गु० थोड़े मोल का,
सस्ता ।

प्रा० घटी स्त्री० घाटा, हानि, नुक-
सान ।

सं० घटी } (घट्=बनाना) स्त्री०
घटिका } घड़ी, साठ पल, मुहूर्त,
२ छोटा घड़ा ।

सं० घट्ट (घट्=बनाना) पु० घाट,
२ रस्ता ।

प्रा० घड़घड़ाना क्रि० अ० गर्जना,
कड़कड़ाना ।

प्रा० घड़ना क्रि० स० गढ़ना, बना-
ना, गढ़ना बनाना या और कोई
धातु को गढ़ना ।

प्रा० घड़ा (सं० घट) पु० मिट्टी
का बरतन, गगरा, कलश, कुम्भ ।

प्रा० घड़ियाल (सं० घटिका वा घटी)
स्त्री० घण्टा, २ मगरमच्छ, कुंभीर ।

प्रा० घड़ी (सं० घटी) स्त्री० साठ
पल का समय, चौबीस मिनट,
२ समय जानने की कल ।

प्रा० घड़ीमेंतोला घड़ीमेंमाशा
बोल० यह उस आदमी के लिये
बोला जाता है जिसका स्वभाव
या मन घड़ी घड़ी में बदलता हो ।

सं० घण्टा (हत्=मारना) पु० घड़ी,
घड़ियाल ।

सं० घण्टाली (घण्टा) स्त्री० छोटी
घण्टी जो बैलों के गले में डालते
हैं, घण्टी ।

सं० घन (हन्=मारना) पु० बादल,
घटा, बादलों का समूह, २ हथौड़ा,
निहाई, ३ हिसाब में एकही अंक
को उसीसे तीन बार गुणने को
घन कहते हैं जैसे ३ का घन २७,
४ रेखागणितमें ऐसी चीज़ जिसमें
लंबाई, चौड़ाई और मुटाई ये तीनों

पाई जायँ, गु० ठोस, दृढ़, निविड़,
गहरा, घना ।
सं० घनघोर (घन=बादल, घोर=
डरावना) पु० गहरा बादल, घटा,
घनगर्ज, डरावना शब्द ।
सं० घननाद (घन=बादल, नाद=
शब्द) पु० रावण का बेटा, मेघ-
नाद, इन्द्रजित् ।
सं० घनमूल (घन + मूल) पु० घन
का मूल, जिस संख्या का घन किया
गया, जैसे २७ का घनमूल ३ ।
सं० घनरस पु० सघन, गोंद, अव-
लेह, द्रव, गुर्च, कपूर, जल, सिद्धरस ।
सं० घनश्याम (घन=बादल, श्याम
=काला) पु० श्रीकृष्ण, २ काली
घटा, गु० बादल जैसा काला ।
सं० घनसार पु० कपूर, पारा, जल ।
प्रा० घना (सं० घन) गु० गहरा,
सघन, २ बहुत, ढेर ।
प्रा० घनेरा { (सं० घन) गु० बहुत,
घनेरी } घनेरी, अधिक, गुंजान,
बहुतघनी ।
प्रा० घवराना कि० अ० व्याकुल
होना, हड़बड़ाना ।
प्रा० घबराहट (घबराना) भा०
स्त्री० हड़बड़ी, भंभट, धड़का,
व्याकुलता, बेकली, उलभेड़ा,
हलचल ।
प्रा० घवरि पु० गुच्छा ।
प्रा० घमंड पु० अहंकार, गर्व, अभि-

मान, दर्प, गरूर ।
प्रा० घमंडी गु० अभिमानी, गर्वीला ।
प्रा० घमसान (सं० घोरश्मशान)
पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम, बड़ी
लड़ाई ।
प्रा० घमोई स्त्री० नरसल, नरकट,
बेत, सरकण्डा, नल ।
प्रा० घर (सं० गृह) पु० मकान,
रहने की जगह, वास, वासा, डेरा,
२ खाना, खन ।
प्रा० घरघालना बोल० उजाड़ना,
नाश करना, घर नाश करना ।
प्रा० घरचलाना बोल० घरका खर्च
चलाना, घरका काम चलाना ।
प्रा० घरजाना बोल० घरका नाश
होना, उजड़ना, बिगड़ना ।
प्रा० घरडुबोना बोल० किसीका
घर बिगाड़ना, किसी के घराने
का नाश करना ।
प्रा० घरडूबना बोल० नाश होना,
घरका नाश होना, उजड़ना ।
प्रा० घरबैठना { बोल० सर्वस्वनाश
घरबैठजाना } होना, सब नाश
होजाना, घर डूबना, घरजाना ।
प्रा० घरहोना बोल० स्त्री और पुरुष
के आपसमें प्रीतिहोना या मन
मिलना ।
प्रा० घरणी { (सं० गृहिणी) स्त्री०
घरनी } घरवाली, लुगाई,
भार्या, पत्नी, स्त्री ।

प्रा० घरनई (सं० घटनौका, घट= घड़ा, नौका=नाव) स्त्री० घड़ोंसे बनाई हुई नाव, चौघड़ा, बेड़ा ।
 प्रा० घरबार पु० घराना, कुनवा ।
 प्रा० घरबारी गु० गृहस्थी, कुटुंबी ।
 प्रा० घराना पु० कुटुम्ब, घरके लोग ।
 प्रा० घरी स्त्री० तह, घड़, चुनत, रघड़ी ।
 प्रा० घरेला (घर) गु० घरका, पालतू ।
 सं० घर्म (घृ=सींचना) पु० गर्मी, घाम, धूप ।
 सं० घर्षक (घृष् + अक) क० पु० घिसनेवाला, घिसैया ।
 सं० घर्षित (घृष् + इत) र्म्य० पु० घिसा हुआ ।
 सं० घर्षण (घृष्=रगड़ना) पु० घिसना, रगड़ना ।
 प्रा० घसना } (सं० घर्षण) क्रि० सं०
 घिसना } रगड़ना, मलना ।
 प्रा० घसियारा (सं० घासहारक) पु० घास काटनेवाला ।
 प्रा० घसीटना (सं० घृष्=रगड़ना) क्रि० सं० खींचना, खींचलेजाना ।
 प्रा० घांटी स्त्री० टेंटुवा, नरेटी ।
 प्रा० घाघ गु० बूढ़ा, जिसने बहुत देखा सुना हो ।
 प्रा० घाघरा (सं० घर्घर, घृ=सींचना) स्त्री० सरयू नदी का नाम, २ पु० लहँगा ।
 प्रा० घाट (सं० घट्ट) पु० नदी या

तालाब आदि में नहाने की अथवा उतरने की जगह ।
 प्रा० घाट पु० डौल, रूप, सूरत, २ घटी, कमी, गु० कम ।
 प्रा० घाटा पहाड़का चढ़ाव, पहाड़ में रास्ता, २ घटी, कमी, नुकसान ।
 प्रा० घाटिया (घाट) पु० घाटपर रहनेवाला, ब्राह्मण, गङ्गापुत्र ।
 प्रा० घाटी (सं० घट्ट) स्त्री० पहाड़ में गली, पहाड़ में तङ्ग रास्ता, दरा ।
 सं० घात (हन्=मारना) पु० मारना, चोट, प्रहार, हत्या, दाँव, मौक़ा ।
 प्रा० घात स्त्री० दाँव, विचार, इरादा, दाँव की जगह, पेच ।
 प्रा० घातकरना बोल० घात लगा-ना, घातमें रहना, छिपके बैठना ।
 प्रा० घातनाकना बोल० गौँतकना, अवसर देखना, दाँव पाना ।
 सं० घातक } (हन्=मारना) क० पु०
 घातुक } मारनेवाला, हत्यारा ।
 सं० घाती (हन्=मारना) क० पु० मारनेवाला, स्त्री० घातिनी=नाश करनेवाली, मारनेवाली ।
 प्रा० घानी स्त्री० कोल्हू, तिलसे तेल निकालने की कल, २ ऊख से रस निकालने की कल ।
 प्रा० घाम (सं० घर्म) स्त्री० धूप, गर्मी ।
 प्रा० घामड़ गु० भोला, सीधा, उल्लू ।
 प्रा० घायल (घाव=चोट, सं० ला=लेना) गु० घाव लगा, जखमी ।

प्रा० घालक क० पु० नाश करनेवाला ।

प्रा० घालना क्रि० स० उजाड़ना,
नाश करना, २ डालना, घुसेड़ना ।

प्रा० घाला मर्म० नाश किया ।

प्रा० घाव पु० चोट, व्रण, जखम ।

सं० घास (घस्=खाना) पु० तृण,
फूस, चारा, गोरू, गाय आदि
का खाना ।

प्रा० घिघियाना डरसे या ख़शी से
बोल नहीं निकलना, २ फुस-
लाना, बहलाना, ३ लड़खड़ाना,
तुतलाना, हकलाना, ४ लल्लोपत्तो
करना, गिड़गिड़ाना, बहुत गरीबी
से प्रार्थना करना, बिनती करना ।

प्रा० घिघीबँधजाना बोल० तुत-
लाना, हकलाना, २ मारे लाजके या
डरके मुँहसे बोल नहीं निकलना ।

प्रा० घिण् (सं० घृणा) स्त्री० न-
घिन } करत, गलानि, अवज्ञा,
घिन्ना ।

प्रा० घिया स्त्री० घियातुरई, एक
तरकारी का नाम ।

प्रा० घिरना क्रि० अ० घिरजाना,
बन्द होजाना, घेरे में आजाना,
बादलों का उमड़ना ।

प्रा० घिरनी (सं० घूर्ण=घूमना) स्त्री०
चरखी, छोटा पहिया, बल विद्या
में एक कल का नाम, २ रस्सी
बटने की कल, ३ लोटन कबूतर,
एक तरह का कबूतर ।

प्रा० घिरनीखाना बोल० लोटन
खाना, गोल गोल जाना, गोल
घूमना ।

प्रा० घी (सं० घृत) पु० घृत, घी ।

प्रा० घुंड़ी स्त्री० बटन, बूताम ।

प्रा० घुटना पु० ठेवना, गोड़ा, जानू ।

प्रा० घुटनोंचलना बोल० टिहुनों से
चलना (जैसे बालक), खिसकना ।

प्रा० घुड़ (घोड़ा) पु० घोड़ा ।

प्रा० घुड़चड़ा पु० घोड़े पर चढ़ने
वाला, सवार ।

प्रा० घुड़दौड़ स्त्री० घोड़ों का दौ-
ड़ना, वह जगह जहाँ शर्त करके
दो दो आदमी घोड़ा दौड़ाते हैं ।

प्रा० घुड़बहल चार पहियों का रथ
जिसमें घोड़े जुते हैं ।

प्रा० घुड़मुँहा गु० जिसका मुँह घोड़े
कासा हो ।

प्रा० घुड़साल पु० तबेला, अस्तबल ।

सं० घुण (घुण्=घूमना) पु० एक
कीड़ा जो लकड़ी को और अनाज
को खाकर थोथा कर डालता है ।

प्रा० घुणा (सं० घुण) गु० घुणका
खाया हुआ, थोथा, पोला ।

सं० घुणाक्षरन्याय (घुण + अक्ष-
र + न्याय) पु० घुनके खाने से
जो लकड़ी में कभी अक्षर का सा
रूप बन जाता है तात्पर्य यह है
कि कोई वस्तु अकस्मात् संयोग से
माप्त होजाय तो ऐसे स्थल पर

यह कहा जाता है ।

प्रा० घुप गु० अन्धेरा ।

प्रा० घुमँड़ना क्रि० अ० बादलों का घिरना ।

प्रा० घुमाना (घूमना) क्रि० स० गोल गोल फिराना, फिराना, २ बहकाना ।

प्रा० घुरकना (सं० घुर=डरना) घुरकाना (क्रि० स० धमकाना, भिड़की देना, डराना ।

प्रा० घुरकी (घुरकना) स्त्री० धमकी, भिड़की ।

प्रा० घुरनाना क्रि० स० खरीटा मारना, नाक खरखराना ।

प्रा० घुसना क्रि० अ० पैठना, भीतर जाना ।

प्रा० घूँगर (पु० लहरायेहुये बाल, घूँघर (मुड़ेहुये बाल, अँगूठिये बाल ।

प्रा० घूँघची (सं० गुञ्जा) स्त्री० घुंगची (लाल चिरमिट्टी, रत्ती ।

प्रा० घूँघट पु० आँचल की आड़, बुरका, ओढ़नी के आँचल से मुँह ढाँकना ।

प्रा० घूँघटकाढ़ना बोल० ओढ़नी से मुँह ढाँकना, लाज करना ।

प्रा० घूँघटकरना बोल० ओढ़नीसे मुँह ढाँकना, बुरका डालना, मुँह छिपाना, लाज करना ।

प्रा० घूँघरू (सं० घघेरा) पु० घूँघरू (छोटी घंटी, शुद्धघंटिका, पाँव में पहनने का एक प्रकार का गहना ।

प्रा० घूँस स्त्री० बड़ा मूसा, बड़ा चूहा ।

प्रा० घूँसा पु० मुक्का, मुक्की, धप्पा, मूका ।

प्रा० घूँघू पु० उल्लू एक जानवरका नाम ।

प्रा० घूमघुमाला बोल० घेरदार ।

प्रा० घूमना (सं० घूर्ण=घूमना) क्रि० अ० फिरना, गोल गोल फिरना, चकर खाना ।

प्रा० शिरघूमना बोल० शिरमें कुछ दर्द होना, शिर फिरना, शिर चकराना ।

प्रा० घूरना क्रि० स० ताकना, ताक लगाना, २ कोपकी आँखसे देखना, क्रोध से देखना ।

सं० घूर्णन (घूर्ण=घूमना) भा० पु० भ्रमण, घूमना ।

सं० घूर्णित क० पु० भ्रमित ।

प्रा० घूस स्त्री० बड़ा मूसा, २ रिशवत, अकोर, मुँहभरी, मुँहतोपी ।

सं० घृणा (घृ=सींचना) स्त्री० घिन, ग्लानि, नफरत, अवज्ञा, २ धिक्कार, ३ करुणा, दया ।

सं० घृणित (घृण + इत) र्भ० निन्दित, अनादरित, गन्दा, मकरूह ।

सं० घृत (घृ=सींचना) पु० घी, घिउ, सर्पिष ।

सं० घृष्ट (घृष्=घिसना) र्ममं घर्षित,
घिसाहुआ ।

सं० घृष्टि (घृष्+ति) भा० पु०
घिसना, मारना, शूकर, स्त्री०
विष्णुक्रान्ता, शूकरी, सुवरी ।

प्रा० घेंटा पु० सुवरका बच्चा ।

प्रा० घेगा } पु० गलगण्डरोग, गले
घेगा } का रोग ।

प्रा० घेर (घेरना) पु० घेरा, मण्डल ।

प्रा० घेरा (घेरना) पु० मण्डल,
गोलाकार, २ नाकाबन्दी, छेकना,
किलाबन्दी, बेह, अहाता ।

प्रा० घेराडालना बोल० चारोंओर
से छेकना, घेरलेना, रोकलेना,
नाकाबन्दी करना, अहाताकरना ।

प्रा० घेरे में पड़ना बोल० घिरजा-
ना, घेरेमें आजाना, बन्द होजाना ।

प्रा० घेवर पु० एक तरहकी मिठाई ।

प्रा० घोँघा पु० एक जानवर का
नाम, शम्बूक ।

प्रा० घोँटना } कि० स० साफ क-
घोटना } रना, चिकना कर-
ना, ओपना, रगड़ना, मलना,
२ पु० लोढ़ा, पत्थर जिससे चीज
घोटी जाती है ।

प्रा० घोँसला पु० खोँता, पखेरुओं
का वासा, पखेरुओं का घर ।

प्रा० घोम्बना (सं० घुष्=शब्द क-
रना) कि० स० दोहराना, पाठ
सुनाना, बराबर कहना, चिन्तना,

जोर से बोलना ।

प्रा० घोटन भा० घोटना, हल करना ।

प्रा० घोट्टा (घोटना) पु० घोटने
की लकड़ी ।

प्रा० घोड़ा (सं० घोटक, घुड़=रोक-
ना वा फिरना) पु० एक जानवर
का नाम, अश्व, तुरंग, बाजि,
घोटक, २ बंदूक की टोंटी ।

प्रा० घोड़े को सरपट हाँकना
बोल० घोड़े को बहुत जल्दी से
दौड़ाना ।

सं० घोर (घुर=डरावना होना) गु०
डरावना, भयानक, २ गहरा, ३
पु० शिव, महादेव, ४ डरावना
काम, ५ ढोल का शब्द ।

सं० घोरनिद्रा (घोर=गहरी, निद्रा
=नींद) स्त्री० गहरी नींद ।

सं० घोल (घुड़=रोकना) पु० मट्टा,
झाँझ, मही ।

प्रा० घोलघुमाव पु० टालमटोल,
बहाना, छल ।

सं० घोष (घुप्=उच्चस्वर से बोलना)
धि० पु० अहीरों का ग्राम, आभी-
रपल्ली, शब्द, अहीर, गोपाल ।

सं० घोषक क० पु० विलापकर्ता, शब्द-
कर्ता, बुलानेवाला, रटनेवाला ।

सं० घोषण भा० पु० याद करना,
रटना, प्रचार करना ।

सं० घोषणपत्र पु० एलान, इशतिहार ।

प्रा० घोसी (सं० घोस) पु० मुस-

लमान ग्वाला ।

सं० प्राण (प्रा=सूँघना) पु० सुगन्ध, गन्ध, बू, बास, सूँघना, २ नाक, नासिका ।

सं० घ्राणेन्द्रिय (घ्राण + इन्द्रिय) ए० स्त्री० सूँघने की इन्द्रिय, नाक, नासिका ।

सं० घ्रायक क० पु० गंधग्राहक, सूँघनेवाला ।

च

सं० च पु० शिव, २ चाँद, ३ चौर, ४ कलुषा, ५ दुष्ट, ६ निर्वाज-समुच्च० और, फिर, पुनि ।

फ्रा० चंग स्त्री० गुड्डी, पतंग, २ बीन, किंगरी, मुरचंग ।

प्रा० चंगा गु० नीरोगी, नीरोग, सुखी, भलाचंगा ।

प्रा० चंगाकरना बोल० अच्छा करना, बीमारी से अच्छा करना ।

प्रा० भलाचंगा बोल० नीरोग, अच्छा, सुखी ।

प्रा० चंगेर पु० फूल रखनेका बरतन ।

प्रा० चंगेरा पु० खाँचा, कठरा, टोकरा, स्त्री० चंगेरी, टोकरी, खचिया, कठरी ।

प्रा० चंचनाना क्रि० अ० टीसमारना, सनसनाना, २ चनचन ऐसा शब्द करना ।

प्रा० चंडोल पु० डोला, पालकी, डोली, चौपाला, २ एक पखेरू का

नाम, ३ एक खिलौने का नाम ।

प्रा० चँदला गु० गंजा ।

प्रा० चँदवा पु० चाँदनी, छोटा साभियाना ।

प्रा० चंदा (सं० चन्द्र) पु० चाँद, २ बाझ, उगाही, लगती, लगान, बिहरी ।

प्रा० चँदेला (सं० चंद्र) पु० राज-पूतों की एक जात जो अपने तई चंद्रवंशी बतलाते हैं ।

प्रा० चँवर (सं० चमर) पु० सुरहगाय की पूँछ का बनाहुआ चमर जो राजाओं के शिर पर मक्खी आदिको दूर करनेके लिये हिलाया जाता है ।

प्रा० चक (सं० चक्र) पु० जागीर, इजारा, जोती बोई हुई धरती ।

प्रा० चकई (सं० चक्रवाकी) स्त्री० चकवी, २ (सं० चक्र) एक खिलौने का नाम ।

प्रा० चकनाचूर पु० टुकड़ा, टूक, छोटेछोटे टुकड़े, करतल ।

प्रा० चकनाचूरहोना बोल० टूक टूक होना, चूरचूर होना, टुकड़े टुकड़े होना ।

प्रा० चकनाचूरकरना बोल० चूर चूर करना, टुकड़े टुकड़े करना, टूक टूक करना ।

प्रा० चकमा पु० एक भाँतिका ऊनी कपड़ा, २ मोजा ।

प्रा० चकरवा पु० धूमधाम, चकरग ।

प्रा० चकरबामचाना बोल० धूम
धाम करना ।

प्रा० चकरा पु० दाल का बड़ा ।

प्रा० चकराना क्रि० अ० अचंभे में
होना ।

प्रा० चकरानी (चाकर) स्त्री० टह-
लुई, दासी ।

प्रा० चकला (सं० चक्र) पु० पतु-
रिया का घर, वेश्यालय, २ एक
भाँतिका कपड़ा जो रेशम और रूई
से बनाया जाता है, गु० चौड़ा ।

प्रा० चकला (सं० चक्रल) पु० देश
का एक भाग जिसमें बहुतसे पर-
गने होते हैं, मंडल, प्रदेश ।

प्रा० चकलेदार पु० चकले का
हाकिम ।

प्रा० चकवा (सं० चक्रवाक) पु०
एक पखेरू का नाम, २ (सं० चक्र)
भँवर ।

प्रा० चकाचौंध { स्त्री० तिरमिरी,
चकाचौंधी } अंधियारी ।

प्रा० चकावी स्त्री० भैंसियादाद ।

सं० चक्रित (चक्=अचंभा करना
वा भ्रान्ति करना) पु० अचंभित,
अचंभे में विस्मित, २ व्याकुल,
घबराया हुआ, डरा हुआ ।

प्रा० चकोत्रा पु० एक फलका नाम ।

सं० चकोर (चक्=तृप्त होना, प्रसन्न
होना) पु० एक पखेरू का नाम
जो चाँद को देखकर बड़ी प्रसन्नता

से आकाश में ऊँचा उड़ता है ।

प्रा० चकौंदा { (सं० चक्रमर्दक,
चकौंड़) चक्र=गोल गोल
दाद, मर्दक=नाश करनेवाला)
पु० एक पौधा जो दाद की दवाई
में काम आता है ।

प्रा० चक्का (सं० चक्र=गोल) पु० दही
जमा हुआ, दूध, २ गाड़ी का पहिया,
३ घेरा, गु० गोल, गाढ़ा, ४ जमा
हुआ (जैसे दही) ।

प्रा० चक्की (सं० चक्र=गोल) स्त्री०
पाट, जाँता, चाकी, २ खुरिया,
चपनी, घुटने की ढकनी, ३ गाज,
बिजली, ४ लड़कों के एक खि-
लौने का नाम ।

प्रा० चक्क पु० छुरी, चाकू ।

प्रा० चक्कर (सं० चक्र) पु० भँवर,
२ बगूला, वण्डर, ३ एक गोल
शस्त्र जिसको विशेष करके सिक्ख
लोग रखते हैं, ४ गोल चाल,
कावा, ५ विपत्ति, जंजाल, घब-
राहट, ६ ओर, तरफ, दिशा ।

प्रा० चक्करदेना बोल० फिराना,
घुमाना, २ ठगना, छलना, धोखा देना ।

प्रा० चक्करखाना बोल० फिरना,
घूमना, २ धोखे में आना, ठगा
जाना ।

प्रा० चक्करमारना बोल० गोलगोल
घुमाना, फिराना ।

प्रा० घोड़ेको चक्कर देना बोल० कावा

देना, घोड़ेको गोल गोल फिराना ।
 सं० चक्र (कृ=करना) पु० पहिया,
 २ कुम्हार का चाक, ३ विष्णु का
 अस्त्र, ४ घेरा, वृत्त, ५ व्यूहरचना,
 सेना को चक्रके आकार पर सजा-
 ना, ६ हाथ में एक चिह्न जो भाग्य-
 वानीका लक्षण है, ७ भीड़, ८
 सेना, ९ भूमण्डल, देश, मुल्क,
 राज्य, १० चक्रवा पक्षी, वजीर ।
 सं० चक्रपाणि (चक्र=मुदर्शनचक्र,
 पाणि=हाथ) पु० विष्णु जिनका
 अस्त्र मुदर्शनचक्र ।
 सं० चक्रवर्ती (चक्र=सारी पृथ्वी,
 वर्ती=होनेवाला, वृत्=होना) क०
 पु० सार्वभौम, सब पृथ्वीका राजा,
 २ वंगालके ब्राह्मणोंकी एक पदवी ।
 सं० चक्रवाक (चक्र=इस शब्दकरके,
 वाक=कहा जावे, वच्=कहना) पु०
 चक्रवा, एक तरह का पखेरू ।
 प्रा० चक्रित (सं० चकित) गु०
 अचंभित, विस्मित, अचंभे में ।
 सं० चक्षुः (चक्ष्=देखना) पु० आँख ।
 प्रा० चक्ष (सं० चक्षु) स्त्री० आँख,
 चक्षु नेत्र, नयन, लोचन ।
 प्रा० चखाचखी स्त्री० बिगाड़, विरोध ।
 प्रा० चखाना पु० खिलाना, चसका
 देना ।
 प्रा० चखना (सं० चपण, चष्=
 चाखना) स्त्री० खाना) क्रि० स० स्वाद
 चीखना) लेना, रस लेना,

थोड़ा थोड़ा खाना ।
 प्रा० चङ्गा गु० अच्छा, नीरोग, सुखी ।
 प्रा० चचेरा (चचा) गु० चचा का,
 जैसे चचेराभाई=चचेका बेटा भाई,
 चचेरीवहन=चचेकी बेटाी वहन ।
 प्रा० चचोरना क्रि० स० चूसना,
 लोहू चूसना, निचोड़ना ।
 सं० चञ्चरीक (चर=जाना) पु०
 भौरा, भ्रमर ।
 सं० चञ्चल (चञ्च=चाल, ला=लेना
 वा चञ्च् अथवा चल=चलना)
 गु० उतावला, चपल, अस्थिर,
 २ खेलवाड़ी ।
 प्रा० चञ्चलाई (सं० चञ्चलता)
 भा० स्त्री० उतावली, चपलता,
 अस्थिरता ।
 सं० चञ्चु (चञ्च्=जाना) स्त्री०
 चोंच, मिन्कार, ठोंठ ।
 प्रा० चट (सं० भटिति) क्रि० वि०
 भटपट, तुरंत, उसीदम, स्त्री०
 रगड़, पिसाव, २ तोड़ने का शब्द,
 तड़ाका, धड़ाका ।
 प्रा० चटदे तोड़ना } बोल० चट-
 चटसे तोड़ना } काना, तड़-
 काना, तोड़ना ।
 प्रा० चट (चाट) स्त्री० चाट, स्वाद,
 खाना ।
 प्रा० चटकरना बोल० खाजाना,
 उड़ादेना ।
 प्रा० चटहोना बोल० पूरा होना,

खायाजाना ।
 प्रा० चटक स्त्री० कड़क, कड़ाका,
 २ फुरती, जल्दी, चमक, भड़क,
 शोभा, पिपरामूल ।
 सं० चटक (चट्=तोड़ना) पु०
 चिड़ा, गौरैया ।
 प्रा० चटकना { क्रि० अ० तड़कना
 चटखना } (जैसे कोयले अ-
 धवा जलती हुई लकड़ी का),
 फटना, टूटना, चिरना ।
 प्रा० चटकीला गु० चमकीला, भ-
 ढकीला ।
 प्रा० चटपट (सं० भटिति=जल्दी,
 पट्=जाना) क्रि० वि० भटपट,
 तुरंत ।
 प्रा० चटपटाना (चटपट) क्रि०
 अ० धवराना, व्याकुल होना, फड़-
 फड़ाना, तड़फड़ाना ।
 प्रा० चटपटी (चटपट) स्त्री० उतावली,
 जल्दी, हड़बड़ी, धवराहट ।
 प्रा० चटशाल (सं० चटुशाला वा
 छात्रशाला, चटु वा छात्र=लड़का,
 शाला=जगह) स्त्री० पाठशाला,
 पढ़ने की जगह, मदर्सा ।
 प्रा० चटार्ह स्त्री० बोरिया पाटी ।
 प्रा० चटाका पु० धड़ाका, कड़ाका ।
 प्रा० चटान { स्त्री० शिला, पत्थर,
 चट्टान } पाषाण ।
 प्रा० चटिया (सं० छात्र) पु० वि-
 द्यार्थी, शिष्य, छात्र, चेला, शार्गिर्द ।

सं० चटु पु० सुन्दर, मनोहर, प्रिय,
 चीखना, गर्जना, चिल्लाना, चि-
 ग्यारना, पेट, तोंद ।
 सं० चटुल पु० मनोहर, सुन्दर,
 प्रिय, रूपवान्, पूर्ण, प्रसन्न, क-
 म्पित, पथिक, स्त्री० ज्योति, वि-
 द्युत्, विजली ।
 प्रा० चटोरा (चाटना) गु० पेड़,
 जीभचला, खाऊ ।
 प्रा० चट्टा (सं० चटु वा छात्र) पु०
 विद्यार्थी, पाठशाला का लड़का,
 स्कूल का लड़का ।
 प्रा० चड़चड़ाना क्रि० अ० तड़-
 कना, फटना ।
 सं० चड़ (चड़=कोप करना) पु०
 क्रोध, कोप, गु० क्रोधी, गुस्सेवर ।
 प्रा० चढ़नी (चढ़ना) स्त्री० बढ़ती,
 लाभ ।
 प्रा० चढ़ना क्रि० अ० ऊपर जाना,
 २ आगे बढ़ना, धावा मारना,
 चढ़ाई करना, ३ सवार होना ।
 प्रा० चढ़न्दार पु० चढ़नेवाला, चढ़-
 नेहारा, २ कर्णधार ।
 प्रा० चढ़ाई (चढ़ना) भा० स्त्री०
 धावा, चढ़ाव, हल्ला, हमला, २
 चढ़ने का भाड़ा ।
 प्रा० चढ़ाना क्रि० स० सवार क-
 रना, २ भेंट करना, बलिदान
 करना, ३ तार चढ़ाना, डोरी
 लगाना, ४ ढोल कसना,

५ ऊँचा करना, खड़ा करना,
६ कपड़े पर रंग चढ़ाना ।

प्रा० चढ़ाव (चढ़ना) भा० पु०
ऊँचाव, ऊँचाई, उठाव, पहाड़ में
ऊपर रास्ता, २ चढ़ाई, धावा,
३ बढ़ती, ४ समुद्र की वाढ़ ।

सं० चणक (चण्=देना) पु० चना,
वृट ।

सं० चण्ड (चडि=क्रोध करना) गु०
डरावना, भयानक, क्रोधित, तेज,
उग्र, तीखा, तीव्र, तीक्ष्ण, गर्म,
२ पु० एक दैत्य का नाम ।

सं० चण्डाल (चडि=क्रोध करना)
चाण्डाल } पु० नीच, कुजाति,
नीच ज्ञात का मनुष्य जिसका
बाप शूद्र और माँ ब्राह्मणी हो,
वर्णसंकर, श्वपच, निटुर, निर्देयी,
पापी, दुराचारी ।

सं० चण्डांशु (चण्ड + अंशु) क०
पु० सूर्य, आकाश ।

सं० चण्डिका (चडि=क्रोध करना)
चण्डी } स्त्री० दुर्गा, देवी,
काली, २ क्रोध करनेवाली स्त्री ।

सं० चण्डिल (चण्ड + इल) क०
पु० शिव, रुद्र, २ क्रोधी, ३ ना-
पित, नाई ।

सं० चण्डु (चण्ड + उ) पु० मूषक,
मर्कट, २ छोटा बन्दर ।

सं० चतुर (चत्=माँगना) गु० निपुण,
प्रवीण, स्थाना, सयाना, बुद्धिमान,

२ छली, कपटी, भूर्त, चालाक,
नटखट ।

सं० चतुर् (चत्=माँगना) गु०
चार ।

सं० चतुरस्र गु० चौखूँटा, चौकोन ।

प्रा० चतुर पु० बुद्धिमान, होशियार ।

प्रा० चतुराई (सं० चतुरता) भा०
स्त्री० निपुणता, प्रवीणता, स्थान-
पन, बुद्धिमानी, २ भूर्तता, कपट,
नटखटी, चालाकी ।

सं० चतुरंगिनी (चतुर्=चार, अ-
ङ्गिनी=अंगवाली) स्त्री० सेना
जिसमें हाथी, रथ, घोड़े और
पैदल चारों हों ।

सं० चतुरानन (चतुर्=चार, आनन
=मुँह) पु० ब्रह्मा ।

सं० चतुर्थ (चतुर्=चार) गु० चौथा ।

सं० चतुर्दशी (चतुर्=चार, दश=
दस) स्त्री० चौदस, चौदहवीं
तिथि ।

सं० चतुर्भुज (चतुर्=चार, भुज=
भुजा) पु० विष्णु, चारभुजा, २
चौखूँटा खेत, चौकोर, गु० चार
हाथवाला ।

सं० चतुर्मुख (चतुर्=चार, मुख
चतुर्वक्त्र } वा वक्त्र=मुँह) पु०
ब्रह्मा ।

सं० चतुर्वर्ग (चतुर्=चार, वर्ग=
समूह) पु० धर्म, अर्थ, काम,
मोक्ष ।

सं० चतुल पु० विश्वस्त, विश्वासी,
निष्कपट, मनोहर, सुन्दर ।

सं० चतुष्क स्त्री० मशकहरी अर्थात्
मशहरी, २ नदी विशेष, भील ।

सं० चतुष्पद (चतुर्=चार, पद=पाँव)
पु० पशु, चौपाया, मवेशी ।

सं० चतुष्पदी (चतुर्=चार, पद=
चरण) स्त्री० चारपदवाला छंद ।

सं० चतुष्पष्टि (चतुर्=चार, पष्टि=
साठ) स्त्री० चौंसठ ।

प्रा० चना (सं० चणक) पु० बूट,
झोला, चणा ।

प्रा० चन्द्र (सं० चन्द्र) पु० चाँद ।

सं० चन्दन (चदि=प्रसन्न होना)
पु० एक सुगन्धित लकड़ी, मल-
यागिरि का सुगन्धितकाठ, गन्ध-
सार, श्रीखंड ।

सं० चन्द्र (चदि=प्रसन्न होना वा
चमकना) पु० चाँद, चन्द्रमा,
चन्द्र, सोम, २ कपूर ।

सं० चन्द्रकला (चन्द्र=चाँद, कला=
अंश) स्त्री० चाँद का सोलहवाँ
अंश, १ अमृता, २ मानदा, ३ पूषा,
४ तुष्टि, ५ तुष्टि, ६ रति, ७ धृति, ८ श-
शिनी, ९ चन्द्रिका, १० कान्ति,
११ ज्योत्स्ना, १२ श्री, १३ प्रीति,
१४ अङ्गदा, १५ पूषणा, १६ पूर्णा ।

सं० चन्द्रगुप्त पु० राजा का नाम,
महानन्द राजा का पुत्र जो मुरा
नाम्नी नाइन से उत्पन्न हुआ

चाणक्य ब्राह्मण ने महानन्द को
पुत्रों सहित नाश करके चन्द्रगुप्त
को राजगद्दी दी ।

सं० चन्द्रमणि (चन्द्र=चाँद, मणि=
रत्न) पु० चन्द्रकान्तमणि, एक
रत्न का नाम ।

सं० चन्द्रमण्डल (चन्द्र=चाँद,
मण्डल=धेरा) पु० चाँद का
धेरा, चन्द्रलोक ।

सं० चन्द्रमा (चन्द्र=कपूर, मा=मापना
वा बराबर करना अर्थात् जो अपने
प्रकाश से सब चीजों को कपूर के
बराबर साफ कर दिखाता है) पु०
चाँद, २ एक ऋषि का नाम ।

सं० चन्द्रमुखी (चन्द्र=चाँद,
प्रा० चन्द्रमुखी (मुख=मुँह) स्त्री०
जिस स्त्री का मुँह चाँद कासा हो,
चन्द्रवदनी, सुमुखी, सुन्दरी ।

सं० चन्द्रमौलि (चन्द्र=चाँद, मौलि=
शिर वा शिखा) पु० शिव,
महादेव ।

सं० चन्द्रलौह पु० चाँदी, २ राँगा,
३ फूल ।

सं० चन्द्रवंशी (चन्द्र=चाँद, वंश=
घराना) पु० क्षत्रियों की एक जाति
जो अपने को चाँदसे पैदा हुए बत-
लाते हैं, पुरुरवा से हुआ वंश ।

सं० चन्द्रवदनी (चन्द्र=चाँद,
प्रा० चन्द्रवदनी (वदन=मुँह) स्त्री०
चन्द्रमुखी, सुन्दरी ।

सं० चन्द्रशाला (चन्द्र + शाला)

स्त्री० अट्टालिका, अटारी, गृह-
शिखर ।

सं० चन्द्रशेखर (चन्द्र=चाँद, शेखर=
शिरका गहना) पु० शिव, महादेव ।

सं० चन्द्रहार (चन्द्र=चाँद, हार=
माला) पु० गले में पहनने की माला ।

सं० चन्द्रहास (चन्द्र=चाँद, हास=
चमक, हस=हँसना अर्थात् जिसकी
चमक चाँद कीसी हो) स्त्री० तल-
वार, खड्ग, चमेली, कुमुदिनी ।

सं० चन्द्रायत (चन्द्र + आयत) पु०
गृहशिखर, छत, २ चाँदनी, छपा ।

सं० चन्द्रापीड पु० शिव, महादेव ।

सं० चन्द्रिका (चन्द्र) स्त्री० चाँदनी,
चाँद का उजाला, चाँद की जोत,
कौमुदी, ज्योति, प्रकाश ।

सं० चन्द्रिकापायिन् (चन्द्रिका +
पायिन्) क० पु० चकोर, २ पर्वत ।

सं० चन्द्रिल पु० शिव ।

प्रा० चपकन स्त्री० एक तरह का
अँगरखा ।

प्रा० चपकना क्रि० अ० चिपटना,
मिलना, जुड़ना ।

सं० चपट (चप्=लगना) स्त्री०
चपेट, धक्का ।

प्रा० चपटा गु० चौरस, सब ओर
से बराबर ।

प्रा० चपत स्त्री० थपेड़, धौल ।

प्रा० चपना क्रि० अ० शरमाना, ल-

जित होना, २ दबना, दबजाना ।

प्रा० चपनी स्त्री० ढकनी, ढपनी,
घुटने की ढकनी ।

प्रा० चपरासी पु० चपरास रखने
वाला, नौकर ।

सं० चपरि स्त्री० तुरंत, शीघ्र ।

सं० चपल (चप्=जाना) गु० चंचल,
उतावला ।

सं० चपला (चपल) स्त्री० लक्ष्मी,
२ बिजली, चंचला ।

प्रा० चपाती स्त्री० रोटी, फुलका ।

प्रा० चपाना क्रि० स० दबाना,
दाबना, २ लजाना ।

सं० चपेट } (चप्=जाना) स्त्री०
चपेटिका } धप्पा, धप्पड़, धौल,
हथेली ।

प्रा० चप्पा पु० चार अंगुलका नाप ।

प्रा० चवाना (सं० चर्वण) क्रि०
स० चाबना, दाँत से कुचलना,
२ होंठ काटना ।

प्रा० चवूतरा पु० चौतरा, अथाई,
चौपाड़, बैठक, २ चौकी, ३ थाना ।

प्रा० चभक पु० डंक ।

प्रा० चमक (चमकना) स्त्री० झलक,
भड़क, चटक, दमक, शोभा ।

प्रा० चमकतमक } बोल० शोभा,
चमकदमक } भड़क, झलक ।

प्रा० चमगादड़ पु० स्त्री० एक प-
चमगीदड़ } खेरू जो रातको
चमगुदड़ी } देखता है और

दिन को नहीं देखता, चमगादुर,
चमचड़ख ।

प्रा० चमचमाहट भा० स्त्री० चमका-
हट, चमक, भड़क ।

प्रा० चमड़ा (सं० चर्म) पु० चाम,
खाल ।

प्रा० चमड़ा उधेड़ना } बोल०
चमड़ा छुड़ाना } खाल
चमड़ा निकालना } खींचना,
चमड़ा खींचना ।

सं० चमत्कार (चम्त्=अचंभा, कार
=करना) पु० अचंभा, विस्मय,
२ प्रकाश ।

सं० चमर } (चम्=खाना) पु० चमरी
चामर } गाय, सुरहगाय, २
चँवर, सुरहगाय की पूँछ ।

प्रा० चमार (सं० चर्मकार) पु० मोची,
जूता बनानेवाला ।

सं० चमस पु० चमचा, चम्पच ।

सं० चम् (चम्=खाना) स्त्री० सेना,
कटक, दल, फौज जिसमें ७२
हाथी, ७२६ रथ, २१=७ घोड़े
और ३६४५ पैदल हों ।

प्रा० चमेठा (सं० चपेट) पु०
थपड़, धप्पा, चपेटा ।

प्रा० चमोटा पु० } (सं० चर्म)
चमोटी स्त्री० } चमड़े की पट्टी
जिसपर उस्तरा तेज करते हैं ।

सं० चम्पक (चपि=जाना) पु० चंपा
जिसके फूल पीले रंग के और

सुगन्धित होते हैं ।

प्रा० चम्पत क्रि० वि० छिपा,
अन्तर्धान, अदृश्य ।

प्रा० चम्पतहोना बोल० छिप-
जाना, भाग जाना, चला जाना,
अलख होना ।

प्रा० चम्पा (सं० चम्पक) पु० एक
पेड़का नाम जिसके फूल पीले
और सुगन्धित होते हैं ।

प्रा० चम्पाकली (चम्पा + कली)
स्त्री० एक प्रकारकी माला जिसका
हर एक दाना चम्पाकी कली सा
होता है ।

प्रा० चम्बू पु० एक तरह का पानी
का वरतन ।

प्रा० चम्बेली स्त्री० एक प्रकार का
फूल ।

सं० चय (चि=इकट्ठा करना) पु०
ढेर, समूह, राशि ।

सं० चर (चर्=चलना, खाना) पु०
दूत, धावन, २ खाना, भक्षण, गु०
चलनेयोग्य, चलनेवाला, जङ्गम ।

सं० चरक (चर्=जाना वा खाना)
क० पु० वैद्यकशास्त्रका बनानेवाला,
२ वैद्यकशास्त्रका नाम, ३ कोढ़,
४ मुखविर ।

फ्रा० चरखा पु० सूत कातनेकी
कल, रहँटा, घिरना ।

फ्रा० चरखी स्त्री० घिरनी, २
रहँटी ।

प्रा० चरचना (सं० चर्चा) क्रि० स०
शरीर में चन्दन लगाना, चन्दन
से शरीर को लेपना ।

सं० चरण (चर्=चलना) ए० पु०
पाँव, पैर, २ श्लोक का एक पद,
मिसरा ।

सं० चरणायुध (चरण + आयुध,
युध=लड़ना) पु० मुर्गा, कुट्ट ।

प्रा० चरणपीठ (सं० चरणपृष्ठ, चरण
=पाँव, पृष्ठ=ठीठ) स्त्री० खड़ाऊँ ।

सं० चरणामृत (चरण=पाँव, अमृत
=अमी) पु० देवता की मूरत अथवा
साधुजन के पैरों का पानी, पानी
जिससे देवता की मूरत वा साधु
जन के पैर धोये हों, चरणोदक ।

सं० चरणारविन्द (चरण=पाँव,
अरविन्द=कमल) पु० चरण
कमल, कमल जैसे पाँव, मुबारक
कदम ।

सं० चरणोदक (चरण=पाँव, उदक
=पानी) पु० चरणामृत, पैरों का
पानी ।

प्रा० चरना (सं० चरण, चर्=खाना)
क्रि० स० चुगना, घास खाना ।

प्रा० चरपरा गु० तीता, कड़वा, तेज,
२ फुर्तीला ।

सं० चरम गु० पिञ्जले, परे, पीछेके ।

प्रा० चरवाई (चरना) स्त्री० चराई,
चराने का दाम ।

प्रा० चरवाहा (चराना) पु० भेड़

बकरी का चरानेवाला, गड़रिया,
रखवाला ।

प्रा० चरस पु० एक नशेकी चीज़, २
चमड़े की मोट, चमड़े का बड़ा ढोल ।

प्रा० चरसा पु० अधोड़ी, खाल ।

प्रा० चराई (चराना) स्त्री० चराने
की मजदूरी, चरवाई ।

सं० चराचर (चर्=चलनेवाला, अ-
चर=नहीं चलनेवाला) पु० जीव
जन्तु वृक्ष पत्थर आदि सब पदार्थ
जो सृष्टि में हैं, स्थावर जंगम,
संसार, सृष्टि ।

प्रा० चराना (चरना) क्रि० स०
चुगाना, घास खिलाना, खिलाना ।

सं० चरित (चर्=जाना) पु० कथा
चरित्र (वार्त्ता, वृत्तान्त, हाल,
शील स्वभाव, चाल चलन, व्यवहार,
आचार, लीला, काम ।

सं० चरित्रबन्धक क० पु० भाट,
कवि, पिंगलज्ञ ।

सं० चरु स्त्री० खीर, हव्यान्न, जाउरि ।

प्रा० चरुवा (सं० चरु, चर्=खाना)
पु० भांडा, हांडा ।

सं० चर्चरी स्त्री० उत्सव, गानविशेष,
केशरचना, शाक, महाकाल ।

सं० चर्चरीक पु० महाकाल केशवि-
न्यास, बाल सम्हारना, शाक, साग ।

सं० चर्चा (चर्च=पढ़ना, बोलना) स्त्री०
प्रस्ताव, जिक्र, बातकहाव, तर्क, २
पूजा, ३ शरीर में चन्दन लगाना ।

सं० चार्चित (चर्चा) र्म० चरचा
हुआ, चन्दन लगाया हुआ ।

सं० चर्म (चर्=जाना) पु० चमड़ा,
अजिन, खाल, २ ढाल ।

सं० चर्मकार (चर्म=चमड़ा, कार
=करनेवाला) पु० चमार, मोची ।

सं० चर्मज (चर्म + जन्=पैदा होना)
पु० रुधिर, केश, बाल, चमड़े से
बनी हुई ।

सं० चर्वण (चर्व=खाना) पु० चाबना,
दाँत से पीसना ।

सं० चलचित्त (चल=चला हुआ,
चित्त=मन) गु० चंचल, चपल,
स्थिर ।

सं० चलत क० पु० चलनशील,
चलनेहार ।

सं० चलन (चल्=चलना) भा० पु०
चलना, जाना, चाल, गति, २ रीति,
व्यवहार, चालचलन, ३ रिवाज,
प्रचार, चाल, चर्चा, गु० प्रचलित ।

प्रा० चलना (सं० चलन) क्रि०
अ० जाना, गमन करना, आगे ब-
दना, हिलना, सरकना, फिरना,
२ प्रचलित होना, रिवाज होना,
प्रचार होना, फैलना (जैसे सिका),
३ छूटना (जैसे बंदूक), ४ बहना
(जैसे हवा), ५ व्यवहार होना ।

प्रा० चलदेना बोल० कूच करना,
भागजाना, चलाजाना ।

प्रा० चलनिकलना बोल० निकल

चलना, हृद् से बाहर निकलना,
खराब अथवा व्यसनी होना ।

प्रा० चलेचलना बोल० आगे बढ़ना,
चलेजाना ।

प्रा० चलनी (सं० चालनी, चल्=
चलना) स्त्री० पीतल व लोहे
अथवा चमड़े की बनी हुई एक
चीज जिसमें बहुत छेद होते हैं
और उसमें आटा छानते हैं ।

सं० चलपूँजी स्त्री० जायदाद मन्कू-
ला, जो चीज एक जगह से दूसरी
जगह चल सके ।

सं० चलित (चल्=चलना) गु०
चला हुआ, प्रचलित, व्यवहारिक,
हिलता हुआ ।

प्रा० चवाई (सं० चर्वणावादी) पु०
निंदक, लावालुतरा, चुगली-
खोर ।

प्रा० चवाच (सं० चर्वणावाद) पु०
निंदा, चुगली, झूठा, कलंक,
लिम् ।

सं० चष (चप्=भक्षण, वध) पु०
भोजन, खाना, मारण, मारना,
क्लेश ।

सं० चषक (चष् + अक) क० पु०
जलपात्र, आबखोरा, पानपात्र,
मदिरापात्र, मयजाम, शहद,
मदिरा ।

सं० चषति पु० भोजन, मारण,
स्त्री० मूर्च्छा, मदान्धता ।

सं० चषाल पु० यज्ञके खंभा का कड़ा, गूपकटक, होमकुण्ड, कुशा ।
 प्रा० चसका पु० प्यार, लालसा, चाट, स्वाद, चाल, टेव ।
 सं० चह (चह=छलना, प्रतारण) पु० अहंकार, पाखण्ड, परिकल्कन, गु० अहंकारी, दम्भकृत, छली ।
 प्रा० चहकना क्रि० अ० चहचहाना, चिड़ियों का बोलना ।
 प्रा० चहचहा गु० गहरा रँगाहुआ, प्रा० चहचहाना क्रि० अ० पखे-रुआँ का बोलना ।
 प्रा० चहलपहल स्त्री० आनन्द, हँसी खुशी, चुहुल, रंग रस ।
 प्रा० चहला { पु० कीचड़, काँदा, चिहला { पाँका, पंका, दलदल ।
 प्रा० चहुँ { (सं० चतुर्) गु० चार, चहँ { चारों-चहुँ ओर=चारों तरफ, सब तरफ ।
 प्रा० चहुँचक { (सं० चतुश्चक्र, चतुर्चहुँचक्र) =चार, चक्र=देश) क्रि० वि० चारों ओर, सब ओर, चारों खूँट में, चहुँदिस ।
 प्रा० चहुँदिस (सं० चतुर्दिश, चतुर्=चार, दिश=ओर) क्रि० वि० सब ओर, चारों ओर, चहुँ ओर, चहुँ चक्र ।
 प्रा० चाकी स्त्री० बिजली ।
 प्रा० चाँद (सं० चन्द्र) पु० चन्द्रमा, चन्द्र, सोम, चन्द, २ एक गहने

का नाम ।
 प्रा० चाँदरात स्त्री० महीने का अन्त, पूर्णों की रात
 प्रा० चाँदमारना बोल० निशाना मारना ।
 प्रा० चाँद ने ग्वेतकिया बोल० चाँद उगा ।
 प्रा० चाँदना (सं० चन्द्र) पु० प्रकाश, ज्योति, तेज ।
 प्रा० चाँदनापख पु० उजाला पख, शुक्ल पक्ष, सुदी ।
 प्रा० चाँदनी (सं० चांद्री, चंद्र=चाँद) स्त्री० चाँदकी उजियाली, चाँदका प्रकाश, अँजोरी, चंद्रिका, २ एक फूल का नाम, ३ सफेद कपड़ा जो दरी पर बिछाया जाता है, ४ सफेद और चमकीली चीज ।
 प्रा० चाँदनीचौक बोल० चौड़ा बाजार, गली, चौक ।
 प्रा० चाँदी (सं० चांद्री) स्त्री० अच्छा रूपा, २ टटरी, टाँट, खोपरी ।
 प्रा० चाँपना क्रि० स० दाबना, दबाना, ठाँसना, २ जोड़ना ।
 प्रा० चा स्त्री० एक पौधे की पत्ती जिसको पीने से शरीर में फुर्ती रहती है ।
 प्रा० चाक (सं० चक्र) पु० कुम्हार की चक्की अथवा पहिया जिसपर बरतन बनाये जाते हैं, २ पाट, चक्की ।

प्रा० चाका (सं० चक्र) पु० पहिया ।
 प्रा० चाकी (सं० चक्र) स्त्री० चक्की
 जाँता, बिजली ।
 प्रा० चाचा पु० चचा, काका ।
 प्रा० चाट (चाटना) स्त्री० चसका,
 स्वाद, रस, लालसा, उत्कण्ठा,
 रुचि, २ स्वभाव ।
 प्रा० चाटना क्रि० स० स्वाद लेना,
 लपलपखाना, चबड़चबड़ खाना ।
 सं० चाटु प्यारीवात, चापलूसी,
 लल्लोपत्तो, खुशामद ।
 सं० चारुपट्ट पु० भाण्ड, मशखरा,
 खुशामदी ।
 सं० चाटुलक्ष्मी क० पु० खुशामदी
 बातें, चिकनी चुपड़ी बातें ।
 प्रा० चाड़ स्त्री० चाह, २ चोट, ३
 हँकली, उठंगन ।
 सं० चाणक्य पु० चाणक मुनि के
 गोत्र का, विश्वगुप्त ।
 सं० चाणूर पु० कंस का प्रधान
 मल्ल, बड़ा पहलवान ।
 सं० चाण्डाल पु० श्वपच, डोम,
 नीच ।
 सं० चातक (चत्=माँगना, अर्थात्
 बादलों से पानी माँगना) पु०
 पपीहा ।
 सं० चातुर (चतुर) गु० चतुर, मवी-
 ण, बुद्धिमान्, २ धूर्त, ३ चार ।
 सं० चातुरी (चातुर) स्त्री० चतुराई,
 निपुणता, २ धूर्तता ।

सं० चातुर्वर्ण्य ब्राह्मण, २ क्षत्री,
 ३ वैश्य, ४ शूद्र, 'चातुर्वर्ण्य मया
 सृष्टमिति गीता' ।
 प्रा० चातुक (सं० चातक) पु० पपीहा ।
 सं० चान्द्रायण (चंद्र=चाँद, अयन=
 चाल, वा चांद्र=चंद्रलोक, अयं=
 पाना 'जिस व्रत से'), पु० एक
 व्रत जिसमें अंधेरे पख में जब चाँद
 की कला घटती है, हर एक दिन
 खाने में एक ग्रास घटाते हैं और
 चाँदने पख में ज्यों चंद्रमा की कला
 बढ़ती है त्यों हर एक दिन एक
 एक ग्रास बढ़ाते हैं, रोज़ा कमरी ।
 सं० चाप (चप=बाँस अर्थात् बाँस
 का बना हुआ, चप=जाना) पु०
 धनुष्, कमान ।
 सं० चापग्वण्ड (चाप + खण्ड)
 धनुष् के टुकड़े ।
 प्रा० चापी स्त्री० दवाई ।
 प्रा० चाबना (सं० चर्वण) क्रि० स०
 चबाना, दाँत से कुचलना, चिक-
 लना ।
 प्रा० चाबी स्त्री० कुंजी, ताली ।
 प्रा० चाम (सं० चर्म) पु० चमड़ा,
 खाल ।
 सं० चामुण्डा (चम्=खाना, वा
 चम्=सेना, ला=लेना अर्थात् खा
 जाना) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली,
 योगिनी, चण्ड मुण्ड राक्षसों की
 मारनेवाली देवी ।

सं० चार (चर्=चलना) पु० दूत,
जासूस ।

प्रा० चार (सं० चतुर्) गु० दो का
दुगुना, ४ ।

प्रा० चारआँखें बोल० चौनजर,
मिलना, भेंट होजाना ।

प्रा० चारटूक बोल० टूक टूक, टुकड़े
टुकड़े ।

प्रा० चारण (चर्=लेजाना, अर्थात्
जो यश को फैलाता है) पु० भाट,
यश बखाननेवाला ।

प्रा० चारा (सं० चर्=खाना) पु०
पशुओं का खाना, घास ।

सं० चारु (चर्=चलना) गु० सुन्दर,
मनोहर, सुहाना, मनभावन ।

प्रा० चाल (सं० चल=चलना) भा०
स्त्री० चलना, चलन, गति, गमन,
२ रीति रसम, रीति भाँति, ढंग,
राह, चालचलन ।

प्रा० चालपकड़ना बोल० फैलना,
चलना, प्रचलित होना ।

प्रा० चालचलना बोल० निवाहना,
व्यवहार करना ।

प्रा० चालढाल बोल० चालचलन,
रीति भाँति ।

प्रा० चालना (सं० चालन, जल्=
चलना) क्रि० स० छानना (जैसे
आटा) भारना, फटकना, देखना ।

सं० चालनी (चल=चलना) स्त्री०
चलनी ।

प्रा० चालीस (सं० चत्वारिंशत्)
गु० दो बीसी, ४० ।

प्रा० चाव { (सं० इच्छा) पु० बड़ी
चाय } चाह, उत्कण्ठा, रुचि,
अभिलाष, चोप, शौक, २ चार
अंगुल, ३ एक तरह का बाँस ।

प्रा० चावचोचला बोल० प्यार, दु-
लार, अनुराग, प्रेम, स्नेह, किलोल ।

प्रा० चावल { पु० एक प्रकार का
चाँवल } अनाज ।

प्रा० चाघु (सं० चाप, चष्=भक्षण
करना) पु० नीलकण्ठ, कटनाश ।

प्रा० चासा पु० किसान, जोतहा,
हल चलानेवाला ।

प्रा० चाह (सं० इच्छा) स्त्री० चाहना,
अभिलाष, इच्छा, प्यार, प्रेम,
प्रीति, पसंद ।

प्रा० चाहना क्रि० स० इच्छाकरना,
माँगना, याचना, प्यार करना,
प्रेम करना, मानना, पसंद करना,
मनमें भाना, आवश्यकता होना,
प्रयोजन पड़ना ।

प्रा० चिंघाड़ (सं० चित्कार, चित्
ऐसा शब्द, कार=करना) स्त्री०
हाथी का शब्द ।

प्रा० चिंघाड़मारना बोल० चित्का-
रना, चिंघाड़ना, हाथी का शब्द
करना ।

प्रा० चिक पु० परदा, जवनिका,
२ कमर में दर्द ।

प्रा० चिकना (सं० चिकण) गु०
घोटाहुआ, साफ, २ सुन्दर, ३
चपड़ा हुआ, तिलहा, तेलसा,
तेलमय, चिकण, ४ निर्लज्ज,
बेशरम, लंपट, चंचल ।

प्रा० चिकनाघड़ाबनना बोल०
किसीकी कुछ शिक्षा नहीं मानना,
निर्लज्ज होना ।

प्रा० चिकनाचाँदा (सं० चिकण-
चन्द्र) बोल० सुन्दर, मनोहर,
सुहावना ।

प्रा० चिकनाई (सं० चिकणता)
भा० स्त्री० ओष, घोट, सँवार,
सफाई, चिकनाहट, २ चर्बी, ३
चंचलता, चंचलाई ।

सं० चिकित्सक (कित्=इलाज
करना, चंगा करना) क० पु०
वैद्य, हकीम, डाक्टर ।

सं० चिकित्सा (कित्=इलाज क-
रना, चंगा करना) भा० स्त्री०
औपध करना, इलाज, वैदाई,
रोगप्रतीकार ।

सं० चिकित्सालय (चिकित्सा +
आलय) धि० पु० शिफाखाना,
हास्पिटल ।

सं० चिकित्साशास्त्र पु० इल्म=
डाक्टरी, तिबाबत ।

सं० चिकीर्षा (कृ=करना) स्त्री०
करने की इच्छा, आकांक्षा ।

सं० चिकीर्षु क० पु० आकांक्षी ।

सं० चिकुर (चि=इकट्ठा करना, वा
चि=ऐसा शब्द, कुर=शब्द करना)
पु० बाल, केश, धूपर ।

प्रा० चिकुला बच्चा, बालक ।

प्रा० चिट स्त्री० टुकड़ा, लीर, धज्जी ।

प्रा० चिट्टा गु० गोरा, श्वेत, सफेद,
पु० रुपया, मुद्रा ।

प्रा० चिट्ठी स्त्री० पाती, पत्ती, प-
त्रिका, खत, कागज ।

प्रा० चिट्ठीपत्री { पु० लिखापट्टी,
चिट्ठीपाती } चिट्ठी का आना
जाना, खत किताबत ।

प्रा० चिड़चिड़ा गु० खुन्साहा,
भनभना, कर्कश, रिसाहा, पु०
एक पेड़ का नाम ।

प्रा० चिड़ना क्रि० अ० खुनसाना
भुँफलाना, कुढ़ना, खिसियाना,
भट क्रोध करना ।

प्रा० चिड़िया { (सं० चटक) स्त्री०
चिड़ी } गौरिया, पखेरू,
पक्षी ।

प्रा० चिड़ीमार पु० चिड़िया पक-
ड़ने और मारनेवाला, बहेलिया,
व्याधा ।

प्रा० चित (सं० चित्त) पु० मन,
बुद्धि, हृदय, अन्तःकरण, हिया,
हिय, जी, सुध, स्मरण, स्मृति,
याद ।

प्रा० चितचाय बोल० मनभावन,
जो मनको अच्छा लगे ।

प्रा० चितचेता बोल० मनमाना, प-
संद आना ।

प्रा० चितचोर बोल० मन हरनेवाला।

प्रा० चितदेना बोल० ध्यान देना,
मन लगाना ।

प्रा० चितलगाना बोल० मनोरंजन,
मनभावन ।

प्रा० चितलाना बोल० सचेत होना,
तत्पर होना, मन लगाना,
ध्यान देना ।

प्रा० चित (सं० चित्=जानना) स्त्री०
चितवन, दृष्टि, दीठ, नज़र, अव-
लोकन, २ समझ वृक्ष, बोध,
ज्ञान, विचार, गु० पट, सीधा,
अन्ताचित, चितांग ।

प्रा० चित करना बोल० उलटाना,
चित गिराना (जैसे कुश्ती में),
जीतना, मात करना, हराना,
परास्त करना ।

प्रा० चितकवरा (सं० चित्रकर्षुर)
गु० कवरा, रंगरंग का, चितला ।

प्रा० चितरना (सं० चित्र) क्रि०सं०
चीतना, रंगदेना, रंगना, चित्र करना।

प्रा० चितला (सं० चित्रल, चित्र=
रंग, ला=लेना) गु० चितकवरा ।

प्रा० चितवन स्त्री० दृष्टि, नज़र,
अवलोकन, चित्त, भाँक, कटाक्ष।

प्रा० चितवना { चितना } क्रि०सं० देखना ।

सं० चिता (चि=इकट्ठा करना) स्त्री०

जगह जिसपर मुर्दा जलाया जाता
है, चिताखा, मसान, मरघट ।

प्रा० चिताना { (सं० चेतन, चित्=
चिताचना) याद करना, सो-
चना) क्रि०सं० जताना, जतलाना,
जनाना, चौकस करना, खबरदार
करना, सूचित करना, याद
दिलाना, बताना ।

प्रा० चिनेरा (सं० चित्रकार) पु०
लकड़ीपर अथवा दीवार पर बेल
बूटे खींचनेवाला, चित्र खींचने
वाला ।

सं० चिति स्त्री० समूह, ढेर, राशि,
जमअत ।

सं० चित्त (चित्=जानना वा याद
करना) पु० मन, अन्तःकरण,
बुद्धि, हृदय, जी, चित, ज्ञान ।

सं० चित्ताप { पु० मन का खेद,
चित्तोत्ताप } दिलीरंज ।

प्रा० चितौनी स्त्री० सूचना, विज्ञा-
पन, जताना ।

सं० चित्कार पु० रेंकना, विलाप,
चिल्लाहट, चीखमारना, चूहा,
निउला, छँछँदर ।

सं० चित्र (चित्र=कई प्रकारके रंगोंसे
रँगना, वा चित्=मन, त्रै=बचाना)
पु० तसवीर, बेल बूटे, छवि, रूप,
सूरत, लेख, लिपि, २ यम, गु०
अद्भुत, अनोखा, रंग रंग का रँग
रंग, भाँति भाँति का ।

- सं० चित्रकण्ठ (चित्र=रंग रंग का, कण्ठ=गला) पु० कबूतर, कपोत।
- सं० चित्रकर } (चित्र=तसवीर, चित्रकार } कृ=करना) पु० चितेरा, मुसव्विर ।
- सं० चित्रकारी (चित्रकार) स्त्री० चितेरे का काम, बेलबूटे बनाना, तसवीर बनाना, चित्र लिखना।
- सं० चित्रकूट (चित्र=अनोखी वा भाँति भाँतिकी, कूट=चोटी) पु० एक पहाड़ का नाम जो बुन्देलखंड में है जहाँ श्रीरामचन्द्र अपने वनवास के समय पहलेही पहल रहे थे ।
- सं० चित्रगुप्त (चित्र=लेख, गुप्त=बचाना वा चित्र लिखना छिपी हुई बात का) पु० यम का नाम, २ यमराज का लेखक जो मनुष्यों के पाप पुण्य को लिखता है, कायस्थों का पुस्तका ।
- सं० चित्ररेखा } (चित्र=तसवीर, चित्रलेखा } लिख=लिखना) स्त्री० ऊषा की सहेली, वाणासुर के प्रधान कूष्माण्ड की बेटी ।
- सं० चित्रलिखित (चित्र=तसवीर, लिखित=लिखा हुआ) र्म० तसवीर में लिखा हुआ ।
- सं० चित्रचित्र (चित्र=रंग, चित्र=रंग रंगका) गु० रंग रंग का, नाना वर्णका, अनेक रंग का ।

- सं० चित्रा (चित्र=रंगना) स्त्री० चौदहवाँ नक्षत्र, २ श्रीकृष्ण की सखी ।
- सं० चित्राक्षी } चित्र=रंगरंग की, चित्रनेत्रा } अक्षि, वा नेत्र, वा चित्रलोचना } लोचन=आँख) स्त्री० धना पक्षी ।
- सं० चित्र विद्यासार, वसूल नक्शा-कशी, चित्र खींचने का मूल ।
- सं० चित्राङ्ग (चित्र=रंग रंग का, अङ्ग=शरीर) पु० चितकवरा साँप, २ एक पौधे का नाम, ३ एक प्रकार का रंग, गु० चितकवरा, चित्रित, चित्र विचित्र ।
- सं० चित्रिणी (चित्र=रंगना) स्त्री० दूसरे प्रकार की स्त्री, चार प्रकार की स्त्रियों में की एक प्रकार की स्त्री, (१ पद्मिनी, २ चित्रिणी ३ हस्तिनी, ४ शङ्खिनी, ये चार प्रकार की स्त्रियाँ होती हैं) ।
- सं० चित्रित (चित्र=रंगना) र्म० रंगा रंग, रंगा हुआ, चित्र किया हुआ, नाना वर्ण का, तसवीर खिंचा हुआ, २ अद्भुत, अनोखा ।
- प्रा० चिथड़ा पु० फटा कपड़ा, लत्ता, गुदड़ा ।
- सं० चिदाकाश (चित्=चैतन्य, आकाश अर्थात् आकाश के समान निर्विकार वा सब का आधार) पु० ब्रह्म, शुद्धस्वरूप ।

सं० चिदात्मा पु० परमात्मा ।

सं० चिद्रूप (चित् + रूप) पु० चै-
तन्यस्वरूप, तेजरूप ।

सं० चिदानन्द (चित्=ज्ञान वा चै-
तन्य, आनन्द=हर्ष) पु० चैतन्य,
ज्ञानानन्द, परमानन्द, ब्रह्म,
परमेश्वर, परमात्मा ।

प्रा० चिनचिनाना क्रि० अ०
चिल्लाना, चीखना ।

सं० चिन्तन (चिति=याद करना,
सोचना) भा० पु० याद, स्मरण,
सोचना, ध्यान, चिन्ता, विचार ।

सं० चिन्ता (चिति=याद करना,
सोचना) भा० स्त्री० सोच विचार,
भावना, ध्यान, याद, स्मरण, स्मृति,
२ फिक्र, खटका, दुविधा, संदेह,
सोच, डर ।

सं० चिन्ताकीमुद्रा स्त्री० शोच
की दशा, फिक्र की हालत ।

सं० चिन्तामणि (चिन्ता=सोची
हुई ' वस्तु देनेवाली ' , मणि=
रत्न) स्त्री० एक प्रकार की मणि,
पारस ।

सं० चिन्तित (चिति=सोचना)
र्म० चिन्ता करता हुआ, सोची,
भावित, फिक्रमन्द, चिन्ता करने
योग्य, उदास, व्याकुल ।

सं० चिह्न (चिह्न=चिह्न करना)
पु० संकेत, निशान, पहचान,
लक्षण, अंक, दाग ।

सं० चिह्नित र्म० अङ्कित, संकेतित,
दागी ।

सं० चिवुक { (चीब्=ढकना वा
चिवुक } बोलना) स्त्री० ठुड्डी,
ठोड़ी ।

प्रा० चिमटना क्रि० अ० लिपटना,
चिपकना ।

प्रा० चिमटा पु० चुमटा, मुचना,
स्यूटा ।

सं० चिरबाधित र्म० इहसान-
मन्द ।

सं० चिर { (चि=इकट्ठा करना) गु०
चरम् } बहुत काल, बहुत का-
लीन, बहुत दिनका, बहुत दिनतक ।

प्रा० चिरंजी (सं० चिरंजीवी) गु०
बहुतसमयतक जीनेवाला, दीर्घायु ।

सं० चिरजीवी { (चिर=बहुतसमय
चिरंजीवी } तक, जीवी=जीने-
वाला, जीव=जीना) गु० चिरंजी ।

सं० चिरात् अव्य० अर्सा से, बहुत
काल से ।

सं० चिरना पु० पुराना, प्राचीन,
स्त्री० चिरानी=पुरानी ।

सं० चिरस्थायी पु० दवामी, हमे-
शगी, चिरकाल तक रहनेवाली ।

प्रा० चिरौंजी स्त्री० एक प्रकार की
मेवा ।

प्रा० चिलकना (सं० ज्वल्=चम-
कना) क्रि० अ० चमकना,
भलकना ।

प्रा० चिलम स्त्री० मिट्टी की बनी हुई चीज जिसमें तम्बाकू डालकर पीते हैं ।

प्रा० चिलमची स्त्री० हाथ धोने का वरतन ।

प्रा० चिल्लाना (सं० चित्कार) क्रि० अ० पुकारना, जोरसे बोलना, चीखना ।

प्रा० चींटी } (सं० चिट्टकी) स्त्री०
चींवटी } कीड़ी, चैवटी ।

प्रा० चीखुर स्त्री० गिलहरी ।

प्रा० चीनना (सं० चित्र) क्रि० स० चित्र करना, रँगना, चित्रकारी करना, चित्र उतारना, रंग देना, २ (सं० चिन्तन) चाहना, सोचना ।

प्रा० चीतल (सं० चित्रल, चित्र=रंग, ला=लेना) पु० तेंदुवा, चीता, गु० चितकवरा ।

प्रा० चीना (सं० चित्रक, चित्र=रंग) पु० तेंदुवा, चीतल, २ एक पौधे का नाम, ३ (सं० चेतना) चाह, ४ समझ, बुद्धि, विचार, ५ (चीतना) रँगना, रंग देना ।

सं० चीन (चि=इकट्ठा करना) पु० एक देश का नाम, २ एक प्रकार की घास, ३ एक प्रकार का कपड़ा ।

प्रा० चीनी (सं० चीनीय) चीनदेश की, अर्थात् जो कदाचित् चीन

देश से इस देश में पहलेही पहल आई हो) स्त्री० बहुत अच्छी और साफ शकर, गु० चीन देश का, चीन देश सम्बन्धी ।

प्रा० चीन्हना (सं० चिह्न=चिह्न करना) क्रि० स० पहचानना, जानना ।

सं० चीय (चि=इकट्ठा करना) पु० प्राप्ति, ग्रहण, धारण, गु० लेने वाला, पहरनेवाला, स्त्री० भिल्ली, भींगुर ।

सं० चीर (चि=इकट्ठा करना) पु० कपड़ा, वस्त्र, साड़ी ।

प्रा० चीर (चीरना) पु० खोंच, चीरना, फाड़ना ।

प्रा० चीर निकलना बोल० सेनाके बीच में होके निकल जाना, सेना की कतार को तोड़ डालना ।

प्रा० चीरना क्रि० स० फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना, मसकना, बिदारना ।

प्रा० चीरा (सं० चीर) पु० पगड़ी, २ काट, फाड़, घाव ।

सं० चीरि पु० रींवा जन्तु, भींगुर, पलक, घोड़ोंके आँखपर बाँधने की अंधियारी ।

सं० चीर्ण गु० प्राचीन, प्रवीण, पुराना, फटाहुआ ।

सं० चीर्णपर्ण पु० नींबूवृक्ष, प्राचीन पत्र, पुराना पत्ता, खजूरवृक्ष ।

सं० चीवर पु० प्राचीन वस्त्र, जीर्ण वस्त्र, फटा वस्त्र, चिथड़ा, प्राचीन, पुराना ।

प्रा० चील (सं० चिल्ल, चिल्ल=ढीला होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम ।

प्रा० चीलभूपट्टा मारना बोल० छीनना, छीन लेना, भूपट्ट लेना ।

प्रा० चीलर } स्त्री० जूं, जूई, ढील ।
चिल्लहड़ }

प्रा० चुआन (सं० च्यु=जाना, च्युमना) स्त्री० कोट के आस पास की गहरी खाई जिसमें पानी भरा रहता है, २ कुंड, जलाशय ।

प्रा० चुंगी स्त्री० महसूल का इतना अनाज जितना कि हाथ में समावे जो कि अनाज के व्यापारियों से सदा उगाहा जाता है ।

प्रा० चुकाना (चुकना) क्रि० स० निपटाना, पूराकरना, मोलठहराना ।

सं० चुक पु० खट्टा का वृक्ष, चूक, सिरका, गु० खट्टा, अम्ल, अमलबेत ।

प्रा० चुगना क्रि० स० चोंच से खाना, चरना, खाना, २ चुनना, बीनना, ढूँगना ।

प्रा० चुगलेना बोल० छाँटना, बराय लेना, चुनलेना, पसंद करना ।

सं० चुच्चि पु० स्तन, कुच, चूँची ।

सं० चुच्चक पु० स्तनाग्रभाग, कुचाग्रभाग, चूँची की युएडी ।

प्रा० चुटकुला पु० चुहुल, परिहास, हँसी, ठठोली, हँसी की बात, आनन्द, रस ।

प्रा० चुडैल स्त्री० डायन, प्रेतनी, डाकिनी, २ फूहड़ स्त्री, मैली कुचैली स्त्री ।

प्रा० चुनत (चुनना) स्त्री० चुमन, परत, उत्त, घड़ी, पुट, तह ।

प्रा० चुनरी स्त्री० एक तरह का रँगा हुआ कपड़ा जिसमें कई तरह के रंग होते हैं ।

प्रा० चुँधला गु० तिरमिरा, चकचूँधा ।

प्रा० चुनना क्रि० स० चुगना, इकट्ठा करना, बीनना, छाँटना, बराय लेना, पसंद करना, बटोरना, इतिखाव करना, २ अपनी अपनी जगहपर रखना, सजाना, ठीक-ठाक करना, ३ तह जमाना, कपड़ों की घड़ी बनाना ।

प्रा० चुनाहुआ मुन्तखिब ।

प्रा० चुनौती सौगन्द, कसम ।

प्रा० चुन्नी स्त्री० लाल ।

प्रा० चुप गु० मौन, अनबोल, अवाक्, वि० बो० चुप रहो, मत बोलो ।

प्रा० चुपचाप बोल० चुप, अनबोल ।

प्रा० चुपड़ना क्रि० स० चिकना करना, चिकनाना, धी अथवा तेल लगाना, २ तेल मलना ।

प्रा० चुभकी डुबकी, गोता ।

प्रा० चुभना क्रि० अ० छिदना,
नुसना, पैठना, पारहोना, धसना,
गड़ना ।

सं० चुम्बक } (चुबि=चूमना) क०
चुम्बकी } पु० चुम्बक पत्थर जो
लोहे को खींचता है, रूचमनेवाला,
थोड़ा थोड़ा पढ़के छोड़नेवाला ।

सं० चुम्बन (चुबि=चूमना) भा० पु०
चूमना, चूमा, बोसा, चूमालेना ।

सं० चुम्बित र्भ० पु० चूमा हुआ,
बोसा लिया गया ।

प्रा० चुराना (सं० चोरण, चुर=
चुराना) क्रि० स० चोरी करना ।

प्रा० चुरी (सं० चूड़ा) स्त्री० चूड़ी ।

प्रा० चुलबुला बोल० चंचल,
रंगीला ।

प्रा० चुलाना क्रि० स० चुवाना,
टपकाना ।

सं० चुल्ल (चुल्ल=चालना, चलना)
पु० प्रकाश, उजाला जिसके नेत्र
में कीचड़ भरा है, चूल्हा, स्त्री०
चिन्ता, उद्धारना ।

सं० चुल्लि स्त्री० चूल्ही, चूल्हा ।

प्रा० चुल्लू (सं० चुलुक, चुल्ल=इकट्ठा
करना वा होना) पु० लपभर,
मुट्ठीभर, बुक्का, दोनों हाथोंको इस
तरह मिलाना कि उसके बीच में
पानी रह सके ।

प्रा० चुल्लू भरपानी में डूबमरना
बोल० बहुतही बहुत लजाना ।

प्रा० चुल्लू में उल्लू होना बोल०
चुल्लू भर नशे में मस्त होना ।

प्रा० चुसकी स्त्री० पानी का घूँट,
मुँहभर पानी ।

प्रा० चुहल स्त्री० हँसी, विनोद,
हर्ष, हुलास, ठट्ठा ।

प्रा० चुहुलकरना बोल० आनन्द
करना, हँसी खुशी करना, विनोद
करना ।

प्रा० चुकौता पु० निपटारा, फ़ैसला ।

प्रा० चूँची } (सं० चूचुक, चूष्=दूध
चूँची } पीना वा चूसना) स्त्री०
स्तन, थन, कुच, छाती ।

प्रा० चूक (चूकना) स्त्री० भूल,
खोट, दोष, भ्रम, अपराध ।

प्रा० चूक (सं० चुक, चुक्=तृप्त
होना) गु० खट्टा ।

प्रा० चूकना क्रि० अ० भूलना, भूल
करना, बिसरना, अशुद्ध करना ।

सं० चूड़ा स्त्री० चोटी, चुटिया,
शिखा, भुट्टिया ।

सं० चूड़ाकरण (चूड़ा=चोटी, क-
रण=करना) पु० मुण्डन ।

सं० चूड़ामणि (चूड़ा=चोटी, मणि
=रत्न) स्त्री० स्त्रियों के चोटी में
पहनने का गहना, चोटी की मनी ।

प्रा० चूड़ी } (सं० चूड़ा, चुल्ल=इक-
चूरी } ट्ठा होना) स्त्री० स्त्रियों
के हाथ में पहननेकी काच आदि
की बनी हुई चीज ।

सं० चूत { पु० आम्रवृक्ष, क्षरण,
चूतक { स्राव, वहन, ढपना ।

प्रा० चून (सं० चूर्ण) पु० आटा,
२ चूना ।

प्रा० चूना (सं० च्यवन, च्यु=जाना)

क्रि० अ० टपकना, रसना, झ-
रना, (सं० चूर्ण) पु० चून,
एक चीज जिससे मकान बनाये
जाते हैं ।

प्रा० चूनालगाना बोल० बदनाम
करना, लिम लगाना ।

प्रा० चूमना (सं० चुम्बन) क्रि०
स० चूमा लेना ।

प्रा० चूमा (सं० चुम्बन) पु० चुम्बा,
बोसा ।

प्रा० चूमाचाटी बोल० दुलार,
प्यार, रंग, रस, रावचाव ।

प्रा० चूर (सं० चूर्ण) पु० बुकनी,
भुरभुरा, चूर्ण, रेतन, गु० चूर
किया हुआ ।

प्रा० चूरचूर बोल० टूक टूक,
खण्ड खण्ड ।

प्रा० चूर रहना बोल० मस्त रहना,
डूबा रहना ।

प्रा० चूर करना बोल० टुकड़े टुकड़े
करना ।

प्रा० चूर होना बोल० टुकड़े टुकड़े
होना, २ किसीके प्यारमें फँसना,
अत्यन्त प्यार वा स्नेह करना,
३ थकना ।

प्रा० नशे में चूर होना बोल०
मस्त होना, मतवाला होना ।

प्रा० चूरण { (सं० चूर्ण) पु०
चूरन { पाचक औषध जिससे
खाना पचता है ।

प्रा० चूरा (सं० चूर्ण) पु० रेतन, चूर ।
सं० चूर्ण (चूर्ण=पीसना, बुकनी
करना) पु० बुकनी, रेतन, चूर,
चूरा, धूलि, २ चूरन, एक पाचक
औषध ।

सं० चूर्णन भा० पु० पीसना ।

सं० चूर्णक (चूर्ण + अक) क० पु०
पीसनेवाला ।

सं० चूर्णित (चूर्ण + इत) र्म० पु०
पीसा हुआ ।

प्रा० चूर्ना (सं० चूर्ण) क्रि० स०
टुकड़े टुकड़े करना ।

प्रा० चूर्मा (सं० चूर्ण=चूरना) पु०
एक प्रकार का मीठा खाना ।

प्रा० चूल पु० लकड़ी का जोड़ वा
कील जिसपर किंवाड़ फिरता है ।

प्रा० चूल्हा (सं० चुल्ली) पु० आग
रखने की जगह ।

सं० चूषक (चूष + अक, चूप्=चूसना)
क० पु० चूसनेवाला ।

सं० चूषण भा० पु० चूसना ।

सं० चूषित र्म० चूसा हुआ ।

प्रा० चूसना (सं० चूप्=चूसना)
क्रि० स० पी लेना, सोखना,
चचोड़ना ।

प्रा० चूहा पु० मूसा, मूषिक ।

प्रा० चेत (सं० चेतस्, चित्=सोचना) पु० सुध, याद, स्मरण, विचार, बोध, ज्ञान, अनुभव, सावधानी, चौकसी ।

सं० चेतन (चित्=सोचना) पु० जीव, आत्मा, प्राण, २ ज्ञान, बुद्धि, विचार, विवेचना, समझ, गु० चैतन्य, जीताहुआ, सचेत, प्राणी ।

सं० चेतना (चित्=सोचना) स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, चेत ।

प्रा० चेतना (सं० चेतन) क्रि० स० याद करना, स्मरण करना, सुध करना, मन में रखना, सोचना, २ चेत में आना, होश में आना ।

प्रा० चेता (सं० चित्त) पु० चित्, चेत, मन, २ उपदेशक, ज्ञानदाता ।

प्रा० चेपना क्रि० स० साटना, लगाना, चिपटाना ।

प्रा० चेरा (सं० चेड वा चेड, चिद्=भेजना) पु० नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० चेरी स्त्री० दासी ।

प्रा० चेला (सं० चेड वा चेड, चिद्=भेजना) पु० शिष्य, विद्यार्थी, २ दास ।

प्रा० चेवली स्त्री० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

सं० चेष्टक (चेष्ट्+अक) क० पु० यत्रकारी, उपायी, तदबीरी ।

सं० चेष्टा (चेष्ट्=परिश्रम वा यत्न करना) भा० स्त्री० यत्न, उद्यम, परिश्रम, उद्योग, काम, शरीर का व्यापार ।

प्रा० चैत (सं० चैत्र) पु० एक महीने का नाम ।

सं० चैतन्य (चेतन) भा० पु० जीवात्मा, परमात्मा, ब्रह्म, २ बुद्धि, ज्ञान, विचार, विवेचना, चेत, चेतना, गु० सचेत, चेत में, चौकस, सज्ञान, चेतन, सुचेत ।

सं० चैत्र (चित्रा एक नक्षत्र का नाम, पु० चैत, हिंदुओं के वरस का वार-हवाँ महीना जिसमें पूरा चाँद चित्रा नक्षत्र के पास रहता है और उस महीने की पूर्णमासी के दिन चित्रा नक्षत्र होता है ।

सं० चैत्ररथ पु० कुबेर का वाग ।

प्रा० चैन पु० सुख, आराम, आनन्द, हर्ष ।

प्रा० चोंगा पु० नली, नलुवा, नल ।

प्रा० चोंच (सं० चञ्चु) स्त्री० ठोंठ, पखेरुओं की चंचु ।

प्रा० चोंडा (सं० चूड़ा) पु० चोटा, बाल का जूड़ा ।

प्रा० चोंप } स्त्री० इच्छा, चाह,
चोंप } रुचि, उछाह, लालसा,
चोप } कुर्ती, २ स्त्रियों के दाँतों में पहनने का सोने का गहना ।

प्रा० चोआ { पु० सुगन्धित चीज,
चोवा } अर्गजा ।

प्रा० चोखा गु० साफ, सच्चा, खरा,
अच्छा, तीखा, तीक्ष्ण ।

प्रा० चोचला पु० खिलाड़पन,
मान, नखरा, मीठीबातें, प्यारीबातें,
भोलीबातें, हावभाव ।

प्रा० चोट पु० मार, पीट, चपेट, मुक्का,
धूँसा, धक्का, आघात, पछाड़ ।

प्रा० चोटपर चोट बोल० दुख पर
दुख, एक विपत् पर दूसरी विपत्
का आना ।

प्रा० चोटखाना बोल० पिटना, मार
खाना, २ नुकसान उठाना ।

प्रा० चोटी (सं० चूड़ा, चुल्=इकट्ठा
होना) स्त्री० शिखा, शिरके पिछले
बाल, २ शिखर, पहाड़ का श्रृंग ।

प्रा० चोटी आस्मानपर घिसना
बोल० बहुत घमंडी होना, बहुत
अभिमान करना ।

प्रा० चोटीकट बोल० दास, २ शिष्य ।

प्रा० चोटीकटवाना बोल० दास
होना, २ शिष्य होना ।

प्रा० चोटी किसी की हाथ में
आना बोल० किसी पर अधिकार
रखना, किसी को वश में करना,
दबाना, नवाना ।

प्रा० चोट्टा (सं० चोर) पु० चोर ।

सं० चोर (चुल्=चोरी करना) पु०
चोट्टा, चोरी करनेवाला, ठग,

लुटेरा, तस्कर ।

प्रा० चोरचकार बोल० चोर ।

प्रा० चोरखाना { बोल० छिपा
चोरघर } हुआ मकान,
एकान्त घर, गुप्तघर ।

प्रा० चोररस्ता बोल० छिपी राह,
गुमराह, पगडंडी, लीक ।

प्रा० चोरलगना बोल० बिगाड़
होना, हानि होना, नुकसान
उठाना ।

प्रा० चोरी (सं० चौर्य, चोर, चुल्
=चोरी करना) स्त्री० चुराने का
काम, डकैती, ठगी ।

सं० चोली (चुल्=इकट्ठा होना) स्त्री०
अँगिया, काँचुली ।

प्रा० चौ (सं० चतुः=चार) गु० चार
पु० हल का फाल ।

प्रा० चौअल्ली (चौ=चार, आना)
स्त्री० चारआनी, सूकी, चारआना ।

प्रा० चौकना क्रि० अ० भिभकना,
भड़कना, डर उठना, ठठकना,
चमकना, नींद टूटना, नींद उच-
टना ।

प्रा० चौकउठना बोल० भड़क उठना,
भिभक उठना, चमक उठना ।

प्रा० चौकपड़ना बोल० उछल
पड़ना, चौकड़ी भरना, भड़क
जाना, चमक जाना ।

प्रा० चौतरा पु० (चबूतरा) शब्द
को देखो ।

प्रा० चौंतीस } (सं० चतुस्त्रिंशत्)
चौंतीस } गु० तीस और
चार, ३४ ।

प्रा० चौंधियाना क्रि० अ० धवराना,
व्याकुल होना, डरना, अचंभे में
होना, तिरभिराना ।

प्रा० चौंसर } (सं० चतुश्शारि
चौसर } चतुः=चार, शारि=
गोटी) पु० एक खेल का नाम जो
पाँसों से खेला जाता है, चौपड़,
२ फूलों की माला ।

प्रा० चौक पु० बाजार, हाट, गुदड़ी,
आटेकी वेदी, पेठ, २ नगर का चौ-
राहा, चौहट्टा, ३ आँगन, अँगना ।

प्रा० चौकड़ा पु० दो मोतीका वाला ।

प्रा० चौकड़ी स्त्री० कूद, फाँद,
फलाँग, उछल ।

प्रा० चौकड़ी भरना बोल० कूदना,
फाँदना, उछलना ।

प्रा० चौकड़ी भूलना बोल० मोह
जाना, मोह में आना, भूलासा रह
जाना, होश ठीक न रहना ।

प्रा० चौकड़ी मार बैठना बोल०
उकड़ू बैठना, सिमट बैठना, सुकड़
बैठना, चार जानू बैठना ।

प्रा० चौकन्ना गु० सावधान, सुचेत,
चौकस, फुर्तीला ।

प्रा० चौकस गु० सावधान, सुचेत,
चालाक, फुर्तीला ।

प्रा० चौका पु० रसोई, वह जगह

जहाँ हिन्दू खाना पकाते और खाते
हैं, २ चौकोनी चीज, चौकोनी
जगह, ३ आगे के चार दाँत ।

प्रा० चौकी स्त्री० कुर्सी, पीढ़ा, चौकोनी
काठकी बनी हुई चीज, २ रख-
वाली, चौकसी, पहरा, ३ थाना
जहाँ चौकीदार और पहरादार
रहते हैं, ४ एक गहना जिसको
गले में पहनते हैं ।

प्रा० चौकीदार गु० चौकी देनेवाला,
पहरा देनेवाला, पहरुआ ।

प्रा० चौकीदारी स्त्री० चौकीदार
का काम, २ चौकीदार की मज-
दूरी, चौकीदारी, ठिक्कस ।

प्रा० चौकीदेना बोल० रखवाली
देना, पहरा देना ।

प्रा० चौकीमारना बोल० चोरी से
महसूली वस्तु लाना वा भेजना,
घाट मारना, महसूल चुराना ।

प्रा० चौकोना } (सं० चतुष्कोण)
चौकोर } गु० चौखूँटा, चार
कोना ।

प्रा० चौखट } (सं० चतुष्काष्ठ) स्त्री०
चौकट } दरवाजे का ढाँचा ।

प्रा० चौखूँटा (सं० चतुष्कोण) गु०
चौकोर, चौकोना ।

प्रा० चौगुणा } (सं० चतुर्गुण) गु०
चौगुना } चार गुना, चार बार
लिया हुआ ।

प्रा० चौड़ा गु० फैला हुआ, विशाल ।

प्रा० चौड़ाचकला बोल० चिपटा,
फैलाऊ, विस्तृत, फैला हुआ,
चौड़ा ।

प्रा० चौतनी चांगोशिया टोपी ।

प्रा० चौतारा पु० चार तार का
बाजा ।

प्रा० चौताल स्त्री० एक रागिणी
का नाम ।

प्रा० चौथ (सं० चतुर्थी) स्त्री० चौथी
तिथि, २ (सं० चतुर्थीश) चौथा
हिस्सा, कर अथवा खिराज जो
मरहटे उगाहा करते थे ।

प्रा० चौथा (सं० चतुर्थ) गु० चार-
हवाँ, चौथा ।

प्रा० चौथेपन } (चौथा=चारहवाँ)
चौथापन } पु० बुढ़ापा, मनुष्य
के उमर का चौथा अथवा सबसे
पिछला हिस्सा ।

प्रा० चौदस (सं० चतुर्दशी, चतुर्=
चार, दश=दस) स्त्री० चौदहवीं
तिथि, चतुर्दशी ।

प्रा० चौदह (सं० चतुर्दश) गु०
दस और चार, १४ ।

प्रा० चौदानिया पु० } (चौ=चार,
चौदानी स्त्री० } दाना) चार
मोती का बाला ।

प्रा० चौधरी पु० पञ्च, प्रधान, ज-
मींदार की पदवी ।

प्रा० चौपट गु० उजाड़, बरबाद,
नष्ट, बराबर किया हुआ, चपटा ।

प्रा० चौपटकरना बोल० उजाड़ना,
नष्ट करना, बरबाद करना, ढहा
देना, विनाश करना, बराबर करना ।

प्रा० चौपड़ (सं० चतुष्पुट्टी वा च-
तुष्पादिका, चतुर्=चार, पुट्ट=तह
वा पद पैर) स्त्री० पाँसों का खेल,
२ कपड़ा जिसपर यह खेल खेला
जाता है ।

प्रा० चौपाई (सं० चतुष्पदी) स्त्री०
चार पद का छन्द ।

प्रा० चौपाड़ (सं० चतुष्पाटिका)
पु० बैठकघर, २ (सं० चतुष्पाद)
चौपाया ।

प्रा० चौपाया (सं० चतुष्पाद) पु०
चारपाया, पशु, जानवर ।

प्रा० चौपाला (सं० चतुष्पाद) पु०
पालकी, डोली ।

प्रा० चौबारा (सं० चतुष्पाटिका)
पु० ऊपर का कोठा, उसारा ।

प्रा० चौबीस (सं० चतुर्विंशति)
गु० बीस और चार ।

प्रा० चौबे (सं० चतुर्वेदी) पु० ब्रा-
ह्मण जो चारों वेद जानता हो,
अब एक जाति के ब्राह्मणों को
चौबे कहते हैं चाहे वेद पढ़े हों
वा न पढ़े हों ।

प्रा० चौमासा (सं० चतुर्मास, चतु-
र्=चार, मास=महीना) पु० बर-
सात, वर्षाऋतु, असाढ़ से कुँवार
तक के चार महीने ।

प्रा० चौमुख (सं० चतुर्मुख) पु०
चौमुहाँ दीया ।

प्रा० चौमुखी (सं० चतुर्मुखी) स्त्री०
देवी, चारमुँहवाली दुर्गा, २ रुद्राक्ष
का दाना ।

प्रा० चौरस (चौ=चार, रस=बरा-
बर) गु० चारों ओर से बराबर,
समान, सब ओर से बराबर ।

प्रा० चौरानवे (सं० चतुर्नवति,
चतुर्=चार, नवति=नब्बे) गु०
नब्बे और चार ।

प्रा० चौरासी (सं० चतुरशीति,
चतुर्=चार, अशीति=अस्सी) गु०
अस्सी और चार ।

प्रा० चौवन { (सं० चतुष्पञ्चाशत्)
चव्वन } गु० पचास और चार ।

प्रा० चौवाई (सं० चतुर्वायु, चतुर्=
चार, वायु=हवा, अर्थात् चारों
दिशा से हवा का बहना) स्त्री०
आँधी, अन्धड़, भकड़ ।

प्रा० चौसठ (सं० चतुःषष्टि) गु०
साठ और चार ।

प्रा० चौहटा { (सं० चतुर्हट्ट, चतुर्=
चौहट्टा } =चार, हट्ट=हाट) पु०
चौराहा, चौक, चौराहा बाजार ।

प्रा० चौहत्तर (सं० चतुःसप्तति)
गु० सत्तर और चार ।

प्रा० चौहान पु० राजपूतों की एक
जाति ।

सं० च्युत (च्यु=गिरना) क० पु०

च्युत, गिरा, टपकपड़ा, पतित,
आर्द्र, नष्ट ।

सं० च्युति (च्युत + इ) भा० स्त्री०
पतन, हानि, खिन्नता ।

छ

सं० छ (छो=काटना) गु० काटने
वाला, २ निर्मल, ३ चंचल, छेदक,
नाशक ।

प्रा० छः (सं० षट्) गु० दुगुना तीन, ६।

प्रा० छई (सं० क्षय) स्त्री० एक
रोग का नाम ।

प्रा० छई (सं० छदिः, छद्=ढकना)
स्त्री० नाव का छप्पर ।

प्रा० छकड़ा (सं० शकट) पु० गाड़ी,
रहड़, अरावा ।

प्रा० छकना क्रि० अ० अघाना, तृप्त
होना, संतुष्ट होना, २ व्याकुल
होना, अचंभे में होना, ३ मस्त
होना ।

प्रा० छकाना क्रि० स० अघाना, तृप्त
करना, २ ठीक करना, सीधा
करना ।

प्रा० छक्का (सं० षट्क, षष्=छः)
पु० छः का समूह, २ एक तरह
का पिंजरा ।

प्रा० छक्कापंजाकरना बोल० ठगना,
छलना, धोखा देना, जुआ
खेलना ।

प्रा० छक्केछूटजाना बोल० घबराना,
हका बका रहजाना ।

सं० छग { (छो=काटना) पु० बकरा,
छगल } छाग, भेड़ा, स्त्री० भेड़ी,
बकरी ।

प्रा० छटाक (सं० षट्क, षट्=छः,
टङ्क=एक प्रकार का तोल) स्त्री०
सेर का सोलहवाँ भाग, कनवा ।

सं० छटा (छो=काटना) स्त्री० चमक
भड़क, शोभा, दमक, चमचमाहट,
उजाला ।

सं० छटाफल पु० नारियल वृक्ष,
तालवृक्ष ।

सं० छटाभा स्त्री० विजली ।

प्रा० छट्टी { (सं० षष्ठी) स्त्री० पखकी
छठ } छठवीं तिथि ।

प्रा० छट्टी { (सं० षष्ठी) स्त्री० छठवीं,
छठठी } लड़का के पैदा होने के
पीछे छठे दिन की रीति ।

प्रा० छड़ा पु० पैर का गहना, मोती
की लड़ी, गु० अकेला ।

प्रा० छड़ी स्त्री० बेत, हाथ में रखने
की लकड़ी, २ फूलों का गुच्छा ।

प्रा० छण (सं० क्षण) स्त्री० पल,
दम, क्षण, क्षिण ।

प्रा० छत { (सं० छत्र, छद्=ढकना)
छात } स्त्री० घर के ऊपर का
पटाव, गच, पु० फोड़ा, घाव ।

प्रा० छत्ता (सं० छत्र, छद्=ढकना)
पु० मधुमक्खियों का छाता ।

प्रा० छत्तीस (सं० षट्त्रिंशत्, षट्
=छः, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस

और छः ।

सं० छत्र (छद्=ढकना) पु० राजाओं
के शिरपर रखने का छाता,
छतरी ।

सं० छत्रक (छत्र) क० पु० भुईंफोर,
कुकुरमुत्ता, धरती का फूल ।

सं० छत्रधारी (छत्र=छाता, धारी
=रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु०
राजा, महाराज, छत्रपति ।

सं० छत्रपति (छत्र=छाता, पति=
मालिक) पु० राजा, महाराज,
छत्रधारी ।

सं० छत्रभङ्ग (छत्र=छाता, भङ्ग=
टूटना) पु० पति का मरना, रंडापा,
विधवापन, २ राजा का मरण ।

प्रा० छत्री (सं० छत्र) स्त्री० छोटा
छाता, २ चँदवा, ३ बैठने की
जगह ।

प्रा० छत्री (सं० क्षत्री) पु० राजपूत ।

सं० छत्वर पु० गृह, कुंज, कोदरी,
खोदर ।

सं० छद् (छद्=ढापना) पु० पंख,
आच्छादन, पत्ताढाँक, तमालवृक्ष ।

सं० छदन भा० पु० पत्ता, आच्छादन,
छान, छत, भियान, गिलाफ ।

प्रा० छदाम स्त्री० पैसेका चौथाभाग,
दो दमड़ी, ६ दाम ।

सं० छद्मन पु० कपट, छप्पर, पत्ता,
अपदंश वा हुज्जत, उज्जर,
दलील ।

प्रा० छनाक पु० गर्भ चीज पर पानी के गिरने का शब्द ।	प्रा० छयासठ } (सं० षट् + षष्टि, छियासठ } षट्=छः, षष्टि=साठ) गु० साठ और छः ।
सं० छन्द (छदि=ढकना और चाहना) पु० श्लोक, काव्य, पद्य, मात्राओं का मिलाव, २ वेद, ३ वेदका छन्द जैसे गायत्री आदि, ४ इच्छा, अभिलाषा ।	प्रा० छरे गु० छटे, चुने सुबुक ।
सं० छन्दपातन (छन्द + पातन, पत्=गिरना) पु० कपट, कुटिलता, मक्कर, बहाना ।	सं० छर्द (छर्द=वमन करना, कय करना) पु० वमन, कय ।
सं० छन्दोग पु० कवि, सामवेद का गानकर्ता, वेदपाठी ।	सं० छर्दन (छर्द + अन) भा० पु० छॉट, वमन, कय, अलम्बुष ।
सं० छन्न र्म्यं पु० एकान्त, गुप्त, छिपाहुआ, रुका ।	सं० छर्दि स्त्री० छॉट, कय ।
प्रा० छन्ना पु० पानी छाननेका कपड़ा, कोई चीज छाननेका कपड़ा ।	प्रा० छुरा पु० छोटी छोटी गोली ।
प्रा० छपना क्रि० अ० छापा होना, मुद्रित होना ।	सं० छल (छो=काटना) पु० कपट, धोखा, फरेब, बहाना, मिष, जाल, ठगई ।
प्रा० छपाई स्त्री० छापने की मजदूरी, छापने का काम ।	प्रा० छलबल बोल० कपट, धोखा, बलबिद्र ।
प्रा० छप्पन (सं० षट्पञ्चाशत्, षट्=छः पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और छः ।	प्रा० छलकना (सं० उच्चलन, उत्त्=ऊपर, चल=चलना) क्रि० अ० उमड़ना, ढलकना, बहचलना, फूट निकलना, बोरना ।
प्रा० छप्पय (सं० षट्पदी, षट्=छः, पद=चरण) छः पदका छन्द ।	सं० छलछिद्र (छल + छिद्र) पु० बलबल, कपट, धोखा ।
प्रा० छप्पर पु० फूस की छावनी ।	सं० छलचिनय स्त्री० कपटसे बढ़ाई, फरेब के साथ तन्त्रीफ ।
प्रा० छप्परखट पु० पलंग, खाट ।	प्रा० छलौंग स्त्री० फलौंग, फाँद, कूदफाँद ।
प्रा० छबीला गु० सुन्दर, सुहावना ।	प्रा० छलौंगें मारना बोल० कूदना, उछलना, झपटना, कुलाच मारना ।
प्रा० छब्बीस (षट्विंशति, षट्=छः, विंशति=बीस) गु० बीस और छः ।	प्रा० छलिया } (सं० छल) गु० छली } कपटी दगाबाज,

धोखा देनेवाला ।
 प्रा० छल्ला पु० मुंदरी, अंगुठी ।
 सं० छवि (छो=काटना, अंधेरेको)
 स्त्री० शोभा, सुन्दरता, चमक,
 प्रकाश ।
 प्रा० छाँ (सं० छाया) स्त्री० छाया,
 आड़, प्रतिबिम्ब, परछाई ।
 प्रा० छाँटना क्रि० स० वमन करना,
 उलटी करना, क्रय करना, २ अनाज
 से भूसा अलग करना, फटकना, ३
 काटना, कतरना, काट कूट करना,
 ४ सँवारना, साफ करना, ५ चुन
 लेना, पसंद करना ।
 प्रा० छाँटकरना बोल० वमन क-
 रना, क्रय करना ।
 प्रा० छाँटलेना बोल० चुन लेना,
 बराय लेना, पसंद करना ।
 प्रा० छाड़ना क्रि० स० उगेलना,
 निकालना, २ छोड़ना ।
 प्रा० छाँव (सं० छाया) स्त्री०
 छाँह } छाया, छाँ, प्रतिबिम्ब,
 परछाई ।
 प्रा० छाक पु० कलेवा, जलखाना ।
 सं० छाग (छो=काटना) पु० ब-
 छागल } करा, खस्सी ।
 प्रा० छाछ } स्त्री० मट्ठा, मही ।
 छाछी }
 प्रा० छाज पु० सूप, डगरा ।
 प्रा० छाजना (सं० छादन, छद्=
 ढकना) क्रि० स० छाना, २ फ-

बना, सोहना, छजना, खुलना,
 योग्य होना ।
 प्रा० छाँड़ना क्रि० स० छोड़ना,
 त्यागना, तजना ।
 प्रा० छाता (सं० छत्र) पु० छतरी,
 २ मधुमक्खियों का छत्ता ।
 प्रा० छाती स्त्री० हिरदा, उर,
 वक्षस्थल, २ चूँची, कुच ।
 प्रा० छातीभर बोल० छाती जि-
 तना ऊँचा, छाती तक ।
 प्रा० छाती भर आना बोल०
 रोना, आँसू ढालना, मोह आना ।
 प्रा० छाती पर पत्थर रखना
 बोल० संतोष करना, सबर करना,
 धीरज धरना, सहलेना ।
 प्रा० छाती पर मूँग दलना बोल०
 किसी के सामने ऐसा काम करना
 कि जिससे वह दुख पावे, किसी
 को कुढ़ाना, खिझाना, सताना ।
 प्रा० छाती फटना बोल० दुख अ-
 थवा फिक्रसे घबराना, गम खाना ।
 प्रा० छातीपीटना बोल० रोना,
 विलाप करना, शोक करना,
 बिलखना ।
 प्रा० छाती ठोकना बोल० साहस
 देना, हिम्मत बाँधना, भरोसा
 देना ।
 प्रा० छाती ठंडी होना बोल०
 प्रसन्न होना, बहुतही बहुत आन-
 न्दित होना ।

प्रा० छातीकापत्थर } बोल० दुःख, छातीकाजम } दायी, कंठका	छाया होना, पटजाना, घिरजाना, प्रा० छालेना बोल० अंधेरा करना, ढकलेना ।
प्रा० छाती खोलकर मिलना बोल० सचे मनसे मिलना, सर- लता से मिलना, निष्कपट होकर मिलना ।	प्रा० छान्ना क्रि० स० निखारना, गारना, झारना, चालना, फटकना, २ खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़ मारना ।
प्रा० छातीलगांना } बोल० धारक- छातीसेलगाना } रना, दुलारना ।	प्रा० छानमारना बोल० खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़मारना ।
प्रा० छाती निकालकर चलना बोल० अकड़ कर चलना, ऐंठकर चलना ।	प्रा० छाप (छापना) स्त्री० ठप्पा, मुद्रा, छापी हुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ मोहर, ३ अंगुली में पहनने का गहना ।
सं० छात्र (छद्=ढकना, गुरुके दोषों को) पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला ।	प्रा० छापना क्रि० स० छपाकरना, मुद्रित करना ।
सं० छात्रवृत्ति स्त्री० वजीफा, पारि- तोषिक, स्कालरशिप ।	प्रा० छपा (छापना) पु० ठप्पा, मुद्रा, छापी हुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ शंख, चक्र, गदा, पद्म आदिका चिह्न जिसको वैष्णवलोग अपने शरीर पर लगाते हैं ।
सं० छादन (छद्=ढकना) पु० ढ- कने का कपड़ा, ढकना, २ पत्ता ।	प्रा० फा० छपाखाना पु० छपनेका घर, छपाकी जगह, यन्त्रालय, मतबअ, प्रिंटिंगप्रेस ।
प्रा० छान (सं० छादन) स्त्री० छप्पर, ठठरी ।	सं० छाया (छो=काटना, अर्थात् उ- जाले को रोकना) स्त्री० छाँह, छाँव, छाँ, परछाई, प्रतिबिम्ब, २ अंधेरा, ३ भूत, प्रेत, ४ शनैश्चर की माता, सूर्य की स्त्री ।
प्रा० छानबिनान } बोल० खोज, छानबीन } ढूँढ़, परीक्षा, विचार, विवेचना ।	सं० छायापथ पु० आकाश, पोला, अवकाश, आसमान ।
प्रा० छानबे } (सं० पणवति) पु० छियानबे } नब्बे और छः ।	सं० छायामृत (छाया + अमृत) पु० चन्द्रमा ।
प्रा० छानन (छाना) पु० चोकर, भूसी, तुष, बूर ।	
प्रा० छाना (सं० छादन, छद्=ढ- कना) क्रि० स० छाया करना, पाटना, ढकना ।	
प्रा० छाजाना बोल० ढकजाना,	

प्रा० छार (सं० क्षार) स्त्री० राख,
भस्म, धूलि, खाक ।

प्रा० छाल (सं० खल्ल, वा खल्ली, छद्
=ढकना) स्त्री० छिलका, बकला,
पोस्त ।

प्रा० छाला पु० फुनसी, फुंसी, फ-
फोला, फुल्का ।

प्रा० छालिया स्त्री० एक प्रकारकी
सुपारी ।

प्रा० छावनी (छाना) स्त्री० पलटन
के रहनेकी जगह, सिपाहियों के
रहने के घर, २ छाने का काम ।

प्रा० छिंगुली स्त्री० छोटी अंगुली,
कन अंगुली ।

प्रा० छिछला गु० उथला, पैतला,
अगंभीर ।

प्रा० छिल्लोड़ा पु० ढलका, ओछा,
चिविल्ला ।

प्रा० छिटकना क्रि० अ० बिखरना,
फैलना, छितरना, बिथरना ।

प्रा० छिटकनाचाँदनीका बोल०
चाँदनी का फैलना ।

प्रा० छिटकाना क्रि० स० बिखेरना,
फैलाना, छितराना, बिथराना ।

प्रा० छिड़कना क्रि० स० छींटना,
तरकरना, सींचना ।

प्रा० छिड़काव (छिड़कना) पु० पानी
का छिड़कना, सिंचाई, सींचना ।

प्रा० छितरना क्रि० अ० बिखरना,
फैलना, पसरना, छिटकना, बिथरना ।

प्रा० छिति (सं० क्षिति) स्त्री० धरती,
जमीन, पृथ्वी, भूमि, धरणी ।

प्रा० छिदना (सं० छेदन, छिद्=
काटना) क्रि० अ० विंधना, पार
होना, धसना, चुभना ।

सं० छिद्र (छिद्=भेदना, वा छिद्=
छेदना) पु० छेद, गद्दा, रंध्र, विवर,
बिल, २ दोष, दूषण ।

सं० छिद्रिन (छिद्र + इत्) र्म० पु०
वेधित, छेद किया गया ।

प्रा० छिन (सं० क्षण) स्त्री० पल,
क्षण, निमेष ।

प्रा० छिनभरमें बोल० एक पल में,
पल भर में ।

प्रा० छिनाल स्त्री० वेश्या, व्यभि-
चारिणी ।

प्रा० छिनाला (छिनाला) पु० छि-
नालपन, व्यभिचार ।

सं० छिन्न (छिद्=काटना) र्म० टूटा
हुआ, खंडित, भाग किया हुआ,
टुकड़े किया हुआ ।

सं० छिन्नभिन्न (छिन्न + भिन्न) र्म०
अलग अलग, तित्तर बित्तर, कटा
हुआ, टूटा हुआ ।

प्रा० छिपकली } टिकटिकी, एक
छिपकी } जानवरका नाम ।

प्रा० छिपना } क्रि० अ० लुकना, अ-
छुपना } लख होना, दबकना,
अदृश्य होना ।

प्रा० छिमा (सं० क्षमा) स्त्री०

क्षमां, माफ़ी ।

प्रा० छियालीस (सं० षट्चत्वारिंशत्, षट्=छः, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और छः ।

प्रा० छियासी (सं० षडशीति, षट्=छः, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और छः ।

प्रा० छिलका (सं० छली, छद्=ढकना) पु० छाल, बकला, त्वचा, पोस्त ।

प्रा० छिहत्तर (सं० षट्सप्तति, षट्=छः, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और छः ।

प्रा० छी वि० बो० तुच्छ और धिन करने का शब्द ।

प्रा० छींक (सं० छिका, छिक् ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री० शब्द जो नाक से होता है ।

प्रा० छींका (सं० शिक्क्य, शि=वेदना) पु० भूला, बहंगीकी डोरी, जाल कीतरह बनीहुई चीज जिसमें कोई चीज रखके लटका देते हैं ।

प्रा० छींट (सं० चित्र रंग रंगका) स्त्री० एक प्रकार का रँग हुआ कपड़ा ।

प्रा० छींटना क्रि० स० छिड़कना, सींचना ।

प्रा० छींटा पु० छाँटा, टपका, बिन्दु ।

प्रा० छीजना क्रि० अ० घटना, कम होना, सूखना, झूटना, 'देखा-देखी कीजै योग, छीजे काया बाढ़े

रोग' कहावत, जो कोई किसी की देखादेखी तप अथवा व्रत आदि करता है उसका शरीर दुबला हो जाता और बीमारी बढ़ती है ।

प्रा० छीन (सं० क्षीण) गु० मन्द, पतला, दुबला, कुश, घटा हुआ, लागर ।

प्रा० छीनना क्रि० स० लेलेना, खींचलेना, जबरदस्ती से लेलेना, झपट लेना ।

प्रा० छीनाछानी करना बोल० झपट लेना, झपटा झपटी करना, छीना झपटी करना ।

प्रा० छीर (सं० क्षीर) पु० दुग्ध, दूध ।

प्रा० छोलना क्रि० स० काटना, बिलका उतारना ।

प्रा० छुँछंदर (सं० छुच्छुन्दरी, छुच्छु ऐसा शब्द, दृ=फाड़ना) पु० एक जानवर का नाम ।

प्रा० छुँछंदरछोड़ना बोल० चुगली खाना, कलङ्क लगाना, बुराई करना, निन्दा करना, झड़काना, बहकाना ।

प्रा० छुट (सं० छुट्=जुदा जुदा करना) क्रि० वि० सिवाय, २ गु० छोटा, थोड़ा ।

प्रा० छुटकारा (छूटना) पु० छुड़ाव, उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, रिहाई ।

प्रा० छुटी स्त्री० छुटकारा, रखसत,

अवकाश, फुरसत, समय ।
 सं० छुड़ (छेदना) पु० आच्छादन,
 आवरण, नीच, स्वल्प, मिथ्यावादी,
 तुच्छ, पेच, फेर, किरण, भूषण ।
 प्रा० छुड़ौतो (छुड़ाना) स्त्री० छुड़ाने
 का मोल ।
 सं० छुर पु० छुरा स्त्री० छुरी, छूरा,
 चूना, नींबू ।
 सं० छुरिका { (छुर=काटना) स्त्री०
 छूरी } चकू, चाकू ।
 प्रा० छुहारा पु० खजूर, एक फल
 का नाम ।
 प्रा० छूछा गु० खाली, खोखला,
 शून्य, वृथा, निष्फल, पु० टोना,
 टोटका, जादू ।
 प्रा० छूट (छूटना) स्त्री० छोड़ना,
 बट्ठा, छुड़ाव ।
 प्रा० छूत (छूना) स्त्री० छूना, अप-
 वित्रता, किसी से छूआ जाना ।
 सं० छृद (छृद=प्रकाश करना) पु०
 प्रकाश, दीप्ति, वमन, विलाप,
 गु० प्रकाशक, प्रकाशवान् ।
 प्रा० छेंकना क्रि० स० रोकना,
 अटकना, घेरना ।
 प्रा० छेड़ (छेड़ना) स्त्री० खिजावट,
 सताना ।
 प्रा० छेड़छाड़ { बोल० टोकटाक,
 छेड़खानी } ताना, खिजावट,
 ठेढ़ीबात ।
 सं० छेद (छिद्=काटना) पु० काटा

हुआ, भिन्न का हर, भाग ।
 प्रा० छेद (सं० छिद्र) पु० गड़हा,
 खड्डा, मांद ।
 प्रा० छेदना (सं० छेदन, छिद्=का-
 टना) क्रि० स० बेधना, पार करना,
 धसाना, चुभाना, नाथना ।
 प्रा० छेनी स्त्री० रुखानी, ठाँकी,
 छेवनी ।
 सं० छेमण्ड पु० मुरहा, माता पिता
 रहित बालक, यतीम, बेवारिस,
 अनाथ ।
 प्रा० छेरी (सं० छागी, छो=काटना)
 स्त्री० बकरी ।
 प्रा० छेदा (सं० छेदन, छिद्=का-
 टना) पु० चिह्न, लकीर ।
 प्रा० छैल { पु० बाँका, अकड़ैत,
 छैला } चिकनियाँ ।
 प्रा० छैलाचिकनियाँ बोल० बाँका,
 छैला ।
 प्रा० छोकरा पु० लड़का, बालक ।
 प्रा० छोकरी स्त्री० लड़की, कन्या ।
 प्रा० छोटा (सं० छुद्र) गु० लघु,
 लहुरा, कनिष्ठ ।
 सं० छोटिका (छुद्र + इका) स्त्री०
 उच्छाल, स्पर्श, छूना, अंगुष्ठ, अं-
 गूठा, कोपीन, लँगोटा, कञ्जौटा,
 कछाँट ।
 प्रा० छोर पु० अन्त, किनारा ।
 सं० छोरण (छुर + अन, छुर=छे-
 दना) पु० त्याग, पैना करना, कर्तन,

काटना ।

सं० छोरंग पु० नींबू, खट्टा, चूना,
सफेदी, सफेदा, करौंदा ।

प्रा० छोह (सं० क्षोभ) पु० प्यार,
स्नेह, मोह, प्रीति ।

प्रा० छोही (छोभ) पु० प्रेमी, प्यारा,
स्नेही, अनुरागी ।

प्रा० छौना पु० जानवर का बच्चा ।
ज

ज (जन्=पैदा होना, वा जि=
ता) पु० शिव, २ विष्णु,
म, ४ माता पिता, उत्पत्ति,
अंजन, शेष, राक्षस, जीव,
आदि ।

जक पु० गाढ़े धन का रक्षक ।

प्रा० जकड़ना क्रि० स० कसना,
कसके बाँधना, खींचना, बाँधना,
तानना ।

प्रा० जग (सं० जगत्) पु० संसार,
जगत्, दुनिया, जंगम, वायु ।

प्रा० जग (सं० यज्ञ) पु० यज्ञ,
बलि, २ उत्सव, पर्व ।

प्रा० जगजगाहट स्त्री० चमक, चम-
काहट, प्रकाश, उजलाई ।

प्रा० जगजागी स्त्री० संसार में वि-
दित हुई, दुनिया में जाहिर हुई ।

सं० जगत् (गम्=जाना) पु० सं-
सार, जग, दुनिया ।

सं० जगती (गम्=जाना) स्त्री०
पृथ्वी, धरती, २ लोग ।

सं० जगदम्बा (जगत्=संसार,
अम्बा=माँ) स्त्री० जगमाता, महा-
माया, देवी, दुर्गा ।

सं० जगदाधार (जगत्=संसार,
आधार=आसरा) पु० अनन्त,
शेषजी, संसार का आसरा,
२ हवा, वायु ।

सं० जगदीश (जगत्=संसार, ईश
=स्वामी) पु० परमेश्वर, संसार
का कर्ता, जगन्नाथ, विष्णु ।

प्रा० जगना (सं० जागरण, जागृ
=जागना) क्रि० अ० नींद से
उठाना, सचेत होना, जागना ।

सं० जगन्नाथ (जगत्=संसार, नाथ=
स्वामी) पु० विष्णु, जगदीश,
जगत्पति, जगन्नाथ का मन्दिर
उड़ीसा में जगन्नाथपुरी में है जहाँ
बहुत से यात्री जाया करते हैं ।

प्रा० जगमगा गु० चमकीला, चम-
कदार, भलाभल ।

प्रा० जगमाता (सं० जगन्माता,
जगत्=संसार, माता=माँ) स्त्री०
संसार की माँ, जगदम्बा, देवी,
दुर्गा, सरस्वती ।

प्रा० जगह { स्त्री० ठौर, स्थान,
जागह } ठिकाना ।

प्रा० जगह छोड़ना बोल० कागज़
में कुछ जगह बिन लिखी रखना ।

प्रा० जगह सिर खरचना बोल०
मौके पर खर्च करना, यथोचित

- खर्चना, जहाँ चाहिये वहाँ खर्च करना ।
- प्रा० जगह सिर होना बोल० किसी काम पर होना, ठीक होना, यथोचित होना, जैसा चाहिये वैसा होना ।
- प्रा० जगाज्योति (सं० जाग्रज्ज्योतिः) स्त्री० चमक, भड़क, जगजगाहट, बहुत अथवा बड़ी जोत ।
- सं० जङ्गम (गम्=जाना) गु० चलने वाला, जिसमें चलने की शक्ति हो, २ पु० योगी जिनके सिर पर जटा होती है और छोटी घंटी को बजाया करते हैं और महादेव के भजन गाया करते हैं ।
- सं० जङ्गल (गल्=गिरना) पु०, वन, झाड़ी ।
- प्रा० जङ्गली (सं० जङ्गल) गु० बनैला, वनवासी ।
- सं० जग्ध (अद्=भोजन करना) र्म० पु० भुक्त, खायागया ।
- सं० जग्धि (अद्+ति) भा० पु० भोजन ।
- सं० जघन (जन+घन) पु० स्त्रियों के कटि का अग्रभाग, जंघा, करि-हाँव, कटिदेश, ऊरुस्थल ।
- सं० जघन्य (जग+हन्य) र्म० पु० अधम, नीच, पिछला ।
- सं० जघन्यज पु० कनिष्ठ, शूद्र, अधम ।
- सं० जङ्घा (हन्=टेढ़ा जाना, वा जन=पैदा होना) स्त्री० जाँघ, जानु, जानू ।
- प्रा० जचना क्रि० स० अटकल होना, नज़र में खटाना ।
- प्रा० जचावट (जाँचना) भा० स्त्री० जाँच, परख ।
- प्रा० जंजाल (सं० जनजाल, जन=मनुष्य, जाल=फंदा) पु० उल-भेड़ा, उलभाव, कलेश, भ्रंभट, घबराहट, व्याकुलता, कठिनाता ।
- सं० जटा (जट्=इकट्ठा करना) स्त्री० बालों का जूड़ा, बिखरेवाल, मिले द्रुये वाल, २ जड़, वृक्ष की जड़ ।
- सं० जटाजूट (जटा+जूट=जूड़ा) पु० जटाका जूड़ा, जटा का बंध ।
- सं० जटाधारी (जटा+धारी=रखने वाला, धृ=रखना) पु० शिव, जटा रखनेवाला ।
- सं० जटामांसी (जटा, मन्=रखना) स्त्री० एक औषध का नाम ।
- सं० जटायु (जटा और या=जाना, वा जट=बहुत, आयु=उमर जिसकी) पु० एक गीध का नाम जिसका वर्णन रामायण में है ।
- सं० जटित (जट्=मिलाना, जोड़ना) र्म० जड़ाऊ, जड़ा हुआ ।
- सं० जटिल (जटा) गु० जटावाला, जटाधारी, पु० सिंह, २ ब्रह्मचारी, ३ शिव ।

सं० जठर (जन्=पैदा होना) पु०
पेट, उदर, गर्भ, कोख, गु० कठोर,
दृढ़, २ बूढ़ा ।

सं० जठराग्नि (जठर=पेट, अग्नि
जठरानल) वा अग्निल=आग)
स्त्री० पेट की आग जिससे खाना
पचता है, २ भूख, ३ पेटका रोग ।

सं० जड़ (जल्=ढकना) पु० मूर्ख,
मुस्त, ठंढा, अज्ञानी, निर्वोध,
गावदी, भकुआ ।

प्रा० जड़ (सं० जटा, जड्=इकट्ठा
करना) स्त्री० मूल, कारण, नींव,
ठहराव ।

प्रा० जड़ना (सं० जटन, जड्=मि-
लाना) क्रि० स० मारना, भट-
कारना, २ जोड़ना, लगाना, सा-
टना, ३ नग बैठाना, खोद कर
वनाना ।

प्रा० जड़ पेड़ स्त्री० मूल समेत पेड़,
सब का सब ।

प्रा० जड़पेड़सेउगवाड़ना बोल०
उखाड़ डालना, जड़ से खोद डा-
लना, मूल समेत उखाड़ डालना ।

सं० जड़मति (जड़ + मति) स्त्री०
निर्वुद्धि, बेवकूफ ।

प्रा० जड़हन पु० अगहनी धान ।

प्रा० जड़ाई (जड़ाना) भा० स्त्री०
जड़ानेका मोल, जड़ानेका काम ।

प्रा० जड़ाऊ गु० जड़ित, जड़ाहुआ ।

प्रा० जड़ित (सं० जटित) र्भ०

पु० जड़ा हुआ ।

प्रा० जड़िया क० पु० जड़नेवाला,
जौहरी ।

प्रा० जड़ी (सं० जटा) स्त्री० ओ-
पधी की बेल की जड़ ।

प्रा० जड़ीबूटी स्त्री० दवाई, रू-
खड़ी, बेली ।

प्रा० जतन (सं० यत्न) पु० उपाय,
उद्योग, परिश्रम, मिहनत, २ इलाज ।

प्रा० जताना (सं० यत्=यत्न क-
रना) क्रि० स० चिताना, बुझाना,
बताना, बतलाना, चेतना, सुध
करना, २ प्रकट करना ।

प्रा० जनी (सं० यति) पु० जिते-
न्द्रिय, संन्यासी, भिखारी, योगी ।

सं० जतुक पु० लाख, हींग ।

प्रा० जथा (सं० यथा) क्रि० वि०
जैसे, जिसप्रकार से ।

प्रा० जत्था (सं० यूथ) पु० मण्डली, दल,
समूह, समाज, टोली, भुंड ।

प्रा० जत्थाबाँधना बोल० भुंड
वनाना, गोल बाँधना ।

सं० जन (जन्=पैदा होना) पु० मनुष्य,
लोग, आदमी, मनुष्य जाति
व्यक्ति, २ दुष्ट वा नीच मनुष्य ।

सं० जनक (जन्=पैदा करना) क०
पु० बाप, पिता, २ मिथिला के राजा
और सीताके बाप का नाम ।

सं० जनकननया (जनक=एक
जनकसुता) राजाका नाम,

तनया वा सुता=बेटी) स्त्री०
सीता, जानकी ।

सं० जनकपुर (जनक=एक राजा
का नाम, पुर=शहर) पु० तिरहुत
में एक शहर है जो राजा जनक
की राजधानी था ।

प्रा० जनकौरा (सं० जनक) पु०
जनक का ।

सं० जनता स्त्री० जनसमूह, मनुष्य-
समूह ।

प्रा० जनना (सं० जनन, जन्=
पैदा होना) क्रि० अ० जन्म होना,
पैदा होना ।

सं० जननी (जन्=पैदा होना) स्त्री०
माँ, मैया, माता, महतारी ।

सं० जनपद (जन + पद) पु० देश,
ग्राम, लोक, जाति, कौम, जन-
स्थान ।

सं० जनप्रवाद पु० किंवदन्ती, अफ-
वाह, वदगोई, मज़्मूत, शहरत,
खबर, कलह ।

सं० जननीय (जन् + अनीय) र्भ्य०
संतान, उपजाया गया, पैदा किया
हुआ ।

सं० जनमेजय (जन=संसार, एज=
चमकना, वा जन=दुष्ट लोग, एज=
कंपाना) पु० राजा परीक्षित का
बेटा ।

सं० जनयिता (जन् + इ + तृ, जन्
=पैदा करना) क० पु० पिता,

जनक, बाप, जन्मदाता ।

सं० जनयित्री (जनयितृ + ई) क०
स्त्री० माता, जननी, माँ, महतारी ।

सं० जनलोक (जन=मनुष्य, लोक
=जगह) पु० सात लोकों में का
एक लोक जहाँ धर्मात्मा मनुष्य
मरने के पीछे रहते हैं ।

प्रा० जनवासा (सं० जन्यवास,
जन्य=दुलहे के मित्र आदि, वास=
जगह) पु० वरातियों के उतरने
की जगह ।

सं० जनाश्रय (जन=मनुष्य, आ-
श्रय=अवलम्ब) पु० विश्रामस्थान,
टिकासरा, २ अधिकार, मन्त्री ।

सं० जनश्रुति (जन=मनुष्य, श्रुति=
सुनी हुई) स्त्री० खबर, समाचार,
किंवदन्ती, संदेशा, अफवाह ।

प्रा० जनाना (जनना) क्रि० स०
पैदा करना, जन्माना, २ (जा-
नना) चिताना, जताना, चेताना,
बुझाना ।

प्रा० जानब (जनाना) भा० पु०
सैन, संकेत, लखाव, चेताव,
सूचना ।

फ्रा० जनाब अत्रभवान्, उच्चपद,
उच्चस्थान ।

सं० जनार्दन (जन=दुष्टलोग, अर्द
=पीड़ा देना, मारना, वा जन=
मनुष्यों से, अर्द=जाँचा जाना
अर्थात् जिससे मनुष्य जाँचते हैं)

पु० विष्णु, भगवान्, नारायण ।
 प्रा० जनि { क्रि० वि० मत, नहीं ।
 जिन }
 सं० जनि (जन् + इ) भा० स्त्री०
 जन्म, पैदाइश, उत्पत्ति ।
 सं० जनिन (जन् = पैदा होना) र्भ०
 पु० पैदाहुआ, उत्पन्न, भया,
 जन्मा ।
 सं० जनुस् पु० उत्पत्ति, पैदाइश,
 स्त्री० जनु, उत्पत्ति, जनन ।
 प्रा० जनेऊ (सं० यज्ञोपवीत) पु०
 सूत का तार जिसको तीन वर्ण के
 लोग गले में पहनते हैं, उपवीत,
 यज्ञोपवीत, २ जनेऊ जैसा चिह्न
 जो हीरे आदि रत्नों में होता है ।
 प्रा० जनेत (सं० जन्य) पु० बराती,
 स्त्री० बरात ।
 प्रा० जञ्जाल पु० झगड़ा, बखेड़ा,
 सांसारिक कार्यों का समूह ।
 प्रा० जन्ता (सं० यंत्र) पु० तार
 खींचने का औज़ार ।
 सं० जन्तु (जन् = पैदा होना) पु०
 जीवधारी, प्राणी, जीव, जानवर,
 पशु, देहधारी, देही ।
 प्रा० जन्त्र (सं० यन्त्र) पु० कल,
 २ बाजा, ३ गंडा, तावीज़, जन्तर,
 टोटका ।
 सं० जन्म (जन् = पैदा होना) पु०
 उत्पत्ति, पैदा होना, पैदाइश ।
 सं० जन्मद (जन्म + द = देनेवाला,

दा = देना) पु० जन्मदाता, बाप,
 पिता ।
 सं० जन्मदिन (जन्म + दिन) पु०
 पैदा होने का दिन, बरसगांठ,
 बरसवाँ दिन, सालगिरह ।
 सं० जन्मपत्री (जन्म + पत्री) स्त्री०
 लग्नकुण्डली, जन्मपत्र, जायचा ।
 सं० जन्मभूमि (जन्म + भूमि) स्त्री०
 अपना देश, उत्पत्तिस्थान, वतन ।
 सं० जन्मान्तर (जन्म = पैदाइश,
 अन्तर = और) पु० दूसरा जन्म,
 नया जन्म, पुनर्जन्म, फिर जन्मना ।
 सं० जन्मान्ध (जन्म + अन्ध) गु०
 जन्म का अन्धा, सूरदास ।
 सं० जन्माष्टमी (जन्म + अष्टमी)
 स्त्री० श्रीकृष्ण का जन्मदिन,
 भादों वदी ८ ।
 सं० जन्मोत्सव (जन्म + उत्सव)
 पु० जन्मदिन का उत्सव, २ जन्मा-
 ष्टमी के दिन का उत्सव ।
 सं० जन्य (जन् = पैदा करना) र्भ०
 पु० संग्राम, निन्दितवाद, तलाव,
 कौलीन, हट्ट, उत्पाद्य, सेवक, भृत्य,
 मित्र, ज्ञाति, बाप, २ दुलहे के मित्र
 और साथी आदि ।
 सं० जप (जप् = जपना) पु० परमेश्वर
 का नाम लेना, माला फेरना, मन्त्र-
 पाठ ।
 प्रा० जपत (सं० जपित, जप् = जप-
 ना) र्भ० जपता हुआ, माला

फेरता हुआ ।

सं० जपमाला (जप + माला) पु०
सुमिरनी, जप करने की माला,
माला ।

प्रा० जष { (सं० यदा, यद्=जो)
जद { क्रि० वि० जिस समय,
जिस काल में ।

प्रा० जबतक { क्रि० वि० जबलग,
जबतलक { जषलों, जिस समय
जबनोड़ी तक ।

प्रा० जबतब बोल० कभीकभी ।

प्रा० जबजब बोल० जब कभी ।

प्रा० जबनतब बोल० कभी न कभी,
सदा ।

प्रा० जबड़ा पु० जभा, चौहड़, जभड़ा ।

प्रा० जमकना क्रि० अ० ठहरना,
निभना ।

प्रा० जम (सं० यम) पु० यमराज,
काल, मौत ।

प्रा० जमदूत (सं० यमदूत) पु०
मौत के दूत ।

प्रा० जमदीया (सं० यमदीपक) पु०
जो दिया कातिक वदी १३ को
जम के नाम से जलाते हैं ।

प्रा० जमघट (यम=रोकना, घट=श-
रीर, जहाँ बहुत भीड़ से आदमी
चलने से रुक जाते हैं) पु०
मण्डली, भीड़ भाड़, भुंड ।

प्रा० जमधर (सं० यमधार, यम=
मौत, धार=तीखीनोक) पु० कटार ।

प्रा० जमना (सं० जन=पैदा होना)

क्रि० अ० उगना, उपजना, पन-
पना, बढ़ना, २ दृढ़ होना, गाढ़ा
होजाना, ठोस होजाना (जैसे
पाला अथवा घी), ३ इकट्ठा होना,
४ ठीकबैठना, लगना, सटना ।

प्रा० जमहाई (सं० जृम्भा, जृम्भ्
=जम्हाना) स्त्री० आलस में आ-
कर मुँह खोलना, आलस्य, सुस्ती ।

प्रा० जमहाना (सं० जृम्भ्=जमहाना)
क्रि० अ० मुँह खोलना, जमहाईलेना ।

प्रा० जमाई { (सं० जामाता) पु०
जँवाई { दामाद, बेटी का पति ।

प्रा० जमालगोटा पु० एक दवा
का नाम, दतुइनिया ।

प्रा० जमुना { (सं० यमुना)
जमन { स्त्री० एक नदी का
जमना { नाम ।

सं० जम्बु { (जम्=खाना) पु०
जम्बू { जामन ।

सं० जम्बुक { (जम्=खाना) पु०
जम्बूक { गीदड़, सियार,
शृगाल ।

सं० जम्बुद्वीप { (जम्बु वा जम्बू=
जम्बूद्वीप { जामन, द्वीप=खंड)
पु० सात द्वीपों में का पहला द्वीप,
जिसमें नौ खंड हैं उसका यह
भरतखंड अथवा हिंदुस्थान एक
खंड है, (द्वीप शब्द को देखो) ।

सं० जय (जि=जीतना) भा० स्त्री०

जीत, विजय ।
 सं० जयजयकार बोलबाला, फ़तेह ।
 सं० जयपताका (जय + पताका)
 स्त्री० जीतका भंडा, फ़तेह का
 निशान ।
 सं० जयपत्र पु० जीतने का पत्र,
 अश्वमेध यज्ञ, दस्तूरुल्लभ्यमल,
 प्रोग्राम ।
 सं० जयन्त (जि=जीतना) पु०
 इन्द्र का बेटा ।
 सं० जयमाल (जय=जीत, माल
 =माला) स्त्री० जीत की माला,
 स्वयंवर में लड़की जिसको पसन्द
 करके उसके गले में जो माला
 डालती है वह भी जयमाल कह-
 लाती है ।
 सं० जयी (जय) क० पु० जीतने
 वाला, विजयी, जयवान् ।
 प्रा० जर (सं० ज्वर) स्त्री० तप, ताप,
 ज्वर, २ (जड) जड़, मूल ।
 सं० जरठ (जृ=बूढ़ा होना) गु०
 बूढ़ा, वृद्ध, पुराना, २ कठोर,
 कठिन, क्रूर ।
 सं० जरत { क० पु० बूढ़ा, वृद्ध ।
 जरी }
 सं० जरती स्त्री० बुढ़िया, वृद्धा ।
 प्रा० जरनी (जलना) स्त्री० जलन,
 चिन्ता, फ़िकर ।
 सं० जरा (जृ=बूढ़ा होना) स्त्री०
 बुढ़ापा, वृद्धावस्था, २ एक राक्षसी

का नाम ।
 सं० जरायुज (जरायु + ज) क०
 पु० पिण्डज, मनुष्यादि ।
 सं० जरासन्ध (जरा=एक राक्षसी
 का नाम, सन्ध=जोड़ा हुआ) पु०
 मगध देश का प्रसिद्ध राजा जो
 कंस का ससुर श्रीकृष्ण का वैरी
 था । कहते हैं कि जब वह जन्मा था
 तब उसके शरीर की दो फाँकें थीं
 जिनको जरा नाम राक्षसी ने
 जोड़ा और उसने यह वर दिया
 कि जबतक इसके जोड़ न फटेंगे
 यह किसी से न मरेगा पर इसी
 तरह से भीम ने उसको चीर-
 डाला ।
 अ० जरीब स्त्री० खेत नापने की
 डोरी जो ६० गज अथवा २०
 गटे की होती है ।
 सं० जर्रर (जृ=पुराना होना) गु०
 पुराना, जीर्ण, निर्बल, पु० इन्द्रका
 भंडा, शैवाल, सिवार, इंद्रधनुष ।
 सं० जल (जल्=ढकना) पु० पानी ।
 सं० जलक पु० वराटिका, कौड़ी,
 शुक्लिका, सूती, शंख, घोंघा ।
 सं० जलकरङ्क पु० शंख, घोंघा,
 वराटिका, नारियल का फल दूध-
 युक्त, सिवार, काई ।
 सं० जलकाक पु० गोताखोर, बतक,
 पनडुब्बी ।
 सं० जलकुक्कुट (जल=पानी, कुक्कुट

=मुर्गा) पु० जलमुर्गा, मुर्गावी ।
 सं० जलकूपी स्त्री० तड़ाग, हौज ।
 सं० जलगुल्म पु० जलभौर, क-
 हुआ, बर्फ, हिम, पाला ।
 सं० जलक्रीड़ा (जल + क्रीड़ा) स्त्री०
 पानी में खेल करना ।
 सं० जलचर (जल=पानी, चर=
 चलनेवाला, चर्=चलना) पु०
 जल के जीव मकर, मछली, ग्राह
 आदि ।
 सं० जलचरकेतु (जलचर=मकर,
 केतु=भंडा, अर्थात् जिसके भंडे
 पर मकर का चिह्न है) पु० काम-
 देव, मदन, मकरध्वज ।
 सं० जलज (जल=पानी, ज=पैदा
 होनेवाला, जन्=पैदा होना) पु०
 कँवल, कमल, पंकज, २ मछली,
 ३ शङ्ख, ४ चन्द्रमा, ५ मोती ।
 सं० जलजान (जल=पानी, जात=
 पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु०
 कँवल, कमल ।
 सं० जलत्र (जल + त्र, त्र=रक्षा
 करना) छत्र, छाता, नौका,
 नाव ।
 प्रा० जलथल (सं० जलस्थल) पु०
 आधी धरती पानीसे ढकी हुई और
 आधी सूखी, दलदल ।
 सं० जलद (जल=पानी, द=देने-
 वाला, दा=देना) पु० बादल,
 मेघ, धन, घटा, बारिद, मोथा,

घास, कलश, घड़ा, गु० पानी
 देनेवाला ।
 सं० जलधर (जल=पानी, धर=
 रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल,
 २ समंदर, ३ एक प्रकारका घास,
 गु० पानी को रखनेवाला ।
 सं० जलधारा (जल=पानी, धारा
 =धार) स्त्री० भरना, प्रवाह,
 सोता, स्रोत, पानी का गिरना ।
 सं० जलधि (जल=पानी, धा=रख-
 ना) पु० समंदर ।
 प्रा० जलन (सं० ज्वलन) स्त्री०
 जलना, तपन, २ तप, ३ रिस,
 क्रोध, कुढ़न ।
 सं० जलनिर्गम पु० मोरी, पानी
 का निकास ।
 प्रा० जलना (सं० ज्वलन, ज्वल्
 =जलना) क्रि० अ० बलना,
 दहना, सुलगना, भड़कना, आँच
 लगना, २ क्रोध करना, कोप
 करना, कुढ़ना ।
 प्रा० जलउठना बोल० भड़कउठना,
 जलजाना ।
 प्रा० जलबुझना बोल० राख हो
 जाना ।
 प्रा० जलेपर नोनलगाना बोल०
 दुखिया मनुष्य को फिर सताना ।
 सं० जलनिधि (जल=पानी, नि-
 धि=खजाना) पु० समंदर, सागर ।
 सं० जलनीली स्त्री० काई, सिवार ।

प्रा० जलन्दर } (सं० जलोदर,
जलन्धर } जल=पानी, उदर
=पेट) पु० पेटमें पानी का इकट्ठा
होना, एक प्रकार का पेटका रोग,
२ दैत्य विशेष, ३ जलाशय, कू-
पादि ।

सं० जलपति (जल=पानी, पति
=राजा) पु० वरुणदेवता, २ स-
मंदर ।

सं० जलपान (जल=पानी, पान=
पीना) पु० कलेवा, कलेऊ, जल
खाना ।

सं० जलयान (जल=पानी, यान=
सवारी) पु० नाव, नौका, ज-
हाज ।

सं० जलराशि (जल=पानी, राशि
=ढेर) पु० समुद्र ।

सं० जलरुह (जल=पानी, रुह=
उगना) पु० कँवल ।

सं० जलबाण (जल=पानी, बाण=
तीर) पु० पानी के तीर ।

सं० जलविन्दु पु० पानी का बूंद ।

सं० जलविहङ्ग पु० जलपक्षी ।

सं० जलशायिन् (जल + शायिन्,
शी=सोना) क० पु० विष्णु,
जलचर ।

सं० जलाकर (जल + आकर)
पु० सोत, भरना ।

सं० जलाञ्चल (जल + अञ्चल) पु०
भरना, नाला, सोता ।

सं० जलाशय (जल=पानी, आशय
=जगह) पु० तालाब, भील,
सरोवर, समंदर ।

प्रा० जलेबी स्त्री० एक प्रकार की
मिठाई ।

सं० जलौका (जल=पानी, ओक=
वास) स्त्री० जोंक, जलिका,
जलुका ।

सं० जल्प (जल्प=वृथा बकना)
वृथा बकवाद, झूठा झगड़ा, वाद ।

सं० जल्पक (जल्प + अक) क०
पु० वावदूक, वाचाल, फुल्लगो,
गप्पी, बकवादी ।

सं० जल्पना (सं० जल्पन, जल्प=
बकना) क्रि० अ० बकना, बो-
लना, वृथा बकवाद करना, झूठा,
झगड़ा करना ।

सं० जल्पिन (जल्प=वृथा बकना)
र्म० पु० बकते हुए, बकवाद
करते हुए ।

प्रा० जव (सं० यव) पु० एक
जौ) अनाज का नाम ।

सं० जवनिका (जु=जाना, जिसमें)
स्त्री० परदा, कनात, काई ।

प्रा० जवान (सं० युवन्, यु=मिलना)
पु० तरुण, सोलह वरसकी उमरका ।

प्रा० जवार पु० समंदर की बाढ़,
२ एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० जवारभाटा पु० समुद्र का
उतार चढ़ाव ।

प्रा० जवासा (सं० यवास, यु=मिलना) पु० एक प्रकार की घास जिसकी गर्मी के दिनों में टट्टी बनाई जाती है और इसपर बरसात का पानी गिरने से सूख जाता है ।

प्रा० जम (सं० यश) पु० कीर्ति, नामवरी ।

प्रा० जम क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकारसे ।

प्रा० जसोदा { (सं० यशोदा) स्त्री० जसुमति } नन्दजी की स्त्री, श्रीकृष्ण की दूसरी माँ ।

प्रा० जस्त { पु० एक प्रकार की जस्ता } धातु ।

सं० जहक (ज + हक, हाक=छोड़ना) पु० समय, बालक, केंचुल, गु० त्यागी, छोड़नेवाला ।

प्रा० जहँ { (सं० यत्र) क्रि० वि० जहाँ } जिस जगह ।

प्रा० जहाँतहाँ बोल० हर एक जगह, सब ठौर ।

प्रा० जहाँकानहाँ बोल० जहाँ था वहीं, उसी जगह ।

प्रा० जहाँजहाँ बोल० जिस जिस जगह ।

प्रा० जहाँकहीं बोल० चाहे जहाँ, किसी जगह ।

प्रा० जहाँतहाँफिरना बोल० भटकना, इधर उधर फिरना ।

सं० जहु पु० चन्द्रवंशियों में एक

राजर्षि का नाम जो गंगाको उतरने के समय पीगया था (पुराणों के अनुसार) ।

सं० जहुननया (जहु + तनया=बेटी) स्त्री० गंगा, कहते हैं कि जब राजा जहु तप करते थे तब गंगा की धारा से व्याकुल हुए तो गंगा को पी गये फिर देवताओं के कहने से पीछे पेट से निकाल दी इसलिये गंगाको जहु की बेटी कहते हैं ।

प्रा० जाई (सं० जाता, जन्=जन्मना) स्त्री० बेटी, लड़की, जनी, गु० पैदा हुई, २ (सं० जाती) चमेली ।

प्रा० जाँय (सं० जङ्घा) स्त्री० रान, जंघा ।

प्रा० जाँघिया (जाँघ) पु० कछनी ।

प्रा० जाँचना क्रि० स० परखना, अटकलना, कसना ।

प्रा० जाँता (सं० यंत्र) स्त्री० चक्की, पाट, पेपणी ।

प्रा० जाकड़ पु० बन्धक, धरोहर, कोई चीज शर्त पर लेना ।

प्रा० जागना (सं० जागरण, जाग्र=जागना) क्रि० अ० नींद से उठना, सचेत होना ।

सं० जागर { (जाग्र=जागना) भा० जागरण } पु० रतजगा, जगौती रात को जागकर परमेश्वर का ध्यान करना ।

सं० जागरित }
 जागरिता } क० पु० जगैया,
 जागरी } निद्रोत्थित, स-
 जागरूक } चेत, वेदार ।
 जाग्रत् }

सं० जाङ्गल पु० गौरैया पक्षी, गरगौटा ।

प्रा० जाचक (सं० याचक) पु० माँग-
 नेवाला, भिखारी, याचनेवाला ।

प्रा० जाचना (सं० याचन) क्रि०
 स० माँगना, चाहना ।

प्रा० जाजम स्त्री० शतरंजी, दरी,
 बिछौना ।

प्रा० जाट पु० हिंदुओं में एक जाति ।

प्रा० जाड़ा (सं० जड, जल्=ढकना)
 पु० सर्दी, ठंड, शीतकाल ।

सं० जान (जन्=पैदा होना) पु०
 जन्मा हुआ, पैदा हुआ, उत्पन्न ।

अ० ज्ञात (सं० जाति) स्त्री० जाति,
 वंश, कुल, वर्ण, गोत्र, २ प्रकार,
 भेद, गण, वर्ग ।

सं० जातक (जन्=पैदा होना) पु०
 बेटा, २ बृहज्जातक आदि ज्योतिष
 के ग्रन्थ, ३ जातकर्म ।

सं० जातकर्म (जात=जन्म, कर्म=
 काम) पु० जन्मके समयकी एक
 रीति ।

प्रा० जातपाँत (सं० जातिपंक्ति)
 स्त्री० वंशावली, वंश, उत्पत्ति,
 पीढ़ी ।

सं० जानरूप पु० सोना, चाँदी ।

सं० जाति (जन्=पैदा होना) स्त्री०
 जात, वर्ण, गोत्र, वंश, २ उत्पत्ति ।

सं० जातकर्म पु० नां दीमुखश्राद्धादि ।

सं० जाती (जन्=पैदा होना) स्त्री०
 चमेली, जावित्री ।

सं० जातीफल पु० जायफल ।

सं० जातुधान (जातु=कभी, धान=
 पास, अर्थात् जो समय पाकर
 मनुष्यों के पास आजाता है) पु०
 राक्षस, असुर ।

प्रा० जात्रा (सं० यात्रा) स्त्री० तीर्थ
 को जाना, देशाटन, सफर, कूच ।

प्रा० जात्री (सं० यात्री) पु० यात्रा
 करनेवाला, तीर्थ को जानेवाला,
 मुसाफिर ।

फ्रा० जान रुह, जीव, आत्मा ।

सं० जानकी (जनक=राजाका नाम)
 स्त्री० जनक राजाकी बेटी, सीता,
 वैदेही, श्रीरामचन्द्रकी पत्नी ।

प्रा० जानना (सं० ज्ञान, ज्ञा=जा-
 नना) क्रि० स० समझना, बूझना,
 पहचानना, जानबूझके, बोल०
 मनसे, जीसे, समझ बूझ कर ।

प्रा० जाना (सं० यान, या=जाना)
 क्रि० अ० गमन करना, चलना,
 बीतना, पहुँचना, जारी रहना,
 चला जाना ।

प्रा० जातारहना बोल० खोया
 जाना, चला जाना, अदृश्य होना,
 अलोप होजाना, मर जाना, चंपत

होना, बिलाय जाना ।

प्रा० जानेदेना बोल० छोड़देना,
क्षमा करना, कुछ ध्यान नहीं
करना ।

सं० जानु (जन्=पैदा होना) पु०
घुटना, टखना, टेंवना, ऊरू, ज्ञानू ।

सं० जाप (जप्=जपना) क० पु०
जप, रटना, माला फेरना, मन्त्र
जपना ।

सं० जापक (जप्=जपना) क० पु०
जप करनेवाला, जपनेवाला ।

प्रा० जाम (सं० याम) स्त्री० पहर,
दिन रात का आठवाँ भाग, तीन
घण्टा ।

प्रा० जामन (सं० जम्बु, जम्=
खाना) पु० एक पेड़ और उसके
फल का नाम ।

सं० जामाना (जाया=पत्नी, मा=
आदर करना) पु० जमाई, बेटी
का पति, दामाद ।

प्रा० जामिनी (सं० यामिनी) स्त्री०
रात, रात्रि ।

प्रा० जाम्बवन्त (सं० जाम्बवान्,
जाम्ब=जामन, वत्=वाला) पु०
रीछों का राजा जो श्रीरामचन्द्र का
मित्र और श्रीकृष्णका ससुर था ।

सं० जाम्बूनद पु० सुवर्ण, स्त्री०
जाया, विवाहिता स्त्री ।

प्रा० जायफल (सं० जातिफल)
पु० एक तरह का गर्भ मसाला ।

प्रा० जाय क्रि० वि० वृथा ।

सं० जाया (जन्=पैदा होना) स्त्री०
भार्या, पत्नी, व्याही हुई स्त्री ।

सं० जायानुजीवी (जाया + अनु-
जीवी) पु० नट, वेश्यापति, भड़ुआ,
बकपक्षी ।

सं० जायापती दम्पती, स्त्री पुरुष ।

सं० जार (जू=दुबला होना, अर्थात्
स्त्री के सब पतिका प्यार घटाने-
वाला) पु० यार, दूसरा पति,
उपपति ।

सं० जारज (जार=यार, जन्=पैदा
होना) पु० जार से पैदा हुआ
लड़का, हरामी बेटा ।

प्रा० जारना (सं० ज्वलन) क्रि०
स० जलाना, सुलगाना, भड़काना,
आँच लगाना ।

सं० जाल (जल्=ढकना, घेरना)
स्त्री० फंदा, पाश, २ जालीदार
खिड़की, झरोखा, ३ माया, इन्द्र-
जाल, जादू, ४ समूह ।

सं० जालक (जाल् + अक) क०
पु० फरेबी, मक्कार, २ मछली का
जाल, ३ स्त्री० जालीलोट कपड़ा,
४ शिलाजीत, ५ जोंक, ६ राँड़,
रंडा, ७ फिल्लम, बल्तर, ८
व्याध, बहेलिया, मल्लाह ।

सं० जालगणिका स्त्री० मथेनी,
मथनी, रथी ।

प्रा० जाला (सं० जाल, जल्=

ढकना) पु० मकड़ी का फाँदा,
 २ मोतियाबिंद, आँख की बीमारी ।
 प्रा० जाली (सं० जाल) स्त्री० एक
 तरह का कपड़ा, २ भँफरी,
 जालीदार खिड़की, झरोखा ।
 सं० जाल्म पु० जार, भूत, पामर,
 अधम, क्रूर, ठीठ ।
 प्रा० जाचक (सं० याचक, यु=मि-
 लना) पु० महावर, अलता ।
 प्रा० जावित्री ((सं० जातीपत्री)
 जायपत्री) स्त्री० एक प्रकार
 का गर्म मसाला ।
 प्रा० जासु (सं० यस्य) सर्वना०
 जिसका, जिससे ।
 प्रा० जाहि सर्वना० जिसको ।
 सं० जाह्नवी (जह्नू=एक राजर्षि का
 नाम) स्त्री० गंगा, भागीरथी,
 (जह्नुतनया देखो) ।
 सं० जिगमिषा (गम्=जाना) भा०
 स्त्री० गमनेच्छा, जानेका इरादा ।
 सं० जिगीषा (जि=जीतना) भा०
 स्त्री० जीतने की इच्छा, जय की
 इच्छा, हिसका ।
 सं० जिघत्सा (अद्=भक्षण करना)
 भा० स्त्री० भोजनेच्छा, खाने का
 इरादा ।
 सं० जिघत्सु (अद्=खाना) क०
 पु० बुभुक्षु, भोजन करनेकी इच्छा
 करनेवाला ।
 सं० जिघांसा (हन्=मारना) भा०

स्त्री० मारने की इच्छा करना ।
 सं० जिघांसु (हन्=मारना) क०
 पु० मारने की इच्छा करनेवाला ।
 सं० जिज्ञासा (ज्ञा=जानना) भा०
 स्त्री० जानने की इच्छा, पूछना,
 प्रश्न ।
 सं० जिज्ञासु क० पु० पूछनेवाला ।
 प्रा० जित (सं० यत्र) क्रि० वि०
 जहाँ, जियर, २ जीतागया, हारा
 हुआ ।
 सं० जितेन्द्रिय (जित=जीतली वा
 वश करली, इन्द्रिय=इन्द्रियाँ, जिस
 ने) गु० इन्द्रियजित्, जिसने इन्द्रियों
 को वश में कर लिया हो, ऋषि,
 मुनि, यति, संन्यासी ।
 सं० जिन (जि=जीतना) पु० बुद्ध,
 जैनियों का देवता, जैनमत में २४
 जिन हुए वतलाते हैं ।
 प्रा० जिन्स जात, काम ।
 प्रा० जिमाना (सं० जेमन, जिम्=
 खाना) क्रि० स० खिलाना ।
 प्रा० जिमि क्रि० वि० जैसे, जिस
 प्रकार ।
 प्रा० जिय ((सं० जीव) पु० जीव,
 जियरा) प्राण, आत्मा, रूह ।
 प्रा० जियाना (सं० जीवन) क्रि०
 स० जिलाना, प्राणदेना, २ पा-
 लना, पोषना ।
 प्रा० जिहिं सर्वना० जिनको, जिस
 को, जिसके, जो ।

सं० जिह्वा (लिह्=स्वाद लेना)	दुखदेना, खिझाना, पीड़ादेना ।
स्त्री० रसज्ञानइन्द्रिय, जीभ, रसना ।	प्रा० जीपरखेलना बोल० अपने
प्रा० जी (सं० जीव) पु० जीव,	को जोखिम में डालना, जी देने
प्राण, आत्मा, जिय, रमन, चित्त ।	पर उद्यत होना ।
सं० जिह्वल क० पु० चटोरा, आ-	प्रा० जीपसीजना { बोल० दया
स्वादक, जिभोर ।	जीपिघलना } आना, मोह
प्रा० जीउठाना बोल० मन खींच	आना ।
लेना, किसीसे मित्रता छोड़देना ।	प्रा० जीपकड़ाजाना बोल० शोच
प्रा० जीवुराकरना बोल० जीमिच-	में होना, उदास होना ।
लाना, वमन करना या किया	प्रा० जीफटजाना बोल० दिल दूट
चाहना, रद्द किया चाहना ।	जाना, निराश होना ।
प्रा० जीचढ़ाना बोल० मनमें किसी	प्रा० जीफिरजाना बोल० किसी
चीजकी चाह पैदा होना, जी में	चीजको नहीं चाहना, सन्तुष्ट होना,
उत्साह होना, हौसिला होना ।	तृप्त होना, किसी चीज से अघा
प्रा० जीबिखरना बोल० अचेत	जाना ।
होना, मूर्च्छित होना, मूर्च्छा आना ।	प्रा० जीजलना बोल० मनमें दुख
प्रा० जीभरजाना बोल० सन्तोष	पाना, कुदना ।
होना, मन तृप्त होजाना, आसूदा	प्रा० जीजलाना बोल० सहाय क-
होना, अघाजाना ।	रना, कृपा करना, आप दुख सहकर
प्रा० जीआजाना बोल० किसी	दूसरेका उपकार करना, र सताना,
चीज पर अचानक मन लग जाना,	खिझाना, दिल दुखाना, कलाना ।
किसी से प्रसन्न होना ।	प्रा० जीचाहना बोल० किसी चीज
प्रा० जीभरआना बोल० मन में	की इच्छा करना, दिल ललचाना,
दया का उपजना, दया हर्ष अथवा	मनमें किसी की चाह पैदा होना ।
शोच से मुँहसे बोल न निकलना ।	प्रा० जीछिपाना { बोल० किसी
प्रा० जीबहलाना बोल० मन बह-	जीचुराना } कामको सुस्ती
लाना ।	से करना, असावधानी करना ।
प्रा० जीपाना बोल० किसीके स्व-	प्रा० जीचलाना बोल० किसी काम
भाव को जानना ।	को वीरता से करना ।
प्रा० जीपानीकरना बोल० सताना,	प्रा० जीचलना बोल० चाहना,

इच्छा करना ।

प्रा० जीदान बोल० बचाना, मरने से बचाना ।

प्रा० जीदानकरना बोल० किसी के प्राण बचाना, बड़े दोषको क्षमा करना, जान बूझ देना ।

प्रा० जीधड़कना बोल० डर से अथवा शोच से दिल धुकड़ धुकड़ करना, दिल काँपना ।

प्रा० जीझूबजाना बोल० अचेत होना, मूर्च्छा आना, जी बिखरना, गश आना, बेहोश होना ।

प्रा० जीरग्वना बोल० झटपट प्रसन्न होजाना, प्रसन्न करना, दिल खुश करना ।

प्रा० जीसे उतर जाना बोल० नहीं चाहना, दिलसे गिरना ।

प्रा० जीसे मारना बोल० मार डालना, जानसे मार डालना ।

प्रा० जीकरना } बोल० चाहना,
जीहोना } किसी चीज की चाह मनमें पैदा होना ।

प्रा० जीखोलकेकुल्लुकरना बोल० किसी काम को चाह से अथवा प्रसन्नता से करना ।

प्रा० जीपरआना बोल० मुश्किल पड़ना, जी क्लेश में होना ।

प्रा० जीघटजाना बोल० किसी चीज से मन हट जाना, धिनाना, अवज्ञा करना, उदास होना ।

प्रा० जीलगना बोल० किसी से प्यार करना, किसीकी चाह होना ।

प्रा० जीलगाना बोल० किसी चीज पर मन लगाना, किसी की चाह मन में पैदा होना ।

प्रा० जीलेना बोल० किसी के मन की बातको जानना, रमार डालना ।

प्रा० जीमारना बोल० किसी की इच्छा को तोड़ना, निराश करना, अप्रसन्न करना ।

प्रा० जीमिलाना बोल० किसी से मित्रता करना, मुहब्बत बढ़ाना ।

प्रा० जीमेंआना बोल० कोई बात सूझना, याद पड़ना ।

प्रा० जीमेंजलजाना बोल० डाह से दुख पाना ।

प्रा० जीमेंजीआना बोल० सुख पाना, चैन होना, प्रसन्न होना ।

प्रा० जीमेंघरकरना बोल० मन भाना, किसीको बहुत चाहना ।

प्रा० जीनिकलना बोल० मरना, २ बेकल होना, ३ बहुत डरना ।

प्रा० जीहारना बोल० हिम्मत हारना, घबराना, साहस नहीं रखना, निराश होना ।

प्रा० जीहटजाना बोल० मन हट जाना, जी घट जाना ।

प्रा० जी अव्य० हाँ, २ साहिब, आप ।

प्रा० जीत (सं० जित, जि=जीतना)

स्त्री० विजय, जय, फतह ।
 प्रा० जीतना (सं० जि=जीतना)
 क्रि० स० जय करना, पराजय
 करना, हराना ।
 प्रा० जीतब (सं० जीवन वा जीवि-
 तव्य) पु० जीना, जीवन, जिंदगी ।
 प्रा० जीता (जीना) गु० जीता
 हुआ, चलता, चैतन्य, २ अधिक,
 ऊपर ।
 प्रा० जीतेजी बोल० जबतक
 जीता है ।
 प्रा० जीना (सं० जीवन) क्रि०अ०
 जीता रहना ।
 प्रा० जीभ (सं० जिह्वा) स्त्री० जिह्वा,
 रसना, जवान ।
 प्रा० जीभबढ़ाना बोल० बातें ब-
 नाना, बकबक करना, निंदा
 करना ।
 प्रा० जीभपकड़ना बोल० चुप
 होना वा करना, २ किसी की
 बात काटना, ३ छोटे छोटे दोष
 निकालना ।
 प्रा० जीभचाटना बोल० बड़ी
 लालसा करना, जी ललचाना,
 बहुत चाहना ।
 प्रा० जीभनिकालना बोल० बहुत
 ही बहुत थकजाना या प्यासा
 होना, हाँफना ।
 प्रा० जीभी (जीभ) स्त्री० जीभ
 साफ करने की चीज ।

प्रा० जीमना } (सं० जेमन, जिम्=
 जेवना) खाना) क्रि० स०
 खाना, भोजन करना ।
 प्रा० जीमूत पु० मेघ, २ पर्वत,
 ३ मोथा, ४ दण्डकारण्य, ५ शेष,
 ६ धूप, ७ इन्द्रिय ।
 प्रा० जीरा (सं० जीर, ज्या=
 पुराना होना) पु० एक मसाले
 का नाम ।
 सं० जीर्ण (जृ=बूढ़ा होना, पुराना
 होना) पु० बूढ़ा आदमी, गु०
 पुराना मुर्झायाहुआ, पचाहुआ ।
 सं० जीर्णोद्धार (जीर्ण + उद्धार)
 मरम्मत, लेसपोत ।
 प्रा० जील स्त्री० गाने में ऊँचा स्वर,
 तीखा राग ।
 सं० जीव (जीव्=जीना) पु० प्राण,
 जी, आत्मा, २ जीवधारी जन्तु,
 जानवर, ३ जीविका ।
 सं० जीविक (जीव् + अक) क०
 पु० सेवक, किंकर, कृपण ।
 सं० जीवन पु० जीना, जीतब, २
 जीविका, वृत्ति, ३ पानी, ४ बेड़ा,
 पुत्र ।
 सं० जीवनचर्या जीवनवृत्तान्त,
 हाल, सवानह उम्मी ।
 सं० जीविका स्त्री० जीने का उपाय,
 आजीविका, वृत्ति, निवाह, रोजी ।
 सं० जीवित } गु० जीताहुआ, जीता,
 जीवी } पु० जीना, जीवन,

वर्तमान ।

प्रा० जीह { (सं० जिह्वा) स्त्री०
जीह्वा } जीभ, रसना ।प्रा० जुआरी { (सं० द्यूतकारी) क०
जुवारी } पु० जूआ खेलने-
वाला ।प्रा० जुग (सं० युग) पु० सत्य, वेता,
द्वापर, कलि ये चार जुग कहलाते
हैं, समय, २ जोड़ा ।प्रा० जुगानजुग (सं० युगानुयुग,
युग + अनु + युग) बोल० कई
युग, कई बरस, बहुत बरस तक ।प्रा० जुगजुग बोल० सदा, नित,
सर्वदा, हमेशह ।प्रा० जुगत (सं० युक्ति) स्त्री० चतुराई,
निपुणता, वनावट, हिकमत ।

प्रा० जुगनी स्त्री० चमकनेवाला कीड़ा ।

प्रा० जुगल (सं० युगल) गु० दो,
जोड़ा ।प्रा० जुगवना क्रि० स० देखना,
यत्र करना, खबर लेना, रखना,
रक्षा करना ।प्रा० जुगालना { क्रि० अ० उगा-
जुगालीकरना } लना, पागुराना,
राउथ करना ।प्रा० जुगाली स्त्री० पागुर, उगाल,
रोमथ ।

सं० जुगुप्सा (गुप्=निन्दा करना)

भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, असूया ।

सं० जुगुप्सित र्म्य० पु० निन्दित,

बदनाम ।

प्रा० जुभाऊ (सं० युद्धीय=लड़ाई
का) गु० लड़ाई का जुभाऊ
बाजा, लड़ाई का बाजा ।प्रा० जुभार (सं० योद्धा) क० पु०
लड़ाका, वीर, भट, लड़नेवाला,
बहादुर ।प्रा० जुटना (सं० युक्त, युज्=मिलना)
क्रि० अ० भिड़ना, मिलना, लड़ने
को सामने होना ।प्रा० जुड़ना (सं० जुड्=जुड़ना) क्रि०
अ० मिलना, सटना ।प्रा० जुड़ाना { क्रि० स० छाती
जुराना } ठंढी करना, ठंढा
होना, २ मिलाना, जोड़ना ।प्रा० जुन्हरी स्त्री० ज्वार, एक प्र-
कार का अनाज ।प्रा० जुवार स्त्री० एक प्रकार का
अनाज ।प्रा० जुहार पु० सलाम, रामराम,
पालागन, दण्डवत्, नमस्कार ।प्रा० जूआ (सं० द्यूत) स्त्री० पाँसा
खेलना, दाँव लगाना ।प्रा० जूआ { (सं० युग) पु० एक
जूवा } लकड़ी की चीज जो
बैलों के गले में बाँधते हैं, जूआट ।प्रा० जू स्त्री० जुवाँ जो शिरके बालों
में मैल से पैदा होते हैं ।प्रा० जूझना (सं० युध्=लड़ना)
क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना,

२ लड़ाई में मरना ।
 प्रा० जूभमरना बोल० लड़ाई में लड़कर मरना ।
 सं० जुष्ट (जुप्=सेवा करना) र्म० पु० जूठा, सेवित, सेवा किया गया ।
 सं० जूट (जुट=बाँधना) पु० केशों का बंध, जटाका जूड़ा, २ समूह ।
 प्रा० जूड़ा (सं० जूट) पु० बंधे हुए बाल, २ (जड़) ठंड ।
 सं० जुडित } (जुड + इत) र्म० पु० जुड़िया } मिलित, तौश्रम, दो लड़के जुड़े हुए ।
 प्रा० जूड़ी (सं० जड़=जाड़ा) स्त्री० ज्वर, शीतज्वर, कंपज्वर, जाड़ा, लरजा ।
 प्रा० जूता } पनही, पगरखी, जोड़ा, जूती } चर्मपादुका ।
 प्रा० जूहा (सं० यूथ) पु० समूह, झुंड ।
 प्रा० जूही } (सं० यूथी, यु=मिलना) जुही } स्त्री० एक फूल का नाम ।
 सं० जूम्भ } (जूम्भ=जम्हाना) जूम्भा } भा० स्त्री० जम्हाई, जूम्भण } आलस्य ।
 प्रा० जेठ स्त्री० ढेर, ढेरी, समूह, परत ।
 प्रा० जेठ (सं० ज्येष्ठ) पु० पति का बड़ा भाई, २ एक महीने का नाम ।
 प्रा० जेठा (सं० ज्येष्ठ) गु० बड़ा, पहलौठा, २ पु० कुसुम का बहुत अच्छा और गाढ़ा रंग ।

प्रा० जेठानी } (जेठ) स्त्री० जेठ जिठानी } की स्त्री ।
 प्रा० जेठीमधु (सं० यष्टीमधु, यष्टी=ताँत, मधु=शहद) स्त्री० मुलहठी, एक दवाई ।
 प्रा० जेठौन (जेठ) पु० जेठ का बेटा ।
 प्रा० जेब स्त्री० खलीता, पाकट ।
 प्रा० जेबकतरा पु० उचक्का, जेब कतरनेवाला ।
 सं० जेता (जि=जीतना) क० पु० विजयी, जीतनेवाला, फताह ।
 सं० जेमन (जिम्=खाना) भा० पु० भोजन, खाना, भोज्यपदार्थ, खाने की वस्तु ।
 प्रा० जेवड़ी } स्त्री० रस्सी, डोरी । जेवरी }
 प्रा० जेहर पु० स्त्रियों के पहनने का एक गहना ।
 प्रा० जै गु० जितना ।
 प्रा० जै (सं० जय) स्त्री० जीत, विजय, जय, फतेह ।
 प्रा० जैजैकार (सं० जयकार) पु० आनन्द, उत्सव, हर्ष, जीत, विजय, जय, बोलवाला ।
 प्रा० जैजैकारकरना बोल० जय का शब्द करना ।
 सं० जैन (जिन=अर्हण, बुध) पु० जिनधर्मको माननेवाला, बौद्धमती ।
 सं० जैनी क० पु० जैन मतको माननेवाला, श्रावक, सरावक ।

प्रा० जैसा (सं० यादृश्, यत्=जो, दृश्=देखना) क्रि० वि० जिस तरह, जिस प्रकार ।

प्रा० जैसा चाहिये बोल० यथोचित, ठीक ।

प्रा० जैसाकतैसा बोल० ठीक, जैसा चाहिये, ज्यों का त्यों ।

प्रा० जैहैं (व्रजभाषा) क्रि० अ० जायगा, जावेगा, जावेंगे ।

।० जों क्रि० वि० जैसे, जिसतरह, जब ।

प्रा० जोंतों } बोल० किसीतरहसे ।
जोंतोंकरके }

प्रा० जोंकातों बोल० जैसा कातैसा, जैसाथा वैसाही, ठीक वैसाही ।

प्रा० जोंक (सं० जलौका) स्त्री० जल का कीड़ा, जलौका ।

प्रा० जोंहीं क्रि० वि० जभी, तुरंत ।

प्रा० जोखना क्रि० स० तौलना, नापना ।

प्रा० जोखिम } स्त्री० बीमा, २ डर,
जोखों } चिंता, शङ्का, कठिन काम ।

प्रा० जोखिमउठाना बोल० अपने तई चिंता में डालना, कठिन काम के करने का साहस करना ।

प्रा० जोट } (सं० जोड़, जुड़=मि-
जोटा } लाना) पु० जोड़ी, साथी,
सम, बराबरी के, गु० बराबर ।

सं० जोड़ (जुड़=बाँधना, मिलाना)

पु० मेल, मिलाव, इकट्ठा, मीजान, टाँटल, २ गाँठ, संधि ।

प्रा० जोड़देना बोल० गिनना, हिसाबकरना, मीजान देना, ठीक करना, जोड़ना ।

प्रा० जोड़तोड़ बोल० बनावट, बंधान, हिकमत, जुगत, २ गाँठ ।

प्रा० जोड़जाड़ बोल० वचत, वचाव, थोड़ा थोड़ा करके इकट्ठा करना ।

प्रा० जोड़ना } (सं० जुड़=मिलाना)
जोरना } क्रि० स० मिलाना,

इकट्ठा करना, २ गाँठना, थेगली लगाना, पैवन्द लगाना, ३ गिनना, हिसाब करना, मीजान देना, जोड़ देना, ४ बनाना, लगाना, चिपटाना, साठना, पीछे लगा देना ।

प्रा० जोड़ा (सं० जुड़=जोड़ना) पु० दो मनुष्य अथवा दो चीज़, गुग्म, २ जूता, ३ कपड़े का जोड़ा ।

प्रा० जोतना (सं० योजन, युज्=मिलाना) क्रि० स० जुआमें लगाना, हल जोतना, चासना ।

प्रा० जोति } (सं० ज्योति) स्त्री०
जोत } चमक, उजाला, प्रकाश,
किरण, तेज, दीप्ति, रोशनी, दी-
पक का प्रकाश, २ दृष्टि, दीठ ।

प्रा० जोतिस्वरूप (सं० ज्योतिः स्वरूप) गु० आपसे प्रकाशित, दीप्तिमान्, प्रकाशरूप, परमेश्वर का गुण वा विशेषण ।

प्रा० जोतिष (सं० ज्योतिष्) पु०
ग्रह नक्षत्र आदि जानने का शास्त्र ।
प्रा० जोतिषी } (सं० ज्योतिषिक)
जोतिषी } क० पु० जोतिष
विद्या जाननेवाला, जोषी, गणक,
दैवज्ञ, नज्मी ।
प्रा० जोती स्त्री० तराजू के पलड़े
की रस्सी ।
प्रा० जोधा (सं० योधा) पु० ल-
ड़ाका, बीर, बहादुर, भट, जुझार ।
प्रा० जोना } क्रि० स० देखना,
जोवना } चितवना, ताकना ।
प्रा० जोवन (सं० यौवन) पु०
जवानी, तरुणार्थ ।
प्रा० जोय } (सं० जाया) स्त्री० पत्नी,
जोरू } भार्या, स्त्री, लुगई ।
प्रा० जोरी } (सं० युज्=मिलना)
जोड़ी } स्त्री० जोड़ा, युगल,
युग्म, दो ।
सं० जोषित् } (जुप्=प्रसन्न करना,
जोषिता } तृप्त करना) स्त्री०
नारी, लुगई ।
प्रा० जोषी } (सं० ज्योतिषी) पु०
जोषी } ज्योतिषी, ब्राह्मणों की
एक जाति ।
प्रा० जोहना क्रि० स० बाट देखना,
बाट निहारना, अपेक्षा करना,
देखना, खोजना, ढूँढ़ना ।
प्रा० जोही गु० खोजी, ढूँढ़ैया,
मुतलाशी ।

प्रा० जौलौ } क्रि० वि० जबतक ।
जौलग }
प्रा० जौ (सं० यव) पु० जव, एक
प्रकार का अनाज ।
प्रा० जौन (सं० यद् वा यः=जो)
सर्वना० जो, जिस ।
प्रा० जौनार } (सं० जेमन) स्त्री०
जेवनार } भोजन, भोज, खाना,
उत्सव, अपने भाई वंशु अथवा
मित्रों को खिलाना ।
सं० ज्ञात (ज्ञा=जानना) र्म० पु०
जाना हुआ, समझा हुआ, जाना
गया, विदित ।
सं० ज्ञाता (ज्ञा=जानना) क० पु०
जनैया, वाक्किफ ।
सं० ज्ञाति (ज्ञा=जानना) पु० पिता,
बाप, २ सम्बन्धी, जातिभाई ।
सं० ज्ञान (ज्ञा=जानना) पु० जान-
ना, बोध, बुद्धि, समझ, विज्ञता ।
सं० ज्ञानवान् } (ज्ञान) गु० बुद्धि-
ज्ञानी } मान्, पण्डित, वि-
द्वान्, विज्ञ, विचारवान् ।
सं० ज्ञानवापी (ज्ञान, वापी=बाव-
ली) स्त्री० एक बावली का नाम
जो बनारस में श्रीविश्वनाथजी के
मन्दिर में है ।
सं० ज्ञानेन्द्रिय (ज्ञान + इन्द्रिय)
स्त्री० इन्द्रियाँ जिनसे देखने, सुनने,
सूँघने, स्वाद लेने और छूने आदि
का ज्ञान होता है अर्थात् आँख

कान, नाक, जीभ, त्वचा अर्थात् शरीर पर का चमड़ा, अन्तःकरण, मन ।	सं० ज्योतिः (द्युत्=चमकना) भा० स्त्री० जोत, उजाला, प्रकाश, चमक, दीप्ति, प्रभा ।
सं० ज्ञापक (ज्ञप्=जनाना) क० पु० जतलानेवाला, बतलानेवाला, आज्ञा देनेवाला ।	सं० ज्योतिश्शास्त्र (ज्योतिस् + शास्त्र) पु० ग्रह नक्षत्र आदिकी चाल जानने का शास्त्र, ज्योतिष्, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि जानने का शास्त्र, पंचाङ्ग-शास्त्र ।
सं० ज्ञापन (ज्ञप् + अन, ज्ञप्=जनाना) भा० पु० जनाना, विदित करना, २ निदेश, हुक्म ।	सं० ज्योतिर्विद् (ज्योतिः + विद्, विद्=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नज्मी ।
सं० ज्ञापित } र्म० पु० जानाहुआ, ज्ञाप्य } जानने योग्य । ज्ञेय }	सं० ज्योतिष (ज्योतिः) पु० ज्योतिष शास्त्र, ज्योतिश्शास्त्र ।
सं० ज्या (ज्या=पुराना होना वा बूढ़ा होना) स्त्री० माँ, माता, २ पृथ्वी, धरती, ३ धनुष का चिह्न ।	सं० ज्योत्स्ना (द्युत्=चमकना) स्त्री० चाँदनी, चन्द्रिका, चाँदकी किरण ।
सं० ज्येष्ठ (वृद्ध, यहाँ वृद्ध को ज्या आदेश होजाता है) गु० बड़ा, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा, पहलौठा ।	सं० ज्वर (ज्वर्=बीमार होना) पु० तप, ताप, ज्वर ।
सं० ज्येष्ठा (ज्या=बूढ़ा वा बड़ा वा पुराना होना) स्त्री० अठार-हवाँ नक्षत्र, २ बिचली अंगुली, ३ गंगा ।	सं० ज्वराग्नि (ज्वर + अग्नि) पु० तप की गरमी ।
सं० ज्येष्ठ (ज्येष्ठा) पु० जेठ का महीना जिसकी पूर्णमासी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूरा चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है ।	सं० ज्वलन (ज्वल्=जलना, चमकना) भा० स्त्री० जलन, तपन, दाह, २ आग ।
प्रा० ज्यों क्रि० वि० जैसे ।	सं० ज्वलित (ज्वल्=चमकना) क० पु० प्रकाशित, जलता हुआ ।
प्रा० ज्योंकात्यों बोल० ठीक, वैसाही, ठीक ठीक ।	प्रा० ज्वार स्त्री० एक प्रकार का अनाज ।
	सं० ज्वाला (ज्वल्=चमकना) स्त्री० आँच, लौ, लपट, लूका, चमक ।

सं० ज्वालामुखी (ज्वाला=आग का लूका, मुख=मुँह) स्त्री० वह जगह जहाँ से आग निकलती है, आग का पहाड़, २ देवी, अम्बिका, दुर्गा ।

भ

सं० भ पु० बृहस्पति, २ इन्द्र, ३ शब्द-ध्वनि, ४ नैपथ्य, ५ भंकोर, ६ मिलाप, ७ स्थिति ।

सं० भङ्गार (भम्=ऐसा शब्द, कृ=करना) पु० भंभनाहट, भंभना होने का शब्द ।

प्रा० भंखना क्रि० अ० बड़बड़ाना, चड़चड़ाना, टैंटैं करना, बकना, २ पड़ताना, बिलपना ।

प्रा० भंखाड़ पु० विन पत्ते का पेड़ ।

प्रा० भंगा } पु० अंगा, कुरता, ऊ-
भगा } पर पहनने का कपड़ा ।

प्रा० भंभट पु० घबराहट, भगड़ा, रगड़ा ।

प्रा० भंभनाना (सं० भणत्कार, भणत्=ऐसा शब्द, कृ=करना)
क्रि० अ० ठनठनाना, बाजना ।

प्रा० भंभरी स्त्री० जाली, भरोखा ।

प्रा० भंडा पु० निशान, ध्वजा, पताका, फरहरा ।

प्रा० भंय }
भंव } स्त्री० मूर्च्छा ।

प्रा० भक स्त्री० कोप, क्रोध, रिस, सनक, २ लहर ।

प्रा० भकमारना बोल० वृथा काम

करना, निरर्थक काम करना, यह बोल० दूसरे की हलकाई जताने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० भकभोरी स्त्री० छीनाछीनी, भपटाभपटी, खींचाखींची, लूट पाट ।

प्रा० भकाभक गु० भलाभल, जगामग, २ सुथरा, साफ़ ।

प्रा० भकोरना क्रि० स० हिलाना, कंपाना, भकोरादेना, भोका देना ।

प्रा० भकूड़ (सं० भंकार) पु० आँधी, चौवाई, तूफान, हवा का बौदल ।

प्रा० भक्की गु० वृथा बकवाद करने-वाला, बक्की, प्रलापी, लहरी, तरंगी ।

प्रा० भखना क्रि० अ० बड़बड़ाना, ठीकना, बकना ।

प्रा० भगड़ना क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना, बखेड़ा करना, वाद विवाद करना, कलह करना ।

प्रा० भगड़ा पु० लड़ाई, रगड़ा, बखेड़ा, विवाद ।

प्रा० भगड़ालू (भगड़ना) क० पु० लड़नेवाला, लड़ाक, लड़ाईखोर, भगड़ेल, भगड़ा करनेवाला ।

प्रा० भगुला पु० बालक के पहनने का कुर्ता, चोला ।

प्रा० भभू पु० लंबेवाल ।

सं० भञ्ज्वा स्त्री० वायु, वर्षाऋतु,

भकोरा, भौंभ ।
 सं० भंभानिल (भंभ + अनिल)
 पु० वर्षाऋतु, ग्रीष्म का वायु,
 भकोरा ।
 प्रा० भंभट पु० बखेड़ा, भगड़ा ।
 प्रा० भट (सं० भटिति, भट=
 उलभना, मिलना) क्रि० वि०
 तुरन्त, शीघ्र, उसी दम, जल्दी ।
 प्रा० भटसे } बोल० तुरन्त, शीघ्र,
 भटपट } उसी दम, जल्दी,
 शीघ्रता से ।
 प्रा० भटकना क्रि० सं० खींच लेना,
 खसोटना, क्रि० अ० दुबला
 होना, २ हिलना ।
 प्रा० भटका पु० भटके से मारने
 का शब्द, २ खिंचाव, खींच, गु०
 भटके से मारा हुआ ।
 सं० भटिति अव्य० शीघ्र, जल्दी ।
 प्रा० भड़ स्त्री० भड़ी, २ आँच,
 ३ एक तरह का ताला ।
 प्रा० भड़ना क्रि० अ० गिरना (जैसे
 पेड़से फल अथवा पत्ते), टपकना,
 चूना, २ वाजना (जैसे नौबत) ।
 प्रा० भड़पना क्रि० अ० लड़ना,
 चिल्लाना, भपटाभपटी करना,
 भड़पाभड़पी करना ।
 प्रा० भड़बेर पु० } (भाड़भाड़ी
 भड़बेरी स्त्री० } सं० बदरी=बेर)
 बेर की भाड़ी, बेर का पेड़ ।
 प्रा० भड़ी स्त्री० लगातार मेह बर-

सना, बराबर बरसते रहना ।
 प्रा० भप क्रि० वि० भट, तुरन्त ।
 प्रा० भपसे बोल० भटपट, भटसे ।
 प्रा० भपकना क्रि० सं० भलना,
 पंखा भलना, क्रि० अ० लपकना,
 भपटना, २ पलक मारना, उँघाना ।
 प्रा० भपकी स्त्री० भपट, लपक,
 २ उँघाई, पलक मारना, पलक
 लगाना ।
 प्रा० भपट भा० स्त्री० छीन खसोट,
 खींचाखींची, २ लपक, उछल ।
 प्रा० भपटलेना बोल० छीनलेना ।
 प्रा० भपटा बोल० धावा, चढ़ाव,
 लपक, २ छीन, खसोट ।
 प्रा० भपटामारना बोल० भपट
 लेना, छीन लेना ।
 प्रा० भपाभपी स्त्री० उतावली,
 हड़बड़ी ।
 प्रा० भपास स्त्री० फूही, फुहार,
 भीसी, भड़ी ।
 प्रा० भब्बा पु० फूँदा, लटकन,
 गुच्छा ।
 सं० भम (भम्=खाना) क० पु०
 भोक्ता, खानेवाला, भोजन ।
 प्रा० भमभम } क्रि० वि० लगा-
 भमाभम } तार ।
 प्रा० भमभमाना क्रि० अ० चम-
 कना, भलकना ।
 प्रा० भमरभमर क्रि० वि० बूँद
 बूँद से ।

प्रा० भर स्त्री० भड़ी, मेह का लगा-
तार बरसना, २ आँच, लूका ।

प्रा० भरना (सं० भरण) पु०
सोता, चश्मा, २ भरनी, कर्जनी,
क्रि० अ० चूना, टपकना, बहना,
जारी होना, ३ गिरना (जैसे फल
पत्ते आदि) ।

प्रा० भरौखा पु० जाली, खिरकी,
मोखा, दरीची ।

सं० भर्भरा स्त्री० वेश्या, पतुरिया ।

सं० भर्भरी स्त्री० खंजरी, डफली ।

प्रा० भल (सं० ज्वल) स्त्री० ज्वाला,
२ क्रोध ।

प्रा० भलक स्त्री० चमक, उजाला,
जगमगाहट ।

प्रा० भलकना (सं० ज्वलन) क्रि०
अ० चमकना ।

प्रा० भलकी स्त्री० चमक, दमक,
कटाक्ष ।

प्रा० भलभलाना (सं० ज्वलन)
क्रि० अ० चमकना, भलभल
करना, २ क्रोध करना, टीसना ।

प्रा० भलभलाहट स्त्री० चमक,
भलक ।

प्रा० भलना क्रि० अ० भपकना,
पंखा चलाना वा हँकना ।

प्रा० भलाभल (सं० ज्वलन)
गु० चमकीला, जगमगा ।

सं० भष (भष्=मारना) पु० मच्छ,
मकरमच्छ, बड़ी मछली, पाठीन ।

सं० भषकेतु (भष=मकरमच्छ,
केतु=झंडा अर्थात् जिसके झंडे पर
मकर का चिह्न है) पु० कामदेव ।

प्रा० भाँकना क्रि० स० छिपकर
देखना, ढाकना, निहारना, कनखी
से देखना ।

प्रा० भाँख पु० बारहसिंगा, हरिण ।

प्रा० भाँभ (सं० भर्भ, भर्भ=
शब्द करना) पु० मंजीरा, एक
तरह का वाजा, २ क्रोध, गुस्सा,
चिड़चिड़ाहट ।

प्रा० भाँपना क्रि० स० ढकना, बंद
करना, तोपना, ढाँपलेना ।

प्रा० भाँवली स्त्री० चोंचला, हाव
भाव, नखरा ।

प्रा० भाऊ (सं० भाबु, भ=ऐसा
शब्द वा=लेजाना, बहना) पु०
एक वृक्ष का नाम ।

प्रा० भाग पु० फेन, गाज ।

प्रा० भाखा पु० भखना, रोना,
खीभना ।

प्रा० भाभा पु० गाँजा भंग नशेकी
चीज ।

प्रा० भाड़ पु० भाड़ी, कँटीला
वन, २ एक प्रकार की आतिश-
बाजी, ३ बत्तियों का भाड़, पंज-
शाखा, ४ जुल्लाव, ५ लगातार
मेह, भाड़ी ।

प्रा० भाड़बाँधना बोल० लगातार
मेह बरसना ।

प्रा० भाड़भंखाड़ बोल० कटीली और सूखी भाड़ी ।	प्रा० भाड़े भपटे जाना बोल० पाखानेजाना, भाड़े फिरना ।
प्रा० भाड़खण्ड (भाड़=भाड़ी, सं० खण्ड=टुकड़ा) पु० वन, जङ्गल, वैजनाथ महादेव का वन ।	प्रा० भाड़ाभपटालेना बोल० ढूँ- ढ़ना, खोजना, तलाशी लेना ।
प्रा० भाड़न (भाड़ना) स्त्री० बुहारना, कूड़ा कचरा, कर्कट, २ अस्त्रबाव पोंछने का मोटा कपड़ा ।	प्रा० भाड़ादेना बोल० तलाशी देना ।
प्रा० भाड़ना क्रि० सं० बुहारना, भाड़ू लगाना, २ कूँची मारना या कूँची से कपड़ा साफ करना, साफ करना, ३ चकमक से आग भाड़ना ।	फ्रा० भाड़ूकश (भाड़ू=बुहारी, फ्रा० कश=खींचना) भंगी, मिह- तर, हलालखोर ।
प्रा० भाड़पछाड़करदेखना बोल० जाँचना, परखना, खूबदेखना ।	प्रा० भावा पु० तेल नापने का बर- तन, २ मुर्ग बंद करने का टापा ।
प्रा० भाड़नाफूंकना बोल० भूत उतारना, मन्त्र पढ़ना, टोटका करना ।	प्रा० भारी (सं० भर) स्त्री० सुराही जिसकी नाली लंबी होती है और उसके एक टोंटी लगी रहती है ।
प्रा० भाड़डालना (बोल० साफ भाड़देना) कर डालना, बुहार डालना ।	प्रा० भारी पु० सब, समूह ।
प्रा० भाड़भटक बोल० भाड़ना बुहारना ।	प्रा० भाल स्त्री० बड़ाटोकरा, २तेजी, ३ धातु के दूटे बरतन को जोड़ना ।
प्रा० भाड़भूड़ बोल० भाड़न, बुहारन, भाड़, भटक, २ ऊपरी पैदा, दस्तूरी, ३ जंगल, भाड़ी ।	प्रा० भालना क्रि० सं० ओपना, घोटना, २ जोड़ना ।
प्रा० भाड़न्त क्रि० वि० सबके सब, संपूर्ण रूप से ।	प्रा० भालर स्त्री० किनारा, सूत या रेशमकी जाली ।
प्रा० भाड़ा पु० दस्त, मलका त्याग ।	प्रा० भालरा (सं० भर) पु० पानी का बड़ा कुंड, भरना ।
	प्रा० भिभकना क्रि० अ० चौंकना, भड़कना, डर उठना ।
	प्रा० भिड़कना क्रि० सं० धमकाना, डराना, घुरकना, डाटना ।
	प्रा० भिड़की (भिड़कना) स्त्री० धमकी, घुरकी, भिड़क ।
	प्रा० भिनभिनी स्त्री० सनसनाहट,

भुनभुनाइट, सनसनी जो हाथ पैर
 सो जाते हैं तब मालूम होती है ।
 प्रा० भिलम पु० लोहे की कुर्ती,
 कवच, बाल्तर ।
 प्रा० भिलमिली स्त्री० दरवाजे की
 भँभरी, भिलमिल, जाली ।
 प्रा० भिल्ली स्त्री० पतला चमड़ा,
 भिंगुरी ।
 प्रा० भ्रींकना { क्रि० अ० पछतावा
 भ्रींक्वना } करना, रोना, हाथ
 हाथ करना ।
 प्रा० भ्रींगा स्त्री० एक तरह की
 मछली ।
 प्रा० भ्रींगुर पु० एक प्रकार का
 कीड़ा ।
 प्रा० भ्रीन { (सं०क्षीण) पु० पतला,
 भ्रीना } पतल ।
 प्रा० भ्रील स्त्री० सरोवर, सरवर,
 जलाशय ।
 प्रा० भ्रीमी स्त्री० फूँही, फुहार,
 भूपास, भूड़ी ।
 प्रा० भुकना क्रि० अ० नवना, नि-
 हुना, नीचा शिर करना, झँघना,
 प्रणाम करना, सलाम करना, नीचे
 लटक आना (जैसे वृक्षकी डाली),
 २ क्रोध करना, क्रोधित होना,
 चिढ़ना, जैसे “भुकी रानि अरहू
 अरगानी” (रामायण) ।
 प्रा० भुंभलाना क्रि० चिड़चिड़ा
 होना, चिढ़ना, खिसियाना, भट-

पट क्रोधित होजाना, क्रोध करना,
 क्रोधित होना ।
 प्रा० भुटलाना { (भूठ) क्रि० स०
 भुटलाना } भूठा करना, भूठा
 कलङ्क लगाना, भूठा ठहराना ।
 प्रा० भुठालना (भूठ) क्रि० स०
 भूठाकर दिखाना, भूठा ठहराना,
 २ उच्छिष्ट करना, कुछ खाके
 छोड़ देना ।
 प्रा० मुँहभुठालना बोल० कुछ
 खाना ।
 प्रा० मुँहामुँहभुठालना बोल०
 किसीको उसके मुँहपर वा सामने
 भूठा ठहराना ।
 प्रा० भुंड पु० समूह, भीड़भाड़, दल,
 यूथ, ठट्ठा, २ पेड़ों की कुंज ।
 प्रा० भुनभुना पु० बालकों का
 एक खिलौना ।
 प्रा० भुनभुनी स्त्री० घूँघरू, नूपुर ।
 प्रा० भूमका { पु० देही, कर्णमूल,
 भूमका } २ फूलों का वा
 फलों का गुच्छा, ३ एक फल
 का नाम ।
 प्रा० भुरना क्रि० अ० मुरभाना,
 कुम्हलाना, २ भरना ।
 प्रा० भुरी स्त्री० चुनत, सकोड़ ।
 प्रा० भुलसना (सं० ज्वल्=जलाना)
 क्रि० अ० जलाना, भुलसना ।
 प्रा० भुलाना क्रि० स० डोलाना,
 हिलाना, भूला देना, २ लटकाना ।

प्रा० भूँकल स्त्री० चिड़चिड़ाहट,
खुन्स ।

प्रा० भूठ { (सं० जुष्ट, जुष्=वृत्त
जूठ } होना) गु० भूठा,
स्त्री० उच्छिष्ट, खाने के पीछे
बचा खाना ।

प्रा० भूठ स्त्री० मिथ्या, असत्य ।

प्रा० भूठमूठ बोल० भूठ, अशुद्ध,
मिथ्या ।

प्रा० भूठा (भूठा) गु० भूठ बो-
लनेवाला, मिथ्यावादी, २ भूठा
खाना, खाने के पीछे बचा हुआ
खाना ।

प्रा० भूठाभाठा बोल० भूठा खाना ।

प्रा० भूमना क्रि० अ० हिलना,
लहरना, २ ऊँघना, शिरको ऊँचा
नीचा घुमाना, ३ बादलों का
घिर आना ।

प्रा० भूमभूम बोल० बादलों का
उमड़ना ।

प्रा० भूरना (सं० चूर्णन) क्रि० स०
कूटना, चूर चूर करना, पीसना, २
पेड़ से फल हिलाना, क्रि० अ०
३ भुरना, किसी की याद में शोच
करना, कलपना, पछताना ।

प्रा० भूल स्त्री० चौपायों के शरीर
पर ओढ़ाने का कपड़ा, भोला ।

प्रा० भूलना (सं० दोलन, दुल्=
भूलना) क्रि० अ० डोलना,
हिलाना, लटकना, पु० एक तरह

की कविता ।

प्रा० भूला (सं० दोला, दुल्=भू-
लना) पु० हिंडोला, पालना, डोला,
एक रस्सी जिसपर भूलते हैं ।

प्रा० भूसी पु० फूही, फुहार, भीसी,
२ इलाहाबाद के सामने एक
शहर जिसको पहले प्रतिष्ठानपुर
कहते थे और चन्द्रवंशियों की राज-
धानी था ।

प्रा० भोंक स्त्री० ढकल, भूलने में
ढकेलना, २ हवाका भोंका ।

प्रा० भोंकदेना बोल० आग में
पुवाल डालना, जलाना, जला
देना, २ धूलि फेंकना वा डालना,
३ फेंक देना, किसीको जोखिम में
डालना ।

प्रा० भोंकना क्रि० स० डालना,
फेंकना, घुसेड़ना, चूल्हे में ईंधन
डालना ।

प्रा० भोंटा (सं० जटा) पु० शिरके
पिछले बाल, चोटी, २ हिंडोले
का भोंका ।

प्रा० भोंकादेना बोल० किसीका
शिर अथवा शिर के बाल पकड़
कर जोर से हिलाना ।

प्रा० भोंपड़ा पु० { मदी, कुटी,
भोंपड़ी स्त्री० } मठिया ।

प्रा० भोंरा पु० फल का गुच्छा ।

प्रा० भोंका पु० भकोरा, हवा की-
भोंक, ठोकर, ठेस ।

प्रा० भोठा { (सं० उच्छिष्ट) गु०
भूठा } खाने के पीछे बचा
हुआ खाना ।

प्रा० भोला पु० अर्द्धांग, लकवा,
२ थैला ।

प्रा० भोली स्त्री० कोथली, थैली ।

प्रा० भौरा गु० गेहूँवर्ण, सौंरला ।

प्रा० भौड़ पु० भगड़ा, बखेड़ा,
टंटा ।

ट

सं० ट पु० वामन, शब्द, ध्वनि,
चन्द्रमा, गान, रुद्र, अंकुश, वृद्धा-
वस्था ।

प्रा० टंकना क्रि० अ० सियाजाना,
लगाया जाना, लटकना, लगना ।

प्रा० टंगना क्रि० अ० लटकना ।

प्रा० टंगड़ा { (टङ्का, टकि=बाँध-
टंगरी) ना } स्त्री० पिंढली,
गोड़, पैर का एक भाग ।

प्रा० टंटा पु० भगड़ा, लड़ाई, ब-
खेड़ा, रगड़ा ।

प्रा० टक स्त्री० स्वभाव, २ ताक, दृष्टि ।

प्रा० टकबाँधना बोल० ताकना,
घूरना ।

प्रा० टकलगाना बोल० बाट
देखना ।

प्रा० टकटकी स्त्री० ताक, घूर, यक-
टक ।

प्रा० टकटकीबाँधना बोल० ताकना,
घूरना, एक टक देखना ।

प्रा० टकराना (टकर) क्रि० सं०
टकर खिलाना, टकर देना ।

प्रा० टकसाल (सं० टङ्कशाला,
टङ्क=सिका, शाला=जगह) स्त्री०
मुद्रालय, वह जगह जहाँ सिका
तैयार होता है ।

प्रा० टकसालकाखोटा बोल०
शिक्षा अथवा उपदेश में बिगड़ा
हुआ ।

प्रा० टकसालचढ़ना बोल० शिक्षा
पाना, उपदेश पाना, सिखाया
जाना ।

प्रा० टकसालबाहर सं० अनपढ़,
कुपढ़, अनपढ़, २ खोटा, खराब ।

प्रा० टका (सं० टङ्क=सिका) पु०
दो पैसा ।

प्रा० टकुआ { (सं० तर्कु, कृत्
टकुवा) =काटना) पु० त-
कला, तकुवा, फिर्की ।

प्रा० टकोर स्त्री० ढोल का शब्द,
धुनि, थाप, चुमकार ।

प्रा० टकर स्त्री० धक्का, ठोकर, ठेला-
ठेली, रेल, ठकेल, भोक, ठेस ।

प्रा० टकरग्वाना बोल० ठोकर
खाना, किसी चीज से भिड़जाना,
२ दुःख में गिरना, नुकसान
उठाना ।

प्रा० टकरमारना बोल० धक्का ल-
गाना, ठोकर मारना, ठकेलना,
रेलना, पटकना, ठेस मारना ।

प्रा० टखना पु० ठेवना, गुल्फ, घूटी ।

सं० टङ्क (टङ्कि=बाँधना) स्त्री०
टाँक, चार माशे का तौल, २ टाँकी,
छेनी, पत्थर काटने का औजार,
३ तलवार, ४ क्रोध, ५ अहंकार,
६ सुहागा, ७ खुरपी ।

सं० टंककशाला (टङ्कक=टंकश,
शाला=मकान) स्त्री० टंकशाल,
रुपये बनाने का घर ।

सं० टंक पु० खनित्र, खंता, खुरपा,
फरुहा, टाँकी, तलवार का मियान ।

सं० टंकार (टम्=ऐसा शब्द, कृ=
करना) पु० धनुष् के चिल्ले का
शब्द, २ अचंभा, ३ नामवरी ।

प्रा० टटका गु० नया, ताजा, तुरंत
का ।

प्रा० टटड़ी स्त्री० चाँदी, टाँट, २
घेरा, मेड़ ।

प्रा० टटपूँजिया गु० थोड़ी पूँजी
वाला, दिवालिया ।

प्रा० टटवानी (टट्) स्त्री० छोटी
घोड़ी ।

प्रा० टटोलना क्रि० स० टोवाटोई
करना, टोना, छूने से ढूँढ़ना (जैसे
अंधे लोग ढूँढ़ते हैं) ।

प्रा० टट्टर पु० बड़ी टट्टी, टट्टा,
भाँप ।

प्रा० टट्टी स्त्री० टट्टिया, चटाई का
बना हुआ छोटा टट्टर, ओट, आड़,
(टट्टी खसखस की और फूस

आदि की भी बनती है), शिकार
की टट्टी की ओट बैठना=छिप के
करना, घात में बैठना ।

प्रा० टट्टू पु० टाँगन, पहाड़ी घोड़ा ।

प्रा० टपकना दूट पड़ना, गिर पड़ना,
चूना ।

प्रा० टपका पु० पानी का बूँद,
२ पके फल का गिरना ।

प्रा० टपना क्रि० स० नाँघना, फाँ-
दना, कूदना ।

प्रा० टपाना क्रि० स० नाँघवाना,
कूदवाना ।

प्रा० टप्पा पु० डाक का घर, डाक-
खाना, २ एक प्रकार का गीत अ-
थवा रागिणी, ३ गेंद अथवा गोली
का उछालना, ४ कूद, उछाल ।

प्रा० टप्पाम्वाना बोल० गोली
अथवा गेंद का उछलता हुआ जाना ।

प्रा० टरना (सं० टल्=व्याकुल
टलना) होना वा घबराना)
क्रि० अ० हटना, सरकना, चंपत
होना, चले जाना, दबकरटना, लौट
पौट जाना, अस्तव्यस्त होना ।

प्रा० टर्रा गु० मगरा, दुष्ट, २ बक्की,
३ जोरावर ।

प्रा० टर्राना क्रि० स० टेंटे करना,
बकबक करना, चिड़चिड़ाना ।

सं० टलन (टल्=घबराना) भा० पु०
चंचल होना, शोक, उलटा पलट ।

प्रा० टसक स्त्री० टीस, पीड़ा, कह-

राना ।

प्रा० टसकना क्रि० अ० हिलना,
चलना, सरकना, उकसना, २
कहराना ।

प्रा० टहनी स्त्री० डाली, छोटी
डाली ।

प्रा० टहल { स्त्री० घर का काम
टहलटकोर } काज,सेवा,नौकरी,
दास का काम ।

प्रा० टहलटकोर करना बोल०
सेवा करना ।

प्रा० टहलना क्रि० अ० फिरना,
चलना, हवा खानेको बाहरजाना ।

प्रा० टहलनी { (टहल) स्त्री० घर
टहलबी } का काम काज
करनेवाली, दासी ।

प्रा० टहलुवा (टहल) पु० घर का
काम काज करनेवाला, दास,
सेवक, नौकर, चाकर ।

प्रा० टाँक (सं० टङ्क) स्त्री० चार
माशे का तोल, २ एक तरह की
सुई, ३ सीवन ।

प्रा० टाँकना क्रि० स० सीना, टाँका
मारना, तुरपना ।

प्रा० टाँका पु० सीवन, टाँक, जोड़ना ।

प्रा० टाँके लगाना बोल० सीना
जोड़ना ।

प्रा० टाँकी (सं० टङ्क) स्त्री० रुखानी,
खेनी, २ नासूर, फोड़ा, खर्बूजे का
चौकोर टुकड़ा जो उसको अच्छा

बुरा देखने के लिये काटा जाता है ।

प्रा० टाँग (सं० टङ्का) स्त्री० टंगड़ी,
पिंडली, गोड़ ।

प्रा० टाँगन पु० पहाड़ी घोड़े की
एक जात ।

प्रा० टाँगना क्रि० स० लटकाना ।

प्रा० टाँट स्त्री० चाँदी, टटड़ी, शिर
का विचला भाग ।

प्रा० टाँडा पु० खेप, वनजारे की
चीज वस्तु ।

अं० टाउनहाल सभास्थान, मज-
लिस, दरबार ।

प्रा० टाट पु० सन का कपड़ा, अ-
जाड़ ।

प्रा० टाटी स्त्री० टट्टी, टटिया, भाँप,
आड़ ।

प्रा० टाप स्त्री० घोड़े के अगले पैर
की आहत, चलने में घोड़े के खुर
का शब्द, २ मछली पकड़ने के लिये
बाँस का बना हुआ ढाँचा ।

प्रा० टापू पु० धरती का वह टुकड़ा
जो चारों ओर पानी से घिरा
हो, उपद्वीप ।

प्रा० टारना { (टलना) क्रि०
टालना } स० हटाना, सर-
काना, दूरकरना, २ बहाना करना,
देरी करना, ढील करना ।

प्रा० टालटाल { बोल० बहाना,
टालमटोल } छल, ढीलटाल,
चकरमकर, धोल धुमाव, लपेट

सपेट, बनावट ।

प्रा० टाल पु० बहाना, टाल टोल,
टालमटोल, २ स्त्री० ढेर (अनाज
वा लकड़ी आदि का), तूदा, अंवार,
अटाल, सूखी घास का गंज ।

प्रा० टाला पु० टालमटोल, घोल
घुमाव, बनावट, लपेट सपेट, २
ढेर, तूदा, गंज, टाल ।

प्रा० टालाबाला बताना बोल०
टालना, घोलघुमाव करना, टालम-
टोल बताना, टालटोल करना ।

प्रा० टिकटिकी स्त्री० छिपकी,
छिपकली ।

प्रा० टिकठा स्त्री० तिपाई, तिख्ठी ।

प्रा० टिकना क्रि० अ० रहना,
ठहरना, बसना, मुकाम करना ।

प्रा० टिकली पु० बेंदी, बिन्दु,
२ पतली रोटी ।

प्रा० टिकाना क्रि० स० रखना,
ठहराना ।

प्रा० टिकिया स्त्री० कोयले की
गोल गोल टिकली, २ पतली
और छोटी रोटी ।

प्रा० टिकड़ पु० मोटी रोटी ।

प्रा० टिटीहरी (सं० टिट्ठिभ) स्त्री०
एक पखेरू का नाम ।

सं० टिट्ठिभ (टिट्ठि ऐसा शब्द,
भाष्=बोलना) पु० टिटीहरी, एक
पखेरू का नाम ।

प्रा० टिड्डा पु० फनगा, पतंगा ।

प्रा० टिड्डी स्त्री० शलभ, अनाज को
नाश करनेवाला कीड़ा ।

प्रा० टिप्पन (टिप्=फैंकना) स्त्री०
सं० टिप्पनी (टीका, विवरण,
व्याख्या, अर्थ, टिपनी, शरह ।

प्रा० टिहरा पु० पुरा, पुरवा, छोटी
बस्ती ।

प्रा० टीक स्त्री० गलेका एक गहना ।
सं० टीका (टीक्=जाना) स्त्री०
शरह, टिप्पनी, विवरण, कठिन
शब्दोंके अर्थ और गूढ़ अभिप्राय
को अच्छी तरह से समझाना ।

प्रा० टीका (सं० तिलक) पु०
तिलक, ललाट पर चन्दन केशर
आदि का चिह्न, २ स्त्रियोंके ललाट
पर पहननेका एक सुवर्ण का
गहना, ३ ब्याहमें दुलहिन के घर
से जो भेंट जाती है, ४ गोटी का
खुदवाना, छापा ।

प्रा० टीकाभेजना बोल० ब्याह के
शुरूअ में दुलहिन के घर से दुलहे
के घरमें वस्त्र रुपया नारियल आदि
भेंट भेजना ।

प्रा० टीकालेना बोल० ब्याह की
भेंटको लेना वा ग्रहण करना वा
स्वीकार करना ।

प्रा० टीडी स्त्री० टिड्डी, शलभ ।

प्रा० टीप स्त्री० टिपनी, बोहरे का
तमस्सुक जिसमें मूल और ब्याज
के रूपोंके पलटे फसलपर अनाज

आदि जिन्म देनेको लिख देते हैं,
२ गाने में राग को ऊँचा लेजाना,
३ जल्दी में कोई बात लिखलेना
या अटका लेना वा टाँक लेना,
४ दबाव, दबाहट ।

प्रा० टीला पु० मेंड़, ऊँची धरती,
पहाड़ी ।

प्रा० टीस स्त्री० पीड़ा, टपक, व्यथा,
धड़क ।

प्रा० टीसमारना बोल० पीड़ा होना ।

प्रा० टुक (सं० स्तोक, टुच्=प्रसन्न
होना) गु० थोड़ा, कम, अल्प,
जरा, जरासा ।

प्रा० टुकड़ा (सं० स्तोक, टुच्=
टूक) प्रसन्न होना) पु०
खंड, भाग, हिस्सा, चिट, अंश,
परमाणु ।

प्रा० टुच्चा पु० पोच, ओझा, बेहूदा,
वाही ।

प्रा० टुंड गु० टूठा, काटा हुआ अंग ।

प्रा० टुँडी (सं० तुन्दि, तुद्=पीड़ा
टूँडी) देना स्त्री० नाभि, तोंदी,
गु० विन हाथ की ।

प्रा० टुंडियाँकसना } बोल० पीठ
टुंडियाँचढ़ाना } पीछे हाथों
टुंडियाँबाँधना } को बाँधना,
मुसकें बाँधना ।

प्रा० टुसकना क्रि० अ० रोना,
बिलखना, मुसकना ।

प्रा० टूट (टूटना, सं० वुटि) स्त्री०

बूटन, फूटन, खंडन, रोटोटा, कमी,
हानि, नुकसान, ३ कोई बात जो
पुस्तक के लिखने में भूल से छूट
जाती है और हाशिये पर पीछे से
लिखी जाती है ।

प्रा० टूटना (सं० वोटन, वुट्=का-
टना) क्रि० अ० टुकड़ा होना,
फूटना, फटना, २ चढ़ना, चढ़ाई
करना, धावा करना ।

प्रा० टूटा (टूटना) गु० टूटा हुआ,
फूटा हुआ, पु० टोटा, कमी, हानि,
नुकसान, घटी ।

प्रा० टूटाफूटा बोल० टुकड़े टुकड़े,
खंडहर ।

प्रा० टूमी स्त्री० कली, कोंपल ।

प्रा० टेंट पु० करील का फल, कपास
का फल, आँख की फुल्ली ।

प्रा० टेंडुवा पु० साँसी, नरेटी, नरी ।

प्रा० टेंटें पु० चेंचें, किलकिलाहट ।

प्रा० टेक भा० स्त्री० थूनी, टिकाव,
सहारा, अवलम्ब, टेंकन, खम्भा,
रोक, २ प्रण, प्रतिज्ञा, हठ, संकल्प ।

प्रा० टेँकी गु० प्रतिज्ञापालक, बात
का पूरा करनेवाला, बात का धनी ।

प्रा० टेकरा पु० टीला, ऊँची धरती ।

प्रा० टेढ़ा गु० वक्र, बाँका, तिरछा,
अकड़ा, बेंड़ा ।

प्रा० टेढ़ाकरना बोल० झुकाना,
बाँका करना, तिरछा करना ।

प्रा० टेढ़ाबेढ़ा बोल० टेढ़ा, बाँका,

कुटिल ।
 प्रा० टेम स्त्री० बत्तीकी जलनवाफूल ।
 प्रा० टेरे गु० लय, स्वर, तान, ताल, राग, २ पुकार, हाँक, फर्याद, पुकार ।
 प्रा० टेरेना क्रि० स० पुकारना, ललकारना, बुलाना, हाँक मारना, अलापना ।
 प्रा० टेव स्त्री० चाल चलन, रीति, बात, स्वभाव, आदत, चाट, चस्का ।
 प्रा० टेवकी स्त्री० थूनी, खंभा, टेक, टेकन ।
 प्रा० टेवना १ क्रि० स० तीखा करना २ रना, चोखा करना, बाढ़देना, धार लगाना, पैनाना ।
 प्रा० टेवा पु० जन्मपत्री, २ टेव, स्वभाव, चाट, चस्का ।
 प्रा० टेसू पु० पलाश का फूल, टेसू, २ एक प्रकार का खेल ।
 प्रा० टेहला पु० व्याहकी एक रीति ।
 प्रा० टोवाटोई स्त्री० टटोलना, ढूँढ़ ।
 प्रा० टोंटा पु० पटाखा, मुरी, बाँस की गाँठ, २ कारतूस, गु० जिसका हाथ टूटा हुआ हो ।
 प्रा० टोंटी स्त्री० नली, नल ।
 प्रा० टोक (टोकना) स्त्री० रोक, रुकाव, अटकाव, २ बुरी दृष्टि, नजर, दीठ ।
 प्रा० टोकना क्रि० स० रोकना, २ पूछना, ३ डाह करना, ४ बुरी

नजर से देखना, दीठ लगाना ।
 प्रा० टोकरा पु० डला, खाँचा, बड़ी टोकरी, छटवा, पलड़ा ।
 प्रा० टोकरी स्त्री० डलिया, पलड़ी, खचिया ।
 प्रा० टोटका पु० मन्त्र, यन्त्र, गंडा, ताबीज, टोना, मोहन, लटका, वशीकरण ।
 प्रा० टोटा पु० घटी, घाटा, कमी, नुकसान, २ टोंटा, कारतूस ।
 प्रा० टोड़ी स्त्री० एक रागिणी का नाम ।
 प्रा० टोना पु० मोहन, टोटका, जादू, सेहर, लटका, क्रि० स० टटोलना ।
 प्रा० टोनाटानी १ बोल० मन्त्र, यन्त्र टोनाटामन २ टोना, टोटका ।
 प्रा० टोप पु० बड़ी टोपी, २ टाँका, सीवन ।
 प्रा० टोपा पु० टोप, शिरका ढकना ।
 प्रा० टोपी स्त्री० छोटा टोप, शिरका ढकना ।
 प्रा० टोल पु० १ थोक, भुण्ड, टोली स्त्री० २ जत्था, सभा, ठड ।
 प्रा० टोला पु० महल्ला, खंड, शहर का एक हिस्सा ।
 अ० ट्यम्परेन्स सुसायटी ट्यम्परेन्स=पवित्र, परहेजगार, सुसायटी=समूह, जमाअत ।
 अ० ट्रष्टी विश्वस्त, मुअतमिद,

जातविश्वास ।
अ० ठाई कोशिश, उद्योग, परिश्रम,
चेष्टा ।

अ० ट्रेडऐसोसियेशन सौदागरों
की कमेटी ।

अ० ट्रेन्सलेटर पु० मुतरज्जिम,
अनुवादक, उल्था करनेवाला ।

ठ

सं० ठ पु० शिव, २ चन्द्रबिम्ब, ३
मण्डल, ४ शून्य, ५ महाध्वनि, ६
मूर्ति, ७ जनसमूह ।

प्रा० ठकठक पु० कठिन काम, २
शब्द ।

प्रा० ठकठकाना क्रि० स० ठोंकना,
खट खट करना, कूटना, मारना ।

प्रा० ठकुर (सं० ठकुर) पु० ठाकुर
शब्द को देखो ।

प्रा० ठकुराई (सं० ठकुरता) भा०
स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, स्वामी-
पन, बड़प्पन ।

प्रा० ठग पु० ठगनेवाला, बटमार,
चोर, दगाबाज, बहकानेवाला,
छली, कपटी ।

प्रा० ठगबाजी { स्त्री० बोल०
ठगविद्या } ठगाई, कपट,
छल, माया ।

प्रा० ठगलाना बोल० ठगना, छल-
ना, धोखा देना, बहकाके लेलेना ।

प्रा० ठगलेना बोल० छलना, धोखा
देना, छल से लेना ।

प्रा० ठगई (ठग) भा० स्त्री० ठगाई,
ठग का काम, छल, धोखा ।

प्रा० ठगना क्रि० स० छलना,
भुलावा देना, धोखा देना, बह-
काना ।

प्रा० ठगाई (ठग) भा० स्त्री० ठगई,
छल, धोखा ।

प्रा० ठगौरी (ठग) स्त्री० ठगाई,
भुलावा, माया, छल, धोखा ।

प्रा० ठट्टा { पु० भीड़भाड़, झुण्ड,
ठट्टा } मण्डली, समूह ।

प्रा० ठट्टा पु० हँसी, ठठोली, खिल्ली,
चुहल ।

प्रा० ठट्टाकरना बोल० हँसीकरना,
ठठोली करना, हँसना, उपहास
करना, मसखरापन ।

प्रा० ठट्टेबाज बोल० गु० ठठोल,
हँसोड़, रसिक, मसखरा ।

प्रा० ठट्टेबाजी बोल० स्त्री० ठट्टा
करना, हँसोड़पन, खेल, दिव्लीगी ।

प्रा० ठट्टामारना बोल० हँसी क-
रना, ठठोली करना, हँसना, उप-
हास करना ।

प्रा० ठठरी स्त्री० ठठर, ठाठ, २ रथी,
३ ढाँचा, पाँजर, अस्थिपंजर,
हड्डियों का ढाँचा, बहुत दुबला
मनुष्य ।

प्रा० ठठकना क्रि० अ० रुकना,
ठहरना, हटना, खड़ा रहजाना,
अचंभे में खड़ा रहजाना, भ्रम-

कना, हिचकना, चिहुँकना ।
 प्रा० ठठाना क्रि० स० मारना,
 पीटना, कूटना, २ दुख में अपना
 शिर पीटना, ३ अपने को दुख में
 डालना ।
 प्रा० ठठेरा पु० कैसेरा, भर्तिया ।
 प्रा० ठठोर { गु० हँसोड़, रसिक,
 ठठोल } ठठेबाज ।
 प्रा० ठठोली स्त्री० ठट्टा, हँसी,
 खिल्ली, हाँसी ।
 प्रा० ठण्ड स्त्री० जाड़ा, सर्दी, शीत,
 शीतकाल ।
 प्रा० ठण्डक स्त्री० ठण्डाई, शीत-
 लता ।
 प्रा० ठण्डा गु० शीतल, सर्द ।
 प्रा० कलेजाठण्डाकरना बोल०
 प्रसन्न होना, अपने मित्र अथवा
 बेटा आदि को देखने से आनन्द
 में होना, २ बदला लेने से मन
 प्रसन्न होना ।
 प्रा० ठण्डा करना बोल० शीतल
 करना, सर्द करना, २ बुझाना,
 बुताना (जैसे आग), ३ शान्त
 करना, स्थिर करना, धीरज देना,
 दिलासा देना ।
 प्रा० ठण्डापरना बोल० कम होना,
 घटना (जैसे क्रोध, पौरुष, चंच-
 लाहट का) ।
 प्रा० ठण्डाहोना बोल० सर्द होना,
 शीतल होना, २ बुझना, बुतना,

३ शान्त होना, धीरज धरना,
 स्थिर होना ।
 प्रा० ठण्डाई स्त्री० ठंडी औषध
 (जैसे सौंफ कासनी आदि),
 २ भंग, ३ सर्दी, शीतलता ।
 प्रा० ठण्ढीसाँसभरना बोल० हाथ
 मारना, आह भरना, लंबी साँस
 लेना ।
 प्रा० ठनकना क्रि० अ० टीसना,
 टीस मारना, शिर में दर्द होना, २
 झनकना, झंझनाना, ठनठनाना ।
 प्रा० ठनठनाना क्रि० अ० झन-
 झनाना, झनकना, ठनकना ।
 प्रा० ठनाक पु० झनकार, झनझ-
 नाहट, ठनकार ।
 प्रा० ठप्पा पु० छापने की चीज,
 छापा, मोहर ।
 प्रा० ठरक { पु० खरीटा, घुरा ।
 ठरर }
 प्रा० ठरिया पु० एक तरहका मिट्टी
 का हुका ।
 प्रा० ठवनि स्त्री० चाल ।
 प्रा० ठसक स्त्री० भड़क, झेलपन,
 अहंकार, धूमधाम ।
 प्रा० ठस्सा पु० साँचा, ढाँचा, २
 अहंकार, घमंड ।
 प्रा० ठहरना (सं० घ्रा=ठहरना)
 क्रि० अ० टिकना, रहना, बसना,
 खड़ा रहना, रुकना, अटकना,
 उतरना, डराकरना, ठिकानाहोना,

निर्णय होना, निश्चित होना, सिद्ध होना, पक्का होना, दृढ़ होना, निपटना ।

प्रा० ठहराना (ठहरना) क्रि० स०
ठिकाना, रखना, खड़ा करना,
रोकना, अटकाना, उतारना, डेरा
देना, निर्णय करना, सिद्ध करना,
ठिकाना करना, पक्का करना, निप-
टाना, दृढ़ करना, निश्चित करना,
नियत करना, टानना, विचारना,
लगाना ।

प्रा० ठहराव (ठहरना) भा० पु०
ठिकाव, स्थापन, निर्णय, निश्चय ।

प्रा० ठाँ } (सं० स्थान) पु० स्त्री०
ठाँव } ठौर, जगह, ठिकाना,
ठाम } स्थान, स्थल ।

प्रा० ठाँसना } क्रि० स० दबा
ठासना } दबाके भरना, घुसे-
ड़ना, दूसना, दवाना ।

प्रा० ठाकुर (सं० ठकुर=देवता की
मूर्ति, प्रतिष्ठितपदवी) पु० देवता,
ईश्वर, २ देवता की मूर्ति, ३
स्वामी, मालिक, प्रधान, प्रभु,
नाथ, नायक, मुखिया (राजपूतों
में), ४ जमीन्दार, ५ नाई ।

प्रा० ठाकुरद्वारा (सं० ठकुरद्वार)
पु० मन्दिर, देवालय, देवस्थान ।

प्रा० ठाकुरबाड़ी (सं० ठकुरवाटी)
स्त्री० मन्दिर, देवालय, ठाकुर-
द्वारा ।

प्रा० ठाठ पु० ठठरी, २ तैयारी,
रचना, धूमधाम, साज, भड़क,
तजल्ली, शान, हशमत, ३ भीड़-
भाड़, झुंड, समूह, बहुतायत ।

प्रा० ठाढ़ा गु० खड़ा, सीधा ।

प्रा० ठाढ़ारहना क्रि० अ० खड़ा
रहना ।

प्रा० टानना क्रि० स० ठहराना,
मन में पक्का करना, विचारना,
निश्चय करना ।

प्रा० टानी स्त्री० ठहराई, विचारी,
निश्चय की ।

प्रा० ठाला गु० बेकार, बिन काम,
खाली ।

प्रा० ठाहर } (सं० स्थान) स्त्री०
ठाहरू } ठौर, जगह, जागह,
ठाँ, ठाँव, स्थान ।

प्रा० ठिकरा पु० घड़े वा मटकी का
टुकड़ा ।

प्रा० ठिकाना (सं० स्थान) पु०
जगह, वास, स्थान, ठौर, जागह,
२ पता, ३ सीमा, हद्द ।

प्रा० ठिकानाढूँढ़ना बोल० बासा
ढूँढ़ना, काम ढूँढ़ना ।

प्रा० ठिकानेलगाना बोल० मारा
जाना, मरना, २ पूरा होना ।

प्रा० ठिकानेलगाना बोल० मार
डालना, २ पूरा करना, खपाना ।

प्रा० ठिंगना गु० नाटा, छोट, वामना, पस्तकद ।

प्रा० ठिठकना } क्रि० अ० अचंभे
 ठिठकजाना } में होना, थोड़ी
 ठिठकरहना } देर ठहर जाना ।
 प्रा० ठिठरना क्रि० अ० जमना,
 जड़ना, अकड़ना ।
 प्रा० ठिनकना क्रि० अ० सिसकना,
 सिसकी भरना, धीरे धीरे रोना ।
 प्रा० ठिलिया स्त्री० गगरी, छोट
 घड़ा ।
 प्रा० ठीक गु० पूरा, बराबर, सही,
 शुद्ध, स्वरा, साफ, योग्य, उचित,
 सच, यथार्थ, जैसा चाहिये ।
 प्रा० ठीकआना बोल० मिलना,
 बराबर होना, बराबर आजाना ।
 प्रा० ठीककरना बोल० सही करना,
 निश्चय करना, २ मारना ।
 प्रा० ठीकठाक बोल० सही, शुद्ध,
 सच, ठीकठाक ।
 प्रा० ठीकठाककरना बोल० सही
 करना, जाँचना, निश्चय करना ।
 प्रा० ठीकरा पु० मिट्टी के फूटे बर-
 तन का टुकड़ा ।
 प्रा० ठीका पु० भाड़ा, ठहराया
 हुआ मोल, २ इजारा, मुकाता,
 मुस्ताजिरी, कटकना, चुकौता,
 लिखापदी ।
 प्रा० ठुड्डी स्त्री० ठोड़ी, चिबुक, २
 भूँजा अनाज ।
 प्रा० ठुमकना क्रि० अ० अच्छी
 चाल चलना, ऐंठकर चलना ।

प्रा० ठुसकना क्रि० अ० धीरे धीरे
 रोना ।
 प्रा० ठूँठ पु० हुंदा, बिन पत्ते की
 डाल, २ कटाहुआ हाथ ।
 प्रा० ठेउना }
 ठेवना } पु० घुटना ।
 प्रा० ठेंगा पु० लाठी, लट्ट, २ अंगूठा ।
 प्रा० ठेंगाबाजना बोल० लाठी
 चलना, २ बिगड़ना ।
 प्रा० ठेंटी स्त्री० कानका मैल, २ डट्टा,
 ठेपी, ३ घुटने तक की धोती ।
 प्रा० ठेक स्त्री० टेकनी, टेक, सहारा,
 अवलंब, २ नाज का भरा हुआ
 बोरा ।
 प्रा० ठेकाधिकारी क० पु० मुस्ता-
 जिर, मुकातादार ।
 प्रा० ठेठ गु० निष्केवल, खालिस,
 असल, साफ, बेमेल, ठीक, नि-
 पट, २ झगड़ालू ।
 प्रा० ठेपी स्त्री० ठेंठी, डट्टा, डाट ।
 प्रा० ठेपी मुँह में देना बोल० चुप
 रहना, अवाक् होना ।
 प्रा० ठेलना क्रि० स० ढकेलना,
 रेलना, धक्का देना, भोंकना ।
 प्रा० ठेला पु० धक्का, ढकेल, भोंक,
 माल लादने की गाड़ी ।
 प्रा० ठेलाठेली बोल० धक्कमधक्का,
 रेलपेल ।
 प्रा० ठेंस स्त्री० ठोकर, चोट, चपेट ।
 प्रा० ठेंसना क्रि० स० छेदना

बेधना, २ ठोकरदेना, ठोकराना,
३ ठाँसना ।
प्रा० ठोंकना } क्रि० स० मारना,
ठोकना } गढ़ना, गाड़ना, २
थपथपाना, पीटना (जैसे ढोलक
आदि बाजे को) ।
प्रा० ठोकदेना बोल० गाड़ देना,
गढ़ देना, पीटना ।
प्रा० पीठठाँकना बोल० पीठ थप-
थपाना (जब किसीको सराहते
अथवा उसकी हिम्मत बढ़ाते हैं) ।
प्रा० ठाँठ (सं० त्रोटि, ब्रुट्=काटना)
चोंच, ठोर ।
प्रा० ठोकर स्त्री० पैरकी मार, लात ।
प्रा० ठोकरखाना बोल० गिर पड़ना,
लुढ़कना, २ भूलना, चूकना, ३
घटी सहना ।
प्रा० ठोकरलगना बोल० पैर में
चोट लगना ।
प्रा० ठोढ़ी स्त्री० ठुड़ी, चिबुक ।
प्रा० ठोर (सं० त्रोटि, ब्रुट्=काटना)
स्त्री० चोंच, ठाँठ ।
प्रा० ठोस पोला नहीं, घना, कठोर,
कड़ा, दृढ़, भारी, पोढ़ा, गाढ़ा ।
प्रा० ठोसना क्रि० स० ठाँसना, दबा
दबा के भरना, दबाना, भरना ।
प्रा० ठोसा पु० ठेंगा, अंगूठा
दिखलाना ।
प्रा० ठौर स्त्री० जगह, ठाँव, ठि-
काना, स्थान ।

प्रा० ठौररहना बोल० खेत रहना,
माराना, मररहना ।
ड
सं० ड पु० शिव, २ डर, ३ शब्द,
४ वाङ्मय ।
प्रा० डकराना क्रि० अ० कूक मा-
रके रोना ।
प्रा० डकार स्त्री० डेकार, ढकार,
उद्गार ।
प्रा० डकरना क्रि० अ० डकारलेना,
२ राँभना, हुंकारना, गर्जना, भों-
कारना, ३ पचाजाना ।
प्रा० डकारजाना } बोल० उड़ा
डकारबैठना } जाना, खा-
जाना, पचाजाना, पचाबैठना ।
प्रा० डकारलेना बोल० डकारना,
ढकार लेना ।
प्रा० डकैत पु० डाकू, बटपार,
लुटेरा, चोर ।
प्रा० डकैती स्त्री० डाका, बटपारी,
लूट, चोरी ।
प्रा० डकौत } पु० एक जाति के
डकौतिया } लोग जो ब्राह्मण से
ग्यालिनके पैदा हुए और ये लोग
शनैश्चर का दान लेते हैं और ज्यो-
तिषविद्या में पके होते हैं ।
प्रा० डग स्त्री० फाल, पद, लंबी
चाल ।
प्रा० डगना क्रि० हिलना ।
प्रा० डगमगाना क्रि० अ० लड़

खड़ाना, डगडगाना, हिलना,
डोलना, काँपना ।

प्रा० डगर पु० रस्ता, राह, मार्ग,
पैड़ा, पथ, सड़क ।

प्रा० डगरना क्रि० अ० यात्रा क-
रना, रस्ते चलना, घूमना ।

प्रा० डगरा पु० सूप, बाँसका बना
हुआ बरतन ।

प्रा० डङ्क (सं० दंश, दंश=काटना वा
हंक मारना) पु० चभक, बिच्छूका
दाँत जिसमें जहर भरा रहता है ।

प्रा० डङ्कमारना बोल० काटना,
(बिच्छू धिनी आदिका) ।

प्रा० डङ्का (सं० ढक्का, ढक् ऐसा
शब्द, कै=शब्द करना) पु० नकारा
बजाने का डंडा, २ धौसा, नकारा,
बड़ा ढोल ।

सं० डङ्कर पु० भूसा, खीरा, धूर्त, खल,
सेवक, प्रक्षेप, स्त्री० ककरी ।

प्रा० डटना क्रि० अ० थपना, रु-
कना, जमजाना ।

प्रा० डट्टा पु० ठेंडी, ठेपी, डाट ।

प्रा० डढ़मुंडा (सं० मुण्डितश्मश्रु)
गु० ढाढ़ीमुंडा, धिन ढाढ़ी का ।

प्रा० डढ़ियल गु० लम्बी दाढ़ी-
वाला ।

प्रा० डण्ड (सं० दण्ड) पु० भुजा,
एक तरह की कसरत अथवा व्यायाम
जिसमें हाथों को धरती पर टेक
कर नीचे को इस तरह से झुकना ।

होता है कि छाती से ज़मीन छू
जाय, डंडपेल=डंड पेलनेवाला,
डंड करनेवाला ।

प्रा० डण्डा (सं० दण्ड) पु० सोंटा,
लट्ट, छड़ी, भंडे की लकड़ी ।

प्रा० डण्डिया पु० स्त्रियों का एक
प्रकार का कपड़ा, स्त्रियों के ओढ़ने
का दुपट्टा वा ओढ़नी ।

प्रा० डण्डी (सं० दण्डी) स्त्री० डंडा,
बेंट, पकड़ने की लकड़ी, २ तराजू
का डण्डा अथवा धारण, ३ लकीर,
पु० संन्यासी जो अपने हाथ में
दण्ड रखते हैं, पगडण्डी=पदचिह्न,
चोरराह, लीक, गुमराह ।

प्रा० डण्डीर स्त्री० धारी, लीक,
लकीर ।

प्रा० डपटना क्रि० अ० पुकारना,
सर्पटना, डाँटना, झिड़कना,
गुड़कना ।

प्रा० डफ (फ़ा० दफ) स्त्री० खंजरी ।

प्रा० डफाली (डफ) गु० एक
प्रकार के मुसलमान फकीर जो डफ
बजा कर भीख माँगा करते हैं ।

प्रा० डबगर पु० चमड़ा कमाने
वाला, दब्बाग ।

प्रा० डबडबाना क्रि० स० आँखों
में आँसू भर लाना ।

प्रा० आँखें डबडबाना } बोल०
आँसू डबडबाना } रोनी सू-
रत बनाना ।

प्रा० डबरा पु० गँदले पानी का
छोटा तालाब, डाबर, ताल ।

प्रा० डबोना क्रि० स० डुबाना,
गोता खिलाना, डुबकी देना,
बोरना, २ उजाड़ना, बरबाद
करना ।

प्रा० डब्बा पु० बड़ी डिविया, २
कुप्पा ।

सं० डमरू (डम्=ऐसा शब्द, ऋ=
जाना) पु० एक प्रकार का बाजा ।

सं० डयन (डी=आकाशमें उड़ना)
भा० पु० उड़ना, आकाशगमन ।

प्रा० डर (सं० दर, दृ=डरना) पु०
भय, त्रास, शंका, आतंक,
दबदबा ।

प्रा० डरना } (सं० दृ=डरना) क्रि०
डरपना } अ० भय खाना ।

प्रा० डरपोकना (डर) गु० कायर,
भीरु, डरवैया, डरनेवाला ।

प्रा० डराऊ (डर) गु० भयानक,
भयावना, डरावना ।

प्रा० डराना } (डरना) क्रि० स०
डरावना } भय दिखाना, त्रास
दिखाना, गु० भयानक, भयावना,
डराऊ ।

प्रा० डलवा पु० टोकरा, छटवा,
झवई ।

प्रा० डला पु० ढेला, ईंटा, लोंदा,
२ टोकरा, बड़ी दौरी ।

प्रा० डलिया स्त्री० टोकरी, दौरी ।

प्रा० डली पु० टुकड़ा, खंड, टुक
(चीनी मिश्री अथवा मांस का) ।

प्रा० डसना (सं० दंशन, दंश=का-
टना) क्रि० स० साँप का काटना,
डङ्क मारना, चभकना ।

प्रा० डहकाना क्रि० स० बहकाना,
निराश करना, बिगाड़ना, धोखा
देना, ठगना ।

प्रा० डहडहा गु० खिलाहुआ, हरा
भरा, फूला हुआ, प्रफुल्लित, प्रसन्न,
हर्षित ।

प्रा० डहडहाना क्रि० अ० खिलना,
फूलना, विकसना ।

प्रा० डाँग स्त्री० लाठी, २ पहाड़ की
ऊँची चोटी, ३ डगर, पगडंडी, रास्ता,
४ टहनी, डाली ।

प्रा० डाँगर गु० दुबला, पतला, पु०
दुबला पशु, २ मूली वा सरसों का
पत्ता वा फूल ।

प्रा० डाँटना क्रि० स० डपटना,
धमकाना, घुड़कना, भिड़कना,
ताड़ना ।

प्रा० डाठी स्त्री० डण्ठा, डाली,
डॉठ, डण्डी ।

प्रा० डाँड़ (सं० दण्ड) पु० दण्ड,
वागदण्ड, धिगदण्ड, जुर्माना या
धनदण्ड, पलटा, बदला, सजा, २
नाव खेने का बाँस, बल्ली, ३ रीढ़,
पीठ की हड्डी, ४ लकड़ी, लाठी,
डण्डा ।

प्रा० डाँड़भरना बोल० जुर्माना देना, दण्ड देना ।
 प्रा० डाँड़लेना बोल० दण्ड लेना, जुर्माना लेना ।
 प्रा० डाँड़ना क्रि० स० दण्ड देना, बदला लेना ।
 प्रा० डाँवरू पु० वाघ का बच्चा ।
 प्रा० डाँवाडोल (सं० धावनदोलन) गु० इधर उधर भटकना, तीन तेरह, वासहीन, डगमग ।
 प्रा० डाँस (सं० दंश) पु० बड़ी मक्खी, मच्छड़, २ डंक, हूल ।
 प्रा० डाक स्त्री० ठप्पा, चिट्ठी डालने की जगह, २ घोड़े की अथवा पालकी की चौकी, ३ लगातार वमन करना ।
 प्रा० डाका पु० लुटेरों का धावा, धापा ।
 प्रा० डाकापड़ना बोल० लुटजाना, लूटाजाना, चोरी होना ।
 प्रा० डाकाडालना } बोल० लूटना,
 डाका देना } राह मारना,
 जोर से छीन लेना, मार लेना ।
 सं० डाकिनी स्त्री० डाइन, चुड़ैल, प्रेतनी ।
 प्रा० डाकिया पु० डाकू, २ डाक-दौड़ाहा, डाकवाला, चिट्ठीरसाँ ।
 प्रा० डाकी गु० खाऊ, पेदू, बहुत खानेवाला ।
 प्रा० डाकू पु० डकैत, बटपार,

लुटेरा, चोर ।
 प्रा० डाट (डाटना) स्त्री० धमकी, घुड़की, फिड़की, डपट ।
 प्रा० डाटना क्रि० स० डपटना, घुड़कना, धमकाना ।
 प्रा० डाढ़ (सं० दंष्ट्रा, दंश=काटना) स्त्री० दाढ़, पीसने के दाँत, पिछले बड़े दाँत ।
 प्रा० डाढ़ा क्रि० अ० जलाना, मुँह काला होना ।
 प्रा० डाढ़ी (सं० श्मश्रु) स्त्री० टुड्डी पर के बाल, रीश ।
 प्रा० डाब (सं० दर्भ) पु० डाभ, कुशा, २ पु० तलवार का परतला, ३ कच्चा नारियल ।
 प्रा० डाबर गोल तालाब, डबरा, गड़हा, गु० गँदला, मैला ।
 प्रा० डाभ (सं० दर्भ) पु० डाब, कुशा, २ (सं० दाब) जंगल, वन ।
 प्रा० डायन (सं० डाकिनी) स्त्री० डाकिनी, चुड़ैल ।
 अ० डायरी स्त्री० दिनचर्या, रोज-नामचा, रोजनामा ।
 प्रा० डार स्त्री० डाल, डाली, टहनी, शाखा ।
 प्रा० डार (सं० धारा) स्त्री० कतार, पाँत, पंक्ति ।
 प्रा० डारकीडार बोल० फुंड का फुंड, जत्था, दल, टोली, समूह ।

प्रा० डारना } क्रि० स० फेंकना,
डालना } भोंकना, चलाना,
उड़ेलना, उभलना, भीतर फेंकना,
रख देना, धर देना, जल्दी से गिरा
देना, घुसेड़ना ।

प्रा० डाल स्त्री० डाली, डार, टहनी,
शाखा, एकडाल बोल० एक
मेलका ।

प्रा० डाली पु० फल आदिकी भेंट,
२ फलों की टोकरी, ३ डाल,
टहनी, शाखा ।

प्रा० डासना क्रि० स० विद्वाना ।

प्रा० डासी स्त्री० विद्वार्ई ।

प्रा० डाह (सं० दाह=जलन) स्त्री०
लाग, वैर, जलन, द्रोह, द्वेष, कुनस,
गोंठ, ईर्ष्या, हसद, रश्क ।

प्रा० डाहना (सं० दाहन=जलना)
क्रि० अ० डाह रखना, डाह से
जलना, दुःख देना, २ क्रि० स०
धातु को गलाना वा पिघलाना,
धातु को धिकाना वा गर्म करना ।

अं० डिक्शनरी अभिधान, कोष,
लुगत् ।

प्रा० डिगना क्रि० अ० हिलना,
ढगमगाना, थरथराना, काँपना,
२ हटना, टलना ।

सं० डिगिडम (डिगिड ऐसा शब्द,
मि=फेंकना अर्थात् करना या नि-
कालना) डमरू, ढोल, डुगडुगी,
मनादी, २ एक पेड़ का नाम ।

अं० डिपार्ट्म्यन्ट पु० मुहकमा,
सरिश्ता, विभाग, प्रकरण ।

अं० डिस्ट्रिक्टबोर्ड (डिस्ट्रिक्ट=
ज़िला वा खण्ड, बोर्ड=कमेटी)
ज़िला की कमेटी, खण्डसभा ।

प्रा० डिबिया स्त्री० छोटा डिब्बा,
डिब्बी ।

प्रा० डिब्बा पु० बड़ी डिबिया, डब्बा ।

सं० डिभ पु० संग्राम, पाखण्ड,
पाखण्डी, प्रलय ।

सं० डिभ संग्राम, प्रलय ।

सं० डिम्ब पु० पाखण्ड, डाका,
लूटपाट, वे हथियार की लड़ाई,
अण्ड, फुफुस, रेड़वृक्ष ।

प्रा० डिम्भ पु० पाखण्ड, जवान
पशु, शिशु, बालक, मूर्ख, अनारी,
अज्ञान ।

अं० डिमीअफिशल आधा सरकारी
और आधा निजका लेख जिस
में आधा महसूल देना पड़ता है ।

अं० डिस्ट्रिक्ट ज़िला, खण्ड, विभाग ।
प्रा० डींग स्त्री० बड़ाई, घमंड, शेखी,
अहंकार, अभिमान, दर्प ।

प्रा० डींगमारना बोल० शेखी क-
रना, घमंड करना, बड़ाई करना ।

प्रा० डीठ (सं० दृष्टि) स्त्री० ताक,
दीठ, नज़र, दृष्टि, देखना ।

प्रा० डीठबन्दी बोल० जादूसे नज़र
बन्द होजाना, नज़रबन्दी, इन्द्र-
जाल, नटमाया ।

सं० डीन भा० पु० पक्षी की गति,
उड़ान ।

प्रा० डील पु० शरीर, देह, २ डौल ।

प्रा० डुबकी स्त्री० चुभकी, गोता,
डूब, जल में पैठना ।

प्रा० डुबाना } क्रि० सं० डुबोना,
डुबोना } गोता खिलाना,
डुबकी देना, २ उजाड़ना ।

प्रा० डुमरी } (सं० उडुम्बर) पु०
डूमर } गूलर का वृक्ष ।

प्रा० डुरियाना (सं० डोर) क्रि०
सं० बागडोर हाथ में लेकर घोड़े
को खाली लेचलना ।

प्रा० डुलाना } (सं० दोलन,
डोलाना } दुल्=भुलाना)
क्रि० सं० हिलाना, भुलाना ।

प्रा० डूबना क्रि० अ० डुबकी मा-
रना, गोताखाना, २ बोरना, वूड़ना,
पानी में मग्न होना, ३ अस्त होना,
बैठ जाना, ४ उजड़ना, बरबाद
होना, नष्ट होना, ५ लय होजाना,
मग्न होजाना, लग जाना (जैसे
किसी काम अथवा पढ़ने आदि में),
दिल डूबना बोल० मूर्च्छित होना,
अचेत होना ।

प्रा० डेढ़ गु० एक और आधा ।

प्रा० डेढ़पाव गु० पाव और आध
पाव, छः छटाँक ।

प्रा० डेढ़पावा पु० डेढ़ पाव का
तौल ।

प्रा० डेढ़गत पु० एक तरहका नाच ।

प्रा० डेरा पु० बासा, घर, २ तम्बू,
खीमा, गु० भेंगा, टेढ़ा देखनेवाला ।

प्रा० डेवड़ा गु० डेढ़गुना ।

प्रा० डेवड़ी } स्त्री० उसारा, दा-
डेहुड़ी } लान, डेवड़ीदार
=द्वारपाल ।

प्रा० डैन (सं० डयन, डी=उड़ना)
पु० पाँख, पंख, पखेरू का पर ।

प्रा० डोंगा पु० उडुप, सव, छोटी
नाव, २ कठरा ।

प्रा० डोंगी स्त्री० छोटी नाव,
२ करछी ।

प्रा० डोंडी स्त्री० ढँढोरा, मनादी ।

प्रा० डोंकरा पु० बुढ़ा, बूढ़ा ।

प्रा० डोंकरी स्त्री० बुढ़िया ।

प्रा० डोच (डूबना) पु० डूब, गोता,
डुबकी, कपड़े को रङ्ग में डुबोना ।

प्रा० डोचदेना बोल० कपड़े को रङ्ग
में डुबोना ।

प्रा० डोम पु० एक नीच जाति,
२ मुसलमान जाति के लोग जिन
की स्त्रियाँ केवल स्त्रियोंही के सा-
मने गाती और नाचती हैं और
मर्द गवैये और बजन्त्री होते हैं ।

प्रा० डोमड़ा पु० डोम, अत्यन्त
नीच जाति ।

प्रा० डोमनी स्त्री० डोमकी स्त्री ।

प्रा० डोर स्त्री० रस्सी, डोरी, जेवड़ी,
सूतली ।

प्रा० डोरा पु० तागा, धागा, तार, सूत, लीक, लकीर, २ तलवार की धार, आँख का डोरा=आँख में लोहकी लाल लाल लकीर या चिह्न ।

प्रा० डोरिया पु० एक तरह का कपड़ा ।

प्रा० डोरी स्त्री० रस्सी, डोर, जेवड़ी, सूतली ।

प्रा० डोल पु० पानी निकालने का लोहे या चमड़े का बरतन ।

प्रा० डोलची स्त्री० चमड़े का छोटा डोल ।

प्रा० डोलना (सं० दोलन, दुल्=डोलना) क्रि० अ० हिलना, झुलना, २ फिरना, भटकना ।

प्रा० डोला (सं० दोल, दुल्=झुलना) पु० एक तरह की पालकी, २ नीचे घरानेकी रानी जो बड़े राजा को व्याही जाती है और इस रानी का दर्जा बराबर घराने की रानियों से नीचा होता है ।

प्रा० डोलादेना बोल० शूद्र लोगों की जब बेटी राँड़ होजाती है तब वे अपनी जाति में बेटीको दूसरे पति को देदेते हैं उसे डोलादेना कहते हैं, लड़की व्याह देना ।

प्रा० डोली (सं० दोला) स्त्री० चौपाला, दोला, स्त्रियों की पालकी ।

प्रा० डौढ़ी स्त्री० डेवड़ी, उसारा,

२ गु० डेढ़गुनी, ३ गाने में ऊँचा स्वर ।

प्रा० डौल पु० प्रकार, रीति, ढब, भाँति, रूप, आकार ।

ढ

सं० ढ पु० बड़ा डोल, २ ध्वनि ।

प्रा० ढंग पु० चलन, रीति, प्रकार, डौल, चाल, लक्षण ।

प्रा० ढंढोरा (सं० दुण्डन, दुण्ड=खोजना) पु० डुगडुगी, डौंड़ी, मनादी ।

प्रा० ढक पु० तौल विशेष, बट-ग्वरा, बाँट ।

प्रा० ढकना क्रि० स० ढाँपना, ढपना, तोपना, मूँदना, बन्दकरना, २ छिपाना, ३ बचाना, ४ मढ़ना, ५ छाना, पु० ढकनी, ढकनेकी चीज ।

प्रा० ढकनी स्त्री० चपनी, ढकने की चीज, सरपोश ।

प्रा० ढकार स्त्री० ढकार ।

प्रा० ढकेल पु० रेल, ठेल, पेल, धक्का ।

प्रा० ढकेलना क्रि० स० ठेलना, रेलना, पेलना ।

प्रा० ढकेलू क० पु० ढकेलनेवाला, पेलनेवाला, हटा देनेवाला ।

प्रा० ढक्का पु० बड़ा डोल, डंका ।

प्रा० ढड़कौवा पु० जंगली कौवा ।

प्रा० ढड़वा पु० मैना की जाति का पखेरू ।

प्रा० ढनमनाना क्रि० अ० लुढ़कना,
गिरना, डगमगाना, काँपना ।

प्रा० ढपढपाना क्रि० स० ढोल को
पीटना (जैसे लड़के करते हैं) ।

प्रा० ढपना क्रि० अ० ढक जाना,
झिपना, लुकना, पु० ढकना, ढकने
की चीज़ ।

प्रा० ढब पु० डोल, चाल, गीति,
रूप, बनावट, हथौड़ी ।

प्रा० ढबरा गु० गँदला, मैला, की-
चड़ ।

प्रा० ढबुआ पु० पैसा, ताम्रमुद्रा ।

प्रा० ढलकना क्रि० अ० ढलकना,
बहजाना, डगरना, छलकना ।

प्रा० ढलना क्रि० अ० साँचे में
पिघलना (जैसे धातु), २ ढलकना,
छलकना, लोटना, लुढ़कना, डग-
रना, ३ झुकना, नवना, दिन
ढलना, बोल० दिन घटना, दिन
का बीतना ।

प्रा० ढलती फिरती छाँच बोल०
संसार के कामों की बदलने योग्य
या अस्थिर दशा, संसार के कामों
में एरा फेरी ।

प्रा० ढलमलाना क्रि० अ० डग-
मगाना, काँपना ।

प्रा० ढलाना क्रि० स० साँचे में
ढालना, २ बहाना ।

प्रा० ढलैत (ढाल) पु० ढाल तल-
वार बाँधनेवाला, गोड़इत ।

प्रा० ढवाना क्रि० स० गिरवाना,
ढहाना, खसवाना, उजड़वाना, गिरा
देना, जड़से उखाड़ डालना ।

प्रा० ढाई (सं० सार्द्धद्वय) गु० अ-
ढाई, दो और आधा ।

प्रा० ढाँकना क्रि० स० ढाँपना, ढ-
कना, झिपाना, बंद करदेना ।

प्रा० ढाँग स्त्री० कंदला, शिखर,
श्रृंग, पहाड़ की चोटी ।

प्रा० ढाँचा पु० साँचा, ढोल, घर, ठाठ ।

प्रा० ढाँपना क्रि० स० ढाँकना, बंद
करना, झिपाना, लुकाना ।

प्रा० ढाक पु० पलाशवृक्ष, तेज,
प्रताप, शूहरत, शूहरा ।

प्रा० ढाटा पु० दुपट्टा जो ढाढ़ी और
कानोंपर बाँधाजाता है, बड़ी पगड़ी
जो मारवाड़ और उदयपुर आदि
राजपूताने के लोग बाँधा करते हैं ।

प्रा० ढाढ़स (सं० दाढ्य, दृढ़=क-
ढाढ़स } ठोर या स्थिर) स्त्री०
ढारस } मनकी दृढ़ता, साहस,
भरोसा, दिलासा, धैर्य, धीरज,
शूरमापन, हिम्मत ।

प्रा० ढाढ़सदेना बोल० दिलासा
देना, हिम्मत बंधाना ।

प्रा० ढाढ़सबंधाना बोल० भरोसा
देना, साहस देना, धीरज देना,
हियाव रखना ।

प्रा० ढाढ़िन स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री ।

प्रा० ढाढ़ी पु० गाने बजानेवाला,

बजंत्री, कलावत, कवाल ।
 प्रा० ढाना } क्रि० स० गिराना,
 ढहाना } उजाड़ना, नेव से उ-
 खाड़ ढालना ।
 प्रा० ढाबर गु० मैला ।
 प्रा० ढाबा पु० जाल, ओरी, ओ-
 लती ।
 प्रा० ढाल पु० फरी, २ उतार,
 ढलाव, झुकाव ।
 प्रा० ढालना क्रि० स० साँचे में
 उतारना, धातु को साँचे में पिघ-
 लाना, २ बहाना, ३ बिगाड़ना ।
 प्रा० ढालवाँ गु० उतारू, ढालू ।
 ढाला हुआ, साँचे में ढाला हुआ
 (जैसे धातु) ।
 प्रा० ढालू गु० उतारू, ढालवाँ, २
 बिगाड़ू ।
 प्रा० ढाहा पु० नदी का ऊँचा
 किनारा, करारा ।
 प्रा० ढिग (सं० दिक्=दिशा) स्त्री०
 तरफ़, ओर, दिशा, क्रि० वि० पास,
 समीप, नगीच, निकट ।
 प्रा० ढिठाई (सं० धृष्टता) स्त्री०
 मगराई, मचलाई, गुस्ताखी,
 चंचलता, निर्लज्जता, साहस,
 प्रगल्भता ।
 प्रा० ढिमढिमी स्त्री० डमरू, खंजरी ।
 प्रा० ढीठ } (सं० धृष्ट) गु० मगरा,
 ढीठा } मचला, साहसी, नि-
 र्लज्ज, मिलाजुला, बीर, निडर,

प्रगल्भ, गुस्ताख ।
 प्रा० ढील स्त्री० ढिलाई, २ आस्कत,
 सुस्ती, अचेती, ३ देरी, देर,
 विलम्ब ।
 प्रा० ढीला गु० बेकसा हुआ,
 छुटा, शिथिल, २ धीमा, आलसी,
 सुस्त, अचेत, मंद ।
 प्रा० ढीहा पु० ढीला, डंगर, खंडल,
 पहाड़ी ।
 प्रा० ढुलना क्रि० अ० ढलना,
 गिरना, बहना, लुढ़कना ।
 प्रा० ढूँढ़ना (सं० दुण्डन, दुण्ड=
 खोजना) क्रि० स० खोजना,
 हेरना, तलाश करना ।
 प्रा० ढूँढ़नाढाँढ़ना } बोल० खो-
 ढूँढ़ढाँढ़करना } जना, हेरना,
 तलाश करना, ढूँढ़ना, जुस्तजू
 करना ।
 प्रा० ढूढ़िया पु० जैनियोंका भिखारी ।
 प्रा० ढूकना बंधकरना, २ पास
 आना, ३ पैठना ।
 प्रा० ढूसर पु० हिंदुओं में वैश्यों
 की एक जाति ।
 प्रा० ढेऊ स्त्री० लहर, तरंग ।
 प्रा० ढेकली स्त्री० ढेंकुवा, पानी
 निकालने की कल, बल बिद्या में
 यह एक प्रकार की ढंडी है जिसमें
 जो लम्बी लकड़ी उसको सहारा
 देती है वह तो टेक है और जो
 पानी का ढोल निकाला जाता

वह बोझ है और जो दूसरी ओर
जमीन का अथवा पत्थर का बोझ
है वही जोर है ।

प्रा० ढेंका पु० कूटने की कल ।

प्रा० ढेंड़ी स्त्री० पोस्त का फूल, २
कर्णफूल, स्त्रियों के कानमें पहनने
का एक गहना ।

प्रा० ढेक पु० सारस पक्षी ।

प्रा० ढेढ़ पु० चमार, २ कौवा ।

प्रा० ढेढ़ी स्त्री० एक कान का गहना ।

प्रा० ढेर पु० राशि, ढेरी, अटाला,
संचय, इकट्ठा किया हुआ, समूह,
गु० बहुत ।

प्रा० ढेरी स्त्री० राशि, ढेर ।

प्रा० ढेला पु० पिण्डा, लोंदा, मिट्टी
का टुकड़ा ।

प्रा० ढेलाचौथ स्त्री० भादौ सुदी ४
जिस दिन हिन्दूलोग एक दूसरे
के घर में पत्थर फेंकते हैं और जो
कोई गाली देता है तो उसको
अच्छा सगुन मानते हैं ।

प्रा० ढैया पु० अढ़ैया, अढ़ाई सेर
का तोल ।

प्रा० ढोकना क्रि० स० पीना,
घूटना, निगलना ।

प्रा० ढोका पु० पत्थर का टुकड़ा,
२ पाँच की गिन्ती जो कंड़े मोल
लेने में बोलते हैं ।

प्रा० ढोटा पु० लड़का, बालक ।

प्रा० ढोना क्रि० स० लेजाना, बहना ।

प्रा० ढोर पु० गाय, गोरू, भैंस आदि
चौपाये, पशु ।

प्रा० ढोल एक बाजा, दमामा ।

प्रा० ढोलक } स्त्री० छोटा ढोल ।
ढोलकी }

प्रा० ढोलकिया पु० ढोल बजाने-
वाला ।

प्रा० ढोला पु० हिन्दुओं में एक
प्रसिद्ध प्रेमी का नाम, २ लड़का ।

प्रा० ढोली पु० ढोल बजानेवाला,
२ दोसौ पान की आँटी ।

प्रा० ढोंचा } गु० साढ़ेचार ।
ढाँचा }

ण

सं० ण (णस्=जाना) पु० बिंदुदेव,
भूषण, गुणरहित, निर्णय, ज्ञान,
बुद्धि, हृदय, शिव, दान, अस्त्र,
उपाय, विद्वान्, जलस्थान, निर्वाण,
त्रिगुणाकर ।

त

सं० त (तक्=सहना वा हँसना)
पु० चोर, २ म्लेच्छ, ३ पूँछ, ४
रत्न, ५ पुण्य, ६ अनृत, ७ तीव्र,
८ कुटिल, ९ तैरना ।

प्रा० तई स्त्री० एक प्रकार की लोहे
की कड़ाही ।

प्रा० तई (सं० स्थान) क्रि० वि०
तक, तलक, लग, लौं, पर्यन्त,
२ को ।

प्रा० तक क्रि० वि० तलक. लौं.

तई, पर्यन्त, पु० लकड़ी या भूसा
तौलने की तराजू ।
प्रा० तकना क्रि० सं० ताक लगाना,
देखा करना, टकटक देखना,
चितवना ।
प्रा० तकान पु० हिलाव, थकाव ।
प्रा० तकला (सं० तर्कु, कृत=का-
टना) पु० टकुवा, फिरकी, कतुवा,
सूत कातने का यंत्र ।
सं० तक (तक्=सहना, वा तच्=
जाना) पु० छँछ, मट्टा, मही जिस
में चौथा हिस्सा पानी मिला हो ।
सं० तक्ष (तक्ष=काटना वा पतला
करना) भा० पु० आच्छादन, क-
र्तन, काटना, चर्म, चित्रा नक्षत्र ।
सं० तक्षक (तक्ष=काटना वा पतला
करना) क० पु० लकड़ी काटने-
वाला, बढई, २ पाताल का बड़ा
साँप, ३ विश्वकर्मा, ४ सूत्रधार,
५ एक वृक्ष का नाम ।
सं० तक्षशिला स्त्री० एक शहर का
नाम जो पंजाब में था जिसको
यूनानी अपने इतिहास में Taxila
लिखा है, भरतके पुत्रकी राज-
धानी ।
प्रा० तखरी स्त्री० तुला, तखड़ी,
तराजू ।
सं० तगर पु० मरुआवृक्ष, सुगंधित
काठ ।
प्रा० तंगा पु० दो पैसे, टका ।

प्रा० तज (सं० त्वच्) पु० तेज-
पात का वृक्ष अथवा उसकी छाल ।
प्रा० तजना (सं० त्यज्=छोड़ना)
त्यजना क्रि० सं० छोड़ना,
त्यागना, त्याग करना, छोड़देना ।
सं० तज्ज (तद् + ज्ञ, ज्ञा=जानना)
तत्त्वज्ञाता, पण्डित ।
अ० तज्जखन भा० तजखा, आज्ञ-
मायश, विचार, अनुमान, अनुभव,
यथार्थज्ञान ।
सं० तट (तट्=ऊँचा होना) पु०
तीर, किनारा, कड़ारा, २ निकट,
पास ।
सं० तटस्थ (तट=तीर, स्था=ठह-
रना) गु० तीर पर ठहरनेवाला,
तीर पर के, तीरवासी, २ उदा-
सीन ।
सं० तटिनी क० स्त्री० नदी, नहर ।
सं० तटी क० पु० कूल, किनारा,
तटवाला ।
प्रा० तड़ पु० पक्ष, दल, धड़ा,
मारना, जस्था, टोली, २ तड़ ऐसा
शब्द ।
प्रा० तड़कना क्रि० अ० फटना,
फूटना, दूटना, चटकना, दड़कना ।
प्रा० तड़का पु० भोर, बिहान,
प्रभात, प्रातःकाल, भिनुसार, पोह,
सवेरा ।
प्रा० तड़के क्रि० वि० सवेरे, भोर
के समय, पोह फटे ।

प्रा० तड़फ स्त्री० बेकली, व्याकुलता, धड़क, घबराहट, निढालपन, धँड़धड़ाहट ।

प्रा० तड़फड़ाना क्रि० अ० धड़कना, छटपटाना, व्याकुल होना, घबरा जाना, धकधकाना, तड़फना, तड़पना ।

प्रा० तड़फड़ाहट स्त्री० धुकधुकी, धड़क ।

प्रा० तड़फना (क्रि० अ० छटपटाना, तड़पना) घबराना, व्याकुल होना, धकधकाना, २ कुदकना, उछलना, ३ किसी चीज के लिये बहुत विकल होना, किसी चीज को बहुतही बहुत चाहना ।

प्रा० तड़ाका पु० आहट, आवाज मारने का शब्द ।

प्रा० तड़ाग (तड़=पीटना वा चमकना) पु० तलाव, तालाव, सरवर, सरोवर, पोखरा, जलाशय ।

सं० तड़ित् (तड़=भिड़ाना, एक बादल को दूसरे बादल से) स्त्री० बिजली, दामिनी, विद्युत्, बर्क ।

सं० तण्डक (तड़+अक, तड़=भिड़ाना) क० पु० मायावी, पाखण्डी, २ समग्र, ३ खंजन अर्थात् भारद्वाज पक्षी, खड़ैँचा, खड़ैँचा, ४ धत्री, कड़ी, ५ गृह ।

सं० तड़ित्वान् क० पु० मेघ, बादल ।

सं० तड़ित्समाचार (तड़ित्=तारबर्की, समाचार=हाल) पु० तारबर्की

के समाचार, तार द्वारा वृत्तान्त ।

सं० तण्डुल (तड़=पीटना वा कूटना)

र्म० पु० चाँवल, कूटा हुआ धान ।

सं० तत्काल (तत्=वह, काल=समय) क्रि० वि० उसी दम, उसी समय, वही क्षण ।

सं० तत्क्षण (तत्=वह, क्षण=समय) क्रि० वि० उसी पल में, उसी समय, तुरन्त, तत्काल, उसी क्षण ।

प्रा० तत्ता (सं० तप्त) गु० गर्म, उष्ण, २ क्रोधी ।

सं० तत्पर (तत्=वह, पर=लगा हुआ) गु० किसी काम में लगा हुआ, उद्यमी, परिश्रमी ।

सं० तत्र (तत्=वह) क्रि० वि० वहाँ, तहाँ, उस जगह ।

सं० तत्रभवान् आँजनाव ।

सं० तत्रभवती आँजनावा ।

सं० तत्त्व (तत्=वह, त्व=भाव अर्थ में प्रत्यय, अर्थात् उस परमेश्वर का) पु० सार, मूल, यथार्थ, सत्य, आदिकारण, पञ्चभूत (जैसे १ मिट्टी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश), २ परमात्मा, ब्रह्म, ३ सारवस्तु, ४ सांख्यशास्त्र में प्रकृति आदि पचीस पदार्थ ।

सं० तत्त्वज्ञान (तत्त्व=सच्चा वा परमेश्वरका ज्ञान) पु० ब्रह्मज्ञान, यथार्थज्ञान, परमार्थज्ञान, परमेश्वर का ज्ञान ।

सं० तत्त्वतः अव्य० ठीक ठीक,
यथार्थ, हकीकत में ।

सं० तथा (तत्=वह, या प्रकार अर्थ
में प्रत्यय) क्रि० वि० उस प्रकार
से, वैसाही, उसी तरह से, वही,
तैसा, तिस प्रकार ।

सं० तथापि (तथा=तैसे, अपि=भी)
समुच्च० वा क्रि० वि० तौ भी, तब
भी, तिसपर भी ।

सं० तथास्तु (तथा=तैसे, अस्तु=
होवे, अस्=होना) समुच्च० क्रि०
वि० वैसाही हो, हाँ ।

सं० तत्थ्य पु० सत्य, निष्कपट,
मिथ्यारहित ।

प्रा० तद् (सं० तदा) क्रि० वि०
तब, उस समय, फिर, इसके पीछे,
उस दशा में ।

सं० तदनन्तर } (तत्=उसके, अ-
तदुपरान्त } नन्तर=पीछे) क्रि०
वि० वा समुच्च० उसके पीछे,
तिसके पीछे ।

सं० तदपि (तत् + अपि) समुच्च०
तब भी, तोभी ।

सं० तदा } (तत्=वह) क्रि० वि० तब,
तदानीम् } तद, उस समय ।

सं० तद्धित (तत् + हित) पु० उस
का हित, दूसरे की भलाई, २ व्या-
करण में नाम से नाम बनाये जाने
को कहते हैं जैसे विष्णु से वैष्णव,
शिव=शैव ।

प्रा० तभी (सं० तदाहि) क्रि०
वि० तभी ।

प्रा० तन (सं० तनु) पु० शरीर, देह,
काया, अङ्ग, २ ओर, तरफ ।

प्रा० तनदेना बोल० ध्यानदेना ।

प्रा० तनक (सं० तनुक, तन्=फैलना)
गु० थोड़ा, अल्प, छोटा, जरा ।

प्रा० तनना } (सं० तन्=फैलना)
तन्ना } क्रि० अ० फैलना,
खिंचना, विस्तार देना ।

सं० तनय (तन्=फैलाना, वंश को)
पु० बेटा, पुत्र, सन्तान, औलाद ।

सं० तनया (तनय) स्त्री० बेटा, कन्या ।

प्रा० तनी (सं० तनया) स्त्री० बेटा,
२ अंगरखे का बन्द ।

सं० तनु } (तन्=फैलाना) पु०
तन् } शरीर, देह, तन, काया,
अङ्ग, २ गु० पतला, थोड़ा, अल्प,
सूक्ष्म ।

सं० तनुज } (तनु=शरीर, जन्=पैदा
तनूज } होना) पु० बेटा, पुत्र ।

सं० तनुजा } (तनु=शरीर, जन्=
तनुजाता } पैदा होना) स्त्री० बेटा,
तनूजा } लड़की ।

सं० तनुत्र (तनु=शरीर, त्रै=बचाना)
पु० कच, बाल्तर ।

सं० तनुरुह (तनु=शरीर, रुह=उग-
ना) पु० बाल, केश ।

सं० तन्ति (तन्=फैलाना) पु०
बुननेवाला, जुलाहा, ताँती ।

सं० तन्तु (तन्=फैलाना) पु० सूत,
तागा, धागा, २ वंश, सन्तान ।

सं० तन्तुकीट (तन्तु=तागा, कीट=
कीड़ा) पु० रेशम का कीड़ा, पाट
कीट ।

सं० तन्तुवाय (तन्तु=सूत, वै=फै-
लाना वा बुनना) पु० बुननेवाला,
जुलाहा, ताँती, कौरी ।

सं० तन्त्र (तन्=फैलाना) पु० एक
शास्त्र का नाम जिसमें महादेव
और पार्वती का संवाद है इसलिये
ताम्रिक लोगों के येही दोनों मुख्य
देवता हैं, इस शास्त्रके बहुत से ग्रन्थ
मिलते हैं जैसे रुद्रयामल मेस्तन्त्र
आदि । मन्त्रशास्त्र, २ मन्त्र, मन्त्र
यन्त्र, टोना टोटका, ३ सिद्धान्त,
प्रमाण, ४ प्रधान, ५ वश, आधीन,
६ अमल, काम ।

सं० तन्त्रि { स्त्री० निद्रा, नींद,
तन्त्री } उँघाई, ऊँघ ।

सं० तन्द्रा (तन्द्रा=आलस करना,
वा आलसी होना) स्त्री० आलस,
थकावट, थकाई, श्रम, काहिली,
सुस्ती ।

सं० तन्द्रालु (तन्द्रा) गु० आलसी,
सुस्त, निद्रालु ।

सं० तन्मात्र पु० शब्द, २ रस, ३
रूप, ४ गन्ध, ५ स्पर्श, उतनाही,
जितनाही ।

सं० तन्मय पु० तद्रूप, अभेद, उसी

रूप का ।

सं० तन्वी (तनु) क० स्त्री० जिस
स्त्री का शरीर पतला हो, कृशाङ्गी ।

सं० तप (तप्=तपना) पु० गर्मी,
उष्णता, २ गर्मी की ऋतु, ३
तपस्या, रियाजत ।

प्रा० तपन (सं० तप्) र्म० स्त्री०
गर्मी, गु० तत्ता, गर्म, तपा हुआ ।

सं० तपन (तप्=तपना) भा० पु०
सूर्य, २ एक नरक का नाम, ३
गर्मी, जलन, उष्णता, ४ ग्रीष्म
ऋतु, गर्मी की ऋतु ।

प्रा० तपना (सं० तपन) क्रि० अ०
गर्म होना, दहकना, २ भागवान्
होना, तेजोवान् होना, ऐश्वर्यवान्
होना ।

सं० तपस्या (तपस्, तप्=तप करना)
स्त्री० तप, योग, काया को कष्ट
देना, रियाजत ।

सं० तपस्वी (तपस्विन्, तपस्, तप्
=तप करना) गु० तपस्या करने-
वाला, योगी, योग साधनेवाला,
तापस, तपसी, रियाजी ।

प्रा० तपाना (तपना) क्रि० स० गर्म
करना, तत्ता करना, गर्माना ।

प्रा० तपी { (सं० तपस्वी) गु० तपस्या
तप्सी } करनेवाला, तपस्वी,
योगी ।

सं० तपोधन (तपस्=तप, धन=
दौलत, अर्थात् जिनके तपही धन

है) पु० तपस्वी, तप करनेवाला, योगी, तप्सी ।

सं० तपोवन (तपस्=तपस्या, वन =जङ्गल) पु० तपस्या करने का वन, वह वन जिसमें योगीलोग तप करते हैं, २ एक तीर्थ का नाम ।

सं० तप्त (तप्=तपना) र्म्म० पु० गर्म, तपा हुआ, तप्ता, उष्ण, गर्मी अथवा पीड़ा अथवा शोच से जला हुआ ।

प्रा० तथ (सं० तदा) क्रि० वि० तिस समय, उस समय, तद्, फिर, इसके पीछे ।

सं० तम (तम्=सताना व दुःखदेना) पु० तमोगुण, २ अन्धेरा, अन्धकार, अज्ञान, ३ राहु, ४ अत्यन्त अर्थ में प्रत्यय, सिफत, कुलकार्दक ।

सं० तमः (तम्=सताना वा दुःख देना) पु० अन्धेरा, अन्धकार, २ तमोगुण, ३ पाप, ४ शोक, शोच, ५ राहु ।

प्रा० तमक (सं० तमः) स्त्री० घमण्ड, अभिमान, २ क्रोध, गुस्से से मुँह लाल होजाना ।

प्रा० तमकना क्रि० अ० गुस्से से मुँह लाल होजाना, खिसियाना, क्रोध करना ।

प्रा० तमतमाना क्रि० अ० लाल होना, भलभलाना, चमकना, मुँह लाल होजाना ।

सं० तमस (तम्=सताना वा दुःख देना, वा अन्धेरा होना) पु० अन्धेरा, २ तमोगुण, ३ एक नरक का नाम, ४ राहु ।

सं० तमसा (तम्=चाहना) स्त्री० एक नदी का नाम ।

सं० तमारि (तम्=अन्धेरा, अरि=वैरी) पु० सूर्य ।

सं० तमाल (तम्=अन्धेरा होना वा चाहना) पु० एक वृक्ष का नाम जिसकी पत्तियाँ काली होती हैं, २ चन्दन का टीका, ३ तमाखू, ४ मोरपंख ।

सं० तमि (तम्=अन्धेरा) स्त्री० तमी } रात, रात्री, रजनी ।

सं० तमीचर (तमी=रात, चर=चलनेवाला, वा खानेवाला, चर=चलना, वा खाना) पु० राक्षस, निशाचर ।

सं० तमोगुण (तमस्=अन्धेरा, गुण) पु० तीसरा गुण, तीन गुणों में का एक गुण, क्रोध, गजब, गुस्सा, मोह, अज्ञान आदि ।

सं० तमोग्न (तमस् + हन्) हन् को प्र आदेश हो गया पु० सूर्य, २ चन्द्र, ३ अग्नि, ४ दीप, ५ गुरु, ६ ज्ञानी ।

प्रा० तम्बू डेरा, पाल, रावटी, छोलदारी, कपड़कोठा ।

प्रा० तम्बूरा अरबी तम्बूरह, पु०

एक बाजे का नाम ।

प्रा० तम्बोली (सं० ताम्बूली, ताम्बूल=पान) क० पु० पान बेचनेवाला ।

प्रा० तर (सं० तल, तल्=ठहरना)
तरे } क्रि० वि० नीचे, तले ।

सं० तर गु० अधिक अर्थ में प्रत्यय,
जैसे श्रेष्ठतर ।

प्रा० तरई (सं० तारा) स्त्री० तारा,
तरैया, नक्षत्र ।

प्रा० तरकना क्रि० अ० कूदना ।

प्रा० तरकारी स्त्री० भाजी, साग ।

सं० तरङ्ग (तृ=पार होना) स्त्री०
लहर, डेऊ, हिलकोरा, २ उमंग,
ललक, मौज ।

सं० तरङ्गिणी (तरङ्ग) स्त्री० नदी ।

सं० तरङ्गी (तरङ्ग) गु० लहरी,
चञ्चल मन, उछाहवाला, तरल ।

सं० तरण (तृ=पार होना) पु०
तैरना, पार होना, उद्धार, बचाव,
२ डोंगा, नाव, ३ स्वर्ग, गु० पारहोने
वाला, तरनेवाला, मुक्तिपानेवाला ।

सं० तरणि (तृ=पार होना) पु० सूर्य,
स्त्री० २ किरण, ३ नाव, नौका ।

प्रा० तरना (सं० तरण) क्रि० अ०
पार होना, २ मुक्त होना, छुटकारा
पाना, उद्धार होना ।

प्रा० तरफना क्रि० अ० तड़पना,
व्याकुल होना ।

प्रा० तरबूज (फा० तरबूज) पु० एक

फल का नाम ।

सं० तरल (तृ=पार होना) गु० चञ्चल,
तरङ्गी, अस्थिर, ओछा, पु० हार,
२ हार के बीच की मणि ।

प्रा० तरव (सं० तरु) पु० वृक्ष, पेड़,
गाछ ।

प्रा० तरवर (सं० तरुवर, तरु=पेड़,
वर=बड़ा) पु० बड़ा वृक्ष ।

प्रा० तरवरिया (तरवार) क० पु०
तलवार रखनेवाला, खड्गधारी,
२ तलवार ।

प्रा० तरवार (सं० तरवारि, तर
तलवार) चाल [वैरियों की]
तृ=पार होना, और वृ=रोकना,
अर्थात् जो वैरियों की चालको
रोक देती है स्त्री० खड्ग, खांडा ।

प्रा० तरसना (सं० तर्पण, तृष्=प्यासा
होना) क्रि० अ० बहुत चाहना,
जी लगा रहना, रटना ।

प्रा० तरईन (सं० तारागण) पु०
तारे, नक्षत्र ।

प्रा० तराई स्त्री० दलदल, धरती,
जलाभूमि, २ चौगान, चरनेकी
जगह ।

सं० तरि (तृ=पार होना) स्त्री० नाव,
तरी } डोंगी, नौका, तरणी ।

सं० तरु (तृ=पार होना, अर्थात्
जिसका लगानेवाला तरजाता है)
पु० वृक्ष, पेड़, रुख, तरवर, गाछ,
दरख्त ।

सं० तरुण (तृ=बीत जाना, वा चलाजाना) गु० जवान, युवा ।
 प्रा० तरुणार्ह (सं० तरुणता) भा० स्त्री० जवानी, जोवन, यौवन ।
 सं० तरुणी (तरुण) स्त्री० जवान स्त्री, युवती ।
 प्रा० तरेरना क्रि० अ० घूरना, त्योरी चढ़ाना, आँख दिखाना ।
 प्रा० तरैया (सं० तारा) स्त्री० तारा, तरंगण ।
 सं० तर्क (तर्क=तर्ककरना) स्त्री० वाद, विवाद, शास्त्रार्थ, न्याय संबन्धी बातचीत, शङ्का, दलील, २ न्यायशास्त्र, ३ (न्यायशास्त्र में) अनुमान, कल्पना ।
 सं० तर्कवितर्क स्त्री० शङ्का, संदेह ।
 सं० तर्कविद्या (तर्क + विद्या) स्त्री० न्यायशास्त्र ।
 सं० तर्जक (तर्ज् + अक) क० पु० कूदनेवाला ।
 सं० तर्जन (सं० तर्ज्=धमकाना) पु० कोप, क्रोध, ताड़न, धमकी, गर्ज ।
 प्रा० तर्जना (सं० तर्जन) क्रि० स० क्रोध करना, कूदना, धमकाना ।
 सं० तर्जनी (तर्ज्=धमकाना, जिस से) स्त्री० दूसरी अँगुली, अँगूठे के पास की अँगुली ।
 सं० तर्जित (तर्ज् + इत्) र्म० पु० कूदा, धमकाया गया ।

सं० तर्पण (तृप्=तृप्त होना) पु० तृप्ति, संतोष, परिपूर्णता, २ पितरों को जल देना ।
 सं० तर्पक (तृप् + अक) क० पु० तृप्तिदेनेवाला, संतोष करनेवाला ।
 सं० तर्पित (तृप् + इत्) र्म० पु० तृप्त, सन्तुष्ट, आसूदा ।
 सं० तर्ष (तृप्=प्यासा होना) स्त्री० प्यास, २ चाह, इच्छा, तृष्णा ।
 प्रा० तर्स स्त्री० दया, कृपा, करुणा ।
 प्रा० तर्सखाना बोल० दयाकरना ।
 प्रा० तर्साना (तरसना) क्रि० स० ललचाना, लुभाना ।
 प्रा० तर्सों क्रि० वि० परसों के आगे का दिन, आजसे पहला वा पिछला तीसरा दिन ।
 प्रा० तल (तल्=ठहरना) पु० तला, नीचा, नीचे का भाग, नीचे की जगह, थाह, २ तलवा, तला, तली ।
 प्रा० तलघर धि० पु० तहखाना, ताखाना ।
 प्रा० तलछट स्त्री० मैल, निचोड़, खूद, मल ।
 प्रा० तलपना { क्रि० अ० तलफना, तलफना } छटपटाना, २ रोना, हाथ मारना ।
 प्रा० तलमलाना क्रि० अ० ललचाना, तरसना, २ कलपना, तड़फना ।

प्रा० तला सं० तल पु० पेंदा, थाह,
२ जूते के नीचे का चमड़ा, तल्ला,
तली ।

प्रा० तलाब (सं० ताल और फा०
तालाब) पु० तालाब, सरोवर,
जलाशय ।

प्रा० तली (सं० तल) स्त्री० तला,
नीचा, पेंदा, २ जूते के नीचे का
चमड़ा, ३ चूर्ण ।

प्रा० तलुवा { (सं० तल) पु० पाँव
तलवा } का तला, पगतली ।

प्रा० तलुवाचाटना { बोल० चाप-
तलुवेतलेहाथधरना } लूँसी करना,
लछोपचोकरना, खुशामद करना ।

प्रा० तले (सं० तल) क्रि० वि०
नीचे, उतर के, घट के ।

प्रा० तले ऊपर बोल० नीचे ऊपर,
उलट पुलट ।

सं० तल्प पु० पलँग, शय्या, २
अट्टालिका, अटारी, ३ नारी,
अबला ।

सं० तल्लिका स्त्री० कुंजी, ताली,
२ कूर्चिका, कूची, ३ तरुणी ।

सं० तव सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

प्रा० तसर पु० एक प्रकार का रेशम ।

सं० तस्कर (तत्=वह, कृ=करना)
क० पु० चोर, चोरी करनेवाला,
चोड़ा ।

प्रा० तस्म पु० चमोटा, चमोटी,
तस्मा ।

प्रा० तस्मई स्त्री० खीर ।

सं० तस्मै सर्वना० तुम्हारे लिये ।

प्रा० तस्मू पु० इंच, एक प्रकार का
नाप ।

प्रा० तहसनहस गु० नाश, नष्ट,
तित्तर बित्तर, चौपट, उजाड़ ।

प्रा० तहाँ (सं० तत्र) क्रि० वि०
तिस जगह, वहाँ ।

प्रा० ता सर्वना० उसको, उसे,
तिसको ।

प्रा० तांगा पु० एक तरह की गाड़ी ।

प्रा० तांत (सं० तन्तु) स्त्री० चमड़े
का तार, चमड़े की डोरी, बाजे का
तार, २ तांती का यन्त्र ।

प्रा० तांता (सं० तंति, तन्=फै-
लाना) पु० पांत, श्रेणी, कतार
(जैसे घोड़े, हाथी, ऊँटों की) ।

प्रा० तांती (सं० तन्ति) पु० जुलाहा,
बुननेवाला, कतार ।

प्रा० तांबा (सं० ताम्र) पु० एक
धातु का नाम ।

प्रा० ताइत (अरबी ^{تاي} तावीज)
पु० गण्डा, यन्त्र ।

प्रा० ताई स्त्री० बाप के बड़े भाई
की स्त्री ।

प्रा० ताऊ पु० बापका बड़ा भाई ।

प्रा० ताक (सं० तर्क) स्त्री० दृष्टि,
दीठ, भांक, टकटकी ।

प्रा० ताकना (ताक) क्रि० स०
भांकना, घूरना, देखना ।

प्रा० ताग { पु० डोरा, सूत, धागा ।
तागा }

प्रा० तागतोड़ पु० गोटा, किनारी ।

सं० ताटङ्क { (ताड़ वा ताटपीटना)
नाड़ङ्क } (तट्=पीटना और
शङ्क, चिह्न) पु० डेडी, कर्णभूषण,
कान का गहना, ढाँरें ।

प्रा० ताड़ (सं० ताल) पु० ताल
का वृक्ष, २ ताड़ना, स्त्री० पहचान ।

सं० ताड़का (तट्=पीटना) स्त्री०
एक राक्षसी का नाम ।

सं० ताड़क (तट् + अक) क० पु०
पीटनेवाला, सजा देनेवाला, नाम
दैत्यका, २ एक मन्त्र ।

सं० ताड़न पु० { (तट्=पीटना)
ताड़ना स्त्री० } दण्ड, फिड़की,
सजा, मार, डांट, धमकी ।

प्रा० ताड़ना क्रि० सं० जानना,
पहँचानना ।

सं० ताड़नी स्त्री० चाबुक, आँगी,
पैना, कोड़ा ।

प्रा० ताड़ी (ताड़) स्त्री० ताड़ का
रस जिसमें नशा होता है, २ कटार
की मूठ ।

सं० ताड़ित (तट् + इत) र्भ० पु०
मारा गया, पीटा गया ।

सं० ताड्यमान र्भ० पु० मारने
योग्य, पीटने लायक ।

सं० ताण्डव (तण्ड एक ऋषि का
नाम जिसने पहले पहल इस नाच

को निकाला और सिखलाया, वा
तडि=पीटना) पु० महादेव और
उनके गणों का नाच, २ पुरुषों का
नाच, जैसे “पुंनृत्यं ताण्डवं प्रोक्तं
स्त्रीनृत्यं लास्यमुच्यते ” उद्धतनृत्य,
तृणविशेष ।

सं० तात (तत्=फैलाना अपने वंश
को वा बल को) पु० बाप, २
प्यारा, जैसे “ तात प्रणाम तात
सन कहेऊ ” (रामायण) यहाँ
पहले ‘तात’ शब्द का अर्थ प्यारा
और दूसरे ‘तात’ शब्द का अर्थ
बाप है, ३ प्यार का शब्द जो मा
बाप अपने लड़के बालों के लिये
और गुरु अपने शिष्यों के लिये
बोलते हैं, जैसे “ कहहु तात
जननी बलिहारी ” (रामायण)
४ भाई, ५ मित्र, सखा, गु० बड़ा,
पूज्य, आर्य ।

प्रा० तात { (सं० तप्त) गु० गर्म,
ताता } उष्ण ।

प्रा० तातनी सर्वना० उसको ।

प्रा० तातनौ सर्वना० उसका ।

प्रा० ताते { सर्वना० उससे, तिससे ।
तातें }

सं० तात्कालिक (तत्काल) गु०
उसी दम का, उसी समय का ।

सं० तात्पर्य (तत्पर) पु० अभिप्राय,
आशय, अर्थ, मतलब ।

सं० तादर्थ्य पु० तिसके लिये, तिस

के अर्थ, तिसवास्ते ।

सं० तादृश (तत्=वह, दृश्=देखना)
वैसाही, उसीके बराबर, उसीके
समान, उसका सा ।

सं० तान (तन्=फैलाना) स्त्री० राग
का उच्चारण, स्वर, राग, ताल ।

प्रा० तानतोड़ना बोल० ठट्टा मा-
रना, ताल पूरी करना ।

प्रा० ताना (सं० तन्=फैलाना)
पु० कपड़ा बुनने की कलपर सूत
का फैलाना, ताना सूत, तानी ।

प्रा० ताना { (सं० तपन, वा तापन,
तावना } तप्=तपाना) क्रि० स०
गर्म करना, ताव देना, परखना ।

सं० तान्त्रिक (तन्त्र) क० पु० तन्त्र-
शास्त्र का जाननेवाला, पण्डित ।

प्रा० तान्ना (सं० तनन, तन्=फैला-
ना) क्रि० स० फैलाना, खँचना,
कसना, तम्बू तानना, बोल० डेरा
खड़ा करना ।

सं० ताप (तप्=गर्म होना) पु०
गर्मी, २ दुःख, पीड़ा, सन्ताप, ३
शोच, फिक्र, शोक, खेद, उदासी,
स्त्री० तप, ज्वर, जर ।

सं० तापक (तप् + अक) क० पु०
दुःखदायी, दुःखद, दुःखदाता ।

सं० तापित (ताप् + इत) र्भ्म० पु०
दुःखित, तापयुक्त ।

प्रा० तापनिह्नी स्त्री० स्नीहा, पिलही,
तेशल ।

प्रा० तापना (सं० तापन्, तप्=त-
पाना) क्रि० अ० गर्माना, देह
सेकना, शरीर गर्म करना, जाड़ें में
आग के पास बैठकर देहको गर्माना,
घाम खाना ।

सं० तापस (तपस्=तप) पु० तपसी,
तपस्वी, तप करनेवाला, योगी ।

प्रा० तामड़ा (सं० ताम्र) पु० तांबे
जैसे रङ्ग का एक हलके मोल का
रतन ।

सं० तामरस (तामर=पानी, सम्=
सोना) पु० कमल, कँवल, २ तांबा
३ सोना ।

सं० तामस (तमस्=तमोगुण, वा
अन्धेरा) गु० तमोगुणी, तामसी,
क्रोध मोह आदि में लगा हुआ,
पु० अन्धेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट,
४ अहंकार, क्रोध मोह आदि ।

प्रा० तामसी (सं० तामसिक) गु०
क्रोधी, तमोगुणी, रिस करने-
वाला ।

प्रा० तामेश्वर (सं० ताम्रेश्वर,
ताम्र + ईश्वर) पु० तांबे की राख,
ताम्र, वङ्ग ।

सं० ताम्बूल (तम्=चाहना) पु०
पान, नागरबेल का पत्ता ।

सं० ताम्बूली { पु० तमोली, पान
ताम्बूलिक } बेचनेवाला ।

सं० ताम्र (तम्=चाहना) पु० तांबा,
२ लालरङ्ग ।

सं० ताम्रकार { क० पु० ठटेरा,
ताम्रकुट्टक } तांबा पीटनेवाला ।

फ्रा० तार पु० लोहे आदि धातु का खिंचा हुआ तागा जो सितार आदि बाजों में लगाया जाता है,— तार बाँधना, बोल० किसी काम को लगातार जारी रखना,—तार टूटना, बोल० अलग होजाना, छूटजाना, किसी काम का बंद होजाना ।

सं० तारक (तृ=पार करना, वा बचाना) क० पु० बचानेवाला, रक्षक, उद्धार करनेवाला, पु० एक राक्षस का नाम, २ एक प्रकार का मन्त्र, ३ तारा, सितारा, नक्षत्र, ४ आँख का तारा, पुतली, ५ नाविक ।

सं० तारण (तृ=पार करना, बचाना) गु० पार करनेवाला, पु० उद्धार, पार करना, २ धरनेई, बेड़ा ।

सं० तारणन्तरण (तृ=पार करना) गु० पार करनेवाला, और पार होनेवाला ।

प्रा० तारणा { (सं० तारण) क्रि० तारना } स० पार करना, बचाना, उद्धार करना, मुक्ति देना, मुक्त करना ।

सं० तारतम्य भा० पु० फर्क, अन्तर, दर्जा बदर्जा ।

प्रा० तारतोड पु० कारचोबी, बूटा

निकालना, बूटेका काम, बूटे-कारी ।

सं० तारा (तृ=पार होना, अर्थात् जाना) पु० नक्षत्र, सितारा, २ आँख की पुतली, स्त्री० बालि वानर की स्त्री और अङ्गद की मा, २ बृहस्पति की स्त्री, ३ देवी का नाम ।

प्रा० तारेगिनना बोल० नींद नहीं आना, नींद न पड़ना ।

सं० तारिक पु० उतराई, स्त्री० ताड़ी, तालरस ।

सं० तार्किक (तर्क) क० पु० नैया-यिक, तर्कशास्त्री ।

सं० ताल (तल्=ठहरना, वा तड्=पीटना) पु० एक वृक्ष का नाम, ताड़, खजूर, २ ताली बजाने का शब्द, ३ गान का परिमाण, ४ भाँझ, मँजीरा, ५ ताला, ६ तालाब, ७ कुश्ती करने में भुजा पर हाथ मारने का शब्द ।

प्रा० ताल मारना { बोल० कुश्ती ताल ठोंकना } करने में भुजा को हाथ से ठोंकना ।

प्रा० तालमखाना पु० एक पौधे का नाम ।

सं० तालवृन्त { पु० पंखा, व्यजन, तालवृन्तक } वेना, बादकश ।

सं० तालव्य (तालु) गु० जो तालु से बोले जायँ, जैसे “ इ, ई, च,

छ, ज, झ, ञ, य, श ” ।

प्रा० ताला (सं० ताल) पु० बन्द करने की कल, कुलफ, कुप्रल ।

सं० तालाङ्क (ताल + अङ्क) पु० बलराम, २ महादेव, ३ नाचने वाला, ४ ताल का लक्षण, ५ आरा, ६ ग्रन्थ ।

प्रा० ताली (सं० ताल) स्त्री० कुञ्जी, चाभी, २ हाथ बजाना, ३ एक प्रकार का ताड़ वृक्ष ।

प्रा० ताली एक हाथसे बजाना बोल० यह मुहावरा अनहोना जतलाने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० ताली बजाना { बोल० हाथ ताली मारना } पर हाथ मारना, हाथ बजाना, २ धिकारना, धुतकारना, हूहकरना ।

सं० तालु (तृ=पार होना अर्थात् जहां से अक्षर निकलते हैं) पु० तालुवा, तालू ।

प्रा० ताव (सं० ताप, फ्रा० ताफ) पु० ताप, गर्मी, २ क्रोध, कोप, तमक, ३ बल, जोर, ४ चमक, तेज, प्रताप, ५ ऐंठ, मरोड़, बल, बट, अकड़, ६ कागज की परत, ७ जांच, परख, कस, ८ शीघ्रता, उतावली, हड़बड़ी ।

प्रा० तावदेना बोल० मरोड़ना, बटना, ऐंठना, २ मोड़ों पर हाथ फेरना, मोड़ें सँवारना, ३ गर्म

करना (जैसे लोहे को) ।

प्रा० तावपेचखाना बोल० गर्म होना, क्रोधित होना, गुस्सा होना ।

सं० तावत् (तत्=वह) क्रि० वि० उतना, इतना, यहां तक, यहां लों, तब तक ।

प्रा० तावना (सं० तपन, वा तापन, तप्=तपाना) क्रि० सं० गर्म करना, गर्माना, २ ताव देना, परखना, कसना, जांचना, ३ ऐंठना, मरोड़ना ।

प्रा० ताश पु० लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा० तास पु० गंजफा, २ लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा० तासु (सं० तस्य) सर्वना० उसका, तिसका ।

प्रा० तासों (सं० तस्मात्) सर्वना० उससे, तिससे ।

प्रा० ताहि (सं० तम्) सर्वना० उसको, उसे, तिसको, तिसे ।

प्रा० निकोनिघा (सं० त्रिकोण) गु० तिखंडा ।

सं० तिक्त (तिज्=तीखा करना) गु० तीता, कडुवा ।

प्रा० तिगुन (सं० त्रिगुण, त्रि=तीन, गुण=गुना) गु० तिगुना, तीन गुना, तिहरा ।

सं० तिग्म (तिज्+म) र्म० पु० तीक्ष्ण, पैना, तेज ।

प्रा० तिच्छन } (सं० तीक्ष्ण) गु०
तीछन } तीखा, तीता, क-
ठोर, कड़ा ।

प्रा० तिजारी (सं० तृतीयज्वर,
तृतीय=तीसरा, ज्वर=तप) स्त्री०
जो तप एक दिन बीच में आकर
तीसरे दिन फिर आवे, अन्तरिया
ज्वर ।

सं० तिजिल (तिज् + इल्, तिज्=
क्षमा करना) क० पु० चन्द्रमा ।

प्रा० तित (सं० तत्र) क्रि० वि०
वहां, तहां, तिधर ।

सं० तितिक्षक क० पु० सहनशील,
क्षमी ।

सं० तितिक्षा (तिज्=सहना) भा०
स्त्री० धीरज, क्षमा, सहनशीलता,
धैर्य, सहना ।

सं० तिथि (अत्=जाना) स्त्री०
हिन्दी महीनों के दिन, हिन्दी
महीनों की तारीख ।

ग्रा० तिनका (सं० तृण) पु० खर,
डांठी, घास का टुकड़ा ।

ग्रा० तिनकादाँतोंमेंलेना बोल०
आधीन होना, जी दान माँगना,
जी की अमन माँगना ।

ग्रा० तिबारा (सं० त्रि=तीन, बार=
दरवाजा) पु० तीन दरवाजे का
मकान, कमरा, तिदरी, २ गु०
तीनबार, तीनदफे ।

सं० तिमिर (तिम्र=भिगोना, वा

तम्=अन्धेरा होना) पु० अन्धेरा,
अन्धकार, २ एक प्रकार-का आँख
का रोग ।

प्रा० तिम्री स्त्री० बड़ी मछली ।

प्रा० तिय (सं० स्त्री) स्त्री० नारी,
लुगाई, स्त्री ।

प्रा० तिरन्वा (सं० तृपा) स्त्री०
प्यास, पीने की चाह, पियास, २
तृष्णा, चाह ।

प्रा० तिरछा } (सं० तिर्यञ्च्,
तिर्छा } तिरस्=टेढ़ा, अञ्च्=
जाना) गु० टेढ़ा, बांका, आड़ा ।

प्रा० तिरछादेखना बोल० कनआँ-
खियों देखना, टेढ़ी आँखसे दे-
खना, तिरछी चितवनसे देखना ।

प्रा० तिरना (सं० तरण) क्रि०
अ० पैरना, हेलना, तैरना ।

प्रा० तिरपन (सं० त्रिपञ्चाशत्,
त्रि=तीन, पञ्चाशत्=पचास) गु०
तीन और पचास, ५३ ।

प्रा० तिरपौलिया (त्रि=तीन,
पोल=दरवाजा) पु० तीनदरवाजे
का मकान, २ तिराहा ।

प्रा० तिरसठ (सं० त्रिषष्टि, त्रि=
तीन, षष्टि=साठ) गु० तीन और
साठ, ६३ ।

सं० तिरस्कार (तिरस्=अवज्ञा, वा
अनादर, कृ=करना) पु० अपमान,
अवज्ञा, अनादर, निन्दा, धिन,
धिकार ।

सं० तिरस्कृत र्म्यं पु० अपमानिता,
बेइज्जती ।

सं० तिरस्किया (तिरस् + क्रिया)
अनादर, त्याग ।

प्रा० तिराना (तिरना) क्रि० सं०
तैराना, पैराना, हेलाना ।

प्रा० तिरानवे (सं० त्रिनवति, त्रि=
तीन, नवति=नव्ने) गु० नव्ने
और तीन, ६३ ।

प्रा० तिरासी (सं० त्र्यशीति, त्रि=
तीन, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी
और तीन, ८३ ।

प्रा० तिरिया (सं० स्त्री) गु०
नारी, लुगाई, स्त्री ।

प्रा० तिरियाचरित्र (सं० स्त्रीच-
रित्र) पु० स्त्रियों के बल बल,
स्त्रियों के फरेव ।

सं० तिरोधान पु० आच्छादन,
गुप्त, अन्तर्धान ।

सं० तिरोहित (तिरस्=छिपा, धा=
रखना) गु० छिपा हुआ, गुप्त,
लुका हुआ ।

प्रा० निर्मिराना क्रि० अ० चौधि-
याना, २ लहकना, हिलना, फड़-
फड़ाना, ३ पानी पर तेल का तैरना ।

सं० निर्यक् गु० टेढ़ा, तिरछा, कु-
टिल, पु० पशु, पक्षी ।

प्रा० तिहुत (सं० तीरमुक्ति) पु०
तिरहुत } एक जिला का नाम
तिरहुति } जो सूबे बिहार में है

और जिसका मुख्य नगर मुज-
फ्फरपुर है ।

सं० तिल (तिल्=चिकना होना)
पु० एक पौधा अथवा उसका बीज
जिसका तेल निकलता है, २ देह
में एक काला चिह्न ।

सं० तिलक (तिल्=जाना) पु०
टीका, ललाट में चन्दन वा केशर
वा रोली आदिका चिह्न, गु० श्रेष्ठ,
प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम, अग्रगण्य,
जैसे “रघुकुलतिलक सदा तुम उथ-
पन थापन” अर्थात् रघुवंशियों में
प्रधान वा श्रेष्ठ, (जानकीमङ्गल) ।

प्रा० तिलकुट (तिल, कुट=कूटा
हुआ) पु० एकतरह की मिठाई
जिसमें तिल कूटकर मिलाते हैं ।

प्रा० तिलङ्गा (सं० तैलङ्ग, कर्नाटक
देश) पु० तैलङ्ग देश का वासी,
पहलेही पहल अंगरेजी सेना में
तैलङ्ग अर्थात् कर्नाटक देशके
लोग भरती हुयेथे इसलिये अंग-
रेजी सेना के सब सिपाहियों को
तिलङ्गे कहते हैं ।

प्रा० तिलङ्गी स्त्री० गुड़ी, पतङ्ग, चङ्ग ।

प्रा० तिलड़ा (सं० त्रि, प्रा० लड़,
लड़ी) पु० तीन लड़ का हार ।

प्रा० तिलहा (तैल) गु० तेलिया,
तेल सा चिकना ।

प्रा० तिलुवा (तिल) पु० तिलके लड्डू ।

प्रा० तिल्ली स्त्री० पिलई, तापतिब्बि ।

सं० तिलोत्तमा स्त्री० स्वर्गवेश्या ।
 सं० तिलोदक (पु० तिल + उदक)
 तिल और जल, तर्पण, पितरों
 का पानी ।
 सं० तिलौदन (तिल + ओदन)
 कृसरान्न अर्थात् खिचड़ी ।
 प्रा० तिष (सं० तृप्) स्त्री० प्यास,
 पियास ।
 प्रा० निसरायत (तीसरा) पु०
 तीसरा मनुष्य, बिचवैया, मध्यस्थ,
 पञ्च, तिहायत ।
 प्रा० तिहत्तर (सं० त्रिसप्तति, त्रि=
 तीन, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर
 और तीन, ७३ ।
 प्रा० तिहरा (त्रीणि=तीन) पु०
 तिलड़ा, गु० तिगुना ।
 प्रा० तिहाई (सं० तृतीय) स्त्री०
 तीसरा भाग ।
 प्रा० तिहायत (तीसरा) पु० तीसरा
 मनुष्य, तिसरायत, बिचवैया, म-
 ध्यस्थ, पञ्च ।
 प्रा० तिहारा (सं० तव) सर्वना०
 तेरा, तुम्हारा ।
 प्रा० तिहिं सर्वना० उन्हीं को ।
 प्रा० तिहुँ } (सं० त्रि) गु० तीन ।
 तिहूँ }
 सं० तीक्ष्ण (तिज्=तीखा होना)
 गु० तीखा, चोखा, पैना, तेज,
 तीव्र, २ तीता, कडुवा, ३ उत्सा-
 ही, फुर्तीला, चालाक, तेज, ४ च-

तुर, प्रवीण, ५ क्रोधी ।
 प्रा० तीखा (सं० तीक्ष्ण) गु०
 चोखा, पैना, तेज, तीक्ष्ण, तीव्र,
 २ तीता, कडुवा, ३ क्रोधी ।
 प्रा० तीज (सं० तृतीया) स्त्री०
 तीसरी तिथि ।
 प्रा० तीत } (सं० तिक्र) गु० चर-
 तीता } परा, कडुवा, कडु,
 २ तीखा, तीक्ष्ण, तीव्र ।
 प्रा० तीतर (सं० तित्तिरि, तित्ति
 ऐसा शब्द, रा=लेना) पु० एक
 पखेरू का नाम ।
 प्रा० तीतरके मुँह लछमी } जब कि
 तीतरके मुँह कुशल } कोई
 कमसमझ मनुष्य किसी बात को
 निर्णय करने के लिये नियत किया
 जाय जिसके निर्णय करने में वह
 योग्य नहीं है तब उस मनुष्य के
 लिये यह कहावत बोली जाती है ।
 प्रा० तीतरी स्त्री० तितली, पांखों
 वाला कीड़ा ।
 प्रा० तीन (सं० त्रि) गु० दो और
 एक, तीन, ३ ।
 प्रा० तीनतेरह तितर-वितर, डाँवा-
 डोल, झिन्न-भिन्न, खराब, सत्या-
 नास, चौपट, तहस-नहस ।
 प्रा० तीय (सं० स्त्री) स्त्री० लुगई,
 नारी, स्त्री, भार्या ।
 प्रा० तीयल (तीय) स्त्री० स्त्रियोंके
 कपड़ों का जोड़ा ।

सं० तीर (तीर=पार हो जाना, वा पूरा करना) पु० किनारा, तट, कूल, २ बाण, क्रि० वि० पास, ढिग ।

सं० तीर्थ (तृ=पारहोना) पु० पवित्र जगह, पुण्यस्थान, यात्रा की जगह, जैसे प्रयाग, काशी, गया, जगन्नाथ-पुरी आदि विशेष कर ये जगह जिनके पास पवित्र नदियां (जैसे गङ्गा यमुना आदि) बहती हों और उनके आस पास की जगह ।

सं० तीर्थराज (तीर्थ + राजा) पु० तीर्थों का राजा, प्रयाग, इलाहाबाद ।

प्रा० तीली (सं० तूली) स्त्री० सींक, सलाई ।

सं० तीव्र) तीव्=मोटा होना, वा तिज्-तीखा होना) गु० तीखा, तीक्ष्ण, २ तीता, चरपरा, बहुत कड़वा, ३ अत्यन्त, अपार ।

प्रा० तीस (सं० त्रिंशत्) गु० बीस और दश, ३० ।

प्रा० तीसरा (सं० तृतीय) गु० तीजा, तिहायत ।

प्रा० तीसी (सं० अतसी) स्त्री० अलसी, अत्सी ।

प्रा० तुक स्त्री० दोहे-चौपाई आदि छन्द में पद के अन्त के अक्षरों का मिलान, यमक, जमक, काफिया, सम्बन्ध, २ छन्द का एकपद ।

प्रा० तुकली { स्त्री० छोटी गुड्डी, तुक्कल } छोटी पतङ्ग ।

सं० तुङ्ग (तुञ्च्=बचाना, वा दृढ़ होना) गु० ऊँचा, लम्बा, पु० एक पेड़ का नाम, २ पहाड़ ।

सं० तुङ्गभद्रा स्त्री० एक नदी का नाम जो मैसूर में है ।

सं० तुच्छ (तुद्=दुःखसे, द्यो=काटना) पु० पुवाल, तुस, गु० नीचा, नीच, शून्य, छूँछा, निष्फल, अवज्ञा करने योग्य, घृणा के योग्य, अधम, हलका, निकम्मा, ओछा ।

सं० तुट पु० संग्राम, टूटफूट ।

सं० तुण्ड (तुद्=तोड़ना) पु० मुख, टोंट, बोटरी, नोक, चोंच ।

प्रा० तुतराना { क्रि० अ० हिचक तुतलाना } हिचकके बोलना, हकलाना, अटक अटकके बोलना, अधूरा बोलना, साफ नहीं बोलना, जैसे छोटे बालक बोलते हैं ।

प्रा० तुपक स्त्री० बन्दूक, पिस्तोल ।

प्रा० तुम (सं० त्वम्) सर्वना० मध्यमपुरुष का बहुवचन ।

प्रा० तुमाना क्रि० स० धुनवाना, पिजाना ।

सं० तुमुल पु० अत्यन्त रोमहर्षण युद्ध, घोरयुद्ध ।

सं० तुम्बुर पु० तम्बूरा, नाम गन्धर्व ।

सं० तुम्बरी स्त्री० बीन, बीणा ।

प्रा० तुरई स्त्री० एकतरकारी का नाम ।

प्रा० तुरग } (तुर=वेग से, गम्=
 तुरी } जाना) पु० घोड़ा ।

सं० तुरङ्ग } (तुर=वेग से, गम्=
 तुरङ्गम } जाना) पु० घोड़ा, तुरग,
 अश्व, वाजी ।

प्रा० तुरन्त } (सं० त्वरित, त्वर्=
 तुरन्त } जल्दी करना) क्रि०
 वि० झटपट, तुरत फुरत, शीघ्र,
 जल्दी, अभी ।

प्रा० तुरपन (तुरपना) स्त्री० एक
 तरह का टांका ।

प्रा० तुरपना क्रि० सं० सीना, टांकना ।

प्रा० तुरही } (सं० तूर्ध्व) स्त्री०
 तुरी } रणसिंगा, नफ़ीरी,
 सहनाई, करनाई, नरसिंहा ।

प्रा० तुराई स्त्री० सेज, शय्या, तो-
 शक, बिछौना, २ (त्वरा) गु०
 वेग से ।

सं० तुरीय (चतुर्=चार) गु० चौथा,
 पु० निर्गुण ब्रह्म, स्त्री० एक अवस्था ।

प्रा० तुरुक मुसलमान, तुर्किस्तान
 का रहनेवाला ।

प्रा० तुल } (सं० तुल्य) गु० बराबर,
 तूल } समान ।

प्रा० तुलकर खड़े होना बोल० ल-
 डने के लिये आमने सामने खड़े
 होना ।

प्रा० तुलना (सं० तुलन, तुल्=
 तोलना) क्रि० अ० तोला जाना,
 २ उपमा, बराबर होना, लड़ने

को खड़े होना ।

प्रा० तुलसिका } (तुला=बराबरी,
 तुलसी } अस्=फेंकना,
 अर्थात् जिसके बराबर सृष्टि में कोई
 नहीं) एक पौधे का नाम ।

सं० तुलसी } पु० हिन्दी रामायण
 तुलसीदास } कर्ता ।

सं० तुला (तुल्=तोलना) स्त्री०
 बराबरी, २ तराजू, ३ सातवीं
 राशि (ज्योतिष में) ।

सं० तुलाधार (तुला + आधार)
 क० पु० वैश्य, बनिया, बकाल ।

सं० तुलिन र्भ० पु० तौला हुआ ।

सं० तुल्य (तुल्=तोलना, वा तुल-
 ना) गु० बराबर, समान, सदृश,
 सम ।

सं० तुष भूसी, झिलका, चोकर ।

सं० तुषार (तुप्=प्रसन्न करना, वा
 होना) पु० शीत, पाला, हिम,
 बर्फ, ओस, गु० ठण्डा ।

सं० तुष्ट (तुप्=प्रसन्न होना) क०
 पु० तृप्त, सन्तुष्ट, प्रसन्न, आनन्द,
 हर्षित, साबिर ।

सं० तुष्टि (तुप्=प्रसन्न होना) भा०
 स्त्री० तृप्ति, सन्तोष, आनन्द,
 प्रसन्नता ।

सं० तुहिन (तुह्=मारना, वा हानि
 पहुँचाना) पु० पाला, बर्फ, हिम ।

प्रा० तू (सं० त्वम्) सर्वना० मध्यम
 पुरुष, एकवचन ।

प्रा० तृत् कुत्ते को पुकारने का शब्द ।

प्रा० तृबा (सं० तुम्बा, तुबि=मांगना)

पु० तुम्बा, एक तरह का बरतन जिसमें साधुलोग पानी रखते हैं ।

सं० तृण { (तृण=भरना, वा सिकु-
तृणीर { डना) पु० भाथा, तर्कश,
तीर रखने की पेटी, निषङ्ग ।

प्रा० तृतक { (सं० तुत्थ, तुत्थ=
तृतिया { फैलाना, वा ढकना)
पु० नीलाथोथा ।

प्रा० तृन (सं० तुन्न, तुद्=पीड़ा
देना) पु० एक पेड़ का नाम जिस
की लकड़ी की मेज कुरसी आदि
बनती हैं उसके फूल पीले होते हैं
जिससे कपड़े रंगे जाते हैं ।

सं० तृर्ण (तूर् वा त्वर्=जल्दी क-
रना) क्रि० वि० भटपट, तुरन्त,
शीघ्र ।

सं० तूल (तूल=निकालना, वा
भरना) स्त्री० रूई, निर्बीज रूई ।

सं० तूली (तूल=भरना) स्त्री० चि-
तेरे की कूची, तीली, सींक ।

प्रा० तृवर { पु० राजपूतों की एक
तृवर { जाति ।

सं० तूष्णीम् (तृप्=सन्तोष करना,
वा सन्तुष्ट होना) क्रि० वि० चुप-
चाप, मौन, खामोश ।

सं० तृण (तृह=नाश करना) पु०
वास, चारा, घासफूस, तिनका,
खर ।

सं० तृणवत् (तृण=तिनका, वत्=
बराबर) गु० तिनके के बराबर,
तुच्छ, हलका ।

सं० तृतीय (त्रि=तीन) गु० तीसरा ।

सं० तृतीया (तृतीय) स्त्री० ती-
सरी तिथि ।

सं० तृप्त (तृप्=तृप्त होना) क० पु०
सन्तुष्ट, हर्षित, आनन्दित, सुखी ।

सं० तृप्ति (तृप्=तृप्त होना) भा० स्त्री०
सन्तोष, हर्ष, प्रसन्नता, अघाना ।

सं० तृष् { (तृष्=प्यासा होना) भा०
तृषा { स्त्री० पियास, प्यास,
तृष्णा, पिपासा ।

सं० तृषार्त्त (तृषा=पियास, आर्त्त=
घबराया हुआ) गु० पियास से
व्याकुल, बहुत प्यासा ।

सं० तृषावन्त (तृषा=पियास, वन्त=
वाला) क० पु० पियासा, प्यासा ।

सं० तृषित (तृषा) क० पु० पियासा,
प्यासा ।

सं० तृष्णा (तृष्=प्यासा होना, वा
लोभ करना) स्त्री० पियास, प्यास,
२ लोभ, लालच, ३ चाह, इच्छा,
लालसा, जो वस्तु नहीं मिली हो
उसकी चाह ।

सं० ते सर्वना० वे, २ तेरा ।

प्रा० ते { अव्य० से ।
तें }

प्रा० तैन्नालीस (सं० त्रयश्चत्वारिंश-
त्, त्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस)

गु० चालीस और तीन, ४३ ।
 प्रा० तैत्तिरीय (सं० त्रयोविंशत्, त्रि=तीन, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और तीन, ३३ ।
 प्रा० तैदुवा पु० चीता, बाघ ।
 प्रा० तेईस (सं० त्रयोविंशति, त्रि=तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और तीन, २३ ।
 प्रा० तेज (सं० तेजस्, तिज्=तीखा होना) भा० पु० प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४ तीक्ष्णता ।
 सं० तेजिन र्मन् पु० शाणित, पैनाया गया ।
 प्रा० तेजपात (सं० तेजपत्र, तेज=तीखा, पत्र=पत्ता) पु० तेज की पत्ती, एक तरह का गरम मसाला ।
 प्रा० तेजमान (सं० तेजस्विन्) तेजवन्त (गु० प्रतापी, ऐश्वर्यवान् ।
 प्रा० तेता (सं० तावत्) क्रि० वि० तितना ।
 प्रा० तेतो क्रि० वि० तितना ।
 प्रा० तेरस (सं० त्रयोदशी) स्त्री० तेरहवीं तिथि ।
 प्रा० तेरह (सं० त्रयोदश) गु० तीन और दश, १३ ।
 प्रा० तेरुस (सं० तृतीय) पु० तीसरा बरस ।
 प्रा० तेल (सं० तैल) पु० तिलों

से निकला हुआ चिकना पदार्थ ।
 प्रा० तेलचढ़ाना बोल० ब्याह में दुलहा और दुलहिन के शिर व कन्धे और हाथ पैरों में तेल और हल्दी मलना (यह ब्याहकी एक रीति है) ।
 प्रा० तेलिया (सं० तैल) गु० एक प्रकार का रङ्ग ।
 प्रा० तेली (सं० तैली) पु० तेल बेचनेवाला ।
 प्रा० तेलिन स्त्री० तेली की लुगाई ।
 प्रा० तेवरी स्त्री० गुड़की, धमकी, भिड़की ।
 प्रा० तेवरीचढ़ाना बोल० गुड़कना, आँख दिखलाना, भौं चढ़ाना ।
 प्रा० तेवहार पु० पर्व, उत्सव, मेला ।
 प्रा० तेह (पु० क्रोध, कोप, गुस्सा, तेहा) रिस, भाँझ ।
 प्रा० तेहर पु० स्त्रियों के पाँव का गहना ।
 प्रा० तेहि सर्वना० उसने, उसको, उनको, तिससे, उससे ।
 अ० तैयार व्यवस्थित, उद्यत, मौजूद ।
 प्रा० तैरना (सं० तरण) क्रि० अ० हेलना, पैरना, तिरना, पार होना ।
 सं० तैलङ्ग पु० कर्णाटकदेश ।
 प्रा० तोंद (सं० तुन्द, तुण्=खाना) स्त्री० बड़ा पेट ।
 प्रा० तोंदैल (तोंद) गु० मोटा तोंदैला) पेटवाला ।
 प्रा० तोड़ (तोड़ना) पु० टूट, फूट,

खण्डन, २ नदी का वेग, ३ दूध का पानी ।

प्रा० तोड़जोड़ बोल० काट छँट, काट कूट, बात को ठीक ठाक करके बोलना ।

प्रा० तोड़डालना बोल० तोड़ना, और नाश करना, गिराना, टुकड़े टुकड़े करना ।

प्रा० तोड़देना बोल० तोड़ना, बिगाड़ना ।

प्रा० तोड़लेना बोल० खींचना, नोचना, खींचलेना (जैसे पेड़से फल फूल आदि) ।

प्रा० तोड़ना (सं० तोटन, तुम्= तोड़ना) क्रि० स० फोड़ना, फाड़ना, टुकड़े करना, २ रुपया भुनाना, ३ खींच लेना (पेड़से फल फूल आदि) ।

प्रा० तोड़ा पु० कमी, घटी, २ हजार रुपयों की थैली, ३ पलीता, ४ रस्सीका टुकड़ा, ५ सिकली, ६ पाँवमें पहनने का गहना ।

प्रा० तोतला गु० हकला, लड़वड़ा ।

प्रा० तोता पु० सुगा, मुआ, सूगा ।

प्रा० तोपना क्रि० स० ढाँकना, छिपाना, गाड़ना ।

प्रा० तोबड़ा पु० एक प्रकार की थैली जिसमें घोड़ा दाना खाता है ।

सं० तोमर (तु=नाश करना, और मृ=मारा जाना, वा तो=गये हुये,

तु=जाना और मृ=मारा जाना अर्थात् जो उसके सामने जाते हैं वे मारेजाते हैं) पु० बरखी, साँगी, एक शस्त्रका नाम, २ एक छन्दका नाम ।

सं० तोय (तु=जाना, वा बढ़ना वा तु=पूर्णता, तु=भरना और या=जाना अर्थात् जो हरएक चीज को भरदेता है) पु० पानी, जल, नीर, वारि ।

सं० तोयद् (तोय=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घटा ।

प्रा० तोयधर (तोय=पानी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल, मेघ, घन ।

सं० तोयनिधि (तोय=पानी, निधि=खजाना) पु० समुद्र, सागर, समन्दर ।

सं० तोयाशय धि० पु० जलस्थान, तड़ागादि ।

प्रा० तोर सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

सं० तोरण (तुर्=जल्दी करना) पु० घर के द्वार के बाहर सिंह के आकार काठ जो व्याह में अथवा और कोई उत्सव में बाँधा जाता है, २ फूलों की माला जो पर्व अथवा किसी उत्सव में फाटक पर बाँधी जाती है ।

सं० तोलक क० पु० तौला, तौल-वैया ।

प्रा० तोल (सं० तुल्=तौलना)
तौल (पु० माप, जोख, नाप ।

प्रा० तोला (सं० तुल्=तौलना)
पु० बारह माशे की तौल ।

सं० तोषक (तुष् + अक) क० पु० तृप्ति-
कारक, संतोषी, प्रसन्न करनेवाला ।

सं० तोष (तुष् = प्रसन्न होना) भा०
पु० सन्तोष, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता ।

प्रा० तोहि सर्वना० तुझको, तुझे ।

प्रा० तौलना (सं० तुल्=तौलना)
क्रि० सं० जोखना, तौल करना,
वजन करना ।

सं० त्यक्त (त्यज्=छोड़ना) र्म०
पु० छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।

सं० त्याग (त्यज्=छोड़ना) भा०
पु० छोड़ा, तजना, २ दान, ३
विरक्ति, वैराग्य ।

प्रा० त्यागना (सं० त्याग) क्रि०
सं० छोड़ना, तजना, त्याग करना ।

सं० त्यागशील क० पु० दाता,
दानी, फर्याज ।

सं० त्याजित र्म० पु० छोड़ा हुआ,
विसर्जित ।

सं० त्यागी (त्यागिन्, त्याग) क०
पु० छोड़नेवाला, २ वैरागी, ३
उदार, दाता ।

सं० त्याज्य र्म० पु० त्यागने योग्य,
छोड़ने लायक ।

सं० त्रपा स्त्री० लज्जा, कीर्ति, यश,
ख्याति ।

सं० त्रपाक क० पु० लज्जालु, ल-
ज्जाशील ।

सं० त्रपित (त्रप् + इत, त्रप्=ल-
जाना) र्म० पु० लज्जित, शर्माया
हुआ ।

सं० त्रयोदशी (त्रय=तीन, दश=
दश) स्त्री० तेरस, तेरहवीं तिथि ।

सं० त्रस्त (त्रस्=डरना, या ऊबना)
क० पु० डरा हुआ, डरपोका, भीत,
डरौवा ।

सं० त्राण (त्रै=वचाना) भा० पु०
बचाव, रक्षा, पालन, २ मुक्ति,
मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, उद्धार,
३ कवच, लोहेकी कुरती ।

सं० त्राणकर्त्ता (त्राण + कर्त्ता)
क० पु० बचानेवाला, मुक्तिदाता,
उद्धार करनेवाला, मोक्ष देनेवाला ।

सं० त्राणा (त्रै=वचाना) क० पु०
बचानेवाला, रक्षक, त्राणकर्त्ता,
मुक्तिदाता ।

सं० त्राम (त्रम्=डरना) भा० पु०
डर, भय, शङ्का, धाक ।

सं० त्रामक (त्राम् + अक) क०
पु० डरानेवाला ।

सं० त्रासित (त्रम्=डरना) र्म०
डरा हुआ, भयान्वित, भयभीत ।

प्रा० त्राह (सं० त्राहि, त्रै=वचाना)
वि० बोल० बचाओ, दयाकरो ।

प्रा० त्राहत्राहकरना बोल० वि-
लाप करना, हाय हाय करना, दया

के लिये पुकारना, २ दोष लगाना,
बुरा कहना ।

सं० त्रि (तृ=पार होना) गु० तीन, ३ ।

सं० त्रिकटु (त्रि=तीन, कटु=कड़ई
वस्तु) पु० सोंठ मिर्च पीपर ।

सं० त्रिकालदर्शी (त्रि=तीन, काल
=समय, दर्शी=देखनेवाला, दृश्
=देखना) पु० भूत, वर्तमान और
भविष्यत् इन तीनों समय की बात
जाननेवाला, त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ, २
ऋषि, मुनि ।

सं० त्रिकूट (त्रि=तीन, कूट=चोटी)
पु० एक पहाड़ का नाम जिस पर
लङ्कापुरी बसती है, जैसे “ गिरि
त्रिकूट ऊपर बस लङ्का । तहँ
रह रावण सहज अशङ्का ”
(तुलसीकृत रामायण) ।

सं० त्रिकोण (त्रि=तीन, कोण=
कोना) पु० त्रिकोन, त्रिखूंट, त्रिभुज ।

सं० त्रिगुण र्म० पु० तीन से गुणा
हुआ पु० तीन गुण, सतोगुण,
रजोगुण, तमोगुण ।

सं० त्रिजटा स्त्री० एक राक्षसी का
नाम जिसका वर्णन रामायण में है ।

सं० त्रिदश (त्रि=तीन, दश=अवस्था
अर्थात् १ जन्मना, २ विद्यमान रहना,
३ नाश होना ये तीन दश जिनकी
हों, अथवा त्रि=तीन, त्रिदश=तीस
अर्थात् तैंतीस, यहाँ इस एकही त्रि
शब्द का अर्थ दो बार लिया जाता

है मुख्य देवता ३३ हैं, जैसे १२
सूर्य, ११ रुद्र, ८ वसु और २

विश्वेदेव) पु० देवता, देव, सुर ।

सं० त्रिदोष (त्रि=तीन, दोष=बिगाड़)
पु० वात पित्त कफ का रोग ।

सं० त्रिधा (त्रि=तीन, धा=प्रकार
अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० तीन
प्रकार से, त्रिविध ।

सं० त्रिनयन { (त्रि=तीन नयन
त्रिनेत्र) वा नेत्र=आँख,
अर्थात् तीन आँखवाला) पु०
शिव, महादेव ।

प्रा० त्रिपुण्ड्र (सं० त्रिपुण्ड्र, त्रि=
तीन, पुण्ड्र=लकीर, पुण्ड्रि=मलना)
पु० तीन रेखा का तिलक, शिव और
शक्ति मतवालों का तिलक ।

सं० त्रिपुर (त्रि=तीन, पुर=नगर)
पु० एक दैत्य का नाम जिसने
तीन पुर बनाये थे ।

सं० त्रिपुरदहन (त्रिपुर=एक राक्षस
का नाम, दहन=जलानेवाला, दह
=जलाना) पु० शिव, महादेव ।

सं० त्रिपुरान्तक (त्रिपुर + अन्तक,
नाश करनेवाला) पु० शिव, महादेव ।

सं० त्रिपुरारि (त्रिपुर, अरि=
वैरी) पु० शिव, महादेव ।

प्रा० त्रिफला (त्रि=तीन, फल)
पु० हड़ बहेड़ा आँवला ।

१ “ त्रिपुण्ड्रं शिवरूपेण सतीरूपेण
विन्दुकी ” (इति तन्त्रशास्त्रम्) ॥

सं० त्रिभङ्गी (त्रि=तीन, भङ्ग=टूटा हुआ) गु० टँगड़ी कमर और गरदन को झुका कर खड़े होने की दशा जैसे “ त्रिभङ्गीछवि ” स्त्री० एक छन्द का नाम ।

सं० त्रिभुज (त्रि=तीन, भुजा=बाहु) पु० त्रिकोण, तिरछूट, तिकोन ।

सं० त्रिभुवन (त्रि=तीन, भुवन=लोक) पु० तीन लोक (स्वर्ग व मर्त्य और पाताल) ।

प्रा० त्रिया (सं० स्त्री) स्त्री० स्त्री, नारी, लुगाई, तिरिया, तिय, तीय ।

सं० त्रियामा (त्रि=तीन, याम=पहर) स्त्री० रात, रजनी, रात्रि ।

सं० त्रिलोक (त्रि+लोक) पु० तीन भुवन, (स्वर्ग मर्त्य पाताल) ।

सं० त्रिलोकी (त्रिलोक) स्त्री० तीन लोकों का समूह, स्वर्ग व मर्त्य और पाताल ।

सं० त्रिलोकीनाथ (त्रिलोकी + नाथ) पु० तीन लोक के नाथ, विष्णु, ईश्वर ।

सं० त्रिलोचन (त्रि=तीन, लोचन=आँख) पु० महादेव, शिव, २ तीन आँखवाला ।

सं० त्रिविक्रम (त्रि=तीनों लोक में वि=सब तरफ से, क्रम्=पाँव रखना) अर्थात् जिन्होंने अपने पैर से तीनों लोक को नापा, जैसे हरिवंश में लिखा है कि (त्रिरित्येव त्रयो

लोकाः कीर्त्तिता मुनिसत्तमैः । क्रमते तान्विशेषेण त्रिविक्रम उदाहृतः) पु० विष्णु, वामनावतार में राजा बलि को बाँधने के समय विष्णु का विराट् रूप ।

सं० त्रिविध (त्रि=तीन, विध=प्रकार) गु० तीन प्रकार का, तीन तरह का ।

सं० त्रिवेणी (त्रि=तीन, वेणी=धारा) स्त्री० गङ्गा यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में हुआ है, तीन नदियों का संगम ।

सं० त्रिशिर (त्रिशिरस्, त्रि=तीन, शिरस्=सिर, अर्थात् जिसके तीन सिर हों) पु० एक राक्षस का नाम, रावण का बेटा वा भाई ।

सं० त्रिशूल (त्रि=तीन, शूल=लोहे का तीखा काँटा) पु० एक अस्त्र का नाम जिसके लोहेके तीन तीखे काँटे होते हैं, महादेव का अस्त्र ।

सं० त्रिशूलपाणि (त्रिशूल + पाणि=हाथ, अर्थात् जिसके हाथ में त्रिशूल है) पु० महादेव, शिव, २ त्रिशूल रखनेवाला ।

सं० त्रिसन्ध्या (त्रि=तीन, सन्ध्या=समय) स्त्री० प्रभात, दोपहर और साँझ, प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल ।

सं० त्रुटि (त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० टूट, हानि, कमी, न्यूनता, (टूट शब्द को देखो) ।

सं० त्रेता (त्रि=तीन, इता=पाया, वा त्रय=तीन) स्त्री० यज्ञ की तीन पवित्र अग्नि (जैसे १ दक्षिणाग्नि, २ गार्हपत्य, ३ आहवनीय) २ दूसरा युग जो १२६६००० बरस का था ।

सं० त्रैराशिक (त्रि=तीन, राशि=समूह) स्त्री० तीन जानी हुई राशियों का हिसाब ।

सं० त्रैलोक्य (त्रिलोक) भा० पु० त्रिलोकी, आकाश पाताल पृथ्वी ।

सं० त्रोटक (त्रुट्=तोड़ना) पु० एक छन्द का नाम ।

सं० त्रोटि (त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० चञ्चु, चोंच, टोंट, २ पखेरू ।

सं० त्र्यम्बक (त्रि=तीन, अम्बक=आँख) पु० महादेव, शिव, त्रिनयन, त्रिलोचन ।

सं० त्वक् (त्वच्=ढकना) स्त्री० त्वचा (चमड़ा) छूनेकी इन्द्रिय, स्पर्शइन्द्रिय, छाल, छिकला, बकला, शरीर पर का चाम ।

सं० त्वरा (त्वर्=जल्दी करना) स्त्री० शीघ्रता, जल्दी, उतावली, तेजी ।

सं० त्वरित (त्वर्=जल्दी करना) क० पु० तुरन्त, झटपट, जल्दी, क्रि० वि० जल्दी से, वेग से ।

सं० त्वष्टा (त्वष्ट्=दुर्बल होना) क० पु० ब्रह्मा, विश्वकर्मा, नञ्जार, बदर्ई ।

सं० त्विषा भा० स्त्री० रश्मि, किरण, ज्योति ।

सं० त्विषि (त्विप्=दीप्ति, उजाला) भा० स्त्री० किरण ।

थ

सं० थ (थुड्=ढकना) पु० पहाड़, २ खाना, ३ रोग, ४ डर, ५ बचाव, ६ मज्जल ।

प्रा० थई स्त्री० कपड़ोंका ढेर, घड़, घड़ी ।

प्रा० थम्ब (सं० स्तम्भ) पु० थम्भ (स्वम्भा, स्वम्भ, थाँभ, थूनी, सितून, पाया ।

प्रा० थँभना (सं० स्तम्भन, छम्भ वा स्तम्भ=रोकना वा ठहरना) क्रि० अ० ठहरना, स्थिर होना, रुकना, २ संभलना ।

प्रा० थकना (सं० स्थगन, स्थग थाकना) =ढकना) क्रि० अ० माँदा होना, खेदित होना, अकुलाना, हारना ।

प्रा० थकित (सं० स्थगित, स्थग=ढकना) क० पु० थकाहुआ, २ अचम्भित, विस्मित, अचम्भे में, तन्मज्जुष में ।

प्रा० थन (सं० स्तन) पु० गाथ भैंस आदिकी चूँची, लेवा ।

प्रा० थपक पु० थपथपाने का शब्द, थोप, थपड़, चपेटा ।

प्रा० थपड़ा पु० थाप, थपेड़ा, चपेटा, तमाचा ।

प्रा० थपड़ी स्त्री० ताली, हाथताली,
करताली, थपेड़ ।

प्रा० थपेड़ा पु० चपेटा, धौल, थाप,
थपेड़ा, तमाचा ।

प्रा० थप्पड़ पु० स्त्री० थपड़ा, थपेड़ा,
धौल, चपेटा ।

प्रा० थम (सं० स्तम्भ) पु० खम्भा,
खम्भ, थाँभ, थूनी ।

प्रा० थमना (सं० स्तम्भ) क्रि०
अ० ठहरना, स्थिर होना, रुकना,
२ सँभलना ।

प्रा० थरथर गु० डगमग, काँपता
हुआ ।

प्रा० थरथराना } क्रि० अ० काँपना,
थरहराना } हिलना, डगम-
थराना } गाना ।

प्रा० थरथराहट { स्त्री० कँपाहट,
थरथरी } कँपकँपी, डोल,
हिलाव, कंपन ।

प्रा० थल (सं० स्थल) धि० पु०
जगह, सूखी जगह, ठाँव, धरती,
स्थान ।

प्रा० थलकना क्रि० अ० धड़कना,
फड़कना, तड़पना ।

प्रा० थलचर (सं० स्थलचर) क०
पु० धरती पर चलनेवाला पशु
आदि, भूचर, भूमिचर ।

प्रा० थलथलकरना { क्रि० अ०
थलथलाना } डगमगाना,
लहराना, हिलोरना, हिलना (जैसे

मोटे आदमी का ढीला मांस) ।

प्रा० थलिया (सं० स्थाली, स्था
वा स्थल्=ठहराना) स्त्री० थाली,
थाल, छोटा थार ।

प्रा० थाँग स्त्री० चोरों की माँद
अथवा घात की जगह ।

प्रा० थाँभ (सं० स्तम्भ) पु० खम्भ,
खम्भा, थम्ब, थम्भ, थम, थूनी ।

प्रा० थाँभना (सं० स्तम्भ, ठम्भ वा
स्तम्भ=रोकना वा ठहरना) क्रि०
स० सहारना, ठहराना, सँभा-
लना, सहारा देना, टेक देना,
आड़ देना, २ हाथ पकड़ना,
बचाना, पालन करना, रक्षाकरना,
३ रोकना, अटकाना, बँकना,
४ ठहरा देना, खड़ा करना (जैसे
घोड़े को) ।

प्रा० थाँवला (सं० स्थल, स्थल्=
ठहराना) पु० पेड़की जड़ के आस
पास मिट्टी की मेंड़ अथवा घेरा,
क्यारी, आलवाल, थाला ।

प्रा० थिनि (सं० स्थिति, स्था=ठह-
रना) भा० स्त्री० ठहराव, रुकाव,
रोंक, कयाम ।

प्रा० थाती { (सं० स्थापित, स्था=
थाथी } ठहरना) स्त्री० धरोहर,
गिरों, जाकड़, बन्धक, अमानत ।

प्रा० थान (सं० स्थान) पु० जगह,
२ सारा कपड़ा, ३ घोड़े अथवा
गाय बैल के रहने की जगह, चरनी,

४ सिक्का (जैसे एक थान अश-
रफी अथवा मोहर) ।

प्रा० थामा (सं० स्थान) पु० चौकी,
कोतवाली, २ बाँस का टाल ।

प्रा० थाप स्त्री० धौल, थप्पड़, थपक,
२ छोटे ढोल के बजाने का शब्द,
३ मर्याद, नामवरी ।

प्रा० थापना (सं० स्थापन) क्रि०
स० थोपना (जैसे गोबर), २ थप-
थपाना, ठोंकना, ३ रखना, स्थापन
करना, ठहरा देना, धरना ।

प्रा० थापना (सं० स्थापना) स्त्री०
नवरात्र में एक कोरे घड़े में पानी
भर करके दुर्गादेवी के सामने रख
के दुर्गादेवी की पूजा करना,
आश्विन सुदी अथवा चैत सुदी
परिवा को जो देवी की पूजा होती
है उसे थापना की पूजा कहते हैं ।

प्रा० थापा पु० चौपाये के पाँव का
चिह्न ।

प्रा० थापी स्त्री० थपथपाने का शब्द,
२ मोंगरी जिससे कुम्हार मिट्टी
कूटते हैं वा छत पीटी जाती है ।

प्रा० थाम (सं० स्तम्भ) पु० खम्भा,
सितून, थाँभ, थूनी, टेक ।

प्रा० थार } (सं० स्थाल, स्था वा
थाल } स्थल्=ठहरना) पु०
बड़ी थाली ।

प्रा० थाला (सं० स्थल, स्थल्=
ठहरना) पु० थाँवला, पेड़ के

आस पास का घेरा जिसमें पानी
सींचते हैं, एक गड़हा अथवा खो-
खली जगह जिसमें पेड़ उगाया
जाता है, २ (सं० स्थाल) बड़ी
थाली ।

प्रा० थाली (सं० स्थाली, स्था वा
स्थल्=ठहरना) स्त्री० थलिया,
टठिया ।

प्रा० थाह (सं० स्था=ठहरना) पु०
तला, पेंदा, पानी के नीचे की
धरती ।

प्रा० थिर } (सं० स्थिर, स्था=ठह-
थीर } रना) गु० ठहरा हुआ,
अटल, अचल, २ शान्त, सुस्थिर ।

प्रा० थिरना (सं० स्थिरता) स्त्री०
ठहराव, २ शान्ति, चैन, आराम ।

प्रा० थुनकारना } क्रि० स० दुर-
थुथकारना } दुराना, अनादर
के साथ निकाल देना, अपमान
के साथ हटाना ।

प्रा० थुथनी स्त्री० ऊँट घोड़े आदि
का मुँह ।

प्रा० थुथाना क्रि० अ० भौं चढ़ाना,
तेवरी चढ़ाना ।

प्रा० थूक पु० खखार, कफ, राल, लार ।

प्रा० थूकचाटना बोल० वचन तो-
ड़ना, कही अनकही करना, मुकर
जाना, बात को बदलना ।

प्रा० थूकना क्रि० अ० मुँह में से
खखार फेंकना ।

प्रा० थूणी } (सं० स्थाणु, स्था=
थूनी } ठहरना) स्त्री० थम्भ,
खम्भा, टेक, थाँभ, धरन ।
प्रा० थूथड़ा पु० मुँह, गु० बुरा, खराब ।
प्रा० थूहर } पु० स्त्री० एक काँटेदार
थोहर } पौधे का नाम ।
प्रा० थेई थेई पु० स्त्री० नाचने में
खुशीका शब्द ।
प्रा० थेगली स्त्री० जोड़, चिप्पी,
पैवन्द ।
प्रा० थैला पु० बोरा, गोन ।
प्रा० थैली स्त्री० छोटा थैला, कोथली ।
प्रा० थोक पु० ढेर, राशि, २ रॉक,
रोकड़, ३ हिस्सा, भाग ।
प्रा० थोड़ा पु० कम, तनक, अल्प,
कुछ, किंचित्, जरा ।
प्रा० थोड़ाथोड़ा बोल० कुछ कुछ,
धीरे धीरे, कम कम ।
प्रा० थोड़ाथोड़ाहोना बोल० ल-
ज्जित होना, २ कम कम होना ।
प्रा० थोड़ाबहुत बोल० घाट बाढ़,
कमोवेश, कम व कास्त ।
प्रा० थोड़ेसेथोड़ा बोल० बहुत
थोड़ा, निहायत कम ।
प्रा० थोथा गु० बिन फल, फल-
हीन, खाली, छूड़ा, पु० बिन फल
अथवा बिन अणी का तीर, २
एक दवा का नाम ।
प्रा० थोथीबात बोल० वृथा बात,
अनर्थक वाक्य, अर्थहीन बात,

सटर पटर, बेमतलब ।
प्रा० थोपना (सं० स्तुप्=ढेरी लगा-
ना, बटोरना) क्रि० सं० सहारना,
थाँभना, २ लेपना, थापना, छोप-
ना, ३ बटोरना, इकट्ठाकरना ।
प्रा० थोपी स्त्री० धक्का, थापी, मुक्की ।
द
सं० द (दा=देना, वा दैप्=शुद्ध
करना, वा दो=काटना) गु० देने
वाला, दाता, पु० दानदेना, २
पर्वत, ३ खण्डन, काटना, स्त्री०
भार्या, पत्नी, ४ शोधन, शुद्ध
करना, ५ रक्षा, ६ कलत्र, ७ मेघ ।
प्रा० दई (सं० दैव) पु० ईश्वर,
२ देवता, ३ भाग्य, किस्मत, स्त्री०
ईश्वरता ।
प्रा० दईमारा बोल० अभागा, दु-
र्भाग्गी, अभाग्यवान्, अभिशापित,
धिकार, शापित ।
सं० दंश (सं० दंश्=काटना, डसना)
पु० डौंस, २ डङ्क, ३ दाँत, ४ दोष,
५ कवच, ६ महिष, भैंसा ।
सं० दंशक } (दंश्=काटना, डसना)
दंशी } क० पु० डङ्क मारने
वाला, पु० डौंस, २ साँप ।
सं० दंशन (दंश्=काटना) भा०
पु० दाँतों से काटना, डङ्क मारना,
२ कवच ।
सं० दंशित (दंश्+इत्) र्म्यं० पु०
काटा हुआ, काटा गया ।

सं० दंष्ट्रा (दंश्=काटना) जिससे काटते हैं ए० स्त्री० दाढ़, बड़े दाँत ।

सं० दक पु० पानी, रस ।

प्रा० दक्खन } (सं० दक्षिण) पु०
दक्खन } दक्षिणदिशा, २
दक्खिन } हिन्दुस्थान का द-
क्षिण भाग ।

सं० दक्ष (दक्ष=बाढ़ना) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति का नाम, कहते हैं कि दक्ष ब्रह्मा के दहने हाथ के अँगूठे से पैदा हुआ था और उसके ६० बेटियाँ थीं जिन में से २७ तो चाँदको व्याहीं (बेही सत्ताईस नक्षत्र कहलाते हैं) और एक उसकी बेटी सती महादेव को व्याही थी और १३ कश्यप मुनिको व्याहीं जो सब सृष्टि की माता थीं और १० धर्मको व्याहीं (एक बार दक्षने यज्ञ किया था उसमें महादेव को नहीं बुलाया और सती का निरादर किया इस लिये सती उस यज्ञ के कुण्ड में जल के मर गई तब महादेव ने दक्ष का शिर तोड़ डाला) २ एक मुनि का नाम, ३ महादेव के बैल का नाम, गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, ४ समर्थ ।

सं० दक्षसावर्णि पु० नववाँ मनु, चौदह मनु में एक मनु ।

सं० दक्षकन्या } (दक्ष + कन्या वा
दक्षसुता } सुता=बेटी) स्त्री०

दक्ष की बेटी, सती, दुर्गा ।

सं० दक्षिण (दक्ष=बाढ़ना) गु० चतुर, प्रवीण, निपुण, २ दहना, ३ दक्षिण दिशा का, ४ खरा, सच्चा, ५ पु० दक्खन, दक्षिणदिशा, ६ दहना भाग, ७ सब नायिकाओं में बराबर सनेह रखनेवाला नायक ।

सं० दक्षिणा (दक्ष=बाढ़ना) स्त्री० दान, ब्राह्मण को खिलाके कुछ देना, गुरु की भेंट, २ दुर्गा की एक मूर्ति ।

सं० दक्षिणायन (दक्षिण=दक्खिन दिशा की ओर, अयन=चाल वा जाना) पु० दक्षिणदिशा की ओर सूर्य के जाने का समय जो सावन से पूस अथवा कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक रहता है ।

प्रा० दक्खनी } (दक्षिण) गु०
दक्खिनी } दक्खिन का, दक्खिन का आदमी वा चीज ।

प्रा० दग्धना (सं० दग्ध) क्रि० स० जलाना, २ सताना, छेड़ना, ३ सजा देना, धमकाना, डाटना, ठुड़कना, ताड़ना करना ।

प्रा० दग्गला पु० रूईदार अंगरखा, रूई भरा अंगरखा ।

सं० दग्ध (दह=जलना) र्म० पु० जलाहुआ, भलसाहुआ, भस्म,

ज्वलित, विमुष्ट, जलाया भया,
भस्मन्त ।

सं० दग्धिक पु० दहीभात ।

प्रा० दङ्गा पु० भगड़ा, रौला, बलवा,
हुल्लड़ ।

प्रा० दङ्गैत (दङ्गा) गु० दङ्गा करने
वाला, भगड़ालू, लड़ाक ।

सं० दघ्र (दह्=जलाना) पु० त्याग,
हिंसा, नाश ।

प्रा० दच्छु { पु० दक्ष शब्द को
दछु } देखो ।

प्रा० दच्छिना { स्त्री० दक्षिणा
दछुना } शब्द को देखो ।

प्रा० दड़कना { क्रि० अ० फटना,
दरकना } चिरना, तड़कना ।

प्रा० दड़ेड़ा (सं० दृढ़) पु० मेहकी
बड़ी भड़ी, भारी वर्षा, प्रचण्ड
झड़, असाढ़ की वर्षा ।

प्रा० दढ़मुण्डा (दाढ़ी + मुण्डा) गु०
दाढ़ी मूँडाहुआ, बिन दाढ़ी का ।

प्रा० दढ़ियल (दाढ़ी) गु० लम्बी
दाढ़ीवाला ।

सं० दण्ड (दण्ड=सजा देना वा
दम्=वश करना वा शान्त करना)

पु० लाठी, सोंटा, २ ताड़ना,
सजा, शासन, जुर्माना, प्रकाण्ड,

राजाओं का चौथा उपाय अर्थात्
वध, दण्ड, फाँसी, ३ एक घड़ी,

साठ पल का समय, ४ यमराज,
५ चकाव्यूह, ६ इक्ष्वाकु राजा का

पुत्र, ७ कतल, ८ दमन ।

सं० दण्डक (दण्ड=सजा देना)

पु० एक राजा का नाम, एक छन्द
का नाम ।

सं० दण्डकारण्य (दण्डक + अ-

रण्य) दण्डक नाम राजा का
देश (शुक्राचार्य अथवा भृगु मुनिके

शाप से नष्ट होकर जंगल हो
गया) पु० हिन्दुस्तान के दक्षिण

में दण्डक नाम वन जहाँ वनवास
के समय श्रीरामचन्द्र कुछ दिन

रहे थे ।

सं० दण्डदाम् पु० शोक, गदा,
आगुध, यम, किङ्कर, सजा देने

वाला ।

सं० दण्डधर (दण्ड + धर, धृ=
धरना) क० पु० यमराज, कुलाल

अर्थात् कुम्हार, लकुटधारी, राजा,
दण्डी, संन्यासी, द्वारपाल,

सिपाही, आसावरदार ।

सं० दण्डनायक पु० यमराज,
मुलाजिम फौजदारी ।

सं० दण्डपांशुल पु० सिपाह,
चौकीदार ।

सं० दण्डपाशिक क० पु० बधिक,
फाँसी देनेवाला, जल्लाद ।

सं० दण्डवत् (दण्ड=लाठी, वत्=
बराबर, अर्थात् लाठी के समान
गिर कर प्रणाम करना) स्त्री०
प्रणाम, नमस्कार ।

सं० दण्डधात्री स्त्री० फौजदारी ।

सं० दण्डादण्डी (दण्ड=लाठी)

स्त्री० लाठा लाठी, लाठी से लड़ना, गदायुद्ध ।

सं० दण्डी (दण्डिन्, दण्ड=लाठी

अर्थात् लाठी रखनेवाला) पु० एक प्रकार के संन्यासी जो हाथ में दण्ड रखते हैं, २ यमराज, ३ राजा, ४ द्वारपाल, ५ काव्यादर्श के बनानेवाले कवि का नाम, गु० लाठी रखनेवाला, लठैल, चौवदार ।

प्रा० दत्तवन (सं० दन्तधावन) पु०

दत्तौन) दतुन, दाँतन, दाँत साफ करने की लकड़ी ।

सं० दत्त (दा=देना) र्म० पु० दिया

हुआ, समर्पित, पु० वैश्यों का उपनाम, उर्फ ।

सं० दत्तक (दा=देना) र्म० पु०

गोद लिया हुआ, लेपालक, दत्तक पुत्र=गोद लिया हुआ लड़का, पोष्य पुत्र, मुतवन्ना ।

सं० दत्तात्रेय पु० अत्रि ऋषि का

पुत्र, विष्णु का अवतार भेद, बड़े ज्ञानी थे २४ गुरु किये ।

सं० ददन पु० दान देना, त्याग ।

सं० दद्रू पु० दाद रोग, फुलाव ।

प्रा० ददोड़ा पु० फोड़ा, गुमड़ा ।

सं० दधि (दध्=रखना) पु० दही

चका ।

प्रा० दधिकाँदौ (सं० दधि + कर्द-

म, दधि=दही, कर्दम=कीच) पु० श्रीकृष्ण के जन्मदिन अर्थात् जन्माष्टमी का उत्सव जिसमें मनुष्य दही और हल्दी मिलाकर आपस में एक दूसरे पर डालते हैं और खेलते हैं जिन्हें कीच मच जाती है ।

सं० दधीचि (दध् वा धा=रखना)

पु० एक ऋषि का नाम जिसने अपने शरीर का हाड़ इन्द्र और सब देवताओं को दिया तब इन्द्र ने उसका वज्र बना के वृत्रासुर को मारा ।

सं० दधिसार पु० मक्खन, नवनीत, नैतू ।

सं० दनुज (दनु=कश्यपमुनि की

स्त्री और दक्षप्रजापति की बेटी, ज=पैदा होना) पु० दनु के बेटे, दानव, दैत्य, असुर, राक्षस ।

सं० दन्न (दम्=तोड़ना, वा वश

करना) पु० दाँत, ३२ की संख्या ।

सं० दन्तच्छद (दन्त=दाँत, छद्=

ढकना) पु० होठ, ओंठ, ओष्ठ ।

सं० दन्तधावन (दन्त=दाँत, धाव्=

धोना) पु० दाँतुन, दँतवन ।

सं० दन्तवेष्टन (दन्त=दाँत, वेष्ट=

लपेटना) पु० मसकुर, मसूहा ।

सं० दन्तशठ पु० कैथा, नींबू,

नारंगी, करौंदा ।

सं० दन्तालिका (दन्त + अलिका

अल=भूषण करना, रोंकना) लगाम ।
 सं० दन्ती (दन्त=दाँत अर्थात्
 जिसके बड़े दाँत होते हैं) पु० हाथी,
 हस्ती, गज, गु० दन्तैल, दन्तीला ।

प्रा० दन्तीला (सं० दन्तुर, दन्त=
 दाँत) गु० दाँतवाला, दन्तैल,
 जिसके बड़े और ऊँचे दाँत हों,
 शूकर, टुक, सुअर, भेड़िया ।

सं० दन्त्य (दन्त) गु० जो दाँतों
 से बोले जायँ “ लृ, लृ, त, थ,
 द, ध, न, ल, स ” ये अक्षर दन्त्य
 कहलाते हैं ।

प्रा० दन्दनाना क्रि० अ० आराम
 से रहना, चैन करना, गाजना,
 विराजना ।

प्रा० दपट (दपटना) स्त्री० दौड़,
 सर्पट, बाग छूट दौड़, घोड़े की
 बड़ी दौड़ ।

प्रा० दपटना क्रि० अ० सर्पटजाना,
 भपटना, दौड़ना, टूट पड़ना, २
 डाटना, धमकाना, फिड़कना,
 गुड़कना ।

प्रा० दबकना क्रि० अ० छिपरहना,
 लुकजाना, घात में बैठना, २ डर
 जाना ।

प्रा० दबकजाना } बोल० छिप
 दबकरहना } रहना, लुक
 रहना, जी छिपाना, जी चुराना ।

प्रा० दबंग गु० कुशील, कुदंग, धृष्ट,
 मूढ़, निदुर, गँवार, जड़, मूर्ख,

गधा, पशु ।

प्रा० दबना क्रि० अ० झुकना,
 नवना, चपना, सिकुड़ना, २ आ-
 धीन होना, डरना, ३ लजाना, ४
 छिपरहना, दबकना ।

प्रा० दबचलना } बोल० वश
 दबनिकलना } होना, आधीन
 होना, डर जाना ।

प्रा० दबजाना बोल० चलाजाना,
 हटजाना, पीछे फिरना, हारजाना ।

प्रा० दबमरना बोल० कुचल जाना,
 चूर चूर होना ।

प्रा० दबेपाँव बोल० धीमें, धीरे,
 हौले ।

प्रा० दाबना (दबना) क्रि० स०
 दाबना, चापना, जीतना, २ तंग
 करना, ३ जबरदस्ती से कराना,
 ४ डाटना, फिड़कना, ५ रोकना,
 धाँपना, ६ नीचा करना, झुकाना,
 नवाना, ७ छिपाना, ८ जीतना,
 हराना, पराजय करना ।

प्रा० दबामरना बोल० कुचल
 डालना, चूर चूर करना, २ हराना,
 जीतना ।

प्रा० दबालेना बोल० चढ़जाना,
 चढ़ाई करना, धावा करना ।

प्रा० दबाव (दबाजा) पु० दाब, चाँप,
 २ जोर, पराक्रम, अधिकार, ३
 आधीनता ।

प्रा० दबावमानना बोल० धाक

मानना, डरना, अदब करना ।
 प्रा० दबेल (दबना) आधीन, वश
 में, पु० मजा, रइयत ।
 प्रा० दबोचना क्रि० स० दबा
 डालना, दाबना ।
 सं० दम् (दम्=वश करना, वा शान्त
 करना) पु० इन्द्रियों को वश में
 करना, इन्द्रियों की इच्छा को
 रोकना, २. ताड़ना, सज़ा, ३. वश
 करना ।
 सं० दमक (दम् + अक) क० पु०
 वश करनेवाला, रोकनेवाला ।
 प्रा० दमक (दमकना) स्त्री० चमक,
 भलक, शोभा, भड़क ।
 सं० दमघोष पु० शिशुपाल का
 पिता, चँदेरी का राजा ।
 प्रा० दमकना क्रि० अ० चमकना,
 भलकना ।
 प्रा० दमकना पु० आग बुझाने
 की कल ।
 प्रा० दमड़ा (सं० द्रम्) पु० धन,
 दौलत, विभव, सम्पत्ति ।
 प्रा० दमड़ी (सं० द्रम्) स्त्री०
 पैसे का आठवाँभाग ।
 प्रा० दमड़ीके तीन तीन होना
 बोल० उजड़ना, नष्ट होना, सत्था-
 नाश होना, बरबाद होना ।
 सं० दमन (दम्=वश करना, वा
 शान्त करना) पु० वश करना,
 नाश करना, २. एक फूल का नाम ।

सं० दमनीय (दम् + अनीय) र्म०
 पु० दाबने के लायक, तोड़ने योग्य ।
 सं० दमयन्ती (दम्=वश करना)
 स्त्री० नल राजा की पत्नी, विदर्भ
 देश के राजा भीमसेन की बेटी ।
 प्रा० दमामा पु० नगरा, धौसा,
 डङ्का ।
 सं० दमी (दम् + ई) क० पु०
 योगी, इन्द्रियजित् ।
 सं० दम्पति (जाया=पत्नी, पति=
 भर्त्तार, यहाँ जाया को दम् आदेश
 होजाता है) पु० स्त्री पुरुष, जोड़ा,
 जायापति ।
 सं० दम्भ (दम्भ=छल करना)
 पु० पाखण्ड, कपट, छल, २. घ-
 मण्ड, दर्प, अहंकार, जवान बैल ।
 सं० दम्भी (दम्भ) गु० पाखण्डी,
 कपटी, छली, २. घमण्डी, अभि-
 मानी ।
 सं० दया (दय्=देना, पालना) स्त्री०
 कृपा, करुणा, किसी के दुःख दूर
 करने की इच्छा, मेहरबानी, रहम ।
 सं० दयायुत (दया=कृपा, युत=
 मिला हुआ) गु० दयालु, कृपालु,
 दया करनेवाला ।
 प्रा० दयाल (सं० दयालु) गु०
 कृपालु ।
 प्रा० दयावन्त } (दया=कृपा, वत्
 सं० दयावान् } =वाला) गु० कृ-
 पालु, दयालु ।

सं० दयित पु० प्रिय, पति, स्वाविंद ।

सं० दयिता (दय्=देना वा पालना)
स्त्री० पत्नी, भार्या, स्त्री, प्रिया,
प्यारी ।

सं० दर (दृ=फाड़ना वा डरना)
पु० छेद, गुफा, खोह, खड्डा, २
डर, ३ शङ्क, गु० थोड़ा ।

प्रा० दर पु० मोल, भाव, दाम ।

सं० दरद पु० म्लेच्छजाति, २
भयानक, भय, ३ हिंगुल, हींग, ४
शिंगरफ, मुर्दाशङ्क, पारा, स्त्री०
पीड़ा, त्रास, भय ।

फ्रा० दरवार पु० कचहरी, सभा ।

प्रा० दरदरा गु० मोटा पीसा हुआ,
दलिया, अधपीसा ।

प्रा० दरस (सं० दर्श) पु० दर्शन,
देखना, दीठ ।

सं० दरा { (दृ=फाड़ना) स्त्री०
दरी { गुफा, खोह, कन्दरा ।

प्रा० दराँती (सं० दात्र, दा=टुकड़े
करना) स्त्री० हँसुवा, हँसिया ।

प्रा० दरार (सं० दृ=फाड़ना) स्त्री०
फटी हुई जगह, दरज, शिगाफ,
चीर, फटा, दरका, फाड़ ।

सं० दरिद्र (दरिद्रा=दुर्दशा होना)
गु० कङ्काल, निर्धन, रङ्क, दीन,
दुःखी, गरीब, मुफलिस ।

सं० दरिद्रता (दरिद्र) भा० स्त्री०
कङ्कालपन, निर्धनता, गरीबी,
दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

प्रा० दरिद्री (सं० दरिद्र) गु०
कङ्काल, निर्धन, दीन, दुःखी,
गरीब, दरिद्र ।

सं० दर्दुर (दु=दुःख देना (कानों
को शब्द करके) वा दृ=फाड़ना)
पु० दादुर, मेंढक, बेंग, भेक, २
मेघ, ३ एक बाजे का नाम, ४ एक
पहाड़ का नाम ।

सं० दर्प (दृप्=घमण्ड करना) पु०
घमण्ड, अभिमान, अहंकार, दाप,
गल्लर ।

सं० दर्पण (दृप्=चमकना) पु०
काच, आईना, आरसी, मुकुर ।

सं० दर्पित क० पु० अहंकारी,
घमण्डी, मगल्लर ।

सं० दर्धी (दृ=फाड़ना) क० स्त्री०
कलछुली, कर्धी, चमची, डोई ।

सं० दर्भ (दृभ्=गाथना, बाँधना)
पु० डाभ, कुशा, एक प्रकार की
घास ।

प्रा० दर्दीना क्रि० अ० निधड़क
और बिनठहरे सीधा चलाजाना ।

सं० दर्श (दृश्=देखना) पु० दर्शन,
देखना, दृष्टि, २ अमावस्या जिस
दिन चाँद और सूर्य एक जगह
देखे जाते हैं ।

सं० दर्शक (दृश्=देखना) क०
पु० दिखानेवाला, पु० द्वारपाल,
पौरिया ।

सं० दर्शन (दृश्=देखना) भा० पु०

देखना, दृष्टि, दीठ, २ भेंट, एक दूसरे को देखना, ३ रूप, आकार, दिखाव, ४ आँख, ५ सपना, ६ दर्पण, ७ न्याय आदि छः शास्त्र, (१ न्याय-इसका आचार्य गौतम-ऋषि, २ वैशेषिक-इसका आचार्य कणाद मुनि, यह बहुत बातों में न्याय से मिलता है और बहुतमें नहीं मिलता, ३ मीमांसा-इसका आचार्य जैमिनिऋषि, इसमें यज्ञ, व्रत, तप, दान, और वेद पढ़ना आदि कर्मों के करने से मुक्ति पाना लिखा है, ४ वेदान्त-इसका आचार्य न्यासदेव, ५ सांख्य-इसका आचार्य कपिलमुनि इस मत के माननेवाले सृष्टि का कोई कर्त्ता नहीं मानते और कहते हैं कि संसार नित्य है और कोई इसका बनानेवाला नहीं है, ६ पातञ्जल-इसका आचार्य पतञ्जलिमुनि, यह और सब बातों से सांख्य से मिलता है पर सांख्यवाले सृष्टिका कोई कर्त्ता नहीं मानते, और इसमें ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता माना है) ।

प्रा० दर्शनी (सं० दर्शनीय=देखने योग्य) स्त्री० वह हुंडी जो देखनेही से पट जाय, २ भेंट, चढ़ावा, गु० सुन्दर, सुडौल, रूपवान्, मनोहर, देखने योग्य ।

सं० दर्शनप्रतिभू पु० हाज़िर जा-मिनी ।

सं० दर्शन्त भा० पु० देखना, देख पड़ना ।

सं० दल (दल्=फाड़ना वा टुकड़े २ करना) पु० वृक्ष का पत्ता, २ बड़ी सेना, ३ ढेर, समूह, ४ खण्ड, टुकड़ा, ५ कीचड़, ६ आधा, दलदार, गु० मोटा, गाढ़ा ।

प्रा० दलक (दलकना) स्त्री० चमक, झलक ।

प्रा० दलकना क्रि० अ० चमकना, झलकना, झझकना, थरथराना ।

प्रा० दलदल (सं० दल=कीचड़) पु० कीचड़, पाँका, काँदौ, धसान, धसाव, पङ्क ।

सं० दलन (दल्=टुकड़े करना) भा० पु० टुकड़े २ करना, मर्दन, नाश, गु० नाश करनेवाला, टुकड़े करने वाला, मर्दन करनेवाला ।

प्रा० दलना (सं० दलन) क्रि० स० मोटा पीसना, भुरभुराना, दो टूक करना (जैसे दाल को) ।

सं० दलनी स्त्री० दुर्मुट, लोह की मुगरी, लोह का मुगदर ।

प्रा० दलबादल (सं० दलवारिद, दल=सेना वा समूह, वारिद=बादल) पु० बादलों की सेना, बादलों का समूह, २ बड़ी सेना, ३ बड़ा ढेरा ।

प्रा० दलमलना (सं० दलन) दलमलकरना क्रि० स० पीस

डालना, मीजना, तोड़ डालना,
मर्दन करना ।
सं० दलित (दल्=इत) र्म० पु०
मर्दित, रौंदा गया, फाड़ागया ।
प्रा० दलिद्र (सं० दारिद्र) भा०
पु० कङ्कालपन, निर्धनता, गरीबी,
दीनता, दुःख, दुर्दशा ।
प्रा० दलिद्री (सं० दारिद्री) गु०
कङ्काल, निर्धन, दीन, दुःखी,
गरीब ।
प्रा० दलिया (सं० द्वि + दल, द्वि=
दो दल=दुकड़ा) पु० दलाहुआ
अनाज ।
प्रा० दलेंती (सं० दलयती) स्त्री०
चक्की, जाँती ।
सं० दव (दु=जलना, वा पीड़ा
होना) पु० वन, जंगल, २ जंगल
की आग, ३ पीड़ा, दुःख ।
सं० दवाग्नि (दव + अग्नि) स्त्री०
वन की आग ।
प्रा० दवारी (सं० दावानल) स्त्री०
वन की आग ।
सं० दविष्ठ पु० बहुत दूर ।
सं० दवीयस पु० दूर ।
सं० दश गु० दश, पाँच के दूने,
काटना, अञ्चल ।
सं० दशकण्ठ (दश + कण्ठ) पु०
रावण, दशकन्धर, दशानन ।
सं० दशकन्धर (दश + कन्धर)
पु० रावण ।

सं० दशग्रीव (दश + ग्रीवा) पु०
रावण ।
सं० दशन (दंश्=काटना) पु० दाँत,
दन्त, २ कवच, ३ शिखर ।
सं० दशम (दश) गु० दशवां ।
सं० दशमहाविद्या (दश, दस
महाविद्या=महामाया) स्त्री० दस
प्रकार की दुर्गा, जैसे ? काली, २
तारा, ३ षोडशी, ४ भुवनेश्वरी,
५ भैरवी, ६ द्विन्नमस्ता, ७ धूमा-
वती, ८ बगला, ९ मातङ्गी, १०
कमला ।
सं० दशमलव (दशम + लव) पु०
दशमांश, दशवां हिस्सा, कसूर
अशारिया ।
सं० दशमी (दशम) स्त्री० दशवीं
तिथि ।
सं० दशमुख (दश + मुख) पु०
रावण ।
सं० दशमुखान्तक (दशमुख=श-
वण, अन्तक=नाश करनेवाला)
पु० श्रीरामचन्द्र ।
सं० दशरथ (दश (दसों दिशा में)
रथ (रथ की गति है जिसकी)
अर्थात् जिसने दसों दिशा को
जीत लिया) पु० अयोध्या का
राजा और श्रीरामचन्द्र का बाप ।
प्रा० दशशीस (सं० दश=दस,
शीर्ष=शिर) पु० रावण, दश-
कन्धर, दशानन ।

सं० दशहरा (दश दशजन्मके पाप, ह=हरना) पु० जेठ सुदी दशमी जो गङ्गा का जन्मदिन है, इस दिन जो कोई गङ्गा में नहाता है उसके दश जन्म के अथवा दश प्रकार के पाप दूर होजाते हैं, २ (दश(दशमुख) रावण, ह=नाश करना) कुंवार सुदी दशमी जिस दिन रामचन्द्र रावण को मारने के लिये चढ़े थे इस लिये इस को विजयदशमी भी कहते हैं ।

सं० दशा (दंश=काटना, विभाग करना) स्त्री० अवस्था, हालत, गति, दशा दशप्रकार की हैं ? गर्भवास, २ जन्म, ३ बालकपन, ४ लड़कपन, ५ किशोर, ६ जवानी, ७ अधबुढ़ापा, ८ बुढ़ापा, ९ प्राण-रोध अर्थात् मरने के समय की अवस्था, १० नाश वा मरना ।

सं० दशांश (दश+अंश) पु० दशवां भाग, दशवां हिस्सा ।

सं० दशानन (दश+आनन) पु० रावण, दशमुख, दशकण्ठ, दश-कन्धर, दशग्रीव, दशशीस ।

प्रा० दस (सं० दश) गु० पाँच का दूना ।

प्रा० दशहरा पु० दशहरा शब्द को देखो ।

प्रा० दसोंद्वार (सं० दशद्वार) पु० व० व० शरीर के दश रस्ते, २ आँखें,

२ कान, २ नाकके नथुना, सातवां मुँह, आठवां लिङ्ग इन्द्रिय, नववां गुदा, दशवां ब्रह्माण्ड अर्थात् शिर का बिचला भाग, संस्कृत और हिन्दी के बहुत से ग्रन्थों में नौ द्वारही लिखे हैं वहाँ दशवां द्वार ब्रह्माण्ड नहीं माना है, नवद्वार शब्दको देखो ।

प्रा० दशोंधी पु० भाट, राय, स्ता-वक, प्रशंसक ।

सं० दस्यु (दस=देखना, चुराना) पु० शत्रु, चोर, तस्कर, ३ अग्नि, ४ खल, ५ बड़ा साहसी, ६ लुटेरा ।

सं० दस्य पु० अश्विनीकुमार, गथा-पशु स्त्री० अश्विनीनक्षत्र ।

प्रा० दह (सं० हृद) पु० बहुत गहरा पानी, गहराव, भँवर, (जैसे कालीदह) ।

प्रा० दहकना (सं० दहन) क्रि० अ० जलना, २ खेद करना ।

प्रा० दहड़दहड़ (सं० दहन) क्रि० वि० बल से, जोर से, वेग से, प्रचण्डता से ।

प्रा० दहड़दहड़जलना बोल० ब-हुत वेग से जलना, बहुत जोर से आग का लहकना ।

सं० दहन (दह=जलाना) भा० पु० आग, अग्नि, आगी, २ जलाना, जलन, दाह, ३ चित्रक वृक्ष, गु० जलानेवाला ।

प्रा० दहना (सं० दहन) क्रि० अ०
जलना ।

प्रा० दहना (सं० दक्षिण) गु०
दहिना) दाहिना, दक्षिण ।

सं० दहर (दह=जलाना) पु०
सूक्ष्म, ह्रस्व, २ बालक, ३ मूषक,
चूहा, ४ छोटा भाई, ५ बहन, ६
हृदय, आकाश ।

प्रा० दहलना क्रि० अ० काँपना,
डरना ।

प्रा० दहाड़ना क्रि० अ० गरजना ।

प्रा० दहाना (सं० दहन) क्रि०
स० जलाना, २ बोराबन्दी ।

प्रा० दही (सं० दधि) पु० जमा
हुआ दूध ।

प्रा० दहेंड़ी (सं० दधि=हण्डी)
स्त्री० दही की हाँडी ।

प्रा० दाई (सं० दायक) क० पु०
देनेवाला, (जैसे सुखदाई) ।

प्रा० दाई (फ्रा० दायह) स्त्री०
धाय, दूध पिलानेवाली, २ दाई,
जनाई, ३ दासी, चकरानी, लौंडी ।

प्रा० दाऊ पु० बड़ा भाई, २ बाप,
३ बलदेवजी का नाम ।

प्रा० दाऊदी (अरबी दावदी) स्त्री०
एक भाड़ का अथवा उसके फूल
का नाम, २ एक तरह की आनश-
बाजी, ३ सफेदी ।

प्रा० दाँड (सं० दण्ड) पु० सजा,
ताड़ना, दण्ड, जुर्माना, २ घटी,

३ डाँड ।

प्रा० दाँत (सं० दन्त) पु० दन्त,
दशन, रदन ।

प्रा० दाँत उँगलीकाटना बोल०
अचम्भे में आकर दाँतों से उँगली
काटना, अचरज करना, विस्मय
करना ।

प्रा० दाँत कचकचाना बोल० खीस
निकालना, खिसियाना, दाँत
पीसना ।

प्रा० दाँत कटकटाना बोल० दाँत
पीसना, किचकिचाना ।

प्रा० दाँत काटीरोटीखाना बोल०
किसीका जीसे मित्र होना, दिली-
दोस्त होना, पकी मिताई होना ।

प्रा० दाँत खट्टे करना बोल० मन
तोड़ना, मन मारना, हरा देना,
वे हिम्मत करना, सताना, क्रोधित
करना ।

प्रा० दाँत तले उँगली दवाना वा
काटना बोल० हका बका रह
जाना, भैचक रहना, अचम्भे में
होना, मुतहैयर होना ।

प्रा० दाँत निकालना बोल० हँसना,
मुसकुराना, २ अपनी अयोग्यता
और बेबशी जतलाना, अथवा
मानना ।

प्रा० दाँत पर चढ़ाना बोल० किसी
की भलाई अथवा नामवरी को
मिटाना, कलङ्क लगाना ।

प्रा० दाँतपीसना बोल० दाँत कड़-
कड़ाना, खिसियाना, दाँत कचक-
चाना, कटकटाना, क्रोध करना,
खीस निकालना ।

प्रा० दाँतबजना या बाजना
बोल० टेंटे करना, चेंचें करना,
बकबक करना, भगड़ना ।

प्रा० दाँतरग्वना, या होना किसी
पर बोल० किसी वस्तु को बहुत
ही बहुत चाहना, २ अवज्ञा करना,
तुच्छ जानना ।

प्रा० दाँतुन (सं० दन्तधावन) पु०
दतवन, दतून ।

प्रा० दाँताकिलकिल (सं० दन्त-
किलकिला) स्त्री० भगड़ा, लड़ाई ।

प्रा० दाँव पु० घात, जाल, पेंच, २
अवसर, मौका, गौं, बारी, समय,
३ कुश्ती में पेंच ।

प्रा० दाँवचलना बोल० वररहना,
जीतना, सरस होना, बढ़ चलना,
दाल गलना ।

प्रा० दाँवचलाना बोल० काबू
चलाना, गौं पाना, चोट करना ।

प्रा० दाँवपकड़ना बोल० कुश्ती
करना, कुश्तीलड़ना, पेंच करना,
दाँव करना ।

प्रा० दाँवबैठना बोल० घात में
बैठना, दबकना ।

सं० दाक्षायणी स्त्री० सती, पार्वती,
अश्विन्वादि नक्षत्र, दन्तीवृक्ष,

जमालगोटा का वृक्ष ।

सं० दाक्षाय्य पु० गृध्रपक्षी ।

सं० दाक्षिण भा० पु० कथन,
उपाय, अधिकार, दक्षिण देशीय ।

सं० दाक्षिणात्य पु० नारियलवृक्ष,
दाक्षिणीय ।

सं० दाक्षिण्य भा० पु० उदारता,
होशियार, मददगार, अनुकूल ।

प्रा० दाग्व (सं० द्राक्षा) स्त्री०
अंगूर, मुनक्का, किशिमिश ।

प्रा० दाग (फा० दाग और सं०
दग्ध) पु० चिह्न, कलङ्क, दोष, गर्म
लोहे से जलने का चिह्न ।

प्रा० दागचढ़ाना, या लगाना
बोल० कलङ्क लगाना, बदनाम
करना ।

प्रा० दागदेना बोल० गर्म लोहे से
चिह्न करना, गुल देना, दागना,
जलाना, २ दोष लगाना, कलङ्क
लगाना ।

प्रा० दागलगना बोल० बदनाम
होना, अपकीर्ति होना ।

प्रा० दागलाना बोल० कलङ्क ल-
गना, तोहमत लगना ।

प्रा० दागना क्रि० दाग देना, गुल
देना, गर्म लोहे से चिह्न करना, २
बन्दूक अथवा तोप छोड़ना ।

सं० दाघ गु० दाह, जलना ।

सं० दाडक पु० दाँत, दाढ़,
दंष्ट्रा ।

सं० दाडिम } (दल्=फटना) स्त्री०
दालिम } अनार ।

प्रा० दाढ़ (सं० दाढ़ा, दा=काटना,
दंष्ट्रा, दंश्=काटना) स्त्री० बड़े
दाँत, पिछलेदाँत, पीसनेके दाँत ।

प्रा० दाढ़ी (सं० दाढ़िका) दाढ़
अर्थात् दाढ़ के पास, स्त्री० ठोड़ी
पर के बाल ।

प्रा० दाढ़ीबनाना या मुड़ाना
बोल० हजामत बनाना, खतब-
नाना, क्षौरकराना ।

सं० दाता (दा=देना) क० पु० देने
वाला, दानी, उदार, दानशील,
दयालु, हितकारी, सखी, फैयाज ।

प्रा० दातार (सं० दातृ, दा=देना)
क० पु० देनेवाला, दाता ।

सं० दात्र (दा=काटना, छेदना)
पु० हँसिया, बमूला ।

प्रा० दाद (सं० ददु, दद्=रखना,
वा द=फाड़ना) पु० दिनाय,
चकवाई ।

सं० दाद पु० दान, देना ।

प्रा० दादा पु० बाप का बाप, पिता-
मह, २ बड़ा भाई ।

प्रा० दादी स्त्री० बाप की मा ।

प्रा० दादुर (सं० ददुर) पु० मेंढक,
भिभ्रकुर, बेंग ।

प्रा० दादू पु० एक बड़ा साधु जिस
ने एक नया मत चलाया जो दादू
पन्थ के नाम से प्रसिद्ध है ।

प्रा० दादूपन्थी पु० दादू के धर्मको
माननेवाला ।

प्रा० दाधना (सं० दग्ध) क्रि०
अ० दग्धना, जलना, दहना ।

सं० दान (दा=देना) पु० देना,
त्याग, पुण्यार्थ वा नामकेलिये देना,
२ पुण्य, खैरात, भीख, दक्षिणा, ३
भेंट, समर्पण, अर्पण, ४ गजमद ।

सं० दानपत्र पु० हिषानामा ।

सं० दानव (दन्) पु० दनुके बेटे
दनुज, असुर, दैत्य, राक्षस ।

सं० दानशील (दान=देना, शील
=स्वभाव) गु० दान करने का
जिसका स्वभाव हो, दानी, दाता,
उदार ।

सं० दानशौण्ड पु० बड़ादानी,
दानशूर, बहुप्रद, बड़ादाता ।

प्रा० दाना (फा० दाना) पु०
अनाज, अन्न, बीज ।

फा० दाना गु० बुद्धिमान्, अक्ल-
मन्द, ज्ञाता ।

प्रा० दानापानी बोल० अन्नजल,
संयोग, पु० खाना पीना ।

सं० दानी (दा=देना) गु० दाता,
देनेवाला, उदार, दानशील, पु-
ण्यात्मा, फैयाज, परोपकारी ।

सं० दान्त (दम्=दबाना) पु०
जितेन्द्रिय, तपी ।

सं० दान्ति (दम्=ति) भा० स्त्री०
इन्द्रियनिग्रह, दमन, इन्द्रियवश

करना, नप्रसकुशी ।
 प्रा० दाबना (दबना) क्रि० सं०
 दवाना, दमन करना, चापना, २
 निचोड़ना ।
 प्रा० दाबरग्वना बोल० छिपालेना,
 चुरालेना, २ एकड़ रखना, दबाउ
 रखना ।
 प्रा० दाप (सं० दर्प) पु० घमण्ड,
 अभिमान, अहंकार, गरूर, शेखी ।
 सं० दाम (दामन्, दो=काटना)
 स्त्री० रस्सी, जेवरी, डोरी, रमाला ।
 प्रा० दाम पु० एक पैसेका पचीसवां
 भाग, २ मोल, भाव, कीमत ।
 सं० दामाञ्चन (दाम + अञ्चन=
 बाँधना) पु० घोड़े की अगाड़ी
 पिछाड़ी की रस्सी ।
 प्रा० दामिनी (सं० सौदामिनी)
 स्त्री० बिजली, तड़ित्, कौंधा, बर्क ।
 सं० दामोदर (दामन्=रस्सी, उदर=
 पेट अर्थात् जिसके पेट पर रस्सी
 बाँधी गई हो, श्रीकृष्ण ने एक बार
 दूध दही के बरतन फोर डाले थे तब
 उनकी माता यशोदा ने उनके पेट
 पर रस्सी बाँधी थी तब दामोदर
 ऐसा नाम हुआ वा दामन्=लोक,
 उदर=पेट, अर्थात् जिस के पेट में
 बहुत से लोक हैं जैसे “ दामानि
 लोकनामानि तानि यस्योदरा-
 न्तरे । तेन दामोदरो देव ”) पु०
 श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु ।

सं० दाम्पत्यमुक्तिपत्र पु० तलाक-
 नामा, स्त्री और पुरुष के छुड़ौती
 बोलने का पत्र ।
 सं० दाय (दा=देना) पु० बाप दादों
 का धन, पैत्रिकधन, वपौती, २
 दान, ३ दायजा, यौतुक ।
 सं० दायक (दा=देना) क० पु०
 देनेवाला, दानी, दाता, उदार,
 दानशील ।
 प्रा० दायजा (सं० दाय) पु० दहेज,
 दैजा, यौतुक ।
 सं० दायभाग (दाय + भाग) पु०
 बाप दादों के धनका हिस्सा,
 पैत्रिक धन का विभाग, २ एक
 ग्रन्थ का नाम ।
 सं० दाय्याद् (दाय=पैत्रिक धन, आ
 + दा=लेना) पु० बेटा, पुत्र, २
 स्वकुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार,
 भाई बन्ध, ३ उत्तराधिकारी,
 वारिस ।
 सं० दार (दृ=फाड़ना, जो भा-
 दारा) इयों के सनेह को घटा
 देती है स्त्री० भार्या, पत्नी, जोरू,
 स्त्री, जाया ।
 सं० दारक (दृ=फाड़ना, भेदना)
 पु० १ बालक, २ सुअर, क०
 फाड़नेवाला भेदक, काटनेवाला ।
 सं० दारकर्म पु० विवाह, ब्याह ।
 प्रा० दारचीनी (सं० दारु=लकड़ी,
 चीनीय=चीनदेश की) स्त्री० दाल-

चीनी, एक पेड़ की मसालेदार
 बाल ।
 सं० दारण भा० पु० भेदन, विदा-
 रण, कर्तन, काटना ।
 सं० दारद पु० विषभेद, २ पारा,
 ३ शिंगरफ, समुद्र ।
 सं० दारिका (दारक=बालक)
 स्त्री० बालिका, बेटी, पुत्री, लड़की,
 कन्या ।
 प्रा० दारिद्र (सं० दारिद्र) पु०
 दरिद्रता, कंगालपन, दीनता ।
 सं० दारिद्र (दरिद्रा=दुर्दशा होना)
 दारिद्रा पु० कंगालपन, निर्ध-
 नता, गरीबी, दीनता, दुःख,
 दुर्दशा ।
 सं० दारु (दृ=फटना वा फाड़ना)
 स्त्री० लकड़ी, काठ, काष्ठ, २ देव-
 दारु वृक्ष ।
 सं० दारुक (दृ=फाड़ना) पु० श्री
 कृष्ण के सारथी का नाम, २ देव-
 दारु वृक्ष, ३ काठ, लकड़ी, स्त्री०
 कठपुतली ।
 सं० दारुगर्भा स्त्री० गुड़िया, पुत्त-
 लिका, कठपुतली ।
 सं० दारुण (दृ=फाड़ना, मनको,
 वा डराना) गु० भयानक, भयं-
 कर, डरावना, विकट, कराल,
 कठिन, कठोर, पु० भयानकरस,
 रौद्ररस, २ चित्रक वृक्ष ।
 सं० दारुहस्तक पु० काष्ठ का चि-

मचा, काठकी कलछली, करछी ।
 प्रा० दारु स्त्री० मदिरा, मद, शराब,
 २ बारूत, बरूद ।
 प्रा० दारुड़ा पु० मदिरा, मद,
 दारुड़ी स्त्री० शराब, दारु ।
 सं० दाल (दल्=टुकड़े करना) स्त्री०
 दलेहुये मूंग, चने, उड़द, मोठ,
 मसूर, अरहर आदि, दलहन,
 दाली ।
 प्रा० दालगलनी, किसी की
 बोल० सरस होना, वर रहना,
 जीतना, गठाव गाँठना, डौल
 बाँधना, युक्ति करना, काम बनाना ।
 प्रा० दालिद्र (सं० दारिद्र) भा०
 पु० कंगालपन, गरीबी, निर्धनता,
 दीनता, दुःख, दुर्दशा ।
 सं० दाव (दु=जलाना) पु० जंगल,
 वन, २ वनकी आग, ३ गर्मी,
 पीड़ा, सन्ताप ।
 सं० दावन भा० पु० पीड़न, नाशन,
 दाबना, दवाना ।
 सं० दावाग्नि (दाव=जंगल,
 दावानल) अग्नि वा अनल=
 आग) स्त्री० वन की आग, जंगल
 की आग ।
 सं० दाश (दाश्=देना जिस को
 - दरमाहा आदि देते हैं) पु० नौकर,
 सेवक, २ (दश्=काटना, मारना,
 जो मछलियों को मारता है)
 मछुवा, धीवर ।

सं० दाशरथ (दशरथ) पु० दशरथ
राजा के बेटे श्रीरामचन्द्र ।

सं० दाश्व पु० दानी, दाता ।

सं० दास (दास्=देना जो अपनी
आत्मा को देता है अथवा जिसको
धन आदि देते हैं) पु० नौकर,
सेवक, किंकर, टहलुवा, २ शूद्र,
३ शूद्रों का उपनाम ।

सं० दासी (दास) स्त्री० लौंडी,
बांदी, चेरी, शूद्रा, पीत भएडी,
बेंदी ।

सं० दासेय पु० दासीपुत्र, सेवक,
गुलाम ।

सं० दाह (दह=जलाना) भा० पु०
दाहन) जलाना, जलन, ताप,
राख करना, झुलसाव ।

प्रा० दाहदेना बोल० मुर्दा ज-
लाना ।

सं० दाहक (दह=जलाना) क० पु०
जलानेवाला, पु० चित्रक वृक्ष ।

प्रा० दाहना (सं० दाहन) क्रि०
स० जलाना ।

प्रा० दाहना (सं० दक्षिण) गु०
दाहिना) दहना, दक्षिण,
दहिना ।

सं० दिक्पति (दिश्=दिशा, पति,
दिक्पाल) राजा, वा पाल=
पालनेवाला) पु० दिशाओं के
राजा, (श्लोक) “ इन्द्रो वह्निः
पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् कुबेर

ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ”
जैसे १ पूर्व का इन्द्र, २ अग्नि-
कोण का अग्नि, ३ दक्षिण का
यमराज, ४ नैऋत्यकोण का नै-
ऋत, ५ पश्चिम का वरुण, ६
वायव्यकोण का पवन, ७ उत्तर
का कुबेर, ८ ईशानकोण का महा-
देव, ९ ऊपर की दिशा का ब्रह्मा,
१० नीचे की दिशा का अनन्त वा
विष्णु-अथवा (श्लोक) “ सूर्यः
शुक्रः क्षमापुत्रः सैहिकेयः शनिः
शशी । सौम्यस्त्रिदशमन्त्री च पूर्वा-
दीनामधीश्वराः ” १ जैसे पूर्वका
दिक्पति सूर्य, २ अग्निकोण का
शुक्र, ३ दक्षिण का मङ्गल, ४
नैऋत्यकोण का राहु, ५ पश्चिम
का शनैश्चर, ६ वायव्यकोण
का चन्द्रमा, ७ उत्तर का बुध, ८
ईशान कोण का बृहस्पति कह-
लाता है ।

सं० दिक्शूल (दिश् वा दिशा=
दिशाशूल) ओर, शूल=कांटा,
वा दुःख) पु० वह दिशा जिस
तरफ किसी विशेष दिन को यात्रा
करना अशुभ है (श्लोक) “ शनौ
चन्द्रे त्यजेत्पूर्वा दक्षिणाख्यां दिशं
गुरौ । रवौ शुक्रे पश्चिमां च बुधे
भौमे तथोत्तराम् ” जैसे शनैश्चर
और सोमवार को पूर्व में, बृहस्पति
को दक्षिण में, रविवार और शुक्र-

बार को पश्चिम में, बुधवार और मङ्गलवार को उत्तर में दिशाशूल होता है ।

प्रा० दिखलाना } (देखना) क्रि०
दिखाना } स० बताना,
बुझाना, बतलाना, समझाना,
जताना, प्रकाशकरना, प्रकटकरना,
लखाना, बुझाना, दर्शाना ।

प्रा० दिखलाई देना } बोल० जान
दिखाई देना } पढ़ना, देख
पढ़ना, मालूम होना ।

प्रा० दिखाऊ (दिखाना) गु०
देखने योग्य, सुन्दर, सजीला,
सुहावना, रूपवान् ।

सं० दिगन्त (दिक् + अन्त) पु०
दिशाका अन्त ।

सं० दिगन्तराल पु० आकाश,
आसमान ।

सं० दिग्म्बर (दिक्=दिशा वा
शून्य, अम्बर=कपड़ा, अर्थात् जिस
के दिशाही कपड़ा है) गु० नङ्गा,
नग्न, वस्त्रहीन, पु० शिव का नाम,
२ बौद्धमत का अथवा जैनमत
का भिखारी ।

सं० दिग्गज (दिक्=दिशा, गज=
हाथी) पु० दिशाओं के हाथी,
दिग्गज कहाते हैं । वे आठ हैं
जैसे कि (श्लोक) “ ऐरावतः
पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च

दिग्गजाः ” १ ऐरावत, २ पुण्ड-
रीक, ३ वामन, ४ कुमुद, ५
अञ्जन, ६ पुष्पदन्त, ७ सार्वभौम,
= सुप्रतीक ।

सं० दिग्ध पु० विपलपेटा बाण,
२ अग्नि, ३ स्नेह, ४ लेप, ५ लिप्त ।
सं० दिग्विजय (दिक्=दिशा,
विजय=जीत) स्त्री० चारों दिशा
का जीतना ।

प्रा० दिग्गी } (सं० दीर्घिका,
दिधी) दीर्घ=लम्बा स्त्री०
लम्बा पोखरा, तालाब ।

सं० दिति (दो=टुकड़े करना) स्त्री०
दैत्यों की मा, दक्षप्रजापति की
बेटी और कश्यपमुनि की पत्नी ।

सं० दित्सा (दा=देना) भा० स्त्री०
दानेच्छा, देनेकी इच्छा ।

सं० दिदृक्षा स्त्री० देखनेकी इच्छा ।

सं० दिन (दो=नाश करना, अन्धेरा
को) पु० दिवस, दिवा, वासर, घस ।

प्रा० दिनकाटना बोल० दुःख से
समय बिताना ।

प्रा० दिनको दिन रातको रात न
जानना बोल० शोच में अथवा
काम में डूब जाना ।

प्रा० दिनखुलना बोल० भागजा-
गना, दुःख के दिन चले जाना और
सुख के दिन आना, दिन फिरना,
बढ़ती होना, फलना फूलना ।

प्रा० दिनगंवाना बोल० असाव-

धानीसे अथवा वृथा समय बिताना ।
 प्रा० दिनचढ़ना बोल० दिन आना,
 दिन बढ़ना, २ स्त्रियों के कपड़ों
 से होने का समय बढ़ जाना ।
 प्रा० दिनचढ़ाना बोल० किसी
 काम को देर से शुरू करना ।
 प्रा० दिनढलना बोल० दिन घटना,
 दिन पलटना ।
 प्रा० दिनधौले बोल० दिन दोपहर,
 दिन दिया ।
 प्रा० दिनपड़ना बोल० दुःख आना,
 दुःख पड़ना ।
 प्रा० दिनफिरना बोल० किस्मत
 खुलना, भाग जागना, बढ़ती
 होना, फलना, फूलना ।
 प्रा० दिनबदिन } बोल० हर एक
 दिनदिन } दिन, प्रत्येक
 दिन, प्रतिदिन ।
 प्रा० दिनभरना बोल० दुःख और
 कष्ट में समय बिताना ।
 प्रा० दिनमुँदना बोल० दिन
 छिपना, सूर्य अस्त होना, सूर्य
 छिपना ।
 सं० दिनकर (दिन, कर=करनेवाला,
 कृ=करना, वा कर=किरण जिसकी
 किरण दिन में दिखाई देती है)
 पु० सूर्य, रवि ।
 सं० दिनमणि (दिन + मणि) पु०
 सूर्य ।
 सं० दिनमान (दिन, मान=मापना)

पु० दिनका नाप, दिनका परिमाण ।
 प्रा० दिनमुख पु० प्रातःकाल, प्रभात ।
 प्रा० दिनाई स्त्री० दाद ।
 सं० दिनान्त (दिन + अन्त) पु०
 दिनका पूरा होना, सांझ, सन्ध्या,
 सायंकाल, शाम होना ।
 सं० दिनेश (दिन + ईश) पु०
 सूर्य, दिनकर, दिनपति ।
 प्रा० दिया (सं० दीप) पु० दीवा,
 दीपक, चिराग, २ (देना) क्रि०
 स० देना, देदिया ।
 सं० दिलीप पु० रघुराजा का पिता ।
 सं० दिव (दिव्=खेलना, चमकना,
 चाहना) पु० स्वर्ग, आकाश ।
 सं० दिवस (दिव्=खेलना, चम-
 दिवा) कना वा व्यवहार
 करना) पु० दिन, बासर, रोज़ ।
 सं० दिवाकर (दिवा=दिन, कर=
 करनेवाला) पु० सूर्य, भानु, रवि,
 दिनेश, दिनकर ।
 सं० दिवान्ध (दिवा=दिन, अन्ध=
 अन्धा) गु० दिन में अन्धा, पु०
 उल्लू, २ चिमगादर ।
 प्रा० दिवाला पु० ऋण चुकाने की
 असमर्थता, कोठी अथवा दुकान
 का बिगड़ना ।
 प्रा० दिवाली (सं० दीपावलि,
 दीप=दिया, अवलि=पांत) स्त्री०
 दीपमालिका, कातिक में एक
 तिवाहार ।

सं० दिविषद् (दिव्=स्वर्ग, पद् प्रकाश करना) पु० देवता, अमर ।

सं० दिवौकस (दिव्=स्वर्ग, आकाश + ओकस्=आश्रय) पु० देवता, अमर, चातक, पपीहा ।

सं० दिव्य (दिव्=स्वर्ग, दिव्=चमकना) गु० स्वर्ग का, स्वर्गीय, २ सुन्दर, मनोहर, स्वच्छ, मनभावन, पु० शपथ, गूगुल, जौ ।

सं० दिव्यदृष्टि (दिव्य + दृष्टि) स्त्री० चमत्कारी ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, ऐसी नजर जिससे सब जगह की चीजें देख सके ।

सं० दिश् (दिश्=देना, व दिख-दिशा) लाना) स्त्री० तरफ, ओर, दिशा दश हैं, १ ऊपर, २ नीचे, ३ पूर्व, ४ अग्निकोण, ५ दक्षिण, ६ नैऋत्यकोण, ७ पश्चिम, ८ वायव्यकोण, ९ उत्तर, १० ईशानकोण, दन्तक्षत, ईषत्, अलम् ।

प्रा० दिसावर (सं० देश) पु० देश, विलायत, परदेश, मुल्क ।

प्रा० दिसावरी (दिसावर) पु० एक तरह के पान, गु० दिसावर का (माल आदि) ।

प्रा० दिहरा (सं० देवगृह) पु० देहरा) देवता का मन्दिर ।

प्रा० दिहली (सं० देहली) स्त्री० दोनों किवाड़ों के बीच का काठ

दहलीज, २ फाटक, द्वार, डेवही, नाम शहर का ।

सं० दीक्षक (दीक्ष् + अक, दीक्ष्=मन्त्रदेना) क० पु० मन्त्रदाता, गुरु ।

सं० दीक्षा (दीक्ष्=यज्ञ करना, मन्त्र देना) स्त्री० गुरुसे मन्त्रलेना, गुरु-मुख होना, मन्त्र उपदेश, २ यज्ञ, याग ।

सं० दीक्षित (दीक्ष्=यज्ञ करना, मन्त्रदेना) पु० मन्त्र देनेवाला, गुरुयज्ञ करनेवाला, र्म्म० मन्त्र-लिया हुआ ।

प्रा० दीग्वना (सं० दृश्=देखना) क्रि० अ० देख पड़ना, दिखलाई देना ।

प्रा० दीठ (सं० दृष्टि) स्त्री० दृष्टि, ताक, दर्शन, नजर ।

सं० दीधिति स्त्री० किरण, मरीचि, रश्मि ।

सं० दीन (दी=नाश होना) नाग । कंगाल, निर्धन, दरिद्र, दुः पु० गरीब, दुखिया, २ आधीन, नम्र, विनीत ।

सं० दीनता (दीन) भा० स्त्री० गरीबी, कंगलापन, २ आधीनता, नम्रता ।

सं० दीनदयालु (दीन + दयालु) गु० गरीबों पर दया करनेवाला, भक्तों पर कृपा करनेवाला, ईश्वर का नाम ।

सं० दीनबन्धु (दीन + बन्धु) पु०
गरीबोंके अथवा भक्तोंके भाई अथवा
मित्र, ईश्वर का नाम ।

प्रा० दीनानाथ (सं० दीननाथ)
पु० गरीबों के अथवा भक्तों के
स्वामी, ईश्वर का नाम ।

सं० दीनार (दी=नाश होना) पु०
सोने का एक सिक्का, २ सोने का
एक तौल, सुवर्णकर्ष, निष्कपरि-
मित (अशर्की) ।

सं० दीप (दीप्=चमकना) पु०
दिया, दीवा, दीपक, चिराग ।

प्रा० दीप (सं० दीप) पु० द्वीप
शब्द को देखो ।

सं० दीपक (दीप्=चमकना) पु०
दिया, दीवा, द्वीप, चिराग, २
एक राग का नाम, ३ एक अलंकार
का नाम, गु० चमकीला, दीप्तिमान् ।

सं० दीपमालिका (दीप=दिया,
मालिका=पात) दिवाली, एक
प्रतिवहार का नाम ।

सं० दीप्ति (दीप्=चमकना) गु०
प्रकाशित, चमकीला, प्रज्वलित,
पु० सोना ।

सं० दीप्ति (दीप्=चमकना) स्त्री०
चमक, प्रकाश, भलक, तेज, शोभा ।

सं० दीप्तिमान् (दीप्ति=तेज, चमक,
मान्=वाला) गु० तेजस्वी, प्रतापी,
शोभावान्, शोभायमान ।

सं० दीप्यमान (दीप्य + मृ=आन)

प्रकाशता हुआ, चमकता हुआ,
शोभायमान ।

प्रा० दीमक (फा० दीबक) स्त्री०
दीयां, बल्मीक, एक प्रकार की
सफेद चिउँटी ।

सं० दीर्घ (दृह्=बढ़ना, वा दृ=फाड़ना,
वा डराना) गु० लम्बा, बड़ा, ऊँचा,
पु० द्विमात्रिकस्वर, २ सालवृक्ष ।

सं० दीर्घग्रीव (दीर्घ=लम्बी, ग्रीवा
=गरदन) पु० ऊँट, लम्बी गर-
दनवाला ।

सं० दीर्घजङ्घा पु० सारसपक्षी, ऊँट ।

सं० दीर्घजीवी (दीर्घ=लम्बा अर्थात्
बहुत दिनोंतक, जीवी=जीनेवाला)
दीर्घायु ।

सं० दीर्घदर्शी (दृश्=देखना) क०
पु० दूरदर्शी, विवेकी ।

सं० दीर्घरोमन् पु० भालू, रीछ ।

सं० दीर्घवक्त्र (दीर्घ=बड़ा, वक्त्र=
मुख) पु० हस्ती, हाथी ।

सं० दीर्घमूर्त्ती (दीर्घ=लम्बा अर्थात्
बहुत देर से, मूर्त्त=चाहे हुए काम
को करना) गु० आलसी, सुस्त,
हर एक काम में देरी करनेवाला,
धीमा, शिथिल ।

सं० दीर्घायुः (दीर्घ=लम्बी, आयुष्=
उमर) गु० चिरंजीवी, दीर्घजीवी,
बहुत दिनोंतक जीनेवाला, पु०
कौवा, २ सेमल का वृक्ष, ३ मार्क-
ण्डेय ऋषि ।

प्रा० दीवा (सं० दीप) पु० दीपक,
दिया, चिराग ।

प्रा० दीसना (सं० दृश्=देखना)
क्रि० अ० दीखना, दिखाई देना,
देख पड़ना, सूझना, प्रकट होना ।

प्रा० दुःख } (दुःख=दुःखकरना) पु०
सं० दुःख } पीड़ा, कष्ट, कलेश,
तकलीफ, व्यथा, आपदा, विपदा ।

प्रा० दुःखका मारा बोल० दुखी,
दुखारी ।

सं० दुःखद (दुःख+द, दा=देना)
दुःखदाता, दुःख देनेवाला ।

प्रा० दुःखपाना बोल० कुढ़ना, क-
लपना, दुःखभरना, दुखी होना ।

प्रा० दुःखभरना बोल० परिश्रम क-
रना, दुःखपाना, दुखी होना ।

प्रा० दुःखड़ा (सं० दुःख) पु० दुःख,
आपदा, अभाग, दुर्गति, तकलीफ ।

प्रा० दुःखदाई (सं० दुःखदायी)
क० पु० दुःख देनेवाला ।

प्रा० दुःखना (सं० दुःखन, दुःख=
दुःख पाना) क्रि० अ० पिराना,
दर्द होना, पीड़ा होना, कलेश
होना, जलना, चरपराना ।

सं० दुःखसागर (दुःख+सागर)
पु० दुःख का समुन्दर, बड़ा भारी
दुःख, २ संसार, दुनिया ।

सं० दुःशील (दुः=बुरा, शील=स्व-
भाव) गु० दुष्टस्वभाव, बदभिजाज ।

पा० दुःखाना (दुःखना) क्रि० सं०

दुःख देना, सताना, पीड़ा देना,
कलपाना ।

प्रा० दुःखारी } (सं० दुःखी) गु०
दुःखियारी } दुखी, दरिद्री, कं-
दुःखिया } गाल, पीड़ित,
दुःखियारा } उदास ।

सं० दुःखावह (दुःख+वह=भोगना)
क० पु० दुःखिया, दुःखित, तकलीफ
उठानेवाला ।

सं० दुःखित (दुःख) गु० दुखी,
दुःखियारी, दुःखिया, पीड़ित ।

सं० दुःखी (दुःख) गु० दुःखित ।

सं० दुःशासन (दुः=दुःखसे, शास्
=सिखाना) पु० पृतराष्ट्र राजाका
बेटा और दुर्योधन का छोटा भाई ।

सं० दुःसह (दुः=दुःखसे, सह=सहना)
गु० जो दुःखसे सहाजाय, असह्य,
बहुत कठिन, नहीं सहने योग्य ।

प्रा० दुकड़ा (सं० द्वि=दो) पु० दो
दमड़ी, खदाम, पैसे का चौथा भाग ।

प्रा० दुकान (फा० दूकान) पु०
हाट, सौदा रखने बेचने की जगह ।

सं० दुकूल पु० कपड़ा, वस्त्र, रेशमी
कपड़ा, महीन कपड़ा ।

प्रा० दुगुन (सं० द्विगुण) पु० दूनी,
राग ।

प्रा० दुगुना (सं० द्विगुण, द्वि=दो,
गुण=गुनाहुआ) गु० दूना, दोगुना ।

सं० दुग्ध (दुह=दुहना) म्भ० पु० दूध,
क्षीर, पय ।

प्रा० दुचित { (सं० द्विचित्त, द्वि=दो,
दुचिता } चित्त=मन) गु० जिस
को दुविधा लगी हो, दोमना,
दुबधैल, व्याकुल ।

प्रा० दुत (सं० दूर वा दुर) वि०
बो० दूर हो, परे जा, निकल भाग,
चला जा ।

प्रा० दुतकार, पु० { भिड़की, घुरकी,
दुतकारी, स्त्री० } ताड़ना, दुत-
कारना, डाटना, भिड़कना, घुरकना ।

प्रा० दुतदबक बोल० भिड़की,
घुरकी, डाट ।

प्रा० दुत { (सं० द्युति) स्त्री० चमक,
द्युति } चटक, भड़क, सुन्दरता,
प्रकाश ।

प्रा० दुधार { (दूध) गु० दूध देने
दुधैल } वाली, दुधारी ।

सं० दुन्दुभि (दुन्दु ऐसे शब्द से,
उभ्=भरना) पु० धौंसा, नगाड़ा,
डङ्का, भेरी, २ वरुण, ३ एक राक्षस
जिसको बालि ने मारा ।

प्रा० दुपट्टा (सं० द्वि=दो, पट=कपड़ा)
पु० दो पाट का कपड़ा जिसको
दोनों कांधों पर डालते हैं, बहुत
बार एक पाटके कपड़े को भी दु-
पट्टा बोलते हैं ।

प्रा० दुपट्टातानकेसोना बोल०
असावधानी से अथवा बेफिक्र होके
सोरहना ।

प्रा० दुपट्टाहिलाना वा फिराना

बोल० सन्धि के लिये मोहलत या
अवकाश चाहने के लिये भएडा
हिलाना, किला या गढ़ बैरी को
सौंप देना ।

प्रा० दुपहरिया (दोपहर) पु०
एक प्रकार का फूल, मध्याह्नपुष्प,
गु० दोपहर का ।

प्रा० दुबिधा (सं० द्वैविध्य, द्वि=
दो, विध=प्रकार) स्त्री० सन्देह,
खटका, दुचिताई, पसोपेश, सं-
कल्प-विकल्प ।

प्रा० दुबला (सं० दुर्वल) गु० क-
मजोर, दूबर, निर्बल, २ पतला,
कृश, क्षीण ।

प्रा० दुभाषिया (सं० द्वि=दो,
भाषा=बोली) क० पु० दोनों ओर
की बोली समझाने वाला, एक
बोली से उलथा करके दूसरी बोली
में समझाने वाला ।

सं० दुर { उपस० बुरा, दुष्ट, अशुभ,
दुस् } नीच, तुच्छ, अवज्ञा करने
योग्य (जैसे दुर्वचन, दुर्जन, दुर्बुद्धि,
दुर्दिन आदि) २ अनुचित, उलटा,
असत्य, झूठ (जैसे दुस्तर्क) ३ निषेध,
कम, नहीं, ४ कठिनता से, दुख
से, यह उपसर्ग सु का उलटा है ।

प्रा० दुरना क्रि० अ० छिपना,
लुक्ना ।

सं० दुरन्त (दुर + अन्त) गु० अ-
शान्त, चञ्चल, दुष्ट, दीठ, कुकर्मी ।

सं० दुरतिक्रम (दुर् + अतिक्रम) गु०
दुस्तर, कठिन ।

सं० दुराग्रह (दुर् + आग्रह, ग्रह =
लेना) र्म० पु० दुःखग्राह्य, दुःख
से लिया जाय ।

सं० दुराचार (दुर्=बुरा, आचार=
चलन) भा० पु० बुराचलन, बुरा
व्यवहार, अन्याय, अधर्म, पाप,
गु० दुष्ट, जिसका बुरा चाल
चलन हो ।

सं० दुराचारी (दुराचार) गु० दुष्ट,
पापी, अन्यायी, अधर्मी, भ्रष्ट,
पापात्मा ।

सं० दुरात्मा (दुर्=दुष्ट, आत्मा=
चित्त, मन) गु० दुष्ट, पापी,
अधर्मी ।

सं० दुराधर्ष (दुर्=दुःख से, आ +
धृष्=जीतना, दबाना) गु० जो
दुःख से जीता जाय, जो शत्रु से
नहीं दबे ।

प्रा० दुराना क्रि० स० छिपाना,
लुकाना ।

सं० दुरालाप (दुर्=बुरा, आलाप=
बोलना) पु० गाली, दुर्वचन ।

प्रा० दुराव (दुराना) भा० पु०
छिपाव, लुकाव ।

सं० दुराशा (दुर्=बुरी, आशा=
आस) स्त्री० बुरी आशा, नीच
आशा ।

सं० दुरित (दुर्=बुरी जगह, इण्=

जाना) पु० पाप, अधर्म ।

सं० दुरुक्त (दुर्=बुरा, उक्त=कहा
हुआ, वच्=कहना) पु० शाप,
बददुआ, दुर्वचन, बदकलाम ।

सं० दुरुक्ति (दुर् + उक्ति) स्त्री०
भ्रष्ट रीति से कहना, मुहमिल
कहना, जैसे पानी-आनी, रोटी-
ओटी ।

सं० दुरोदर पु० जुआं का खेल,
जुआरी, कपटी, धूर्त, व्यवहार,
व्यवहारी ।

सं० दुर्ग (दुर्=कठिनता से वा दुःख
से, गम्=जाना जहाँ) पु० गढ़,
कोट, किला, घाटा, २ एक राक्षस
का नाम, गु० कठिन, अगम्य,
दुर्गम्य ।

सं० दुर्गत (दुर्=दुःख से, गम्=
जाना) गु० दुःखी, दीन, कंगाल,
गरीब, दरिद्र, २ बीछालेदर ।

सं० दुर्गति (दुर्=बुरी, गति=दशा)
भा० स्त्री० बुरी दशा, दुर्दशा, बर-
बादी, खराबी, गरीबी, नीचपन,
अधगता, २ नरक ।

सं० दुर्गन्ध (दुर्=बुरी, गन्ध=बास)
स्त्री० बुरीबास, कुबास, बुरी
महक, बदबू ।

सं० दुर्गम (दुर्=कठिनतासे, ग
जाना) गु० कठिन,
अगम्य, विकट, दुश्च
२ गम्भीर ।

सं० दुर्गा (दुर्ग एक राक्षस का नाम उसको मारनेवाली देवी) जैसे दुर्गा पाठ में लिखा है कि “तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमारुह्यं महासुरम् । दुर्गादेवीति विख्याता” अर्थ-देवी कहती है कि मैं वहां दुर्ग नाम असुर को मारूंगी तब मेरा नाम “दुर्गा” प्रसिद्ध होगा, स्त्री० देवी, भवानी, काली, भगवती, २ दुर्गा-पाठ, दुर्गामाहात्म्य, दुर्गाचरित्र, जिसमें दुर्गा की महिमा लिखी है ।

सं० दुर्घट (दुर=कठिन, घट=चेष्टा) गु० कठिन, औघट, विकट, अगम्य ।

सं० दुर्जन (दुर=दुष्ट, जन=मनुष्य) पु० दुष्टमनुष्य, गु० दुष्ट, बुरा, नीच, बुरा करनेवाला ।

सं० दुर्जय (दुर=कठिनता से, जि=जीतना) गु० जो कठिनता से जीतने में आवे ।

सं० दुर्दशा (दुर=बुरी, दशा=हालत, अवस्था) स्त्री० बुरी हालत, आपदा, विपदा, अभाग, बुरी अवस्था, दुर्दिन ।

सं० दुर्दिन (दुर=बुरा, दिन) पु० बुरा दिन, ऐसा दिन जिसमें बादल धरे हुए हों और अन्धेरा होजाय ।

नीति स्त्री० दुष्टनीति, बुरा चराचर इन्साफ ।

दुर=थोड़ा वा नहीं,

बल=जोर) गु० निर्बल, निबल, दुबला, असमर्थ, बलहीन, कमजोर ।

सं० दुर्बुद्धि (दुर=बुरी, बुद्धि=समझ) गु० मूर्ख, भौंदा, अज्ञान, नासमझ, मन्दबुद्धि, बदअकल ।

सं० दुर्भगा (दुर=बुरा, भग=भाग) स्त्री० वह स्त्री जिसको उसका पति नहीं चाहता हो ।

सं० दुर्भाग्य (दुर=बुरा, भाग्य=भाग) गु० अभाग, भाग्यहीन, कमबल ।

सं० दुर्भिक्ष (दुर=नहीं, भिक्षा=खाने की वस्तु) पु० काल, अकाल, कुसमय, असमय ।

सं० दुर्मति (दुर=बुरी, मति=बुद्धि) गु० मूर्ख, अज्ञान, दुर्बुद्धि, मन्द-बुद्धि, स्त्री० बुरीसमझ, बदअकल ।

सं० दुर्मद (दुर=बुरा, मद=अभिमान) गु० जिसको बहुत अथवा बुरा घमण्ड हो, पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० दुर्मुख (दुर=बुरा, मुख=मुँह) गु० जिसका मुँह बुरा हो, २ कड़ी बात बोलनेवाला, पु० एक बन्दर का नाम, २ एक राक्षस का नाम ।

सं० दुर्योधन (दुर=दुःख से वा बुरी तरह से, युध्=लड़ना) पु० धृतराष्ट्र का बड़ा बेटा और कौरवों का मुखिया जिसने अपने चचेरे भाई

युधिष्ठिर आदि पाण्डवों से लड़ाई की थी वह लड़ाई महाभारत कहलाती है ।

सं० दुर्लभ (दुर्=कठिनता से, लभ्=पाना) गु० जो दुःख से मिले, दुष्प्राप्य, अलभ्य, २ अनोखा ।

सं० दुर्वचन (दुर्=बुरा, वचन=बोल) पु० गाली, बुरी बात, बुरा वचन, दुर्वाद ।

सं० दुर्वाद (दुर्=बुरा, वाद कहना) पु० गाली, बुरा वचन, दुर्वचन, बुरी बात, दुष्णाम ।

सं० दुर्वासना (दुर्=बुरी, वासना=इच्छा) स्त्री० बुरी इच्छा, खराब इत्वाहिश ।

सं० दुर्वासाः (दुर्=बुरा, वा डरावना, वासस्=कपड़ा) पु० एक ऋषि का नाम जो अत्रि ऋषि का बेटा और शिव का अंश था, २ मैला कपड़ा, मलिन वस्त्र ।

सं० दुर्विपाक (दुर्=बुरा, विपाक=फल) पु० बुराफल, बदनतीजा, बदकिस्मती, दुर्दैव, अभाग्य ।

सं० दुर्बोध्य (दुर्+बुध्+य, बुध्=जानना) र्म० पु० कठिनता से जानने योग्य, मुश्किल से जाना जाय ।

प्रा० दुलकी स्त्री० घोड़े की एक चाल, कूकर चाल ।

प्रा० दुलड़ा (दो लड़) पु० दो लड़

की माला, गु० दुगुना ।

प्रा० दुलत्ती (दु=दो, लात पाँवकी मार) स्त्री० पिछले दो पैरों से लात मारना ।

प्रा० दुलत्तीमारना (बोल० लात दुलत्ती छाँटना) मारना, पिछले दो पैरों से लात मारना, पुस्तक झाड़ना ।

प्रा० दुलहन (स्त्री० बनी, बनरी, दुलहिन) लाड़ी ।

प्रा० दुलहा (पु० बर, बनरा, बना) दुलहा ।

प्रा० दुलाई (दु=दो + लाय=परत) स्त्री० रजाई, दुलैया ।

प्रा० दुलार पु० प्यार, सनेह, प्रीति, प्रेम ।

प्रा० दुवार (सं० द्वार) पु० दरवाजा ।

प्रा० दुशाला पु० शाल का जोड़ा ।

सं० दुश्चरित (दुः+चरित, चर=चलना) भा० पु० दुराचार, बदचलन, दुष्ट व्यवहार ।

सं० दुष्कर (दुर्=दुःख से करना) र्म० पु० कर्त्तव्य, जो करने में मुश्किल ।

सं० दुष्कर्म (दुर्=बुरा पु० बुरा काम, नीच कर्म) ।

सं० दुष्कर्मी (पापी, दुरात्मा

सं० दुष्ट (दुष्=बिगड़ना, भ्रष्ट होना, वा बुरा करना) गु० बुरा, दुर्जन, कुजन, नीच ।

सं० दुष्णाम (दुष् + नाम) पु० बुरा नाम, गाली, अयश, बदनाम ।

सं० दुष्टता (दुष्ट) स्त्री० बुराई, खोटई ।

सं० दुष्प्राप्य (दुस्=कठिनता से, प्राप्य=पाने योग्य) गु० दुर्लभ, दुःख से वा कठिनता से पाने योग्य ।

प्रा० दुसह (सं० दुःसह) गु० दुःसह शब्द को देखो ।

सं० दुस्तर (दुस्=दुःख से, तृ=पार होना) गु० कठिन, जिसका पार होना कठिन हो ।

प्रा० दुहना (सं० दोहन, दुह=दुहना) क्रि० सं० दोहना, गाय के थनों में से दूध निकालना ।

प्रा० दुहराना क्रि० सं० दूना करना, २ दोहरा कर कहना, बारबार ना ।

दई (सं० दौ=दो, हाहा=हाथ, दोनों हाथ ऊँचे करके) स्त्री० न्याय के लिये पुकार, २ सौगन्द, शपथ, "दुहाई" ।

दई करना बोल० ना ।

'=देना, वा दुहना

जो मा बाप के धन को दुहाकरे या जिसको देते रहें) स्त्री० बेटी, लड़की, कन्या, पुत्री, सुता ।

प्रा० दुह्न (सं० दौ) गु० दो, दोनों ।

प्रा० दूज (सं० द्वितीया) स्त्री० दूसरी तिथि ।

प्रा० दूजवर (सं० द्विजायावर, द्वि=दूसरी, जाया=पत्नी, वर=दुल्हा) पु० वह मनुष्य जो दूसरा व्याह करता है ।

प्रा० दूजा (सं० द्वितीय) गु० दूसरा, और।

सं० दूत (दू=जाना) पु० समा-चार लेजानेवाला, संदेश पहुँचानेवाला, एलची, हरकारा ।

सं० दूतिका (दूत) स्त्री० समा-दूती) चार पहुँचानेवाली, संदेश लेजानेवाली, २ कुटनी, नाथिका ।

प्रा० दूध (सं० दुग्ध) र्म० पु० दुग्ध, पय, क्षीर, २ किसी जड़ी का अथवा पौधे का रस ।

प्रा० दूधाधारी (सं० दुग्धाहारी) क० पु० दूध पीके जीनेवाला ।

प्रा० दूधाभाती (दूध + भात) स्त्री० व्याह के चौथे दिन एक रीति होती है जब दुलहा और दुलहिन एक साथ बैठकर खीर खाते हैं ।

प्रा० दूना (सं० द्विगुण) गु० द्विगुना, दोहरा ।

प्रा० दूब (सं० दूर्वा, दूर्ब=हिंसा

करना अर्थात् काटना) स्त्री०
 एक प्रकार की घास ।
 प्रा० दूबर (सं० दुर्वल) गु० दुबला,
 कमजोर, २ दुर्वहः (दुर=दुःख से,
 वह=लेजाना) कठिन ।
 सं० दूर (दुर=दुःख से, इण=जाना)
 स्त्री० बीच, दूरी, गु० परे, अनन्तर,
 अलग, न्यारा, बीच ।
 प्रा० दूरभागना बोल० छोड़ना, मुँह
 फेरना, हाथ उठाना, धिन करना,
 अवज्ञा करना, खराब करना, बचना,
 टलजाना, अलग रहना ।
 प्रा० दूरकरना बोल० हटाना,
 सरकाना, टालना, हँकादेना,
 निकाल देना ।
 प्रा० दूरहोना बोल० हटना, अलग
 होना, टलना, निकलजाना, सर-
 कना ।
 प्रा० दूर हो बोल० चला जा, परे
 हो, निकल भाग ।
 सं० दूरदर्शिता भा० पु० दूर से
 देखना, पाण्डित्य, विवेकज्ञा, दूर-
 देशी ।
 सं० दूरदर्शी (दूर=दूर से अर्थात्
 पहले से, दर्शी=देखनेवाला, दृश्=
 देखना) क० पु० दूर से देखने-
 वाला, पहले से जानने वाला,
 अग्रशोची, पु० पण्डित, विवेकी,
 ज्ञानी, २ गीध ।
 सं० दूषक (दुष्=दोषी होना) क०

पु० निन्दक ।
 सं० दूषण (दुष्=दोषी होना) भा०
 पु० दोष, निन्दा, चूक, अपराध,
 अपवाद, भूल, २ एक राक्षस का
 नाम ।
 सं० दूषणीय (दूष् + अनीय) र्म०
 पु० निन्दायोग, दुष्ट, बदनाम ।
 सं० दूषित (दुष्=दोषी होना) र्म०
 पु० निन्दित, बुरा, खराब, भ्रष्ट,
 बदनाम, कलङ्कित, बिगड़ा हुआ ।
 सं० दूष्य (दूष् + य) र्म० पु०
 अयोग्य, दूषणयोग्य ।
 प्रा० दूसर (सं० द्वितीय) गु०
 दूसरा) दूजा, और ।
 प्रा० दृग् (सं० दृक्, दृश्=देखना)
 गु० पु० आँख, चक्षु ।
 सं० दृढ (दृह=बढ़ना) गु० कड़ा,
 कठोर, मजबूत, पोढ़ा, पक्का, अ-
 चल, गाढ़ा, ठोस ।
 सं० दृढ़ता (दृढ) भा० स्त्री० पका-
 वट, मजबूती, पोढ़ाई, कठिनता,
 ठोसपन ।
 प्रा० दृढ़ाना (सं० दृढ) क्रि० स०
 मजबूत करना, पक्का करना, पोढ़ा
 करना, सबल करना ।
 सं० दृश्य (दृश्=देखना) र्म० पु०
 देखने योग्य, दर्शनीय, २ सुन्दर,
 सुहावना, मनोहर ।
 सं० दृश्यमान र्म० पु० देखनेयोग्य,
 दर्शनीय, देखने काबिल ।

सं० दृष्ट (दृश्=देखना) र्म० पु०
देखाहुआ, प्रकट, जो देखने में
आवे ।

सं० दृष्टकूट पु० पहेली, क्लिष्ट,
कठोर, कड़ा ।

सं० दृष्टान्त (दृष्ट=देखा, अन्त=आ-
खिर, पार) पु० उदाहरण, उपमा,
बराबरी ।

सं० दृष्टि (दृश्=देखना) भा०
स्त्री० देखना, दर्शन, दीठ, नजर,
२ आँख ।

सं० दृष्टिपात (दृष्टि + पात, पतु=
गिरना) पु० दर्शन, कटाक्ष, घूरना,
देखना ।

सं० दृष्टिशशि पु० महादेव, शिव ।

प्रा० देखना (सं० दृश्=देखना)
क्रि० स० लखना, दृष्टि करना,
ताकना, निहारना ।

प्रा० देखनाभालना बोल० अच्छी
तरह से देखना, देखना, ताकना,
निहारना ।

प्रा० देखादेखी बोल० हिस्काहिस्की,
बराबरी, देखने से, २ आपस में
देखना ।

सं० देदीप्यमान क० पु० चमकीला,
जाज्वल्यमान, चमकदार ।

प्रा० देनलेन (देनालेना) भा० पु०
व्यवहार, पलटा, व्यापार, बनिज,
बैपार, देवालेई, साहूकारी ।

प्रा० देना (सं० दान, दा=देना)

क्रि० स० देदेना, देडालना, सौं-
पना, त्यागना ।

प्रा० देनापाना बोल० हानिलाभ,
देनालेना ।

प्रा० देमारना बोल० पटक देना,
पछाड़ डालना ।

सं० देय (दा=देना) र्म० पु० देने
योग्य ।

सं० देव (दिव्=खेलना, वा सरा-
हना) पु० देवता, २ परमेश्वर,
३ राजा, ४ देवर, ५ ब्राह्मणों क
उपनाम, ६ बादल, मेघ, गु०
पूज्य, पूजने योग्य ।

सं० देवक (दिव्=खेलना, वा चम
कना) पु० श्रीकृष्ण का नाना
और देवकी का बाप ।

सं० देवकार्य (देव=देवता, कार्य=
काम) पु० पूजा-पाठ-होम आदि ।

सं० देवकी (देवक) स्त्री० देवक
देवकी) राजा की बेटी, वसुदेव
की स्त्री और श्रीकृष्ण की मा ।

सं० देवकीनन्दन (देवकी + नन्दन
=बेटा) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० देवगुरु (देव + गुरु) पु० देव-
ताओं का गुरु बृहस्पति ।

सं० देवगृह (देव + गृह) पु० मन्दिर,
देवालय, देहरा, ठाकुरद्वारा ।

प्रा० देवठान (सं० देवोत्थान)
पु० कातिकसुदी ११ जिस दिन
विष्णु चार महीने की नींद र

जागते हैं ।

सं० देवता (देव) पु० देव, अमर ।

सं० देवदारु (देव + दारु अर्थात् जिस पेड़की लकड़ी देवताओं को प्यारी होती है) पु० एक वृक्ष का नाम ।

सं० देवदेव (देव + देव) पु० देवताओं का देवता, महादेव ।

सं० देवनागरी (देव=देवता, नागरी=नगर की) स्त्री० देवताओं के नगर के अक्षर अथवा देवताओं के नगर की भाषा, शास्त्री अक्षर, शुद्ध हिन्दी अक्षर, २ हिन्दीभाषा, नागरी बोली ।

सं० देवर दिव्=खेलना पु० पतिका छोटा भाई । जैसे “ पश्यति देवरस्ते ” ।

प्रा० देवल (सं० देवालय) पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा, देहरा ।

सं० देवलोक (देव + लोक) पु० देवताओंके रहने का स्थान, स्वर्ग, सात लोकों में का एक लोक (लोक शब्द को देखो) ।

सं० देववाणी (देव + वाणी) स्त्री० देवताओं की बोली, संस्कृतभाषा ।

सं० देवस्थान (देव + स्थान) पु० मन्दिर, देवालय, देवल, ठाकुरद्वारा, देहरा ।

प्रा० देवा (सं० देव) पु० देवता, २ (देना) देनेवाला ।

प्रा० देवाल (देना) पु० देनेवाला ।

सं० देवालय (देव=देवता, आलय=जगह) पु० मन्दिर, देवस्थान, देवली, ठाकुरद्वारा, देहरा, २ स्वर्ग ।

सं० देवतरङ्गिनि (देव=देवता, तरङ्गिनि=नदी) स्त्री० गङ्गा, भागीरथी ।

सं० देवध्वनि स्त्री० आकाश गङ्गा ।

सं० देवी (दिव्=क्रीड़ा करना खेलना) स्त्री० भवानी, दुर्गा, जगदम्बा, २ देवता की स्त्री, ३ रानी ।

सं० देवोत्थान (देव=विष्णुभगवान्, उत्थान=उठना) पु० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की नींद से जागते हैं ।

सं० देश (दिश्=देना) पु० मुल्क, देश, पृथ्वी का खण्ड, मण्डल, चक्र, प्रदेश, स्थान ।

सं० देशदशाभिज्ञ क० पु० देश की दशाका ज्ञाता, मुल्क की हालत का जाननेवाला ।

प्रा० देशनिकाला (देश+निकालना) पु० अपने देश से निकालना ।

सं० देशभाषा (देश + भाषा) स्त्री० देशीभाषा, देशकी बोली ।

सं० देशस्थ (देश + स्थ) क० पु० देशमें ठिका, मुल्कमें ठहरा हुआ ।

सं० देशाचार (देश + आचार) पु० देशका व्यवहार, देशकी रीति भाँति ।

सं० देशाटन (देश=मुल्क, अटन=

फिरना) पु० देश में फिरना,
सफर करना ।
सं० देशाधिपति (देश + अधिपति)
पु० देश का राजा, देश का स्वामी ।
सं० देशाधीश (देश + अधीश)
पु० देश का राजा, देश का स्वामी ।
सं० देशान्तर (देश = मुल्क, अन्तर =
दूसरा वा दूरी) पु० दूसरा देश,
विदेश, २ मध्याह्नरेखासे पूर्व अथवा
पश्चिमको किसी जगह की दूरी—
इंगलैंडके भूगोल जाननेवाले ग्री-
नच शहरसे और हिन्दुस्तान के
ज्योतिषी लङ्का से देशान्तर का
हिसाब करते हैं ।
सं० देशहितैषी क० पु० देश की
भलाई की इच्छा करनेवाला,
खैरख्वाह मुल्क ।
प्रा० देशी (सं० देशी) पु० देश का ।
सं० देशोन्नति (देश + उन्नति)
स्त्री० देश की बढ़ती, देश की वृद्धि,
मुल्क की तरक्की ।
सं० देह (दिह = बढ़ना) स्त्री० शरीर,
तन ।
प्रा० देहदुराना बोल० गुप्त अङ्गों
को ढकना ।
प्रा० देहसंभालना बोल० सचेत
होना, चैतन्य होना, ढारस रखना,
आपमें आना ।
सं० दोग्धा (दुह + दृ, दुह = दुहना)
क० पु० वत्स, बछड़ा, २ अहीर ।

सं० दोग्धी (दुह + दृ + ई) स्त्री०
धेनु, गौ, गाय ।
सं० देहत्याग (देह + त्याग) पु०
मरण, मौत, मीच, प्राणत्याग ।
प्रा० देहरा (सं० देवगृह) पु०
देवता का मन्दिर, देवल, ठाकुर-
द्वारा, देवालय ।
सं० देहली (देह = लेपन, लिह =
लेपना और ला = लेना) स्त्री०
दोनों किवाड़ों के बीच का काठ,
दिहली, दहलीज, २ फाटक,
द्वार, डेवड़ी ।
सं० देही (देह) क० पु० प्राणी,
जीवधारी ।
प्रा० देही (सं० देह) स्त्री०
देह, शरीर, तन ।
सं० दैत्य (दिति) पु० दिति के
बेटे, राक्षस, असुर ।
सं० दैत्यगुरु (दैत्य + गुरु) पु०
राक्षसों का गुरु, शुक्राचार्य ।
सं० दैत्यारि (दैत्य + अरि) पु०
विष्णु ।
सं० दैवज्ञ (दैव + ज्ञ = जानना)
क० पु० ज्योतिषी, नज्मी ।
सं० दैन्य भा० पु० दीनता, दुःखी-
पन, गरीबी, लाचारी, बेवसी ।
सं० दैनिक भा० पु० दिनका, रो-
जाना, रोज-रोज ।
सं० दैनिकवेतन पु० रोजकी मजदूरी ।
सं० दैव (देव = ईश्वर, अर्थात् ईश्वर

से आया हुआ, वा ईश्वर का)
 पु० भाग, प्रारब्ध, कर्म का फल,
 २ संयोग, ३ ईश्वर, विधाता,
 गु० ईश्वर का ।
 सं० दैवात् ((दैव) क्रि० वि०
 दैवी) संयोगसे, अचानक,
 एकाएकी, अकस्मात् ।
 सं० दैवानुरागी (दैव + अनुरागी)
 क० पु० ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर
 भक्त, खुदापरस्त ।
 सं० दैबिक गु० देवताओंसे, आस-
 मानसे ।
 सं० दैहिक गु० देहकी, शरीर की,
 जिस्मानी ।
 प्रा० दैहौं (देना) क्रि० स० दूंगा ।
 प्रा० दो (द्वि) गु० दूसरी संख्या,
 एक और एक, २ ।
 प्रा० दोऊ (सं० द्वौ) गु० दोनों ।
 प्रा० दोजीवा (सं० द्विजीवा, द्वि=
 दो, जीव=प्राणी) स्त्री० गर्भिणी,
 गर्भवती, पेटसे ।
 प्रा० दो जीसे होना बोल० पेट से
 होना, गर्भिणी होना ।
 प्रा० दोना (पु० पत्तों का बना
 दौना) हुआ बरतन जिस में
 तरकारी मिठाई आदि लेकर
 खाते हैं ।
 प्रा० दोनाली (सं० दिनाल) स्त्री०

दो नल की बन्दूक ।
 प्रा० दोनों (सं० द्वौ) गु० दोऊ, उभय ।
 प्रा० दोवे (सं० द्विवेदी, दो वेद
 जाननेवाला) पु० ब्राह्मणों की
 एक पदवी अथवा जाति ।
 सं० दोला (दुल्=भूलना) पु०
 हिंडोला, भूलना ।
 सं० दोलन (दुल् + अन) भा० पु०
 भूलना, पैंगना ।
 सं० दोलिका (दुल्=भूलना) स्त्री०
 भूला, हिंडोला ।
 सं० दोष (दुष्=दोषी होना) भा०
 पु० चूक, भूल, अवगुण, अप-
 राध, कसूर ।
 सं० दोषा स्त्री० रात्रि, रात ।
 प्रा० दोषना (दोष) क्रि० स०
 दोषलगाना, कलङ्क लगाना, दाग
 लगाना ।
 सं० दोषारोपण (दोष + आरो-
 पण, रूप=जमाना वा लगाना)
 भा० पु० दोषलगाना, कलङ्क
 लगाना, ऐबलगाना ।
 सं० दोषी (दोष) गु० पापी,
 अपराधी ।
 प्रा० दोसाद पु० नीचजाति जिस
 का धन्धा सुअर पालने का है ।
 सं० दोहता (सं० दौहित्र, दुहितृ=
 बेटी) पु० बेटी का बेटा, नाती,

दोहती=बेटी की बेटी, नतिनी ।
 प्रा० दोहना (सं० दोहन, दुह=दुहना) क्रि० स० दुहना, दूध खींचना ।
 सं० दोहनी (दुह=दुहना जिसमें) स्त्री० दूध दुहने का बरतन ।
 प्रा० दोहर (दो) स्त्री० दोहरा कपड़ा, २ मियान ।
 प्रा० दोहरा (दो) गु० दूना, पु० दोहा ।
 प्रा० दोहा (सं० द्विपदा) पु० दोपद का छन्द ४= मात्रा का छन्द प्रथम तृतीय चरण में तेरह २ और द्वितीय चतुर्थ चरण में ग्यारह २ मात्रा होती हैं ।
 प्रा० दौंगड़ा पु० भारी वर्षा ।
 प्रा० दौड़धूप भा० स्त्री० परिश्रम, मिहनत ।
 प्रा० दौड़धूपकरना बोल० बहुत मिहनत करना, परिश्रम करना ।
 प्रा० दौड़ना (सं० घोर=जोर से चलना) क्रि० अ० भागना, जल्दी से चलना, डपटना, चढ़ना ।
 प्रा० दौड़ादौड़ी बोल० धावाधावी हड़बड़ी, उतावली ।
 प्रा० दौड़ाहा (दौड़ना) गु० दौड़ने वाला, हलकारा, अगुवा, दूत ।
 प्रा० दौरी स्त्री० टोकरी, चंगेरी ।
 सं० द्युति (द्युत्=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति ।

सं० द्युतित (द्युत् + इत) क० पु० प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान् ।
 सं० द्युषत् (दिव् + सद्, दिव्=स्वर्ग, सद्=रहना) क० पु० स्वर्गस्थ, स्वर्गनिवासी, विहिश्त का रहनेवाला ।
 सं० द्यूत (दिव्=खेलना) पु० पाशा खेलना, जुआ ।
 सं० द्यूतकार (द्यूत=जुआ, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० जुवारी, जूआ देखनेवाला ।
 सं० द्यो (द्युत् + डो, द्यु + बिच्) क० पु० स्वर्ग, देवलोक ।
 सं० द्योत (द्युत् + अ) पु० प्रकाश, दीप्ति ।
 सं० द्योतक (द्युत्=चमकना) क० पु० चमकनेवाला, प्रकाश करने वाला ।
 सं० द्योतन (द्युत् + अन) भा० पु० प्रकाश करना, जाहिर करना, प्रकट करना ।
 प्रा० द्योरानी (सं० देवर) स्त्री० देवर की स्त्री ।
 सं० द्रव (द्रु=जाना) पु० रस, अर्क, २ वेग, गु० पिघला हुआ, बहता हुआ ।
 प्रा० द्रवना (सं० द्रव) क्रि० अ० पिघलना, २ कृपालु होना, कोमल चित्त होना ।
 सं० द्रविण पु० धन, रुपिया, पैसा ।

सं० द्रव्य (द्रु=जाना) पु० धन,
दौलत, २ सारवस्तु, पदार्थ, ३
न्याय में नौ प्रकार के द्रव्य हैं (१
धरती, २ पानी, ३ आग, ४ हवा,
५ आकाश, ६ समय, ७ दिशा,
८ आत्मा, ९ मन) ४ औषध, दवाई ।
सं० द्रष्टव्य (दृश्+तव्य, दृश्=
देखना) र्म० पु० देखनेयोग्य,
दर्शनीय, काबिलदीद ।
सं० द्रष्टा (दृश्+तृ) क० पु०
दर्शक, देखनेवाला, नाज़िर ।
सं० द्राक्षा (द्राक्ष्=चाहना) स्त्री०
दाख, अंगूर ।
सं० द्राघण (द्राघ्+अन, द्राघ्=आ-
याम वा श्रम) पु० श्रम, मेहनत ।
सं० द्राघित (द्राघ्+इत) र्म० पु०
श्रमित, थकित ।
सं० द्रावक (द्रु=बहना) क० पु०
द्रावी (बहनेवाला, पतला
होनेवाला) ।
सं० द्राव (द्रु=बहना, चलना)
भा० पु० बहाव, स्रवण, चाल,
अर्क, शहूद्राव ।
सं० द्रुत (द्रु=जाना) गु० जल्द,
तुरन्त, शीघ्र, झटपट ।
सं० द्रुम (द्रु=डाली, अर्थात् जि-
सके डालियाँ हों, द्रु=जाना) पु०
वृक्ष, पेड़, रूख, तरवर, तरु ।
सं० द्रुमारि (द्रुम+अरि) पु०
गज, हस्ती, कुठार, कुल्हाड़ा,

प्रचण्ड वायु, तेजहवा ।
सं० द्रुमेश्वर (द्रुम+ईश्वर) पु०
चन्द्रमा, तालवृक्ष, अश्वत्थवृक्ष,
पीपर ।
सं० द्रोण (द्रुण्=टेढ़ा करना, वा
द्रु=जाना) पु० द्रोणाचार्य जिसने
पाण्डवों और कौरवों को धनुष-
विद्या सिखलाई थी, २ चार आ-
दक का परिमाण अथवा आठसेर,
३ काला कौवा या डोम कौवा ।
सं० द्रोह (द्रुह्=बुरा चीतना) पु०
वैर, लाग, द्वेष, डाह, ईर्ष्या, विरोध ।
प्रा० द्रोहिया (सं० द्रोही) गु०
द्रोही, द्वेषी, वैरी ।
सं० द्रोही (द्रोह) गु० वैरी, द्वेषी,
विरोधी, द्रोहिया, डाही, दुष्ट ।
सं० द्रौपदी (द्रुपद) स्त्री० पञ्चाल
देश के राजा द्रुपद की बेटी और
पाँचों पाण्डवों की स्त्री ।
सं० द्रुन्ध्र (द्रौ द्रौ=दो दो) पु० जोड़ा,
युगल, २ कलह, झगड़ा, बखेड़ा,
३ व्याकरण में एक समास का
नाम, ४ रागद्वेष ।
सं० द्वादश (द्वि=दो, दश=दस)
गु० बारह, बारहवाँ ।
सं० द्वादशी (द्वादश) स्त्री० बार-
हवीं तिथि ।
सं० द्वापर (द्वि=दो, पर=पीछे, अ-
र्थात् दो के पीछे) पु० तीसरा युग
जो ८६४००० बरस का था ।

सं० द्वार (द्वृ=ढकना) पु० दर-
वाजा, किवाड़, २ राह, मार्ग,
उपाय, कारण ।

सं० द्वारका (द्वार=उपाय, अर्थात्
मोक्ष का उपाय जहाँ हो) स्त्री०
एकपुरीका नाम जिसको श्रीकृष्ण
ने समन्दर के तीर पर बसाई ।

सं० द्वारपाल (द्वार=दरवाजा, पाल
=खबर रखनेवाला) पु० डेवकी-
वान्, पौरिया ।

सं० द्वारा (द्वृ=ढकना) क्रि० वि०
कारण से, हेतु से, सहायता से,
मदद से ।

सं० द्वारावती (द्वार=मोक्ष का
द्वारका) उपाय जहाँ हो)
स्त्री० द्वारका, श्रीकृष्ण की पुरी ।

सं० द्विगुण (द्वि=दो, गुण=गुना
हुआ) गु० दूना, दुगुना, दोहरा ।

सं० द्विज (द्वि=दोवार, जन्=पैदा
होना) गु० दोवार जन्मा हुआ
पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य
इन तीन वर्णों के मनुष्यों को
द्विज कहते हैं क्योंकि ये एक बार
तो अपनी मा के गर्भ से पैदा
होते हैं और दूसरी बार यज्ञोपवी-
तादि संस्कार से, जैसे स्मृति में
लिखा है कि “ जन्मना जायते
शूद्रः संस्कारैर्द्विज उच्यते ” अर्थ-
जन्मसे शूद्र पैदा होता है और सं-
स्कार से द्विज कहलाता है, और

भी “ मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं
मौञ्जिवन्धनम् ” अर्थ-एक बार
मा के गर्भ से पैदा होना और
दूसरीवार मौञ्जीबन्धन संस्कार
से, २ दाँत, ३ पक्षी आदि अण्डे
से पैदा होनेवाले जीव ।

सं० द्विजराज (द्विज=ब्राह्मण,
राजन्=राजा) पु० चन्द्रमा, चाँद,
गरुड़, विम, शिव ।

सं० द्विजाति पु० द्विजशब्दको देखो ।

सं० द्वितीय (द्वि=दो) गु० दूसरा,
दूजा ।

सं० द्विधा (द्वि=दो, धा=प्रकार)
क्रि० वि० दो प्रकारसे, दो तरहसे ।

सं० द्विप (द्वि=दोसे, पा=पीना, हाथी
पहले अपनी शुण्ड में पानी भर
कर फिर अपने मुँह में उतारता है)
पु० हाथी, गज, वृक्ष, नागकेशर ।

सं० द्विपद् (द्वि=दो, पद्=चलना)
पु० मनुष्य, राक्षस, देवता, दो
पैर से चलनेवाले ।

सं० द्विपायिन् (द्वि=दो, पा=पीना)
पु० हस्ती, गज ।

सं० द्विविद (द्वि=दो, विद्=जानना)
पु० एक वानर का नाम ।

सं० द्वीप (द्वि=दोनों ओर, आप=
पानी, अर्थात् जिसके सब ओर
पानी हो) पु० धरती का वह बड़ा
टुकड़ा जिसके चारों ओर पानी
हो, हिन्दुओं के शास्त्र में सात द्वीप

लिखे हैं और हर एक दीप एक एक समुद्र से घिरा है, सातों दीपों के नाम, १ जम्बूदीप, २ कुश, ३ लक्ष, ४ शाल्मली, ५ क्रौञ्च, ६ शाक, ७ पुष्कर ।
 सं० द्वीपिन् पु० व्याघ्रभेद, चीता, गुलबघा ।
 सं० द्विरेफ पु० भ्रमर, मधुप, भौरा ।
 सं० द्वेष (द्विप्=वैरकरना) पु० द्रोह, वैर, ईर्ष्या, शत्रुता, अदावत, दुश्मनी ।
 सं० द्वेषक (द्विप् + अक) क० पु० वैरी, द्रोही, शत्रु, दुश्मन ।
 सं० द्वेषी (द्वेष) क० पु० वैरी, विरोधी, शत्रु, द्रोही ।
 सं० द्वेष्टा क० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।
 प्रा० द्वै (सं० द्वौ) गु० दो ।
 सं० द्वैधीभाव भा० पु० तोड़ फोड़, लड़ाई, झगड़ा, आपस की ना-इत्तिफाकी ।
 सं० द्वैपायन पु० व्यासजी ।
 सं० द्वैमातुर पु० गणेश, जरासन्ध, जो दो माताओं से उत्पन्न हो ।
 ध
 सं० ध (धा=रखना, वा धे=पीना) पु० धर्म, २ कुबेर, ३ ब्रह्मा, ४ धन ।
 प्रा० धन्धक पु० काम करनेवाला,

उद्यमी ।
 प्रा० धन्धा पु० काम काज, पेशा, उद्यम, कार्य, व्यवहार ।
 प्रा० धन्धारी (धन्धा + अरी=शत्रु) शिथिल, उदासी, ढीला, पेशा न करनेवाला ।
 प्रा० धँसना क्रि० अ० पैठजाना, गड़जाना, घुसजाना ।
 प्रा० धकधकी स्त्री० कँपकँपी, धड़क, थरथरी, धड़धड़ाहट, घबराहट, हड़बड़ी ।
 प्रा० धकधकाना क्रि० अ० काँपना, धड़कना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना ।
 प्रा० धकेलना क्रि० सं० ढकेलना, रेलना, धक्कादेना, ठेलना, हूलना, पेलना ।
 प्रा० धकेलदेना बोल० ढकेलना, धक्का देना, भोंकादेना ।
 प्रा० धक्का पु० ढकेल, ठेल, भोंक, रोला, रेल, टकर, हूल ।
 प्रा० धक्कादेना बोल० ढकेलना, ठेलना, रेलना, पेलना, भोंकना, हूलना ।
 प्रा० धक्कमधक्का बोल० ठेलाठेली, रेलपेल, ठेजमठेल, कशमकश ।
 प्रा० धज (सं० ध्वज, ध्वज्=जाना) स्त्री० रूप, डौल, आकार, चाल-ढाल, रविश, आन, दशा, अवस्था, सजधज, वज्र ।

प्रा० धजा (सं० ध्वजा) स्त्री० पताका,
भंडा ।

प्रा० धजीला गु० सुडौल, सजीला,
स्वरूपवान्, सुन्दर ।

प्रा० धज्जी (सं० ध्वज) स्त्री० कपड़े
का अथवा कागज का टुकड़ा, लीर,
कतरन, काटन, टुकड़ा ।

प्रा० धज्जियाँ उड़ाना बोल० बद-
नाम करना, बातों से हराना ।

प्रा० धज्जियाँ करना बोल० टुकड़े
टुकड़े करना ।

प्रा० धड़ (सं० धृ=रखना) स्त्री०
धर } बिनशिर की देह, रण्ड,
शरीर, काया ।

प्रा० धड़क (धड़कना) स्त्री० धड़-
धड़ाहट, धुकधुकी, फड़क, थरथ-
राहट, २ डर, भय ।

प्रा० धड़कना क्रि० अ० काँपना,
धुकधुकाना, धकधकाना, थरथराना,
धड़धड़ाना, फड़कना, मारना ।

प्रा० धड़का पु० डर, संदेह, दुविधा,
२ कँपकँपी, धड़क, धड़धड़ाहट, ३
कड़क, गर्ज ।

प्रा० धड़काना क्रि० स० डराना,
भयदिखाना, काँपाना, दहलाना ।

प्रा० धड़धड़ाना क्रि० अ० धड़-
कना, काँपना ।

प्रा० धड़क्का पु० ठनक, ठोकने की
आवाज, २ डर, दहलना, ३ भीड़ ।

प्रा० धड़ा पु० जत्था, समूह, तरफ,

ओर, पक्ष, २ तौल, जोख ।

प्रा० धड़ाका पु० कड़क, धमक,
शब्द, आवाज ।

प्रा० धड़ी स्त्री० पाँच सेर की तौल ।

प्रा० धत स्त्री० हाथी चलाने का
शब्द, दुदकारना, हिकारत करना ।

प्रा० धतूरा (सं० धतूर, धा=रखना
धातुओं को) पु० एक प्रकार का
पौधा, कनक ।

प्रा० धतूरिया (धतूरा) गु० बली,
बहुरूपिया ।

प्रा० धधकना (सं० दहन) क्रि०
अ० भभकना, बरना ।

प्रा० धधच्छुर (सं० दग्धाक्षर=
दधच्छुर) जलाने वाले अ-
क्षर) पु० कविता में वे अक्षर
जिनको कवि अशुभ गिनते हैं
(जैसे (ह, ग, न) कविता के
शुरूअ में, (र, ज, स) बीच में
और (क, ट, झ) अक्षर कवित्तके
अन्त में अशुभ गिने जाते हैं) ।

सं० धन (धन्=पैदा होना) पु०
दौलत, द्रव्य, लक्ष्मी, सम्पत्ति,
सम्पदा, २ गणित में जोड़ का
चिह्न + ।

प्रा० धनक पु० जड़ाव, कारचोबी ।

सं० धनञ्जय (धनम्=दौलत को,
जि=जीतना) पु० अर्जुन का नाम,
२ आग, ३ एक वृक्ष का नाम ।

सं० धनतृष्णा (धन + तृष्णा) स्त्री०

धनका लालच, धनकी लालसा,
लोभ ।
प्रा० धनस्तर गु० धनी, धनवान्,
अड़ियल, सेठ, कोठीवाल ।
सं० धनद (धन=दौलत, दे=पाल-
ना, दा=देना) पु० कुबेर, धनपति,
गु० दातार, उदार, धन देनेवाला ।
सं० धनपति (धन + पति) पु०
कुबेर, धनका देवता ।
सं० धनवन्त { (धन=दौलत, वत्=
धनवान्) वाला) गु० धनी,
दौलतमन्द, मालदार, धनिक,
लक्ष्मीवान्, धनाढ्य ।
सं० धनहीन (धन + हीन) गु०
मुफलिस, निर्धन, दरिद्र, कंगाल,
गरीब ।
सं० धनाढ्य (धन=द्रव्य, आढ्य=
युक्त) गु० धनवान्, धनी, मालदार ।
सं० धनाधार धि० पु० धनागार,
भण्डार, खजाना रखनेका मकान ।
सं० धनाधिप (धन + अधिप)
पु० कुबेर ।
सं० धनाध्यक्ष (धन + अध्यक्ष) पु०
कुबेर, २ खजानची, भण्डारी ।
सं० धनान्ध (धन + अन्ध) गु०
धन से अन्धा, धनके मद से घ-
मण्डी, धनगर्हित ।
सं० धनार्थी (धन + अर्थी) गु०
लोभी, लालची, कृपण ।
सं० धनाशा (धन + आशा) स्त्री०

धनेच्छा, धनकी चाह ।
प्रा० धनासरी (सं० धनेश्वरी)
स्त्री० एक रागिणी का नाम, एक
छन्द का नाम ।
सं० धनिक (धन) गु० धनवान्,
धनी, पु० महाजन, उधार देने
वाला ।
प्रा० धनियाँ पु० एक मसाला ।
सं० धनिष्ठा (धन्=पैदाहोना) स्त्री०
चौबीसवें नक्षत्र का नाम ।
सं० धनी (धन) गु० धनवान्,
दौलतमन्द, मालदार, लक्ष्मीवान्,
पु० मालिक, स्वामी, अधिकारी,
पति ।
प्रा० धनु { (सं० धनुष्) पु०
धनुक } कमान, चाप ।
प्रा० धनुकधारी (सं० धनुर्धारी)
पु० तीरन्दाज, कमठैत ।
सं० धनुस् { (धन्=शब्द करना)
धनुष् } पु० धनुक, कमान,
चाप, २ ज्योतिष में नवीं राशि ।
सं० धनुर्धर (धनुष्=कमान, धृ=
रखना) क० पु० कमान चढ़ाने
वाला, धनुर्धारी, तीरन्दाज,
कमठैत ।
प्रा० धनुटंकार (सं० धनुष्टकार)
पु० कमान के चिल्ले का शब्द,
रोदा की आवाज ।
सं० धनुर्विद्या (धनुष् + विद्या)
स्त्री० तीर चलाने की विद्या

तीरन्दाजी, बाणचलाना ।
 सं० धनेश { (सं० धन + ईश वा
 धनेश्वर) ईश्वर) पु० कुबेर,
 धनाधिप ।
 प्रा० धनेसा (सं० धनेश) पु०
 कुबेर ।
 प्रा० धन्नासेठ { (सं० धनश्रेष्ठ)
 धनासेठ } गु० बहुत धनवान्,
 कृतार्थ, धनका घमण्ड ।
 सं० धन्य (धन) गु० सराहने योग्य,
 भाग्यवान्, श्रीमान्, वि० वो०
 शाबाश, वाहवाह, धन, प्रशंसा
 को जतलानेवाला शब्द ।
 प्रा० धन्यमानना { बोल० धन्य-
 धनमानना } वाद करना,
 उपकार मानना ।
 सं० धन्यवाद (धन्य, वद्=कहना)
 पु० सराह, स्तुति, आशिष्, शुक्र-
 गुजारी, अहसानमन्दी ।
 सं० धन्वन्तरि (धन्वन्=वैद्यकशास्त्र
 वा शिल्पशास्त्र, री=जाना अर्थात्
 वैद्यक शास्त्र के पार जानेवाला)
 पु० समुद्र गन्धने के समय उसमें से
 प्रकट देवताओं का वैद्य जो हुआ,
 २ एक पण्डित का नाम जो विक्र-
 मादित्य की सभा में था ।
 सं० धन्वी (धन्वा=धनुष्, धन्व=
 दौड़ना) धनुर्धर, तीरन्दाज, कम-
 डैत, धनुर्धारी ।
 प्रा० धन्वा पु० कपड़े पर दाग ।

प्रा० धमक स्त्री० पाँव की आहट,
 २ ताड़न ।
 प्रा० धमका पु० भारी चीज के
 गिरने का शब्द, २ भिड़की, ३
 बड़ी धूप वा गरमी ।
 प्रा० धमकाना क्रि० सं० भिड़कना,
 डाँटना, डराना, घुड़कना ।
 प्रा० धमकाहट { स्त्री० भिड़की,
 धमकी } घुरकी, डाट,
 भवकी ।
 सं० धमनी (धम् + अन् + ई, धम
 =चलना वा शब्द करना) स्त्री०
 नाड़ी, नाटिका, नब्ज, रग ।
 प्रा० धमाका पु० एकतरहकी तोप
 जो हाथी पर लेजाई जाती है ।
 प्रा० धमाल स्त्री० ताल, २ एक
 तरह का गीत जो होली में गाया
 जाता है ।
 सं० धरण (धृ=रखना) स्त्री० कड़ी,
 वरंगा, २ नाभी, अथवा नाभी में
 की नस ।
 सं० धरणा स्त्री० पृथिवी, धरती ।
 प्रा० धरणडिगना { बोल० नाभ
 धारणउखड़ना } टलना, पेट
 की रग बिगड़ना ।
 सं० धरणि { (धृ=रखना, वा पक-
 धरणी } डना) स्त्री० धरती,
 पृथ्वी, जमीन ।
 सं० धरणिधर { (धरणि, वा धर-
 धरणीधर } स्त्री० धरती, धर=

रखनेवाला, धृ=रखना) पु०
 शेषजी, अनन्त, २ विष्णु का
 नाम, ३ पहाड़, ४ कछुवा ।
 सं० धरणीसुता (धरणी=धरती,
 सुता=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी ।
 प्रा० धरती (सं० धरित्री) स्त्री०
 पृथ्वी, धरणी, भूमि ।
 प्रा० धरना (सं० धरण, धृ=रखना,
 पकड़ना) क्रि० स० रखना, रख
 देना, २ सौंपना, ३ पकड़ना,
 पकड़ लेना, गहना ।
 प्रा० धरनादेना (जब कोई मनुष्य
 धरनाबैठना) किसी से रुपये
 माँगता हो और वह नहीं दे तब
 रुपये माँगनेवाला उसके दरवाजे
 पर आ बैठता है और जबतक
 उसके रुपये का कुछ निवेड़ा नहीं
 होता तबतक न आप कुछ खाता
 है और न उसको खाने देता है
 उसको धरना देना वा धरना
 बैठना कहते हैं ।
 प्रा० धरषना (सं० धर्षण, धृष्=
 क्रोध करना वा अनादर करना)
 क्रि० स० दबाना, क्रोध करना ।
 सं० धरा (धृ=रखना) स्त्री० धरती,
 पृथ्वी, धरणी, जमीन ।
 सं० धरातल (धरा + तल) स्त्री०
 पृथ्वी का तल, भूतल, तह जमीन ।
 सं० धराधर (धरा=धरती, धर=
 धारण करनेवाला, धृ=रखना) पु०

वराहरूप विष्णु, २ पहाड़, शेषनाग ।
 सं० धरित्री (धृ=रखना) स्त्री०
 धरती, पृथ्वी, जमीन ।
 प्रा० धरोहर (धरना) स्त्री० गिरो,
 थाती, अमानत, बन्धक ।
 सं० धर्ता पु० ऋणी, धारणिक,
 कर्जदार ।
 सं० धर्म (धृ=रखना) पु० पुण्य,
 पवित्र, काम, न्याय, नेकी, २ पन्थ,
 मत, मजहब, जाति व्यवहार, ३
 कानून, व्यवस्था, ४ कर्तव्य कर्म,
 करने योग्य काम, ५ यमराज ।
 सं० धर्मक्षेत्र (धर्म + क्षेत्र) पु०
 पवित्र जगह, कुरुक्षेत्र ।
 सं० धर्मज्ञ (धर्म + ज्ञ=जाननेवाला,
 ज्ञा=जानना) क० धर्मात्मा, धर्म-
 ज्ञानी ।
 सं० धर्मधुरन्धर (धर्म=पुण्य, धुर-
 न्धर=बोझा उठानेवाला) गु० धर्म
 के काम में प्रधान, धर्मात्मा ।
 सं० धर्मध्वजी (धर्म=पुण्य, ध्वजी
 =ध्वजावाला) गु० पाखण्डी,
 कपटरूप जो जीविका के लिये
 जटा आदि बड़ा लेता है ।
 सं० धर्मपत्नी (धर्म + पत्नी) स्त्री०
 पहली स्त्री जो एकही जाति की
 हो और धर्म की रीति से ब्याही
 जाय ।
 सं० धर्मपुत्र (धर्म=धर्मराज, पुत्र
 =बेटा) पु० युधिष्ठिर ।

सं० धर्ममूर्ति (धर्म + मूर्ति) पु०
धर्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार ।

सं० धर्मराज (धर्म = न्याय, राज = राजा, राज = शोभना, अर्थात् जो धर्म से सोहता है अथवा धर्म का राजा) पु० यमराज, २ युधिष्ठिर का नाम, ३ न्यायी राजा ।

सं० धर्मशाला (धर्म + शाला)
धि० स्त्री० वह मकान जहाँ गरीबों को खैरात बाँटी जाती है, २ विचारस्थान, न्याय करने की जगह, कचहरी ।

सं० धर्मशास्त्र (धर्म + शास्त्र) पु०
व्यवस्थाशास्त्र, कानून की किताब जैसे “ मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप और वसिष्ठ ” ये धर्मशास्त्रके प्रवर्तक हैं ।

सं० धर्मशील (धर्म + शील = स्वभाव) गु० साधु, पुण्यवान्, धर्मात्मा, नेक ।

सं० धर्मशीलता भा० पु० साधुता, नेकी, धर्मकी प्रकृति ।

सं० धर्मात्मा (धर्म + आत्मा)
गु० पवित्र मनुष्य, साधु, नेक, पुण्यात्मा ।

सं० धर्माधिकरण पु० जज ।

सं० धर्माध्यक्ष (धर्म = न्याय, अध्यक्ष = स्वामी) पु० न्यायी, न्याय करनेवाला, मजिस्ट्रेट, जज ।

सं० धर्मनिष्ठ (धर्म + निष्ठ) धर्म में धर्मरत } ठहरा हुआ, धर्म में तत्पर, धर्म पर आरुढ़ ।

सं० धर्मावतार (धर्म + अवतार)
पु० धर्म का अवतार, धर्मस्वरूप, धर्ममूर्त ।

सं० धर्मिष्ठ (धर्म) गु० पुण्यवान्, धर्मी } न्यायी, साधु, धर्मात्मा, नेक ।

सं० धव (धु वा धू = कँपाना) पु० पति, स्वामी, भर्ता, २ एक वृक्ष का नाम ।

सं० धर्ष (धृष् = क्रोध करना) पु० प्रगल्भ, धृष्ट ।

सं० धर्षक (धृष् + अक) क० पु० साहसी, दिलेर, धैर्यवान् ।

सं० धर्षण भा० पु० दिलेरी करना, साहस करना ।

सं० धवल (धाव = शुद्ध करना, वा धव = कँपाना और ला = लेना) गु० धौला, श्वेत, सफेद, २ सुन्दर, पु० शुक्लवर्ण, धौलारङ्ग, ३ एक वृक्ष का नाम ।

प्रा० धसकना क्रि० अ० गड़ना, धस जाना, गिरना, पड़ना, बैठ जाना ।

प्रा० धसना क्रि० अ० खुबना,

चुभना, छिदना, २ गड़ना, कीचड़
 में पाँव दूब जाना, धस जाना ।
 प्रा० धसान (धसा) पु० दलदल,
 धसाव (पाँका) ।
 प्रा० धाँगर पु० किसान, कुली ।
 प्रा० धाँधना क्रि० सं० भखना,
 भकोसना, अफरना ।
 प्रा० धाँधल स्त्री० नटखटी, भगड़ा,
 बेईमानी, लुट्टस, लूट ।
 प्रा० धाँसना क्रि० अ० खाँसना,
 खोखना ।
 प्रा० धाँसी स्त्री० खाँसी, खोखी ।
 प्रा० धाई (सं० धात्री) स्त्री०
 धाय (लड़के को दूध पिलाने
 वाली, दाई) ।
 प्रा० धाक स्त्री० डर, भय, धमकी,
 आतङ्क, २ ठाठ, धूमधाम, ३ नाम,
 यश, कीर्ति ।
 प्रा० धागा पु० डोरा, तागा, सूत ।
 प्रा० धान (सं० धातु) स्त्री० धातु
 शब्द को देखो ।
 सं० धाता (धा=रखना, पालना)
 पु० ब्रह्मा, विष्णु, क० पालने
 वाला ।
 सं० धातु (धा=रखना) स्त्री० मनुष्य
 के शरीर का सार अंश, जैसे (वात-
 पित्त-कफ) २ बीज, वीर्य, ३
 सोना, रूपा, ताँबा आदि खानि
 से निकली हुई चीज, ४ व्याकरण
 में शब्दों का मूल अर्थात् ऐसा

शब्द जिससे क्रिया आदि शब्द बनें ।
 सं० धातुविलेपक (धातु=राँगा,
 पारा, विलेपक=लेप करनेवाला)
 क० पु० कलईसाज, कलईगर ।
 सं० धात्री (धा=पालना) स्त्री०
 धाय, दाई, २ मा, माता, ३
 आँवला ।
 प्रा० धान (सं० धान्य) पु० बिन
 कूटा चावल ।
 प्रा० धाना (सं० धावन, धाव=
 धावना) जाना) क्रि० अ०
 दौड़ना, जल्दी से चलना, २ परि-
 श्रम करना, ३ (सं० ध्यान)
 पूजना, अर्चना, आराधना करना ।
 प्रा० धानी (धान) स्त्री० एक प्रकार
 का बिन कूटा चावल, २ हलका
 हरा रंग ।
 सं० धान्य (धा=पोपना, पालना,
 जिससे शरीर का पोषण होता है)
 पु० सब प्रकार का अनाज, पर
 विशेष करके बिन कूटा चावल,
 धान ।
 प्रा० धाभाई (सं० धात्रीभ्राता)
 पु० दूधभाई, कोकी ।
 सं० धाम (धा=धारण करना, रख-
 ना) पु० घर, स्थान, गेह, मकान,
 मसकन, जगह ।
 प्रा० धायमारना (बोल० पुकारके
 धायमाररोना) रोना, हाय मार
 के रोना ।

प्रा० धार (सं० धारा, धृ=पकड़ना वा गिरना) स्त्री० लकीर, २ बहाव, सोता, प्रवाह, ३ नोक, तीखी अनी, ४ व्रीक्षणता, बाढ़, चोखाई ।

प्रा० धारमारना } बोल० तुच्छ
धारपरमारना } जामना, हल-
का जानना ।

सं० धारक (धृ=रखना) क० पु०
ऋणी, मकरुज, उधरहा ।

सं० धारण (धृ=रखना) भा० पु०
पकड़ना, रखना, सँभालना, सहा-
रना ।

प्रा० धारना (सं० धारण) क्रि०
संस्मरण, चेत, याददाश्त रखना,
पकड़ना, २ पहनना ।

सं० धारा (धृ=गिरना) स्त्री० बहाव,
प्रवाह, सोता, चश्मा ।

सं० धारावाहिक (धारा + वाहिक,
वह=चलना) क० पु० परम्परा-
गतिक, कदीम राहपर चलनेवाला ।

सं० धारासार पु० भारी वर्षा ।

प्रा० धारि स्त्री० सेना, फौज ।

प्रा० धारी (सं० धारा) स्त्री० ल-
कीर, रेखा, २ एक पौधे का नाम
गु० रखनेवाला, धरनेवाला ।

सं० धार्मिक (धर्म) गु० धर्मात्मा
धर्मिष्ठ, पुण्यवान्, साधु, पु-
ण्यात्मा ।

सं० धार्य (धृ=धरना) र्म० पु०
धरने योग्य, लेनेलायक ।

सं० धावक (धाव्=दौड़ना) क०
पु० दूत, दौड़ाहा, चलनेवाला,
क्रासिद ।

सं० धावन (धाव्=दौड़ना) पु०
जाना, दौड़ना, गमन, २ दौड़ाहा,
दूत ।

सं० धावमान गु० दौड़ता हुआ,
भागता हुआ ।

प्रा० धावा (सं० धावन) पु० दौड़,
चढ़ाई, हल्ला, हमला ।

प्रा० धावामारना बोल० चढ़ाई
करना, छापा मारना, हमला
करना ।

प्रा० धाह स्त्री० हाय, कूक, चिंघार ।

सं० धिक् वि० बो० फिट, छी छी,
निन्दा को जतलानेवाला शब्द ।

सं० धिक्कार (धिक्=छी छी, कु=
करना) पु० फिटकार, तिरस्कार,
शाप, छी छी, लज्जनत ।

प्रा० धिक्कारना (सं० धिक्कारण)
क्रि० सं० फिटकारना, तिरस्कार
करना, लज्जनत देना ।

प्रा० धिया (सं० धी) स्त्री० बेटी ।

प्रा० धिरकार (सं० धिकार) पु०
धिकार, फिटकार, अपमान ।

सं० धी (ध्यै=सोचना) स्त्री० बुद्धि,
मति, अक्ल, ज्ञान, २ बेटी, पुत्री ।

सं० धीमत गु० अक्लमन्द, बुद्धिमान् ।

प्रा० धीमा } (सं० धीर) गु० ढीला,
धीरा } धीरा, सुस्त, आलसी,

काहिल, २ कोमल, शान्त, ठण्ढा,
स्थिर, गम्भीर ।

प्रा० धीमे धीमे क्रि० वि० बोल०
धीरे-धीरे, हौले-हौले, आहिस्ता-
आहिस्ता ।

सं० धीमान् (धी=बुद्धि, मत्=वाला)
गु० बुद्धिमान्, चतुर, निपुण,
अकलमन्द ।

सं० धीर (धी=बुद्धि, रा=लेना)
गु० धीरज रखनेवाला, साहसी,
धीर, स्थिर, क्षमावान्, संतोषी,
साविर, गम्भीर, शान्त, बुद्धि-
मान्, पण्डित ।

प्रा० धीरज (सं० धैर्य) स्त्री०
साहस, स्थिरता, सहनशीलता,
बरदाश्त, सत्र, संतोष, धीरता,
गम्भीरता, दृढ़ता ।

सं० धीवर (धा=रखना, वा पक-
ड़ना) पु० मछुवा, कैवर्त, मछली
पकड़नेवालों की जाति ।

प्रा० धुआँ (सं० धूम) पु० धुआँ,
धुवाँ } धूम, भाफ, २ मरण,
मरना, जैसे “धुवाँ देखि खर-
दूषण केरा, जाइ सुपनखा
रावण प्रेरा” ।

प्रा० धुकड़पुकड़ } स्त्री० धड़क,
धुकड़पुकड़ } थरथराहट, ध-
ड़धड़ाहट, हिलाव डुलाव ।

प्रा० धुकधुकी स्त्री० लटकन, गलेमें
पहनने का गहना, २ घबराहट,

हड़बड़ी, व्याकुलता, सोच ।

सं० धुत्त (धु=कँपना) क० पु०
कम्पित, भीत, डराहुआ ।

प्रा० धुत्ता (सं० धूर्त्ता) पु०
धोखा, छल ।

प्रा० धुत्तादेना बोल० धोखादेना,
फरेव करना, छलना ।

प्रा० धुन (सं० ध्यान) स्त्री० इच्छा,
चाह, लहर, तरङ्ग, लौ, अभ्यास ।

प्रा० धुन } (सं० ध्वनि) स्त्री० शब्द,
धुनि } आवाज, स्वर, नाद ।

प्रा० धुनिया (धुन्ना) पु० रूई
तूमनेवाला, नद्दाफ ।

प्रा० धुन्ना } (सं० धुनना, धु=कॉ-
धुनना } पना) क्रि० स० तूमना,
रूई को सुधारना, २ हिलाना,
कँपाना, पीठना, सिरधुनना, बोल०
दुख से सिर हिलाना या पीठना ।

सं० धुर (धृ=रखना, वा धुर्व=मार-
ना) पु० बोझा, भार, २ जूवा,
३ अन्त, किनारा ।

प्रा० धुर पु० आरम्भ, शुरुआत, २
अवधि, अन्त ।

प्रा० धुरसेधुरतक बोल० आदिसे
अन्ततक ।

सं० धुरन्धर (धुरम्=भार को, धृ=
रखना) क० बोझ उठानेवाला,
२ भारवाहक संतोष के साथ काम
पूराकरनेवाला, ३ मुखिया, प्रधान,
सरदार ।

प्रा० धुरपद (सं० ध्रुवपद) पु०
एक प्रकार का गीत ।

सं० धुरा (धृ=धरना) स्त्री० चिन्ता,
भार, रथ की धुरी ।

प्रा० धुरी (सं० धुरा, धृ=रखना,
वा धुर्वे=मारना) स्त्री० गाड़ी के
पहिये का लोहे का डंडा ।

सं० धुरीण (धुर=बोझ) क० पु०
धुरन्धर, बोझ उठानेवाला, २
प्रधान, मुखिया, बैल, रथ, वृषभ,
लौंगला अर्थात् बंब ।

सं० धुर्य (धुर=बोझ) क० पु०
धुरन्धर, बोझ उठानेवाला, २
प्रधान, सरदार ।

प्रा० धुलाई (धुलाना) भा० स्त्री०
कपड़े धोने की मजदूरी ।

प्रा० धुलाना (धोना) क्रि० स०
धुवाना, कपड़े साफ कराना ।

प्रा० धुलेंड़ी) स्त्री० होली का दूसरा
धुलेंड़ी) दिन जिसमें धूल
उड़ाते हैं ।

प्रा० धुस्सा पु० लोई, एक प्रकार
का ऊनी कपड़ा ।

प्रा० धूआँ) (सं० धूम) पु० धुवाँ
धूवाँ) धूम, धूम्र, भाफ ।

प्रा० धूवाँधार (सं० धूमाधार) पु०
बहुत धुवाँ, गु० धुवाँसा, हराया,
भगाया, २ सुन्दर, सँवारा हुआ,
शोभित ।

प्रा० धूवारा (सं० धूम) पु० धुएँके

निकलने का मोखा अथवा राह ।

प्रा० धूनी (सं० धूम) स्त्री० धुवाँ
२ आग जिसको तपस्वी तपस्या
करनेके लिये जलाते हैं, ३ किसी
दवाको आग पर रखकर उसका
धुवाँ पिलाना वा भूत प्रेत भाड़ने
के समय किसी चीज को आगपर
रखकर उसको महक सुँघाना, ४
किसी चीज के माँगने के लिये
आग जला कर धरनादेना ।

प्रा० धूनीदेना बोल० धरनादेना,
बार बार माँगना, २ धुवाँ, आग
सुलगाना, पिलाना ।

प्रा० धूनीलगाना बोल० हठ करना
अथवा बराबर माँगना करना ।

प्रा० धूनीलेना बोल० धुवाँ पीना,
बफारा लेना ।

सं० धूप (धूप=तपना, वा चमकना,
वा महकना) पु० गूगल और
लोबान आदि सुगन्धित वस्तु
जिसको पूजा के समय देवता के
आगे आग पर रखते हैं ।

प्रा० धूप (सं० धूप=तपना) स्त्री०
घाम, तपिश ।

सं० धूम (धू=काँपना) पु० धुवाँ,
भाफ ।

प्रा० धूम स्त्री० रौला, बखेड़ा, को-
लाहल, हलचल, खड़बड़ी, हाहू,
चर्चा, शोहरत, नामवरी ।

सं० धूमकेतु (धूम=धूआँ, केतु=

भंडा) पु० पूंछलतारा, २ आग,
३ केतु, ४ एक राक्षस का नाम ।
प्रा० धूमधाम स्त्री० भड़क, शोभा,
ठाठ बाट, २ हूहा, रौला, कोला-
हल, भीड़भाड़ ।
सं० धूमयन्त्र रेलका-एंजन ।
प्रा० धूमरा) (सं० धूम्र वा धूम्रल,
धूमला) धूम=धुँवाँ, रा=लेना)
धूमा) गु० धूँँ सा रंग लाल
और काला मिला हुआ ।
सं० धूमवाहनी (धूम + वाहनी)
स्त्री० रेल, रेलका एंजन ।
प्रा० धूर) (सं० धूलि) स्त्री० धूल,
धूल) खाक, रेत, रज, रेणु ।
प्रा० धूर स्त्री० बिस्वे का बीसवाँ
हिस्सा, बिस्वांसी ।
सं० धूर्जटि (धूर्=बोझ, जटि वा
जटा=केशों का समूह) पु० शिव
का नाम, जटाधारी ।
सं० धूर्त (धूर् वा धूर्त=मारना,
हानि पहुँचाना) क० नटखट,
बली, फरेबी, मक्कार, कपटी, ठग,
उचका, दुष्ट, हानि पहुँचानेवाला ।
सं० धूर्तता (धूर्त) भा० स्त्री० नटखटी,
मक्कारी, फरेब, ठगई, बल कपट ।
सं० धूलि) (धू=काँपना) स्त्री०
धूली) धूर, धूल, रज, रेत, रेणु ।
सं० धूसर (धू=काँपना) गु० कबरा,
भूरा, धुँधला, खाकी, मिटिया ।
सं० धृत (धृ=रखना) र्म्भ० पु०

धारण किया हुआ, रक्खा हुआ,
पकड़ा हुआ ।
सं० धृतराष्ट्र (धृत=रक्खा है, राष्ट्र
=राज्य, जिसने) पु० दुर्योधनका
बाप और पाण्डवों का चचा ।
सं० धृति (धृ=रखना) स्त्री० धी-
रज, सन्तोष, स्थिरता, मजबूती,
धैर्य, इस्तकलाल ।
सं० धृतिमान् गु० बुद्धिमान्, मति-
मान्, अक्लमन्द ।
सं० धृतिसंख्या गु० अठारह, दश
और आठ ।
सं० धृष्ट (धृष्=ढीठ होना) क० पु०
ढीठ, धीठ, साहसी, २ निर्लज्ज,
३ मगरा, मचला, गुस्ताख ।
सं० धृष्टता भा० स्त्री० ढिठाई,
शोखी, साहसपन, गुस्ताखी ।
सं० धृष्टु क० पु० ढीठ, साहसी,
शोख, २ निर्लज्ज ।
प्रा० धेगामुष्टि स्त्री० बोल० धूँसम-
धूँसा, धक्कमधक्का, मुक्कममुक्का ।
सं० धेनु (धे=पीना, जिसका दूध
आदि पीते हैं वा जो अपने बच्चों
को दूध पिलाती है) स्त्री० गाय,
दूध देनेवाली गाय ।
सं० धेनुक (धेनु) पु० एक राक्षस
का नाम ।
सं० धेनुमती (धेनु=गाय, मती=वाली)
स्त्री० गोमती नदी ।
प्रा० धेला पु० आधा पैसा,

(अधेला शब्द को देखो) ।

सं० धैर्य (धीर) स्त्री० धीरज,
स्थिरता, दिलेरी, हिम्मत ।

प्रा० धोक स्त्री० देवता की मूर्त के
सामने झुकना, दण्डवत् प्रणाम ।

प्रा० धोकड़ गु० महाबली, बलवान्,
पराक्रमी, पहलवान, ताकतवर ।

प्रा० धोखा पु० छल, कपट, दगा,
ठगई, २ चूक, भूल, भ्रम, निराश,
३ संदेह, ४ मृगतृष्णा, कोई
कल्पित वस्तु ।

प्रा० धोखाखाना बोल० धोखे में
आना, ठगा जाना, बहकना,
भूलना, भुलावे में आना ।

प्रा० धोखादेना बोल० ठगना,
छलना, बहकाना, भुलावा देना,
दगा देना, फरेब में लाना ।

प्रा० धोती (सं० धौत्र, धाव्=धोना)
स्त्री० एक कपड़े का नाम ।

प्रा० धोना (सं० धावन, धाव्=धोना)
क्रि० सं० पखारना, साफ करना ।

प्रा० धोप स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।

प्रा० धोब } (धोना) पु० धोना,
धोप } साफ करना, पखारना ।

प्रा० धोबी (धोना) पु० कपड़े
धोनेवाला ।

प्रा० धौ (सं० धातकी, धा=रखना)
स्त्री० एक प्रकार की लकड़ी ।

प्रा० धोरी पु० बैल, बर्ध, वृषभ ।

प्रा० धौ अव्य० न जाने, कि,

याकि क्या ।

प्रा० धौंकना (सं० ध्या=फूँकना)
क्रि० सं० फूँकना ।

प्रा० धौंकनी (धौंकना) स्त्री० आग
फूँकने की चमड़े की भाथी, धौंकी ।

प्रा० धौताल (सं० धनवन्त) गु०
धनवान्, मालदार, २ मजबूत, बल-
वान्, ३ शूरमा, वीर, ४ दुष्ट, दुर्जना ।

प्रा० धौन (आध मन) पु० बीस
सेर, आधा मन ।

प्रा० धौंसा पु० बड़ा नगाड़ा ।

सं० धौत (धाव्=धोना) र्म० पु०
धोवा हुआ, प्रक्षालित ।

प्रा० धौरा } (सं० धवल) गु० श्वेत,
धौला } शुक्ल, सफेद ।

प्रा० धौल स्त्री० धप्पा, थप्पड़, थाप ।

प्रा० धौल जड़ना } बोल० ठठाना
धौल मारना } मुक्का मारना,
धौल लगाना } थाप मारना,
थप्पड़ मारना ।

प्रा० धौल लगाना बोल० घटी
सहना, हानि सहना, नुकसान
उठाना, घटी होना ।

प्रा० धौल धप्पा बोल० धप्पा
धप्पी, मारकूट, चोट चपेट ।

प्रा० धौलागिरि (सं० धवलगिरि,
धवल=धौला, गिरि=पहाड़) पु०
हिमालय पहाड़ की एक चोटी ।

सं० ध्यात (ध्यै=चिन्ता करना)
र्म० पु० चिन्तित, विचारित ।

सं० ध्यातव्य (ध्यै + तव्य) र्म०

पु० ध्यानयोग्य, याद के लायक ।

सं० ध्याता क० पु० चिन्तक, विचार-
कर्त्ता, शोचक ।

सं० ध्यान (ध्यै=सोचना) पु०
सोच, विचार, चिन्ता, परमेश्वर
में मन लगाना, लौ, लगन ।

प्रा० ध्याना (सं० ध्यान) क्रि०
स० ध्यान करना, लौ लगाना,
मन लगाना ।

सं० ध्यानी (ध्यान) क० पु० ध्यान
करनेवाला, विचार करनेवाला,
सोचनेवाला, योगी, भक्त ।

सं० ध्यानीय (ध्यै + अनीय) र्म०
पु० चिन्तनीय, विचारणीय, वि-
चार योग्य, भजन योग्य, याद के
लायक ।

सं० ध्यायक (ध्यै + अक) क० पु०
चिन्तक, विचारी, योगी, भक्त ।

सं० ध्येय (ध्यै=विचारना) र्म०
पु० ध्यान योग्य, विचारणीय,
ध्यानाई ।

सं० ध्रुव (ध्रु=ठहरना) गु० ठहरा
हुआ, पक्का, दृढ़, अटल, २ शीक,
किल, सच, निश्चय, पु० विष्णु,
एक भक्त का नाम जो उत्तानपाद
राजा का बेटा था, ३ ध्रुव का
तारा, ४ उत्तर केन्द्र ।

सं० ध्वंस } (ध्वंस्=नाश करना)
ध्वंसन } भा० पु० नाश,

क्षय, हानि ।

सं० ध्वंसक (ध्वंस् + अक) क० पु०
नाशक, क्षयकारक, हानिकर्त्ता ।

सं० ध्वंसित (ध्वंस् + इत) र्म०
पु० नाशित, क्षयकृत, हानिकृत ।

प्रा० ध्वजा (सं० ध्वज, ध्वज=जा-
ना) स्त्री० पताका, केतु, झंडा ।

सं० ध्वन् } (ध्वन्=शब्द करना)
ध्वनि } भा० स्त्री० शब्द, स्वर,
नाद, आवाज ।

सं० ध्वनित (ध्वन् + इत) र्म०
पु० शब्दित, उदित, कथित ।

सं० ध्वस्त (ध्वंस्=नीचे गिरना)
र्म० पु० गिरा हुआ, नीचे पड़ा
हुआ, मात किया गया, हत किया
गया ।

सं० ध्वान्त पु० अन्यकार, तम ।

न

सं० न क्रि० वि० नहीं, निषेध, अ-
भाव, सूर्य, शनैश्चर, दीर्घ, मनुष्य ।

प्रा० न } व्रजभाषा में और कविता
नि } में बहुवचन का चिह्न
जैसे “वेगि करहु किन आँखिन
ओटा” “तब कपीश चरननि
शिरनावा” ।

प्रा० नंग } (सं० नग्न) गु० उघाड़ा,
नंगा } बिन कपड़े, वस्त्रहीन,
दिगम्बर, २ निर्लज्ज, बेशरम ।

प्रा० नंगाभूरी बोल० दूँदना, दूँद
दाँद, भाड़ाभूड़ी ।

प्रा० नंगामुंगा } बोल० बिलकुल
नंगामुनंगा } नंगा, दिगम्बर,
नंगधडंग } वस्त्रहीन, नंगा,
मादरजाद ।

प्रा० नंगेसिर बोल० खुले सिर,
उघाड़े सिर ।

प्रा० नक (सं० नासिका) पु०
नाक, नासिका, नासा ।

प्रा० नकघिसनी बोल० दण्डवत्
करने में या आधीनी से जमीनपर
नाक रगड़ना ।

प्रा० नकचढ़ा बोल० चिड़चिड़ा,
खुनसाहा, रिसहा, क्रोधी, जिसका
बुरा स्वभाव हो ।

प्रा० नकटा (नाक कटा) गु० नाक
कटा हुआ, बिन नाक का, २
निर्लेज, बेशरम ।

प्रा० नकसीर (सं० नासिका नाक
और शिरा नस) स्त्री० नाक की
नस अथवा रग ।

प्रा० नकसीरफूटना } बोल० ना-
नकसीरचलना } कसे लोह
बहना ।

सं० नकार (न=नहीं, कृ=करना)
पु० नहीं, निषेध, न मानना,
(अरबी में इनकार) ।

प्रा० नकारना (सं० नकार) क्रि०
स० नहीं मानना, निषेध करना,
स्वीकार नहीं करना ।

सं० नकुल (न=नहीं, कुल=वंश

जिसके) गु० निर्वंश, कुलरहित,
जिसके वंश न हो पु० युधिष्ठिरका
भाई, पाँच पाण्डवों में का चौथा,
२ नेवला जानवर, ३ महादेव ।

प्रा० नकेल (नाक) स्त्री० लकड़ी
अथवा लोहे की बनी हुई एक चीज
जो ऊँटके नाक में डाली जाती है
और उस में डोरी डाल कर ऊँट
को चलाते हैं ।

प्रा० नक्कू गु० अपयशी, निखट्टू,
बदनाम, नकारा, बुरा, नीच,
निकम्मा ।

सं० नक्त (नञ्=लजाना) राव,
रजनी ।

सं० नक्तक पु० लघुवस्त्र, २ मलिन,
३ धूम्रवर्ण, धुमैला रंग ।

सं० नक्र (न=नहीं, क्रम्=दूरजाना)
पु० मगर ।

सं० नक्रराज (नक्र + राज) पु०
ग्राह, हांगर ।

प्रा० नक्षत्र (नक्ष=पहुँचना व
जाना) पु० तारा, नक्षत्र २७ हैं
जैसे १ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृ-
त्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा,
६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९
आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वा-
फाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३
हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६
विशाखा, १७ अनुराधा, १८
ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढ,

२१ उत्तराषाढ, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिष, २५ पूर्वाभाद्रपद, २६ उत्तराभाद्रपद, २७ रेवती ।
 सं० नक्षत्री (नक्षत्र, अर्थात् जो अच्छे नक्षत्रों में पैदा हुआ हो) गु० भाग्यवान् ।
 सं० नक्षत्रेश (नक्षत्र + ईश) पु० चन्द्र, चाँद ।
 सं० नख (न=नहीं, ख=छेद जिसमें, अथवा, नह=बाँधना) पु० नाखून, नखर, बीस की संख्या, विभाग, गुड़, खाँड़, स्त्री० सीप, शुक्ति ।
 प्रा० नखशिख से (बोल० शिरसे नखसे शिखतक) पाँच तक, सब का सब, बिलकुल ।
 प्रा० नख (फा० नख) पु० पतङ्ग की डोरी ।
 प्रा० नखत (सं० नक्षत्र) पु० नक्षत्र ।
 सं० नखमुख पु० नम्रता, २ बाण, धन्वा ।
 सं० नखायुध (नख + आयुध) गु० व्याघ्र, कुक्कुट, बिल्ली, वृषिह, मोर ।
 सं० नखी (नख) गु० फाड़नेवाले वे जानवर जिनके नख और पंजा होते हैं, नखैल ।
 प्रा० नग पु० नगीना, अँगूठी में जड़ने का पत्थर ।

सं० नग (न=नहीं, गध=चलना) पु० पहाड़, पर्वत, २ वृक्ष, ३ सात की संख्या ।
 प्रा० नगचाना (सं० निकट) क्रि० अ० पास आना, पहुँचना ।
 प्रा० नगन (सं० नग्न) गु० नंगा ।
 सं० नगपति (नग=पहाड़, पति वा नगाधिराज) अ० अधिराज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, हिमालय पहाड़, सुमेरु ।
 सं० नगर (नग=वृक्ष वा पहाड़ अर्थात् जिसमें वृक्ष वा पहाड़ हों) पु० शहर, पुर, पत्तन या पट्टन ।
 सं० नगरनारी (नगर + नारी) स्त्री० वेश्या, पतुरिया ।
 सं० नगरी (नगर) स्त्री० पुरी, छोटा शहर ।
 सं० नग्न (नज्=लज्जाना) गु० नंगा, उघाड़ा, वस्त्रहीन, बिन कपड़े, पु० नंगा साधु वा भित्तारी, बौद्ध वा जैन मत का दिगम्बर ।
 प्रा० नचवाना (नाचना) क्रि० नचाना) सं० नाच कराना ।
 प्रा० नचवैया (नाच) क० पु० नाचनेवाला, नृत्यक ।
 सं० नट (नट्=नाचना) पु० नटवा, नर्तक, जायाजीवी, नटुआ, नटवर, स्वाँगी, इन्द्रजाली ।
 प्रा० नटखट (सं० नट) गु० कपटी

झली, पाखण्डी, धूर्त, फरेबी, फर-
फन्दी, गँठीला ।

प्रा० नटखटी स्त्री० हरामजदगी,
दगाबाजी, फरेब, झल, कपट,
धूर्तता ।

सं० नटन (नट् + अन) भा० पु०
नाचना, नृत्य करना ।

सं० नटवर (नट + वर) पु० बड़ा
नट, नटवा ।

सं० नटमाया (नट + माया) स्त्री०
झलविद्या, बाजीगरी, नटका
खेल, धोखा, फरफन्द, प्रपञ्च ।

सं० नटी (नट) स्त्री० नटिनी, नटकी
स्त्री, २ वेश्या, नाचनेवाली, पतु-
रिया ।

सं० नत (नम् = झुकना, नवना)
र्म० पु० झुका हुआ, नमाहुआ,
नम्र, नमित ।

प्रा० नतरु (सं० नान्यतर, न=नहीं
अन्यतर और प्रकार) क्रि० वि०
नहीं तो ।

सं० नताङ्गी (नत=झुक गया है
स्तन और जाँघ आदि के भार
से अङ्ग शरीर जिसका) स्त्री०
स्त्री, नारी, सुन्दरी ।

सं० नति (नम् = झुकना) स्त्री० नवना,
झुकना, नमस्कार, प्रणाम ।

प्रा० नतिनी (सं० नप्त्री) स्त्री० दो-
हती, बेटी की बेटी ।

प्रा० नतैत (नाता) गु० नातेदार,

सगा, रिश्तेदार ।

प्रा० नथ { (सं० नाथ=पति,
नथनी { अर्थात् पतिके जीने
का चिह्न) स्त्री० नाक का गहना,
नाक की बाली, एक गहना जो
चौड़ा और गोल होता है जिसको
वही स्त्री नाक में पहनती है जिसका
पति जीता हो ।

प्रा० नथना पु० नाक का छेद ।

सं० नद (नद् = शब्द करना) पु०
बड़ी नदी जैसे ब्रह्मपुत्र, शोण-
भद्र और सिन्धु आदि ।

सं० नदिता क० पु० शब्दकर्ता,
शब्द करनेवाला ।

सं० नदी (नद् = शब्द करना) स्त्री०
बहता हुआ पानी, जलधारा,
जल का प्रवाह जैसे गङ्गा यमुना
आदि ।

सं० नदीश (नदी + ईश) पु०
समुद्र, सागर ।

सं० नदेश (नद + ईश) पु० समुद्र
सागर ।

प्रा० ननँद (सं० ननन्दा, न=नहीं,
नन्द=प्रसन्न होना, अर्थात् जो
बहुत कुछ देने से भी राजी नहीं
होती है) स्त्री० पति की बहन,
ननँदिया, ननँदी ।

प्रा० ननँदिया { (सं० ननन्दा)
ननँदी { स्त्री० ननँद, पति
की बहन ।

प्रा० ननिहाल (नाना) पु० नाना का घर ।

सं० ननु अव्य० प्रश्न, निश्चय, अवधारण, अनुमति, अनुज्ञा, अनुनय, आमन्त्रण, सम्बोधन, परकृत अविकार, संभ्रम, स्तुति, आक्षेप, उत्प्रेक्षा, विरोधोक्ति ।

सं० नन्द (नन्द्=आनन्द करना, वा प्रसन्नहोना) पु० श्रीकृष्ण का पालनेवाला बाप, आनन्द, हर्ष ।

सं० नन्दन (सं० नन्द्=आनन्द करना, प्रसन्न होना) पु० बेटा, पुत्र, २ इन्द्र का वाग, गु० सुखदायक, आनन्द देनेवाला ।

सं० नन्दनन्दन (नन्द + नन्दन) पु० नन्द् का बेटा, श्रीकृष्ण, नन्दलाल ।

सं० नन्दलाल (नन्द + लाल=प्यारा) पु० नन्द का बेटा, नन्दनन्दन, श्रीकृष्ण ।

सं० नन्दि (नन्द्=आनन्द करना) पु० शिवका द्वारपाल, धूतक्रीड़ा, जुआं खेलना ।

सं० नन्दिघोष (नन्दि + घोष) पु० अर्जुन का रथ, बन्दीजनों का शब्द, भाटों की स्तुति ।

सं० नन्दिनी स्त्री० पार्वती, गङ्गा, नन्द, वसिष्ठमुनि की गौ ।

प्रा० नन्दोई { (सं० ननन्दापति) नन्दोसी } पु० ननन्द का पति ।

सं० नद्ध (नह=लगना) र्म्य० पु० लगाहुआ, नाधा हुआ ।

प्रा० नन्हा { (सं० न्यून) गु० छोटा, ननका } लघु, प्यारा, लाड़ला, पु० छोटा लड़का, बेटा ।

सं० नपुंसक (न=नहीं, पुंसक=पुरुष) पु० हिचड़ा, खोजा, क्रीब, नामर्द, गु० डरपोक, कायर, हेठा ।

फ्रा० नफ्रीरी स्त्री० तुरही, सहनार्ई, सहनाय ।

सं० नभ { (नह=बाँधना) पु० आनभस् } काश, गगन, आस्मान, २ सावनका महीना, सूर्य, मेघ, वर्षा ।

सं० नभग (नभ=आकाश, गम्=जाना) पु० पखेरू, पक्षी ।

सं० नभगनाथ { (नभग=पखेरू, नभगेश } नाथ वा ईश=राजा) पु० गरुड़ ।

प्रा० नभचर (सं० नभश्चर, नभस्=आकाश, चर=चलनेवाला, चर=चलना) पखेरू, पक्षी, २ विद्याधर, ३ मेघ, ४ हवा, पवन, गु० आकाश में चलनेवाला ।

सं० नभोधूम पु० मेघ, वारिद ।

सं० नमः (नम्=नमना) अव्य० नमस्कार, प्रणाम, २ दान ।

सं० नमस्कार (नमस्=प्रणाम, कृ=करना) पु० प्रणाम, दण्डवत् ।

सं० नमिन (नम्=भुकना) र्म्य० भुकाहुआ, लचाहुआ ।

सं० नम्र (नम्=नमना, झुकना)
गु० झुकाहुआ, अधीन, विनयी,
मिलनसार ।

सं० नम्रता (नम्र) भा० स्त्री०
आधीनता, विनय ।

सं० नय (नी=लेजाना, चलाना,
वा पाना) स्त्री० नीति, इन्साफ ।

सं० नयन (नी=लेजाना, पहुँचाना,
वा पाना) पु० आँख, नेत्र, लोचन ।

सं० नयनपट (नयन=आँख, पट=
पड़दा) पु० पलक ।

प्रा० नयना (सं० नयन) स्त्री० आँख
की पुतली, आँख का तारा ।

सं० नयनागर (नय=नीति, नागर
=चतुर) गु० नीति में निपुण,
नीति में चतुर अथवा प्रवीण,
नीति जाननेवाला ।

सं० नयनामृत (नयन + अमृत)
पु० अञ्जनविशेष, सुरमा, काजल ।

प्रा० नया { (सं० नव) गु० नवेला,
नवा { नवीन, टटका, नूतन ।

प्रा० नयेसिरसे बोल० फिरसे,
दूसरी बारसे ।

सं० नर (नृ=लेजाना वा चलाना)
पु० मनुष्य, पुरुष, मर्द, मनुष्यजाति,
२ परमेश्वर, ३ नरावतार, अर्जुन ।

सं० नरक (नर=मनुष्य, कै=शब्द
करना, जहाँ पापी रोते हैं, वा नृ=
लेजाना, जहाँ पापी लोग ले जाये
जाते हैं) पु० पापों के फल भुगतने

की जगह, दोऊख १ तामिस्र २
अन्धतामिस्र ३ रौरव ४ महारौरव
५ कुम्भीपाक ६ कालसूत्र ७ अ-
सिपत्रवन ८ शूकरमुख ९ अन्धकूप
१० कृमिभोजन ११ सन्दंश १२
तप्तभूमि १३ वज्रकण्टक १४ शा-
ल्मली १५ वैतरणी १६ पूयोद
१७ प्राणरोध १८ विशसन १९
लालाभक्ष २० सारमेयादन २१
अवीचिरयःपान २२ क्षारकर्दम
२३ रक्षोगणभोजन २४ शूलप्रोत
२५ दन्दशूक २६ अवनिरोधन
२७ पर्यावर्तन २८ सूचीमुख ।

सं० नरककुण्ड (नरक + कुण्ड)
पु० वह कुण्ड जिसमें पापीलोग
दुःख भुगतने के लिये डाले जाते
हैं ८६ हैं वह ब्रह्मवैवर्तपुराण में
वर्णन किये गये हैं ।

प्रा० नरकट { (सं० नलकाण्ड)
नरकल } पु० सरकण्डा, एक
प्रकार का बाँस ।

सं० नरकासुर (नरक + असुर)
पु० एक राक्षस का नाम जो कंस
का मित्र था ।

सं० नरकेशरी (नर=मनुष्य, केशरी
=सिंह) पु० नरसिंह अवतार,
विष्णु का चौथा अवतार ।

सं० नरकान्तक (नरक + अन्तक)
पु० विष्णु ।

सं० नरकदेवता स्त्री० अभाग्य,

दरिद्र, यमराज, चित्रगुप्त ।
 सं० नरकामय (नरक + आमय)
 पु० कोदरोग, जिससे शरीर नरक
 सम होजाय ।
 सं० नरङ्ग { पु० नारङ्गी, नारङ्ग,
 नारङ्ग } कौला ।
 सं० नरनारायण (नर + नारा-
 यण) पु० श्रीकृष्ण और अर्जुन
 का अवतार, दो मुनि ।
 सं० नरपति (नर + पति) पु०
 मनुष्यों का राजा, राजा, महाराज,
 भूपाल ।
 सं० नरपुर (नर + पुर) पु० मर्त्य-
 लोक, पृथ्वी, यह लोक ।
 सं० नरमेध (नर = मनुष्य, मेध = यज्ञ)
 पु० नरबलि, वह यज्ञ जिसमें
 मनुष्य होमा जाता है ।
 प्रा० नरसिंगा (सं० नलशृङ्ग,
 नल = नली, शृङ्ग = सींग) पु० तुरही,
 सींगी, एक प्रकार का बाजा ।
 सं० नरसिंह (नर + सिंह) पु०
 विष्णु का चौथा अवतार जो
 हिरण्यकशिपु को मारने के लिये
 और प्रह्लाद के बचाने के लिये
 हुआ था, २ मनुष्यों में श्रेष्ठ मनुष्य,
 नरश्रेष्ठ ।
 प्रा० नरसों पु० आज से चौथा
 दिन (पहला अथवा पिछला) ।
 सं० नरहरि (नर = मनुष्य, हरि = सिंह)
 पु० नरसिंह, विष्णु का चौथा

अवतार, २ तुलसीदास के गुरु
 का नाम ।
 सं० नराधम (नर + अधम) पु०
 मनुष्यों में नीच, पापी, नीच, कमीना ।
 सं० नराधिप (नर = मनुष्य, अधिप =
 = राजा) मनुष्यों का राजा, नरपति,
 बादशाह ।
 प्रा० नरिया पु० खपरा ।
 प्रा० नरेटी स्त्री० गला, घाँटी,
 गर्दन, टेंडुवा ।
 प्रा० नरेटीदबाना बोल० गला
 घोटना ।
 सं० नरेन्द्र (नर + इन्द्र) पु०
 राजा, नरपति ।
 सं० नरेश { (नर = मनुष्य, ईश वा
 नरेश्वर) ईश्वर = स्वामी } पु०
 राजा, नरेन्द्र, नरपति ।
 सं० नर्तक (नृत् = नाचना) क०
 पु० नाचनेवाला, नट ।
 सं० नर्तकी (नर्तक) क० स्त्री०
 नाचनेवाली, नटिनी ।
 सं० नर्तन (नृत् = नाचना) भा०
 पु० नाच, नृत्य ।
 सं० नर्तनप्रिय गु० जिसको नाचना
 अच्छा लगे, मोर ।
 सं० नर्वक (नर्द् = शब्द करना) क०
 पु० बोलनेवाला फा० नर्द स्त्री०
 गोट ।
 सं० नर्मद (नर्म = हँसी वा आनन्द,
 दा = देना) क० पु० सुखद, सुख-

दायक, आनन्दकारी, खुशी देने वाला ।

सं० नर्मदा (नर्म=हँसी वा आनन्द, दा=देनेवाली, दा=देना) स्त्री० एक नदी का नाम जो दक्षिण में है, रेवा, मेकलसुता ।

सं० नल (नल्=बाँधना) पु० सर-कंठा, सेंठा, नरकट, नेजा, बाँस, २ नली, फोंफी, चोंगा, टोंटा, टोंटी, ३ नाली, प्रणाली, ४ एक राजा का नाम, ५ एक बन्दर का नाम, ६ एक राक्षस का नाम ।

सं० नलकूबर पु० कुबेर के दो बेटे जो नारदमुनि के शापसे पेड़ हो गये थे ।

सं० नलनीर पु० फव्वारा ।

सं० नलिन (नल्=बाँधना) पु० कमल, पद्म, २ पानी, ३ सारस ।

सं० नलिनी (नलिन) स्त्री० कमलिनी, कुमुदिनी, २ कमलों का समूह, ३ कमलोंसे भरा ताजाव ।

प्रा० नली (सं० नल) स्त्री० फोंफी, चोंगा, टोंटी, २ नरेटी, साँसी, ३ बंदूक की नाल, ४ टैंगड़ी की हड्डी ।

सं० नव (नु=सराहना) गु० नया, नवीन, नूतन, २ नौ संख्या, ६ ।

सं० नवखण्ड (नव=नौ, खण्ड=

भाग) पु० भरतखण्ड आदि पृथ्वी के नौ खण्ड ।

सं० नवग्रह (नव + ग्रह) पु० सूर्य आदि नौ ग्रह जैसे १ सूर्य, २ चन्द्र, ३ मङ्गल, ४ बुध, ५ बृहस्पति, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ राहु, ९ केतु ।

सं० नवदुर्गा (नव + दुर्गा) स्त्री० दुर्गा की नौ मूर्ति, जैसे १ शैल-पुत्री, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्रघ-ण्टा, ४ कूष्माण्डा, ५ स्कन्द-माता, ६ कात्यायनी, ७ काल-रात्री, ८ महागौरी, ९ सिद्धिदा ।

सं० नवद्वार (नव + द्वार) पु० शरीरके नौ रस्ते, २ आँखें, २ कान, २ नाकके छेद, सातवाँ मुँह, आठवाँ लिङ्ग, नवाँ गुदा जैसे “नवद्वार का पीजरा यामें पंछी पौन” (कबीर) ।

सं० नवनिधि (नव=नौ, निधि=ख-जाना) स्त्री० संपदा, कुबेर का धन, कुबेर का खजाना ।

प्रा० नवनी (सं० नवनीत) स्त्री० मक्खन, नैनू ।

सं० नवनीत (नव=नया, नी=ले जाना) पु० मक्खन, माखन, नैनी, नवनी ।

सं० नववाला (नव=नई, बाला=जवान स्त्री वा लड़की) स्त्री० नव-याँवना, सोलह बरस की लड़की,

जवान स्त्री ।
 सं० नवम (नव) गु० नवाँ ।
 सं० नवमी (नवम) स्त्री० नवमी,
 नवीं तिथि ।
 सं० नवयौवना (नव=नई, यौवना
 =जवान स्त्री) स्त्री० जवान स्त्री,
 नववाला, नवोढ़ा ।
 सं० नवरत्न (नव + रत्न) पु० नौ
 जवाहिर (अर्थात् १ हीरा, २ पन्ना,
 ३ माणिक, ४ नीलम, ५ लह-
 सुनिया, ६ पुखराज, ७ गोमेद,
 ८ मोती, ९ मूँगा) २ विक्रमा-
 दित्य की सभा के नौ पण्डित
 (१ धन्वन्तरि, २ क्षपणक, ३
 अमरसिंह, ४ शंकु, ५ वेतालभट्ट,
 ६ घटकर्पर, ७ कालिदास, ८
 वाराहमिहिर, ९ वररुचि) ३ हाथ
 में पहनने का एक गहना जिसमें
 नौरत्न जड़े हों ।
 सं० नवरात्र (नव=नौ, रात्र=रातों
 का समूह) पु० आश्विनसुदी
 परिवा से ले नवमीतक के नौ दिन
 रात, आश्विन, चैत, असाढ़ और
 माघ के शुक्लपक्ष के नौ दिन-रात
 नवरात्र कहलाते हैं, दुर्गापूजा के
 नौ दिन ।
 सं० नवल (नव=नया, ला=लेना)
 गु० नया, नवा, नवीन, सुन्दर,
 मनोहर, पु० एक पौधेका नाम ।
 सं० नवशिक्षक (शिक्ष=सीखना)

क० पु० नया पढ़नेवाला, मुवतदी।
 सं० नवांश (नव + अंश) पु०
 नववां भाग ।
 प्रा० नवाड़ा (नाव) पु० एक
 प्रकार की नाव, छोटी नाव ।
 प्रा० नवाना (सं० नमन, नम्=
 झुकना) क्रि० स० झुकाना, नीचे
 करना, नम्र कराना ।
 सं० नवीन (नव, नु=सराहना) गु०
 नया, नवा, नूतन ।
 सं० नवोढ़ा (नव+नवीना, ऊढ़ा=
 स्त्री) स्त्री० नई ब्याही हुई, नई
 स्त्री, बनी ।
 सं० नश्य गु० नया ।
 सं० नश्वर (नश्=नहीं दीखना,
 नाश होना) क० पु० नाश होने
 वाला, विनाशी, २ हानि करने
 वाला, हिसक ।
 सं० नष्ट (नश्=नाश होना) क०
 पु० जो नाश हुआ, भ्रष्ट, विनष्ट,
 मलमेट, मटियामेट ।
 सं० नष्टा स्त्री० व्यभिचारिणी, भ्रष्टा,
 दुष्टा ।
 प्रा० नसाना { (सं० नाशन, नश्=
 नसावना } नाश होना) क्रि०
 स० नाश करना, बिगाड़ना ।
 प्रा० नहनी { (सं० नखहरणी) क०
 नहरनी } स्त्री० नख काटने का
 औजार ।
 प्रा० नहलाना (न्हाना) क्रि० स०

स्नान कराना, अङ्ग धोना ।

प्रा० नहान (नहाना) पु० स्नान ।

प्रा० नहाना (सं० स्नान, वा नहाना) अथवाहन) क्रि०

अ० स्नान करना, शरीर शुद्ध करना, अङ्गधोना ।

प्रा० नहानी (नहाना) कपड़ों से होने का समय, रज फूल ।

प्रा० नहारुआ पु० नार, जाँघ में अथवा और कहीं शरीर में एक सूतसा रोग जो निकलता है ।

प्रा० नहियर पु० पीहर, मैका ।

प्रा० नहीँ (सं० नहि, नह=बाँधना, रोकना) क्रि० वि० निषेध, नमना, नाँह ।

प्रा० नाइन स्त्री० नाई की स्त्री ।

प्रा० नाई (सं० नापित) पु० नाऊ) हज्जाम, हजामत बनाने वाला, उस्ताँ ।

प्रा० नाई स्त्री० भाँति, तरह ।

प्रा० नाँदिया (सं० नन्दि) पु० महादेव का वाहन बैल ।

प्रा० नाँच (सं० नाम) पु० नाम नाऊँ) संज्ञा, २ यश, नामवरी ।

प्रा० नाँह (सं० न, वा नहि) क्रि० वि० नहीं, निषेध, न ।

प्रा० नाक (सं० नासिका) पु० स्त्री० नासा, नासिका, सूँघने की

इन्द्रिय ।

प्रा० नाक कटाना बोल० अपमान करना, अनादर करना, पानी उतारना, २ बदनाम होना ।

प्रा० नाककटी होना बोल० अपना मान खोना, अपनी बड़ाई को मिटाना, बदनाम होना ।

प्रा० नाक का बाल बोल० जिस का बहुत मान हो, प्यारा, जिसका बहुत आदर किया जाय ।

प्रा० नाक चढ़ाना बोल० क्रोधित होना, अप्रसन्न होना, गुस्सा होना, नाराज होना ।

प्रा० नाक रखना बोल० अपना यश बना रखना, अपनी इज्जत को बना रखना ।

प्रा० नाक सकोड़ना बोल० नाक चढ़ाना, अप्रसन्न होना, नाराज होना ।

सं० नाक (न=नहीं, अक=दुःख अर्थात् जहाँ दुःख नहीं है और अक=बना है, अ=नहीं और क=सुख, अर्थात् सुख नहीं दुःख) पु० स्वर्ग, देवलोक ।

सं० नाकपति (नाक=स्वर्ग, पति=राजा) पु० स्वर्ग का राजा, इन्द्र ।

सं० नाकनदी (नाक=स्वर्ग, नदी=नाचनेवाली) स्त्री० स्वर्ग की

अप्सरा ।

प्रा० नाका पु० रस्ते का अन्त,
२ सुई का छेद या बेह, ३ गली,
राह, नाकेबन्दी, बोल० रस्ता
बन्द करना ।

प्रा० नाका (सं० नक्र) पु० मगर,
घड़ियाल, हांगर ।

सं० नाग (न=नहीं, अग=ठहरा हुआ)
पु० कश्यपमुनि की स्त्री कद्रू के बेटे
जिन का मुँह मनुष्य कांसा और
फण और पूंछ साँप कीसी होती
है जो पाताल में रहते हैं और
देवता कहलाते हैं, साँप, सर्प, २
हाथी, ३ नागकेशर ।

सं० नागकन्या (नाग + कन्या)
स्त्री० नागों की अथवा पाताल के
देवताओं की लड़कियाँ जो बहुत
रूपवती और सुन्दर होती हैं ।

सं० नागकेशर पु० फूलों के एक
पेड़ का नाम ।

सं० नागदन्त { (नाग=हाथी, दन्त
नागदन्तक } =दाँत) पु० हाथी-
दाँत, २ दो काँटों का टेकन जो
हाथी के दाँत की तरह होता है,
स्त्री० खँटी ।

सं० नागपञ्चमी (नाग + पञ्चमी)
स्त्री० सावनसुदी पञ्चमी जिस
दिन हिन्दू लोग साँप की पूजा
करते हैं ।

सं० नागपाश (नाग=साँप, पाश=

फन्दा) स्त्री० वरुण का अस्त्र,
फन्दा, फाँसी, फाँस ।

प्रा० नागफाँस (सं० नाग + पाश)
स्त्री० वरुण का अस्त्र, फन्दा,
फाँसी, पाश ।

प्रा० नागबेल (सं० नागवल्ली)
स्त्री० पान की बेल ।

सं० नागर (नगर=शहर) गु० नगर
का वासी, चतुर, प्रवीण, २ गुज-
राती ब्राह्मणों की एक जाति ।

सं० नागरी (नागर) स्त्री० चतुर
स्त्री, २ नागर की स्त्री, ३ देवना-
गरी अक्षर वा भाषा ।

सं० नागरिपु (नाग=हाथी, रिपु=
वैरी) पु० सिंह, शेर, बाघ ।

प्रा० नागल (सं० लाङ्गल, लगि=
मिलना वा जाना) पु० हल ।

सं० नागलोक (नाग + लोक) पु०
नागों का लोक, पाताल ।

प्रा० नागा (सं० नग्न) पु० नंगे
संन्यासी ।

प्रा० नागिन { (सं० नागी) स्त्री०
नागिनी } नागकी स्त्री, साँपिनी,
सर्पिणी ।

प्रा० नाँघना (सं० लङ्घन) क्रि०
अ० लाँघना, पार होना, उतरना,
कूदना ।

प्रा० नाच (सं० नाट्य, वा नृत्य)
पु० नाचना, नृत्य, नाट्य ।

प्रा० नाचनचाना बोल० खिझाना,

चिढ़ाना, सताना ।

क्रा० नाज़ नखरा, घमण्ड, मान ।

सं० नाट (नट्=नाचना) पु० कर्णाटक देश, नाच, नृत्य ।

सं० नाटक (नट्=नाचना) क० पु० एक प्रकार का काव्य जिसमें नट नटी के खेल की रीति पर वर्णन होता है जैसे “ शकुन्तलानाटक ” “ विक्रमोर्वशी ” “ बेगीसंहार ” “ उत्तर रामचरित आदि ”, २ नट, नाचनेवाला ।

सं० नाटन भा० पु० नाचना, नर्तन ।

प्रा० नाटा गु० बावना, ठिगना, पस्तकद ।

सं० नाट्य पु० नटीसुत, वेश्यापुत्र ।

सं० नाट्य (नट) पु० नटों का काम जैसे नाचना, गाना और बजाना ।

सं० नाट्यशाला (नाट्य + शाला) स्त्री० नाचघर, रङ्गशाला, जहाँ नाटक होता हो ।

प्रा० नाट पु० नास्ति, शून्यता, अभाव, नाश ।

सं० नाडि (सं० नड=गिरना) नाडी स्त्री० धमनी, शिरा, नब्ज, नस ।

सं० नाडीव्रण पु० नसों का घाव, नासूर ।

प्रा० नातर (सं० नान्यतर, वा नान्यथा, न=नहीं, अन्यतर वा

अन्यथा=और प्रकार) क्रि० वि० नहीं तो ।

प्रा० नाता (सं० ज्ञातेय, ज्ञाति=जाति भाई) पु० सम्बन्ध, अपनायत, रिश्तेदारी ।

प्रा० नातिन (सं० नप्त्री) स्त्री० बेटी की बेटी ।

प्रा० नाती (सं० नप्ता, न=नहीं, पत्=गिरना, अर्थात् नाती के होने से पितर अर्थात् पुरुष नीचे नहीं गिरते हैं) पु० बेटी का बेटा, दोहता ।

सं० नाथ (नाथ्=माँगना, जिससे माँगते हैं) पु० स्वामी, मालिक, पति, धनी, २ योगियों की पदवी जैसे गोरखनाथ, गम्भीरनाथ, सुमेरुनाथ आदि कहलाते हैं ।

सं० नाथ (नाथ=सताना, दुःख देना) स्त्री० रस्सी जो बैल के नाक में डाली जाती है ।

प्रा० नाथना (सं० नाथन, नाथ=सताना वा दुःख देना) क्रि० स० बैलकी नाक छेदना ।

सं० नाद (नट्=शब्द करना) पु० शब्द, गर्ज, आवाज़, ध्वनि, मिट्टी का बर्तन ।

सं० नादन (नाट् + अन) भा० पु० शब्द करना, गर्जना, नाद करना ।

प्रा० नानक पु० सिखों के मत का चलानेवाला ।

प्रा० नानकपन्थी } पु० नानक के
नानकशाही } मत को मानने
वाला, सिख ।

सं० नाना अव्य० अनेक प्रकार,
भाँति भाँति, उभयार्थ ।

प्रा० नाना पु० माँ का बाप, मातामह ।

सं० नानार्थ (नाना + अर्थ) पु०
बहुत अर्थ, अनेक प्रयोजन, बहुत
आशय ।

सं० नान्दी (नद् = शब्द करना)
स्त्री० देवता पितर जहाँ आनन्द का
शब्द करें, प्रशंसा, नङ्गारा, नगारा,
स्तुतिसंयुक्त आशीर्वाद ।

सं० नान्दीमुख पु० वृद्धिश्राद्ध,
वृद्धिश्राद्धभुक् पितृगण, कुवाँ के
ढाँपने का पट, कूपमुखबन्धन ।

प्रा० नाप (सं० मापना, वा नापना)
पु० माप, परिमाण, नापजोख,
बोल० नापतौल ।

प्रा० नापना (सं० मापन, मा = मा-
पना) क्रि० स० मापना, परिमाण
करना ।

सं० नापित पु० नाई, हज्जाम ।

सं० नाभि (नह = बाँधना) स्त्री०
नाभ, नाभी, तोंदी, तुण्डी, क-
स्तूरी, पु० नाम राजा का ।

सं० नाम (नम् = पुकारना) पु० नावँ,
संज्ञा, पदवी, २ यश, ख्याति ।

सं० नामकरण (नाम + करण)
पु० लड़के का नाम रखना, नाम

देना, लड़के के पैदा होनेके पीछे
दशवें दिन नाम रखने का संस्कार
अर्थात् रीति ।

प्रा० नामकरना बोल० नामी होना,
नामवर होना, यशस्वी होना,
विख्यात होना, प्रसिद्ध होना ।

प्रा० नाम डुबोना बोल० अपना
यश खोना, बदनाम होना ।

प्रा० नाम देना बोल० नाम रखना ।

प्रा० नाम धरना बोल० नाम र-
खना, नाम ठहराना, किसी नाम
से पुकारना, खराब करके कहना,
बुरा नाम रखना ।

सं० नामधेय पु० नाम, संज्ञा, नाम-
वाचक ।

प्रा० नाम निकालना बोल० नामी
होना, नाम करना, २ दोषी का
नाम निर्णय करना ।

प्रा० नाम रखना बोल० नाम
धरना, नाम देना ।

प्रा० नाम लेकर माँग खाना
बोल० दूसरे मनुष्यके नाम से
भीख माँग खाना ।

प्रा० नाम लेना बोल० सराहना,
प्रशंसा करना, २ परमेश्वर का नाम
लेना, जप करना, माला फेरना ।

प्रा० नामहोना बोल० यश होना,
यश फैलना ।

प्रा० नामी (सं० नाम) गु० वि-
ख्यात, यशस्वी, उजागर ।

प्रा० नामी होना बोल० नामवर होना, प्रसिद्ध होना, विख्यात होना, उजागर होना ।

सं० नायक (नी=लेजाना वा चलाना) पु० अगुवा, मुखिया, सरदार, प्रधान, २ सेनापति, थोड़ी सी सेना का सरदार, ३ प्रेमाभिलाषी पुरुष, ४ नाचने और गाने में निपुण पुरुष ।

प्रा० नायन स्त्री० नाई की स्त्री ।

सं० नायिका (नायक) स्त्री० नायक की स्त्री, जवान स्त्री वा लड़की, २ कुटनी, दूती, ३ रूपवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, साहित्य में नायिका तीन प्रकार की हैं (१ स्वकीया जो केवल अपने पतिही से प्रेम करे, २ परकीया जो पराये पुरुषसे प्रीति करे, ३ सामान्या जो धन लेकर किसी से प्रीति करे) जैसे दोहा “स्वकिया व्याही नायिका, परकीया परवाम । सो सामान्या नायिका, जाके धन सों काम ” अवस्था भेद से प्रत्येक नायिका आठ प्रकारकी हैं (१ प्रोषितपतिका, २ खण्डिता, ३ कलहान्तरिता, ४ विप्रलब्धा, ५ उत्कण्ठिता, ६ वासकशय्या, ७ स्वाधीनपतिका, ८ अभिसारिका) ।

प्रा० नार (सं० नारी) स्त्री० लुगाई, स्त्री, २ (सं० नाल) बंदूक की नाल वा नली, ३ कमलों की

नाल, ४ गरदन ।

प्रा० नारकी (नरक) गु० नरकवासी, नरक भोगनेवाला जीव, २ नरक ।

प्रा० नारंगी ((सं० नारङ्ग) स्त्री० नारंज) केवला, कौला, एक प्रकार का खटमीठा फल ।

सं० नारद (नार=ज्ञान, नरसमूह या जलसमूह, दा=देना या खण्डित करना) पु० एक ऋषिका नाम, ब्रह्मा का बेटा और दश देवऋषियों में का एक देवऋषि ।

सं० नाराच (नार=मनुष्यों का समूह, आ=चारों ओर से, चम्=खाना) पु० तीर, बाण ।

सं० नारायण (नार=मनुष्यों का समूह, अयन=स्थान, अर्थात् जिन में सब मनुष्य रहते हैं, वा नार=पानी, अयन=स्थान, अर्थात् जो क्षीरसमुद्र में सोते हैं) पु० विष्णु का नाम, आदिपुरुष ।

सं० नारायणी (नारायण) स्त्री० विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी, २ गङ्गा, ३ शतावरी ।

सं० नारिकेल (नारि=ढाँठी, क=हवा वा पानी, इल=चलना, अर्थात् जिसकी ढाँठी हवा से वा पानीसे बढ़ती है) पु० नारियल, श्रीफल ।

प्रा० नारियल (सं० नारिकेल) पु० श्रीफल, नारिकेल, एक फल का नाम ।

सं० नारी (नर) स्त्री० लुगाई, स्त्री,
औरत, अबला, वनिता, जन ।

प्रा० नारू नहारु शब्द को देखो ।

सं० नाल (नल्=बाँधना व चमकना)

स्त्री० नली, २ बंदूक की मुहरी वा
नली, ३ मृणाल, कमलकी डाँठी,
डाँडी, जुआँकी चिरागी ।

प्रा० नाला पु० नहर, छोटी नदी,
सोता, २ पनाला, मोरी ।

प्रा० नालकी स्त्री० एक प्रकार की
पालकी ।

सं० नालिक (नल् + इक) क०
स्त्री० बन्दूक, भुशुण्डी ।

प्रा० नाव (सं० नौ) स्त्री० नौका,
डोंगी, तरणी ।

प्रा० नावना { (सं० नमन, नम् =
नाना } झुकना) क्रि० सं०
झुकाना, निहुराना, शिरझुकाना,
नमस्कार करना ।

प्रा० नावरि स्त्री० नाव झुकाना,
नाव फेरना, नाव पर का खेल ।

सं० नाविक (नौ) क० पु० माँझी,
कर्णधार, केवट, मल्लाह ।

सं० नाश (नश्=नाश होना) भा०
पु० ध्वंस, बरबादी, नष्ट होना,
क्षय, हानि, बिगाड़ ।

सं० नाशक (नश्=नाश करना) क०
पु० नाश करनेवाला, उजाड़, बिगाड़

करनेवाला, हानि करने वाला ।

सं० नाशन (नाश् + अन्) भा०
पु० नाश करना, बिगाड़ देना,
उड़ा देना ।

सं० नाशवान् क० पु० नाश होने
वाला ।

सं० नाशनीय } र्म्यं पु० नाश
नाशितव्य } करनेयोग्य, उजा-
नाश्य } डने लायक ।

सं० नाशी (नाश् + ई) क० पु०
नाश करनेवाला, उड़ाऊ, उजाड़ू ।

प्रा० नास (सं० नाश) पु० नाश,
२ (सं० नश्य, नासा=नाक)
स्त्री० हुलास, सूँघनी ।

सं० नासमभ् गु० अबोध, अज्ञान ।

प्रा० नासना (सं० नाश) क्रि०
अ० भागना, पलाना, पीठ देना,
२ क्रि० सं० नाश करना ।

सं० नासा { (नास्=शब्द करना)
नासिका } स्त्री० नाक, सूँघने की
इन्द्रिय ।

सं० नासीर (नास्=शब्द करना)
पु० सेना का मुख, आगे चलने
वाली सेना ।

सं० नास्ति (न=नहीं, अस्ति=है,
अस्=होना) नहीं है, नाहीं,
अभाव ।

सं० नास्तिक (नास्ति=नहीं है

अर्थात् परलोक और ईश्वर वा सृष्टि का कर्ता नहीं है ऐसा कहनेवाला)
 पु० ईश्वर और परलोक को नहीं माननेवाला, अनीश्वरवादी ।

सं० नास्तिकवाद भा० पु० ईश्वर को न मानना, नास्तिकों का भगड़ा, कुफ़ू की बातें ।

सं० नास्तित्व भा० पु० अभाव, शून्यता, नाठ ।

प्रा० नाह् (सं० नाथ) पु० स्वामी, मालिक, नाथ, पति ।

प्रा० नाहर पु० बाघ, शेर ।

प्रा० नाहिं ((सं० नहि) क्रि० वि० नाहीं) नहीं, न ।

सं० नि उपस० नहीं, बिन, रहित,
 २ नीचे, ३ नित्य, सदा, ४ हास,
 ५ निश्चय, ६ अच्छीतरह से, सब तरहसे, ७ बीच में, मध्य, भीतर,
 ८ बाहर, ९ क्षेप, १० कौशल,
 ११ आश्रय, १२ दान, १३ मोक्ष,
 १४ भाव, १५ बन्धन, १६ स्थापन, १७ निवेश ।

सं० निःशङ्क (निर=नहीं, शङ्का= डर) गु० निडर, निर्भय ।

सं० निःशेष (निर=नहीं, शेष= बाकी) गु० पूरा, समाप्त, जहाँ कुछ नहीं बचे ।

सं० निःश्वास (निर=बाहर, श्वास=साँस) पु० मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, पवन,

साँस, प्राणवायु, २ पछतावा, हाय, ठण्डी साँस, लम्बी साँस ।

सं० निःसंदेह (निर=बिन, संदेह=शक) गु० बिन संदेह, निश्चय, बेशक ।

सं० निःसरण (निर+सृ=जाना) भा० पु० निकलना, द्वार, मार्ग, मृत्यु, उपाय, मोक्ष, निर्गम ।

सं० निःसारण भा० पु० निकालना, निष्कावर, घरके निकलने का दरवाजा ।

सं० निःस्पृह (निर=नहीं, निस्पृह) स्पृहा=इच्छा) गु० जिसको किसी बात की इच्छा न हो, इच्छारहित, अनिच्छुक, बेल्वाहिश ।

सं० निःस्वादु (निर=बिन, स्वादु=रस) गु० बेस्वाद, बेरस, फीका, अलोना ।

सं० निकट (नि=पास, कट=जाना) करीब, पास, नगीच, नजदीक, समीप ।

सं० निकटस्थ (निकट+स्था) क० पु० पास रहनेवाला, करीबी, नजदीकी ।

प्रा० निकटक (सं० निकटक) गु० अकटक, बिनशत्रु, आराम से, सुखी, बेखरखशा ।

सं० निकन्द (नि=नहीं, कन्द=निकन्दन) जड़) पु० नाश

२ नाश करनेवाला, उखड़ा हुआ।
 प्रा० निकम्मा (सं० निष्कर्म, निर्-
 =बिन, कर्म=काम) गु० जो कुछ
 काम का न हो, बेकाम।
 सं० निकर (नि, कृ=बिखेरना, फै-
 लना) पु० समूह, भीड़भाड़।
 प्रा० निकलना (सं० नि, कम्=
 जाना) क्रि० अ० बाहरआना,
 बाहरजाना, निकसना, फटना,
 उत्पन्न होना, बढ़ आना।
 प्रा० निकलचलना बोल० भा-
 गना, टलजाना, २ बढ़चलना,
 आगे निकलना, ३ बहुत बोलना
 अथवा अपना गुण दिखलाना।
 प्रा० निकलजाना बोल० भाग
 जाना, चलाजाना।
 प्रा० निकलपड़ना बोल० बाहर
 आजाना।
 प्रा० निकलभागना बोल० भाग
 जाना।
 प्रा० निकसना (सं० नि, कम्=
 जाना) क्रि० अ० निकलना,
 बाहर आना।
 प्रा० निकाई (फ्रा० नेक) भा०
 स्त्री० शोभा, भलाई, अच्छाई।
 सं० निकाम (नि=नहीं, कम्=चा-
 हना) गु० जिसको किसी बात
 की इच्छा न हो, इच्छारहित,
 निःस्पृह, बेतमन्न, कामनारहित,
 क्रि०वि० आपसे, इच्छासे, मनसे।

सं० निकाय (नि, चि=इकट्ठाकरना)
 पु० समूह, २ घर, स्थान, शरीर-
 रहित, परमात्मा।
 प्रा० निकाल (निकालना) पु०
 निकास, निसार, बाहर आना,
 २ उपाय, युक्ति, जोड़, तोड़।
 प्रा० निकालडालना बोल० का-
 टना, काट डालना, खारिज कर
 देना, अलग करना।
 प्रा० निकालदेना बोल० छुड़ा
 देना, बाहर करना, अलग कर
 देना, दूरकरना।
 प्रा० निकाललाना बोल० लेआना,
 बचालाना, हूँदलाना।
 प्रा० निकाललेना बोल० लेजाना,
 उखाड़लेना, काढ़लेना, झँटलेना।
 प्रा० निकालना (सं० निष्कासन,
 निकासना) नि, कम्=जाना)
 क्रि० स० बाहरलाना, बाहर क-
 नार, ले लेना, उखाड़ना, प्रकट
 करना, काढ़ना, बनाना।
 सं० निकृष्ट (नि=नीचे, कृष्=खे-
 चना) र्म० पु० नीच, अधम, तुच्छ,
 जाति से निकाला हुआ।
 सं० निकेत (नि=अच्छी तरह से,
 निकेतन) कित्=रहना, बसना)
 धि० पु० घर, स्थान।
 सं० निक्षिप्त (नि=नीचे, क्षिप्=फें-
 कना) र्म० फेंका हुआ, डाला
 हुआ, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ।

सं० निक्षेप र्म० पु० धरोहर, अमानत, प्रक्षेप, न्यास ।

प्रा० निखट्टू गु० सुस्त, आलसी, उड़ाऊ, निर्दयी, कठोर, निडुर, निकम्मा ।

सं० निषङ्ग पु० तरकश, तूण ।

प्रा० निखरना क्रि० अ० साफ होना, चमकना, उजलना, उजला होना, फर्की होना ।

सं० निखर्व पु० अधिक, दीर्घ, ह्रस्व, बौना, दश खर्व ।

प्रा० निखारना क्रि० स० मैल छँटना, साफ करना, उजला करना, फर्की करना ।

सं० निग्वात (नि, खन्=खोदना) र्म० पु० खत्ता, गर्त, खन्दक ।

सं० निखिल (नि=नहीं, खिल=शेष, बाकी) गु० पूरा, सम्पूर्ण, सब, सारा ।

सं० निगड़ पु० बेड़ी, इथकड़ी, श्रद्धाला, जंजीर, आँदू, मोटी जंजीर ।

सं० निगड़ित (नि, गल=बाँधना) र्म० पु० बँधा हुआ, कसा हुआ ।

सं० निगद (नि, गद्=कहना) भा० पु० कहना, औषध ।

सं० निगदित र्म० पु० कथित, कहा हुआ ।

सं० निगम (नि, गम्=जाना) पु० वेद, पवित्र लेख ।

सं० निगमनिवासी (निगम=वेद, निवासी=रहनेवाला) पु० वेदों में रहनेवाला, विष्णु, २ ब्रह्मा ।

प्रा० निगलना (सं० नि, गल्=खाना, वा गृ=निगलना) क्रि० स० लीलना, गले उतारना, घोंटना, खा जाना, गट करना ।

सं० निगूढ़ (नि + गूढ़) गु० गहरा, सूक्ष्म, गम्भीर, गुप्त, छिपा हुआ ।

प्रा० निगोड़ा (नि=नहीं, गोड़=पाँव, तो इसका अक्षरार्थ हुआ बिन पैर का) गु० निकम्मा, अकर्मि, २ कुकर्मि, दुष्ट, चण्डाल ।

सं० निग्रह (नि, ग्रह=लेना) भा० निग्रहण (पु० रोक, विरोध, २ कलह, युद्ध, भर्त्सन, जलाना, ३ मर्यादा, ४ पराभव, ५ मानखण्डन, ६ चिकित्सा, ७ हठ, ८ कैद, वन्धन, ९ घुड़की, धमकी, १० रोष ।

सं० निघण्टु (नि, घट्ट=इकट्ठा करना) पु० औषधकोषसंग्रह, औषधों का गुण दोषमूचकग्रन्थ ।

सं० निचय (नि, चि=चुनना, निचाय) इकट्ठा करना) पु० राशि, ढेर, समूह, समुच्चय ।

प्रा० निचिन्त (सं० निश्चिन्त) निचिन्त (गु० बे फिक्र, बे सोच, अशोची, सावधान ।

प्रा० निचितहोना बोल० काम पूरा करना, निबटाना, बे फिक्र

होना, फुरसत पाना ।

प्रा० निचाई (नीच) स्त्री० नीच-
पन, तुच्छता ।

प्रा० निचोड़ (निचोड़ना) पु०
किसी काम का अन्त, सिद्धान्त,
नतीजा, निष्पत्ति, बोझ, भार,
वह चीज जिस पर कोई दूसरी
चीज ठहरे ।

प्रा० निचोड़ना क्रि० सं० गीले क-
पड़ेसे पानी निकालना, मरोड़ना,
दबाना, गारना, पेरना ।

प्रा० निछावर स्त्री० उतारा, बलि-
दान, कुशान, बलिहारी ।

सं० निज (नि, जन्=पैदा होना)
गु० सर्वना० अपना, स्व, आपका,
आत्मीय ।

सं० निजगति स्त्री० अपनी दशा,
अपनी हालत ।

सं० निजवृत्ति स्त्री० अपनी जी-
विका, अपना पेशा ।

सं० निजतन्त्र पु० स्वतन्त्र, स्ववश,
खुदमुखतार ।

प्रा० निठल्ला गु० निकम्पा, सुस्त,
आलसी ।

प्रा० निटुर (सं० निष्ठुर) गु० क-
ठोर, निर्दय, कठिन, बड़ा क्रूर,
जिसका दिल पत्थर सा कड़ा हो ।

प्रा० निटुरता (सं० निष्ठुरता)
निटुराई } भा० स्त्री० कठो-
रता, निर्दयता, कड़ापन, बेरहमी ।

प्रा० निडर (सं० निर्दर, निर्=नहीं,
दृ=डरना) गु० निर्भय, निधड़क,
निःशङ्क, डीठ, बेडर, अशङ्क, बेझौफ ।

प्रा० निहाल (सं० निर्दोल, निर्-
निहोल) =नहीं, दुल्=हि-
लाना-) गु० अचेत, सूनसान,
निश्चल, अचल ।

प्रा० नित (सं० नित्य) क्रि० वि०
सदा, सर्वदा, निरन्तर, हमेश, हमे-
शह, रोज रोज ।

प्रा० नितउठ (बोल० सदा, नि-
नितउठके) रन्तर, रोज रोज,
हमेशह, हरदम, हमेश ।

प्रा० नितनित बोल० सदा, नितउठ,
हरदम, रोज रोज, निरन्तर, हमेशह ।

सं० नितम्ब (नि=नीचे, तम्ब=
जाना, वा स्तम्भ=ठहरना) पु०
कमरके नीचे का भाग, पुट्टा, कूला,
चूतड़ ।

प्रा० नितप्रति (सं० प्रतिनित्य, प्रति
=हर एक, नित्य=सदा) क्रि०
वि० नित नित, नितउठ, सदा,
हररोज, रोज रोज, हमेशह ।

सं० नितान्त पु० एकान्त, अति-
शय, निरन्तर ।

सं० नित्य (नि=निश्चय, अर्थात् जो
निश्चयही हो) क्रि० वि० सदा,
सर्वदा, नित, हमेशह, सनातन,
निरन्तर, लगातार, माबूली ।

सं० नित्यकर्म (नित्य=सदा का,

कर्म=धर्म का काम) पु० स्नान,
सन्ध्या, वन्दन, तर्पण, पूजा, जप,
तप आदि षड्कर्म, हर एक दिन
का अवश्य करने योग्य काम ।
सं० नित्यानित्य (सं० नित्य +
अनित्य) क्रि० वि० निरन्तर, ह-
मेश, हमेशगी, जावेदानी ।
सं० नित्यानन्द (नित्य + आनन्द)
पु० सदासुख, सदाहर्ष ।
प्रा० निथरा गु० फर्वा, स्वच्छ, निर्मल ।
प्रा० निधारना क्रि० सं० ढालना,
उभलना, २ निखारना, पानी को
अथवा और किसी रसको साफ
करना, निर्मल करना ।
प्रा० निदरना (सं० निरादर) क्रि०
सं० निरादर करना ।
सं० निदर्शन (नि, दृश्=दिखाना)
पु० उदाहरण, दृष्टान्त, प्रमाण ।
सं० निदाघ (नि, दह्=जलाना, नाश
करना) पु० ग्रीष्मकाल, ग्रीष्म
ऋतु, घाम, उष्ण, पसीना ।
सं० निदान (नि=निश्चय, दा=देना)
क्रि० अ० अन्त में, पीछे, पु०
आदिकारण, मूलकारण, सबूत,
हुक्म, नज़ीर ।
सं० निदेश (नि, दिश्=हुक्मदेना)
पु० आज्ञा, हुक्म, निकट, भाजन,
वर्तन ।
सं० निद्रा (नि, द्रा=सोना) स्त्री० नींद ।
सं० निद्रालु (निद्रा) गु० निन्दाळु,

उँघासा, निंदासा, जिसको नींद
आती हो ।
सं० निद्राशन (निद्रा + अशन) पु०
सोना और खाना, ख्वाब व खुर ।
सं० निद्रित र्म० पु० सोया हुआ,
नींदमें भरा हुआ ।
प्रा० निभड़क (सं० निर्दर, निर=नहीं,
दृ=डरना) गु० निडर, निर्भय, अशंक ।
सं० निधन (नि, हन्=मारना) पु०
मौत, मरण, मृत्यु, २ (नि=नहीं, धन=
दौलत) गु० निर्धन, कंगाल, गरीब ।
सं० निधनता (निधन) स्त्री० कंगाल-
पन, गरीबी ।
सं० निधान (नि=भीतर, धा=रखना)
पु० घर, आधार, स्थान, जगह, ठाँव,
२ कुबेरका भण्डार, खज़ाना, निधि ।
सं० निधि (नि=भीतर, धा=रखना)
पु० कुबेर का भण्डार, खज़ाना, सं-
पदा, कोष, २ आधार, जगह, स्थान,
घर, आसरा ।
सं० निनीषा (नी=प्राप्त करना,
पैदा करना) स्त्री० लेने की इच्छा,
हासिल करने का इरादा ।
सं० निनीषु क० पु० प्राप्ति की
इच्छा करनेवाला ।
सं० निनेता क० पु० सरदार, नायक ।
सं० निन्दक (निन्द=बुराई करना)
क० पु० निन्दा=करनेवाला, बुराई
करनेवाला, हजो करनेवाला ।
प्रा० निन्दना (सं० निन्दन, निन्द=

बुराई करना) क्रि० स० कलङ्क लगाना, दूषना, बुरा कहना, निन्दा करना ।
 सं० निन्दा (निन्द्=निन्दा करना)
 स्त्री० बुराई, कलङ्क, दोष, अपवाद, कुत्सा, धिक्कार ।
 सं० निन्दित (निन्द्=निन्दा करना)
 र्म० पु० दोष लगाया हुआ, दूषित, बुरा, बदनाम ।
 सं० निन्त्र (निन्द्=निन्दा करना)
 र्म० पु० निन्दा के योग्य, बुराई करनेके लायक ।
 सं० निन्त्रकर्म पु० कुत्सितकर्म, बुरा काम ।
 प्रा० निन्नानवे (सं० नवनवति, नव=नौ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और नौ, ६६ ।
 प्रा० निन्नानवे के फेर में पड़ना बोल० धन के इकट्ठा करनेही में लगा रहना, २ दुःख में फँसना ।
 प्रा० निपट गु० बहुत, अधिक, अत्यन्त ।
 सं० निपतन (नि=नीचे, पत्=गिरना) भा० पु० नीचे गिरना ।
 सं० निपात (नि=नीचे, पत्=गिरना)
 भा० पु० गिरना, मौत, मृत्यु, मरण, २ व्याकरण में च आदि और प्र आदि अव्यय ।
 सं० निपातक (निपात् + अंक)

नाशक, उजाड़नेवाला, दहानेवाला ।
 प्रा० निपातना (सं० निपात) क्रि० स० गिराना, नाशकरना, मारना ।
 सं० निपात र्म० पु० नाश किया, उजाड़ दिया ।
 सं० निपातित र्म० पु० अधःपतित, निक्षिप्त, नीचे गिरा, उजाड़ा हुआ ।
 सं० निपान (नि + पा=पीना) धि० जलाधार, चरही, कुएँका चहबच्चा, दोहनी, दूधदुहने का पात्र, कठरा ।
 सं० निपीडन (नि + पीड=मारना, मथना) भा० पु० पीड़ा देना, तकलीफ देना ।
 सं० निपीडित र्म० पीड़ा दिया गया, घातित, निचोड़ा गया ।
 सं० निपुण (नि + पुण=पवित्र होना) गु० प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान् ।
 प्रा० निपुणार्ह भा० स्त्री० चतुराई, अक्षलमन्दी ।
 प्रा० निपूता (सं० निपुत्र) गु० जिसके लड़का न हो, पुत्रहीन, निःसन्तान, बे औलाद, अनपत्य ।
 प्रा० निबड़ना { (सं० निवर्तन)
 निबटना } क्रि० अ० होबुकना, निपटना, खर्च होना, नाश होना, पूरा होना, खतम होना ।
 सं० निबन्धन (बन्ध=बाँधना) भा०

पु० बन्धन, बन्धेज, रोक, कैद ।
 सं० निबन्ध भा० पु० प्रमाण, ब-
 न्धन, प्रबन्ध, कारण, आनाह
 रोग, मूत्रादिरोग, ग्रन्थ की वृद्धि,
 संग्रहविशेष, माहवारी, सालीना,
 दैवीसम्पत् ।

प्रा० निबल (सं०निर्वल) गु०
 दुबला, दुर्बल, कमजोर ।

प्रा० निबाह (सं० निर्वाह) पु०
 पूरा करना, निर्वाह, पूरा, समाप्त,
 गुजारा, बसर ।

प्रा० निबाहना (सं०निर्वहण, निर-
 =निश्चय, वह्=सहना, ले
 जाना) क्रि० स० पूरा करना,
 सिद्ध करना, समाप्त करना, पार
 लगाना, २ बचाना, रक्षा करना,
 ३ वचन पूरा करना, अपना वि-
 श्वास बना रखना, ४ व्यवहार
 करना ।

प्रा० निबेड़ना { (सं० निवर्तन)
 निबेड़ना } क्रि० स० पूरा
 करना, निपटाना, चुकाना ।

प्रा० निबेड़ा { (सं० निवर्तन) पु०
 निबेड़ा } निबटारा, छुटकारा,
 पूरा करना ।

प्रा० निबुकना क्रि० अ० कुड़ाना,
 छुटकारापाना, २ सुकुड़मा, छोटा
 होना ।

सं० निभ (नि=पास, भा=चम-
 काना) गु० बराबर, समान,

सदृश, पु० कपट, छल, व्याज ।

प्रा० निभना (सं० निर्वहण) क्रि०
 अ० पार लगना, होना, पूरा
 होना, बन आना ।

सं० निभृत (नि, भृ=भरना) गु०
 नम्र, अचल, निश्चल, एकाग्र,
 २ निर्जन, ३ बुद्धिमान्, ४ र्म०
 गृहीत, लिया गया, छिपा, खुफिया ।

सं० निभृतम् अव्य० बलात्कार,
 हठ, आग्रह ।

सं० निम पु० सूची, सूजा, कर्तन,
 कतरनी, २ घोसला, ३ क्लेश ।

सं० निमग्न (नि=नीचे, मग्न्=
 डूबना) गु० डूबा हुआ, मग्न ।

सं० निमज्जन (नि=नीचे, मग्न्=
 डूबना) पु० स्नान, न्धाना, जल
 में डूबना, गुस्ल करना ।

सं० निमन्त्रण (नि, मन्त्र=बुलाना)
 पु० नेवता, बुलाहट, नौता ।

सं० निमन्त्रित र्म० न्योता गया,
 बुलाया गया ।

सं० निमि एक राजा का नाम जो
 इक्ष्वाकु राजा का पुत्र था ।

सं० निमित्त (नि, मिद्+त) क०
 पु० कारण, हेतु, सबब, लिये,
 २ भाग्य, भाग, शकुन, फल, शक्य ।

सं० निमीलन (मील्=मीचना)
 भा० पु० संकोचन, आँखमीचना,
 मृत्यु, तन्द्रा, ऊँघ, बड़ी नींद ।

सं० निमीलित र्म० पु० मुद्रित,

बन्द कर

सं० निमिष (१००, १०००)
निमेष (मारना) पु०

पल, क्षण, लव ।

सं० निम्न (नि=नीचे, आ=अभ्या-
स करना, याद करना) गु० नीचे,
जैल, २ गहरा ।

सं० निम्नगा (निम्न=नीचे, गम्=जाना)
स्त्री० नदी ।

सं० नियत (नि, यम्=रोकना)
र्म० पु० रोका हुआ, २ ठहरा
हुआ, निश्चित, मुक़रर किया
हुआ, क्रि० वि० लगातार ।

सं० नियन्ता (नि, यम् + तृ) क० पु०
शिक्षक, सारथी, पशुप्रेरक ।

सं० नियति स्त्री० प्रमाण, इमान, धर्म ।

सं० नियम (नि, यम्=रोकना, ठह-
राना) पु० वचन, शर्त, प्रतिज्ञा,
संकल्प, वाचा, २ धर्म का काम
जैसे व्रत, जागरण, प्रार्थना यज्ञ
आदि, ३ रीत, चलन, व्यवहार,
कायदा ।

प्रा० नियर (सं० निकट) क्रि०
वि० पास, नजदीक जैसे “ नियरे
गढ़वा, सियरे पानी ” ।

प्रा० नियराना (नियर) क्रि० अ०
पास आना, नगचाना, पहुँचना,
क़रीब आना ।

सं० नियुक्त (नि, युज्=मिलना)
क० पु० लगा हुआ, ठहराया हुआ,

(१००, यु=मिलना)

लाख ।

सं० नियोग (नि, युज्=मिलना)

पु० आज्ञा, प्रेरणा, हुक्म, ताकीद,
२ काम, शुगल, अनुमति ।

सं० नियोगी क० पु० अशुभचिन्त-
क, बदरुवाह, अहंकार, कारकुन ।

सं० नियोजन (नि, युज्=मिलना)

भा० पु० प्रेरणा, ताकीद, ल-
गाना, मिलाना ।

सं० निर् उपस० नहीं, विन, २ नि-
श्चय, ३ बाहर, ४ अच्छी तरह से ।

प्रा० निरङ्कार (सं० निराकार)

गु० आकाररहित, विन आकार,
अस्वरूप, पु० परमेश्वर, विष्णु ।

सं० निरङ्कुश (निर्=विन, अङ्कुश=
आँकुश) गु० विन रुकावट, नहीं
रोका हुआ, स्वेच्छाचारी, अपनी
इच्छा के अनुसार चलने वाला,
स्वतन्त्र, बे अदब ।

प्रा० निरखना (सं० निरीक्षण)

क्रि० स० देखना, ताकना ।

सं० निरञ्जन (निर्=चला गया है, अ-
ञ्जन=मल अथवा अन्धकार तमोगुण
आदि) गु० निर्मल, निस्पृह, स्वच्छ,
निर्दोष, काम व क्रोध से रहित,
बेमक, बेरिया, परमेश्वर, परब्रह्म ।

सं० निरत (नि=भीतर, रत=लगा
हुआ) पु० लगा हुआ, नियुक्त,

.कुल, सिर्फ ।

नरनि स्त्री० अ०

सं० निरधार भा० पु०

निर्णय, ठीक ।

सं० निरन्तर (निर्=नहीं, अन्तर=बीच) क्रि० वि० लगातार, नितउठा

सं० निरपराध (निर्=नहीं, अपराध=पाप) गु० निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध ।

सं० निरय पु० नरक, दुर्गति, दोजख ।

सं० निरर्गल (निर्=नहीं, अर्गल=संकली) गु० निर्बाध, बेरोक, निरंकुश, बे जंजीर, बेसांकर का ।

सं० निरर्थक (निर्=नहीं, अर्थ=प्रयोजन) गु० निष्प्रयोजन, वृथा, निष्फल, अर्थहीन, बेफायदा ।

सं० निरवकाश (निर् + अवकाश) गु० बे फुरसत, बे छुट्टी ।

सं० निरवद्य (निर्=नहीं, अवद्य=दोष) गु० निर्दोष, बे ऐव ।

सं० निरस (नि=बिन, रस=स्वाद) गु० फीका, बेस्वाद, अलोना, फीका ।

सं० निरसन (निर् + असन, अस्=फेकना) पु० परित्याग, अतिक्षेम, वध, निकारना ।

सं० निरस्त र्भ० पु० हारगया, फेकागया, मारा गया, भर्त्सित, जलायागया, लस्तपस्त ।

प्रा० निरा (सं० निरालय, निर्=बाहर, एकान्त, आलय=जगह)

कार (निर्=नहीं, आकार

प) गु० अस्वरूप, निरंकार, पु० परमेश्वर, अरूप ।

सं० निरादर (निर्=नहीं, आदर=मान) पु० अपमान, अमान, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती, बेकदरी ।

सं० निरामय (निर्=नहीं, आमय=रोग) गु० तन्दुरुस्त, नीरोग, सुखी, पु० मुअर, रवनका बकरा ।

सं० निरामिष (निर्=नहीं, आमिष=मांस) गु० मांस विना, बिन मांस का (भोजन) ।

सं० निरायुध (निर्=नहीं, आयुध=शस्त्र) गु० बिन शस्त्र, बे हथियार ।

प्रा० निराला (सं० निरालय, निर्=बाहर, एकान्त, आलय=जगह) गु० एकान्त, निर्जन, अलग, र निरा, केवल, मात्र, र अनूठा ।

प्रा० निरावना क्रि० सं० खेती मे कूड़ा करकट जुदा करना, साफ करना, पछोड़ना ।

सं० निराश (निर्=नहीं, आश=उम्मीद) गु० आशाहीन, नाउम्मीद, बेसहारा, बेभरोसा ।

सं० निराश्रय (निर्=नहीं, आश्रय=आसरा) गु० बिन आसरे ।

सं० निराहार (निर्=बिन, आहार=खाना) पु० उपवास, उपास, फाका, गु० बिनभोजन, बिनखाये ।

सं० निरीक्षण (निर्=निश्चय, ईक्ष्=देखना) भा० पु० देखना, दर्शन, दृष्टि, नजरकरनी, ताक ।

सं० निरीह (निर्=नहीं, ईहा=इच्छा, चेष्टा) गु० जिसको किसी बात की अथवा चीज़की इच्छा न हो, बे चेष्टा, निःस्पृह, बे नयाज़, बे लालच ।

सं० निरुक्त (निर्=निश्चय, उक्त=कहा हुआ, वच्=कहना) पु० वेद का एक अङ्ग जिस में वेद के शब्दों का अर्थ लिखा, वेद का व्याकरण और कोष, गु० कहा हुआ, कथित ।

सं० निरुत्तर (निर्=नहीं, उत्तर=जवाब) गु० चुप, अवाक्, लाज-वाब, बेजवाब ।

सं० निरुत्साह (निर्=बिन, उत्साह=उमङ्ग) गु० जिसके मन में किसी बात की उमङ्ग न हो, सुस्त, आलसी, ढीला ।

सं० निरुपम (निर्=नहीं, उपमा=बराबरी) गु० जिसकी बराबरी नहीं होसके, अनूप, अनुपम, अतुल्य, अपूर्व, बे मिस्त ।

सं० निरुपाधि (निर्=नहीं, उपाधि=गुण नाम, विशेषण वा छल) गु० उपाधिरहित, गुणरहित, निर्गुण, शुद्ध, निर्मल, बेखशखशा, बेभ्रगड़ा ।

सं० निरूप (निर्=नहीं, रूप=आकार) गु० निराकार, अस्वरूप, अरूप, बे स्मृत, पु० परमेश्वर ।

सं० निरूपण (निर्=निश्चय, रूप=आकार बाँधना, वा देखना) पु० वर्णन, निर्णय, निर्द्धार, विचार, दर्शन, देखना ।

सं० निरोग (निर्=नहीं, रोग=बीमारी) गु० भला, चञ्चा, अरोग, तन्दुरुस्त ।

सं० निर्गत (निर्=बाहर, गम्=जाना) क० निकलाहुआ, बाहर गया हुआ ।

सं० निर्गन्ध (निर्=नहीं, वा बिन, गन्ध=वास) गु० बिना बास, बिन महक, गन्धरहित ।

सं० निर्गम (निर्=बाहर, गम्=जाना) भा० पु० निकलना, बाहर जाना ।

सं० निर्गुण (निर्=नहीं, गुण=हु-नर, चतुराई, वा सत, रज, तम) पु० परमेश्वर, परमात्मा, परब्रह्म, गु० निर्विकार, निराकार, निरञ्जन, सत रज और तम इन तीनों गुणों से रहित, मूर्ख, गुणहीन, निकम्मा ।

सं० निर्घर्षण (निर्=निश्चय, घर्ष=रगड़ना) भा० पु० घिसना, रगड़ना ।

सं० निर्घोष (निर् + घुष=शब्द क-

रना) शब्द, आवाज ।
 सं० निर्जन (निर्=बिन, जन=मनुष्य) गु० एकान्त, जहाँ कोई मनुष्य न हो ।
 सं० निर्जर (निर्=नहीं, जरा=बुढ़ापा) पु० देवता, २ अमृत, गु० अजर, अमर ।
 सं० निर्जल (निर्=बिन, जल=पानी) पु० जंगल, मैदान, मरुस्थल, ऐसी जगह जहाँ पानी न मिले, गु० ऊसर, उजाड़, बिन पानी, जल बिन, सूखी (धरती) ।
 सं० निर्जित (निर्=नहीं, जि=जीतना) गु० अजय, अपराजित, अजीत, २ परास्त, पराजित, जीता गया ।
 सं० निर्जीव (निर्=बिन, जीव=प्राण) गु० अचेत, जड़, प्राणहीन ।
 सं० निर्भर (निर्=नीचे, भृ=उमर का घटना वा गिरना) पु० भ्रना, पहाड़ का सोता, चश्मा ।
 सं० निर्णय (निर्=निश्चय, नी=पाना वा चलाना) पु० निश्चय, विचार, विवेचना, मीमांसा, फैसला ।
 सं० निर्णीत र्म० पु० निश्चयकृत, फैसलहुआ, विचारित ।
 प्रा० निर्ते (सं० नृत्य) पु० नाच ।
 प्रा० निर्देई (सं० निर्देयः, निर्=

बिन + दया) गु० जिसके मन में दया न हो, कठोर, कड़ा, दयाहीन, जिसका दिल पत्थर सा कड़ा हो, संगदिल, निहुर ।
 सं० निर्दम्भ गु० निश्छल, निष्कपट, बेमक्र ।
 सं० निर्दिष्ट (निर्=अच्छीतरह से, दिश्=देना वा दिखाना, जताना) र्म० पु० अच्छीतरह से कहा हुआ, दिखलाया हुआ, निर्णय किया हुआ, नियत किया गया ।
 सं० निर्दोष (निर्=बिन, दोष=अपराध) गु० निरपराध, दोषहीन, बिन चूक, बे कसूर ।
 सं० निर्द्वन्द्व (निर्=बिन, द्वन्द्व=दो, वा बखेड़ा) गु० बिन बखेड़े, बे झगड़े, आराम से, चैनसे ।
 सं० निर्धन (निर्=बिन, धन=दौलत) गु० गरीब, कंगाल, दरिद्री ।
 सं० निर्धार (निर्=निश्चय, धृ=निर्धारण) पु० निश्चय, निर्णय, २ पृथक्करण, जुदा करना ।
 सं० निष्पक्ष (निर्=बिन, पक्ष=सहाय) गु० असहाय, बेबश, अनाथ, बे मदद ।
 सं० निष्फल (निर् + फल) गु० निष्फल, बृथा, व्यर्थ ।
 सं० निर्वन्ध (निर् + बन्ध=बन्धना)

भा० पु० आग्रह विशेष, जिद, बे
 रोक, बेकैद, बेसहारा, बेरोजगार ।
 सं० निर्वल (निर् + बल) गु०
 निबल, दुर्बल, दुबला, कमजोर ।
 सं० निर्वुद्धि (निर् + बुद्धि) गु०
 मूर्ख, असमझ, अनसमझ, अज्ञान ।
 सं० निर्भय (निर्=नहीं, भय=डर)
 गु० निडर, बेखाँफ ।
 सं० निर्भर (निर्=निश्चय, भृ=
 भरना) गु० पूरण, पूरा, बहुत,
 अत्यन्त, अतिशय ।
 सं० निर्मल (निर्=बिन, मल=मैल)
 गु० पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, उजला,
 साफ ।
 सं० निर्माणक क० पु० मुसन्निफ,
 कर्ता ।
 सं० निर्माण (निर्, मा=नापना,
 वा बनाना) पु० बनावट, रचना,
 तसनीक, २ सार ।
 प्रा० निर्माण करना क्रि० स०
 बनाना, रचना ।
 सं० निर्माल्य (निर्मल से, अथवा
 निर् और माल्य फूल वा फलों की
 माला) भा० पु० देवता का जूँटा
 प्रसाद, देवता को चढ़ाया हुआ
 नैवेद्य, २ पवित्रता, सफाई, फर्कीई,
 गु० पवित्र, साफ, शुद्ध ।
 सं० निर्मित (निर्, मा=नापना,
 वा बनाना) कर्म० बनाया हुआ,
 रचित, कल्पित ।

सं० निर्मूल (निर्=बिन, मूल=जड़)
 गु० उखड़ाहुआ, जड़से खोदा
 हुआ, बिन जड़, निर्बीज, बे ठि-
 काने, २ उजड़, नाश, ध्वंस ।
 सं० निर्मोही (निर्=बिन, मोह=
 प्यार) गु० निर्दय, कठोर, कड़ा ।
 सं० निर्यास (निर्, यस्=निक-
 लना) पु० वृक्षरस, गोंद, गन्ध ।
 सं० निर्लज्ज (निर्=बिन, लज्जा=
 लाज) गु० निर्लज्ज, बेशर्मा, नकटा ।
 सं० निर्लेप (निर्=नहीं, लिप्=
 लेपना) गु० बेलाग, बिनलगाव,
 अलेप, बेलाँस ।
 सं० निर्लोभ (निर्=बिन, लोभ=
 निर्लोभी) लालच) गु० जिस
 को लालच न हो, लोभहीन,
 बेतमा ।
 सं० निर्वंश (निर्=बिन, वंश=कुल)
 गु० वंशहीन, जिसके वंश न
 हो, अपूता, निपूता, बे औलाद,
 लावल्द ।
 प्रा० निर्वहे गु० बीतगये, छूटगये ।
 सं० निर्वाचन (निर्, वच्=कहना)
 भा० पु० चुनना ।
 सं० निर्वाचक क० पु० चुननेवाला ।
 सं० निर्वाण (निर्, वा=बहना,
 जाना) पु० मुक्ति, मोक्ष, लय
 होना, गु० बुता हुआ, बुझा हुआ,
 ठण्डा किया हुआ, २ नष्ट ।
 सं० निर्वात गु० वायुरहित स्थान,

बे हवा का ।	बाधा दूरकरना, हटाना, निवारना ।
सं० निर्वास (निर् + वास = रहना)	प्रा० निवारना (सं० निवारण)
भा० पु० निकालना, बाहर करना,	क्रि० सं० रोकना, दूर करना,
मारना, मना करना ।	अटकाना ।
सं० निर्वासक (निर्वास + अक)	सं० निवास (नि = भीतर, वस् =
क० पु० निकालनेवाला ।	रहना) पु० वासा, घर, मकान,
सं० निर्वासित मर्म० पु० निकाला	डेरा, जगह ।
गया ।	सं० निवासी (निवास) गु० रहने
सं० निर्वाह (निर् = निश्चय, वह =	वाला, बसनेवाला, वासी ।
लेजाना) पु० निवाह, पूरा करना,	सं० निविड (नि = बहुत, विड =
समाप्ति ।	इकट्ठा होना) गु० गहरा, घना,
सं० निर्विकल्प (निर् = नहीं, वि-	सघन, गुंजान ।
कल्प = भेद भ्रम) गु० भेद और	सं० निवृत्त (नि = नहीं, वृत् = वर्तना)
भ्रम से रहित, बेशक शुद्धता ।	क० पु० छूटा हुआ, मुक्त, फरा-
सं० निर्विकार (निर् = बिन, विकार	गत पाया हुआ ।
= बदलना) गु० नहीं बदला हुआ,	सं० निवृत्ति भा० स्त्री० छुटी, गि-
जिसमें किसी तरह का विकार वा	हाई, सुख, सिद्धि ।
दोष न हो, एक भाव, एक रंग ।	सं० निवेदन (नि = अच्छी तरह से,
सं० निर्विघ्न (निर् = बिन, विघ्न =	विद् = जानना) पु० बिनती, प्रा-
बिगाड़) गु० विघ्नरहित, बिन	र्थना, विज्ञापन, विनयपत्र, द्र-
बिगाड़, बेखटके ।	त्वास्त ।
सं० निर्बीज (निर् + बीज) गु०	सं० निश् (नि = सब तरह से, शो =
निर्मूल, बीजरहित, बिन बीज ।	निशा) पतला करना, अर्थात्
सं० निलय (नि = भीतर, ली = लेना	कामों को पूरा करना) स्त्री० रात,
वा मिलना) पु० घर, स्थान ।	रात्री, २ हल्दी ।
सं० निवर्तन (नि, वृत् = वर्तना,	सं० निशाकर (निशा = रात, कर =
रोकना) क्रि० सं० लौटना,	करनेवाला, कृ = करना) पु० चाँद,
वापस आना ।	चन्द्र, चन्द्रमा ।
सं० निवारण (नि, वृत् = घेरना, रो-	सं० निशाचर (निशा = रात, चर =
कना) पु० रोक, रुकावट, अटकाव,	चलनेवाला वा खानेवाला, चर =

चलना वा खाना) पु० राक्षस,
२ भूत, ३ डब्ज, ४ चौर, ५
भीदङ्ग, गु० रात को चलनेवाला
वा खानेवाला ।
सं० निशाचरी (निशाचर) स्त्री०
राक्षसी, २ वेश्या, व्यभिचारिणी,
कुलटा, ३ केशिनी नाम गन्धद्रव्य ।
सं० निशानन } (निशा + आनन)
निशामुख } सायंकाल, प्रदोष,
रात्रिमुख } शाम ।
सं० निशानाथ } (निशा=रात,
निशापति } नाथ वा पति=
राजा) पु० चाँद, चन्द्रमा, चन्द्र ।
सं० निशानाथमुखी स्त्री० चन्द्र-
मुखी वा चन्द्रवदनी ।
प्रा० निशि } (सं० निश् वा निशा)
निसि } स्त्री० रात, रात्री, रजनी ।
प्रा० निशिचर } (सं० निशाचर,
निसिचर } निशि=रात में,
चर=चलनेवाला) पु० राक्षस ।
सं० निशित (नि=अच्छी तरह से
शि=तीखा करना) पु० तीखा,
तीक्ष्ण, चोखा, शाणित, पैना
किया हुआ ।
सं० निशीथ (नि=अच्छी तरह,
शी=सोना) पु० अर्द्धरात्र, आधी
रात ।
सं० निशीथिनी स्त्री० रात्रि ।
सं० निशुम्भ (नि=निश्चय, शुम्भ
=मारना) पु० एक राक्षस का

नाम, जिसको दुर्गा ने मारा ।
सं० निशेश (निशा=रात, ईश=
राजा) पु० चाँद, शशि ।
सं० निश्चय (निर=अच्छीतरह से,
चि=इकट्ठा करना) भा० पु० निर्णय,
ठीक करना, पक्का करना, भरोसा,
विश्वास, गु० ठीक, सच, असंशय ।
सं० निश्चर (निश्=रात, चर=च-
लनेवाला, चर=चलना) पु०
राक्षस ।
सं० निश्चल (निर=नहीं, चल=च-
लना) गु० अचल, अटल, स्थिर,
ठहरा हुआ, जो नहीं चले ।
सं० निश्चला स्त्री० पृथ्वी, जमीन ।
सं० निश्चित (निर=अच्छीतरह से
चि=इकट्ठा करना) मर्म० पु० निश्चय
किया हुआ, निर्णय किया हुआ
सं० निश्चिन्त (निर=नहीं, चिन्ता
=शोच) गु० निचिन्त, बे फिक्र,
बिनचिन्ता, चिन्तारहित ।
सं० निश्वास (नि=बाहर, श्वस्
=साँस आना वा लेना) पु० मुँह
और नाक से बाहर निकली हुई
हवा, साँस, निसास ।
सं० निषङ्ग (नि, षङ्ग=मिलना)
पु० भाथा, तूण, तूणीर, तर्कश ।
सं० निषण्ण (नि=नहीं, षट्=च-
लना) मर्म० पु० बैठा हुआ, आ-
सीन, आसन्न ।
सं० निषाद (नि, षट्=मारना)

पु० चण्डाल, जो ब्राह्मण से शूद्रों के गर्भ में पैदा हो, मल्लाह, २ एक राग का नाम ।

सं० निषिद्ध (नि, पिध्=जाना, पर नि उपसर्ग के साथ आनेसे अर्थ हुआ रोकना) र्भ्य० रोका हुआ, निवारित, वर्जित ।

सं० निषेधक (नि, पिध्=अक) क० पु० रोकनेवाला, मनअ करनेवाला ।

सं० निषेध (नि, पिध्=रोकना) पु० रोक, रुकाव, बाधा, नाहीं ।

सं० निष्क पु० अशर्फी, सोनेका रुपया, दीनार ।

सं० निष्कण्टक (निरु=बिन, कण्टक=कांटा) गु० बिन दुःख, अकण्टक, बिन शत्रु ।

सं० निष्कर (निरु=बिन, कर=लगान) गु० बेलगान, मुआफ़ी ।

सं० निष्कपट (निरु=बिन, कपट=छल) गु० बिन छल, सीधा, सरल, सच्चा ।

सं० निष्कलङ्क गु० निर्दोष, बेदाग, बेअयब ।

सं० निष्काम (निरु=बिन, काम=इच्छा) गु० निकाम, जिसको किसी बातकी इच्छा न हो, निःस्पृह ।

सं० निष्कारण गु० बेप्रयोजन, बेसबब ।

सं० निष्केवल (निरु + केवल) गु० अकेला, तनहा ।

सं० निष्क्रमण (निरु + क्रम=चलना) भा० पु० बाहर निकलना, शिशु को चौथे महीने बाहर निकालते हैं उसको कहते हैं ।

सं० निश्चेष्ट गु० बेकाम, चेष्टाहीन, तदवीर से खाली ।

सं० निष्ठा भा० स्त्री० धर्म में तत्परता, श्रद्धा, विश्वास, क्लेश, व्रत, उत्पत्ति, नाश, अन्त, उत्कर्ष ।

सं० निष्ठुर (नि, स्था=ठहरना) गु० निदुर, निर्दयी, कठोर, कड़ा, कठिन ।

सं० निष्पक्षपात गु० मित्रताराहित, बेसहायता, विलातरफदारी, नहीं हराना, और न लेना, मदद न देना, बेतअस्मुब ।

सं० निष्पत्ति (निरु=अच्छी भाँति से, पद्=जाना) स्त्री० सिद्धि, पूरा होना, सिद्ध होना ।

सं० निष्पन्न (निरु, पद्=जाना) गु० सिद्ध, पूरा, पूर्ण, पूरा किया हुआ ।

सं० निष्पाप (निरु=नहीं, पा पराध) गु० निरपराध, निर्दोष, बेगुनाह ।

सं० निष्फल (निरु + फल) गु० वृथा, विफल, निरर्थक, फलहीन ।

सं० निस् उपस० नहीं, २ मिश्रचय, ३ सब तरह से, सब प्रकार से ।

प्रा० निसरना (सं० निसरण, निरु=बाहर, सृ=जाना) क्रे० अ० निकलना, निकसना ।

सं० निसर्ग (नि, सृज्=उप-

पु० स्वभाव, स्वरूप, सृष्टि, विलक-

प्रा० निस्सास (सं० निःश्वास) पु०

साँस, उसास, पछतावा ।

प्रा० निसेनी { (सं० निःश्रेणी)

निसैनी } स्त्री० सीढ़ी, सोपाना

सं० निखूदन (नि, खूद्=खोदना)

भा० पु० मारना, वध करना,

कतल करना, खोदना ।

सं० निस्तार (निर=निश्चय, तृ=पार

होना) पु० उद्धार, मुक्ति, मोक्ष,

पार होना, बचाव, छुटकारा, त्राण,

जन्म मरण का निबेड़ा, करागत ।

प्रा० निस्तारना (सं० निस्तारण)

क्रि० स० बचाना, उबारना, मुक्ति

देना, जन्म मरणसे छुटकारा करना ।

प्रा० निस्तारा (सं० निस्तार) पु०

छुटकारा, निबेड़ा, मोक्ष, मुक्ति, २

वर, आशिष ।

सं० निम्निस स्त्री० संगीन बन्दूक की ।

सं० निरसंदेह (निर=बिन, संदेह

=शक) गु० निश्चय, बेशक ।

सं० निहत (निहन्=मारडालना)

र्म० पु० मारा गया, वध किया गया ।

सं० निहित (नि=निश्चय, धा=धरना)

र्म० स्थापित, गुप्त, स्थित, निक्षिप्त ।

प्रा० निहाई स्त्री० धन, हथौड़ा ।

प्रा० निहार पु० कुहर, कुहिरा ।

प्रा० निहारना क्रि० स० ताक ल-

गाना, देखना ।

गु० पसन्न, सुखी,

हर्षित, बड़ा हुआ ।

प्रा० १ स्त्री० रजाई, फर्द ।

प्रा० निहुरना १० अ० झुकना,

नमना, दबना ।

प्रा० निहोरा पु० उपकार, २ बि-

नती, इहसान ।

प्रा० नींद { (सं० निद्रा) स्त्री०

नींद } सोने की चाह, ऊँचाई ।

प्रा० नींद उचाट होना बोल० नींद

नहीं आना, नींद का टूटना,

आँख नहीं मिजना ।

प्रा० नींद भर सोना बोल० गहरी

नींद आना, चैन से सोना ।

प्रा० नींबू (सं० निम्बूक, निम्बू

=सींचना) पु० लेमू, एक प्रकार

का खट्टा फल ।

प्रा० नीका { (फा० नेक) गु०

नीकौ } भला, सुन्दर, अच्छा

सुडौल, २ चंगा ।

प्रा० नीगुने (सं० निर्गुण) गु०

बेगिनत, बेगुमार, अनगिनत, नहीं

गिना हुआ ।

सं० नीच (नि=नीचे, अञ्च्=जाना

अथवा नि=नीच संपदा को, चम्

=खाना, भोगना) गु० नीचा, अ-

धम, छोटा, निकम्मा, निकुष्ठ, कमीना

प्रा० नीचा (सं० नीच) गु० नीच

अधम, छोटा, पु० तलातल ।

प्रा० नीचा ऊँचा बोल० ना बरा-

वर जमीन, न हमव

प्रा० नीच (सं० नी

वि० तले ।

सं० नीचगा (नीच=नीचे, गम्=जाना) स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० नीड़(नि=अच्छीतरह से, इल्=सोना जिसमें) पु० पखेरुओं का घर, घोंसला, खोंता, आशियाना ।

सं० नीत (नी + त, नी=ले जाना) र्म्य० पु० प्राप्त, लाया गया ।

सं० नीति (नी=ले जाना) स्त्री० अच्छा चलन, उचित व्यवहार, राजनीति, देशप्रबन्धीविद्या, न्याय प्रकार के हैं साम, दाम, दण्ड, भेद ।

सं० नीतिकला स्त्री० राजनीति, हिकमत अमली, पालसी ।

सं० नीतिधात्री { मुहकमा दीवानी।
नीतिविधायक }

सं० नीतिज्ञ (नीति + ज्ञा=जानना) पु० नीति जाननेवाला, राजज्ञानी ।

प्रा० नीम { (सं० निम्ब, निम्ब=नींब) सौचना) पु० एक वृक्ष का नाम ।

सं० नीर (नी=पाना) पु० पानी, जल, रस ।

सं० नीरज (नीर=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कैवल, र ऊद-बिलाव, गु० पानी में पैदा हुई चीज ।

सं० नीरद (नीर=पानी, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घन ।

नीरधर (नीर=पानी, धृ=रखना) पु० बादल, मेघ ।

सं० नीरनिधि (नीर=पानी, निधि=खजाना) पु० समंदर, समुद्र, सागर ।

सं० नीरस (निर=बिन, रस=स्वाद) गु० निरस, फीका, असार, रसहीन ।

सं० नील (नील्=नीला होना) गु० नीला, काला, कृष्ण, रसौखरवा स्त्री० एक नाथा जो नीला रँगने के काम में आता है, २ एक नदी का नाम जो मिसर देश में है, ३ पु० एक पहाड़ का नाम, ४ एक वानर का नाम, ५ कुबेर की नव निधि अथवा खजाने में का एक खजाना ।

सं० नीलकण्ठ (नील=नीला, कण्ठ=गला) पु० महादेव जिन्होंने समुद्र मथने के समय जो विष निकला था उसको पिया इस लिये उनका गला नीला होगया, २ मोर, मयूर, ३ एक पखेरु का नाम कटनास ।

प्रा० नीलगाव (सं० नीलगौ) स्त्री० नीली गाय, रोझ ।

सं० नीलग्रीव (नील=नीली, ग्रीव=गरदन) पु० महादेव, शिव, गु० नीला गलावाला, जिसका गला नीला हो, २ मोर ।

प्रा० नीलम (सं० नीलमणि) पु० नीले रंग का रतन, जमुर्द ।

सं० नीलमणि (सं० नील=नीला,

मणि=रतन) स्त्री० नीलम,
जमुर्हद ।

प्रा० नीला (सं० नील) गु० नील
में रंगा हुआ, नीलवर्ण ।

प्रा० नीलाश्रुथा पु० तृतीया,
नीलाञ्जन ।

प्रा० नीलाम (पोर्तुगालकी भाषा
के शब्द “लेलाम” “Lelam”
का अपभ्रंश) पु० किसी चीज को
एक मोल पर नहीं बल्कि पहले
कुछ मोल बोलना फिर ज्यों ज्यों
ग्राहक मोल बढ़ाते जाते हैं अन्त
में जो सबसे अधिक बोले उसी
को बेच देना ।

सं० नीलाम्बर (नील=नीला, अ-
म्बर=कपड़ा जिसके हो) पु०
बलदेव, २ शनैश्चर, ३ नीला
कपड़ा ।

सं० नीलोपल { नील=नीला,
नीलात्पल { उपल=पत्थर,
उत्पल=कमल, पु० नीला पत्थर,
नीलमणि वा नीलाकमल ।

सं० नीवार नी, वृ=आच्छादनकरना
(घेरना) पु० तिब्बी का वृक्ष,
तालाब का चावल ।

सं० नीवी स्त्री० बनियों का मूलधन,
पूँजी, कमरबन्द, ईज्जारबन्द, नारा ।

सं० नीधृत् पु० देश, जनपद, जन-
स्थान ।

सं० नीशार (नी + शृ=मारना)

पु० तम्बू, कनात डेरा, कमल,
रेशमीवस्त्र ।

सं० नीहार (नी, हृ=लेना) पु०
घनापाला, ओस, कुहर, शिशिर ।

सं० नूतन { (नव, नु=सराहना)
नूत { पु० नया, नवीन, टटका ।

प्रा० नून { (सं० लवण) पु० नि-
नोन { मक, नमक, लोन, खार ।

सं० नूपुर (नू=गहना, पुर=आगे
जाना, अर्थात् जो सब गहनों के
आगे रहता है) पु० बिड़िया, पाँव
की अँगुलियों में पहनने का गहना,
नूपुर ।

सं० नृ (नी=लेजाना वा चलना)
पु० मनुष्य, पुरुष, नर, मर्द ।

सं० नृग पु० एक सूर्यवंशी राजा
का नाम ।

सं० नृत्त { (नृत्=नाचना) पु०
नृत्य { नाच, नर्तन ।

सं० नृत्यक (नृत्=नाचना) पु०
नाचनेवाला, नचवैया ।

सं० नृप (नृ=मनुष्य, प=पालने
वाला, पा=पालना) पु० राजा,
भूपाल, भूपति ।

सं० नृपघाती (नृप=राजा, हन्=
मारना) क० पु० राजाओं का
मारनेवाला, परशुराम ।

सं० नृपति (नृ=मनुष्य, पति=
स्वामी, मालिक) पु० राजा ।

सं० नृपाल (नृ=मनुष्य, पाल=

पालना) पु० राजा ।

सं० नृशंस (नृ=मनुष्य, शंस=मारना) गु० मारनेवाला, दुष्ट, दुःख-
दायी, क्रूर, परद्रोही, बेहया, बदकार ।

सं० नृसिंह (नृ + सिंह) पु० नर-
सिंह अवतार ।

सं० नृहरि (नृ=मनुष्य, हरि=सिंह)
पु० नरसिंह अवतार ।

प्रा० नेक { गु० कुछ, थोड़ा, अल्प,
नेकु } तनक, जरा ।

फ्रा० नेकनाम नामवर, यशस्वी,
सुयशी ।

सं० नेक्ता (निज् + तृ, निज्=पोषण
करना) क० पु० पोषक, पालक,
पोषणकर्ता ।

प्रा० नेग { पु० ब्याह में अथवा
नेगचार } और किसी उत्सव में
अपने नातेदारों को कुछ देना,
ब्याह में पुरोहित की दक्षिणा, २
बाँटा हिस्सा ।

प्रा० नेगी (नेग) गु० बँटानेवाला,
हिस्सेदार, २ परजा, मँगता ।

सं० नेजक (निज् + अक, निज्=शुद्ध
करना) क० पु० धोबी, परिष्कारक ।

सं० नेजन भा० पु० शोधना ।

सं० नेता (नी=लेजाना) क० पु०
लेजानेवाला ।

सं० नेतव्य र्म्य० पु० लेजाने योग्य ।

सं० नेति (न=नहीं, इति=यह) गु०
ऐसा नहीं, यह नहीं, जिसका पार

नहीं, अनन्त, परमेश्वर का गुण ।

प्रा० नेती (सं० नेत्र, नी=लेजाना
वा चलाना) स्त्री० दही मथने
की रस्सी ।

सं० नेत्र (नी=लेजाना वा चलाना
वा पहुँचाना वा पाना) पु० आँख,
नयन, लोचन, २ नेती, गु० ना-
यक, चलानेवाला ।

सं० नेत्रच्छद (नेत्र=आँख, छद्=
ढकना) पु० नेत्रपुट, आँखपट ।

सं० नेत्राम्बु (नेत्र=आँख, अम्बु=
पानी) पु० आँसू, आँखका पानी ।

सं० नेपथ्य { पु० पर्दा से रास्ता,
नैपथ्य } आड़ का रास्ता, विनय
के लिये सजी भूमि, मतान्तर,
अलंकार, पन्थ ।

सं० नेपाल पु० एक देश का नाम ।

प्रा० नेपुर (सं० नूपुर) पु० नूपुर ।

सं० नेम गु० अर्द्ध, आधा, निस्क ।

प्रा० नेम (सं० नियम) पु० वचन,
प्रण, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, होड़,
हठ, २ व्रत संयम आदि ।

सं० नेमि स्त्री० धुरी जिसमें पहिया
लगे पु० तित्री, जंगली चावल ।

प्रा० नेमधर्म (सं० नियम धर्म) पु०
उपवास, व्रत, २ अच्छा चलन ।

प्रा० नेरे { (सं० निकट) नित्य,
नेरौ } पास, समीप, नगीच ।

प्रा० नेव { स्त्री० भीत की जड़ ।
नीव }

सत्तू ।

सं० बन्धुल पु० असतीपुत्र, गु० रम्य, सुन्दर, नम्र ।

प्रा० बन्धेज (सं० बन्धू=बाँधना) पु० क्लिफायत, कपखर्ची, २ दृढता, ३ रोजीना, वजीफा ।

सं० बन्ध्या (बन्धू=बाँधना) स्त्री० बाँझ स्त्री, अपुत्रवती ।

प्रा० बन्ना { क्रि० अ० होना, तैयार बनना } होना, २ सुधारना, मरम्मत होना, ठीक होना, ३ सफल होना, सिद्ध होना, बन पड़ना ।

प्रा० बनआना बोल० हो सकना, २ भाग जागना, किस्मत खुलना ।

प्रा० बनजाना बोल० होजाना, सम्हल जाना ।

प्रा० बनपड़ना बोल० सुधारना, भला होना, बन्ना, होसकना, सफल होना, सिद्ध होना ।

प्रा० बनबनकरबिगड़ना बोल० तैयार होकर खराब होजाना ।

प्रा० बनाबुना बोल० सँवाराहुआ, सिंगाराहुआ, सजाहुआ ।

प्रा० बन्नाठन्ना बोल० खूब सिंगार करना, आरास्ता होना ।

प्रा० बनाबनाया बोल० तैयार, पूरा, सिद्ध, कामिल ।

प्रा० बनारहना बोल० ठहरारहना, कायमरहना ।

प्रा० बपुरा गु० बेवश, अनाथ, दीन,

कंगाल ।

प्रा० बपौती (बाप) स्त्री० पैतृक धन, विरासत, बाप की द्रव्य ।

प्रा० बफारा (सं० बाष्प=भाफ) पु० भाफ ।

प्रा० बफारालेना बोल० भाफको बन्द करके शरीर में जाने देना ।

प्रा० बबूर { (सं० बरुर) पु० एक बबूल } कँटीले वृक्ष का नाम ।

सं० बभ्र पु० गमन, चाल, मर्यादा, गु० चलनेवाला ।

सं० बभ्रिक पु० पालक, रक्षक, सुखदायी ।

सं० बभ्रु (बभ्रु=गमन करना) पु० शिव, विष्णु, नकुल, न्योला, वह्नि, मुनिभेद, देशभेद, गु० धूसरवर्ण, पीतवर्ण, सुन्दर ।

सं० बभ्रुधातु पु० सोना, धतूरा, गेरू ।

प्रा० बघा (सं० बयस्, अज्=जाना) पु० एक पखेरू जो सिखलाने से स्त्रियों की टिकुली उतार लाता है ।

प्रा० बयार (सं० वायु) स्त्री० हवा, पवन, वाव, बतास, वायु, बयार ।

प्रा० बयालीस (सं० द्विचत्वारिंशत्) गु० चालीस और दो, ४२ ।

प्रा० बयासी (सं० द्व्यशीति, द्वि=दो, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और दो, ८२ ।

प्रा० बर (सं० वर, वृ=पसन्द करना) पु० वरदान, आशिष, चाही हुई

चीज, २ पति, स्वामी, दुलहा, ३
जैवाई, गु० सबसे अच्छा, श्रेष्ठ,
उम्दा ।

प्रा० बरखना (सं० वर्षण, वृष्=
बरसना) बरसना) क्रि० अ०
पानी पड़ना, मेह गिरना, वर्षा
होना ।

प्रा० बरजना (सं० वर्जन, वृज्=
झोड़ना) क्रि० स० रोकना,
मनअ करना, निषेध करना ।

सं० बरट पु० हंस, बर, भिड़ ।

प्रा० बरत (सं० व्रत) पु० उपास,
उपवास, रोजा ।

प्रा० बरतन (पु० बासन, पात्र,
वर्तन) भाँड़ा ।

प्रा० बरतना (क्रि० स० काम में
वर्तना) लाना, इस्तअमाल
करना ।

सं० बरदान (बर=चाही हुई चीज,
दा=देना) पु० आशिष, दुआ ।

प्रा० बरध (सं० बलीवर्द) पु० बैल ।

प्रा० बरन (सं० वरम्) समुच्च० बलिक,
२ (वर्ण शब्द को देखो) ।

प्रा० बरनन (सं० वर्णन) पु० ब-
खान, बयान, २ सराह, स्तुति ।

प्रा० बरननकरना (क्रि० स०
बरनना) बखानकरना,
बयान करना, सराहना ।

प्रा० बरना (सं० वृ=पसन्द करना)
क्रि० स० ब्याह करना, विवाह

करना, शादी करना ।

प्रा० बरबरी (बार बैरी barbery
एक जगह आफ्रिका में है वहाँ की
बकरी मोटी और बड़ी होती है)
स्त्री० एक तरह की बकरी ।

प्रा० बरबस पु० { बरजोरी, जो-
बरयाई स्त्री० { रावरी, बल,
जोर, बढ़ाई, क्रि० वि० जोरावरी
से, जबरदस्ती से, हठसे ।

प्रा० बरमा (पु० बड़हियों का एक
बर्मा) औजार जिससे ल-
कड़ी छेदते हैं ।

प्रा० बरराना क्रि० स० नींदमें कुछ
कहना ।

प्रा० बरवा पु० एक छन्दका नाम,
२ एक रागिणी का नाम ।

प्रा० बरस (सं० वर्ष) पु० साल,
संवत् ।

प्रा० बरसगाँठ (सं० वर्षग्रन्थि, वर्ष=
साल, ग्रन्थि=गाँठ) स्त्री० सालगि-
रह, जन्मदिन ।

प्रा० बरसौड़ी (सं० वार्षिक) स्त्री०
सालियाना महसूल, बरस का कर ।

प्रा० बरहा पु० गायों के चरने का
खेत, चरागाह, २ खेत में पानी
लेजाने की राह ।

प्रा० बरही पु० मोर, मयूर ।

प्रा० बरात (सं० व्रात, वृ=पसन्द
करना) स्त्री० दुलहे की सवारी की
धूमधाम ।

प्रा० नेवतना } (सं० निमन्त्रण)
न्योतना } क्रि०स०न्योतादेना,
खिलाने के लिये बुलाना ।

प्रा० नेवता } (सं०निमन्त्रण) पु०
नाता } बुलाहट, खिलाने के
न्योता } लिये बुलाना ।

प्रा० नेवर } पु० घोड़े के पाँव का
नेवल } घाव, अथवा रोग ।

प्रा० नेवल } (सं०नकुल) पु०एक
नेवला } जानवर का नाम ।

प्रा० नेवार } (फ्रा०नेवार)स्त्री० एक
निवार } प्रकार की चौड़ी पट्टी
या कोर जिससे पल्ले बुनेजाते हैं ।

प्रा० नेह (सं० स्नेह) पु० प्यार,
प्रीति, मोह, मुहब्बत ।

प्रा०नेही (सं०स्नेही)गु०प्यारा, मित्र ।

प्रा० नैन } (सं० नयन) पु० आँख,
नैना } नेत्र, लोचन ।

सं० नैमित्तिक भा० पु०निमित्त स-
म्बन्धी, निमित्त से आया, गैरमञ्ज-
मूली, जो रोज़ न हो ।

सं० नैमिष (निमिष, अर्थात् जहाँ
विष्णु ने पलभर में एक राक्षस को
मारा था) पु० एक तीर्थ का नाम ।

सं० नैमिषारण्य (नैमिष + आरण्य)
पु० एक जंगल का नाम जहाँ बहुत
ऋषि रहते थे और जहाँ सूतजी
ने इन सनकादि ऋषियों को
महाभारत और पुराण आदि

सुनाये थे ।

सं० नैयायिक (न्याय) पु० न्याय-
शास्त्र जाननेवाला, न्यायशास्त्र का
पण्डित, मुनिक ।

सं० नैराश्य भा० पु० निरासरा, न
उम्मेदी, आशाशून्य, आशारहित ।

सं० नैर्ऋत्य (नैर्ऋत=एक राक्षस
का नाम जो इस कोण का दिक्पाल
है) पु० दक्षिण पश्चिम का कोण ।

सं० नैवेद्य (निवेद) पु० देवता का
भोग, प्रसाद, चढ़ावा, बलि ।

सं० नैसर्गिक भा० पु० स्वाभा-
विक, तबयी, दिली ।

सं० नैष्ठिक भा० पु० धार्मिक, मुञ्चत-
क्रिद, विश्वासिक, स्त्री० नैष्ठिका,
धार्मिका, विश्वासिका ।

प्रा० नैहर पु० पीहर, मैका, स्त्री के
बाप का घर ।

प्रा० नोकचोक बोल० स्त्री० सं-
केतों से बातें करना, इशारों से
बातें करना, २ लागडाट ।

प्रा० नोकभोक बोल० स्त्री० खैंचा-
खैंची, चढ़ाउपरी ।

प्रा० नोचना क्रि० स० खसोटना,
बकोटना, खरोटना, झीलडालना,
नख से उखाड़ना ।

अं० नोट याददाश्त, २ हुण्डी,
३ हाशिया, ४ निशान ।

फ्रा० नौकर पु० चाकर, सेवक, दास ।

फ्रा० नौकरी स्त्री० चाकरी, सेवा ।

सं० नौ (नुद्=चलाना) स्त्री०
नौका } नाव, तरणी ।

प्रा० नौखण्ड (सं० नव खण्ड)
पु० पृथ्वी के नव भाग, १ भरत,
२ इलाहृत, ३ किम्पुरुष, ४ भद्र,
५ केतुमाल, ६ हिरण्य, ७ कुरु,
८ रम्य, ९ हरिवर्ष ।

प्रा० नौगरी स्त्री० स्त्रियों के हाथ में
पहनने का गहना, नौगिरही ।

प्रा० नौछावर स्त्री० निछावर,
सदका, उतारा, बलिहारी ।

प्रा० नौज्ज क्रि० वि० ऐसा न हो ।

प्रा० नौढ़ाना (सं० नमन, नम्=भु-
काना) क्रि० सं० सिरभुकाना ।

प्रा० नौतना (सं० निमन्त्रण) क्रि०
सं० नेवतना, न्योतना ।

प्रा० नौता (सं० निमन्त्रण) पु०
नेवता, न्योता ।

प्रा० नौमी (सं० नवमी) स्त्री०
नवीं तिथि ।

प्रा० नौसादर पु० एकतरह का खार ।

सं० न्याय (नि, निश्चय, इ=जाना)
पु० धर्म, विचार, इन्साफ, नीति,
२ तर्कशास्त्र ।

सं० न्यायकारी (क० पु० न्याय
न्यायी) करनेवाला, मु-

निसफ, आदिल ।

सं० न्यायालय (न्याय + आलय)

धि० अदालत, कचहरी, न्यायसभा ।

सं० न्यायी (न्याय) क० पु० न्याय
करनेवाला, धार्मिक, धर्मात्मा,
२ न्यायशास्त्र का जाननेवाला ।

प्रा० न्यार (सं० न्याद, नि, अद्=
खाना) पु० चारा, सूखी घास ।

प्रा० न्यारा (सं० निरालय) गु०
जुदा, अलग, एकान्त ।

प्रा० न्यारिया पु० एक जाति के
मनुष्य जो सोने चाँदी आदि
धातुओं को मैल, मिट्टी से जुदा
करके निकालते हैं ।

प्रा० न्याव (सं० न्याय) पु० धर्म-
विचार, इन्साफ ।

अं० न्यशनलकांग्रेस जातीय महा-
सभा, कौमी दरबार ।

सं० न्यस्त (नि + अस्त, अस्
=देना) र्म० पु० स्थापित, अर्पित,
दियागया ।

सं० न्यास (नि + अस्) पु० अर्पण,
निक्षेप, विन्यास, संन्यास, स्थापन,
उपनिधि, धरोहर ।

सं० न्युञ्ज (नि + उञ्ज=कोमल
करना) पु० अधोमुख, नीचा मुँह,
कुञ्जमुख, टेढ़ामुख ।

सं० न्यून (नि=निश्चय, ऊन=
थोड़ा, कम होना) गु० थोड़ा, कम,
२ दोषी, पामर, नीच ।

सं० न्यूनता (न्यून) भा० स्त्री० कमी,
घटी, २ छोटापन, क्षुद्रता, निचाई ।

सं० न्यूनाधिक (न्यून + अधिक)

गु० थोड़ा बहुत, घटबढ़, कमवेश ।

प

सं० प (पत्=गिरना वा पा=बचाना, या पीना) पु० हवा, पवन, २ पत्ता, ३ पीना, गु० बचानेवाला, २ पीने वाला, ३ तीव्र, ४ लालरङ्ग का, ५ शूरवीर ।

प्रा० पचाँर (सं० प्रमर, प्र=बहुत, मृ=मारना) पु० राजपूतों की एक जाति, ३६ में से ।

प्रा० पँवारा पु० कहानी, कथा, इतिहास ।

प्रा० पँवारिया (पँवारा) पु० भाट, कहानी कहनेवाला, नकलिया ।

प्रा० पँवारी (सं० पर्णवाटी) स्त्री० पान की बाड़ी ।

प्रा० पंख (सं० पक्ष) पु० पाँख, पर ।

प्रा० पंखड़ी (सं० पक्ष) स्त्री० फूल की पत्ती, कली, पखड़ी ।

प्रा० पंखा (सं० पक्ष) पु० बिजना, बेना ।

प्रा० पंखी (सं० पक्षी) पु० पखेरू, पक्षी, स्त्री० छोटा पंखा ।

प्रा० पंगत (सं० पङ्क्ति) स्त्री० पाँत पाँती, श्रेणी ।

प्रा० पँगला (सं० पङ्गु) गु० लँगड़ा, टेढ़े पाँवका, अपङ्ग ।

प्रा० पंछी (सं० पक्षी) पु० पखेरू, परिंद ।

प्रा० पकड़ना क्रि० सं० गहना,

हाथ में लेना, धरना, २ रोकना, बाधा करना, टोकना, तर्क करना, ३ दोष निकालना ।

प्रा० पकना (सं० पचन, पच्=पकाना) क्रि० अ० रँधना, २ पकाहोना ।

प्रा० पकापकाया बोल० तैयार, पकाहुआ ।

प्रा० पकवान (सं० पकान, पक=पकाहुआ, अन्न=अनाज) पु० पकाहुआ अन्न, तली हुई चीज, मिठाई ।

प्रा० पका (सं० पक) गु० पका पक्का } हुआ, कच्चा नहीं (जैसे फल) २ रींथा हुआ, ३ पूरा, चतुर, होशियार, निपुण, प्रवीण, सावधान, ४ दृढ़, मजबूत, पोढ़ा, ५ सिद्ध किया हुआ, साबित किया हुआ ।

सं० पक्ति (पच + ति, पच्=पकना, पकाना) स्त्री० पचन, पकना, पकाना, पाक, सिद्धि, पकाई ।

सं० पक (पच्=पकना) गु० पक्का, पाका, पका हुआ, पका, २ दृढ़, ३ चतुर, प्रवीण ।

सं० पक्ष (पक्ष=लेना वा पकड़ना) पु० पख, पाख, अंधेरा उजेला पाख, आधामहीना, २ पंख, पाँख, पर, डेना, ३ सहाय, बल, ४ तरफ, ओर, ५ अङ्ग, पार्श्व, पौंजर, ६ जत्था, दल, टोली, तड़, ७ मित्र, ८ आधा, शरीर का

आधा भाग, ६ तीरका पंख, १०
 तरफदार, ११ जुल्फ, ज़रा, कवरी
 अर्थात् पटियां ।
 सं० पक्षक (पक्ष + अक) क० पु०
 खिड़की, मित्र, मददगार ।
 सं० पक्षद्वार पु० खिड़की ।
 सं० पक्षपात (पक्ष=तरफ़ अथवा
 अनुचित सहाय, पत्=गिरना) पु०
 अन्याय से सहायता देना, तरफ-
 दारी, पक्ष, पक्षेदारी, अन्याय ।
 सं० पक्षपाती (पक्षपात) पु० पक्ष-
 पात करनेवाला, अन्याय से सहाय
 करनेवाला, पक्ष करनेवाला, तर-
 फ़दार, सहायक ।
 सं० पक्षाघात (पक्ष=शरीर का
 एक भाग, आघात=मारना) पु०
 अर्द्धाङ्ग, भोला ।
 सं० पक्षान्तर (पक्ष=तरफ़, अन्तर
 =दूसरी) पु० दूसरी ओर, विपक्ष ।
 सं० पक्षिराज (पक्षिन्=पखेरू, रा-
 जन्=राजा) पु० पखेरूओं का
 राजा, गरुड़ ।
 सं० पक्षी (पक्ष) पु० पखेरू, प-
 पक्षीय (रिन्द, २ बान, तीर, ३
 सहायक, हिमायती ।
 सं० पक्ष्म क० पु० अतिलोभी, २
 खिन्न, ३ पलक ।
 प्रा० पख (सं० पक्ष) पु० पख-
 पाख (वारा, आधा महीना,
 पक्ष, २ तरफ़, जत्था, ३ सहाय ।

प्रा० पखड़ी (सं० पक्ष=पंख) स्त्री०
 फूल की पत्ती ।
 प्रा० पखवारा (सं० पक्ष) पु०
 पाख, पख, पन्द्रहदिन, आधा
 महीना ।
 प्रा० पखान (सं० पाषाण) पु०
 पत्थर ।
 प्रा० पखारना (सं० पक्षालन)
 पखालना (क्रि० सं० धोना,
 खँघालना, शुद्धकरना, साफ़करना ।
 प्रा० पखाल (सं० पयःखल्ल, पयम्
 =पानी, खल्ल=खाल) स्त्री० एक
 प्रकार का चमड़े का बड़ा बैला
 जिसमें पानी लाया जाता है और
 वह बैल पर भैसे पर अथवा ऊँट
 पर लादी जाती है ।
 प्रा० पखावज स्त्री० मृदङ्ग, ढोलक,
 एक प्रकार का बाजा ।
 प्रा० पखावजी पु० पखावज बजा-
 नेवाला ।
 प्रा० पखेरू (सं० पक्षी) पु० पंखी,
 पक्षी, परिन्द ।
 प्रा० पग (सं० पद) पु० पाँव,
 पैर, गोड़ ।
 प्रा० पगपटतारबजाना बोल०
 नाचने में पाँवों से गत बजाना ।
 प्रा० पगडण्डी (पग=पाँव, दण्डी=
 पगदण्डी) लकीर) स्त्री०
 छोटा वा संकेत रस्ता, पदचिह्न,
 चोरराह, लीक, गुप्तमार्ग ।

प्रा० पगड़ी स्त्री० पगा, पगिया,
चीरा, दस्तार, अम्मामा, शमला,
मन्दीर ।

प्रा० पगधारना (पग=पैर, धारना
=रखना) क्रि० अ० पगधारना,
सिधारना, जाना, आना ।

प्रा० पगना { क्रि० अ० मिलना,
पागना } लीन होना, रस में
डूबना ।

प्रा० पगला गु० पागल, वावला,
मूर्ख ।

प्रा० पगार पु० गारा, गीली मिट्टी ।

सं० पङ्क (पचि=फैलाना) पु० की-
चड़, कर्दम, बोदा, कीच, काँदौ,
दलदल, २ पाप ।

सं० पङ्कज (पङ्क=कीचड़, जन्=पैदा
होना) क० पु० कमल, पद्म, केवल ।

सं० पङ्कनिधि (पङ्क=कीचड़, निधि
=खजाना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० पङ्करुह { (पङ्के=कीचड़ में, रुह
पङ्केरुह } =उगना) पु० कमल,
केवल ।

सं० पङ्क्ति (पचि=फैलना, या फै-
लाना) स्त्री० पाँति, पाँत, पंगत,
धारी, लकीर, श्रेणी, कतार ।

सं० पंगु (खजि=लैंगड़ा के चलना)
गु० लैंगड़ा, पँगुला, अपङ्ग ।

प्रा० पचग्वना (सं० पञ्च=पाँच,
खण्ड=भाग) गु० (घर) जिस
में पाँच खण्ड हों ।

सं० पचन (पच्=पचना) भा०
पु० पचना, २ पाक, पका हुआ,
३ आग, ४ पकानेवाला ।

प्रा० पचना (सं० पचन) क्रि०
अ० गलना, हजम होना, २ स-
ड़ना, जलना, बिगड़ना, ३ मिहनत
करना, जतन करना ।

सं० पचनीय (पच् + अनीय)
र्म० पु० पाकयोग्य, पकाने के
लायक ।

प्रा० पचपन (सं० पञ्च + पञ्चाशत्,
पञ्च=पाँच, पञ्चाशत्=पचास) गु०
पचास और पाँच, ५५ ।

प्रा० पचमहला (सं० पञ्च=पाँच,
और अरबी महल) गु० पचखना,
पचकोठा ।

सं० पचमान क० पु० पकानेवाला
या पकाता हुआ ।

प्रा० पचलड़ी स्त्री० पाँच लड़की
माना ।

प्रा० पचानवे (सं० पञ्चनवति,
पञ्च=पाँच, नवति=नब्बे) गु० नब्बे
और पाँच, ६५ ।

प्रा० पचास (सं० पञ्चाशत्) गु०
पाँच गुना दश ।

प्रा० पचासी { (सं० पञ्चाशीति,
पचियामी) पञ्च=पाँच, अशीति
=अस्सी) गु० अस्सी और
पाँच, ८५ ।

सं० पचिण पु० आग, अग्नि ।

प्रा० पचीस { (सं० पञ्चविंशति,
पच्चीस) पञ्च=पाँच, विंशति
=बीस) गु० बीस और पाँच, २५।
प्रा० पचौनी (सं० पच्=पचना)
स्त्री० ओभरी, आमाशय, पेट में
एक थैली सी होती है जो खाना
खाते हैं सो पहले उसमें पहुँचता है।
प्रा० पचर पु० फणी, ठेका, कील,
खँटी, मेख।
प्रा० पचरमारना बोल० खिझाना,
सताना, दुखदेना, आड़देना, किसी
का काम अड़ाना।
प्रा० पची गु० लगा हुआ, संयुक्त,
सटा हुआ।
प्रा० पचीहोना बोल० आपस में
सटाना जैसे लेई से, २ बहुत प्यार
होना।
प्रा० पचीकारी स्त्री० जड़ाई, खुदाई,
२ रफ़क़रना, टँका मारना।
प्रा० पच्छिम { (सं० पश्चिम) स्त्री०
पच्छिम } पछाहँ, पश्चिमदिशा।
प्रा० पच्छी (सं० पक्षी) पु० सहायी,
साथी, सहायक, २ पखेरू, पक्षी।
सं० पच्यमान र्म० पु० पकाया गया।
प्रा० पछुताना (सं० पश्चात्तापन,
पश्चात्=पीछे, तप्=जलना) क्रि०
अ० पछुतावा करना, सोचना, पीछे
दुख करना, हाथ मलना, शोक वा
अनुताप वा खेद करना, कुटना,
कलपना।

प्रा० पछुतावा (सं० पश्चात्ताप)
पु० पस्तावा, खेद, सोच, अनुताप,
चिन्ता, शोक, सन्ताप, अफ़सोस।
प्रा० पछवा { (सं० पश्चिमवात,
पछियाव) पश्चिम=पच्छिम,
वात=हवा) स्त्री० पश्चिमकी हवा।
प्रा० पछाड़ (पछाड़ना) भा० स्त्री०
पटकना, गिराना, नीचे गिरना,
२ फटकना, पछाड़।
प्रा० पछाड़खाना बोल० सिर के
बल गिरना।
प्रा० पछाड़ना क्रि० स० गिराना,
पटकना, अधीन करना।
प्रा० पछोड़ना (सं० स्फुट=जुदा २
करना) क्रि० स० फटकना।
प्रा० पजावा (फा० पज़ावा) पु०
आँवा, ईंट पकने की जगह।
प्रा० पजेब (फा० पाजेब, पा=पैर,
जेब=शोभा वा गहना) स्त्री० पाजेब,
पैर में पहनने का गहना, किंकिणी।
सं० पञ्च (पचि=फैलना) गु० पाँच,
पु० पञ्चायत में बैठकर विचार करने
वाला, मध्यस्थ, विचारकर्ता।
सं० पञ्चक (पञ्च=पाँच) पु० ज्यो-
तिषमें धनिष्ठादि रेवतीपर्यन्त पाँच
नक्षत्रों का एक जगह पर आना,
२ पाँच का समूह, गु० पाँच, पाँच
सम्बन्धी।
सं० पञ्चगव्य (पञ्च=पाँच, गव्य=
गायका) पु० गाय के पाँच पदार्थ

(जैसे १ दूध, २ दही, ३ घी, ४ गोबर, ५ गोमूत्र) ।

सं० पञ्चतत्त्व (पञ्च=पाँच, तत्त्व=भूत वा पदार्थ) पु० पाँच भूत-अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश ।

सं० पञ्चतन्मात्र पु० शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पञ्चतत्त्वों के गुण ।

सं० पञ्चता भा० स्त्री० (पञ्च=पञ्चत्व भा० पु०) पाँच पदार्थ अर्थात् शरीर के पाँचों तत्त्वों का पाँचों में मिलजाना) मौत, मृत्यु, मरण ।

सं० पञ्चतीर्थी (पञ्च=पाँच, तीर्थ=पवित्र जगह) स्त्री० प्रयाग, पुष्कर आदि पाँच तीर्थ, २ कार्तिक सुदी ११ से पूनौ तक के पाँच दिन ।

सं० पञ्चदश (पञ्च + दश) गु० पन्द्रह, १५ ।

सं० पञ्चधा (पञ्च=पाँच, धा=प्रकार) क्रि० वि० पाँच प्रकार से, पञ्चविध ।

सं० पञ्चनख पु० पाँच नखवाला, हस्ती, कच्छप, व्याघ्र, कृकलास, स्त्री० विस्तुङ्ग्या, पल्ली, छपकली ।

सं० पञ्चनद (पञ्च + नद) पु० पञ्जाब अर्थात् जिस देश में १ सतलज, २ व्यासा, ३ रावी, ४ चनाब, ५ झेलम ये पाँच नदियाँ बहती हैं ।

सं० पञ्चपात्र (पञ्च + पात्र) पु० एक वरतन जो शायद पाँच धातुओं का बना होता है और पूजा के समय काम आता है, २ पाँच पात्रों का समूह ।

सं० पञ्चप्राण (पञ्च=पाँच, प्राण=साँस) पु० पाँच प्रकार की हवा जिनके साँस लेने से मनुष्य जीता है और उनके नाम ये हैं (१ प्राण, २ अपान, ३ व्यान, ४ उदान, ५ समान) ।

सं० पञ्चभूत (पञ्च + भूत) पु० पाँच तत्त्व (अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश) ।

सं० पञ्चभूतात्मा (पञ्चभूत + आत्मा) पु० मनुष्य जो पाँच तत्त्वों से बना हुआ है, २ देही ।

सं० पञ्चम (पञ्च) गु० पाँचवाँ, पु० एक रागका नाम ।

सं० पञ्चमी (पञ्चम) स्त्री० पाँचवीं तिथि, पाँचे ।

सं० पञ्चमुख (पञ्च + मुख) पु० शिव, महादेव, २ सिंह, शेर ।

सं० पञ्चरत्न (पञ्च + रत्न) पु० पाँच रतन (जैसे १ सोना, २ हीरा, ३ मोती, ४ लाल, ५ नीलम, और कहीं कहीं सोने की जगह भूँगा गिनते हैं) ।

सं० पञ्चवक्त्र (पञ्च=पाँच, वक्त्र=

मुँह) पु० शिव, महादेव, २ सिंह ।
 सं० पञ्चवटी (पञ्च=पाँच, वट=
 वृक्ष) स्त्री० एक जगह का नाम जो
 गोदावरी के पास थी जहाँ रामचन्द्र
 वनबाण के समय रहे थे और जहाँ
 १ पीपल, २ बिल्व, ३ बड़, ४ धात्री,
 ५ अशोक ये पाँच वृक्ष थे ।

सं० पञ्चबाण (पञ्च=पाँच, बाण
 पञ्चशर) वा शर=तीर) पु०
 कामदेव का नाम, जिसके पाँच
 बाण कहे जाते हैं, जैसे “ सम्मो-
 हनोन्मादनौ च, शोषणस्तापनस्त-
 था । स्तम्भनश्चेति कामस्य,
 शराः पञ्च प्रकीर्तिताः ” अर्थ १
 मोहना, २ मस्त करना, ३ सु-
 खाना, ४ सताना या जलाना, ५
 शिथिल अथवा अचेत करना ये
 पाँच कामदेव के बाण कहलाते हैं ।

सं० पञ्चशाख पु० हाथ, कर,
 पाँचशाखा अर्थात् अँगुली ।

सं० पञ्चसूना (पञ्च=पाँच, सूना
 =जीववधस्थान) स्त्री० चुल्ली,
 चूल्हा, पेषणी, चक्की, कण्डनी,
 गाली वा ओखली, उपस्कर,
 बड़नी, उदकुम्भ, घनौची वा घड़ा
 रखने का स्थान ।

सं० पञ्चाङ्ग (पञ्च + अङ्ग) पु०
 तिथिपत्र, पत्रा (जिससे १ तिथि,
 २ वार, ३ नक्षत्र, ४ योग, ५ क-
 रण ये पाँच जाने जायँ) पञ्जिका,

“ चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमं गुग्गुलु-
 स्तथा । पञ्चाङ्गमुच्यते धीरैर्धूपदान-
 विधाविदम् ” १ चन्दन, २ अगुर, ३
 कर्पूर, ४ केशर, ५ गुग्गुलु, ६ फल,
 ७ फूल, ८ जड़, ९ पत्ता, १० डार ।

सं० पञ्चानन (पञ्च=विस्तृत, या
 पाँच, आनन=मुँह) पु० सिंह,
 केशरी, शेर, २ शिव, महादेव ।

सं० पञ्चामृत (पञ्च + अमृत) पु०
 १ दूध, २ दही, ३ चीनी, ४ घी,
 ५ शहद इन पाँचों से बनी हुई वस्तु ।

प्रा० पञ्चायत (सं० पञ्च) स्त्री०
 सभा जहाँ पाँच आदमी मिलकर
 विचार करते हैं, विचार करने की
 सभा ।

सं० पञ्चाल पु० पंजाब देश ।

सं० पञ्चालिका स्त्री० कठपुतली,
 गुड़िया, गुड्डा, २ द्रौपदी ।

सं० पञ्चावस्था स्त्री० बाल्य, कुमार,
 पौगण्ड, युवा, वृद्धा ।

सं० पञ्चेन्द्रिय (पञ्च + इन्द्रिय)
 स्त्री० पाँच इन्द्रि, (इन्द्रिय शब्द
 को देखो) ।

सं० पञ्जर (पञ्जि=रोकना वा घे-
 रना) पु० पँसली, ठठरी, पँस-
 लियों का समूह, २ पिंजरा ।

सं० पट (पट्=घेरना वा बैठना)
 पु० कपड़ा, पल्ला, २ परदा,
 आड़, ओट ।

प्रा० पट (सं० पटत्, पट्=जाना)

पु० गिरने या मारने का शब्द, २
फिवाड़, फिलमिल, गु० ऊार,
नीचे, उलटा, आँधा ।

सं० पटक क० पु० डेरा, कनान,
पड़ाव, छावनी, फौज रहने की
जगह ।

सं० पटकार क० पु० जुलाहा, कोरी,
धुनेवाला ।

सं० पटचर पु० जीर्णवस्त्र, चिथड़ा,
२ चोर, सेंध देनेवाला, ठग ।

प्रा० पटकन (पटकना) स्त्री० प-
छाड़, चोट ।

प्रा० पटकनखाना बोल० पछाड़
खाना, नीचे गिरना ।

प्रा० पटकना क्रि० स० पछाड़ना,
नीचे गिराना, दे मारना ।

प्रा० पटका (सं० पट्ट=बैठना वा
लोठना) पु० कमरबन्धा, दुपट्टा ।

प्रा० पटड़ा (सं० पट्ट, पट्ट घेरना)
पट्टरा (पु० तल्ला, पाटा, पीठा)

प्रा० पटतर गु० बराबर, समान ।

प्रा० पटना क्रि० अ० मिट्टना, भर
पाना (जैसे हुंडी का पटना)
२ पानी सींचा जाना, पनि-
याना, ३ भरना, ४ छाया जाना,
ढकजाना ।

प्रा० पटना (सं० पाटलिपुत्र) पु०
एक शहर का न.म जो सूबे बिहार
में है ।

प्रा० पटनि पु० कपड़े, वस्त्र, उड़ना ।

प्रा० पटरानी (पाट + रानी)
पाटरानी स्त्री० पहली और
बड़ी रानी, महारानी ।

प्रा० पटरी (सं० पट्ट, पट्ट=घेरना)
स्त्री० लिखने की पट्टी, पटिया,
तस्ती, २ कच्ची सड़क ।

सं० पटल (पट्ट=कपड़ा, वा आड़,
ला=लेना) पु० ढकने का कपड़ा,
परदा, २ आँख का परदा, ३ समूह ।

प्रा० पटली स्त्री० पौत, पंक्ति, श्रेणी ।

सं० पटवाय पु० कनात, तम्बू, डेरा ।

प्रा० पटवारी पु० गौँसका हिसाब
रखनेवाला ।

प्रा० पटह पु० बाना, पटा, २ ढंका,
नङ्गा, नगारा ।

प्रा० पटा (सं० पट्ट, पट्ट=घेरना)
पु० पाट, पाटा, आसन जिस पर
हिन्दू लोग बैठ कर पूजा करते हैं
अथवा खाना खाते हैं, २ गढ़ना ।

प्रा० पटाका (पु० टोंटा, मुर्ती,
पटाखा) हुब्बंदर ।

प्रा० पटाना क्रि० स० सींचना,
पानी देना, पनिमाना, २ चौका
देना, लीपना, थोना, ३ खत को
कड़ी अथवा धरन से छाना, ४
हुंडी के रूपसे पाना, ५ भगड़ा
शान्त होना, आग शान्त होना ।

प्रा० पटाव भा० पु० सिंचाई, २
खत बनाना, द्वारके ऊपर का काठ ।

प्रा० पटिया (सं० पट्टिका) स्त्री०

पटरी, पट्टी, स्लेट, २ पु० गले में पहनने का एक गहना, ३ शिर के गुहे बार ।	सं० पेंठन (पद्=पढ़ना) भा० पु० पढ़न, पाठ, पढ़ना, अध्ययन, सबंक ।
सं० पटीर पु० बसफोड़, २ चन्दन, ३ घटा, ४ मूल, ५ केदार, क्यारी, ६ कामदेव, ७ चलनी, ८ पपीहा, ९ राँग, १० खदिर, ११ उदर ।	प्रा० पठाना क्रि० सं० भेजना ।
सं० पट्ट (पद्=जाना वा चमकना) गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, तेज, होशियार ।	प्रा० पठावनी { स्त्री० मजदूरी, मे- पठौनी } हनत ।
सं० पट्टत्व भा० पु० { (पट्ट) पट्टता भा० स्त्री० { चतुराई, निपुणाई, प्रवीणता ।	सं० पठित (पद्=पढ़ना) र्म० पु० पढ़ा हुआ ।
प्रा० पट्टवा (पाट) क० पु० रेशम का काम करनेवाला, रेशमसे माला और मोती आदि पिरोनेवाला ।	सं० पठनीय { र्म० पढ़ने योग्य । पाठ्य }
प्रा० पटेल पु० चौधरी, गाँव का मुखिया ।	प्रा० पठिया स्त्री० जवान स्त्री, यौवना, २ छोटी बकरी ।
प्रा० पटैला { पु० एक प्रकार की पटैला } नाव, २ जिससे धरती बराबर करते हैं, धरन ।	प्रा० पड़ना (सं० पतन, पत=गिरना) क्रि० अ० गिरना, २ लेटना, ३ आ-जाना, संयोग होना, ४ पड़ाव डालना, डेरा करना, ५ टपकना, चूना ।
सं० पटोल पु० परिवर, परवर ।	प्रा० पड़रहना { बोल० बेवश रह- पड़ेरहना } ना, सोरहना, लेट रहना ।
सं० पट्टन पु० नगर, शहर ।	प्रा० पड़ाव (पड़ना) पु० ठहरने की जगह, ठहराव, २ द्वावनी, डेरा, कम्पू, ३ सेना, ४ भीड़ ।
प्रा० पट्टा (सं० पट्ट) पु० बाल, अलक, २ पटिया जो कुत्ते के गले में डालते हैं, ३ चकनामा, ठेका अथवा किसी जमीनका कागज ।	प्रा० पड़िया स्त्री० भैंस का बच्चा ।
प्रा० पट्टू (पाट) पु० लोई, कम्बल ।	प्रा० पड़ोस (सं० प्रतिवास) पु० पास बसना, समीपता, सहवास ।
प्रा० पट्टा पु० जवान, पहलवान, २ पाठ, नस, शिरा ।	प्रा० पड़ोसी (सं० प्रतिवासी, वा पार्श्वी) पु० पास रहनेवाला ।
	प्रा० पढ़न (सं० पठन) भा० पु० पढ़ना ।
	प्रा० पढ़ना (सं० पठन) क्रि० सं० पाठ करना, बाँचना, सीखना, रटना, जपना ।

प्रा० पढन्त (सं० पठन) स्त्री० पढ़न,
पढ़ना, पाठ, सन्धा, २ मन्त्र,
टोना, जादू ।

प्रा० पढ़ागुणा { बोल० गु० पढ़ा
पढ़ालिखा { हुआ, पण्डित,
प्रवीण, निपुण ।

प्रा० पढ़ाना (पढ़ना) क्रि० सं०
सिखाना, सीखदेना, शिक्षादेना ।

सं० पण (पण्=व्यवहार करना) पु०
प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, बाजी,
२ बीस गंडे अथवा ८० कौड़ी
का परिमाण, ३ व्यवहार, लेनदेन,
मूल्य, वेतन, शाक, साग, करार ।

सं० पणन भा० पु० विक्रय, बेचना ।

सं० पणित र्म० पु० बेचागया, २
स्तुत ।

सं० पणव (पण्=व्यवहार वा जाना
अथवा पण्=सराहना) पु० झोटा
ढोल ।

सं० पण्डा (पण्=सराहना) स्त्री०
बुद्धि, मति, समझ ।

प्रा० पण्डा (सं० पण्डित) पु०
पुजारी ।

सं० पण्डित (पण्डा=बुद्धि) पु०
बुद्धिमान्, विद्यावान्, पढ़ा हुआ,
विद्वान्, २ पढ़ानेवाला, पाठक,
शिक्षक ।

सं० पण्डितम्मन्य क० पु० विद्या-

भिमानी, मूर्ख ।

प्रा० पण्डु (सं० पाण्डु) पु०
दिल्ली का पुराना राजा, कुन्ती का
पति और युधिष्ठिर आदि पाँचों
पाण्डवों का बाप ।

सं० पण्य (पण्=लेन देन करना,
वा सराहना) भा० पु० बेचने
योग्य, लेन देन करने योग्य, व्यव-
हार करने योग्य, बेचने की वस्तु,
वाणिज्य, २ सराहने योग्य ।

सं० पण्यशाला (पण्य=लेन देन
करने योग्य, शाला=जगह) स्त्री०
दुकान, हाट, बाजार ।

सं० पण्यस्त्री (पण्य + स्त्री) स्त्री०
वेश्या, नगरनारी, पतुरिया, रण्डी ।

प्रा० पत (सं० पद्=अधिकार) स्त्री०
प्रतिष्ठा, इज्जत, आबरू, बड़ाई,
नामवरी, २ (सं० पति) पु०
स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक, भर्ता,
३ (सं० पत्र) पत्ता ।

सं० पतङ्ग (पतन=गिरता हुआ,
गम्=जाना) पु० सूर्य, २ फड़ङ्ग,
पतङ्गा, टिड्डी, उड़नेवाला कीड़ा,
३ गुड्डी, कनकवा, ४ एक लकड़ी
जिससे रङ्ग निकलता है, पारा ।

प्रा० पतङ्गा पु० चिनगारी, चिनगी ।

सं० पतञ्जलि पु० शेष, महाभाग्य
का बनानेवाला ऋषीश्वर ।

१ “ यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं ब्रुवाः ”

(इति गीतायाम्) ॥

प्रा० पतभङ्ग (पत=पत्ता, भङ्ग=भङ्गना) स्त्री० एक ऋटुका नाम जिसमें वृक्षों के पत्ते भङ्ग जाते हैं, शिशिर ।

सं० पतन (पत्-गिरना) पु० पड़ना, गिरना, पड़ाइ, पटकन, गिर पड़ना ।

सं० पतत्र पु० पंख, पक्ष, पर ।

सं० पतद्ग्रह पु० पीकदान, अवशेष, सेना, लश्कर ।

प्रा० पतला (सं० प्रतनु) गु० पतिल, भीना, मिहीन, बारीक, २ दुबला ।

प्रा० पतवार स्त्री० जहाज में एक चीज जिससे जहाज चलाया जाता है, नाव का करण ।

प्रा० पता पु० ठिकाना, चिह्न, खोज ।

सं० पताका (पत्=जाना वा गिरना वा जानना) स्त्री० ध्वजा, झण्डा, चिह्न, फरहरा ।

सं० पति (पा=वचाना) पु० स्वामी, मालिक, धनी, २ भर्ता, खार्जिद, रज्जत ।

सं० पतित (पत्=गिरना) गु० गिरा हुआ, भ्रष्ट, पापी, नष्ट, दुष्ट, धर्म से गिरा हुआ ।

सं० पतितपावन (पतित=पापी, पावन=पवित्र करनेवाला) गु० पापियों को शुद्ध करनेवाला, परमेश्वर का नाम और गुण ।

सं० पतिदेवता (पति + देवता) स्त्री० वह स्त्री जिसके पतिही देवता के बराबर हो, पतिव्रता ।

प्रा० पतिया (सं० पत्रिका) स्त्री० पाती { चिट्ठी, पत्री, पत्र, खत, २ प्रतीतपत्र, जिसमें पण्डित लोग अपनी समाति लिखकर देते हैं ।

प्रा० पतियाना (सं० प्रत्ययन=विश्वास, प्रति=फिर, इण्=जाना) क्रि० स० भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीत करना ।

प्रा० पतियारा (सं० प्रत्यय) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत ।

सं० पतिवरा स्त्री० स्वेच्छा से विवाह करनेवाली ।

सं० पतिव्रता पति=भर्ता, व्रत=नियम अर्थात् (जिसके पति की सेवा करना ही नियम है) स्त्री० सती, कुजवनी, पतिदेवता स्त्री, पतिसेवा करनेवाली स्त्री ।

प्रा० पनील गु० पतजा, भीना, मिहीन, बारीक ।

सं० पतितस्त्री पतितत्रिया, पतुरिया ।

प्रा० पतुरिया { स्त्री० वेश्या, पतरिया } गणिका ।

प्रा० पतोह { सं० पुत्रवधु } स्त्री० पतोह { बेटा की स्त्री, बहू ।

सं० पत्तन (पद्=जाना) पु० नगर, शहर ।

प्रा० पत्तर (सं० पत्र) पु० पता, २
चिट्ठी, अदानात्र जोतावेपर खोदा
जाता है, ४ सोने चाँदी का वर्क ।

प्रा० पत्तल (सं० पत्रावली, पत्र=
पत्ता, अवली=पाँत) स्त्री० धन-
वारा, पत्तों की बनी हुई चीज
जिसमें खाना खाते हैं ।

प्रा० पत्ता (सं० पत्र) पु० पात,
दल, गहना, पाता ।

प्रा० पत्ताहोना बोल० भाग जाना,
चम्पतहोना ।

सं० पत्ति पु० पैदल, गर्त, गड़हा,
मून, वीरभेद, सैन्यभेद, एक रथ,
एक हाथी, तीन घोड़े, पाँच पैदल
जिस फौज में हों उसकी पत्तिसंज्ञा
है, गति, चाल, प्राप्ति ।

प्रा० पत्ती (सं० पत्र) स्त्री० पाती,
पंखड़ी, भाँग, भङ्ग, बूटी, सब्जी ।

प्रा० पत्थर (सं० प्रस्तर, प्र=बहुत,
स्तृ=कैलाना) पु० पाषाण, पाथर,
शिला ।

प्रा० पत्थर छातीपर रखना बोल०
सम्भर करना, संतोष करना, चुप
होरहना, वश नहीं चलना ।

प्रा० पत्थरपसीजना बोल० पिघ-
लना, नर्म होना, कोमलचित्त
होना, नर्मदिल होना, कठिन
काम सहज होना ।

प्रा० पत्थरपानीहोजाना बोल०
कोमलचित्त होना, नर्मदिल होना ।

प्रा० पत्थरसाफेंकमारना बोल०
किसी की बात को बिन समझे
उत्तर देना, कड़ी बात कहना ।

प्रा० पत्थरसेसिरफोड़ना बोल०
मूर्ख को शिक्षा देना ।

प्रा० पत्थरहोना बोल० भारी होना,
२ अचल होना, अटत होना, चुप
खड़ा रहना, ३ निर्दयी होना,
कठोरचित्त होना ।

प्रा० पत्थरकला (सं० प्रस्तरकला)
पत्थरकला (स्त्री० बंदूक, तुपका)

सं० पत्न्याट (पत्नी + आट, अट=
घूमना, सैर करना) पु० मङ्गली पुरुष,
खुरादिल, खुरातवच्च, पुंश्चल जो
औरत को लेकर सैर करे ।

सं० पत्रणा स्त्री० गोटा, लरी,
रोदा, काड़ों का बीर ।

सं० पत्ररेखा स्त्री० तिजक की रेखा,
चन्दनदिका लगाना ।

सं० पत्रदाना क० पु० चिट्ठीरसाँ,
पोस्टमैन ।

सं० पत्रदारक क० पु० अश्रु, आँसू,
बालक, वायु, आरा, आरी ।

सं० पत्रपरशु पु० सुगर्णादि कतरने
की केंची ।

सं० पत्रपाश्या स्त्री० सोने का टीका,
सोने की खीरि ।

सं० पत्ररञ्जन पु० पत्र लिखना,
चित्र लिखना, शृङ्गार करना ।

सं० पत्नी (पति) स्त्री० भार्या, स्त्री,

जोरु, व्याही हुई स्त्री ।

सं० पत्र (पत्र=गिरना) पु० पत्ता,
२ चिट्ठी, ३ पुस्तक का पत्रा, ४ सोने
चाँदी अथवा और किसी धातु का
पत्तर, सवारी, दिस्ता, रथ, वाण,
पंख ।

प्रा० पत्रा (सं० पत्र) पु० तिथिपत्र,
पञ्चाङ्ग, २ पत्रा, सफ़हा ।

सं० पत्रालय धि० डाकखाना, पोस्ट-
आफिस ।

सं० पत्रिका (सं० पत्र) स्त्री० चिट्ठी,
पत्री } पत्र, २ पक्षी, ३ वृक्ष,
४ कमल ।

सं० पत्सल पु० सड़क, रास्ता, पथ,
राजमार्ग ।

सं० पथ (पथ्=जाना) पु० रस्ता,
मार्ग, बाट, पैड़ा, डगर ।

प्रा० पथराना (पत्थर) क्रि० अ०
बड़ा होना, पत्थर मारना ।

प्रा० पथरी (सं० पत्थर) स्त्री० कंकरी,
२ चकमक, ३ पेट में पथरीरोग,
४ पत्थर का बरतन ।

प्रा० पथरीला (पत्थर) गु०
कंकरीला ।

सं० पथिक (पथ्=जाना) पु० बटोही,
यात्री, मार्ग, राही, मुसाफिर ।

सं० पथिल } क० पु० मार्गगामी,
पथी } मुसाफिर ।

सं० पथिवाहक (पथि=राह, वह=
चलता) क० पु० कहार, मजूर ।

सं० पथ्य (पथ=मार्ग, राह, जो
इलाज के मार्ग में अर्थात् इलाज के
लिये हितकारी हो) र्म० पु०
रोगी के हितकारी खाना, बीमार
के खाने योग्य चीज, पथ,
उचित, हित ।

सं० पथ्या स्त्री० हरीतकी, हड़ ।

सं० पद (पद्=चलना जिससे चलते
हैं) पु० पाँव, पैर, चरण, २ पद-
चिह्न, पाँवका चिह्न, ३ स्थान, जगह,
४ प्रतिष्ठा, बड़ाई, अधिकार, उद्घाटन,
लकड़, पदवी, उपाधि, ५ शब्द,
विभक्तिसमेत शब्द, ६ श्लोक
का पाद, ७ वस्तु, पदार्थ ।

सं० पदचर (पद=पाँव, चर=च-
पदचारी) लना) पु० पैदल ।

सं० पदज (पद=पाँव, जन=पैदा
होना) पु० पाँवकी अंगुली ।

सं० पदत्याग पु० इस्तीफा, अधि-
कारत्यागपत्र ।

सं० पदत्राण (पद=पैर, त्रा=
बचाना) पु० जूता, पगरखी, पनही ।

प्रा० पदम (सं० पद्म) पु० कमल,
पदुम } कँवल, २ सौ नील ।

प्रा० पदवी (सं० पद) स्त्री० बड़ाई,
प्रतिष्ठा, अधिकार, उपनाम ।

सं० पदवी (पद्=जाना) स्त्री०
मार्ग, रस्ता ।

सं० पदानि (पद=पाँव, अत्=चलना)
पु० पैदल, पियादा, पैदल सेना ।

सं० पदाम्भोज (पद = पैर, अम्भोज = कैवल) पु० चरणकमल, कमल केसे पाँव, पदारविन्द ।

सं० पदारविन्द (पद = पैर, अरविन्द = कमल) पु० चरणकमल, कमलकेसे पाँव ।

सं० पदार्थ (पद = शब्द, अर्थ = अभिप्राय) पु० वस्तु, चीज, उत्तम वस्तु, न्यायशास्त्र में सात पदार्थ माने हैं (१ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, ७ अभाव, कोई कोई नैयायिक सोलह पदार्थ मानते हैं) शब्द का अर्थ, पद का अर्थ ।

सं० पद्वनि (पद् = पाँव से, हन् = मारना) स्त्री० मार्ग, रस्ता, २ पङ्क्ति, ३ पूजा का ग्रन्थ ।

सं० पद्म (पद् = जाना) पु० कमल, कैवल, २ सौ नील, ३ व्यूह ।

सं० पद्मगर्भ (पद्म = कमल, गर्भ = उत्पत्ति) पु० ब्रह्मा जो विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न हुआ ।

सं० पद्मनाभ (पद्म = कमल, नाभ = नाभि, अर्थात् जिनकी नाभि में कमल हो) पु० विष्णु ।

सं० पद्मराग (पद्म = कैवल, राग = रङ्ग, अर्थात् जिसका रङ्ग लाल कमल जैसा हो) पु० लालमणि, माणिक ।

सं० पद्मलाञ्छन पु० राजा विशेष, ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर ।

सं० पद्मस्तुषा (पद्म + स्तुषा = कन्या) स्त्री० लक्ष्मी, दुर्गा, गङ्गा ।

सं० पद्मा (पद्म = कैवल अर्थात् जिसके हाथ में कमल हो) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, कमला ।

सं० पद्माकर (पद्म = कैवल, आकर = खान) पु० कमलों का बड़ा तालाव ।

सं० पद्मावती (पद्म = कैवल, वती = वाली) स्त्री० एक नदी का नाम, २ एक स्त्री का नाम, ३ मनसा देवी ।

सं० पद्मिनी (पद्म) स्त्री० सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री, २ कमलिनी, (स्त्रियाँ चार प्रकार की होती हैं— १ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी) ।

सं० पद्म (पद् = चरण अथवा श्लोक आदिका पाद) पु० श्लोक, छन्द, कविता, छन्दप्रबन्ध, नज्म ।

प्रा० पद्धारना (सं० पदधारण, पद् = पाँव, धारण = रखना) क्रि० अ० जाना, विधारना, पग धारना, आना, दशरीफलाना या लेजाना ।

प्रा० पन (सं० पण) पु० बचन, होड़, शर्त ।

प्रा० पन भाववाचक संज्ञा का चिह्न जैसे लड़कपन, भलापन आदि ।

प्रा० पनघट (सं० पानीय = पानी, घट = घाट) पु० पानी भरने का घाट ।

प्रा० पनच (सं० प्रत्यञ्चा, प्रति-
सामने, अञ्च्=जाना) स्त्री०
चिल्ला, धनुर् की रस्सी, जिह,
रोदा ।

प्रा० पनचक्की (सं० पानीय=पानी,
चक्र=चक्की) स्त्री० पानी के वेग
से चलनेवाली चक्की ।

प्रा० पनपना क्रि० अ० मोटा होना,
बढ़ना ।

प्रा० पनवट्टा पु० पान रखने का
ढाँचा, गिलौरीदान ।

प्रा० पनवाड़ी } (सं० पर्णावाटी,
पनवारी } पर्ण=पान, वाटी=
बाड़ी) स्त्री० पान की बाड़ी ।

प्रा० पनवारा (सं० पर्णावली,
पर्ण=पत्ता, अवली=पल्ल) पु०
पत्तल, पत्रावली ।

सं० पनस (पन=सराहना) पु०
कटहर, २ बन्दर का नाम ।

प्रा० पनसारी (सं० पण्य=वेचने
योग्य वस्तु, सृ=फैलाना) पु०
पसारी ।

प्रा० पनसोई स्त्री० छोटी नाव ।

प्रा० पनहारिन (सं० पानीय-
पनहारी } हारिणी, पानीय
=पानी, हारिणी=लानेवाली)
स्त्री० पानी भरनेवाली ।

प्रा० पनही (सं० पन्नद्वी, पद=पौव,
नह=बाँधना) स्त्री० जूता, जूती,
पगरखी ।

प्रा० पनारी } (सं० प्रणाली)
पनाली } स्त्री० मोरी, नाली,
प्रणाली ।

प्रा० पनिया (सं० पानीय) पु०
पानी, जल, गु० पानी का ।

प्रा० पनियाना (पानीय) क्रि०
स० सींचना, पानी देना ।

प्रा० पन्थ (सं० पन्था, पथ=जाना)
पु० रस्ता, मार्ग, राह, २ मत, धर्म ।

सं० पन्नग (पन्न=गिरता हुआ, वा
नीचे मुँह किये, गम्=चलना, वा
पद=पैर, न=नहीं, गम्=चलना,
जो पैरों से न चले) पु० साँप,
सर्प, नाग ।

सं० पन्नगारि (पन्नग=साँप, अरि=
वैरी) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।

सं० पन्नगाशन (पन्नग=साँप, अश्
=खाना) गरुड़, विष्णु का वाहन ।

प्रा० पनही (सं० पन्नदा वा पन्नद्धी,
नह=बाँधना) स्त्री० उगानह, जूता,
पदत्राण ।

प्रा० पन्ना (सं० पर्ण) पु० पत्र,
पत्रा, २ नीलगण्णि ।

सं० पपि (पा=पीना) क० पु०
पीनेवाला, जैसे कि “ रामः सोमं
पपिर्धे ” याग में रामने सोमरस
का पान किया ।

सं० पपिस् } पु० सूर्य, चन्द्रमा,
पपी } रक्षक, पीनेवाला ।

प्रा० पपनी स्त्री० आँख की बरुनी ।

प्रा० पपिहा } पु० एक पखेरू जो
पपीहा } बरसात में बहुत
बोला करता है ।

सं० पपु (पा=पालना) क० पु०
पालक, पालनेवाला, रक्षा, रक्षक,
पिता, पालक, स्त्री० माता, धात्री,
दाई, उपमाता, धाय ।

प्रा० पपोटा पु० पलक, आँख का
पुट ।

सं० पयः (पा=पीना) पु० दूध, २
पानी, जल ।

प्रा० पयनिधि (सं० पयोनिधि)
पु० समुद्र ।

सं० पयमुख पु० दूध पीनेवाला,
शीरखोरा ।

सं० पयस्विनी (पयस्=पानी वा
दूध) स्त्री० नदी, २ दुधार गाय,
दुधेल गाय, भेड़ी, बकरी ।

प्रा० पयान (सं०प्रयाग) पु० चलना,
कूच, विदा, प्रस्थान, यात्रा ।

प्रा० पयाल (सं० पलाल, पल्=
जाना वा बचाना) पु० पुआल,
खर, तिनका, बिचाली ।

सं० पयोद (पयस्=पानी, द=देने-
वाला, दा=देना) पु० बादल,
बदल ।

सं० पयोधर (पयस्=पानी वा दूध,
धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु०

मेघ, बादल, २ स्त्रीकी चूँची, स्तन,
३ नारियल, ४ गन्ना, ५ सुगन्धित
घास, ६ पर्वत, दुग्धवृक्ष ।

सं० पयोधि (पयस्=पानी, धा=र-
खना) पु० समुद्र, सातो सागर ।

सं० पयोनिधि (पयस्=पानी, निधि
=खजाना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० पयोराशि (पयस्=पानी, राशि
=समूह, ढेर) पु० समुद्र, सागर ।

सं० पर (पृ=भरना) गु० दूसरा,
पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी,
परदेशी, २ दूर, परे, अन्तर, पर, ३
पिञ्जला, ४ उत्तम, श्रेष्ठ, शिरोमणि,
प्रधान, सबसे बड़ा, ५ विरोधी,
प्रतिकूल, ६ बहुत, अत्यन्त, अ-
धिक, तत्पर, लगा हुआ, पु० वैरी,
शत्रु, क्रि० वि० केवल, इसके
पीछे, समुच्च=परन्तु, किन्तु, लेकिन ।

प्रा० पर (सं० उपरि) नित्य सं०
ऊपर, पै, जैसे कि कोठे पर ।

सं० परकीया (पर दूसरा) स्त्री०
दूसरे की स्त्री, पराये पुरुषके पास
जानेवाली स्त्री ।

प्रा० परख (सं० परीक्षा) स्त्री०
जाँच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी ।

प्रा० परखना (सं० परीक्षण) क्रि०
स० जाँचना, परीक्षा करना, दे-
खना, निरखना ।

प्रा० परचूनिया पु० आटा दाल
बेचनेवाला, मोदी, बनियां ।

प्रा० परछुना क्रि० स० दुल्हा और
दुलहिन की आरती उतारना ।

प्रा० परजंक(सं०पर्यङ्क)पु० पलंग ।
सं० परजात (पर=अन्य, जात=

उत्पन्न) र्म० पु० अन्य से उत्पन्न,
दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंकर,
जारज, यार से पैदा किया गया,
२ दूसरी जाति का, दूसरे कौम का ।

प्रा० परत स्त्री० पुट, तह, चुनत,
लड़, थाक, २ नकल, कापी ।

सं० परतन्त्र (पर=दूसरा, तन्त्र=
प्रधान है जिसका, अथवा पर=
दूसरे के, तन्त्र=वश में) गु०
परवश, पराधीन, दूसरे के वश ।

प्रा० परतला पु० तलवार की पट्टी ।

प्रा० परती (पड़ना) स्त्री० पड़ी
धरती, बिन बोई धरती, बंजर ।

सं० परत्र अव्य० अन्यत्र, परलोक,
और जगह, दूसरी जगह, जैसे कि
(परत्र मोक्षमाप्नुयात्) परलोक
में मुक्ति को पाता है ।

सं० परत्व भा० पु० भिन्नता, जुदाई,
कासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महत्त्व ।

सं० परदेश (पर=दूसरा, देश=
मुल्क) पु० विदेश, पराया देश,
और मुल्क ।

सं० परदेशी (परदेश) गु० विदेशी ।

सं० परन्तप पु० शत्रु, दुष्ट, गु० शत्रु-

नाशक, जीतनेवाला ।

प्रा० परनाना (सं० परिणय, परि
=आपस में, नी=लेजाना) क्रि०
स० व्याह करना, शादी करना ।

प्रा० परनाना पु० नाना का बाप,
प्रमातामह ।

सं० परन्तु (परम् + तु) समुच्च०
पर, किन्तु, लेकिन ।

प्रा० परपराणा क्रि० अ० चर-
पराना, जलना ।

प्रा० परवस (सं० परवश) गु०
पराधीन ।

सं० परब्रह्म (पर=सबसे बड़ा, ब्रह्म
=ईश्वर) पु० सर्वशक्तिमान्,
ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा ।

सं० परभृत (भृ=पालना) पु० काक
पक्षी, कोयल पक्षी, गु० शत्रुका
सहायक, अन्य से पालागया ।

सं० परम (पर=उत्तम, सबसे
अच्छा, मा=नापना, अथवा पृ=
भरना) गु० बहुत अच्छा, बहुत
श्रेष्ठ, उत्तम, मुख्य, प्रधान, सब
से पहला, भला ।

सं० परमगति (परम=उत्तम, गति
=दशा) स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, २
उत्तम दशा ।

सं० परमत (पर=भिन्न अथवा दूसरे
की मत=सलाह वा सम्मति) पु०
दूसरे की सलाह, २ भिन्न सम्मति ।

सं० परमधाम (परम=उत्तम, धाम

=जगह) पु० वैकुण्ठ, परमपद, स्वर्ग ।

सं० परमपद (परम=उत्तम, पद=जगह) पु० सबसे अच्छी जगह, स्वर्ग, वैकुण्ठ, २ मुक्ति, मोक्ष “ यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं पदम् ” जहाँ जाकर कोई नहीं लौटते हैं उस धाम को परमपद (परमधाम) कहते हैं ।

सं० परममित्र (परम=मुख्य, मित्र=दोस्त) पु० पक्का दोस्त, सबसे अच्छा मित्र ।

सं० परमब्रह्म (परम=सबसे बड़ा, ब्रह्म=ईश्वर) पु० परमेश्वर, परब्रह्म ।

सं० परमहंस (परम=उत्तम, हंस=आत्मा, अर्थात् जिसकी आत्मा उत्तम हो) पु० संन्यासी, योगी, स्त्री० शोभा, कान्ति, छवि ।

सं० परमा स्त्री० बड़ी, उत्तमा, शोभा, कान्ति ।

सं० परमाणु (परम=बहुतही, अणु=छोटा) पु० बहुत ही छोटी वस्तु, कन, कनिका, जर्मी, रेज़ा, २ पल, बहुत थोड़ा समय ।

सं० परमात्मा (परम=उत्तम वा सबसे बड़ा, आत्मा=जीव) पु० परब्रह्म, परमेश्वर ।

सं० परमानन्द (परम=बहुत, आनन्द=हर्ष) पु० बहुत खुशी, अत्यन्त आनन्द ।

सं० परमार्थ (परम=उत्तम, अर्थ=प्रयोजन) पु० उत्तम पदार्थ, सब से अच्छा विषय वा प्रयोजन, २ यथार्थज्ञान, पवित्रज्ञान, ३ उत्तम अथवा पहला काम, धर्म, पुण्य ।

सं० परमायुस् (परम+आयुस्) पु० बड़ी उमर, दीर्घावस्था, दीर्घायु, दराजउमर ।

सं० परमेश्वर (परम+ईश्वर) पु० सर्वशक्तिमान्, परमात्मा, ईश्वर ।

सं० परमेष्ठ (परम+इष्ट) पु० श्रेष्ठ, महान्, परमेश्वर, ब्रह्मा, देवता ।

सं० परमेष्ठिन् (परम=व्योम, परमेष्ठी) चिदाकाश, स्था=ठहरना) पु० ब्रह्मपद में टिकनेहारा, ब्रह्मा, गुरु ।

सं० परमोदार (परम=बड़ा, उदार=दातार) गु० बड़ा दातार, श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० परम्परा (परम्=बहुत, पृ वा पू=पूरा करना वा भरना) स्त्री० सन्तान, वंश, पीढ़ी, २ रीति, परिपाटी, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय की रीति, कदामत, परंपरा से, क्रि० वि० पहले से, अगले समय से ।

प्रा० परला (सं० पर) गु० दूसरी ओर का, उस तरफ का ।

सं० परलोक (पर+लोक) पु० स्वर्ग, दूसरा लोक, मृत्यु, शत्रुजन,

अन्यजन, श्रेष्ठजन ।

सं० परवश (पर=दूसरे के, वश=आधीन) गु० पराधीन ।

सं० परशु } (पर=वैरी, शृ=मारना,
पशु } नाश करना) पु० फ-
रसा, कुल्हाड़ी, टांगी ।

सं० परशुधर (परशु=फरसा, धृ=रखना) पु० परशुराम ।

सं० परशुराम (परशु + राम, अर्थात् फरसा रखनेवाला राम) पु० जम-दग्नि ऋषि का बेटा और विष्णु का छठा अवतार जिसने राजा सहस्रार्जुन को मारा और इक्कीस बार पृथिवी के सब क्षत्रियों को नाश किया ।

सं० परवश गु० पराधीन, पराया भरोसा, पराया सहारा ।

प्रा० परस (सं० स्पर्श) पु० छूना, छुहावट, स्पर्श ।

प्रा० परसत क्रि० वि० छूतेही, स्पर्श करते ही ।

प्रा० परसना (सं० स्पर्शन, स्पृश=छूना) क्रि० स० छूना ।

प्रा० परसों (सं० परश्वस्, पर=पिछला वा दूसरा, श्वस्=कलका दिन) क्रि० वि० आगे वा पीछे का बीसरा दिन ।

प्रा० परस्थौ पु० रहना, वास करना, ठहरना ।

सं० परस्पर (पर=दूसरा, पर=दूसरा)

क्रि० वि० आपस में, दोनों में, अन्योन्य, एक दूसरे को, बाह्य ।

सं० परा उपस० उलटा, पीछे, विपरीत, २ प्रभुता, बढ़ाई, ३ विरोध, ४ अहंकार, ५ अनादर, तिरस्कार, ६ बहुत, अधिक, ७ जोर, बल, सामर्थ्य, ८ से ।

प्रा० परा पु० पाँत, श्रेणी, दल, समूह, मण्डली, टोली ।

प्रा० पराँठा (पु० एक तरह की रोटी पराठा) जो घी या तेल लगा कर कई पतें देकर बनाई जाती है ।

सं० पराक्रम (परा=जोर से, क्रम=जाना, वा पाँव रखना) पु० बल, जोर, सामर्थ्य, साहस ।

सं० पराक्रमी (पराक्रम) गु० बलवान्, जोरावर, महाबली, बलवन्त, साहसी, शूरवीर ।

सं० पराग (परा=बहुत, गम्=जाना) पु० फूलों की सुगन्धित धूलि, पुष्परज ।

सं० पराङ्मुख (पराङ् + मुख) गु० विमुख, रहित, भिन्न, लज्जित, अधोमुख, शरमिन्दा, बागी ।

सं० पराजय (परा=उलटा, जय=जीत, अर्थात् जीत का उलटा) भा० स्त्री० हार, पराभव, तिरस्कार, शिकस्त ।

सं० पराजित स्त्री० पु० पराभूत, शिकस्त, हारा हुआ ।

सं० पराजेता क० पु० पराजयकर्ता,
जीतनेवाला, कृताह ।

प्रा० परात स्त्री० थाल, बड़ीथाली ।

सं० पराधीन (पर=दूसरे के, आ-
धीन=वश) गु० दूसरे के आधीन,
परवश ।

प्रा० पराना { (सं० पलायन,
पलाना) परा=उलटा, अय्=
जाना) कि० अ० भागजाना, पीठ
देना, पीठ दिखाना, चंपत होना ।

सं० पराभव (परा=तिरस्कार, भू=
होना) स्त्री० हार, पराजय,
तिरस्कार ।

सं० पराभूत र्म० पु० पराजित,
शिकस्त, हारा हुआ ।

सं० परामर्श (परा=बहुत, मृश्
=सोचना) पु० विचार, मन्त्र, उप-
देश, मन्त्रणा, सलाह, विवेक,
भेद, राज ।

सं० परामर्शक क० पु० मन्त्री,
वजीर, सलाही ।

सं० परामर्शित र्म० पु० विवेचित,
उपदेशित ।

सं० परामृष्ट र्म० पु० उपदेशित,
सलाह-दिया गया ।

सं० परामर्ष पु० क्रोध, गुस्सा, तीव्र
सहन, क्षमा ।

सं० परायण (पर=लगा हुआ वा
बहुत, अय्=जाना) गु० लगा
हुआ, तत्पर, मगन, अत्यासक्त,

मशगूल ।

प्रा० पराया (सं० पर) दूसरा,
और, ऊपरी, बाहरी, विदेशी,
२ दूसरे का ।

सं० पराशर पु० व्यासजी का बाप ।

सं० पराश्रय (पर=दूसरे के, आ-
श्रय=आमरे में) गु० पराधीन,
परवश ।

सं० परास्क र्म० पु० पराजित,
प्रक्षिप्त, निरस्त, प्रहत, शिकस्त ।

सं० परास्त (परा=तिरस्कार वा
अनादर, अस्=फेंकना या निका-
लना) र्म० पु० हारा हुआ,
पराजित किया हुआ ।

सं० पराह (पर + अहः) पु० दूसरा
दिन, परदिन ।

सं० पराह्ण (पर + अह्ण) पु० दिन
का पिछला भाग, दोपहरके पीछे
का दिन, सेहपहर ।

सं० परि (पृ=भरना) उपस० चारों
ओर से, २ सब तरह से, सम्पूर्ण
रूप से, ३ बहुत, अतिशय, ४
पहले, ५ पास, आसपास, ६
आपस में, ७ बुरा ।

सं० परिकर (परि=चारों ओर से,
कृ=करना) पु० कमर, २ नौकर
चाकर, सेवक, अनुचर, ३ परिवार,
४ समूह, ५ साज, ६ तैयारी ।

सं० परिक्रमा (परि=चारों ओर,
क्रम=पाँव रखना) स्त्री० प्रदक्षिणा,

चारों तरफ घूमना ।
 सं० परिक्षित (परि=पहले, सि=परीक्षित) नाश करना, क्योंकि परीक्षित को अपनी मा के गर्भ में ही अश्वत्थामा ने मार डाला था पर श्रीकृष्ण ने उसको जिलाया था इसकी कथा श्रीमद्भागवत और महाभारत में है) पु० अर्जुन का पोता, और अभिमन्यु का बेटा और हस्तिनापुर का राजा ।
 सं० परित्रा (परि=चारों ओर से, खन्=खोदना) स्त्री० खाई, खंदक, किले के चारों ओर का नाला ।
 सं० परिगत (गम्=जाना) र्म० पु० विस्मृत, भूला हुआ, वेष्टित, लपेटा हुआ, गया हुआ ।
 सं० परिग्रह भा० पु० स्त्री, औरत, परिवार, मूल, स्वीकार, शपथ, सौगन्द, शाप, सूर्यग्रहण ।
 सं० परिग्राहक क० पु० गाहक, स्वीकारक ।
 सं० परिघ (परि=चारों ओर से, हन्=मारना) पु० लोहे की लाठी, गदा, लोहे का मुद्गर ।
 सं० परिघोष पु० गाली, शब्द, मेघशब्द ।
 सं० परिचय (परि=चारों ओर से, चि=इकट्ठा करना) पु० जानपहचान, बहुत मितार्ई ।
 सं० परिचर्या (परि=सब तरह से,

चर्=जाना) पु० सेवा, पूजा, उपासना ।
 सं० परिचारक (परि=चारों ओर, चर्=जाना) पु० दास, सेवक, नौकर, आलापकर्ता, प्रसिद्धकर्ता ।
 सं० परिच्छुद पु० पुरस्कर, उपयोगी वस्तु, साज, विद्वाना, ढपना, सभारक्षक, आस्तरण, हाथियों का भूल असबाब ।
 सं० परिच्छन्न र्म० पु० आच्छादित, महसूर, घिराहुआ ।
 सं० परिचिन् र्म० पु० ज्ञात, जाना हुआ, पहचाना हुआ ।
 सं० परिच्छेद (परि, छिद्=काटना) पु० भाग, खण्ड, विभाग, अध्याय, पर्व ।
 सं० परिजन (परि=पास के, जन=मनुष्य) पु० परिवार, कुटुम्ब, घराना, घरके लोग, २ नौकर चाकर, अनुचर ।
 सं० परिणत (परि, नम्=भुकना) क० पु० भक्त, नम्र, पकाहुआ, भुका हुआ ।
 सं० परिणति (परि, नम्=भुकना) भा० स्त्री० नमस्कार, नम्रता, भुकाव, प्राप्त ।
 सं० परिणय (परि + नी=लेजाना) पु० विवाह, नम्रता, प्राप्ति ।
 सं० परिणाम (परि, नम्=भुकना, पर परि उपसर्ग के साथ आने से

इसका अर्थ बदलना होता है) पु०
अन्त, समाप्ति, बदलना, भिन्न-
भाव, अन्तकी अवस्था, फल ।

सं० परिणामदर्शी (परिणाम=
अन्त, दर्शी=देखनेवाला, दृश्=
देखना) क० पु० पहलेसे हर एक
कामका भला बुरा फल जानने
वाला, अग्रशोची, बुद्धिमान् ।

सं० परिणायक (परि + नी=ले
जाना) क० पु० पाँसोंका खेलने
वाला, पति, वर ।

सं० परिणाह पु० चौड़ाई, विस्तार,
निबन्धन, सम्बन्ध, रिश्ता ।

सं० परितः अव्य० सर्वतः, चारों
तरफ, चारों ओर ।

सं० परिताप (परि=चारों ओर से,
तप्=तपना) पु० दुःख, शोक,
सोच, पीड़ा, संताप, कष्ट, एक
नरक का नाम ।

सं० परितुष्टि (परि + तुप्=तुष्टि)
भा० स्त्री० सन्तुष्टि, इतमीनान ।

सं० परितृप्त (परि + तृप् + त, तृप्
=सन्तोष) क० पु० सब प्रकार
से तृप्त, आसूदा ।

सं० परितोष (परि=सब तरह से,
तुप्=प्रसन्न होना) पु० संतोष, तृप्ति,
हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० परित्यक्त र्म्य० पु० छोड़ागया,
सम्पत्त्यक्त, जल्द छोड़ागया ।

सं० परित्याग (परि=सब तरहसे,

त्यज्=छोड़ना) पु० त्याग, छो-
ड़ना, तजना ।

सं० परित्राण (परि=सब तरह से,
त्रै=बचाना) पु० बचाव, रक्षा,
उद्धार, डरसे अथवा बुराईसे ब-
चाना, रक्षण, हिफाजत ।

सं० परित्रात र्म्य० पु० रक्षित,
महफूज ।

सं० परित्राता क० पु० रक्षक,
महाफिज ।

सं० परिदान (परि=सब प्रकार,
दा=देना) पु० दानादान, देन
लेन, त्याग, प्रक्षेप, धरोहर धरना,
तिरस्कार, निवारण ।

सं० परिदेवक (परि=सब तरह से,
देव्=क्रीड़ा) क० पु० विलापकर्ता,
रोनेवाला, जुआरी, जीतनेवाला,
व्यवहारी, स्तुतिकर्ता, शोभा-
यमान ।

सं० परिदेवन (देव=स्तुति, क्रीड़ा)
भा० पु० विलाप, रोदन, क्रीड़ा,
जिगीषा, द्यूतकर्म, जुआ खेलना,
स्तुति ।

सं० परिधान (परि=चारों ओर से,
धा=पहनना) पु० पहनने का
कपड़ा, नाभि से नीचे पहनने का
कपड़ा ।

सं० परिधि (परि=चारों ओर से,
धा=रखना अर्थात् घेरना) स्त्री०
गोल लकीर जिससे वृत्त घेरा

- जाता है, घेरा, मण्डल, २ मूर्य का
अथवा चाँदका मण्डल ।
- सं० परिधेय (परि=चारों ओर से,
धा=पहनना) र्म० पु० पहनने
योग्य कपड़ा ।
- सं० परिध्वंस (परि=चारों ओर
से, ध्वंस=नाश होना) पु० नाश,
बिगाड़, हानि ।
- सं० परिपक्व (परि=बहुत, पक्व=पका
हुआ) र्म० पु० खूब पका हुआ,
२ पक्का, चतुर, बुद्धिमान् ।
- सं० परिपाक भा० पु० फल, नतीजा ।
- सं० परिपन्थक पु० (परि, पन्थ=
क्लेश देना, मारना) क० पु० शत्रु,
ठग, चोर, लुटेरा, पापी, कुमार्गी,
उन्मादी ।
- सं० परिपाटी (परि=सब तरह से,
वा चारों ओर से, पट्=जाना) स्त्री०
रीति, दस्तर, अनुक्रम, परम्पराकी
रीति ।
- सं० परिपूर्ण (परि=सब तरह से,
पूर्णा=पूरा) गु० पूरा, भरा हुआ,
संपूर्ण, समाप्त ।
- सं० परिभव (परि=अनादर, भू=
परिभाव) होना पु० अनादर,
अवज्ञा, तिरस्कार, नफरत ।
- सं० परिभाषा (परि=चारों ओर
से, भाष्=कहना) स्त्री० लक्षण,
व्याख्या, संज्ञा ।
- सं० परिभ्रमण (परि=चारों ओर,

- भ्रम=घूमना) पु० फिरना, घूमना ।
- सं० परिमाण (परि=चारों ओर
से, मा=नापना) पु० माप, नाप,
तौल, अंदाज़ ।
- सं० परिमार्जित (परि + मार्जित,
मृज्=शुद्ध करना, साफ करना)
र्म० पु० शुद्ध, संशोधित, पाक-
साफ ।
- सं० परिमित (परि=चारों ओर से,
मा=नापना) र्म० पु० नापाहुआ,
मापा हुआ, नियमित ।
- सं० परिमिति भा० स्त्री० परिमाण,
हद, किनारा ।
- सं० परिरम्भ (परि + रम्भ=उत्सुक
होना) पु० आलिङ्गन, भेटना,
श्लेष, मुलाकात ।
- सं० परिवर्जन (परि + वृज्=त्या-
गना) भा० पु० मारना, त्याग
करना ।
- सं० परिवर्त्तन (परि + वृत्=होना,
पर परि उपसर्ग के साथ आने से
इसका अर्थ बदलना होता है) पु०
बदल, एराफेरी, पलटना, तबा-
दिला ।
- प्रा० परिवा (सं० प्रतिपदा) स्त्री०
पखकी पहिली तिथि, पहली
तारीख ।
- सं० परिवाद (परि=बुरा, बद्=
कहना) पु० गाली, निन्दा, अप-
वाद, दुर्वाद ।

सं० परिवादक क० पु० निन्दक,
बदगो ।

सं० परिचार (परि=चारों ओर से,
वृ=घेरना वा ढकना) पु० घराना,
कुटुम्ब, परिजन ।

सं० परिवारण (परि, वृ=घेरना) ।
भा० पु० माँगना, तकाजा करना ।

सं० परिवाह (परि, वह=वहना) पु०
उपद्रव, जलका उछलना, बहाव,
चहबन्ना, तरङ्ग, लहर ।

सं० परिवृत (परि=चारों ओर से,
वृत=रहना) र्म० पु० रक्षित, आ-
च्छादित, घिराहुआ, परिवेष्टित ।

सं० परिवेष्टन (परि, वेष्ट=लपेटना)
भा० पु० लपेटना, लिफाफा ।

सं० परिव्राज (परि=सब तरफ
परिव्राजक) वा सबकाम छोड़
के, व्रज्=फिरना) क० पु० संन्यासी,
यती, योगी, गुसाई ।

सं० परिशिष्ट (परि, शास्=सि-
खाना) क० पु० अशेष, तितिम्मा,
बाक़ी, अवशिष्ट ।

सं० परिशोधन (परि, शुध्=शुद्ध
करना) भा० पु० ऋणचुकाना,
कर्जा अदा करना, फर्चा करना ।

सं० परिश्रम (परि=चारों ओर से,
श्रम=मिहनत करना) पु० मिहनत,
श्रम, थकावट ।

सं० परिश्रान्ति र्म० पु० थकगया ।

सं० परिश्रमी क० पु० मेहनती ।

सं० परिषद् (परि + षद्=जाना)
अनुचर, सेवक, सभासद ।

सं० परिष्कार (परि + कार, कृ=
करना) भा० पु० सफाई, स्व-
च्छता, शुद्धता ।

सं० परिष्कृत र्म० पु० अलंकृत,
भूषित ।

सं० परिष्वङ्ग पु० आलिङ्गन, भेटना,
हमागोश होना ।

प्रा० परिहरना (सं० परिहरण परि,
ह=लेना) क्रि० स० छोड़ना,
दूर करना ।

सं० परिहार (परि + हार, ह=ह-
रना, लेना) भा० पु० हरना,
लेना, छीनना, अवज्ञा, अपमान,
त्याग ।

सं० परिहास (परि=बहुत, हस्=
हँसना) भा० पु० हँसी, ठट्ठा, कौ-
तुक, खेल, मसखरी, लोकापवाद ।

सं० परिहास्य र्म० पु० हँसी के
लायक, हँसने योग्य ।

सं० परिहित र्म० पु० आच्छादित,
घेरा हुआ, आच्छन्न, गुप्त,
पोशीदा ।

सं० परीक्षक (परि=चारों ओर
से, ईक्ष=देखना) भा० पु० परीक्षा
करनेवाला, परखनेवाला, इम्ति-
हान लेनेवाला ।

सं० परीक्षा (परि=चारों ओर से,
ईक्ष=देखना) भा० स्त्री० परख,

जाँच, इम्तिहान ।

सं० परीक्षित पु० परिक्षित शब्द को देखो ।

सं० परीक्षोत्तीर्ण (परीक्षा + उत्तीर्ण, तृ=पारजाना) गु० परीक्षा में पूरा, इम्तिहान पास, फेल नहीं, पास ।

सं० परुष (पृ=भरना) गु० कठोर, कड़ा, पु० कुवचन, गाली ।

प्रा० परे (सं० पर) क्रि० वि० उधर, उस ओर, दूर, परे रहना, बोल० दूर रहना ।

प्रा० परेखा (सं० परीक्षा) स्त्री० परख, जाँच, २ पद्धतावा, पश्चात्ताप ।

सं० परेत (परा, इण्=जाना) पु० भूत, पिशाच, शैतान, गु० मुर्दा, मृतक ।

प्रा० परेता पु० रहटा, चर्खा, चर्खी ।

प्रा० परेवा पु० कपोत, कबूतर, प्रतिपदा ।

सं० परेद्युस् अव्य० दूसरा दिन, कल, फर्दा ।

सं० परोक्ष (पर=परे, अक्ष=आँख) गु० नहीं देखा हुआ, आँखों के परे ।

सं० परोपकार (पर=दूसरे का, उपकार=भला) पु० दूसरे का भला, पराये का हित ।

सं० परोपकारी (परोपकार) गु०

दूसरे का भला करनेवाला ।

प्रा० परोस पु० समीपता, गेड़ा, नजदीकी ।

प्रा० परोसना (सं० परिवेषण, परि=चारों ओर से, विष्=फैलाना) क्रि० सं० खाना पत्तलों में रखना, खाना चुनना, पत्तल लगाना ।

प्रा० परोहा (सं० परीवाह, परि=सब ओर से, वह्=ले जाना) पु० चरस, मोट, पुर ।

सं० पर्कटि स्त्री० पाकरि, पकरिया ।

प्रा० पर्चा (सं० परीक्षा) पु० परख, पर्चों } जाँच, परीक्षा ।

प्रा० पर्चाना (सं० परिचयन) क्रि० सं० भेंट कराना, मिलाना, बातों में लगाना ।

प्रा० पट्टार्ई (सं० प्रतिच्छाया, प्रति=अपने रूप, छाया=झाँव) स्त्री० प्रतिबिम्ब, अक्स ।

सं० पर्जन्य (पृष्=सींचना, गर्ज=गर्जना) क० पु० मेघ, इन्द्र, मेघ-गर्जन, नवीन मेघ, बरसाती मेघ ।

सं० पर्ण (पर्ण=हरा होना, वा पृ=भरना) पु० पत्ता, पान ।

सं० पर्णकारक० पु० बरई, तम्बोली ।

सं० पर्णशाला (पर्ण=पत्ता, शाला=घर) स्त्री० पत्तों की बनी कुटी, भोपड़ी ।

सं० पर्णी क० पु० वृक्ष, पेड़ ।

सं० पर्व (पर्व=जना वा पूरा होना)

ग्रन्थि, गौंठ, गिरह ।
 सं० पर्यङ्क (परि=पास, अङ्क=गोद, अकि=जाना वा चिह्न करना) पु० पलंग ।
 सं० पर्यटक क० पु० मुसाफिर, पथिक ।
 सं० पर्यटन (परि=चारों ओर, अटन=घूमना) भा० पु० घूमना, भ्रमण करना, सफर करना, सैर करना ।
 सं० पर्यन्त (परि=पास, अन्त=सीमा) पु० अन्त, सीमा, हद, अव्य० तक, तलक ।
 सं० पर्याप्त (परि=चारों तरफ, आप्=व्याप्त होना) पुं० समर्थ, तृप्त, योग्य ।
 सं० पर्याय (परि=चारों ओर से, इण्=जाना) पु० एक अर्थ का शब्द, एकार्थी शब्द, २ अनुक्रम, रीति, ३ प्रकार, ४ अवसर, ५ उर्फ, हमनामी ।
 सं० पर्यायवाचक क० पु० एकार्थ-बोधक, मुतरादिफ ।
 सं० पर्यालोचना (परि+आलोचना) भा० पु० विचार करना, गौर करना, यहतियात करना, चौकसी करना, सब प्रकार से देखना ।
 सं० पर्व (पृ=भरना) पु० त्योहार, उत्सव, २ अध्याय, परिच्छेद,

३ गौंठ ।
 सं० पर्वणी { (पृ=भरना) स्त्री० पर्विणी } त्योहार, उत्सव, तिवहार ।
 सं० पर्वत (पर्व=भरना) पु० पहाड़, शैल, गिरि, भूधर ।
 सं० पर्वतारि (पर्वत + अरि) पु० इन्द्र ।
 सं० पर्वतीय (पर्वत) गु० पहाड़ी, पहाड़ का ।
 सं० पल (पल्=जाना) स्त्री० घड़ी का साठवाँ भाग, निमेष, दम, आन, लहमा ।
 प्रा० पलगारि क्रि० वि० निकार, कर, निकारी, दूर की ।
 प्रा० पलभरमें बोल० तुरन्त, उसी दम, पलमारते ।
 प्रा० पलमारते बोल० तुरत, पल भरमें ।
 प्रा० पलक स्त्री० आँख का पुट, प-पोटा, बरुनी, पपनी, २ पल, क्षण ।
 प्रा० पलंग (सं० पल्यङ्क परि + अङ्क) पु० सेज, शय्या, खाट, चारपाई ।
 प्रा० पलटन (अं० बैटालियन) पु० हजार सिपाहियोंका यूथ या थोक, जत्था ।
 प्रा० पलटना क्रि० अ० पीछा आना, फिरजाना, लौटजाना, २ बदलना, बदललेना, ३ नकारना, इन्कार करना ।

प्रा० पलटा (पलटना) पु० बदला,
पराफेरी, बट्टा, अदला बदला,
प्रतिफल, पीछा, उपकार करना,
३ पीछा बैर लेना ।

प्रा० पलटालेना बोल० पीछा ले
लेना, लौटा लेना, २ बदला लेना,
बैर लेना, बैर सारना ।

प्रा० पलड़ा पु० तराजू का एकपल्ला ।

सं० पलायु पु० प्याज, सलगम ।

प्रा० पलथी स्त्री० कूला टेक कर
जमीन पर बैठना, एक प्रकार का
आसन वा बैठने का ढंग ।

प्रा० पलना (सं० पलन, पल्=ब-
चाना) क्रि० अ० पनपना, प्रति-
पालित होना ।

प्रा० पलवल (सं० पटोल, पट्=
जाना) पु० परवल, एक तरकारी
का नाम ।

प्रा० पलवार पु० एकप्रकार की नाव ।

प्रा० पला पु० बड़ाचमचा, कलछुल,
दवीं, डोई, तेल आदि निकालने
का बरतन ।

सं० पलायन (परा से, अथवा उ-
लटा, अय्=जाना) पु० भागना,
भागभाग ।

सं० पलायक क० पु० भगोड़ा ।

सं० पलायित क० पु० भगोड़ा,
प्रस्थित, चम्पत ।

सं० पलाश (पल्=चलना, अश्=
फैलाना वा खाना) पु० टेमू का

वृक्ष, ढाक का वृक्ष ।

सं० पलित (पल्=पालना, जाना)
भा० पु० वृद्धत्व, बुढ़ापा, सफेद
बाल, गु० वृद्ध, शिथिल, पुराना ।

प्रा० पली स्त्री० चमची, जिससे
तेल आदि निकाला जाता है ।

प्रा० पलीत (सं० प्रेत) पु० भूत,
पिशाच, प्रेत ।

प्रा० पलीता (फा० पतीला वा
फतीला) पु० बत्ती, २ बंदूक
का तोड़ा, जामगी ।

प्रा० पलेथन पु० सूखा आटा जो
रोटीपर बेलने के समय लगाया
जाता है ।

प्रा० पलेथननिकालना बोल०
बहुत मारना, बहुत पीटना ।

प्रा० पलोटना क्रि० स० धीरे २
पाँव दाबना ।

सं० पल्ल पु० गोला, गोली ।

सं० पल्लव (पल्=जाना, और लू=
काटना, अथवा पल्ल=जाना)
पु० नया पत्ता, अङ्कुर, कैल ।

सं० पल्लवग्राही (ग्रह=लेना) क०
पु० पत्रा बाँधनेवाला, पुरोहित ।

सं० पल्लवित (पल्लव) गु० नये पत्तों
वाला, नयेपत्तोंसे युक्त, २ पुल-
कित, रोमाञ्चित, हर्षित, प्रसन्न ।

प्रा० पल्ला पु० अन्तर, दूरी, टप्पा,
२ सहायता, ३ कपड़े का छोर,
अञ्चल, ४ छोर, किनारा, ५

किवाड़, ६ तीनमन बोझका ।
 सं० पल्ली स्त्री० छपकिली, २ स्वल्प
 ग्राम, छोटा गाँव, ३ कुटी, भो-
 पड़ी, ४ कुटनी ।
 प्रा० पल्लू पु० कपड़े का खूँट, आँ-
 चल, अंचल, छोर ।
 प्रा० पल्लूदार पु० कपड़ा जिसका
 पल्ला सुनहरी वा रूपहरी हो ।
 सं० पल्लवल पु० तलैया, पानी का
 भरा गड़हा, छोटा तलाव ।
 सं० पवन (पू=पवित्र करना) स्त्री०
 हवा, वायु, बहार, बतास, बाव,
 अनाजका उसाना वा पसाना ।
 सं० पवनकुमार (पवन=हवा, कु-
 मार=बेटा) पु० हनुमान्, पवन
 का बेटा ।
 सं० पवनतनय (पवन=हवा, तनय
 =बेटा) पु० हनुमान् ।
 सं० पवनायन पु० भरोखा, खि-
 डकी, मोखा ।
 सं० पवनरेखा (पवन=हवा, रेखा=
 लकीर) स्त्री० राजा उग्रसेन की
 रानी और कंस की माँ ।
 सं० पवनाशन (पवन=हवा + अ-
 शन=भोजन, अशू=खाना) पु०
 वायुभक्षक, सर्प, साँप ।
 सं० पवनसुत (पवन=हवा, सुत=
 बेटा) पु० हनुमान्, पवन का पुत्र ।
 प्रा० पवारना क्रि० सं० फेंकना,
 हालना, भेजना ।

सं० पवि (पू=शुद्ध करना, अर्थात्
 दुष्ट जनों को मार पीटकर शुद्ध
 करना) पु० वज्र, इन्द्र का शस्त्र,
 हीरा ।
 सं० पवित्र (पू=शुद्ध करना) गु०
 शुद्ध, निर्मल, पापरहित, साफ,
 विमल, पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ, २
 कुश, ३ ताँबा, जल ।
 सं० पवित्रता (पवित्र) भा० स्त्री०
 निर्मलता, शुद्धता, सफाई ।
 प्रा० पवित्री (सं० पवित्र) स्त्री०
 कुश घास की अथवा सोना, चाँदी
 और ताँबा इन तीनों धातु की
 बनी हुई अँगूठी जिसको हिंदूलोग
 पूजा करते समय पहनते हैं ।
 सं० पश (पशू=जाना, बाँधना)
 पु० स्पर्श, बाँधना, मथना, पीड़ा,
 गुं छूनेवाला, बाँधनेवाला, शत्रु ।
 सं० पशु (दृश्=देखना, जो सब को
 बराबर देखता है और भले बुरे का
 विचार नहीं करता) पु० चौपाया
 जन्तु, जीव, गाय भैंस घोड़ा
 आदि, २ देवता ।
 सं० पशुपति (पशु=देवता, जीव
 अथवा चौपाया (बैल) पति=
 स्वामी) पु० महादेव, शिव ।
 सं० पशुपाल (पशु=चौपाया,
 पशुपालक) पाल=बचाना)
 क० पु० ग्वाला, अहीर ।
 सं० पशुराज (पशु=चौपाया, राज

=राजा) पु० सिंह ।

सं० पश्चात् क्रि० वि० पीछे, इसके पीछे, २ पश्चिम दिशा की ओर ।

सं० पश्चात्ताप (पश्चात्=पीछे, ताप=दुःख) पु० पछतावा, पस्तावा, अनुताप ।

सं० पश्चिम (पश्चात्=पीछे) स्त्री० पश्चिमदिशा, पछाँह, गु० पश्चिम का ।

सं० पश्यतोहर (पश्यतः=देखते २, हर=चुरा लेना) पु० सुनार, २ मृत्यु, ३ चोर ।

प्रा० पषान (सं० पाषाण) पु० पत्थर, शिला ।

सं० पस् (पस्=बाँधना, गाँठ देना) पु० बाँधना, छूना, गु० बाँधने-वाला, छूनेवाला ।

प्रा० पसरना (सं० प्रसरण, प्र=बहुत, सृ=जाना वा फैलना) क्रि० अ० फैलना ।

प्रा० पसली (सं० पार्श्व) स्त्री० पाँसुली, पञ्जर, पाँजर ।

प्रा० पसाना (सं० प्रस्त्रावण, प्रसृ=चूना या टपकना) क्रि० स० मॉड़ निकालना, रींथेहुये चाँवलों में से पानी निकालना ।

सं० पसारना (सं० प्रसारण, प्रसृ=जाना वा फैलना) क्रि० स० फैलाना, बिछाना ।

प्रा० पसारी पु० पनसारी शब्द को

देखो ।

प्रा० पसीजना (सं० प्रस्वेदन, प्र, स्विद्=पसीना निकलना) क्रि० अ० पिघलना, नर्म होना, पसीना निकलना, २ कोमलचित्त होना ।

प्रा० पसूजना क्रि० स० तुर्पना, तागना, डोरा डालना ।

प्रा० पसीना (सं० प्रस्वेद, प्र, स्विद्=पसीना होना) पु० पसेव, स्वेद ।

प्रा० पसेव (सं० प्रस्वेद) पु० पसीना, २ प्रसन्नता, खुशी ।

प्रा० पस्ताना (सं० पश्चात्ताप) क्रि० अ० पछताना, पश्चात्ताप करना ।

प्रा० पह स्त्री० भोर, तड़का, पोह, भिनसार, सबेरा ।

प्रा० पहफटना } बोल० भोर होना,
पौफटना } तड़का होना, रो-
शनी फैलना, दिन निकलना ।

प्रा० पहचान (पहचानना) स्त्री० जानना, जान पहचान, ज्ञान, चिन्हार, लक्षण, चिन्हानी, चिह्न ।

प्रा० पहचानना } (सं० प्रतिज्ञान)
पहिचानना } क्रि० स० जानना,
चीन्हना, लक्षण करना ।

प्रा० पहनना } (सं० परिधान)
पहरना } क्रि० स० कपड़ा
पहिरना } ओढ़ना, कपड़ा
पहनना, शरीर पर कपड़ा धारण

करना ।

प्रा० पहनावा (पहनना) पु० पहि-
राव, पोशाक ।

प्रा० पहर (सं० प्रहर, प्र=पहले,
ह=लेना) स्त्री० दिन रात का
आठवाँ भाग, तीन घण्टा, आठ
घड़ी ।

प्रा० पहरा (पहर) पु० चौकी, २
गश्त, फेरा, ३ एक नायक अथवा
जमादार और छः चौकीदार ।

प्रा० पहराना (सं० परिधान) क्रि०
स० पहनना, उढ़ाना ।

प्रा० पहरादेना बोल० जागता
रहना, चौकस रहना, चौकी देना,
रखवाली करना ।

प्रा० पहरें में डालना बोल० हवा-
लातमें रखना, पहरण को सौंपना ।

प्रा० पहरें में पड़ना बोल० हवा-
लात में रहना ।

प्रा० पहरावनी (सं० परिधान)
स्त्री० ब्याह में दुल्हन के घर से
बरातियों को जो कपड़ा रुपया
आदि दिया जाता है ।

प्रा० पहरिया } (सं० प्रहरी, प्रहर
पहरूआ } = पहर) पु० चौकी-
पहरू } दार, चौकी देने-
वाला, रक्षा करनेवाला, रखवाली
करनेवाला, पौरिया ।

प्रा० पहल पु० रुई का गाला, रुई
का फाहा, २ प्रारम्भ, आरम्भ,

शुरुआत, आदि, ३ खेत की भुजा ।

प्रा० पहला } (सं० प्रथम) गु०
पहिला } प्रथम, आदि ।

प्रा० पहाड़ पु० पर्वत, शैल, गिरि ।

प्रा० पहाड़सीरातें बोल० लम्बी
रातें, बड़ी रातें, दुःख की रातें ।

प्रा० पहाड़ा पु० जोड़ती, गुना का
नकशा ।

प्रा० पहाड़िया } गु० पहाड़ का,
पहाड़ी } पर्वती ।

प्रा० पहाड़ी स्त्री० छोटा पहाड़,
टीला, टेकरी ।

प्रा० पहिया पु० पया, चाफा, चक्का,
चक्र ।

प्रा० पहिला (सं० प्रथम) गु०
अगिला, आगे का ।

प्रा० पहिलौटा गु० पहिला, जेठा,
ज्येष्ठ ।

प्रा० पहुँच (पहुँचना) स्त्री० आना,
आगमन, २ शक्ति, सकत, सयाना-
पन, अच्छी समझ, ३ पैठ, पैसार,
प्रवेश, दखल, गुजर, घुस पैठ,
४ रसीद ।

प्रा० पहुँचना क्रि० अ० आजाना,
दाखिल होना, उतरना, आरहना,
जाना, फैलना, चलना, बढ़जाना,
पूगना, पास आना ।

प्रा० पहुँचा पु० कलाई ।

प्रा० पहुँची स्त्री० पहुँचे में पहनने
का गहना, कङ्कण, कँगना ।

प्रा० पहुड़ना क्रि० अ० लैटना,
सोना, आराम करना ।

प्रा० पहुनई (सं० प्रायुणता) स्त्री०
आदर, मान, मनुहार, अतिथि-
सेवा, मेहमानी ।

प्रा० पहुप { (सं० पुष्प) पु० फूल,
पुहप } सुमन ।

प्रा० पहेली (सं० प्रहेलि अथवा
प्रहेलिका, प्र=बहुत, हेल् वा हेड्
=अनादरकरना) स्त्री० दृष्टकूट, गूढ
प्रश्नश्लेष, बुझवत ।

प्रा० पाँक { (सं० पङ्क) पु० कीचड़,
पाँकां } दलदल, काँदा ।

प्रा० पाँच (सं० पञ्च) गु० दो और
तीन ।

प्रा० पाँचमात बोल० घबराहट,
व्याकुलता, भ्रंभट, जंजाल ।

प्रा० पाँजर (सं० पञ्जर) पु० पँसली,
पार्ष्व ।

प्रा० पाँडे { (सं० पण्डित) पु०
पाँडे } ब्राह्मणों की पदवी, २
पाठक, अध्यापक, पढ़ानेवाला ।

प्रा० पाँत { (सं० पङ्क्ति) स्त्री० कतार,
पाँती } श्रेणी, लकीर, अवली,
पाँति } सिपाहियों का परा ।

प्रा० पाँयती (सं० पादान्त, पाद=
पाँव + अन्त) स्त्री० पायतल,
विद्यार्ने के पैर की ओर ।

प्रा० पाँव (सं० पाद, और फा० पा)
पु० पैर, पद, चरण, गोड़ ।

प्रा० पाँव उठाना वा चलाना
बोल० भट भट चलना, जल्दी
जल्दी चलना ।

प्रा० पाँवउतरना बोल० पाँवका
जौड़ टलना, पाँव गाँठ से उख-
ड़ना ।

प्रा० पाँव काँपना या थरथराना
बोल० किसी काम के करने से
डरना ।

प्रा० पाँव किसीका उखाड़ना
बोल० किसीको किसी काम पर
जमने नहीं देना ।

प्रा० पाँव किसीका गलेमें डालना
बोल० किसी मनुष्य को उसी की
वातोंसे अथवा तर्कसे दोषी अथवा
अपराधी ठहराना ।

प्रा० पाँवचलजाना बोल० डगम-
गाना, अस्थिर होना ।

प्रा० पाँवजमाना बोल० दृढ़ होके
ठहरना, मजबूती से ठहरना ।

प्रा० पाँव ज़मीन पर न ठहरना
बोल० बहुत प्रसन्न होना, बहुत
खुश होना, २ बहुत घमण्ड करना ।

प्रा० पाँवडालना बोल० किसी
बड़े काम के करने के लिये तैयार
होना और उसको शुरूअ करना ।

प्रा० पाँवडिगना बोल० फिसलना,
खिसकना, रपटना, किसी काम से
हिम्मत हार जाना ।

प्रा० पाँवतले मलना बोल० किसी

को दुख देना, खिजाना, सताना,
पीड़ा देना, खराब करना ।

प्रा० पाँव तोड़ना बोल० किसी
के मिलने से रुक रहना, २ किसी
मनुष्य से मिलने के लिये कईवार
जाना, ३ थक जाना ।

प्रा० पाँवधोधोपीना बोल० बहुत
मानना, किसी का बहुत विश्वास
करना, बहुत खुशामद करना ।

प्रा० पाँचनिकालना बोल० अपनी
मर्यादा अथवा हृद से बड़ जाना,
२ किसी बड़े कामके करनेसे फिरना,
३ किसी अपराध के करने में
मुखिया होना ।

प्रा० पाँव पकड़ना बोल० गरीबी
अथवा अधीनी से बिनती करना,
२ किसी को जाने से रोकना, ३
अधीन होना, शरण लेना ।

प्रा० पाँवपड़ना बोल० धिधियाना,
गिड़गिड़ाना, गरीबी से बिनती
करना, खुशामद करना ।

प्रा० पाँवपर पाँवरखना बोल०
दूसरे मनुष्य का चाल चलन ग्रहण
करना अथवा ले लेना, दूसरे की
चाल चलना, २ ऐल फैल बैठना,
आराम से बैठना, एक पैर को दू-
सरे पैर पर रखकर बैठना, बड़ा
तकाजा करना ।

प्रा० पाँवपाँव } बोल० पैदल, पि-
पाँवोंपाँवों } यादेपाँव, पैरों ।

प्रा० पाँवपीटना बोल० अधीरतासे
पाँव पटकना, २ वृथा कोशिश
करना ।

प्रा० पाँवपूजना बोल० किसीको
बड़ा जानना, २ किसी से बचना,
अलग रहना, दूर रहना ।

प्रा० पाँव फूँकफूँकरखना बोल०
हर एक काम को सावधानी से
करना, सम्हल कर काम करना ।

प्रा० पाँव फैलाकरसोना बोल०
सुखी रहना, चैनसे रहना, बचाव
से रहना, बेखटके रहना, निडर
रहना ।

प्रा० पाँवफैलाना बोल० हठ क-
रना, अड़ना ।

प्रा० पाँव भरजाना बोल० पाँव
ठिठरना, २ पाँव सो जाना ।

प्रा० पाँवरगड़ना बोल० वृथा और
मूर्खता से भटकता फिरना, वृथा
चकरखाना, २ मरनेके दुखमें होना ।

प्रा० पाँवलगना बोल० प्रणाम क-
रना, नमस्कार करना ।

प्रा० पाँव से पाँवबाँधना बोल०
किसी के पास बराबर बैठा रहना
अथवा किसी की खूब रखवाली
रखना ।

प्रा० पाँवसे पाँवभिड़ाना बोल०
पासहोना ।

प्रा० पाँवसोना बोल० पाँव सुन
हो जाना ।

प्रा० पाँचदबेआना बोल० धीरे से
- आना ।

प्रा० पाँवड़ा (पाँव) पु० वह कपड़ा
अथवा शतरंजी व गलीचा आदि
जिस पर बड़े आदमी पैर रखकर
चलते हैं ।

सं० पांशव (पांगु=बोधना) पु०
पाँगा नमक ।

सं० पांशु पु० मिट्टी, धूलि, रेणु,
रजोधर्म, हैज, शुष्क गोमय, सूखा
गोबर, गोबर का ढेर, पांस, कर्पूर ।

सं० पांशुका स्त्री० रेणु, धूलि,
रजस्वला स्त्री, वेश्या ।

सं० पांशुपत्र पु० बथुआ शाक ।

सं० पांशुल पु० शिव, धूलियुक्त ।

सं० पांशुला स्त्री० कुलटा स्त्री, वेश्या,
जैसे “अपांशुलामां धुरि कीर्त्त-
नीया ” इति रघुः (अ=नहीं,
पांशुला=कुलटा अर्थात् प्रतिव्रता) ।

प्रा० पाई (सं० पाद चौथा भाग)
स्त्री० एक आने का चौथा भाग,
एक पैसा, अँगरेजी पाई एक आने
का बारहवां हिस्सा होता है ।

सं० पाक (पच=पकना वा पकाना)
पु० रींधना, पचन, रसोई, पकवान.
पकाई हुई दवाई अथवा और कोई
वस्तु, २ उल्लू, ३ एक दैत्य का
नाम, ४ फलप्राप्ति, ५ दशा,

६ सकेदवाल (पा=पीना) बालक,
शिशु, छोटा लड़का ।

सं० पाकपुटी पु० स्थाली, चूल्हा,
चूल्ही, पजावा, आरां, भट्ठा,
पाकशाला ।

प्रा० पाकड़ (सं० पर्कटी, पृच्=
मिलाना वा छूना) पु० एक वृक्ष
का नाम, पाकड़िया, एक प्रकार
का गूलर वृक्ष ।

सं० पाकरिपु (पाक=एक असुर का
नाम, रिपु=वैरी) पु० इन्द्र ।

सं० पाकशाला (पाक=पकाना,
शाला=घर) धि० स्त्री० रसोई-
घर, पाकस्थान, पकानेकी जगह ।

सं० पाकशासन (पाक=एक राक्षस
का नाम, शास्=दण्डदेना) पु० इन्द्र ।

सं० पाकुक क० पु० पकानेवाला,
रसोईबंदार ।

सं० पाक्षिक गु० सहायक, हिमायती,
मदद देनेवाला ।

प्रा० पाखर (सं० प्रखर) पु० घोड़े
हाथी को बचाने के लिये बद्धतर,
भूल ।

सं० पाखण्ड (पा=तीनों वेदों का
धर्म, खण्ड=खण्डितकरना) पु०
दम्भ, डिम्भ, पाखण्ड, छल ।

सं० पाखण्डी गु० दम्भी, छली,
मकार ।

१ “ पातनाच्च जगदीधर्मः पाशब्देन निगद्यते । तं खण्डयन्ति ते तस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना ” ॥१॥

प्रा० पाग स्त्री० पगड़ी ।

प्रा० पागल पु० पगला, सिड़ी,

उन्मत्त, बावला, बौराहा, मूर्ख ।

सं० पाचक (पच्=पकाना) क०

पाचुक } पु० पचानेवाली वस्तु

जैसे चूर्ण आदि, २ आग,

रसोइयाँ ।

सं० पाचिका स्त्री० पकानेवाली ।

सं० पाञ्चजन्य (पञ्चजन=दैत्य से

हुआ अर्थात् वना) पु० विष्णु

का शङ्ख ।

सं० पाञ्चाल पु० नाम-देश ।

सं० पाञ्चाली स्त्री० द्रौपदी ।

प्रा० पाछे (सं० पश्चात्) क्रि०

पाछे } वि० पीछे, इसके बाद,

इसके अनन्तर, पीठ पीछे, परे ।

प्रा० पाट पु० कपड़े की अथवा

नदी की चौड़ाई, २ सन, सनई ।

प्रा० पाट (सं० पट्ट, पट्ट=घेरना)

पु० रेशम, २ चक्की का पत्थर, ३

सिंहासन जैसे राजपाट, राजा का

सिंहासन, ४ चौकी, तल्ला, पटरा,

पाटा ।

सं० पांसक (पांस् + अक, पस्=

बाधा करना) क० पु० मिथ्या,

कुत्सित, भूँटा, अधम, नाशक,

दूषक, जैसे कुलपांसक ।

सं० पांसु पु० धूलि, रज, रेणु, पांस,

पाप, कलङ्क ।

प्रा० पाटना क्रि० सं० ढाना, ढकना,

२ भरना, भरपूर करना, रेल पेल

करना, ३ सींचना ।

प्रा० पाटम्बर (सं० पट्टाम्बर, पट्ट=

रेशम, अम्बर=कपड़ा) पु० रेशमी

कपड़ा, रेशम का कपड़ा ।

प्रा० पाटरानी (पाट + रानी) स्त्री०

पटरानी, महारानी ।

सं० पाटल (पट्ट=जाना वा चमकना)

पु० एक पेड़ का नाम, २ गुलाबी

रङ्ग, श्वेत रक्तवर्ण, लाल सफेद

रङ्ग, गुलाब का फूल, गुलाबी

रङ्ग ।

सं० पाटलिपुत्र पु० पटना नगर ।

सं० पाटव (पट्ट=चतुर) भा० पु०

चतुराई, प्रवीणता, होशियारी ।

प्रा० पाटा (सं० पट्ट) पु० पटरा, तल्ला,

२ धोबी के कपड़ा धोनेका तल्ला ।

प्रा० पाटी (सं० पट्टिका, पट्ट=जाना)

स्त्री० खाट की पटिया, २ एकतरह

की चटाई, ३ तखती जिस पर

लड़के लिखना सीखते हैं, ४ बालों

की पट्टी ।

सं० पाठ (पट्ट=पढ़ना) भा० पु०

पढ़ना, सन्धा, सबक, २ अध्याय ।

सं० पाठक (पट्ट=पढ़ना वा पढ़ाना)

क० पु० शिक्षक, अध्यापक, पढ़ाने

वाला, मुअल्लिम, मुदर्रिस, प-

ण्डित, २ पढ़नेवाला, विद्यार्थी,

शिष्य, ३ ब्राह्मणों की पदवी ।

सं० पाठन भा० पु० पढ़ना वा

पढ़ाना ।

सं० पाठशाला (पाठ=पढ़ना, शाला =जगह) धि० स्त्री० पढ़ाने की जगह, चटशाला, स्कूल, कालिज, मदर्सा ।

प्रा० पाठा पु० जवान जानवर, २ मल्ल ।

सं० पाठित मर्म० पु० पढ़ायागया, पढ़ा हुआ ।

सं० पाठी क० पु० पढ़नेवाला ।

सं० पाठ्य मर्म० पु० पढ़ाने योग्य ।

सं० पाठीन (पठि=पीठ, नम्=भु- कना) पु० एक प्रकार की मछली ।

प्रा० पाढ़ना (सं० पातन, पत्= गिरना) क्रि० स० गिराना, मारना, पूराकरना, २ काजल इकट्ठाकरना ।

प्रा० पाढ़ा (सं० पृषत्, पृष=सी- चना) पु० एक जंगली जानवर का नाम ।

सं० पाण पु० क्रय विक्रय व्यवहार, स्तुति, तश्चरीफ या बड़ाई ।

सं० पाणि (पण्=लेन देन करना) पु० हाथ, हस्त, कर, दस्त ।

सं० पाणिग्रहण (पाणि=हाथ, ग्रह =पकड़ना) पु० व्याह, विवाह, शादी, हाथ पकड़ना ।

सं० पाणिघ (पाणि=हाथ, हन्= मारना) पु० तबला वा ढोलक या मृदङ्ग का बजानेवाला ।

सं० पाणिनि (पणनं पणः, ततः

अस्तीति पणी पणिनो गोत्रापत्यं पुमान् पाणिनिः, अर्थात् पणिगोत्र से उत्पन्न हुआ अथवा पणि का शिष्य, पण्=स्तुति करना) पु० अष्टाध्यायी व्याकरण आदि का बनानेवाला पुनि ।

सं० पाणिनीय (पाणिनि) गु० पाणिनि ऋषि का बनाया हुआ (व्याकरण शास्त्र आदि) ।

सं० पाण्डर (पडि=जाना वा मि- लना) गु० पीला और धौला, सीठा, फीका, पु० कुन्दफूल, श्वेतपुष्प ।

सं० पाण्डव (पाण्डु=युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों का बाप) पु० पाण्डु के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव ।

सं० पाण्डित्य (पण्डित) भा० पु० पण्डितार्थ, विद्या, विद्वत्त्व ।

सं० पाण्डु (पडि=जाना) पु० दिल्ली का एक पुराना राजा और युधिष्ठिर आदि पाँचों पाण्डवों का बाप, २ धौला और पीला रङ्ग, श्वेत रङ्ग, ३ एक फूल और पौधे का नाम, गु० पीला और धौला, सीठा, फीका ।

प्रा० पात (सं० पत्र) पु० पत्ता, २ कान में पहनने का एक तरह का गहना, गिरना, राहु, लत्ता पात आदि में का एक योग ।

सं० पातक (पत्=गिरना) पु० पाप,
दोष, अपराध, गुनाह ।

सं० पातकी (पातक) क० पु०
पापी, दोषी, अपराधी, गुनहगार ।

सं० पातञ्जल (पतञ्जलि) पु० पत-
ञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ
योगशास्त्र आदि ।

प्रा० पातर स्त्री० वेश्या, पतुरिया,
कञ्चनी, गणिका, गु० पतला,
दुबला ।

सं० पाता (पा=रक्षण करना) क०
पु० रक्षक, पालक ।

सं० पाताल (पत्=गिरना, जहाँ
पापी गिराये जाते हैं, अथवा पात
=गिरना, आलय=स्थान) पु०
नीचे का लोक, नागलोक, नरक,
पाताल ७ हैं (१ अतल, २ वि-
तल, ३ सुतल, ४ तलातल, ५
महातल, ६ रसातल, ७ पाताल) ।

सं० पाति पु० माता, पिता, गुरु,
पति, सूर्य, चन्द्र, विश्व ।

सं० पातिन र्म्यं पु० अधःक्षिप्त,
नीचे गिरायागया ।

प्रा० पाती (सं० पत्री, पत्नी) स्त्री०
चिट्ठी, २ (सं० पत्र) पत्ता ।

सं० पात्र (पा=वचाना वा पीना
जिससे) पु० बरतन, बासन,
आधार, प्याला, कटोरा, २ दान
देने योग्य विद्यावान् आक्षण, गु०
उचित, योग्य ।

सं० पात्रता भा० स्त्री० } (पात्र=
पात्रत्व पु० } योग्य)

योग्यता, लियाकत ।

सं० पाथ } (पा=पीना) पु० पानी,
पाथस् } तोय, जल, अनिल ।

प्रा० पाथर (सं० प्रस्तर, प्र=बहुत,
स्तु=फैलाना) पु० पत्थर, पाषाण,
शिला ।

सं० पाथेय (पथ=रस्ता) पु० रस्ते
का खाना, रस्तेकी खुराक, राह-
खर्च ।

सं० पाथोज (पाथस्=पानी, जन्
=पैदा होना) पु० कमल, कँवल,
पद्म ।

सं० पाथोद् (पाथस्=पानी, दा=
देना) पु० बादल, मेघ, अब्र ।

सं० पाथोधर (पाथस्=पानी, धृ=
रखना) पु० बादल, मेघ ।

सं० पाथोधि (पाथस्=पानी, धा=
रखना) पु० समुद्र, सागर, सिन्धु ।

सं० पाथोनिधि (पाथस्=पानी,
निधि=खजाना) पु० समुद्र, सा-
गर, सिन्धु ।

सं० पाद् (पद्=जाना जिससे चलते
हैं) पु० पाँव, पैर, चरण, २ चौथा
भाग, चतुर्थांश, ३ वृक्षकी जड़ ।

प्रा० पाद् (सं० पर्द्, पर्द्=नीचेकी
तरफ़ हवा छोड़ना) पु० फुसकी,
टुसकी, नीचे की हवा, अपशब्द,
बावसरना, गूज ।

सं० पादकटक पु० धूँधरु, कड़ा पैरका ।

सं० पादग्रहण (पाद=पैर, ग्रहण =पकड़ना) पु० चरणस्पर्श, पैर छूना ।

सं० पादचारी } (पाद=पैर, चरू= पादचारिणी } चलना) पु० पैदल, पैरों से चलनेवाला व चलने वाली ।

सं० पादत्राण (पाद=पैर, त्रा=रक्षा करना) पु० जूता, खड़ाऊँ, मोजा पैरके ।

सं० पादधारिणी स्त्री० पैकड़ा, रिकाव घोड़े की ।

सं० पादप (पाद=पैर वा जड़, पा =पीना जो पैर अर्थात् जड़ से पानी खींचते हैं) पु० वृक्ष, पेड़, २ (पाद=पाँव, पा=बचाना) पादुका, पादपीठ ।

सं० पादप्रक्षालन (पाद=पैर, प्रक्षालन=धोना) पु० पाँव धोना ।

सं० पादप्रहार (पाद=पैर, प्रहार =चोट) पु० लातकी मार ।

सं० पादाघ्र्य पूज्यजनों को पैर धोने को जल देना ।

सं० पादसंवाहन भा० पु० पैर दबाना, पैचपी करना, गोड़दबाना ।

सं० पादुका (पाद=पैर) स्त्री० खड़ाऊँ, पाँवड़ी, २ जूता ।

सं० पादोदक (पाद=पैर, उदक=

पानी) पु० देवता अथवा ब्राह्मण के पाँव धोने का पानी, पाद्य ।

सं० पाद्य (पाद=पाँव) पु० पाँव धोने का पानी ।

प्रा० पाधा (सं० उपाध्याय) पु० शिक्षक, गुरु ।

प्रा० पान (सं० पर्ण) पु० पत्ता, २ ताम्बूल ।

सं० पान (पा=पीना) पु० पीना ।

सं० पानपात्र (पान=पीना, पात्र= बरतन) पु० पियाला, गिलास ।

प्रा० पाना } (सं० प्रापण, प्र=बहुत, पावना } आप्=पाना) क्रि० सं० मिलना, लेना, इकट्ठा करना, हासिल करना, बाकी होना, भोग करना, धिलसना, भुगतना, सहना, पकड़ना, धरना, पहुँचना, पास आना ।

सं० पानाहार (पान + आहार) पीना, खाना, खुर्द नोश, अन्न जल ।

प्रा० पानी (सं० पानीय, पा=पीना) पु० जल, नीर, २ बीज, वीर्य, धात, ३ चमक, भड़क, ४ यश, कीर्ति, मान, मर्यादा, नाम ।

प्रा० पानीकरना बोल० लजाना, चपाना, लज्जित करना, २ सहज करना, सुगम करना, आसान करना ।

प्रा० पानी का बुलबुला बोल०
अस्थिर, चञ्चल, यह बोलचाल
अस्थिरता जतलाने के लिये बोला
जाता है ।

प्रा० पानी देना बोल० पितरों को
जल देना, तर्पण करना ।

प्रा० पानी न माँगना बोल० तल-
वार आदि के एकही वार से तुरत
मरजाना ।

प्रा० पानी पड़ना बोल० मेह बर-
सना, पानी बरसना, २ शर्मिन्दा
होना ।

प्रा० पानी पी पी कोसना बोल०
बहुत सरापना, बददुआ देना ।

प्रा० पानी भरना बोल० नीचा
होना, तुच्छ होना, निचाई को
मानलेना, शरमा जाना, वशहोना ।

प्रा० पानी मरना बोल० सूखजाना,
२ लजाना, लाज लगना, किसी
बातका इशारा करना ।

प्रा० पानी में आग लगाना
बोल० जो भगड़ा मिट गया हो
उसको फिर उठाना ।

प्रा० पानीसे पतला करना बोल०
लज्जित करना, लजाना, चपाना,
तुच्छ करना, हकीर करना ।

सं० पान्थ (पथिन्=रस्ता, पथ्=
जाना) क० पु० पथिक, बटोही,
मार्गू, मुसाफिर, राह चलनेवाला,
राही ।

सं० पाप (पा=बचाना अर्थात्
जिससे अपने को बचाना) पु०
अपराध, दोष, पातक, बदी,
बुराई, गुनाह ।

सं० पापजनक (जन्=पैदा करना)
क० पु० पापोत्पादक, पापी, गुन-
हगार ।

प्रा० पापड़ (सं० पर्पट, पर्प=जाना)
पु० उड़द वा मूँग की पतली
रोटी सी चीज ।

प्रा० पापड़ बेलना बोल० बहुत
मिहनत करना अथवा दुखसहनना ।

सं० पापभाक् (पाप + भाक्, भञ्=
सेवा) क० पु० पाप करनेवाला,
अपराधी, गुनहगार ।

सं० पापरूप (पाप=अपराध, रूप=
मूरत) पु० पाप की मूरत, बड़ा
पापी, दुष्ट, आसी, गुनहगार ।

सं० पापात्मा (पाप + आत्मा) पु०
जिसकी आत्मा पापयुक्त हो, जिस
का मन पाप में लगा रहे, पापी,
दुष्ट, कुकर्मी ।

प्रा० पापिनी (पाप) पु० स्त्री०
सं० पापिनी (दुष्टा स्त्री, बुरी स्त्री,
वह स्त्री जिसका मन पाप में लगा
रहे, अपराधिनी ।

सं० पापिष्ठ (पाप) क० पु० पापी,
पापात्मा ।

सं० पापी (पाप) पु० अपराधी, दुष्ट,
पापात्मा, कुकर्मी, पापिष्ठ ।

सं० पामर (पा=तीनों वेद का धर्म (पा, में धातु है पा=बचाना) और मृ=नष्ट होना जिससे वैदिक धर्म नष्ट होता है वा पामन् खुजली अर्थात् दुख, रा=देना) गु० नीच, अधम, दुष्ट, मूढ़ ।

सं० पामा (पा=बचना जिससे) स्त्री० खुजली, खाज, दाद ।

सं० पामारि (पामा=खुजली, अरि=वैरी) पु० गन्धक जिसके लगाने से खुजली मिटजाती है, २ पमार के बीज ।

प्रा० पायँती (सं० पादान्त, पाद + अन्त) स्त्री० खाट के पैर की ओर, पायतल, पैता, पैताना ।

प्रा० पायल (सं० पाद=पाँव) स्त्री० पैरों में पहनने का गहना, पैरी, पायजेब, २ बाँस की सीढ़ी ।

सं० पायस (सं० पयस्=दूध) पु० खीर, जावर ।

प्रा० पाया (सं० पाद, अथवा फा० पाया) पु० खाट वा मेज अथवा कुरसी आदि का पावा ।

प्रा० पायिक } (सं० पादिक वा पायक } पदातिक फा० पैक) पाहक } पु० दूत, पियादा, नट, ध्वजा, पैदल ।

सं० पायी (पा=पीना) क० पु० पीनेवाला ।

सं० पार (पृ वा पार=पूरा होना)

पु० नदी अथवा समुद्र का परला तीर, दूसरी ओर, २ समाप्ति, पूर्णता, ३ अन्त, शेष, नित्य, सं० वा क्रि० वि० आर पार, वार पार, उस ओर, उससे परे, उस तीर ।

सं० पारक (पार + अक) क० पु० कर्मसमाप्तिकर्ता, उतरनेवाला, पार जानेवाला ।

प्रा० पारकरना बोल० पार उतारना, नाँघना, २ पूरा करना, कोई काम पार उतारना, निवाहना, ३ छेदना, बेधना, फोड़ना ।

सं० पारग (पार=अन्त, गम्=जाना) क० पु० समर्थ, पारगन्ता ।

प्रा० पारखी (सं० परीक्षक) क० पु० परखनेवाला, परखैया, जौहरी ।

सं० पारण (पार=काम पूरा होना) पु० व्रत के दूसरे दिन भोजन करना, २ (पृ=भरना) मेघ, बादल ।

सं० पारद (पृ=भरना वा पूरा करना) पु० पारा, २ (पार=पार करना, दा=देना) गु० पार करने वाला, मोक्षकरनेवाला, उद्धार करनेवाला ।

सं० पारदारिक क० पु० पराई स्त्री-गमन करनेवाला, परस्त्रीगामी ।

प्रा० पारना (सं० पारण) पु० व्रत के दूसरे दिन भोजन करना, क्रि०

स० निवेड़ना, पूरा करना ।
 सं० पारभूत (पार=अन्त, भू=भरना) पु० दान, समर्पण ।
 सं० पारमार्थिक क० पु० श्रेष्ठ, योग्य, परोपकारी ।
 सं० पारशव पु० ब्राह्मण से शूद्र की कन्या में पैदा हुआ, परस्त्रीपुत्र, परशुधारी ।
 प्रा० पारस (सं० स्पर्शमणि, स्पर्श=छूना, मणि=रतन) पु० ऐसा पत्थर जिसको कहते हैं कि लोहे के छूने से लोहे का सोना हो जाता है ।
 प्रा० पारस (सं० पारस, अथवा पारसीक) पु० फारस देश, ईरान ।
 प्रा० पारसनाथ (सं० पार्श्वनाथ) पु० जैनियों का तेईसवाँ जिन ।
 प्रा० पारसी (सं० पारसी, अथवा पारसीक) पु० पारस देश का रहनेवाला, ईरानी, २ जरदुश्त का मत माननेवाला, ३ स्त्री० फारसी बोली, ४ तुरकी या अरबी धोड़ा, तुरुक, म्लेच्छ ।
 प्रा० पारा (सं० पार, वा पारद) पु० एक प्रकार की धातु ।
 सं० पारायण (पार=पूर्णता, अय=जाना) पु० पूर्णता, समाप्ति, पुराण का पाठ, सात दिन श्रीमद्भागवत का पाठ सुनाना ।

सं० पारलौकिक पु० परलोक का काम, उक्तवा का काम ।
 सं० पारावत पु० कपोत, कबूतर ।
 सं० पारावार (पार=उस पार, अवार=इस पार) पु० समुद्र, २ नदी के दोनों तीर, ३ वारापार, वार पार, इस उस पार, ४ हद्द, सीमा ।
 सं० पाराशर (पराशर) पु० पराशर ऋषि का बेटा वेदव्यास, २ पराशर के बनाये हुये ग्रन्थ जैसे पराशरस्मृति, भिक्षुसूत्र आदि ।
 सं० पाराशर्य पु० पराशरका पुत्र वेदव्यास ।
 सं० पारिजात (पारी=समुद्र, जन=पैदा होना) पु० देवताओं का वृक्ष, तूवा, देवतरु, सुरद्रुम, २ मूंगा ।
 सं० परिणाह्य (परि=बहुत, नह=सम्बन्ध करना) भा० पु० सम्बन्ध, बन्धन, रिश्तेदारी, विरादराना, निबन्धनता, चौड़ाई ।
 सं० पारितथ्य स्त्री० बेंदी, टिकुली, पु० तिलक, यथार्थ ।
 सं० पारिपन्थिक गु० चोर, ठग, बधिक, लुटेरा ।
 सं० पारितोषिक (परि=बहुत, तुष=प्रसन्न होना, संतुष्ट होना) पु० इनाम, दान, भेंट, प्रतिफल, दायज, दैजा, दक्षिणा ।

सं० पारिन्द्र पु० सिंह, अजगर, सर्प ।
 सं० पारिपात्र { पु० एक पहाड़
 पारियात्र { का नाम जो वि-
 ष्वक्चल की श्रेणी का पश्चिमी
 भाग है और मालवा की सीमा पर
 है, यौतुक, दहेज ।

सं० पारी (पृ=भरना) स्त्री० पानी
 की ठिलिया ।

प्रा० पारी स्त्री० बारी, अवसर,
 उसरी ।

सं० पार्थ (पृथा=कुन्ती) पु० कुन्ती
 के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम ।

सं० पार्थिव (पृथ्वी) गु० पृथ्वीका,
 पु० राजा, २ शिव, पार्थिवी, स्त्री०
 सीता, जानकी ।

सं० पारिपार्ष्विक पु० नद, नदी,
 विदूषक, भाँड़ ।

सं० पारिभाव्य पु० कूट औषध,
 जमानत, जामिनी, अविश्वास,
 अनादरता ।

सं० पारिषद गु० सेवक, सभासद ।
 सं० पार्वण (पर्व + अन, पर्व=पूर्ण
 करना) भा० पु० पर्व अमावस
 आदि में जो हो, उत्सव ।

सं० पार्वती (पर्वत=पहाड़) स्त्री०
 हिमालय की बेटी, शिवरानी,
 दुर्गा ।

सं० पार्व (स्पृश=छूना, वा पशु=
 पसली) पु० पौजर, प्रासा, २
 बगल के नीचे का भाग, ३ पस-

लियों का समूह, गु० पास, नगीच,
 नजदीक, समीप ।

सं० पार्श्ववर्त्ती (पार्श्व=पास, वर्त्ती=
 होने या रहनेवाला, वृत्त=होना या
 रहना) पु० पास रहनेवाला,
 निकटस्थ, समीपवर्त्ती, पास का,
 करीबी ।

प्रा० पाल पु० नाव का बादवान,
 २ छोटा तम्बू, ३ घास और पत्ते
 आदि का तह जिसमें रख कर कच्चे
 आम पकाते हैं, ४ पालना ।

सं० पालक (पाल्=पालना) क०
 पु० पालनेवाला, बचानेवाला,
 रक्षक, मुहाफिज ।

प्रा० पालक (सं० पालक, पाल्=
 बचाना और अङ्क=जाना) पु०
 एक तरह का साग, २ (सं०
 पल्यङ्क) पल्लंग ।

सं० पालकता भा० स्त्री० परब-
 रिश, दयालुता ।

प्रा० पालकी (सं० पालक, वा प-
 ल्यङ्क) स्त्री० एक प्रकार की स-
 बारी, चौपाला, डोली ।

सं० पालन (पाल्=पालना) भा०
 पु० पालना, पोषण, रक्षा, बचाव,
 बचाना ।

प्रा० पालना (सं० पालन) क्ति०
 सं० पोसना, बचाना, रक्षा करना,
 २ पु० हिंदोला, झूलना ।

सं० पालनीय (पाल्+अनीय)

र्म० पु० पालनेयोग्य, रक्षायोग्य ।
 प्रा० पाला (सं० प्रालेय, प्र=बहुत
 आ=चारों ओरसे, ली=पिघलना)
 पु० हिम, बर्फ, ठार, तुषार, २
 (सं० पालन) भरोसा, विश्वास,
 अमानत बचाना, ३ कबड्डी के खेल
 में रेत की मेड़ जो बीच में बनाई
 जाती है, ४ झड़बेरी के पत्ते ।
 प्रा० पालागन (सं० पादलग्न,
 पाद=पैर, लग्न=लगना) पु०
 पाँव का छूना, प्रणाम करना ।
 सं० पालि (पाल्=बचाना) स्त्री०
 मागधी प्राकृतभाषा, मगधदेश की
 मातृभाषा ।
 सं० पालित (पाल्=पालना) र्म०
 पु० रक्षित, बचाया हुआ, पाला
 हुआ ।
 सं० पाली स्त्री० पङ्क्ति, कोण,
 प्रशंसा, कल्पित भोजन, प्रान्त,
 कर्णपत्र, कर्णफूल, सेतु, चिह्न,
 अस्त्रों की धार, अश्रु, क्रोड़, गोद,
 उत्सङ्ग, कनियाँ ।
 प्रा० पाले (सं० पालन=बचाव)
 अधीन, बचाव में, हाथ में में ।
 प्रा० पाले पड़ना बोल० १० रे के
 वश में आजाना, जैसे “आज करउँ
 स्वतः काल हवाले, परेउ कठिन
 शिष्य के पाले” (रामायण) ।
 प्रा० पाव (सं० पाद) पु० चौथाई,
 चौथा भाग, चौथ, चतुर्थांश ।

सं० पावक (पु=पवित्र करना) पु०
 आग, अग्नि, गु० पवित्र ।
 सं० पावन (पू=पवित्र करना) गु०
 पवित्र, पवित्र करनेवाला, स्वच्छ,
 पु० पानी, २ आग, ३ गोबर, ४
 कुशा, ५ घृत, ६ स्त्री, ७ गङ्गा, ८ गौर ।
 प्रा० पावला (पाव) पु० चार
 आना, मुद्रा अर्थात् सिके का
 चौथा भाग ।
 प्रा० पावस (सं० प्रावृष्, प्रा=बहुत,
 वृष्=बरसना) पु० वर्षाकाल,
 वर्षा ऋतु, बरसात ।
 सं० पाश (पाश्=बाँधना जिससे)
 स्त्री० फन्दा, फाँसी, जानवरों के
 बाँधने की डोरी ।
 सं० पाशक क० पु० पाँसा, अस्त्र,
 जल्लाद, फाँसी ।
 प्रा० पाशा (सं० पाशक, पश्=
 पासा) छूना वा जाना) पु०
 चौपड़ खेलने की एक छः पहलू
 चीज, अस्त्र ।
 सं० पाशित र्म० पु० बन्द, बँधा
 हुआ ।
 सं० पाशी क० पु० पाशधर, जल्लाद,
 वरुण, व्याध, यमराज ।
 प्रा० पाषण्ड (सं० पाषण्ड्य, पाषण्ड)
 पु० कपट, छल, द्विद्र, फरेब ।
 सं० पाषण्ड (पा, वेदका धर्म,
 पाषण्ड्य) प=बचाना और
 पाषण्ड्य) षण्ड=निष्फल क-

रना, वा खण्ड=खण्डन करना, अर्थात् वेदके धर्मको निष्फल करनेवाला, वा खण्डन करने वाला) पु० नास्तिक, धर्मको नहीं माननेवाला, कपटी, झूठी, ठग, दम्भी ।

सं० पाषाण (पिष्=चूर करना) पु० पत्थर ।

सं० पाषाणदारण (ङ=फाड़ना) ए० पु० पत्थर टाँकनेकी टाँकी, बज्र ।

प्रा० पास (सं० पाश) स्त्री० फाँसी, फन्दा ।

प्रा० पास (सं० पार्श्व) नित्य सं० नगीच, समीप, निकट ।

प्रा० पासी (सं० पाश) स्त्री० फन्दा, फाँसी, २ रस्सी जिससे घोड़े के पैर बाँधे जाते हैं, ३ (सं० पाशी) पु० बहेलिया, चिड़ीमार ।

प्रा० पासी (सं० पासी, पाश) पु० एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा ताड़ी बेचने का है और जब वे ताड़ पर चढ़ते हैं तब अपने पैरोंके चौफेर रस्सी बाँधते हैं ।

प्रा० पाहन { (सं० पाषाण) पु० पाहान { पत्थर, पाथर ।

सं० पाहि (पा=बचना) क्रि० सं० बचाओ, रक्षा करो । जैसे “शूलेन

पाहिनो देवि ” अहो देवि ! हमारी त्रिशूल से रक्षा करो ।

प्रा० पाहीं नित्य सं० पास, निकट, समीप ।

प्रा० पाहुन { (सं० प्रागुण, प्र= पाहुना { बहुत, आ=चारों ओर, गुण=फिरना) पु० महमान, अतिथि ।

प्रा० पिउ { (सं० प्रिय) गु० प्यारा पिऊ { पु० पति, स्त्रीमी, प्रिय-तम, भर्ता ।

सं० पिक (पि ऐसा शब्द, कै=बोलना वा अपि बार बार, कै=शब्द करना, यहाँ भाँगुरि के मत में अपिके ‘अ’ का लोप होगया है) स्त्री० कोयल, कोकिल ।

प्रा० पिकचयनी { (सं० पिक=को- पिकबैनी { यल, वाणी= बोली) स्त्री० गु० जिस स्त्रीकी कोयल सी बोली हो, मीठी बोलने वाली स्त्री ।

प्रा० पिघलना (सं० प्रगलन, प्र= बहुत, गल्=टपकना) क्रि० अ० गा, टिघलना, पानी होना ।

सं० पेंङ्ग (पिजि=रँगना) गु० पीला, कपिल, पीतवर्ण ।

सं० पिङ्गल (पिङ्ग=पीला रङ्ग, ला= लेना) गु० पीला, पीतवर्ण, रदीया

की लौ, सारङ्ग, पु० छन्द शास्त्र
का कर्ता, छन्दग्रन्थ, कपिल
वर्ण, चिमगादर, सूर्य ।

प्रा० पिंगूरा पु० हिंडोला, भूला ।

प्रा० पिचकारी स्त्री० पिचिका, दम-
कला ।

सं० पिचिण्डिल क० पु० तोंदवाला,
स्थूल, बड़े पेटवाला ।

सं० पिचु पु० रुई, कपास, कर्ष,
नाम असुर, शस्यभेद, कुष्ठभेद ।

सं० पिचुमन्द (पिचु=कुष्ठ, मन्द=
जड़ करना) नीब वृक्ष ।

सं० पिच्छ पु० पूँछ, मोरपंख, मुकुट,
मोर, हिंसा, कपास वृक्ष, केला,
सेमर, भात का माँड़, घोड़े के पैर
का रोग ।

प्रा० पिछलना क्रि० अ० फिसलना,
खिसलना ।

प्रा० पिछलपाई स्त्री० चुड़ैल, भूतनी ।

प्रा० पिछला (पीछा) गु० पीछेका,
पिछाड़ी का, नया ।

प्रा० पिछवाड़ा पु० { (पीछे)
पिछवाड़ी स्त्री० } पीछे का
भाग, पीछा ।

प्रा० पिछेत (पीछा) पु० घर का
पिछला भाग ।

प्रा० पिछौरा पु० { दोहर, चहर,
पिछोरी स्त्री० } दुपट्टा, ओढ़नी ।

सं० पिञ्जन पु० मारण, रुई का
ओटना, रुईधुनना, धनुही ।

सं० पिञ्जर (पिजि=शब्दकरना, वा
रहना जिसमें पखेरू शब्द करते हैं
वा रहते हैं, वा पिजि=रँगना) पु०
पिंजरा, पखेरूओं का घर, २ पीला
रङ्ग, लाल और पीला मिला हुआ
रङ्ग, भूरा रङ्ग ।

प्रा० पिञ्जरा (सं० पिंजर) पु०
पखेरूओं के रहने का काठ का घर,
पिंजरा होना, बोल० दुबला
होना ।

सं० पिञ्जल गु० अतिसघन, मिला
हुआ पु० बिजायठ, कङ्कण, जौ-
शन, विष्टर अर्थात् कुशा, व्याकुल
सेना ।

प्रा० पिञ्जियारा (पींजना) पु०
धुनियाँ, रुई पींजनेवाला, रुई
धुननेवाला ।

सं० पिञ्जूल पु० वर्तिका, बची,
मशअल ।

सं० पिञ्जूष पु० मोम, संदूक, पि-
टारा, पिटारी, लीभी, खड़ी ।

सं० पिट पु० संदूक, टोकरा, पिटारा,
शोर, हल्ला, फोड़ा ।

प्रा० पिटना (सं० पिट्=मारना)
क्रि० अ० मारखाना ।

प्रा० पिटारा (सं० पेटा वा पेटिका,
पिट्=इकट्ठा करना) पु० टोकरा,
मञ्जूषा, कपड़े रखने का झोला ।

प्रा० पिटारी (सं० पिटक, पिट्=
इकट्ठा करना) स्त्री० कपड़े रखने

की चमड़े की मञ्जूषा, छोटा पिटारा,
अं० पिटीशन अर्जी ।
सं० पिण्ड (पिण्ड=इकट्ठा करना)
पु० पितरों के लिये अन्न आदि
का पिण्डा, २ देह, शरीर, ३ गोल
वस्तु, गोला ।
प्रा० पिण्डछुड़ाना बोल० वचना,
भागना, पीछा छुड़ाना, टलना ।
प्रा० पिण्डली (सं० पिण्ड) स्त्री०
पिण्डरी, फिल्ली, टँगड़ी ।
प्रा० पिण्डा (सं० पिण्ड) पु०
शरीर, देह, २ मिट्टी आदि का
ढेला, ३ डोरी का गोला अथवा
गेंदा, ४ पितरों के लिये अन्न आदि
का पिण्डा ।
प्रा० पिण्डारा (सं० पिण्ड, अन्न
का पिण्डा, और फा० आर, लाने
वाला) पु० लुटेरों की एक जात,
लुटेरा, ठग, डकैत ।
सं० पिण्डित भ्मि० पु० राशिकृत,
इकट्ठा किया हुआ ।
सं० पिण्डक पु० पिण्डकी, पिडुकी,
पेडुकी नामक पक्षी ।
प्रा० पितर (सं० पितृ) पु० पुरुषा,
पुर्खा, पूर्वपुरुष, पूर्वजलोग ।
प्रा० पितलाना (पीतल) क्रि०
अ० ताँबे-पीतल के बरतन में रखने
से खट्टी चीज का बिगड़ना ।
सं० पिता (पा=बचाना) पु०
रक्षक, बाप ।

सं० पितामह (पिता) पु० दादा,
आजा, २ ब्रह्मा, पितामही=दादी ।
सं० पितृकर्म (पितृ=पितर, कर्म
पितृकार्य) वा कार्य=काम)
पु० श्राद्ध पिण्डदान आदि ।
सं० पितृकानन पु० पितृवन, श्मशान,
गयाक्षेत्र, पितृलोक ।
सं० पितृगण पु० पितृसमूह, प्रजा-
पतिपुत्राः, यथा मेरीचि, अग्नि,
भृगु, अङ्गिरा, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ,
अग्नीध्र, अग्निष्वात्ता ।
सं० पितृगृह धि० पितृस्थान, पितृ-
लोक ।
सं० पितृतिथि स्त्री० अमावास्या,
श्राद्ध दिन ।
सं० पितृदान पु० पिण्डदान ।
सं० पितृपक्ष (पितृ=पुर्खा, पक्ष=
पखारा) पु० श्राद्धपक्ष, आ-
श्विन का अँधेरा पख ।
सं० पितृप्रसू स्त्री० पिता की माता ।
सं० पितृव्य पु० चचा ।
सं० पितृष्वसा स्त्री० फूफी, पिता
की बहिन ।
सं० पित्त (अपि, दो=काटना, यहाँ
अपि के 'अ' का लोप और 'द'
को 'त' हुआ 'है') पु० शरीर की
एक प्रकार की धातु ।
प्रा० पिस्ता (सं० पित्त) पु० पित्त,
पित्तकी धैली, पिताघर, २ क्रीडा ।
प्रा० पिस्तामिकालना बोल० दण्ड

देना, ताड़ना करना, सजा देना ।
 प्रा० पित्तामारना बोल० क्रोध
 घटना, क्रोध ठण्डा पड़ना ।
 प्रा० पित्तपापड़ा (सं० पर्पट, पर्पे=
 जाना) पु० एक औषध का नाम ।
 प्रा० पिट्ठी स्त्री० एक छोटा सा
 पखेरू, फुदकी ।
 सं० पिधायक क० पु० पिहना, ढकना ।
 सं० पिधान भा० पु० पिहना, ढकना ।
 प्रा० पिनकी स्त्री० पीनक, डैघाढट,
 अफीम का नशा ।
 सं० पिनाक (पा=बचाना सृष्टि का)
 पु० शिव का धनुष, २ शिव का
 त्रिशूल ।
 प्रा० पित्री स्त्री० चँवल का लड्डू ।
 सं० पिनाकिन् क० पु० प्रमथाधिप,
 शिव ।
 सं० पिपासातुर (पिपासा + आतुर)
 पु० बहुत प्यासा ।
 सं० पिपासा (सं० पा=पीना)
 स्त्री० पीनेकी इच्छा, प्यास, तृषा ।
 सं० पिपीलिका (अपि, पील्=
 रोकना) स्त्री० लाल चिउँटी ।
 सं० पिप्पल (पा=बचाना) पु०
 पीपल, पीपर, एक वृक्ष का नाम ।
 प्रा० पिय (सं० प्रिय) पु० स्वामी,
 पिया } प्रियतम, भर्ता, गु०
 प्यी } प्यारा ।

प्रा० पियार (सं० प्रेम त्रु प्रीति)
 पु० प्यार, प्रेम, प्रीति, नेह, ब्रह्म,
 दुलार, मुहब्बत ।
 प्रा० पियारा (सं० प्रिय) पु० पु०
 प्रेमी, सनेही ।
 प्रा० पियारी (सं० प्रिया) पु० स्त्री०
 प्यारी, प्रिया, २ मनोहरा ।
 प्रा० पियास (सं० पिपासा) स्त्री०
 तृषा, तृष्णा, पीनेकी इच्छा, प्यास ।
 प्रा० पियासा (सं० पिपासित, पा=
 पीना) पु० प्यासा, तृषावन्त ।
 प्रा० पिहाना (सं० पीड़न, पिह्=
 दुःख देना) क्रि० अ० दुखना,
 दर्द करना, पीड़ा होना ।
 प्रा० पिरिते (सं० प्रियतम) पु० प्यारा
 जैसे “हेरगुनन्दन प्राणपिरिते +
 तुम बिनु जियत बहुत दिन बीते” ।
 (इति रामायणम्) ।
 प्रा० पिरोजा (सं० पेरोज, और
 फारसी में पीरोजा अथवा फी-
 रोजा) पु० जंगाली रंग की मणि ।
 प्रा० पिरौना क्रि० स० मूँथना, सूई
 में तागा डालना, लड़ियाना ।
 प्रा० पिलई (सं० लीहा, लिह्=
 जाना) स्त्री० तापतिस्त्री, पिलही ।
 प्रा० पिल्लना (सं० पेलन, पिल्=
 प्रेरणा करना, या फेंकना वा पेल्=
 जाना) क्रि० स० धावा मारना,

ठेलना, धकेलना, जोरकरना, क्रि०
 अ० कुचल जाना, पिसजाना, चूर
 होना, लड़ने को आगे बढ़ना ।
 प्रा० पिलपिला गु० नर्म, पिच-
 पिचा, कोमल, ढीला ।
 प्रा० पिलुवा { (सं० पीलु, पील्=
 पिल्लू) रोकना) पु० कीड़ा ।
 प्रा० पिल्ला (सं० पिल्ल, चुँधला)
 पु० कुत्ते का बच्चा ।
 सं० पिशाच (पिशित=मांस, अश्=
 खाना वा पिशित=मांस, आ=
 चारों ओर से, चम्=खाना) पु०
 भूत, भूत, शैतान ।
 सं० पिशित (पिशि=टुकड़े करना)
 पु० मांस ।
 सं० पिशुन (पिशु=टुकड़े करना) पु०
 चुगल, निन्दक, दुष्ट, नीच, भे-
 दिया, जासूस ।
 प्रा० पिसान (सं० पिष्ट, पिप्=
 पीसना) पु० आटा, पिष्टक, र्म०
 पु० पीठी, चौरेठा, पित्री ।
 सं० पिहित (अपि + धा=धारण
 करना) र्म० पु० गुप्त, आच्छा-
 दित, छिपा हुआ ।
 प्रा० पीछा (सं० पश्चात्) पु०
 पिछला भाग, पिछवाड़ा, २
 रगेदना, खदेरना, भगादेना ।
 प्रा० पीछाकरना बोल० खदेरना,
 रगेदना, पीछे पीछे जाना ।
 प्रा० पीछाफेरना बोल० लौंटा

देना, पीछा दे देना, फेर लेना ।
 प्रा० पीछे (सं० पश्चात्) क्रि० वि०
 नित्य सं० पीठ पीछे, परे, इसके
 बाद, अन्त में, निदान ।
 प्रा० पीछेडालना बोल० पीछे
 छोड़ना, आगे निकलजाना, आगे
 बढ़ जाना ।
 प्रा० पीछेपड़ना बोल० पीछे दौ-
 डना, दवाना, बार बार माँगना,
 सताना, खेड़ना, खिझाना, दुख
 देना, २ पीछे रहजाना ।
 प्रा० पीछेलगना बोल० पीछे
 जाना, साथ होना, साथ लगना,
 लगा रहना ।
 प्रा० पीजना क्रि० स० रूई धुनना,
 रूई साफ करना ।
 प्रा० पीटना (सं० पिट्=पीटना, वा
 पीड्=दुख देना) क्रि० स० मारना,
 कूटना, ठोंकना, खटखटाना, चूर
 चूर करना, छाती पीटना, विलाप
 करना, रोना, पछतावा करना,
 दुख करना ।
 प्रा० पीठ (सं० पृष्ठ) स्त्री० पिछाड़ी
 का अङ्ग ।
 प्रा० पीठ के पीछे डाललेना बोल०
 बचाना, पक्ष करना, रक्षा करना ।
 प्रा० पीठ के पीछे पड़ना बोल०
 शरण लेना, पनाह लेना ।
 प्रा० पीठ ठोंकना बोल० ढाड़स
 देना, साहस देना, हिम्मत बँधाना ।

प्रा० पीठ देना बोल० भागजाना,
फिरना, हटना, टलना, २ अप-
सन्न होकर फिरजाना ।

प्रा० पीठपर हाथ फेरना बोल०
पीठ थपथपाना, शावाशी देना,
ढाँस देना ।

प्रा० पीठफेरना बोल० चलाजाना,
भागना, हटना ।

प्रा० पीठलगना पीठ पर घाव
होना (जैसे घोड़े के), २ घोड़े पर
चढ़ना ।

सं० पीठ (पिठ=मारना, ठोकना)
पु० आसन, पीड़ा ।

प्रा० पीठी (सं० पिष्टिका, पिष्=
चूर करना) स्त्री० पिसी हुई
उड़द की दाल ।

प्रा० पीड़ (सं० पीड़ा) स्त्री० बा-
लक के पैदा होने के समय का
दुःख जो लुगाई को होता है ।

सं० पीड़ा (पीड़=दुःख देना) स्त्री०
दुःख, दर्द, व्यथा, वेदना ।

सं० पीड़ित (पीड़=दुःख देना) क०
पु० दुःखित, दुःखी, बीमार ।

सं० पीड्यमान र्भ्य० पु० पीड़ायुक्त,
पीड़ाविशिष्ट ।

प्रा० पीड़ा (सं० पीठ) पु० पटरा,
मोढ़ा, मचिया ।

प्रा० पीड़ी (सं० पीठिका) स्त्री०
मचिया, २ वंशावली, वंश की
परम्परा ।

सं० पीत (पा=पीना अर्थात् आँखों
से दिखाई देना) गु० पीला, पु०
पीला रङ्ग, पिया हुआ, पानकृत ।

प्रा० पीत (सं० प्रीति) स्त्री० प्यार,
प्रीति } प्रेम, नेह, स्नेह, ब्योह ।

प्रा० पीतम (सं० प्रियतम) गु०
बहुत प्यारा, पु० स्वामी, भर्ता ।

प्रा० पीतल (सं० पित्तल वा पी-
तलका, पीत=पीना, ला=लेना)
पु० एक प्रकार की पीली धातु ।

सं० पीताम्बर (पीत=पीला, अम्बर
=कपड़ा) पु० पीला रेशमी कपड़ा, २
जिसके कपड़े पीलेहों, ३ श्रीकृष्ण ।

सं० पीन (पै वा प्याय=बढ़ना,
मोटा होना) गु० मोटा, स्थूल, पुष्ट ।

प्रा० पीनरु स्त्री० अफीम के नशे
से ऊँचाई ।

प्रा० पीनस पु० पालकी, रोगविशेष ।

प्रा० पीनसवार गु० पीनसरोगवाला
जिसके नाक में कीड़े पड़गये हों ।

प्रा० पीना (सं० पान) क्रि० स० पान
करना, २ तमाकू का धूआँखीचना ।

प्रा० पीजाना पु० पीना, पीलेना,
२ सोखना, ३ क्रोध को पीना मारना,
चुपरहना, ४ उत्तर देने से रुकना ।

प्रा० पीपल (सं० पिप्पल) पु० एक
वृक्ष का नाम जिसको हिन्दू पवित्र
मानते हैं, २ (सं० पिप्पली, पा=
बचाना) स्त्री० एक तरह का गर्म
मसाला ।

प्रा० पीपलामूल (सं० पिप्पलीमूल)

पु० पीपल अथवा पिप्पली की जड़।

सं० पीयूष } (पीयू=पीना वा
पेयूष } तृप्त होना) पु० अमृत,

अमी, सुधा, आवहयांत, २ दूध।

प्रा० पीर (सं० पीडा) स्त्री० पीड़,
दर्द, दुःख, व्यथा, वेदना।

प्रा० पीरा } (सं० पीत) गु० पीत
पीला } वर्ण।

प्रा० पीलाम (यह शब्द चीनी है)
बोल० सांठिन, एकतरह का रे-
शमी कपड़ा।

प्रा० पीसना (सं० पेषण, पिष्=
पीसना) क्रि० सं० चूर चूर करना,
बुकनी करना, चूर्ण करना, आटा
करना, दलना, चकनाचूर करना,
२ कड़कड़ाना, (जैसे दाँत
पीसना)।

प्रा० पीहर पु० स्त्री के बाप का घर,
नैहर, मैका।

सं० पुंलिङ्ग } (पुम्=पुरुष, लिङ्ग
पुंलिङ्ग } =चिह्न या निशान)

पु० पुरुषचिह्न, पुरुषत्व, २ पुरुष
का वाची शब्द।

प्रा० पुकार स्त्री० हाँक, गोहार, डाक,
चिल्लाना, चिल्लाहट।

प्रा० पुकारना क्रि० सं० हाँक
मारना, चिल्लाना, बुलाना।

प्रा० पुखराज पु० एक रत्न का नाम।

सं० पुङ्ग पु० सुपारी, पूगीफल।

सं० पुङ्गव (पुम्=पुरुष, गो=गाय)

पु० बैल, वृषभ, और जब यह किसी
दूसरे पद के पीछे आवे तब इसका
अर्थ होता है श्रेष्ठ, उत्तम—जैसे नर-
पुङ्गव=मनुष्यों में श्रेष्ठ, नरप्रधान।

प्रा० पुङ्गीफल } (सं० पूगफल, पू-
पूगीफल } =पवित्र होना) पु०
सुपारी, डली।

प्रा० पुजना (सं० पूज=भरना) क्रि०
अ० पूरा होना, २ प्रतिष्ठापना।

प्रा० पुजवाना } (सं० पूज=पूजना)
पुजाना } क्रि० सं० पूजा
कराना, (सं० पूर्ण) पु० पूरा
कराना, भराना।

प्रा० पुजापा (सं० पूजा) पु०
पूजा की सामग्री।

सं० पुञ्ज (पुम्=पुरुष, जी=जीतना
वा जन्म=पैदा होना अर्थात् जो पुरुषों
से इकट्ठा किया जाता है) पु० ढेर,
समूह, राशि, थोक, जत्था।

सं० पुट (पुट्=मिलना) पु० दोना,
२ मिलाव, मिलना, ३ ढकना।

सं० पुटक पु० दोना, पत्र।

सं० पुटकिनी स्त्री० पत्थिनी, दुनिया।

सं० पुटित क० पु० युक्त, शामिल।

प्रा० पुट्टा पु० जानवर का चूतड़, पूठ।

प्रा० पुड़िया (सं० पुटी, पुट्=मिलना)
स्त्री० कागज की छोटी सी गोंठ।

सं० पुण्डरीक (पुडि=मसेलना,
मलना) पु० कमल, श्वेतकमल,

२ अग्निकोण के हाथी का नाम, ३ बाघ, ४ एक प्रकार का साँप, ५ एक प्रकार का कोढ़, ६ सफेद छाता।
सं० पुण्डरीकाक्ष (पुण्डरीक=कमल, अक्ष=आँख) पु० विष्णु, जिस की आँखें कमल सी हों।

सं० पुण्य (पू=पवित्र होना) भा० पु० पवित्र काम, सुकृत काम, धर्म, गु० पवित्र, शुद्ध, पावन, २ सुन्दर, ३ सुगन्धित।

सं० पुण्यकृत् क० पु० धार्मिक, सुकृती।

सं० पुण्यजनक क० पु० पुण्योत्पादक, पुण्यकर्ता।

सं० पुण्यभूमि (पुण्य=पवित्र, भूमि=धरती) स्त्री० पवित्र धरती, आर्यावर्त, अन्तर्वेद।

सं० पुण्यवान् (पुण्य=धर्म, वत्=वाला) गु० धर्मात्मा, धार्मिक।

सं० पुण्यात्मा (पुण्य=पवित्र, आत्मा=मन, जिसकी आत्मा धर्म में लगी हो) गु० पुण्यवान्, धर्मात्मा, पवित्रात्मा।

प्रा० पुतला } (सं० पुत्तल) पु० पुतला } मूर्ति, काठ की बनी हुई मूर्ति।

प्रा० पुतली } (सं० पुत्तली) स्त्री० पुतली } आँख का तारा, २ काठ की मूर्ति।

मल्लिका।

सं० पुत्र (पुत्=एक नरक का नाम, त्रै=बचाना, जो पुत्र नाम नरक से अपने बाप को बचावे या पवित्र करे) पु० बेटा।

सं० पुत्रिका } (पुत्र) स्त्री० बेटा, पुत्री } लड़की, कन्या, २ गुड़िया।

प्रा० पुन } (सं० पुनर्) समुच्च० पुनि } फिर, बहुरि, पीछे।

सं० पुनःपुना (पुनर्=बारबार, पू=पवित्र करना) स्त्री० पुनपुन नदी जो पटने से पाँच कोस गया के रास्ते पर है, “ कीकटेषु गया पुण्या, नदी पुण्या पुनःपुना ” (वायुपुराण) अर्थ—कीकट अर्थात् मगध देश में गया और पुनपुन नदी पवित्र हैं।

सं० पुनःपुनर् अव्य० बारम्बार, फिर फिर।

सं० पुनर् अव्य० प्रथम, निश्चय, अधिकार, भेद, पक्षान्तर, फिर फिर, और।

सं० पुनरागमन (पुनः + आगमन) भा० पु० फिर आना, लौटना।

सं० पुनरुक्ति (पुनर्=फिर, उक्ति=कहना) स्त्री० फिर कहना, दो बार कहना।

सं० पुनर्जन्म (पुनर्=फिर, जन्म=

सं० पुनर्भव पु० नख, नहँ, पुनर्जन्म,
दूसरी पैदायश ।

सं० पुनर्वसु (पुनर=फिर, वसु=
रहना) पु० सातवाँ नक्षत्र, गन्धर्व,
मुनिभेद ।

प्रा० पुनीत (सं० पूत, पू=पवित्र
होना) गु० पवित्र, शुद्ध, निर्मल,
स्वच्छ ।

सं० पुमान् क० पु० पुरुष, आदमी,
मनुष्य ।

सं० पुर (पुर=आगे जाना वा पृ=
भरना) पु० नगर, शहर, २ घर,
३ देह, ४ एक राक्षस का नाम ।

सं० पुरजन क० पु० पुर के मनुष्य ।

सं० पुरञ्जन पु० जीव जैसे (पुर-
ञ्जनोपाख्यान) ।

सं० पुरःसर (पुरस्=आगे, सृ=
जाना) गु० अगुवा, अग्रगामी,
पेशवा ।

सं० पुरट (पुर=आगे जाना) पु०
सोना, कञ्चन ।

सं० पुरतः अव्य० अग्रे, आगे, पेश ।

सं० पुरन्दर (पुर=नगर, दृ=फा-
ड़ना) क० पु० इन्द्र जो राक्षसों
के नगरों को नाश करता है, २
चौर ।

सं० पुरन्ध्री स्त्री० कुटुम्बिनी, भिन्न ।

सं० पुरारि (पुर=दैत्य, अरि=शत्रु)
पु० महादेव, शिव ।

सं० पुरवासी (पुर=नगर, वासी=

रहनेवाला) पु० शहर का रहने
वाला, नगरनिवासी ।

सं० पुरस्कार (पुरस्=आगे, कृ=क-
रना) पु० आदर, सत्कार, पूजा,
दान, फल, इनाम, बदला ।

सं० पुरस्तात् अव्य० आगे, अग्रे,
पेशतर, पूर्व, पूर्व में ।

प्रा० पुरा (सं० पुर) पु० गाँव ।

सं० पुरा अव्य० प्राचीन, पुराना,
पुराण, निकट, अतीत, भावी,
पूर्व समय, पिछला वक्त ।

सं० पुराकृत (पुरा=पहले, कृत=
किया) र्म्य० पु० पहले का किया
हुआ, पूर्वजन्म ।

सं० पुराण (पुरा=पुराना, पुर=
आगे जाना अर्थात् जिसमें पुराने
समय की बातें हों, अथवा जो
पुराने समय में ७ ० ०) पु० वे
ग्रन्थ जिसमें से बहुतों को व्यास
जी ने बनाये अथवा इकट्ठे किये,
पुराण सब पद्य में लिखे हुए हैं
और उनको हिन्दू पवित्र मानते हैं,
हर एक पुराण में विशेष करके इन
पाँच बातों का वर्णन है जैसे—

“सर्गश्च प्रतिसर्गश्च”

“वंशो मन्वन्तराणि च”

“वंशानुचरितं चैव”

“पुराणं पञ्चलक्षणम्”

अर्थात् १ संसार की उत्पत्ति, २
प्रलय और प्रलय के पीछे फिर

संसार की उत्पत्ति, ३ देवता और शूरवीरों की वंशावली, ४ मनुओं का राज, और ५ उनके वंश के लोगों का व्यवहार और चलन, पुराण अठारह हैं । ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ ब्रह्माण्डपुराण, ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण, ६ गरुडपुराण, ७ ब्रह्मवैवर्तपुराण, ८ शिवपुराण, ९ लिङ्गपुराण, १० नारदपुराण, ११ स्कन्दपुराण, १२ मार्कण्डेयपुराण, १३ भविष्यत्-पुराण, १४ मत्स्यपुराण, १५ वराह-पुराण, १६ कूर्मपुराण, १७ वामन-पुराण, १८ श्रीमद्भागवत कीण । इन सब पुराणों में चारला... लोक गिने गये हैं और अठारह उपपुराण भी हैं, प्राचीन, जीव गु० पुराणा, पहले का, सबसे पहला, बूढ़ा, ८० कौड़ी की संख्या, मूल्य ।

सं० पुराणपुरुष (पुराण=पुराणा वा सबसे पहला, पुरुष=मनुष्य) पु० विष्णु, भगवान्, २ बूढ़ा आदमी ।

सं० पुरातन (पुरा=पुराणा) गु० पुराणा, प्राचीन, अगले समय का ।

प्रा० पुरातम (सं० पुरातन) गु० पुराणा, कदीम, प्राचीन ।

प्रा० पुराणा (सं० पुराण) बोल० अगले समय का, प्राचीन, पुरातन, बोदा, बहुत दिन का, बूढ़ा ।

प्रा० पुराणा (सं० पूर=पूरा करना) क्रि० सं० भरदेना, भरना, पूरा करना ।

सं० पुरारानि (पुर=एक राक्षस पुरारि) का नाम, आराति वा अरि=वैरी) पु० शिव, महादेव जिन्होंने पुर नाम दैत्यको मारा था ।

सं० पुरी (पुर) स्त्री० नगरी ।

सं० पुरीष (पृ=भरना) विष्ठा, गूह, मल ।

सं० पुरु (पृ=भरना) पु० एक चन्द्रवंशी राजा का नाम ।

प्रा० पुरुखा (सं० पुरुष) पु० पुरुखा } बड़े, बापदादे, दादे पुर्वा } परदादे, पूर्वपुरुष ।

सं० पुरुष (पुर=आगे जाना) पु० मनुष्य, नर, परमेश्वर, २ पुरुखा ।

सं० पुरुषसिंह (पुरुष + सिंह) पु० पुरुषों में सिंह, श्रेष्ठ मनुष्य ।

सं० पुरुषार्थ (पुरुष=मनुष्य, अर्थ=प्रयोजन) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, २ बल, जोर, वीरता, साहस, पराक्रम, परोपकार ।

सं० पुरुह (गु० प्राचीन, बहुल, पुरुह) बहुत, अधिक ।

सं० पुरोगम (पुरस्=आगे, गम्=जाना) गु० श्रेष्ठ, अग्रगामी, पेशवा ।

सं० पुरुषोत्तम (पुरुष=मनुष्य, उत्तम=श्रेष्ठ) पु० विष्णु, नारायण, २ उत्तममनुष्य ।

सं० पुरोडाश (पुरस्=आगे, दाश= देना) पु० होम की सामग्री वी आदि हविस्, खीर ।

सं० पुरोधा { (पुरस्=आगे, धा= पुरोहित) रवना) पु० कुलगुरु, उपाध्याय ।

प्रा० पुर्वा { (सं० पूर्ववायु) स्त्री० पुर्वैया { पूर्व की हवा ।

प्रा० पुर्सा (सं० पौरुष) गु० मनुष्य की उँचाई के बराबर, पु० मनुष्य के ढील की उँचाई के बराबर विस्तार, चार हाथ का नाप ।

सं० पुल (पुल=ऊँचा होना) पु० सेतु, बन्ध, बाँध, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० पुलक (पुल=बढ़ना वा ऊँचा वा खड़ा होना) पु० मारे खुशी के गोवाँ खड़ा होना, रोमाञ्चित होना, प्रसन्न होना, रोमाञ्च, गजभोजन, हरताल, गड़हा, तुच्छधान्य ।

सं० पुलकित (पुल=बढ़ना वा ऊँचा होना) र्म० पु० रोमाञ्चित, हर्षित, आनन्दित ।

सं० पुलस्ति { (पुल=बड़ा होना) पुलस्त्य { पु० ब्रह्मा का बेटा, रावण का दादा, सप्तऋषियों में का एक ऋषि ।

सं० पुलिन (पुल=ऊँचा होना) पु० नदी के बीच में बालू का टापू, तट, किनारा ।

सं० पुलिन्द पु० भिन्न, निषाद,

शबर, म्लेच्छ ।

प्रा० पुलिन्दा पु० पार्सल, गठरी, गाठिया, गाँठ ।

सं० पुलोमजा (पुलोमा=असुरभेद, जा=उससे पैदा) स्त्री० इन्द्रप्रिया, शची, इन्द्राणी ।

प्रा० पुवाल (सं० पलाल, पल्= जाना वा बचना) पु० पुवाल, खर, तिनका, बिचाली, डांठी, पयाल ।

सं० पुषा स्त्री० पुष्टि, पालन ।

सं० पुष्कर (पुष्=बढ़ना वा पालना) पु० कैवल, २ आकाश, ३ पानी, ४ एक तीर्थ का नाम जो अजमेर से तीन कोस पर है, ५ सातद्वीपों में ६, एक द्वीप, ६ पोखरा, ७ तालाब, ८ कमल, ९ हाथी की सूँड़, १० ढोल, ११ सर्प, १२ तूर्य-बाजा, तुरही ।

सं० पुष्करिणी स्त्री० तलैया, हथिनी, पुष्करमूल, पुष्करमूल, पद्मसमूह ।

सं० पुष्कल (पुष्=अधिक होना) गु० बहुत, ढेर, तृप्त, सम्पूर्ण, तुष्ट, २ श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, मेरु-पर्वत, कस्तूरी ।

सं० पुष्ट (पुष्=पालना वा बढ़ना) गु० पाला हुआ, २ मोटा ताजा ।

सं० पुष्टि स्त्री० पालना, पोषण, वृद्धि, असगन्ध औषध, मातृकाभेद विवाहों में सोलह मातृका पूजी

जाती हैं उनमें की एक ।
 सं० पुष्टाङ्ग (पुष्ट=मोटा, अङ्ग=शरीर) गु० मोटा ताजा, जिसका शरीर पुष्ट हो ।
 सं० पुष्प (पुष्प=फूलना, विकसना) पु० फूल, कुसुम, सुमन, २ स्त्री का रजस्, ३ कुबेर का विमान, ४ एक प्रकार का आँखों का रोग ।
 सं० पुष्पक (पुष्प=फूल, अर्थात् फूल सा हलका) पु० कुबेर का विमान, कङ्कणा, रसोत, लोहपात्र, अंगीठी, लोहा, काँसाधातु ।
 सं० पुष्पकरण्डक पु० पुष्पचयन-पात्र, बाँसकी बनी हुई फूल चुन कर रखने की पिटारी; फूलों की पिटारी ।
 सं० पुष्पचाप पु० कामदेव ।
 सं० पुष्पदन्त पु० वायुदिशा का दिग्गज, विद्याधर, गन्धर्व ।
 सं० पुष्पपुर पु० कुसुमपुर, पाटलि-पुत्र, पटना ।
 सं० पुष्पमास पु० चैत्र ।
 सं० पुष्परस (पुष्प + रस) पु० फूलों का रस, मकरन्द, मधु ।
 सं० पुष्पलिट् (पुष्प=फूल, लिट्=स्वादलेना) क० पु० भ्रमर, भौरा ।
 सं० पुष्पवाटी (पुष्प=फूल, वाटी=बाड़ी) स्त्री० फूलों की बाड़ी ।
 सं० पुष्पविमान (पुष्प + विमान) पु० फूलों का विमान, देवताओं

का विमान, कुबेर का विमान ।
 सं० पुष्पाञ्जली (पुष्प + अञ्जली) स्त्री० दोनों हाथों में फूल लेकर और कुछ मन्त्र पढ़ कर देवता को चढ़ाना, निछावर, भेंट ।
 सं० पुष्पित (पुष्प=विकसना) र्म० फूला हुआ, विकसा हुआ ।
 सं० पुष्प्य (पुष्प=पुष्ट करना किसी कामको) पु० आठवाँ नक्षत्र ।
 सं० पुस्तक (पुस्त=आदरकरना वा बाँधना) स्त्री० पोथी, ग्रन्थ, किताब ।
 प्रा० पूष्पा (सं० पुष्प, पू=शुद्धकरना) पु० मालपुष्पा ।
 प्रा० पूंछ (सं० पुच्छ, पुच्छ=मस्त होना, जिसके बल पशु मस्त रहते हैं) स्त्री० टुम, लाङ्गूल, पुच्छ ।
 प्रा० पूंजी (सं० पुञ्ज) स्त्री० धन, मूलधन, असलधन, सम्पत्ति, समर्था, सम्पदा ।
 सं० पूग (पू=पवित्र होना) पु० सु-पारी, २ समूह, ३ एक वृक्षका नाम ।
 प्रा० पूछ (पूछना) स्त्री० खोज, अन्वेषण, प्रश्न ।
 प्रा० पूछपाछ बोल० पूछना, निर्णय करना, प्रश्न ।
 प्रा० पूछना (सं० प्रच्छन, प्रच्छ=पूछना) क्रि० स० प्रश्न करना, सवाल करना, जिज्ञासा करना ।
 सं० पूजक (पूज=पूजना) क० पु० पुजारी, पूजनेवाला, सेवक ।

सं० पूजन (पूज्=पूजना) भा० पु०
अर्चा, पूजा, अर्चन ।

प्रा० पूजना (सं० पूजन) क्रि० सं०
परस्तिश करना, पूजा करना, अ-
र्चना, भजना, ध्याना, बहुतमा-
नना, २ (सं० पूर्ण) क्रि० अ०
पूरा होना ।

सं० पूजनीय ((पूज्=पूजना) र्म०
पूजमान) पु० पूजने योग्य,
मान्य, काविलपरस्तिश ।

सं० पूजयिता क० पु० पूजक, पूजने
वाला ।

सं० पूजा (पूज्=पूजना) स्त्री० अर्चा,
परस्तिश, पूजन, अर्चन, आदर,
सन्मान, सेवा ।

प्रा० पूजारी ((सं० पूज्=पूजना)
पुजारी) क० पु० पूजनेवाला,
सेवक ।

सं० पूजित (पूज्=पूजना) र्म० पु०
पूजा हुआ, अर्चित, खिदमत
किया गया ।

सं० पूज्य (पूज्=पूजना) र्म० पु०
पूजने योग्य, पूजनीय, पु० ससुर,
गुरुजन ।

प्रा० पूठ पु० कूला, चूतड़, पुट्टा ।

प्रा० पूठा (सं० पट्टिका) पु० गत्ता
जिल्द ।

प्रा० पूणी स्त्री० रुई का पहल जो
कातने के लिये बनाया जाता है ।

सं० पूत (पू=पवित्र करना) पु०

पवित्र, सफा, शुद्ध, सच्चाई, स-
फाई, कुश, शङ्ख ।

प्रा० पूत (सं० पुत्र) पु० बेटा ।

सं० पूतना (पू=पवित्र करना) स्त्री०
एक राक्षसी जिसको श्रीकृष्ण ने
मारा ।

सं० पूति भा० स्त्री० पवित्रता, स-
फाई, स्वच्छता, निर्मलता, महक ।

प्रा० पूनियां ((सं० पूर्णिमा) स्त्री०
पूनों } पूर्णमासी, हिन्दी म-
पूनों } हीनेकापिछलादिन ।

सं० पूष (पू=शुद्ध करना) पु० पूआ,
मालपुआ ।

सं० पूय गु० निषिद्ध, कुत्सित, पीब,
बिगड़ारक ।

सं० पूरक (पूर=भरना) क० पु०
भरनेवाला, पूर्ण करनेवाला, २
प्राणायाममें हवाको ऊपर खेंचना ।

सं० पूरण (पूर=पूरा करना) गु०
भरा, पूरा, सारा, सब ।

सं० पूरणीय (पूर + अर्नीय) र्म०
पु० पूरा होने योग्य ।

प्रा० पूरब (सं० पूर्व) पु० पूर्वदिशा ।

प्रा० पूरा (सं० पूर्ण) गु० सब, सारा,
भरा, समाप्त, बस, ठीक, तमाम, पक्का ।

सं० पुरुष (पुर=पूरा करना) पु०
मनुष्य, नर, पुरुष ।

सं० पूर्ण (पूर=पूरा करना) गु० पूरा,
भरपूर, भरा, सब, सारा, तमाम,
समस्त, समाप्त, ठीक, पक्का ।

सं० पूर्णमासी (पूर्ण=पूरा, मास=चाँद वा महीना) स्त्री० पूनों, पूर्णिमा ।

सं० पूर्णाहुति (पूर्ण + आहुति) स्त्री० होममें सबके पीछे आहुति वा बलि ।

सं० पूर्णिमा (पूर्ण=पूरी अर्थात् पूर्णमा) जिस दिन चाँद की कला पूरी होती है) स्त्री० पूनों, पूर्णमासी ।

सं० पूर्त र्म० पु० पूरा, समाप्त, पूरित, पु० बावली, तालाब, कुआँ, बागीचा, देवमन्दिर ।

सं० पूर्तिन क० पु० पूर्णकर्ता ।

सं० पूर्व (पूर्व=रहना वा बुलाना) पूर्व) पु० पूरव दिशा, गु० पूरव दिशा का, पूर्वी, २ पहला, क्रि० वि० पहले, प्रथम, आगे ।

सं० पूर्वज (पूर्व=पहले, जन्=पैदा होना) पु० बड़ा भाई ।

सं० पूर्वार्द्ध (पूर्व=पहला, अर्द्ध=आधा) पु० पहला, आधा ।

प्रा० पूर्विया (सं० पौर्विक) गु० पूर्वी) पूर्वदेशी, पूर्व का ।

सं० पूर्वोक्त (पूर्व=पहले, उक्त=कहा हुआ) र्म० पु० पहले कहा हुआ, मज़कूर ।

सं० पूर्वलिखित (पूर्व=पहले का, लिख्=लिखना) र्म० पु० पहले का लिखा हुआ ।

प्रा० पूला (सं० पूल, पूल=ढेर

लगाना) घास का बोझा अथवा गढ़ा ।

सं० पूषन् (पूष=बढ़ना) पु० सूर्य ।

प्रा० पूस (सं० पौष, पुष्य एक नक्षत्र का नाम) पु० चन्द्रवर्ष का नवां महीना जिसमें पूरा चाँद पुष्य नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है ।

सं० पृक्त (पृच्=मिलना) क० पु० मिश्रित, मिला हुआ, मुरकब ।

सं० पृच्छक (पृच्छ + अक, पृच्छ=पूछना, प्रश्नकरना) क० पु० प्रश्नकर्ता, जिज्ञासु, पूछनेवाला ।

सं० पृच्छन भा० पु० पूछना, प्रश्न ।

सं० पृतना स्त्री० सेना, कौज २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े, १२१५ मनुष्य जिस कौज में हों ।

सं० पृथक् (पृथ=फैंकना) गु० क्रि० वि० जुदा, अलग, भिन्न, न्यारा ।

सं० पृथक्करण (पृथक्=जुदा, करण=करना) पु० जुदा करना, अलग करना ।

सं० पृथक्क्षेत्र पु० भिन्नक्षेत्र, अलग का खेत, जारजपुत्र, वर्णसंकर की माता जो बारसे पुत्र पैदाकरे ।

सं० पृथा स्त्री० कुन्ती, पाण्डु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीम की माँ, विस्तार, प्रक्षेप ।

सं० पृथ्वी } (प्रथ्=विख्यात होना
पृथिवी } फैलना) स्त्री० धरती,
धरणी, भूमि, जमीन ।

सं० पृथिवीनाथ } (पृथिवी=धरती,
पृथिवीपति } नाथ वा पति=
मालिक) पु० राजा, नृपति,
भूपति ।

सं० पृथिवीपाल (पृथिवी=धरती,
पाल=वचाना) पु० राजा, पृथिवी-
नाथ, भूपति ।

सं० पृथु } (पृथ्=फेंकना, वा प्रथ्=
पृथुक } विख्यात होना) पु० सूर्य-
वंशियों का पाँचवां राजा गु० बड़ा,
मोटा, २ चतुर, विशाल, रेबालक,
४ चिउरा ।

सं० पृथिकु (प्रथ्=विख्यात होना)
पु० यदुवंशियों का एक राजा और
श्रीकृष्ण का पुरुषा ।

सं० पृथुल क० पु० महत्, बड़ा ।

सं० पृथ्वी (पृथु=बड़ी, चौड़ी, प्रथ्=
विख्यात होना, फैलना) स्त्री०
धरती, धरणी, भूमि, जमीन ।

सं० पृष पु० सींचना, क्लेश, झोटा,
दान, लाभ, ओदा करना ।

सं० पृषत् पु० मृगभेद, रिभाग,
हिस्सा, बिन्दु, बूँद, छोट, बेल
बूटा, सूक्ष्म, पतला, वायु, हवा,
सिंह ।

सं० पृषोदर (पृष + उदर) गु०
सूक्ष्मोदर, कुशोदर, झोदे पेट-

वाला ।

सं० पृष्ठ (पृष् सींचना) स्त्री० पीठ,
पिछाड़ी का अङ्ग, हर एक चीज
का पिछला भाग, पु० पिठौता,
पुस्तक के पत्रे की एक ओर ।

सं० पृष्ठ (प्रच्छ्=पूखना) र्म्मे० जिज्ञा-
सित, पूछा गया ।

प्रा० पेई (सं० पेटक पिट्=इकट्ठा
करना) स्त्री० पिटारी ।

प्रा० पेंग स्त्री० झूला का हिलाना ।

प्रा० पेंठ स्त्री० हाट, बाजार, मंडी ।

प्रा० पेंदा पु० तला, नीचे का भाग ।

प्रा० पेग्वना (सं० प्रेक्षण) क्रि०
स० देखना, निरखना ।

प्रा० पेग्वना पु० स्वाँग, खेल ।

सं० पेचक (पचि=फैलाना) पु०
उल्लू, उल्लूक, पेचा ।

प्रा० पेचा (सं० पेचक) पु० उल्लू ।

सं० पेट (पिट्=इकट्ठा करना) पु०
उदर, जठर, २ गर्भस्थान, कोख,
गर्भाधान, ३ बंदूक आदि की
मुहड़ी, ४ छेद, खोह, कन्दरा,
बन्दूक, पिटारा, पिटारी, टोकरी,
ढब्बा, डिबिया ।

प्रा० पेटआना बोल० पेट चलना,
बहुत भाड़ा फिरना, बहुत दस्त
होना, दस्त की बीमारी होना ।

प्रा० पेटका दुखदेना बोल० भूखों
मरना ।

प्रा० पेटका पानी न हिलना यह

बोल चाल उस जगह बोला जाता है कि जब थोड़ा ऐसी चाल चले कि सवार हिले डुले नहीं और न किसी तरह का दुःख पावे ।
 प्रा० पेटकी आग बोल० मां बाप का प्यार, २ सन्तान, औलाद, लड़के का दुःख न देख सकना ।
 प्रा० पेटकी आग बुझाना बोल० कुछ खाना, भूखे को कुछ खिलाना ।
 प्रा० पेटकी बातें बोल० मन की बातें, गुप्त बातें, छिपी बातें ।
 प्रा० पेटगड़गड़ाना बोल० पेट गड़बड़ाना, पेट बोलना, पेट हड़बड़ाना ।
 प्रा० पेटगिरना बोल० गर्भगिरना, गाभ गिरना, अधूरा जाना, स्त्री के पेट से कच्चे बच्चे का गिरना ।
 प्रा० पेटजलना बोल० बहुत भूखा होना ।
 प्रा० पेट दिखाना बोल० अपनी गरीबी और भूख को जताना ।
 प्रा० पेटपालना बोल० अपना निर्वाह करना, गुजराना करना, २ स्वार्थी होना ।
 प्रा० पेटपीठएकहोना बोल० बहुत दुबला होना, लागर होना ।
 प्रा० पेटपोछन बोल० स्त्री का सबसे पिछला बालक ।
 प्रा० पेटपोखू खाऊ, पेदू, पेटार्थू,

पेटपाल ।

प्रा० पेटफूलना बोल० बहुत हँसना, हँसी के मारे लोट पेट होना, २ गर्भ रहना ।
 प्रा० पेटबढ़ाना बोल० बहुत खाना, २ दूसरे के हिस्से पर हाथ बढ़ाना ।
 प्रा० पेटबाँधना बोल० भूखसे कम खाना ।
 प्रा० पेटभर बोल० जीभर, भरपेट, अधाके ।
 प्रा० पेटभरना बोल० खाना, खा चुकना, अधाना, तृप्त होना ।
 प्रा० पेटमारना बोल० आत्मघात करना, अपघात करना, खुदकुशी करना ।
 प्रा० पेटमें पैठना बोल० दूसरे का भेद लेना, २ खुशामद की बातें करके मित्र बन जाना ।
 प्रा० पेटमें लेना बोल० सहना, संतोष रखना ।
 प्रा० पेटरहना बोल० पेटसे होना, गर्भिणी होना, गर्भ रहना ।
 प्रा० पेटलगजाना बोल० भूखों मरना, बहुत भूखा होना ।
 प्रा० पेटलगरहना बोल० बहुत भूखा होना ।
 प्रा० पेटवाली } बोल० गर्भिणी,
 पेटसे } गर्भवती ।
 प्रा० पेटसे होना बोल० गर्भिणी होना, पेट रहना ।

प्रा० पेट हड़बड़ाना बोल० दस्त
की हाजत होना, पेट गड़बड़ाना ।
सं० पेटार्थी } (सं० पेट, और
प्रा० पेटार्थू } अर्थी=चाहनेवाला,
अर्थ=चाहना वा माँगना) गु०
खाऊ, पेटू, पेटपालू ।

सं० पेटिका (पिट्=इकट्ठा करना)
स्त्री० सन्दूक, पिटारा, पेटी, टो-
करी, डब्बा ।

प्रा० पेटिया (पेट) पु० सीधा,
हर एक दिनका खाना ।

सं० पेटी (पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री०
पिटारी, रकमरबन्द, पेट पर बाँधने
की चमड़े की बन्धनी, ३ छाती ।

प्रा० पेटू (पेट) गु० अपना पेट
भरनेवाला, पेटार्थू, पेटार्थी, म-
र्भूखा, पेटपालू, खाऊ ।

प्रा० पेटौखा (पेट) पु० पेट च-
लना, अतिसार रोग, आँव ।

प्रा० पेटा पु० कूप्पापड, कुम्हड़ा ।

प्रा० पेड़ पु० रूख, तरु, वृक्ष, पौधा ।

प्रा० पेड़ा (सं० पिण्ड) पु० एक
प्रकार की मिठाई ।

प्रा० पेड़ी स्त्री० छोटा पेड़ा, २ एक
तरह का पान, ३ नील की ढाँठी ।

प्रा० पेहू (पेट) पु० नाभिके नीचे
का भाग, तलपेट, पेटतल ।

प्रा० पेम (सं० प्रेम) पु० प्यार, स्नेह ।

प्रा० पेमी (सं० प्रेमी) गु० प्यारा,
प्रीतम, प्रेमी, छोही, मित्र ।

सं० पेय (पा=पीना) पु० पानी,
२ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना (सं० पेलन, पिल् वा
पेल्=जाना) क्रि० स० ठेलना,
ढकेलना रेलना, धक्का देना, २
ढाँसना, ३ निचोड़ना, ४ आज्ञा
भङ्ग करना, वचन तोड़ना ।

सं० पेश } गु० सुन्दर, दक्ष, कोमल,
पेशल } चतुर, निर्मल, मनोहर,
रुचिर ।

प्रा० पेशाब (सं० प्रस्ताव प्र, स्तु=
चूना, बहना) पु० मूत, मूत्र ।

सं० पेशि (पिश्=अङ्गविभाग) पु०
वज्र, अण्डा ।

सं० पेशी स्त्री० भृङ्गी, बड़ी कली,
मियान, मांस, पुञ्ज, समूह ।

सं० पेषक क० पु० मर्दक, पीसने
वाला ।

सं० पेषण भा० पु० पीसना ।

सं० पेषित र्म० पु० पीसा हुआ ।

सं० पेषणि } (पिष्=पीसना) शा०
पेषणी } स्त्री० चक्की, दलैँती,
जाँता ।

सं० पेपि पु० लोटा, बट्टा ।

प्रा० पैचा पु० हाथ उधार, उधार
श्रृणु ।

प्रा० पैङ्ग (सं० पण्ड, पण्डू=जाना)

पु० पाँव, डग, कदम, पद, २
ऊँचान, ऊँची धरती ।

प्रा० पैङ्गा (सं० पण्ड, पण्डू=जाना)

पु० रस्ता, मार्ग, बाट, सड़क ।

प्रा० पैताना (सं० पादान्त, पाद +

अन्त) पु० पाँयती पाँयतल ।

प्रा० पैतालीस (सं० पञ्चचत्वारिंशत्, पञ्च=पाँच, चत्वारिंशत्=

चालीस) गु० चालीस और
पाँच, ४५ ।

प्रा० पैतीस (सं० पञ्चत्रिंशत्, पञ्च=पाँच, त्रिंशत्=तीस) गु०

तीस और पाँच, ३५ ।

प्रा० पैसठ (सं० पञ्चषष्टि, पञ्च=

पाँच, षष्टि=साठ) गु० साठ और
पाँच, ६५ ।

प्रा० पै (सं० पयस्) पु० दूध, पानी,

२ (सं० उपरि) संकेतवर्ण० पर,
ऊपर, ३ (सं० पर) समुच्च०
परन्तु पर ।

प्रा० पैज पु० पण, होड़, प्रतिज्ञा,

अहेद, कौल, वचन ।

प्रा० पैठ स्त्री० हुंड़ी की दूसरी नकल

जब हुंड़ी खोय जाती है तब पैठ
कसते हैं, २ पैदना, पहुँच, ३
भरोसा ।

प्रा० पैठना (सं० प्रविष्ट) कि० अ०

घुसना, धसना, प्रवेश करना ।

प्रा० पैड़ी स्त्री० सीढ़ी, जीना,

निसेनी ।

प्रा० पैतुक (पितृ) गु० पिता का,

बापका, बपौती, मौरूसी ।

प्रा० पैदल (सं० पादात् वा पदाति)

पु० पिशादा, पैरोंसे चलनेवाला ।

प्रा० पैन (सं० पानीय) पु० नाली,

नाला ।

प्रा० पैना पु० आर, अङ्कुश, आँ-

कुस, बैल के मारने का चाबुक,
तीखा काँटा, गु० तीखा ।

प्रा० पैया पु० पहिया, चक्र, चक्का ।

प्रा० पैर (सं० पद) पु० पाँव,

चरण, कदम ।

प्रा० पैरना कि० अ० तैरना, हेलना ।

प्रा० पैराक क० पु० तैरनेवाला,

पैरनेवाला ।

प्रा० पेवँदाबेर पु० बड़े २ बेर ।

प्रा० पैसा पु० ताँबे का सिक्का, २

धन, दौलत, रोक, रोकड़, संपत्ति ।

प्रा० पैसाउड़ाना बोल० बहुत खर्च

करना, अन्धाधुन्ध खर्च करना, २
दूसरे का धन चुरालेना या ठग
लेना ।

प्रा० पैसाखाना बोल० पैसा उड़ाना,

बहुत खर्च करना, २ मजदूरी करके
पेट भरना, ३ रिश्वत लेना, ४
ढकारजाना, विश्वासघात करके
ले लेना ।

प्रा० पैसाडुबाना बोल० धन गँवाना ।

प्रा० पैसाडूबना बोल० धन बरबाद

होना, रुपया पैसा खोयाजाना ।
 प्रा० पैसे लगाना बोल० धन खर्च
 करना, धन लगाना ।
 प्रा० पैसेवाला गु० धनवान्, दौल-
 तपन्द, २ एक पैसे का ।
 प्रा० पैसोंसे दरबारबाँधना बोल०
 रिश्वत देना, घूस देना ।
 प्रा० पैसार पु० पहुँच, पैठ, प्रवेश ।
 प्रा० पैहें (पाना) क्रि० स० पावेगा,
 पाओगे ।
 प्रा० पोइस (सं० पश्य=देख) क्रि०
 वि० अलग हो, दूर हो, अरे, जब
 कि रस्तेपर बहुत से आदमी हों
 तब उनको अलग करने और नहीं
 छुआने के लिये भङ्गी यह शब्द
 बहुतबार बोला करता है ।
 प्रा० पोंगी स्त्री० बाँसुरी जिसको
 साँप पकड़नेवाले बजाते हैं, मौहर ।
 प्रा० पोंछुना क्रि० स० झाड़ना,
 फर्छा करना, साफ करना ।
 प्रा० पोखर } (सं० पुष्कर) पु०
 पोखरा } तालाब, ताल, झील,
 तड़गा ।
 सं० पोगण्ड गु० विकलाङ्ग, नपुं-
 सक, अङ्गहीन, कुपुरुष, पु० सोलह
 वर्षकी अवस्था ।
 प्रा० पोच (फा० “पुच”) गु०
 नीच, तुच्छ, बुरा ।
 प्रा० पोट स्त्री० मोट, गाँठ, गठरी ।
 प्रा० पोटला पु० बड़ी गठरी ।

प्रा० पोटली स्त्री० छोटी गठरी,
 मोटरी ।
 प्रा० पोढ़ा } (सं० प्रौढ़) गु० बल-
 पौढ़ा } वान्, रकड़ा, ठोंस, दढ़ ।
 प्रा० पोढ़ाई } (सं० प्रौढ़ता) भा०
 पौढ़ाई } स्त्री० बल, रकड़ापन,
 दढ़ता, ठोंसाई ।
 सं० पोत (पू=शुद्ध करना) पु०
 बच्चा, बालक, २ स्त्री० नाव ।
 प्रा० पोत पु० स्वभाव, प्रकृति, गुण,
 बनावट, २ काँचका दाना ।
 सं० पोतक (पू=शुद्ध करना) पु०
 बालक, बच्चा ।
 प्रा० पोतड़ा पु० बच्चे का बिछौना ।
 प्रा० पोतना क्रि० स० लीपना,
 लेसना ।
 प्रा० पोता (सं० पौत्र) पु० बेटे
 का बेटा ।
 प्रा० पोतिया स्त्री० नहाने के समय
 पहनने का कपड़ा, गँवार लोगों के
 शिर पर बाँधने का कपड़ा, २ एक
 खिलौने का नाम ।
 प्रा० पोती (सं० पौत्री) स्त्री० बेटे
 की बेटी ।
 प्रा० पोथा (सं० पुस्त, पुस्त=आदर
 करना, वा बाँधना) पु० बड़ी पुस्तक ।
 प्रा० पोथी (सं० पुस्ती, पुस्त=आ-
 दर करना, वा बाँधना) स्त्री०
 पुस्तक, बही, किताब ।
 प्रा० पोदना एक पखेरू का नाम ।

प्रा० पोना क्रि० स० पिरोना,
गाथना, गूथना, गुहना, २ रोटी
बेलना वा बनाना ।

प्रा० पोपला गु० बेदाँत, दाँतरहित,
अदाँत, जिसके दाँत गिरगये हों ।

प्रा० पोमचा पु० एक तरह का
रँगिला कपड़ा ।

प्रा० पोर (सं० पर्व) स्त्री०
गाँठ, गिरहा, दो गाँठों का
बीच ।

प्रा० पोरी (सं० पर्व) स्त्री० बाँस
की अथवा गन्ने की गाँठ ।

प्रा० पोला गु० खाली, छूटा,
कोमल, नर्म !

अं० पोलेटिकल एजेण्ट=राज्य प्रब-
न्धकर्ता ।

अं० पोलेटिकल सभा=राजनैतिक
सभा ।

अं० पोलेटिकल एजुकेशन=राज-
नीतिशास्त्र ।

अं० पोलेटिकल आफिसर=राज-
नैतिक कर्मचारी ।

अं० पोलेटिकल डिपार्ट्म्यण्ट=पो-
लेटिकल=राजनैतिक, डिपार्ट्म्य-
ण्ट=प्रकरण, विभाग ।

सं० पोषक (पुष्=पोसना पालना)
क० पु० पोसनेवाला, पालने
वाला, रक्षक ।

सं० पोषण (पुष्=पोसना) भा०
पु० पालन, भरण, रक्षा ।

प्रा० पोषना } (सं० पोषण) क्रि०
पोखना } स० पालना, रक्षा
पोसना } करना, प्रतिपालन
करना ।

सं० पोषणीय (पुष् + अनीय)
र्म० पु० रक्षायोग्य, पालनयोग्य ।

सं० पोषयित्तु क० पु० भर्ता, स्वामी,
खाविंद ।

सं० पोष्टा क० पु० पालन करने
वाला ।

सं० पोष्यपुत्र (पोष्य=पाला हुआ,
पुत्र=लड़का) र्म० पु० लेपालक,
दत्तकपुत्र, गोद लिया हुआ बेटा,
पुतबन्ना ।

प्रा० पोह स्त्री० भोर, तड़का, बि-
हान, सुबह ।

प्रा० पोहना क्रि० स० रोटी बनाना ।

प्रा० पौ स्त्री० पासे में का एक्का, २
वह जगह जहाँ बटोहियों को पानी
पिनाया जाता है ।

प्रा० पौड़ा (सं० पुण्ड्र वा पौण्ड्र,
पुण्ड्र=मलना) पु० एक प्रकार
की ऊख ।

प्रा० पौड़ना क्रि० अ० सोना, ले-
टना, आराम करना ।

सं० पौत्र (पुत्र) पु० पोता, बेटेका
बेटा ।

सं० पौत्री (पुत्र) स्त्री० पोती, बेटे
की बेटी ।

प्रा० पौधा पु० नया पेड़, केड़ा ।

प्रा० पौन (सं०पवन) स्त्री० हवा,
वायु ।

प्रा० पौन (सं०पादोन, पाद=नौथा
हिस्सा, ऊन=कम) गु० तीन
चौथाई, चौथे हिस्से तीन, चार
भाग का तीन ।

प्रा० पौना पु० भरना, भरनी,
एक लोहे की चीज जिसमें बहुत
से ब्रेद होते हैं और उससे प-
कौड़ी आदि तली जाती हैं ।

प्रा० पौर स्त्री० बड़ा दरवाजा, द्वार
फाटक ।

सं० पौराणिक(पुराण) पु० पुराण-
वक्ता, पुराण बँचनेवाला, पुराण
पढ़ा हुआ, पण्डित ।

प्रा० पौरिया (पौर) पु० डेवढी-
वान, द्वारपाल ।

प्रा० पौरी स्त्री० पौर, डेवढी, द्वार ।

सं० पौरुष (पुरुष) पु० पुरुषत्व, पु-
रुषार्थ, पराक्रम, बल, जोर, २ पुर्सा ।

सं० पौर्णमासी (पूर्ण=पूरा, मास=
महीना, वा चाँद) स्त्री० पूर्णमासी,
पूर्णिमा, पूर्णों ।

प्रा० पौली स्त्री० पौर, पौरी ।

प्रा० पौवा (सं०पाद=चौथाभाग)
पु० चौथाभाग, पावभरका बाँट ।

सं० पौष पूष शब्दको देखो ।

प्रा० प्यार (सं० प्रीति, वा प्रेम)
पु० पियार, प्रेम, प्रीति, नेह,
झोह, दुलार, मुहब्बत ।

प्रा० प्यारा (सं० प्रिय) गु० पु०
प्रेमी, स्नेही ।

प्रा० प्याराजानना बोल० आदर
करना, सम्मानकरना, श्रेष्ठसम्भना ।

प्रा० प्यारी (सं० प्रिया) गु०
स्त्री० पियारी, प्रिया, २ मनोहर ।

प्रा० प्यास (सं०पिपासा) स्त्री० पि-
यास, तृष्णा, तृषा, पीने की चाह ।

प्रा० प्यास बुझाना बोल० प्यास
मिटाना, कुछ पीलेना, पानी पि-
लाना ।

प्रा० प्यासलगना बोल० प्यासा
होना ।

प्रा० प्यासा (सं० पिपासित)
गु० पियासा, तृषान्त, पानी
चाहनेवाला ।

प्रा० प्यासे मरना बोल० बहुत
प्यासा होना ।

सं० प्र उपस० पहले, २ आगे बढ़के,
३ दूर, ४ श्रेष्ठ, प्रधान, बड़ा, ऊपर,
मुख्य, ५ बहुत, अधिक, अतिशय,
६ प्रारम्भ, शुरुआत, ७ चारों ओरसे,
सब तरहसे, उत्पत्ति, पैदा होना ।

सं० प्रकट (प्र= सब तरह से कट
=घेरना) पु० प्रकट, प्रत्यक्ष, चौड़े,
जाहिर, स्पष्ट, खुलासा ।

सं० प्रकटन भा० पु० प्रकाश करना,
जाहिर करना ।

सं० प्रकटित मर्म० पु० प्रकाशित,
रोशन ।

सं० प्रकम्प (प्र=बहुत, कम्प=कॉपना) पु० कॉपना, थरथराहट, कँपकँपी ।

सं० प्रकरण (प्र=बहुत वा शुरूअ, कृ=करना) पु० भूमिका, आशय, बात, वृत्तान्त, प्रस्ताव, प्रसङ्ग, काण्ड, खण्ड, विषय, अध्याय, सरिरता, अवसर, मौकअ, विभाग ।

सं० प्रकर्ष (प्र=बहुत वा ऊपर, कृष=खींचना) भा० पु० उत्तमता, बढ़ाई, श्रेष्ठता, उत्कर्ष ।

सं० प्रकाण्ड पु० वृक्ष की जड़ और डाली के बीच की लकड़ी, वृक्ष का धड़ वा स्तम्भ, प्रशस्तवाणी, आशीर्वाद ।

सं० प्रकाम गु० यथेच्छ, यथेष्ट, इच्छापूर्वक ।

सं० प्रकार (प्र, कृ=करना) पु० भेद, भाँति, ढङ्ग, ढौल, तरह, रीति, सादृश्य, किस्म ।

सं० प्रकाश (प्र=बहुत, काश्=चमकना) पु० उजाला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज, चमक, २ फैलाव, प्रसिद्ध, गु० प्रकट, प्रसिद्ध, विख्यात, चमकीला, उज्ज्वल, उजागर, प्रकाशित, चमकता, कि० वि० खुले खुले, साफ साफ ।

सं० प्रकाशक (प्रकाश) क० पु० प्रकाश करनेवाला, रोशन करने वाला, जाहिरकुनिन्दा ।

सं० प्रकाशात्मन् (प्रकाश + आत्मन्) पु० सूर्य, परमेश्वर ।

सं० प्रकाशनीय (र्म० पु० प्रकाश-प्रकाश्य) नार्ह, प्रकाशयोग्य ।

सं० प्रकाशित (प्रकाश) र्म० प्रकट, प्रत्यक्ष, जाहिर, उजागर, प्रसिद्ध ।

सं० प्रकीर्ण (कृ=फैलाना) र्म० पु० विक्षिप्त, विस्तृत, फैलाहुआ पु० चमर, चोर, अश्व ।

सं० प्रकृत (प्र=शुरूअ, वा पहले, कृ=करना) र्म० पु० किया हुआ, शुरूअ किया हुआ, २ ठीक ठीक, यथार्थ, सच ।

सं० प्रकृति (प्र=बहुत, कृ=करना) स्त्री० स्वभाव, गुण, २ माया, परमेश्वर की शक्ति, ३ किसी वस्तु की असली दशा, ४ एक छन्द का नाम जिसके हर एक पद में इक्कीस अक्षर होते हैं, प्रजा, मन्त्री, मित्र, स्वजाना, देश, गढ़ और नोस इन सबके समूह को भी प्रकृति कहते हैं ।

सं० प्रकीर्तिन (प्र=बहुत, कृत=कहना) भा० पु० वर्णन, कथन, भजा ।

सं० प्रकीर्तित र्म० पु० कथित, वर्णित ।

सं० प्रकीर्य (कृ=फैलाना) र्म० विथरा हुआ, छिटका हुआ ।

सं० प्रकृष्ट (प्र=बहुत अथवा ऊपर, कृष्=खींचना) गु० उत्तम, मुख्य, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ ।

सं० प्रकोष्ठ पु० कोठे के नीचे का

कोठा, अटारी, हाथ की कलाई से कोहनी तक, कलाई और कोहनी के मध्य का भाग ।

सं० प्रक्रम (प्र = शुरू, क्रम = जाना)
पु० प्रारम्भ, शुरू, पर्यटन, रजाना,
३ अवकाश, अवसर, ४ गणना ।

सं० प्रक्रिया (प्र + कृ = करना) स्त्री०
विभाग, प्रकरण, २ रीति, प्रकार,
विधि, व्यवहार, ३ कृती, उन्नति,
४ महिमा, प्रभाव, प्रताप, गणना,
६ स्थल. ७ अधिकार ।

सं० प्रक्षिन्न (क्लिद् = तर होना) क०
पु० टूट, अघाना, आमूदा ।

सं० प्रक्षालन (प्र = बहुत, क्षल् =
शुद्ध करना) प्र० पखालना, धोना,
शुद्ध करना ।

सं० प्रक्षेप (क्षिप् = फेंकना) पु० फें-
कना, त्याग करना ।

सं० प्रखर (प्र = बहुत, खर = तीखा)
गु० बहुत तीखा, तेज, पु० घोड़े
हाथी का बल्लर, पाखर, घोड़े का
चारजामा ।

सं० प्रखरांशु पु० तीक्ष्ण किरण,
तीव्र किरण ।

सं० प्रख्यात (प्र = बहुत, ख्या = प्र-
सिद्ध होना) गु० प्रसिद्ध, विख्यात,
नामवर, प्रतिष्ठित, मुष्प्रजिज्ज ।

प्रा० प्रगट (सं० प्रकट) गु० प्र-
परगट) सिद्ध, जाहिर, प्रत्यक्ष ।

प्रा० प्रगटना (सं० प्रकट) क्रि०

अ० प्रगट होना, प्रत्यक्ष होना, पैदा
होना, जन्म होना, जन्म लेना ।

सं० प्रगल्भ (प्र = बहुत, गल्भ = ढीठ
होना) गु० धृष्ट, शोख, ढीठ, निदुर,
साहसी, दृढ़, प्रबल, सामर्थी ।

सं० प्रगल्भता (प्रगल्भ) स्त्री०
ढीठपन, साहस, पराक्रम, दृढ़ता,
ढिठाई ।

सं० प्रगाढ़ गु० दृढ़, कठोर, अधिक,
बहुत ।

सं० प्रग्रह पु० लगाम, हथकड़ी,
बेड़ी, तराजूकी रस्सी, किरण, च-
न्दन, वेध, भुजा, बाँधनेकी रस्सी ।

सं० प्रग्राह पु० पगहा, बाँधने की
रस्सी ।

सं० प्रघाण पु० बराण्डा, बराम्दा,
मकान के आगे का साबान ।

सं० प्रचण्ड (प्र = बहुत, चण्ड = द-
रावना) गु० बहुत डरावना, भया-
नक, २ बहुत तीखा, प्रबल, ३
बहुत क्रोधी, ४ अत्यन्तगर्भ अथवा
जलता हुआ, ५ अनसहा, नहीं
सहने योग्य, असह्य, अत्युग्र,
उत्क्रुष्ट, तेज ।

सं० प्रचलित (प्र = आगे, चल् = च-
लना) गु० व्यवहारी, चलनी,
वर्तमान, जिसका चलन हो, जो
चलता हो अथवा व्यवहार में
आता हो जैसे प्रचलित सिक्का,
प्रचलित भाषा ।

सं० प्रचार (प्र=बहुत वा आगे,
चर्=जाना) पु० चलन, व्यवहार,
रीति, २ प्रकट करना, ३ फैलाव,
विस्तार ।

सं० प्रचारक क० पु० प्रकाशक,
प्रेरक, विस्तारक, फैलानेवाला ।

प्रा० प्रचारना (सं० प्रचारण, प्र=
आगे, चर्=जाना) क्रि० स०
ललकारना, पुकारना ।

सं० प्रचुर अव्य० बहुत, अधिक ।

सं० प्रचुरवर्ग पु० साथी, संगती,
हमराही ।

सं० प्रच्छद (छद्=आच्छादन)
ण० पु० उत्तरीय, ढुपट्टा, ढपन ।

सं० प्रच्छदपट पु० परदा, कनात,
चिक ।

सं० प्रच्छन्न (छद्=ढापना) र्भ्य०
पु० गुप्त, ढपाहुआ, अदृश्य ।

सं० प्रजा (प्र=बहुत, जन्=पैदा
होना) स्त्री० सन्तान, २ प्राणी,
सृष्टि, ३ राज के लोग, रक्षित,
अधिकार, स्थितजन ।

सं० प्रजापति (प्रजा + पति) पु०
सृष्टि का स्वामी, सृष्टि का बनाने
वाला, ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप आदि
दश मुनि जिनको ब्रह्मा ने पहले
ही पहल पैदा किया और सृष्टि
बनाने का काम सौंपा उनके
नाम—१ मरीचि, २ अत्रि, ३ अ-
किता, ४ प्लक्ष्य, ५ प्लङ्ग, ६

क्रतु, ७ प्रचेता, ८ वशिष्ठ, ९ भृगु,
१० नारद और कितने एक आ-
चार्य कहते हैं कि प्रजापति सात
हैं और कितने एक दक्ष, नारद
और भृगु इन तीनों हीको प्रजापति
कहते हैं और कितने एक ग्रन्थकार
इकीस प्रजापति बतलाते हैं, २
राजा, ३ बाप, पिता, ४ जैमाई, जा-
माता, ५ सूर्य, ६ आग, कुम्हार ।

सं० प्रजाधिकारीराज्य पु० ज-
म्हूरी सल्तनत जिस राज्य की
प्रजा सब राज काज करे राजा
कोई न हो ।

सं० प्रजाशन (प्रजा + अशन, अश्=
भक्षण करना) भा० पु० प्रजा को
दुःख देना, प्रजा का नाश करना ।

सं० प्रजाशासन (प्रजा + शासन,
शास्=सिखाना) भा० पु० प्रजा
को सिखाना, दण्ड देना, सजा
देना ।

प्रा० प्रजारना (सं० प्रज्वलन)
क्रि० स० जारना, जलाना ।

सं० प्रजेश्वर (प्रजा + ईशवा ईश्वर)
प्रजेश्वर पु० दक्षप्रजापति ।

सं० प्रज्ञ क० पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

सं० प्रज्ञा (प्र=बहुत, ज्ञा=जानना)
स्त्री० बुद्धि, मति, समझ, २
सरस्वती ।

सं० प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र, चक्षुहीन,
बुद्धिचक्षु वाला ।

सं० प्रज्ञापत्र (फा० इस्तफता) उसे कहते हैं जिसमें गुरु अथवा आचार्य से पूछकर सांसारिक कार्य किये जावें ।

सं० प्रज्वलित (प्र=बहुत, ज्वल्=जलना वा चमकना) क० पु० ज्योतिमान्, प्रकाशित, उज्ज्वल, चमकीला ।

सं० प्रडीन (प्र, डी=उड़ना) भा० पु० उड़ना, पक्षी की गति ।

प्रा० प्रण (सं० पण) पु० प्रतिज्ञा, वन, होड़, नियम, पण, कौल ।

सं० प्रणत (प्र=बहुत, नम्=भुकना) क० पु० अधीन, भुका हुआ, नम्र, भक्त, दीन, शरणागत ।

सं० प्रणतपाल भा० पु० दीन-पालक ।

सं० प्रणति (प्र=बहुत, नम्=भुकना) स्त्री० नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत् ।

सं० प्रणय (प्र, नी=लेजाना) पु० प्यार, प्रेम, २ प्यार से माँगना, ३ भरोसा, ४ मुक्ति, ५ नम्रता, सुशीलता, ६ विनती, स्तुति ।

सं० प्रणव (प्र=बहुत, नु=स्तुति करना) पु० ॐम्, ॐङ्कार तीनों देवताओं का मन्त्र ।

सं० प्रणष्ट (नश्=नाश करना) र्म्यं पु० नाश होगया, विशेष नाश ।

सं० प्रणाम (प्र=बहुत, नम्=भुकना) पु० नमस्कार, दण्डवत्, प्रणत ।

सं० प्रणमित क० पु० प्रणाम करने वाला, प्रणामकर्ता या प्रणाम करायाहुआ ।

सं० प्रणम्य र्म्यं प्रणाम योग्य, नमस्करणीय या प्रणामकर ।

सं० प्रणाली (प्र=बहुत अथवा चारों ओर से, नल्=बाँधना वा नद्=गिरना) स्त्री० नाली, पनाला, २ परम्परा की रीति, क्रदावत ।

सं० प्रणिधान (धा=धारण, पोषण करना) भा० पु० मन में ध्यान करना, बगौर सोचना, समाधिभेद ।

सं० प्रणिधि (प्रणि + धा=धारण करना) क० पु० चर, दूत, जामूस ।

सं० प्रणिपात (प्र=बहुत, नि=नीचे और पत्=गिरना) पु० प्रणाम, दण्डवत्, सलामी ।

सं० प्रताप (प्र=बहुत, तप्=तपना) पु० तेज, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, अक्रबाल ।

सं० प्रतापवान् (प्रताप) गु० तेज-प्रतापी स्त्री, ऐश्वर्यवान् ।

सं० प्रतारण (तृ=पार जाना, तैरना) भा० पु० प्रवञ्चना, बलना ।

सं० प्रति उपस० को, केतई, की ओर, २ पास, ३ साम्हने, ४ विरुद्ध, उलटा, विपरीत, ५ इसकी

अपेक्षा, इसके देखते, बनिस्बत,
६ ऊपर, पर, ७ लगभग, ८ लिये,
वास्ते, ९ विषय में, १० अनुसार
से, ११ हर एक की एक एक,
सब, १२ पीछे, फिर, पीछा, १३
एवज, बदले में, पलटे में, जगह
में, स्थान में, १४ आपस में, १५
बराबर, समान, सदृश, १६ नकल,
१७ पुस्तक, जिल्द ।

प्रा० प्रतिउपकार (सं० प्रत्युपकार,
प्रति=पीछा, उपकार=भला) पु०
पीछा उपकार, उपकारका बदला ।

सं० प्रतिकार { (प्रति=बदले में,
प्रतीकार) कृ=करना) पु०
वैर का बदला, पलटा, २ दुःख
दूर करने का उपाय, इलाज,
निवारण, वर्जन, बदला, एवज ।

सं० प्रतिकारक क० पु० निवारक,
नासिख ।

सं० प्रतिकार्य र्भ० निवार्य, रो-
कने योग्य ।

सं० प्रतिकूल (प्रति=उलटा वा
विरुद्ध, कूल=पक्ष, कूल=ढकना)
गु० उलटा, विरुद्ध, विमुख,
बखिलाफ ।

सं० प्रतिक्षण (प्रति=हरएक, क्षण
=पल) क्रि० वि० पलपल में, हर
एक पल, हरदम, हरवक़ ।

सं० प्रतिग्रह (प्रति=बुरा, ग्रह=
लेना) दान लेना, खैरात लेना ।

सं० प्रतिघात (प्रति=पीछा, घात=
मारना) पु० पीछा मारना, मारके
बदले मार ।

सं० प्रतीच्छा स्त्री० इन्तिजारी ।

सं० प्रतिच्छाया (प्रति=बराबर,
छाया) स्त्री० प्रतिबिम्ब, पर्छाई ।

सं० प्रतिज्ञा (प्रति=आपस में, ज्ञा=
जानना) स्त्री० वचन, पण, नेम,
कौलकरार ।

सं० प्रतिज्ञापत्र पु० प्रणपत्र, अह-
दनामा ।

सं० प्रतिदान भा० पु० दानोपरि
दान, दान के पीछे दान ।

सं० प्रतिदिन (प्रति=हरएक, दिन)
क्रि० वि० हरएक दिन, दिन दिन ।

सं० प्रतिध्वनि (प्रति=पीछा अथवा
बराबर, ध्वनि=शब्द) स्त्री० प्रति-
शब्द, गूँज, शब्द प्रति शब्द ।

सं० प्रतिनिधि (प्रति=एवज वा
बराबर, नि=में, धा=रखना) पु०
एवज, एक की जगह दूसरा, २
सदृशता, प्रतिमा, मूर्ति, मुखतार ।

सं० प्रतिपक्ष (प्रति=उलटा, पक्ष=
तरफ) पु० वैरी, शत्रु, रिपु,
दुश्मन ।

सं० प्रतिपत्ति (पत्=गिरना) स्त्री०
प्रवृत्ति, बोध, निष्पत्ति, प्राप्ति,
आगल्भ गौरव, पदप्राप्ति, दान,
प्रक्षेप, दीनता ।

सं० प्रतिपद (प्रति, पद=जाना,

और प्रति उपसर्ग के साथ आने से
अर्थ हुआ शुरू होना) स्त्री०
परिवा, पहली तिथि ।
सं० प्रतिपन्न (पद्=जाना) र्भ्ये०
विज्ञात, अङ्गीकृत, प्राप्त, शरणागत ।
सं० प्रतिपादन भा० पु० त्याग,
कथन, दान, प्रतिपत्ति, निरूपण,
समर्पण, बोध करना, जताना ।
सं० प्रतिपादक क० पु० कहनेवाला,
निरूपक, मुझारिज ।
सं० प्रतिपाद्य र्भ्ये० पु० बोधनीय,
विश्वास योग्य, कथनयोग्य ।
सं० प्रतिपाल (प्रति, पाल्=पालना)
पु० पोषण, भरण, पालन, प्रतिपालन ।
सं० प्रतिपालक (प्रति, पाल्=पा-
लना) क० पु० पालनेवाला, पु०
राजा, रक्षक ।
सं० प्रतिपालन (प्रति, पाल्=पा-
लना) पु० पोषण, भरण, पालन,
रक्षा, बचाव, परवरिश ।
प्रा० प्रतिपालना (सं० प्रतिपालन)
क्रि० स० पालना, पोषना ।
सं० प्रतिपालित र्भ्ये० पु० रक्षित,
महफूज ।
सं० प्रतिफल पु० बदला, मावजा,
एवज ।
सं० प्रतिबन्धक (प्रति, बन्ध्=बाँधना)
क० पु० बाधक, रोकनेवाला, पु०
क्काव, रोक, बाधा ।
सं० प्रतिबन्धन भा० पु० रोकना,

निबन्धन ।
सं० प्रतिभा (प्रति, भा=चमकना)
स्त्री० समझ, बुद्धि, बुद्धि की तेजी,
२ जोत, चमक ।
सं० प्रतिभू (प्रति=प्रतिनिधि वा
एवज, भू=होना) पु० जामिन ।
सं० प्रतिभूति स्त्री० जमानत, जामिनी ।
सं० प्रतिमा (प्रति=बराबर, मा=
नापना, अर्थात् किसी के बराबर
बनाना) स्त्री० मूर्ति, पुतली ।
सं० प्रतिमाला स्त्री० जयमाला,
मण्डल, परिधि, बैतबाजी ।
सं० प्रतिमास (प्रति=हर एक, मास
=महीना) क्रि० वि० महीने का
महीने, हर महीने, महीने महीने ।
सं० प्रतियोगिन् (युज्=मिलना,
जोड़ना) गु० विरुद्धपक्ष, विरोधी,
उद्योगी, प्रतिकूल ।
सं० प्रतिरम्भ (रभ्=उत्सुक होना)
पु० भेंद, मिलाप, आलिङ्गन, २
क्रोध, कोप ।
सं० प्रतिरूप (प्रति=बराबर, रूप
=आकार) पु० प्रतिबिम्ब, मूर्ति,
गु० समान, सदृश ।
सं० प्रतिरोध (प्रति + रुध्=रोकना)
पु० निरोध, रोक, प्रतिबन्ध, निरा-
दर, अविष्टम्भ ।
सं० प्रतिलेखक क० पु० मकतूब-
अलेह या जिसको पत्र लिखा जाय ।
सं० प्रतिलोभ गु० विलोभ,

उलटा, वाम, बायें, विपरीत,
अधम, नीच, कुत्सित पु० रोम रोम,
हर एक रोम ।

सं० प्रतिलोमन गु० वर्णसंकर,
शूद्रपुरुष और उत्तम वर्ण की स्त्री
से उत्पन्न ।

सं० प्रतिवादी क० पु० विरोधी,
मुद्दाम्नालेह ।

सं० प्रतिविधान भा० पु० कथनो-
पकथन, कहेको कहना, दोबारा
कहना ।

सं० प्रतिवासी (वस्=रहना) क०
पु० परोसी, हमसाया ।

सं० प्रतिबिम्ब (प्रति=पीछा, वा
समान, बिम्ब=छाया) पु० पछाई,
छाया, प्रति-चक्रस ।

सं० प्रति-~~मूर्ति~~ (मूर्ति=मुनना) भा०
मंजूर ।

~~प्रति~~ श्रुत र्म० पु० अङ्गीकृत,
स्वीकृत ।

सं० प्रतिषेध (सिध्=सिद्ध करना)
भा० पु० निषेध, निरोध, मुमानि-
अत, मनअ करना ।

सं० प्रतिष्ठा (प्रति, ण्ठा=ठहरना)
स्त्री० बढ़ाई, गौरव, मान, यश,
आदर, इज्जत, सन्मान, नाम, २
देवता के नये मन्दिर को अथवा
देवता की नई मूर्ति को संस्कारों से
पवित्र करना, स्थापना ।

सं० प्रतिष्ठासूचक (प्रतिष्ठा + सूच=

जताना) क० पु० इज्जत का जा-
हिर करनेवाला ।

सं० प्रतिष्ठित (प्रतिष्ठा) र्म० पु०
नामी, नामवर, प्रतिष्ठावाला, य-
शस्वी, गौरवयुत, सन्मानित, आद-
रित, मुञ्जज्जम, मुकर्रम, गिरामी २
स्थापित, संस्कार किया हुआ ।

सं० प्रतिहत (प्रति, हन्=मारना)
र्म० पु० नष्ट, हर्षहीन, उद्विग्न,
तिरस्कृत, अपमानित ।

सं० प्रतिहार पु० द्वारपाल, डिवडी-
दार, सिपाह, द्वार, दरवाजा,
त्याग, ग्रहण, उपाय ।

सं० प्रनिहारक (प्रति, ह्=हरना)
पु० इन्द्रजाली, मायावी, बाजीगर,
उद्योगी, उद्धारक ।

सं० प्रतीकार (प्रति, कृ=करना)
पु० उपाय, यत्न, तदवीर, चारा ।

सं० प्रतिसर्ग (प्रति, सृज्=पैदा क-
रना) पु० प्रलय, नाश, कयामत ।

सं० प्रतीक्षा (प्रति=हर एक बार,
ईक्ष्=देखना) स्त्री० बाट देखना,
प्रत्याशा, इन्तिजारी, अपेक्षा ।

सं० प्रतीक्षक क० पु० राहदेखने
वाला, प्रत्याशी, मुन्तजिर ।

सं० प्रतीत (प्रति, इण्=जाना)
र्म० पु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामी,
जाना हुआ, सिनासा, हर्षित ।

प्रा० प्रतीत (सं० प्रतीति पु० इण्=
जाना) स्त्री० भरोसा, विश्वास ।

प्रा० प्रतीतकरना बोल० परीक्षा करना, २ भरोसा करना ।

सं० प्रतीति (प्रति + इति) भा० स्त्री० विश्वास, निश्चय, एतमाद, आदर, हर्ष ।

सं० प्रतीप (प्रति + अप्=जाना) गु० प्रतिकूल, नाकर्मावरदार, विपरीत, पु० शत्रु, राजा शंतनु का पिता ।

सं० प्रत्यक्ष (प्रति=साम्मने, अक्ष=आँख) गु० सन्मुख, साम्मने, आगे, प्रकट, प्रसिद्ध ।

सं० प्रत्यय (प्रति=फिर, इण्=जाना) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत, श्रद्धा, एतबार, २ ज्ञान, ३ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु और शब्द के अन्त में जोड़ा जाता है, ह्रस्वमानवी ।

सं० प्रत्याख्यान (प्रति + आख्यान, ख्या=कहना) पु० त्याग, तिरस्कार, खण्डन, तरदीद करना, मनअ करना, रोक देना ।

सं० प्रत्याशा (प्रति=फिर, आशा=आस) स्त्री० आशा, भरोसा, उम्मेद, २ बात देखना, इन्तिजारी, प्रतीक्षा, ३ चाह, इच्छा ।

सं० प्रत्याशी क० पु० मुन्तज़िर, राह देखनेवाला ।

सं० प्रत्याहार (प्रति=फिर, आ=चारों ओर से, ह्=लेना) पु०

व्याकरण में वर्णमाला के दो अथवा अधिक अक्षरों का समूह—जैसे “अइउण्, ऋलृक्” आदि, २ समाधि, योग ।

सं० प्रत्युत्तर (प्रति=पीछा, उत्तर=जवाब) पु० उत्तर का उत्तर, पीछे जवाब ।

सं० प्रत्यूह (प्रति + ऊह=तर्क करना) पु० विघ्न, उपद्रव, हर्ज ।

सं० प्रतीकार (प्रति + कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, उद्धार, निर्वाह, तदवीर, चारा ।

सं० प्रत्येक (प्रति + एक) गु० एक एक, हर एक, अलग अलग ।

सं० प्रथम (प्रथ्=नामवर होना) गु० पहला, प्रधान, उत्तम, मुख्य, आदि, क्रि० वि० पहले, पहलेही ।

सं० प्रथा स्त्री० ख्याति, यश, विस्तार, प्रक्षेप, कीर्ति, नामवरी, पाण्डुकी स्त्री कुन्ती ।

सं० प्रथित (प्रथ्=प्रसिद्ध होना) र्म० पु० ख्यात, प्रसिद्ध ।

सं० प्रद (प्र=वहना, द=देनेवाला, दा=देना) गु० देनेवाला ।

सं० प्रदक्षिण (प्र=प्रारम्भ, दक्षिण=दाहिनी ओरसे) स्त्री० दाहिनी ओर से देवता के चारों ओर फिरना, परिक्रमा, तवाफ ।

सं० प्रदर्शक (प्र=आगे, दर्शक=दिखानेवाला) पु० दिखानेवाला,

शिक्षक, बतानेवाला ।

सं० प्रदर्शनी भा० स्त्री० नुमायश,
शोभा, सजाव ।

सं० प्रदर्शनस्थान धि० पु० नुमाय-
शगाह ।

सं० प्रदान भा० पु० दान, खैरात ।

सं० प्रदीप (प्र=बहुत, दीप्=चम-
कना) पु० दीपक, दिया, चिराग,
सूर्य, प्रकाश ।

सं० प्रदेश (प्र=मुख्य, देश=देस)
पु० मुख्यदेश, मुल्क, जिला, पर-
गना, २ परदेश, दूसरा मुल्क ।

सं० प्रदोष (प्र=प्रारम्भ, दोष=
रात, दुष्=बदलना वा बिगड़ना)
पु० सन्ध्या, सायंकाल, सूर्य ढूँढ़ने
के पीछे दो घड़ीतक का समय,
रजनीम् । सफ़क ।

सं० प्रदोष (प्र=बहुत, दुष्=बदलना,
दोष=काम का बक ।

सं० प्रद्युम्न (प्र=बहुत, द्युम्न=बल,
दिव्=चमकना) पु० कामदेव का
अवतार, श्रीकृष्ण का बेटा ।

सं० प्रधान (प्र=बहुत, धा=रखना)
पु० प्रकृति, माया, २ ईश्वर, ३
मुखिया, राजा का मुख्य मन्त्री
सेनापति आदि, अधिपति, गु०
मुख्य, श्रेष्ठ, बड़ा ।

सं० प्रधी गु० श्रेष्ठ, प्रधान कर्मचारी,
बड़ा बुद्धिमान् मीरमुन्शी, बुद्धि-
युक्त ।

सं० प्रध्वंस (प्र=बहुत, ध्वंस्=नाश
करना) पु० नाश, विध्वंस, हानि,
विनाश, क्षय ।

सं० प्रपञ्च (प्र=बहुत, पचि=फै-
लाना) पु० विस्तार, फैलाव, २
विरोध, विपरीतता, ३ खल, धोखा,
कपट, ठगई, चूक, भूल, ४ सं-
सार, जगत्, माया, दिखाव ।

सं० प्रपा (प्र=बहुत, पा=पान करना)
स्त्री० पनघट, पानी का घर ।

सं० प्रपात (प्र=बहुत, पत=गिरना)
पु० निर्भर, कूल, किनारा, तट-
हीन, पर्वतस्थान, निरवलम्ब, बेस-
हारा, भृगु, पतन, गिरना ।

सं० प्रपितामह (प्र=पैदा हुआ है,
पितामह=दादा (जिससे) वा प्र=
बड़ा, पितामह=दादा) पु० पर-
दादा, २ पुरुखा, ३ ब्रह्मा ।

सं० प्रपूर्ति (पूर्=पूरा करना) स्त्री०
संपूर्णता, तमाम, इत्तिताम ।

सं० प्रपौत्र (प्र=आगे वा उत्पन्न
हुआ, पौत्र=पोता से) पु० पोते का
बेटा, परपोता ।

सं० प्रफुल्ल (प्र=बहुत, फुल्ल=
प्रफुल्लित) विकसना वा फूलना)
गु० फूला हुआ, खिला हुआ,
विकसा हुआ, २ प्रसन्न, आन-
न्दित, हर्षित, ३ चमकता हुआ,
दीप्तिमान् ।

सं० प्रफुल्लवदन (प्रफुल्ल=प्रसन्न,

- षदन=मुँह) गु० जिसके मुँह से
खुशी प्रकट होती हो, जो प्रसन्न
देखा जाय ।
- सं० प्रबञ्चक (वञ्च=छलना) क०
पु० प्रतारक, छली, दगाबाज ।
- सं० प्रबञ्चना भा० पु० प्रतारणा,
छलना ।
- सं० प्रबन्ध (प्र=बहुत अथवा चारों
ओरसे, बन्ध=बाँधना) भा० पु०
बन्दोबस्त, २ काव्य की रचना,
जमक, उपाय, इन्तिजाम, कायदा ।
- सं० प्रबन्धक क० पु० प्रबन्धकर्ता,
मुन्तजिम ।
- सं० प्रबल (प्र=बहुत, बल=जोर)
गु० बलवान्, जोरावर, सामर्थी,
बली, धृष्ट, तीव्र, साहसी ।
- सं० प्रवाल (प्र=बहुत, वल्=काँपना)
पु० नवीन पल्लव, नयापत्ता, २
मूँगा, रक्तवर्ण, वीणादण्ड ।
- सं० प्रबुद्ध (प्र=बहुत, बुध्=जानना)
गु० जागता हुआ, मुचेत ।
- सं० प्रबोध (प्र=बहुत, बुध्=जानना)
पु० ज्ञान, उपदेश, समझ, चेतना,
२ सावधानी, नींद से अथवा
अज्ञानता से जागना वा चैतन्य
होना ।
- सं० प्रबोधन (प्र=बहुत, बुध्=जा-
नना) भा० पु० जगाना, चिताना,
सावधान करना, सिखाना, जत-
लाना, बताना ।
- सं० प्रभञ्जन (प्र=बहुत, भञ्ज=तो-
ड़ना) भा० पु० हवा, पवन,
वायु, विदारण, तोड़ना, टूटना,
गु० विदारक, तोड़नेवाला ।
- सं० प्रा० प्रभञ्जनजाया (सं०
प्रभञ्जन=पवम, प्रा० जाया=पैदा
हुआ) पु० हनुमान् ।
- सं० प्रभञ्जनसुत (प्रभञ्जन+सुत)
पु० हनुमान् ।
- सं० प्रभव (प्रभू=पैदा होना, जिससे)
पु० उत्पत्ति, जन्मकारण, जिससे
पैदा होते हैं, जैसे मां बाप, उत्पत्ति
स्थान, २ जोर, पराक्रम, ३ जन्म ।
- सं० प्रभा (प्र=बहुत, भा=चमकना)
स्त्री० चमक, झलक, ज्योति, जोत,
प्रकाश, दीप्ति ।
- सं० प्रभाकर (प्रभा=प्रकाश, कर=
करनेवाला, कृ=करना) क० पु०
सूर्य, २ चाँद, ३ आग ।
- सं० प्रभात (प्र=बहुत, भा=चम-
कना) पु० भोर, विहान, प्रातः-
काल, फजर, सुबह ।
- सं० प्रभाव (प्र=बहुत, भू=होना)
पु० तेज, प्रताप, बल, शक्ति ।
- सं० प्रभास (प्र=बहुत, भास्=चम-
कना) पु० एक तीर्थ की जगह ।
- सं० प्रभु (प्र=पहले वा बहुत, भू=
होना) पु० नाथ, स्वामी, धनी,
मालिक, पति, पालक, ईश्वर, २
विष्णु, गु० बड़ा, समर्थ, बलवान् ।

सं० प्रभुत्व भा० पु० } (प्रभु)
 प्रभुता भा० स्त्री० } बड़प्पन,
 ईश्वरता, स्वाधीपन, बड़ाई, महत्त्व,
 महिमा, ऐश्वर्य, हकूमत ।
 सं० प्रभृति (प्र=बहुत, भृ=भरना)
 स्त्री० प्रकार, भाँति, २ आदि,
 इत्यादि, और सब ।
 सं० प्रमथ (प्र=बहुत, मथ्=मथना)
 पु० महादेव के एक गण का नाम,
 २ घोड़ा ।
 सं० प्रमथाधिप (प्रमथ + अधिप)
 पु० शिव, महादेव ।
 सं० प्रमदा (प्र=बहुत, मद्=प्रसन्न
 होना, जिसको देख कर) स्त्री०
 स्त्री, नारी, सुलक्षण स्त्री, रूपवती
 नारी, सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री ।
 सं० प्रमा (प्र=बहुत, मा=नापना)
 वि० यथार्थज्ञान, सच्चाज्ञान, ऐसा
 ज्ञान जिसमें किसी तरहका भ्रम
 न हो, प्रमाण, उपमा ।
 सं० प्रमाण (प्र=बहुत, मा=नापना)
 पु० नाप, माप, तौल, अन्दाज़ा,
 परिणाम, २ साख, साक्षी, गवाही,
 सिद्धान्त, सबूत, निश्चय, सच्चा
 ठहराना, निर्णय, निष्पत्ति, ३
 कारण, ४ हद्द, सीमा, ५ उदाहरण,
 दृष्टान्त, ६ ऐसा शास्त्र जिसका
 पवित्र प्रमाण मिले, गु० सच्चा,
 सही, ठीक ठीक, यथार्थ, मानने
 योग्य ।

प्रा० प्रमाणिक (सं० प्रमाणिक)
 गु० भरोसावाला, विश्वासपात्र,
 योग्य, प्रतिष्ठित, पु० सभापति ।
 सं० प्रमातामह (प्र=उत्पन्न हुआ
 है, मातामह=नाना जिससे) पु०
 परनाना ।
 सं० प्रमाथ (मन्थ्=मथना) पु०
 नाश, मरण, विलोडन, मथना,
 विघ्न, हानि ।
 सं० प्रमाद (प्र=बहुत, मद्=मस्त
 होना) पु० नशा, २ मतवालापन,
 मस्ती, उन्मत्तता, पागलपन, ३
 असावधानी, भूल, चूक, असाव-
 धानता ।
 सं० प्रमादी (प्रमाद) क० पु०
 उन्मत्त, बावला, बौढ़हा, २ नशे
 में मस्त, ३ असावधान, अचेत,
 बेहोश, हट्टी, जिद्दी ।
 सं० प्रमित (प्र, मा=नापना) र्म०
 पु० नापा हुआ, मापा हुआ,
 जाँचा हुआ, २ जाना हुआ ।
 सं० प्रमिति स्त्री० यथार्थज्ञान, ठीक
 समझ ।
 सं० प्रमीला (प्र, मील्=नेत्रमीचना)
 भा० स्त्री० तन्द्वा, उनींदा, उत्साह
 शून्य, काहिल ।
 सं० प्रमुख गु० मान्य, प्रधान, मुख्य,
 श्रेष्ठ, मुखिया, सन्मुख, पु० मुनि,
 आरम्भ ।
 सं० प्रमुदित (प्र=बहुत, मुद्=

- प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्ल, खुश ।
- सं० प्रमेह (प्र, मिह=सींचना) पु० धातु बिगाड़ रोग, वीर्य में का रोग यह रोग इक्कीस प्रकार का है, जिरियान ।
- सं० प्रमोद (प्र=बहुत, मुद्=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, आनन्द, सुख, खुशी, हुलास ।
- सं० प्रयत्न (प्र=बहुत, यम्=शान्ति) गु० पवित्र, नियमयुक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, नियत, तैयार ।
- सं० प्रयत्न (प्र=बहुत, यत्=जतन करना) पु० बहुत परिश्रम, लगातार मिहनत, बहुत सावधानी ।
- सं० प्रयाग (प्र=बहुत, यज्ञ=यज्ञ करना) पु० हिन्दुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में “इलाहाबाद” भी कहते हैं जहाँ गङ्गा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट सङ्गम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का सङ्गम धरती के नीचे गुप्त हुआ है उस जगह को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ ब्रह्मा ने शङ्खासुर राक्षस से वेदों को लाकर दश अश्वमेधयज्ञ किये, २ यज्ञ ।
- सं० प्रयाण (प्र=पहले वा दूर वा बहुत, या=जाना) पु० धावा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, प्रस्थान ।

- सं० प्रयास (प्र=बहुत, यस्=जतन करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, थकावट, यतन ।
- सं० प्रयोग (प्र=बहुत, युज्=मिलना) पु० अनुष्ठान, वशीकरण, वशकरना, २ दृष्टान्त, उदाहरण, ३ कारण, प्रयोजन, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, ५ नियुक्त करना, नियत करना, ठहराना, लगाना, इस्तअमाल करना, निदर्शना, उदारण, सूक्ष्म, थोड़ा, अमलदरामद, बर्ताव करना ।
- सं० प्रयोजक क० पु० प्रेरक, प्रेषक, नियोग करनेवाला, लगाने वाला, उपाय करनेवाला ।
- सं० प्रयोजन (प्र=बहुत, युज्=मिलना) पु० कारण, अभिप्राय, मतलब, आशय, मनोरथ ।
- सं० प्ररोह (प्र, रुह=बीजजमना, निकलना) भा० पु० ऊपरजाना, निकलना, चढ़ना, अंकुर ।
- सं० प्रलम्ब (प्र=आगे, लवि=रोकना, ठहराना वा लटकाना) गु० लम्बा, विशाल, नीचे लटका हुआ, बड़ा, पु० एक राक्षस का नाम जिसको बलदेवजी ने मारा ।
- सं० प्रलय (प्र=बहुत वा चारों ओर से, ली=गलना वा मिलना) पु० कल्प का अन्त, जब सारा संसार नष्ट होजाता है, युगान्त ।

सं० प्रलाप (प्र=बहुत, लप्=बो-
लना) पु० वृथा बकवाद, निरर्थक
बात, अनर्थक वाक्य ।

सं० प्रलापी (प्रलाप) क० पु० बहुत
बकनेवाला, वृथाबकनेवाला ।

सं० प्रलोभन (प्र=बहुत वा चारों
ओर से, लुभ्=लुभाना) भा० पु०
मोहन, लुभाव, लोभ, लालच,
फुसलाहट, लुभाना ।

सं० प्रवण (प्रु=चलना) पु० ग-
मन, पशु, नीची जगह, उदर, नम्र,
आयत, गुण, क्षण, प्लुत, स्निग्ध,
चिकना, आसक्त, क्षीण ।

सं० प्रवर (प्र=बहुत, वर=अच्छा,
वृ=पसंद करना) पु० संतान, २
गोत्र, गोत, ३ एक मुनि का नाम
जिसने एक कुल का गोत्र ठह-
रा, ४ उनचास गोत्र में का एक
भोज, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० प्रवर्त्तक (प्र, वृत्=होना, पर,
प्र उपसर्ग के साथ आने से इसका
अर्थ, शुरू करना, आगे बढ़ना,
लगना, इत्यादि होते हैं) क० पु०
आरम्भ करनेवाला, उठानेवाला,
करनेवाला, उभाड़नेवाला, प्रेरक,
लगाहुआ, आदिकर्त्ता, मूलकारक ।

सं० प्रवर्त्तन (प्र + वृत्=काम में
लाना) भा० पु० प्रवृत्ति, आज्ञा-
पन, प्रेरण, प्रेषण, पठावना ।

सं० प्रवर्तित र्म्यं पु० आज्ञापित,

प्रेरित, प्रेषित ।

सं० प्रवर्षण (प्र=बहुत, वृष्=बर-
सना) पु० एक पहाड़ का नाम
जो किष्किन्धापुरी के पास था
उस पर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण
बरसात की ऋतु में रहे थे ।

सं० प्रवास (प्र=दूर, वस्=रहना)
पु० विदेश, परदेश में रहना ।

सं० प्रवामन भा० पु० प्रक्षेप मारण,
देहत्याग, निकारना, भगाना, पर-
देश भेजना ।

सं० प्रवासी क० पु० परदेशी, विदेशी ।

सं० प्रवाह (प्र=बहुत वा लगातार,
वह्=बहना) पु० धारा, बहाव,
सोता, स्रोत ।

सं० प्रवाहक क० पु० गाड़ीवान,
संग्रहणी, दस्त ।

सं० प्रविष्ट (प्र + विश्=घुसना, जाना)
ह० पु० घुसनेवाला, पैठनेवाला ।

सं० प्रवीण (प्र, वीणा, वीन, अर्थात्
जो वीणा बजाके गावे, पर यह पद
रूढ़ है इसलिये इसका असरार्थ ठीक
नहीं लगता) गु० चतुर, निपुण,
बुद्धिमान्, स्थाना, हेमशियार ।

सं० प्रवीणता (प्रवीण) स्त्री० चतु-
राई, निपुणता, स्थानपन, लियाकत ।

सं० प्रबुद्ध (प्र=बहुत, बुध्=ज्ञान)
क० पु० जागृत, जगैया, जगाहुआ ।

सं० प्रवृत्ति (प्र, वृत्=होना) स्त्री०
किसी काममें लगना, २ अभ्यास,

३ समाचार, वार्ता, खबर, ४
प्रवाह, ५ इच्छा ।
सं० प्रवेश (प्र, विश्=घुसना) पु०
घुसना, पैठना, पहुँचना ।
सं० प्रवेशक क० पु० प्रवेशकारी,
घुसनेवाला ।
सं० प्रबोधन (प्र + बुध=समझाना)
भा० पु० समझाना, उपदेश करना ।
सं० प्रबोधक क० पु० समझाने
वाला, प्रवर्जित (व्रज्=चलना) क०
पु० भिक्षुक, फकीर ।
सं० प्रव्रज्या स्त्री० यथाश्रम खान-
काह ।
सं० प्रशंसनीय (प्रशंसा) र्म० पु०
प्रशंसा के योग्य, सराहने योग्य,
स्तुति करने योग्य ।
सं० प्रशंसा (प्र=बहुत, शंसा=सरा-
हना) स्त्री० सराह, बड़ाई, स्तुति,
तारीफ, श्लाघा ।
सं० प्रशंसित { र्म० पु० स्तुत्य,
प्रशंस्य } तारीफ के लायक ।
सं० प्रशमन (प्र=बहुत, शम्=ठण्डा
करना) पु० ठण्डा करना, शान्त
करना, दूर करना, २ मारना ।
सं० प्रशस्त (प्र=बहुत, शम्=सरा-
हना) क० पु० सराहने योग्य, श्रेष्ठ,
प्रशोचित, यथायोग्य, सत्य, योग्य,
उत्तम, बहुत अच्छा, सुफल, अ-
मोघ, समन्वित ।
सं० प्रशस्ति (प्र=बहुत, शम्=स-

राहना) स्त्री० सराह, बड़ाई,
प्रशंसा, तारीफ, अलकाब ।
सं० प्रश्न (प्रच्छ्=पूछना) पु० पूछना,
सवाल, जिज्ञासा, जाननेकी इच्छा ।
सं० प्रश्रय (प्र + श्रि=सेवा करना) पु०
प्रणय, नम्रता, प्रेम, सेवा, आराधन ।
सं० प्रशान्त भा० पु० रफादफा होगया ।
सं० प्रश्रित क० पु० विनीत, आ-
श्रित, निर्भर ।
सं० प्रष्टव्य (प्रच्छ्=पूछना) र्म०
पु० पूछने योग्य ।
सं० प्रष्टा क० पु० जिज्ञासु, प्रच्छक,
पूछनेवाला ।
सं० प्रसङ्ग (प्र=पहले, सञ्ज्=मि-
लना) पु० प्रस्ताव, सङ्गम, मेल,
चर्चा, बात, कथा, सम्बन्ध ।
सं० प्रसन्न (प्र=अच्छी तरह से, सद्=
बैठना) क० पु० हर्षित, आनन्दित,
खुश, २ कृपालु, दयावान्, अनु-
कूल, ३ निर्मल ।
सं० प्रसन्नता (प्रसन्न) भा० स्त्री० हर्ष,
आनन्द, खुशी, २ कृपा, दया ।
सं० प्रसन्नमुख { (प्रसन्न=हर्षित,
प्रसन्नवदन } मुख वा वदन=
मुँह) गु० जिसके मुँह पर खुशी
बरसती हो, प्रसन्न, आनन्दित ।
सं० प्रसर (प्र, सू=जाना) पु० प्रभव,
व्रेग, समूह, युद्ध, प्रेम, फैला ।
सं० प्रसव (प्र, सू=पैदा होना) र्म०
पु० जन्मना, उत्पत्ति, जन्म ।

सं० प्रसाद् (प्र, सद्=जाना वा बैठना) भा० पु० देवता का भोग, देवता का चढ़ाया देवता का नैवेद्य, गुरु की जूठन, २ कृपा, अनुग्रह, प्रसन्नता, ३ निर्मलता, सफाई, फैज, बरकत, तबर्क, तुफैल ।

सं० प्रसादित र्म्यं पु० फैजयाव, अनुगृहीत, मेहरबानी किया गया ।

सं० प्रसाधक क० पु० बनानेवाला ।

सं० प्रसाधन (प्र + साध्=सिद्ध करना) पु० बनाना, सँवारना ।

सं० प्रसाधिका स्त्री० शृङ्गार कराने वाली, वस्त्राभूषणादि पहराने वाली, मशशाता ।

सं० प्रसारण (प्र + सृ=जाना) प्र उपसर्ग से अर्थ बदल गया भा० पु० फैलाना, जारी करना, पसारना ।

सं० प्रसिद्ध (प्र=पहले वा बहुत साधक (प्र=जाना) गु० विख्यात, जाना, यशी, २ प्रकट, प्रकाशित, जाहिर, ३ शोभित, भूषित, सँवारा हुआ, सिंगार किया हुआ ।

सं० प्रसिद्धि (प्र, सिध्=जाना वा पूरा करना) स्त्री० नाम, यश, नाम-वरी, विख्याति, कीर्ति, २ पूराकरना, ३ गहना, आभूषण, ४ प्रकट होना ।

सं० प्रसू (प्र, सू=पैदा होना) स्त्री० माँ, माता, जननी, पोढ़ी, हरणी, लता ।

सं० प्रसूति स्त्री० प्रसव, अपत्य, पुत्र, उदर, माता ।

सं० प्रसूतिका (प्र, सू=पैदा होना)

स्त्री० वह स्त्री जिसके बालक जन्माहो ।

सं० प्रसून (प्र=बहुत, सू=पैदा होना)

पु० फूल, पुष्प, २ फल, गु० जन्मा हुआ, पैदा हुआ ।

सं० प्रस्तर (प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना)

पु० पत्थर, पाषाण, २ रत्न, जवाहिर ।

सं० प्रस्तार भा० पु० फैलाव, तृणका वन, पत्तों की रची शय्या, छन्दों का ग्रन्थ ।

सं० प्रस्ताव (प्र=बहुत, स्तु=सराहना, कहना) पु० अवसर, प्रसङ्ग, प्रकरण, बात, कथा, चर्चा ।

सं० प्रस्तावना भा० स्त्री० भूमिका, दीवाचा, आरम्भ, तमहीद, तजवीज करना, स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा, वर्णन ।

सं० प्रस्ताविक (प्रस्ताव) गु० समयपर, समयानुसार ।

सं० प्रस्तावित र्म्यं पु० प्रारम्भित, विस्तारित ।

सं० प्रस्तुत (प्र=बहुत, स्तु=सराहना)

गु० सराहा हुआ, प्रशंसित, कहा हुआ, २ किया हुआ, पूरा किया हुआ, ३ उद्यत, उतारू, तैयार, उपस्थित ।

सं० प्रस्थ (प्र + स्था=ठहरना) पु० विस्तार, आधसेर ।

सं० प्रस्थान (प्र=आगे वा दूर) पु० ठहरना) पु० गमन, गड्ढा अन्त, अग, प्रदेश,

कूच, युद्धके लिये कूच करना ।
 सं० प्रस्फुटित (प्र + स्फुट् = फूलना) गु० खिला हुआ, फूला हुआ ।
 सं० प्रस्फुरित गु० प्रकाशित, दीप्तिमान्, चमकनेवाला ।
 सं० प्रस्नवण पु० चुआन, बहाव ।
 सं० प्रस्नाव (स्तु = बहना) पु० मूत्र ।
 सं० प्रहर (प्र = बहुत, ह = हरण) पु० दिनका आठवाँ भाग, पहर ।
 सं० प्रहसन् (प्रहस् + अन्, हस = हँसना) भा० पु० हास्य, हँसी, परिहास, व्यङ्ग्य वचन ।
 सं० प्रहस्त (प्र = बहुत, हस्त = हाथ) भा० रावण का बेटा, गु० बड़े अथवा फैले हुए हाथवाला ।
 सं० प्रहार (प्र, ह = लेना, पर, प्र उपसर्ग के साथ आने से मारना अर्थ होता है) भा० पु० चोट, आघात, मार, मारना ।
 सं० प्रहारी (प्रहार) पु० मारने वाला, नाश करनेवाला, घातक, २ दूर करनेवाला ।
 सं० प्रहृष्ट (प्र = बहुत, हृप् = प्रसन्न होना) पु० सन्तुष्ट, तुष्ट, पुष्ट, प्रसन्न ।
 सं० प्रहेलिका (प्र = बहुत, हेल् वा हेल् = अनादर करना) स्त्री० पहेली, दृष्टकूट, गूढ़प्रश्न, श्लेष, बुझवत ।
 • प्रह्लाद (प्र = बहुत, ह्लाद = न्न होना) पु० हिरण्यकशिपु, या, और परमेश्वर का भक्त,

२ हर्ष, आनन्द, खुशी ।
 सं० प्रह (हे = बुलाना) गु० श्रेष्ठ, नम्र, भक्त, विख्यात ।
 अं० प्राईवेटसेक्रेटरी स्त्री० स्वकीय लेखक, जातीमीरमुंशी ।
 सं० प्राक् (प्र = पहले, अच् = जाना) क्रि० वि० पहले, पूर्व, आगे, आदि ।
 सं० प्राकृतन गु० पुराना, पहला, पूर्वदिशा ।
 सं० प्रकार (प्र = चारों ओर, कृ = फैलाना) पु० घेरा, कोटकी भीत, फसील, सफील, गढ़, पकामहल ।
 सं० प्राकृत (प्र = बहुत, अकृत = बुरा काम अथवा ईर्ष्या जिसके मन में हो) गु० नीच, अधम, नीचा, क्षुद्र, सामान्य, २ (प्रकृति) गु० स्वाभाविक, प्रकृतिसम्बन्धी, माया का विकार, ३ पु० एक प्रकारकी भाषा जो संस्कृत से बिगड़ कर बनी है और संस्कृत नाटकों में बहुत जगह लिखी जाती है ।
 सं० प्रागज्योतिषपुर (प्राक् = पहले, ज्योतिष = चमकीला, पुर = स्थान या नगर) पु० कामरूप देश, आसाम का एक भाग और भौमासुरकी पुरानी राजधानी ।
 सं० प्राघुण (प्र + आ, घुण् = घूमना) पु० पाहुन, अभ्यागत, महमान ।
 सं० प्राङ्गण (प्र + अङ्गण) पु०

आँगन, सहन, मृदङ्ग, पखावज ।
 सं० प्राची (प्राक्) स्त्री० पूर्वदिशा ।
 सं० प्राचीन (प्राक्=पहले) गु०
 पुराना, अगला, पहले समय का,
 २ पूर्व दिशा का ।
 सं० प्राचीर (चि=चुनना) पु०
 चहारदीवारी, शहरपनाह, नगर
 का घेरा ।
 सं० प्राज्ञ (प्र=बहुत, ज्ञा=जानना)
 पु० पण्डित, २ (प्रज्ञा) गु०
 बुद्धिमान्, विज्ञ, प्रवीण, चतुर ।
 सं० प्राज्ञमानी (क० पु० विद्या-
 प्राज्ञमन्य) भिमानी ।
 प्रा० प्राडविवाक क० पु० पञ्च,
 न्यायाधीश, अक्षदर्शक, वकील,
 लीडर ।
 सं० प्राण (प्र=बहुत, अन्=जीना
 वा खाना लेना) गु० पु० साँस,
 श्वात, वायु, २ जीव, जीवन, गु०
 प्यारा, प्यारी, प्रिय, प्रिया, प्राण
 पाँच हैं (१ प्राण, २ अपान, ३
 व्यान, ४ समान, ५ उदान) ।
 सं० प्राणनाथ (प्राण=जीवन, नाथ
 प्राणपति) वा पति=स्वामी)
 पु० पति, पीतम, खाविंद, स्वामी ।
 सं० प्राणान्त (प्राण + अन्त) पु०
 प्राण का अन्त, मरना, मरण ।
 सं० प्राणयांत्रा स्त्री० निर्वाह, जी-
 विका, रोजी ।
 सं० प्राणायाम (प्राण=साँस, आ=

चारों ओरसे, यम्=रोकना) भा०
 पु० साँस का रोकना, योगकी एक
 विधि जिसमें नाक के दहिने नथने
 को बन्द करके बाँये नथने से साँस
 को ऊपर खिंचते हैं जइको “पूरक”
 कहते हैं, और फिर दोनों नथनों को
 बन्द करके साँस को भीतर रोकते
 हैं उसको “कुम्भक” कहते हैं,
 और फिर उस साँस को धीरे धीरे
 दाहिने नथने की राहसे निकाल
 देते हैं उसको “रेचक” कहते हैं ।
 सं० प्राणी (प्राण) पु० जीवधारी,
 जीव, जन्तु, गु० प्राणवाला ।
 सं० प्राणीमात्र पु० सब जीव,
 जीवमात्र ।
 सं० प्राणेश (प्राण=जीवन, ईश=
 मालिक या स्वामी) पु० प्राण-
 नाथ, प्राणपति, स्वामी ।
 सं० प्रातः (प्र=पहले, अत्=जाना)
 क्रि० वि० भोर, बिहान, तड़का,
 प्रभात, सबेरा ।
 सं० प्रातःकाल (प्रातर=भोर, काल
 =समय) पु० भोर का समय, बिहान,
 प्रभात, तड़का ।
 सं० प्रातराश पु० प्रभात के भोजन ।
 सं० प्रादुर्भाव (प्रादुस्=प्रकट, भू=
 होना) पु० प्रकट होना, प्रत्यक्ष,
 प्रकाश होना, निकलना, उगना ।
 सं० प्रान्त (प्र + अन्त) पु० अन्त,
 छोर, किनारा, अन्तभाग, प्रदेश,

खण्ड, सूत्र, चारोंतरफ ।

सं० प्रापक (प्र + आप् + अक, आप् = पाना) क० पु० पैदा करना, प्राप्ति करना, हासिल करनेवाला ।

सं० प्राप्त (प्र = बहुत, आप् = पाना) गु० पाया हुआ, मिला हुआ, लब्ध, उचित, वसूल ।

सं० प्राप्ति (प्र = बहुत, आप् = पाना) स्त्री० पाना, लाभ, मिलना, वृद्धि, उदय ।

सं० प्राप्य (प्र = बहुत, आप् = पाना) र्म्यं पु० पानेयोग्य ।

सं० प्रामाणिक (प्रमाण) गु० विश्वासवाला, २ प्रधान, ३ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से सिद्ध, शास्त्रसिद्ध ।

सं० प्रामाण्य (प्रमाण) गु० पु० प्रमाण करने के योग्य, विश्वास के योग्य, प्रमाण, सिद्धान्त ।

सं० प्रायः { (प्र + अग्र = जाना) प्राय } क्रि० वि० बहुधा, कभी कभी, लग भग, फेर फेर, बार बार, बहुत बार, पु० तप ।

सं० प्रायश्चित्त (प्रायस् = तप, चित्त = निश्चय, जैसे—“प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते । तपो निश्चयसंयुक्तं, प्रायश्चित्तमिति स्मृतम्” ॥ अथवा “प्रायः पापं विजानीयात्, चित्तं तस्य विशोधनम्” अर्थात् “प्रायस्” पाप को कहते हैं और “चित्त” उससे

शुद्ध करने को कहते हैं) पु० पाप को दूर करने का साधन, जैसे चान्दायण व्रत आदि ।

सं० प्रारब्ध { (प्र + आ, रब्ध = प्रालब्ध) शुरुआत करना) पु० स्त्री० भाग्य, पूर्वकृत कर्म, कर्म में लिखा हुआ, दैव, योग्य, संयोग, गु० शुरुआत किया हुआ ।

सं० प्रारम्भ (प्र + आ, रम् = शुरुआत करना) पु० आरम्भ, शुरुआत, प्रथम, उपक्रम ।

अं० प्रायमिनिष्टर क० पु० वजीर-आज़म, महामन्त्री ।

सं० प्रार्थक क० पु० याचक, माँगने वाला, मुस्तदर्द ।

सं० प्रार्थना (प्र = बहुत, अर्थ = माँगना वा चाहना) स्त्री० विनती, चाहना, याचना, माँगना, वाञ्छना, परमेश्वर से अपने पापों की माफ़ी चाहना ।

सं० प्रार्थनीय { र्म्यं पु० याचनीय, प्रार्थित } याचित ।

सं० प्रार्थयिता क० पु० चाहने वाला, आशिक, आसक्त ।

सं० प्रावृट् { (प्र = बहुत, वृष् = प्रावृष्) दरसना) स्त्री० वर्षा-प्रावृषा } काल, वर्षा ऋतु, बरसात, जैसे

“प्रावृट् शरद पयोद घनेरे”

“लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे”

(रामायण)

अ० प्राविंश सूबा, खण्ड, प्रान्त ।

अ० प्राविंशनलसर्विस सूबे की नौकरी ।

सं० प्रास (प्र + अस् = फेंकना) पु० भाला, आयुध, फाँसी, क्रोच, त्याग ।

सं० प्रासाद (प्र = अच्छी तरह से, सद् = बैठना) पु० महल, राजभवन, राजमन्दिर, २ देवता का मन्दिर ।

सं० प्रिय (प्री = प्यार करना वा प्रसन्न होना) पु० प्रीतम, पति, स्वामी, भर्त्ता, गु० प्यारा, सनेही ।

सं० प्रियतम (प्रिय = प्यारा, तम = बहुतही बहुत) गु० बहुत प्यारा, अत्यन्त प्यारा, पु० प्रीतम, पति ।

सं० प्रिगभाषण (प्रिय = प्यारा, भाषण = बोलना) पु० प्यार से बोलना, प्यारा बोल, प्यारीबात ।

सं० प्रियंवद क० पु० प्रियवादी, शीरीकलाम ।

सं० प्रियंवदक { (वद् = कहना)
प्रियवक्ता { क० पु० प्रियवादी, शीरीकलाम ।

सं० प्रियवादिनी (प्रिय = प्यारा, वद् = बोलना) गु० स्त्री० प्यारी बात बोलनेवाली, मीठी बात बोलनेवाली ।

सं० प्रियवादी (प्रिय = प्यारा, वद् = बोलना) गु० पु० मीठी और

प्यारी बातें बोलनेवाला, मिष्टभाषी ।

सं० प्रिया (प्रिय) स्त्री० गु० प्यारी स्त्री, भार्या, जोरू ।

प्रा० प्रीत (सं० प्रीति) स्त्री० प्यार, प्रेम ।

प्रा० प्रीतम (सं० प्रियतम) गु० बहुतप्यारा, अत्यन्तप्यारा, पु० पति ।

सं० प्रीति (प्री = प्यार करना वा वृत्त होना) स्त्री० प्यार, प्रेम, सनेह, मोह, दुलार, २ हर्ष, वृत्ति ।

सं० पुष्ट (पुष् = जलाना) र्म० पु० दग्ध, जला ।

सं० प्रेक्षक (प्र + ईक्ष् + अक) क० पु० द्रष्टा, देखनेवाला, नाज़िर ।

सं० प्रेक्षण (प्र + ईक्ष् = देखना) पु० देखना, दर्शन, २ आँख, दृष्टि ।

सं० प्रेक्षणीय (प्र + ईक्ष् + अनीय) र्म० पु० देखने योग्य, दृश्य ।

सं० प्रेत (प्र = दूर, इण् = जाना) पु० भूत, पिशाच, मुर्दा, मृतक, गु० मरा हुआ, मरा ।

प्रा० प्रेतनी (प्रेत) स्त्री० भूतनी, पिशाचनी ।

सं० प्रेम (प्री = प्यार करना वा प्रसन्न होना) पु० प्यार, प्रीति, सनेह, लाड़, दुलार जैसे प्रेम रँगराता = प्रेम में रँगा हुआ, बहुत प्यार में डूबा हुआ ।

सं० प्रेमसागर (प्रेम = प्यार, सागर = समुद्र) पु० प्यार का समंदर, श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध का

हिन्दी भाषा में उल्था, श्रीलल्लू-
जीलाल कवि का किया हुआ ।
सं० प्रेमी (प्रे) गु० प्यार करने
वाला, प्यारा, प्रियतम, सनेही ।
सं० प्रेयान् पु० प्रिय, प्यारा ।
सं० प्रेयसी स्त्री० प्रिया, प्यारी ।
सं० प्रेरक (प्र, ईर्=भेजना) पु०
भेजनेवाला, पठवैया, २ ताकीद
करनेवाला, प्रेरणा करनेवाला ।
सं० प्रेरण पु० { (प्र, ईर्=भेजना)
प्रेरणा स्त्री० } भेजना, २ आज्ञा
करना, ताकीद करना, ३ उभाड़ना ।
प्रा० प्रेरना { (सं० प्रेरण) क्रि० सं०
प्रेरा } भेजना, पठाना, २
उभाड़ना, जैसे
“ धुआँ देखि खर दूषण केरा ”
“ जाइ सुपनखा रावण प्रेरा ”
(रामायण)
प्रा० प्रेरित (प्र + ईर्=भेजना)
क० पु० भेजा हुआ, पठाया हुआ,
प्रेरण किया हुआ, आज्ञा किया
हुआ ।
सं० प्रोक्त (प्र=पहले, उक्त=कहा
हुआ) गु० पहले कहा हुआ ।
अं० प्रेस पु० यन्त्रालय, मतबन्ध ।
अं० प्रेसीड्यन्ट सभापति, मीर-
मजलिस ।
अं० प्रोक्लेमेशन मुनादी, हँठोरा ।
अं० प्रोविनशलक्लब जनपद समूह ।
सं० प्रेषण (प्रेष=जाना) भा० पु०

प्रेरणा करना, पठावना ।
सं० प्रेषित र्म० पु० प्रेरित, भेजा गया ।
सं० प्रोषित (प्र=दूर, वस्=रहना)
गु० जो विदेश में हो, विदेश गया
हुआ, विदेशी ।
सं० प्रोषितपतिका { (प्रोषित +
प्रोषितभर्तृका } पति वा भर्ता=
स्वामी) स्त्री० नायिका जिसका
पति परदेश में हो ।
प्रा० प्रोहित (सं० पुरोहित) पु०
पुरोहित, पुरोधा, कुलगुरु, उपाध्याय ।
सं० प्रोक्षक (प्र=बहुत, उक्ष् + अक,
उक्ष्=सींचना) क० पु० सींचनेवाला ।
सं० प्रोक्षण (प्र + उक्ष् + अण)
भा० पु० सींचना, वध, यज्ञार्थ
पशुको वध करना ।
सं० प्रोक्षित र्म० पु० सिक्त, सींचा गया ।
सं० प्रौढ़ (प्र=बहुत, वह=लेजाना)
गु० बड़ा, मोटा, पूरा जवान, पूरा
बढ़ा हुआ, २ साहसी, ३ निगुण ।
सं० प्रौढ़ा (प्रौढ़) स्त्री० जवान
स्त्री, तीस बरस से ५५ बरस तक
उमर की स्त्री ।
सं० प्रक्ष (प्रक्ष्=खाना) पु० पाकर
वृक्ष, पीपलवृक्ष, २ भोजन, ३ दर-
वाजे की चौखट, बाजू, ४ सात
दीपों में का एक दीप ।
सं० प्रव (प्रु=कूद जाना) क० पु०
ढोंगा, मेंढक, वानर, श्वपच, चा-
ण्डाल, बगुला, सारस ।

सं० प्रवक्त (सु + अक) क० पु० नर्तक,
नाचनेवाला, स्वप्रधारी, नट ।

सं० प्रवक्त (सुवन=कूदना हुआ,
प्रवक्त) सु=कूदना और गम्=
जाना) पु० वानर, बंदर, २ हरिन,
मेढक ।

सं० प्रवक्त पु० मर्कट, वानर, भेक,
मेढक, मृगा ।

सं० प्रीहा (लिह=जाना) स्त्री०
पिलही, तापतिस्त्री ।

सं० प्लुत (सु=कूदना अथवा ऊँचा
जाना) पु० स्वरो का तीसरा भेद
जिसके बोलने में ह्रस्व से तिगुना
समय लगता है, गु० कूदा हुआ,
उछला हुआ ।

सं० प्लुष (सुष्=जलाना) पु० दाह,
जलन, जलन, अग्नि, शोक,
उष्ण ।

सं० ~~प्लुष~~ (सुष् + त) र्म० पु० दग्ध,
जला हुआ ।

सं० प्रोष भा० पु० दाह, जलना ।

सं० प्रोषिता (सुष् + तृ) क० पु०
जलानेवाला या फूंकनेवाला ।

(फ)

सं० फ पु० पकड़, फटकार, वृथावार्ता
साधन, वायु का झकोरा ।

प्रा० फंका पु० मुट्ठी भर चीज जो
एक बार मुँह में डाली जावे ।

प्रा० फंकामारना बोल० मुट्ठी भर
चीज एक बार मुँह में लेजाना ।

प्रा० फँदाना (सं० पश=बाँधना)
क्रि० अ० फँसना, उलझना,
अटकना, बझना ।

प्रा० फँदा (सं० पाश) पु० पाश,
फाँदा (फाँसी, जाल, फँसड़ी,
२ जंजाल, भंभट, कठिनाई ।

प्रा० फँसना (सं० पश=बाँधना)
फसना (क्रि० अ० उलझना,
बझना, पकड़ा जाना, दूसरे के
वश में आना ।

सं० फक्क (फक्=दुराचार) पु० अस-
दाचार, बदचलन, मन्दगति, रिंगना ।

प्रा० फक्कड़ गु० ओवाशरिन्द, बखे-
ड़िया, लड़ाका ।

सं० फक्किका (फक्=बुरा व्यवहार
करना या धीरे धीरे चलना) स्त्री०
फाँकी, तर्क, लपेटकी बात, पेंच,
उलझेड़े की बात, चाल, कपट,
झल ।

प्रा० फगुवा (फागुन) गु० होली
का पर्व अथवा त्योहार ।

सं० फट गु० प्रफुल्लित, विकसित,
खिला हुआ, अव्य० फटकार,
मन्त्रास्त्र ।

प्रा० फटकना (सं० स्फोटन, स्फुट्
=जुदा २ करना) क्रि० स० पछो-
ड़ना, उसाना, जुदा करना, नाज
को पछाटना, छोटना, २ भाड़ना,
३ क्रि० अ० पास जाना, जा
निकलना ।

प्रा० फटकी स्त्री० चिड़ीमार का जाल, २ बड़ा पिंजरा, ३ एक रस्सी जिसकी आवाज से पखे-रुश्रों को डराते हैं ।

प्रा० फटना (सं० स्फटन, स्फट्=फटना) क्रि० अ० चिरना, तड़कना, तार तार होना ।

प्रा० फटिक (सं० स्फटिक) पु० बिजौर का पत्थर, स्फटिक ।

प्रा० फड़ स्त्री० जुवाँ खेलने की जगह, २ वह जगह जहाँ बेचने के लिये माल असबाब रहता है, ३ गाड़ी का ढंडा ।

प्रा० फड़कना { (सं० स्फुट्=फटना फरकना) क्रि०

अ० फड़फड़ाना, धड़धड़ाना, उछलना, हिलना (जैसे आँख का पपोटा) टास मारना, तड़कना, २ बहुत खुश होना ।

प्रा० फड़फड़ाना क्रि० अ० फड़कना, तलफना, हिलना ।

प्रा० फड़िङ्गा पु० भौंगुर, एक प्रकार का पतङ्गा ।

सं० फण (फण्=जाना) पु० साँप का फैलाया हुआ शिर वा टुङ्गी ।

सं० फणधर (फण, धृ=रखना) पु० साँप, सर्प ।

सं० फणिक (फण) पु० साँप, सर्प ।

सं० फणिजभक पु० छोटे पत्ता, मरुवा या दवना ।

सं० फणी (फण) पु० साँप, सर्प ।

सं० फणीन्द्र { (फणी=साँप, इन्द्र फणीश्वर) वा ईश्वर=राजा) पु० सर्पराज, अनन्त, २ वासुकी ।

अ० फण्ड समूह, पुञ्ज, पूँजी, सरमाया ।

प्रा० फनगा (सं० पतङ्ग) पु० टिङ्गा, आँख फोड़ा ।

प्रा० फफसा गु० फूला, पोला, २ फीका ।

प्रा० फफूँदी स्त्री० गीली सड़ी हुई चीज पर एकतरह की सफेद सी तह ।

प्रा० फफोला (सं० स्फोट, स्फुट्=फटना) पु० फुलका, फाला, बाला ।

प्रा० फफोले फूटने बोल० दिल दुख पाना, मन में चिन्ता होना, दुख पाना ।

प्रा० फफोले दिलके फोड़ने बोल० मनकी चाह पूरी करना ।

प्रा० फब { स्त्री० शोभा, सजावट । फबन }

प्रा० फबती कहना बोल० चुटकुला कहना, चुहल करना, किसी के पहरावे की हँसी करना ।

प्रा० फबना क्रि० अ० सोहना, ब्राजना, खुलना, भला लगना, अच्छा लगना, ठीक होना ।

प्रा० फरछा गु० निर्मल, स्वच्छ, २ खरा ।

प्रा० फरफन्द (सं० प्रपञ्च) पु०
झल, कपट, धोखा, दुष्टता ।

प्रा० फरसा (सं० परशु) पु०
कुल्हाड़ी, बसूला ।

प्रा० फरहरा पु० { ध्वजा, पताका,
फरहरी स्त्री० { भंडी का
कपड़ा जो हवा में उड़ता है, गु०
अधसूखा ।

प्रा० फरी (सं० फर, फल्=जाना
वा भेदना) स्त्री० ढाल ।

प्रा० फराना (सं० स्फुरण) क्रि०
अ० हिलना, उड़ना, फहरना
(जैसे भंडा) ।

सं० फल (फल्=फलना, सिद्ध होना
वा भेदना) पु० मेवा, २ काम
की सिद्धि, लाभ, फायदा, प्रयो-
जन, फलाना, परिणाम, नतीजा,
फलाना, ३ वंश, सन्तति, औलाद,
फलफल, बदला, प्रतिकार,
पारितोषिक, ५ बाण के आगे का
लोहा, फाल, ६ (गणित में)
लब्धि, ७ ढाल, फरी, ८ भाले
अथवा तलवार की नोक ।

प्रा० फलपाना बोल० भले या बुरे
काम का पलटा मिलना, बदला
मिलना ।

प्रा० फलफलारी बोल० नाना प्र-
कार के फल ।

प्रा० फलफूल बोल० वनस्पति ।

सं० फलक (फल्=जाना वा भेदना)

पु० ढाल, २ ललाट की हड्डी, ३ मूठि,
तह, परत, कबजा, तख्त, पटेरा ।

सं० फलद (फल, दा=देना) गु०
फलदायक, फल देनेवाला, पु०
वृक्ष ।

सं० फलदाना (फल + दाता)
गु० फल देनेवाला ।

प्रा० फलना (सं० फलन, फल्=
फलना) क्रि० अ० फल लाना,
फल देना, फल लगना, (जैसे वृक्ष
का) २ सफल होना, फलदायक
होना, ३ भाग्यवान् होना, सुखी
होना, फूलना, खशरहना, ४ वंश
बढ़ना ।

सं० फलप्राप्ति (फल + प्राप्ति) स्त्री०
मनोरथ सिद्धि, मतलब पूरा होना ।

प्रा० फलना फूलना बोल० भाग्य-
वान् होना, सुखी होना ।

प्रा० फलबुझावल पु० एक खेल
का नाम जिसको ' मनकेला ' भी
कहते हैं, जैसे-मन में कोई अङ्क
मान लो फिर उसको दूना करो
और उसमें दश जोड़ दो फिर उस
में से पाँच निकाल लो तो बाक़ी
कितना रहा ?-इकीस तो वह अङ्क
आठ है-इत्यादि ।

सं० फलवान् (फल, वान्=वाला)
सफल, सार्थक, फलयुक्त ।

सं० फलश्रेष्ठ पु० आम्रफल ।

सं० फलाध्यक्ष (फल + अध्यक्ष)

पु० खिरिणी या खिन्नी ।
 प्रा० फलांग (सं० लङ्घन, लघ्=
 लाँघना, कूदना) स्त्री० कूद,
 उछलना, डग ।
 सं० फलित (फल्=फलना) र्म्भ०
 पु० फला हुआ. सफल ।
 सं० फलितज्ञ (फलित । ज्ञ=जा-
 नना) क० पु० ज्योतिषी, नज्मी ।
 सं० फलितार्थ पु० तात्पर्य, सिद्धि ।
 प्रा० फली (सं० फल) स्त्री० खीमी
 (जैसे मटर आदि की) ।
 सं० फलेग्रहि (फले + ग्रह=लेना)
 क० पु० फलका लेनेवाला ।
 सं० फलोत्तमा (फल + उत्तमा)
 स्त्री० दाख या मुनक्का ।
 सं० फलोदय (फल + उदय) पु०
 लाभ, प्राप्ति, २ आनन्द, हर्ष ।
 सं० फल्गु (फल्=फल देना) स्त्री०
 एक नदी का नाम जिसके तीर पर
 गया नाम शहर बसता है, २ एक
 प्रकार का अंजीर का पेड़, ३
 गुलाल, ४ असार ।
 प्रा० फहराना (सं० स्फुरण, स्फुर्=
 फराना) हिलना) क्रि० अ०
 उड़ना, लहराना, हिलना (जैसे
 झंडा) ।
 प्रा० फाँक स्त्री० ठुकड़ा, चकती,
 ककड़ी आदि फल का ठुकड़ा ।
 प्रा० फाँकना क्रि० सं० फंका मारना ।
 प्रा० फाँकी (सं० फक्किका) स्त्री०

लपेट की बात, उलझेड़ की बात,
 तर्क, फक्किका ।
 प्रा० फाँदना (सं० फालन, फल्
 =उछलना) क्रि० सं० कूदना,
 उछलना, लाँघना ।
 प्रा० फास स्त्री० बाँस आदि का
 बहुतही छोटा ठुकड़ा, अथवा काँटा
 अथवा सींक ।
 प्रा० फाँसी (सं० पाश) स्त्री० फंदा,
 फँसड़ी, एक रस्सी जो गले में डाल
 कर खींच लेतेहैं तो गरदन की रग
 दब कर आदमी मरजाता है !
 प्रा० फाँसी देना बोल० गला द-
 बाना, मारडालना, फाँसी पर च-
 डाना या लटकाना ।
 प्रा० फाँसी पड़ना बोल० फाँसी
 दिया जाना, मारा जाना, लट-
 काया जाना ।
 प्रा० फाँसीलगाना बोल० गला
 घोंटना, गला दबाना, मारडालना ।
 प्रा० फाग (सं० फल्गु) पु० होली में
 गुलाल आदि, २ होली के खेल ।
 प्रा० फागखेलना बोल० अवीर
 उड़ाना, होली खेलना ।
 प्रा० फागुन (सं० फाल्गुन) पु० बार-
 हवां हिन्दी महीना ।
 प्रा० फाटक पु० बड़ादरवाजा, द्वार,
 किवाड़, २ रोक, अटकाव ।
 प्रा० फाड़ना (सं० स्फाटन) क्रि०
 सं० चीरना, ठुकड़े २ करना ।

प्रा० फाड़खाना बोल० भँभोड़ना,
२ सताना, ३ बहुत क्रोध करना ।

अ० फारेनसेक्रेटरी विदेशीय व्या-
पारियों के मन्त्री ।

सं० फाल (फल्=फाड़ना) पु० नोक-
दार लोहा जो हल में लगाया
जाता है ।

प्रा० फालसा पु० एक फल का नाम ।

सं० फाल्गुन (फाल्गुनी एक नक्षत्र
का नाम) पु० फागुन, इस महीने
में पूनौंके दिन “ पूर्वाफाल्गुनी ”
नक्षत्र होता है ।

प्रा० फावड़ा पु० धरती खोदकर
मिट्टी फेंकने या उठाने का एक
औजार ।

प्रा० फाहा रूई का पहल अथवा
छोटा गाला, २ वह कपड़ा जिस
पर धातु लगाकर घावपर
बंधा है ।

प्रा० फिकारना क्रि० स० शिर
नंगा करना ।

प्रा० फिट पु० फिटकार, सराप,
क्रि० वि० झीझी ।

प्रा० फिटफिट बोल० धिक्धिक्,
झीझी ।

प्रा० फिटकार स्त्री० गाली, सराप ।

प्रा० फिटकारना क्रि० स० धिक्का-
रना, सरापना, झीझी करना ।

प्रा० फिर समुच्च० पीछे, पुनि,
इसके बाद ।

प्रा० फिरकी (फिरना) स्त्री० फिरनी,
चकई, एक खिलौने का नाम ।

प्रा० फिरना (शायद सं० परिक्रम
से) क्रि० अ० घूमना, चक्करखाना,
पलटना, टहलना, चलना, भटकना,
रमना, भ्रमण करना, बलवाकरना ।

प्रा० फिरजाना बोल० पलटना,
२ बलवा करना, बागी होना, ३
ऐंठना, बलखाना, ४ टेढ़ा होना ।

प्रा० फिल्ली स्त्री० पिंडली, टँगड़ी ।

प्रा० फिसलना क्रि० अ० खिसलना,
डिगना, रपटना, खिसकना, उलट
जाना, लुढ़कना, गिरना, लड़-
खड़ाना ।

प्रा० फींचना क्रि० स० धोना,
साफ करना, खँघालना ।

प्रा० फीका गु० बेस्वाद, बेनमक,
मीठा, २ पीला, बदरंग, कमरंग,
३ हलका, (जैसे रंग) ।

प्रा० फुंकार (सं० फुत्कार, फुत्=
ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री०
साँप के साँस लेने का शब्द,
फुफकार, फुस्कार ।

प्रा० फुंहार स्त्री० मेह की छोटी २
बूँदें, फुही, फोंहार ।

प्रा० फुंहारा (फुंहार) पु० फव्वारा ।

प्रा० फुकना पु० मूत्राधार, थैली ।

प्रा० फुट (सं० स्फुट) गु० अलग २,
भिन्न, विषम, अयुग्म ।

प्रा० फुटकर (सं० स्फुट=अलग २

होना) गु० भिन्न, फुट, अयुग्म,
विषम, अलग २, एक एक ।
प्रा० फुदकना क्रि० अ० कुदकना,
उबलना, कूदना ।
प्रा० फुनगी स्त्री० कली, कौपल,
मञ्जरी, अङ्कुर ।
प्रा० फुनसी स्त्री० छोटा फोड़ा ।
प्रा० फुप्फा पु० फुफ्फी का पति ।
प्रा० फुफ्फी स्त्री० बाप की बहिन ।
प्रा० फुफकार स्त्री० फुन्कार, फुत्कार ।
प्रा० फुफेरा } गु० फुफ्फी का जैसे
फुफेरी } फुफेरा भाई=फुफ्फी
का बेटा, फुफेरी बहिन=फुफ्फी
की बेटी ।
प्रा० फुर गु० सच, सच्चा, ठीक, यथार्थ ।
प्रा० फुरफुराना (सं० स्फुर=हिलना) क्रि० अ० काँपना, हिलना ।
प्रा० फुर्ते } (सं० स्फूर्ति, स्फुर=
फुर्ती } हिलना) स्त्री० जल्दी,
चटपटी, शीघ्रता, वेगता, चालाकी ।
प्रा० फुर्तीला (फुर्त) गु० चालाक,
चटपटिया, जल्दबाज ।
प्रा० फुलका (सं० फुल्ल=फूलना)
गु० फूला हुआ, २ हलका, पु०
फफोला, बाला, ३ पतली रोटी ।
प्रा० फुलकारी (सं० फुल्लाकार,
फुल्ल=फूल, आकार=ढौल) स्त्री०
एक प्रकार का कपड़ा जिस पर
फूलनिकले होते हैं, नैनू, जामदानी ।
प्रा० फुलझड़ी स्त्री० एक तरह की

आतशबाजी ।
प्रा० फुलवारी } (सं० फुल्लवाटी,
फुलवाड़ी } फुल्ल=फूल, वाटी
=वाड़ी) स्त्री० पुष्पवाटिका, फूलों
का बगीचा ।
प्रा० फुलेल (सं० फुल्लतैल) पु०
सुगन्धित तेल, फूल का तेल ।
प्रा० फुलौरी स्त्री० पकौड़ी ।
सं० फुल्ल पु० पुष्पयुक्त वृक्ष, विक-
सना, खिलना, हर्ष ।
प्रा० फुल्ली (सं० फुल्ल) स्त्री० एक
आँख की बीमारी जिससे आँख में
एक सफेद बुन्दा सा हो जाता है ।
प्रा० फुसफुसाना क्रि० अ० काना-
फूसी करना, कानाकानी करना ।
प्रा० फुसलाना क्रि० स० दिलासा
देना, भुलाना, भ्रष्टा देना,
धोखा देना, बहकाना, दमदेना,
बहलाना ।
प्रा० फूँक (फूँकना) स्त्री० दम, साँस ।
प्रा० फूँकदेना बोल० आगलगा देना ।
प्रा० फूँकना (सं० फुत्कार) क्रि०
स० मुँहसे हवा निकालना, २ आग
लगाना, जलाना, सुलगाना, ३ ब-
जाना (जैसे तुरही, सींगी आदि) ।
प्रा० फूँकफूँककर पाँव धरना
बोल० बहुत सावधानी से काम
करना या रहना ।
प्रा० फूँकारना (सं० फुत्कार) क्रि०
अ० फनफनाना, फुंकार मारना,

फुत्कारना (जैसे साँप का) ।

प्रा० फूँही } स्त्री० छोटी छोटी मेह
फोंहार } की बूँदें, भीसी, मन्द
फूहार } मन्द वर्षा ।

प्रा० फूट (सं० स्फुटि, स्फुट्=फूटना
वा टूटना) स्त्री० एक तरह की
ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, २ (स्फुट)
बिगाड़, वैर, विरोध, बखेड़ा, भग-
गड़ा, असम्मति, अनमेल, ३ जुदा
होना, अलगाव, बिलगाव, ४
खण्डन, टूट, सँध, दरार ।

प्रा० फूटपड़ना बोल० बखेड़ा
मचना, विरोध होना, भगड़ा
उठना, बीच पड़ना ।

प्रा० फूटफूटकररोना बोल० उमँड
उमँड कर रोना, बहुत रोना ।

प्रा० फूटहोना बोल० किसी की
सम्मति नहीं मिलना, एक मता
न होना ।

प्रा० फूटरहना बोल० अलग हो-
जाना ।

प्रा० फूटना (सं० स्फुटन, स्फुट्=
फूटना) क्रि०अ० टूटना, २ बिभ्र
भिन्न होना, बिखरना, अलग
होना, ३ फटना, चिरना, ४ उ-
ठना, फैलना (जैसे सुगन्ध), ५
कलीका खिलना, ६ भेद खुल
जाना, ७ बैरी से मिलजाना ।

प्रा० फूटीस्नेहें पर काजल न सहें
कदाञ्चित—थोड़ी घटी नहीं सहना

और सबका सब नुकसान सहना ।

प्रा० फूफा पु० फूफी का पति ।

प्रा० फूफी } स्त्री० बाप की बहिन ।
फूफू }

प्रा० फूल (सं० फुल्ल, फुल्स्=फूलना)
पु० पुष्प, पुट्टप, कुसुम, सुमन, २
स्त्री का रज, निहानी, ३ मुर्दे की
हड्डियाँ जो जल जाने के पीछे चुनी
जाती हैं, ४ एक प्रकार का काँसा
जो बहुत साफ और सफेद होता है,
५ फुलाव, सूज, गु० बहुत हलका ।

प्रा० फूलजाना बोल० सूजजाना,
२ प्रसन्न होना, आनन्दित होना, ३
मोटा होना ।

प्रा० फूलभड़ना बोल० सुन्दरताई
से बोलना, मीठा बोलना, २ दीपक
से जलेहुए तेल के टपकों का गिरना ।

प्रा० फूलपड़ना बोल० आग लग-
जाना, जलजाना ।

प्रा० फूल बैठना बोल० खुश होना,
प्रसन्न होना, हर्षित होना, बहुत
प्रसन्न होकर बैठना ।

प्रा० फूलगोबी स्त्री० गोबी, करम-
कल्ला ।

प्रा० फूलना (सं० फुल्लन, फुल्स्=
फूलना) क्रि०अ० खिलना, विक-
सना, दहदहाना, २ प्रसन्न होना,
खुश होना, हुलसना, नीरोग र-
हना, बढ़ना, पनपना, फलना, ३
सूजना, मोटा होना, वायु से भरना,

वायुसे फूलना, ४ घमंड करना ।
 प्रा० फूलताफिरना बोल० अत्यन्त प्रसन्न होना ।
 प्रा० फूला (सं० फुल्ल) गु० फूला हुआ, सूजा हुआ, २ खिला हुआ, विकसा हुआ, डहडहा हुआ ।
 प्रा० फूलानसमाना बोल० मगन होना, अत्यन्त आनन्दित होना, आनन्द से फूल जाना ।
 प्रा० फूस पु० सड़ा और सूखा घास ।
 प्रा० फूस में चिनगारी डालना बोल० बखेड़ा मचाना, झगड़ा उठाना ।
 प्रा० फूहड़ गु० अनसीखी, मूर्ख, घामड़, भोंड़ी (यह शब्द स्त्री के लिये बोला जाता है) स्त्री० मैली कुचैली स्त्री ।
 प्रा० फूहा पु० रुईका फाहा जिस को दूध में भिगो कर बच्चे के मुँह में निचोड़ते हैं जब कि बच्चा अपनी मां की चूची से दूध नहीं पीसकता हो ।
 प्रा० फेंकना (सं० क्षेपण, क्षिप्= फेंकना) क्रि० स० डालना, बीगना, दूर गिराना, अलग करना, बगभूट दौड़ाना, (घोड़े को) सरपट जाना ।
 प्रा० फेंकदेना बोल० दूर गिरा देना ।
 प्रा० फेंट स्त्री० कमरबन्द, पटका, फेंट स्त्री० कटिबन्ध ।
 प्रा० फेंट बाँधना बोल० किसी काम के करने के लिये तैयार होना, ठा-

नना ठहराना, कमर बाँधना ।
 प्रा० फेंटा स्त्री० कमरबन्द, फेंटा स्त्री० २ छोटी सी पगड़ी ।
 सं० फेन (स्फाय=बढ़ना) पु० भाग, कफ, फेना, समुद्रफल ।
 सं० फेनावाहिन् पु० जल, रस, दुग्ध, दूध, समुद्र ।
 प्रा० फेनी (सं० फेन) स्त्री० एक भाँति की मिठाई ।
 सं० फेर पु० शृगाल, गीदड़ ।
 प्रा० फेर (फेरना) पु० घुमाव, बाँका, चकर, पेंच, २ तबदील, बदली, विकार, ३ बुरे दिन, बुरा भाग, अभाग्य, ४ कठिनता, ५ दूरी, क्रि० वि० दूसरीवार, पीछा, फिर, उलटा ।
 प्रा० फेरखाना बोल० घूमना, चकर खाना, २ दुखपाना, तकलीफ उठाना ।
 प्रा० फेरदेना बोल० उलट देना, पीछा दे देना, लौटा देना ।
 प्रा० फेरपड़ना बोल० फरक पड़ना, बीच रहना, २ चकर पड़ना, दुःख होना ।
 प्रा० फेरफार बोल० झल, फरेब, धोखा, दगा, २ ओसरा, ओसरी, परस्पर फेराफेरी ।
 प्रा० फेरफार करना बोल० बदल करना, परिवर्तन करना, २ कपट करना, धोखा देना ।
 प्रा० फेराफेरी बोल० आपस में किसी चीजको लेना और पीछे देना ।

प्रा० फेरना क्रि० स० उलटना,
घुमाना, लौटाना, पीछा दे देना,
हटाना, दूर करना, २ पोतना
(जैसे चूना, कलई आदि) ।

प्रा० सिरपरहाथफेरना बोल० फु-
सलाकर ठगना ।

प्रा० हाथ फेरना बोल० प्यार करना,
दुलार करना, छोह करना ।

फ्रा० फेअल } काम, क्रिया ।
फेल }

सं० फेलक (फेल् + अक, फेल =
जाना) क० पु० उच्छिष्ट, जूठ ।

सं० फेलन भा० पु० फेंकना ।

सं० फेलित र्म्य० पु० फेंका हुआ ।

अं० फेलोज म्यम्बर, अङ्ग ।

प्रा० फैलना क्रि० अ० बिखना,
पसरना, बिथरना, बिखरना, २
चौड़ा होना, ३ ससिद्ध होना ।

प्रा० फैलाना क्रि० स० बिखाना,
पसराना, बिखराना, २ खोल देना,
३ चौड़ा करना, ४ प्रसिद्ध करना,
प्रकट करना, ५ हिसाब करना ।

प्रा० फैलाव पु० प्रचार, बिछाव,
पसराव, चौड़ाई ।

प्रा० फौफी स्त्री० नली, छूड़ी, २
पोली चीज ।

अं० फोटो प्रतिबिम्ब, अक्स ।

अं० फोटोग्राफर चित्रलेखक,
मुसव्विर ।

प्रा० फोड़ना (सं० स्फोटन, स्फुट =

फटना) क्रि० स० तोड़ना, फाड़ना,
चीरना, टुकड़े २ करना, २ प्रकट
करना, भेद खोल देना ।

प्रा० फोड़ा (सं० स्फोटक, स्फुट =
फूटना) पु० घाव, जखम, फुनसी ।

प्रा० फोला पु० फफोला, बाला ।

फ्रा० फौरन् क्रि० वि० सद्यः, तुरन्त,
उसीदम, तत्काल, तत्क्षण ।

अं० फ्रीटेड स्वाधीन, परदेशीय,
वाणिज्य ।

(व)

सं० व पु० वरुण, २ घड़ा, ३ समुद्र,
४ पानी ।

प्रा० बंकाई (सं० वङ्गता, वङ्ग, वकि
= टेढ़ा होना) भा० स्त्री० टेढ़ापन,
टेढ़ाई, तिरछापन, बाँकापन, फेर,
घुमाव ।

प्रा० बंगड़ी स्त्री० स्त्रियों के हाथ में
पहनने का एक गहना ।

प्रा० बंगला पु० एक तरहका मकान
जो चारों ओर से खुला रहता है,
२ (सं० वङ्ग) एक तरह का पात,
३ बंगाली बोली ।

प्रा० बंगाला (सं० वङ्ग) पु० बंगाल
देश का नाम ।

प्रा० बंगाली (सं० वङ्ग) पु० बं-
गाले का रहनेवाला, स्त्री० बंगाले
की बोली ।

प्रा० बंचना (सं० वचन, वच् =
कहना) क्रि० स० पढ़ना, बाँचना ।

प्रा० बंदनवार (सं० बन्ध=बाँधना, और वार=दरवाजा) स्त्री० फूल और प्रती की माला जो ब्याह अथवा कोई उत्सव और पर्व के दिन दरवाजे पर बाँधते हैं ।

प्रा० बंदर (सं० वानर) पु० एक जानवर जिसका डील, डौल और बुँह आदमी से बहुत मिलता है ।

प्रा० बंदरकीसी आँख बदलना बोल० तुरत रिसाना, जल्द गुस्से में होना ।

प्रा० बंदरकी तरह नचाना बोल० बड़ा कठिन काम करवाना ।

प्रा० बंदर क्या जाने अंदरक का स्वाद कहावत-मूर्ख आदमी अच्छी चीजों का गुण नहीं जानता ।

प्रा० बंदवा (सं० बन्ध=बाँधना) बँधुवा पु० कैदी ।

प्रा० बंदी (सं० वन्दी, वदि=सराहना वा भुकना, नमस्कार करना) पु० बँधुवा, कैदी, २ भाट ।

प्रा० बंदी स्त्री० स्त्रियों के ललाट पर पहनने का एक गहना, बन्दिद्या ।

प्रा० बंदीगृह (सं० वन्दीगृह, वन्दी=कैदी, गृह=घर) पु० जेलखाना, कैदखाना, कारागार ।

प्रा० बंदीजन (सं० वन्दी + जन) पु० भाट, चारण, यशस्वाननेवाले ।

प्रा० बंदोड (सं० बंध=बाँधना) स्त्री० दासी, लौड़ी, बाँदी ।

प्रा० बक (सं० वक, वकि=देका होना) पु० बगुला ।

प्रा० बकध्यानलगाना बोल० पाखण्ड करना, काट करना ।

प्रा० बक (सं० वाक्) स्त्री० बकवाद, बकबक, गपसप, बड़बड़ाहट, भक, गुलगपाड़, वृथा बातें ।

प्रा० बक भक बोल० बकबक, गपसप, बकवाद, वृथा बातें ।

प्रा० बकभककरना (बोल० टेंटे बकबककरना) करना, चैचै करना, बकबक करना, बकवाद करना, बड़बड़ाना, वृथाबकना ।

प्रा० बकलगाना बोल० हूहा करना, गुल मचाना, हुल्लड़ करना ।

प्रा० बकना (सं० वाक्) क्रि० अ० बड़बड़ाना, बकभक करना, हुल्लड़ करना, गुल मचाना ।

प्रा० बकरा (सं० वर्कर, वृक्=लेना) पु० छागल, अज ।

प्रा० बकरी स्त्री० खेरी, अजा ।

प्रा० बकला (सं० वल्कल, बल बकल) =ढकना स्त्री० बाल, बिलका, पोस्त ।

प्रा० बकवाद (बक=बड़बड़ाहट, और वाद=भगड़ा) स्त्री० बकबक, बकभक, वृथा बातें ।

प्रा० बकवादी (बकवाद) पु० भक्की, बक्की, बकवाद करनेवाला ।

प्रा० बकासुर (सं० बक=बगुला,

असुर=राक्षस) पु० एक राक्षसका नाम जो बगुला बनकर श्रीकृष्ण के मारने को गया था उसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

प्रा० बकिया स्त्री० छूरी, चकू ।
सं० बकी स्त्री० पूतना राक्षसी का नाम ।

प्रा० बक्की (बकना) गु० गप्पी, भक्की, बकवादी, (सं० बक्का) ।

प्रा० बकदन्त (सं० बक्र=बाँका, दन्त=दाँत) पु० शिशुपाल के भाई का नाम ।

प्रा० बखान (सं० व्याख्यान) पु० वर्णन, व्याख्या, बयान, स्तुति, सराह ।

प्रा० बखानना { क्रि० स० सरा-
बखानकरना { हना, स्तुति कर-
ना, तारीफ करना, वर्णन करना ।

प्रा० बखाना पु० { अनाज रखने
का भण्डार ।

प्रा० बखिया पु० एक तरह का टाँका, मजबूत टाँका, दृढ़ सीवन ।

प्रा० बखेड़ा पु० भगड़ा, लड़ाई, दंगा, रौला ।

प्रा० बखेड़ा चुकाना बोल० भगड़ा मिटाना ।

प्रा० बखेड़ा मचाना बोल० दंगा करना, बलवा करना ।

प्रा० बखेड़िया क० पु० भगड़ालू, लड़ाँका, दंगई ।

प्रा० बखेरना (सं० विकीर्ण, वि, कृ=बिखरना) क्रि० स० फैलाना, अलग २ करना, छिटकना, छितराना, बिथराना, छींटना ।

प्रा० बग (सं० बक) पु० बगुला ।

प्रा० बगछूट (बग=बागडोर, छूट=छुटना) स्त्री० सरपट, धावा ।

प्रा० बगछूटदौड़ना बोल० सरपट जाना, तेज दौड़ना ।

प्रा० बगला { (सं० बक) पु० एक
बगुला } जलका जीव, बग ।

प्रा० बगलाभक्त बोल० कपटी, छली, पाखण्डी, कपटधर्मी, फरेबी ।

प्रा० बगलामारे पंख हाथआये कहावत—गरीब को दुःख देने से बहुत लाभ नहीं होता है ।

प्रा० बगार पु० चरागाह, रमना, दस्तुतों की कतार, बाग ।

प्रा० बगूला (बाव अथवा बागुसे) पु० हवाका चक्र जिसमें धूल ऊँची उठती है बवण्डर, चक्रवात ।

प्रा० बघार पु० छौंकना, घी और कुछ मसाला गर्म करके दाल आदि तरकारियों में डालना ।

प्रा० बग्घी { स्त्री० एक तरह की
बग्गी } अँगरेजी गाड़ी जिसमें घोड़ा जोता जाता है ।

प्रा० बघेला (बाघ) पु० एक जाति के राजपूत, २ बाघ का बच्चा ।

प्रा० बच (सं० बचस्, वच्=बो-

लना) पु० वचन, वाक्य ।

प्रा० बचकाना (फा० बच्चासे) गु०
छोटा, पु० कथकला लड़का, २ छोटा
जूता, बच्चों का जूता ।

प्रा० बचत स्त्री० शेष, बाकी, बकिषा,
बकाया, अवशेष ।

प्रा० बचन (सं० वचन) पु० बात,
वाक्य, कहना, २ कौल, करार, पण,
होड़, शर्त ।

प्रा० बचनचूक बोल० अविश्वासी,
बेएतबार ।

प्रा० बचनछोड़ना बोल० वचन
तोड़ना, कौल छोड़ना ।

प्रा० बचनतोड़ना बोल० कही हुई
बात से फिर जाना, शर्त से फिर
जाना ।

प्रा० बचनदेना बोल० पक्का कौल
करना, पण करना, प्रतिज्ञा करना ।

प्रा० बचननिभाना या पालना
बोल० कहेको पूरा करना, अपनी
बात पर पक्का रहना ।

प्रा० बचनबन्धकरना बोल० वचन
लेना, इकरार करना ।

प्रा० बचनबन्धहाना बोल० वचन
देना ।

प्रा० बचनमानना बोल० बात
मानना, आज्ञा पालन करना ।

प्रा० बचनलेना बोल० इकरार
करना ।

प्रा० बचनहारना बोल० मानलेना,

इकरार कर लेना ।

प्रा० बचना क्रि० अ० रक्षापाना,
२ अलग रहना, ३ बाकी रहना ।

प्रा० बचपन भा० पु० लड़कपन,
लड़काई ।

प्रा० बचाना क्रि० स० रक्षा करना,
रखवाली करना, २ जवाब देना,
उत्तर देना ।

प्रा० बचाव भा० पु० रक्षा, रखवाली,
उद्धार, २ हिमायत, आश्रय ।

प्रा० बच्चा (सं० वत्स और फा० बच्चा)
पु० छोटा लड़का वा लड़की, २
छोटी उमर का जानवर ।

प्रा० बछड़ा (सं० वत्स) पु० गाय
बछड़ू का बच्चा ।

प्रा० बछिया स्त्री० गाय की बछड़ी ।

प्रा० बछेरा (वत्स) पु० घोड़े का बच्चा ।

प्रा० बच्छ (सं० वत्स) गु० लाल,
प्यारा, पु० बच्चा, लड़का, २ बछड़ा ।

प्रा० बच्छल (सं० वत्सल) क० पु०
प्यारा, छोही, प्रेमी, दयालु, कृपालु ।

प्रा० बच्छासुर (सं० वत्स = बछड़ा,
असुर = राक्षस) पु० एक राक्षस जो
कंस के कहने से बछड़ा बनकर
श्रीकृष्ण के मारने को गया था ।

प्रा० बजना (सं० वाद्य, वद् = शब्द
करना) क्रि० अ० शब्द वा स्वर
निकलना ।

प्रा० बजन्त्री (सं० वाद्य = बाजा,
यन्त्री = बजानेवाला) पु० बाजा,

बजानेवाला समाजी ।

प्रा० बजरबण्ट पु० एक जङ्गली फल का नाम जो रीछ नचानेवाले बच्चों के लिये देते हैं इस लिये कि बुरी नज़र नहीं लगे ।

प्रा० बजरा पु० बड़ी नाव जिस पर बैठ कर बड़े आदमी नदी की सैर करते हैं ।

अ० बजघट स्त्री० आय व्यय का लेखा, आमदनी और खर्च का हिसाब ।

प्रा० बज्र (सं० वज्र, वज्र=जाना) पु० इन्द्र का अस्त्र, बिजली, गाज, २ हीरा, गु० कड़ा, कठिन ।

प्रा० बजरङ्ग (सं० वज्राङ्ग, वज्र + अङ्ग अर्थात् जिसका शरीर वज्रसा कड़ा है) पु० हनुमान् का नाम, मह

प्रा० बज्र पु० एक प्रकार का तलक जो हनुमान् के भक्त निकालते हैं ।

प्रा० बभ्राना क्रि० स० फँसाना, उलभाना, पकड़ा जाना ।

प्रा० बटखरा (सं० वण्टक, वण्ट=बाँटना) पु० बाँट, तौलनेका तौला ।

प्रा० बटन स्त्री० बूताम, २ समेट, शिकन ।

प्रा० बटना (सं० वट्=लपेटना) क्रि० स० बलदेना, पैंठना, २ (वट्=बाँटना) पाना, ३ क्रि० अ० बाँटा जाना, हिस्सा होना ।

प्रा० बटपाड़ } (बाट=रस्ता, पाड़-
बटपार } ना=गिराना अर्थात् लूटना) पु० लुटेरा, डाकू ।

प्रा० बटलोही स्त्री० एक तरह का वस्त्र जिसमें दाल भात आदि पकाते हैं, बटुवा, भरतिपा, पतेली ।

प्रा० बटवार (सं० वट्=बाँटना) पु० कर उगाहनेवाला ।

प्रा० बटवारा (सं० वट्=बाँटना) पु० बाँट, भाग, अंश ।

प्रा० बटाऊ (बाट) पु० बटोही, मुसाफिर, राही, पथिक, २ बटपार ।

प्रा० बटुवा } (सं० वट्=धेरना) पु०
बटवा } कपड़े की एक छोटी धैली, २ बटलोही ।

प्रा० बटेर (सं० वर्तक, वृत्=होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम ।

प्रा० बटोरना क्रि० स० इकट्ठा करना, चुनलेना ।

प्रा० बटोही (बाट) गु० मार्ग, मुसाफिर, रस्ते चलनेवाला ।

प्रा० बट्टा पु० जो कुछ सिके के बदलने के समय दिया जावे, २ कमी, घटी, ३ कलङ्क, दोष, दाग, ४ गोला, (लकड़ी का पत्थर का) ५ डिब्बा ।

प्रा० बट्टाढाल गु० बराबर, सपाट ।

प्रा० बट्टालगना बोल० दागलगना, कलङ्क लगना ।

प्रा० बड़ } (सं० वट) पु० एकवृक्ष
बर } का नाम जिसकी छाया

गहरी और बड़ी चौड़ी होती है,
बरगद ।

प्रा० बड़ गु० बड़ा ।

प्रा० बड़बोला बोल० शेखीबघारने
वाला ।

प्रा० बड़भकुवा बोल० मूर्ख ।

प्रा० बड़पेटा बोल० बहुतखानेवाला ।

प्रा० बड़ना क्रि० अ० घुसना, पैठना ।

प्रा० बड़बड़ाना क्रि० स० मुँहही
मुँहमें कुञ्ज कहना, कुड़कुड़ाना, बक-
बक करना ।

सं० बड़वा (बड़=बल, वा=जाना)
स्त्री० ब्राह्मणी, सूर्यकी स्त्री जिससे
अश्विनीकुमार हुए हैं, कुम्भदासी,
अश्विनी, घोड़ी ।

सं० बड़वाकृत } पु० दासीपुत्र,
बड़वाहत } भक्तदास ।

सं० बड़वामुख पु० समुद्रका काला-
नल, समुद्राग्नि ।

सं० बड़वाग्नि { (बड़वा=घोड़ी,
बड़वानल } अग्नि वा अनल =
आग) स्त्री० समुद्र के भीतर की
आग जो घोड़ी के मुँह से निकलती
है (हिंदुओंके शास्त्र अनुसार) ।

प्रा० बड़हल पु० एक फल का नाम ।

प्रा० बड़ा { (सं० बड़ा, बड़=विभाग
बरा } करना वा घेरना) पु०
पीसी हुई दाल की टिकिया
जिसको धी अथवा तेल में तलकर
खाते हैं, चक्र ।

प्रा० बड़ा (सं० बड़, बल्=घेरना)
गु० जेठा, प्रधान, मुखिया, बड़ी
उमर का, महा ।

प्रा० बड़ाकरना बोल० बढ़ाना, २
चिराग को बुझा देना ।

प्रा० बड़ाबोल बोल० घमंड की बात ।

प्रा० बड़ेबोलकासिरनीचा बोल०
घमंड से खराबी होती है ।

प्रा० बड़ारास्तापकड़ना बोल०
मर जाना, कत्ता करना ।

प्रा० बड़ेपेटवालाहोना बोल०
संतोषी होना, धीर होना, क्षमा-
वान् होना ।

प्रा० बड़ाई (सं० बड़ता) भा० स्त्री०
बड़ापन, बड़प्पन, महत्त्व, २ सराह,
स्तुति, प्रशंसा, ३ घमंड, अभिमान ।

प्रा० बड़ाईकरना { बोल० सरा-
बड़ाई मारना } हना, प्रशंसा
करना, स्तुति करना, २ घमंड क-
रना, शेखी बघारना, डींग मारना,
लम्बी चौड़ी हाँकना, अपनी
सराहना करना ।

प्रा० बड़ाईदेना बोल० आदरदेना,
इज्जत देना ।

प्रा० बड़ी (सं० बड़ी) स्त्री० एकत-
रह की खानेकी चीज जो दाल की
बनती है और उसकी तरकारी की
जाती है, २ (बड़ा) बड़ी उमर की
स्त्री, ३ गु० बड़ाशब्द का स्त्रीलिङ्ग ।
प्रा० बड़ीबातनहीं बोल० कुछ

कठिन नहीं ।

प्रा० बड़ई (सं० वर्द्धकि, वृध्=व-
हाना) पु० खाती, सुतार, मिस्तरी ।

प्रा० बड़ती (सं० वृद्धता, वृध्=व-
बढ़ती) स्त्री० अधिकारी,
वृद्धि, सम्पदा का बढ़ना, तरकी,
उन्नति ।

प्रा० बढ़ना (सं० वर्द्धन, वृध्=व-
हाना) क्रि० अ० अधिक होना, बहुत
होना, ऊँचा होना, २ आगे चलना ।

प्रा० बढ़चलना बोल० हीठ होना,
अभिमानि होना ।

प्रा० बढ़जाना बोल० अन्दाज से
बाहर होजाना ।

प्रा० बढ़नी स्त्री० भाद्, बुहारी !

प्रा० बढ़ाना क्रि० स० अधिक करना,
बहुत करना, बड़ा करना, २ ऊँचा
करना, लम्बा करना, ३ आगे
लेजाना, अलग
करना, ४ बन्द करना (दुकान को) ।

प्रा० बढ़ाव (बढ़ना) भा० पु० बढ़ती,
अधिकारी, २ बढ़ाव, उभार ।

प्रा० बढ़ावा (बढ़ाना) पु० खुशामद,
तारीफ, बड़ाई, २ उभाड़ ।

प्रा० बढ़िया (बढ़ना) गु० बहुत
मोलका, महँगा, बहुमूल्य ।

सं० बणिक् (पण्=लेनदेन करना)
पु० बनिया, महाजन, ब्योपारी,
सौदागर ।

सं० बणिकपथ पु० हट्ट, हाट, बाजार ।

प्रा० बणिज (सं० वाणिज्य) पु०
ब्योपार, लेनदेन, सौदागरी ।

प्रा० बणिया (सं० बणिक्) पु०
बनिया (महाजन, ब्योपारी,
वैश्य, सौदागर, दुकानदार ।

प्रा० बत बात, कौल ।

प्रा० बतबढ़ाव बोल० बात बढ़ाना ।

प्रा० बतबना बोल० बातूनी, बात
बतानेवाला ।

प्रा० बनक (अ० वत्तख) स्त्री०
एक जल का जीव ।

प्रा० बतकहाव पु० (सं० वा-
यतकही स्त्री०) चर्चा, कथन)
बातचीत ।

प्रा० बतकड़ गु० बकी, बातूनी,
वाचाल, गपोड़िया ।

प्रा० बतराना (सं० वार्ता) क्रि०
अ० बतियाना, बात चीत करना ।

प्रा० बतलाना (सं० वद्=क-
बताना) स्त्री० स०
जताना, चिताना, सुझाना, बु-
झाना, दिखाना, सिखलाना, सम-
झाना, संकेत करना, इशारा करना,
व्याख्या करना, अर्थ करना ।

प्रा० बतास (सं० बात) स्त्री०
हवा, पवन, बाव, बयार, वायु ।

प्रा० बतासा (बतास, हवा) पु०
बताशा (एकतरह की मिठाई,
२ बुलबुला ।

प्रा० बत्ती (सं० वर्त्ति, वृत्=होना)

स्त्री० बाती, २ पत्नीता, ३ बाँस
आदि की छड़, ४ लाख की डंडी,
५ पगड़ी जिसको सिपाही लपेट
कर गोल कर लेते हैं ।
प्रा० बत्तीजलाना बोल० चिराग
जलाना, दीया जलाना ।
प्रा० बत्तीचढ़ाना बोल० घाव में
बत्ती डालना ।
प्रा० बत्तीस (सं० द्वात्रिंशत्) गु०
तीस और दो, ३२ ।
प्रा० बत्तीसी स्त्री० दाँतों की लड़ी,
सब दाँत, बत्तीसी दिखाना,
बोल० दाँत दिखाना, हँसना ।
प्रा० बत्तीसी स्त्री० बत्तीस सुपारी
और बत्तीस छुहारा और रुपया
जो दुलहा दुलहिन के ननिहाल
को जाता है उसे बत्तीसी कहते हैं ।
प्रा० बथुवा (सं० वास्तूक) पु० एक
तरह का साग ।
प्रा० बदना (सं० वदन, वद्=
कहना) क्रि० स० दाँव लगाना,
मानना, २ रचना, भाग में लिखा
जाना ।
सं० बदर (वद्=दृढ़ होना या ठहरना)
पु० बेर का वृक्ष, बिनौला, क-
पासबीज ।
सं० बदरि (वद्=दृढ़ होना) पु०
बेर, एक फल का नाम ।
सं० बदरिकाश्रम (बदरिका +
आश्रम) पु० बदरिनाथ, बदरि-

नाथ का पहाड़ ।
प्रा० बदलना (अ० बदल) क्रि०
स० पलटना, बदला करना, उल-
टना, और तरह से बना देना ।
प्रा० बदली (बादल) स्त्री० बादल,
मेघ ।
प्रा० बदली (बदलना) स्त्री० तब-
दीली, एक जगह से दूसरी जगह
जाना ।
प्रा० बदा (सं० वद्=कहना) गु०
होनहार, भवितव्य ।
सं० बदि { स्त्री० अंधेरा पाख,
बदी } कृष्णपक्ष, महीने का
पहिला पाख ।
प्रा० बद्दल (सं० वारिद) पु०
बादल, मेघ, घटा ।
सं० बद्ध (वन्ध्=बाँधना) र्म० पु०
बाँधा हुआ, रुका हुआ, दृढ़,
रचित, वृत्तभेद ।
सं० बध (वध्=मारना) पु० मारण,
हिंसा, हत्या, हनना ।
प्रा० बधना (सं० वधन, वध्=मा-
रना) क्रि० स० मारहालना ।
प्रा० बधना { पु० लोटे ऐसा
बदना } एक मिट्टी का छोटा
वरतन ।
प्रा० बधाई स्त्री० { मङ्गलाचार,
बधावा पु० } आनन्दमङ्गल,
आनन्द के गीत, जयजयकार,
मुबारकबादी, खुशी का बाजा ।

सं० बधक } (बध्=मारना) क० पु०
 बधिक } शिकारी, बहेलिया,
 बधी } आखेटकी, मारने
 वाला ।

सं० बधनीय (बध् + अनीय) र्म०
 पु० बधार्ह, मारने योग्य ।

प्रा० बधिया (सं० बन्ध्=बाँधना)
 पु० नपुंसक बैल, आरुता ।

सं० बधिर (बन्ध्=बन्ध होना अ-
 र्थात् जिसकी सुनने की इन्द्रिय
 बाँधी हुई हो) गु० बहुरा, कनफूटा ।

सं० बधू (बन्ध्=बाँधना वा वह्=
 लेजाना) स्त्री० बहू, लड़के की
 स्त्री, २ भार्या, पत्नी, जोरू, स्त्री-
 कुलबधू=उत्तम घराने की स्त्री,
 देवबधू=देवी, देवता की स्त्री ।

सं० बधूटी (बध्) स्त्री० युवती
 स्त्री. जोरू ।

सं० बध्मारना) र्म० पु०
 मारने योग्य ।

सं० बध्यस्थान धि० फाँसी देने
 की जगह, बधभूमि ।

प्रा० बन (सं० वन) पु० जंगल,
 आपसे उगे वृक्ष ।

प्रा० बनजात्रा (सं० वनयात्रा)
 स्त्री० व्रजके ८४ वन की यात्रा ।

प्रा० बनज (सं० वाणिज्य) पु०
 बनिज } व्यापार, लेन देन,
 सौदागरी ।

प्रा० बनजर (सं० बन्ध्या) स्त्री०

पड़ती धरती, ऊपर, वह धरती
 जिसमें कुछ नहीं उपज सका ।

प्रा० बनजारा (सं० वणिग्) पु०
 जो नाज आदि वणिग् की चीजों
 को बैलों पर लाद कर लेजाते हैं ।

प्रा० बनठनके क्रि० पु० सज धज
 के, सिंगार करके ।

प्रा० बनन स्त्री० गोटा किनारी का
 काम ।

प्रा० बनमानुष (सं० वनमानुष)
 पु० एक जानवर जिसका डील
 डौल आदमी का सा होता है,
 २ जंगली, वनवासी ।

प्रा० बनमाल (सं० वनमाला) स्त्री०
 फूलों की माला जो पैरों तक
 लम्बी बनाई जाती है और बहुत
 बार तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात
 और कमलके फूलों से बनती है ।

प्रा० बनरा { पु० दुलहा, वर ।
 बना }

प्रा० बनरी { स्त्री० दुलहिन ।
 बनी }

प्रा० बनसी (सं० बडिश) स्त्री०
 मछली पकड़ने का काँटा, २ (सं०
 वंशी) मुरली, बांसुरी ।

प्रा० बनात स्त्री० ऊनी कपड़ा जो
 दलदार मोटा होता है ।

प्रा० बनाना क्रि० स० रचना करना,
 तैयार करना, निर्माण करना, २ ठीक
 करना, ३ उठाना (जैसे मकान,

दीवार आदि), ४ इकट्ठा रखना, मिलाना, ५ ग्रन्थरचना, ६ सँवारना, सिंगारना, ७ मेल कराना, मिलाना, मनाना, ८ पकाना, ९ सुधारना, मरम्मत करना, १० निकालना, ११ शुद्ध करना, १२ खिजलाना, चिढ़ाना, ठट्ठा करना, चुहल करना, १३ सिरजना, पैदा करना, १४ पूरा करना, १५ शरमाना, लजाना, १६ फबती कहना ।

प्रा० बनाव (बनाना) भा० पु० सिंगार, सँवार, २ मेल, मिलाप, बनाव करना, बोल० सँवारना, सिंगार करना ।

प्रा० बनावट (बनाना) भा० स्त्री० ढौल, २ रचना, ३ कल्पना, भूठी दिखावट ।

प्रा० बनिक (सं० वणिक्) पु० बनिया, महाजन, ब्योपारी, सौदागर ।

प्रा० बनेला { (सं० वन्य) गु० जङ्गली।
बनैला }

प्रा० बनेटी { स्त्री० एकलकड़ी जिस
बनेटी } के दोनों ओर मशाल बाँध कर गोल गोल फिराते हैं जिससे आग का दोहरा चक्र बनजाता है ।

सं० बन्ध (बन्ध्=बाँधना) पु० बाँधना, २ गाँठ, पट्टी, ३ कैद ।

प्रा० बन्ध में पड़ना या आना बोल० कैदी होना, कैद में आना ।

सं० बन्धक (बन्ध्=बाँधना) पु० धरोहर, थाती, गिरा, २ बाँधन, कैद ।

सं० बन्धकदाता (बन्धक=ऋण, दाता=देनेवाला, दा=देना) क० पु० राहिन ।

सं० बन्धकधारी क० पु० मुरतहिन ।

सं० बन्धनपत्र रेहनामा ।

सं० बन्धनालय (बन्धन + आलय) धि० पु० कैदखाना ।

सं० बन्धन (बन्ध्=बाँधना) पु० बाँधना, २ गाँठ, ३ कैद, ४ रोक, रुकाव, ५ लगाव, जुड़ाव ।

प्रा० बन्धना (सं० बन्धन) क्रि० अ० बन्ध होना, रुकना, अटकना, २ गिरह लगना, जोड़ा जाना ।

सं० बन्धान भा० पु० रोजाना, वजीफा ।

सं० बन्धित (बन्ध् + इत) र्भ० पु० बाँधागया, मुकय्यद ।

सं० बन्धु (बन्ध्=बाँधना, जो स्नेह से आपस में अपने मनोको बाँधते हैं) पु० भाई, सगोत्र, नातेदार, नतैत, मित्र, सखा ।

प्रा० बन्धुआ पु० कैदी ।

सं० बन्धूक (बन्ध्=बाँधना) पु० एक तरह का लाल फूल गुलदुप-हरिया, लालबूटी, लालझीट ।

सं० बन्धुर पु० मुकुर, तिलकल्क, बधिर, हंस, विरण्ड, बिहङ्ग, गु० रम्य, नम्र, ऊँच नीच, स्त्री० वेस्था,

प्रा० बराना क्रि० स० बचाना, दूर
हाँकना, हरादेना, हटादेना ।

प्रा० बराह (सं० वराह, वर=हित
अर्थात् अपने हित के लिये और
आ + हन्=मारना या खोदना अ-
र्थात् अपने खानेकी चीज हूँदनेमें जो
जमीन को खोदता है) पु० सुअर,
शूकर, २ विष्णुका तीसरा अवतार ।

प्रा० बरिबण्ड गु० बलवान्, ते-
जस्वी, जोरावर, २ दुष्ट, बद ।

प्रा० बरी (वर) स्त्री० वह कपड़ों का
जोड़ा जो दुलहाके घर से दुलहिन
को भेजा जाता है, २ (वटी) बड़ी ।

प्रा० बरु (सं० वर) क्रि० वि० चाहे,
परन्तु, लेकिन, भला, अच्छा ।

प्रा० बरुण (सं० वरुण, वृ=घेरना वा
पसन्द करना) पु० पानी का देवता
और पश्चिम दिशा का दिक्पाल ।

प्रा० बरुण (वरुण + आलय)
पु० समुद्र, सागर ।

प्रा० बरुणी (सं० वरुणी, वृ=
ढकना) स्त्री० पपनी, आँख परके
बाल, बिन्ने, मिजगां ।

प्रा० बर्छी स्त्री० शक्ति, सांग, सेल ।

प्रा० बर्बर (बर्ब=जाना) गु० मूर्ख,
जंगली, हवशी, बक्री, चर्बजवान ।

प्रा० वर्ष (सं० वर्ष, वृष्=बरसना या
पैदाहोना) पु० साल, वरस, संवत् ।

प्रा० वर्षा (सं० वर्षा, वृष्=बर-
सना) स्त्री० बरसात,

मेह, २ वर्षाञ्चतु ।

प्रा० बर्सात (सं० वर्षा) स्त्री० वर्षा-
ञ्चतु, चतुर्मास, पावसञ्चतु, वर्षा-
काल, ऐयाम बारिश ।

प्रा० बर्सी (बरस) स्त्री० बरसवें
दिन का श्राद्ध ।

सं० बर्ह पु० मोरपंख, २ पल्लव, पत्ता ।

सं० बल (बल्=जीना) पु० जोर,
शक्ति, सामर्थ्य, २ बलदेवजी का
नाम, ३ सैना, ४ स्थूलता, मुट्ठाई,
५ गन्धरस, ६ रूप, ७ शुक्र, बीज,
वरुणवृक्ष, ८ दैत्यभेद, ९ काकपक्षी ।

प्रा० बल (सं० बलि) स्त्री० बलि,
बलिदान, चढ़ावा ।

प्रा० बल स्त्री० ऐंठ, मरोड़, बट ।

प्रा० बलखाना बोल० ऐंठजाना,
क्रोध करना, गुस्सा करना ।

सं० बलज पु० क्षेत्र, पुरदार, अन्न,
संग्राम, दर्पण, शीशा, स्त्री० पृथ्वी,
श्रेष्ठा स्त्री, जाही जूही ।

प्रा० बलदेना बोल० मरोड़ना, ऐंठना ।

प्रा० बलबे बोल० शाबाश, वाहवाह ।

प्रा० बलजाना { बोल० बलिहा-
बलबलजाना } रीजाना, निझा-
वर होना ।

प्रा० बलदेना { बोल० बलिदानक-
बलकरना } रना, कुर्बानीकरना ।

प्रा० बलदाऊ (सं० बलदेव) पु०
श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलदेव (बल + देव) पु०

श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

प्रा० बलना } क्रि० अ० जलना ।
बरना }

सं० बलनिधि (बल + निधि) गु०
बलवान्, बहुत बली, जोरावर ।

सं० बलभद्र (बल + भद्र) पु०
बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलराम (बल=जोर, रम्=
खेलना) पु० बलदेव, शेषजी का
अवतार और श्रीकृष्णका बड़ा भाई ।

सं० बलवत् गु० बलयुक्त, बली, पुष्ट,
मल्ल, बलवान् ।

सं० बलवन्त (बल=जोर, वत्=
बलवान्) गु० जोरा-
वर, बली, सामर्थी ।

सं० बलवीर (बल=बलदेव जी,
वीर=भाई) पु० श्रीकृष्णका नाम ।

प्रा० बलवा पु० दंगा, भगड़ा,
फसाद, बगावत ।

सं० बलानुज (बल=बलभद्र, अ-
नुज=छोटा भाई) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० बलाराति (बल=अमुर, आ-
राति=शत्रु) पु० इन्द्र, देवराज ।

सं० बलाका स्त्री० बकपंक्ति, बगु-
लाओं की कतार ।

सं० बलात् अव्य० हठात् ।

सं० बलात्कार पु० हठ, बरजोरी,
जबरदस्ती ।

सं० बलाहक (बलाह=पानी, बल=
जाना वा घेरना, अर्थात् जिसमें

पानी हो अथवा बल=कंपन, हा=
छोड़ना) पु० बादल, बदल, मेघ,
घन, दैत्य, नागभेद ।

सं० बलि (बल्=जीना) पु० एक
राजा का नाम जिसको विष्णु
भगवान् ने वामनावतार लेके पाताल
में भेज दिया, २ नैवेद्य, देवता
का भोग, भेंट, कुर्बानी ।

सं० बलिदान (बलि + दान)
पु० देवता के सामने बकरा आदि
पशुको मारके चढ़ाना, देवता के
लिये भोग, नैवेद्य ।

सं० बलिसङ्ग पु० अंकुश, चाबुक,
कोड़ा, बन्दरों का समूह ।

सं० बलिष्ठ गु० बड़ा बलवाला ।

प्रा० बलिहारी (सं० बलि) स्त्री०
निष्ठावर, तसद्भुक्त, कुर्बान जाना ।

प्रा० बलिहारीजाना बोल० निष्ठा-
वर होना, बलजाना, बलबलजाना ।

सं० बली (बल) गु० जोरावर,
बलवान्, पराक्रमी ।

सं० बलीबर्ह पु० साएढ़, साँड़ ।

सं० बलीमुख (बली वा बलि=
बलिमुख) दीलाचमड़ा, बल्=
हिलना वा घेरना, मुख=मुँह अर्थात्
जिसके मुँह पर का चमड़ा दीला
हो) पु० वानर, बंदर, कपि, मर्कट ।

सं० बलीयस् (गु० अत्यन्तबली,
बलीयान्) बड़ा जोरावर ।

प्रा० बलुवा (बाल्) गु० बालूका,

बालूमय, रेतला, करकरा ।

प्रा० बल्लमे पु० भाला, सेल, बर्झा, नेजा ।

प्रा० बल्ली स्त्री० नाव का डंडा, लगी, बल्ली मारना, बोल० नाव चलाना ।

प्रा० बवासीर पु० अर्शरोग, गुदा में मस्सों का रोग ।

प्रा० बस (सं० वश, वश्=चाहना) पु० काबू, बल, जोर, २ अधिकार, गु० आधीन, वश करना, बोल० आधीन करना, दवाना, वश में आना, काबू में आना, आधीन होना ।

फ्रा० बस (بس) गु० बहुत, पूरा, बहुतेरा, चुपबस करना, बोल० ठहरना, करचुकना ।

प्रा० बसन (सं० वसन, वस्=पहनना) कपड़ा, जोड़ा, वस्त्र,

प्रा० बसना (सं० वसन, वस्=रहना) क्रि० अ० रहना, ठिकना, बासा करना, आबाद होना, घर बनाना ।

प्रा० बसन्त (सं० वसन्त, वस्=रहना या सुगन्ध आना) स्त्री० एक ऋतु का नाम जो चैत और कुज वैशाख के महीने तक रहती है, २ एक राग का नाम, वसन्त फूलना, बोल० सरसों के फूलों का खिलना, आँखों में वसन्त फूलना, बोल० तिरमिराना, -वसन्त के घरकी भी

खबर है, -कहावत-यह जानते भी हो क्या हो रहा है ।

प्रा० बसन्ती (वसन्त) पु० एक प्रकार का पीलारंग, गु० पीला ।

प्रा० बसाना (वसना) क्रि० स० आबाद करना, बस्ती कराना, आदिमियों से भरना, २ (वस्=सुगन्धित होना) सुगन्धित करना ।

प्रा० बसूला पु० वह औजार जिस से बढ़ई लकड़ी खीलते हैं ।

प्रा० बसेरा (सं० वास) पु० बासा, रहने की जगह, पखेरू का घोंसला अथवा अड्डा, पखेरू के रात को रहने का बासा ।

प्रा० वसुदेव (सं० वसुदेव, वसु=धन, दिव्=चमकना) श्रीकृष्ण का बाप और शूरसेन का बेटा ।

प्रा० बस्ती (सं० वसती, वस्=रहना) स्त्री० छोटा गाँव, आबादी ।

प्रा० वस्त (सं० वस्तु, वस्=रहना वस्तु) या ठकना) स्त्री० चीज, पदार्थ ।

प्रा० वस्त्र (सं० वस्त्र, वस्=पहनना) पु० कपड़ा, लूंगा, वसन ।

प्रा० बहकना क्रि० स० धोखा खाना, २ नशे में कुछ कहना, ईर्ष्या में कुछ बोलना, ४ बहके कहना ।

प्रा० बहकाना क्रि० स० धोखा देना, भुलाना ।

प्रा० बहँगी (सं० विहंगी) स्त्री०

बहंगी वा काँवरि ।

प्रा० बहत्तर (सं० द्विसप्तति) गु०
सत्तर और दो, ७२ ।

प्रा० बहधा (सं० बाधा) पु० दुःख,
आपदा, २ रुकाव ।

प्रा० बहनं } (सं० भगिनी) स्त्री०
बहिन } मांकी बेटी, सडोदर, २
सखि, बहना ।

प्रा० बहना (सं० वह्=बहना या
ले जाना) क्रि० अ० चलना, पानी
का जारी होना, रहवाका चलना ।

प्रा० बहते पानी में हाथ धोना
कहावत—जबतक अपना काम बना
रहे तबतक अच्छा काम करलेना ।

प्रा० बहनेऊ } (सं० भगिनीपति)
बहनोई } पु० बहिन का पति ।

प्रा० बहुरा } (सं० बधिर) गु० वह
बहिरा } आदमी जिसके सुनने
की इन्द्रिय खराब होगईहो, कनफूटा ।

प्रा० बहल } स्त्री० एक तरह की
बहली } गाड़ी ।

प्रा० बहलाना क्रि० स० प्रसन्न क-
रना, २ झुलाना, बहकाना, किसी
बात में लगा रखना ।

प्रा० बहेलिया पु० शिकारी, धनु-
धारी ।

प्रा० बहाना (बहना) क्रि० स०
चलाना, पानी जारी करना, २
पु० छल, कपट, हीला ।

प्रा० बहादेना बोल० उजाड़ना,

नाश करना ।

प्रा० बहा फिरना बोल० भटकता
फिरना, इधरउधर फिरना या घूमना ।

प्रा० बहाव (बहना) भा० पु०
पानीका जारी होना, बाढ़, चढ़ाव ।

प्रा० बहिर्मुख (सं० बहिर=बाहर,
मुख=मुँह) गु० धर्मविमुख, अ-
धर्मी, बागी ।

प्रा० बही स्त्री० महाजनों के हिसाब
रखने की किताब जो एक किनारे
की ओर सी जाती है ।

प्रा० बहीर } स्त्री० सेना की साम-
बहीड़ } ग्री, डेराडण्डा आदि ।

सं० बहु (बहि=बहना) गु० बहुत,
देर, बड़ा, अधिक ।

प्रा० बहुत (बहु) गु० अधिक ।

प्रा० बहुतगई थोड़ी रही बोल०
उमर पूरी हो चुकी है ।

प्रा० बहुतात } (सं० बहुता) स्त्री०
बहुतायत } अधिकाई ।

सं० बहुतिथ गु० बहुत दिन, बहुत
बेर, अनेकवार, अनेक, बहुत ।

प्रा० बहुतेरा (सं० बहुतर) गु०
बहुतसा, बहुतही बहुत ।

सं० बहुधा (बहु=बहुत, धा=प्रकार)
क्रि० वि० बहुत प्रकार से, बहुत
भाँति से, बहुत बार, अकसर ।

सं० बहुबाहु (बहु=बहुत, बाहु=
भुजा) पु० रावण व सहस्रबाहु
आदि ।

सं० बहुमूल्य (बहु=बहुत, मूल्य=मोल) गु० बहुत मोल का, बढ़िया, महँगा ।

प्रा० बहुरि { समुच्च० फिर, पुनि, और।
बहोरी }

प्रा० बहुरूपिया (सं० बहुरूपी)
पु० भाँड़, स्वाँगी ।

सं० बहुवचन (बहु + वचन) पु०
बहुतको जतलानेवाला, बहुत बातें ।

सं० बहुल गु० प्रचुर, बहुत, पु०
कुष्णवर्ण, अग्नि, आकाश ।

सं० बहुलगन्धा स्त्री० एला, इलायची।

सं० बहुविध (बहु=बहुत, विध=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकार
से, अनेक भाँति से । •

सं० बहुश्रुत (श्रु=सुनना) गु०
पण्डित, विद्वान्, शास्त्री ।

प्रा० बहु (सं० बहु) स्त्री० दुलहिन,
पतोहू, बेटेकी दुल-
हिन ।

प्रा० बाँक (सं० वङ्क, वकि=टेढ़ा
होना) स्त्री० टेढ़ापन, तिर्झापन, २
झुकाव, ३ नदी का घुमाव, ४
दोष, अपराध, दुष्टता, ५ एक गहने
का नाम जो बाजू पर पहनते हैं,
६ एक शस्त्र का नाम जो कटार का
पेसा होता है ।

प्रा० बाँका { (सं० वङ्क) गु० टेढ़ा,
बाँकुरा } तिर्झा, २ बहादुर, वीर,
३ बैला, अकड़ैत, अकड़वेग ।

प्रा० बाँचना (सं० वचन, वच्=बो-
लना) क्रि० सं० पढ़ना, पाठ क-
रना, बचना, क्रि० अ० बचना,
जीता रहना ।

प्रा० बाँछा (सं० वाञ्छा) स्त्री०
इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

प्रा० बाँछित (सं० वाञ्छित) गु०
चाहा हुआ, इच्छित ।

प्रा० बाँझ (सं० बन्धा) स्त्री० वह
स्त्री जिसके लड़का बाला न होता हो ।

प्रा० बाँट (सं० वण्टक, वटि=बाँ-
टना) पु० भाग, हिस्सा, अंश,
२ बटखरा, ३ गाय-भैंस का दूहते
समय का खाना ।

प्रा० बाँटना (सं० वण्टन, वटि=
हिस्सा करना) क्रि० सं० हिस्सा
करना, भाग देना ।

प्रा० बाँड़ा (सं० वण्ड, वडि=का-
टना) गु० पूँछकटा, बेपूँछ, २ बे-
शरम, निर्लज्ज ।

प्रा० बाँदी स्त्री० लौंड़ी, दासी, चेरी ।

प्रा० बाँध (सं० बन्ध) पु० पानी की
रोक, तालाब की पाल, मेंढ़बन्ध, आड़।

प्रा० बाँधना (सं० बन्धन) क्रि०
सं० जकड़ना, कसना, २ बन्ध
करना, ३ पानी रोकना, ४ ठह-
राना, थामना, ५ लपेटना, ६
गाँठ देना, गिरह देना ।

प्रा० बाँधनू (सं० बन्ध=बाँधना)
पु० एक तरह का रँगना जिसमें

कपड़े को बहुत सी जगह बाँध कर
के रंग चढ़ाते हैं कि हर एक रंग
जुदा २ दिखलाई दे ।

प्रा० बाँस (सं० वंश) पु० एक पेड़
जिसकी लकड़ी पोली होती है ।

प्रा० बाँस पर चढ़ना बोल० कलङ्की
होना, बंदनाम होना ।

प्रा० बाँसफोड़ पु० बाँस चीरकर
टोकरी आदि बनानेवाला ।

प्रा० बाँसरी }
बाँसली } (सं० वंशी) स्त्री०
बाँसुरी } मुरली, वंशी, वेणु ।

प्रा० बाँह (सं० बाहु) स्त्री० भुजा,
बाजू, २ आस्तीन ।

प्रा० बाँहटूटना बोल० कोई सहा-
यक न रहना ।

प्रा० बाँह चढ़ाना बोल० लड़ाई
को तैयार होना ।

प्रा० बाँह देना बोल० सहायता
देना, मदद करना ।

प्रा० बाँह पकड़ना बोल० सहायता
करना, पक्ष करना, आश्रय देना ।

प्रा० बाँह थल बोल० सहायक,
साथी, हिमायती ।

प्रा० बाँह गहना बोल० सहायता
करना ।

प्रा० बाँह गहेकीलाज गु० जिसको
सहायता करे उसको छोड़ना बड़ी
लाज की बात है ।

प्रा० बाई स्त्री० महारानी (मरहों

में), २ कंचनी ।

प्रा० बाई (सं० वायु) स्त्री० हवा,
बादी, बात रोग ।

प्रा० बाई पचना कहावत-शेखी
उतरना, दबजाना, उदास होना ।

प्रा० बाई में भड़कना बोल० बढ़-
बढ़ाना, वकना ।

प्रा० बाईस (सं० द्वाविंशति) गु०
बीस और दो, २२ ।

प्रा० बाखर } पु० आँगन, चौक,
बाखल } आँगनाई, कई एक
घर जो एक हाते में होते हैं ।

प्रा० बाग } स्त्री० बागडोर, लगाम,
बागुरु } फंदा, जाल ।

प्रा० बागमोड़ना बोल० शीतला
का ढल जाना ।

प्रा० बाग छूटना बोल० बेवश
होना, वश में न रहना ।

प्रा० बागडोर स्त्री० वह रस्सी जिस
को लगाम में लगा कर साईस घोड़े
को ले चलता है ।

प्रा० बागा (सं० वस्त्र) पु० जोड़ा,
पहनने के बहुत अच्छे कपड़े,
खिलअत ।

प्रा० बाघ } (सं० व्याघ्र) पु०
बाघा } नाहर, शेर ।

प्रा० बाघम्बर (सं० व्याघ्राम्बर)
पु० बाघ की खाल, शेर की पोस्त ।

प्रा० बाछमा (सं० बाध्मन=चाहना)
क्रि० सं० छाँटना, चुनना ।

प्रा० बाजन } (सं० वाद्य) पु०
बाजा } बजाने का यन्त्र, जो
चीज़ बजाने के लिये बनाई
जाय, बाजा गाजा, बोल० बहुत
से बाजाओं की आवाज़ ।

प्रा० बाजना (सं० वाद्य, वद् =
शब्द करना) क्रि० अ० आवाज़
निकलना, २ प्रसिद्ध होना ।

प्रा० बाजरा पु० एक प्रकार का नाज
जो मारवाड़ में बहुत पैदा होता है ।

फ्रा० बाज़ू } पु० एक गहना जिसको
बाज़ूबन्द } बाजू पर बाँधते हैं,
भुजबन्ध ।

प्रा० बाट (सं० वाट, वद् = घेरना) पु०
मार्ग, रस्ता, राह, ढगर, पन्थ ।

प्रा० बाटकाटना बोल० रास्ताच-
लना, सफर तैकरना ।

प्रा० बाटिका (सं० वाटिका, वद् =
घेरना) स्त्री० बाड़ी, फुलवाड़ी,
बगीचा, उपवन ।

प्रा० बाड़ (सं० वाट, वद् = घेरना)
स्त्री० छूरी या तलवार की धार, २
अहाता या घेरा जो काँटों से बनाते
हैं, ३ सिपाहियों की कतार ।

प्रा० बाड़उड़ाना बोल० एकसाथ
बंदूक चलाना, बंदूकों को फ़ैर
करना ।

प्रा० बाड़झाड़ना बोल० बहुत आ-
दमियों का एकसाथ बंदूक दागना ।

प्रा० बाड़दिलबाना बोल० स्नान

पर चढ़ाना, तीखा करना, तीक्ष्ण
करना ।

सं० बाड़व पु० नरक, समुद्र की
अग्नि, स्त्रियों का कान, घोड़ों
का समूह, ब्राह्मण ।

प्रा० बाड़बाँधना बोल० काँटों से
खेत को वा किसी जगह को घेरना ।

प्रा० बाड़रखना बोल० तीखा क-
रना, सान पर चढ़ाना ।

प्रा० बाड़हीजबखेतको खाय तो
रखवाली कौन करे कहावत—जिस
पर भरोसा हो जब वही चुराले
तब कोई चीज़ नहीं बचसक्ती ।

प्रा० बाड़ा (वद् = घेरना) पु०
अहाता, घेरा ।

प्रा० बाड़ी (सं० वाटी, वद् = घेरना)
स्त्री० छोटा बाग, बगीचा, उपवन,
बगीचे में घर, बंगाली घरको
बाड़ी कहते हैं ।

प्रा० बाढ़ (बाढ़ना) स्त्री० बढ़ती,
अधिकाई, नदी के पानी का उभ-
ड़ना या अपनी हृद से अधिक
बढ़ आना ।

प्रा० बाढ़ना (सं० वृध् = बढ़ना)
क्रि० अ० बढ़ना, उमँहना ।

प्रा० बाण } (सं० बाण, बण =
बान) शब्द करना) पु० तीर,
२ पूँज की बनी हुई रस्सी, विरो-
चन का पुत्र बाणासुर ।

सं० बाणलिङ्ग पु० बाणासुर ने

नर्मदा नदीके तट पर शिवमूर्ति
स्थापन की उसको कहते हैं ।

प्रा० बाणि { (सं० वाणि, वण्=
बाणी } शब्द करना) स्त्री०

बोली, सरस्वती, उक्ति, वचन ।

सं० बाणिज्य (पण्=लेनदेन क-
रना) पु० व्यापार, बनिज, सौदा-
गरी, लेनदेन ।

प्रा० बात (सं० वार्ता, वृत्=होना)
स्त्री० बोल चाल, कथा, समाचार,
बोली, कहना, २ विषय, ३ प्रश्न,
सवाल, ४ कारण, सबब, ५ मामला,
६ वृत्तान्त, दशा, अवस्था, ७ हठ ।

प्रा० बातउठाना बोल० बातसहना,
वातचलाना ।

प्रा० बातकरना बोल० बोलना,
वातचीत करना, कहना ।

प्रा० बातकाटना बोल० दूसरे की
बात को रद्द करना ।

प्रा० बातकाबतकड़करना बोल०
छोटीसी बात पर बहुतसा बोलना ।

प्रा० बातकीबात { बोल० दमभर
बातकी बातमें } में, पलभर में,
थोड़ी सी देरमें, झटपट, तुरंत ।

प्रा० बातगड़ना बोल० मतलब की
बात करना, झूठी बात बनाना,
किसी बात को इस तरह से बनाकर
कहना कि दूसरेके मनमें जमजाय ।

प्रा० बातचबाना बोल० बोलते २
चुपरहना, ठहर ठहर कर बोलना ।

प्रा० बातचलाना बोल० कुछ क-
हना शुरू करना ।

प्रा० बातचीत बोल० बोलचाल,
गुप्तगू ।

प्रा० बातटालना बोल० असल
बातका उत्तर न देना और और
बातें करना ।

प्रा० बातपरबातयाद्आती है
कहावत-जिस तरह की चर्चा हो
उसी तरह की बातें आपसे आप
याद् आजाती हैं ।

प्रा० बातपीजाना बोल० कड़वे
वचन सहना, बातको बर्दाश्तकरना ।

प्रा० बातफेंकना बोल० ठट्टा क-
रना, २ बे सोचे विचारे कोई
बात बोलना ।

प्रा० बातफेरना बोल० कहते २
बात का मतलब बदल देना ।

प्रा० बातबढ़ाना बोल० वाद क-
रना, तकरार करना, २ किसी
बात को खूब फैलाकर कहना या
लिखना ।

प्रा० बातबनाना बोल० मतलब
गाँठना, झूठ कहना ।

प्रा० बातबाँधना बोल० झूठी तर्क
करना ।

प्रा० बातबिगाड़ना बोल० मत-
लब खोना, बिगाड़ करना ।

प्रा० बातमानना बोल० कहना
मानना ।

प्रा० बातरखना बोल० कहना
मान लेना ।

प्रा० बातरहना बोल० इङ्गजत और
आबरू रहना, प्रतिष्ठा रहना ।

प्रा० बातलगाना बोल० चुगली
खाना, निन्दा करना ।

प्रा० बातें करना बोल० इधर-उधर
की चर्चा करना ।

प्रा० बातें बनाना बोल० बल क-
रना, खुशामद करना ।

प्रा० बातें मारना बोल० शेखी
करना, डींग मारना ।

प्रा० बातें सुनना बोल० कड़वी
बात सहना ।

प्रा० बातें सुनाना बोल० कड़वी
बात कहना ।

प्रा० बातों में उड़ाना बोल० हँसी
चुहल में टालना ।

प्रा० बातों में धरलेना बोल० का-
यल करना, चुपकरदेना ।

प्रा० बातोंमें लपेटना बोल० बातों
में धोखा देना ।

प्रा० बात (सं० वात वा जाना)
स्त्री० हवा, पवन, वायु, २ वायु
रोग ।

प्रा० बाती (सं० वृत्ति, वृत्त=होना)
स्त्री० बत्ती ।

प्रा० बातूनिया { (बात) गु० बहुत
बातूनी { बातें बनानेवाला,
गप्पी, वाचाल, वाचाट ।

प्रा० बादर { (सं० वारिद) पु०
बादल } बइल, मेघ ।

सं० बादरायण (बदर + अयन)
पु० वेदव्यास, व्यास महाराज,
पाराशर्य, पराशर के पुत्र ।

प्रा० बादला पु० सोने रूपे का तार,
लप्या ।

प्रा० बादि क्रि०वि० वृथा, फ़तूल ।

सं० बाधक (बाध्=रोकना) क०
पु० रोकनेवाला, प्रतिबन्धक, हा-
रिज, हर्ज करनेवाला ।

सं० बाधा (बाध्=रोकना) स्त्री०
रोक, रुकाव, २ दुःख, पीड़ा या
वेदना ।

सं० बाधित { (बाध्=रोकना) र्म्म०
बाध्य } पु० रोका हुआ, २
दुःखित, पीड़ित ।

प्रा० बान (सं० वर्णरंग वा गुण) स्त्री०
स्वभाव, प्रकृति, चाल, देव, आदत्त ।

प्रा० बानगी स्त्री० नमूना, अटकल,
कयास ।

प्रा० बानबे (सं० दानवति) गु०
नब्बे और दो, ६२ ।

प्रा० बाना सं० वर्ण) पु० वेष,
लिबास, २ ढंग, चाल, ३ एकतरह
का हथियार, ४ वह सूत जिससे क-
पड़ेकी चौड़ाई बुनीजाती है, भर्ती ।

प्रा० बाना क्रि० सं० खोलना,
पसारना ।

प्रा० बानी स्त्री० राख, २ वह सूत

जिससे कपड़ा बुना जाता है ।

फ्रा० बानी (विना) क० बिनाडालने वाला, जड़डालनेवाला, नीवजमाने वाला, बुनियाद डालनेवाला ।

सं० बान्धव (बन्धु) पु० भाई, रिश्तेदार, सम्बन्धी, नतैत, मित्र ।

प्रा० बाप (सं० वप्, वप्=बोना) पु० पिता, जनक, तात, बाबा ।

प्रा० बाप करना बोल० बाप के बराबर मानना ।

प्रा० बापमेरा } बोल० अर्चभा,
बापरे बाप } शोच और डर
आदि के जतलाने वाले शब्द ।

प्रा० बापमारे का बैर बोल० बड़ा भारी बैर ।

प्रा० बापनमारी पीढ़ी बेटाती-रन्दाज यह कहावत वहाँ बोलते हैं जब किसी के बाप दादे कुछ योग्य नहीं हों और वह कुछ बढ़ कर किया चाहे या दिखाया चाहे ।

प्रा० बापड़ा { गु० बेवश, बेचारा,
बापुरा } अनाथ, दीन, कंगाल ।

प्रा० बाफ (सं० बाष्प) स्त्री० धूँआँ, भाफ ।

प्रा० बाबा पु० बाप, २ बड़ा आदमी, ३ बेटा, लड़का, प्यारा ।

प्रा० बाबाजी पु० योगी, संन्यासियों की पदवी ।

प्रा० बाबू पु० लड़का, बालक, २ छोटा राजा या राजकुमार, ३ बड़ा आदमी, रईस, —हिंदुओं में और

विशेष करके बंगालियों में बड़े आदमी को 'बाबू' कहते हैं जैसे दिल्ली आगरे की ओर बड़े आदमी को 'लाला साहिब' या 'मुंशी साहिब' बोलते हैं, और अंगरेज अंगरेजी लिखनेवाले किरानियों को 'बाबू' कहते हैं, ४ योगी और फुकरों की बोलचाल में हर एक मर्द को 'बाबू' और स्त्री को 'माई' कहते हैं ।

प्रा० बाम (सं० ब्राह्मी) स्त्री० एक मछली का नाम, २ (सं० वाम, वा=जाना) गु० बायाँ, उलटा, ३ सुन्दर, ४ पु० महादेव वा कामदेव, ५ (सं० वामा) स्त्री ।

प्रा० बामअंग (सं० वामाङ्ग) पु० बाई ओर, बाई तरफ ।

प्रा० बामा (सं० वामा, वाम=बायाँ अर्थात् पुरुष के बाई ओर बैठने वाली) स्त्री० लुगाई, स्त्री ।

प्रा० बाम्हण { (सं० ब्राह्मण) पु०
बाम्हन } ब्राह्मण, २ हिंदुओं में जमींदारों की एक जाति जो बिहार और बनारस की ओर बहुत होते हैं ।

प्रा० बायब (सं० वायव्य) स्त्री० वायुकोण, पश्चिम-उत्तर का कोना, २ हटना, अलग होना ।

प्रा० बायाँ (सं० वाम) गु० बाई ओर, २ उलटा ।

प्रा० बायाँ पाँच पूजना बोल०

खण्डी मनुष्य के छल और पाखण्ड को मान लेना ।

प्रा० बार (सं० वार, वृ=ढकना) स्त्री० समय, अवकाश, अवसर, देरी, देर, विलम्ब, २ पु० अठनाड़े का दिन, ३ दरवाजा, ४ (सं० बाल) पु० लड़का, ५ केश, ६ (सं० बाला) स्त्री० सोलह बरस की लड़की ।

प्रा० बारलगाना बोल० देरी करना ।

प्रा० बारण (सं० वारण, वृ=ढकना, बचाना) पु० रोकना, अटकाना, २ हाथी ।

प्रा० बारम्बार (सं० वारंवार, बार) क्रि० वि० बार बार, फिर फिर, घड़ी घड़ी, मुतवातिर, लगातार ।

प्रा० बारह (सं० द्वादश) पु० दश और दो, १२ ।

प्रा० बारहबाँट १ मोह, २ दैन्य, ३ भय, ४ हास, ५ हानि, ६ ग्लानि, ७ क्षुधा, ८ तृषा, ९ मृत्यु, १० क्षोभ, ११ मृषा, १२ अपकीर्ति ।

प्रा० बारहबाटहोना बोल० उजड़ना, बिगड़ना, सत्यानाश होना, २ दुखपाना, सताया जाना ।

प्रा० बारहदरी (बारह + दर=दरवाजा) स्त्री० वह मकान जिसके बारह दरवाजे हों, बैंगला, हवादार मकान ।

प्रा० बारहखरी (सं० द्वादशाक्षरी)

स्त्री० व्यञ्जनों में बारह स्वरों का मिलान ।

प्रा० बारहसिंगा { (सं० द्वादश बारहसिंगा) = बारह, भृङ्ग=सिंग) पु० एक जानवर जो हरिण सा होता है जिसके सींग लम्बे होते हैं और सींग में सींग होता है ।

प्रा० बारह (सं० वराह) पु० शूकर, सूअर ।

प्रा० बारी (सं० वाटी) स्त्री० बाड़ी, वगीचा, २ (सं० बालिका) लड़की, ३ (सं० वार) नियत समय, पारी, नौबत, उसरी ।

प्रा० बारीदार पु० वह नौकर जिसकी नौकरी का समय नियत हो ।

प्रा० बारी स्त्री० झरोखा, दरीची, छोटा दरवाजा, २ हिन्दुओं में एक जाति के लोग जो मशाल और बत्ती बनाते हैं, ३ एकगहने का नाम जो नाक और कान में पहना जाता है ।

प्रा० बारुणी (सं० वारुणी, वरुण अर्थात् जिस का देवता वरुण है) स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब, २ पश्चिम दिशा, ३ शतभिषा नक्षत्र, ४ दूब ।

प्रा० बारूत स्त्री० दारू, शोरा, गन्धक और कोयला आदि से बनी हुई चीज़ जो आग पड़ते ही भस्म से उड़ जाती है ।

प्रा० बारो (सं० बाल) पु० बालक ।

सं० बाल (बल्=जीना, दान, कहना)

- पु० लड़का, बालक, २ केश, ३ गु० मूर्ख, नासमझ, अज्ञान, बेहोश ।
 प्रा० बाल (सं० बाला) स्त्री० सोलह बरस की लड़की, २ पु० सात आठ बरस का लड़का लड़की, ३ अनाज की फुनगी, ४ वह निशान जो काच और पिथाले आदि में होता है ।
- प्रा० बालगोपाल बोल० लड़के बाले, बाल बच्चे ।
 सं० बालग्रह पु० बालकों के दुःख देनेवाले ग्रह, उपग्रह ।
 प्रा० बालबाँधी कौड़ीमारना या उड़ाना बोल० बेचूके निशाना मारना, ठीक निशाना लगाना ।
 प्रा० बालबालबैरी होना बोल० हर एक अपने और पराये से वैर होना ।
 प्रा० बालबालगजमोतीपिरोना बोल० खूब सँवारना ।
 प्रा० बालबच्चे बोल० लड़के बाले ।
 प्रा० बालबाँकानहोना } बोल० बालबंकानहोना } किसी तरह का बिगाड़ न होना ।
 सं० बालक (बाल) पु० लड़का, छोटी उमर का बच्चा, मूर्ख, घोड़ा, हाथी, अँगूठी, कङ्कण, बलय, हाहूबेरा ।
 प्रा० बालका (सं० बालक) पु० योगी या संन्यासियों का चेरा ।
 प्रा० बालना } क्रि० स० जलाना, बारना } सुलगाना ।
- प्रा० बालभोग (सं० बाल=बालक, भोग=खाने की चीज) पु० वह नैवेद्य जो देवता को सबेरे चढ़ाते हैं ।
 प्रा० बालम (सं० वल्लभ) पु० प्रियतम, प्यारा, पति ।
 प्रा० बालमन्वीरा स्त्री० एक तरह का खीरा ।
 प्रा० बालरांड (सं० बालरण्डा) स्त्री० वह स्त्री जो बालकपन में बिधवा होजाय ।
 सं० बाललीला (बाल + लीला) स्त्री० लड़कपन का खेल, बालचरित्र ।
 सं० बालवत्स पु० कबूतर, २ गु० बालकों के ऊपर दयालु ।
 सं० बालसुख (बाल + सुख) पु० बालकपन का सुख ।
 सं० बाला (बाल) स्त्री० लड़की, सोलह बरस से कम उमर की लड़की ।
 प्रा० बाला (सं० बाल) पु० छोटी उमर का लड़का, २ एकतरह का सोने का गहना जो कानों में पहना जाता है और गोल होता है ।
 प्रा० बालाचाँद (सं० बालचन्द्र) पु० द्वितीया का चन्द्र, दुइज का चाँद, नया चाँद ।
 प्रा० बालापन भा० पु० बालकपन, लड़काई, लड़कपन ।
 प्रा० बालाभोला बोल० वह लड़का

जो कुछ छल कपट न जानता हो ।
 सं० बालि } (सं० बल = जोर) पु०
 बाली } एक बंदर का नाम जो
 इन्द्र का बेटा और सुग्रीव का भाई
 और अङ्गद का बाप था जिसको
 श्रीरामचन्द्र ने मारा ।
 सं० बालिकुमार (बालि + कु-
 मार) पु० अङ्गद ।
 सं० बालिश (बाह् + इन) गु०
 अङ्ग, मूर्ख, बालक, पु० उपबर्हण,
 तकिया, मसनद, २ उपधान ।
 प्रा० बाली (सं० बालिका) स्त्री०
 छोटी उमर की लड़की, २ एक
 गहने का नाम जो नाक और कान
 में पहना जाता है ।
 सं० बालु (बल् + उ) पु० सुगन्धित
 द्रव्य, रेत ।
 प्रा० बालू (सं० बालुका) पु०
 रेत, रेती ।
 प्रा० बालूशाही स्त्री० एक तरह की
 मिठाई ।
 सं० बाल्य भा० पु० लड़कपन ।
 प्रा० बाव (सं० वायु) स्त्री० हवा,
 पवन, बयार ।
 प्रा० बावबाँधना बोल० खुशामद
 करना ।
 प्रा० बावबहना बोल० हवा चलना ।
 प्रा० बावके घोड़ेपर सवार होना
 बोल० घमंडी होना, शेखी करना ।
 प्रा० बावसुरना बोल० पादना ।

प्रा० बावगोला पु० पेटकी पीड़ा,
 बावसूल ।
 प्रा० बावभक { गु० गप्पी, भक्की,
 बावभक } बड़बड़िया, भूत,
 प्रेत ।
 प्रा० बावड़ी { स्त्री० बड़ा कुवाँ,
 बावली } जिसके उतरने के
 लिये सीढ़ी होती है ।
 प्रा० बावन { (सं० वामन) गु०
 बावना } नाटा, ठिंगना, पु०
 विष्णुका पाँचवाँ अवतार ।
 प्रा० बावन (सं० द्विपञ्चाशत्) गु०
 पचास और दो, ५२ ।
 प्रा० बावरा { (सं० बातूल, बात
 बावला } = हवा) गु० सिड़ी,
 पागल, दीवाना ।
 प्रा० बावसूल (सं० वातशूल) गु०
 पेटकी पीड़ा, बावगोला ।
 सं० बाष्प पु० नेत्रजल, आँसू,
 उष्मा, भाफ़, लोहा ।
 प्रा० बास (सं० वास, वास् = सुग-
 न्धित होना) स्त्री० महक, सुगन्ध, गन्ध ।
 प्रा० बास { (सं० वास, वास् =
 बासा } रहना) पु० रहने की
 जगह, डेरा, बसेरा ।
 प्रा० बासन पु० बरतन, भाँड़ा, पात्र ।
 प्रा० बासना (सं० वासना, वास् =
 सुगन्धित होना) स्त्री० इच्छा, चाह,
 २ सुगन्धि, कि० सं० महकाना,
 सुगन्धित करना ।

प्रा० बासी (सं० वासी, वस्=रहना) पु० बसनेवाला, निवासी, रहनेवाला ।

प्रा० बासी (सं० वास्=सूँघना, महक आना) गु० रातका बचा हुआ खाना, औसा, २ बदबूदार, जिसमें बुरी बास आवे ।

प्रा० बासी बचे न कुत्ता खाया कहावत—कुत्ता बाकी नहीं रहता ।

प्रा० बासी फूलों बास नहीं, परदेशी बालम तेरी आस नहीं यह कहावत निराश होने पर बोली जाती है ।

प्रा० बासुदेव (सं० वासुदेव, वसुदेव का) पु० वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण ।

प्रा० बाहन (सं० वाहन, वह=ले जाना) पु० सवारी, असवारी, घोड़ा, गाड़ी आदि जिस पर आदमी चढ़ते हैं ।

प्रा० बाहर (सं० बाहिर) क्रि० बाहिर (वि० बाहिर की ओर) ।

प्रा० बाहर के खा जायें, घर के गीत गायें कहावत—अपने सब धरे रहें और दूसरों को लाभ हो ।

सं० बाहु (बाध्=रोकना) पु० बाँह, भुजा, भुजदण्ड ।

सं० बाहुज (बाहु + जन्=पैदा होना) पु० (बाहु राजन्याविति भ्रतिः) क्षत्रिय, बाहु से पैदा हुये ।

सं० बाहुयुद्ध (बाहु + युद्ध) पु० मल्लयुद्ध, कुरती ।

सं० बाहुल्यता भा० स्त्री० आधिक्यता, अधिकाई, कसरत ।

प्रा० बिंजन (सं० व्यञ्जन, वि=बहुत, खूब, अञ्ज=साफ करना) पु० तरकारी, भाजी ।

प्रा० बिंब (सं० बिम्ब) पु० एकतरह बिंबा (सं० बिम्ब) का लाल फल, कुन्दरु ।

प्रा० बिकट (सं० विकट, वि=बहुत, कट=जाना या घेरना) गु० डरावना, भयानक, भयंकर, कठिन ।

प्रा० बिकना (सं० वि, क्री=लेन देन करना) क्रि० अ० खपना, उठना, बिक्री होना, बेची जाना ।

प्रा० बिकरार (सं० विकराल) बिकराल (सं० विकराल) गु० डरावना, भयानक, २ भौंड़ा, कुरूप ।

प्रा० बिकल (सं० विकल, वि=नहीं, कल=अंश) गु० बेचैन, व्याकुल, अचैन, दुःखी, घबराया हुआ ।

प्रा० बिकसना (सं० विकसन, वि, कस्=जाना) क्रि० अ० खिलना, फूलना, २ प्रसन्न होना, मुसकुराना ।

प्रा० बिकसित (सं० विकसित, वि, कस्=जाना) गु० खिला हुआ, फूला हुआ, २ प्रफुल्ल, हर्षित, प्रसन्न, खुश ।

प्रा० बिकाऊ (बिकाना) गु० बेचने के योग्य, जो चीज बेचने को हो ।

प्रा० बिकाना (बिकना) क्रि० स०
उठाना, खपाना, बेचना ।

प्रा० बिकाश (सं० विकाश, वि,
काश्=चमकना) पु० प्रकाश,
चमक, गु० चमकता हुआ, प्रसन्न,
आनन्दित, हर्षित ।

प्रा० बिक्री (सं० विक्रय, वि=बहुत,
क्री=मोल लेना) स्त्री० बिकाव,
खपाव, उठाव, बिकना ।

प्रा० बिखरना (सं० वि, कृ=छी-
टना) क्रि० अ० फैलना, छीटना,
तित्तर-बित्तर होना, तीन-तेरह
होना, २ कोपना, क्रोध करना,
गुस्सा करना ।

प्रा० बिगड़ना (सं० विग्रह) क्रि०
अ० खराब होना, नुकसान होना,
नहीं बनना, २ फूट रहना, अनवन
रहना, फिर जाना, बागी होना ।

प्रा० बिगाड़ (बिगाड़ना) पु०
विघ्न, नुकसान, उपाध, २ वैर,
अनवन, तोड़फोड़ ।

प्रा० बिगाड़ना (बिगड़ना) क्रि०
स० खराब करना, नुकसान करना,
२ मित्रों में वैर करवा देना ।

प्रा० बिघन (सं० विघ्न, वि=
पहले, हन्=मारना) पु० रोक,
रुकाव, बाधा, बिगाड़ ।

प्रा० बिगाड़ (सं० विचार, वि,
चर्=चलना) पु० सोच, ध्यान,
खयाल, सम्मति, राय, न्याय ।

प्रा० बिचारना (सं० विचरण, वि,
चर्=चलना) क्रि० स० सोचना,
ध्यान करना, खयाल करना, सम-
झना, बूझना, निर्णय करना ।

प्रा० बिचाली स्त्री० पुआल ।

प्रा० बिचित्र (सं० विचित्र, वि=
बहुत, चित्र=भाँति भाँति का) गु०
भाँति भाँति का, नाना प्रकार का,
२ अद्भुत, अनोखा, अजीब ।

प्रा० बिच्छू (सं० वृश्चिक) पु० एक
जहरीले जानवर का नाम जिसके
ढंक में जहर भरा रहता है ।

प्रा० बिछड़ना } (सं० वि=बहुत,
बिछरना } छुट्=काटना)
बिछुड़ना } क्रि० अ० अलग
बिछुरना } होना, जुदा होना,
अलाहदा होना ।

प्रा० बिछना (सं० विस्तर, वि, स्तृ=
फैलना) क्रि० अ० फैलना, पसरना ।

प्रा० बिछाना (बिछना) क्रि० स०
फैलना, पसारना, २ पु० बिछौना,
विस्तरा ।

प्रा० बिछुवा पु० एक तरह का
हथियार जो टेढ़ा होता है, २ एक
गहना जो पाँव में पहनते हैं ।

प्रा० बिछोह } (वि=बिन, छोह=
बिछोहा) प्यार या बिछुरना
से) पु० विरह, वियोग, जुदाई ।

प्रा० बिछौना (बिछना) पु० बि-
स्तरा, सेज ।

प्रा० बिजना (सं० व्यजन, वि,
 अज्=चलना) पु० पंखा ।
 प्रा० बिजली (सं० विद्युत्) स्त्री०
 दामिनी, चपला, वह आग जो
 बादलों में चमकती है ।
 प्रा० बिज्जु (सं० विद्युत्) स्त्री०
 बिजली, दामिनी ।
 प्रा० बिजोग (सं० वियोग) पु०
 जुदाई, बिछुड़ना ।
 प्रा० बिडारना क्रि० स० भगाना,
 बिचलाना ।
 प्रा० बिताना (बीतना) क्रि०स०
 गँवाना, काटना ।
 प्रा० बितीन (सं० व्यतीत) गु०
 बीताहुआ, गुजरा हुआ, जो पूरा
 हो चुका, मुत्तकजी ।
 प्रा० बित्त (सं० वित्त, वित्=
 छोड़ना, देना) पु० धन, दौलत,
 द्रव्य, २ गात, बूता ।
 प्रा० बिथकना क्रि०अ० चकित होना,
 अचम्भे में होना, हैरत में आना ।
 प्रा० बिथरना (सं० विस्तरण)
 बिथुरना (क्रि०अ० बिखरना,
 छिटकना, फैलना ।
 प्रा० बिथा (सं० व्यथा) स्त्री०
 पीड़ा, दुःख, दर्द ।
 प्रा० बिदा (सं० विद्=फाड़ना वा
 बिदाई) जुदा होना और अ-
 रबी में विदअ=रुखसत होना)
 स्त्री० छुट्टी, जाने की आज्ञा, रुख-

सत, रुखसती ।

प्रा० बिदाकरना बोल० रुखसत
करना ।

प्रा० बिदारना (सं० विदारण, वि=
 बहुत, दृ=फाड़ना) क्रि० स० फाड़ना ।

प्रा० बिदेश (सं० विदेश, वि=दूसरा,
 देश=मुल्क) पु० दूसरा देश,
 दूसरा मुल्क, परदेश ।

प्रा० बिदेशी (विदेश) गु० पर-
 देशी, ग़ैर मुल्क का ।

प्रा० बिधना (सं० विधि) पु०
 विधाता, ब्रह्मा, दैव ।

प्रा० बिधवा (सं० विधवा, वि=
 विन, धव=पति) स्त्री० राँड़, बेवा,
 जिसका पति मर गया हो ।

प्रा० बिन (सं० विना, वि + ना)
 बिना (क्रि० वि० छोड़के,
 छुट, रहित, बिदून, सिवाय ।

प्रा० बिनआये तरना बोल० बे
 मौत मरना ।

प्रा० बिन रोये लड़का दूध नहीं
 पाता कहावत-बिन माँगे कुछ
 नहीं मिल सकता ।

प्रा० बिनभयप्रीति नहीं कहावत-
 बिन डराये कोई नहीं मानता ।

प्रा० बिन माँगे दूध बराबर माँगे
 सो पानी कहावत-बिन माँगे
 मिले वही अच्छा है ।

प्रा० बिनबना (सं० विनयन,
 बिनौना) वि=बहुत, नम्=

नमस्कार करना) क्रि० स० नम-
स्कार करना, पूजना ।
प्रा० बिनसना (सं० वि, नश=
नाश होना) क्रि० अ० नाश होना,
विगड़ना ।
प्रा० बिनास (सं० बिनाश) पु०
नाश, संहार, विध्वंस ।
प्रा० बिनौला पु० रुई का बीज ।
प्रा० बिन्ती { (सं० विनीति वा
बिनती) बिनति वा बिनय,
वि=बहुत, नि=पाना वा चलाना
वा नम्=नमस्कार करना) स्त्री०
बिनय, नम्रता, प्रार्थना, अर्ज ।
प्रा० बिन्द { (सं० बिन्दु) स्त्री०
बिन्दी } शून्य, सिफर, बिन्दु ।
प्रा० बिपन { (सं० विपत्ति) स्त्री०
बिपता } आपदा, दुःख, विपदा,
तकलीफ ।
प्रा० बिया (सं० बीज) पु० बीज,
गुठली ।
प्रा० बियालू पु० रात का खाना ।
प्रा० बिरद पु० यश, नाम, ख्याति,
२ हथियार ।
प्रा० सं० बिरदावलि (बिरद=यश,
सं० अवलि=पाँत) स्त्री० बहुत
यश, बहुत ख्याति, बड़ी नामवरी ।
प्रा० बिरमना (सं० वि, रम्=
ठहरना, चैन करना) क्रि० अ०
ठहरना, रहना, बिलमना ।
प्रा० बिरला (सं० बिरल, वि, रा

=देना या लेना) गु० कोई कोई,
अनूठा, अपूर्व, अनूप ।
प्रा० बिरवा पु० रूख, वृक्ष, पौधा ।
प्रा० बिरह (सं० विरह, वि=बहुत,
रह=झोड़ना) पु० जुदाई, बिछोह,
वियोग, बिछुड़ना, फुरकत ।
प्रा० बिरहनी (सं० विरहिणी,
विरह) गु० स्त्री० वह स्त्री जो अ-
पने पति से जुदी रहे ।
प्रा० बिराजना (सं० वि=बहुत,
राज्=शोभना) क्रि० अ० शोभना,
२ सुख भोग करना, चैनसे रहना ।
प्रा० बिराना गु० पराया, २ दूसरे का ।
प्रा० बिरियां (सं० बेला) स्त्री०
समय, वक्त, काल, बेला ।
प्रा० बिरोग (सं० वियोग) गु०
विरह, वियोग, जुदाई ।
प्रा० बिरोगन (सं० वियोगिनी)
गु० स्त्री० वह स्त्री जो विरह से
व्याकुल हो ।
प्रा० बिल { (सं० विल, बिल्=
बिला) ढकना या छिपना)
पु० चूहे आदि जानवरों के रहने
का छेद, छिद्र ।
प्रा० बिलकना क्रि० अ० सिसकना,
लड़के का रोना ।
प्रा० बिलखना (सं० विलक्षण,
वि=बुरा, लक्षण=चिह्न) क्रि० अ०
उदास होना, क्रि० स० देखना,
उदास होकर देखना ।

प्रा० बिलग (सं० विलग्न, वि= नहीं, लग्=मिलना) गु० अलग, जुदा, न्यारा ।

प्रा० बिलगमानना बोल० बुरा मानना ।

प्रा० बिलगना (सं० विलग्न) क्रि० अ० जुदा जुदा होना, अलग होना, २ फटना ।

प्रा० बिलगाना (बिलगना) क्रि० स० जुदा २ करना, अलगाना, क्रि० अ० फटना, फाटना ।

प्रा० बिलबिलाना क्रि० अ० व्याकुल होना, कूकना, तड़फना ।

प्रा० बिलम्ब (सं० विलम्ब) स्त्री० देरी, देर, ढील ।

प्रा० बिलम्बना { (सं० विलम्ब) बिलंबना } क्रि० अ० देरी करना, ठहर जाना, रुक जाना ।

प्रा० बिलल्ला पु० भौंद्, मूखे, बेहंगा, बेशऊर ।

प्रा० बिलसना (सं० वि, लम्= खेलना) क्रि० अ० प्रसन्न होना, मुख भोगना, भोगना, आनन्दित होना ।

प्रा० बिलस्त (सं० विलस्ति) पु० बिता, विलाँद, बालिस्त, अँगूठे से कन अँगुली तक का नाप ।

प्रा० बिलार्ह (सं० बिडाली) स्त्री० बिल्ली, २ एक लोहे की चीज जिस पर 'कद्' झीलते हैं, ३ कि-वाड़ कन्द करने की लकड़ी ।

प्रा० बिलाना (सं० विलय, वि= बहुत, ली=मिलना, पर वि उप-सर्ग के साथ आनेसे इस धातु का अर्थ नाश होना होता है) क्रि० अ० मिटजाना, नाश होना ।

प्रा० बिलापना { (सं० विलाप, बिलपना) वि=बुरी तरह से, लप्=बोलना अर्थात् रोना) क्रि० अ० बिलकना, रोना, विलाप करना, दुःख करना ।

प्रा० बिलार { (सं० बिडाल) पु० बि-बिलाव } ब्ला, मार्जार, गुर्वह ।

प्रा० बिलावल स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० बिलोना { (सं० विलोडन, विलोचना) वि, लुङ्=मथना } क्रि० स० मथना, महना ।

प्रा० बिल्ली (सं० बिडाली) स्त्री० एक जानवर का नाम ।

प्रा० बिल्ली भी लड़ती है तो मुँह पर पंजा भर लेती है कहावत-जब लड़ना चाहिये तो पहले अपना बचाव सोचना चाहिये ।

प्रा० बिल्ली के भागों छीका टूटा कहा०—अयोग्य मनुष्य को संयोग से बड़ा काम मिला ।

प्रा० बिसन (सं० व्यसन) पु० दोष, अवगुण, बुराई, बुरा काम, प्रेम, शौक, रगबत ।

प्रा० बिसरना (सं० विस्मरण, वि=

नहीं, स्पृ=याद रखना) क्रि० अ०
 भूल जाना ।
 प्रा० बिसात स्त्री० पुंजी ।
 प्रा० बिसाती पु० छोटी छोटी
 चीजें बेचनेवाला ।
 प्रा० बिसाना (क्रि० स० मोल लेना,
 बिसाहना) खरीदना, लेना ।
 प्रा० बिसारना (बिसरना) क्रि०
 स० भुलाना, बिसरना ।
 प्रा० बिसूरना क्रि० अ० धीरे २
 रीना, सिसकना ।
 प्रा० बिसेला (विष) गु० जहरीला ।
 प्रा० बिस्तारना (बिस्तार) क्रि०
 स० फैलाना, बसीअ करना ।
 प्रा० बिस्वा (बीस) पु० बीघे का
 बीसवां भाग ।
 प्रा० बिहरना (सं० विहरण)
 क्रि० अ० विहार करना, खुशी
 करना, हुलसना, सैर करना,
 पेश इशरत करना ।
 प्रा० बिहरी स्त्री० चन्दा, पातड़ी,
 उगाहनी ।
 प्रा० बिहरना (सं० विदारण)
 क्रि० अ० फटना, छाती फटना,
 छाती दरकना ।
 प्रा० बिहँसना (सं० विहसन)
 क्रि० अ० हँसना, मुसकुराना ।
 प्रा० बिहान पु० भोर, तड़का,
 प्रातःकाल, प्रभात, भिनसार, सु-
 बह, सबेरा ।

प्रा० बिहाना (सं० वि, हा=छो-
 डना) क्रि० स० छोड़ना, त्यागना ।
 प्रा० बीधना (सं० विद्ध वा वेधन,
 विध् या व्यध्=छेदना) क्रि० स०
 छेदना, वेधना ।
 प्रा० बीघा पु० बीसबिस्वे की नाप ।
 प्रा० बीच नित्य सं० भीतर, अन्दर,
 में, माँझ, मध्य, २ पु० अन्तर,
 फूट, विरोध ।
 प्रा० बीचपड़ना बोल० अन्तरपड़ना,
 फूट पड़ना ।
 प्रा० बीच बिचावकरना बोल०
 दो आदमियों में मेल कराना ।
 प्रा० बीचमेंपड़ना बोल० दो आ-
 दमियों में मेल कराने के लिये
 मध्यस्थ होना ।
 प्रा० बीचोबीच बोल० ठीक बीच
 में, मध्य में ।
 प्रा० बीछा पु०
 बीछी स्त्री० } (सं० वृश्चिक)
 बिच्छी स्त्री० } बिच्छू या बीछी।
 प्रा० बीजक पु० मालकी फेहरिस्त,
 चलान चिट्ठी, २ टिकट जो माल
 की गठरी पर लगाया जाता है ।
 प्रा० बीजना (सं० व्यजन) पु०
 तालवृन्तक, पंखा ।
 प्रा० बीट (सं० विष्टा) स्त्री० जानवरों
 का गू ।
 प्रा० बीड़ा (सं० बीटिका, वि,
 बीरा) इद=जाना) पु० पान

की खीली, चूना, कत्था और सुपारी आदि लगाया हुआ पान, २ वह डोरा जिससे तलवार का मियान उसके कवजेमें बाँधा रहता है।
 प्रा० बीड़ाउठाना बोल० किसी बड़े काम को करने का जिम्मा करना ।

प्रा० बीड़ाडालना बोल० किसी कठिन काम के लिये सवाल करना, हिन्दुस्तान में रीति है कि जब किसी सरदार को कठिन काम आ पड़ता है तो वह अपने नौकर चाकरों को इकट्ठा करके उस काम को कहता है फिर एक पान का बीड़ा रकाबी में रख कर सबके सामने फेरा जाता है जो उसको उठा के चबाले वह काम उसके जिम्मे होजाता है ।

प्रा० बीण (सं० वीणा) स्त्री० बीन } वीणा, तन्त्री, एक बाजे का नाम जिसके दोनों ओर तूँबा और डंडी पर बहुतसी खँटियाँ होती हैं जिस पर तार चढ़े रहते हैं ।

प्रा० बीतना (सं० व्यतीत) क्रि० अ० व्यतीत होना, हो चुकना, चला जाना, गुजरना, पूरा होना, कटना ।

प्रा० बीधी स्त्री० स्त्री, बहू, मेम ।
 सं० बीभत्स र्म० पु० जुगुप्सित, निन्दित, धृणित, पु० नवरस में

एकरस ।

प्रा० बीमा स्त्री० जोखिम, हुंदा, भाड़ा ।

प्रा० बीर पु० भाई, भैया, २ कान में पहनने का एक गहना, ३ (सं० बीर) बहादुर, शूरवीर, ४ स्त्री० बहन ।

प्रा० बीरबहूटी स्त्री० एक प्रकार का लाल कीड़ा जो सावन में पैदा होता है, इन्द्रबधू ।

प्रा० बीरा पु० भाई, भैया ।

प्रा० बीरी (सं० बीटिका) स्त्री० पान की खीली ।

प्रा० बीस (सं० विंशति) गु० दो दहाई, २० ।

प्रा० बीसी स्त्री० अनाज नापने का परिमाण, २ (सं० विंशति) बीस, कोड़ी ।

प्रा० बुंदा (सं० बिन्दु) पु० बिन्दी, शून्य, सिफर, बिन्दु ।

प्रा० बुंदेला पु० बुन्देलखण्ड का राजपूत ।

प्रा० बुकनी स्त्री० चूर्ण, बूरा, चूर ।

सं० बुक्क पु० हृदय का मांस, कलेजा, क्लेश, झिलका, वर्णन, देना० गु० दाता, वक्ता ।

सं० बुक्कन (बुक् + अन, बुक्क=क-हना, भूँकना) पु० कुकुरशब्द, कुत्ता का भूँकना ।

प्रा० बुक्का पु० मुट्ठी भर, चुटकी ।

सं० बुक्कार पु० पृष्ठमांस, पीठ का मांस, हृदय, कलेजा, सिंहनाद ।

प्रा० बुभुना क्रि० अ० ठंडा होना, बुतना, चिराग गुल होना, आग ठंडी होना ।

प्रा० बुभुना क्रि० स० ठंडा करना, बुताना, चिराग गुल करना, आग ठंडी करना ।

सं० बुड (बुद्ध=त्याग, आच्छादन) पु० संवरण, आवरण, आच्छादन, ढापना, गु० ढापनेवाला ।

प्रा० बुडाना क्रि० स० हटाना, बोरना ।

प्रा० बुड्ढा (सं० वृद्ध) गु० बूढ़ा ।

प्रा० बुद्धभस गु० वह बूढ़ा जो जवानों की चाल चले ।

प्रा० बुद्धभसलगना बोल० बुढ़ापे में जवानी की बातें करना ।

प्रा० बुढ़वा (सं० वृद्ध) गु० बूढ़ा ।

प्रा० बुढ़ापा (बूढ़ा) भा० पु० बूढ़ापन, वृद्धावस्था ।

प्रा० बुढ़ापाबिगड़ना बोल० बुढ़ापे में दुःख होना ।

प्रा० बुढ़िया स्त्री० बूढ़ी स्त्री ।

प्रा० बुत्ता पु० ठगई, छल, कपट, धोखा ।

प्रा० बुत्तादेना बोल० ठगना, छलना, धोखादेना ।

सं० बुद्ध (बुध=जानना) पु० विष्णु का नवां अवतार, बौद्धमत का स्थापन करनेवाला, २ बुद्धिमान्,

पण्डित, पल्लवितवृक्ष, र्म० विदित, जाना हुआ, जागता हुआ ।

सं० बुद्धि (बुध=जानना) स्त्री० मनीषा, मति, धी, विषणा, समझ, सोच, विचार, ज्ञान, विवेक, पहचान, अक्ल ।

सं० बुद्धिबल पु० अक्लकी ताकत ।

सं० बुद्धिमान् (बुद्धि + मान्) गु० समझदार, ज्ञानवान्, विवेकी, अक्लमन्द ।

सं० बुद्धिहीन (बुद्धि + हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, बेअक्ल ।

सं० बुद्धीन्द्रिय (बुद्धि + इन्द्रिय) पु० स्त्री० आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा अर्थात् शरीरपर का चमड़ा ।

सं० बुध (बुध=जानना) पु० बृहस्पति की स्त्री के चाँद से उत्पन्न हुआ बेटा, चौथा ग्रह, २ बुधवार, ३ पण्डित, बुद्धिमान् ।

सं० बुधजन (बुध + जन) पु० पण्डित लोग, बुद्धिमान् ।

सं० बुधवार (बुध + वार=दिन) पु० बुध का दिन, चौथावार ।

सं० बुधान क० पु० गुरु, पण्डित, अध्यापक, ब्रह्मा का पारषद ।

सं० बुधित र्म० पु० ज्ञात, जाना हुआ ।

प्रा० बुझा क्रि० स० बिना ।

सं० बुभुक्षा (भुज्=खाना) भा० स्त्री० क्षुधा, भूख, खाने की चाह ।

प्रा० बुभुक्षित (बुभुक्षा) क० पु० भूखा ।

प्रा० बुरा गु० खराब, दुष्ट, नीच,
निकम्मा ।

प्रा० बुरा कहना बोल० निन्दा
करना, बदनाम करना ।

प्रा० बुरा चीतना बोल० किसी का
बिगाड़ चाहना, किसी की बुराई
चाहना ।

प्रा० बुराबेटा खोटापैसा काम
आता है कहा०—अपना बेटा
निकम्मा भी हो तौभी किसी समय
काम आता है ।

प्रा० बुरामानना बोल० अपसन्न
होना, नाराज होना, नाखुश होना ।

प्रा० बुरालगना बोल० भला न
सालूम होना ।

प्रा० बुराई भा० स्त्री० खराबी, दुष्टता ।

प्रा० बुराई पर कमर बाँधना बोल०
बुराई करने पर तैयार होना ।

प्रा० बुलबुला (सं० बुद्बुद) पु०
बुद्बुदा ।

प्रा० बुलाक स्त्री० नाक में पहनने
का गहना ।

प्रा० बुहारना क्रि० स० झाड़ना ।

प्रा० बुहारी स्त्री० झाड़ू ।

प्रा० बूआ स्त्री० बहिन, २ फूफू ।

प्रा० बूंद (सं० बिन्दु) स्त्री० बूँटा,
टपका, टपकन, कतरा ।

प्रा० बूँदा (सं० बिन्दु) पु० बड़ी
बूंद, टपका ।

प्रा० बूँदाबाँदी बोल० मेह की

थोड़ी २ बूँदें गिरना ।

प्रा० बूकना क्रि० स० चूर चूर
करना, बुकनी करना ।

प्रा० बूचा गु० कनकटा ।

प्रा० बूझ (सं० बोध वा बुद्धि)
स्त्री० समझ, बुद्धि, ज्ञान ।

प्रा० बूझना (सं० बुध्=जानना)
क्रि० स० समझना, जानना, सोचना ।

प्रा० बूटा पु० छोटा पेड़, भाड़,
२ कपड़ा पर काढ़ा हुआ फूल
आदि ।

प्रा० बूढ़ा (सं० वृद्ध) गु० वृद्ध, बुढ़ा,
पुराना, बहुत उमर का, प्राचीन ।

प्रा० बूढ़ाघाग } बोल० बहुत बूढ़ा ।
बूढ़ाखराँट }

प्रा० बूता पु० बल, जोर, शक्ति,
सामर्थ्य ।

प्रा० बूर स्त्री० भूसी, तुष, झिलका,
चोकड़ ।

प्रा० बूरकेलइहू एक मिठाई जो
गेहूँ की चोकड़ से बनती है और
उसके ऊपर शकर का गिलाफ
चढ़ाते हैं और वह बहुत सस्ती
बिकती है इस लिये काम देखने में
बहुत अच्छा पर सचमुच निकम्मा
हो उसको बोल चाल में बूर का
लइहू कहते हैं और जो लोग बूर
का लइहू बेचते हैं वे इस तरह
पुकारते हैं कि “ बूर का लइहू जो
खावे सो भी पकतावे, न खावे सो

भी पड़तावे ”—और कोई कोई कहते हैं कि यह मिठाई कोई नहीं बेचता, न खाता है, न बनाता है पर इसी कहावत में बोलते हैं ।

प्रा० बूरा पु० साफ की हुई चीनी, २ लंकड़ी और हाथीदाँत का चूरा ।

प्रा० बे अवे, अरे ।

प्रा० बेंग (सं० व्यङ्ग, वि=बुरा, अङ्ग=शरीर) पु० मेंढक ।

प्रा० बेंट पु० दस्ता, वह लकड़ी-जो कुल्हाड़ी आदि में लगाते हैं ।

प्रा० बेंड़ा गु० तिर्झा, ठेढ़ा, बाँका ।

प्रा० बेग (सं० वेग, विज्=काँपना) पु० उतावली, फुर्ती, शीघ्रता, प्रवाह, क्रि० वि० जल्दी से, जोर से ।

प्रा० बेगार पु० सेंत, मुफ्त, किसी मजदूर को जबरदस्ती पकड़ना और उसको मजदूरी नहीं देना या बहुत थोड़ी मजदूरी देना ।

प्रा० बेगारपकड़ना बोल० जबरदस्ती से किसी मजदूर को अथवा गाड़ी को बिन मजदूरी दिये या थोड़ी मजदूरी दिये पकड़ना ।

प्रा० घेटा पु० पुत्र, लड़का ।

प्रा० बेड़ा पु० घरनई, चौघड़ा ।

प्रा० बेड़ापारकरना या लगाना बोल० दुःख से छुटाना, दुःख दूर करना, २ उतारना, पारकरना ।

प्रा० बेड़ापारहोना बोल० दुःख से छूटना, २ सब चाह पूरी होना ।

प्रा० बेणु (सं० वेणु, वेणु=बाजा, वेणु) बजाना) स्त्री० बाँसुरी, मुरली, २ बाँस ।

प्रा० बेत (सं० वेत, अज्=जाना) स्त्री० एक तरह की लकड़दार लकड़ी ।

प्रा० बेधना (सं० वेधक) क्रि० सं० बाँधना, छेदना ।

प्रा० बेमात (सं० विमाता, वि=विरुद्ध, माता=मां) स्त्री० सौ-तेली मां ।

प्रा० बेर (सं० बदरि) पु० एक प्रकार का फल ।

प्रा० बेल (सं० बिल्व) पु० एकफल का नाम, २ (सं० वल्लि) स्त्री० बेली, लता, ३ वंश, औलाद, सन्तान ।

प्रा० बेला पु० एक पेड़ का नाम जिस का पुष्प फल सुगन्धित होता है, २ कटोरा, ३ एक बाजे का नाम जो सारङ्गी कासा होता है ।

प्रा० बेलि (सं० वल्लि, वल्=घेरना) बेली) स्त्री० बेल, लता ।

प्रा० बेवहरा (सं० व्यवहारिक) बेवहरिया) पु० लेन देन करने-वाला, रुपये उधार देनेवाला, महाजन ।

प्रा० बेवहार (सं० व्यवहार) पु० लेन देन, लेवा देई, २ रीति रस्म, ३ चाल चलन ।

प्रा० बेसन पु० चने का आटा ।
 प्रा० बेसर स्त्री० एक गहना जो नाक
 में पहना जाता है ।
 प्रा० बेस्वा (सं० वेश्या) स्त्री०
 कश्चनी, पतुरिया, गणिका, नगर-
 नारी, कसबी, रंडी ।
 प्रा० बेहड़ गु० नाबराबर, ऊँच
 नीच, ऊँचा नीचा ।
 प्रा० बैंगन पु० वृन्ताक, भोंटा ।
 प्रा० बैंगनी (बैंगन) गु० कुछ
 बैजनी (मियाही लिये लाल
 रंग ।
 प्रा० बैंदी (सं० बिन्दु) स्त्री० टिकली,
 बिंदी, टीकी, २ एक गहना जिसको
 स्त्रियां ललाटपर पहनती हैं ।
 प्रा० बैजन्तीमाल (सं० वैजयन्ती
 माला, वैजयन्ती = जीतनेवाली,
 माला = फूलों का हार) स्त्री० पँच-
 रंगी माला, विष्णु भगवान् के
 पहिने की माला, जो नीलम,
 मोती, माणिक, पुखराज, और
 हीरा, इन पाँच रत्नों से बनती है ।
 प्रा० बैठक (सं० बैठना) स्त्री०
 बैठका (बैठने की जगह ।
 प्रा० बैठना (सं० उपविष्ट) क्रि०
 अ० आसन मारना, बैठजाना, २
 जमना, ३ दीवार आदिका गिर
 पड़ना, ४ मातमपुरसी को जाना,
 ५ बेकाम होना ।

प्रा० बैठजाना बोल० गिरपड़ना ।
 प्रा० बैठरहना बोल० छोड़ देना,
 आश तोड़ना, सुस्त होना ।
 प्रा० बैठाना (क्रि० सं० बैठने
 बैठारना) की आज्ञा देना,
 बैठालना (बिठलाना, जमाना ।
 प्रा० बैद (सं० वैद्य) पु० रोगियों
 का इलाज करनेवाला, मिश्र,
 हकीम, चिकित्सक, दवादारु
 करनेवाला ।
 प्रा० बैदक (सं० वैद्यक) पु० इलाज
 करने की विद्या, चिकित्सा करने
 की विद्या, दवादारु करने की
 विद्या, इल्मे हिकमत, डाक्टरी ।
 प्रा० बैन (सं० वाणी वा वचन) पु०
 बोल, वचन, कलाम ।
 प्रा० बैना पु० एक गहना जो ललाट
 पर पहना जाता है, २ बखरा, भाजी ।
 प्रा० बैपार (सं० व्यापार) पु०
 वणिज, लेनदेन, सौदागरी ।
 प्रा० बैपारी पु० सौदागर, तज्जार,
 महाजन ।
 प्रा० बैयरबानी (सं० वीरवनिता)
 चारोवर्गकी स्त्री को कहते हैं ।
 प्रा० बैर (सं० वैर) पु० दुश्मनी,
 शत्रुता, द्वेष, विरोध ।
 प्रा० बैरपड़ना बोल० दुश्मनी हो
 जाना, विरोध पड़ना ।
 प्रा० बैरलेना बोल० बदलालेना ।

प्रा० बैरख (फा० बैरक) पु० भंडा,
ध्वजा, पताका ।

प्रा० बैरन (सं० वैरिणी) स्त्री०
दुश्मन स्त्री, विरोधिनी ।

प्रा० बैरागन (सं० वैरागिणी) स्त्री०
योगिन बैरागिन स्त्री ।

प्रा० बैल (सं० बलीवर्द) पु० एक
चौपाये का नाम, बर्द, २ मूर्ख,
अज्ञानी, भोंदू ।

प्रा० बैस (सं० वयस्, वय्=जाना वा
अज्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था,
किशोर बैस=जवानी की शुरूआ
अवस्था ।

प्रा० बैस (सं० वैश्य) पु० तीसरा
वर्ण, बनियाँ, २ राजपूतों की एक
जाति जिसके नाम से अवध के
पास का बहुत सा देश बैसवाड़ा
कहलाता है ।

प्रा० बैसंदर (सं० वैश्वानर, विश्व=
संसार वा सब, नर=मनुष्य, अर्थात्
जिसको सब मनुष्य चाहते हैं) पु०
आग, आगी, अग्निदेवता ।

प्रा० बैसाख (सं० वैशाख) पु० एक
महीने का नाम, दूसरा महीना ।

प्रा० बोझ पु० भार, बोझा ।

प्रा० बोझ सिरपर होना बोल०

कोई कठिन काम का आ जाना ।

प्रा० बोझल गु० भारी, बजनी ।

प्रा० बोटी स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा ।

प्रा० बोटी बोटी फड़कना बोल०

बहुत चालाक होना, फरफंदी होना ।

प्रा० बोदा गु० निर्बल, नामर्द ।

सं० बोध (बुध्=जानना) पु० ज्ञान,
समझ, बुद्धि ।

सं० बोधक (बुध्=जानना) क०
पु० शिक्षक, समझानेवाला, जता-
नेवाला, नासेह, नसीहत करनेवाला ।

सं० बोधन (बुध्=जानना) भा०
पु० जतलाना, ज्ञान, बोध, विज्ञापन ।

सं० बोधनी (बुध्=जानना) स्त्री०
बोधिनी (बुध्=जानना) स्त्री०
सिखानेवाली, बोध
करानेवाली, नसीहत करनेवाली ।

सं० बोधनीय } र्म्यं बोधनार्ह, स-
बोधित } मझाया गया, स-
बोधितव्य } मझाने योग्य, न-
बोध्य } सीहत किया गया ।

प्रा० बोना (सं० वपन, वप्=बोना)
क्रि० सं० बीज डालना ।

प्रा० बोरा क्रि० सं० दुबाना, बुढ़ाना ।

प्रा० बोरा पु० एक तरह का बड़ा
थैला, गोना ।

अं० बोर्डिङ्गहाउस पु० छात्रालय,
तालिबइस्कों के रहनेका मकान ।

प्रा० बोल (सं० बोलना) पु० वचन,
बात, २ गीत का शब्द ।

प्रा० बोलचाल भा० पु० गुप्तगू,
बात चीत ।

प्रा० बोलना (सं० वद् वा वच्=
कहना) क्रि० अ० बात करना,
कहना, २ बजना, आवाज निकलना ।

प्रा० बोलबाला (बोल=वचन और फारसी शब्द बाला का अर्थ ऊपर) पु० आशीर्वाद, बोलबाला होना, बोल० भला होना, फलना, बढ़ना ।

प्रा० बोली (बोलना) स्त्री० वाणी, भाषा, बात ।

प्रा० बोली ठोली सुनाना बोल० ताना देना ।

प्रा० बोहित स्त्री० नाव, जहाज ।

प्रा० बौछाड़ } स्त्री० मेह की बूँदें
बौछार } जो हवा के कारण
तिरछी पड़ती हैं ।

सं० बौद्ध (बुद्ध) पु० बौद्धमती, जैनी, विष्णु का अवतार, जगन्नाथ जी ।

प्रा० बौरहा } (सं० वातूल) गु०
बौराहा } दीवाना, पागल,
बौरा } सिड़ी, बावला ।

प्रा० बौराना क्रि० अ० पागल होना ।

प्रा० व्याना (सं० वयन, वी=जनना)
क्रि० सं० बच्चा देना, जनना, उप-
जाना ।

प्रा० व्यापना (सं० व्यापन, वि=
बहुत, आप=फैलना) क्रि० अ०
सब जगह फैलना, फैलजाना ।

प्रा० व्यालू पु० रात का खाना ।

प्रा० व्याह (सं० विवाह) पु० शादी,
विवाह, गँठबन्धन, पाणिग्रहण ।

प्रा० व्याहरचाना बोल० शादी
की रीतें रसमें करना ।

प्रा० व्याहलाना बोल० दुलहिन
को घर में लाना ।

प्रा० व्याहता (सं० विवाहिता)
स्त्री० गु० व्याही हुई स्त्री ।

प्रा० व्याहा (सं० विवाहित) गु०
व्याहा हुआ ।

प्रा० व्योंत पु० कपड़े का तराश,
छाँट, २ डौल ।

प्रा० व्योंतना क्रि० सं० कपड़े को
तराशना या कतरना ।

प्रा० व्योपार (सं० व्यापार) पु०
बणिज, लेनदेन, सौदागरी ।

प्रा० व्योपारी पु० महाजन, सौदागर ।

प्रा० व्योमासुर (सं० व्योमासुर,
व्योम=आकाश, असुर=राक्षस)
पु० एक राक्षस का नाम जो कंस
का मन्त्री था ।

प्रा० व्योरा } पु० समाचार, वृत्तान्त,
व्यौरा } बात, २ पता, निशान,
३ भेद ।

प्रा० व्योहार } (सं० व्यवहार) पु०
व्यौहार } काम, धंधा, व्योपार,
लेनदेन, २ रीत भौत, चलन ।

प्रा० ब्रज (सं० व्रज, ब्रज्=जाना) पु०
मथुरा का जिला जिसमें गोकुल,
वृन्दावन आदि हैं और १६८
मीलके घेरे में है—ब्रज मण्डल=ब्रज
का जिला ।

प्रा० ब्रजबाला (सं० व्रजबाला)
स्त्री० व्रजकी स्त्री, गोपी ।

प्रा० ब्रजभाषा (सं० ब्रजभाषा)
स्त्री० ब्रजकी बोली ।

प्रा० ब्रह्म (बृह्=बढ़ना) पु० परमेश्वर,
सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी, परमात्मा,
आदिपुरुष, २ वेद, ३ तत्त्व,
४ तप, ५ ब्रह्म, ६ ब्राह्मण ।

प्रा० ब्रह्मअस्त्र (सं० ब्रह्मास्त्र) पु०
ब्रह्माका दियाहुआ अस्त्र, ब्रह्मबाण ।

सं० ब्रह्मघातक (ब्रह्म=ब्राह्मण,
ब्रह्मघ्न) हन्=मारना)

क० पु० ब्राह्मण को मारनेवाला,
ब्रह्महत्यारा ।

सं० ब्रह्मचर्य (ब्रह्म=वेद, चर्=चलना
अर्थात् वेद पढ़ने के लिये फिरना) पु० ब्रह्मचारी का धर्म ।

सं० ब्रह्मचारी (ब्रह्म=वेद, चर्=चलना,
जो वेद पढ़ने के लिये फिरता है) पु० पहला आश्रमी, वेद पढ़ने
वाला, विद्यार्थी, मनुष्य की अवस्था के चार भाग किये हैं उनमें से
पहली २५ वर्ष तक अवस्था को ब्रह्मचर्य कहते हैं और उस अवस्था में वह केवल वेदशास्त्र पढ़ता है और व्याह नहीं करता ।

सं० ब्रह्मज्ञ (ब्रह्म=परमेश्वर, ज्ञ=जानना) पु० परमेश्वर को जानने
वाला, ऋषि, मुनि ।

सं० ब्रह्मज्ञान (ब्रह्म + ज्ञान) पु० परमेश्वर का ज्ञान, सच्चा ज्ञान ।

सं० ब्रह्मण्य (ब्रह्म) पु० विष्णु,

गु० ब्राह्मण का वा ब्राह्मण के योग्य, २ ब्रह्मा का ।

सं० ब्रह्मभोज (ब्रह्म=ब्राह्मण, ब्रह्मभोजन) भोज वा भोजन=खिलाना) पु० ब्राह्मणों को खिलाना ।

सं० ब्रह्मन् पु० वेद, तप, सत्य, तत्त्व, निर्गुणेश्वर, विशुद्ध, विप्र, ब्राह्मण ।

सं० ब्रह्मपुरी स्त्री० सुमेरुपर्वत पर ब्रह्मा की पुरी ।

सं० ब्रह्मभूति स्त्री० ब्राह्मणता, वेदाधिकार, ब्रह्मा का ऐश्वर्य ।

सं० ब्रह्मयोग (ब्रह्म + योग) पु० परमेश्वर की प्रार्थना, भक्ति, उपासना आदि ।

सं० ब्रह्मरात्रि (ब्रह्म=ब्रह्मा, रात्रि=रात) स्त्री० ब्रह्मा की रात जिस में १००० युग अथवा मनुष्यों के २१६०००००० बरस बीत जाते हैं, २ ऋः महीने की रात जिसमें श्रीकृष्ण ने रास किया था ।

सं० ब्रह्मर्षि (ब्रह्म + ऋषि) पु० परमेश्वर का ध्यान करनेवाला और वेद जाननेवाला ऋषि जैसे वसिष्ठ आदि ।

सं० ब्रह्मर्षिदेश पु० आर्यावर्त, कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश, पाञ्चालदेश, मथुरादेश, सूरसेनदेश ।

सं० ब्रह्मलोक (ब्रह्म=ब्रह्मा, लोक=स्थान) पु० ब्रह्मा का स्थान,

सत्यलोक ।

सं० ब्रह्मवर्चस् पु० ब्रह्मतेज ।

सं० ब्रह्मबाण (ब्रह्म + बाण) पु०
ब्रह्मअस्त्र, ब्रह्मा का बाण ।

सं० ब्रह्मवादी (ब्रह्म=परमेश्वर,
वादी=कहनेवाला, वद्=कहना)
पु० वेदान्ती, ब्रह्मज्ञानी ।

सं० ब्रह्मशेष (ब्रह्म=ब्राह्मण, शेष
=बचाहुआ) पु० ब्राह्मणों के खाने
के पीछे जो खाना बचरहे ।

सं० ब्रह्मसूत्र पु० वेदान्त, २५ज्ञोपवीत ।

सं० ब्रह्मस्वरूप (ब्रह्म=परमेश्वर,
स्वरूप=रूप) गु० परमेश्वर के
बराबर, परमेश्वर का रूप ।

सं० ब्रह्महा (ब्रह्म + हन्) क० पु०
ब्रह्मघाती, ब्राह्मण का मार डालने
वाला ।

सं० ब्रह्महत्या (ब्रह्म=ब्राह्मण, हत्या
=मारना) स्त्री० ब्राह्मण को मारना ।

सं० ब्रह्मा (बृह्=बढ़ना) पु० सृष्टि
को पैदा करनेवाला देवता, वि-
धाता, विधना, ब्रह्मा के चार मुँह
हैं जिनसे चार वेद निकले हैं और
ब्रह्मा का वाहन हंस है ।

सं० ब्रह्माक्षर (ब्रह्म + अक्षर) पु०
तीनों देवताओं का मन्त्र, ओम् ।

सं० ब्रह्माणी (ब्रह्मा) स्त्री० ब्रह्मा
की स्त्री ।

सं० ब्रह्माण्ड (ब्रह्म + अण्ड) पु०
जगत्, सृष्टि, भूमण्डल, सबसृष्टि,

२ चाँदि, शिरका बिचला भाग,
कांसय सर ।

सं० ब्रह्मादिक (ब्रह्म + आदिक)
पु० ब्रह्मा और सब देवता ।

सं० ब्रह्मावर्त (ब्रह्म + आवर्त)
पु० स्थान का नाम जो बिदूर के
नाम से प्रसिद्ध है ।

सं० ब्रह्मासन (ब्रह्म + आसन) पु०
परमेश्वर का ध्यान करते समय का
आसन, ऋषिमुनियों का ध्यान
करते समय बैठने का ढंग ।

सं० ब्राह्मण (ब्रह्म अर्थात् जो ब्रह्म
का अथवा वेद का जाननेवाला)
पु० पहले वर्ण के मनुष्य, विम, द्विज ।

सं० ब्राह्मणी स्त्री० ब्राह्मणकी स्त्री ।

सं० ब्राह्मथ्य (सं० ब्रह्म) पु० ब्रह्म
की पूजा, परमेश्वर की पूजा ।

सं० ब्राह्मथ्यमुहूर्त्त (ब्राह्मथ्य + मुहूर्त्त)
पु० प्रभात, भोर, बिहान, प्रातः-
काल, पोह, सूर्य निकलने के प-
हले का समय ।

अं० ब्रिटिश स्त्री० अँगरेजी ।

भ

सं० भ (भा=चमकना) पु० नक्षत्र,
ग्रह, राशि, शुक्राचार्य, दीप्ति,
भरद्वाज, भ्रमर ।

प्रा० भँभोरना क्रि० सं० काट खा-
ना, फाड़खाना (जैसे कुत्ता) ।

प्रा० भँवर (सं० भ्रमर, भ्रम्=घू-
मना) पु० भौरा, २ चक्र, आवर्त्त ।

प्रा० भैवरा (सं० भ्रमर, भ्रम्= घूमना) पु० एक प्रकार की बड़ी मक्खी, भैवर, अलि, चञ्चरीक ।

प्रा० भकसी स्त्री० कैद करने के लिये एक बहुत छोटा और तड़ और अंधेरा मकान ।

प्रा० भकुवा गु० मूर्ख, भौंद्, कुपद्, निर्बुद्धि ।

सं० भक्त (भज्=सेवा करना) क० पु० भक्ति करनेवाला, सेवक, २ भात, ओदन ।

सं० भक्तकार क० पु० रसोई बनाने वाला, मूपकार, रसोईदार ।

सं० भक्तवत्सल (भक्त + वत्सल) पु० भक्तों पर दया करनेवाला, परमेश्वर ।

सं० भक्ति (भज्=सेवाकरना) पूजा, आराधना, विश्वास, परमेश्वर में अथवा अपने राजा या मालिक में प्यार, नवधाभक्ति-१ श्रवण, २ कीर्तन, ३ अर्चन, ४ वन्दन, ५ स्मरण, ६ निवेदन, ७ सख्य, ८ दास्य, ९ सेवन ।

प्रा० भक्तिवन्त (सं० भक्तिमत्) गु० जिसके मनमें भक्ति हो, भक्त, सेवक ।

प्रा० भक्ष (सं० भक्ष्य, भक्ष्=खाना) पु० खाना, भ्र्म० खानेयोग्य ।

सं० भक्षक (भक्ष् + अक) क० पु० खानेवाला, खाऊ, पेदू, खवैया ।

सं० भक्षण (भक्ष् + अण) भा०

पु० भोजन, आहार ।

सं० भक्षणीय (भक्ष् + अनीय) भ्र्म० पु० खानेयोग्य, खानेकी चीज ।

सं० भक्षित (भक्ष् + इत) भ्र्म० पु० खायाहुआ ।

सं० भक्ष्य (भक्ष् + य, भक्ष्=खाना) भ्र्म० पु० खानेयोग्य, पु० खाना, भोजन ।

सं० भग (भज्=सेवा करना) पु० योनि, स्त्रीचिह्न, २ सुभाग, ऐश्वर्य, ३ इच्छा, चाह, ४ शोभा, सुन्दरता, ५ सूर्य, ६ चाँद ।

प्रा० भगत (सं० भक्त) क० पु० सेवक, भक्ति करनेवाला, २ नर्तक, गानेवाला ।

प्रा० भगतखेलना बोल० स्वाँग लाना, नकल बनाना ।

प्रा० भगतन (भगत) स्त्री० वेश्या, कञ्चनी, पतुरिया, नाचनेवाली ।

सं० भगदत्त पु० कामरूप देशाधिप, नाम राजा का जो महाभारत में प्रसिद्ध था ।

सं० भगवत् (भग=ऐश्वर्य, वत्= भगवन्त) पु० ईश्वर भगवान् (भग=ऐश्वर्य, वत्= परमेश्वर, गु० ऐश्वर्य आदि गुणयुक्त ।

सं० भगवती स्त्री० चण्डी, देवी ऐश्वर्यादि गुणयुक्ता ।

प्रा० भगवाँ पु० गेरुवा बसन, गेरु मिट्टी में रंगाहुआ कपड़ा ।

सं० भगिनी (भञ्=सेवाकरना)

स्त्री० बहन, बहिन, सहोदरा ।

सं० भगीरथ (भग=ऐश्वर्य) पु० एक
सूर्यवंशी राजा का नाम जो अपने
तप के प्रभाव से गङ्गा को स्वर्ग से
पृथ्वी पर लाया, दिलीप का पुत्र ।

सं० भग्न (भङ्ग=तोड़ना) र्म० पु०
टूटा हुआ, फूटा हुआ, नष्ट, २
हराया हुआ, जीता हुआ ।

सं० भगनाश (भग्न=टूटी, आश=
आशा जिसकी) गु० निराश, न
उम्मेद ।

सं० भगनी स्त्री० स्वसा, बहिन ।

सं० भङ्ग (भङ्ग=तोड़ना) भा०
पु० तोड़ना, खण्डन, २ लहर,
तरङ्ग, ३ हार, पराजय, ४ छेद,
५ डर, स्त्री० भाँग, सबजी, एक
प्रकार की नशीली पत्ती ।

प्रा० भंगन स्त्री० मेहतरानी, पाखाना
साफ करनेवाली ।

प्रा० भंगी पु० मेहतर, पाखाना
साफ करनेवाला, भाङ्कश ।

सं० भंगुर (भङ्ग=तोड़ना) गु०
टेढ़ा, बाँका, २ नाश होनेवाला,
नष्ट, पु० नदी की बंकाई ।

प्रा० भंगेरा (भङ्ग) पु० बहुत भङ्ग
पीनेवाला ।

प्रा० भचकना (सं० भयचकित)
क्रि० अ० अचम्भे में आना ।

सं० भजन (भञ्=सेवा करना)

क्रि० सं० माला फेरना, परमेश्वर
का नाम रटना, जप ।

प्रा० भजना (सं० भजन) क्रि०
सं० जपना, ध्यान, माला फेरना ।

प्रा० भजना { क्रि० अ० भरना, चला
भजिजाना } जाना, दौड़जाना ।

सं० भज्यमान र्म० पु० सेव्यमान,
सेवित, सेवा किया गया ।

सं० भञ्जक (भञ्ज् + अक, भञ्ज्=
तोड़ना) क० पु० तोड़नेवाला,
खण्डन करनेवाला ।

सं० भञ्जन (भञ्ज् + अन, भञ्ज्=
तोड़ना) भा० पु० तोड़न, फोड़न,
खण्डन, गु० तोड़नेवाला ।

सं० भञ्जनहार क० पु० तोड़ने-
वाला ।

सं० भञ्जित (भञ्ज् + इत) र्म०
पु० खण्डित, टूटा हुआ ।

सं० भट (भट्=पोषना) पु० वीर,
योधा, लड़ाका, बहादुर, शूर, मल्ल ।

प्रा० भटकना क्रि० अ० ढाँवा-
डोल फिरना, इधर उधर वृथा
फिरना, भूलना, भ्रमना ।

प्रा० भटकाना क्रि० सं० भुलाना,
भ्रमाना ।

सं० भटित्र (भट् + इत्र) पु० शूल,
पकमांस, कबाब ।

प्रा० भटियारा { (भट्टीहारा)
भटियारा } पु० खाना पका-
नेवाला ।

सं० भट्ट (भट्=पोषना) मरहटे
ब्राह्मणों की एक पदवी, २ विद्या-
वान्, पण्डित, भाट ।

सं० भट्टार पु० सूर्य, पूज्य ।

सं० भट्टारक (भट् + ऋ + अक
ऋ=जाना) पु० देवता, तपस्वी,
राजा, सूर्य, विदूषक, भाँड़, गु०
पापरहित, निष्पाप, पुण्यवान् ।

प्रा० भट्टी (सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज्=
भट्टी) भूजना) स्त्री० बड़ा
चूल्हा, भाड़, २ पजावा ।

प्रा० भड़ पु० एक तरह की बड़ी नाव ।

प्रा० भड़क स्त्री० चमक, दमक,
भलक, दिखनौट, २ चौक ।

प्रा० भड़कना क्रि० अ० चमकना,
चौकना, २ आगका लूका उठना ।

प्रा० भड़भूजा (सं० भ्राष्ट्रभर्जक,
भ्राष्ट्र=भाड़, भर्जक=भूजनेवाला,
भ्रस्ज्=भूजना) पु० भाड़ भोंकने
वाला, कांदू ।

प्रा० भणना (सं० भण्=बोलना या
कहना) क्रि० स० बोलना, पढ़ना ।

सं० भणित (भण्=बोलना) र्म०
पु० कहा हुआ, कहता हुआ ।

प्रा० भंटा (सं० भण्टाकी, भटि=
पोषना) पु० बैंगन, वृन्ताक ।

सं० भण्ड क० पु० कौतुकी, भाँड़ ।

सं० भण्डक पु० खज्जनपक्षी, खँडरैचा ।

सं० भण्डन (भण् + अन, भण्ड=
बोलना) भा० पु० प्रतारण, झलना ।

सं० भंडूर भा० पु० प्रवञ्चना, झलना ।

प्रा० भंडा (सं० भाण्ड) पु० मटका ।

प्रा० भंडार (सं० भाण्डागार, भाण्ड
=वरतन, आगार=घर) पु० ख-
जाना, कोठा, कोठार, खत्ता ।

प्रा० भंडारी (भंडार) पु० कोठारी,
रोकड़िया, खजांची ।

प्रा० भंडेला (सं० भण्ड, भडि=
ठट्टा करना) पु० भाँड़ ।

प्रा० भनार (सं० भर्ता) पु० पति,
स्वामी, भर्ता ।

प्रा० भनीजा (सं० भ्रातृज, भ्रातृ
=भाई, जन्=पैदा होना) पु० भाई
का बेटा, भाई का लड़का ।

प्रा० भदेशल (गु० भोंड़ा, कुडौल,
भदेशा) गवारू, अनाड़ी ।

प्रा० भदा गु० मूर्ख, अज्ञानी, भोंदू,
गावदी, रेबरस, मोटेकामकी चीज ।

सं० भद्र (भदि=कल्याण होना)
क० पु० नेक, दोस्त, भागवान्,
श्रेष्ठ, उत्तम, पु० कल्याण, मङ्गल,
२ शिव, मुबारक ।

प्रा० भद्रहोना बोल० शिर के बाल
और डाढ़ी मूँछके बाल मुँड़ाना,
(हिन्दुओं में एक रीति है कि जब
कोई मरता है तब अथवा तीर्थ पर
बाल मुँड़ाते हैं) ।

सं० भद्रक पु० लाभ, फायदा, २
रस, मजा, ३ भलाई ।

सं० भद्रकाली (भद्र=कल्याणरूप,

काली, दुर्गा) स्त्री० दुर्गा, महा माया, काली देवी ।	अचम्भित) गु० डराहुआ, घबराया हुआ, भयातुर, भयभीत ।
सं० भद्रश्री स्त्री० चन्दन, केसर, कुंकुप, मङ्गल, शोभा, शृङ्गार ।	सं० भयभीत (भी=डरना) र्म्य० पु० डरा हुआ, घबराया हुआ, भयातुर ।
सं० भद्रा (भदि=सुखी होना) स्त्री० श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम, २ ज्योतिष में दूसरी, सातवीं और बारहवीं तिथि, व्योमनदी, अशकुन ।	सं० भयवान् (भय=डर, वान्=वा- ला) गु० डरा हुआ, भयातुर ।
प्रा० भनक पु० आवाज, शब्द ।	प्रा० भया { (सं० भू=होना) क्रि० भयौ } अ० हुआ ।
प्रा० भबकी स्त्री० भमकी, घुरकी, फिड़की, डाट ।	सं० भयातुर (भय=डर, आतुर= घबराया हुआ) गु० डर से घबराया हुआ, भयचक ।
प्रा० भभकना क्रि० अ० आग लगना २ आग का लूका उठना, ३ क्रोध में आना, जल मरना, ४ घोड़े का खूब वेग से दौड़ना ।	सं० भयानक (भी=डरना) गु० डरा- वना, भयंकर, नौ रसों में से एक रस का नाम ।
प्रा० भभूका पु० भल, ज्वाला, गु० खूब लाल (जैसे जलता हुआ को- यला) २ बहुत चमकदार, सुन्दर ।	सं० भयापह (भय + अप + हन् =नाश करना) क० पु० भयनाशक, डर लुढ़ानेवाला ।
प्रा० भभूत { (सं० विभूति) स्त्री० भभूती } राख, भस्म जिसको यो- गी संन्यासी अपने शरीर में मलते हैं ।	प्रा० भयावना (सं० भयानक) गु० डरावना, भयंकर, भयानक ।
सं० भय (भी=डरना) पु० डर, शङ्का, खौफ, त्रास ।	सं० भयावह (वह=जाना) क० पु० भयंकर, भयानक, भयदायक, खौफनाक ।
प्रा० भयखाना बोल० डरना ।	सं० भर (भृ=भरना) गु० पूरा, मुँहा- मुँह, सब, सारा, तमाम ।
प्रा० भयकारक { (भय=डर, कृ= भयंकर } करना) क० पु० डरावना, भयानक, भयजनक, खौफनाक ।	प्रा० उमरभर बोल० सारी उमर ।
प्रा० भयचक { (सं० भयचकित, भैचक } भय=डर, चकित=	सं० भरण (भृ=पालना) भा० पु० भरना, पोषण, पालन, रक्षा, बचाव, तनख्वाह ।
	सं० भरणी (भृ=भरना) स्त्री० एक नक्षत्र का नाम, २ सौंपका झड़ना ।

सं० भरणीय र्म० पु० पोष्य, पालन योग्य ।

सं० भरत (भृ=भरना, पालना) पु० राजा दशरथ का बेटा, २ एक राजा का नाम जिसके नाम से यह देश भरतखण्ड अथवा भारतवर्ष कहलाता है, दुष्यन्त का पुत्र ।

प्रा० भरत पु० एकधातु जिसमें ताँवा, जस्ता और सीसा मिला होता है ।

सं० भरताग्रज (भरत + अग्रज) पु० श्रीरामचन्द्रजी ।

सं० भरतपुत्रक पु० विदूषक, भाँड़, बहुरुपिया, बाजीगर ।

सं० भरद्वाज पु० एक मुनि का नाम जो बृहस्पति का बेटा था, २ एक पक्षी का नाम, खड्डैचा ।

प्रा० भरना (सं० भरण) क्रि० स० पूरा करना, २ महसूल या ऋण चुका देना, ३ बन्दूक में गोली आदि डालना, ४ सहना, पाना जैसे दुःख भरना, बोल० दुःख पाना, दुःख सहना ।

प्रा० भरपाना क्रि० स० वसूल पाना, २ जब कोई आदमी निराश होता है तब भी वह बोलता है कि “ मैंने भर पाया ” ।

प्रा० भरपूर गु० खूब भरा हुआ ।

प्रा० भरम (सं० भ्रम) पु० संदेह, धोखा, भूल, चूक, रयश, नामवरी ।

प्रा० भरमजाना बोल० किसी पर

किसी बात का संदेह होना ।

प्रा० भरमखुलना या खुलजाना बोल० भेद खुलजाना, मर्यादा खुल जाना ।

प्रा० भरमखोलदेना बोल० छिपी बातको प्रकट करदेना ।

प्रा० भरमगँवाना बोल० अपने यश को बट्टा लगाना, आवरू खोना ।

प्रा० भरमनिकलजाना बोल० भेद खुल जाना ।

प्रा० भरमाना (सं० भ्रम=धोखा) क्रि० स० धोखा देना, भुलाना, फुसलाना, ललचाना ।

प्रा० भरा (भरना) गु० पूरा, पूर्ण, मुँहामुँह ।

सं० भरित (भृ=भरना) र्म० पु० पूरित, पालित, पोषित, रक्षित ।

सं० भरू क० पु० महादेव, विष्णु, पिता, स्वामी ।

प्रा० भरोसा (सं० भद्राशा, भद्र=अच्छी, आशा=आश) पु० आशा, आस, विश्वास, उम्मेद ।

सं० भर्ग (भृज्=चमकना) पु० महादेव, ब्रह्मा, ज्योति, तेज, प्रकाश, किरण ।

सं० भर्जन (भर्ज्=भूँजना) पु० भूँजना, पचाना ।

सं० भर्त्ता (भृ=पालना, पोसना) पु० पति, स्वामी, स्वाविंद, गु० पालनेवाला, प्रतिपालक ।

सं० भर्त्सक (भर्त्स=अक) क० पु०
तिरस्कारक, निन्दक ।

सं० भर्त्सन् भा० पु० कुत्सा, निन्दा ।

सं० भर्तृहरि पु० विक्रमादित्य
राजा का भाई ।

प्रा० भल (सं० भद्र) गु० भला,
उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा ।

प्रा० भलमनसाई } स्त्री० अच्छा
भलमनसात } आदमीहोना,
भलमनसी } इन्सानियत ।

प्रा० भल पु० तरफ, ओर से, जैसे
शिरके भल=शिर की तरफ ।

प्रा० भला (सं० भद्र) गु० अच्छा,
उत्तम, श्रेष्ठ, २ चंगा ।

प्रा० भलाकर भलाहो, सौदाकर
नफाहो कहा—जैसा करेगा वैसा
पावेगा ।

प्रा० भलाआदमी बोल० अच्छा
आदमी ।

प्रा० भलामानना बोल० अहसान
मानना, भलाई मानना ।

प्रा० भलाचक्का बोल० नीरोग, मोटा,
ताजा ।

प्रा० भलेआये बोल० बहुतदेरमें आये ।

प्रा० भलाई भा० स्त्री० नेकी, नेक-
नामी, अच्छापन, क्षेम, कुशल ।

प्रा० भलाईलेना बोल० लोगों के
साथ अहसानकरना, नेकीकरना ।

प्रा० भलाईरहना बोल० सुयश
रहना, नेकनाम रहना ।

सं० भल्ल पु० भाला, बरछा, रीछ ।

सं० भल्लुक { पु० रीछ, भालू ।
भल्लूक }

सं० भव (भू=होना) पु० संसार,
जगत्, २ जन्म, ३ कुशल, क्षेम,
मङ्गल, ४ पाना, प्राप्ति, ५ शिव,
महादेव ।

सं० भवदीय गु० त्वदीय, तुम्हारा,
आपका ।

सं० भवन (भू=होना) पु० घर,
स्थान, वास, भाव, सत, चिन्तन ।

सं० भवन्त पु० आपका, तुम्हारा,
समय, काल, गु० पूज्य, श्रेष्ठ,
उत्तम, प्रधान ।

सं० भवन्ति क० पु० समय, वर्तमान
काल, पूजा का समय, श्रेष्ठ, पूज्य ।

सं० भवभूति पु० नाटक, मालती-
माधव का वर्णन, नकुल, न्योला,
स्त्री० संसार की विभूति, संसार
का ऐश्वर्य ।

सं० भवसमुद्र { (भव=संसार,
भवसागर } समुद्र वा सागर=
समन्दर) पु० संसाररूपी समुद्र,
संसारसागर ।

सं० भवादृश (भव + आदृश्) गु०
आपके तुल्य, तुम्हारे समान, आप
सरीखा ।

सं० भवानी (भव=शिव) स्त्री० शिव
की स्त्री, शिवरानी, पार्वती, दुर्गा ।

सं० भवार्णव (भव=संसार, अर्णव

=समुद्र) पु० संसारसमुद्र, भवसागर ।
 सं० भवितव्य (भू=होना) भा०
 स्त्री० होनेवाला, होनहार ।
 सं० भवितव्यता (भवितव्य)
 भा० स्त्री० होनहार, २ भाग्य, भाग ।
 सं० भविता क० पु० होनहार, होने
 वाला, गु० पूज्य, श्रेष्ठ ।
 सं० भविष्य क० पु० होनेवाला ।
 सं० भविन क० पु० बात करने
 वाला, मुतकल्लिम ।
 सं० भविष्य (भू=होना) गु०
 होनहार, होनेवाला, जो होगा ।
 सं० भविष्यत् (भू=होना) पु०
 आनेवाला समय, गु० होनहार ।
 सं० भविष्यद्रक्ता (भविष्यत्=होन-
 हार, वक्ता=कहनेवाला) क० पु०
 भविष्यत्काल की बात जानने
 वाला, आगमज्ञानी, होनहार जा-
 ननेवाला ।
 सं० भविष्योन्नति (भविष्य +
 उन्नति) स्त्री० आगामी वृद्धि, होने
 वाली तरक्की, आयन्दा तरक्की ।
 सं० भव्य (भू=होना) गु० भागवान्,
 होनहार, योग्य, शुभ, सच्चा ।
 सं० भषी (भष्=भूंकना) क० पु०
 कुत्ता, श्वान ।
 सं० भस्त्रा स्त्री० चमड़े की धौंकनी ।
 सं० भस्म (भस्=चमकना) स्त्री०
 राख, द्वार, भभूत ।
 सं० भस्मक (भस्म=राख, कृ=क-

रना) क० पु० बहुभख, रोग, बहुत
 भोजन करनेवाला ।
 सं० भस्मसात् अव्य० सर्वभस्म, सब
 जल गया ।
 सं० भा (भा=चमकना) स्त्री० चमक,
 प्रकाश, शोभा, सुन्दरता, पु० सूर्य ।
 प्रा० भाँग (सं० भङ्गा, भञ्ज=तोड़ना)
 स्त्री० बूटी, भङ्ग, विजया, सबजी ।
 प्रा० भाँजना (सं० भञ्जन, भञ्ज=
 तोड़ना) क्रि० स० तोड़ना, मि-
 लाना, जैसे रस्सी का ।
 प्रा० भाँजा ((सं० भगिनीज या
 भान्जा) भागिनेय) स्त्री० ब-
 हिन का बेटा ।
 प्रा० भाँजी ((सं० भागिनेयी) स्त्री०
 भान्जी) बहिन की बेटी ।
 प्रा० भाँजी (सं० भञ्जनी, भञ्ज=
 तोड़ना) स्त्री० रुकाव, रोक ।
 प्रा० भाँजी भारना बोल० रोकदेना,
 बन्द करना ।
 प्रा० भाँड़ (सं० भण्ड, भण्डि=हँसी
 करना) पु० बहुरूपिया, स्वांग
 करनेवाला ।
 प्रा० भाँड़ना (सं० भण्डन, भण्डि
 =बुरा कहना) क्रि० स० गाली
 देना, बुरा भला कहना ।
 प्रा० भाँड़ ((सं० भाण्ड, भा=च-
 भाँड़ा) मकना) पु० बरतन, हँडा ।
 प्रा० भाँत (स्त्री० डौल, ढब, रीति,
 भाँति) प्रकार, तरह ।

प्रा० भौतभौत बोल० तरह तरह
का, नाना प्रकार का, किस्म
किस्म के ।

प्रा० भौवर पु० } (सं० भ्रम् = धूमना)
भौवरी स्त्री० } व्याह में दुलहिन
को दूल्हे के चारों ओर सात बार
घुमाना या दूल्हा दुलहिन का वेदी
की परिक्रमा देना, २ फेर, घुमाव ।

प्रा० भाई (सं० भ्राता) पु० एक
बाप का बेटा, मा जाया भैया,
२ संगी, साथी, मित्र ।

प्रा० भाईचारा पु० भयापा, भायप,
नतैत, बिरादरी ।

प्रा० भाईबन्द (भ्राता + बन्धु) पु०
जाति के लोग, भयापा, बिरादरी ।

प्रा० भाकसी स्त्री० कैद करने के
लिये एक बहुत छोटा तंग और
अंधेरा मकान ।

प्रा० भाखना } (सं० भाषण) क्रि०
भाषना } सं० बोलना, कहना ।

प्रा० भाखा (सं० भाषा) स्त्री०
बोली, भाषा, जवान ।

सं० भाग (भज् = हिस्सा करना)
पु० हिस्सा, बाँट, अंश, विभाग,
खण्ड ।

प्रा० भाग (सं० भाग्य) पु० प्रारब्ध,
क्रिस्मत, नसीब, भाग्य ।

प्रा० भागखुलना } बोल० भाग्य-
भागजागना } वान् होना,
धनी होना ।

सं० भागग्राही (ग्रह = लेना) क०
पु० भागी, हिस्सेदार ।

प्रा० भागभरोसा बोल० धीरज,
ढाढ़स ।

प्रा० भागना क्रि० अ० पलाना,
दौड़ना, २ अवज्ञा करना ।

प्रा० भागचलना बोल० निकल
चलना, भागजाना, चलाजाना ।

प्रा० भागजाना बोल० चला-
जाना, रफूचकर होजाना ।

सं० भागधेय (धा = लेना) पु०
भाग्य, शुभकर्म, उपायन, राजा
का कर, खिराज, दायद,
सपिण्ड, बलि ।

प्रा० भागनिकलना गु० निकल
चलना, भागचलना ।

प्रा० भागाभाग बोल० दौड़ादौड़,
लगातार दौड़ना ।

सं० भागवत (सं० भगवत् अर्थात्
जिसमें परमेश्वर की कथा हो)
पु० अठारह पुराणों में का एक
पुराण जिसको वेदव्यासजी ने
बनाया जिसमें बारह स्कन्ध हैं
और सब पुराणों से यह पुराण
इन दिनों में बहुत पढ़ा पढ़ाया
जाता है । इसमें अठारह हजार
श्लोक हैं । इसके दशवें स्कन्धका
उल्था हिन्दीभाषा में हुआ है जिस
का नाम प्रेमसागर है ।

सं० भागहार (ह = हरण) पु० भा

जक, गु० भागहर्ता, मकसूमअलेह ।
 सं० भागी (भाग=हिस्सा) पु०
 साभी, बँटैत, बँटवैया ।
 प्रा० भागीरथी (भगीरथ) स्त्री०
 गङ्गा, कहते हैं कि गङ्गा को राजा
 भगीरथ तपस्या करके स्वर्ग से
 पृथ्वी पर लाये इस लिये इसका
 नाम भागीरथी पड़गया ।
 सं० भागुरि पु० स्मृति-व्याकरणादि
 का कर्ता, धर्मशास्त्र और व्याकरण
 का आचार्य ।
 सं० भाग्य (भज्=सेवा करना) पु०
 प्रारब्ध, भाग, किस्मत, नसीब ।
 सं० भाग्यवन्त (भाग्य=भाग,
 भाग्यवान्) वत्=वाला) गु०
 भागवान्, प्रारब्धी, किस्मतवाला,
 लक्ष्मीवान्, धनवान् ।
 सं० भाग्यशाली क० पु० प्रारब्धी,
 किस्मतवर ।
 सं० भाग्यहीन (भाग्य + हीन) गु०
 मन्दभागी, दरिद्री, बद् किस्मत ।
 सं० भाग्यानुसार (भाग्य + अनु-
 सार) गु० प्रारब्धानुसार, तत्कदीर
 के मुवाफिक ।
 सं० भाजक (भाज्=बाँटना) पु०
 बाँटनेवाला, वह अङ्क जिसका भाग
 दिया जाय, मकसूमअलेह ।
 सं० भाजन (भाज्=जुदा करना)
 पु० बरतन, वासन, पात्र, भौंडा ।
 प्रा० भाजना कि० अ० भागना ।

सं० भाजित (भाज्=बाँटना) र्म०
 पु० बाँटा हुआ, जुदा किया हुआ ।
 सं० भाजी (भाज्=बाँटना) स्त्री०
 साग, तरकारी ।
 प्रा० भाजी (सं० भाजित, भाज्=
 बाँटना) स्त्री० खाने का हिस्सा,
 बखरा, बैना ।
 सं० भाज्य (सं० भाज्=बाँटना)
 र्म० पु० भाग देने योग्य, पु० भाग,
 हिस्सा, विभाग, २ गणित में वह
 संख्या जिसमें भाग दिया जाता
 है, मकसूम ।
 प्रा० भाट पु० कवि, चारण, यश
 बखानेवाला ।
 सं० भाटक (भट=बेतन) पु० भाड़ा,
 किराया, क० भाड़ा देने वाला ।
 प्रा० भाठा पु० समुन्दर के पानी
 का उतार या गिरना ।
 प्रा० भाड़ (सं० भ्राष्ट्र, भ्रसज्=भूँ-
 जना) पु० एक तरह का बड़ा चूल्हा
 जिसमें चने आदि भूने जाते हैं ।
 प्रा० भाड़ा पु० किराया ।
 प्रा० भाण्डीर पु० एक वन का नाम
 जो वृन्दावन में है, २ बड़का वृक्ष ।
 सं० भात (भा=दीप्ति) क० पु०
 दीप्तिमान्, रोशन, प्रकाशवान् ।
 प्रा० भात (सं० भक्त, भज्=पकाना)
 पु० पका हुआ चावल ।
 प्रा० भाथा पु० तीर रखने का घर,
 तूण, बकूँ, ^{गाला, ...}
 वाला हो, बदे

प्रा० भादौ (सं० भाद्र, भद्र=भाद्र-
पदा नक्षत्र) पु० बरस का छठा
महीना जिसमें पूरा चाँद भाद्रपदा
नक्षत्र के पास रहता है और इस
महीने की पूर्णमासी को यह नक्षत्र
होता है ।

प्रा० भादौ की भरन बहुत भारी
मेह जो भादौ में बरसता है ।

प्रा० भाना क्रि०स० अच्छा लगना,
मन चाहा होना, सोहाना, पसन्द
होना ।

सं० भानु (भा=चमकना) पु०सूर्य,
२ सूर्य की किरण ।

सं० भानुज (भानु + ज, जन्=
पैदा होना) पु० अश्विनीकुमार,
शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण ।

सं० भानुजा (भानु=सूर्य, जन्=पैदा
होना) स्त्री० यमुना नदी, यमुना ।

प्रा० भाघ्रा (सं० भञ्जन) क्रि०म०
तोड़ना, भौंजना ।

प्रा० भाक्र (सं० बाष्प) स्त्री० धुआं,
बाफ ।

प्रा० भाभी (सं० भ्रातृवधू) स्त्री०
भाई की स्त्री, भावज, भौजाई ।

सं० भाम पु० सूर्य, क्रोध, प्रकाश,
बहनेई ।

सं० भामा स्त्री० क्रोधयुक्त स्त्री ।

सं० भामी क० पु० क्रोधी ।

प्रा० भायप भा० पु० भाईपन ।

सं० भाग्नि क्रोध करना)

स्त्री० क्रोध करनेवाली स्त्री, कर्कशा,
लड़ाका स्त्री, लुगाईमात्र, स्त्रीमात्र ।

सं० भार (भृ=भरना) पु० बोझ,
बोझा, ६४ माप का पल, २००० पल
का भार या ८००० तोले का ।

सं० भारत (भरत एक राजा का
नाम) पु० भरत राजा का वंश
अथवा देश, भरतखण्ड, २ महाभा-
रत ग्रन्थ जिसमें भरतवंशी राजा
अर्थात् कौरव और पाण्डवों की
लड़ाई का वर्णन है ।

सं० भारती (भृ=भरना) स्त्री०
सरस्वती, वाणी ।

सं० भारद्वाज पु० मुनिभेद, द्रोणा-
चार्य, अगस्त्यमुनि, बृहस्पति का
पुत्र, खड़रैचापक्षी, हड्डी ।

सं० भारवाह (भार=बोझ, वह
भारवाहक) =लेजाना) क०
पु० बोझ लेजानेवाला पशु जैसे
बैल, गधा आदि, मोटिया ।

सं० भारिक (भृ=भरना) क०पु०
कहार ।

सं० भारी (भार) गु० बोझिल,
गुरू, २ बड़ा मोटा, ३ महंगा,
बहुत मोल का ।

प्रा० भारीभरकम बोल० गंभीर,
भला मानुष, सहनेवाला ।

प्रा० भारीपत्थरचूमकरछोड़देना
बोल० जो काम अपने से न होसके
उसको छोड़ देना ।

प्रा० भारीहोना बोल० बहुत कठिन होना ।

सं० भार्गव (भृगु) पु० शुक्र, परशुराम, गज, धन्वी, धनुषधारी, स्त्री० पार्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, दूव ।

सं० भार्या (भृ=भरना) स्त्री० जोरू, व्याही हुई स्त्री, बहू, पत्नी ।

सं० भार्यानिक्रम (भार्या + अ-तिक्रम) पु० परस्त्रीगामी, स्त्री त्याग, स्त्री का नाश होना, स्त्री का अपराध ।

सं० भाल (भा=चमकना) पु० ललाट, लिलाड़, लिलार ।

प्रा० भाल (सं० भल्ल, भल्ल=मारना) स्त्री० तीरकी नोक या फाल ।

प्रा० भाला (सं० भल्ल, भल्ल=मारना) पु० बर्छा, सेल, सांग ।

प्रा० भालुक } (सं० भल्लूक, भ-
भालू } ल्ल=मारना) पु०
भाल } रीछ, एक जंगली जानवर ।

सं० भाव (भू=होना वा सोचना) पु० सम्पत्ति, मत, जीकी बात, मानसविकार, २ दशा, अवस्था, ३ गुण, स्वभाव, प्रकृति, ४ अर्थ, अभिप्राय, मतलब, ५ मन, मनकी तरङ्ग, ६ काम, क्रोध, मोह, स्नेह आदि, ७ आन, सदा, नखरा, चोंचला, हाव भाव, ८ होना, ९ पदार्थ, द्रव्य, १० नाटक में बहुत

बातों का जाननेवाला पण्डित, ११ तन्वादि द्वादशस्थान अर्थात् कुण्डली के बारह घर ।

प्रा० भावबनाना बोल० चोंचला करना, नाचने में हाथ-पैर-आँख आदि अङ्गों से इशारा करना ।

प्रा० भाव पु० मोल, निख ।

प्रा० भावई (सं० भावी) क्रि० वि० दैवयोग से, भविष्य, होनहार ।

प्रा० भावज (सं० भ्रातृजाया) भ्रातृ=भाई, जाया=स्त्री) स्त्री० भाई की स्त्री, भाभी, भौजाई ।

सं० भावना (भू=होना वा सोचना) स्त्री० चिन्ता, ध्यान, भाव, सोच, संदेह, अनुभव, जो बात पहले हो चुकी हो उसको फिर याद करना ।

सं० भावक क० पु० चिन्ताकारक ।

सं० भावाभाव (भाव + अभाव) भा० पु० होना न होना, अदम वजूद ।

सं० भाविक क० पु० अभिप्राय ज्ञाता, नर्तक, चतुर, जौहरी, परखने वाला ।

सं० भावित (भू=होना वा सोचना) र्म० क० सोची, चिन्तित, फिकरमन्द, सचेत, शङ्कित, डरता हुआ, चिन्ता करता हुआ ।

सं० भावी (भू=होना) गु० होनहार, होने वाला, होतव्य, भविष्य, जो कुछ होनेवाला हो, बदाहुआ ।

सं० भाबुक (भू=होना) भा० पु०
मङ्गल, कल्याण, प्रसन्नता, गु०
प्रसन्न, नीरोग ।
प्रा० भावे (सं० भावे=होने में)
लेखे विचार में, मन में जानने में,
पसन्द आवे ।
सं० भाषण (भाष्=कहना) पु०
कहना, बोलना ।
सं० भाषणीय र्म० पु० कहने योग्य ।
सं० भाषा (भाष्=कहना) स्त्री०
बोली, वाणी, जवान, भाषा ।
सं० भाषान्तर गु० अन्य भाषा,
उल्था ।
सं० भाषित (भाष्=कहना) र्म०
पु० कहा हुआ, कथित ।
सं० भाषी क० पु० वक्ता, वादी ।
सं० भाष्य (भाष्=कहना) पु०
टीका, टिप्पणी, सूत्रार्थ, महा-
भाष्य नाम एक ग्रन्थ जो संस्कृत
व्याकरण की एक टीका है ।
सं० भाष्यकार क० पु० टीकाका-
रक, टीका बनानेवाला, शरह क-
रनेवाला ।
सं० भासकार स्त्री० प्रकाश, दीप्ति,
सम्पदा, प्रभा, शोभा, किरण,
पु० गृद्ध, मुर्गा, अहीर ग्राम ।
सं० भासन्त गु० सुन्दराकार, रम-
णीक, मनोहर, प्रकाशवान्, पु०
सूर्य, चन्द्रमा, कमल, मोर की

चोटी, मुर्गा, गृद्ध, स्त्री० तारागण ।
सं० भास्कर (भास्=प्रकाश, भास्
=चमकना और कृ=करना) पु०
सूर्य, २ आग, ३ भास्कराचार्य जिस
ने सिद्धान्तशिरोमणि आदि ज्यो-
तिष के ग्रन्थ बनाये हैं, ४ सोना,
स्वर्ण, गु० चमकता हुआ, प्रकाशित ।
सं० भास्वर (भास्=चमकना) पु०
सूर्य, २ दिन, ३ अर्कवृक्ष, गु०
तेजस्वी, दीप्तिमान् ।
सं० भास्वान् पु० सूर्य, दिनमणि ।
सं० भासु पु० सूर्य, दिवाकर ।
सं० भासुर (भास् + उर) पु०
वीर, दीप्तिमान्, शोभित, पु० वि-
ल्लौर पत्थर, कुष्ठ की औषध ।
प्रा० भिकारी (सं० भिक्षाहारी,
भिक्षवारी) भिक्षा=भीख, आ-
हारी=लेनेवाला वा खानेवाला,
हू=लेना) पु० भीख माँगनेवाला,
याचक, मँगता ।
सं० भिक्षा (भिक्ष=माँगना) स्त्री०
भीख माँगना, भिक्षित वस्तु ।
सं० भिक्षाटन (भिक्षा + अटन,
अट्=जाना) भा० पु० भीख माँ-
गने के लिये घूमना ।
सं० भिक्षु (भिक्ष=माँगना) पु०
संन्यासी, यती, भिखारी ।
सं० भिक्षुक (भिक्ष=माँगना) क०
पु० भिखारी, याचक, मँगता,

संन्यासी ।

प्रा० भिड़ना क्रि० अ० बहुतही पास पास होजाना, सट जाना, मिलजाना, २ मुठ भेड़ होना, दो सेनाओं का लड़ाई में पास पास आजाना ।

प्रा० भिड़ाना क्रि० स० मिलाना, दो चीजोंको पास पास सटा देना, २ दो आदमियों को लड़ा देना ।

प्रा० भिंडी स्त्री० गमतरोई, एक तरकारी का नाम ।

सं० भित्त (भिद्=तोड़ना) र्भूमि० पु० खण्ड, विभाग, टुकड़ा, अर्ध, आधा ।

सं० भित्ति (भिद्=फोड़ना) स्त्री० भीत, दीवार, पगार ।

सं० भिदक (भिद् + अक) क० पु० वज्र, खड्ग, अस्त्र, शस्त्र ।

सं० भिदुक क० पु० भेदक, तोड़ फोड़ करनेवाला ।

प्रा० भिनकना क्रि० अ० मक्खियों का किसी चीज पर इकट्ठा होना, भिनभिनाना ।

प्रा० भिनभिनाना क्रि० अ० मक्खियोंका शब्द करना, भिनकना ।

सं० भिन्दिपाल (भिन्दि=भेदन, भिद्=फाड़ना, पाल=पालना) पु० हाथ से फेंकने का एक हथियार, डेलबाँस, गोफना, गोफनी ।

सं० भिन्न (भिद्=टुकड़े करना) गु० जुदा, अलग, न्यारा, पृथक्,

पु० टुकड़ा, हिस्सा, बाँटा, कसर, भिन्न भिन्न, बोल० जुदा जुदा ।

प्रा० भिनुसार (सं० भानुसार, भानु भिन्सार) =सूर्य, सृ=जाना) पु० सूर्यके निकलने का समय, भोर, विहान, प्रभात, प्रातःकाल ।

सं० भिषक् (भिप्=रोग प्रतीकार) भिषज् पु० वैद्य, रोगों का डरवानेवाला अथवा जिससे रोग डरें, रोगप्रतीकारक ।

प्रा० भीष् (सं० भिक्षा) स्त्री० भिक्षा माँगना, जाचना ।

प्रा० भीड़ स्त्री० ठठ, जमघट ।

प्रा० भीड़भाड़ बोल० ठठ, भीड़ ।

प्रा० भीड़भड़का बोल० बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना ।

सं० भीत (भी=डरना) क० पु० डराहुआ, भययुक्त ।

प्रा० भीति (सं० भित्ति) स्त्री० दीवार, ओछे की प्रीति, ज्यों बालू की भीति, कहा०—नीच आदमी की मित्रताई बालूकी भीति की तरह अस्थिर है ।

प्रा० भीतर (सं० अभ्यन्तर) नित्य सं० अन्दर, बीच, मध्य, में ।

सं० भीति (भी=डरना) स्त्री० डर, भय, त्रास, शङ्का ।

सं० भीम (भी=डरना जिससे) गु० डरावना, भगानक, पु० राजा युधिष्ठिर का भाई, वायु देवता से

उत्पन्न, २ भयानकरस, ३ शिव ।
 सं० भीमा (भीम) स्त्री० दुर्गा ।
 सं० भीरु (भी=डरना) क० डर-
 पोकरना, डरनेवाला, कम हिम्मत,
 कादर, पु० शृगाल ।
 सं० भीरुक क० पु० भययुक्त, का-
 तर, डरपोकरना, पु० उल्लू पक्षी,
 चिमगादर, कुहरा, नीहार ।
 सं० भीरुता भा० स्त्री० भय, कादर-
 पन ।
 प्रा० भील (सं० भिल्ल, भिल्=
 भेदना) पु० एक पहाड़ी जाति
 का नाम, चुहाड़, किरात ।
 सं० भीषण (भी=डराना) भा०
 पु० सेहुँड़वृक्ष, भटकटैया, वाजपक्षी,
 त्रास, भय, भयानकरस, २ शिव,
 गु० भयानक, भयंकर, डरावना ।
 सं० भीषा गु० स्त्री० त्रास, भय,
 भयंकरता ।
 सं० भीष्म (भी=डरना जिससे)
 पु० पाण्डवों का दादा, शंतनु
 राजा और गङ्गा का पुत्र, २ भय,
 डर, भयानकरस, गु० डरावना,
 भयानक, भयंकर ।
 सं० भीष्मपञ्चक पु० भीष्म से ब-
 ताये गये पाँच दिन कातिक शुक्ल
 एकादशी से पूर्णमासीपर्यन्त व्रता-
 दिक करना ।
 सं० भीष्मसू (सू=जनना) स्त्री०
 गङ्गा, भीष्म की जननी, मां ।

प्रा० भुआल (सं० भूपाल) पु०
 भुवाल } राजा, नरपति ।
 सं० भुक्त (भुज्=भक्षण करना)
 र्म० पु० खादित, खाया हुआ ।
 सं० भुक्ति (भुज्+ति) भा० स्त्री०
 भोजन, भोग, खाना ।
 प्रा० भुगतना (सं० भोग, भुज्=
 खाना) क्रि० स० भोगना, सहना,
 भले बुरे का फल पाना ।
 प्रा० भुगताना क्रि० स० भले बुरे
 का फल देना, भोग करवाना ।
 सं० भुग्न (भुज्+त) क० पु०
 परेशान, कुटिल, वक्र, कुबड़ा ।
 प्रा० भुच (गु० गँवार, जंगली, मूसख,
 भुच } अनगढ़, अनपढ़ ।
 सं० भुज ए० पु० (भुज्=खाना
 भुजा स्त्री० } जिससे खाते हैं,
 या भुज्=टेढ़ा होना) बाँह, बाहु,
 दण्ड, २ तिरखूट और चौखूट आदि
 खेतों की लकीर ।
 सं० भुजग (भुज्=टेढ़ा, गम्=जाना)
 पु० साँप, सर्प, नाग ।
 सं० भुजगान्तक क० पु० गरुड़ ।
 सं० भुजगाशन (भुजग+अशन)
 क० पु० गरुड़ ।
 सं० भुजङ्ग (भुज्=टेढ़ा, गम्=
 भुजङ्गम } जाना) पु० साँप, सर्प ।
 सं० भुजगहन पु० भुजवन, भुज
 समूह ।
 प्रा० भुजबन्ध (भुज्=बाँह, बन्ध=

बाँधना) पु० बाजूबन्द ।
 प्रा० भुजबीहा (सं० भुजव्यूह)
 भुजसमूह, बीसभुजा ।
 सं० भुजान क० भोगकारी ।
 सं० भुञ्जन (भुज्=खाना) भा०
 भोजन, खादन ।
 सं० भुजि क० पु० अग्नि ।
 सं० भुजिष्य (भुज् + इष्य, भुज्=
 खाना) क० पु० दास, सेवक ।
 सं० भुजिष्या स्त्री० दासी, टहलुई ।
 प्रा० भुट्टा पु० मर्कई की बाली ।
 प्रा० भुतना (सं० भूत) पु० छोटा
 भूत, प्रेत, पिशाच ।
 प्रा० भुन्ना (सं० भर्जन, भृज्=
 भूना) क्रि० अ० सेंकाजाना,
 सिकना, भूँजा जाना ।
 प्रा० भुरभुरा गु० सूखी बुकनी या
 ऐसी चीज जो थोड़े जोर से चूर २
 होजाय ।
 प्रा० भुलसना क्रि० अ० जलना,
 झुलसना, गर्म रेत या पत्थर से
 अधजला होना ।
 प्रा० भुरकाना क्रि० स० पीसी हुई
 किसी चीज को किसी चीज पर
 बिड़कना ।
 प्रा० भुरकी डालना बोल० जादू
 से वश में करलेना ।
 प्रा० भुलाना क्रि० स० भूलजाना,
 भुलादेना, याद न रखना, २ बह-
 काना, भ्रमाना, फुसलाना ।

प्रा० भुलावा पु० धोखा, झलावा ।
 प्रा० भुलावा देना बोल० धोखा
 देना, झलना ।
 प्रा० भुवङ्ग (सं० भुजङ्ग) पु० साँप ।
 सं० भुवन (भू=होना) पु० लोक,
 जगत्, सृष्टि ।
 सं० भुवर (भू=होना) पु० आकाश,
 अन्तरीक्ष, दूसरा लोक ।
 प्रा० भुस (सं० बुस, बुस्=झोड़ना)
 पु० अनाज के ऊपर का झिलका ।
 प्रा० भुसंड गु० बहुत मोटा आदमी ।
 सं० भुशुण्डी (आयुधविशेष) ब-
 न्दूक “ भुशुण्डी लोहनलिका न-
 लिका च भुशुण्डिका ” (इति पञ्च-
 तत्त्वप्रकाशः) गुर्जरभाषायामपि ।
 सं० भू (भू=होना) स्त्री० धरती,
 पृथ्वी, भूमि, धरणी, २ स्थान,
 जगह, ३ यज्ञ की आग ।
 प्रा० भूंसना (सं० भस्=भोंकना)
 क्रि० अ० भोंकना, हँ हँ करना,
 कुत्ते का शब्द करना ।
 प्रा० भूँईडोल (सं० भूमि=पृथ्वी,
 डोल=डोलना) पु० भूचाल, भूकम्प ।
 सं० भूकम्प (भू=धरती, कम्प=कौं-
 पना) पु० भूचाल, भूँईडोल ।
 सं० भूकेश (पु० वट, बरगद, २
 शैवल, सिवार ।
 प्रा० भूख (सं० बुभुक्षा) स्त्री० खाने
 की चाह, क्षुधा ।
 प्रा० भूखबन्द होजाना बोल०

भूख नहीं लगना ।
 प्रा० भूखलगना बोल० भूखमालूम होना ।
 प्रा० भूखभागना बोल० सुख होना, आराम पाना, खाने पीने का कुछ दुःख नहीं रहना ।
 प्रा० भूखा (सं० बुभुक्षित) गु० जिसको खानेकी चाह हो, २ किसी चीज का चाहनेवाला, ३ कंगाल, गरीब ।
 सं० भूगोल (भू + गोल) पु० पृथ्वी-मण्डल ।
 सं० भूचक्र पु० भूमण्डल ।
 सं० भूचर (भू = धरती, चर = चलना) पु० धरती पर चलनेवाला जीव ।
 प्रा० भूड़ स्त्री० बलुवा धरती, रेतली धरती, रेगिस्तान ।
 प्रा० भूड़ल पु० अभ्रक ।
 सं० भूत (भू = होना) पु० पिशाच, प्रेत, २ प्राणी, जीवधारी, जन्तु, ३ शिव के गण, ४ अतीतकाल, बीता हुआ समय, भूतकाल, ५ तत्त्व (जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और आकाश) गु० हुआ, बीता हुआ, पाया हुआ, २ सच, ठीक, कुमार्गी, धरणी ।
 सं० भूतघ्न (भूत + हन्) पु० भोज-पत्र, लहसुन, लशुन, ऊँट, बाय-बिड़ङ्ग, हींग ।
 सं० भूतनाथ (भूत + नाथ) पु०

महादेव, २ भैरव ।
 सं० भूतल (भू + तल) पु० पृथ्वी, धरती, धरातल ।
 सं० भूति (भू = होना) स्त्री० ऐश्वर्य, संपत्ति, विभूति, अष्टसिद्धि, २ भस्म, राख ।
 सं० भूतेश (भूत + ईश) पु० महादेव, शिव ।
 सं० भूदार (दृ = फाड़ना) क० पु० शूकर, सुअर ।
 सं० भूदेव (भू = धरती, देव = देवता) पु० ब्राह्मण, विप्र, भूसुर ।
 सं० भूधर (भू = धरती, धृ = रखना) भूध्र (पु० पहाड़, पर्वत, गिरि ।
 प्रा० भून्ना (सं० भर्जन, भृज् = या भ्रज् = भून्ना) क्रि० सं० आगपर रख कर फुलस लेना, जैसे मक्की आदि, २ गर्म घी या तेल में डाल कर खूब हिलाना, जैसे मांस आदि, ३ गर्म राख या बालू में पका लेना, जैसे चना आदि ।
 सं० भूप (भू = पृथ्वी, पा = पालना) पु० राजा, नृप, बादशाह व ज्योतिष में १६ का नाम ।
 सं० भूपति (भू + पति) पु० राजा, महीपाल, भूपाल ।
 सं० भूपाल (भू = पृथ्वी, पाल् = पालना) पु० राजा, भूप, नरपति, भूपति ।
 प्रा० भूभल स्त्री० गर्म राख, अन्नार ।

प्रा० भूमुरि पु० छोटे काँटा ।

सं० भूभृत् पु० पहाड़, राजा, शेष,
कच्छपराज, दिग्गज ।

सं० भूमि (भू=होना, जिस पर
मनुष्य होते हैं) स्त्री० पृथ्वी,
धरती, २ जगह, स्थान ।

सं० भूमिका (भूमि) स्त्री० प्रसंग,
प्रकरण, आभास, तमहीद ।

सं० भूमिनाग पु० केंचुआ, साधारण
साँप, सँपोला ।

सं० भूमिपति (भूमि + पति) पु०
राजा, भूपाल, भूपति ।

सं० भूमिपाल (भूमि=पृथ्वी, पाल
=बचाना) पु० राजा ।

सं० भूमिपिशाच पु० ताड़वृक्ष,
तालदुम ।

प्रा० भूमिया (भूमि) पु० जमीन-
दार, २ पृथ्वी का देवता ।

प्रा० भूर { स्त्री० दक्षिणा, दान, भीखा
भूरसी }

प्रा० भूरा गु० एकतरह का रङ्ग ।

सं० भूरि (भू=होना) गु० बहुत,
अधिक, ढेर ।

सं० भूरिशः अव्य० बहुत, बारंवार,
मुतवातिर ।

सं० भूरुह (रुह=उगना) क० पु०
वृक्ष, दरख्त ।

प्रा० भूल (सं० भ्रम) स्त्री० चूक, सहो ।

प्रा० भूलना क्रि० सं० चूकना,
याद न रखना ।

प्रा० भूलाबिसरा { बोल० भटका
भूला-भटका } हुआ, रास्ता
भूल कर इधर-उधर फिरनेवाला ।

सं० भूषक (भूष् + अक) क० पु०
अलंकारकारक, भूषणधारी ।

सं० भूषण (भूष्=शोभना) पु०
गहना, आभूषण, आभरण ।

सं० भूषित (भूष्=शोभना) गु०
शोभित, शोभायमान, अलंकृत ।

प्रा० भूसा (सं० बुष्, बुष्=छोड़ना)
पु० जानवरों के खानेका चारा, तुस ।

प्रा० भूसी (सं० बुष्, बुष्=छोड़ना)
स्त्री० चोकर, अनाज के ऊपर का
छिलका ।

सं० भूसुर (भू=पृथ्वी, सुर=देवता)
पु० ब्राह्मण, विप्र ।

सं० भृकुटी (भू=भौं, कुट=टेढ़ा
होना) स्त्री० त्योंरी, घुड़की, भौं
का चढ़ाना ।

सं० भृगु (भ्रमज्=भुनना अर्थात्
सबके मन में धर्म की आग को
प्रकाश करना) पु० एक प्रसिद्ध
ऋषि का नाम जिसने विष्णु की
छाती में लात मारी थी, ब्रह्मा का
बेटा, एक प्रजापति ।

सं० भृगुकुलकेतु पु० परशुराम,
भृगुवंशके पताका ।

सं० भृगुनाथ { भृगु=भृगुवंशियों
भृगुपति } के, नाथ वा पति=
स्वामी) पु० परशुराम, परशुधर ।

सं० भृङ्ग (भृ=भरना वा भ्रम्=फिरना) पु० भौरा, भ्रमर ।

प्रा० भृङ्गी (सं० भृङ्ग) स्त्री० भौरा, लखेरी, शिवगण, पार्वती ।

सं० भृति (भृ=भरना) स्त्री० मूल्य, वेतन, भरण, पोषण ।

सं० भृतिभुज् गु० वेतनोपजीवी, नौकरी से जीनेवाला ।

सं० भृत्य (भृ=भरना अर्थात् जिस को मजदूरी या तनख्वाह देना) पु० नौकर, चाकर, टहल, खिदमतगार ।

सं० भृश अव्य० अतिशय, बहुत ।

सं० भृष्टि स्त्री० भूजना ।

प्रा० भेंगा गु० टेढ़ा देखनेवाला, ढेरा, ढेरा, स्वर्गपताली ।

प्रा० भेंट { स्त्री० मिलाप, मुलाकात, भेंट } २ सौगात, डाली, नजर ।

प्रा० भेंटना { क्रि० स० मिलना, भेंटना } मिलाप करना, मुलाकात करना ।

सं० भेक (भी=डरना) पु० मेंढ़क, बेंग, दादुर ।

प्रा० भेख (सं० वेष) पु० भेष, लिबास, रूपबदलना, स्वरूपबनाना ।

प्रा० भेखधारी क० पु० भेष बनाने वाला, अपना और रूप बनाने वाला ।

प्रा० भेजना क्रि० स० पठाना, पहुँचाना ।

प्रा० भेजा पु० शिरका गूदा, शिरका मज्ज ।

सं० भेड (भी=डरना) स्त्री० गाड़र, भेड़ी ।

प्रा० भेड़ा (सं० भेड) पु० मेढा, मेष ।

प्रा० भेड़िया (सं० भेडहा, भेड=भेड़ी, हन्=मारना) स्त्री० हुँडार, ल्याली, एक फाड़नेवाला जानवर ।

प्रा० भेड़ियाधसान बोल० सब जानते हैं कि जिस ओर एक भेड़ी जाती है सब उसी ओर चलती हैं इसलिये जब बहुत आदमी बेसमझे किसी के पीछे चलते हैं तब यह मुहावरा बोला जाता है ।

प्रा० भेड़ी (सं० भेड) स्त्री० भेड़, गाड़र, मेढ़ी ।

सं० भेद (भिद्=तोड़ना) भा० पु० छिपी बात, गुप्त बात, राज, २ जुदा होना, भिन्नता, अलगाव, ३ अन्तर, फरक, ४ प्रकार, जाति, भाँति, ५ विरोध, विच्छेद, अनमेल ।

सं० भेदक (भेद् + अक) क० पु० तोड़नेवाला, विदारक ।

प्रा० भेदलेना बोल० छिपी हुई बात को मालूम करना ।

प्रा० भेद कहना बोल० छिपाने योग्य बात को कह देना, राज खोलना ।

प्रा० भेदखोलना बोल० छिपी बात को प्रकट करना ।

सं० भेदन (भिद्=तोड़ना) भा०

पु० तोड़ना, तोड़न, फोड़न ।
 सं० भेदि { क० विदारक, छेद क-
 भेदी { रनेवाला, पु० वज्र ।
 सं० भेदित र्म० पु० फाड़ा हुआ ।
 प्रा० भेदिग्या { (भेद) गु० भेद,
 सं० भेदी { भेदजाननेवाला ।
 प्रा० भेदू (भेदू) गु० भेद जानने
 वाला, भेदी ।
 सं० भेद्य (भिद्=तोड़ना) र्म०
 पु० भेदने योग्य, तोड़नेकेलायक ।
 सं० भेरी (भी=डर पैदाकरना)
 स्त्री० एक प्रकार का बाजा, तुरही,
 नफीरी, सहनाई ।
 प्रा० भेली स्त्री० गुड़का ढेला ।
 प्रा० भेव (सं० भेद वा भाव) पु०
 भेद, भाव, स्वभाव, तरह ।
 प्रा० भेष (सं० वेप) पु० भेष, रूप
 बदलना, स्वरूप बनाना ।
 प्रा० भेषवदलना बोल० स्वाँग
 भरना, रूपबदलना ।
 सं० भेषज (भेष=रोग का डर,
 भेषू=डरना, जि=जीतना या भिषू=
 रोग दूर करना) भा० पु० दवा,
 दारू, औषध ।
 सं० भैषज्य भा० पु० औषध,
 दवा ।
 प्रा० भैस (सं० महिषी) स्त्री० एक
 जानवर का नाम ।
 प्रा० भैसा (सं० महिष) पु० एक
 चौपाये का नाम ।

प्रा० भैसादाद { (सं० महिषदद्रु)
 भैसियादाद { पु० एक प्रकार
 का दाद ।
 प्रा० भैया (सं० धाता) पु० भाई ।
 प्रा० भैयापा { (सं० भ्रातृता) पु०
 भायप { भाईचारा, बिरादरी ।
 सं० भैरव (भी=डर पैदा करना)
 पु० शिव, दुर्गा के पास रहनेवाला
 देवता जो शिव का अवतार है,
 भैरव आठ हैं (१ असिताङ्ग, २ रुरु,
 ३ चण्ड, ४ क्रोध, ५ उन्मत्त, ६
 कुपित, ७ भीषण, ८ संहार) २
 भयानक रस, ३ एक राग का
 नाम, गु० डरावना, भयंकर ।
 सं० भैरवी (भी=डर उपजाना)
 स्त्री० दुर्गा, काली, देवी, २ एक
 रागिणी का नाम ।
 प्रा० भोंकना { (सं० भष्=भौंकना,
 भौंकना { क्रि० अ० भूकना)
 हौं हौं करना, कुत्ते का शब्द करना ।
 प्रा० भोंडा गु० कुटौल, कुरूप ।
 प्रा० भोंथा { गु० तीखा नहीं, कु-
 भोंथरा { पिठत, कुन्द, गोठिला ।
 प्रा० भोंदू गु० गँवार, अनजान, सीधा ।
 प्रा० भोंपू पु० नरसिंगा ।
 प्रा० भोई पु० कहार, पालकी उ-
 ठाने वाला ।
 सं० भोक्तव्य (भुज्=खाना) र्म०
 पु० खाने के लायक ।
 सं० भोक्ता (भुज्=खाना) क० पु०

खानेवाला ।

सं० भोग (भुज्=खाना) पु० खाना,
प्रसाद, नैवेद्य, सुख, हर्ष, विलास,
ऐश, आराम ।

प्रा० भोगना (भोग) क्रि० सं०
भुगतना, सहना, पाना, दुःख या
सुख उठाना ।

सं० भोगपत्र पु० वक्फनामा, कर्मान-
जागीर, जागीरनामा ।

सं० भोगिवल्लभ (भोगि=सर्प,
वल्लभ=प्यारा) पु० चन्दन ।

सं० भोगी (भोग) क० पु० भोग
विलास करनेवाला, सुखी, २
(भुज्=टेढ़ाचलना) पु० सौँप, सर्प ।

सं० भोज (भुज्=पालना) पु०
उज्जैन के एक राजा का नाम जो
विद्या के फैलाने से बहुत प्रसिद्ध
है, २ भोजकट देश जो पटना और
भागलपुर के पास है या जिसको
अब भोजपुर कहते हैं जो शाहाबाद
के जिले में है ।

सं० भोगीन्द्र (भोगी + इन्द्र) पु०
शेषनाग, वायुकि, नागराज ।

प्रा० भोज (सं० भोज्य, भुज्=
खाना) पु० खाना, आहार ।

सं० भोजक (भुज् + अक) क०
पु० भक्षक, खाने वाला ।

सं० भोजकट पु० भोजपुर, देश-
विशेष ।

सं० भोजन (भुज्=खाना) भा०

पु० खाना, आहार, भोजन करना,
खाना खाना, जेवना ।

सं० भोजनीय (भुज् + अनीय)
र्म० पु० भोजनयोग्य ।

प्रा० भोजपत्र (सं० भूर्जपत्र) पु०
एक वृक्ष की छाल ।

सं० भोजयिता (भुज् + इ + तृ)
क० पु० भोजनकरानेवाला ।

सं० भोज्य (भुज्=खाना) पु० खाने
की चीज, र्म० खाने योग्य ।

प्रा० भोड़ल पु० अश्रक, भूडल ।

सं० भोभो अव्य० सम्बोधन, सं-
भ्रम, आदरार्थ सम्बोधन ।

प्रा० भोर पु० विहान, पौह, प्रभात ।

प्रा० भोरहोना बोल० विहान होना ।

प्रा० भोरा { गु० सीधा सादा, नि-
भोला { कपट, कम अकल ।

प्रा० भोलानाथ बोल० महादेव, शिव ।

प्रा० भोलाभाला बोल० सादा ।

प्रा० भोली बातें बोल० सीधी बातें,
बे कपट बातें ।

प्रा० भौंह } (सं० भू) पु० आँख
भौं } पर का बाल, भृकुटी ।
भौंह }

प्रा० भौंचढ़ाना बोल० गुस्सा होना ।

प्रा० भौंटेढ़ाकरना बोल० तयारी
चढ़ाना ।

प्रा० भौंहाँतानना बोल० तयारी
चढ़ाना ।

प्रा० भौंचाल (सं० भूमिचाल)

पु० मूईडोल, भूकम्प, जलजला
जमीन का ।

प्रा० भौरा (सं० भ्रमर) पु० एक
तरहकी बड़ी मक्खी, मधुप, अलि ।

प्रा० भौ (सं० भय) पु० डर, खौफ ।

प्रा० भौजाई (सं० भ्रातृजाया)

भौजी (स्त्री० भाई की स्त्री ।

सं० भौतिक (भूत) गु० भूत स-
म्बन्धी पृथिव्यादि वा पिशाचादि
सम्बन्धी ।

सं० भौम (भूमि=पृथ्वी) गु० पृथ्वी
का, पु० मङ्गल ग्रह, २ नरकासुर
राक्षस ।

सं० भौमवार (भौम + वार) पु०
मङ्गलवार ।

सं० भौमावती (भौम) स्त्री०
भौमासुर की स्त्री ।

सं० भ्रंश (भ्रश् वा भ्रस्=गिर-
भ्रंस (ना) पु० नीचे गिरना,
नाश, ध्वंस, बिगाड़ ।

सं० भ्रंशित वा भ्रंसित र्भ० पु०
च्युत, गिरा ।

सं० भ्रम (भ्रम्=फिरना) पु० भ्रान्ति,
भूल चूक, २ संदेह, संशय, भूठाझाना ।

सं० भ्रमण (भ्रम्=फिरना) पु०
फिरना, घूमना, विचरना ।

सं० भ्रमर (भ्रम्=फिरना) पु०
भौरा, मधुप, मधुकर, अलि ।

सं० भ्रष्ट (भ्रश्=नीचे गिरना) र्भ०
पु० गिरा हुआ, पतित, अधर्मी,

धर्म से गिरा हुआ, भ्रष्ट करना, क्रि०
स० बिगाड़ना, बुरे काम में ल-
गाना, भ्रष्ट होना, क्रि० अ० बिगा-
ड़ना, बुरे काम में लगना ।

सं० भ्राजना (सं० भ्राज्=शोभना)
क्रि० अ० शोभना, सोहना ।

सं० भ्राजिष्णु (भ्राज् + इष्णु)
क० दीप्तिमान्, शोभायुक्त ।

सं० भ्राता (भ्राज्=शोभना) पु०
भाई, भैया, सहोदर ।

सं० भ्रान्त क० पु० भूला हुआ ।

सं० भ्रान्ति (भ्रम्-फिरना) भा०
स्त्री० भ्रम, भूल चूक, २ धूमना,
भ्रमण ।

सं० भ्रामक (भ्रम् + अक) क०
पु० भ्रमजनक, अशुद्ध, धूमनेवाला ।

सं० भ्राम्यमान क० पु० धूमनेवाला ।

सं० भ्राश पु० प्रकाश, चमक ।

सं० भ्रू (भ्रम्=फिरना) पु० आँखों
पर का बाल, भौंह, भौं ।

सं० भ्रूण पु० गर्भ, हमल ।

सं० भ्रूभङ्ग (भ्रू=भौं, भङ्ज्=तो-
ड़ना) पु० घुरकी, त्योरी, भौं
चढ़ाना, कटाक्ष ।

म

सं० म (मा=नापना वा आदर क-
रना) पु० ब्रह्मा, २ शिव, ३ चाँद,
४ विष्णु, ५ यम, ६ समय, ७ विष ।

प्रा० मँगता (मँगना) पु० भि-
खारी, भिखमंगी ।

प्रा० मँगनी (माँगना) स्त्री० सगाई,
निस्वत, २ उधार ।

प्रा० मँगनीदेना बोल० उधारदेना ।

प्रा० मँगसिर } (सं० मार्गशिर)
मगशिर } पु० अग्रहन ।
मगसिर }

प्रा० मँजना (सं० मज्जन, मस्ज=
साफ होना) क्रि० अ० उजला
होना, चिकना होना, साफ होना ।

प्रा० मंजीरा } (सं० मञ्जीर, म-
मजीरा } ङ्ज=शब्द करना)
पु० एक बाजे का नाम, भौंभ,
करताल ।

प्रा० मँडुआ पु० एक अनाज का
नाम ।

प्रा० मँढ़ना } (सं० मद्=सँवारना)
मढ़ना } क्रि० अ० ढकना (जैसे
किताब को पृष्ठ से या ढोल ढक
आदि को चमड़े से) लपेटना ।

प्रा० मकड़ा (सं० मर्कट, मर्क=
जाना) पु० एक तरह का कीड़ा ।

प्रा० मकड़ाना क्रि० अ० टेढ़ा
चलना, अकड़ के चलना, २
काम करने से जी चुराना ।

प्रा० मकड़ी (सं० मर्कटी) स्त्री०
एक तरह का कीड़ा जिसके आठ
पैर होते हैं ।

सं० मकर (म=मनुष्य और कृ=
मारना जो मनुष्यों को मार डाल-
ता है यहाँ मनुष्य शब्द को म हो

जाता है) पु० मगरमच्छ, २
दशवीं राशि ।

सं० मकरकेतु } (मकर=मगर, केतु
मकरध्वज } वा ध्वजा=भंडा)
पु० कामदेव, जिसके भंडे पर
मकर का चिह्न है ।

सं० मकरन्द पु० फूलों का रस,
पुष्परस, पराग ।

सं० मकराकृत (मकर=मगर, आ-
कृति=रूप) गु० जिस चीज का
आकार मगर कैसा हो जैसे मकरा-
कृतकुण्डल ।

सं० मकरी (मकर) स्त्री० मछली,
एक पानी का जीव, २ जो जाला
तानती है ।

प्रा० मकरोना क्रि० स० थोड़ासा
गीला करना, करमोना ।

सं० मकुट (मकि=शोभना) पु०
मुकुट) किरीट, ताज, राजाओं
के शिरका गहना ।

सं० मकुर { (मकि=शोभना) पु०
मुकुर } दर्पण, काँच, आईना,
आरसी, शीशा ।

सं० मकुल { (मकि=जाना) स्त्री०
मुकुल } फूलकी कली, कोंपल ।

प्रा० मकोड़ा पु० कीड़ा ।

सं० मक्षिका { (मक्ष=क्रोध करना)
मक्षीका } स्त्री० मक्खी, माखी ।

प्रा० मक्खन { (सं० मन्थज, मन्थ=
माखन } मन्थना और जन्म=

पैदा होना, जो मथनेसे निकलता है) पु० माखन, नैनू, नवनीत, हैयङ्गवीन ।

प्रा० मक्खी } (सं० मक्षिका) स्त्री०
माखी } एक तरह का उड़ने वाला कीड़ा, माखी ।

प्रा० मक्खी उड़ाना बोल० किसी की खुशामद या गुलामी करना ।

प्रा० मक्खीचूस बोल० कंजूस, सूम, कृपण ।

प्रा० मक्खी मारना बोल० सुस्त बैठा रहना, बेकार बैठा रहना ।

सं० मग्ग (मग्ग=जाना) पु० यज्ञ ।

प्रा० मग (सं० मार्ग) पु० रस्ता, बाट, पैद, डगर, मग देखना, बोल० बाट जोहना, राह निहारना ।

सं० मगध पु० सूवे बिहार का दक्खिनभाग ।

प्रा० मगन (सं० मग्न) गु० डूबा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित ।

प्रा० मगर (सं० मकर) पु० मगर-मच्छ ।

प्रा० मगरा (अ० मगरूर) गु० ठीठ, घमंडी, गुस्ताख ।

प्रा० मगराई स्त्री० ठिठाई, गुस्ताखी, घमंड, धृष्टता ।

प्रा० मगरापन भा० पु० मगराई, घमंड ।

प्रा० मगह (मगध) पु० सूवे बिहार का दक्खिन भाग जिसमें गया

आदि शहर हैं ।

प्रा० मगही (सं० मागधीय) गु० मगह का (जैसे पान आदि) ।

प्रा० मगहैया (सं० मागधीय) गु० मगध देश का वासी, २ ब्राह्मणों की एक जाति ।

सं० मग्न (मग्ग=डूबना वा शुद्ध करना) क० डूबा हुआ, २ प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित, खुश ।

सं० मघवा } (मह=पूजना, मघ=
मघवान् } धन, वान्=वाला)
पु० इन्द्र, देवताओं का राजा, सुरपति ।

सं० मघा (मह=पूजना) स्त्री० दशवां नक्षत्र ।

सं० मङ्गल (मग्गि=जाना) पु० कुशल, कल्याण, आनन्द, २तीसरा ग्रह, ३ मङ्गलवार, भौमवार, गु० शुभ, अच्छा, आनन्द देनेवाला ।

सं० मङ्गलवार (मङ्गल + वार) पु० मङ्गलका दिन, भौमवार ।

सं० मङ्गलसमाचार (मङ्गल + समाचार) पु० अच्छा समाचार, सुसमाचार, शुभसमाचार ।

सं० मङ्गलाचरण (मङ्गल + आचरण) पु० देवताओं को नमस्कार, वन्दना ।

सं० मङ्गलाचार (मङ्गल + आचार) पु० बधावा, ब्याह आदि अच्छे कार्यों में आनन्द के गीत ।

सं० मङ्गलामुखी (मङ्गल + मुख
अर्थात् जिसके मुँह में मङ्गल है)
गु० गवैया, व्याहआदि अच्छे
कार्यों में गानेवाली ।

प्रा० मङ्गली (मङ्गल) गु० मङ्गल
करनेवाला, मङ्गलामुखी, २ जिस
के जन्म, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम,
द्वादश स्थानमें मङ्गल ग्रह पड़ा हो ।

प्रा० मचनना क्रि० अ० होना, रचना,
जठना, किया जाना ।

प्रा० मचलना क्रि० अ० मगरा होना,
हठ करना, जिद करना ।

प्रा० मचला गु० मगरा, ढीठ,
हठीला, जिद्दी, हठी ।

प्रा० मचलाई स्त्री० मगराई, दि-
ठाई, हठ ।

प्रा० मचलाना क्रि० अ० मतलाना,
कै किया चाहना, कै करने को जी
चाहना, २ बहाना करना ।

प्रा० मचान (सं० मञ्च) पु० माँच,
ढाँह, खेतों में बाँसों से बनाई हुई
ऊँची बैठक जिस पर एक आदमी
खेतकी रखवाली करने के लिये
बैठता है ।

प्रा० मचाना क्रि० सं० करत्त,
रखावा, उठाना, बनाना ।

प्रा० मचिया (सं० मञ्च) स्त्री०
शीशी, चौकी, कुर्सी ।

प्रा० मञ्ज (सं० मत्स्य) पु० बड़ी
मछली, २ विष्णु का पहला अवतार ।

प्रा० मञ्जूर (सं० मशक) पु०
माकर, कुटकी ।

प्रा० मञ्जुली (सं० मत्स्यी) स्त्री०
पानी के एक जानवर का नाम ।

प्रा० मञ्जुवा } (मत्स्य) पु० मछली
मछुवा } पकड़नेवाला, धीमर,
कहार, महरा ।

प्रा० मजीठ (सं० मञ्जिष्ठा) पु०
एक लाल चीज जो रँगने के काम
में आती है ।

सं० मज्जन (मसृज्=न्धाना) पु०
न्धाना, स्नान ।

सं० मज्जक क० पु० स्नान करने
वाला ।

सं० मज्जा (मसृज्=न्धाना) स्त्री०
हड्डी के भीतर का गूदा, चर्बी ।

प्रा० मभला (सं० मध्य) गु०
बिचला, मध्यम, वस्तु का ।

प्रा० मभार (सं० मध्य) पु० बीच,
मध्य, बीच में ।

प्रा० मभारी गु० स्त्री० भीतरी,
बीच की, मध्य की ।

सं० मञ्च (मचि=ऊँचा करना) पु०
माँच, मचान, खेतों में बाँसों से
बनाई हुई ऊँची बैठक जिस पर एक
आदमी खेत की रखवाली करने के
लिये बैठता है, २ पलँग, खाट,
खटिया, माँचा ।

सं० मञ्जन (मसृज्=साफ होना)
पु० दाँत धोनेका चूरा, मिस्सी ।

सं० मञ्जरी (मञ्ज्=साफ होना
वा शुद्ध होना) स्त्री० कली, कोपल,
तुलसीपुष्प, श्रैखुआ ।

ग० मञ्जार (सं० मार्जार) पु० बि-
लाव, बिल्ला ।

सं० मञ्जीर (मञ्ज्=शब्द करना)
पु० नूपुर, पाँवका गहना, २ मं-
जीरा, क्षुद्रघण्टिका, झोटीघण्टी,
घुंघुरू, पायजेब ।

सं० मञ्जु (मञ्ज्=शुद्ध अथवा सु-
मञ्जुल) न्द्रहोना) गु० मनोहर,
सुन्दर, मधुर, मनमाना, मनचाहा ।

सं० मञ्जूषा (मञ्ज्=सुन्दर होना)
स्त्री० पिटारा, पिटारी, कपड़े रखने
की सन्दूक, बक्स ।

प्रा० मटक (मटकना) भा०
मटकन) स्त्री० चोंचला, नखरा,
हाव भाव, भाँवली ।

प्रा० मटकना क्रि० अ० पलक मा-
रना, झपकना, २ आँखें लड़ाना,
आँख मारना, तिरछी चितवन से
देखना, अठलाना, इतराना, भाव
बताना, भाँकना, ताकना ।

प्रा० मटका (मिट्टी) पु० गगरा,
बड़ा घड़ा ।

प्रा० मटकी (मिट्टी) स्त्री० गगरी,
२ मटकी ।

प्रा० मटर पु० एक अनाज का नाम ।

प्रा० मटियाना क्रि० अ० टाल देना,
२ आँख झपकाना, ३ सहना ।

प्रा० मट्टी (सं० मृत्तिका) स्त्री०
मिट्टी (माटी, रेत, धूल ।

प्रा० मट्टीकरना बोल० नाश करना,
बरबाद करना, सत्यानाश करना ।

प्रा० मट्टीग्वाना बोल० मांस खाना ।

प्रा० मट्टीडालना बोल० दूसरे का
दोष छिपाना, ऐवपोशी करना ।

प्रा० मट्टीदेना बोल० गाड़ना, मुर्दे
को दफन करना ।

प्रा० मट्टीपरलड़ना बोल० धरती
के लिये झगड़ना ।

प्रा० मट्टीमेंमिलना बोल० सत्या-
नाश होजाना, नष्ट होना, खराब
होना, बरबाद होना, २ बेइज्जत
होना ।

प्रा० मट्टीहोना बोल० दुबला होना,
निर्वल होना, २ सत्यानाश होना ।

प्रा० मट्टा (सं० मन्थित, मन्थ-
मथना) पु० छाछ, मही ।

सं० मठ (मठ्=बसना) धि० पु०
गुसाइयों के रहने का घर, २
विद्यार्थियों के पढ़ने की जगह,
पाठशाला, देवागार ।

प्रा० मठरी (मिष्ट) स्त्री० एक
मठली) तरह का मीठा
पकवान ।

प्रा० मड़ोड़ (मड़ोड़ना) स्त्री०
मरोड़) ऐंठ, बल, पेंच ।

प्रा० मड़ोड़ना (क्रि० स० ऐंठना,
मरोड़ना) पेंच देना, बल देना ।

प्रा० मढ़ा (सं० मण्डप) पु० उस जगह का नाम जिसको ब्याह में फूलों आदि से सँवारते हैं और जहाँ शास्त्र के अनुसार ब्याह का काम होता है ।

प्रा० मढ़ी } (सं० मठ) स्त्री० भो-
मढ़ैया } पड़ी, कुटी ।
मंढी }

सं० मणि (मण्=आवाज निकलना) स्त्री० हीरा पन्ना आदि रत्न, बहुत मोल का पत्थर ।

प्रा० मणियारा क० पु० मणियुक्त, मणिवाला ।

सं० मण्डन (मण्डि=शोभना) भा० पु० गहना, जेवर, अलङ्कार, भूषण, शोभा ।

सं० मण्ड पु० माँड़, पीच, पिच्छ, फालूदा, २ कलार, कलवार, मदिरा ।

सं० मण्डप (मण्ड=शोभा, पा=बचाना) पु० एक खुला हुआ मकान जिसको ब्याह अथवा और किसी उत्सव में फूलों से सँवारते हैं और जहाँ ब्याह का काम होता है, २ मन्दिर, देवालय ।

सं० मण्डल (मण्डि=शोभना) पु० गोल जगह, चक्र, गोला, २ चौद वा सूर्यका घेरा, ३ गोलतम्बू, ४ देश, जिला, सूबा जो बीस अथवा चालीस योजन तक हर ओर फै-

लाय में हो, जैसे ब्रजमण्डल, कारोमण्डल आदि ।

सं० मण्डलाकार (मण्डल + आकार) गु० गोलरूप, गोलाकार, चक्राकार ।

सं० मण्डलाधिप (मण्डल + अधिप) पु० चार सौ योजन का मालिक, कलक्टर, डिप्टी कमिश्नर, छोटा राजा ।

सं० मण्डलाना (मण्डल) क्रि० अ० घिराना, घूमना, फिरना ।

सं० मण्डली (मण्डि=शोभना) स्त्री० सभा, समाज, गिरोह ।

सं० मण्डलीक क० पु० दशलाख रुपये की आमदनीवाला ।

प्रा० मण्डा पु० एकपेड़े जैसी मिठाई ।

सं० मण्डित (मण्डि=शोभना) र्म० शोभायमान, शोभित, भूषित ।

प्रा० मण्डी स्त्री० बाजार जहाँ अनाज और घी आदि बिके ।

सं० मण्डूक (मण्डि=शोभा देना, वर्षा ऋतु को) पु० मेंड़क, बैंग ।

सं० मत (मन्=जानना) पु० सलाह, सम्मति, २ अभिप्राय, चाह, ३ धर्म, मजहब, प्रतीति, विश्वास, ४ ज्ञान, सीमा, तरीका, र्म० पु० जाना हुआ, २ माना हुआ, ३ पूजा हुआ, पूज्य ।

प्रा० मत (सं० मा) क्रि० अ० न, नहीं, न करो, निषेधवाचक ।

सं० मतंग (मद=मस्त होना) पु०
हाथी, गज, २ मेघ, बादल, ३
एक ऋषि का नाम ।

सं० मतमतान्तर गु० दूसरा धर्म,
दूसरा मजहब, दूसरी राह ।

प्रा० मतवाला (सं० मत्तवत्) गु०
मस्त, मदमाता, उन्मत्त ।

सं० मतविरुद्ध गु० मजहब के खि-
लाफ, धर्मविरोधी ।

प्रा० मता (सं० मत) पु० सलाह,
मतौ) विचार, सम्मति ।

सं० मतावलम्बी (मत=धर्म वा
सम्मति, अवलम्बी=रखनेवाला)
क० पु० किसी धर्म को मानने
वाला, पन्थी, किसी के सलाह
पर चलने वाला ।

सं० मति (मन्=जानना) स्त्री०
बुद्धि, समझ, ज्ञान, २ इच्छा, चाह,
३ स्मृति, यादकरने की शक्ति ।

सं० मतिभ्रम (मति + भ्रम) पु०
भूल, चूक, उलटी समझ, विप-
रीतबुद्धि ।

सं० मतिमन्द गु० मन्दबुद्धि, कम-
अफ़ल, कुन्दजेहन ।

सं० मतिधीर गु० दृढ़बुद्धि ।

सं० मतिमान् (मति=समझ, मत्=
वाला) गु० बुद्धिमान्, समझदार,
चतुर, प्रवीण ।

सं० मतिहीन (मति + हीन) गु०
बेसमझ, मूर्ख, बुद्धिहीन, निर्बुद्धि ।

सं० मत्त (मद्=मस्त होना) गु०
मतवाला, मस्त, उन्मत्त, घमंडी ।

सं० मत्सर (मद्=घमंड करना वा
मस्त होना) पु० डाह, द्वेष, जलन,
हसद, ईर्ष्या, परसन्ताप ।

सं० मत्स्य (मद्=खुशी करना वा
मस्त होना) पु० मछली, मच्छ,
२ विष्णु का पहला अवतार, ३
हिन्दुस्थान का एक भाग—जिसको
अब दिनाजपुर और रङ्गपुर कहते
हैं, ४ एक पुराण का नाम ।

सं० मत्स्यगन्धा स्त्री० मच्छोदरी,
व्यास की माता ।

सं० मथन (मथ्=मथना) पु० म-
हना, मँथना, बिलोवन ।

प्रा० मथना (सं० मन्थन) क्रि०
स० महना, बिलोना, बिलोड़ना ।

प्रा० मथनिया (सं० मन्थान वा
मथनी) मन्थी, मथ्=मथना)

स्त्री० दूध मथने की लकड़ी, म-
थानी, महानी ।

सं० मथिन र्म० पु० मथागया ।

सं० मथुरा (मथ्=मारना या कु-
चलना जहाँ बहुत से राक्षस कु-
चले और मारे गये हैं) स्त्री० एक
नगरी का नाम जो श्रीकृष्ण की
जन्मभूमि और हिन्दुओं के तीर्थ
की जगह है ।

प्रा० मथुरिया (सं० माथुरीय) पु०
मथुरा के ब्राह्मणों की एकजाति ।

सं० मद (मद्=प्रसन्न होना वा मस्त होना वा घमंड करना) पु० आनन्द, हर्ष, खुशी, २ हाथी की कनपटियों अथवा गालों से चूता हुआ पानी, ३ मदिरा, दारू, मद्य, शराब, ४ घमंड, गर्व, अहंकार, ५ मतवालापन, नशा, मस्ती, ६ वीर्य, ७ कस्तूरी ।

सं० मदक क० पु० अफीम के संयोग से बना हुआ नशा, नशा करनेवाली चीज ।

सं० मदन (मद्=प्रसन्न होना वा मस्त होना) पु० कामदेव ।

सं० मदनबाण (मदन + बाण) पु० एक फूल का नाम ।

प्रा० मदमाता (सं० मदमत्त) गु० मतवाला, मस्त ।

प्रा० मदार (सं० मन्दार) पु० अकवन, अर्क ।

सं० मदिर पु० लालखदिर ।

सं० मदिरा (मद्=प्रसन्न होना अथवा मस्त होना) गु० स्त्री० मद, मद्य, दारू, शराब, आसव, अर्क ।

सं० मदोत्कट पु० मत्तगज ।

सं० मदोद्धत गु० मतवाला ।

सं० मदोन्मत्त (मद्=घमंड, उन्मत्त=मस्त) गु० घमंड से मस्त, मतवाला, मदमाता ।

सं० मद्य (मद्=प्रसन्न होना वा मस्त होना) गु० पु० दारू, श-

राब, मदिरा, मद ।

सं० मद्यप (मद्य + प, पा=पीना) क० पु० सुरापायी, शराबी ।

सं० मधु (मन्=पूजना वा मद्=प्रसन्न होना) पु० शहद, फूलों का रस, २ मद, मदिरा, शराब, ३ वसन्तऋतु, ४ चैत का महीना, ५ एक राक्षस का नाम जिसको महामाया की सहायता से विष्णुने मारा, ६ दूध, ७ पानी, ८ मिठा रस, ९ महुआ, १० मिठास, गु० मिठा ।

सं० मधुकर (मधु=शहद, कृ=करना) पु० भैंवरा, भौरा, भ्रमर ।

सं० मधुप (मधु=फूलों का रस, पा=पीना) पु० भौरा, भैंवरा, मधुकर ।

सं० मधुपर्क (मधु=शहद, पृच्=मिलाना) पु० दही, घी और शहद मिली हुई चीज अथवा “आज्यमेकपलं ग्राह्यं दधि त्रिपलमेव च । मधुना पलमेकान्तु मधुपर्कस्स उच्यते” । घी टकाभर, दही तीन टकाभर, शहद टकाभर इसको ‘मधुपर्क’ कहते हैं ।

सं० मधुपुरी (मधु=एक राक्षस का नाम, पुरी=नगरी) स्त्री० मधुरा ।

सं० मधुवन (मधु=एक राक्षस वा मधु=मीठा, वन=जंगल) पु० मधुरा के पास का वन, २ सुग्रीवके बाग का नाम ।

प्रा० मधुमन्त्री ((सं० मधुमक्षिका मधुमाक्षी) स्त्री० शहद की

मक्खी ।
 सं० मधुमास (मधु + मास) पु०
 चैत्र का महीना ।
 सं० मधुर (मधु = मिठास, रा = लेना)
 गु० मीठा, २ मनमाना, मनच-
 हीता, प्यारा ।
 प्रा० मधुरता (मधु) भा० स्त्री०
 मिठास ।
 प्रा० मधुरी (मधुर) गु० स्त्री० मीठी,
 रसीली, सुहानी ।
 सं० मधुलिङ्ग (मधु = शहद, लिङ्ग =
 चारुता) पु० भ्रमर, भौरा ।
 सं० मधुव्रत पु० भ्रमर ।
 सं० मधुसूदन (मधु = एक राक्षस
 का नाम, सूदन = मारनेवाला, सूद =
 मारना) पु० विष्णु, भगवान् ।
 सं० मध्य (मन् = जानना वा मा =
 शोभा, धा = रग्वना) पु० बीच,
 १ नित्य सं० २ बीच में, में, मांझ,
 भीतर, अन्दर, दर्मियान ।
 सं० मध्यदिवस पु० दोपहर ।
 सं० मध्यदेश पु० मुल्कमुतवस्सित,
 स्पष्टलप्राविश ।
 सं० मध्यम (मध्य) गु० बिचला,
 बीच का, २ अच्छा न बुरा,
 उदासीन ।
 सं० मध्यमलोक ((मध्य + लोक)
 मध्यलोक) पु० बीच का
 लोक, पृथ्वी, मनुष्यलोक, मर्त्य-
 लोक, यह दुनिया ।

सं० मध्यम (मध्यम) स्त्री० बीच
 की अंगुली, २ गु० बीच की ।
 सं० मध्यवर्त्ती (मध्य = बीच में, वर्त्ती
 = होनेवाला वा रहनेवाला, वृत् =
 होना) क० पु० बिचवैया, मध्य-
 वर्त्ती, साक्षी ।
 सं० मध्यस्थ (मध्य = बीच में, स्था
 = ठहरना) क० पु० बिचवैया,
 मध्यवर्त्ती, साक्षी ।
 सं० मध्याह्न (मध्य = बीच, अह्न =
 दिन) पु० दोपहर, दिनका बीच ।
 सं० मन (मनस्, मन = जानना) पु०
 चित्त, हृदय, हिरदा, आत्मा, दिल ।
 प्रा० मनचोर बोल० मनको लुभाये
 वाला, जिसमें मन लगजाय,
 दिलगीर ।
 प्रा० मनभाना बोल० मनको
 अच्छा लगना, सुहाना लगना ।
 प्रा० मनभाना मुंझिया हिलाना
 बोल० जिस चीज को मन चाहे
 उसको नहीं चाहनेका बहाना करना ।
 प्रा० मनभावन (बोल० मनोहर,
 मनभावना) सुहावना, दिल-
 चस्प, दिलगीर ।
 प्रा० मनमानता (बोल० सुहावना,
 मनमाना) जो मन को
 अच्छा लगे, मनचाहा, दिलवाहा ।
 प्रा० मनमार रहना बोल० सन्तोष
 के साथ दुःख को सहलेना ।
 प्रा० मनमारना बोल० अपनी जाह

को रोकना ।

प्रा० मनलाना बोल० मनलगाना,

ध्यान देना, गौर करना ।

प्रा० मन पु० चालीस सेर ।

प्रा० मनका (सं०मणि) पु० माला का दाना, २ गरदन की हड्डी ।

प्रा० मनकाढलकना बोल० मरनेपर होना, मराचाहना, अबतव होना ।

प्रा० मनकामना (सं० मनःकामना) स्त्री० मन की इच्छा, मनका मनोरथ, दिलीख्वाहिश ।

प्रा० मनघटा पु० कुँए के आस पास का चबूतरा ।

सं० मनन (मन्=जानना) भा० पु० चिन्तन, सुमिरन, ध्यान, ज्ञान, अभ्यास, विचार ।

प्रा० मनमोहन (मन+मोहन) पु० श्रीकृष्ण, गु० मनभावन, मनोहर ।

सं० मननशक्ति स्त्री० विचारशक्ति, गौरकरने की ताकत ।

प्रा० मनसा (सं० मानस) स्त्री० मन, चाह, इच्छा, विचार, मतलब ।

सं० मनसिज (मनसि=मन में, जन्=पैदा होना) पु० कामदेव, गु० मनका, मनसे जो पैदा हो ।

सं० मनस्विन् गु० वीर, मनमौजी, यथेच्छाचारी, प्रशस्त ।

प्रा० मनहु (सं० मन्य) क्रि० मनहु वि० मानों, जानों, मानहु जैसे ।

सं० मनाक् अव्य० ईषत्, स्वल्प, किञ्चित्, सूक्ष्म, बारीक, मन्द ।

प्रा० मनि (सं०मणि) स्त्री० रतन मन जवाहिर, बहुत मोल का पत्थर ।

सं० मनीषा स्त्री० बुद्धि, अकल ।

सं० मनीषिन् पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

प्रा० मनिहार (सं० मणिकार) पु० चूड़ी बेचनेवाला, बिसाती ।

सं० मनु (मन्=जानना) पु० ब्रह्मा का बेटा, मनुष्यों का पुरुषा, मनुस्मृति का बनानेवाला, (स्वयम्भू आदि चौदह मनु हैं) ।

सं० मनुज (मनु, जन्=पैदा होना) पु० मनु का वंश, मनुष्य, आदमी ।

सं० मनुजाद (मनुज=मनुष्य, अद्=खाना) पु० राक्षस, दैत्य ।

सं० मनुष्य (मनु) पु० मनु के बेटे पोते, आदमी, मनुज ।

सं० मनुष्यगणना स्त्री० मर्दुमशुमारी ।

सं० मनुष्यता स्त्री० इन्सानियत, आदमियत ।

प्रा० मनुसाई (सं० मनुष्यता) स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यपन, जवाँमर्दी ।

प्रा० मनुहार (सं० मनोहारि, मनस्=मन, ह=लेना) गु० सुन्दर, मनोहर, मन हरनेवाली, २ स्त्री० आदरमान, मीठा बोलना ।

सं० मनोज (मनस्=मन, जन्=

पैदा होना) पु० कामदेव, गु०
मन से जो पैदा हो ।
सं० मनोजव (मनस् + जव) गु०
मनके समान जिसका वेग हो,
अतिवेगवान्, तेज्ररौ ।
सं० मनोज्ञ (मनस् = मन, ज्ञा = जा-
नना) गु० सुन्दर, मनोहर, सुढौल ।
सं० मनोभव (मनस् = मन, भू =
मनोभू) पैदा होना) क०
मनोभूत) पु० कामदेव, गु०
जो मन से पैदा हो ।
सं० मनोऽभिलाषित (मनः + अ-
भिलाषित) र्म० पु० मनोवाञ्छित,
मनचाहा, हस्वदिलखाह ।
सं० मनोरथ (मनस् + रथ अर्थात्
मन का रथ) पु० चाह, इच्छा,
अभिलाष, कामना ।
सं० मनोरम (मनस् = मन, रम् = प्र-
सन्न करना) गु० मनोहर, सुन्दर ।
सं० मनोहत गु० व्यग्रचित्त, व्याकुल ।
सं० मनोहर (मनस् = मन, हृ = लेना)
गु० मनको लेलेनेवाला, सुन्दर,
सुहाना ।
सं० मन्तव्य (मन् + तव्य, मन् =
विचारना) र्म० पु० माननीय,
चिन्तनीय, सलाह, राय ।
सं० मन्ता क० पु० मन्त्री ।
सं० मन्त्र (मन्त्रि = एकान्त में कहना
वा सलाह करना) पु० वेद का
एकभाग जिसमें देवताओं की

स्तुति है, २ मन्त्र यन्त्र, जादू, टोना,
लटका, ३ सलाह, द्विपी बात,
सम्पत्ति, उपदेश ।
सं० मन्त्रण भा० पु० सम्पत्ति, विचार ।
सं० मन्त्रणा भा० स्त्री० परामर्श,
विचार, युक्ति, सलाह, सम्पत्ति ।
सं० मन्त्रज्ञ पु० तान्त्रिक, मन्त्र जा-
ननेवाला, नीतिज्ञ, जामूस, दूत ।
सं० मन्त्रचित् (मन्त्र + चित् = जा-
नना) पु० तान्त्रिक, मन्त्रज्ञ, नीतिज्ञ ।
सं० मन्त्रित र्म० पु० मन्त्र से शुद्ध
क्रियागया, संस्कार किया गया ।
सं० मन्त्री (मन्त्र) पु० प्रधान, उप-
देशक, सचिव, सलाहकार, वजीर ।
सं० मन्थन (मन्थ् = बिलोना) भा०
पु० मथन, बिलोवन, बिलोड़न ।
सं० मन्थनी स्त्री० मथानी ।
सं० मन्द (मदि = आलसी होना वा
अचेत होना वा सोना) गु० सुस्त,
आलसी, धीमा, धीरा, मूढ़, मूर्ख,
३ निकम्मा, नीच, बुरा, ४ अभागा,
अभागी, ५ नीचा, ६ थोड़ा, कम,
७ पतला, पु० शनैश्चर, क्रि० वि०
धीरे धीरे, मन्द मन्द, बोल०
धीरे धीरे ।
सं० मन्दगति (मन्द = धीमी, गति
= चाल) स्त्री० धीमी चाल, गु०
धीरे चलनेवाला ।
सं० मन्दबुद्धि (मन्द = सुस्त वा
मन्दमति) क०, बुद्धि वा मति =

- अकल) गु० पूर्व, अज्ञानी, अनाड़ी, अल्पबुद्धि, बुद्धिहीन ।
- सं० मन्दभाग्य (मन्द=सुस्त वा कम, भाग्य=भाग) गु० अभागा, कमबल ।
- सं० मन्दर (मदि=सराहना वा प्रसन्न होना) पु० एक पहाड़ का नाम जिससे देवता और राक्षसों ने समुद्र मथा था, २ स्वर्ग का पेड़ परिरिजात, स्वर्ग, गु० भारी, मोटा ।
- प्रा० मन्दा (सं० मन्द) गु० धीमा, धीरा, कोमल, ठंडा, २ सस्ता ।
- सं० मन्दाकिनी (मन्द=धीरे, अक्=जाना) स्त्री० स्वर्ग की गङ्गा ।
- सं० मन्दादर (मन्द+आदर) गु० निरादर, कमकदर ।
- सं० मन्दार (मदि=सराहना) पु० स्वर्ग का एक पेड़, कल्पवृक्ष, नींबू, मदार ।
- सं० मन्दिर (मदि=सराहना वा सोना जिसमें) पु० घर, २ देवालय, देवस्थान, देहरा ।
- सं० मन्दोदरी (मन्द=पतला, उदर=पेट, जिसका पेट पतला हो) स्त्री० मयतनया, राक्षस की स्त्री ।
- सं० मन्मथ (मत्=ज्ञान, मथ=बिगाड़ना, नाश करना या डुल्लाना) पु० कामदेव ।
- सं० मन्मथारि (मन्मथ+अरि) पु० महादेव ।
- सं० मन्यु पु० शिव, यज्ञ, क्रोध, शोक, दीनता, अहङ्कार ।
- सं० मन्वन्तर पु० इकहत्तर चौगुनी का वा (३११४४८०००) वर्ष का, चौदह मनु हैं उनमें से एक का अधिकार ।
- सं० मम (अस्मद्) सर्वना० मेरा, मेरी ।
- सं० ममता (मम) भा० स्त्री० मोह, माया, प्रेम, प्यार, स्नेह, २ अभिमान, घमंड, मेरापन, मेरा जानना ।
- प्रा० मय (सं० मयर्) यह शब्द दूसरे के साथ आता है तब इसका अर्थ मिला हुआ या बना हुआ होता है जैसे मणिमय=मणियों से बना हुआ ।
- सं० मय (मय=जाना) पु० एक राक्षस का नाम, ऊँट, खच्चर ।
- प्रा० मयंक (सं० मृगाङ्क) पु० चाँद ।
- सं० मयतनया (मय=एक राक्षस का नाम, तनया=बेटी) स्त्री० मन्दोदरी, रावण की स्त्री ।
- प्रा० मयत्री (सं० मैत्री) भा० स्त्री० मित्राई, मिताई, प्रीति, प्यार, दोस्ती ।
- प्रा० मयन (सं० मदन) पु० कामदेव, मवकिल शहवत ।
- सं० मयु (मि+उ) क० पु० किंकर, देवजाति विशेष ।
- सं० मयूख (मय=नापना वा मय=

जाना) पु० किरण, तेज, शोभा, शिखा, चोटी ।
 सं० मयूर (मी=मारना, जो साँप आदि जानवरों को मारता है) पु० मोर, एक पक्षी का नाम ।
 सं० मरका (मृ=मरना) पु० मरी, सब में फैलनेवाला रोग ।
 सं० मरकत (मृ=नाश होना, जिस से अंधेरा नष्ट होजाता है) पु० पन्ना, हरीमणि, जमुर्द ।
 प्रा० मरखपना बोल० मर जाना, मर मिटना ।
 प्रा० मरघट (सं० मरघट, मर=मरना, घट=घाट) पु० मसान, वह जगह जहाँ मुर्दा जलाया जाता है ।
 सं० मरण (मृ=मरना) भा० पु० मरना, मौत, नाश, विनाश ।
 प्रा० मरना (सं० मरण) क्रि० अ० जी निकलना, प्राण छूटना, २ किसी चीजको बहुत चाहना ।
 प्रा० मरपचना बोल० बहुत दुख सहना, बहुत मिहनत करना ।
 सं० मरणप्रायः गु० संनिकटमृत्यु, करीबुलमर्त्य ।
 प्रा० मरम (सं० मर्म) पु० भेद, छिपी बात, अभिप्राय, सार बात, २ हृदय आदि अङ्ग ।
 सं० मराल (मृ=मरना) पु० हंस, राजहंस, २ मेघ, गु० साक, स्पष्ट ।
 प्रा० मरी (सं० मारी, मृ=मरना

वा मारना) पु० महामारी, मारने वाला रोग हैजा या तड्डन ।
 सं० मरीचि (मृ=नाश करना, अंधेरेको या अज्ञान को) पु० सप्त ऋषियों में का एक ऋषि, ब्रह्मा का बेटा, स्त्री० पु० किरण ।
 सं० मरीचिमाला स्त्री० किरणसमूह ।
 सं० मरीचिमाली पु० सूर्य ।
 सं० मरु (मृ=मरना, जहाँ पानी बिन लोग मरते हैं) पु० निर्जल देश, मरुस्थल, मारवाड़, २ बिन पानी का जङ्गल ।
 सं० मरुत् (मृ=मरना, जिनको इन्द्र ने दिति के गर्भ में मार कर उनचास टुकड़े किये थे उनके नाम यह हैं—१ एकज्योति २ द्विज्योति ३ त्रिज्योति ४ ज्योति ५ एकशक्र ६ द्विशक्र ७ त्रिशक्र ८ इन्द्र ९ गतदृश्य १० ततः ११ पतिसकृत् १२ पर १३ मित १४ सम्मित १५ सुमित १६ ऋतजित् १७ सत्यजित् १८ सुषेण १९ सेनजित् २० अतिमित्र २१ अनमित्र २२ पुरुमित्र २३ अवराजित २४ ऋत २५ ऋतवाह २६ धर्ता २७ धरुण २८ भुव २९ विधारण ३० देवदेव ३१ ईदक्ष ३२ अदक्ष ३३ प्रतिनः ३४ असदक्ष ३५ समर ३६ धाता ३७ दुर्ग ३८ धिति ३९ भीम ४० अभियुक्त ४१ अर्थात् ४२ सह ४३ युति ४४ यपु ४५ अनार्य

४६ अथवास ४७ काम ४८ जय ४९ विराट् । इसकी कथा श्रीमद्भागवत में इस तरह से लिखी है कि एक बार दैत्यों की मां दिति इस विचारसे अपने पति कश्यपजी के बतलाने से अगहन का व्रत करने लगी कि मेरे ऐसा बेटा हो कि इन्द्र को मार डाले इन्द्र को इस बात के सुनने से बड़ा डर हुआ । तब इन्द्र ब्राह्मण का रूप बन कर दिति की टहल करने लगा । एक दिन दिति शिर का बाल खुला छोड़ कर जूठे मुँह सो गई । ये दोनों बातें व्रत में अशुद्ध होनेसे इन्द्र अपना छोटा सारूप बना के वज्र लिये हुए दितिके पेट में घुस गया और वहाँ जाकर गर्भ में जो बालक था उसके सात टुकड़े कर डाले । तब वे सातों रोजे लगे । फिर इन्द्र ने एक एक के सात सात टुकड़े किये । पर परमेश्वर की इच्छा से और दिति के व्रत के प्रताप से कोई नहीं मरा । उन सातों के उनचास बालक होकर रो कर के बोले कि इन्द्र ! अब हम को मत मारो । हम तुम्हारी सहायता करेंगे यह दशा देख कर इन्द्र उन लड़कों से बोला कि अब तुम मत रोओ । मरुत् नाम होकर मेरे साथ रहो फिर इन्द्र उन उनचासों बालकों समेत गर्भ की राह बाहर निकल

आया । इस लिये, मरुत् नाम पड़ा) पु० हवा, पवन, वायु देवता । सं० मरुस्थल (मरु + स्थल) पु० निर्जल देश, मारवाड़, मरुभूमि, रेगिस्तान । सं० मर्कट (मर्क=जाना) पु० बानर, बन्दर । सं० मर्कटी स्त्री० बानरी, २ अपा-मार्ग, लटजीरा, क्यवाँच । सं० मर्त (मृ=मरना) क० पु० मर्त्य } मनुष्य, आदमी । सं० मर्त्यलोक (मर्त्य + लोक) पु० पृथ्वी, मनुष्यलोक, यह संसार । सं० मर्दक (मर्द् + अक) क० पु० प्रेषक, लोढ़ा, शिल का बट्टा । सं० मर्दन (मृद्=चूर चूर करना) भा० पु० मलना, रगड़ना, चूर करना, नाश करना । सं० मर्दित मर्म० पु० चूर्णित । प्रा० मर्दनियां (सं० मर्दनीया) पु० नौकर जो शरीर का मैल उतारने के लिये तेल आदि मलते हैं । सं० मर्म (मृ=मरना) पु० भेद, छिपी बात, मतलब, २ शरीर के जोड़, शरीरके वे अङ्ग जिनके टूटने से आदमी जी नहीं सकता । सं० मर्मी क० पु० भेदी, भेद जाननेवाला, राजदां । सं० मर्मज्ञ (मर्म=भेद, ज्ञ=जानना) पु० भेद जाननेवाला, बुद्धिमान ।

सं० मर्यादा (मर्या=सीमा, आ + दा
=लेना वा रखना) स्त्री० मान, पत,
प्रतिष्ठा, इज्जत, २ सीव, सीमा, हद्द।

सं० मर्श { (मृश्=छूना, ध्यान
मर्शन } करना) भा० पु०
स्मरण, विचार, सम्मति, निश्चय।

सं० मर्ष { (मृष्=सहना, क्षमाक-
मर्षण } रना) पु० तितिक्षा, स-
हना, क्षान्ति, बर्दाश्त।

सं० मल (मल=धारण करना) पु०
मैल, तलछट, गाद, २ गूह, ३
पाप, गु० मैला।

सं० मलग्राही { क० पु० भंगी,
मलापकर्षी } खाकरोब।

प्रा० मलना (सं० मर्दन) क्रि०
स० रगड़ना, मसलना, मीजना,
घिसना।

प्रा० मलमल स्त्री० एक तरह का
कपड़ा।

प्रा० मलमास पु० अधिक महीना,
लौंद का महीना।

प्रा० मलभेटकरना बोल० नष्ट
करना।

सं० मलराशि स्त्री० पापकी राशि।

सं० मलय { (मल्=रखना) पु०
मलयगिरि } एक पहाड़ जो दक्षिण
में है और जहाँ बहुत अच्छा
चन्दन होता है।

प्रा० मलयागीरी { (सं० मलयगिरि)
मलागीरी } पु० चन्दनकारंग।

प्रा० मलार (सं० मल्लार) स्त्री०
एक रागिणी का नाम जो बरसात
में गाई जाती है।

सं० मलिन { (मल=मैल) गु०

प्रा० मलीन } मैला, अशुद्ध, अप-
वित्र, बुरा, २ उदास, घबराया
हुआ।

सं० मलिनचित्त क० पु० कपटी,
दगाबाज़, बुरे दिल का।

सं० मलिन्द पु० भ्रमर, भौंरा।

प्रा० मलेछ (सं० म्लेच्छ) पु० मैली
जाति के लोग, जंगली, असभ्य,
वे लोग जिनकी बोली संस्कृत
नहीं है और न वे हिन्दुओं के
शास्त्र को मानते हैं।

सं० मल्ल (मल्ल=रखना वा पक-
ड़ना) पु० बलवान्, पहलवान्,
कुश्ती लड़नेवाला।

सं० मल्लयुद्ध (मल्ल + युद्ध) पु०
कुश्ती, पहलवानों की लड़ाई,
भिड़ाभिड़ी, बाहुयुद्ध।

सं० मल्लिका (मल्ल=रखना) स्त्री०
चमेली।

सं० मशक (मश्=गूँजना) पु०
मच्छर, मच्छड़, मसा, डांस।

फ्रा० मशक (मस्क) स्त्री० एक
तरह का चमड़े का थैला जिसमें
पानी लाया जाता है।

प्रा० मशहरी (सं० मशक=मच्छर,
हरी=दूर करनेवाली, ह=दूर

करना) स्त्री० एक कपड़ा जिसको मच्छरों से बचने के लिये पलंग पर तानते हैं ।

प्रा० मष्ट स्त्री० चुप, मौन ।

प्रा० मष्टमारना बोल० चुप रहना, मौन रहना, खामोश रहना ।

प्रा० मसकाना क्रि० स० चीरना, फाड़ना, दरकाना ।

प्रा० मसलना (सं० म्रक्षणा, म्रक्ष् = मलना) क्रि० स० कुचलना, मलना, मीजना ।

प्रा० मसान (सं० श्मशान) पु० मरघट, श्मशान, मुर्दाघाट ।

सं० मसी (मस्=बदल जाना वा नापना) स्त्री० स्याही, काली रोशनाई ।

सं० मसीपात्र (मसी + पात्र) पु० दवात ।

प्रा० मसूडा (मांस) पु० दाँतों के मसोड़ा ऊपर का मांस ।

सं० मसूर (मस्=नापना या बदलना) पु० एक अनाज जिसकी दाल बनती है ।

प्रा० मसैं स्त्री० व० व० मोठें निकलने के पहले के बहुत छोटे रवाल ।

प्रा० मसोसना क्रि० स० मरोड़ना, ऐंठना, २ निचोड़ना, ३ कुदना, कलपना ।

सं० मस्तक (मस्=बदलना वा नापना) पु० शिर, माथा, कपाल ।

प्रा० मस्तूल (पोर्तुगाली भाषा के शब्द Masto या Mastro से) पु० नाव का डंडा जिस पर पाल ताना जाता है ।

प्रा० महंगा (सं० महार्घ, महा=बड़ा, अर्घ=मोल) गु० बड़े मोल का, बहुत मोल का, बेश क्रीमत ।

प्रा० महंगी (महंगा) स्त्री० काल, अकाल, गरानी, कुसमय, गु० महंगा शब्द का स्त्रीलिङ्ग ।

प्रा० महक स्त्री० सुगन्ध, सुवास, गन्ध, खुशबू ।

सं० महत् (मह=पूजना वा बढ़ना) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, मानने योग्य, पूजने योग्य, स्त्री० बढ़ाई, मान, प्रतिष्ठा ।

प्रा० महतारी (सं० महत्तरा=बड़ी) स्त्री० मां, माता ।

प्रा० महतो (सं० महत्) वह आदमी जो जमींदार की तरफ से गाँव में महसूल उगाहने के लिये नियत किया जाय, चौधरी, सजावल ।

सं० महत्त्व (महत्) भा० पु० बढ़-पन, बढ़ाई ।

प्रा० महना (सं० मथन) क्रि० स० मथना, बिलोना ।

सं० महन्त (महत्) पु० मठधारी, गुसाईं अथवा वैरागियों का प्रधान ।

प्रा० महर (सं० महत्तर, बहुत बड़ा) पु० प्रधान ।

प्रा० महारा पु० कहार, भोई, पालकी उठानेवाला ।

प्रा० महारि (सं० महिला, मह=महरी) पूजना) स्त्री० भार्या, स्त्री, पत्नी, लुगाई ।

सं० महर्षि (महा + ऋषि) पु० परमऋषि, वेदव्यास आदि बड़े ऋषि ।

सं० महा (महत्, मह=पूजना वा बढ़ना) गु० बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुत ।

सं० महाकाय (महा=बड़ा, काया=शरीर) पु० शिव का द्वारपाल, नन्दि, २ हाथी, गु० बड़ामोटा शरीरवाला ।

सं० महाकाल (महा=बड़ा, काल=काला वा समय वा मौत अर्थात् सब को नाश करनेवाला) पु० प्रलयके समय में महादेव का रूप ।

सं० महाकाली (महाकाल) स्त्री० दुर्गा, देवी ।

प्रा० महाकोढ़ (सं० महाकुष्ठ) पु० बड़ा कोढ़ ।

सं० महाघोर (महा=बहुत या बड़ा, घोर=डरावना) गु० बड़ा भयानक, बहुत डरानेवाला, पु० एक नरक का नाम ।

सं० महाजन (महा + जन) पु० बड़ा आदमी, कोठीवाला, साहूकार ।

प्रा० महाजनी (महाजन) स्त्री०

महाजन का काम, कोठीवाली ।

प्रा० महाजान (सं० महाज्ञानी) गु० बहुत बुद्धिमान् ।

प्रा० महातम (सं० माहात्म्य) पु० बड़ाई, प्रतिष्ठा ।

सं० महान्मा (महा=बड़ा, आत्मा=जीव) गु० महाशय, सज्जन, उत्तम, बुजुर्ग, श्रेष्ठ ।

सं० महादेव (महा=बड़ा, देव=देवता) पु० शिव, महेश, उमेश ।

सं० महान् (महत्) पु० महत्तत्त्व, गु० बड़ा, श्रेष्ठ ।

सं० महानस पु० पाकस्थान, चूल्हा, गु० २ अति प्रसन्न, हर्षद ।

सं० महानुभाव गु० प्रतापी, २ तजरूबाकार ।

सं० महापातक (महा + पातक) पु० बड़ा पाप जैसे ब्रह्महत्याआदि ।

सं० महापाप (महा + पाप) पु० बड़ा पाप, महापातक ।

सं० महापुरुष (महा + पुरुष) पु० बड़ा आदमी, महात्मा, साधु, सज्जन ।

सं० महाप्रभु (महा + प्रभु) पु० परमेश्वर, २ शिव, ३ महाराजा, ४ पवित्र मनुष्य ।

सं० महाप्रलय (महा + प्रलय) पु० सृष्टि का नाश जो हर एक ४३२००००००००० बरसों पीछे होता है, २ सारी सृष्टि का नाश जो

ब्रह्मा के १०० बरस के पीछे होता है, जिस वर्ष का हर एक दिन ऊपर लिखे हुए बरसों के बराबर होता है और ब्रह्मा की राति भी इतनेही बरसों की होती है। और इस महा-प्रलयमें ऋषि, मुनि, देवता और ब्रह्मा समेत सातों लोक नष्ट हो जाते हैं।

सं० महाप्रसाद (महा=बड़ा, प्रसाद=भोग या नैवेद्य) पु० देवता का भोग या नैवेद्य, श्रीजगन्नाथजी का प्रसाद।

सं० महाबली (महा+बली) गु० बड़ा बलवान्, बड़ा पराक्रमी।

सं० महाभटमानी क० पु० बड़ा योद्धा माननेवाला।

सं० महाभारत (महा+भारत) पु० एक बहुत बड़ा इतिहास जो पद्यमें लिखा हुआ है, २ भरतवंशी राजा कौरवों और पाण्डवों की बड़ी लड़ाई जो कुरुक्षेत्र के मैदान में हुई थी।

सं० महाभूत पु० पञ्चतत्त्व, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश।

सं० महामाया (महा+माया) स्त्री० दुर्गा, देवी, शक्ति।

सं० महारथी (महा+रथी) क० जो अकेला ११ सहस्र धनुषधारियों से युद्धकरे, शस्त्र विद्या में प्रवीण हो।

सं० महाराज (महा+राजा) पु० बड़ा राजा, राजाधिराज।

सं० महाराजाधिराज (महाराज+अधिराज) पु० सबसे बड़ा राजा।

प्रा० महारानी (सं० महाराज्ञी, महा=बड़ी, राज्ञी=रानी) स्त्री० राजा की बड़ी रानी, पाटरानी।

सं० महार्घ (महा+अर्घ) गु० बड़े मोलका, बहुमूल्य।

सं० महालक्ष्मी (महा+लक्ष्मी) स्त्री० संपदा, संपत्ति, ऐश्वर्य, २ अठारह भुजा की देवी, लक्ष्मी।

प्रा० महावट (माघ) स्त्री० माह महीने का मेह।

प्रा० महावत पु० हाथीवान।

प्रा० महावर पु० लाखीरंग।

सं० महावीर (महा+वीर) पु० बड़ा शूरवीर, हनुमान्।

सं० महाशय (महा+आशय) गु० सज्जन, महात्मा, उदार, बड़ा और भला आदमी।

सं० महाश्वेता स्त्री० संरस्वती।

सं० महि (मह=पूजना वा बड़ा मही) होना) स्त्री० धरती, धरणी, जमीन, पृथ्वी।

सं० महिदेव (महि+देव) पु० भूमिदेव, ब्राह्मण।

सं० महिपाल (महि=धरती, पा-महीपाल) पु० राजा, महाराजा।

सं० महिमन् पु० महश्च, बढ़ाई, कीर्ति ।	प्रा० महुआ (सं० मधूक, मधु=मीठा) पु० एक पेड़ जिसका फल मीठा होता है और उसकी मदिरा बनाई जाती है ।
सं० महिमा (मह=पूजना वा बढ़ा होना) स्त्री० बढ़ाई, सराह ।	प्रा० महरत (सं० मुहूर्त) पु० दो घड़ी ।
सं० महिला स्त्री० नारी, स्त्री, २ मालकैकुनी ।	सं० महेन्द्र (महा+इन्द्र) पु० इन्द्र, २ महाराजाधिराज, ३ एक पहाड़ का नाम ।
सं० महिष (मह=पूजना जो यज्ञ में वा बलिदान के समय पूजा जाता है) पु० भैंसा ।	सं० महेश (महा=बड़ा, ईश वा महेश्वर) ईश्वर=मालिक) पु० महादेव, शिव ।
सं० महिषासुर (महिष + असुर) पु० एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मारा ।	सं० महेष्वास (महा+इषु+आस) बड़े धनुषवाले ।
सं० महिषी (मह=पूजना या मानना) स्त्री० भैंस, २ रानी ।	सं० महोक्ष पु० बड़ा बैल, नन्दिकेश्वर ।
सं० महिषेश पु० महिषासुर, २ यमराज ।	सं० महोत्सव (महा+उत्सव) पु० बड़ा तिहवार, बड़ा पर्व, बड़ा दिन ।
प्रा० मही (सं० मथित, मथ=मथना) मछो) पु० ढाड़, मट्टा ।	सं० महोदय पु० कान्यकुब्ज देश, कन्नौज, गु० २ प्रतापी, नामवर ।
सं० महीधर (मही=धरती, धृ=रखना) पु० पहाड़, पर्वत, ढूंगर ।	सं० मा (मा=शोभना या आदर करना) स्त्री० शोभा, लक्ष्मी, २ माता, क्रि० वि० मत, नहीं ।
प्रा० महीना (सं० मास) पु० तीस दिन, २ तनख्वाह, मासिक, तीस दिन की मजदूरी ।	प्रा० मा (सं० माता) स्त्री० मैया, माई) महतारी ।
सं० महीप (मही=धरती, पा=पालना) पु० राजा ।	प्रा० माँग स्त्री० लुगाइयों के शिर में एक लकीर सी होती है जहाँ से बाल जुड़े किये जाते हैं, २ वह कुंवारी लड़की जिसकी सगाई हुई हो ।
सं० महीपति (मही=धरती, पति=मालिक) पु० राजा, भूपति ।	प्रा० माँगना (सं० मार्गण, मृग=
सं० महीरुह पु० वृक्ष, वनस्पति ।	
सं० महीसुर (मही+सुर) पु० ब्राह्मण ।	

- खोजना) क्रि० स० चाहना, याचना, २ सगाई करना, निस्वत करना, सम्बन्ध करना ।
- प्रा० माँजना (सं० मार्जन, मृज्= शुद्ध करना वा मञ्जन, मञ्ज्=साफ करना) क्रि० स० मलना, उजला करना, उजालना, साफ करना ।
- प्रा० माँजा } पु० एक रोग जो मछ-
माँझा } लियोंके बहुत होता है,
२ वर्षा के नवीनजल का फेना ।
- प्रा० मांझ (सं० मध्य) पु० बीच, मध्य, मांझधार=नदी के बीच में ।
- प्रा० मांझा पु० पतङ्ग की डोर, जिस में कौंच पीस कर और लेई या गोंद से मिलाकर लगाया जाता है जिससे दूसरे की पतङ्ग की डोर को काटते हैं ।
- प्रा० मांझी (मध्य) पु० नाविक, नाव का मालिक ।
- प्रा० माँड़ (सं० मण्ड, मन्=रखना) पु० भात का पानी ।
- प्रा० माँड़ना (सं० मर्दन) क्रि० स० मलना, मीजना, मसलना, २ करना, रचना, बनाना ।
- प्रा० मांद स्त्री० जंगली जानवरकी गुफा, गु० हलका, २ फीका, सीठा ।
- सं० मांस (मन्=रखना वा पूजना, जो शक्ति की पूजा और यज्ञ आदि में पूजा जाता है) पु० गोश्त, सालन ।
- सं० मांसल गु० स्थूल, मोटा ।
- सं० मांसाद (मांस + अद) क० पु० मांस खानेवाला, गोश्तखवार ।
- सं० मांसाहारी (मांस + आहारी = खानेवाला) क० पु० मांस खानेवाला, मांसभक्षी ।
- सं० मांसभक्षक } (मांस, भक्ष्=
मांसभक्षी } खाना) क० पु० मांस खानेवाला, मांसआहारी ।
- प्रा० मांह } (सं० मध्य) में, भीतर,
मांहि } बीच ।
- प्रा० माग्वना क्रि० अ० क्रोध करना, कोपना, खिसियाना ।
- प्रा० माखित (माखना) गु० क्रो- धित, खिसियाना हुआ, २ ईर्षा या द्वेष या डाह करता हुआ ।
- सं० मागध (मगध) गु० मगधदेश का, पु० भाट या कड़खैत जिनका काम राजाओं की और बड़े आद- मियों की बड़ाई करने का है ।
- सं० माघ (मघा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चौद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्वोंके दिन यह नक्षत्र होता है) पु० बरस का ग्यारहवां महीना ।
- प्रा० माछी (सं० मक्षिका) स्त्री० मक्खी, माखी ।
- प्रा० माजूफल पु० एक फल जो देवाई में काम आता है ।
- प्रा० माटी (सं० मृत्तिका) स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।

प्रा० माठा गु० नटखट, ढीठ, मगरा,
सुस्त, २ (सं० मन्थित, मन्थ=
मथना) पु० मट्टा, छाछ ।

प्रा० माणिक (सं० माणिक्य,
मणि) पु० लाल, एक लाल रंग
का बहुत मोल का पत्थर ।

प्रा० मात (सं० मात्रा) स्त्री० मा-
त्रा, लगमात, स्वरों का व्यञ्जनों
के साथ मिलान, २ (सं० माता)
मां, माता ।

फ्रा० मात स्त्री० बाजी हराना, जी-
तना, शहमात ।

प्रा० मातकरना बाजी जीतना ।

सं० मातङ्ग (मद्=मस्त होना) पु०
हाथी, हस्ती, गज ।

सं० मातलि (मत=सलाह, ला=
लाना अर्थात् सलाह बतलाना)
पु० इन्द्र का रथवान्, इन्द्र का
सारथी ।

प्रा० माता (सं० मत्त) गु० मस्त,
मतवाला, उन्मत्त ।

सं० माता (मान्=पूजना या मन-
=आदर, मान करना) स्त्री० मां,
मैया, माई, २ शीतला देवी ।

सं० मातामह (माता) पु० मां का
बाप, नाना ।

सं० मातुल (मातृ=मां) पु० मां
का भाई, मामा ।

सं० मातुलानी { स्त्री० मामी,
मातुली } माई ।

सं० मातृष्वसा स्त्री० मौसी, खाला,
मां की बहिन ।

सं० मातृष्वस्त्रेय पु० मौसी का बेटा,
खालाजाद ।

सं० मात्र (मा=नापना) क्रि० वि०
केवल, अल्प, थोड़ा, कुछ, उत-
नाही, वहीभर ।

सं० मात्रा (मा=नापना) स्त्री० नाप,
परिमाण, २ ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतस्वर, ३
दवा का नाप, औषधका परिमाण ।

प्रा० माथा (सं० मस्तक) पु०
शिर, कपाल, मस्तक, २ नाव
का अगला भाग ।

प्रा० माथाठनकना बोल० किसी
काम के बिगड़ने का हाल पहले
से मालूम होजाना ।

प्रा० माथारगड़ना बोल० बहुत
गरीबी से प्रार्थना करना या दे-
वता, मुनि, अथवा राजासे गरीबी
के साथ माँगना, २ बहुत मिह-
नत करना ।

प्रा० माथेपरचढ़ना बोल० अन्याय
करना, जुल्म करना, प्रजा को
बहुत दुःख देना, सताना ।

सं० माथुर (मथुरा) पु० मथुरा
का रहने वाला, २ कायथों की
एक जात, ३ मथुराके ब्राह्मणों
की एक जात ।

सं० मादक (मद्=मस्त होना) क०
पु० मस्त करने वाला, नशेकी चीज ।

सं० मादन क० पु० हर्षकारक, फा०
खानसे निकली चीजें (खानि) ।
सं० माधव (मा=लक्ष्मी, धव=पति)
पु० लक्ष्मीपति, विष्णु ।
सं० माधव (मधु) पु० श्रीकृष्ण,
२ वसन्त ऋतु, ३ वैशाखका महीना,
४ महुआ, गु० शहद का ।
सं० माधुर्य (मधुर) भा० पु०
मिठास, मधुरता ।
सं० माध्वी (मधु) स्त्री० महुवेकी
मदिरा, २ एक तरह की मछली ।
सं० मान (मा=नापना) पु० नाप,
माप, अंदाज़, परिमाण, २ (मत्त=
घमंड करना वा बढ़ा जानना)
आदर, सन्मान, प्रतिष्ठा, नाम, पत,
३ घमंड, अभिमान, ४ चोंचला,
तावभाव, नाज्जनखरा, गु० बराबर ।
सं० मानन (मान् + अन) भा०
पु० पूजा करना, आदर करना ।
सं० मानव (मनु) पु० मनुके बेटे
पोते, मनुष्य, आदमी, २ बालक ।
सं० मानस (मनस्=मन) गु०
मनका, मानसिक, पु० मन, मनमा,
२ हिमालय पहाड़ के पास मान-
सरोवर नामक झील ।
सं० मानसिक (मनस्=मन) गु०
मनका, मनसे पैदा हुआ, दिली ।
सं० मानहानि स्त्री० अपमान, नि-
रादर, बेकदरी, बेइज्जती ।
सं० मानिनी (मान=घमंड) स्त्री०

गु० घमंड करनेवाली स्त्री, मान-
वती स्त्री ।
सं० मानी (मान) गु० घमंडी,
अभिमानी ।
सं० मानुष (मनु) पु० मनुष्य,
आदमी ।
प्रा० मान्ना (सं० मान्=विचारना)
क्रि० स० सन्मान करना, आदर
करना, चाहना, जानना, २ पति-
याना, भरोसा करना, ३ स्वीकार
करना, कबूल करना, इकरार
करना, ४ ठहरालेना, अनुमान
करना, कल्पना करना ।
सं० मान्य (मान्=पूजना) र्म०
पु० पूजने योग्य, मानने योग्य,
माननीय ।
सं० माप (मा=नापना) पु० नाप,
परिमाण ।
सं० मापक (मा=नापना) क० पु०
नापने वाला, २ नापविद्या में दो
बराबर खेतों में कोई आध काट से
कटे हुए खेत और बाक़ी दो बरा-
बर खेतों के मिलने से मापक ब-
नता है, ३ पैमाना, ४ अमीन ।
प्रा० मापा र्म० पु० व्यापा, अ-
सरकिया, लगा ।
प्रा० मामा (सं० मामक, मम=मेरा)
पु० मां का भाई, मामू ।
सं० माया (मा=नापना या बनाना)
स्त्री० ईश्वर की शक्ति, कुदरत, २

इन्द्रजाल, कुहक, ३ कृपा, दया,
४ मोह, प्यार, नेह, मुहब्बत, ५
खल, दम्भ, कपट, ६ धन, संपदा,
दौलत, मायापात्र, गु० धनवान् ।
सं० मायापति (माया + पति) पु०
विष्णु, ईश्वर ।
सं० मायावी (माया=खल) पु०
एक राक्षस का नाम जो मय का
बेटा था जिसको बालिने मारा,
गु० खली, फरेबी ।
सं० मार (मृ=मरना या मारना)
पु० मरना, २ कामदेव ।
प्रा० मार (मारना) स्त्री० मारना,
पीटना, २ लड़ाई, युद्ध, ३ चोट ।
सं० मारक क० पु० कामदेव, २
नाशक, हिंसक ।
प्रा० मारकुटाई बोल० मारना
और कुचलना, मारपीट ।
सं० मारकेश जन्मपत्र में लग्न से
दूसरे व सातवें घर का स्वामी ।
प्रा० मारखाना (बोल० पिटना,
मारखानी) मार पड़ना ।
प्रा० मारगिराना बोल० पछाड़ना,
पटक देना ।
प्रा० मारपड़ना बोल० पिटना,
मारखाना ।
प्रा० मारपीट बोल० मारकुटाई, मा-
रना, पीटना ।
प्रा० मारमरना बोल० अपघात
करना, आत्महत्या करना, २ ल-

ड़ाई में बैरी को मारके एक महीने
प्रा० मारलाना बोल० लू-आद ।
प्रा० मारलेना बोल० मारना, जीत
लेना ।
प्रा० मारहटाना बोल० जीतलेना,
मारना और निकाल देना ।
प्रा० मारग (सं० मार्ग) पु० रस्ता,
राह, पन्थ, बाट, डगर, पैड़ा ।
प्रा० मारना (सं० मारण, मृ=
मरना या मारना) कि० सं० जी
लेना, मार डालना, प्राण निका-
लना, २ पीटना, ठोकना, टक-
राना, ३ दण्ड देना, सजा देना,
४ नाश करना, बिगाड़ना ।
प्रा० मारापड़ना बोल० माराजाना ।
प्रा० मारामाराफिरना बोल० भट-
कता फिरना, डाँवाँ डोल फिरना,
इधर-उधर फिरना ।
प्रा० मरामारी बोल० आपस में
मार पीट, धौल धप्पा, लातमुक्की ।
सं० मारात्मक (मार=मारना,
आत्मा=जीव) गु० मारनेवाला,
हिंसक, घातक, शत्रु ।
सं० मारी (मृ=मरना वा मारना)
स्त्री० मरी, मौत, महामारी, हैजा
या ताऊन ।
सं० सारीच (मृ=मरना वा मा-
रना) पु० एक राक्षस का नाम
जो ताड़का राक्षसी का बेटा और
सुबाहु का भाई और रावण का

था जिसको श्रीरामचन्द्र ने

।

सं० मारुत (मृ=मारना) पु० हवा,
बाव, बयार, पवन, वायु देवता
(मरुत् शब्द को देखो) ।

सं० मारुतसुत (मारुत + सुत) पु०
हनुमान्, पवन का पुत्र ।

सं० मारुतात्मज (मारुत + आ-
त्मज) वायुपुत्र, हनुमान् ।

सं० मारू (मृ=मारना) पु० लड़ाई
का बाजा, २ एक रागिणी का
नाम जो लड़ाई में गाई जाती है ।

सं० मार्कण्डेय पु० एक मुनि का
नाम, मृकण्ड मुनिका पुत्र ।

सं० मार्ग (मृज्=साफ करना वा
मृग् वा मार्ग=खोजना) पु० रस्ता,
मार्ग, बाट, पन्थ ।

सं० मार्गित र्मं० पु० तलाश किया
गया, ढूँढ़ा गया ।

सं० मार्ग्य र्मं० पु० ढूँढ़ने योग्य ।

सं० मार्गण (मार्ग + अण, मार्ग
=ढूँढ़ना) पु० बाण, अन्वेषण,
याचना, भिक्षा, तलाश ।

सं० मार्गव पु० व्याध, अहेरी ।

सं० मार्गशिर { (मृगशिरा एक
मार्गशीर्ष) नक्षत्र का नाम
इस महीने में पूरा चाँद इस नक्षत्र
के पास रहता है और इस महीने
की पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र

होता है) पु० अगहन, मँगसर,
मगसिर ।

सं० मार्जन (मृज्=शुद्ध करना)
पु० शुद्ध करना, पवित्र करना,
साफ करना, २ सन्ध्या पूजा आदि
करने के पहले पवित्रता के लिये
शरीर आदि में पानी की छींट
डालना ।

सं० मार्जनी ए० स्त्री० भाङ्गू, बङ्गनी ।

सं० मार्जनीय र्मं० पु० साफ
करने योग्य ।

सं० मार्जार (मृज्=शुद्ध करना वा
मलना) पु० बिलाव ।

सं० मार्तण्ड (मृतण्ड=सूर्य का बाप)
पु० सूर्य, शूकर ।

सं० मालका { (माला) स्त्री०
मालिका } माला, हार, २
पांत, पांति, श्रेणी, पंक्ति ।

सं० मालती (माल=विष्णु, अत्=
जाना अर्थात् विष्णु को चढ़ना
वा मा=शोभा, ला=लेना) स्त्री०
एक फूल का नाम, चमेली ।

प्रा० मालपूर्वा पु० मीठा पूवा ।

सं० मालव पु० मालवादेश ।

सं० माला (मा=शोभा, ला=लेना)
स्त्री० फूलों का हार, सोने या
मोती आदि का हार, २ सुमरना,
जपमाला, ३ पांत, पंक्ति, श्रेणी,
कतार ।

सं० मालाकार (माला=हार, कार
=करनेवाला, कृ=करना) पु०
माली, बागवान ।

सं० मालादीपक क० पु० अर्था-
लङ्कार भेद ।

सं० माली (माला) पु० बागवान,
मालाकार ।

सं० माल्य (माला) र्म० माला के
योग्य, पु० फूल, २ माला, हार ।

प्रा० मावस (सं० अमावस्या) स्त्री०
अंधेरे पाख की पन्द्रहवीं तिथि,
अमावस ।

प्रा० माव पु० क्रोध, कोप, २ उड़द ।

प्रा० माषा (सं० माप, मष्=अन्दाज
करना) पु० आठ रत्ती की तौल ।

सं० मास (मा=नापना) पु० म-
हीना, २ चाँद ।

प्रा० मासकवार (पोर्तुगाल की
भाषा का शब्द (mes महीना,
acubar पूरा होना) से बिगड़ा
हुआ) पु० महीने के अन्त का
दिन, २ माहवारी नकशा और
यह शब्द मास एकवार से भी
बना मालूम होता है क्योंकि माह-
वारी नकशे आदि महीने में एक
बार भेजे जाते हैं ।

सं० मासान्त (मास + अन्त)
पु० पूर्णमासी, संक्रान्ति ।

सं० मासिक (मास) गु० महीने
का जो महीने में मिले, पु० तन-

ल्वाह, वेतन, २ हर एक महीने
में अमावस के दिन का श्राद्ध ।

प्रा० मामी (सं० मातृ + स्वसृ, मातृ=
मां, स्वसृ=बहिन) स्त्री० मांकी
बहिन, मौसी ।

सं० माहेश्वरी (महेश) स्त्री० दुर्गा,
देवी, पार्वती, शिवरानी ।

प्रा० माहुर पु० जहर, विष ।

प्रा० मिचना क्रि० अ० बन्द होना,
मुँदना ।

प्रा० मिटना (सं० मृष्ट, मृन्=साफ
करना) क्रि० अ० बिगड़ना, साफ
होना, दूर होना, चलाजाना,
मिलपट होना ।

प्रा० मिट्टिया (मिट्टी) गु० एक
तरह का रंग, खाकी रंग, स्त्री०
मिट्टीका बर्तन ।

प्रा० मिठाई (सं० मिष्टान्न, मिष्ट=
मीठा, अन्न=अनाज) भा० स्त्री०
शीरीनी, मीठी चीज़, मीठा पक-
वान, २ मिठास, मधुरता ।

प्रा० मिठास (सं० मिष्टांश, मिष्ट +
अंश) भा० पु० मिठाई, मीठापन ।

सं० मित (मा=नापना) र्म० पु०
नापा हुआ, मापा हुआ, परमित ।

सं० मितस्पन्ध पु० कंजूस, किरायाती ।

सं० मितप्रद क० पु० थोड़ा देनेवाला ।

सं० मिति स्त्री० परिमाण, तादाद,
अन्त, मर्याद ।

प्रा० सिती (सं० मिति, मा=नापना)

स्त्री० तिथि, २ व्याज, सूद ।
 सं० मित्र (मित्र=प्यार करना) पु०
 जो मृत्युपकार की इच्छा से उप-
 कार करे व स्नेह करे वह मित्र है,
 दोस्त, सनेही, प्यारा, हितू,
 बन्धु, सखा, सुहृद्, २ सूर्य ।
 सं० मित्रता (मित्र) भा० स्त्री०
 मिताई, मित्राई, दोस्ती, प्यार, हेत ।
 सं० मित्रद्रोही क० पु० मित्र का वैरी ।
 सं० मित्रवर्ग पु० सुहृद्गण ।
 प्रा० मित्राई (सं० मित्रता) भा०
 मिताई स्त्री० दोस्ती, प्यार ।
 सं० मिथस् (मिथ्=मिलना वा
 समझना) क्रि० वि० आपस में,
 एक दूसरे को, परस्पर, बाह्म ।
 सं० मिथिला (मिथ्=नाश करना
 वैरियों को) स्त्री० तिरहुत, जनक
 राजा की नगरी, जनकपुर ।
 सं० मिथिलेश (मिथिला + ईश)
 पु० जनक राजा ।
 सं० मिथिलेशकुमारी (मिथिलेश
 + कुमारी) स्त्री० जनकदुलारी,
 जानकी, सीता, वैदेही ।
 सं० मिथिलेशि (मिथिलेश) स्त्री०
 जनकराजा की रानी ।
 सं० मिथुन (मिथ्=मिलना वा सम-
 झना) पु० जोड़ा, स्त्री पुरुष, २
 ज्योतिष में एक राशि का नाम ।
 सं० मिथ्या (मिथ्=मारना वा हानि
 पहुँचाना) क्रि० द्वि० अथवा गु०

दरोग, झूठ, असत्य, अनर्थ ।
 प्रा० मिरगी स्त्री० एक रोग का नाम ।
 प्रा० मिर्च (सं० मरिच, मृ=मरना)
 स्त्री० एक मसाले का नाम, गोल
 मिर्च=काली मिर्च ।
 सं० मिलक क० पु० संधिकारी,
 मेल करनेवाला ।
 सं० मिलन (मिल्=मिलना) भा०
 पु० मिलना, मेल, मिलाप, संयोग ।
 प्रा० मिलनसार (मिलन) गु०
 मेली, मिलापी ।
 प्रा० मिलना (सं० मिलन) क्रि०
 अ० मिलाप होना, भेंटना, मिला
 रहना, २ पचमेल होना, गड़बड़
 होजाना, ३ पाना, ४ एक होना,
 बराबर होना ।
 प्रा० मिलनाजुलना बोल० सदा
 मिलारहना, सच्चाई से मिलना ।
 प्रा० मिलनाहिलना बोल० इकट्ठा
 रहना, शामिलरहना ।
 प्रा० मिलेजुलेरहना बोल० मेल
 से रहना, मिलाप से रहना ।
 प्रा० मिलाप (मिलना) पु० मेल,
 बनाव, भेंट, योग, संयोग ।
 सं० मिलित (मिल्=मिलना) र्म०
 पु० मिलाहुआ, लगा हुआ ।
 सं० मिश्रक (मिश्र् + अक) क०
 पु० मेलक, मिलानेवाला, देवों-
 बान, देवधन ।
 सं० मिश्र (मिथ्=मिलना) गु०

मिलाहुआ, पु० ब्राह्मणों की पदवी,
 २ प्रतिष्ठित मनुष्य, ३ हिन्दू-वैद्य ।
 सं० मिश्रकेशी स्त्री० स्वर्गवेश्या ।
 सं० मिश्रित (मिश्र=मिलना) र्म०
 पु० मिला हुआ, जुड़ा हुआ,
 यौगिक ।
 सं० मिष (मिष्=हिस्का वा बराबरी
 करना) पु० छल, कपट, बढाना,
 हीला, बनावट, २ हिस्का ।
 सं० मिष्ट (मिष्=मीचना) गु०
 मीठा, मधुर ।
 सं० मिष्टान्न (मिष्ट + अन्न) पु०
 मिठाई, शीरीनी, पकवान ।
 प्रा० मिस्सी स्त्री० काले रंग का
 चूरा जिसको स्त्रियाँ दाँतों में
 लगाती हैं ।
 प्रा० मिहदी (सं० मेन्धी, मा=
 मेहदी) शोभा, इन्ध=चम-
 कना) स्त्री० एक पौधा जिसके पत्तों
 से स्त्रियाँ अपने हाथ रचाती हैं ।
 प्रा० मिहना पु० बोली ठोली, ताना ।
 प्रा० मिहरारू (सं० महिला, मह
 मिहरिया } = पूजना) स्त्री०
 मिहरी } लुगाई, नारी, स्त्री ।
 सं० मिहिका स्त्री० नीहार, कुहिरा,
 हिम, बर्फ ।
 सं० मिहिर पु० सूर्य, आफताब ।
 प्रा० मीजना (सं० मृज्=साफ

करना) क्रि० स० मसलना,
 मलना, रगड़ना ।
 प्रा० मीच (सं० मृत्तु) स्त्री० मौत,
 कजा ।
 प्रा० मीचना क्रि० स० आँख बन्द
 करना, मूँदना ।
 प्रा० मीठा (सं० मिष्ट) गु० मधुर,
 मिष्ट, २ धीमा, पु० चुम्बा, बोसा ।
 प्रा० मीणा (पु० जंगली आद-
 मीना) मियों की एक जात
 जो चोर और डाकू होते हैं ।
 प्रा० मीत (सं० मित्र) पु० मित्र,
 दोस्त, सुजन, सुहृद्, सखा ।
 सं० मीन (मी=मारना) स्त्री० वा
 पु० मछली, २ एक राशिका नाम ।
 सं० मीनकेतन (मीन=मछली,
 केतन=पताका) पु० कामदेव ।
 सं० मीमांसक (मीमांसा) क० पु०
 मीमांसाशास्त्र का जाननेवाला,
 २ विचार करनेवाला ।
 सं० मीमांसा (मान्=विचारना)
 स्त्री० छः शास्त्रों में का एकशास्त्र,
 २ सिद्धान्त विचार ।
 सं० मीमांसित र्म० पु० विचा-
 रित, विचारागया ।
 प्रा० मीमियाना (क्रि० अ० में में
 मिमियाना) करना, बकरी
 के बच्चे का बोलना ।

१ चिन्तनीय द्रव्य वस्तु हैं सदा जगत के बीच । ईश्वर के पदपद्मपुग और आपनी मीच ॥

२ निन्दहि आप सराहि मीना । भिग जीवन रखीर बिहीना । (इति रामायणम्) ॥

सं० मीलन (मील्=पलक मारना)

पु० टिमकाना, टमटमाना ।

सं० मीलित र्म० पु० संकुचित, बन्धित ।

प्रा० मुँह ((सं०मुख) पु० मुखड़ा, मुँह) मुख, वदन, चेहरा, २ बल, शक्ति, जोर, योग्यता ।

प्रा० मुँह अँधेरा बोल० सन्ध्य, साँझ, शाम, कुछ कुछ अँधेरा ।

प्रा० मुँह अपनासा लेके फिर जाना बोल० निराश होकर चला जाना ।

प्रा० मुँहआना बोल० मुँह फलना, मुँह में छाले होजाना ।

प्रा० मुँहामुँह बोल० खूब पूराभरा हुआ, लबालब ।

प्रा० मुँहउतरजाना बोल० उदास होजाना ।

प्रा० मुँहकरना बोल० साम्हने होना, मिलाना, बराबरी देना, २ गाली देना, ३ फोड़े को छेद करना, फोड़े या घावका फूटना, ४ सबसे पहले हमला करना (जैसे शिकारी कुत्ता या और जानवर दूसरे कुत्ते या जानवर पर करते हैं)

५ किसी चीज या जगह की ओर देखना या उसतरफ पाँव उठाना ।

प्रा० मुँहकाफूहड़ बोल० बुरीबात बोलनेवाला, बदजबान, निन्दक ।

प्रा० मुँहकाला बोल० कलङ्क, अप-

मान, अनादर, बुरा ।

प्रा० मुँहकालाकरना बोल० कलङ्क लगाना, दागलगाना, आबरु उतारना, २ सजा देना ।

प्रा० मुँहकेकौचे उड़जाने बोल० उदास दिखाई देना, व्याकुल दिखाई देना ।

प्रा० मुँह खोलना बोल० गाली देना, निन्दा करना ।

प्रा० मुँहचढ़ाना बोल० हिलमिल जाना, मुँह लगाना, २ साम्हना करना, सन्मुख होना ।

प्रा० मुँह चलाना बोल० काटना, काटा चाहना (जैसे घोड़ा) ।

प्रा० मुँहचोर बोल० शरमीला, लजीला, डरपोकना ।

प्रा० मुँहचोरी बोल० लाज, शरम ।

प्रा० मुँहछिपाना बोल० लाज से मुँह ढकना ।

प्रा० मुँह ठठाना बोल० किसी के मुँह पर तमाचा मारना, थप्पड़ मारना ।

प्रा० मुँहडालना बोल० माँगना, याचना, चाहना, २ काटना (जैसे घोड़ा) ।

प्रा० मुँह तकना बोल० चकित रह जाना, भैचक रहना, घबराना, व्याकुल होना ।

प्रा० मुँहतोड़ना गु० खिझाना, मुँहमें मारना, तकलीफ देना ।

प्रा० मुँहती देखो बोल० यह मुहा-
वरा उस जगह बोला जाता है जब
कोई आदमी अपनी ताकत या
योग्यता से अधिक कोई काम क-
रने का बहाना करता हो ।

प्रा० मुँहथुथाना बोल० मुँह बनाना ।

प्रा० मुँहदिखाई स्त्री० जबकि नई
दुल्हिन आती है तब उसको उस
की सास ननंद आदि सुसराल
की लुगाइयाँ मुँह देखकर रुपया
अथवा गहना आदि देती हैं उस
को मुँहदिखाई कहते हैं ।

प्रा० मुँह देखकर बात करना
बोल० सुशामद करना, ऐसी बात
कहना जो सुननेवाले के मन भाये ।

प्रा० मुँहदेखना बोल० मददचाहना,
सहायता माँगना, २ किसी का
बहुत आदर सन्मान करना ३
घबराना या बेवश होना ।

प्रा० मुँह देखरहना बोल० अचंभे
में किसी का मुँह ताकना ।

प्रा० मुँहदेखेकी प्रीति बोल० किसी
के साम्हने प्यार की बातें करना
और उसके पीठ पीछे उसका कुछ
ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मि-
थाई अथवा प्यार ।

प्रा० मुँहपरगर्महोना बोल० बड़े
आदमी के अथवा अपने अफसर
के साम्हने बे अदबी अथवा ठि-
ठाई से बोलना ।

प्रा० मुँहपरलाना बोल० कहना,
जताना ।

प्रा० मुँहपरहवाई उड़ना बोल०
मुँह का रङ्ग बदलजाना ।

प्रा० मुँहपसारना बोल० अचंभे में
होके मुँह फाड़ना, जमुहाना ।

प्रा० मुँहफेरना बोल० किसी काम
के करने से रुक जाना ।

प्रा० मुँहफैलाना बोल० धमँडक-
रना, २ बहुत चाहना, ३ जमुहाना,
जमुहाई लेना ।

प्रा० मुँहबन्दकरना बोल० किसी
को चुप करना, जीभ पकड़ना ।

प्रा० मुँहबनाना बोल० मुँह थु-
थाना, भौं टेढ़ी करना, त्योंरी
चढ़ाना ।

प्रा० मुँहबना बोल० मुँह खोलना,
मुँह फाड़ना, जमुहाना, जमुहाई
लेना ।

प्रा० मुँहबिगाड़ना बोल० अप्रसन्न
होना, नाराज होना, बुरा मानना,
रिसाना, २ कोई कड़वी या बुरी
चीज के खाने से मुँह का स्वाद
बिगाड़ जाना ।

प्रा० मुँहबिगाड़ना बोल० भौं टेढ़ी
करना, त्योंरी चढ़ाना, मुँह बनाना ।

प्रा० मुँहबोला बोल० माना हुआ,
किया हुआ, धर्म का, जैसे मुँह
बोला भाई=धर्मका भाई, वह आ-
दमी जिसको अपना भाई कर माने

प्रा० मुँहभरी बोल० रिशवत, घूस, अकोर ।

प्रा० मुँहमाँगा बोल० जैसा चाहा वैसाही, जैसा मुँहसे माँगा वैसाही ।

प्रा० मुँहमारना बोल० चुप करना, जीभ पकड़ना, मुँह बन्दकरना, २ काटना ।

प्रा० मुँहमेंपानीआना या भर आना बोल० किसी चीज को बहुत चाहना, किसी चीजके लिये मन बहुत ललचाना ।

प्रा० मुँहमोड़ना बोल० फिर जाना, चला जाना, किसी कामके करने से रुकजाना ।

प्रा० मुँहलगना बोल० मरिच आदि चरपरी चीज से मुँह जलना या चरपराना, २ हिल मिल जाना, मुसाहिब होना, पक्का दोस्त होना ।

प्रा० मुँहलगाना बोल० छोटे आदमीसे मेल करना, हिलाना, मुसाहिब बनाना ।

प्रा० मुँहलेके रहजाना बोल० शर्म से चुप होजाना ।

प्रा० मुँहसुकड़ना बोल० मुँहकारङ्ग बदलना ।

प्रा० मुँहसेफूलभड़ना बोल० गाली देना, धिक्कारना, भिड़कना ।

प्रा० मुकरना क्रि० स० न करना, इनकार करना, नटना ।

प्रा० मुकरी (मुकरना) स्त्री० एक

तरह का छोटाछन्द जो ब्रजभाषा में बहुत आता है और उसमें चार पद होते हैं उममें से पहले तीन पदों से ऐसा जानाजाता है कि बोलनेवाली स्त्री अपने प्रीतम की बात करती है पर चौथे पद में वह स्त्री अपनी सखी से पूछती है कि क्यों सखी 'सज्जन' हुआ उसपर वह सखी मुकरती है और किसी दूसरी चीज को बताती है जैसे "वा बिन चित्त चहुँदिशि डोलै । चातक ज्यों पुनि पिय पिय बोलै ॥ प्रलय होय आवै नहिं गेह । क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ॥"

सं० मुकु पु० मोक्ष, उत्सर्ग, छोड़ना ।

सं० मुकुट (मक् + उट, मकि = भूषण) पु० शिरोभूषण, ताज, कलङ्गी ।

सं० मुकुन्द (मुकु = मुक्ति को, मुकु में धातु मुच् = छुड़ाना, दा = देना) पु० मुक्तिदाता विष्णु भगवान् ।

सं० मुकुम् अव्य० निर्वाण, मोक्ष ।

सं० मुकुर (मुक् + उर, मकि = भूषण) पु० दर्पण, बकुलवृक्ष, मौल-श्री, कुम्हारका ढंडा, मल्लिकावृक्ष ।

सं० मुकुल पु० थोड़ी खिली कली ।

सं० मुकुलित र्म्य० पु० कलियाना, कलिकायुक्त, पुष्पित ।

प्रा० मुक्का (सं० मुष्टिका) पु० घूँसा, धौल, चपेट ।

सं० मुक्त (मुच्=छोड़ना या छूटना) र्म्य० छोड़ा हुआ, छूटा हुआ, २ जिस की मुक्ति हुई हो, ३ प्रसन्न, आनन्दित, रिहा, बरी, परागत पाया हुआ ।

प्रा० मुक्तमाल (सं० मुक्तामाला) पु० मोती की माला ।

सं० मुक्तहस्त गु० बड़ादानी, फथ्याज ।

सं० मुक्ता (मुच्=छूटना या छोड़ना, जो सीपी से छूटता है) पु० मोती ।

प्रा० मुक्ता गु० बहुत व घना ।

सं० मुक्ताफल (मुक्ता + फल) पु० मोती ।

सं० मुक्तावली (मुक्ता + अवली) स्त्री० मोती की माला, मोती का हार, नाम एक पुस्तक का ।

प्रा० मुक्ताहल (सं० मुक्ताफल) मुकुताहल पु० मोती ।

सं० मुक्ति (मुच्=छूट जाना) स्त्री० छुटकारा, संसार के दुःख अथवा पाप से छूट जाना, मोक्ष, गति, उद्धार, त्राण ।

सं० मुख (खन्=खोदना जो ब्रह्मा का खोदा हुआ है) पु० मुँह, मुखड़ा, वदन, चिह्न, गु० पहला, प्रधान ।

प्रा० मुखड़ा (सं० मुख) पु० मुँह, वदन ।

सं० मुखभूषण (मुख=मुँह, भूषण =शोभा) पु० पान, बीड़ा ।

सं० मुखर (मुख=मुँह की बात, रा=लेना अर्थात् मुँह में बुरी बात, वाचाल, बहुत बोलनेवाला) गु० कड़वी बात बोलनेवाला, दुर्वचन बोलनेवाला, पु० प्रधान, मुखिया, २ शब्द, ३ काक, ४ शंख ।

सं० मुखलांगल (मुख=मुँह, लांगल=हर) पु० शूकर, सूअर ।

सं० मुखवल्लभ पु० दाहिम, अनार ।

प्रा० मुखगिर (सं० मुखग्र, मुख=मुँह, अग्र=अनी वा अगला भाग) पु० जवानी, मुँह से कहना, २ लगाम ।

प्रा० मुखिया (सं० मुख्य) गु० प्रधान, मुख्य, पहला ।

सं० मुख्य (मुख) गु० प्रधान, मुखिया, पहला, श्रेष्ठ ।

सं० मुग्ध (मुह=अचेत होना) गु० मूर्ख, अज्ञानी, २ सुन्दर, मनोहर, कमसिन ।

सं० मुग्धा (मुग्ध) स्त्री० जवान और सुन्दर स्त्री, एक प्रकार की नायिका ।

सं० मुचकुन्द पु० सूर्यवंशी राजा, मान्धाता का बेटा, जिसको श्रीकृष्ण ने मुक्ति दी ।

प्रा० मुजरा पु० सलाम, राम राम,

प्रणाम, नमस्कार, राजपूताने में
'सलाम' या 'आदाब' की
जगह छोटा बड़े को और बराबरी
वाला बराबरीवाले को 'मुजरा'
करते हैं, २ मिनहा करना, काटना,
३ वेश्या का गान ।

सं० मुञ्ज (मुजि=शब्द करना) स्त्री०
मूँज, कांसके छिलके जिसकी
रस्सी बनती है ।

प्रा० मुटाई भा० स्त्री० } (मोटा)
मुटापा भा० पु० } मोटा-
पन, स्थूलता ।

प्रा० मुट्टी (सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की,
बुक्का, बुकटा, मुक्का ।

प्रा० मुठभेड़ बोल० साम्हना होना,
मिलजाना ।

प्रा० मुठिया (सं० मुष्टिका) स्त्री०
मुट्टीभर, हाथभर ।

प्रा० मुड़ना क्रि० अ० पीछे हट
जाना, २ झुकजाना, बलखाना,
टेढ़ा होना ।

प्रा० मुढ़ (सं० मुण्ड) पु० प्रधान,
मुखिया, मुख्य ।

सं० मुण्ड (मुडि=मुँढ़ाना) पु०
शिर, माथा, मस्तक, मुँढ़, कपाल,
२ एक राक्षस का नाम जिसको
दुर्गाजीने मारा, र्म० मुँढ़ायाहुआ ।

प्रा० मुण्डखई स्त्री० बकवाद कर-
ना, शिरखाना, बेफायदा बकना ।

सं० मुण्डन (मुडि=मुँढ़ाना) पु०

मुँढ़ाना, बाल बनवाना, २ हिन्दुओं
में एक रीति है कि पहलेही पहल
किसी देवता के साम्हने लड़के के
बाल कतराते हैं उसको मुण्डन या
मुण्डना कहते हैं ।

सं० मुण्डक (मुण्ड् + अक) क०
पु० नापित, नाई, हज्जाम ।

सं० मुण्डमाला (मुण्ड + माला)
स्त्री० आदमियों के शिरोंकी माला ।

सं० मुण्डित (मुडि=मुँढ़ाना) र्म०
पु० मुँढ़ा हुआ, भद्र ।

सं० मुण्डी क० पु० नापित, नाई,
हज्जाम, २ संन्यासी ।

प्रा० मुण्डिया (सं० मुण्ड) पु०
शिर, माथा, मस्तक ।

सं० मुद् (मुद्=प्रसन्न होना) भा०
मुदा स्त्री० प्रसन्नता, खुशी,
हर्ष, आनन्द, सुख ।

सं० मुदित (मुद्=प्रसन्न होना) क०
पु० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, खुश ।

सं० मुदिर (मुद् + इर) क० पु०
कामुक, कामी, २ मेघ ।

सं० मुदी स्त्री० चन्द्रिका, ज्योत्स्ना,
प्रीति, हर्ष ।

सं० मुद्ग पु० मूँगाअन्न, कनात, तम्बू,
भूल, परदा, गिलाफ ।

सं० मुद्गर (मुद्=खुशी को, गृ=
प्रा० मुगदर) निकालना) पु० एक
बहुत भारी पत्थर जिसके बीज में
पकड़नेको कटा हुआ कबजा होता है

जिसको मल्ल और पहलवान हाथ से पकड़के ऊँचा उठाते हैं, २ बेले का वृक्ष ।

सं० मुद्रा (मुद्=प्रसन्न होना) स्त्री० रूपया, अशर्फी आदि, २ छाप, मोहर, ३ अँगूठी, छल्ला, ४ योगियों के कानों के कुण्डल, ५ संध्या पूजा में अंगुलियों को आपस में मिलाना जैसे धेनुमुद्रा, योनिमुद्रा आदि, ६ टकसाल ।

सं० मुद्रिका (मुद्रा) स्त्री० ऐसी अँगूठी जिसपर अपना नाम खुदा हो ।

सं० मुद्रित (मुद्रा) र्म्भ० पु० छपा हुआ, छपा गया, २ मोहर लगा हुआ, ३ मुँदा हुआ, ४ अनखिला, नहीं खिला हुआ ।

सं० मुधा (मुद्=अज्ञानी होना वा अचेत होना) क्रि० वि० झूठ, बे फायदह, वृथा, व्यर्थ, निरर्थक ।

सं० मुनि (मन्=जानना) पु० दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थिरधीर्मुनिरुच्यते(अर्थ)दुखसुखमें एकसा रहै राग भय और क्रोधरहित स्थिर बुद्धि मुनि कहाताहै ऋषि, तपस्वी, तपी, ज्ञानी, सात की संख्या ।

प्रा० मुनिघरनी (सं० मुनिगृहिणी) स्त्री० मुनि की स्त्री ।

प्रा० मुनिन्द (सं० मुनीन्द्र) पु०

बड़ा ऋषि, श्रेष्ठ मुनि, मुनीश, ऋषिराज ।

सं० मुनिपट पु० वस्त्रकल, भोजपत्र ।

सं० मुनिपुंगव (मुनि=ऋषि, पुंगव=श्रेष्ठ) पु० मुनियों में श्रेष्ठ, मुनिवर, मुनिनायक ।

सं० मुनिराज } (मुनि + राजा)
प्रा० मुनिराय } पु० प्रधान ऋषि, मुनीश ।

प्रा० मुनिन्दा } (मुनि = ऋषि,
सं० मुनीन्द्र } इन्द्र वा ईश=स्वामुनीश } मी) पु० मुनिवर, ऋषिराज, मुनिन्द, बड़ा ऋषि ।

प्रा० मुन्दना (सं० मुद्रण) क्रि० अ० बन्द होना, मिचना, ढकना ।

सं० मुन्यन्न (मुनि + अन्न) पु० नीवार, तिन्नी का चावल ।

सं० मुमुक्षु क० पु० मुक्ति इच्छुक, मुक्ति चाहनेवाला ।

सं० मुमूर्षु क० पु० मृतप्राय, आसन्नमृत्यु, मरणाशंकी, करीबुल्मर्ग ।

सं० मुर (मुर=घेस्ना) पु० एक राक्षस का नाम जिसके पाँच शिर थे उसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

प्रा० मुरई (सं० मूल) स्त्री० मूली ।

प्रा० मुरकी स्त्री० कान का एक गहना ।

प्रा० मुरचंग स्त्री० एक तरह का बाजा ।

प्रा० मुरभाना (सं० मूर्च्छन

मूर्ख=मुरझाना) क्रि० अ० सूख
जाना, कुम्हिलाना ।
सं० मुरली (मुर=धेरना, और
ला=लेना) स्त्री० वंशी, बाँसुरी ।
सं० मुरलीधर (मुरली=वंशी, धर
=रखनेवाला, धृ=रखना) क०
पु० श्रीकृष्ण, वंशीधर ।
सं० मुरारि (मुर + अरि) पु०
विष्णु, श्रीकृष्ण ।
प्रा० मुरा पु० ब्रह्मंदर, पटाखा ।
प्रा० मुलतानी स्त्री० एक रागिनी
का नाम, गु० मुलतान की (जैसे
मुलतानी मिट्टी) ।
प्रा० मुलहट्टी (मूल) स्त्री० जेठी-
मधु ।
प्रा० मुलाई (मुलाना) स्त्री०
अँकाव, कूत, निरख ।
प्रा० मुलाना (सं० मूल्य) क्रि०
स० मोल करना, भाव ठहराना,
अँकना ।
प्रा० मुश्केंबाँधना { बोल० हाथपीठ
मुश्केंचढ़ाना } पीछे बाँधना,
जकड़ना ।
सं० मुष्क पु० वृषण, अण्डकोश,
फोता, २ चोर, ३ समूह, ४ कस्तूरी,
५ स्थूल, मोटा ।
सं० मुष्ट र्म० पु० हत, चोरित,
चोरी, चौरकर्म ।
सं० मुष्टि (मुष्=लेना, या मारना
जिससे) स्त्री० मुट्टी, मुक्की, मुठी ।

प्रा० मुसकान (मुसकाना) स्त्री०
मुसकुराहट, मुसकुराई, धीरे धीरे
हँसना ।
प्रा० मुसकाना क्रि० अ० मुसकुराना,
धीरे धीरे हँसना ।
सं० मुसल (मुस्=टुकड़े २ करना)
मूसल) पु० चाँवल आदि
नाज कूटने का सोंटा ।
अ० मुसलमान पु० मुहम्मद का
मत माननेवाला ।
सं० मुसली क० पु० बलभद्र ।
फ्रा० मुस्ताजिरी पु० ठेका ।
अ० मुहल्ला नगरशाखा, शहरका
हिस्सा ।
प्रा० मुहाना (मुँह) पु० नदी का मुँह ।
सं० मुहिर (मुह् + इर, मुह=मो-
हना) पु० कामदेव, मूर्ख, खलवाट,
बरमुड़ा, गंजा ।
सं० मुहुर्मुहुः अव्य० पुनः पुनः
बारंवार ।
सं० मुहूर्त्त (मुहुर्=बारवार) पु०
दोघड़ी, दिनरातका तीसवाँ भाग,
४८ मिनट का समय ।
प्रा० मूँगा (सं० मुद्र, मुद्=प्रसन्न
होना) पु० एक तरहका अनाज
जिसकी दाल बनती है ।
प्रा० मूँगा पु० एक चीज जो समुद्रमें
मिलती है और जिसकी माला बनती
है और उसको नवरत्नों में एक रत्न
गिनते हैं जिसको संस्कृत में विद्रुम

और मवाल कहते हैं ।

प्रा० मूँगिया (मूँगा) पु० मूँगा
के ऐसा रंग ।

प्रा० मूँछ स्त्री० होठ पर के बाल, मोछ ।

प्रा० मूँज (सं० मुञ्ज) स्त्री० एक
तरहकी घास के झिलके जिनकी
रस्सी बनती है ।

प्रा० मूँड़ { (सं० मुण्ड) पु० माथा,
मूँड़ } शिर, मस्तक, कपाल ।

प्रा० मूँड़फिकारना बोल० शिर
नंगा करना ।

प्रा० मूँड़ना (सं० मुण्डन) क्रि०
स० बाल काटना या कतरना,
हजामत करना, २ चेला करना,
शिष्य बनाना, ३ फुसलाना, ठग-
ना, उलटे उस्तरे से मूँड़ना,
बोल० किसी को ठगना, छलना,
धोखा देना ।

प्रा० मूँड़ी (सं० मुण्ड) स्त्री० शिर ।

प्रा० मूँदना (मुँदना) क्रि० स०
बंद करना, मीचना, ढकना ।

प्रा० मूँदरी (सं० मुद्री वा मुद्रिका)
स्त्री० अँगूठी, छल्ला, मुँदरी ।

सं० मूक (मू=बन्ध होना) गु० गूँगा
जो नहीं बोल सका हो, अवाक्,
मौन, पु० मत्स्य, दैत्य, दीन, प्रेत ।

प्रा० मूकना (सं० मुच्=छोड़ना,
वा मू=बध करना) क्रि० स०
छोड़ना, त्यागना, जैसे रामायण
में 'जीवन आश दशानन मूकी ।'

प्रा० मूकी (सं० मुष्टि) स्त्री०
मुकी, मुट्टी ।

प्रा० मूछ स्त्री० मूँछ, मोँछ, होठ पर
के बाल ।

प्रा० मूठ (सं० मुष्टि) स्त्री० बेट, कबजा,
दस्ता, २ मुकी, मुट्टी, मुट्ठीभर ।

प्रा० मूठा (सं० मुष्टि) पु० भरमूठ,
हाथभर, मुका, २ कबजा ।

प्रा० मूठी (सं० मुष्टि) स्त्री० मुकी,
मुट्टी, घूँसा, मूका, मुकी ।

सं० मूढ़ (मुद्=अचेत होना वा
अज्ञानी होना) क० पु० मूर्ख,
अनपढ़, अज्ञानी ।

प्रा० मूत (सं० मूत्र, मूत्र=मूतना)
पु० पेशाब, लघुशङ्का ।

सं० मूत्रकृच्छ्र पु० अश्वरीरोग,
पथरी रोग, मूत का बन्द होना ।

प्रा० मूर { (सं० मूल) पु० जड़ ।
मूरि }

प्रा० मूरख (सं० मूर्ख) गु० अ-
ज्ञानी, अनाड़ी, मूढ़, बेवकूफ ।

प्रा० मूरत (सं० मूर्ति) स्त्री० पत्थर
अथवा लकड़ी की बनी हुई मूरत,
प्रतिमा, पुतली, २ आदमी, जैसे
साधु या बैरागियों में बोला जाता
है कि 'कितनी मूरत हैं' अर्थात्
कितने आदमी हैं ।

सं० मूर्ख (मुद्=अज्ञानी होना) गु०
अज्ञानी, अनाड़ी, मूर्ख, बेवकूफ ।

सं० मूर्च्छा (मूर्च्=अचेत होना)

भा० स्त्री० भँव, गश, बेहोशी,
मोह, अचेत होना ।
सं० मूर्च्छित (मूर्च्छा) गु० अचेत,
बेसुध, बेहोश, मोहित ।
सं० मूर्त्ति (मूर्च्छ=मोहित होना
जिसको देखने से) स्त्री० मूर्त,
मूर्त, पुतली, प्रतिमा ।
सं० मूर्द्धन्य (मूर्द्धन=शिर) गु०
शिरका, शिरसम्बन्धी, (बे अक्षर)
जो तालू से ऊपर जीभ लगाने
से बोले जायँ, जैसे ' ऋ-ऋ-ट-
ठ-ड-ड-ण-र-ष ' ।
सं० मूर्द्धा (मुर्व=बाँधना या मुह=
अचेत होना-अर्थात् जिसमें चोट
लगने से आदमी अचेत होजाता
है) पु० शिर, मस्तक, माथा,
शीश, कपाल ।
सं० मूल (मूल=ठहराना या जमाना,
रोपना या मू=बाँधना) पु० जड़,
असल, २ वंश, कुल, सन्तान, ३
असल धन, पूँजी, ४ मूलग्रन्थ,
किसी पुस्तक का सूत्र अथवा
श्लोक (पर टीका नहीं), ५
उन्नीसवाँ नक्षत्र ।
सं० मूलक (मूल=जमाना, रोपना)
पु० मूली, मुर्ई ।
सं० मूलकारिका स्त्री० महानस,
रसोई, चूहा, चूल्ही ।
सं० मूलधन पु० मूलद्रव्य, असल
पूँजी ।

सं० मूलभूत पु० जड़, असलियत ।
सं० मूल्य (मूल) पु० मोल, कीमत,
भाव, निरख, दर, दाम ।
सं० मूष } (मूष=चुराना) क० पु०
मूषक } मूसा, चूहा, २ चौर ।
मूषिक }
सं० मूषिका क० स्त्री० मुसरिया ।
प्रा० मूसना (सं० मुष्=चुराना)
क्रि० स० चुराना, खोसना, लूटना ।
प्रा० मूसला (सं० मुस्=टुकड़े टुकड़े
करना) पु० असल जड़ ।
प्रा० मूसलाधारधरसना बोल०
बहुत जोर से मेह बरसना ।
प्रा० मूसा (सं० मूषक) पु० चूहा ।
सं० मृग (मृग्=खोजना) पु० पशु-
मात्र, सब चौपाये जानवर, २
हरिण, कुरंग, ३ हाथी, ४ पाँचवाँ
नक्षत्र, ५ खोजना ।
प्रा० मृगछाला (मृग=हरिण, छाला
=चमड़ा) स्त्री० हरिण का चमड़ा,
हरिण की खाल ।
सं० मृगणा भा० स्त्री० अपहृत द्रव्य
का अन्वेषण, जातीरही द्रव्य का
खोजना, पता लगाना ।
सं० मृगतृषा } (मृग=पशु, तृषा
मृगतृष्णा } व तृष्णा और तृ-
मृगतृष्णिका } ष्णिका=प्यास)
स्त्री० एक तरह की भाफ जो रेत
के मैदानों में बाखू रेत के कणों
पर पड़ती है तब दूर से पानी के

ऐसी जानी जाती है । अथवा
रेतले देशों में बालू के कणों पर
सूर्य की किरण के पड़ने से दूर
से पानी ऐसी दिखाई देती है तब
प्यासे हरिण उस ओर पानी के
लिये जाते हैं पर पानी न पाकर
उलटे फिर आते हैं इसलिये ऐसा
नाम पड़ा, आबसुराव ।

सं० मृगनयनी (मृग=हरिण, नयन
=आँख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिस
की आँखें हरिणी कीसी हों, सु-
न्दर स्त्री, रूपवती ।

सं० मृगनाभि (मृग=हरिण, नाभि=
नाभ में पैदा हुई चीज) स्त्री०
कस्तूरी, मृगमद ।

सं० मृगपति (मृग+पति) पु०
पशुओं का राजा, सिंह, शेर ।

सं० मृगमद (मृग=हरिण, मद=
धमंद, अर्थात् जिससे हरिण को
धमंद रहता है) पु० कस्तूरी ।

सं० मृगया (मृग=खोजने को, या
=जाना) स्त्री० शिकार, अहेर ।

सं० मृगयु क० पु० व्याध, शिकारी ।

सं० मृगराज (मृग+राजा) पु०
पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृगलोचनी (मृग=हरिण,
लोचन=आँख) गु० स्त्री० वह
स्त्री जिसकी आँखें हरिण की सी
हों, मृगनयनी ।

सं० मृगशिरा (मृग=हरिण, शि-

रस्=शिर अर्थात् जिसका आकार
हरिण के शिर ऐसा है) पु० एक
नक्षत्र का नाम ।

सं० मृगाङ्ग (मृग=हरिण, अङ्ग=
चिह्न, अर्थात् जिसमें हरिण के
ऐसा चिह्न हो) पु० चाँद, चन्द्रमा ।

सं० मृगित (मृग+इत, मृग=खो-
जना) र्म० पु० अन्वेषित, दर्शित ।

सं० मृगी (मृग) स्त्री० हरिणी ।

सं० मृगेन्द्र (मृग+इन्द्र) पु० प-
शुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृग्य र्म० पु० अन्वेषणीय,
दर्शनीय या ढूँढ़ने लायक ।

सं० मृजा (मृज्=शुद्ध करना, माँ-
जना) भा० स्त्री० मार्जन, माँजना ।

सं० मृङ्ग (मृङ्ग=प्रसन्न करना) पु०
शिव, स्त्री० मृङ्गानी, पार्वती ।

सं० मृण (मृण्=मारना) पु० क्रेश,
शोक, २ मिट्टी, गु० क्रेशद ।

सं० मृणाल (मृण्=नाश करना)
पु० कमलनाल, कमल की जड़
व भसीड़ा ।

सं० मृत (मृ=मरना) र्म० पु०
मरा हुआ, मुआ, मरा, मुर्दार,
पु० मरण, मरना, मौत ।

सं० मृतक (मृ=मरना) क० पु० मुर्दा,
मरा, लोथ, मरा हुआ शरीर ।

सं० मृतसंजीवनी स्त्री० विद्याभेद,
औषधभेद ।

सं० मृत्तिका (मृद्=चूर चूर करना

वा मलना) स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।
 सं० मृत्यु (मृ=मरना) स्त्री० मौत,
 मरण, काल, २ यम, जम, कजा ।
 सं० मृत्युञ्जय (मृत्यु=मौत को,
 जय=जीतनेवाला, जि=जीतना)
 पु० शिव, महादेव ।
 सं० मृत्युनाशक क० पु० अमृत,
 पारा धातु का रस ।
 सं० मृत्युपुष्प पु० इक्षु, ऊँख, गन्ना
 फूलने से खराब जाता है ।
 सं० मृतसा { स्त्री० प्रशस्तमृत्तिका,
 मृत्स्ना { श्रेष्ठ मिट्टी, २ तुम्बी,
 लौकी ।
 सं० मृदङ्ग (मृद्=पीटना) पु०
 स्त्री० ढोलक, तबलक, एक तरह
 का बाजा, पटह ।
 सं० मृदु (मृदु=मलना) गु० को-
 मल, नर्म, नम्र, मुलायम ।
 सं० मृदुता (मृद्) भा० स्त्री० कोम-
 लता, नरमाई, मुलायमियत ।
 सं० मृदुल (मृद्=मलना) गु०
 कोमल, नर्म, नम्र ।
 सं० मृषा (मृष=सहना) क्रि० वि०
 झूठ, मिथ्या, वृथा, झूठ मूठ,
 बेफायदह ।
 सं० मृष्ट शोभित, निर्मल, साफ ।
 प्रा० मेंड स्त्री० बाँध, आड़, घेरा,
 पुस्ता ।
 प्रा० मेंडक (सं० मण्डक) पु०
 दादुर, बैंग ।

प्रा० मेंडुकी को जुकाम होना
 बोल० यह बोलचाल छोटे और
 नीचे आदमी का घमंड जतलाने
 के लिये बोला जाता है ।
 प्रा० मेंड़ा { (सं० मेण्ड वा मेद्, मिह=
 मेंड़ा { सींचना) पु० मेंड़ा, मेघ ।
 प्रा० मेंह { (सं० मेघ) पु० वर्षा,
 मेंह { पानी, झड़ी, वृष्टि,
 बरसात ।
 सं० मेकलकन्यका { (मेकल=एक
 मेकलसुता { पहाड़, क-
 न्यका वा सुता=बेटी) स्त्री०
 नर्मदा नदी ।
 सं० मेखला (मि=फेंकना) स्त्री०
 क्षुद्रघण्टिका, करधनी, २ जनेऊ,
 ३ तलवार का परतला, ४ पहाड़
 का उतार या ढाल, ५ नर्मदा नदी ।
 सं० मेघ (मिह=सींचना) पु० बा-
 दल, घन, २ एक राक्षस का
 नाम, ३ एक राग का नाम ।
 सं० मेघध्वनि (मेघ + ध्वनि)
 स्त्री० बादलों का शब्द, गर्ज,
 गाज, बादलों का सा शब्द ।
 सं० मेघनाद (मेघ + नाद, अर्थात्
 जिसका शब्द बादल कासा हो)
 पु० रावण का बेटा, इन्द्रजित्, २
 बादलों का शब्द, ३ पलाश का
 पेड़, ४ वरुणदेवता ।
 प्रा० मेघपति (मेघ + पति) पु०
 बादलों का राजा, इन्द्र ।

प्रा० मेघबरण (सं० मेघवर्ण, मेघ
=बादल, वर्ण=रंग) गु० जिस
का रंग बादलों कासा हो ।

सं० मेघमाला (मेघ + माला)
स्त्री० बादलों का समूह ।

सं० मेघक (मेघ=पाखण्ड करना)
गु० काला, श्याम, पु० श्यामवर्ण,
कालारंग, २ मेघ, ३ सुरमा, अञ्जन,
४ धुआँ, ५ अँधेरा, अन्धकार ।

प्रा० मेघकताई (सं० मेघकता)
भा० स्त्री० कालापन, कलास,
श्यामता ।

सं० मेढ पु० गर्व, उन्मत्तता ।

अं० मेढ पु० कुलियोंका सर्दार ।

प्रा० मेढना (मिटना) क्रि० सं०
मिटा डालना, थो डालना, झील
डालना, उड़ा देना, मलमेढकरना,
नष्ट करना, सत्यानाश करना,
लोप करना, काट डालना ।

अं० मेट्रीक्युलेशन पु० इन्ट्रन्स का
इम्तिहान ।

सं० मेढ्र (मिह=सींचना) पु० मेघ,
२ बकरा, भेड़ा, ३ लिङ्ग ।

सं० मेथी (मेथ=काटना) स्त्री०
एक सागका नाम ।

प्रा० मेद (सं० मेदस्, मेद=मारना)
स्त्री० गूदा, मज्जा, वसा, चर्बी,
२ एक बीमारी जिसमें गले का
अथवा और किसी जगह का मांस
बहुत मोटा होकर लटक जाता

है या एक गाठ सी होजाती है ।

सं० मेदिनी (मेदस्=मेद, अर्थात्
जो मधु-कैटभके मेद से बनी हुई है
इसीसे इसका नाम 'मेदिनी' हुआ)
स्त्री० धरती, पृथ्वी, भूमि, जमीन ।

सं० मेदुर (मिह् + उर) गु० बहुत
स्निग्ध, २ सान्द्र, सघन, निबिड़,
घना, आच्छन्न, ढपा हुआ, ३
शीतल ।

सं० मेध (मेध=मारना) पु० यज्ञ,
बलिदान ।

सं० मेधा (मेध=समझना) स्त्री०
धारणावती बुद्धि, समझ, बूझ ।

सं० मेधावी (मेधा) पु० बुद्धिमान,
पण्डित, निपुण ।

सं० मेध्य गु० पवित्र, पूत, पु० २
बकरा, ३ खैर, ४ जौ, ५ हल्दी,
६ गोरोचन ।

प्रा० मेमना पु० बकरी का बच्चा ।

अं० मेमोरियल गु० याददाश्त,
अर्जदाश्त, स्मारक ।

सं० मेरु (मि=फैंकना, अर्थात् प्र-
काश को फैलाना) पु० सुमेरु
पहाड़ जो हिन्दुओंके मत के अनु-
सार धरती के बीच में है ।

सं० मेल (मिल=मिलना) पु० मि-
लाप, एका, मिलना, संयोग,
सम्बन्ध ।

सं० मेलक क० पु० मेलकर्ता ।

सं० मेला (मिज=मिलना) पु०

किसी जगह पर बहुत से आद-
मियों का इकट्ठा होना ।

प्रा० मेलाठेला बोल० बहुतसे आद-
मियों का इकट्ठा होना, भीड़
भाड़, रौला ।

सं० मेली (मेल) क० पु० मिलापी,
साथी, साथी, २ डालदी, पहराई ।

प्रा० मेवाती पु० मेवात का रहने
वाला ।

सं० मेष (मिष्=सींचना) पु० मेढ़ा,
२ पहली राशि ।

फ्रा० मेहतर पु० भंगी, भाड़कश,
गु० बुजुर्ग ।

फ्रा० मेहतारानी स्त्री० भंगन, २
भठियारी ।

सं० मेहन (मिह + अन, मिह=
सींचना) भा० पु० लिङ्ग, शिश्न,
मूत्रेन्द्रिय, २ वीर्यपात, मनीका गिर
जाना, पेशाब करना ।

प्रा० मेहना पु० ठठोली, ताना ।

प्रा० मेहनामारना बोल० ताना देना,
बोल बोलना ।

प्रा० मेहरिया मनहरिया ।

प्रा० मैका (मायका) पु० मा का
घर, नहिहर, पीहर ।

सं० मैत्र पु० मित्रता, २ अनुराधा
नक्षत्र, १ शौचक्रिया, गु० सफाई ।

सं० मैत्री (मित्र) स्त्री० मित्राई,
दोस्ती, प्यार, स्नेह ।

सं० मैथिली (मिथिला) स्त्री०

तिरहुत के राजा जनक की बेटी,
सीता, जानकी ।

सं० मैथुन (मिथुन=जोड़ा) पु०
स्त्री पुरुष का मिलाप, रति, संगम,
स्त्रीसंग, इमागोशी ।

प्रा० मैना स्त्री० एक पखेरू का नाम,
शारिका, २ पार्वती की माता ।

सं० मैनाक (मेनका=हिमालय प-
हाड़ की स्त्री) पु० हिमालय पहाड़
का बेटा, एक पहाड़ का नाम जो
इन्द्र के डर से समुद्र में जारहा था
(इसकी कथा रामायण में है) ।

प्रा० मैया (सं० माता) स्त्री० मा,
माई, महतारी, माता ।

प्रा० मैल (सं० मल) पु० मल,
भाग, गाज, २ मुर्चा ।

प्रा० मैला (सं० मलिन) गु० गँदला,
गंदा, अशुद्ध, अपवित्र, खराब ।

प्रा० मो सर्वना० मुझको, मुझे ।

सं० मोक्ष (मोक्ष=छूटजाना या
मुक्तिपाना) स्त्री० मुक्ति, छुटकारा,
संसार के दुःख से अथवा पापसे
छूटजाना ।

प्रा० मोखा (मुख=मुँह) पु० एक
छोटा छेद जिसकी राह से धुआँ
निकलता है और रोशनी और
हवा आती है ।

प्रा० मोगरा (सं० मुद्गर, पुद्=
खुशी, गु=निकालना) पु० एकतरह
का फूल, नीलोफर, कुयोदनी ।

प्रा० मोगरी (सं० मुद्गर) स्त्री०
एक लकड़ी की बनी हुई भारी
चीज जिसको कसरत करनेवाला
उठाता है, २ छत या कपड़ा कू-
टने की लकड़ी ।

सं० मोघ (मुद्=अचेत होना) गु०
वृथा, बेफायदा, निष्फल, झूठ ।

प्रा० मोच स्त्री० लचक, कचक, मचक ।

सं० मोचन (मुच्=झोड़ना) भा०
पु० छुटकारा, छुड़ाना, उद्धार,
मुक्ति, क० पु० छुड़ानेवाला ।

प्रा० मोचना (सं० मोचन) क्रि० स०
झोड़ना, त्यागना, २ आँसू डालना ।

प्रा० मोची पु० जूता बनानेवाला,
चमार ।

प्रा० मोट { स्त्री० गठरी, बस्ता,
मोट { मोटरी, पुलिंदा, गद्दा,
बोभा, २ जोड़, कुलजमा, ३ पानी
निकालने का चमड़े का ढोल ।

प्रा० मोटा गु० स्थूल, पुष्ट, जिसके
शरीर में बहुत मांस हो, भारी,
बड़ा, २ गाढ़ा ।

प्रा० मोटिया पु० बोभा होने
वाला, कुली ।

प्रा० मोठ पु० एकतरहका अनाज जिस
की दाल बनती है, योड़ोंका दाना ।

प्रा० मोतिया पु० एक फूलका नाम ।

प्रा० मोतियाबिन्द (सं० मुक्ता-
बिन्दु) पु० आँख की एक बीमारी
जिसके होने से दिखाई नहीं देता ।

प्रा० मोती (सं० मौक्तिक) पु० एक रत्न
जो समुद्र में सीपी के मुँह में पैदा
होता है ।

प्रा० मोतीकीसी आब उतरना ।
बोल० बेइज्जत होना, किसी का
अपमान होना, अनादर होना ।

प्रा० मोतीकूटकर भरने बोल० खूब
चमकीला होना, (यह मुहावरा
आँख के लिये बोला जाता है) ।

प्रा० मोतीपिरोने बोल० माला
गूँथना, २ मिठास के साथ बोलना,
३ रोना ।

प्रा० मोतीचूर पु० एक तरह की
मिठाई ।

सं० मोद (मुद्=प्रसन्न होना) पु०
आनन्द, हर्ष, खुशी ।

सं० मोदक (मुद्=प्रसन्न होना)
क० पु० आनन्द करनेवाला, २ एक
प्रकार का लड्डू ।

सं० मोदी क० पु० धनियाँ, दूकान-
दार, बैमारी, महाजन, आनन्द
करनेवाला ।

प्रा० मोर (सं० मयूर) पु० एक
पखेरूका नाम ।

प्रा० मोरपंखी स्त्री० एक तरह की
नाव, बजरा ।

प्रा० मोरमुकुट पु० मोर के ऐसा
मुकुट, मोरपंख का मुकुट ।

प्रा० मोर { सर्वना० मेरा ।
मोरा {

प्रा० मोरचंग स्त्री० एकबाजे का नाम ।

प्रा० मोरछल पु० एक तरह का चँवर जो मोरके पंखों का बनता है ।

प्रा० मोरी स्त्री० नाली, पनाली ।

प्रा० मोल (सं० मूल्य) पु० भाव, क्रीमत, दाम—मोल ठहराना, बोल० क्रीमत लगाना, निरख ठहराना, दाम ठहराना, मोल तोल, बोल० भाव, निरख, क्रीमत—मोल बढ़ाना, बोल० क्रीमत चढ़ाना, भावबढ़ाना—मोल लेना, बोल० बिसाहना, खरीदना—बिन मोल की चेरी, बोल० बेमोल ली हुई दासी, (यह बोल० बहुतही अधीनी जतलाने के लिये बोला जाता है) ।

सं० मोह (मुह्=अचेत या अज्ञानी होना) पु० मूर्च्छा, बेहोशी, गशी, २ अज्ञानता, अविद्या, बेवकूफी, ३ प्यार, माया, दया, दुलार, लाड़, स्नेह, छोट ।

प्रा० मोहमें आना बोल० अपने मित्र अथवा अपनी प्यारी के अचानक मिलने से अचेत होजाना ।

प्रा० मोहलेना बोल० रिझाना, किसी का मन अपनी ओर खींच लेना, लुभाना, वश करना, मन्त्र फूंकना ।

सं० मोहन (मुह्=मोहना) गु० मोहनेवाला, जिसके देखने से शरीर की सुधि न रहे, मनमाना, प्यारा, पु० श्रीकृष्ण का नाम,

२ मोहना, वश करना ।

सं० मोहनभोग (मोहन=मनमाना, भोग=खाना) पु० शीरा, उत्तम भोजन ।

सं० मोहनमाला (मोहन + माला) स्त्री० एक तरह की माला जो सोनेके दाने और मूँगे की बनती है ।

प्रा० मोहना (सं० मोहन) क्रि० स० वशकरना, मन हरना, लुभाना, मन्त्र फूंकना, प्रसन्न करना ।

सं० मोहनी (मोहन) क० स्त्री० मन, हरनेवाली स्त्री, मोहनेवाली, रूपवती, मनोहर, सुन्दर ।

सं० मोहमय गु० मिथ्या व भ्रूट ।

प्रा० मोहि सर्वना० मुझको, मुझे ।

सं० मोही क० पु० मुग्ध, अवाच्य ।

प्रा० मौ (सं० मधु) पु० शहद, मधु ।

सं० मौक्तिक (मुक्ता) पु० मोती ।

सं० मौज्जी स्त्री० मूँज की करधनी, मेखला ।

प्रा० मौड़ (सं० मौलि) पु० सिहरा, मुकुट, मौर जो दुलहा के शिर पर बाँधा जाता है ।

सं० मौन (मुनि) पु० चुप, चुप्पी, अवाक्, नहीं बोलना, स्मृति में लिखा है कि (१ पाखाने जाते, २ पेशाब करते, ३ स्त्रीप्रसंग करते, ४ दैतवनकरते, ५ स्नानकरते, ६ खाना खाते) इन छः जगह मौन रहना चाहिये ।

सं० मौनी (मौन) पु० एकतरह के मुनि
जो सदा चुप रहते हैं, ऋषि, योगी ।
प्रा० मौर पु० आम की मञ्जरी ।
प्रा० मौराना क्रि० अ० आम के
मौर का खिलना ।
सं० मौर्वी स्त्री० ज्या, रोदा, धनुष
की डोरी, चिल्ला ।
प्रा० मौलसरी स्त्री० एक तरह के
खुशबूदार फूल के पेड़ का नाम ।
सं० मौलि (मूल) पु० किरीट,
मुकुट, २ शिखा, चोटी, ३ शिर, ४
स्त्री० धरती, पृथ्वी ।
प्रा० मौसी स्त्री० मां की बहिन,
(मौसी शब्द को देखो) ।
सं० म्लान क० पु० म्लानियुक्त,
उदासीन, लज्जित, मलीन, शुष्क,
मुरझाया ।
सं० म्लानि (म्लै=उदास होना, वा
मुरझाना) स्त्री० थकावट, थकान,
२ मलिनता, मैलापन, ३ कुम्ह-
लाना, मुरझाना, उदास होना ।
सं० म्लिष्ट गु० मलीन, म्लानियुक्त,
पु० अव्यक्तवचन, गद्गदवाक् ।
सं० म्लेच्छ (म्लेच्छ=अशुद्ध वा
बुरा बोलना या गँवारु बोली बो-
लना) पु० नीचजाति, वे लोग
जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और
न वे हिन्दुओं के शास्त्र को मानते
हैं, यह शब्द जंगलियों और दूसरी
विलायत के लोगों के लिये बोला

जाता है, २ पापी ।

य

सं० य (य=जाना) पु० हवा, ३
यश, कीर्ति, ३ मेल, योग, ४
सवारी, ५ गति गु० जानेवाला ।
सं० यकृत् पु० उदररोग, तापतिल्ली,
ह्रीहा, पिल्ली रोग ।
सं० यक्ष (यक्ष=पूजना) पु० गुह्यक
देवता, कुबेर के नौकर ।
सं० यक्ष्मन् (क्षयीरोग, राजरोग,
यक्ष्मा) तपेदिक ।
सं० यजन (यज्=पूजना) भा०
पु० यज्ञ, पूजा ।
सं० यजमान (यज्=पूजना, या
यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करने
वाला, यजमान ।
सं० यजुः (यज्=पूजना) ण० पु०
यजुर्वेद, दूसरा वेद ।
सं० यज्ञ (यज्=पूजना) पु० बलि-
दान, पूजा, होम, हवन, याग, २
विष्णु भगवान् ।
सं० यज्ञसूत्र (यज्ञ + सूत्र) पु०
जनेऊ ।
सं० यज्ञोपवीत (यज्ञ + उपवीत)
पु० जनेऊ ।
सं० यत् अव्य० जो, जितना ।
सं० यज्वा (यज्=पूजना) क० पु०
विधान से यज्ञ करनेवाला ।
सं० यतः अव्य० क्योंकि, यस्मात् ।
प्रा० यतन (सं० यत्) पु० यतन,

उपाय, तदबीर, हिकमत ।

सं० यति { (यत्=यतन करना
यती { मुक्ति के लिये) पु०
संन्यासी, वैरागी, जैनियों का
भिखारी ।

सं० यन्ता { क० पु० सारथी, सूत,
यन्तार { रथ हाँकनेवाला ।

सं० यत्न (यत्=यतन करना) पु०
यतन, उपाय, उद्योग, कोशिश,
मिहनत, सावधानी ।

सं० यन्त्रिज मर्म० पु० बद्ध, कैद ।

सं० यत्र (यद्=जो) क्रि० वि०
जहाँ, जिस जगह ।

सं० यथा (यद्=जो) क्रि० वि०
जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों, जिस
रीति से, २ बराबर, तुल्य ।

सं० यथाकाम क्रि० वि० यथेच्छ,
२ अभिलाषा से अधिक ।

सं० यथायोग्य (यथा=जैसा,
योग्य=ठीक) क्रि० वि० जैसा
चाहिये, जैसा ठीक है, जैसा
उचित, यथोचित ।

सं० यथार्थ (यथा=जैसा, अर्थ=
अभिप्राय, मतलब) गु० ठीक,
सत्य, सच, क्रि० वि० ठीक ठीक,
हकीकतन्, जैसा चाहिये ।

सं० यथाशक्ति (यथा=जैसी या
अनुसार, शक्ति=बल) क्रि० वि०
जैसी सामर्थ्य हो, अपने बलके
अनुसार, जितना हो सके, हतुन्-

इम्कान ।

सं० यथासाध्य क्रि० वि० इच्छा-
पूर्वक, हतुल्इम्कान ।

सं० यथेच्छा { क्रि० वि० इच्छानु-
यथेच्छ { सार, दिलवाह ।

सं० यथेच्छाचारिता स्त्री० इच्छा-
नुसार, मर्जीके मुवाफिक ।

सं० यथेप्सित क्रि० वि० यथेच्छ,
इच्छानुसार, मनचाहा, हस्बदि-
लवाह ।

सं० यथोचित (यथा + उचित)
क्रि० वि० जैसा चाहिये, यथायोग्य ।

प्रा० यदपि (सं० यद्यपि) समुच्च०
जो भी, जो ।

सं० यदा (यद्=जो) क्रि० वि०
जब, जिस समय ।

सं० यदि (यद्=जो) क्रि० वि० जो ।

सं० यदु पु० एक राजा का नाम जो
राजा ययाति का बड़ा बेटा और
श्रीकृष्ण का पुरुषा और चन्द्रवंशी
राजाओं में पाँचवां राजा था ।

सं० यदुकुल (यदु + कुल) पु०
यदु राजा का घराना, यदुवंश ।

सं० यदुनाथ { (यदु=यदुवंशियों
यदुपति { का नाथ या प्रति=
मालिक) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० यदुवंश (यदु + वंश) पु०
यदुकुल, यदु राजा का घराना ।

सं० यदुवंशी (यदुवंश) पु० यदु
के वंशके लोग, यादव ।

सं० यदृच्छा (यत् + ऋच्छ + आ)

स्त्री० स्वातन्त्र्य, खुदराय ।

सं० यद्यपि (यदि=जो, अपि=भी)

समुच्च० जोभी, यद्यपि ।

सं० यद्वा अव्य० पक्षान्तर बोधक, ज्यों ।

सं० यन्त्र (यत्रि, या यम्=रोकना)

कल, हर एक तरह का औ-
जार या हथियार, २ बाजा, ३
तन्त्रशास्त्र में अपने इष्ट देवता का
चक्र, ४ टोटका, यन्त्र, मन्त्र, ताला,
कुफल ।

सं० यन्त्रणा (यत्रि=रोकना या

यम्=दण्डदेना) स्त्री० दुःख, पीड़ा,
क्लेश ।

सं० यन्त्रस्थ गु० जेरतबन्ध जो
बध रहा हो, मुद्रित हो रहा ।

सं० यन्त्रिका (यत्रि=रोकना,
बन्द करना) पु० ताला, कुफल ।

सं० यन्त्रित (यत्रि=रोकना) र्भ्य०
पु० रोका हुआ, बन्ध किया हुआ,
मुकैयद ।

सं० यम (यम्=रोकना, दण्डदेना,
वश करना या दबाना) पु०
यमराज, धर्मराज, दक्षिणदिशा
का दिक्पाल, काल, २ इन्द्रियों
को रोकना, गु० जोड़ा ।

सं० यमक (यम्=मिलना) पु०
जोड़ा, २ एक शब्दालंकार जहाँ
एकही शब्द दो तीन बार आते हैं
पर वहाँ उस पद का अर्थ हर एक

जगह जुदा २ होता है ।

प्रा० यमगुफा (सं० यमगुहा) स्त्री०

मौत का घर, काल की गुफा ।

सं० यमज (यम=जोड़ा, ज=पैदा)

पु० जो दो लड़के एक साथ जन्मे
हों, तौत्रम ।

सं० यमदग्नि पु० परशुराम जी
का बाप ।

प्रा० यमदिया (सं० यमदीपक)

पु० वह दीपक जो कार्तिकवदी
१ ३ के दिन यम के नाम से जलाया
जाता है ।

सं० यमदूत (यम + दूत) पु० यम
के दूत ।

सं० यमधार (यम + धार) स्त्री०
कटार, छुरा, तेंगा, तलवार ।

सं० यमल (यम=जोड़ा, ला=लेना)
पु० जोड़ा ।

सं० यमलार्जुन (यमल=जोड़ा,
अर्जुन एक प्रकार का पेड़) पु०
एक तरह के दो पेड़ जो वृन्दावन
में थे कुबेर के दो लड़के जो वारुणी
मदिरा को पीकर गङ्गा में वेश्याओं
के साथ नग्नस्नान करते थे
नारद के शाप से वृक्ष होगये थे
कृष्ण जी महाराज ने उनको
वृक्षत्व से मुक्त किया ।

सं० यमुना (यम) स्त्री० यमुना
नदी जो यमराज की बहिन और
सूर्य की बेटी है ।

सं० ययाति (य=हवा, या=जाना जो हवा की तरह सब जगह जासका हो) पु० नहुष राजा का बेटा ।
 सं० यव (यु=मिलना) पु० जौ, एक तरह का अनाज, २ वेग, तेजी ।
 सं० यवन (यु=मिलना, वा जु= उतावला होना) पु० पहले समय में यूनान या (आयोनिया) के रहने वालों को यवन कहते थे पर अब मुसलमान और फरंगी आदि सब विदेशियों को यवन कहते हैं, म्लेच्छ, मलेच्छ ।
 सं० यवीयान् { गु० अतियुवा, यविष्ठ } अतिशीघ्रगामी, तेजरी ।
 सं० यश (यशस्, अश=फैलना) पु० कीर्ति, नामवरी, नाम, ख्याति, शहरत ।
 सं० यशस्वी (यशस्) गु० नामी, नामवर, प्रतिष्ठित, मुञ्जिज्ज ।
 सं० यशोदा (यशस्=यश, दा=देना) स्त्री० जसोदा शब्द को देखो ।
 प्रा० यहाँ (सं० इह) क्रि० वि० इस जगह, इस ठौर, इधर ।
 प्रा० यहाँ का यहीं बोल० ठीक इसी जगह ।
 प्रा० था सर्वना० यह, २ इसका ।
 सं० याग (यज्ञ=पूजना) भा० पु० यज्ञ, होम, हवन, पूजा, बलिदान ।
 सं० याचक (याच्=माँगना) क०

पु० माँगनेवाला, माँगता, याचक, भिखारी ।
 सं० याचना (याच्=माँगना) भा० स्त्री० भीख माँगना, चाहना, अभ्यर्थना, दरखास्त करना ।
 सं० याच्ना भा० स्त्री० याचना, माँगना, दरखास्त ।
 सं० याचित याच्=(माँगना) र्भ्म० पु० माँगा हुआ, चाहता हुआ ।
 सं० याजक (यज्ञ=यज्ञ करना वा पूजना) पु० यज्ञ करानेवाला, पुजारी, पुरोहित ।
 सं० याजन भा० पु० यज्ञकराना, पूजा कराना ।
 सं० यात र्भ्म० पु० गत, गया ।
 सं० यातना (यत्=दण्ड देना, दुःख देना) स्त्री० नरक का दुःख, पीड़ा, क्रेश, बड़ा भारी दुःख ।
 सं० याता क० पु० जाने व चलने वाला ।
 सं० यातु (या=चलना) पु० राक्षस, गु० चलनेवाला ।
 सं० यातुधान (यातु=ऐसा, धा=रखना अर्थात् कहलाना) पु० राक्षस, निशाचर, दैत्य, असुर ।
 सं० यात्रा, (या=जाना) स्त्री० यात्रा तीर्थ को जाना, २ सफर जाना, जियारत, कूच, प्रस्थान, बिदा, ३ कोई पर्व अथवा उत्सव जिसमें देवता की मूर्ति को रथ

आदि में बैठाकर बाहर लेजाते हैं
जैसे रथयात्रा आदि ।

सं० यात्रिक { (यात्रा) क० पु०
यात्री { यात्रा करनेवाला,
यात्री, जियारती, तीर्थ करनेवाला ।

सं० यादव (यदु) पु० यदुवंश के
लोग, यदुवंशी, २ श्रीकृष्ण ।

सं० यादवपति (यादव + पति) पु०
श्रीकृष्ण, यदुनाथ, यदुपति ।

सं० यादृश क्रि० वि० जैसा, जैसी,
जिसके समान ।

सं० यान (या=जाना) रा० पु०
वाहन, सवारी, असवारी जैसे
हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी आदि ।

सं० याम (यम्=बीतना, रोकना)
पु० पहर, रात्रि दिनका अष्टमांश ।

सं० यामिक क० पु० पहर, चौकी-
दार ।

सं० यामिनी (याम) स्त्री० रात,
रात्री, रजनी, शब, निहार ।

सं० यामिनीपति (यामिनी + पति)
पु० चाँद, चन्द्रमा, चन्द्र ।

सं० यावज्जीवन (यावत् + जी-
वन) क्रि० वि० जीने तक, जीने
के अन्त तक ।

सं० यावत् (यत्=जो) क्रि० वि०
जबतक, जबलग, २ जितना ।

सं० यावनीभाषा (यावनी=यवनों
की, भाषा=बोली) स्त्री० यवनों
की बोली ।

प्रा० याहि { सर्वना० इसको, इसे ।
याही }

सं० युक्त (युज्=मिलना) क० पु०
मिलाहुआ, जुड़ाहुआ, लगाहुआ,
२ योग्य, उचित, ठीक ।

सं० युक्ति (युज्=मिलना) भा० स्त्री०
मिलना, मेल, २ योग्यता, ३ चतुराई,
गुण, रीति, हथौटी, लोकव्यवहार ।

सं० युग (युज्=मिलना वा मिलाना)
पु० जोड़ा, २ समय, युग-हिन्दू
चार युग मानते हैं, (१ सत्ययुग
१७२८००० बरसों का, २ त्रेता
युग १२९६००० बरसों का, ३
द्वापर ८६४००० बरसों का, और
४ कलियुग ४३२००० बरसों का) ।

सं० युगल (युग=जोड़ा, ला=लेना)
पु० जोड़ा, दो ।

सं० युगान्त (युग + अन्त) पु०
युगका अन्त जिसमें सृष्टि का नाश
होजाता है ।

सं० युगपत् पु० दो, दोनों या एक-
दा, एकसमय, एक साथ ।

सं० युग्म (युज्=मिलना वा मिलाना)
पु० जोड़ा, युगल, दो ।

सं० युत (यु=मिलना वा मि-
लाना) पु० मिलाहुआ, युक्त, सं-
युक्त, शामिल, विशिष्ट, —जैसे श्री-
युत, धर्मयुत ।

सं० युद्ध (युध्=लड़ना) पु० ल-
युध् { ढाई, संग्राम, विवाद,

जंग, कारजार ।
 सं० युद्धनिदेश पु० पैगाम जंग,
 लड़ाई का संदेश ।
 सं० युद्धशय्या स्त्री० जंग की तै-
 यारी, लड़ने को उद्यत होना ।
 सं० युधान क० पु० संग्रामकारी, जंगी ।
 सं० युधिष्ठिर (युधि=लड़ाई में,
 स्थिर=ठहरनेवाला) पु० पाँच
 पाण्डवों में का बड़ा, कुन्ती और
 पाण्डु का बड़ा बेटा ।
 अ० युनाइटेडस्टेट्स } स्त्री० स-
 युनाइटेडकिंगडम } म्लित
 राज्य, सन्ततनत मुश्तरिका ।
 सं० युवक { गु० तरुण, जवान, न-
 युवाक { वीन अवस्थावाला ।
 सं० युवती (युवन, यु=मिलना)
 स्त्री० जवान स्त्री, यौवनवती, त-
 रुणी, सोलह बरस से तीसबरस
 तक की स्त्री ।
 सं० युवराज (युवन्=जवान, राजा)
 पु० राजाका बड़ा बेटा जो उसके
 पीछे राजा होता है, राजकुमार,
 राजाका वारिस, वली अहद ।
 सं० युवा (युवन्, यु मिलना) पु०
 जवान, तरुण, सोलह बरस से
 अधिक उमरका ।
 सं० युस्मद् सर्वना० त्वत्, तुम् ।
 प्रा० यूं (क्रि० वि० इसतरह से,
 अँ) ऐसे, योंही, बोल० इसी
 तरह से, ऐसेही, संयोग से,

२ वृथा, बे फायदह, बिनकारिण,
 सहज में, आसानी से ।
 सं० यूथ (यू=मिलना) पु० झुण्ड,
 समूह, जत्था ।
 सं० यूथप (यूथ=समूह, पा=पालना)
 पु० सेनापति, सेनाका मालिक ।
 प्रा० यूहा(सं० यूथ)पु० समूह, झुण्ड ।
 सं० यूप पु० स्तम्भ, खम्भा ।
 सं० योग (युज्=मिलना) भा० पु०
 मेल, मिलाप, मिलाव, सम्बन्ध,
 लगन, संयोग, जोड़, २ अच्छा समय,
 शुभ घड़ी, ३ समाधि, ध्यान, परमे-
 श्वर में मनलगाना, तप, तपस्या ।
 सं० योगनिद्रा (योग=ध्यान, निद्रा
 =नींद) स्त्री० विष्णु की नींद,
 महामाया, दुर्गा ।
 सं० योगमाया (योग=ध्यान, माया
 =ईश्वरकी शक्ति) स्त्री० विष्णुकी
 माया, महामाया, कुदरत खुदाई ।
 सं० योगरूढ़ि (पु० जो शब्द दो
 योगरूढ़ि) शब्दों से बनाहो
 और सामान्य अर्थ को छोड़ वि-
 शेष अर्थ को बतावे जैसे पङ्कज,
 त्रिशूलपाणि ।
 सं० योगिनी (युज्=मिलना, वा
 मिलाना) स्त्री० शक्ति, नारायणी,
 गौरी, शाकम्भरी, भीमा, चामुण्डा,
 पार्वती, भद्रकाली, रुद्राणी, दुर्गा
 आदि ६४ योगिनी प्रसिद्ध
 हैं, २ ज्योतिष में अच्छे धुरे को

जतलानेवाली ।

सं० योगी (योग) क० पु० ध्यानी,
तपस्वी, संन्यासी ।

सं० योगेश्वर (योग = ध्यान वा तप,
ईश्वर = स्वामी अर्थात् जिसके लिये
योगी तपस्या करते हैं) पु० परमेश्वर,
ईश्वर, बड़ा ऋषि, सिद्ध, योगीश,
तपस्वी ।

सं० योग्य (युज् = मिलना वा
मिलाना) गु० ठीक, उचित,
चाहिये, उपयुक्त, संभव, २ नि-
पुण, प्रवीण, लईक, लायक,
चतुर, गुणी, ३ समर्थ ।

सं० योग्यता (योग्य) भा० स्त्री०
लियाकत, प्रवीणता, निपुणता,
सामर्थ्य ।

सं० योजक (युज् + अक) क०
पु० मिलानेवाला ।

सं० योजन (युज् = मिलना वा
मिलाना) पु० चार कोस ।

सं० योजना (युज् = मिलना) भा०
स्त्री० मिलाना, जोड़ना, मेल ।

सं० योधन भा० पु० अस्त्र ।

सं० योद्धा (युध् = लड़ना) क० पु०
लड़ाका, शूरमा, सावंत, भट,
वीर, बहादुर, लड़नेवाला ।

प्रा० योधा (सं० योध, युध् = ल-
ड़ना) पु० लड़ाका, वीर ।

सं० योनि (यु = मिलना) स्त्री० भग,
पैदा होने की जगह, उत्पत्तिस्थान,

जायतबल्लुद ।

सं० योषा } (युष् = सेवना, जो
योषित् } पुरुषों से पोषण की
योषिता } जाती है) स्त्री० नारी,
लुगाई, स्त्री, अबला, अंगना ।

सं० यौगिक (योग) गु० दो शब्दों
से बना हुआ शब्द, प्रकृति और
प्रत्यय के योग से बना हुआ शब्द ।

सं० यौतक { (युतक, यु = मिलना)
यौतुक } पु० दहेज, दैजा,
ब्याह में बेटी का बाप अपनी बेटी
को जो धन और कपड़ा आदि
देता है ।

सं० यौवनदशा स्त्री० यौवनावस्था,
जवानी की हालत ।

सं० यौवन (युवन् = जवान) भा०
पु० जवानी, तरुणार्थ ।

सं० यौवनवती (यौवन = जवानी,
वती = वाली) स्त्री० जवान स्त्री ।

र

सं० र (रा = देना या लेना) पु०
आग, २ कामदेव की आग, का-
माग्नि, ३ तीक्ष्ण, तेज, तीखा, ४
वेग, ५ क्रोध ।

प्रा० रई स्त्री० दही मथने की लकड़ी,
मथनी, बिलोनी ।

प्रा० रँहट { पु० पानी निकासने
रहट } की चर्खी ।

सं० रक्त (रक्ज् = रँगना) पु० लोह,
रुधिर, शोणित, कुंकुम, केसर,

तांबा, गु० लाल ।
 सं० रक्तकन्द पु० पलाण्ड, प्याज,
 २ गाजर, ३ प्रवाल, मूँगा ।
 प्रा० रक्तकोढ़ (सं० रक्तकुष्ठ) पु०
 एक तरह का कोढ़ जिससे शरीर
 लाल होजाता है ।
 सं० रक्तघ्न पु० लोहितक वृक्ष, लोध
 औषध, २ द्रव ।
 सं० रक्तचन्दन (रक्त + चन्दन)
 पु० लालचन्दन ।
 सं० रक्तचूर्ण (रक्त + चूर्ण) पु०
 सिन्दूर ।
 सं० रक्तप (पा=पीना) क० पु०
 राक्षस, खटमल, मच्छड़ ।
 सं० रक्तपा (रक्त=लोहू, पा=पीना)
 स्त्री० जोंक, जलौका ।
 सं० रक्तपात (रक्त=लोहू, पत=
 गिरना) पु० लोहू का गिरना,
 हत्या, खून ।
 सं० रक्तबीज (रक्त=लोहू, बीज=
 पैदा होना) पु० एक राक्षस का
 नाम जो शुम्भ निशुम्भ का सेना-
 पति था जिसको दुर्गा ने मारा, २
 (रक्त=लाल, बीज=दाना) दा-
 ढिम, अनार ।
 सं० रक्षक (रक्ष=बचाना) क० पु०
 रक्षा करनेवाला, पालनेवाला,
 पालक, पोषक, स्वामी, मालिक,
 मुहाफिज ।
 सं० रक्षण (रक्ष=बचाना) भा०

पु० रक्षा, पालन, पोषण, बचाव ।
 सं० रक्षस् (रक्ष=बचाना, जिससे
 होम की सामग्री को बचाना, या
 जिससे अपने को बचाना) पु०
 राक्षस, निशाचर, भूत ।
 सं० रक्षा (रक्ष=बचाना) स्त्री०
 बचाव, पालन, उद्धार, २ राख,
 ३ राखी ।
 सं० रक्षापेक्षक (रक्षा + अपेक्षक)
 क० पु० द्वारपाल, डेवढीदार,
 सिपाही ।
 सं० रक्षित (रक्ष=बचाना) र्भ०
 पु० रक्षा किया हुआ, बचाया
 हुआ, रक्खा हुआ ।
 प्रा० रखना (सं० रक्षण) क्रि०
 स० धरना, लगाना, खड़ा करना,
 ठिकाना, बिठलाना, २ पकड़ना,
 अधिकारी होना, मालिक होना,
 ३ बचाना, रक्षाकरना, ४ विचा-
 रना, सोचना ।
 प्रा० रखवाला (रखना) क० पु०
 रखवाली करनेवाला, बचाने
 वाला, गड़रिया, चरवाहा ।
 प्रा० रखवाली (रखना) भा० स्त्री०
 बचाव, रक्षा, खबरदारी ।
 प्रा० रखैया (रखना) क० पु०
 रखनेवाला ।
 प्रा० रगड़ (रगड़ना) भा० स्त्री०
 घिसाव, संघर्ष, मलाव ।
 प्रा० रगड़ना क्रि० स० मलना,

धिसना ।
 प्रा० रगड़ा पु० भगड़ा, २ धिसाव ।
 प्रा० रगड़ाभगड़ा बोल० लड़ाई,
 दंगा, बखेड़ा, फसाद ।
 प्रा० रगेदना क्रि० स० खदेड़ना,
 पीछा करना, भगादेना ।
 सं० रघु (रघि वा लघि=जाना, जो
 धरती के अन्त तक अपनी जीत
 को फैलाता है) पु० एक सूर्यवंशी
 राजा का नाम जो दिलीप राजा
 का बेटा और श्रीरामचन्द्र का
 परदादा था, २ रघु का वंश ।
 सं० रघुनन्दन (रघु=रघुवंशीयों को,
 नन्दन=आनन्द देनेवाला) क०
 पु० श्रीरामचन्द्र ।
 सं० रघुनाथ (रघु + नाथ) पु०
 श्रीरामचन्द्र ।
 सं० रघुपति (रघु + पति) पु०
 श्रीरामचन्द्र ।
 सं० रघुराज (रघु + राजा) पु०
 श्रीरामचन्द्र ।
 सं० रघुवंश (रघु + वंश) पु० रघु
 राजा का कुल, २ कालीदास कवि
 का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध
 काव्य जिसमें राजा दिलीप से
 लेकर राजा अग्निवर्ण तक का
 वर्णन किया है ।
 सं० रघुवंशतिलक (रघुवंश, रघु
 रघुकुलतिलक) राजा के कुल
 में. तिलक=श्रेष्ठ) पु० राजा दशरथ,

२ श्रीरामचन्द्र ।
 सं० रघुवर (रघु=रघुवंशीयों में, वर
 =श्रेष्ठ) पु० श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।
 सं० रङ्ग (रक्=स्वाद लेना या
 पाना) गु० गरीब, कंगाल, दरिद्री,
 २ कृपण, लालची, लोभी ।
 सं० रङ्ग (रङ्ग=रँगना) पु० वर्ण,
 २ डौल, रीति, ढंग, ढब, ३ खेल,
 खुशी, आनन्द, ४ (रंगि=जाना
 वा पाना) रँगना धातु ।
 प्रा० रंगउड़जाना बोल० रंग बदल
 जाना, डरना ।
 प्रा० रंगउनरजाना बोल० पीला
 होजाना, फीका होना, २ शोच में
 होना, कुदना, कल्पना ।
 प्रा० रंगकरना बोल० खुशी करना,
 बिलसना, समय को आनन्द में
 बिताना ।
 प्रा० रंग चढ़ना बोल० शराब के
 नशे में मगन होना ।
 प्रा० रंगदेखना बोल० किसी चीज
 की हालत को या उसके फल अथवा
 अन्त या परिणाम को जानना ।
 प्रा० रंगबरंग (सं० रङ्ग विरङ्ग) बोल०
 रंग रंग का, कई रंग का, चित्र वि-
 चित्र, तरह तरह का, भौंति भौंतिका ।
 प्रा० रंगबिगड़ना बोल० किसी
 चीज की हालत बदलना ।
 प्रा० रंगभंग बोल० आनन्द में बि-
 गाड़ होना, खेल का बिगाड़, खुशी

में शोच होजाना ।

प्रा० रंगमहल पु० भोग विलास करने का महल ।

प्रा० रंगमारना बोल० चौपड़ का खेल जीतना ।

प्रा० रंगरलियां स्त्री० व० व० आनन्द, हर्ष, खुशी, रंगरस, हँसी खुशी, हुलास, भोगविलास ।

प्रा० रंगरस (सं० रङ्ग + रस) बोल० आनन्द, हर्ष, सुख, खुशी ।

प्रा० रंगरातना बोल० खूब गहरा प्यार होना ।

प्रा० रंगराता बोल० रंग में रंगा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित ।

प्रा० रंगरूप (सं० रंग + रूप) बोल० चमक दमक, छवि, हुस्न, जमाल ।

प्रा० रंगलगाना बोल० रँगना, रंग चढ़ाना, २ भगड़ा उठाना, बखेड़ा मचाना ।

प्रा० रंगत (रङ्ग) स्त्री० रंग, वर्ण, शोभा, हुस्न ।

प्रा० रंगना (सं० रञ्जन) क्रि० स० रंग चढ़ाना, रंग देना ।

सं० रंगभूमि (रंग + भूमि) स्त्री० नाचघर, अखाड़ा, नाट्यशाला, रंगशाला, धनुर्यज्ञ की भूमि ।

प्रा० रंगवाई (रँगाना) स्त्री० रंगाई रँगने की मजूरी ।

प्रा० रंगीला (रंग) गु० चटकीला,

भड़कीला, रसीला, रसिया, रसिक, बैला ।

प्रा० रचना (सं० रचन, रच्=बनाना) क्रि० स० बनाना, नई बात निकालना, सिरजना, पैदा करना, तैयार करना, २ क्रि० अ० बनना, पैदा होना, तैयार होना ।

सं० रचक (रच् + अक) क० पु० बनानेवाला, मुसन्निफ, उत्पादक ।

सं० रचना (रच्=बनाना) स्त्री० तसनीफ, बनावट, सजावट, तैयारी, २ पैदा की हुई चीज, ३ ग्रन्थ ।

सं० रचयिता क० पु० निर्माणक, रचनेवाला, मुसन्निफ ।

प्रा० रचाना (सं० रच्=बनाना, या रञ्ज=रँगना) क्रि० स० करना, बनाना, २ मेहँदी से अथवा अलता आदि और किसी चीज से हाथ पैर रँगना, ३ ब्याह आदि शुभ काम को शुरू करना ।

सं० रचित (रच्=बनाना) र्म० पु० बनाया हुआ, सिरजा हुआ, पैदा किया हुआ, निर्मित ।

सं० रज (रञ्ज=रँगना) स्त्री० रजस् (रेत, धूलि, २ पराग, फूलों की सुगन्धित धूलि, ३ स्त्रीका कँवल या फूल, ४ रजोगुण ।

सं० रजक (रञ्ज=रँगना) क० पु० धोबी ।

सं० रजकी (रजक) स्त्री० धोबिन ।

सं० रजकण पु० धूलिकण ।

सं० रजत (रज्जु=रँगना वा चम-
कना, या राज्=शोभना) पु०
चाँदी, रूपा, २ हाथीदाँत, ३
हार, ४ सोना, गु० थौला, शुक्ल
वर्ण, श्वेत, सफेद ।

सं० रजतद्युति पु० महावीर, गु०
गौरवर्ण, श्वेतवर्ण ।

सं० रजन भा० पु० रागोत्पादन,
रँगना, रँगसाजी ।

सं० रजनि { (रज्जु=प्यार करना)
रजनी } स्त्री० रात, रात्रि ।

सं० रजनिकर { (रजनी=रात, कृ
रजनीकर } =करना) पु०
चाँद, चन्द्रमा ।

सं० रजनिचर { (रजनी=रात,
रजनीचर } चर=चलना) पु०
राक्षस, असुर, निशाचर, २ भूत,
प्रेत, ३ चोर, ४ रातको फिरनेवाला ।

सं० रजनीजल पु० तुषार, ओस,
नीहार, कुहरा ।

सं० रजनीमुख (रजनी=राति, मुख
=मुँह) पु० साँझ, संध्या, प्रदोष,
राति का प्रारम्भ, सफ़क ।

प्रा० रजवाड़ा (राजा) पु० राज,
राजपूताना ।

सं० रजस्वला (रजस्) स्त्री० वह
स्त्री जो कपड़ों से हो, ऋतुमती ।

प्रा० रजाई { (सं० राजादेश, राज
रजायसु } =राजा, आदेश=

आज्ञा) स्त्री० राजा की आज्ञा,
राजा का हुक्म ।

सं० रजोगुण (रजस् + गुण) पु०
दूसरा गुण जिससे मोह, क्रोध,
प्यार, अहंकार आदि पैदा होते हैं ।

सं० रजोग्राहि क० पु० वायु, वात,
हवा ।

सं० रज्जु (सृज्=पैदा होना या
बनाया जाना) स्त्री० रस्सी, रास,
डोरी, जेवरी ।

सं० रज्जक (रज्जु=प्यार करना वा
रँगना) क० पु० प्यार करनेवाला,
प्रीति करनेवाला, खुश करनेवाला,
प्रसन्न करनेवाला, २ रँगनेवाला,
चित्रकार, ३ पु० रंग ।

सं० रज्ज पु० रंजन, रँगना, रंग-
साजी, रंग, राग ।

सं० रज्जन (रज्जु=प्यार करना वा
रँगना) भा० पु० प्रसन्नता, प्यार,
अनुराग, २ रँगना, रँगवट, चित्र-
कारी, ३ लालचन्दन, गु० प्रीति
करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला,
खुश करनेवाला, हर्ष देनेवाला ।

सं० रज्जित (रज्जु=प्यार करना वा
रँगना) र्म० पु० प्रसन्न, प्यार
किया हुआ, २ रँग हुआ ।

सं० रटन भा० पु० घोषणा, रटना,
याद करना ।

प्रा० रटना (सं० रटन, रट्=बो-
लना) क्रि०स० बोलना, कहना,

बराबर बोलना, दोहराना, तिहराना ।
सं० रटित र्म्यं पु० घोषित, याद
किया हुआ ।

सं० रण (रण=शब्द करना) पु०
लड़ाई, युद्ध, जंग, संग्राम, ध्वनि,
शब्द, पर्यटन, भ्रमण ।

सं० रणभूमि (रण + भूमि) स्त्री०
रणक्षेत्र, लड़ाई का खेत, लड़ाई
का मैदान ।

सं० रणित (रण=शब्द करना)
र्म्यं वजता हुआ, वजती हुई ।

प्रा० रंडापा (रॉड) भा० पु०
बेवापन, विधवापन ।

सं० रत (रम्=खेलना) पु० मैथुन,
स्त्रीप्रसंग, कामकेलि, र्म्यं लगा
हुआ, तत्पर, आसक्त ।

सं० रततालिन् पु० अध्यापक, उ-
स्ताद, २ कामुक, भट्टा, परस्त्रीगामी ।

सं० रतताली स्त्री० कुटनी, पुंश्वली ।

प्रा० रतन पु० रत्नशब्द को देखो ।

प्रा० रतनार (सं० रत्न) पु० लाल
रंग, गु० लाल ।

सं० रतहिण्डक पु० वेश्यापति,
लम्पट, कामुक ।

प्रा० रतालू (सं० रत्नालु) पु०
एक तरकारी का नाम ।

सं० रति (रम्=खेलना) स्त्री० काम-
देव की स्त्री, २ प्यार, प्रेम, अनु-
राग, ३ मैथुन, सम्भोग, स्त्रीसंग,
क्रीड़ा ।

सं० रतिपति (रति + पति) पु०
कामदेव ।

प्रा० रती (सं० रति) स्त्री० कामदेव
की स्त्री, २ भाग्य, भाग, किस्मत,
नसीब ।

प्रा० रतीचमकना बोल० बढ़ना,
फलना फूलना, भाग्यवान् होना ।

प्रा० रतीवन्त गु० भाग्यवान्, प्रा-
लब्धी, अच्छी किस्मतवाला ।

प्रा० रतौंधा (रत=रात, औंधा=
अन्धा) पु० एक बीमारी जिसमें
रात को नहीं दीखता है ।

प्रा० रत्ती (सं० रक्तिका, रक्त)
स्त्री० आठ जौ का तौल, २ लाल
धुंगची ।

सं० रत्न (रम्=खेलना, जिससे वा
प्रसन्न होना, जिसको देख कर)
पु० रतन, जवाहिर, मणि, बहुत
मोल का पत्थर—रत्न नौ हैं—
(१ हीरा, २ पन्ना, ३ नीलम,
४ माणिक, ५ लहसुनिया, ६ पुख-
राज, ७ गोमेद, ८ मोती, ९ मूँगा),
२ आँख की पुतली ।

सं० रत्नकन्दल पु० प्रवाल, मूँगा ।

सं० रत्नगर्भ पु० समुद्र, कुबेर,
परमेश्वर, स्त्री० पृथिवी ।

सं० रत्नजटित (रत्न + जटित)
र्म्यं पु० रत्नों से जड़ा हुआ ।

सं० रत्नसानु पु० सुमेरु पर्वत ।

सं० रत्नसिंहासन (रत्न + सिंहा-

सन) पु० रत्नों से जड़ा हुआ
तल्ल ।

सं० रत्नसू (सू=उत्पन्न करना)
स्त्री० मेदिनी, पृथिवी, जमीन ।

सं० रत्नाकर (रत्न=जवाहिर अ-
थवा मोती, आकर=खानि) पु०
समुद्र, २ रत्नों की खानि ।

सं० रत्नावली (रत्न + अवली)
स्त्री० रत्नों की माला, रत्नमाला,
२ एक नाटक ।

सं० रथ (रम्=खेलना, प्रसन्न होना)
पु० एक तरह की चार पहियों
की गाड़ी ।

सं० रथकार क० पु० रथ बनाने
वाला, बढई, सूत्रधार, वर्णसंकर,
क्षत्रिय से वैश्यकन्या में उत्पन्न उस
को ' माहिष्य ' कहते हैं वैश्य से
शूद्रकन्या में जन्मा उसे ' करण '
कहते हैं माहिष्य से करण संज्ञा-
वती कन्या में उत्पन्न पुत्र उसे
' रथकार ' कहते हैं ।

सं० रथगर्भक क० पु० काँधे कीब
सवारी, शिबिका, पालकी, डोली ।

सं० रथगुप्ति स्त्री० रथ का परदा,
रथ का ओहार, पोशिश, परदा ।

सं० रथवान् पु० सारथी ।

सं० रथवाहक क० पु० सारथी,
यन्तार ।

सं० रथाङ्ग (रथ + अंग) पु० पहिया,
चक्र, चाका, २ चक्रवा पक्षी,

चक्रवाक ।

सं० रथिक { (रथ) क० पु० रथ का
रथी { स्वामी, रथ पर चढ़ने
वाला, रथपर चढ़ कर लड़नेवाला,
जनाजा, ताबूत, मुर्दा की टिकटी ।

सं० रद { (रद्=ठुकड़े करना) पु०
रदन { दाँत, दन्त, दशन, ३२
संख्या ।

सं० रदनी क० पु० हाथी ।

सं० रदच्छद { (रद वा रदन=दाँत,
रदनच्छद { छद्=ढकना) पु०
होंठ, ओष्ठ, लब ।

सं० रदपट (रद=दाँत, पट=आड़)
पु० होंठ, लब ।

प्रा० रद्दी (अ० रद्) स्त्री० निकम्मे
और पुराने कागज ।

प्रा० रनवास { (रानीवास) पु०
रज्जिवास { रानियों के रहने के
, ० रा ।

अन्ति स्त्री० क्रीड़ा, प्रसन्नता,
रमण, प्रीति ।

सं० रन्तिदेव पु० चन्द्रवंशी राजा,
२ कुकुर, कुत्ता ।

प्रा० रन्धना (सं० रन्धन, रध्=
पकना) क्रि० अ० पकना ।

सं० रन्ध्र (रध्=नाश होना, या पूरा
होना) पु० छेद, छिद्र, सूरस्र,
२ दोष, दूषण, ऐब ।

प्रा० रपटना क्रि० अ० फिसलना,
खिसलना ।

प्रा० रबड़ी स्त्री० गाढ़ा दूध, खोवा ।
सं० रमस पु० हर्ष, वेग, तेजी,
उत्सुकता ।

सं० रमक (रम् + अक, रम् = क्रीड़ा
करना) क० पु० कामुकपति,
परस्त्रीगामी, जार, गुंथोड़ा, कम ।

प्रा० रमचेरा { पु० दास, गुलाम ।
रामचेरा }

सं० रमण (रम् = खेलना) भा० पु०
खेल, क्रीड़ा, रमैथुन, भोगविलास,
रति, ३ रमनेवाला, पति, प्रियतम,
प्यारा, ४ कामदेव, ५ जार, ६ मनो-
हर, ७ गर्हभ, ८ पटोल की जड़ ।

सं० रमणी (रम् = खेलना) स्त्री०
सुन्दर और मनोहर स्त्री ।

प्रा० रमणीक (सं० रमणीय) गु०
मनभावन, सुन्दर, सुहावना,
दिलचस्प ।

सं० रमणीय (रम् = खेलना) १०
पु० सुन्दर, मनोहर, रम्य, दिल,

सं० रमति क० पु० नायक, ५
धूमनेवाला, धूमता है ।

प्रा० रमना (सं० रमण) क्रि० अ०
खेलना, क्रीड़ा करना, भोग करना,
आनन्द करना, २ फिरना, घूमना,
३ पु० शिकार करने की जगह ।

सं० रमल (अ० रमल) पु० एक
तरह का ज्योतिष शास्त्र ।

सं० रमा (रम् = खेलना) स्त्री०
लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, स्त्री, लुगाई ।

सं० रमापति (रमा + पति) पु०
विष्णु, नारायण, भगवान् ।

सं० रम्भा (रभि = शब्द करना)
स्त्री० एक अप्सरा का नाम, वेश्या,
२ केला, कदली, ३ पार्वती, ४
विलचा, खंता ।

सं० रम्य (रम् = खेलना) क० पु०
सुन्दर, मनोहर, रमणीय ।

सं० रम्या स्त्री० रात्रि, सुन्दरी,
पद्मिनी ।

सं० रम्भ पु० प्रारम्भ, पूर्वभाग, अरु-
णोदय, शोभा ।

सं० रय (रय् = जाना) पु० वेग,
प्रवाह, जल्दी, साहस ।

प्रा० ररना भा० पु० बोलना, शब्द
करना ।

प्रा० रलना क्रि० अ० मिलना,
२ पिसना, बुकनी होना ।

सं० रल्लक कम्बल, पक्ष्मकम्बल ।

सं० रव (रु = शब्द करना) पु० शब्द,
ध्वनि, आवाज, आहट ।

ग्रा० रवा पु० सोने या चाँदी का
छोटा छोटा दाना, २ बालू और
मिसरी आदि का दाना, ३ गेहूँ की
मैदा से छाना हुआ दाना ।

सं० रवि (रु = शब्द करना, अर्थात्
स्तुति करना) पु० सूर्य ।

सं० रवितनया (रवि + तनया)
स्त्री० यमुना नदी ।

सं० रविनन्दिनी (रवि + नन्दिनी)

स्त्री० यमुना नदी ।
 सं० रविपुत्र पु० कर्ण, सुग्रीव ।
 सं० रविमणि स्त्री० सूर्यकान्तमणि,
 सूर्य की मणि ।
 सं० रविमण्डल (रवि + मण्डल)
 पु० सूर्यमण्डल, सूर्यलोक ।
 सं० रविवार (रवि=सूर्य, वार=
 दिन) पु० एतवार, इतवार, आदि-
 त्यवार, सूर्य का दिन ।
 सं० रशना (रश्-शब्द करना)
 स्त्री० स्त्रियों के पहनने की
 करधनी ।
 सं० रश्मि (अश्=कैलाना वा रश्=
 शब्द करना) स्त्री० किरण, तेज,
 कान्ति, २ रास, घोड़े की बागडोर ।
 सं० रस (रस्=स्वाद लेना, प्यार
 करना) पु० अर्क, किसी पौधे का
 दूध, सार, २ स्वाद, सवाद, मजा,
 चाट, रुचि, रस छः प्रकार के
 हैं १ मीठा, २ खट्टा, ३ खारा, ४
 कड़वा, ५ तीता वा चरपरा, ६
 कपैला) ३ साहित्य वा इल्म अदब
 में नौ रस हैं (१ शृङ्गार, २ हास्य,
 ३ करुणा, ४ रौद्र, ५ वीर, ६
 भयानक, ७ वीभत्स, ८ अद्भुत,
 ९ शान्त वा वात्सल्य) ४ पारा, ५
 मेल, मिलाप, आपस की प्रस-
 न्नाता, प्यार, ६ द्रवपदार्थ, बहने
 वाली चीज ।
 प्रा० रसरस क्रि० वि० धीरे धीरे ।

सं० रसज्ञ (रस=स्वाद, ज्ञा=जानना)
 क० पु० रसिक, रसका जाननेवाला,
 भाव जाननेवाला, सार जानने
 वाला, पु० कवि, २ पति, ३ रसायनी ।
 सं० रसज्ञा (रस=स्वाद, ज्ञा=जा-
 नना) स्त्री० जीभ ।
 सं० रसन भा० पु० स्वाद, लज्जत ।
 सं० रसना (रस्=स्वाद लेना) स्त्री०
 जीभ, जिह्वा, रसज्ञा ।
 सं० रसरराज पु० पारा धातु ।
 सं० रभा (रस) स्त्री० पृथ्वी,
 धरती, जमीन, २ जीभ ।
 सं० रसानल (रसा=धरती, तल
 =नीचे) पु० पाताल, नीचे का
 सातवाँ लोक जहाँ नाग असुर
 दैत्य और राक्षस रहते हैं और
 शेषजी और राजा बलि आदि
 राज्य करते हैं ।
 सं० रसायन (रस्=अर्क या पारा,
 अयन=राह वा जाना) पु० दो
 तीन चीजों को मिला कर एक चीज
 बनाने की अथवा दो तीन चीजों को
 जुदा जुदा करने की विद्या, कीमिया ।
 सं० रसायनविद्या स्त्री० इल्म की-
 मिया, किमिस्ट्री ।
 सं० रसाल (रस=स्वाद, आ=चारों
 ओर से, ला=लेना) पु० आम,
 २ पनस, ३ ऊख ।
 सं० रसिक (रस) क० पु० रस जा-
 ननेवाला, रसीला, रसियाँ, रसङ्ग,

२ लम्पट, लुब्धा, ऐयाश ।
 प्रा० रसिया (सं० रसिक) गु०
 लुब्धा, लम्पट, विषयी, भोगी, ऐयाश ।
 प्रा० रसीला (रस) गु० रसभरा,
 सुस्वादु, मजेदार, २ विषयी,
 व्यसनी, भोगी, लम्पट ।
 सं० रसेन्द्र (रस + इन्द्र) पु० पारा
 धातु, रसरज ।
 सं० रसोत्पल (रस + उत्पल) पु०
 मुक्ताफल, मोती, २ पारसमणि,
 पारसपत्थर ।
 प्रा० रसोइया (रसोई) पु० रसोई
 बनानेवाला, खाना पकानेवाला ।
 प्रा० रसोई (सं० रसवती) वि०
 स्त्री० खाना बनाने की जगह, २
 खाना, भोजन ।
 प्रा० रस्सी (सं० रश्मि) स्त्री० डोरी,
 जेवरी ।
 प्रा० रहकला पु० एक तरह की
 तोप, २ ताँगा, एक तरह की गाड़ी ।
 प्रा० रहडू पु० छोटी गाड़ी ।
 प्रा० रहन (सं० रहण, रह=जाना)
 रहनि स्त्री० चाल चलन, रीति ।
 सं० रहस् पु० वेग, तेजी ।
 सं० रहस् पु० एकान्त, गोप्य, गुह्य,
 तत्त्व, अव्य० निर्जन, जनरहित,
 एकान्त, तनहाई, खिलवत ।
 प्रा० रहस (सं० रहस्य) क्रि०
 रहसि वि० एकान्त में, तनहाई ।
 सं० रहस्य (रह=छोड़ना) गु० एकान्त,

निर्जन, गुप्तवस्तु, गोपनीय, तत्पर ।
 सं० रहित (रह=छोड़ना) र्म्य० पु०
 विना छोड़ा हुआ, खाली, हीन,
 शून्य, वर्जित, त्यक्त, पृथक्, भिन्न ।
 प्रा० राई (सं० राजिका, राज=च-
 पकना) स्त्री० सरसोंके ऐसी चीज ।
 प्रा० राई (सं० राजा) पु० राजा,
 राज } स्वामी, प्रधान जैसे
 राय } रघुराई या रघुराज
 और नन्दराय ।
 प्रा० राउत (सं० राजपुत्र) पु०
 सरदार, मालिक ।
 प्रा० राँग (सं० रङ्ग) पु० एक
 राँगा धातु का नाम ।
 प्रा० राँभन (सं० रञ्जन) पु०
 राँभा प्रियतम, सज्जन, २
 एक मनुष्य का नाम जो हीरका
 आशिक अर्थात् प्रियतम था जिस
 का राजपूताने में होली के दिनों
 में स्वाँग बनता है ।
 प्रा० राँड (सं० रण्डा) स्त्री० विधवा,
 जिस स्त्री का पति मर गया हो ।
 प्रा० राँडकासाँड बोल० विधवा
 लुगाई का बेटा, बिगड़ा हुआ
 लड़का ।
 प्रा० राँधना (सं० रन्धन, रन्ध=
 पकाना) क्रि० स० पकाना, रींधना ।
 प्रा० राँपी स्त्री० खुरपी, करणी ।
 प्रा० राँभना (सं० रम्भन, रभि=
 शब्द करना) क्रि० अ० गाय का

शब्द करना, ढँकारना, बिबियाना ।
 सं० राका (रा=देना, सुख अथवा
 आनन्द को) स्त्री० पूनों, पूर्ण-
 मासी, २ नदी, ३ खजुली, ४ प्रथम
 रजोवती स्त्री ।

सं० राकापति (राका + पति) पु०
 पूर्णमासी का चाँद ।

सं० राकेश (राका + ईश) पु०
 पूर्णमासी का चन्द्रमा ।

सं० राक्षस (रक्ष=बचाना, जिससे
 होम की सामग्री को अथवा अपने
 को) पु० असुर, निश्चिचर, रज-
 नीचर ।

प्रा० राख (सं० रक्षा, रक्ष=बचाना)
 स्त्री० भस्म, भभूत, खाक ।

प्रा० राखना (सं० रक्षण) क्रि०
 स० रखना, धरना, बचाना ।

प्रा० राखी (सं० रक्षिका, रक्ष=
 बचाना) स्त्री० रँगेहुए सूत का तार
 जिसको हिन्दू पूजा आदि उत्सव
 में अपने हाथ में बाँधते हैं, २ सावन
 सुदी १५ का तिहवार जिसमें
 ब्राह्मण और जाति के लोगों के
 हाथ में रँगेहुए सूत का तार या
 रेशम का डोरा बाँधते हैं ।

सं० राग (रञ्ज=रँगना वा प्यार
 करना) पु० क्रोध, २ प्यार, ३
 रंग, ४ गान, सुर-गानविद्या में
 राग छः हैं (१ भैरव, २ मल्लार,
 मेघ, श्रीराग, ३ सारङ्ग, ४

हिंडोल, ५ वसन्त, ६ दीपक) ।

प्रा० रागछाना बोल० रागरंग होना,
 गाना बजाना होना, तान मिलना ।

प्रा० रागरंग बोल० गाना बजाना ।

प्रा० रागना (राग) क्रि० स०
 गाना शुरू करना ।

सं० रागिणी (राग) स्त्री० गान

भेद, तान, सुर, (छः राग और ३६

रागिणी हैं) १ राग भैरव-उत्पत्ति

शिव के मुखसे निकला है, शिव

का ध्यान, शरद् ऋतु में पिछली

राति को गाना । उसकी रागिणी

(१ भैरवी, २ बंगाली, ३ बरारी, ४

मधुमाधवी, ५ सिन्धवी, ६ गुर्जरी)

२ मल्लार वा मेघ-वर्षा-ऋतु में

सब समय में विशेष करके शृङ्गार

रस में गाना, इसके गान में मेघवृष्टि

अनायास हो, रागिणी (१ बेलाबली,

२ वर्षा, ३ कानड़ा, ४ माधवी,

५ कीड़ा, ६ पटमञ्जरी) ३ श्रीराग

वा सारंग-हेमन्त-ऋतु में सिंहा-

सनारूढ़ सुन्दर पुरुष का ध्यान

करके गाना । रागिणी-(१

गान्धारी, २ सुभगी, ३ गौरी, ४

कौमारिका, ५ वैरागी, ६ काफ़ी)

४ हिंडोल-ब्रह्मा के शरीर से

उत्पत्ति, वसन्त-ऋतु में दिन के

प्रथम भाग में हिंडोलारूढ़ पुरुष

का ध्यान करके गाना, इसके गान में

हिंडोला आपसे आप चलने लगता

है । रागिणी—(१ मायूरी, २ दीपक, ३ देशवारी, ४ पाहिडा, ५ बराड़ी, ६ मोरहारी) ५ वसन्त—वसन्त पञ्चमी से राम नौमी तक आठों पहर गाना वीररस में । रागिणी—(१ टोड़ी, २ पञ्चमी, ३ त्वलिता, ४ पटमञ्जरी, ५ गुर्जरी, ६ बियासा) ६ दीपक—सूर्य के नेत्र से उत्पत्ति, गजारूढ़ पुरुष का ध्यान करके ग्रीष्मऋतु में मध्याह्न समय गाना । रागिणी—(१ देशी, २ कामोदा, ३ केदारा, ४ कान्हड़ा, ५ कर्णाटकी, ६ गुर्जरी) इसके गाने पर बुझा दीपक जल उठता है ।
 सं० राघव (रघु) पु० रघुनाथ, रघुराज, रघुनन्दन, श्रीरामचन्द्र ।
 प्रा० राचना (सं० रचन, रच्= बनाना) क्रि० स० प्यार के वश होना, मिलना, मन लगाना, लीन होना ।
 प्रा० राछ पु० बड़ई अथवा राजअथवा और कारीगरों के औजार ।
 प्रा० राज (सं० राज्य) पु० बादशाहत, हुकूमत, बादशाही, अमल, राजा का अधिकार, राज्य ।
 प्रा० राज पु० कारीगर, मैमार, संगतराश ।
 सं० राजकन्या (राजन्=राजा, कन्या=बेटी) स्त्री० राजा की बेटी, राजकुंवारी, राजकुमारी ।

सं० राजकर पु० राजस्व, लगान, चुंगी, महसूल, सरकारी मालगुजारी ।
 सं० राजकीय गु० सरकारी बादशाही ।
 सं० राजकीय महासभा स्त्री० शाही दरबार, पारलीम्यण्ट ।
 सं० राजकुटुम्ब पु० शाही खानदान, राजवंश, राजा का घराना ।
 सं० राजकुमार (राजन् + कुमार) पु० राजा का बेटा, राजपुत्र ।
 सं० राजकृत्य पु० कारसलूनत, राजकाज ।
 सं० राजकोष पु० बादशाही खजाना, रायल ट्रेजरी ।
 प्रा० राजगादी (राजा + गादी) स्त्री० राजगद्दी, राजा का आसन, पायह तख्त ।
 सं० राजदण्ड पु० राजसम्बन्धी दण्ड ।
 सं० राजदत्त र्म० पु० राजा का दिया हुआ, राजा से मिला ।
 सं० राजद्रोही क० पु० राजा का बैरी, राजविमुख, बागी ।
 सं० राजद्वार (राजन् + द्वार) पु० राजा की डेवही ।
 सं० राजधानी (राजन्=राजा, धा= रखना वा रहना) स्त्री० राजस्थान, राजपुर, वह नगर जहाँ राजा रहे और राज का काम काज हो,

दारुत्सलत्नत ।

प्रा० राजना (सं० राजन्, राज्=शोभना, चमकना) क्रि० अ० शोभना, चमकना, विराजना ।

सं० राजनीति (राजन् + नीति) स्त्री० राज करने की रीति, राज-प्रबन्ध, २ एक ग्रन्थ का नाम ।

सं० राजन्य पु० क्षत्रिय, राजपुत्र ।

सं० राजपत्नी (राजन् + पत्नी) स्त्री० रानी ।

सं० राजपुत्र (राजन् + पुत्र) पु० राजा का बेटा, राजकुमार, २ राज-पूत, क्षत्री ।

प्रा० राजपूत (सं० राजपुत्र) पु० क्षत्री ।

सं० राजभवन (राजन् + भवन) पु० राजा का महल ।

सं० राजमन्दिर (राजन् + मन्दिर) पु० राजा का महल ।

सं० राजमार्ग (राजन् + मार्ग) पु० बादशाही रस्ता ।

सं० राजरोग (राजन् + रोग) पु० रोगों का राजा अर्थात् बड़ा रोग, जैसे क्षयरोग आदि ।

सं० राजशासन (राजन् + शासन) पु० राजा का दण्ड ।

सं० राजस् (रजस्) गु० रजोगुण से पैदाहुआ, पु० रजोगुण, अहंकार, क्रोध, मोह आदि ।

सं० राजसभा (राजन् + सभा)

स्त्री० राजा का दरबार ।

सं० राजसूय (राजन्=राजा, सू=सौँचना या किया जाना) पु० एक यज्ञ जिसको केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है और इस यज्ञ का सारा काम काज केवल उसके अधीन और राजा करते हैं ।

सं० राजहंस (राजन् + हंस अर्थात् हंसों का राजा) पु० एक तरह का हंस जिसके पैर और चोंच लाल होती है ।

सं० राजा (राजन्, राज्=शोभना, चमकना) पु० नरपति, भूपति ।

सं० राजाधिराज (राजा + अधिराज) पु० बड़ाराजा, महाराजा, राजेश्वर, चक्रवर्ती, शाहन्शाह ।

सं० राजिका { (राज्=शोभना वा राजी) चमकना) स्त्री० पंक्ति, पाँति, श्रेणी, कतार, पाँती, राई, नाली, नहर, केदार, क्यारी, वन, ऊसर भूमि ।

सं० राजित (राज्=शोभना, चमकना) क० पु० शोभित, शोभायमान ।

सं० राजीव (राज्=चमकना) पु० कमल, केवल, पद्म ।

सं० राजेन्द्र (राजन् + इन्द्र) पु० महाराजा, राजाधिराज ।

सं० राजेश्वर (राजन् + ईश्वर) पु० राजाओं का राजा, महाराजा, राजाधिराज, शाहन्शाह ।

सं० राज्य (राज्=शोभना, चम-
कना) पु० राजशब्द को देखो ।

सं० राज्यार्द्ध (राज्य + अर्द्ध) पु०
राजा, मन्त्री, मित्र, कोष, देश,
दुर्ग, सेना ।

प्रा० राणा (सं० राजन्) पु० राजा
(उदयपुर के राजा को राणा
कहते हैं) ।

प्रा० राणी { (सं० राज्ञी, राज्=
रानी) शोभना, चमकना)
स्त्री० राजा की स्त्री, राजपत्नी ।

प्रा० रात { (सं० रात्रि) स्त्री० रजनी,
राती } रैन, निशा, निशि ।

प्रा० रात थोड़ी और साग बहुत
यह कहावत उस जगह बोली जाती
है जहाँ काम तो बहुत हो और
समय थोड़ा हो या थोड़ी आम-
दनी हो और बहुत खर्च हो ।

प्रा० रातोंरात बोल० रातही में ।

प्रा० रातना(राता) क्रि०स० रँगना,
रंग देना, क्रि०अ० किसी से बहुत
प्यार होना, किसी पर जीलगना ।

प्रा० राता (सं० रक्त) गु० लाल,
२ रँगा हुआ, ३ लगा हुआ ।

प्रा० राते गु० रक्त, लाल ।

सं० रात्रि { (रा=देना सुख को)
रात्री } स्त्री० रात, रजनी ।

सं० रात्रिचर (रात्रि + चर) पु०

राक्षस, २ भूत, ३ चौर, ४ रात को
फिरनेवाला, चौकीदार ।

सं० रात्रिमणि पु० चन्द्र, चाँद ।

प्रा० राध { स्त्री० पीब, मवाद ।
राध }

सं० राध् (राध्=सिद्ध करना) क०
पु० सिद्ध, कामयाब ।

सं० राधन भा० पु० साधन ।

सं० राधा (राध्=सिद्ध करना, पूरा
करना) स्त्री० एक गोपी जो
श्रीकृष्ण को बहुत प्यारी थी, २ एक
नक्षत्र, विशाखानाम नक्षत्र ।

सं० राधाकान्त (राधा + कान्त)
पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

सं० राधाकुण्ड (राधा + कुण्ड) पु०
गोवर्द्धन पहाड़ के पास एककुण्ड
जिसको श्रीकृष्ण ने खुदवाया था
और उसमें सब तीर्थ आकर पानी
डाल गये थे ।

सं० राधावल्लभ (राधा + वल्लभ)
पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

सं० राधिका (राध्=सिद्ध करना)
स्त्री० राधा गोपी ।

प्रा० राव स्त्री० ऊख आदि का रस ।

प्रा० राव { स्त्री० जुवार या बाजरे
रावड़ी } को द्वाब् में मिला कर
पकाया हुआ खाना ।

सं० राव (रू=शब्द) पु० शब्द, ध्वनि ।

सं० राम (रम्=खेलना, जिसमें योगी रमते हैं, अर्थात् जिसके ध्यान में लगे रहते हैं) पु० परशुराम (यह विष्णु का अवतार जमदग्नि ऋषि के घर त्रेतायुग के शुरुआत में अन्यायी क्षत्रियों को दण्ड देने के लिये हुआ था) २-रामचन्द्र, दशरथ राजा का बेटा (यह विष्णु का अवतार अयोध्या के राजा दशरथ के घर त्रेतायुग के अन्त में लङ्का के राजा रावण को मारने के लिये हुआ) ३-बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई जो द्वापर युग के अन्त में रोहिणी के पैदा हुआ, ४ गु० सुन्दर, मनोहर, शुभ, ५ सुखदायी, ६ सर्वव्यापक।

प्रा० रामकहानी बोल० बड़ी लम्बी बात, लम्बी कथा, २ स्त्री० रामायण।

प्रा० रामराम बोल० सलाम, प्रणाम, नमस्कार (गँवारलोग सलाम की जगह राम राम करते हैं)।

प्रा० रामकली } स्त्री० एक रागिणी
रामकेली } का नाम।

सं० रामगिरि (राम + गिरि) पु० चित्रकूट पहाड़ जो बुन्देलखण्ड में है जहाँ वनवास के समय रामचन्द्र पहले पहल रहे थे।

प्रा० रामजनी (सं० रामाजनी, रामा=मनभावन, जनी=स्त्री) स्त्री० कञ्चनी, पतुरिया, नौची, वेश्या।

सं० रामचन्द्र (राम + चन्द्र, अर्थात् चाँद के ऐसे सुखदायी राम) पु० विष्णु का सातवाँ अवतार, श्रीरघुनाथ, राजा दशरथ के बड़े बेटे। प्रा० रामतुरई स्त्री० एक तरकारी का नाम।

सं० रामदूत (राम + दूत) पु० रामचन्द्र का दूत, हनुमान्।

प्रा० रामदोहाई स्त्री० राम की सौगन्द, परमेश्वर की शपथ।

प्रा० रामानन्दी (सं० रामानन्दीय) पु० रामानन्द के मत को मानने वाला, वैष्णव।

सं० रामा (रम्=खेलना) स्त्री० सुन्दर स्त्री, मनोहर नारी, सुघर लुगाई, गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन।

सं० रामायण (राम=रामचन्द्र, अयन=जगह या रस्ता, अथवा चरित्र) स्त्री० रामचरित्र, रामकथा। प्रा० रामावत पु० एक तरह के वैष्णव साधु, साध।

प्रा० राय } (सं० राजा) पु० राजा,
राव } २ राय, हिन्दुओं में और विशेष करके कायर्थों में एक पदवी होती है।

प्रा० रायता पु० एक तरह की तरकारी जो दही में कढ़ू आदि मिलाने से बनती है।

प्रा० रायमुनि पु० एक प्रकार का लाल पत्थर।

अं० रायलकमीशन राजा की ओर
से कुछ मनुष्य किसी कार्य के
निर्णयार्थ नियत किये जावें ।

अं० रायलफैमिली राजवंश, राज
कुटुम्ब, शाहीघराना, शाहीखान-
दान ।

प्रा० रार } स्त्री० लड़ाई, भगड़ा,
रारि } कलह, दंगा, फसाद ।
राड़ }

सं० राल (रा=देना) स्त्री० धूना,
एक तरह का गोंद ।

प्रा० रावचाव पु० रागरंग, विलास,
आनन्द, हर्ष, भोगविलास, २
प्यार, प्रीति, लाग, लगाव ।

प्रा० रावनी स्त्री० एक तरह का डेरा ।

सं० रावण (रु=शब्द करना या
रुलाना, वैरियों को) पु० लङ्का
का राजा जिसको श्रीरामचन्द्र ने
मारा ।

सं० रावणारि (रावण + अरि)
पु० श्रीरामचन्द्र ।

प्रा० रावत } पु० वीर, बहादुर,
राउत } शूरमा, सावन्त, ल-
ड़ाका, शूरवीर, २ एक नीच जाति
जो भंगी के बराबर है ।

प्रा० रावरा }
रावरो } सर्वना० तुम्हारा,
राउर } आपका ।
रौरा }

सं० राशि (अश्=फैलना वा फै-

लाना) स्त्री० धान आदि का ढेर,
समूह, २ ज्योतिष में मेष, वृष,
मिथुन आदि बारह, ३ हिसाब में
एक प्रकार का अङ्क ।

सं० राशिचक्र (राशि + चक्र) पु०
ज्योतिषिक, लग्नमण्डल, द्वादशभाव ।

सं० राष्ट्र (राज्=शोभना, चमकना)
पु० बसा हुआ देश, मुल्क ।

प्रा० रास (रश्मि) स्त्री० डोर, बाग,
जैसे घोड़े की रास ।

सं० रास (रास्=शब्द करना) पु०
खेल, क्रीड़ा, नाच, जैसे श्रीकृष्ण
ने गोपियों के साथ किया था ।

सं० रासन भा० पु० रसनाजन्म-
ज्ञान, जीभका स्वाद ।

सं० रासभ (रास=शब्द करना)
पु० गधा, खर, गर्दभ ।

सं० राहु (रद्=झोड़ना) आठवां
ग्रह ।

सं० राहुग्रस्त } (राहु + ग्रस्त वा
राहुग्रास } ग्रास) पु० चाँद
सूर्य का ग्रहण ।

सं० रिक्त } (रिच् + त, रिच्=
रिक्तक } खाली करना) गु०
खाली, खूँझा, शून्य, खिन्न, भिन्न ।

अं० रिग्युलेशन मंजूरी कानून,
व्यवस्था स्वीकार कराना, प्रस्ता-
विक विषय ।

प्रा० रिभाना (सं० रञ्जन) क्रि०

सं० प्रसन्न करना, खुश करना ।

सं० रिपु (रप्=बुरी बात कहना)
पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

सं० रिपुञ्जय (रिपु=वैरी को, जि=
जीतना) पु० एक राजा का नाम,
गु० वैरी को जीतनेवाला ।

सं० रिपुता स्त्री० शत्रुता, दुश्मनी,
अदावत ।

सं० रिपुसूदन (रिपु=वैरी, सूद्=
नाश करना) क० पु० शत्रुघ्न,
श्रीरामचन्द्र का भाई, लक्ष्मण का
छोटा भाई ।

अं० रिप्रिज्यएटेडिवसिस्टम सा-
धारण प्रजाजन अपने समूह से
सज्जनों को अपने अनुशासन के
हेतु अनुशासक नियत करने हैं ।

अं० रिफार्मर (री=द्वारा, फार्मर=
सुधारनेवाला) क० पु० संशो-
धक, देशदशा का दुबारा सुधा
करनेवाला ।

प्रा० रिस (सं० रोष) स्त्री० कोप,
क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट ।

प्रा० रिसाना { (सं० रूप्=कोप
रिसियाना { करना) क्रि०अ०
कोपना, खिसियाना, क्रोधित होना,
गुस्सा होना, अप्रसन्न होना ।

अं० रिस्पॉन्ड अनुयोज्य, वह जिस
पर अपील की जाय ।

सं० रिष्ट (रिष्+त) पु० मङ्गल,
कल्याण, २ अशुभ, पाप, नाश,
गु० पुष्ट, दृढ़, कठोर ।

सं० रिष्टि (रिष्+ति) स्त्री० शुभ,
अशुभ नाश, पु० खदग, तलवार ।

प्रा० रींगना (सं० रिग्=जाना)
क्रि० अ० चलना, रेंगना, धीरे
धीरे चलना ।

प्रा० रींछ { (सं० ऋक्ष, ऋष्=
रींछ { जाना) पु० भालू, एक
जङ्गली जानवर का नाम ।

प्रा० रींधना (सं० रन्धन, रन्ध्=
पकना) क्रि०स० पकाना, रींधना ।

प्रा० रीभना (सं० रञ्जन) क्रि०
अ० प्रसन्न होना, खुश होना,
प्यार करना ।

प्रा० रीढ़ पु० पीठ के बीच की हड्डी ।

प्रा० रीता (सं० रिक्त, रिच्=खाली
करना) गु० खाली, बूँछा, शून्य ।

प्रा० रीत { (री=जाना) स्त्री० चाल,
सं० रीति { ढाल, प्रकार, प्रचार,
रसम, कायदा, स्वभाव, पीतल,
प्रस्ताव, टपकना, लोहकिट्ट, सीमा,
गति, स्वभाव, लोकाचार ।

प्रा० रीस (सं० रोष) स्त्री० क्रोध,
कोप, गुस्सा ।

सं० रुक (रुच्=चाहना) पु० रोग,
२ उदार, दाता, ३ दीप्ति, प्रकाश ।

सं० रुकना (सं० रुध्=रोकना) क्रि०
अ० अटकना, बन्द होना ।

प्रा० रुक्म (सं० रुक्मी, रुच्=चम-
कना वा प्यार करना) पु० राजा
भीष्मक का बड़ा बेटा और रुक्मिणी

- का भाई और श्रीकृष्ण का साला जिसको बलदेवजीने मारा ।
- सं० रुक्मिणी (रुच्=चमकना वा प्यार करना) स्त्री० लक्ष्मी का अवतार, कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की बेटी जो श्रीकृष्ण को व्याही गई थी और पहले जन्म में सीता थी ।
- सं० रुक्ष (रुक्ष=रूखा होना) रुक्ष } गु० अचिक्रण, निस्स्नेह, कठोर, रूखा ।
- प्रा० रुख पु० सन्मुख, क्रोध, मुँह, शतरंज का प्यादा, इशारा, दया-दृष्टि, मेहरबानी की नज़र ।
- प्रा० रुखाई (रूखा) भा० स्त्री० रुखावट, सुखावट, २ घुरकी, भिड़की, धमकी ।
- सं० रुचक (रुच्=मीति करना) पु० सज्जीखार, माङ्गल्यद्रव्य, उत्कट, अश्वभूषण, माला, हींग, काला नोन, बीजपूर नींबू, दल, निष्क, कपोत, गु० हर्षित, प्रसन्न ।
- प्रा० रुचना (सं० रोचन, रुच्=प्यार करना वा चाहना) क्रि० अ० भाना, अच्ञा लगना, पसंद आना ।
- सं० रुचि (रुच्=चमकना वा प्यार करना) भा० स्त्री० चाह, इच्छा, अभिलाषा, स्पृहा, चोप, शौक, २ खाने की इच्छा, भोजन करने की इच्छा, ३ चमक, शोभा, ४ प्यार, अनुराग ।
- सं० रुची क० स्त्री० पसंद, प्रवृत्ति ।
- सं० रुचिर (रुचि=चाह वा प्यार, रा=देना) गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २ मीठा, सुस्वादु ।
- सं० रुच्य } गु० सुन्दर, रुचिकर, रुचिष्य } मधुर, स्वादुयुक्त, मनोहर, पसन्दीदा ।
- सं० रुज् (रुज्=बीमार होना) पु० रुजा } रोग, बीमारी ।
- सं० रुण्ड (रुट् या रुट्=मारना) पु० धड़, बिन शिरकी देह ।
- सं० रुदन (रुद्=रोना) पु० रोना, आँसू बहाना, विलाप, गिरियाव-जारी करना ।
- सं० रुद्र (रुध्=रोकना) र्म्यं पु० रुका हुआ, रूँका हुआ, अटका हुआ, बँधा हुआ ।
- सं० रुद्र (रुद्=रोना वा शब्द क-रना) पु० शिव, महादेव की ग्या-रह मूर्ति, अजैकपाद्, अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष, सुरेश्वर, जयन्त, बहुरूप, अम्बक, अपराजित, सावित्र, हर, रुद्र, ?? संख्या ।
- सं० रुद्राकीड़ पु० श्मशान ।
- सं० रुद्राक्ष (रुद्र=शिव, अक्ष=आँख अर्थात् जिसका रूप शिव की आँखों के ऐसा होता है) पु० एक वृक्ष जिसके दानों की माला बनती है ।
- सं० रुद्राणी (रुद्र) स्त्री० शिवा,

दुर्गा, पार्वती, शिवरानी ।
 सं० रुधिर (रुध्=रोकना) पु०
 लोहू, लहू, खून, रक्त, मङ्गलग्रह,
 रक्तवर्ण ।
 प्रा० रुपया { (रूपा) पु० रूपे का
 रुपैया { एक सिका जो सोलह
 आने के बराबर होता है ।
 सं० रुमा स्त्री० सुग्रीव की स्त्री ।
 सं० रु० पु० मृगभेद, दैत्य, सर्प,
 अतिकूर ।
 सं० रुष् { स्त्री० क्रोध, कोप, आमर्ष ।
 रूषा }
 सं० रुषित क० पु० क्रोध भरा हुआ ।
 सं० रुष्ट क० पु० क्रुद्ध, क्रोध भरा
 हुआ ।
 प्रा० रूंगटा (सं० रोम) पु० रों,
 बाल, रूँवा, -रूँगटे खड़े होना,
 बोल० डरसे या जाड़े के मारे बाल
 खड़े होना, डरना ।
 प्रा० रूख (सं० रुक्ष, रुक्ष्=कड़ा
 होना) पु० पेड़, वृक्ष, तरवर, तरु,
 दरार ।
 प्रा० रूखा (सं० रुक्ष, रुक्ष्=कठोर
 होना) गु० रूखा, फीका, बेरस,
 २ जो चिकना न हो, खुदखुड़ा,
 कड़ा, ३ निर्दय, कठोर, क्रूर ।
 प्रा० रूखासूखा बोल० सादा, बे
 स्वाद खाना, २ कड़ा, कठोर बात ।
 प्रा० रूखानी { स्त्री० टाँकी, बेनी ।
 रूखानी }

प्रा० रूठना (सं० रुष्ट, रुष्=क्रोध
 करना) क्रि० अ० अप्रसन्न होना,
 नाराज होना, बिगड़ना ।
 सं० रूढ़ (रुद्=पैदा होना) क०
 पु० पैदा हुआ, जमा हुआ, उत्पन्न,
 २ प्रसिद्ध ।
 सं० रूढ़ि (रुद्=पैदा होना) स्त्री०
 उत्पत्ति, पैदा होना, जन्म, २ प्र-
 सिद्धि, ३ ऐसा शब्द जो किसी से
 बना न हो और उसका अर्थ उसी पद
 में रहे जैसे “त्रिफला” यह रूढ़ि है ।
 सं० रूप (रूप्=डौल बनाना) पु०
 आकार, डौल, मूरत, शकल, २
 शोभा, स्वरूप, सुन्दरता, ३ रीति,
 ढव, प्रकार, भाँति, जाल, तरह ।
 सं० रूपक (रूप्=डौल बनाना)
 पु० नाटक, २ रूप, मूरत, ३ एक
 अलंकार का नाम ।
 सं० रूपनिधान (रूप + निधान)
 पु० सुन्दरता का घर अर्थात्
 बहुतही सुन्दर ।
 सं० रूपराशि स्त्री० सुन्दरता का
 समूह, मखजनुलजमाल, रूप का
 खजाना ।
 सं० रूपवती (रूप + वती) स्त्री०
 सुन्दर स्त्री, मनोहर स्त्री ।
 सं० रूपसागर (रूप + सागर) पु०
 रूप का समुद्र, बहुतही सुन्दर ।
 प्रा० रूपा (सं० रूध्य, रूप) पु० चाँदी ।
 प्रा० रूमाल पु० मुँह पोछने का

कषड़ा, उपवस्त्र ।
 सं० रूपी क० स्त्री० रूपवाली ।
 प्रा० रुरी गु० स्त्री० सुन्दर ।
 प्रा० रूसना (सं० रोषण, रूष्=
 क्रोध करना) क्रि० अ० क्रोधित
 होना, रिसाना, २ अप्रसन्न होना,
 नाराज होना, रूठना ।
 प्रा० रेंकना क्रि० अ० गधे का
 बोलना ।
 प्रा० रेंगना (सं० रिग्=जाना) क्रि०
 अ० धीरे धीरे चलना, रींगना ।
 प्रा० रेंड, पु० { (सं० एरएड)
 रेंडी, स्त्री० { एरएड का पेड़ ।
 प्रा० रेख (सं० रेखा) स्त्री० लकीर, खता
 सं० रेखा (लिख्=लिखना) स्त्री०
 लकीर, रेख, २ लिखना, ३
 प्रारब्ध, भाग ।
 सं० रेचक (रिच् + अक, रिच्=जुदा
 करना) क० पु० दस्तकारक, जुलाब,
 पु० निशोत, भटकटैया, जयपाल,
 जमालगोटा ।
 सं० रेचन (रिच् + अन) भा० पु०
 मलभेदन, दस्त कराना, जुलाब
 देना ।
 अ० रेजीड्यण्ट राजदूत, वकील-
 शाही, सफ़ीर ।
 सं० रेणु (रि=जाना) स्त्री० रेत, धूलि ।
 सं० रेणुका (रि=जाना) स्त्री०
 सुगन्धित चीज़, २ जमदग्नि ऋषि
 की लुगाई और परशुरामजी की माँ ।

प्रा० रेत स्त्री० धूलि, रज, बालू,
 २ चूर, रेतन ।
 प्रा० रेतना (रेत) क्रि० स० धि-
 सना, सोहनकरना, रद्दा फेरना,
 २ घोटना, चिकना करना, ओपना ।
 सं० रेतस पु० पाराधातु, वीर्य, शुक्र ।
 प्रा० रेती (रेत) स्त्री० नदी के तीर
 पर की रेतीली धरती, बालू,
 २ सोहन, रेतने का औज़ार ।
 सं० रेप (रेप्=शब्द करना) गु०
 निन्दित, क्रूर, कृपण ।
 सं० रेफ (र) पु० रकार, र अक्षर
 जो दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलता
 है तब उसका रूप (^९) ऐसा
 होता है जैसे क, २ कुत्सित, अधम ।
 प्रा० रेलना क्रि० स० ठेलना,
 पेलना, ढकेलना ।
 प्रा० रेलपेल स्त्री० भीड़, धूम धाम,
 २ बहुतायत ।
 प्रा० रेचड़ी (एक तरह की खाने की
 मीठी चीज़, खुटिया ।
 अ० रेवन्यु माल का काम ।
 अ० रेवन्युबोर्ड शुल्क सम्बन्धी सभा,
 चुंगी के हाकिमों का दरबार ।
 प्रा० रेचड़ीके फेरमें पड़ना बोल०
 कठिनता में फँसना, पेचमें आना ।
 सं० रेवती (रेवत) स्त्री० रेवत
 राजा की बेटी और बलदेवजी की
 स्त्री, २ (रेव्=जाना) सत्ता-
 ईसवाँ नक्षत्र ।

सं० रेवतीरमण (रेवती + रमण)

पु० बलदेव, बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।

सं० रेवा (रेव्=बहना या उछल के चलना) स्त्री० नर्मदा नदी ।

प्रा० रेह स्त्री० एक तरह का खार जो कपड़ों के धोने और साबुन के बनाने में काम आता है ।

सं० रै पु० धन, स्वर्ग, अर्थ, विभव ।

प्रा० रैन (सं० रजनी) स्त्री० रात ।

सं० रैवत पु० द्वारका के समीप पर्वत, महादेव, चौदह मनु में का एक मनु, रेवती का पिता, बलदेव का श्वशुर ।

प्रा० रोआँ (सं० रोम) पु० शरीर रोवाँ) परके बाल, रऊन, रोएँ ।

प्रा० रोंगटी स्त्री० छल से भूठ को सच और सच को भूठ बताना, हथफेर, छलविद्या ।

प्रा० रोक (सं० रोक, रुच्=चा-रोकड़) हना वा प्यार करना) पु० नक़द, नक़दी ।

प्रा० रोकड़िया (रोकड़) पु० खजानची, कोठारी ।

प्रा० रोकना (सं० रोधन, रुध्=रोकना) क्रि० स० अटकाना, धेर लेना, बंद करना, थामना, र मना करना, र बात काटना ।

सं० रोग (रुज्=बीमार होना) पु० बीमारी, पीड़ा, व्याधि, दुःख ।

सं० रोगी (रोग) क० पु० बीमार, दुःखी, पीड़ित, मरीज ।

सं० रोचक (रुच्=चाहना, प्यार करना)गु० चाह करानेवाला, रुचि करानेवाला, पाचक, पु० भूख, क्षुधा ।

सं० रोचन भा० पु० तरगीब, पसंद ।

सं० रोचनीय र्म० पु० मरगब, पसंदीदा, स्पृहाजनक ।

सं० रोचिष्णु क० पु० दीप्तिमान्, प्रकाशित ।

प्रा० रोभ्र (सं० ऋष्य, ऋष्=जाना) पु० एक जानवर का नाम ।

प्रा० रोट (सं० रोटिका या रोटी) पु० मोटी रोटी, जो हनुमान् को चढ़ाते हैं ।

प्रा० रोटा (सं० रोटिका या रोटी) पु० मोटी रोटी ।

सं० रोटिका (रुट्=ठोकना या रोटी) काटना) स्त्री० गेहूँ के आटे की बनी हुई खाने की चीज, फुलका ।

अं० रोड मार्ग, सड़क ।

प्रा० रोड़ा पु० बड़ा कंकड़, ईंट का बड़ा टुकड़ा ।

सं० रोदन (रुद्=रोना) भा० पु० रोना, रुदन ।

सं० रोद्धा (रुध्=रोकना, ढापना) क० पु० रोकनेवाला ।

सं० रोध भा० पु० तट, किनारा ।

प्रा० रोना (सं० रोदन) क्रि० अ०

आँसू बहाना, विलाप करना, बिलखना, चिझाना, २ उदास होना, नाराज़ होना, ३ पु० विलाप, रुदन, दुःख, शोच ।

प्रा० रोपना (सं० रोहण, रुह=जगना) क्रि०स० बोना, जमाना, उगाना ।

सं० रोपयिता क०पु०लगानेवाला, जमानेवाला ।

सं० रोम (रु=शब्दकरना या रुह=उगना, जो देह पर उगते हैं) पु० लोम, बाल, केश, रोवाँ, रोआँ ।

सं०रोमाश्च भा०पु०रोम खड़ाहोना ।

अ० रोमनकैथोलिक क०पु० ईसा के चित्रके पूजनेवाले ।

सं० रोमन्थ पु० राउंथ, पगुराना, दाबी वस्तु को चाबना ।

सं० रोमपाट पु० दुशाला, कम्बल ।

सं० रोमहर्षण पु० रोमाञ्च, रोम खड़े होना, सूत, व्यासशिष्य, बहेरा वृक्ष ।

सं० रोमाञ्चित (रोम=बाल, अञ्च्=जाना) गु० बहुत खुशी या हारसे शरीर के रोएँ खड़े होना, पुलकित, हर्षित ।

सं० रोमावली (रोम + अवली) स्त्री० रोएँ की धारी जो नाभि के बीच में से होकर जाती है ।

प्रा० रोली स्त्री० कुंकुम या जिसका रोचना किया जाता है ।

सं० रोष (रुष्=क्रोध करना) पु० कोप, रिस, क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट ।

सं० रोह पु०कली, कुद्मल, रोहण, ऊपर जाना ।

सं० रोहण भा०पु० चढ़ाव, वृद्धि, वृक्ष, चढ़ना ।

सं० रोहिणी (रुह=पैदा होना) स्त्री० चौथा नक्षत्र, २ चाँद की स्त्री, ३ रोहण राजा की बेटी, वसुदेवजी की स्त्री और बलदेव जी की माँ ।

सं० रोहिणीपति(रोहिणी + पति) पु० चाँद, २ वसुदेव जी ।

सं० रौद्र (अर्थात् जिसका देवता रुद्र है) गु० हरावना, भयानक, पु० क्रोध, कोप, २ धूप ।

प्रा० रौतार्ह भा०स्त्री०ठकुरार्ह, शूरता ।

प्रा० रौना पु० (त्रिरागमन) गौने के पीछे अपनी स्त्री को उसके बाप के घर से अपने घर में लाना ।

सं० रौप्य पु० रजत, चाँदी ।

प्रा० रौर (सं० रव) पु० शब्द, रौला, शोर, गुल, गपाड़, २ यश, नामवरी ।

सं० रौरव (रु=शब्द करना या रोना, जहाँ पापी रोते हैं) पु०एक नरक का नाम, गु० भयानक ।

प्रा० रौला (सं० राव, रु=शब्द करना) पु० धूमधाम, हुल्लाह,

बखेड़ा, गुल, गपाड़ ।

ल

सं० ल (ला=लेना वा लू=काटना)

पु० इन्द्र, २ मन्त्र, ३ काटना, ४ दीप्ति, प्रकाश, ५ आह्लाद, ६ वायु ।

प्रा० लकड़ (सं० लगुड) पु०

लकड़ी, लाठी, लट्ट ।

प्रा० लकड़ी (सं० लगुड) स्त्री०

काठ, इन्धन, जलावन, २ सोंटा, लट्ट, लाठी, लठिया ।

प्रा० लकीर (सं० लेखा, लिख्=

लिखना) स्त्री० रेखा, लीक, धारी, डंडीर ।

प्रा० लकुट (सं० लगुड, लग्=

मिलना वा पाना) पु० लाठी, लकड़ी, छड़ी ।

सं० लक्त पु० लाही, महावर ।

सं० लक्ष (लक्ष्=देखना, चिह्नकरना)

पु० एक लाख, सौ हजार, २ बल, बहाना, ३ चिह्न ।

सं० लक्षक (लक्ष् + अक) क०

पु० दर्शक, दिखानेवाला ।

सं० लक्षण (लक्ष्=देखना या

चिह्न करना) पु० चिह्न, पहचान, तारीफ, नाम, गुण, २ श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई, लक्ष्मण, सुमित्रा का बेटा ।

सं० लक्षित (लक्ष्=चिह्न करना,

देखना) र्भ० पु० देखा हुआ, जाना हुआ, २ चिह्न किया हुआ ।

सं० लक्षणा भा० स्त्री० अध्याहार, जो ऊपर से लिया जाय ।

सं० लक्ष्मण (लक्ष्=देखना, चिह्न करना) पु० दशरथ राजा का बेटा जो सुमित्रा से पैदा हुआ, श्रीराम-चन्द्र का छोटा भाई ।

सं० लक्ष्मणा (लक्ष्=देखना, चिह्न करना) स्त्री० मद्रदेशके राजा की बेटी और श्रीकृष्ण की पत्नी, २ दुर्योधन की बेटी जो श्रीकृष्ण के बेटे साम्ब को ब्याही थी ।

सं० लक्ष्मी (लक्ष्=देखना, चिह्न करना) स्त्री० विष्णुपत्नी, धन की देवता, हरिप्रिया, पद्मा, कमला, श्री, इन्दिरा, लोकमाता, रमा, हरिवल्लभा, २ सम्पदा, सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, ३ शोभा, सुन्दरता ।

सं० लक्ष्मीकान्त (लक्ष्मी + कान्त) पु० विष्णु, नारायण, रमेश ।

सं० लक्ष्मीनाथ (लक्ष्मी + नाथ) पु० विष्णु, नारायण, माधव ।

सं० लक्ष्मीपति (लक्ष्मी + पति) पु० विष्णु, नारायण, रमानाथ ।

सं० लक्ष्मीवान् (लक्ष्मी + वत्) पु० धनवान्, संपदावाला, दौलतमन्द, श्रीमान्, श्रीयुत ।

सं० लक्ष्म भा० पु० चिह्न, निशान ।

सं० लक्ष्य (लक्ष्=देखना, चिह्न करना वा निशान करना) पु०

निशाना, ताक, र्म० जो जाना जाय, जो देखा जाय, देखने योग्य, साजिश ।

प्रा० लखन (सं० लक्षण) पु० लक्षण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।

प्रा० लखना (सं० लक्षण, लब्ध=देखना) क्रि०स० देखना, भालना, ताकना, २ जानना, समझना, पहचानना ।

प्रा० लखपति (सं० लक्षपति) पु० धनी, धनवान्, जिसके घर में लाख रुपये हों, लखिया ।

प्रा० लखेरा (लाख) पु० लाख की चूड़ी आदि बनानेवाला ।

प्रा० लग (सं० लग्-मिलना) नित्य, तक, लौं, पास, जबतक ।

प्रा० लगभग बोल० आसपास, अनुमान, करीब ।

प्रा० लगना (सं० लग्=मिलना) क्रि० अ० जुड़ना, चिपकना, मिलना, सटना, २ किसी काम का शुरू होना या करना, ३ नियुक्त होना, किसी काम में तत्पर होना, ४ पहुँचना, फैलना, ५ सोहना, फबना, ठीक होना, ६ मालूम होना, ७ सम्बन्ध रखना, लगाव रखना ।

प्रा० लगातार क्रि० वि० या गु० बराबर, निरन्तर, एक पर एक ।

प्रा० लगाव (लगना) भा० पु०

मेल, लाग, जोड़ ।

प्रा० लागि लिये, वास्ते, २ तक, तक ।

प्रा० लगगा पु० लाग, मेल, प्यार, प्रेम, प्रीति, २ एक डंडा जिससे नाव चलाई जाती है ।

प्रा० लगगा न खाना बोल० बराबर न होना, उपमा या बराबरी के योग्य न होना ।

प्रा० लगगी स्त्री० बाँस का डंडा ।

सं० लग्न (लग्=मिलना वा पास होना) पु० मेष आदि राशियों का उदय, मुहूर्त, सायत, क० लगा हुआ, मिला हुआ ।

सं० लग्नक पु० प्रतिभू, जामिन ।

सं० लघिमा स्त्री० (लघु)छोटा-लघिमन् पु०) पन, हलका-पन, लघुता, लाघव, २ आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि ।

सं० लघिष्ठ गु० लघु, छोटा ।

सं० लघु (लघि=जाना, छोटा होना) गु० हलका, २ छोटा, ३ शीघ्र । उतावला, ४ सुन्दर, मनोहर, ५ नीचा, नीच, ६ पु० ह्रस्व स्वर, एकमात्रिक स्वर ।

सं० लघुकाय (लघु=छोटा, काय=शरीर) पु० छाग, बकरा, सूक्ष्म शरीर ।

सं० लघुता (लघु)भा० स्त्री० हलकाई, छोटापन, छुटाई, निचाई ।

सं० लघुहस्त पु० अलाहस्त, सु-
बुद्धस्त ।

सं० लघ्वी स्त्री० सूक्ष्माङ्गी, नागनी ।

सं० लङ्का (लक्=स्वाद लेना या
पाना) स्त्री० रावण की राजधानी ।

सं० लङ्कापति (लङ्का + पति) पु०
रावण, २ विभीषण ।

सं० लङ्केश { (लङ्का + ईश वा
लङ्केश्वर) ईश्वर) पु० रावण,
२ विभीषण ।

फ्रा० लंगर पु० जहाज आदि को
ठहरानेके लिये एक लोहे की चीज ।

प्रा० लंगूर (सं० लाङ्गूली) पु०
बन्दरकी जाति का एक जानवर
जिसकी पूंछ लम्बी होती है और
मुँह काला होता है, लखुवावाँदर ।

प्रा० लंगोट पु० }
लंगोटा पु० } कोपीन, कछनी ।
लंगोटी स्त्री० }

प्रा० लंगोटचन्द बोल० वह आदमी
जो ब्याह न करे ।

प्रा० लंगोटियाघार बोल० बालक-
पन का पुराना मित्र ।

सं० लङ्घक (लङ्घ + अक) क० पु०
नौघनेवाला, पारहोनेवाला ।

सं० लङ्घन (लघि=पार होना या
लौघना) पु० लौघना, पार होना,
उद्वलना, २ उपास, कड़ाका,
फाका ।

सं० लङ्घित (लङ्घ + इत) र्भ्य० पु०

अतिक्रान्त, उल्लङ्घित, पार होगया ।

प्रा० लचक (लचकना) भा० स्त्री०
लचीलापन, झुकाव ।

प्रा० लचकना क्रि० अ० जोर पड़ने
से झुकजाना और जब वह जोर
न रहे तब पीछे उभरआना ।

प्रा० लच्छुन पु० लक्षण शब्द को
देखो ।

प्रा० लच्छा पु० रंगेहूँ सूत की
आँटी ।

प्रा० लछन (सं० लक्षण) पु०
लक्ष्मण ।

प्रा० लछमण (सं० लक्ष्मण) पु०
लक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र का छोटा
भाई ।

प्रा० लछमी { (सं० लक्ष्मी) स्त्री०
लछि { लक्ष्मी शब्दको देखो ।

प्रा० लजाना (लज्जा) क्रि० अ० श-
र्माना, लाज करना, संकोच करना ।

प्रा० लजालू (सं० लज्जालू) गु०
शर्मीला, लज्जित, पु० बूई मुई का
पेड़, जिसके पास अंगुली ले जाने
से उसके पत्ते भिड़ जाते हैं ।

सं० लज्जा (लज्ज=शरमाना) स्त्री०
लाज, शर्म, संकोच ।

सं० लज्जारहित (लज्जा + रहित)
गु० निर्लज्ज, बेशर्म ।

सं० लज्जाशील गु० लज्जायुक्त ।

सं० लज्जित (लज्जा) क० पु० श-
र्मीला, शर्मिन्दा, लजालू, संकोची ।

सं० लञ्जिका (रञ्ज=भासना) स्त्री०
वेश्या, पुंश्चली, पु० २ मस्तक,
कपाल, ३ चोर, ४ बेणी, ५
पिण्ड, ६ उक्ति ।

प्रा० लट स्त्री० लटूरी, उलभेवाल,
जटा, २ एक जानवर का नाम ।

प्रा० लटक भा० स्त्री० मटक, चटक,
नखरा, आन, मान, चोंचला ।

प्रा० लटकचाल स्त्री० नखरेकी चाल ।

प्रा० लटकन (लटकना) स्त्री०
लटकती हुई चीज, झूला, २
भूमका, कुण्डल, ३ एक फूल
जिससे कपड़े पीले रंगे जाते हैं, ४
एक हरे रंग के पखेरू का नाम जो
अपने पैरों से बहुत बार लटका
रहता है, ५ लकड़ी की एक चीज
जिस पर पानी का लोटा भारी
आदि रखते हैं, बोल० पुच्छला,
भुलभुल जो पतङ्ग और कनकौआ
में नीचे लटका करती है ।

प्रा० लटकना क्रि० अ० झूलना
टँगना, २ पीछे रहजाना ।

प्रा० लटका पु० मन्त्र, भाड़फूंक,
टोना, टोटका, चुटकुला, जादू ।

प्रा० लटपटा गु० खिलाड़, चञ्चल,
२ उलट पुलट, लपेटी हुई
(पगड़ी) ।

प्रा० लटूरिया (स्त्री० लट, जुल्फ,
लटूरी) छोटे छोटे उलभे
बाल ।

प्रा० लट्टू पु० लड़कों के एक खि-
लौनेका नाम, लट्टू होना, बोल०
मोहित होना, किसी के प्यार में
फँसना ।

प्रा० लठ (सं० यष्टि) पु० सोंटा,
लाठी ।

प्रा० लठियाना क्रि० स० लाठीसे
मारना, लाठी मारना ।

प्रा० लड़ स्त्री० लड़ी (मोती आदि
की) रांत, जत्था, दल, धड़ा,
टोली ।

प्रा० लड़का (सं० लड=खेलना)
पु० बालक, छोहरा, छोकरा, २
बेटा ।

प्रा० लड़कावाला (बोल० बाल,
लड़कालड़की) बच्चा, बेटाबेटी ।

प्रा० लड़काई (लड़का) भा० स्त्री०
लड़कपन, बालकपन ।

प्रा० लड़खड़ाना क्रि० अ० डग-
मगाना, डिगना, २ हकलाना ।

सं० लड़न भा० स्त्री० लड़ाई करना,
भगड़ा करना ।

प्रा० लड़ना (सं० लड=जीभ हि-
लाना) क्रि० अ० लड़ाई करना,
भगड़ना, बखेड़ा करना, युद्ध
करना ।

प्रा० लड़ाई भा० स्त्री० भगड़ा,
बखेड़ा, युद्ध, जंग ।

प्रा० लड़ाईकरना बोल० भगड़ना,
लड़ना, बखेड़ा करना, युद्ध करना ।

प्रा० लड़ाक } (लड़ना) गु० लड़ने
 लड़ाका } वाला, लड़ाई करने
 वाला, भगड़ालू, बखेड़िया ।
 प्रा० लड़ियाना क्रि० स० परोना,
 गूथना, पोना ।
 प्रा० लड़ी स्त्री० मोतियों की पाँति ।
 प्रा० लड्डू (सं० लड्डुक, लडू=चा-
 हना, विलास करना) पु० लाडू,
 मोदक, मोतीचूर-मन के लड्डू
 खाना, बोल० मनही मन में ऐसी
 बातों का विचार बाँधना जो हो
 नहीं सकती ।
 प्रा० लंठ गु० मूर्ख, गँवार, अनपढ़ ।
 प्रा० लंछूरा गु० बाँड़ा, बिन पूँछ
 का, २ बेमित्र, मित्रों से छोड़ा
 हुआ, तनहा, अकेला ।
 प्रा० लत स्त्री० बुरीचाल, कुटेव, २
 लहर, तरंग, ३ लात ।
 प्रा० लत (सं० लता) स्त्री० बेल,
 बेली ।
 सं० लता (लत=उलझना वा चोट
 करना) स्त्री० बेल, बेलड़ी, बेली,
 माधवी, निवाड़ी, बेला, दुर्वा ।
 सं० लतातरु पु० शालवृक्ष, नारंगी
 वृक्ष, तालवृक्ष, खजूर ।
 सं० लतापनस पु० कालिंग, तरबूज,
 खरबूजा ।
 सं० लतामणि पु० प्रवाल, मूंगा ।
 प्रा० लत्ता (फ्रा० लचह) पु० ची-
 थड़ा, फटापुरानाकपड़ा, २ ज्योतिष

में एक योग का नाम ।
 प्रा० लथड़ना क्रि० अ० कीचड़ से
 भीगना या कीचड़ लगजाना ।
 प्रा० लदना क्रि० अ० लादाजाना ।
 प्रा० लप स्त्री० मुट्ठीभर, मुकाभर ।
 प्रा० लपकना क्रि० अ० लहकना,
 तेजचलना, चमकना, २ उञ्जलना,
 कूदना ।
 सं० लपन (लप्+अन, लप्=कहना)
 पु० कथन, मुख, आस्य, वचन ।
 प्रा० लपका पु० झपट, २ फुर्ती, ३
 चाट, बुरीचाल, चसका ।
 प्रा० लपट स्त्री० महक, वास, सुगन्ध,
 २ दहक, लहर, भभक, लूका ।
 सं० लपित र्म० पु० कहा हुआ ।
 प्रा० लप्पा पु० पट्टा, गोटा, किनारी ।
 प्रा० लवार (सं० लप्=बकना) पु०
 झूठा, गप्पी, बहुत बोलनेवाला ।
 सं० लब्ध (लभ्=पाना) र्म० पु०
 पाया हुआ, प्राप्त ।
 सं० लब्धवर्ण पु० पण्डित, शास्त्री,
 विचक्षण ।
 सं० लब्धि स्त्री० प्राप्ति, स्वारिज
 क्रिस्मत ।
 सं० लभ्य (लभ्=पाना) र्म० पु०
 पानेयोग्य, मिलनेयोग्य, हासिल ।
 प्रा० लमकाना } (सं० लम्बकर्ण)
 लमहा } पु० शशा, खरहा,
 लम्भा } खर्गोश, बकरा,
 गणेश, हाथी ।

सं० लम्पट (रम्=खेलना) गु०
व्यभिचारी, कुकमी, रंडीबाज,
लुब्धा, २ भूठा ।
सं० लम्फ भा० पु० मुतगति, लप-
कना, तेजचाल ।
सं० लम्ब (सं० लम्ब् ठहराना या
नीचे लटकाना) गु० ऊँचा, लम्बा,
बड़ा, फैला हुआ, पु० नर्तक,
नचैया, कान्त, उत्कोच, लोलुप,
आसक्त, २ स्त्री० नापविद्या में खड़ी
लकीर, अमूद ।
सं० लम्बक पु० विभाग, समय,
सारथी ।
सं० लम्बन भा० पु० मालाकार,
कण्ठा, हार, लम्बाई ।
प्रा० लम्बा (सं० लम्ब) गु० ऊँचा,
बड़ा ।
प्रा० लम्बाकरना बोल० फैलाना,
बढ़ाना, २ पीटना, मारना ।
प्रा० लम्बी सांसभरना बोल०
रोना, विलाप करना ।
सं० लम्बोदर (लम्ब + उदर) पु०
गणेशजी, गु० लम्बे पेटवाला ।
सं० लम्बोष्ठ (लम्ब + उष्ठ) पु०
लम्बा ऊँट ।
सं० लय (ली=मिलना) पु० लीन,
मिलना, मग्न होना, २ नाश,
प्रलय, ३ ढेर, ताल, स्वर ।
सं० लयपालक क० पु० राशि बैठा,
मुतबन्ना ।

प्रा० ललकना क्रि० अ० चढ़ना,
धारा मारना, क्रि० सं० चाहना ।
प्रा० ललकारना क्रि० सं० पुकारना,
हाँकना, बुलाना, साम्हने करना,
लड़ाई माँगना ।
प्रा० ललचाना (लालच) क्रि० अ०
तरसना, बहुत चाहना, लालसा
करना ।
सं० ललन भा० स्त्री० नारी, जिह्वा,
केलिकला ।
सं० ललना (लल्=चाहना) स्त्री०
लुगाई, नारी, स्त्री, कामिनी, सुन्दरी ।
प्रा० लला (सं० लल्=चाहना) पु०
लाल, बालक, गु० प्यारा, दुलारा,
लाइला ।
सं० ललाट (लल् वा लड्=चाहना
या खेलना) पु० शिर का अगला
भाग, भाल, २ कपाल, प्रालम्ब ।
सं० ललाम (लल्=चाहना) गु०
सुन्दर, मनोहर, २ पु० लाञ्छन,
चिह्न, ३ ध्वजा, पताका, ४ शृङ्ग, ५
प्रधान, ६ भूषण, ७ घोड़ा ।
सं० ललित (लल्=चाहना) गु०
सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २
चञ्चल, ३ कोमल, ४ प्यारा, ५
स्त्री० एक रागिणी का नाम ।
सं० ललिता (लल्=चाहना) स्त्री०
एक गोपी का नाम जिसने उद्धव
जी से बात चीत की थी ।
प्रा० लल्लोपस्तो पु० चाणूसी,

लुशामद ।

सं० लव (लू=काटना) पु० क्षण,
पल, निमेष, २ हिसाब में भिन्न
का अंश, भाग, ३ श्रीरामचन्द्र का
बड़ा बेटा, ४ लौंग ।

सं० लवङ्ग (लू=काटना) स्त्री०
लौंग, एक तरह की औषध ।

सं० लवण (लू=काटना) पु० लोन,
नोन, निमक, नमक, गु० खारा ।

सं० लवणसमुद्र (लवण + स-
लवणसागर) मुद्र वा सागर)
पु० खारासमुद्र ।

प्रा० लवा (सं० लाव, लू=काटना)
पु० बटेर, एक तरह का पखेरू ।

सं० लशुन पु० लहसन, लस्सुन ।

सं० लषित (लष्=चाँहना वा भला
दीखना) र्मपु० विलोकित, द-
र्शित, चाहा हुआ, २ शोभायमान ।

प्रा० लसना (सं० लस्=मिलना
वा खेलना वा चमकना) क्रि०
अ० सोहना, चमकना, फटना,
सजना, २ चमकना ।

प्रा० लसलसा गु० चिपचिपा,
लसीला ।

सं० लसा स्त्री० हरिद्रा, हल्दी, २
चिपटा हुआ ।

सं० लस्त क० पु० धकित, श्रमित ।

प्रा० लहँगा पु० घेंघरा ।

प्रा० लहकना क्रि० अ० चमकना,
फलकना, २ लहरना, लू का उ-

ठना, तपकना, ३ हिलना ।

प्रा० लहकौर (लेह + कवल) दही
बतासा जो बर को खियां खि-
लाती हैं ।

प्रा० लहना (सं० लभ्=पाना)
क्रि० स० लेना, पाना, जानना,
मालूम करना, २ पु० कर्ज, ऋण,
३ भाग, नसीबा, किस्मत ।

प्रा० लहर (सं० लहरि) स्त्री०
तरंग, हिलोरा, डेऊ, हिलकोर,
२ मनकी तरंग या मौज, ललक,
३ साँप के जहर चढ़ने से देह का
लहराना, ४ रंगने में अथवा कार-
चोबी में निकली हुई धारी ।

प्रा० लहरना क्रि० अ० हिलको-
रना, हिलना, डोलना, २ जलन
होना, ३ जलउठना ।

प्रा० लहराना क्रि० स० लल-
चाना, तरसाना, क्रि० अ० हिल-
कोरना, लहर उठना ।

प्रा० लहरिया (लहर) पु० एकतरह
का रँगा हुआ कपड़ा ।

प्रा० लहरी गु० तरंगी, चञ्चल, मौजी,
ओझा ।

प्रा० लहलहाना क्रि० अ० फफकना,
सरसब्ज होना, खिलना, विकसना,
फूलना, हरा होना, डहडहाना ।

प्रा० लहसन (सं० लशुन, लश=
मिलमा) पु० एक तरह का क्रन्द ।

प्रा० लहसनियां एक तरह का

बढ़िया पत्थर ।

प्रा० लहू } (सं० लोहित, रुह=
लेहू } पैदा होना) पु० खून,
लोहू } रुधिर, रक्त ।

प्रा० लहूलुहान बोल० लीहू से
भगा हुआ, रक्त में दूबा हुआ ।

प्रा० लाई लिये, वास्ते ।

प्रा० लांक { स्त्री० कटि, कमर, २
लंक } लासा, ३ भूसी, भूसा ।

प्रा० लाँघना (सं० लङ्घन) क्रि०
स० कूदना, फाँदना, चढ़ना, २
पार होना, तैरना ।

सं० लाक्षा (लक्ष=चिह्न करना)
स्त्री० लाख, लाह ।

सं० लाक्षणिक क० पु० लक्षण
युक्त, अर्थबोधक शब्द, यौगिक ।

सं० लाक्षण्य क० पु० शुभाशुभ,
लक्षणज्ञ, बुराई भलाई का बोधक ।

प्रा० लाख (सं० लक्ष) गु० सौ
हजार ।

प्रा० लाख (सं० लाक्षा) स्त्री०
लाह जिससे कागज पत्र बन्ध
किये जाते हैं, २ जिसके रंग से
महौरि या महावर बनता है ।

प्रा० लाग (सं० लङ्ग=मिलना)
स्त्री० मारना, चोट, २ लगान,
लगाव, ३ बैर, द्वेष, द्रोह, ईर्ष्या,
डाह, ४ प्यार, छोह, मोह, ५ मेल,
सम्बन्ध, ६ लागत, खर्च, ७ क-
सूर, चूक ।

प्रा० लागत स्त्री० खर्च, उठान ।

सं० लाघव (लघु) भा० पु० हलकाई,
छोटापन, लघुता, क्षुद्रता, अपमान,
२ आरोग, नीरोगता, तन्दुरुस्ती ।

सं० लाघवेन संक्षेपतः, मुत्तसरन्,
किस्सा कोताह ।

सं० लाङ्गल (लङ्गि=मिलना) पु० हल ।

सं० लाङ्गल { (लङ्गि=मिलना या
प्रा० लङ्गल } लगावहना) स्त्री०
पूँछ ।

प्रा० लाज (सं० लज्जा) स्त्री०
शर्म, हया, संकोच, लज्जा ।

सं० लाज पु० उशीर, २ खस,
लावा, लाई ।

सं० लाजावर्त्त (लाज + आवर्त्त)
पु० सायबानि, रावटी, छोलदारी ।

सं० लाञ्छन (लाञ्छ=चिह्न कर-
ना, दाग लगाना) पु० चिह्न, २
कलङ्क, दाग, ३ नाम ।

सं० लाञ्छना भा० स्त्री० निन्दा,
बुराई, तिरस्कार ।

सं० लाञ्छित र्भ० अपमानित,
तिरस्कृत, निन्दित ।

सं० लाट पु० देशान्तर, २ वस्त्र, पट
वस्त्र, गु० जीर्ण, प्राचीन, पुराना ।

प्रा० लाटी स्त्री० कैंटी, फैफड़ी,
जो होठ और तालू के सूखने से
होठों पर पड़जाती है ।

प्रा० लाठ (सं० यष्टि) स्त्री० खम्भा,
मीनार, २ सोंटा, ३ कोल्हू का लाठा ।

प्रा० लाठी (सं० यष्टि) स्त्री० ल-
कड़ी, सोंटा, छड़ी ।

प्रा० लाड़ (सं० लट्=खेलना)
पु० प्यार, मोह, छोह, खेल ।

प्रा० लाड़लड़ाना बोल० दुला-
रना, प्यार करना ।

प्रा० लाड़ला (लाड़) गु० प्यारा,
दुलारा, लड़ैतालाल ।

प्रा० लात स्त्री० पाँव की मार ।

सं० लाभ (लभ्=पाना) पु० फायदा,
फल, प्राप्ति, पाना, मिलना, नफा ।

प्रा० लाल (सं० लल्=चाहना या
लट्=खेलना) गु० प्यारा, प्रिय,
लाड़ना, दुलारा, २ लालरँग, रक्त
वर्ण, ३ पु० छोटाबालक, बेटा, ४
(सं० लाला) स्त्री० लार, थूक ।

प्रा० लालबुभुक्कड़ पु० बुद्धिमान्
मनुष्य जो हर बात को भट समझ
जाय या जो होनेवाला हो उस
को सोच विचार के पहले से कहदे
पर यह शब्द ठट्टे से या तानासे ऐसे
मूर्ख आदमीके लिये बोलाजाता है
जो और सब आदमियों से अपने
तई अधिक बुद्धिमान् समझता हो
और सचमुच निरा गँवार हो जैसे
ऐसे आदमियोंने कि जो कभी हाथी
नहीं देखा था, उसके पाँवों के
निशान कीचड़ में देखकर लाल-
बुभुक्कड़ से पूछा कि ये क्या है ?
तब उसने उत्तर दिया कि “ यह

तो बूभे लालबुभुक्कड़, और न
बूभे कोय । पाँयन चक्की बाँध कर,
कहिं हरना कूदा होय । ” अर्थ—
यह बात सिवाय लालबुभुक्कड़
के और कोई नहीं समझ सकता है
क्या हरिन तो अपने पैरों में चक्की
बाँध कर यहाँ नहीं कूदा है ।

प्रा० लालच (सं० लालसा) पु०
लोभ, चाहना, तृष्णा, तमश्च ।

प्रा० लालची गु० लालच करने
वाला, लोभी, आपस्वार्थी, खुद-
गरज ।

सं० लालन (लल्=चाहना) पु०
बहुत सनेह करना, बहुत प्यार से
बालक को पालना, खिलाना,
फुसलाना, दुलारना ।

प्रा० लालना (सं० लालन) क्रि०
स० लड़ाना, बहुत प्यार से बा-
लक को पालना ।

सं० लालसा (लम्=चाहना) स्त्री०
बहुत चाह, इच्छा, अभिलाष ।

प्रा० लाला पु० साहिब, बाबू, २
गुरु, पढ़ानेवाला, मास्टर, ३ का-
यियों की और महाजनोंकी पदवी ।

सं० लालित (लाल्+इत, लल्=
स्नेह सहित प्यार) र्म० पु०
पालित, लाड़ित ।

सं० लाला स्त्री० पसेव, पसेउ, मुँह
की लार, थूक ।

सं० लालाटिक पु० प्रभु, भाग्योप-

जीवी, भाग्याधीन, भाग्य का भरोसा करनेवाला ।

सं० लालित्य (ललित) भा० पु० सुन्दरता, मनोहरता, कोमलता ।

प्रा० लाली (लालना) क्रि० स० लड़ाई, प्यार किया, दुलार किया, २ (सं० लल्=चाहना) गु० दुलारी, प्यारी, ३ स्त्री० ललाई, सुखी ।

सं० लाल्य र्म० पु० लालनार्ह, प्यारयोग्य, लालनीय ।

सं० लावण्य (लवण) भा० पु० देह सौन्दर्य, सुन्दरता, शोभा, २ नमकीनी, नमक का स्वाद ।

सं० लास पु० नृत्य, नाच, मोद ।

सं० लासक क० पु० मयूर, मोर, २ नर्तक, नाचनेवाला ।

प्रा० लाह (सं० लाक्षा) स्त्री० लाव ।

प्रा० लाह } (सं० लाभ) पु० लाभ,
लाहा } फायदा, फल ।
लाहू }

प्रा० लिखनं (सं० लिखित) र्म० पु० लिखा हुआ कागज जैसे कि-बाला, तमस्मुक आदि ।

सं० लिखक (लिख् + अक) क० पु० लिखनेवाला, कतिब ।

प्रा० लिखना (सं० लिखन, लिख् =लिखना) क्रि० स० लिखाई करना, लिख देना ।

प्रा० लिखलेना बोल० नकल क-

प्रा० लिखा (लिखना) पु० भाग, प्रालब्ध, कर्म, होनी, होनहार, २ लेख, लिखावट, र्म० लिखा हुआ ।

प्रा० लिखाई (लिखना) भा० स्त्री० लिखने के दाम, २ लिखने की मिह-नत, ३ लिखने का काम, लेखकी ।

प्रा० लिखावट भा० स्त्री० लिखने का या लिखाई का काम, तहरीर ।

सं० लिखित (लिख्=लिखना) र्म० लिखा हुआ, २ पु० लेख, चिट्ठी, पत्र, लिपि ।

सं० लिखितव्य र्म० पु० लिखने योग्य, लेखनीय, लिखने लायक ।

सं० लिङ्ग (लिङि=जाना वा चित्र या चिह्न करना) पु० पुरुषचिह्न, इन्द्री, २ शिव की मूर्त, ३ (व्याक-रण में) जाति, जैसे पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग आदि ।

सं० लिङ्गित र्म० पु० चिह्नित ।

प्रा० लिट्टी स्त्री० बाटी, अँगारकी, आटे का गोला जिसको अँगारों में पकाकर खाते हैं ।

प्रा० लिपटना क्रि० अ० चिपकना, सटना, मिलना ।

सं० लिपि (लिप्=लेपना) भा० लिपी { स्त्री० लिखा हुआ कागज, लिखित, लेख, हस्ताक्षर, हाथका लिखा हुआ, नकल ।

सं० लिपिक) क० पु० लेखक.

सं० लिपिमज्जा स्त्री० कलमदान ।

सं० लिस (लिप्=लेपना) क० लिपा
हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ,
लेसा हुआ, चर्चा हुआ ।

सं० लिप्सा स्त्री० लाभ, कांक्षा,
लाभवासना, आग्रह, इच्छा ।

सं० लिप्सित र्म्यं पु० वाञ्छित ।

सं० लिप्सु क० पु० वाञ्छक, इच्छा-
हिमन्त ।

प्रा० लिम पु० कलङ्क, दाग, रूचिह ।

प्रा० लिलाट) (सं० ललाट) पु०

लिलाड़ } शिर का अगला

लिलार } भाग, ललाट, भाल,

२ काल, प्रारब्ध, भाग ।

प्रा० लिवैया (लेना) क० लेनेवाला ।

प्रा० लीक (सं० लेखा) स्त्री०

लीका } गाड़ी के पहिये का नि-

शान, पगडंडी, लकीर, २ कलंक,

दाग ।

प्रा० लीग्व स्त्री० जूँका अंडा ।

प्रा० लीचड़ गु० सूम, कञ्जूस,

कृपण, लोभी ।

प्रा० लीची स्त्री० एक फल जो

चीनदेश से फैला है ।

अं० लीडर अगुवा, पेशवा ।

सं० लीढ़ (लिह=स्वाद लेना) र्म्यं

पु० आस्वादित, स्वादयुक्त ।

प्रा० लीतरा पु० पुराना जूता ।

सं० लीन (ली=मिलना वा गलना)

क० लय, लगा हुआ, मिला हुआ,

डूबा हुआ, मग्न, २ गला हुआ,
३ सोखा हुआ ।

प्रा० लीपना (सं० लेपन) क्रि०
स० पोतना, लेसना, थोपना ।

प्रा० लीमू (सं० निम्बु, निम्ब=
सींचना) पु० नींबू, लेमू, एक
खट्टा फल ।

प्रा० लीर स्त्री० धज्जी, कतरन,
कपड़े का टुकड़ा ।

प्रा० लील (सं० नील) स्त्री०
नील, गु० नीला ।

प्रा० लीलना क्रि० स० निगलना ।

सं० लीला (ली=मिलना या ला=

लेना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार,

विलास, कामकेलि, शृंगारभाव ।

सं० लीलावती (लीला) स्त्री०

विलास करनेवाली स्त्री, २ भास्क-

राचार्यकी बेटी का नाम, ३ संस्कृत

में एक गणितविद्या की पुस्तक

का नाम ।

सं० लीलहि स्त्री० विनाश्रम, बे

मेहनत, २ स्वाय, निगल जाय ।

प्रा० लुकना क्रि० अ० छिपना ।

प्रा० लुकाना क्रि० स० छिपाना ।

प्रा० लुगार्ह (लोग) स्त्री० नारी,

लोगार्ह } स्त्री ।

सं० लुश्चन (लुच=ऊपर जाना,

नोचना) भा० पु० उत्पाटन,

उखाड़ना, नोचना ।

प्रा० लुटना (सं० लुट=लुटना या

लूटना) क्रि० अ० लुटजाना,
झिनजाना ।

प्रा० लुटिया स्त्री० छोटा लोटा ।

प्रा० लुटेरा { (लूटना) क० पु०
लुटेरू } लूटनेवाला ।

सं० लुठन (लुठ=लुण्ठन) भा०
पु० घोड़ाआदिका धरती पर श्रम
दूर करने के लिये लोटना ।

सं० लुण्ठक (लुण्ठ=चोरी करना)
क० पु० चोर, स्तेयकारक ।

सं० लुण्ठित र्म० पु० अपहृत,
चोरित, चुराया हुआ ।

प्रा० लुङकना { (सं० लुठन, लुट=
लुङना) क्रि०
अ० दुलकना, गिरना, ढनमनाना ।

प्रा० लुङकजाना बोल० मरजाना ।

प्रा० लुङाना (लुङना) क्रि० स०
दुलकाना, लुङकाना, गिरा देना ।

प्रा० लुपरी स्त्री० एकतरह की लपसी।
सं० लुप्त (लुप्=काटना) क० पु० नष्ट,
बरबाद, छिपजाना, अदृश्य, गुप्त ।

सं० लुब्ध { (लुब्=लोभ करना
लुब्धक } या मोहना) क० पु०
लोभी, लालची, २ शिकारी, ३
लुब्धा, लम्पट ।

प्रा० लुभाना (सं० लोभन) क्रि०
स० ललचाना, मोहना, तरसाना,
चाहना ।

प्रा० लुभित र्म० पु० आकांक्षित,
त्वादिशमन्द ।

प्रा० लुहँगी (लोह) स्त्री० ऐसी
लाठी जिस पर लोहा जड़ा रहता है।

प्रा० लुहार { (सं० लोहकार) पु०
लोहार } लोहे का काम बनाने
वाला ।

प्रा० लू स्त्री० गर्महवा, लूक, लपट ।

प्रा० लूक { (सं० उल्का) पु०
लूका } आग की चिनगारी,
पतंगा, लपट ।

प्रा० लूकालगाना बोल० आग
लगाना, जलाना, २ भगड़ा उ-
ठाना, बखेड़ा मचाना ।

प्रा० लूट (सं० लुट्=लूटना) भा०
स्त्री० डकैती, लूटपाट ।

सं० लूटक पु० कमरबंद, २ लूटने
वाला, ठग ।

प्रा० लूटपूट बोल० लूटना और
उजाड़ना ।

प्रा० लूटना (सं० लुट्=लूटना) क्रि०
स० झिनलेना, लूटपाट करना ।

प्रा० लूटपाट बोल० लूटना और
मारलेना ।

प्रा० लूटालूट बोल० लूट, झीना,
भपटी ।

प्रा० लूणी { (लवण) गु० लोना,
लूनी } खारा, २ (सं० नव-
नीत) मक्खन, माखन ।

प्रा० लून (सं० लवण) पु० नि-
मक, नमक, लोन ।

सं० लून (लू=छेदना, काटना)

र्म० पु० काटा गया, लूना गया ।
 प्रा० लूनिया (सं० लवण) गु०
 खाग, २ पु० एक पौधा, ३ बेल-
 दार, वह आदमी जो और के लिये
 रस्ता साफ करता है, ४ नमक बनाने
 वाला, ५ बनिशों की एक जाति ।
 सं० लूम पु० लाङ्गूल, पुच्छ, पूँछ ।
 प्रा० लूला गु० बिन हाथ का, टुंडा,
 लुंजा ।
 प्रा० लेई स्त्री० आटेका कलप या माड़ी
 जिससे कागज आदि साटते हैं ।
 प्रा० लेंड़ी स्त्री० बकरी की मेंगनी,
 २ एक तरह का कुत्ता, गु० नामर्द,
 असमर्थ ।
 सं० लेख (लिख्=लिखना) भा०
 पु० लिखा हुआ कागज, पत्र, लिपि ।
 सं० लेखक (लिख्=लिखना) क०
 पु० लिखनेवाला, मोहरिंर ।
 सं० लेखनी (लिख्=लिखना) ए०
 स्त्री० लिखने की चीज, कलम ।
 सं० लेखनीय र्म० पु० लेख्य,
 लिखितव्य, लिखनेलायक ।
 सं० लेखा (लिख्=लिखना) पु०
 हिसाब, गणित, २ स्त्री० लकीर,
 रेखा ।
 सं० लेख्य (लिख्=लिखना) र्म०
 पु० लिखने योग्य, २ पु० चिट्ठी,
 पत्री, लिखा हुआ कागज ।
 सं० लेख्यगृह धि० पु० दफ्तर,
 कचहरी ।

प्रा० लेटना क्रि० अ० सोना, आ-
 राम करना ।
 प्रा० लेनदेन भा० पु० { (लेना
 लेवादेई भा० स्त्री० }
 देना) ब्यौपार, व्यवहार ।
 प्रा० लेना (सं० ला=लेना) क्रि०
 म० लेलेना, ग्रहण करना, गहना,
 पकड़ना, स्वीकार करना, चुनना,
 खरीदना ।
 सं० लेप (लिप्=लेपना) पु० लेपन,
 मरहम, मलहम ।
 सं० लेपक क० पु० जर्हाह ।
 सं० लेपन भा० पु० लेसनेकी वस्तु,
 मरहम ।
 सं० लेप्य र्म० पु० लगाने के
 योग्य, लेसने के लायक ।
 प्रा० लेपालक (ले=पालना) पु०
 गोदलिया हुआ बेटा, धर्म का
 बेटा, पोष्यपुत्र, मुतबन्ना ।
 प्रा० लेवा (लेना) पु० लेनेवाला,
 पर्थन ।
 सं० लेश (लिश्=थोड़ा होना) गु०
 थोड़ा, छोटा, अल्प, किंचित्, पु०
 छोटाई, अल्पता, कण ।
 सं० लेशमात्र गु० थोड़ा भी, लघुतर ।
 सं० लेह्य (लिह्=स्वाद लेना, चाट-
 ना) र्म० चाटने योग्य, पु० अमृत ।
 अ० लैस तैयार कपड़ा के किनारे
 का फीता ।
 प्रा० लोई (सं० लोमीय, लोम)

स्त्री० एक तरह का ऊनी कपड़ा,
छोटा कम्बल, २ मुँहकी चमक,
लावण्यता ।

प्रा० लौं } नित्य सं० तक, तलक,
लौं } लग, अवधि ।

प्रा० लौंग } (सं० लवङ्ग) स्त्री० एक
लौंग } तरह का गर्म मसाला ।

प्रा० लौंदा पु० मिट्टी का ढेला ।

सं० लोक (लोक=देखना) पु० लोग,

मनुष्य, २ भुवन, सृष्टि के विभाग,

तीन लोक प्रसिद्ध हैं (१ स्वर्ग-

लोक अथवा देवलोक अर्थात्

देवताओं के रहने की जगह, २

मर्त्यलोक यह संसार जिसमें मनुष्य

रहते हैं, ३ पाताललोक अर्थात्

नीचे का लोक) कितने एक ग्रन्थों

में सात लोक लिखे हैं (१ भूर्लो-

क, पृथ्वी, २ भुवर्लोक जिसमें

ऋषि, मुनि और सिद्ध आदि रहते

हैं और वह सूर्य और पृथ्वी के

बीच में है जिसको अन्तरिक्ष भी

कहते हैं, ३ स्वर्लोक अथवा स्वर्ग

जिसमें इन्द्र और देवता रहते हैं

और वह सूर्य और भुव के तारे

के बीच में है, ४ महर्लोक जिसमें

भृगु आदि ऋषि रहते हैं जो

ब्रह्मा के जीने तक जीते रहते

हैं और जब तीन लोक में प्रलय

होजाता है और उसकी लपट मह-

र्लोक तक पहुँचती है तब वे सब

ऋषि ५ जनलोक में चढ़ जाते हैं

जिसमें ब्रह्मा के बेटे सनक, सन-

न्दन, सनातन और सनत्कुमार

रहते हैं, ६ तपोलोक जहाँ तपस्वी

रहते हैं, ७ सत्यलोक अथवा ब्रह्म-

लोक अर्थात् ब्रह्मा का लोक

इनमें के पहले तीन लोक हर एक

कल्प अर्थात् ब्रह्मा के दिन के

अन्त में नाश होजाते हैं और

पिछले तीन लोक ब्रह्मा के जीने

तक अर्थात् ब्रह्मा के १०० वरस

तक रहते हैं और चौथा महर्लोक

भी उसी समय तक रहता है पर

नीचे के तीन लोक प्रलय के समय

में जलते हैं तब उसकी तपनके

कारण वहाँ कोई नहीं रहता बहुत

से ग्रन्थों में १४ लोक लिखे

हैं—७ लोक यही जो ऊपर लिखे

गये और ७ पाताल हैं जिनको

पाताल शब्द के वर्णन में देखो ।

लोकखण्ड अथवा कतिपयदेशों और

प्रदेशों के प्राचीन संस्कृत और

आधुनिक नाम पाठकों के सुभीते

के हेतु उद्धृत किये जाते हैं—

आधुनिक प्रचलित एशिया का

संस्कृत नाम 'असेचनक' अथवा

'विष्णुक्रान्त' अनुभित है इसी

प्रकार यूरोप का 'इषुजात' वा

'अश्वक्रान्त' है यथा—

(भविष्यपुराणे)

“ इपुजाते नराः शुक्राः शूराः शिल्पविशारदाः । वाणिज्यादिरताः क्रूरा मायामोहविमिश्रिताः ” ॥		वारिधान, {	अफ्रीका का
		वारुण {	उपद्वीप
		शक {	एशियाई
		तुरुष्क {	तुर्की
अफ्रीका का संस्कृतनाम सूर्यारिका		रुष	रसिया
वा रथक्रान्तहै यथा(भविष्यपुराणे)		हैख	सैवीरिया
“रथक्रान्ते नराः कृष्णाः काले		तुखारा	बुखारा
प्रायशो विकृताननाः । बदशक्र		पारट, महाचीन	चीन
आमर्मांसभुजः सर्वे कच्चांमांस		तालतोपक	तिब्बत
खाने वाले		पार्वत	तातार
शूराः कुञ्चितमूर्द्धजाः ॥ घूंघरबाल		बाह्नीक	बलख
वाले		आवर्त	अरब
प्राचीननाम	आधुनिकनाम	पारस्य	ईरान
आवर्तन	ब्रिटेन	यवन	यूनान
इन्द्रद्वीप वा {	इङ्ग्लेण्ड	नर्दिनाश, {	मदानी
इन्दुद्वीप {		कारस्कार {	
रोम वा रूम	रोम	पहनव	काबुल
पटचर	इटली	गन्धार	कन्धार
पशुशील	पोर्टुगाल	अपवाह, {	मस्कत
क्रौञ्च	जर्मनी	अपरान्त {	
सैनिक वा {	हालेण्ड,बेल-	सिंहलद्वीप	सीलोन
कुक्कुट {	जियम	उपमखका	मलाका
अश्वक वा {	अस्ट्रीया	ब्रह्मोत्तर {	ब्रह्मा
अश्वीया {		ब्रह्मदेश {	
प्रलिया, {	गाल वा	कुमारिका	हिन्दुस्थान
कुहक {	फ्रांस	कुमारद्वीप, {	अमेरिका
तामसदेश	स्पेन	स्वर्णभूमि {	
माठक वा {	डेन्मार्क स्के-	उत्तरकुमार	उत्तर अमेरिका
मारक {	एड नेविया	दक्षिणकुमार	दक्षिण अमेरिका
बर्बर	बारबरी	तलह	ब्राजील

हिरण्यपुर	पेरू
रमणक	अस्ट्रेलेशिया
स्वर्णप्रस्थ	पालिनेशिया
कुमारिका नाम हिन्दुस्थानान्त- र्गत प्रदेशों के नाम	
दरद	भूटान
दरदलिंग	दारजिलिंग
पञ्चनद	पंजाब
गैरिककाश्मीर	काश्मीर
उत्तरकोसल	{ फैजाबाद नवाबगंज
काशी	
कुरुजाङ्गल	कुरुक्षेत्र
इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली
अवन्ति, {	उज्जैन
विशाला {	
गुर्जराट	गुजरात
काङ्ची	करनाट
पाण्ड्य	मलावार
किष्किन्धा	दक्षिणदेश
केकय	हिरात
माहिषक	मैसूर
उत्कल, ओड़	उड़ीसा
सुराष्ट्र	महाराष्ट्र
सिन्धुसौवीर	सिन्धदेश
विदेह, मिथिला	तिरहुत
महोदय, {	कन्नौज
कान्यकुब्ज {	
मगध, कीकट	गया
पाटलिपुत्र	पटना

अङ्ग	राजमहल, आरा
चम्पा	भागलपुर
पुण्ड्र	मेदिनीपुर
वङ्ग, गौड़	बंगाला
प्राग्ज्योतिष	कामरूप
सूरसेन	मथुरा
अन्ध	तिलंगाना
कलिङ्ग	उत्तरीय सरकार
कुलूत	कूलू
चेदि	चन्देरी
चोल	कर्नाटक
अश्मक	झांवकोर
विदर्भ	बरार
श्रावस्ती	{ (सहेट महेट) एकौना
सौराष्ट्र	
काठियावाड़	
सं० लोकनाथ (लोक + नाथ) पु०	
राजा, २ शिव, ३ ब्रह्मा, ४ विष्णु ।	
सं० लोकप (लोक=सृष्टि वा भुवन, पा=बचाना) पु० लोकपाल ।	
सं० लोकपाल (लोक,पाल=पाल- ना) पु० राजा, दिक्पाल ।	
सं० लोकबान्धव पु० सूर्य ।	
सं० लोकलोचन पु० सूर्य ।	
सं० लोकमाता (लोक + माता)	
स्त्री० संसार की माँ, लक्ष्मी ।	
सं० लोकयात्रा स्त्री० संसृति, जन्म- मरण, लोकव्यवहार, प्राणरक्षा, रोजी, आजीविका ।	
अं० लोकल देशीय, मुकामी, स्थानीय ।	

अ० लोकल स्थल्फ गवर्नम्पण्ट
स्थानीय आत्मशासनप्रणाली, खुद
इस्तिथारी, मुकामीहुकूमत, जैसे
आनरेरी मजिस्ट्रेट ।

सं० लोकालोक (लोक=देखना,
अलोक=नहीं देखना) पु० एक
पहाड़ की श्रेणी जिसको सोचते हैं
कि सातों समुद्रों को घेरे हुये हैं
और इस संसार की सीमा है ।

सं० लोकेश (लोक + ईश) पु०
ब्रह्मा, २ राजा ।

प्रा० लोंग (सं० लोक) पु० मनुष्य,
आदमी, जन ।

सं० लोकापवाद पु० अपकीर्ति,
लोकनिन्दा, अंगुस्तनुमाई ।

सं० लोचक (लोच् + अक) पु०
मांसपिण्ड, नवतारा, काजल,
बेंदी, टीका, नीलवस्त्र, कर्णफूल,
कदली, साँपकी केचुली ।

सं० लोचन (लोच्=देखना) ग०
पु० आँख, नेत्र, नयन, २ संख्या ।

प्रा० लोटना (सं० लुट्=फिरना,
घूमना) क्रि० अ० घूमना, फिरना,
रोलना, २ तड़फना, छटपटाना ।

प्रा० लोटपोटहोना बोल० मोहित
होना, किमी के प्यार में डूबना ।

प्रा० लोटा पु० गड़वा, पानी डालने
का बरतन ।

प्रा० लोढ़ा (सं० लोष्ट, लोष्ट्=इ-
कट्टा होना) पु० सिल बढ़ा, २

ओसवाल महाजनों की एक जाति ।

प्रा० लोणा (लवण) गु० खारा,
लोना } २ सुन्दर ।

प्रा० लोथ (सं० लोचक, लोच्=दे-
खना) स्त्री० मरा शरीर, लाश,
मृतक ।

प्रा० लोथरा (सं० लोचक) पु०
मांस का पिण्ड ।

प्रा० लोदी पठानों की एक जाति ।

प्रा० लोन (सं० लवण) पु० नमक,
निमक, नून ।

प्रा० लोनमिर्चलगाना बोल० अ-
पनी तरफ से बहुत बढ़ाके कहना ।

प्रा० लोनाई (सं० लावण्य) भा०
स्त्री० सुन्दरता, शोभा ।

सं० लोप (लुप्=काटना) पु० का-
टना, मिटाना, व्याकरण में अक्षर
अथवा पद को उड़ा देना या
निकाल देना, २ छिपा, अदृश्य, गुप्त,
३ नाश, ४ झीलझाल, काटकूट ।

सं० लोपामुद्रा स्त्री० अगस्त्य ऋषि
की धर्मपत्नी ।

सं० लोपी क० पु० नाशक, नाशकर्ता ।

सं० लोप्य र्म्य० नाशनीय, नाश्य ।

प्रा० लोबान (अ० लुबान) पु०
एक तरह की सुगन्धित चीज
जिसको धूप की तरह देवता के
साम्हने आग पर रखते हैं ।

सं० लोभ (लुभ=लालच करना)
पु० लालच, पराये धन के पाने

की चाह, तृष्णा, तमञ्च ।

सं० लोभी (लोभ) क० पु० लालची ।

सं० लोम (लू=काटना) पु० देह पर के बाल, रोम, रूंगटे ।

प्रा० लोमड़ी (सं० लोमशा, लोम)

स्त्री० एक जानवर का नाम ।

सं० लोमश (लोम अर्थात् जिसके शरीर पर बहुत बाल हों) पु० एक ऋषि का नाम, जिसके गले में राजा परीक्षित ने मरा हुआ साँप डाला था और उसके चले शृङ्गी ऋषि ने उसको शाप दिया कि सातवें दिन राजा को तक्षक साँप दसेगा तब श्रीशुकदेवजी ने आकर राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत सुनाकर उसका उद्धार किया, गु० जिसके बहुत बाल हों ।

प्रा० लोयन (सं० लोचन) पु० आँख ।

प्रा० लोर (सं० लोल) पु० फुमका, २ आँसू ।

सं० लोल (लुल्=हिलना) गु० हिलता हुआ, चंचल, २ पु० आँसू, ३ स्त्री० जीभ, ४ लक्ष्मी ।

सं० लोलुप (लुप्=नाश करना अर्थात् सिवाय लोभ के और सब चाह को नाश करना या लुभ्=लोभ करना यहाँ 'भ' को 'प' होजाता है) गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची ।

सं० लोलुभ (लुभ्=लालच करना)

गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची ।

सं० लोह { (लुह्=चाहना वा लू=लौह) काटना) पु० लोहा, एक तरह की धातु ।

सं० लोहकार क० पु० लुहार ।

प्रा० लोहा (सं० लोह) पु० एक प्रकार की धातु ।

प्रा० लोहायजाना बोल० तलवार से लड़ना ।

सं० लोहित (रूह्=पैदा होना) गु० लाल, पु० लोह, २ लालरंग ।

सं० लोहिताक्ष (लोहित + अक्ष) पु० लालआँख, रक्तनेत्र, विष्णु, कोकिला पक्षी ।

प्रा० लोहिया (लोह) गु० लोहका ।

प्रा० लौंडा पु० लड़का, ओकरा, दास, गुलाम ।

प्रा० लौंडिया { स्त्री० दासी, लौंडी } ओकरी ।

प्रा० लौंद पु० मलमास, अधिकमहीना ।

प्रा० लौ (सं० लय) स्त्री० जलती हुई बत्ती का शोला या ज्वाला, २ ध्यान, मन, लगन ।

प्रा० लौलगाना बोल० ध्यान करना, ईश्वर की उपासना या प्रार्थना में स्थिर होना ।

प्रा० लौलगना बोल० ध्यान लगाना, ध्वनि लगना, किसी को बार बार याद करना ।

सं० लौकिक (लोक) गु० सांसा-

रिक जो संसार में प्रसिद्ध हो, जो लोकव्यवहार में आता हो, दुनियावी, दुनियवी ।

प्रा० लौटना क्रि० अ० वापस आना, फिरना, घूमना, उलटा फिरना ।

प्रा० लौना (सं० लग्ना, लृ=काटना) क्रि० सं० काटना, कटनी करना, २ कमबॉट में दूसरा बॉट लगाकर उसे पूरा करना, लगना ।

अ० ल्यजिमलाटिव कौन्सिल न्यायोत्पादनसभा, कानून इजरा-ईदरबार ।

प्रा० ल्यारी पु० भेड़िया, हुँडार ।

व

सं० व (सं० वा=वहना, जाना) पु० हवा, २ राहु, ३ कल्याण, ४ समुद्र, ५ बाघ, ६ वरुण, ७ मन्त्रण, सलाह, इस अक्षर की जगह हिन्दी में बहुत बार 'व' लिखा जाता है इसलिये जो शब्द इसमें नहीं मिले उसको 'व' में देखने से मिलेगा ।

सं० वंश (वश्=चाहना) पु० बेटे, पोते, कुल, सन्तान, सन्तति, २ बाँस ।

सं० वंशभोज्य पु० पितृपितामह-प्रभृतिभिरर्जिता भूम्यादिसंपत्, पितृसम्पत्, पुरुषार्थों से चली आती जो जीविका, पितरों की सम्पदा ।

सं० वंशलोचन (वंश=बाँस, रुच्=

चमकना) पु० बाँस में से निकली हुई कपूरसी धौली चीज जो बहुत सी औपधियों में काम आती है ।

सं० वंशावली (वंश + आवली) स्त्री० पुरुषों की नामावली, पीढ़ी, परंपरा, वंशक्रम, वंशश्रेणी ।

सं० वंशिका स्त्री० अंगर, सुगन्धकाष्ठ, मुरली, वंशरोचन ।

सं० वंशी (वंश=बाँस) स्त्री० बाँस का बना हुआ एक बाजा, बाँसुरी, मुरली ।

सं० वंशीधर (वंशी=बाँसुरी, धर= रखनेवाला, धृ=रखना) पु० श्रीकृष्ण, मुरलीधर ।

सं० वंशीवट (वंशी + वट) पु० एक बड़ का पेड़ जिसके नीचे बैठकर श्रीकृष्णचन्द्र जी वंशी बजाया करते थे ।

सं० वंश्य गु० कुलीन, श्रेष्ठकुलोत्पन्न, पु० पुत्र, (सप्तमपुरुषाद्विन्नः वंशे भवः) ।

सं० वक वक शब्द को देखो ।

सं० वकवृत्ति स्त्री० पु० पाखण्डी, धूर्त, दगाबाज ।

सं० वकुल पु० मौरश्री वृक्ष ।

सं० वक्तव्य (वच्=बोलना) र्भ० पु० कहने योग्य, बोलने योग्य ।

सं० वक्ता (वच्=कहना, बोलना) क० पु० बोलनेवाला, कहनेवाला, गोया, स्पीचर ।

सं० वक्त (वच्=बोलना) पु० मुँह,
मुख ।

सं० वक्तृता भा० स्त्री० कथन, व्या-
ख्यान, स्पीच, वाज करना ।

सं० वक्र (वकि=टेढ़ा होना) गु०
टेढ़ा, बाँका, कुटिल, पु० शनै-
श्चर, जल का भ्रमर, मङ्गलग्रह ।

सं० वक्रनक्र पु० शुकपक्षी, सुग्गा,
२ पिशुन, दुर्जन ।

सं० वक्राङ्ग पु० हंस, चकवा पक्षी,
सारस, गु० कुब्ज, टेढ़ा अङ्ग ।

सं० वक्रोक्ति (वक्र=टेढ़ा, उक्ति=
कहना) स्त्री० टेढ़ा कहना, टेढ़ी
बात, व्यङ्ग्य वचन, कुटिलोक्ति,
काकोक्ति, काकुवचन, ताना, २
एक अलङ्कार जिसमें टेढ़ी बात
कही जाती है जैसे—

“ हम कुलपालक सत्य तुम ”

“ कुलपालक दश शीश ”

अथवा—

“ मैं सुकुमारि नाथ वनयोगू ”

“तुमहि उचित वन मोकहँ भोगू ”

सं० वक्षःस्थल (वक्षस्=झाती, वह
=लेजाना, और स्थल=जगह) पु०
झाती, हृदय, उरस्थल ।

सं० वक्षोज (वक्षस् + ज) पु०
उरोज, स्तन, कुच ।

सं० वङ्क (वकि=टेढ़ा करना) गु०
बाँका, कुटिल ।

सं० वङ्किल क० पु० कण्टक, काँटा,

त्रिशूल ।

सं० वङ्ग (वंगि=जाना) पु० राँगा,
एक धातु, २ बंगाला देश ।

सं० वचन वचन शब्द को देखो ।

सं० वचनव्यक्ति स्त्री० बात की
सफाई, बात में सफाई ।

सं० वज्र वज्र शब्द को देखो ।

सं० वज्रदन्त पु० शूकर, मूषक, मूस ।

सं० वज्राघात पु० वज्रपात, वज्रसे
मारना ।

सं० वञ्चक (वञ्च=ठगना) क०
पु० ठग, ठगनेवाला, धूर्त, दगा-
बाज, २ गीदड़, सियार, ३ बभ्रु,
नकुल, न्योला ।

सं० वञ्चित (वञ्च=ठगना) र्म० पु०
ठगा हुआ, ठगा गया, महारूम ।

सं० वट (वट्=घेरना) पु० बड़का पेड़ ।

सं० वटर (वट्=लपेटना) पु० मुर्गा,
२ चोर, ३ पगड़ी, ४ आसन,
चटाई, ५ लकुट, ६ छड़ी, गु०
धूर्त, दुर्जन, कुरूप, आलसी ।

सं० वटी र्म० स्त्री० औपध की
गोली, २ रस्सी ।

सं० वटु (वट्=बोलना) पु० ब्रह्म-
चारी, २ बालक, विद्यार्थी, ब्राह्मण-
कुमार ।

सं० वटुक (वट्=बोलना) पु०
बालक, २ बालकरूप भैरव ।

सं० वड़ गु० बड़ा, विस्तीर्ण, पु०
विस्तार, दीर्घता ।

सं० वडिश पु० कटिया, वंशी, मख-
लियों के पकड़ने का यन्त्र ।

सं० वण्टक (वण्ट=बाँटना, विभा-
गक) क० पु० बाँट, लोहा या
पत्थर के, बाँटनेवाला, विभाजक ।

सं० वत् बराबर, समान, तुल्य, नाई ।

सं० वत्स (वद्=बोलना, जिससे
प्यारसे बोलते हैं) पु० बच्चा, बा-
लक, २ बड़ड़ा, ३ छाती, ४
बरस, ५ प्यार का शब्द ।

सं० वत्सर (वस्=रहना) पु० बरस,
संवत् ।

सं० वत्सल (वत्स=प्यार, ला=
लेना) गु० प्यारा, प्रेमी, छोही,
मोही, दयालु, कृपालु, रहीम ।

सं० वदन (वद्=बोलना) पु० मुँह,
मुख, चिह्न ।

सं० वदान्य पु० दानशील, बक्का,
प्रिय ।

सं० वन (वन्=सेवना, माँगना या
शब्द करना) पु० जंगल, विपिन,
अटवी, २ पानी, ३ जगह, स्थान ।

सं० वनचर { (वन=जंगल, चर=
वनेचर) चलनेवाला, चर=
चलना) पु० जङ्गली, वनमानुष,
३ वानर, बन्दर ।

सं० वनज (वन=जंगल वा पानी,
जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल ।

सं० वनपांशुल पु० व्याध, बहेलिया ।

सं० वनमाला स्त्री० “तुलसी कुन्द-
मन्दार, पारिजाताब्जपुष्पकैः ।
निर्मिता दीर्घमाला या, वनमाला
प्रकीर्तिता ” । अर्थ—तुलसी, कुन्द,
मन्दार, पारिजात और कमल
इनसे बनी हुई ।

सं० वनस्पति (वन=जंगल, पति=
मालिक) स्त्री० वनस्पति, जमीन
से उगनेवाली चीज ।

सं० वनित (वन् + इत) स्त्री०
पु० याचित, माँगा हुआ ।

सं० वनिता (वन्=माँगना, याचना)
स्त्री० लुगई, नारी, पत्नी, प्यारी ।

सं० वन्दनचरित पु० काबिल ता-
रीफ, प्रशंसा योग्य ।

सं० वन्दन, भा० पु० { (वदि=
वन्दना, भा० स्त्री० } प्रणाम
करना, पूजना वा सराहना)
सराह, स्तुति, प्रणाम, नमस्कार,
श्रदाव, सिजदा, सिंदूर ।

सं० वन्दनीय { (वदि=प्रणाम क-
वन्द्य) रना वा सराहना)
स्त्री० पु० सराहने योग्य, प्रणाम
या नमस्कार करनेयोग्य ।

सं० वन्दि { स्त्री० प्रणामकृत, नम-
वन्दित } स्कार किया गया ।

सं० वन्दीजन पु० भाट, प्रशंसक ।

सं० वन्य (वन) गु० जंगली, वन-
वासी, बनैला, वनका ।

सं० वपन (वप=बोना) भा० पु०
बीज बोना, बीज डालना, २ केश
मुण्डन, क्षौरकर्म, बाल बनाना ।
सं० वपनी धि० स्त्री० नापितशाला,
हज्जामों का अड्डा ।
सं० वपिल क० पु० पिता, बाप ।
सं० वपुस् (वप्=बोना) पु० शरीर,
देह, काय ।
सं० वप्र पु० प्राचीर, खावाँ, परि-
खा, खाई, शहरपनाह, धुस्स, मट्टी
का टीला, २ बाप ।
सं० वमन (वम्=रद्द करना, कै-
रना) स्त्री० उलटी, कै, रद्द ।
सं० वमनी स्त्री० जोंक, जलौका,
रक्तपा ।
सं० वमित (वम्=रद्द करना) र्म०
पु० रद्द किया हुआ, वमन करता
हुआ, वान्त, उगिला हुआ ।
सं० वयस् (वय् अथवा अज्=जाना)
स्त्री० उमर, अवस्था ।
सं० वयस्थ क० पु० युवा, समर्थ,
बालिग ।
सं० वयस्य गु० बराबरवाला, हम-
उमर ।
सं० वर (वृ=पसन्द करना) पु०
आशिष, आशीर्वाद, वरदान, चाही
हुई चीज, २ पति, स्वामी, २ जंवाई,
गु० सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बड़ा ।
सं० वरण पु० वेष्टन, लपेटना, पू-
जना, आमन्त्रण ।

सं० वरणा (वृ=पसन्द करना) स्त्री०
एक नदी का नाम जो बनारस के
उत्तर बहती हुई गङ्गा में मिलती है ।
सं० वरद (वर + दा=देना) क०
पु० अभीष्टदाता, अभयदाता ।
सं० वरदा क० स्त्री० दुर्गा, शिवा ।
सं० वरदान (वर + दान) पु०
आशिष देना, वर देना, दुआ देना ।
सं० वरदायक (वर + दायक)
क० पु० वर देनेवाला, वरदाई,
चाहेहुए को देनेवाला ।
प्रा० वररहना बोल० अच्छा रहना,
श्रेष्ठ रहना, सरस रहना, जय-
वन्त होना ।
सं० वरवरणी (वर=श्रेष्ठ + वरणी
=रङ्ग) स्त्री० गौरी, गोरी स्त्री ।
सं० वराङ्गना (वर=सबसे अच्छी
अङ्गना=स्त्री) स्त्री० सुन्दर स्त्री ।
सं० वराटक पु० बीजकोश, बीज
का स्थान, कमल का बीज ।
सं० वराटिका स्त्री० कौड़ी, कपर्दिका ।
सं० वराणसी (वरुणा एक नदी,
वाराणसी) और असी एक
नदी ये दोनों नदियाँ बनारस के
पास मिलती हैं इसीलिये ऐसा
नाम हुआ) स्त्री० बनारस, काशी,
शिवपुरी ।
सं० वरासन (वर + आसन) पु०
विष्टर, श्रेष्ठासन, राज्यासन, २
द्वारपाल ।

सं० वराह पु० शूकर, विष्णु का अवतार ।

सं० वरुण पु० जल, जलेश, जल-पति, २ सूर्य, ३ पक्कामकान ।

सं० वरूथ (वृ=ढकना) पु० रथ के ढकने का कपड़ा, २ समूह, झुण्ड ।

सं० वरूथिनी स्त्री० पृतना, सेना ।

सं० वरेण्य (वृ + एण्य) गु० श्रेष्ठ, मुख्य, उत्तम, प्रार्थनीय, वरदाता ।

सं० वरोरुह गु० श्रेष्ठ जाँघवाली ।

सं० वर्ग (वृज्=ढकना) पु० एक जातिका समूह, गण, २ दर्जा, क्लास, ३ गणित में एक अङ्क को उसी अङ्क से गुना करने से जो फल निकले जैसे ४ का वर्ग सोलह और पाँच का पच्चीस आदि, मजदूर, स्कायर ।

सं० वर्गमूल (वर्ग + मूल) पु० वर्ग का मूल अर्थात् वह अङ्क जिसका वर्ग किया हो, जैसे १६ का वर्गमूल ४ और पच्चीस का वर्गमूल ५ जजर, स्कायर, रूट ।

सं० वर्गीय (वर्ग) गु० वर्ग में का, उसी समूह में का ।

सं० वर्जक (वृज् + अक) क० पु० परिहारक, रोकनेवाला, मानेअ ।

सं० वज्जिन (वृज्=छोड़ना) भा० पु० त्याग, छोड़ना, रोकना, मना करना ।

सं० वज्जनीय (वज्ज् + अनीय)

र्म० पु० रोकने योग्य, मना करने के लायक ।

सं० वर्जित ((वृज्=छोड़ना) वर्ज्य) र्म० पु० छोड़ा हुआ,

रोका हुआ, मना किया हुआ ।

सं० वर्ण (वर्ण=रँगना, फैलाना, सराहना) पु० रंग, २ जाति, कौम, जैसे (१ ब्राह्मण, २ क्षत्रिय, ३ वैश्य, ४ शूद्र) ३ अक्षर, हर्फ ।

सं० वर्णक क० पु० प्रशंसक, तारीफ करनेवाला ।

सं० वर्णन (वर्ण=रँगना, सराहना, फैलाना) पु० बखान, बयान, २ स्तुति, सराह, ३ रँगना ।

प्रा० वर्णना ((सं० वर्णन) क्रि० वर्णनकरना) स० बयान करना, गुण कहना, सराहना, स्तुतिकरना ।

सं० वर्णमाला (वर्ण=अक्षर, माला =पङ्क्ति) स्त्री० ककहरा, स्वर, व्यञ्जन, हरूकतहज्जी=ऐल्फाबिट ।

सं० वर्णसङ्कर (वर्ण=जात, सङ्कर=मिला हुआ) पु० दोगला, जिसका बाप और मा जुदी जुदी जातके हों ।

सं० वर्णिका स्त्री० वर्णों की लिखने वाली, लेखनी, कलम ।

सं० वर्णित र्म० पु० स्तुति किया गया, तारीफ किया गया, कहा गया ।

सं० वर्त्तन (वृत्=होना) पु० जी-विका, आजीविका, जीने का उपाय, रोजी, मन्नाश ।

सं० वर्त्तमान (वृत्=होना) पु० जो
समय बीतरहा है, गु० विद्यमान,
मौजूद ।

प्रा० वर्त्ताव भा० पु० व्योहार, राहरस्मा

सं० वर्त्ति (वृत् + इन) स्त्री० बत्ती,
नयनाञ्जन, इतर, फुलेल, औषध,
दीपक, चिराग ।

सं० वर्तुल गु० गोल, गोलाकार ।

सं० वर्त्म (पु० पथ, अध्वा, राह,
वर्त्मन्) २ पलक, निमेष ।

सं० वर्द्धन (वृध्=वढ़ना) पु० वढ़ना,
बढ़ती, वृद्धि ।

सं० वर्धित क० पु० उन्नत, बढ़ा हुआ ।

सं० वर्म्म (वृ=ढकना) पु० कवच,
बाल्तर ।

सं० वर्बर (वर्ब् + अर, वर्ब्=कहना)
क० पु० बहुत बातूनी, फजूलगो,
मुख्वे, २ पीलाचन्दन, ३ हींग, ४
केशभेद, ५ बावरी ।

सं० वर्ष (वृप्=बरसना या पैदा
करना) पु० साल, संवत्, बारह
महीने, २ वर्षा, मेह, ३ जम्बूद्वीप
का एक खण्ड ।

सं० वर्षण भा० पु० बरसना ।

सं० वर्षा (वृप्=बरसना) स्त्री० मेह,
बरसात, वर्षाकाल, प्रावृत्काल ।

सं० वर्षाकाल (वर्षा + काल) पु०
बरसात, चौमासा, चतुर्मास ।

सं० वर्हिण (वर्ह=मोर की पूंछ,
वर्ही) वर्ह=ऊँचा होना या

सबसे अच्छा होना) पु० मोर, मयूर ।

सं० वल (वल्=घेरना) पु० सेना,
फौज, २ बल, ताकत ।

सं० वलभी स्त्री० बरषडा, गृहचूडा,
बराम्दा ।

सं० वलय (वल्=ढकना वा घेरना)
पु० कंकण, बाला, कड़ा ।

सं० वला स्त्री० सेना, २ लक्ष्मी, ३
धरणी, ४ बरियारा औषध ।

सं० वलाका (वल्=घेरना) स्त्री०
बगुला, बगुले के ऐसा पखेरू ।

सं० वलाहक पु० मेघ, बहल ।

सं० वलि स्त्री० पूजोपहार, पूजा की
सामग्री, २ पशुवध, कुर्वानी ।

सं० वल्कल (वल्=ढकना) पु०
छाल, छिलका, बकला ।

सं० वल्गु पु० छाग, चन्दन, पण,
वन, गु० २ मनोहर ।

सं० वल्मीक (वल्=घेरना, ढकना)
पु० दीमक, बिम्बोट, दीमक की
बाँबी ।

सं० वल्लभ (वल्ल=ढकना) गु०
प्यारा, प्रिय, प्रियतम, पु० पति,
२ अधिकारी ।

सं० वल्लभा (वल्लभ) स्त्री० प्यारी
स्त्री, प्रिया ।

सं० वल्ली (वल्=घेरना) स्त्री० लता,
बेली, २ पृथ्वी, ३ अजमोद ।

सं० वशिष्ठ (वशी=वश करनेवाला
जो अपनी इन्द्रियों को अपने वश में

रक्खे या अश्व और शास् सिखाना जो मनुष्यों को धर्म की बात सिखलावे) पु० एक ऋषि जो ब्रह्मा का बेटा और सूर्यवंशियों का गुरु था, सात प्रजापतियों में एक प्रजापति ।
 सं० वश (वश=स्पृहा, इच्छा) पु० आधीन, काबू, इखतियार ।
 सं० वशी क० पु० जितेन्द्रिय ।
 सं० वशीभूत (वश=अधीन, भू=होना) गु० अधीन, दूसरे के वश में ।
 सं० वश्य र्म० पु० वश में, काबू में ।
 सं० वषट् अव्य० देवताओं के हविर्दान में, २ सत्कार, ३ सेवा ।
 सं० वसति (वस्=बसना) स्त्री० वसती वास, वासा, बस्ती, आवादी, रहने की जगह, २ रात ।
 सं० वसन पु० वस्त्र, वस्त्रादन, २ निवास ।
 सं० वसन्त (वस्=रहना वा ठकना या महकाना, सुगन्धित करना) पु० १ एक ऋतु जो चैत और कुछ वैशाख के महीने तक रहती है, ऋतुराज, २ एकराग का नाम, ३ शीतला, गोटी ।
 सं० वसन्तदूत पु० कोकिला, आमृतक्ष, माधवीलता ।
 सं० वसा स्त्री० चर्बी, मेदा ।
 प्रा० वसीठ पु० दूत, हलकारा, वकील ।
 प्रा० वसीठी स्त्री० दूत का काम,

दूतपन ।
 सं० वसु (वस्=रहना वा ठकना) पु० एक प्रकार के देवता जो आठ हैं (१ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ सावित्र, ५ अनिल, ६ अनल, ७ प्रत्यूष, ८ प्रभास) २ आग, ३ किरण, ४ एकवृक्ष, ५ धन, ६ सोना, ७ रत्न, जवाहिर, ८ पानी, गु० मीठा, २ सूखा ।
 सं० वसुदा (वस्=धन, दा=देना) स्त्री० धरती, जमीन, धरणी, पृथ्वी, भूमि ।
 सं० वसुधा (वसु=धन, धा=रखना) स्त्री० धरती, जमीन, पृथ्वी ।
 सं० वसुन्धरा (वसु=धन, धृ=रखना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन ।
 सं० वस्तव्य क० पु० वास योग्य, रहने के लायक ।
 सं० वस्तु पु० पदार्थ, द्रव्य ।
 सं० वहित्र (वह्=लेजाना वा पहुँचाना) पु० जलयान, जहाज ।
 सं० वहिर्मुख गु० विमुख, बागी ।
 सं० वह्य पु० काँवर, बहँगी, बहँगा, वाहन, डोला, डोली ।
 सं० वह् गु० भूत, प्रभूत, बहुत ।
 सं० वहि (वह्=लेजाना वा पहुँचाना) स्त्री० आग, अग्नि ।
 सं० वा समुच्च० अथवा, या, विकल्प, सादृश्य, अवधारण, वितर्क, पादपूरण ।

सं० वाक्य (वच्=बोलना) पु० बोल, वाक्, वचन, वाणी, २पदों का इकट्ठा होना, जुमला ।	=स्वामी) पु० बृहस्पति, देवताओं का गुरु ।
सं० वाग् पु० वाक्, वाणी, स्त्री० लगाम ।	सं० वाचा स्त्री० वाणी, सरस्वती, वचन, जवान ।
सं० वागीश (वाच्=बोली, ईश= मालिक) पु० १ बृहस्पति, २ ब्रह्मा, ३ कवि, ४ गु० अच्छा बोलनेवाला ।	सं० वाचाट गु० कुत्तिसतभापी, बद कलाम, दुष्टवचनी ।
सं० वागीशा स्त्री० सरस्वती, शारदा ।	सं० वाचाल (वच्=बोलना) क० पु० बातूनी, बहुत बोलनेवाला, गप्पी, बक्की ।
सं० वागीश्वरी (वाच्=बोली, ई- श्वरी=देवी) स्त्री० सरस्वती ।	सं० वाचित र्म० पु० उक्त, कथित ।
सं० वागुरा स्त्री० मृगपाश, फाँसी, फन्दा या जाल ।	सं० वाच्य (वच्=कहना) र्म० पु० बोलने योग्य, जो बोला जाय, जो कहाजाय, पु० वाक्य, अर्थ ।
सं० वाग्दम्बर पु० वाचालता, वा- क्यस्तोम, बहुत बातें, प्रलापी, धूर्त ।	सं० वाच्यता स्त्री० अपमान, हजो ।
सं० वाग्दण्ड (वाच्=बोली, दण्ड =सजा) पु० मुँह से भला बुरा कहना, धमकाना ।	सं० वाज पु० अन्न, घृत, जल, यज्ञ, बाजपक्षी, तीर में पंख, वेग ।
सं० वाग्मी (वाच्=बोली) गु० सु- न्दर बोलनेवाला, पु० बृहस्पति ।	सं० वाजपेय (वाज=यज्ञ की सा- मग्री, अश्ववा घी (वज्=जाना) और पेय पीना पा=पीना) पु० एक प्रकार का यज्ञ ।
सं० वाङ्मय गु० शास्त्र, वाक्यस्वरूप, वाणी का रूप, गोया, वक्ता ।	सं० वाजी (वाज=वेग, वज्=जाना) पु० घोड़ा, २ तीर ।
सं० वाच् { (वच्=बोलना) स्त्री० वाचा { बोली, वचन, वाक्, वाणी, वाक्य ।	सं० वाञ्छा स्त्री० स्पृहा, काङ्क्षा, इच्छा, त्वाहिश, अभिलाष ।
सं० वाचक (वच्=कहना) क० पु० सार्थक शब्द, ऐसा शब्द जिसका अर्थ हो, २ बोलने वाला ।	सं० वाट पु० पथ, राह, जाविकास्थान ।
सं० वाचन भा० पु० पठना, कहना ।	प्रा० वाटी स्त्री० भौरिया, २ गृह ।
सं० वाचस्पति (वाच्=बोली, पति	सं० वात (वा=जाना, बहना) स्त्री० हवा, वाव, बतास, पवन, वायु, २ गठिया वाव, एकरोग ।
	सं० वातापिसूदन क० पु० अगस्त्य

मुनि ।
 सं० वातायन पु० भरोखा, रोशन-
 दान ।
 सं० वात्सल्य (वत्सल) भा० पु०
 प्यार, प्रेम, स्नेह, दयालुता ।
 सं० वाद (वद्=बोलना) पु० शा-
 स्त्रार्थ, वहस, चर्चा, वातचीत, विवाद,
 भगड़ा, रवचन, वाक्य, र दावा,
 मुकदमा, पुकार, फर्षाद ।
 सं० वादक भा० पु० कहना, बजाना ।
 सं० वादरायण पु० व्यासमुनि, वद-
 रिकाश्रमवासी ।
 सं० वादी (वाद) क० पु० बोलने-
 वाला, वाद करनेवाला, शास्त्रार्थ
 करनेवाला, पु० मुद्दई, दावा करने
 वाला, नालिश करनेवाला ।
 सं० वाद्य (वद्=शब्द करना) पु०
 बाजा !
 सं० वानप्रस्थ (वन=जंगल, प्रस्थ
 =रहनेवाला, प्रस्था=ठहरना) पु०
 तीसरे आश्रमका मनुष्य जो ब्रह्म-
 चर्य और गृहस्थाश्रम के पीछे वन
 में रह कर तपस्या करता है, तपस्वी,
 वनवासी ।
 सं० वानर (वान=वन के फल आ-
 दि, रा=लेना अथवा वा=कुछ
 कुछ, नर=मनुष्य अर्थात् जिस
 का डील डौल कुछ कुछ मनुष्यसे
 मिलता है) पु० बन्दर, कपि,
 मर्कट, कीश ।

सं० वानरेन्द्र (वानर + इन्द्र) पु०
 सुग्रीव, २ हनुमान् ।
 सं० वापी (वर=बोना अर्थात् जिस
 में कमल आदि उगते हैं) स्त्री०
 बावड़ी, बावनी ।
 सं० वाम पु० महादेव, वामदेव, २
 धन, ३ वास्तक, वथुवा, ४ वेदाचार-
 विरुद्ध, गु० ५ बल्लु, मनोहर, ६
 सव्य, ७ कुटिल ।
 सं० वामन (वाम, वा=जाना) पु०
 बावना, नाटा ।
 सं० वायन पु० बैना, न्योता ।
 सं० वायव्य (वायु) पु० वायुकोन,
 पश्चिम उत्तर का कोना, गु०
 हवा का ।
 सं० वायस (वयस्=उमर अर्थात्
 बड़ी उमरवाला) पु० कौआ,
 काग, २ एक वृक्षका नाम ।
 सं० वायु (वा=बहना, जाना) स्त्री०
 हवा, पवन, बयार, बत्तास ।
 सं० वायुपुत्र (वायु + पुत्र) पु०
 वातजात, हनुमान्, रामदूत ।
 सं० वायुवाह पु० धूम्र, धूम, धुआँ ।
 सं० वार पु० द्वार, २ अवसर, ३
 शिव, ४ क्षण, दिन, ५ यज्ञपात्र ।
 सं० वारण (वृ=ढकना) पु० रोक,
 निषेध, अटकाव, बाधा, २ हाथी,
 ३ बल्लर, कवच ।
 प्रा० वारना कि० सं० उतारना,
 भेंट चढ़ाना, २ घेरना ।

प्रा० वारपार { (सं० अवारपार
 वारापार } अवार=इस पार,
 पार=उस पार) क्रि०वि० इस उस
 पार, वलें-पलें पार, पु० हृद्, सीमा ।
 सं० वाराणसी स्त्री० 'वरुणा' नदी
 और 'असी' नदी के मध्य की
 बस्ती, काशी ।
 सं० वारि (वृ=ढकना) पु० पानी,
 जल ।
 सं० वारिचर (वारि=पानी, चर
 =चलना) पु० जलचर, जल का
 जीव, मछली, गु० पानी में रह-
 नेवाला ।
 सं० वारिचरकेतु (वारिचर+केतु)
 पु० कामदेव, मकरध्वज, मीन-
 केतन ।
 सं० वारिज (वारि=पानी, जन्=
 पैदा होना) पु० कमल, कैवल ।
 सं० वारिजनयन (वारिज + नयन)
 गु० जिसकी आँखें कमलसी हों ।
 सं० वारिद (वारि=पानी, द=देने
 वाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ ।
 सं० वारिदनाद (वारिद + नाद)
 मेघनाद, रावण का बेटा ।
 सं० वारिधि (वारि=पानी, धा=
 रखना) पु० समुद्र, सागर ।
 सं० वारिनाथ (वारि + नाथ)
 पु० समुद्र, सागर ।

सं० वारिनिधि (वारि + निधि)
 पु० समुद्र, सागर ।
 सं० वारिवाह क० पु० मेघ, वारिद ।
 सं० वारीश (वारि + ईश) पु०
 समुद्र, सागर, सिन्धु ।
 सं० वारुणी स्त्री० पश्चिम दिशा,
 २ मदिगा, ३ शतभिषानक्षत्र, ४
 दूब, ५ वरुण की स्त्री ।
 सं० वार्त्ता (वृत्=होना) स्त्री० बात,
 २ वृत्तान्त, समाचार, ३ गप्प ।
 सं० वार्त्तिक (वृत्ति अथवा वार्त्ता
 से, वृत्=होना) पु० सूत्र की टीका,
 व्याख्या, २ गद्य, नसर ।
 सं० वार्द्धक पु० वृद्धावस्था, वृद्ध
 समूह जैसे (वार्द्धके मुनिवृत्तीनाम्) ।
 सं० वार्य्य { र्म्म० पु० निवार्य,
 वार्य्यमाण } रोका गया ।
 सं० वार्षिक (वर्ष=साल) गु० बर-
 सौड़ी, सालियाना, संवत्ती, बरसका ।
 सं० वाल्मीक { (वल्मीक=दीमक,
 वाल्मीकि } अर्थात् जो दीमक
 में से निकला इसकी कथा रामा-
 यण में देखो) पु० एक मुनि जिम
 ने रामायण बनाई ।
 सं० वावदूक क० पु० वक्ता, बोलने
 वाला ।
 सं० वाष्प (वा=बहना) स्त्री०
 भाफ, धुँवाँ, उष्मा ।

१ यहा पृषोदरादि से वरुणाशब्द के स्थान में वारण आदेश हुआ है ।

२ "उक्तानुक्ताद्विरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते । तं ग्रन्थं वार्त्तिकं प्राहुर्वार्त्तिकज्ञा मनीषिणः" ॥

सं० वामन पु० सुरभीकरण, सुग-
न्धित करना, २ पात्र, वरतन,
३ वस्त्र ।

सं० वासना स्त्री० इच्छा, प्रत्याशा,
२ निवास, स्थान ।

सं० वासर (वस्=रहना) पु० दिन,
दिवस ।

सं० वासव (वसु=यन, सम्पदा
अर्थात् जिसके बहुत धन सम्पदा
हो) पु० इन्द्र, शुक्र, देवताओं
का राजा ।

सं० वासित र्म्यं पु० गन्धयुक्त ।

सं० वासुदेव (वसुदेव) पु० वसुदेव
का बेटा, श्रीकृष्ण ।

सं० वास्तव (वस्तु) गु० ठीक ठीक,
वास्तविक } यथार्थ, सचमुच,
निश्चय, स्थिर ।

सं० वास्तव्य गु० बसनेयोग्य, पु०
बन्धु, रिश्तेदार ।

सं० वाहन (वह्=लेजाना) गु०
पु० सवारी ।

सं० वाहिनी (वह्=लेजाना) स्त्री०
सेना जिसमें ८१ हाथी ८१ रथ
२४३ घोड़े ४०४ पैदल हों, दल,
कटक, फौज, २ नदी, ३ गु०
लेजानेवाली ।

सं० वाहु गु० पु० भुजा, बाजू ।

सं० वाह्य (वाहिस्=बाहर) गु०
बाहर का, बाहरी ।

सं० वि अभ्य० वियोग, विशेष, नि-

श्चय, असहन, निग्रह, हेतु, अव्याप्त,
ईषत्, थोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन,
ज्ञान, गति, आलस्य, पालन ।

सं० विकल गु० विह्वल, व्याकुल,
घबराया ।

सं० विकराल (वि=बहुत, कराल=
डरावना) गु० बहुत डरावना,
बहुत भयानक ।

सं० विकल्प पु० शक, भ्रान्ति,
पसोपेश, आगा पीछा ।

सं० विकार (वि, कृ=करना, परंतु
वि उपसर्ग के साथ आने से अर्थ
बदलना हुआ) पु० स्वभाव का
बदलना, बदलजाता, अन्यरूप
होना, बीमारी ।

सं० विकशन भा० पु० प्रकाश,
खिलना ।

सं० विकीरण भा० पु० फैकना,
फैलाना, २ ज्ञान ।

सं० विकृत (वि, कृ=करना) र्म्यं
बदला हुआ, २ उलटा, विरुद्ध, ३
बीमार, रोगी, ४ मलीन ।

सं० विकृति स्त्री० बदलना, रूपान्तर ।

सं० विक्रम (वि=बहुत, क्रम=जाना)
भा० पु० पराक्रम, बल, जोर,
शक्ति, शूरता, वीरता, २ उज्जैन
का राजा विक्रमादित्य, ३ विष्णु ।

सं० विक्रमादित्य (विक्रम + आ-
दित्य अर्थात् बल या शूरवीरता
का सूर्य) पु० उज्जैन नगरी का

प्रसिद्ध राजा जिसने संवत् चलाया।
 सं० विक्रमी (विक्रम) गु० धलवान्,
 शूरवीर, पराक्रमी, बहादुर, पु० सिंह।
 सं० विक्रय (क्री=मोललेना) भा०
 पु० बेचना, नीलाम करना।
 सं० विक्रीय { क० पु० बेचनेवाला।
 विक्रेता }
 सं० विक्रिया भा० स्त्री० विकार, बद-
 लजाना, फिरजाना, पलटजाना।
 सं० विक्लव { गु० विह्वल, परेशान,
 विक्लान्त } श्रान्त, श्रमित।
 सं० विक्लिन्न गु० जीर्ण, जर्जर।
 सं० विक्लेद भा० पु० नमी, आर्द्रता,
 रतूवत, तरी।
 सं० विक्षेप (वि=बहुत, क्षिप्=फें-
 कना) पु० घबराहट, व्याकुलता, २
 फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्या-
 गना, अन्तर।
 सं० विख्यात (वि=बहुत, ख्यात=
 प्रसिद्ध) र्म० पु० बहुत प्रसिद्ध,
 नामवर, नामी, यशी, यशस्वी।
 सं० विख्याति स्त्री० प्रसिद्धता,
 शुहरत, नामगरी।
 सं० विगत (वि=बहुत, गम्=जाना)
 र्म० जो चला गया, गत, जुदा
 हुआ, रहित, बिना, हीन।
 सं० विगतश्रम (विगत=चली गई
 है, श्रम=थकावट) गु० जिसकी
 थकावट चली गई हो, बिन मिहनत।
 सं० विगर्हण भा० पु० निन्दा करना।

प्रा० विगोये गु० झिपे हुये।
 सं० विग्रह (वि, ग्रह=लेना, वि
 उपसर्ग के साथ आने से लड़ना
 अर्थ भी होता है) पु० लड़ाई,
 गुद्ग, विगाड़, २ शरीर, देह, ३
 फैलाव, ४ भाग, ५ आकार, ६
 असमास।
 सं० विघटन भा० पु० बचना,
 तोड़ना, बिगाड़ना।
 सं० विघटित (घट्=बचना) र्म०
 पु० मिलाया गया, रचा गया,
 तोड़ा गया।
 सं० विघात (हन्=मारना) भा०
 पु० नाश करना।
 सं० विघातक क० पु० नाशक।
 सं० विघ्न (वि, हन्=मारना) पु०
 गोक, रुकाव, अटकाव, बिगाड़, बाधा।
 सं० विचक्षण (वि=बहुत, चक्ष्=
 बोलना या देखना) गु० चतुर,
 प्रवीण, पण्डित, बुद्धिमान्, स्याना।
 सं० विचरण भा० पु० भ्रमण,
 इधर उधर घूमना।
 सं० विचलना (सं० विचल, वि=
 बहुत, चल=चलना) क्रि० अ०
 तितर-बितर होना, अधीर होना,
 हिम्मत हारना, मचलना, रूठना।
 सं० विचार पु० तत्त्वनिर्णय, अभि-
 प्राय, मनका भाव, दिलीखयाल।
 सं० विचित्र गु० रंग बरंग, अद्भुत,
 अजीब।

सं० विच्छिन्न (वि, छिद्=काटना)
 र्म० पु० विभक्त, विदीर्ण, बटा,
 कटा फटा ।

सं० विच्छेद (वि, छिद्=काटना)
 पु० वियोग, जुदाई, अन्तर ।

सं० विजय (वि=बहुत, जि=जी-
 तना) स्त्री० जीत, फतह, जय ।

सं० विजया (वि=बहुत, जि=
 जीतना) स्त्री० विजया दशमी,
 कुँवार सुदी १०--२ दुर्गा, देवी,
 ३ भाँग, बूटी ।

सं० विजयी (वि=बहुत, जयी=
 जीतनेवाला) क० पु० बहुत जी-
 तनेवाला ।

सं० विजानि (वि=दूसरी, जाति=
 भाँति) स्त्री० और जाति, दूसरी
 जाति, दूसरी भाँति ।

सं० विजिगीषा स्त्री० जीतने की
 इच्छा ।

सं० विज्ञ (वि=बहुत, ज्ञा=जानना)
 क० पु० प्रवीण, पण्डित, चतुर,
 ज्ञानवान्, बुद्धिमान्, विद्वान् ।

सं० विज्ञता (विज्ञ) स्त्री० पण्डिताई,
 बुद्धिमानी, प्रवीणता, लियाकत ।

सं० विज्ञान (वि=बहुत, ज्ञा=जा-
 नना) पु० बहुतज्ञान, शास्त्रज्ञान,
 शिल्पविद्या ।

सं० विज्ञापन (वि=बहुत, ज्ञापन
 =जताना, ज्ञा धातुका प्रेरणार्थक में
 ज्ञाप रूप होता है) पु० जताना,

शिक्षा, रमार्थना, विनती, इच्छिला,
 नोटिस, इशितहार ।

सं० विटप (विट=विस्तार या पेड़
 की नई डाली, पा=पालना या
 विट्=शब्द करना) पु० वृक्ष, पेड़,
 २ नई डाली और नये पत्ते आदि ।

प्रा० विडरि गु० विशेष भय से,
 विथराना, छितराना ।

सं० विडम्बक (विड=निन्दा करना)
 क० पु० निन्दक, प्रतारक ।

सं० विडम्बना स्त्री० तिरस्कार क-
 रना, अपमान करना ।

सं० विडम्बित र्म० पु० अपमा-
 नित, निन्दित, तिरस्कृत ।

सं० विडाल (विड=बुरा बोलना)
 पु० बिलाव ।

सं० वितण्डा (वि, तण्डि=मारना)
 स्त्री० मिथ्यावाद, वाक्प्रपञ्च, पक्ष-
 पात करना, तन्त्रस्सुब करना ।

सं० वितर्क (वि + तर्क) स्त्री० बड़ी
 तर्क, अनुमान, विचार, वाद ।

सं० वितत र्म० पु० प्रसारित, फै-
 लाया गया, ताना गया ।

सं० वितान (वि=बहुत, तन्=फै-
 लाना) पु० चँदवा, मण्डप, २
 यज्ञ, ३ फैलाव, विस्तार ।

सं० वितरण (वि, तृ=पारजाना)
 पु० दान, निस्सरण, खैरात,
 प्रतरण, निर्वाह, संतरण, उद्धार,
 बाटना, खर्च करना ।

सं० चित्तरणशाली गु० दानी, मखी ।

सं० वित्त (वित्त=त्यागना) पु०
धन, द्रव्य, गु० ख्यात, ज्ञात,
विचारित, लब्ध, गात, बल ।

सं० विथकहिं गु० चकित होई ।

सं० विदर्भ (वि=विन, दर्भ=एक
प्रकार का घास जो इस देश में
एक ऋषिके शाप से कि जिसका
बेटा इस घास से घायल हो कर
मर गया था नहीं पैदा होती है)
पु० बंगाले के दक्षिण पश्चिम का
एक जिला और एक शहर जिस
को अब नागपुर अथवा बरार
कहते हैं ।

सं० विदा (विद्=विभाग ज्ञान)
स्त्री० ज्ञान, बुद्धि, २ जुदाई, रुखसत ।

प्रा० विदाई भा० स्त्री० जाने की
भेट, रुखसती नजर ।

सं० विदारण (वि=बहुत, दृ=फा-
ड़ना) पु० फाड़ना, चीरना, भे-
दन, लड़ाई, युद्ध, २ गु० चीरने
वाला, फाड़नेवाला ।

सं० विदित (विद्=जानना) र्म्य०
पु० जाना हुआ, समझा हुआ,
२ प्रसिद्ध, ३ प्रार्थना किया गया,
निवेदित ।

सं० विदिश (वि=बीच, दिश=
दिशा) स्त्री० दिशा का बीच,
कोन, गोसा ।

सं० विदीर्ण (दृ=फाड़ना) र्म्य०

पु० फाड़ा, चीरा, फाड़ा हुआ ।

सं० विदुर पु० कौरवों का मन्त्री,
दार्सापुत्र, धृतराष्ट्र का भाई, गु०
धीर, ज्ञानी ।

सं० विदूषक (दूष्=बुरा कहना)
क० पु० निन्दक, भोंड़ ।

सं० विदुष पु० पण्डित ।

सं० विदुषी स्त्री० पण्डिता ।

सं० विदेह (वि=नहीं, देह=शरीर
अर्थात् जिसको अपने शरीर का
कुछ ध्यान नहीं था, केवल परमे-
श्वर का ध्यान था) पु० जनक
राजा, मिथिला का राजा और
सीता का बाप ।

सं० विद्व (व्यध्=छेदना) र्म्य०
पु० छेदा हुआ, पार किया हुआ,
फाड़ा हुआ, ताड़ित ।

सं० विश्वमान (विद्=होना) गु०
वर्तमान, जो हाजिर हो, मौजूद ।

सं० विद्या (विद्=जानना) स्त्री०
ज्ञान, शास्त्र का ज्ञान, इल्म, चौदह
विद्या प्रसिद्ध हैं (चार वेद और
छः वेदों के अङ्ग, ११ वीं पुराण,
१२ मीमांसा, १३ न्याय, १४
धर्मशास्त्र) २ देवीका मन्त्र, ३ दुर्गा ।

सं० विद्याधर (विद्या=मन्त्र आदि,
धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु०
एक प्रकार के देवता ।

सं० विद्यार्थी (विद्या, अर्थी=चा-
हनेवाला, अर्थ=चाहना) क० पु०

विद्या पढ़नेवाला, छात्र ।
 सं० विद्यालय (विद्या + आलय)
 धि० पु० पाठशाला, स्कूल, कालेज ।
 सं० विद्यावान् (विद्या + वान्)
 गु० पण्डित, ज्ञानवान्, विद्वान् ।
 सं० विद्युत् (वि=बहुत, द्युत्=चम-
 कना) क० स्त्री० बिजली, दा-
 मिनी, तड़ित ।
 सं० विद्रावक (वि + द्रु=जाना) क०
 पु० चुआनेवाला, टपकानेवाला ।
 सं० विद्रुम (वि=विशेष, खास,
 और द्रुम=वृक्ष) पु० मूंगा, प्रवाल ।
 सं० विद्रोह भा० पु० बैर, दुश्मनी ।
 सं० विद्रोही (वि + द्रुह=अशुभ-
 चिन्तक) क० पु० बैरी, दुश्मन ।
 सं० विद्वान् (विद्=जानना) क०
 पु० पण्डित, विद्यावान्, ज्ञानी ।
 सं० विद्वेष (वि + द्विप्=शत्रुता क-
 रना) पु० बैरभाव, शत्रुता, विरोध, बैर ।
 सं० विद्वेषक
 विद्वेषी } क० पु० हिंसक,
 विद्वेष्टा } बैरी, दुश्मन ।
 प्रा० विध (सं० विधि) स्त्री० रीति,
 प्रकार, ढब, भाँति, रूप, चाल ।
 सं० विधातव्य र्म० विधेय, धरने
 योग्य ।
 सं० विधाता (वि=बहुत, धा=
 रखना) पु० ब्रह्मा, सृष्टि बनाने
 वाला, ईश्वर, भाग, किस्मत ।
 सं० विधात्री स्त्री० ब्रह्माणी, मुह-

कपा दीवानी ।
 सं० विधान (वि=बहुत, धा=र-
 खना) पु० विधि, रीति, शास्त्र
 में कहीहुई रीति ।
 सं० विभाग्यक क० पु० मुनिसफ ।
 सं० विधि (वि=बहुत, धा=रखना)
 पु० ब्रह्मा, २ ईश्वर, सृष्टि बनाने
 वाला, २ भाग, किस्मत, ४ रीति,
 शास्त्र में कहीहुई रीति ।
 सं० विधिरा स्त्री० ब्रह्मा की
 वाणी ।
 सं० विधिवत् अव्य० यथायोग्य,
 रीत्यनुसार, वा कायदा ।
 सं० विधु (व्यध्=बेदना, विरही
 लोगों के हिरदे को) पु० चाँद,
 चन्द्रमा, २ कपूर, ३ विष्णु, ४
 एक राक्षस, ५ ब्रह्मा ।
 सं० विधुनुद (विधु=चाँद को,
 तुद्=दुःख देना) पु० राहु ।
 सं० विधूत (वि + धू=कँपाना)
 र्म० कम्पित, त्यक्क ।
 सं० विध्वंस (वि=बहुत, ध्वंस्=गि-
 रना) पु० नाश, विनाश ।
 सं० विध्वस्त र्म० पु० विनष्ट,
 नाशकृत, हराया गया ।
 सं० विनत (वि + नम्=झुकना)
 क० पु० प्रणत, नम्र ।
 सं० विनता स्त्री० गरुड़ की माता ।
 सं० विनति भा० स्त्री० विनय, स्तुति ।
 सं० विनय (वि=बहुत, नी=ले-

जाना वा पाना) स्त्री० विनती,
शिष्टाचार, नम्रता ।
सं० विनश्चर क० पु० नाश होने
वाला, फानी ।
सं० विनायक (वि, नी=लेजाना
वा पाना) पु० गणेश, २ बुध, ३ गरुड़ ।
सं० विनाश (वि=बहुत, नश=नाश
होना) पु० बहुत नाश, बरबादी ।
सं० विनाशित र्म० पु० नष्ट,
विध्वंसित ।
सं० विपात (वि + पत्=जाना,
गिरना) पु० निपात, वज्रपात,
नाश, व्यसन, अपमान ।
सं० विनिमय (वि + नि + मि +
अ, मि=फँकना) पु० विलोम,
अस्तव्यस्त, विपरीत, परिवर्तन,
अदलाबदली करना, ग्रहण, बन्धन ।
सं० विनीत (वि=बहुत, नी=ले-
जाना वा पहुँचाना) क० पु०
नम्र, विनयी, सुशील ।
सं० विनेता क० पु० राजा ।
सं० विनोद (वि, नुद्=भेरणा करना,
चलाना, परंतु वि उपसर्ग के भाव
आने से इसका अर्थ हँसी करना
होता है) पु० खेल, हँसी ठट्ठा,
कौतुक, क्रीड़ा, खुशी, हर्ष, आनन्द ।
सं० विन्दु (विद्=जुदा जुदा होना ।
पु० बिंदी, बूँद, शून्य, २ अनुस्वार,
३ पानी का कन, गु० ४ ज्ञाता, ५
दाता, जानने योग्य, नामनिश्चर ।

सं० विन्ध्य (विष्=वेदना) पु०
विन्ध्याचल पहाड़ ।
सं० विन्ध्यवासिनी (विन्ध्य=
विन्ध्याचल, वासिनी=रहनेवाली,
वस्=रहना) स्त्री० दुर्गा, देवी,
भगवती, योगमाया ।
सं० विन्ध्याचल (विन्ध्य + अ-
चल) पु० एक पहाड़ का नाम ।
सं० चित्र (विद्=जानना) र्म० पु०
प्राप्त, ज्ञात, जाना गया, स्थित ।
सं० विन्यस्त र्म० पु० यथाक्रम
स्थापित किया गया, तरतीबवार
रक्खा गया ।
सं० विन्यास पु० स्थापन करना,
रचना करना ।
सं० विपक्ष (वि=विरुद्ध या उल्टा,
पक्ष=ओर, तरफ) पु० शत्रु, वैरी,
दुश्मन ।
सं० विपत्ति (वि=बुरी तरह से,
पद्=जाना) स्त्री० आपदा, विपदा,
विपत्, दुःख, तकलीफ ।
सं० विपद् (वि=बुरी तरह से,
विपत् } पद्=जाना) भा० स्त्री०
विपदा } विपत्ति, आपदा,
आफत ।
सं० विपरीत (वि, परि=उल्टा,
इण्=जाना) गु० उल्टा, विरुद्ध ।
सं० विपर्यय (वि + परि + इण् +
अ, इण्=जाना) पु० व्यतिक्रम,
विपरीत, उल्टा पलट ।

सं० विपर्यस्त क० पु० व्यतिक्रान्त,
 विपरीत, लौट पौट करनेवाला ।
 सं० विपर्यास भा० पु० विलोम,
 विपरीत, विपर्यय ।
 सं० विपल पु० क्षण, लहमा ।
 सं० विपरिचित् पु० बुद्धिमान् ।
 सं० विपाक पु० कर्मभोग, फल,
 नतीजा ।
 सं० विपिन (वप्=बोना) पु० वन,
 जंगल ।
 सं० विपुल (वि=बहुत, पुल्=व-
 दना या फैलना) गु० बड़ा, ब-
 हुत फैला हुआ, गंभीर ।
 सं० विप्र (वि=बहुत, प्रा=भरना
 वा वप्=बोना) पु० ब्राह्मण ।
 सं० विप्रलब्ध र्म० वञ्चित, धोखा
 दिया गया ।
 सं० विप्लव (वि, प्लु=जाना) पु०
 देशोपद्रव, राष्ट्रोपद्रव ।
 सं० विप्लुत र्म० व्यसन, गदर ।
 सं० विफल (वि=बिन, फल=लाभ)
 गु० निष्फल, वृथा, बेफायदाह ।
 सं० विबुध (वि=बहुत, बुध्=जानना)
 पु० देवता, २ पण्डित, ३ चाँद ।
 सं० विबुधनदी (विबुध + नदी)
 स्त्री० देवताओं की नदी, श्रीगङ्गाजी ।
 सं० विबुधजन क० पु० पण्डित ।
 सं० विबोधन भा० पु० सम्झाना,
 प्रबोध करना ।
 सं० विभक्त र्म० पृथक्कृत, बाँटा

गया, मुन्कसिम ।
 सं० विभक्ति (वि, भज्=डुकड़े
 करना, अलग करना) स्त्री० अंश,
 बाँट, डुकड़ा, हिस्सा, २ व्याक-
 रण में कारकों के चिह्न ।
 सं० विभव (वि=बहुत, भू=होना)
 पु० संपदा, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य,
 २ एक संवत्सर का नाम ।
 सं० विभाग (वि=बहुत, भज्=डु-
 कड़े करना) पु० भाग, डुकड़ा,
 बाँट, हिस्सा, अंश, प्रकरण, स-
 रिरता, सीगञ्ज, मद, भेद, फर्क,
 तकसीम ।
 सं० विभाजक क० पु० अंशकारी,
 हिस्सेदार ।
 सं० विभाजित र्म० बंदिता, बाँटा
 गया ।
 सं० विभावना (वि, भू=होना)
 स्त्री० प्रसिद्ध कारण के अभाव से
 कार्य की उत्पत्ति युक्त लक्षण,
 अलंकारभेद ।
 सं० विभावस पु० सूर्य, मदारवृक्ष,
 वह्नि, चन्द्र, द्वारभेद ।
 सं० विभीषण (वि=बहुत, भी=
 डराना वैरियों को) पु० रावण का
 भाई, गु० डरानेवाला, भयानक ।
 सं० विभीषा भा० पु० भय, भयानक ।
 सं० विभीषिका भा० स्त्री० भय-
 प्रदर्शन, भयदिखाना ।
 सं० विभु (वि=बहुत, भू=होना)

गु० समर्थ, प्रभु, सर्वव्यापी, पु०
मालिक, रशिव, ३ ब्रह्मा, ४ विष्णु ।
सं० विभुक्त (वि=बहुत, भुज्=
खाना) र्म० पु० बहुत खाया,
बहुत भोजन किया ।
सं० विभूति (वि=बहुत, भू=होना)
स्त्री० सम्पदा, ऐश्वर्य, सिद्धि,
सम्पत्ति, धन, दौलत आदि सुख,
२ राख, भस्म ।
सं० विभूषण (वि=बहुत, भूष्=
सिंगार करना) ण० पु० गहना,
अलंकार, जेवर, शोभा, आभूषण ।
सं० विभूषित (वि=बहुत, भूष्=
सिंगारना) र्म० पु० शोभित,
सँवारा हुआ, शोभायमान, फवता
हुआ, मुजैयन ।
सं० विभेदक (वि, भिद् + अक,
भिद्=तोड़ना) क० पु० विक्षेपक,
तोड़नेवाला ।
सं० विभ्रम (वि=बहुत, भ्रम्=भूलना)
पु० चेष्टाभेद, सन्देह, कटाक्ष, एक
अङ्ग का आभूषण दूसरे अङ्ग में
धारणकरना, भ्रान्ति, भ्रमण, शोभा ।
सं० विभ्राज क० पु० शोभायमान,
भ्राजिष्णु, शृङ्गारसे सुशोभित ।
सं० विमर्श (वि, मृश्=छूना,
विमर्शन } ध्यान करना) पु०
विचार, परामर्श ।
सं० विमर्ष (मृष्=क्षमा करना) क०
पु० मौनी, विचारी, क्रोधी ।

सं० विमल (वि=बिन, मल=मैल)
गु० निर्मल, स्वच्छ, साफ, शुद्ध ।
सं० विमाता (वि=दूसरी, माता=
माँ) स्त्री० सौतेली माँ ।
सं० विमान (वि=बहुत, मा=आदर
करना या मान्=पूजना) पु०
देवताओं का रथ ।
सं० विमुक्त (वि, मुच्=छूटना, छो-
ड़ना) र्म० छूटा हुआ, रिहा ।
सं० विमुख (वि=उलटा, मुख=मुँह)
गु० विरोधी, फिरा हुआ ।
सं० विमुग्ध गु० अज्ञान, मूढ़ ।
सं० विमूढ़ (वि=बहुत, मूढ़=मूर्ख)
गु० बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ ।
सं० विमोचन (वि, मुच्=छुड़ाना)
पु० छोड़ना, मुक्त करना, क० दूर
करनेवाला, छुड़ानेवाला ।
सं० विम्ब (वी=चमकना या जाना)
पु० मूरत, छवि, तसवीर, छाया,
प्रतिविम्ब, २ सूर्य अथवा चन्द्रमा
का मण्डल, ३ बिम्बाफल, एक
लालफल, कुंदरू ।
सं० वियोग (वि=नहीं, योग=मेल)
भा० पु० विरह, जुदाई, बिछवा,
बिछड़ना, जुदा रहना ।
सं० वियोगी (वियोग) क० पु०
विरही, जुदा रहनेवाला, बिछड़ा
हुआ ।
सं० विरक्त (वि=नहीं, रज्ज्=रँगना)
क० पु० वैरागी, उदासी ।

सं० विरचित (वि, रच्=बनाना)

र्म० पु० बनाया हुआ, रचा हुआ ।

सं० विरञ्च (वि=बहुत, रच्=बनाना) पु० सृष्टि बनानेवाला, ब्रह्मा ।

सं० विरज गु० क्रोधरहित, बेतमकनत ।

सं० विरत (वि=नहीं, रम्=खेलना) क० पु० वैराग्यवान्, जिसने संसार छोड़ दिया हो, रिहा, बेगम ।

सं० विरति (वि=नहीं, रम्=खेलना) भा० स्त्री० वैराग्य, त्याग, संसार को छोड़ देना ।

सं० विरद (वि=नहीं, रद्=खोदना) पु० यश, नामवरी, बाना, लिबास, हथियार, अस्त्र, शस्त्र ।

प्रा० विरदैत गु० वीर, बानावाले ।

सं० विरह (वि=बहुत, रह=छोड़ना) पु० जुदाई, बिछोह, बिछुड़ना, वियोग ।

सं० विराग (वि=नहीं, रञ्ज=रँगना) पु० वैराग, लोभ मोह को छोड़ना ।

सं० विराज पु० क्षत्रिय आदि पुरुष, विष्णु का स्थूलरूप ।

सं० विराजमान (वि=बहुत, राज्=शोभना) क० पु० शोभायमान, सोहता हुआ ।

सं० विराजित क० पु० दीप्त, रोशन ।

सं० विरुज गु० नीरोग, तन्दुरुस्त, रोगरहित ।

सं० विराट (वि=बहुत, राज्=शो-

भना) पु० विष्णु की बड़ी मूर्त, विश्वरूप, २ एक देश का नाम ।

सं० विराध (वि=बुरी तरहसे, राध्=पूरा करना, सिद्ध करना) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० विराम (वि=बहुत, रम्=आनन्द करना) पु० ठहराव, विश्राम, शान्ति, अन्त, अवसान, निवृत्ति, समाप्ति ।

सं० विराम (वि=नहीं, रम्=चैन करना) गु० व्याकुल, दुःखी, बेचैन ।

सं० विरामक क० पु० लौटारनेवाला ।

सं० विरुद्ध (वि=बहुत, रुध्=रोकना) गु० उलटा, विपरीत, खिलाफ ।

सं० विरूप (वि=बुरा, रूप=ढौल) गु० कुरूप, भौड़ा, अनसुहावना, बदसूरत ।

सं० विरेचक (रिच्=गिराना) क० पु० दस्तावर, मलभेदक ।

सं० विरेचन भा० पु० जुलाब, मल-निस्सारण ।

सं० विरेचित र्म० पु० सहिल, रेचित ।

सं० विरोचन (वि=बहुत, रुच्=चमकना) पु० प्रह्लाद का बेटा और राजा बलिका बाप, २ सूर्य, ३ चाँद ।

सं० विरोध (वि, रुध्=रोकना) भा० पु० वैर, द्वेष, शत्रुता, दुश्मनी, २ झगड़ा, लड़ाई ।

सं० विरोधक क० पु० विवादी, वैरी ।

सं० विरोधी (विरोध) क० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन, २ झगड़ाल ।

सं० विल (विल=छेद करना) र्म्यं
पु० छिद्र, गर्त, गड़हा ।

सं० विलक्षण (वि=बहुत, लक्ष=
देखना या चिह्न करना) गु०
विचक्षण, अनूप, उत्तम, भला,
श्रेष्ठ, २ जुदा, भिन्न ।

प्रा० विलगावना क्रि० स० अलग
करना, निकाल देना ।

प्रा० विलपना क्रि० अ० रोदन, रोना ।
सं० विलपन गु० रोते हुए ।

सं० विलम्ब (वि=बहुत, लवि=
ठहरना) स्त्री० देरी, अवसर, टाल-
मटोल, अर्सा ।

सं० विलाप (वि=बुरी तरहसे, लाप्
=बोलना अर्थात् रोना) पु०
रोना, विलकना, शोच, शोक,
सन्ताप, दुःख ।

सं० विलास (वि=बहुत, लस्=
खेलना) पु० खेल, क्रीड़ा, केलि,
विहार, भोग, सुख, आनन्द, हर्ष,
ऐश ।

सं० विलासिन गु० पु० भोगी, ऐ-
याश, पु० सर्प, २ कृष्ण, ३ वह्नि, ४
कामदेव, ५ महादेव, ६ चन्द्र ।

सं० विलासिनी स्त्री० नारी, वेश्या ।

सं० विलासी क० पु० भोगी, ऐयाश ।

सं० विलीन (ली=लगना) क०
पु० विरत, नष्ट, लयप्राप्त ।

सं० विलुप्त (लुप्=अदृश्य होना)
क० पु० अदृष्ट, नष्ट, गुप्त ।

प्रा० विलूलन पु० बुद्बुद, बुल्ला
पानी का ।

सं० विलोकन (वि, लोक=देखना)
पु० दृष्टि, दीठ, नज़र, ताक ।

प्रा० विलोकना (सं० विलोकन)
क्रि० स० देखना, ताकना ।

सं० विलोकित र्म्यं देखा हुआ ।

सं० विलोचन (वि, लोच्=देखना)
ण० पु० आँख, नयन, नेत्र ।

सं० विलोप भा० पु० अदर्शन, नाश ।

सं० विल्व (विल्=ढकना) पु० बेल
का पेड़ या फल ।

सं० विवर (वि=नहीं, वृ=ढकना)
पु० विल, छेद, गढ़ा, संध, २ दोष ।

सं० विवरण (वि=नहीं, वृ=ढकना
अर्थात् शब्द के अर्थ आदि का खो-
लना) पु० टीका, व्याख्या, बखान,
२ हिज्जा, ३ रिपोर्ट, बहस ।

सं० विवर्ण गु० अधम, नीच, २
रँगहीन, रूपरहित, निश्चेष्ट ।

सं० विवस्वत् पु० सूर्य, अर्कवृक्ष,
अरुण, लाल ।

सं० विवाद (वि=बहुत, वाद=
झगड़ा) पु० वाद, झगड़ा, उलटा
कहना, विरोध ।

सं० विवाह (वि=आपसमें, वह=ले-
जाना) पु० व्याह, गठबन्धन, शादी ।

सं० विवाहित (विवाह) र्म्यं पु०
व्याहा हुआ, जिसकी शादी हो
गई हो ।

सं० विवाहिता (विवाहित) र्म०
पु० स्त्री० व्याही हुई ।

सं० विविक्त (वि, विच्=जुदा क-
रना) गु० छोड़ाहुआ, २ एकान्त,
निर्जन, ३ पवित्र ।

सं० विवृत्ति स्त्री० विस्तार, व्याख्यान ।

सं० विविधे (वि=बहुत, विध=
प्रकार) गु० नानाप्रकार का,
भाँति भाँति का ।

सं० विवेक (वि=बहुत, विच्=जुदा
करना, विचारना) पु० विचार,
ज्ञान ।

सं० विवेकी (विवेक) क० पु० वि-
चारकरनेवाला, ज्ञानवान्, ज्ञानी ।

सं० विवेचना (वि=बहुत, विच्=
जुदा जुदा करना, विचारना) स्त्री०
भूठ सच का विचार, विवेक,
तमीज । ल

सं० विवेच्ये (पु०, र्म० विचारित,
विवेच्यधर } विचारने योग्य ।
विवेच्य)

सं० विवोदा पु० जामाता, दामाद,
वर, दूल्हा, नौशा ।

सं० विशद (वि, शद्=जाना) गु०
धौला, सफेद, श्वेत, निर्मल, साफ,
उज्ज्वल ।

सं० विशाखा (वि=बहुत, शाखा=
प्रकार) स्त्री० सोलहवाँ नक्षत्र ।

सं० विशारद (विशाल=बहुत, द=
देनेवाला, दा=देना यहाँ विशाल

के ल को र होगयाहै) गु० पण्डित,
विद्वान्, निपुण, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध ।

सं० विशाल (वि=बहुत, शल्=
जाना) गु० बड़ा, बहुत, चौड़ा,
फैलाहुआ ।

सं० विशिख (वि=बहुत, अर्थात्
तीखी, शिखा=चोटी अथवा अणी
या वि=नहीं, शिखा=चोटी) पु०
तीर, बाण, शर, गु० बिन चोटी
का, शिखारहित ।

सं० विशिखासन (विशिख +
आसन) पु० धनुष, कमान ।

सं० विशिष धि० पु० मन्दिर ।

सं० विशिष्ट (वि=बहुत, शिष्=गुण
सहित होना) क० पु० साथ, संयुक्त,
सहित, जुड़ाहुआ, २ उत्तम, बड़ा ।

सं० विशुद्ध (वि=बहुत, शुद्ध=पवित्र)
गु० बहुत पवित्र, निर्मल, विमल,
उज्ज्वल, उज्जल ।

सं० विशुद्धि भा० स्त्री० शोधन,
दोष दूर करना ।

सं० विशेष (वि=बहुत, शिष्=
गुणके साथ होना) पु० प्रकार,
भेद, जाति, गु० मुख्य, खास,
निज, २ बहुत, अधिक ।

सं० विशेषोक्ति स्त्री० यत्नोक्ति, विशेष
वाक्य, अर्थालङ्कार भेद ।

सं० विशेषण (वि=बहुत, शिष्=
गुणके साथ होना) क० पु० गुण,
धर्म, स्वभाव, तारीफ़ ।

सं० विशेष्य (वि + शिष्) पु० नाम,
संज्ञा, र्म=खास, प्रधान ।

सं० विशोक (वि=बिन, शोक=
शोच) गु० जिसको किसी बात
का शोच न हो ।

सं० विश्रम्भ पु० विश्वास, प्रत्यय,
निश्चय, एतबार ।

सं० विश्रान्त (वि=नहीं, श्रान्त=
थकाहुआ) क० चैनसे, सुस्थिर,
आराम कियाहुआ, बेथकाहुआ ।

सं० विश्रान्तघाट (विश्रान्त +
घाट) पु० यमुना नदी पर का एक
घाट जहाँ श्रीकृष्ण और बलदेवजी
ने कंसको मारके आराम कियाथा ।

सं० विश्राम (वि=नहीं, श्रम्=
थकना) भा० पु० चैन, आराम,
ठहराव ।

सं० विश्लिष्ट (श्लिष्=मिलना)
क० पु० अयुक्त, शिथिल ।

सं० विश्लेष पु० वियोग, विच्छेद,
विभाग, शैथिल्य ।

सं० विश्लेषक क० पु० विच्छेदक,
विभाजक ।

सं० विश्व (विश्=घुसना) पु०
जगत्, संसार, जग, दुनिया, २
एक प्रकार के देवता जिनको श्राद्ध
में पिण्ड और बलि आदि देते हैं,
गु० सब, सम्पूर्ण ।

सं० विश्वकर्मा (विश्व=संसार,

कर्म=काम अर्थात् जिसका काम
सब संसार में है) पु० देवताओं का
राजा और ब्रह्माका बेटा, २ सूर्य ।

सं० विश्वक्सेन (विश्वक्=सब
विष्वक्सेन) संसार में जाने-
वाली (विश्व=संसार, अच्=
जाना) सेना, फौज है जिसकी)
पु० विष्णु, नारायण ।

सं० विश्वनाथ (विश्व + नाथ)
पु० शिव, महादेव जिनका मन्दिर
बनारस में है ।

सं० विश्वप (विश्व=संसार, पा=
रक्षा करना) क० पु० विश्वपालक ।

सं० विश्वम्भर (विश्व=संसार को,
भर=पालनेवाला, भृ=पालना)
पु० विष्णु, २ ईश्वर ।

सं० विश्वरूप (विश्व + रूप) पु०
विष्णु, सर्वव्यापी ।

सं० विश्वसित क० विश्वास
पात्र, मुअतमिद ।

सं० विश्वस्त क० पु० प्रत्ययित,
विश्वासकर्ता, मुअतमिद, जात-
विश्वास ।

सं० विश्वामित्र (विश्व=संसार
अथवा सब, मित्र=प्यारा, जिसका
सब संसार मित्र है) पु० गाधि
राजा का बेटा जो राजश्रुषि से
ब्रह्मश्रुषि होगया ।

सं० विश्वास (वि, श्वस्=जीना,

पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ भरोसा करना होजाता है) पु० भरोसा, प्रतीत, एतमाद ।
 सं० विश्वासी क० पु० भरोसा करनेवाला, विश्वासक ।
 सं० विश्वासघातक (विश्वास + घातक) क० पु० कपटी, छली, दगाबाज, ठग ।
 सं० विश्वासपात्र (विश्वास + पात्र) पु० भरोसावाला, काबिल एतमाद ।
 सं० विश्वासविशिष्ट पु० विश्वास योग्य, प्रतीति योग्य, जिस पर भरोसा किया जाय ।
 सं० विश्वेश } (विश्व=संसार, विश्वेश्वर } ईश वा ईश्वर=मालिक) पु० महादेव, शिव ।
 सं० विष (विष्=फैलना) पु० जहर, माहुर, हलाहल, गरल ।
 सं० विषण्ण क० दुःखी, विषादप्राप्त ।
 सं० विषधर (विष=जहर, धृ=रखना) पु० साँप, सर्प, भुजंग ।
 सं० विषम (वि=नहीं, सम=बराबर) पु० ना बराबर, असमान, अतुल्य, बराबर नहीं, २ कठिम, कठोर, दुःखदायी, ३ भयंकर ।
 सं० विषमज्वर (विषम + ज्वर) पु० कठिन तप, एक प्रकार का तप ।
 सं० विषमता स्त्री० राग, द्वेष, मुखालिप्त, बे एतदाली, २ कठिनता, सख्ती ।

सं० विषमबाण (विषम + बाण, अर्थात् जिसका तीर कठिन है) पु० कामदेव ।
 सं० विषय (वि=बहुत, षि=बाँधना अर्थात् जिसमें मन लगना) पु० चीज, वस्तु, पदार्थ, जो चीज इन्द्रियों से जानी जाय, (जैसे रङ्ग, रूप, रस, सुगन्ध, शब्द, छूना) २ काम, ३ बात, ४ भोगविलास, ५ बाबत, वास्ते, लिये ।
 सं० विषयिण क० पु० भोगी, ऐयाश ।
 सं० विषयी (विषय) क० पु० संसारी, भोगी ।
 सं० विषाण (वि=बहुत, षा=नाश करना अथवा विष्=फैलना) पु० सींग, २ हाथीदाँत, ३ सूअरकादाँत ।
 सं० विषाद (वि=बहुत, षद्=दुःख देना) भा० पु० शोक, दुःख, ताप, उदासी ।
 सं० विषादक क० पु० दुःखदाता ।
 सं० विषादित र्म० पु० कष्टित, दुःखी ।
 सं० विषुव } (विषु=बराबर, विष्=विषुवत् } फैलना और वा=जाना अर्थात् जिसमें दिन रात बराबर होते हैं) पु० वह समय जब दिन रात बराबर होते हैं ।
 सं० विषुवत्रेखा (विषुवत् + रेखा) स्त्री० धरती के बीच की लकीर, मध्यरेखा, मध्यसूत्र, भूमध्यरेखा,

खत उस्तवा ।
 सं० विष्टब्ध र्मं० प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध ।
 सं० विष्टभ्य गु० समहार कर ।
 सं० विष्टा (वि, स्था=ठहरना) स्त्री०
 गृह, मल, पुरीष ।
 सं० विष्णु (विष्=फैलना, जो सब
 सृष्टि में फैला हुआ है) पु० परमे-
 श्वर, भगवान्, सृष्टि को पालने
 वाला, व्यापक ।
 सं० विष्णुवल्लभा (विष्णु=भगवान्,
 वल्लभा=प्यारी) स्त्री० तुलसी,
 २ लक्ष्मी, हरिप्रिया ।
 सं० विसर्ग (वि, सृज्=छोड़ना)
 पु० स्वर के आगे की दो बिन्दी, २
 दान, ३ छोड़ना ।
 सं० विसर्जन (वि, सृज्=छोड़ना)
 भा० पु० विदा, भेजना, छुट्टी करना,
 जाने देना, २ छोड़ना, ३ देना ।
 सं० विसर्जित र्मं० पु० रखसत
 किया, बरखास्त हुआ, भेजा गया ।
 प्रा० विसासिनि स्त्री० हासिदा,
 डाहिनि, सौतिनी ।
 सं० विसूचिका (वि=कठोर, सूची=
 सुई, जो सुई के ऐसा कठोर अथवा
 तीखा अर्थात् बहुत दुःख देने
 वाला रोग है) स्त्री० एक प्रकार का
 हैजे का रोग ।
 सं० विस्तर (वि, स्तृ=ढापना) पु०
 प्रचुर, बहुत, समूह, विस्तार, २
 आधार, पीड़ा, बिछौना ।

सं० विस्तार (वि=बहुत, स्तृ=ढकना)
 फैलाव, चौड़ाई, स्तम्भ, कालम,
 सफा का आधा ।
 सं० विस्तारक } क० पु० फैलाने
 विस्तारी } वाला ।
 सं० विस्तारित र्मं० पु० फैलाया
 गया ।
 सं० विस्तीर्ण क० पु० फैला हुआ,
 विस्तृत ।
 सं० विस्तृत (वि=बहुत, स्तृ=ढकना,
 फैलाना) क० पु० फैला हुआ,
 विस्तीर्ण ।
 सं० विस्फुलिंग पु० चिनगारी ।
 सं० विस्फोट (वि=बहुत, स्फुट्=
 फूटना या फटना) पु० फोड़ा, धाव ।
 सं० विस्फोटक क० पु० फूटनेवाला
 अर्थात् बहुत फोड़ा, शीतला, चेचक ।
 सं० विस्मय (वि=कुञ्ज, स्मि=मुस-
 कुराना) पु० अचरज, आश्चर्य,
 अचंभा, चमत्कार, तन्त्रजुब ।
 सं० विस्मरण (वि=नहीं, स्मरण=
 याद) भा० पु० भूलना, बिसरना ।
 सं० विस्मित (वि, स्मि=मुस-
 कुराना) क० पु० अचंभे में चकित,
 अचंभित ।
 सं० विस्मृत (वि=नहीं, स्मृ=याद
 रहना) क० भूला हुआ ।
 सं० विस्मृति स्त्री० भूल, गफलत ।
 सं० विस्मृतता भा० स्त्री० बेहोशी,
 बे सुधी, बे खबरी ।

सं० विहग (विहायस्=आकाश,
विहङ्ग } वि=बीच में, हा=छो-
विहङ्गम } इना वा हय=जाना
और गम्=जाना अर्थात् आकाश
में उड़नेवाला) पु० पखेरू, पक्षी,
२ बादल, ३ तीर, ४ सूर्य, ५
चाँद, ६ ग्रह ।

सं० विहरण (वि, ह=लेना, परंतु
वि उपसर्ग के साथ आनेसे इस
धातु का अर्थ खेल करना या
आनन्द करना होता है) भा० पु०
विहार करना, खेलकरना, क्रीड़ा
करना, घूमना, सैरकरना ।

सं० विहार (वि, ह=लेना, परंतु वि
उपसर्ग के साथ आनेसे इस धातु
का अर्थ खेल करना होता है)
भा० पु० विलास, खेल, क्रीड़ा,
२ आनन्द से फिरना ।

सं० विहारी (विहार) क० पु०
विहार करनेवाला, आनन्द करने
वाला, पु० श्रीकृष्ण ।

सं० विहित (वि=बहुत, धा=रखना)
र्म० ठीक, उचित, करने योग्य,
ठहराया हुआ ।

सं० विहीन (वि=बहुत, हा=छो-
इना) र्म० विना, जुदा, रहित,
छोड़ा हुआ ।

सं० विह्वल (वि=बहुत, हल=हि-
लना, चलना) क० पु० व्याकुल,
घबराया हुआ, चञ्चल ।

सं० वी पु० विकाश, दीर्घ, एका ।

सं० वीक्षण (वी + ईक्ष + अन,
ईक्ष=देखना) पु० दर्शन, देखना ।

सं० वीक्ष्य गु० देखकर, निहारकर ।

सं० वीक्षित र्म० देखा हुआ, दृष्ट ।

सं० वीचि (वे=फैलना) स्त्री०
लहर, तरङ्ग, मौज, ढङ्ग ।

सं० वीज (वि=बहुत, जन्=पैदा
होना) पु० व्यथा, दाना जो बोया
जाता है, २ मूल कारण, ३ अ-
ङ्कुर, ४ वीर्य, ५ मन्त्र, ६ वीज-
गणित, गणित का एक भाग जिसमें
अङ्कों की जगह अक्षर लिख कर
हिसाब बनाते हैं इसको संस्कृत में
अव्यक्तगणित कहते हैं ।

सं० वीणा (अज्=जाना वा वी=
जाना) स्त्री० एक प्रकार का बाजा
जिसको नारदजीने निकाला,—
वीण शब्द को देखो ।

सं० वीत (वी=जाना वा वि, इण्=
जाना) गु० बीता हुआ, गुजरा
हुआ, चलागया ।

सं० वीथि (वी=जाना वा विथ्=
मँगना) स्त्री० गली, रस्ता, २
पंक्ति, श्रेणी ।

सं० वीप्सा (वि=बहुत, आप्=फै-
लना, लाभ) भा० स्त्री० व्या-
प्तीच्छा, फैलना, २ आदर ।

सं० वीर (वीर=पराक्रम करना वा
अज्=जाना) पु० शूर, बहादुर,

शूरमा, योद्धा, काव्य के नौरस में से एक रस ।
 सं० वीरप्रसू (प्र,सू=पैदाकरना) स्त्री० वीरजननी, वीर पुत्र की माता ।
 सं० वीरण { (ईर=कहना) पु० प्रा० वीरन { बेना, गाच, खस, गु० प्यारा, प्यारा भाई ।
 सं० वीरता (वीर) स्त्री० बहादुरी, शूरमापन ।
 सं० वीरभद्र (वीर=बहादुर, भद्र=बहुत अच्छा) पु० महादेव के एक गण का नाम जिसने यज्ञ समेत दक्ष का विनाश किया ।
 सं० वीरवृत्ति स्त्री० शूरो का बाना, शूरो का पैधावा ।
 सं० वीरा स्त्री० वीरपुत्र की माता, पीपर औषध ।
 सं० वीर्य्य (वीर) पु० बीज, धातु, २ पुरुषार्थ, बल, जोर, ३ प्रताप, प्रभाव, तेज ।
 सं० वृक् (वृक्=लेना) भेड़िया, हुँडार, ल्यारी ।
 सं० वृकोदर पु० भीमसेन, ब्रह्मा ।
 सं० वृक्ष (वृश्च=काटना) पु० पेड़, रुख, गाछ, तरवर, पादप ।
 सं० वृत्त (वृत्=होना या ढकना) पु० घेरा, घण्टल, चक्र, गोलाखेत, २ वृन्द, बेसीत, गु० हुआ, पैदा हुआ ।
 सं० वृत्तान्त (वृत्त=पैदा हुआ, अन्त=निर्णय अथवा निश्चय अर्थात्

जिसके सुनने से किसी बात का निर्णय होजाता है) पु० समाचार, बात, हाल इक्रीकत, पता ।
 सं० वृत्ति (वृत्=होना या पैदा होना) स्त्री० आजीविका, जीविका, रोज-गार, रोजी, बजीफा ।
 सं० वृत्त्य र्म्य=वर्णनीय, कहनेयोग्य ।
 सं० वृत्र { (वृत्=होना) पु० एक रा- वृत्रासुर { क्षस जिसको इन्द्रने मारा ।
 सं० वृथा (वृ=ढकना) क्रि० वि० बेफायदह, निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ, योंहीं ।
 सं० वृद्ध (वृध्=बढ़ना) गु० बूढ़ा, पुराना ।
 सं० वृद्धि (वृध्=बढ़ना) स्त्री० बढ़ती, बढ़न्ती, तरक्री, लक्ष्मी, श्रद्धि, सिद्धि ।
 सं० वृन्द (वृण्=प्रसन्न होना) पु० समूह, भीड़ भाड़, ढेर, थोक ।
 सं० वृन्दा (वृण्=प्रसन्न होना) स्त्री० तुलसी, २ राधिका, ३ एक देवी का नाम ।
 सं० वृन्दारक पु० देवता, गु० मुख्य, मनोहर ।
 सं० वृन्दारिका स्त्री० देवताओंकी स्त्री ।
 सं० वृन्दावन (वृन्दा + वन) पु० मथुरा के पास एक वन जहाँ वृन्दा देवी का मन्दिर था और जहाँ गोकुलसे नन्दजी और श्रीकृष्ण आदि सब ग्वाल जा बसे थे ।

सं० वृश्चिक (वृश्च्=काटना) पु०
बिच्छू, २ आठवीं राशि ।

सं० वृष (वृष्=सींचना वा पैदा क-
रना) पु० बैल, २ दूसरी राशि ।

सं० वृषकेतु (वृष + केतु) पु० महा-
देव, शिव ।

सं० वृषण पु० अण्डकोष, फोता ।

सं० वृषभ (वृष्=सींचना या पैदा
करना) पु० बैल ।

सं० वृषल पु० शूद्र, २ गृञ्जन, गाजर,
प्याज, ३ घोड़ा, ४ अधार्मिक, ५
चन्द्रगुप्त वृष ।

सं० वृषली स्त्री० गृद्धी, जो पिता के
घर में कन्या रजोवर्म को प्राप्त हुई
उसे भी कहते हैं ।

सं० वृषांकपि (वृष्=धर्म, अ-हीं,
कपि=कँपाना) जो धर्मको नकँपावे,
महादेव, विष्णु, अग्नि, इन्द्र ।

सं० वृषोत्सर्ग (वृष + उत्सर्ग) पु०
मृतक के हेतु बैल को दाग के
छोड़ देना, साँड़ ।

सं० वृष्टि (वृष्=सींचना, बरसना)
स्त्री० मेह, वर्षा, पानी का गिरना ।

सं० वृहत् (वृह्=बढ़ना) गु० बड़ा ।

सं० वृहत्पाद पु० बटवृक्ष, बर्गद ।

सं० वृहस्पति (वृहती=बोली, पति
=मालिक अथवा वृहत्=बड़ा अर्थात्
देवता, पति=मालिक या गुरु) पु०

देवताओं का गुरु, पाँचवाँ ग्रह, २
वृहस्पतिवार, बीकै, जुमेरात ।

सं० वेग (विज्=कँपाना) पु० प्रवाह,
धारा, जव, महाकाल ।

प्रा० वेगि स्त्री० शीघ्र, जल्दी ।

सं० वेणी (वेण्=जाना) स्त्री०
चोटी, बालों को सँवारना, २ न-
दियों के मिलने की जगह, जैसे
त्रिवेणी आदि ।

सं० वेणु पु० बाँस, बाँसुरी का बाजा,
मुरली, २ राजा का नाम ।

सं० वेतन (अज्=जाना या वी=
जाना) पु० मजदूरी, महीने की
तनख्वाह, मासिक जीविका ।

सं० वेताल (अज्=जाना) पु० वह
मुर्दा जो भूत क घुसने से जीता
सा जाना नाथ, पिशाच, २ शिव
के नौकर ।

सं० वेत्ता (विद्=जानना) क० पु०
जाननेवाला, पण्डित ।

सं० वेत्त पु० बेत, बेतवृक्ष ।

सं० वेद (विद्=जानना) पु० श्रुति,
हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक—मुख्य
वेद तीन हैं (१ ऋग्वेद, २ सामवेद,
३ यजुर्वेद) और कहते हैं कि चौथा
अथर्ववेद पीछे से मिलाया गया है
और इतिहास और पुराणों को
पाँचवाँवेद भी कहते हैं, ज्ञान,

१ वर्षयति कामानिति वृषः आकम्पयति पापानिति आकपिः वृषश्चासावाकपिश्चेति वा ॥ २ “तत्रापोरुषेयं
वाक्यं वेदः” —“इतिहासपुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत् । विभेत्पुस्तकश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यतीति” ॥

शास्त्रज्ञान, चार की संख्या, चतुर्थांश ।	सं० वेपथु (वेप् + अथु) कँपना, हिलना ।
सं० वेदगर्भ पु० ब्रह्मा, ब्राह्मण ।	सं० चेला (वेल् = जाना) स्त्री० समय, वक्र, काल ।
सं० वेदना (विद् = जानना) स्त्री० पीड़ा, दुःख, व्यथा, २ जानना, सुख दुःख का ज्ञान ।	सं० वेश (विश् = घुसना) पु० गहना, कपड़ा, भेष, भूषण, शोभा ।
सं० वेदपारग पु० सर्व वेदज्ञाता ।	सं० वेशर { पु० अश्वतर, खच्चर ।
सं० वेदमाता (वेद + माता) स्त्री० गायत्री ।	सं० वेश्म { वेश्मन } धि० पु० गृह, घर ।
सं० वेदव्यास (वेद, वि + अस् = फैलाना अर्थात् वेदों को फैलाने वाला) पु० व्यासजी ।	सं० वेश्या (वेश) स्त्री० नगरनारी, गणिका, कञ्चनी, पतुरिया ।
सं० वेदाङ्ग (वेद + अङ्ग) पु० वेद के अङ्ग अथवा भाग जो छः हैं—(१ शिक्षा जो अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण सिखलाता है, २ कल्प जिसमें यज्ञ आदि कर्मों की विधि लिखी है, ३ व्याकरण, ४ छन्द, ५ ज्योतिष, ६ निरुक्त, जिसमें वेद के कठिन और गूढ़ शब्द और वाक्यों का अर्थ है) ।	सं० वेष (विष् = फैलना) पु० कपड़ा, गहना, २ स्वरूप, ढौल, चाल ।
सं० वेदान्त (वेद + अन्त) पु० वेदव्यासजी का बनाया हुआ शास्त्र ।	सं० वेष्टन (वेष्ट = लपेटना) भा० पु० उष्णीय, पगड़ी, मुकुट ।
सं० वेदि { (विद् = जानना) स्त्री० वेदिका { होम करने की चबूतरी, यज्ञ अथवा बलिदान करने की जगह, २ पीठि ।	सं० वेष्टित र्म्यं पु० लपटा हुआ, लपेटा गया ।
सं० वेद्य र्म्यं पु० जानने योग्य ।	सं० वैकुण्ठ (वि, कुण्ठा = सुभ्र ऋषि की स्त्री और विष्णु की किसी अवतार में माँ उसीके नाम से वैकुण्ठ हुआ या वि = कई प्रकार की, कुण्ठा = माया जिसकी) पु० विष्णु, २ विष्णुलोक, परमपद ।
सं० वेधक (विध् = छेदना) क० पु० छेदक, बर्मा ।	सं० वैखानस (वि, खन् = खोदना, जो संसार की सब इच्छाको छोड़ देता है) पु० वानप्रस्थ, तपस्वी, (आश्रम शब्द को देखो) ।
	सं० वैतरणी (वितरण = दान, अर्थात् जो दान पुण्य करने से लांघी

- जाती है या वि=बुरी तरह से वा कठिनता से, तृ=पार होना) स्त्री० नरक की नदी ।
- सं० वैदिक (वेद) पु० वेद पढ़ा ब्राह्मण, वेदपाठी ब्राह्मण, गु० वेद में कहा हुआ, वेद के अनुसार, वेद की रीति से ।
- सं० वैदेही (विदेह) स्त्री० जनक राजा की बेटी, सीता, जानकी ।
- सं० वैद्य (विद्=जानना) पु० हकीम, वैद, दवा दारु करनेवाला, चिकित्सक ।
- सं० वैद्यक (वैद्य) पु० वैदिक विद्या ।
- सं० वैद्यनाथ (वैद्य + नाथ) पु० वैद्यराज, धन्वन्तरि, २ शिव, बैजनाथ, महादेव जिनका मन्दिर भाङ्गखण्ड में है ।
- सं० वैनतेय (विनता=कश्यपमुनि की स्त्री, वि=बहुत, नम्=नवना) भा० पु० विनता का बेटा, गरुड़, पखेरुओं का राजा ।
- सं० वैभव (विभव) भा० पु० ऐश्वर्य, सम्पदा, धन, दौलत ।
- सं० वैमनस्य भा० पु० उदासीनता, बिगाड़, रंज, नाइत्तिफाकी ।
- सं० वैयाकरण (व्याकरण) भा० पु० व्याकरण पढ़ा हुआ पण्डित ।
- सं० वैयात्य भा० पु० निर्लज्जता, बेहयाई, बेशर्मा ।
- सं० वैर (वीर) पु० दुश्मनी, श-

- त्रुता, द्वेष, विरोध ।
- सं० वैराग (विराग) भा० पु० वैराग्य संसार की विषयवासना का छोड़ना, बेमुहब्बती ।
- सं० वैरागी (वैराग) गु० जिसने संसार की विषयवासना को छोड़ दिया है, उदासीन, साधु ।
- सं० वैरी (वैर) क० पु० दुश्मन, शत्रु ।
- सं० वैशाख (विशाखा=एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चाद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन विशाखा नक्षत्र होता है) पु० बरस का दूसरा महीना ।
- सं० वैश्य (विश्=घुसना, अपने खेती बनिज आदि धंधे में) पु० बनिया, महाजन, तीसरे वर्ण के लोग ।
- सं० वैश्वानर पु० अग्नि, गु० कृपण, स्थूल, सव, वक्ता ।
- सं० वैष्णव (विष्णु) पु० विष्णु का भक्त, विष्णु उपासक, गु० विष्णुका ।
- सं० व्यक्त (वि, अञ्ज=जाना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ प्रकट होना होता है) कर्म० पु० जाना हुआ, स्पष्ट, प्रकट ।
- सं० व्यक्ति (वि, अञ्ज=जाना) स्त्री० एकता, एक एक करके, २ जन, मनुष्य ।
- सं० व्यग्र गु० व्याकुल, परेशान, विकल ।

सं० व्यङ्ग गु० अङ्गहीन, व्याकुल ।

सं० व्यञ्जन (वि, अञ्ज=जाना)
पु० तालवृन्तक, पट्टा, बेना ।

सं० व्यञ्जक क० पु० प्रकाशक, न-
र्तक, भावबोधक ।

सं० व्यञ्जन (वि=बहुत, अञ्ज=जाना
वा मिलना या प्रकट करना) पु०
तरकारी, साग, २ खानेकी अच्छी
चीज, ३ चिह्न, ४ वह अक्षर जिसमें
स्वर न हो, जैसे क से ह तक ।

सं० व्यञ्जना भा० स्त्री० श्लेष, शब्द,
शक्तिभेद, शब्द के अर्थ से विशेष
अर्थको बोध करे जैसे जहाँ धुआँ
है वहाँ अग्नि अवश्य होगी ।

सं० व्यतिक्रम पु० विलोम, विप-
र्यय, विपरीत, उलटा पुलटा ।

सं० व्यतिरिक्त (वि, अति, रिच् +
त, रिच्=छोड़ना) क० भिन्न,
जुदा जुदा, अलावा, सिवाय ।

सं० व्यतिरेक (वि, अति, रिच्=
त्यागना) भा० पु० वियोग, भि-
न्नता, पृथक्त्व, विशेष, अतिक्रम,
अलङ्कारभेद ।

सं० व्यतीत (वि, अति, इण्=जाना)
गु० बीता हुआ, गुजरा हुआ ।

प्रा० व्यतीपात (वि, अति, पत्=
गिरना) पु० बड़ा भारी उपद्रव,
२ ज्योतिष में सत्रहवाँ योग ।

सं० व्यथक क० पु० दुःखदाता,
तकलीफदेह ।

सं० व्यथा (व्यथ्=पीड़ा देना)

स्त्री० पीड़ा, पीर, दर्द, दुःख ।

सं० व्यथित क० पु० पीड़ित, दुःखित ।

सं० व्यधन (व्यध्=ताड़ना) भा०
पु० वेधन, ताड़न, पीड़न ।

सं० व्यपदेश (वि + अप, दिश् +
अ) पु० संज्ञा, नाम, आरम्भ,
मिष, छल, किस्सा ।

सं० व्यभिचार (वि=बुरी तरहसे,
अभि=चारों ओर से, चर्=चलना)
भा० पु० पुरुष का पराई स्त्री के
पास जाना, स्त्री का पराये पुरुष
के पास जाना, बुरा काम, भ्रष्टा-
चार, निन्दितकाम, रण्डीबाजी ।

सं० व्यभिचारी क० पु० कुमार्गी,
गुमराह ।

सं० व्यय (वि=बहुत, इण्=जाना)
पु० खर्च, लागत, २ नाश, क्षय ।

सं० व्यर्थ (वि=नहीं, अथवा चला
गया है, अर्थ=मतलब या प्रयो-
जन) गु० वृथा, निरर्थक, बेफाय-
दह, विफल, निष्फल, निकम्मा ।

सं० व्यवकलन (वि, अव, कल्=
गिनना और इन दोनों उपसर्ग के
साथ आनेसे अर्थ घटाना हुआ)
पु० घटाना, बाकी निकालना ।

सं० व्यवकलित र्म० वियोगित,
घटाया गया ।

सं० व्यवधान (वि, अव, धा=र-
खना) पु० आच्छादन, आड़,

अन्तर्द्धि, बीच में, रोक ।
 सं० व्यवसाय (वि, अव, सै=नाश होना) पु० उद्यम, अनुष्ठान, अवधारण, विचार, अभिप्राय, उद्योग ।
 सं० व्यवस्था (वि, अव, स्था=ठहरना) स्त्री० धर्म, निर्णय, शास्त्र, कानून, हाल ।
 सं० व्यवस्थित क० व्यवस्थाप्रमाणक, पाबन्द कानून ।
 सं० व्यवहार (वि, अव, हू=लेना) पु० काम धन्धा, व्यवहार, लेन देन, चाल चलन ।
 प्रा० व्यवहरिया (व्यवहारी) क० पु० व्यवहारकर्ता, महाजन, व्यवहारी ।
 सं० व्यवहित र्म० पु० व्यवधान युक्त, रोक, रोकगया ।
 सं० व्यमन (वि=बहुत, अस्=फैंकना) पु० विपत्ति, दोष, बुरा काम (जैसे जूआ खेलना, दिन को बहुत सोना, झूठ बोलना, शराब पीना अथवा और अफीम आदि नशा करना, डाँवा डोल फिरना, दाँत पीसना आदि व्यसन हैं) चस्का, लत ।
 सं० व्यस्त क० व्याकुल, व्याप्त, विपरीत, विलोम, हीन, असमग्र ।
 सं० व्याकरण (वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, कृ=करना) पु० शब्दों का शास्त्र, शब्द और धातु

का बोधक ।
 सं० व्याकुल (वि=बहुत, आकुल=घबराया हुआ) पु० घबराया हुआ, दुःखी ।
 सं० व्याख्या (वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, ख्या=प्रसिद्ध करना) स्त्री० वर्णन, व्याख्यान, टीका ।
 सं० व्याख्यात र्म० पु० कथित, कहा हुआ ।
 सं० व्याख्यान भा० पु० कथन, वर्णन, टीका ।
 सं० व्याघ्र (वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, घ्रा=मूँघना) पु० बाघ, शेर, नाहर, लालरेंठ वृक्ष, कज्जावृक्ष ।
 सं० व्याज (वि, अज्=जाना) पु० कपट, छल, मिथ, बहाना ।
 सं० व्याध (व्यध्=ताड़ना, दुःख देना) पु० शिकारी, अहेरी, बहेलिया, जानवरों को मारनेवाला ।
 सं० व्याधि (व्यध्=दुःख देना) स्त्री० रोग, पीड़ा, बीमारी, दुःख, सन्ताप ।
 सं० व्यापक (वि=बहुत, अप=व्यापी) फैलना) क० पु० फैलनेवाला, प्रभु, सर्वव्यापी, परमेश्वर ।
 सं० व्यापकता (व्यापक) भा० स्त्री० प्रभुता, फैलाव ।
 सं० व्यापादन भा० पु० मारण, कतल ।

सं० व्यापादित र्म० पु० मारा
हुआ, मक्तूल ।

सं० व्यापार (वि=बहुत, आ=चारों
ओर से, पृ=काम में लगना) पु०
व्यौपार, धन्धा, सौदागरीकाम ।

सं० व्यास (वि=बहुत, आपू=फै-
लना) गु० फैला हुआ ।

सं० व्याप्य र्म० पु० व्यापनीय,
फैला हुआ ।

सं० व्यायाम (वि=बहुत, आ=चारों
ओर से, यम्=रोकना) पु० परि-
श्रम, कुरती करना, मुद्गर, मोगरी
उठाना आदि कसरत ।

सं० व्याल (वि=बहुत, अद्=फै-
लना वा वि=बहुत, आ=चारोंओर
से, ला=लेना) पु० साँप, सर्प,
नाग, भुजंग, २ दुष्ट हाथी, ३ मारने
वाला जानवर, ४ धूर्त, दुष्ट ।

सं० व्याली क० पु० सर्पधारी,
वेगी, महादेव ।

सं० व्यास (वि=बहुत, अस्=फै-
लाना) पु० एक प्रसिद्ध मुनिका
नाम जिसने वेद-पुराणों को इ-
कट्ठा किया और वेदान्तशास्त्रको
बनाया, २ विस्तार, फैलाव, ३
चक्र का आध काट, गोल खेतके
बीच की लकीर, विस्तार ।

सं० व्याहृति भा० स्त्री० आघात,
चोट ।

सं० व्याहृति (वि, आ, हृ=लेना)

स्त्री० उक्ति, कथन, वर्णन, (व्या-
हृतयः सप्त) भूः, भुवः, स्वः, महः,
जनः, तपः, सत्यम् ।

सं० व्युत्पत्ति (वि=बहुत, उद्=
ऊपर, पद्=जाना) स्त्री० शास्त्रके
समझने की शक्ति, शास्त्रज्ञान,
वजह, तस्मिया ।

सं० व्युत्पन्न (वि=बहुत, उद्=ऊपर,
पद्=जाना) गु० शास्त्र में प्रवीण,
पण्डित, विद्वान् ।

सं० व्यूढ (वि, वद्=प्राप्त करना)
गु० विस्तृत, दीर्घ, संहति, विपुल,
विन्यस्त, समूह, सन्नद्ध, तैयार ।

सं० व्यूह (वि, ऊह=तर्क करना,
पर वि उपसर्ग के साथ आने से
इसका अर्थ सेनाको सँवारना होता
है) पु० सेनाकी रचना, २ भीड़,
समूह, तर्क, बल, विन्यास, निर्माण ।

सं० व्यूहन भा० पु० सैन्यस्थान,
किलाबन्दी ।

सं० व्योम (व्ये=ढकना, घेरना)
पु० आकाश, आस्मान ।

सं० व्योमयान पु० विमान ।

सं० व्रज (व्रज=जाना) पु० गोस्थान,
मार्ग, २ वृन्द, ३ ग्राम ।

सं० व्रजन भा० पु० पर्यटन, भ्रमण,
धूमना ।

सं० व्रज्या स्त्री० पर्यटन, प्रस्थान,
वर्ग, संग्रामभूमि, क्रीड़ास्थान,
संन्यास ।

सं० व्रण (व्रण्=घाव करना) पु०
घाव, फोड़ा ।

सं० व्रत (व्रज्=जाना अथवा वृ=
पसन्द करना) पु० उपास, उपवास,
पवित्र काम, नियम, पुण्यकर्म ।

सं० व्रात (वृ=ढकना, घेरना या
व्रत + घञ्) पु० समूह, भीड़ ।

सं० व्रीडा (व्रीड्=लजाना) स्त्री०
लाज, लज्जा, शर्म, संकोच ।

सं० व्रीडित क० पु० लज्जित, श-
र्माया हुआ ।

श

सं० श (शी=सोना) पु० शिव, २
शस्त्र, हथियार, ३ कल्याण, मङ्गल,
४ शयन, ५ हृदय ।

सं० शंयु (शम्=दमनकरना) गु०
प्रसन्न, हर्षित ।

सं० शंघ गु० सुकृती, पुण्यात्मा ।

सं० शंवर पु० जल, शंख ।

सं० शंसा स्त्री० प्रशंसा, स्तव ।

सं० शंसित र्म० कथित, निश्चित,
स्तुत ।

सं० शंस्य र्म० स्तुत्य, प्रशंसनीय ।

सं० शक (शक्=समर्थ होना) पु०
एक म्लेच्छ जातिके लोग, २ एक
देश का नाम, ३ संवत् जो शालि-
वाहन राजाने चलाया, ४ सामर्थ्य ।

सं० शकट (शक्=सकना या स-
हना अथवा लेजाना) पु० गाड़ी,
ढकड़ा ।

सं० शकटासुर (शकट + असुर)
पु० एक राक्षस जिसको श्रीकृष्ण
ने मारा ।

सं० शकल पु० खण्ड, टुकड़ा, २
स्वरूप, चर्म, चिह्न, वस्त्र, मञ्जरी
का सेहरा या झिलका ।

सं० शकारि (शक + अरि) पु०
विक्रमादित्य राजा ।

सं० शकुन (शक्=समर्थ होना) पु०
बुरे भले का जतलानेवाला, सगुन,
२ एक पखेरू का नाम ।

सं० शकुन्त पु० सासपक्षी ।

सं० शकुन्तला स्त्री० राजा दुष्यन्त
की स्त्री, नाटकविशेष ।

सं० शकृत् पु० विष्ठा, मलमूत्र,
अव्य० एक बार ।

सं० शक्त पु० समर्थ, दृढ़, पुष्ट ।

सं० शक्ति (शक्=बलवान् या समर्थ
होना) स्त्री० बल, जोर, पराक्रम,
पुरुषार्थ, २ बर्द्धी, सांग, ३ देवी,
माया, लक्ष्मी, गौरी आदि आठ
शक्ति (१ इन्द्राणी, २ वैष्णवी
अथवा लक्ष्मी, ३ ब्रह्माणी, ४
कौमारी, ५ नारसिंही, ६ वाराही,
७ महाेश्वरी, अथवा गौरी, ८ भैरवी) ।

सं० शक्तिमान् (शक्ति=बल, मत्=
वाला) गु० बलवान्, जोरावर ।

सं० शक्तिहीन (शक्ति + हीन) गु०
दुबला, दुर्बल, निर्बल, कमजोर ।

सं० शक्त गु० समर्थ, पुष्ट ।

सं० शक्नु पु० प्रियवक्ता ।
 सं० शक्य र्म० पु० समर्थ, पुष्ट, योग्य,
 भविष्य, होनहार, मुमकिन ।
 सं० शक्र (शक्=बलवान् अथवा
 समर्थ होना) पु० इन्द्र, देवताओं
 का राजा, सुरपति ।
 सं० शक्रजित् (शक्र=इन्द्र, जित्=
 जीतना) पु० रावण का बेटा,
 इन्द्रजित्, मेघनाद ।
 सं० शक्रस्तुत (शक्र + स्तुत) पु० इन्द्र
 का बेटा, जयन्त, २ बालि वानर ।
 सं० शक्राणी स्त्री० पुलोमजा, शची ।
 सं० शङ्कर (शम्=कल्याण या भला,
 कर=करनेवाला, कृ=करना) पु०
 महादेव, शिव, २ शङ्कराचार्य ।
 सं० शङ्का (शकि=सन्देह करना या
 डरना) स्त्री० सन्देह, शक, २
 डर, भय ।
 सं० शङ्कित क० पु० डराहुआ,
 भीत, २ संदिग्ध, वितर्कित ।
 सं० शङ्कु पु० आठ अंगुल की ल-
 कड़ी, दंठ वृक्ष, खूंटा, भाला, गांसी,
 शल्य, पाप, महादेव, अंश ।
 सं० शङ्ख (शम्=ठंडा करना) पु०
 एक जल के जीव की हड्डी जिसको
 हिन्दू पवित्र समझते हैं और देवता
 के साम्हने और लड़ाई में बजाते हैं,
 २ सौ पत्र (गिनती में) ।
 सं० शङ्खध्मा (शङ्ख + ध्मा=बजाना)
 क० पु० शङ्ख बजानेवाला ।

सं० शचि (शच्=बोलना) स्त्री०
 इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी ।
 सं० शचीपति (शची + पति) पु०
 इन्द्र, देवताओं का राजा ।
 सं० शठ (शद्=झल करना) गु०
 झली, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठग ।
 सं० शठता (शठ) भा० स्त्री० दुष्टता,
 कपट, झल, ठगाई, मूर्खता ।
 सं० शण पु० सनका वृक्ष, पटुआ ।
 सं० शण्ड पु० नपुंसक, हिजड़ा, २
 साँड़ ।
 सं० शत गु० एकसौ, १०० ।
 सं० शतक (शत) गु० सैकड़ा ।
 सं० शतकोटि पु० इन्द्र का वज्र,
 स्त्री० सौकरोड़, अरब संख्या ।
 सं० शतक्रतु पु० इन्द्र, सौ यज्ञ
 करनेवाला ।
 सं० शतघ्नी (शत=सौ, हन्=मारना)
 स्त्री० एक तरह का हथियार, तोप
 अथवा धनुष्, २ एक रोग का नाम ।
 सं० शतद्रु (शत=सौ, द्रु=जाना
 अथवा बहना जो सौ अर्थात् बहुत
 सी धारा से बहती है) स्त्री० सत-
 लज नदी जो पंजाब में है ।
 सं० शतपत्र (शत=सौ, पत्र=पत्ती
 या पंखड़ी) पु० कमल ।
 सं० शतमारी (मृ=मरना) क०
 पु० बैद्य ।
 सं० शताब्द पु० सौ वर्ष ।
 सं० शताब्दी गु० सदी ।

सं० शत्रु (शद्=नाश करना) पु०
वैरी, दुश्मन, रिपु, अरि, द्वेषी,
विरोधी ।

सं० शत्रुविजयी क० पु० शत्रुका
जीतनेवाला ।

सं० शत्रुघ्न (शत्रु=वैरी, हन्=मारना)
पु० लक्ष्मण का छोटा भाई,
रिपुसूदन ।

सं० शत्रुता (शत्रु) भा० स्त्री० वैर,
विरोध, दुश्मनी ।

सं० शनि (शो=तीखा होना या
तेज होना) पु० सातवां ग्रह,
शनैश्चर, ग्रहनायक, छायापुत्र,
सूर्य का बेटा ।

सं० शनिवार (शनि + वार) पु०
सातवां दिन, शनीचर ।

सं० शनैश्चर (शनैस्=धीरे, चर्=
चलना) पु० शनिग्रह, शनिवार ।

सं० शप भा० पु० तिरस्कार, निरा-
दर, शाप ।

सं० शपथ (शप्=सौगन्द खाना
या सरापना) स्त्री० सौगन्द, कि-
रिया, सोंह, दुहाई, प्रतिज्ञा, २
सराप, शाप ।

सं० शब्द (शब्द्=शब्द करना या
शप्=पुकारना) पु० ध्वनि, आहट,
आवाज, जो कान से सुना जाय,
२ (व्याकरण में) जो मुँहसे बोला
जाय, बोल, वचन, पद, लफ्ज ।

सं० शब्दशास्त्र (शब्द + शास्त्र)

पु० व्याकरण आदि शास्त्र जिनसे
शब्द का ज्ञान होता है ।

सं० शम् (शम्=शान्त होना या
ठंडा होना) पु० मन की शान्ति,
चैन, २ इन्द्रियों को और मन को
रोकना ।

सं० शमन (शम्=ठंडा करना) पु०
शान्ति, ठंडा करना, २ यमराज, गु०
दूर करनेवाला, ठंडा करनेवाला ।

सं० शमित क० पु० शान्त, मुतह-
म्मिल, सहनेवाला ।

सं० शम्बल पु० कूल, किनारा, २
पाथेय, राहखर्च, ३ मत्सर ।

सं० शम्बुक स्त्री० सीपी, पु० घोंघा,
शूद्र तपस्वी, शंख, दैत्य ।

सं० शम्भु (शम्=कल्याणरूप, भू=
होना) पु० महादेव, शिव ।

सं० शयन (शी=सोना) पु० सोना,
नींद लेना, नींद, २ सेज, बिछौना ।

सं० शय्या (शी=सोना) स्त्री०
सेज, बिछौना, पलंग, खाट ।

सं० शर (शृ=मारना) पु० तीर,
बाण, २ सरकण्डा ।

सं० शरण (शृ=मारना जो शरण
में आवे उसके वैरी को मारना)
पु० बचाव, रक्षा, २ बचानेवाला,
रक्षक, ३ घर, आसरा ।

सं० शरणागत (शरण + आगत)
क० पु० शरण में आया हुआ,
जो बचाव के लिये आवे, शरणार्थी,

आश्रित ।

सं० शरण्य क० रक्षक, शरणागत-
पालक ।

सं० शरण्यु पु० मेघ, वायु, रक्षक ।

सं० शरद् (शृ=नाश करना, बादल
और गर्मी को) स्त्री० एक ऋतु
का नाम जो कुंआर और कार्तिक
में रहती है ।

प्रा० शराटा पु० शब्द, आवाज,
आइट ।

प्रा० शराबोर पु० खूब भीगा हुआ ।

सं० शराव पु० संपुट, डब्बा, डबिया,
परई, सरवा, कोसा ।

सं० शरासन (शर=तीर, आसन=
ठहरने की जगह) पु० धनुष, क्रमान ।

सं० शरीर (शृ=नाश होना) पु०
देह, तन, काया, जिस्म ।

सं० शरि क० पु० धूर्त, पूर्व ।

सं० शर्करा (शृ=नाश करना
अर्थात् गन्ने को पेरना) स्त्री० शकर,
चीनी, खँड़ ।

सं० शर्म्मा (शृ=नाश करना, दुःख
को) पु० सुख, २ ब्राह्मणों की पदवी ।

सं० शर्वरी (शृ=नाश करना, थ-
कावट को) स्त्री० रात, रात्री, २
स्त्री, ३ हल्दी ।

सं० शलभ (शल्=जाना) पु०
टिही, पतंगा ।

सं० शलाका (शल्=जाना) स्त्री०
सुर्पा की सलाई, कूची, तुली, मूल ।

प्रा० शलीता पु० टाट का बोरा या
थैला जिसमें चीज वस्तु बाँधी
जाती है ।

सं० शल्य (शल्=जाना) पु० एक
राजाका नाम जिसका वर्णन महा-
भारत में है, २ सेल, रेवाण, गाँसी ।

सं० शव (शव्=बदलना या नाश-
होना) पु० मुर्दा, मरा, लोथ,
लाश, बिनजीवकौ देह, मराशरीर ।

सं० शवर (शव्=जाना या बद-
लना) पु० भील, वनवासी, जं-
गली आदिमियों की एक जात,
पहाड़ी, २ शिव, महादेव ।

सं० शवरी (शवर) स्त्री० भीलनी,
नीचजात की स्त्री ।

सं० शवाधार (शव + आ-धार)
धि० पु० टिकटी, रथी ।

सं० शश { (शश्=उड़ल कर च-
शशक { लना) पु० ससा, खरहा,
खर्गोश, २ चाँद में का दाग जो
खर्गोश के ऐसा दिखाई देता है ।

सं० शशाङ्क (शश्=खर्गोश, अङ्क=
चिह्न, अर्थात् जिसमें खर्गोश के
ऐसा दाग है) पु० चाँद, चन्द्रमा ।

सं० शशि { (शश) पु० इन्दु,
शशिन् { चाँद, चन्द्रमा ।
शशी }

सं० शश्वत् (शश्=खर्गोश, वत्=
बराबर) क्रि० वि० बारबार,
फिर फिर, पुनः पुनः, लगातार,

निरन्तर, हमेशा ।

सं० शस्त र्म्यं पु० स्तुत, प्रशंसा किया गया ।

सं० शस्त्र (शस्=मारना) पु० हथियार, आयुध, ऐसा हथियार जिसको हाथ में रखकर मारें जैसे तलवार आदि ।

सं० शस्त्रधारी (शस्त्र=हथियार, धारी=रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० हथियारबन्द, शस्त्ररखनेवाला ।

सं० शस्त्रसम्मार्जन भा० पु० सै-क्लिल करना, हथियारों का साफ करना ।

सं० शस्त्राधार (शस्त्र + आधार) पु० शस्त्रगृह, सिलाखाना ।

सं० शस्य (शस्=नाश करना जो चौपायों से नाश किया जाता है) पु० धान, फल आदि ।

सं० शाक (शक्=सकना) पु० साग, तरकारी, भाजी, फल, मूल, फूल, पत्ते आदि, २ एकद्वीप का नाम, ३ शालिवाहन राजा का संवत्, शाका ।

सं० शाकम्भरी (शाक=सागवन-स्पति आदि, भरी=भरनेवाली, भृ=भरना) अर्थात् पृथ्वी पर सब चीज पैदा करनेवाली स्त्री० दुर्गा, देवी, भगवती जिसका मन्दिर साम्भर नाम नगर के पास पहाड़ पर है और राजपूताने के लोगों

का विश्वास है कि इसी देवी के वरदानसे साम्भर नाम भील में नमक पैदा होता है दुर्गा पाठ में लिखा है कि “भविष्यामि सुराः शकैरावृष्टेः प्राणधारकैः। शाकम्भरीति विख्याता” अर्थ—दुर्गा कहती है कि हे देवता! जबतक पानी नहीं बरसे तब तक प्राण को बचाने वाले साग से सब को पालूंगी तब मेरा नाम शाकम्भरी होगा ।

प्रा० शाकल (सं० शाकल्य) पु० तिल, जौ, घी, शक्कर, फल आदि मिली हुई होम की सामग्री ।

सं० शाकिनी (शक्=बलवान् या समर्थ होना) स्त्री० दुर्गा के साथ रहनेवाली, योगिनी, पिशाचिनी ।

सं० शाक्त (शक्ति) पु० शक्ति उपासक, देवी को पूजनेवाला, दुर्गापूजक ।

सं० शाखा (शाख=फैलना) स्त्री० पेड़ की डाली, टहनी, डाल, २ वेद का विभाग, ३ भौति, प्रकार, ४ भाग, हिस्सा ।

सं० शाखासृग (शाखा + सृग) पु० वानर, बन्दर ।

सं० शाखी क० पु० वानर, गवाही ।

सं० शाटिका } (शट्=जाना या
शाटी } सराहना) स्त्री० साड़ी, स्त्रियों के ओढ़ने का एक भौति का कपड़ा ।

सं० शाठ्यता भा० स्त्री० मूर्खता,
जाहिली, अहमकी ।

सं० शाणन (शाण=पैनाना) भा०
पु० तीक्ष्णकरना, शाणयन्त्र, जिस
पर हथियार पैने किये जाते हैं ।

सं० शाणित र्म० पु० तीक्ष्णकृत,
पैनाया गया ।

सं० शाण्डिल्य पु० शण्डिल मुनि
का पुत्र, शक्तिशास्त्रकारक, बेल,
एक अग्नि का नाम ।

सं० शात पु० सुख, गु० २ छिन्न,
कुश, दुर्बल, निशित ।

सं० शान्त (शम्=ठंडा होना) गु०
ठंडा, स्थिर, २ नम्र, ३ चुप, बंद,
मुतमैअन (जैसा हवा) ४ सा-
हित्य में नौ रसों में का एक रस ।

सं० शान्तन पु० चन्द्रवंशी प्रतीप
का पुत्र, भीष्मपितामहका पिता ।

सं० शान्ति (शम्=ठंडा होना) स्त्री०
ठंडाई, थिरता, चैन, सुख, काम
क्रोध आदि को जीत लेना अर्थात्
काम क्रोध आदि नहीं रखना ।

सं० शाप (शप्=शाप देना) पु०
शाप, धिक्कार, दुराशेष, बुरीदुआ,
कोसना, २ शपथ, सौगंद ।

सं० शाब्दिक गु० शब्द से हुआ,
वैयाकरण ।

सं० शामित (शम्=शान्त होना)
र्म० शान्त किया गया ।

सं० शाम्बरी स्त्री० माया, करश्मा,

इन्द्रजाल, फरेबपन ।

सं० शाम्भव (शम्भु) पु० शिव
का भक्त, महादेव का उपासक,
शिवको पूजनेवाला, गुग्गुल, गू-
गुर, कपूर, शम्भुपुत्र ।

सं० शाम्य क० पु० क्षमायुक्त ।

सं० शायक (शो=नाश करना या
तीखा करना अथवा शी=सोना,
अर्थात् जिसके लगनेसे मनुष्य सो
जाता अर्थात् गिर पड़ता है) पु०
तीर, बाण, तलवार, खड्ग ।

प्रा० शायर पु० शूर, बहादुर ।

सं० शायी (शी=सोना) क० पु०
सोनेवाला ।

सं० शारदी (शरद्) स्त्री० गु०
शरद्वृत्त की ।

सं० शारीरिक (शरीर) गु० शरीर
का, दुःखादिक ।

सं० शारङ्ग पु० पपीहा, २ मृग, ३
गज, ४ भ्रमर, भौंरा, ५ मयूर, ६
धनुष, ७ मधुमक्खी, ८ दीपक ।

सं० शार्ङ्ग (शृङ्ग) गु० सींग का
बना हुआ, पु० धनुष, २ विष्णु
का धनुष, ३ एक पत्थर का नाम ।

सं० शार्दूल पु० व्याघ्र, पक्षीभेद,
पशुभेद, सिंह, श्रेष्ठ ।

सं० शाल (शल्=जाना) पु० एक
तरहकी मछली, २ एकपेड़कानाम ।

सं० शालग्राम (शाल=एक तरह
का पेड़, ग्राम=समूह जहाँ बहुत

- से शाल वृक्ष हैं) पु० एक पहाड़ का नाम, २ उसी पहाड़ पर एक पत्थर होता है जिसको हिन्दू विष्णु की मूरत मानकर पूजते हैं ।
- सं० शाला (शल्=जाना या शाल्=बोलना या सराहना) स्त्री० घर, कमरा, स्थान, जगह ।
- सं० शालार पु० हाथी का नख, सोपान, सीढ़ी, पिंजरा ।
- सं० शालि (शल्=जाना) पु० धान ।
- सं० शालूर पु० मण्डूक, मेढक ।
- सं० शाल्मली (शाल्=जाना या शाल्=सराहना) पु० सेमल का पेड़, २ एक द्वीप का नाम ।
- सं० शावक (शव्=जाना या बदलना) पु० बच्चा, बालक ।
- सं० शाधर (शवर) गु० शिव का बनाया हुआ मन्त्र, पु० पाप, अपराध, २ लोभ का पेड़ ।
- सं० शाश्वत (शश्वत्) क्रि० वि० लगातार, निरन्तर, २ नित, हमेशा, सदा ।
- सं० शासन (शास्=सिखाना, आज्ञा देना या राज करना) पु० आज्ञा, हुक्म, २ राज करना, ३ दण्ड, सजा, ४ शिक्षा, सीख, नसीहत, हुक्मत ।
- सं० शासनपत्र पु० फर्मान ।
- सं० शासित स्म० सिखाया गया, महकूम ।
- सं० शासिता { क० पु० हाकिम, शास्ता } शिक्षक ।
- सं० शास्य स्म० पु० शिक्षणीय, सिखाने योग्य, महकूम ।
- सं० शास्ति (शास्=सिखाना, आज्ञा देना या राज्य करना) स्त्री० आज्ञा, २ राज्य करना, हुक्मत करना, ३ दण्ड, सजा ।
- सं० शास्त्र (शास्=सिखाना) पु० किसी देवता या मुनि का बनाया हुआ ग्रन्थ, पुस्तक, पोथी, पवित्र पुस्तक, (वेदान्त, न्याय, साङ्ख्य, मीमांसा, पातञ्जल और वैशेषिक आदि पदशास्त्र) काव्य और कानून और और विचार्यों की पुस्तकों को भी शास्त्र कहते हैं (जैसे काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, शिल्पशास्त्र और अलंकारशास्त्र आदि) ।
- सं० शास्त्रार्थ (शास्त्र + अर्थ) पु० चर्चा, वादविवाद ।
- सं० शास्त्रज्ञाता क० पु० शास्त्री, पण्डित ।
- सं० शास्त्री (शास्त्र) पु० शास्त्र जाननेवाला पण्डित, २ ब्राह्मणों की एक पदवी ।
- सं० शिशपा (शिशु=बालक, पा=पालना) पु० एक पेड़ का नाम ।
- सं० शिक्थ पु० सिकहर, सींका, बींका ।
- सं० शिक्षक (शिक्ष=सीखना या

सिखाना) क० पु० सिखानेवाला,
पढ़ानेवाला, गुरु, अध्यापक,
उपदेशक ।

सं० शिक्षा (शिक्ष=सीखना या
सिखाना) भा० स्त्री० सीख, सि-
खाई, तालीम, नसीहत, उपदेश,
२ वेद का एक भाग, वेदाङ्ग ।

सं० शिक्षापत्र पु० वसीयतनामा ।

सं० शिक्षाप्रकरण पु० शिक्षावि-
भाग, सरिश्तातालीम ।

सं० शिक्षित (शिक्ष=सीखना या
सिखाना) र्म्यं पु० सीखा हुआ,
पढ़ा हुआ, निपुण, प्रवीण ।

सं० शिखर (शिखा) पु० पहाड़
की चोटी, शृङ्ग ।

सं० शिखा (शी=सोना) स्त्री०
चोटी, शिरके बीच के बाल, जो
हिन्दूलोग रखते हैं, २ आग की
ज्वाला ।

सं० शिखी (शिखा) पु० मोर, मयूर,
२ आग, ३ एक पेड़ का नाम ।

सं० शिखा { स्त्री० रोदा, धनुष की
शिञ्जिनी } डोरी ।

सं० शिथिल (श्लथ=ढीला या
दुबला होना) गु० ढीला, खुला,
२ धीमा, सुस्त, आलसी, ३
दुबला, निबल, कमजोर ।

सं० शिर { शृ=नाश होना } पु० म-
शिरस् } स्तक, माथा, शिर, कपाल ।

प्रा० शिरधरा क० पु० जिम्मेदार

वारिस ।

सं० शिरा (शृ=नाश होना) स्त्री०
नाड़ी, नस ।

सं० शिरोमणि (शिरस् + मणि)
स्त्री० शिर का गहना, शिर में
पहननेका रत्न, गु० उत्तम, सबसे
बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया ।

सं० शिरोरुह (शिरस् + रुह=ज-
मना, निकलना) क० पु० बाल,
केश ।

सं० शिला (शिल्=कण, कण=
इकट्ठा करना या चुनना) स्त्री०
सिल, चट्टान, पत्थर, पाषाण, २
साफ और बराबर, पत्थर जिसपर
लोढ़े से मसाला पीसा जाता है ।

सं० शिलाजित् { (सं० शिलाजतु,
शिलाजीत) शिला=पहाड़ की
चट्टान में पैदा हुई, जतु=लाख
या लाल रंग की धातु) पु०
शिलारस, कहते हैं कि पहाड़ों की
चट्टानों का रस चूकर जम जाता
है और पत्थर सा कड़ा होजाता है
उसको शिलाजीत कहते हैं और
उसके खाने से शरीर में जोर
आता है ।

सं० शिलीमुख (शिली=तीखा
नोक, मुख=मुँह, जिसके मुँह पर
तीखा फल लगा रहता है) पु०
तीर, बाण, अमर, भौरा ।

सं० शिलोच्चय पु० पर्वत, पहाड़ ।

सं० शिल्प (शिल्=चुनना या शिल्प
=कारीगरी का काम करना) पु०

कल विद्या, हुनर, गुण, कारीगरी।

सं० शिल्पशाला स्त्री० कारीगरों
का कारखाना।

सं० शिल्पक } क० पु० कारीगर।
शिल्पित }

सं० शिव (शी=सोना या शो=नाश
करना दुःख को या प्रलय में सब
सृष्टिको) पु० महादेव, महेश, २
मङ्गल, कल्याण, शुभ, सुख, ३ वेद।

सं० शिवपुरी (शिव + पुरी) स्त्री०
काशी, बनारस।

सं० शिवरात्री (शिव + रात्री) स्त्री०
शिवचतुर्दशी, फागुन बदी १४।

सं० शिवसेनानी पु० स्वामिकाति-
केय, कीर्तिमुख।

सं० शिवा (शिव) स्त्री० पार्वती,
उमा, दुर्गा।

प्रा० शिवाला (सं० शिवालय, शिव
+ आलय) पु० शिव का मन्दिर।

सं० शिवि } पु० एक राजा का नाम।
शिवि }

सं० शिविका } (शिव=सुख अर्थात्
शिविका } जिसमें बैठने से सुख
मिले या शी=सोना जिसमें) स्त्री०
पालकी, ढोली।

सं० शिविर } पु० सैन्य निवास
शिविर } स्थान, छावनी।

सं० शिशिर (शश=उड़ल कर

चलना अर्थात् पत्तों का झड़ना)
स्त्री० एक ऋतु जो माघ और
फागुन में रहती है।

सं० शिशु (शा=पतला होना या
शिव=बढ़ना) पु० बालक, बच्चा।

सं० शिशुपाल पु० चँदेरी का राजा,
जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने मारा।

सं० शिष्य (शिष्=अन्त होना) भा०
स्त्री० सिखाना, शिक्षा, उपदेश।

सं० शिश्म पु० मेढ़, लिङ्ग, पुरुषचिह्न।

सं० शिष्ट (शास्=सिखाना) स्त्री०
सीखनेयोग्य, सभ्य, २ आज्ञाकारी,
३ अच्छा, उत्तम, मला, काफ़ी।

सं० शिष्टाचार (शिष्ट + आचार)
पु० अच्छा चलन, सम्मान, आदर,
विनय, विनती।

सं० शिष्टि स्त्री० आज्ञा, शासन, संज्ञा।

सं० शिष्य (शास्=सिखाना) पु०
उपदेश्य, चेला, विद्यार्थी, छात्र,
पढ़नेवाला, २ किसी धर्म को
माननेवाला।

सं० शीकर (शीक्=सींचना या
गीला करना) पु० जलकर्म, कुं-
हारा, सरलद्रव्य, वायु।

सं० शीघ्र (शीघ्र=सूँघमा) गु०
उत्तावला, जल्द, फुर्तीला, क्रि०
वि० तुरन्त, झटपट, जल्दी से।

सं० शीघ्रगामी (गम्=चलना) क०
पु० जल्दी चलनेवाला।

सं० शीघ्रता (शीघ्र) भा० स्त्री०

जल्दी, उतावली, फुर्ती ।
 सं० शीत (शयै=जाना) गु० ठंडा,
 सर्द, २ सुस्त, पु० जाड़ा, सर्दी,
 ठण्ड, ३ हिम, पाला ।
 सं० शीतकर (शीत=ठंडी, कर=
 किरण) पु० चाँद, २ कपूर ।
 सं० शीतकाल (शीत + काल)
 पु० जाड़ा, सर्दी, हिमन्तऋतु ।
 सं० शीतज्वर (शीत + ज्वर) स्त्री०
 जाड़ा, जाड़े की तप ।
 सं० शीतल (शीत=ठंड, ला=
 लेना) गु० ठंडा, सर्द ।
 सं० शीतलता (शीतल) भा०
 स्त्री० ठंडाई, ठंडापन ।
 प्रा० शीतलताई } (सं० शीत-
 शीतलाई } लता) भा०
 स्त्री० ठंडाई, ठंडापन ।
 सं० शीतला (शीतल) स्त्री० देवी,
 माता, चेचक ।
 सं० शीतांशु (शीत=ठंडी, अंशु=
 किरण, जिसकी किरणें ठंडी हैं)
 पु० चाँद, २ कपूर ।
 सं० शीताङ्ग (शीत + अङ्ग) पु०
 पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग, एक बीमारी
 का नाम ।
 सं० शीर्ण (शृ=मारना) गु० कुश,
 दुर्बल, शुष्क, सूखा ।
 सं० शीर्ष (शृ=नाश होना) पु०
 शीस, सिर, माथा, मस्तक ।
 सं० शील (शील=सोचना या

अभ्यास करना) पु० अच्छा
 स्वभाव, अच्छा चाल चलन ।
 सं० शिलिवान् (शील + वान्)
 गु० अच्छे स्वभाववाला, जिसका
 चाल चलन अच्छा हो, सुशील,
 नेक चलन ।
 सं० शीलचक्षु गु० मुरौवतदार ।
 सं० शीलित र्म्यं अर्भ्यस्त, रन्त,
 रस, रटित ।
 प्रा० शिशम (सं० शिशपा) पु०
 एक पेड़ और उसकी लकड़ी का
 नाम ।
 प्रा० शीस { (सं० शीर्ष) पु० शिर,
 सीस } माथ, मस्तक, कपाल ।
 सं० शुक (शुक्=जाना या शुभ्=
 चमकना) पु० तोता, सूगा, सूआ,
 २ शुकदेवमुनि जिन्होंने राजा परी-
 क्षित को श्रीमद्भागवत सुनाई ।
 सं० शुक्ति स्त्री० सीपी, सूती, चक्षु,
 रोग, अर्शरोग ।
 सं० शुक्र (शुच्=पवित्र होना या
 सोचना) पु० बड़ा ग्रह, २ एक
 मुनिका नाम जो भृगु ऋषि का
 बेटा और राक्षसों का गुरु था, ३
 आग, अग्नि, ४ वीर्य, बीज ।
 सं० शुक्रवार (शुक्र + वार) पु०
 बृहदिदिन, शुक्रवार, जुया ।
 सं० शुक्राचार्य्य (शुक्र + आचार्य्य)
 पु० एक मुनिका नाम जो राक्षसों
 का गुरु था ।

सं० शुक्ल (शुच्=साफ होना) गु०
धौला, उजला, सफेद, श्वेत,
पु० धौलारंग, श्वेतवर्ण ।

सं० शुक्लपक्ष (शुक्ल + पक्ष) पु०
उजाला पक्ष, सुदी ।

सं० शुचा भा० स्त्री० पवित्रता, सफाई ।

सं० शुचि (शुच्=पवित्र होना,
साफ होना) स्त्री० पवित्रता,
सफाई, शुद्धता, गु० साफ, स्व-
च्छ, शुद्ध, धौला, सफेद ।

सं० शुण्ड पु० मूँड़ ।

सं० शुद्ध (शुध्=साफ होना या
करना) गु० पवित्र, साफ, स्वच्छ,
सफेद, उज्ज्वल, रनिर्दोष, रेसही ।

सं० शुद्धता (शुद्ध) भा० स्त्री०
पवित्रता, सफाई, स्वच्छता ।

सं० शुद्धि स्त्री० पवित्रता, शुद्धता,
शोधन, सफाई ।

सं० शुद्धिपत्र पु० मुच्चाफीनामा,
साफीनामा ।

सं० शुन्य ((शिव=बड़ना) गु०
शून्य) खाली, स्त्री० या पु०
बिन्दी, सिफर, २ आकाश, आस्मान ।

सं० शुभ (शुभ्=चमकना) गु०
अच्छा, भला, कल्याणकारी, म-
ङ्गलदायक ।

सं० शुभग (शुभ=भला, गम्=
जाना) गु० कल्याणकरनेवाला,
सुखदायी, मङ्गलीक, २ सुन्दर ।

सं० शुभगता भा० स्त्री० मनो-

हरता, सुन्दरता, उम्दगी ।

सं० शुभचिन्तक क० पु० भला
चाहनेवाला, खैरखाह ।

सं० शुभचिन्तकता भा० स्त्री०
भलाई, खैरखाही ।

सं० शुभलग्न (शुभ + लग्न) पु०
अच्छासमय, मङ्गलीक समय ।

सं० शुभाकाङ्क्षी क० पु० मङ्गला-
भिलाषी, भलाई चाहनेवाला,
खैरखाह ।

सं० शुभ्र (शुभ्=चमकना) गु०
उजला, सफेद, धौला, निर्मल, २
चमकीला, चमकदार, ३ पु०
धौला रंग, श्वेतवर्ण ।

सं० शुम्भ (शुम्भ्=मारना) पु०
एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा
ने मारा ।

सं० शुल्क पु० चुंगी, फीस ।

सं० शुश्रूषक (शु=सुनना) क० पु०
सेवक, परिचारक, टहलू ।

सं० शुश्रूषा स्त्री० सेवा, टहल ।

सं० शुष्क (शुष्=सूखना) गु०
सूखा, निरस, खुरक ।

सं० शुष्ण पु० सूर्य, अग्नि, वायु,
पराक्रम, शोक, प्रकाश, दीप्ति, शोभा ।

सं० शूकर (शू=ऐसा शब्द, कर=
करनेवाला, कृ=करना) पु०
सुअर, बराह ।

सं० शूद्र (शुच्=साफ करना, जो
बड़ोंको नहलाते, धुलाते हैं) पु०

चौथे वर्ण के लोग जिनका काम नौकरी करना है ।
 सं० शून्य गु० निर्जनस्थान, आकाश, बिन्दु, सिफर, अभाव, असम्पूर्ण, ऊन, तुच्छ, उदासीन ।
 सं० शून्याकार गु० उदासीन की सूरत, खालीसा ।
 सं० शूर (शूर=बहादुरी करना) पु० वीर, सूरमा, रावत, बहादुर, साहसी, २ शूरसेन, जो श्रीकृष्ण का दादा था, ३ सिंह, ४ सूर्य, ५ सुअर, ६ साल का पेड़ ।
 सं० शूरण पु० जमीकन्द, वर्तुलाकारमूल ।
 सं० शूरता (शूर) भा० स्त्री० बहादुरी, वीरता, शूरमापन ।
 सं० शूरसेन (शूर=बहादुर, सेन=सेना) पु० मथुरा के एक राजा का नाम, २ मथुरा ।
 सं० शूर्प (शूर्प=मापना) पु० मूष, ब्राज ।
 सं० शूर्पनखा (शूर्प + नख अर्थात् जिसके नख मूष ऐसे हैं) स्त्री० रावण की बहिन ।
 सं० शूल (शूल=बीमार होना) पु० पीड़ा, दुःख, रोग, २ लोहे का तीखा काँटा, त्रिशूल ।
 सं० शृगाल (शृंग + अला या अष्टज् =लोह, आ, ला=लेना, यहाँ अमृज् के अ का लोप होजाता

है) पु० सियार, गीदड़ ।
 सं० शृङ्खला (शृ=नाशकरना) स्त्री० सांकल, संकली, सिकरी, २ करधनी ।
 सं० शृङ्ग (शृ=नाश करना) पु० सींग, २ शिखर, पहाड़की चोटी, पहाड़के ऊपर का भाग, ३ चिह्न, ४ बढ़ाई, प्रभुत्व, प्रधानता, ५ कामदेव का बदन ।
 सं० शृङ्गबेर पु० श्रीरामचन्द्रके मित्र गुह निषाद के नगर का नाम ।
 सं० शृङ्गार (शृङ्ग=कामदेव का अर्थात् प्यार का बदन और ऋ=जाना, जिससे मन में काम बढ़ता है) पु० साहित्य विद्यामें एक रस का नाम, २ शोभा, सिंगार, गहना, भूषण—१६ शृङ्गार—
 दो० अंग शुची मज्जन वसन,
 मांग महावर केश ।
 तिलक भाल तिल विबुध में,
 भूषण मेहदी बेश ।
 मिस्सी काजल अरगजा,
 बीरी और सुगन्ध ।
 पुष्प कलीयुत होयकर,
 तब नव सप्त प्रबन्ध ।
 शरीर का मैल उतारना, २ न्हाजा,
 ३ साफ कपड़े पहनना, ४ काजल लगाना, ५ अलता से हाथ पैर रचना, ६ बालसँवाटना, ७ सिन्दूरसे मांग भरना, ८ लिक्काड़ में केशर

चन्दन की खौरी या तिलक नि-
कालना, ६ दुहड़ी परतिल बनाना,
१० मेंहदी लगाना, ११ देह में
अरगजा या इतर आदि सुगन्धित
चीज लगाना, १२ गहना पहनना,
१३ फूलोंकी माला आदि पहनना,
१४ पान चबाना, १५ दाँत रँगना,
१६ होठों को लाल करना ।

सं० शृङ्गी (शृङ्ग) गु० सींगवाला,
पु० एक ऋषिका नाम जो लोमश
ऋषिका चेला था जिसके शाप
से राजा परीक्षित को तक्षक साँप
ने डसा ।

सं० शेखर (शिख=जाना) पु०
फूलों की माला जो मुकुट के ऊ-
पर पहनते हैं, मुकुट, किरीट, २
शिखा, चोटी ।

सं० शेष (शिष=बाक़ी रहना) पु०
अनन्त, सर्पराज, साँपों का राजा
जिस के १००० फण बतलाते हैं
और जिस पर विष्णु सोते हैं और
जिसके एक फण पर हिन्दूलोग
पृथ्वी को ठहरी बतलाते हैं और
लक्ष्मणजी और बलदेवजी को
शेषजी के अवतार कहते हैं, गु०
बाक़ी, बचा हुआ ।

सं० शेषशायी (शेष=साँपोंका राजा,
शायी=सोनेवाला, शी=सोना)
पु० विष्णु भगवान् जो शेषजी
पर सोते हैं ।

सं० शैल (शिला) पु० पहाड़,
पर्वत, गु० पहाड़ी, पथरीला ।

सं० शैलराज पु० हिमालय ।

सं० शैलशिबिर पु० समुद्र, पर्वतीय
पुर ।

सं० शैलाट (शैल + अट=धूमना)
पु० सिंह, किरात, श्वेत काँच ।

सं० शैव (शिव) पु० शिव का भक्त,
शिवको पूजनेवाला, गु० शिव का ।

सं० शैवाल पु० सिवार ।

सं० शोक (शुच्=चिन्ता करना)
पु० शोच, चिन्ता, फिक्र, दुःख,
खेद, सन्ताप, पछतावा ।

सं० शोकाकुल } (शोक=शोच,
शोकार्त्त } आकुल या आर्त्त=
घबराया हुआ) गु० शोच से
व्याकुल, विकल, दुःखी ।

सं० शोकापह (शोक + अप + हन्=
नाश करना) क० पु० शोकना-
शक, शोकहारी ।

सं० शोचक (शुच् + अक, शुच्=
चिन्ता करना) क० पु० शोच
करनेवाला, फिक्रमन्द ।

सं० शोचनीय र्म्यं शोचनेयोग्य ।

सं० शोणित (शोण=लाल होना)
पु० लोहू, रक्त, रुधिर, २ कुङ्कुम,
गु० लाल ।

सं० शोधक क० पु० शुद्ध करने
वाला ।

सं० शोधित र्म्यं शुद्ध की हुई ।

सं० शोधन (शुष्=पवित्र करना)

पु० पवित्र करना, शुद्ध करना, २ सही करना ।

सं० शोधनी ए०स्त्री० बढनी, भाङ्ग ।

सं० शोधनीय र्म्य० शोध्य, शोधने योग्य, इस्लाहतलब ।

सं० शोभन (शुभ्=चमकना) भा० श्रेष्ठ, उत्तम, उम्दा ।

सं० शोभा (शुभ्=चमकना) स्त्री० सुन्दरता, खूबसूरती, छवि, कान्ति, २ चमक, फलक ।

सं० शोभायमान क० पु० मुशो-भित, खूबसूरत ।

सं० शोभित (शुभ्=चमकना) गु० सुन्दर, शोभायमान, चमकीला ।

सं० शोषक (शुष्+अक, शुष्=सोखना) क० पु० रसाकर्षक, वायु, सूर्यादि ।

सं० शौच (शुचि) भा० पु० पवि-त्रता, शुद्धता, सफाई, स्नान आदि ।

सं० शौण्डिक क० पु० कलवार ।

सं० शौर्य (शूर) भा० पु० शूर-माण, बहादुरी, वीरता ।

सं० शौलिक क० पु० दारोगा चुंगी ।

सं० श्मशान (श्मन्=मुर्दा और शी=सोना, जहाँ मुर्दा सुलाया जाता है अर्थात् जलाया जाता है) पु० मसान, मरघट, मुर्दाघाट ।

सं० श्याम (श्यै=जाना) गु० काला काला, नीला मिला हुआ, पु०

श्रीकृष्ण का नाम ।

सं० श्यामता (श्याम) भा० स्त्री० कालासा, कालापन, कृष्णता ।

सं० श्यामल (श्याम=कालारङ्ग, ला=लेना) गु० काला, श्यामवर्ण ।

सं० श्यामा (श्याम) स्त्री० काली, दुर्गा, देवी, २ एक काले रङ्ग की गानेवाली चिड़िया, षोडश वर्ष की स्त्री, सोलह वर्ष की औरत, पीपरि, काले रङ्ग की स्त्री ।

सं० श्येन पु० शाहीन, बाजपक्षी ।

सं० शृङ्खला स्त्री० जंजीर, सांकरि, बिलाई, भेलन ।

सं० श्रद्धधान क० पु० श्रद्धायुक्त, मुअतकिद ।

सं० श्रद्धा (श्रत्=विश्वास, धा=रखना) स्त्री० विश्वास, भरोसा, भक्ति, गुरु और शास्त्र के वचन में पक्का भरोसा, २ आदर, ३ इच्छा, चाह, ४ बल, ताकत ।

सं० श्रम (श्रम्=मिहनत करना) स्त्री० वा पु० मिहनत, थकावट, क्लान्ति, दौड़-धूप, कष्ट, परिश्रम, २ तप, तपस्या ।

सं० श्रमजीवी क० पु० मजदूर, भारवाहक ।

सं० श्रमित क० पु० थकित, थका हुआ ।

सं० श्रमी क० पु० मेहनती ।

सं० श्रय (श्रि=सहारा लेना) अथवा पु० अवलम्ब, सहारा,

भरोसा ।

सं० श्रवण (श्रु=सुनना) पु० कान,
सुनने की इन्द्रिय, २ सुनना ।

सं० श्रवणा (श्रु=सुनना) स्त्री०
बाईसवां नक्षत्र ।

सं० श्राद्ध (श्रद्धा) पु० पितरों को
शास्त्र की रीति से जल और पिण्ड
देना ।

सं० श्रान्त (श्रम्=थकना) क० पु०
क्लान्त, थका हुआ ।

सं० श्रान्ति भा० स्त्री० थकावट,
थकवाई ।

प्रा० श्राप (सं० शाप) पु० धिक्कार,
दुराशिष, बददुआ ।

सं० श्रावक (श्रु=सुनना अपने धर्म
को) पु० जैनी, जिन मत को
माननेवाला, २ श्रोता, सुनने-
वाला ।

सं० श्रावण (श्रवण=एक नक्षत्र का
नाम, इस महीने में पूरा चाँद इस
नक्षत्र के पास रहता है और पूर्ण-
मासी को यह नक्षत्र होता है) पु०
इसीसे एक महीने का नाम सावन
हुआ ।

सं० श्रावणी (श्रावण) स्त्री० सावन
की पूनौ, राखी ।

सं० श्री (श्रि=सेवा करना जो
विष्णु की सेवा करती है या जिस
को सब संसार सेवता है) स्त्री०
लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, २ सम्पदा, धन,

दौलत, ३ शोभा, सुन्दरता, यह
शब्द देवताओं और बड़े आदि-
मियों और पवित्र पोथियों आदिके
साथ बढ़ाई और मान के लिये
लगाया जाता है और कभी कभी
दो श्री अथवा पाँच द्वः आदि
१०८ श्री तक लिखते हैं, जैसे
श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण, श्रीयज्ञदत्त
पण्डित, श्रीभागवत पुराण आदि-
यहाँ मत् या युक्त या युत शब्द
छिपा हुआ है और कभी २ इन
शब्दों के साथ भी बोलते हैं, जैसे
श्रीमान्, श्रीयुत, श्रीयुक्त आदि ।

सं० श्रीखण्ड (श्री=शोभा, खण्ड=
टुकड़ा) पु० चन्दन ।

सं० श्रीचक्र (श्री + चक्र) पु०
त्रिपुरा, सुन्दरी, देवी की पूजा का
यन्त्र ।

सं० श्रीनिवास (श्री=लक्ष्मी, नि-
वास=जगह, जो लक्ष्मी के पास
रहते हैं या जिनके पास लक्ष्मी
रहती है) पु० विष्णु, भगवान् ।

सं० श्रीपति (श्री + पति) पु०
विष्णु, भगवान् ।

सं० श्रीफल (श्री + फल) पु०
नारियल, २ बिस्व ।

सं० श्रीमत् (श्री=शोभा, मत्=
श्रीमान् } वाला) गु० भाग्य-
श्रीमन्त } वान्, प्रतापी, धन-
वान्, श्रीयुत ।

सं० श्रीयुक्त (श्री=शोभा, लक्ष्मी,
श्रीयुत) युक्त वा युत=मिला
हुआ) गु० भाग्यवान्, धनवान्,
श्रीमान् ।

सं० श्रीवत्स (श्री=शोभा, वत्स=
चिह्न) पु० विष्णु ।

सं० श्रुत (श्रु=सुनना) र्म्यं पु०
सुना हुआ, समझा हुआ, पु०
शास्त्र ।

सं० श्रुति (श्रु=सुनना) स्त्री० वेद,
२ कान, ३ सुनना ।

सं० श्रुवा (श्रु=चूना या टपकना)
स्त्रुवा) स्त्री० होम का चारू,
खैर का बना हुआ चम्मच हाथ
के आकार का ।

सं० श्रेणि (श्रि=सेवा करना)
श्रेणी) स्त्री० पाँत, पंक्ति, क्रतार ।

सं० श्रेष्ठ (प्रशस्त शब्द को श्र हो
जाता है प्र=बहुत, शंस्=सराहना)
गु० बहुत अच्छा, सबसे अच्छा,
उत्तम, सब से बड़ा ।

सं० श्रेष्ठाचार (श्रेष्ठ + आचार)
पु० उत्तम रीति, उम्दा तरीका ।

सं० श्रोता (श्रु=सुनना) क० पु०
सुननेवाला, सुनवैया ।

सं० श्रोत्र (श्रु=सुनना) पु० कान,
सुनने की इन्द्रिय ।

सं० श्रोत्रिय क० पु० वैदिक, वेद
पाठक, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला ।

सं० श्लाघा (श्लाघ=सराहना)

स्त्री० सराह, प्रशंसा, तारीफ, २
चाह, इच्छा ।

सं० श्लाघ्य र्म्यं प्रशंसा योग्य,
काबिलतारीफ ।

सं० श्लेष (श्लिष=मिलना) पु०
मिलाव, संयोग, २ एक अलंकार
जिस में एक शब्द के बहुत अर्थ
होते हैं, जैसे, “ कीकर पाकर तार,
जामन फलसा आमिला ”

“ सेव कदम कचनार,
पीपल रत्ती तून तज ”

इस में बहुत से पेड़ों के नाम दि-
खाई देते हैं पर इसका अर्थ यह है
कि परमेश्वर ने तुझ पर कृपा की
कि जिस को तू चाहती थी सोही
आमिला, सो हे कच्ची स्त्री ! अब
उसके पैरों की तू सेवा कर और
अब अपने प्यारे को एक पल भर
भी मत छोड़ ।

सं० श्लेष्मा पु० कफ, खखार,
जुकाम ।

सं० श्लोक (श्लोक=बढ़ना या
इकट्ठा करना) पु० चार पद का
संस्कृत छन्द, २ यश, कीर्ति,
कीरति, नामवरी ।

सं० श्वपच (श्वन्=कुत्ता, पच=प-
काना अर्थात् कुत्तेको खानेवाला)
पु० चण्डाल ।

सं० श्वशुर (श्रु=जल्दी, अश=पीना)
पु० सँसुर, पति या पत्नी का बाप ।

सं० श्वश्रू (श्वशुर) स्त्री० सास,
ससुर की लुगाई ।

सं० श्वस् { अव्य० आगामि दिन,
श्वः { आनेवाला दिन ।

सं० श्वान (शिव=बढ़ना या जाना)
पु० कुत्ता, कुकुर ।

सं० श्वास (श्वस्=साँस लेना)
पु० साँस, प्राण, दम ।

सं० श्वेत (श्वित्=धौला होना)
गु० धौला, सफेद ।

सं० श्वेतद्वीप (श्वेत + द्वीप) पु०
वैकुण्ठ, २ एक द्वीप का नाम ।

प

सं० ष पु० केश, हृदय, गु० श्रेष्ठ, विज्ञ ।

सं० षट् (षष्) गु० छः, ६ ।

सं० षट्ऊर्मि (बुभुक्षा च पिपासा
च प्राणस्य मनसः स्मृतौ । शोकमोहौ
शरीरस्य जरा मृत्यु षट्ऊर्मयः) प्राण
को भूख, प्यास व मनकी स्मृति
में शोक, मोह व शरीर को जरा
और मृत्यु ये छः ऊर्मियाँ होती हैं ।

सं० षट्कर्म (षट् + कर्म) पु०
स्नान, संध्या, जप, तर्पण, देवता
का पूजन आदि, (१ वेद पढ़ना,
२ दूसरे को पढ़ाना, ३ यज्ञ करना,
४ दूसरे को कराना, ५ दान देना,
और ६ दान लेना ये ब्राह्मण के
छः काम हैं) ।

सं० षट्कोण (षट् + कोण) पु०
छःकोना खेत, छःखूंट खेत, २ वज्र ।

सं० षट्पद (षट् + पद) पु० भौरा ।

सं० षट्प्रयोग १ शान्ति, २ वशी-
करण, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण,
५ उच्चाटन, ६ मारण ।

सं० षट्संभोजन (षट्=छः, रस
=स्वाद, भोजन=खाना) पु०
मीठा, खट्टा, खारा, कड़ुआ, क-
सैला और तीता इन छः रसों
से मिला हुआ खाना ।

सं० षट्चदन { (षट्=छः, चदन
षडानन) या आनन=मुँह)
पु० कार्तिकेय, महादेव का बेटा ।

सं० षट्चर्ग पु० काम, क्रोध, लोभ,
मोह, मद, मात्सर्य ।

सं० षट्शास्त्र (षट् + शास्त्र) पु०
न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त,
सांख्य और पातञ्जल ये छः शास्त्र
इनको षट्दर्शन भी कहते हैं (दर्शन
शब्दको देखो) ।

सं० षडङ्ग (षट् + अङ्ग) पु० शरीर
के छः भाग जैसे दो हाथ, दो पाँव,
शिर और कमर, २ वेद के छः अङ्ग,
(जैसे १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याक-
रण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६
छन्द, वेदाङ्ग शब्द को देखो) ।

सं० षडङ्घ्रि (षट्=छः, अङ्घ्रि=पाँव)
पु० भौरा, भ्रमर ।

सं० षण्ड (षण् + ढ) कमलादिकों
का समूह, साँड़ ।

सं० षण्ड पु० नपुंसक, हिजड़ा,

मुखजस ।

सं० षष्टि (षष्=छः, पर आगे तिप्र-
त्यय के आनेसे उसका अर्थ दश
गुना होता है) गु० साठ ।

सं० षष्ठ (षष्) गु० छठा ।

सं० षष्ठी (षष्) स्त्री० छठ, छठी
तिथि, षष्ठीदेवी ।

सं० षोडश (षड्=छः, दश=दस)
गु० सोलह, १६ ।

सं० षोडशदान (षोडश + दान)
गु० सोलह चीजों का दान, जैसे
१ धरती, २ आसन, ३ पानी, ४
कपड़ा, ५ दीपक (या दीपक के
लिये तेल), ६ अनाज, ७ धान,
८ छत्र, ९ सुगन्धित चीज, १०
फूलों की माला, ११ फल, १२
सेज, १३ खड़ाऊँ, १४ गाय, १५
सोना, १६ रूपा या चांदी ।

सं० षोडशभुजा (षोडश=सोलह,
भुजा=हाथ) स्त्री० सोलह हाथ
की दुर्गा, देवी की मूर्त ।

सं० षोडशसंस्कार या कर्म (१
गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमन्त,
४ जातकर्म, ५ नामकरण, ६
निष्क्रमण, ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ा-
कर्म अर्थात् मुण्डन, ९ कर्णवेध,
१० उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत,
११ वेदारम्भ, १२ समावर्तन अर्थात्
ब्रह्मचर्य, १३ विवाह, १४ गृहाश्रम,
१५ द्विराश्रम, १६ वानप्रस्थ,

१७ महावाक्यपरिसमाप्ति, १८
संन्यासविधि, १९ सर्वसंस्कार
होम विधि, २० मृतककर्म) ।

सं० षणुषा स्त्री० बहू, पुत्रभार्या
जैसे “ स्तुषेयं तव कल्याण ” ।

स

सं० स (सो=नाश करना) पु०
विष्णु, २ साँप, शैशव, ४ पत्थेरू,
भृगु, ५ समुच्च० साथ, सहित, समेत
(जैसे सजीव, जीवसहित), ६
बराबर, वही, एकही (जैसे सधर्म
एकही धर्म का), ७ साम्हन ।

सं० संक्षिप्त र्मम् कम की हुई,
मुख्तसिर की हुई ।

सं० संक्षेप (सम्=साथ, क्षिप्=
फेंकना) पु० सारअंश, सारभाग,
मुख्तसर ।

प्रा० संगत (सं० संगति) स्त्री०
मेल, साथ, सोहबत, २ वह जगह
जहाँ सिख अपने धर्म की रीति
रसम करते हैं ।

प्रा० संचना (सं० सञ्चयन, सम्=
सांचना) अच्छीतरह से, चि=
इकट्ठा करना) कि० स० इकट्ठा
करना ।

सं० संज्ञा (सम्=अच्छी तरह से,
ज्ञा=जानना) स्त्री० इस्म, नाम,
चीज का नाम, २ बुद्धि, ३ चेतना,
४ गायत्री, ५ सूर्य की स्त्री ।

प्रा० संजोवना (सं० संयोजन,

सम्, युज्=मिलना) क्रि० स०
तैयार करना ।

सं० संन्यासी संन्यास लेने
वाला ।

प्रा० संपत् (सं० सम्पद्) स्त्री०
सम्पदा, धन, दौलत ।

प्रा० संभलना क्रि० अ० थँभना,
ठहरना, सहारापाना, खड़ा होना,
गिरते गिरते थँभ जाना ।

प्रा० संभालना { (सं० सम्भारण,
संभारना) सम्, भृ=पक-
ड़ना) क्रि० स० थँभना, पकड़ना,
सहारादेना, मदद देना, सहायता
देना ।

सं० संयम (सम्=अच्छीतरह से,
यम्=रोकना) भा० पु० नेम,
नियम, व्रत के दिन कितनी चीजों
के खाने पीने की रुकावट, इन्द्रिय-
निग्रह, परहेज, बन्धन ।

सं० संयमी क० पु० मुनि, इन्द्रिय-
रोधक ।

सं० संयुक्त (सम्=साथ, युज्=मि-
लना) गु० मिला हुआ, लगा
हुआ, जुड़ा हुआ ।

सं० संयुग (सम्=साथ, युज्=मि-
लना) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम ।

सं० संयुत (सम्, यु=मिलना) र्भ०
मिला हुआ, लगा हुआ ।

सं० संयोग (सम्, युज्=मिलना)
पु० मेल, मिलाप, सम्बन्ध, रदैव-

योग, संयोग, इत्तिकाक्त ।

सं० संयोजित र्भ० मिलाया गया ।

सं० संरम्भ (सम्, रम्=कोसना)
पु० कोप, आक्रोश, वेग ।

सं० संराधन (सम्, राध=सेवा क-
रना) भा० पु० सवप्रकार से सेवा
करना, चिन्तन करना ।

सं० संराव (सम् + रु=बोलना)
पु० ध्वनि, शब्द ।

सं० संलग्न (सम्, लग्=मिलना)
क० पु० मिलित, संयुक्त ।

सं० संलाप (सम्, लप्=कहना) भा०
पु० परस्पर कहना, बाह्यगुप्तगू
करना ।

सं० संवत् (सम्, वय्=जाना) पु०
विक्रमादित्य राजा का चलाया
हुआ साल, वरस, सन् ।

सं० संवत्सर (सम् + वत्सर) पु०
वरस, संवत्, साल, सन् ।

सं० संवाद (सम्, वद्=कहना) पु०
बात चीत, चर्चा, प्रसंग, कथा,
संदेश, संदेशा, समाचार ।

प्रा० संवारना क्रि० स० सजाना,
सुधारना, सिंगारना, तैयारकरना ।

सं० संशय (सम्, शी=सोना, पर
सम् उपसर्ग के साथ आने से इस
का अर्थ संदेह करना होजाता है)
पु० संदेह, शक ।

सं० संशयात्मन् पु० संदिग्ध अन्तः-
करण, संशयात्मा, अस्थिरचित्त,

ढामाडोल मन ।

सं० संशोधन (शुध्=शुद्ध करना)

भा० पु० संशुद्धि, नजरसानी, दु-
बारा देखना, ध्यान से देखना ।

सं० संसर्ग (सम्=साथ, सृज्=
पैदा होना) पु० संगत, सोहबत,
सम्बन्ध, मेल ।

सं० संसार (सम्=साथ, सृ=जाना)
पु० जगत्, जग, दुनिया ।

सं० संसारी (संसार) गु० संसार
का, दुनिया का, लौकिक, दुनि-
यावी ।

सं० संसृति (सम्=साथ, सृ=जाना)
स्त्री० संसार, जगत्, आवागमन ।

सं० संस्कार (सम्=शुद्ध, कृ=क-
रना) पु० पवित्रता, सफाई, शुद्ध
करनेकी रीति, २ परम्पत, ३
प्रारब्ध ।

सं० संस्कृत (सम्=शुद्ध, कृ=करना)
गु० अच्छी भाँति से सुधारा हुआ,
उत्तम, पवित्र, पु० एक बोली जि-
सको हिन्दू पवित्र समझते हैं और
देववाणी अर्थात् देवताओं की
बोली कहते हैं और जिसमें हि-
न्दुओं के वेद शास्त्र लिखे हुए हैं
और इस बोली का व्याकरण
और सब बोलियों से बहुत पूरा
और अच्छा है ।

सं० संहार (सम्, हृ=लेना, पर
सम् उपसर्ग के साथ आनेसे अर्थ

नाश करना होता है) पु० नाश,
विनाश, २ प्रलय, संसार का
नाश, ३ एक नरक का नाम, ४
एक भैरव का नाम ।

प्रा० संहारना (सं० संहारण) क्रि०
सं० नाश करना, मार डालना ।

सं० संहिता (सम्=अच्छी भाँति
से, धा=रखना) स्त्री० मनु आदि
आचार्यों के बनाये हुए धर्मशास्त्र,
पुराण, इतिहास आदि, कर्मका-
ण्ड, वेद का भाग ।

प्रा० सकट { (सं० शकट) पु०
सगड़ { गाड़ी, ढकड़ा ।

प्रा० सकत { (सं० शक्ति) स्त्री०
सगत { जोर, बल, ताकत,
(शक्ति शब्द को देखो) ।

प्रा० सकना (सं० शक्=समर्थ
होना) क्रि० समर्थ होना, किसी
काम के करने का बल रखना ।

प्रा० सकरा { (सं० संकीर्ण) गु०
संकड़ा { तंग, संकेत, छोटा ।

सं० सकर्मक (स=साथ, कर्म=कर्म-
कारक) पु० ऐसी धातु अथवा
क्रिया जिसमें कर्म हो, जैसे खाना,
पीना, लेना, देना आदि ।

सं० सकल (स=साथ, कला=अंश,
कल्=गिनना) गु० सब, सारा, सि-
गरा, पूरा, संपूर्ण, समस्त, तमाम ।

सं० सकाम (स=साथ, काम=इच्छा)
गु० कामना सहित, चाहनेवाला,

२ सफल ।

प्रा० सकार (सं० सकाल) पु०
सवेरा, भोर, प्रभात, प्रातःकाल ।

प्रा० सकारना (सं० स्वीकरण)
क्रि० सं० सही करना, मानना,
अंगेजना, मंजूर करना ।

सं० सकाश धि० समीप, निकट,
पास ।

प्रा० सक्कुचना (सं० सङ्कोचन, सम्
=साथ, कुच्=सिकुड़ना) क्रि०
अ० लजाना, शर्माना, संकोच
करना, २ डरना ।

सं० सकृत् अव्य० एकबार, एक
मर्तबह, एक दफ्तर ।

प्रा० संकेत गु० संकड़ा, तंग, छोटा ।

प्रा० सकोड़ना (सं० सङ्कोचन)
क्रि० अ० सिमटना, सिकुड़ना, २
क्रि० सं० पीछे खेंचलेना, समेट
लेना ।

सं० सखा (स=बराबर, ख्या=कह-
लाना) पु० मित्र, दोस्त, साथी,
बन्धु, संगी ।

सं० सखी (सखा) स्त्री० सहेली,
सथिनी, संगिनी, आली ।

सं० सगर (स=साथ, गर=विष,
जहर, जो जहर के साथ पैदा हुआ)
पु० अयोध्या के एक राजा का नाम
जिससे समुद्र का नाम सागर हुआ,

गु० जहरीला, बिपैला ।

सं० सगा (सं० स्वकीय, स्व=
अपना) गु० अपना, सम्बन्धी,
समथी, नातेदार, रिश्तेदार, सगा
भाई=अपना भाई, एक बाप का
बेटा ।

प्रा० सगाई (सं० स्वकीयता, स्त्री०
सगावत) भाईचारा, नाता,
अपनायत, रिश्ता, २ मैगनी,
निस्बत, ३ नीच जात की लुगाई
का दूसरा व्याह ।

सं० सगुण (स + गुण) गु० गुण
सहित, रजोगुण सतोगुण तमो-
गुण सहित ।

सं० सघन (स + घन) गु० गहरा,
घना, गहन ।

सं० सङ्कट (सम्=साथ, कट=घेरना)
पु० दुःख, कष्ट, आपदा, विपत्,
तकलीफ, आफत ।

सं० सङ्कर (सम्=मिला हुआ, कृ=
फैलना) पु० मिली हुई जात,
और जात के पुरुष से और जात
की स्त्री में पैदा हुआ मनुष्य, दो-
गला, वर्णसंकर, खिचड़ी, दो
जातका ।

सं० सङ्कर्षण (सम्, कृष्=खींचना)
पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई, बल-
देव जिसने एक मां देवकी के गर्भ

१ “ सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् अतं मम ” (इति
रामायणे रामवाक्यम्) ॥

से गिर कर दूसरी मां रोहिणी के
बेट से जन्म लिया इस लिये ऐसा
नाम हुआ ।

सं० सङ्कलन (सम्, कल=गिनना)
पु० जोड़, जोड़ना ।

सं० सङ्कलित र्म० जोड़ा हुआ,
जमा, संगृहीत ।

सं० सङ्कल्प (सम्=साथ, कृप्=स-
मर्थ होना) पु० मन की इच्छा,
कामना, मनोरथ, २ प्रतिज्ञा, नि-
यम, नेम, प्रहर ।

सं० सङ्कल्पित र्म० दत्त, अभिप्रेत,
दीहुई ।

सं० सङ्काश गु० सदृश, समान ।

सं० सङ्कीर्ण (सम्=साथ, कृ=वि-
खरना) गु० बहुत मनुष्यों का मि-
लाव, भीड़ भाड़, घनावन, तंग ।

सं० सङ्कीर्णता भा० स्त्री० तंगी,
सकराई, कोताही ।

सं० सङ्कीर्तन भा० पु० वर्णन करना,
यश गाना ।

सं० संकुल (सम्=खूब, कुल=
इकट्ठा होना) गु० खूब भरा हुआ,
बहुत आदमियों या जीवों से
भरा हुआ ।

सं० सङ्केत (सम्, कित्=जानना)
पु० सैन, इशारा, चिह्न, २ बचन ।

सं० सङ्कोच (सम्, कुच्=सिकुड़ना)
पु० लाज, शर्म, २ सिमटाव,
तकल्लुफ ।

सं० सङ्कोचन भा० पु० लपटाव,
सिकुरना, यन्त्रण ।

सं० सङ्कोचित { क०सकुचा हुआ,
संकुचित { सिकुरा हुआ,
लज्जित ।

सं० सङ्कोची क० पु० शर्मिन्दा,
पशोपेश करनेवाला, दब्बू, ल-
ज्जालु ।

सं० संक्रम (क्रम=जाना) पु० दुर्ग-
मार्ग, किला की राह, आक्रमण,
हिसार, धिराव, जलबाँध ।

सं० संक्रमण भा० पु० संक्रान्ति,
पर्यटन, राशियों का बदलना ।

सं० संक्रान्त पु० मेल, मिलाप ।

सं० संक्रान्ति (सम्=साथ, क्रम्=
जाना) स्त्री० सूर्य अथवा और
ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि
पर जाना ।

सं० संक्रामक क० पु० पर्यटक,
घूमनेवाला ।

सं० सङ्ख्या (सम्, ख्या=प्रसिद्ध
होना) स्त्री० गिन्ती, शुमार ।

सं० सङ्ग (सम्=साथ, गम्=जाना,
अथवा सङ्ज=मिलना) पु० मेल,
सम्बन्ध, संयोग, साथ ।

सं० सङ्गति (सम्=साथ, गम्=जाना)
स्त्री० मेल, साथ, सङ्गत, सोहबत ।

सं० सङ्गम (सम्=साथ, गम्=जाना)
पु० मिलना, मेल, मिलाव, संयोग,
२ एक नदी का दूसरी नदी के

साथ अथवा समुद्र के साथ मिलना, ३ मैथुन, स्त्रीसंग ।
 सं० सङ्गर (सम्=साथ, गृ=निगलना वा निकलना) पु० लड़ाई, युद्ध, झगड़ा, २ आपदा, ३ विष, ४ शमी का पेड़, ५ प्रतिज्ञा ।
 सं० सङ्गी (सङ्ग) गु० साथी, मेली, मिलानी, मित्र ।
 सं० सङ्गीत (सम्=अच्छी तरह से, गै=गाना) पु० गाने की विद्या, गाना, गाने नाचने की विद्या, गु० वर्णित, कथित ।
 सं० संगृहीत (सम्=अच्छी तरह से, ग्रह=लेना) र्मपु० इकट्ठा किया हुआ, संग्रह किया हुआ, संकलित, तालीफशुद्ध ।
 सं० संग्रह (सम्=अच्छी तरह से, ग्रह=लेना) पु० इकट्ठा, एकट्ठा, सञ्चय, तालीफ ।
 सं० संग्रहण भा० पु० संग्रह, संचय ।
 सं० संग्रहणी स्त्री० बहुत दस्त आना, नाम रोग ।
 सं० संग्रहीता (सम्=अच्छी तरह से, ग्रह=लेना) क० पु० संग्रहकर्ता, जोड़नेवाला ।
 सं० संग्राम (संग्राम=लड़ाई करना) पु० लड़ाई, युद्ध, रण, जंग ।
 सं० संग्राहक क० पु० संग्रहकर्ता ।
 सं० संग्राही क० पु० संग्रहकर्ता, जमा करनेवाला, इकट्ठा करनेवाला ।

सं० सङ्घट्टक (सम्+घट्ट=रगड़ना) क० पु० योजक, मिलानेवाला, रगड़नेवाला, रचनेवाला ।
 सं० सङ्घट्टन (सम्, घट्ट=चलना) भा० पु० मेलना, गढ़ना, रचना, साथ ।
 सं० सङ्घर्ष (सम्, घृष=घिसना) पु० रगड़ा, परस्पर रगड़ना, स्पर्द्धा, प्रभञ्जन ।
 प्रा० सच (सं० सत्य) गु० सत्य, ठीक, सँच, हाँ, निश्चय, २ पु० सचाई, सचावट, कि० वि० ठीक ठीक, यथार्थ ।
 प्रा० सचमुच बोल० ठीक ठीक, यथार्थ ।
 सं० सचराचर (स=साथ, चर=चलनेवाला, अचर=नहीं चलने वाला) गु० जीव, जन्तु, पेड़, पत्थर आदि सब समेत ।
 प्रा० सचाई { (सं० सत्यता) सचाई } भा० स्त्री० सच, सँच, सचावट, ईमानदारी, खराई, शुद्धता ।
 सं० सचि { (सच्=बाँधना या सची) सींचना) स्त्री० इन्द्राणी, इन्द्रकी पत्नी ।
 सं० सचिव (सच्=बाँधना या सींचना) पु० मन्त्री, सलाह देने वाला ।
 सं० सचेत (स=साथ, चेत=सुधि

या होश) गु० चौकस, सावधान,
होशियार ।
सं० सचेतन (स=साथ, चेतना=
बुद्धि, ज्ञान) गु० ज्ञानवान्,
बुद्धिमान् ।
प्रा० सचौटी (सच) स्त्री० सचाई,
सचावट ।
प्रा० सच्चा (सं० सत्य) गु० ठीक,
सत्य, यथार्थ, ईमानदार, विश्वासी,
धार्मिक, खरा, शुद्ध, सात्त्विक ।
सं० सच्चिदानन्द (सत्=सदा या
सत्=सच्चा, चित्=चैतन्य, आनन्द
=प्रसन्न या सुखरूप) पु० ब्रह्म,
परमेश्वर, परमात्मा, परब्रह्म ।
प्रा० सज (सं० सज्ज, सस्ज्=जाना)
स्त्री० ढौल, रूप, धन, शोभा ।
प्रा० सजघज बोल० बनाव, तैयारी,
रूप, शोभा ।
प्रा० सजग (स=साथ, जागना=
होशियार होना) गु० सावधान,
सचेत, होशियार, खबरदार ।
प्रा० सजन { (सं० सज्जन) पु०
सजना } बड़ा आदमी, रथारा,
पति, ३ स्त्री० प्यारी, प्रिया ।
प्रा० सजना (सं० सज्ज, सस्ज्=
जाना) क्रि० अ० तैयार होना,
२ बनना, बनाव करना, फबना,
सोहना ।
प्रा० सजनी (सं० सज्जन) स्त्री०
सखी, सहेली ।

सं० सजल (स + जल) गु० पानीसे
भरा हुआ, गीला, भीगा, तर, नम ।
प्रा० सजला पु० चार भाइयों में
तीसरा, स्त्री० पानी से भरी हुई ।
प्रा० सजार्ह (सजाना) स्त्री० तल-
वार के म्यान या परतले की
बनाई, २ तैयारी ।
सं० सजाति (स=बराबर या एक
ही, जाति=जात) गु० एक जाति का ।
सं० सजातीय (स + जाति) गु०
एक जाति का, एक तरह का ।
प्रा० सजाना (सजना) क्रि० स०
तैयार करना, बनाना, सुधारना ।
प्रा० सजावट भा० स्त्री० तैयारी,
बनावट ।
प्रा० सजीला गु० सुढौल, सुन्दर ।
सं० सजीव (स + जीव) गु० जीता
हुआ, जीव सहित, जिन्दा ।
सं० सजीवनी (सजीव) स्त्री० गु०
प्राण देनेवाली ।
सं० सज्जन (सत्=सच्चा, जन=मनुष्य)
गु० सत्पुरुष, साधु, भला आदमी,
कुलवान, बड़ा आदमी, भद्रपुरुष ।
सं० सञ्चय (सम्=अच्छी भाँति से,
चि=इकट्ठा करना) पु० ढेर, इकट्ठा,
संग्रह, राशि ।
सं० सञ्चारक (सम्, चर=चलना)
क० पु० नायक, रहवर, रहनुमा ।
सं० सञ्चारण भा० पु० प्रकाशन,
विकाशन, संचालन, संचार, फैलाव ।

सं० सञ्चारिका (सम्, चर्=जाना)
स्त्री० दूती जो नायक का संदेश
नायिका को या नायिका का सं-
देश नायक को पहुँचाती है, २
घ्राण, नासिका, ३ युग्म, युगल,
जोड़ा ।

सं० सञ्चालन (सम्, चल्=जाना)
भा० पु० चलाना, फैलाना ।

सं० सञ्चित (सम्, चि=इकट्ठा
करना) र्म० इकट्ठा किया हुआ,
बटोरा हुआ, संग्रह किया हुआ ।

सं० सञ्ज्ञान (स + ज्ञान) गु० ज्ञान
सहित, ज्ञानी, ज्ञानवान्, बुद्धि-
मान् ।

प्रा० सटक स्त्री० लचीली छड़ी
जो एक ओर मोटी होती है और
दूसरी ओर पतली होती है ।

प्रा० सटकना क्रि०अ० भाग जाना,
खसकना, दौड़ जाना, चला जाना ।

प्रा० सटना (सं० सन्नद्ध, सम्=
अच्छीतरह से, नह्=बाँधना) क्रि०
अ० मिलना, जुड़ना, चिपकना ।

प्रा० सटपटाना क्रि०अ० घबराना,
अचंभे में होना, पिछलना ।

सं० सटा स्त्री० जटा, शिखा, चो-
टिया, केशर, अयाल, २ मिलाव,
गफ़िन ।

प्रा० सड़क स्त्री० राजमार्ग, बाद-
शाही रास्ता, रोड ।

प्रा० सड़क गु० मस्त, मतवाला ।

प्रा० सड़ना क्रि० अ० गलना,
पचना, बिगड़ना, खराब होना ।

प्रा० संड } गु० मोटा, जोरावर, बल-
संडा } वान्, मजबूत, दृष्ट पुष्ट ।

प्रा० संडमुसंड गु० खूब मोटा
ताजा और जोरावर ।

प्रा० संडसी } (सं० सन्दंशिनी, सम्
संडासी } =खूब, दंश्=काटना)

सँडसी } स्त्री० गहवा, संगसी ।

प्रा० संडास पु० जाजरूर, पाखाना ।

सं० सत् (अस्=होना) गु० सच,
ठीक, सत्य, २ ब्रह्म, परमेश्वर, ३
पु० आदर, ४ विद्यमानता ।

प्रा० सत् (सं० सत्त्व) पु० जोर,
बल, २ सार, हीर, रस, अर्क,
३ सतोगुण ।

सं० सततम् (सम्=साथ, तन्=
फैलाना) क्रि० वि० लगातार,
निरन्तर ।

प्रा० सत्तमी (सं० सप्तमी) स्त्री०
सातवीं तिथि ।

प्रा० सत्तरह (सं० सप्तदश) गु०
सात और दश ।

प्रा० सतलड़ी (सात + लड़) स्त्री०
सात लड़ की माला ।

प्रा० सतसठ (सं० सप्तषष्टि) गु०
साठ और सात, सरसठ ।

प्रा० सतसई स्त्री० } (सं० सप्त-
सतसैया पु० } शती) एक
पोथी का नाम जिसको बिहारी-

लाल ने (जोकि ग्वालियर का रहने वाला था) बनाई, इसमें ७०० दोहे ब्रजभाषा में लिखे हैं ।

प्रा० सतहत्तर (सं० सप्तसप्तति, सप्त=सात, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और सात ।

प्रा० सताना (सं० सन्तापन, सम्=साथ, तप्=तपाना) क्रि० सं० दुःख देना, छेड़ना, खिजाना, तकलीफ देना ।

प्रा० सतानन्द (सं० शतानन्द) पु० गौतम ऋषि का बेटा और जनक राजा का पुरोहित ।

सं० सती (सत्) स्त्री० पतिव्रता स्त्री, धर्मात्मा स्त्री, २ वह स्त्री जो अपने पति की लाश के साथ जलजाती है, ३ दक्ष की बेटी और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञ में योगाग्नि से जल मरी और कहते हैं कि वही सती फिर हिमाचल के घर में पार्वती होकर जन्मी ।

प्रा० सतुआ (सं० सक्तु) पु० सत्तू) भूँजे अनाज का चून, सातू ।

सं० सत्कर्म (सत्=सच्चा या अच्छा, कर्म=काम) पु० भलाकाम, अच्छा काम, पुण्य, पवित्र काम, नेक काम, सच्चा काम ।

सं० सत्कार (सत्=आदर, कृ=करना) पु० आदर, सम्मान, खातिर ।

सं० सत्क्रिया (सत्=अच्छा, कृ=करना) स्त्री० सत्कार, सम्मान, पूजन, उत्तम काम ।

प्रा० सत्तर (सं० सप्तति) गु० दश गुना सात, सात दहाई ।

सं० सत्तम गु० बड़ा साधु, अति सीधा ।

सं० सत्र (सद् + त्रल्) पु० स्थान, यज्ञ, सदा दान, आच्छादन, ढापना, अरण्य, कैतव, कपट, धन, गृह, सर, तालाब ।

सं० सत्रशाला स्त्री० अन्नजलादि के देने का स्थान, धर्मशाला ।

सं० सत्राजित पु० श्रीकृष्ण का श्वशुर, सत्यभामा का पिता ।

सं० सत्रिन् पु० गृहस्थ, यजमान, दानी ।

प्रा० सत्ता (अस्=होना) स्त्री० होना, विद्यमानता, २ बल, पराक्रम, जोर, ३ भलाई, उत्तमता ।

प्रा० सत्ताईस (सं० सप्तविंशति) गु० बीस और सात ।

प्रा० सत्तानवे (सं० सप्तनवति) गु० नब्बे और सात ।

प्रा० सत्तावन (सं० सप्तपञ्चाशत्) गु० पचास और सात ।

प्रा० सत्तासी (सं० सप्ताशीति) गु०

अस्सी और सात ।

सं० सत्त्व (सत्) पु० सतो गुण,
२ अतिबल, जोर, ऐचीज, वस्तु,
४ सार, ५ प्राण, ६ व्यवसाय,
उद्यम, ७ हृदय, ८ साख्य, नेचर ।

सं० सत्यपुरुष (सत्य=सच्चा, पुरुष=
आदमी) पु० साधु, सज्जन,
भला आदमी ।

सं० सत्य (सत्) गु० सच, ठीक,
सही, यथार्थ, निश्चय, २ सच्चा,
खरा, ईमानदार, पु० सौँच, सचाई,
सचौट, २ सत्ययुग, पहला युग, ३
शपथ, ४ ब्रह्मलोक ।

सं० सत्यता (सत्य) भा० स्त्री०
सचाई, सचौटी ।

सं० सत्यभामा (सत्य=सच, भामा
=क्रोधिनी स्त्री) स्त्री० श्रीकृष्ण की
एक पत्नी और सत्राजित की बेटी ।

सं० सत्ययुग (सत्य + युग) पु०
पहला युग (युग शब्द को देखो) ।

सं० सत्यलोक (सत्य + लोक)
पु० ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवां
लोक ।

सं० सत्यवादी (सत्य=सच, वादी
=बोलनेवाला) क० पु० सच
बोलनेवाला, रास्तगो ।

सं० सत्यव्रत गु० सत्य=सच्चा, व्रत=
संकल्प, सत्यप्रतिज्ञा, पु० त्रिशंकु-
राजा ।

सं० सत्यसन्ध गु० सत्यप्रतिज्ञा या

दृढ़ मर्यादवाला ।

सं० सत्यानाश (सं० सत्य=सच,
आनाश=बड़ी बरबादी) पु० नाश,
विनाश, बरबादी ।

प्रा० सत्यानाशकरना बोल० नष्ट
करना, बरबाद करना, खराब
करना, बिगाड़ डालना ।

प्रा० सत्यानाश जाना (बोल०
सत्यानाश होना) नष्ट
होना, बरबाद होना, खराब होना,
बिगड़ जाना ।

सं० सत्त्वर (स=साथ, त्वरा=जल्दी)
गु० जल्द, उतावला, कि० वि०
शीघ्र, तुरन्त, झटपट, जल्दी से ।

सं० सत्सङ्ग पु० } (सत्=अच्छा,
सत्सङ्गति स्त्री० } संग या संगति=
साथ) अच्छी संगत, भले आदमी
का साथ, अच्छी सोहबत ।

सं० सदन (सद्=जाना या बैठना
जिसमें) पु० घर, स्थान, जगह,
२ पानी ।

सं० सद्नुमति (सत् + अनुमति)
स्त्री० अच्छी सम्मति, अच्छी
सलाह ।

सं० सदय (स=साथ + दया=कृपा)
गु० दयालु, दयासहित, कोमल ।

सं० सदसत् (सत् + असत्) गु०
सच झूठ, रास्तदरोग ।

सं० सदा कि० वि० नित, हमेशा,
नित्य, रोज रोज ।

सं० सदाचार (सत् + आचार)
पु० सनातन धर्म, उत्तमाचरण,
नेकचलन ।

सं० सदानन्द (सदा + नन्द) पु०
सदाशिव, महादेव, २ गु० हमेशह,
प्रसन्न ।

सं० सदाव्रत (सदा + व्रत) पु०
खाना जो भूखों को सदा दिया
जाय ।

सं० सदाशिव (सदा + शिव) पु०
महादेव, शम्भु, शिव, शंकर ।

सं० सदृश { (स = बराबर, दृश् =
सदृक्ष { देखना) गु० बराबर,
समान, तुल्य, एकसा ।

सं० सद्गति (सत् = अच्छी, गति =
दशा) स्त्री० उत्तम गति, मुक्ति,
मोक्ष, निस्तार, कुटकारा, २ धर्म,
नेकी, ३ सम्पदा, सम्पत्ति ।

सं० सद्भाव गु० प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता,
निष्कपटता, बेमक ।

सं० सद्य गु० गृह, मकान ।

सं० सद्यः (स = साथ, दिव् = चम-
कना) क्रि० वि० तुरन्त, फौरन्,
उसीदम, तत्काल, तत्क्षण ।

सं० सधना (सं० सान) क्रि० अ०
बनाना, खूब सिखाया जाना,
अच्छी तरह से शिक्षा पाना ।

सं० सधवा (स = साथ, धव = पति)
स्त्री० वह लुगाई जिसका पति
जीता हो, मुहागिन ।

प्रा० सधाना (सं० साधन) क्रि०
सं० सिखाना, २ बनाना, ३
हिलाना ।

सं० सध्यूच् क० पु० सहचर ।

सं० सध्रीची क० स्त्री० सहचरी ।

प्रा० सन (सं० शण, शण् = देना)
स्त्री० एक पौधा जिसके तारों की
रस्सी बनती है ।

प्रा० सन से, साथ ।

सं० सनक (सन् = सेवा करना, देना)
पु० एक मुनि का नाम, ब्रह्मा
का बेटा जो सदा बालकरूप
रहता है ।

सं० सनत्कुमार (सनत् = सदा
या ब्रह्मा, कुमार = बालक) पु०
ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि जो
सदा बालकरूप रहता है ।

सं० सनन्द { (स = साथ, नन्द =
सनन्दन { आनन्द) पु० ब्रह्मा
का बेटा, एक मुनि जो सदा
बालकरूप रहता है ।

प्रा० सनसनाना क्रि० अ० सन-
सन ऐसा शब्द करना ।

सं० सनातन (सना = सदा) पु०
ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि जो
सदा बालकरूप रहता है, गु०
नित, सदा, हमेशह, अनादि, सदा
का, हमेशह का, परम्परा ।

सं० सनाथ (स + नाथ) गु० जिसके
मालिक और सहायक हो, सपक्ष ।

प्रा० सनाह (सं० सनाह, सम्=अच्छी तरह से, नह=बाँधना) पु० बल्लर जिरह, कवच ।
 प्रा० सनीचर (सं० शनैश्चर) पु० सातवां ग्रह, २ शनिवार ।
 प्रा० सनीचरा (सनीचर) गु० अभागा ।
 प्रा० सनेह (सं० स्नेह) पु० प्यार, प्रीति, नेह, छोह, मोह, प्रेम ।
 सं० सन्त (सत्) पु० साधु, सत्पुरुष, सज्जन, धर्मात्मा ।
 सं० सन्तत (सम्=साथ, तन्=फैलना) क्रि० वि० लगातार, निरन्तर, सदा, नित, हमेशह, गु० विस्तीर्ण, फैला हुआ ।
 सं० संतति (सम्=साथ, तन्=फैलना) स्त्री० लड़का बाला, बेटा पोता, सन्तान, वंश ।
 सं० सन्तप्त (सम्=अच्छी तरह से, तप्=तपना या तपाना) र्म० पु० तपा हुआ, श्रान्त, थका हुआ, गर्म, २ दुःखी ।
 सं० सन्तान (सम्=साथ, तन्=फैलना) पु० लड़का बाला, वंश, कुटुम्ब ।
 सं० सन्तापक क० पु० दुःखदाता ।
 सं० सन्ताप (सम्=अच्छी तरह से, तप्=तपना) पु० शोक, शोच, क्रि०, चिन्ता, पीड़ा, दुःख ।
 सं० सन्तुष्ट (सम्=अच्छी तरह से,

तुप्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, तृप्त, हर्षित, मनभरा, सन्तोष के साथ ।
 सं० सन्तुष्टि (सम् + तुप् + ति) भा० स्त्री० सन्तोष, प्रसन्नता, सन्न, क्लान्त ।
 सं० सन्तोषक क० पु० तुष्टिकर, तृप्तिकर ।
 सं० सन्तोष (सम्=अच्छी भाँति से, तुप्=प्रसन्न होना) भा० पु० सन्न, तृप्ति, आनन्द, सुख ।
 सं० सन्तोषित र्म० हर्षित, आनन्दित ।
 सं० सन्तोषी (सन्तोष) क० पु० सन्तोष रखनेवाला, सन्नवाला ।
 सं० सन्था (सं० संस्था, सम्=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना) स्त्री० पाठ, सबक, पढ़ना ।
 सं० सन्दर्भ (सम्=अच्छी तरह से, दृभ्=बनाना) पु० रचना, प्रबन्ध, गुहना, इन्तिजाम, गूढार्थप्रकाश ।
 सं० सन्दिग्ध (सम्=साथ, दिह्=बढ़ना) क० सन्देहयुक्त, जिसमें सन्देह पाया जाय ।
 सं० सन्देश (सम्=साथ, दिश्=देना) पु० संदेशा, समाचार, खबर, वृत्तान्त ।
 सं० सन्देह (सम्=साथ, दिह्=बढ़ना या इकट्ठा करना) पु० शक, संशय, श्रुवहा, शङ्का ।

सं० सन्देहक क० पु० शक्ती, शुबही,
संशयी, सन्देही ।

सं० सन्दोह (सम्, दुह=दुहना, पर
सम् उपसर्ग के साथ आनेसे इकट्ठा
होना अर्थ होजाता है) पु० समूह,
बहुत, गिरोह, मजमुआ ।

सं० सन्धा (सम् + धा=रखना) स्त्री०
प्रतिज्ञा, मर्यादा, स्थिति, गु० उप-
विष्ट, बैठा हुआ, मिलित, युक्त ।

सं० सन्धान (सम्=अच्छी भाँति
से, धा=रखना) भा० पु० भेद
लेना, खोज, अन्वेषण, पता, २
जोड़ना, मिलाना, ३ युक्ति, ४
परामर्श, ५ कार्यप्रवृत्ति, ६ आचरण ।

सं० सन्धि (सम्=साथ, धा=रखना)
स्त्री० मेल, मिलाव, व्याकरण में
दो अक्षरों का मिलाव, २ सुलह,
मेल करना, दो राजाओं के आपस
में मेल होना, ३ शरीर में दो हड्डियों
का जोड़, ४ संध, ५ दरार, छेद ।

सं० सन्ध्या (सम्=अच्छी तरह से,
धै=ध्यान करना) स्त्री० सौंभ,
सायंकाल, शाम, २ प्रभात, दो-
पहर और सौंभ इन तीन समय
की पूजा जप ध्यान आदि ।

सं० सन्नद्ध गु० लगा हुआ, तय्यार ।

प्रा० सन्ना (सं० सन्धान) क्रि० अ०
मिलना, जुड़ना, सटना ।

प्रा० सन्नाटा पु० पानी या हवा से
जो शब्द होता है ।

सं० सन्नाह पु० कवच, बल्लर ।

सं० सन्निधान (सम् + निधान)
पु० समीप, निकट ।

सं० सन्निधि पु० समीप, निकट,
नजदीक, पास ।

सं० सन्निपात (सन्=साथ, नि=
नीचे, पत्=गिरना) पु० एकतरह
का रोग जो कफ, वात और पित्त
के विगड़ने से होता है, सन्निपात,
त्रिदोष, सरसाम ।

सं० संन्यास (सम्, नि, अस=फैं-
कना) पु० चौथा आश्रम, संन्यासी
का धर्म, संसारकी चीजों का त्याग ।

सं० संन्यासी (संन्यास) पु० चौथा
आश्रमी जो संसार को छोड़ देता
है, परमहंस ।

प्रा० मन्मान (सं० सम्मान, सम्=
साथ, मान=आदर) पु० आदर,
सत्कार ।

प्रा० सन्मुख (सं० सम्मुख, सम्=
साथ या साम्हने, मुख=मुँह) गु०
साम्हने, आगे, प्रत्यक्ष ।

सं० सपक्ष (स=साथ, पक्ष=पाँख
या सहायता) गु० सहायक, साथी,
२ पाँखोंवाला, पाँखों के साथ ।

सं० सपदि (स=साथ, पद=जाना)
क्रि० वि० तुरन्त, भटपट, शीघ्र ।

प्रा० सपना (सं० स्वप्न) पु० नींद में
जो कुछ देखा जाय, नींद में जो
कुछ खयाल उपजे, जागने में जो

देखते-सुनते मन में चिन्ता करते हैं उन्हीं खयालात को सोते में देखना ।

सं० सपल्लव (स + पल्लव) गु० नयेर पत्ते टहनी के साथ ।

प्रा० सपुत्र (सं० सुपुत्र) पु० सपूत (अच्छा लड़का, सुशील बेटा, २ बेटे के साथ, पुत्र सहित ।

प्रा० सपोला (सं० सर्पपोत, सर्प सपोलिया) = साँप, पोत=बच्चा) पु० साँप का बच्चा ।

सं० सप्त (सप्त=मिलना) गु० सात, ७।

सं० सप्तचत्वारिंशत् (सप्त + चत्वारिंशत्) गु० सात और चालीस, सैंतालिस ।

सं० सप्तमी (सप्त) स्त्री० सत्तमी, सातवीं तिथि ।

सं० सप्तदश (सप्त + दश) गु० सत्रह ।

सं० सप्तर्षि (सप्त + ऋषि) पु० १ कश्यप, २ अत्रि, ३ भरद्वाज, ४ विश्वामित्र, ५ गौतम, ६ जमदग्नि, ७ वशिष्ठ ।

सं० सप्तसागर पु० सातसमुद्र, १ क्षार अर्थात् लवण, २ इक्षु, ३ दधि, ४ क्षीर अर्थात् दूध, ५ मधु, ६ मदिरा, ७ घृत ।

सं० सप्ताह (सप्त=सात, अहन्=दिन) पु० सात दिन, हफ़ता,

अठवाड़ा ।

सं० सप्रीति (स + प्रीति) गु० प्यार से, प्यार सहित, प्यार के साथ ।

सं० सप्रेम (स + प्रेम) गु० प्यार, प्यार के साथ ।

सं० सफर पु० (मत्स्य, मक्खरी, मफरी स्त्री०) (पुँटी या शहरी मक्खली ।

सं० सफल (स + फल) गु० फल-सहित, सिद्ध, फल देनेवाला, कृतार्थ, सार्थक, कामयाब ।

प्रा० सब (सं० सर्व) गु० सर्वना० सारा, पूरा, समूचा, संपूर्ण, समस्त ।

सं० सबल (स=साथी, बल=जोर या सेना) गु० बलवान्, जोरावर, सामर्थी, प्रौढ़, २ सेना के साथ ।

प्रा० सबेरा (सं० सुबेला, सु=सुवरा) (अच्छा, बेला=समय) पु० भोर, बिहान, पोह, तड़का, प्रभात, प्रातःकाल ।

सं० सभय (स=साथ, भय=डर) गु० डरा हुआ, डर के साथ, सशङ्क, भीतियुक्त ।

सं० सभा (स=साथ, भा=चमकना) धि० स्त्री० समाज, मण्डली, २ राजदरबार, दरबार, ३ पञ्चायत, ४ मजलिस, जलसह ।

सं० सभापति (सभा + पति) पु० सभा का मालिक, मीरमजलिस,

प्रेसीडेंट, चेयरमैन ।

सं० सभासद् (सभा=समाज, सद्=बैठना) क० पु० सभा में बैठनेवाला, सभा का मेम्बर, दरबारी ।

सं० सभिक क० पु० मजलिसी, सभ्य, म्यम्बर ।

सं० सभ्य (सभा) गु० सभा के योग्य, चतुर, बुद्धिमान् ।

सं० सभात (स + भीत) र्मर्म० डरा हुआ, सभय ।

सं० सम् उपस० अच्छी तरह से, भले प्रकार से, सुन्दरता से, भली भाँति से, २ साथ से, ३ बहुत, ४ सब तरह से, ५ पास, साम्हने, ६ शुद्ध ।

सं० सम गु० बराबर, तुल्य, समान, सदृश, २ सब, पूरा, ३ साथ, ४ दो, चार, छः आदि की संख्या ।

सं० समक्ष अव्य० समीप, गु० सन्मुख, प्रत्यक्ष, नेत्रगोचर, साम्हने ।

सं० समग्र (सम्=सब तरह से, अग्र=आगे या सम=सब, ग्रह्=लेना) गु० सब, सारा, पूरा, सम्पूर्ण ।

सं० समज्या (सम्=सब, अज्ञ=जाना) धि० स्त्री० सभा, २ कीर्ति ।

प्रा० समभ स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, अकल, बूझ, २ सम्मति, राय, विचार, ध्यान ।

प्रा० समभना क्रि० स० जानना, बूझना, विचारना ।

सं० समता (सम) भा० स्त्री० बराबरी, तुल्यता, सादृश्य, मुताबिकत ।

सं० समदर्शी (सम्=बराबर, दर्शी=देखनेवाला, दृश=देखना) गु० दोनों ओर बराबर देखनेवाला, पक्षपात नहीं करनेवाला, पक्ष नहीं करनेवाला, अपक्षपाती, बेतन्त्र-स्व ।

प्रा० समधन (समधी) स्त्री० बेटे की या बेटि की सास ।

प्रा० समधियाना (समधी) पु० समधी का घराना ।

प्रा० समधी (सं० सम्बन्धी) पु० बेटे का या बेटि का ससुर, सगा, नातेदार ।

सं० समन्तात् अव्य० सब, सर्वत्र, चारों ओर ।

सं० समन्वित गु० संयुक्त, समेत, सहित, साथ ।

सं० समबल गु० बराबर बलवाला ।

सं० समय (सम्=साथ या सबतरफ से, इण्=जाना) पु० काल, वक्र, बेला, समां, २ अवसर, फुर्सत ।

सं० समर (सम्=साथ, ऋ=जाना) पु० लड़ाई, युद्ध, रण ।

सं० समर्थ (सम्=साथ, अर्थ=धन) गु० बलवान्, योग्य, लायक ।

सं० समर्थन (सम्=सब, अर्थन=माँगना, याचना) पु० प्रमाण

करना, ताईद करना ।

सं० समर्थना स्त्री० सिफारिश करना ।

सं० समर्थाधिकारी क० पु० हाकिम मजाज ।

प्रा० समर्पना (सं० समर्पण, सम् + ऋ + इ + अन, सम्=साथ, अर्पण=भेंट देना) क्रि० स० देवता को भेंट देना, सौंपना, अर्पण करना ।

सं० समवाय (सम् + अय + इण् =जाना) पु० मिलावट, मेल, इत्तिकाक, सम्बन्ध ।

सं० समस्त (सम्=साथ, अस्=फेंकना या होना) गु० सब, सारा, सम्पूर्ण, पूरा, तमाम ।

सं० समस्या (सम्, अस्=फेंकना पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे मिलना या संक्षेप होना अर्थ होता है, स्त्री० श्लोक या दोहे-चौपाई आदि संस्कृत और हिन्दी छन्दों का एक पद जो उस छन्द को पूरा करने के लिये दिया जाता है, तर्ज, तरह, इशारा ।

प्रा० समा (सं० समय) पु० समाँ (समय, वक्र, २ बहु-तात, ३ दशा, अवस्था, ४ एक ताल, एक लय, एक स्वर, ५ शोभा, समाबंधना, बोल० राग छाना ।

प्रा० समाई (समाना) भा० स्त्री० समाव, फैलाव, चौड़ाई, गुंजायश, २ सं० शाम्य, सन्तोष, धीरज ।

सं० समाकुल (सम्=सब प्रकार से, आकुल=परेशान) गु० व्याकुल, दुःखी, परेशान ।

सं० समागम (सम्=साथ + आगम =आना) पु० आगमन, आना, अवाई, २ मिलना, मुलाकात, मिलान, संयोग, मजमा, भीड़-भाड़, मेला ।

सं० समाचार (सम्=साथ, आ=चारों ओर से, चर=चलना) पु० सन्देश, खबर, वृत्तान्त, हाल ।

सं० समार्कषण (सम् + आर्कषण, कृष=खींचना) पु० सञ्चय, तहसील ।

सं० समाज (सम्=साथ, अज्=जाना) पु० सभा, साथ, समूह, झुण्ड ।

प्रा० समाजी (सं० समाजीय) पु० वजंत्री, तबलची जो नाच में तबला बजाता है, २ सभासद ।

सं० समाधान (सम्, आ, धा=रखना) पु० किसी शङ्का अर्थात् दलील का ठीक उत्तर, दो आदमी जो किसी बात पर बाद करते हों उनका निवेड़ा करना, शक रफ़ा करना, २ दमदिलासा, ढारस, इतमीनान, धीरज, शान्ति, परमे-

श्वर का ध्यान ।

सं० समाधि (सम्, आ, धा=रखना)
स्त्री० गहरा और मन से ध्यान,
योगाभ्यास, हृत्सदम करना, इ-
न्द्रियों को रोकना और मन को
परमेश्वर के ध्यान में लगाना, २
वह जगह जहाँ योगी संन्यासियों
को गाढ़ते हैं ।

सं० समान (स=बराबर, मा=ना-
पना) गु० बराबर, तुल्य, एकसा,
सदृश, एकही, २ (सम्=अच्छी
तरह से, अन्=जीना) पु० पाँच
प्राणों में एक प्राण ।

प्रा० समाना (सं०सम्मान, सम्=
अच्छी तरह से, मा=नापना) क्रि०
अ०अटना, अमाना, भरना, पूरना ।

सं० समास (सम्=साथ, आप्=
पाना या फैलना) गु० पूरा,
सम्पूर्ण, होचुका, सिद्ध, इति,
खत्म, तमाम, अन्त, आखिर ।

सं० समाप्ति स्त्री० अवसान, पूर्ति,
पूर्णता, खातमा ।

सं० समाप्य र्भ्य० खातमा किया,
पूर्ण किया, पूरा करके ।

सं० समारोह (सम् + आ + रुह=
चढ़ना) पु० भीड़भाड़, धूम धाम,
जमाव, मेला ।

सं० समास (सम्, अस्=फेंकना
पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे
इसका अर्थ मिलना या संक्षेप

होना होता है) पु० संक्षेप, अवि-
ग्रह, २ व्याकरण में दो तीन
आदि पदों का मेल, व्याकरण
में समास छः हैं (१ तत्पुरुष, २
कर्मधारय, ३ द्विगु, ४ बहुव्रीहि,
५ अव्ययीभाव, ६ द्वन्द्व) ।

सं० समाहित (सम् + आ + धा=
रखना) स्त्री० स्थिर, अचल,
मुतमैअन, समाधिस्थ ।

सं० समाह्वान भा० पु० बुलाना,
पुकारना ।

सं० समिध (सम्, इन्ध्=जलना
या चमकना) स्त्री० होम की
लकड़ी ।

सं० समीकरण (सम्=बराबर, कृ=
करना) पु० बराबर करना, बीज-
गणित में एकतरह का गणित जिस
में दो राशि बराबर होती हैं ।

सं० समीचीन (सम्=अच्छी भाँति
से, अच्=जाना) गु० सच, यथार्थ,
ठीक, उत्तम, योग्य, बहुत अच्छा ।

सं० समीप (सम्=साथ, आप्=
फैलना) गु० पास, नगीच, निकट ।

सं० समीर (सम्=अच्छी भाँति से,
ईर्=जाना) पु० हवा, पवन, वायु ।

सं० समीहा (सम् + ईह्=चेष्टा
करना) स्त्री० लज्जा, शर्म ।

सं० समुच्चय (सम्=साथ, उत्=
ऊपर, चि=इकट्ठा करना) पु०
इकट्ठा, ढेर, राशि, संग्रह, समूह

२ वाक्यों का मेल, अत्फ ।

सं० समुज्झित (सम् + उज्झ् = त्यागना) र्म्मन्त्यक्त, छोड़ा हुआ ।

सं० समुदाय (सम् + उत्, इण् = जाना) पु० ढेर, समूह, इकट्ठा, राशि, सब, गिरोह ।

सं० समुद्र (सम् = सबतरह से, उन्द् = भिगोना या सम् = सबतरहसे, उद् = ऊपर अथवा बहुत, दा = देना) पु० सागर, समंदर, जलनिधि (सागर शब्द को देखो) ।

प्रा० समूचा (सं० समुच्चय) गु० सारा, पूरा, सबका सब, तमाम ।

सं० समूह (सम्, ऊह् = नर्क करना पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ इकट्ठा होना होता है) पु० भीड़ भाड़, झुण्ड, थोक, समुदाय, ढेर, गिरोह ।

सं० समृद्ध (सम् = सब तरह से, ऋध् = बढ़ना) गु० भागवान्, संपदा वाला, धनवान्, समर्थ, दौलत-मन्द ।

सं० समृद्धि स्त्री० बड़ी उन्नति, बढ़ी बढ़ती, बढ़ी तरकी ।

प्रा० समै । (सं० समथ) पु० समथ, समै } वक्र, २ अवकाश, फुर्सत, समैया } अवसर, मौक़ा ।

प्रा० समेटना क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, २ सकोड़ना ।

सं० समेत (सम्, आ, इण् = जाना)

क्रि० वि० साथ, सहित, संयुक्त, मये ।

प्रा० समोना (सं० शमन, शम् = ठंडा करना) क्रि० स० गर्म पानी में ठंडा पानी डाल कर कुछ ठंडा करना ।

सं० सम्पत्ति (सम् = अच्छी तरह से, पद् = जाना) स्त्री० धन, दौलत, सुख, संपदा, सुभाग, बढ़ती, न्यामत ।

सं० सम्पद् (सम् = अच्छी तरह सम्पदा) से, पद् = जाना) स्त्री० संपत्ति, धन, दौलत, विभव, न्यामत, अशिया ।

सं० सम्पन्न (सम्, पद् = जाना) क० युक्त, शामिल, पूरा, परिपूर्ण, सम्पूर्ण, सिद्धि, भागवान्, संपदा-वाला ।

सं० सम्पर्क (सम् + पर्क = मेल) पु० संसर्ग, लगाव, सम्बन्ध ।

सं० सम्पात (सम्, पत् = गिरना) पु० गिरना, २ रेखागणित में झूती लकीर जो चक्र के घेरे को छूने पर बढ़ाने से उसको काटे नहीं, खत ममास ।

सं० सम्पाति (सम्, पत् = गिरना) पु० जटायु गीध का भाई जिसकी कथा रामायण में है ।

सं० सम्पादक (सम् = अच्छी तरह से, पद् = चलना अर्थात् किसी काम को चलानेवाला या पूरा करने

- वाला) क० पु० पूरा करनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला, पानेवाला, कार्यवाहक, निरूपक, समापक, कहनेवाला, बयान करनेवाला ।
- सं० सम्पादन भा० पु० निरूपण, कथन, समाप्ति करना, निष्पादन ।
- सं० सम्पुट (सम्=साथ, पुट्=मिलना) पु० ढब्बा, २ मिलना ।
- सं० सम्पुटक क० पु० पिटारा, ढब्बा ।
- सं० सम्पूर्ण (सम्=सब तरह से, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा, परिपूर्ण, सब, सारा, समाप्त ।
- सं० सम्प्रति क्रि० वि० इदानीं, अब, अभी ।
- सं० सम्प्रदान (सम्=अच्छी तरह से, प्र=बहुत, दा=देना) पु० दान देना, व्याकरण में चौथा कारक, मफऊललहू ।
- सं० सम्प्रदाय (सम्, प्र+दा=देना) स्त्री० परम्परा का धर्म, कुल धर्म, परिपाटी, रसूपातकदीम ।
- सं० सम्प्रेषित (सम्+प्र+इष्=जाना) र्म० पठया गया, खारिज हुआ, भेजा गया ।
- सं० सम्बन्ध (सम्=साथ, बन्ध=बौधना) पु० मेल, लगाव, योग, नाता, रिश्ता, २ व्याकरण में छठा कारक या षष्ठी विभक्ति ।
- सं० सम्बन्धी (सम्बन्ध+इन्) क० पु० सम्बन्ध रखनेवाला, स-
- मधी, नातेदार, रिश्तेदार, मुजाफ ।
- सं० सम्बल (सम्ब=जाना या सम्=से, बल्=जीना) पु० रस्ता खर्च, २ तोशाराह, मार्गव्यय, ३ पानी ।
- सं० सम्बलित (सम्+बल्=जाना) क० समेत, सहित, मये ।
- सं० सम्बुद्ध (सम्+बुध्=सम-झाना) र्म० समझाया गया ।
- सं० सम्बोधक (सम्+बुध्=जतलाना) क० पु० जतानेवाला, मुनादी ।
- सं० सम्बोधन (सम्, बोधन=जतलाना, बुध्=जानना) पु० जतलाना, चिताना, साम्हने करना, पुकारना, व्याकरण में आठवां कारक या प्रथमा विभक्ति, हर्फ-निदा ।
- सं० सम्बोधित र्म० पुकारा गया, जताया गया, मुनादी ।
- सं० सम्भव (सम्, भू=होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, २ कारण, ३ मिलना, गु० होनहार, होने योग्य, २ उचित, योग्य ।
- सं० सम्भावना (सम्, भू=होना) स्त्री० संभव होना, इच्छा, चाह, ३ संदेह, ४ दुविधा, वह फेल जिससे वर्तमान और भविष्यत्काल जाना जाय ।
- सं० सम्भाषण (सम्=अच्छी तरह से, भाष्=कहना) पु० बोलचाल,

बात चीत ।
 सं० सम्भोग (सम् + भुज्=जाना)
 पु० हर्ष, सुख, सुरति, मैथुन,
 शृङ्गारभेद ।
 सं० सम्भ्रम (सम्=साथ, भ्रम्=
 घूमना) पु० घबराहट, हड़बड़ी,
 वेग, उतावली, घूमना, ढर, २
 आदर, सन्मान, खातिरदारी ।
 सं० सम्मत (सम्=सब तरह से,
 मन्=समझाना) र्भ्य० अनुमत,
 स्वीकृत, राय के मुवाफिक ।
 सं० सम्मति (सम्=अच्छी भाँति
 से, मन्=जानना) स्त्री० सलाह,
 विचार, राय, २ चाह, इच्छा ।
 सं० सम्मतिपत्र पु० राजीनामा,
 सुलहनामा ।
 सं० सम्मार्जनी (सम्, मृज्=साफ
 करना) ए० स्त्री० बढनी, भाड़,
 कूची, बुर्स, कुचरा ।
 सं० सम्यक् (सम्=अच्छी भाँति से,
 अञ्च्=जाना) क्रि० वि० अच्छी
 भाँति से, भले प्रकार से, ठीक,
 योग्यता से, २ सब तरह से, सब
 भाँति से, लियाकत के साथ ।
 सं० संरम्भ प्रारम्भ, क्रोध, संक्रम ।
 सं० सम्राज् (राज्=शोभादेना)
 सम्राट् पु० सब भूमि का
 मालिक, राजसूययज्ञकर्ता, सर्व-
 भूमीश्वर, चक्रवर्तिराजा ।

प्रा० सयाना } (सं० सज्ञान)
 सियाना } गु० समझवाना,
 स्याना } चतुर, प्रवीण, नि-
 पुण, बुद्धिमान्, पक्का ।
 सं० सर (सृ=जाना) पु० सरोवर,
 तालाव, भील, २ तीर, बाण, ३
 पानी, जल ।
 प्रा० सरकंडा (सं० शरकाण्ड)
 पु० नरकट, नरसल ।
 प्रा० सरकना (सं० सृ=जाना)
 क्रि० अ० हटना, टलना, चलना,
 भागना, खिसकना ।
 सं० सरघा (सर=रस, हन्=जाना,
 मारना) स्त्री० मधुमक्षिका, शहद
 की मक्खी ।
 सं० सरट (सृ=जाना) पु० गिर-
 गिट ।
 प्रा० सरदा पु० खर्बूजा या दशा-
 कुल ।
 प्रा० सरन (सं० शरण) पु०
 सरना } आसरे की जगह,
 बचाव की जगह, बचाव, पनाह ।
 प्रा० सरना क्रि० अ० बनना,
 चलना, निकलना, पूरा होना,
 २ सड़जाना ।
 प्रा० सरपट स्त्री० बगछूट दौड़,
 घोड़े की बड़ी दौड़ ।
 प्रा० सरपटफेंना बोल० घोड़े
 को बगछूट दौड़ा^{रु}ना ।

प्रा० सरवरि { स्त्री० समानता,
सरवरि } बराबरी ।

सं० सरयु { (सृ=जाना) स्त्री०
सरयू } एक नदी जो अयोध्या
के पास बहती है और उसको
याघरा, धर्घरा, देविका और देवा
भी कहते हैं ।

सं० सरल (सृ=जाना) गु० सीधा,
सोफा, २ सच्चा, ईमानदार, ध-
र्मात्मा, ३ भोला जो बल कपट
न जानता हो, निष्कपट, सीधा,
सादा, पु० एक पेड़ का नाम
जिस को सरो कहते हैं ।

प्रा० सरवर (सं० सरोवर) पु०
ताल, तलाव, झील, पोखरा,
तालाब ।

सं० सरस् (सृ=जाना) पु० तलाव,
सरोवर, २ पानी, जल ।

प्रा० सरस { (सं० श्रेयस्) गु०
सरसा } श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत
अच्छा, २ अधिक, बहुत ।

सं० सरस (स=साथ, रस=स्वाद
या पानी) गु० रसीला, रसवाला,
पु० सरोवर ।

प्रा० सरसाई (सरस) भा० स्त्री०
अधिकाई, बहुतायत, कसरत, २
उत्तमता ।

सं० सरसिज (श्वरसि=तलाव में,
जन्=पैदा होना) पु० कमल,
कैवल ।

सं० सरसीरुह (सरसी=तलाव,
रुह=पैदा होना) पु० कमल,
पद्म, कैवल ।

प्रा० सरसों (सं० सर्षप, सृ=जाना)
पु० राई के ऐसी चीज ।

सं० सरस्वती (सरस्=पानी, वती
=वाली अथवा स=साथ, रस=
स्वाद या पानी, वती=वाली)
स्त्री० एक नदी का नाम, २ वाणी,
बोली, राग और विद्या गुणआदि
की देवी, वागीश्वरी, शारदा,
भारती, वाग्देवता ।

प्रा० सराप (सं० शाप) पु० शाप,
फिटकार, दुराशिष, बददुआ ।

प्रा० सरापना (सं० शापन) क्रि०
स० सराप देना, कोसना, बद-
दुआ देना ।

प्रा० सरावक (सं० श्रावक) पु०
जैनी, जैन धर्म को माननेवाला ।

प्रा० सराह स्त्री० बड़ाई, तारीफ,
स्तुति, प्रशंसा ।

प्रा० सराहना क्रि० स० बड़ाई क-
रना, स्तुति करना, तारीफ करना ।

सं० सरित् { (सृ=जाना, बहना)
सरिता } स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० सरित्पति पु० समुद्र या सागर ।

सं० सरित्सुत पु० गङ्गापुत्र, भीष्म-
पितामह, २ घाटिया ।

प्रा० सरिस { (सं० सदृश या सदृक्ष)
सरीखा } गु० बराबर, समान ।

सं० सरीसृप पु० सर्प, बिच्छू ।

सं० सरुज (स=सहित, रुज्=रोग)

गु० रोगी, बीमार, मरीज ।

सं० सरूप (स=बराबर, रूप=डौल)

गु० बराबर, समान ।

प्रा० सरूप स्वरूप शब्द को देखो ।

प्रा० सरेग्वा (सं० श्लेषा) स्त्री०
नवाँ नक्षत्र ।

फ्रा० सरेश (सरेस) पु० एक
लसलसी चीज जिससे लकड़ी
आदि की चीजें जोड़ने हैं, सींग
और खुर के छीलन से बनता है ।

सं० सरोज (सरम्=तालाब, जन्=
पैदा होना) पु० कमल, कैवल, पद्म ।

सं० सरोजभव (सरोज=कमल,
भू=जन्मना) पु० ब्रह्मा ।

प्रा० सरोता ग० पु० सुपारी का-
टने का औजार ।

सं० सरोरुह (सरम्=तालाब, रुह=
पैदा होना) पु० कमल, कैवल, पद्म ।

सं० सरोवर (सरम्=तालाब, वर
=बड़ा) पु० बड़ा तालाब, सरवर,
भील ।

सं० सरोष (स + रोष) गु० क्रोधित,
कोपित, गुस्से में ।

प्रा० सरौकरे क्रि० सं० दण्ड करना,
कूदना, कला करना, उरभना,
सुरभना ।

सं० सर्ग (सृज्=पैदा होना या
छोड़ना) पु० उत्पत्ति, सृष्टि, २

छोड़ना, ३ निश्चय, ४ अध्याय,
बाव, च्यप्टर, स्वभाव ।

प्रा० सर्गुण (सं० सगुण अथवा
सर्वगुण) गु० सब गुणों समेत,
२ सगुण ब्रह्म ।

सं० सर्जक (सृज् + अक, सृज्=
पैदा करना, त्यागना) क० त्यागी,
उत्पत्तिकारक, २ शालवृक्ष ।

सं० सर्प (सृप्=जाना) पु० साँप,
नाग ।

सं० सर्पराज (मर्प + राजा) पु०
साँपों का राजा, शेषजी, २ वासुकी ।

सं० सर्पिष् (सृप् + इष्) पु० घी,
घृत, रोगानजर्द ।

सं० सर्व (सर्व् या सृ=जाना) गु०
सर्व, सारा, सकल, समस्त, पु०
शिव, विष्णु ।

सं० सर्वग (सर्व=सब जगह, गम्=
जाना) गु० सब जगह जानेवाला,
सब में जानेवाला, सब में फैलने
वाला, सर्वव्यापी, पु० शिव, २
परमेश्वर, ३ पानी, ४ हवा, ५
आत्मा, जीव ।

सं० सर्वज्ञ (सर्व=सब, ज्ञा=जानना)
क० सब जाननेवाला, पु० परमे-
श्वर, २ शिव ।

सं० सर्वतोभद्र पु० यज्ञ में प्रधान
देवताओं का आसन, सिंहासन, २
विष्णु का स्थ, मण्डलविशेष ।

सं० सर्वत्र (सर्व=सब, त्र=जगह

अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सब जगह, सब ठौर, सब स्थान में ।
 सं० सर्वथा (सर्व=सब, था=प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सबप्रकार से, सब भाँति से, सब तरह से, सब रीति से, २ निश्चय करके, निस्सन्देह, विनच्छक, सचमुच, अवश्य ।
 सं० सर्वदमन (सर्व=सब, दम्=दवाना) पु० दुष्यन्त का पुत्र, भरतनृप ।
 सं० सर्वदा (सर्व=सब, दा=समय अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सदा, सब समय में, नित्य, दिन दिन ।
 सं० सर्वनाम (सर्व + नाम) पु० वह शब्द जो नाम के बदले में बोला जाय, जैसे मैं, तू, वह, जमीर ।
 सं० सर्वभूत पु० सबप्राणी, सब मनुष्य, सर्वजन ।
 सं० सर्वमङ्गला (स्त्री०) पार्वती ।
 सं० सर्वरस पु० राधा, धूप, गन्ना ।
 प्रा० सर्वस { (सं० सर्वस्व, सर्ववसु, सर्वसु) सर्व=सब, स्व वा वसु =धन) पु० सब धन, सब सम्पदा, सब चीज, सब कुद, कुल यश ।
 सं० सर्वेश { (सर्व=सब, ईश या सर्वेश्वर) ईश्वर=मालिक) पु० सबका मालिक, परमेश्वर, विष्णु, शिव, सबका ईश्वर ।
 सं० सर्वोपरि (सर्व + उपरि) गु० सब से बड़ा ।

प्रा० ससुराहट स्त्री० खुजलाहट ।
 सं० सलज्ज (स=साथ, लज्जा=लाज) गु० लजालू, शर्मीला, लज्जावान् ।
 सं० सलभ पु० पतंगा, टिड्डी, टीड्डी ।
 प्रा० सलाई (सं० शलाका) स्त्री० पतले तारका टुकड़ा जिससे आँख में सुरमा डालते हैं और सलाई उस लोहे के पतले तार के टुकड़े को भी कहते हैं जिसको आग में खूब लाल करके अपने वैरी की आँख में डालते हैं जिससे आँख फूटकर अन्धा होजाता है, २ सुरमई पैसिल ।
 सं० सलिल (सल्=जाना) पु० पानी, जल, आप, आब, २ आसान, सहल ।
 प्रा० सलूना { (सं० सलवण, सलोनो) =साथ, लवण=निमक) गु० नमकीन, नोन सहित, २ सुस्वाद, मजेदार, रोचक, स्वादिष्ट, ३ सुन्दर, साँवला-सुहावना, खूबसूरत ।
 प्रा० सलूनो (सं० श्रावणी) स्त्री० राखीपूनौ, सावनकी पूनौ ।
 प्रा० सल्लू पु० जूता सीने का चाम ।
 सं० सवर्ण गु० समानवर्ण, एक जाति वाले, सजातीय, हमजिन्स ।
 प्रा० सवा (सं० सपाद, स=साथ, पाद=चौथा हिस्सा) गु० एक

और चौथाई, ११ ।

प्रा० सवाई (सवा) पु० जैपुर के राजाओं की पदवी, गु० सवा, एक और चौथाई ।

प्रा० सवांग { (सं० स्वाङ्ग, स्व=स्वाङ्ग) अपना, अङ्ग=शरीर, अर्थात् अपने शरीर को और तरह से बनाना) पु० भँडैती, नकल बनाना, वेषबदलना, २ खेल, तमाशा ।

प्रा० सवांगलाना { बोल० नकल स्वाङ्गलाना } बनाना, वेष बदलना ।

प्रा० सवाद (सं० स्वाद) पु० रस, मजा, लज्जत, २ खुशी ।

प्रा० सवाया { (सवा) गु० एक सवैया } और चौथाई, सवा, सवाका पहाड़ा, सवैया ।

सं० सविता पु० सूर्य, बारह की संख्या ।

सं० सव्य (सू=पैदा होना) गु० बायाँ, दहना, प्रतिकूल, विष्णु ।

सं० सव्यसाचिन् पु० अर्जुन, पाण्डुसुत ।

सं० सशङ्क (स=साथ, शङ्का=डर या सन्देह) गु० डरा हुआ, सभय, २ जिसमें सन्देह हो ।

प्रा० सस्ता गु० सौधा, मन्दा, अर्जा ।

प्रा० सस्ताई भा० स्त्री० सौधाई, अर्जानी ।

प्रा० ससा (सं० शश) पु० खगोल ।

प्रा० ससुर (सं० श्वशुर) पु० पति का या स्त्री का बाप ।

सं० सह (सह=सहना) अव्य० साथ, सहित, संग, समेत, २ बराबर, एकही, वही ।

सं० सहकार पु० सुगन्धित आम, सहायता ।

सं० सहगामिनी (सह=साथ, गामिनी=जानेवाली, गम्=जाना) स्त्री० सती, अपने पति के साथ जलनेवाली स्त्री ।

सं० सहचर (सह=साथ, चर्=चलना) पु० साथी, हमराही ।

सं० सहचरी (सह=साथ, चरी=चलनेवाली, चर्=चलना) स्त्री० साथ रहनेवाली, साथिनी, संगिनी, सहेली, २ स्त्री, पत्नी, अपनी लुगाई ।

सं० सहज (सह=साथ, जन्=पैदा होना) गु० जो साथही पैदा हो, स्वाभाविक, जो स्वभावही से पैदा हो, २ सुगम, आसान, सहल ।

सं० सहदेव (सह=साथ, दिव=खेलना या चमकना) पु० पाँच पाण्डवों में सबसे छोटा जो पाण्डु राजा की दूसरी रानी माद्री का बेटा था ।

सं० सहन (सह=सहना) पु० सहना, बर्दाश्त, सहिष्णुता, गम-ह्वारी, क्षमा, गु० सहनेवाला,

सन्तोषी, सहनहार ।

प्रा० सहना (सं० सहन) क्रि०
स० भोगना, उठाना, पाना, भुग-
तना, सन्तोष करना ।

प्रा० सहनाई (फा० सहनाई)
स्त्री० बाँसुरी के ऐसा एक बाजा
जिस को सुर्नाई भी कहते हैं ।

प्रा० सहमना (फा० सहिम से
बना है जिसका अर्थ डर है) क्रि०
अ० डरना, घबराना ।

सं० सहमरण (सह=साथ, मरण=
मरना) पु० पति की लाश के
साथ जलना, सती होना ।

सं० सहयोगी गु० साथी, संगती,
हमसर ।

प्रा० सहराना } क्रि० अ० सह-
सहिराना } लाना, चुलचु-
लाना, धीरे २ मलना ।

सं० सहवास (सह=साथ, वस्=
रहना) पु० पड़ोस, एकत्रवास ।

सं० सहवासी क० पु० पड़ोसी,
हमसाया ।

सं० सहसा (सह=साथ, सो=नाश
करना या सह=सहना) क्रि० वि०
भटपट, विना विचारे, एकाएकी,
उतावली से, दफ़ातन ।

सं० सहस्र } गु० एक हजार, दश
प्रा० सहस्र } सौ, १००० ।

सं० सहस्रनयन } (सहस्र=हजार,
सहस्रनेत्र } नयन वा नेत्र=

आँख) पु० देवताओं का राजा
इन्द्र जिसके हजार आँखें हैं ।

सं० सहस्रपाद पु० विष्णु, सूर्य ।

सं० सहस्रबाहु } (सहस्र=हजार,

प्रा० सहस्रबाहु } बाहु=भुजा) पु०

एक राजा का नाम जिसके हजार
हाथ थे जिसको परशुरामजीने
मारा ।

प्रा० सहसाखी (सं० सहस्राक्ष)

पु० इन्द्र, देवताओं का राजा,

२ सहसाक्षी, गवाहों के साथ,

मय गवाह ।

प्रा० सहसानन (सं० सहस्त्रानन,

सहस्र=हजार, आनन=मुँह) पु०

शेषनाग जिसके हजार मुँह हैं ।

सं० सहस्राक्ष (सहस्र=हजार, अक्ष

=आँख) पु० इन्द्र, २ विष्णु,

ईश्वर, गु० हजार आँखवाला ।

प्रा० सहाई (सं० सहाय) स्त्री० सहा-

यता, मदद, गु० मदद करनेवाला ।

सं० सहानुभूति स्त्री० अनुवेदना, हम-

दर्दी, दुःख सुख का साथी होना ।

सं० सहाय (सह=साथ, इण्=

जाना) पु० मदद, सहारा, सहाई,

अनुकूल, क० पु० सहायक, मद-

दगार, मदद करनेवाला ।

सं० सहायक (सह=साथ, इण्=

जाना) क० पु० मदददेनेवाला,

मददगार, रक्षक, उपकार करने

वाला ।

सं० सहायता (सह=साथ, इण्=जाना) स्त्री० सहाय, मदद, सहारा ।

प्रा० सहारा (सं० सहायता) पु० मदद, सहायता, आसरा ।

प्रा० सहित (सह=साथ, इण्=जाना अथवा सह=सहना) नित्य सं० साथ, संग, समेत, संयुक्त, मेल ।

सं० सहिदानी स्त्री० निशानी, चिह्न ।

सं० सहिष्णु (सह+इष्णु, सह=सहना) क० पु० सहनशील, क्षमावान्, बरदास्ती ।

प्रा० सही (अरबी सहीह) क्रि० वि० सच, बहुत अच्छा, हाँ, निश्चय ।

प्रा० सहेजना क्रि० सं० सौंप देना, सिपुर्दकरना, जाँचना, सैतना, इकट्ठा करना, बटोरना ।

प्रा० सहेली (स=साथ, आली=सखी) स्त्री० साथ रहनेवाली, सखी, सजनी ।

सं० सहोदर (सह=एकही, उदर=पेट, जो एकही पेटसे पैदा हो) पु० एकही माँ से पैदा हुआ, भाई, सगा भाई ।

सं० सद्य (सह=सहना) र्भ्य० सहने योग्य, जो सहाजाय ।

प्रा० सा (सं० समान या सदृश) बराबरीको जतलानेवाला, अव्यय, (जैसे तुमसा) २ कुझ, कुबेक, थोड़ा, (जैसे कालासा=कुबेक काला) ३ कभी २ इसका अर्थ

कुछ नहीं दिखाई देता है पर कहीं कहीं जिस शब्द के साथ लगाया जाता है उसके अर्थ में अधिकता जतलाता है (जैसे 'बहुतसा') ।

प्रा० साँई (सं० स्वामी) पु० मालिक, नाथ, स्वामी, २ ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु, ३ फकीर ।

प्रा० साँई पु० हवा के धीरे धीरे चलने का शब्द ।

प्रा० सांकर (सं० शृङ्खला) स्त्री० सांकरी (संकली, साँकल, २ कर्पनी, ३ (सं० सङ्कीर्ण) सँकड़ी गली, नाका, घाटा, ४ कठिनता, दुःख, भ्रंभट, ५ गु० संकड़ा, संकेत, तंग ।

प्रा० साकल (सं० शृङ्खला) स्त्री० सिकली, साँकली ।

प्रा० सांखू पु० पुल, सेत, २ एक तरह की लकड़ी ।

प्रा० सांग (सं० शंकु या शक्ति) सांगी (स्त्री० बर्डी, सेल ।

प्रा० सांग सवांग शब्द को देखो ।

प्रा० सांच (सं० सत्य) स्त्री० सचाई, सचावट, सत्य, २ गु० ठीक, सही, सच ।

प्रा० सांचा पु० मिट्टी की एक चीज जिसमें कोई चीज ढाली जाती है या उसका रूप बनाया जाता है ।

प्रा० सांभ (सं० सन्ध्या) स्त्री० शाम, सन्ध्या, सायंकाल ।

प्रा० सांभा { (सं० सन्धा) स्त्री०
सांभी { गोबर की मूरतें जिन
को लड़के लड़कियां आश्विन के
कृष्णपक्ष में भीतों पर बनाते हैं ।

प्रा० सांड { (सं० षण्ड) पु० बैल ।
सांड {

प्रा० सांडनी स्त्री० ऊंटनी, सांडनी-
सवार, ऊंट पर चढ़नेवाला ।

प्रा० सांडा पु० एक जानवर जो छि-
पकली सा होता है और कहते हैं कि
उसके तेल में बहुत जोर होता है ।

प्रा० सांप (सं० सर्प) पु० सर्प,
नाग, भुजंग ।

प्रा० सांभर (सं० शाकम्भरी) पु०
एक शहर जो जैपुर और जोधपुर
के राज में है और वहां एक भील
या सर है जिसमें बहुत अच्छा
निमक पैदा होता है और उसके
पास एक पहाड़ पर शाकम्भरी
देवी का मन्दिर है ।

प्रा० सांवला (सं० श्यामल) गु०
कुछेक काला, श्यामवर्ण ।

प्रा० सांस (सं० श्वास) पु० स्त्री०
दम, प्राण ।

प्रा० सांस उलटी लेना बोल० हां-
पना, दम नाक में आना (जैसे
मरने के समय में होता है) ।

प्रा० सांसना क्रि० स० डाटना, धम-
काना, ताड़ना ।

प्रा० सांस भरना बोल० आह भर-

ना, लम्बी सांस लेना, ठंडी सांस
लेना, पछतावा करना ।

प्रा० सांसरुकना बोल० दम बन्द
होना, गला घुटना ।

प्रा० सांसरोकना बोल० गला घो-
टना, दम बन्द करना, गला
दाबना ।

प्रा० सांसा (सं० संशय) पु० सन्देह,
शङ्का, डर, चिन्ता ।

सं० सांसारिक (संसार) गु०
संसार का, संसारी, दुनियाबी ।

सं० साकं {
साकम् { अव्य० सह, साथ ।

प्रा० साकचनिक (सं० शाकवणिक)
पु० साग बेचनेवाला, कुँजड़ा ।

प्रा० साका (सं० शाक) पु० संवत् ।

प्रा० साकाकरना बोल० नया संवत्
चलाना, बहादुरी के काम करके
नामी होना ।

प्रा० साकेयन्ध बोल० वह राजा जो
नया संवत् जारी करता है ।

सं० साकार (स + आकार) गु०
आकार सहित, मूर्तिमान्, जिसकी
मूरत हो ।

सं० साक्षात् (स=साथ या साम्ने,
अक्ष=आँख) क्रि० वि० साम्ने,
आँखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट,
प्रसिद्ध, २ गु० आप, खुद, ३
बराबर, समान ।

सं० साक्षी (स=साथ या साम्ने,

अस्त्रि=आँख) गु० गवाह, जिसने अपनी आँखों से देखा हो, साखी, शाहिद, २ स्त्री० गवाही, साख, शाहिदी ।

प्रा० साख (सं० साक्ष्य, साक्षी) स्त्री० गवाही, शाहिदी, २ यश, धाक, कीर्ति, नाम, भरम, ३ (सं० शाखा) श्वेतु, फल्ल, अनाज काटने का समय ।

प्रा० साखी (सं० साक्षी) स्त्री० गवाही, साख, २ गु० गवाह, शाहिद ।

प्रा० साग (सं० शाक) पु० हरी तरकारी, भाजी ।

प्रा० सागपान बोल० तरकारी ।

सं० सागर (सगर=एक राजा का नाम) पु० समुद्र, समन्दर, हिन्दू सात समुद्र मानते हैं (१ निमक का, २ दूध का, ३ घी का, ४ दही का, ५ शराब का, ६ ऊख के रस का, ७ शहद का) ।

प्रा० साग पु० सागूदाना जो बहुत हलका होता है इस लिये बीमार को बहुत बार दूध में या पानी में पकाकर खिलाते हैं ।

सं० सागून पु० एक तरह की लकड़ी ।

सं० सांख्य (संख्या, सम्=अच्छी तरह से, ख्या=प्रसिद्ध होना) गु० संख्या का, पु० कपिलमुनि का बनाया हुआ एक दर्शनशास्त्र, तत्त्वपरामर्श ।

प्रा० साज (सं० सज्ज, वस्त्र=जाना) पु० समान, तैयारी, सरंजाम ।

प्रा० साजन (सं० सज्जन) पु० सजन, प्यारा, पति ।

प्रा० साजना (सं० सज्जन, वस्त्र=जाना) क्रि० सं० तैयार करना, सजाना, सँवारना, पहनाना ।

प्रा० साभा (सं० साहाय्य, सहाय अथवा साध, सह=सहना) पु० हिस्सा, शराकत, शामिलता ।

प्रा० साभी (साभा) पु० साथी, हिस्सेदार, शरीक, संगी ।

सं० साटोप गु० विकट घमण्डी, सगर्व ।

प्रा० साठ (सं० षष्टि) गु० छः गुना दश, ६० ।

प्रा० साठी (साठ) पु० एक तरह के चावल जो बरसात के दिनों में पैदा होते हैं और बोने के ६० दिन पीछे पक जाते हैं इस लिये साठी कहलाते हैं ।

प्रा० साड़ी (सं० साटी) स्त्री० लुगाइयों के ओढ़ने का कपड़ा ।

प्रा० सादू (सं० श्याली वोड़ा, श्याली=अपनी लुगाई की बहन, वोड़ा=पति, वह=लेजाना) पु० साली का पति, हमजुल्फ ।

प्रा० सादे (सं० सार्द्ध, स=साथ, अर्ध=आधा) गु० आधा के साथ, (जैसे सादे तीन=तीन और आधा)।

प्रा० सात (सं० सप्त) गु० चार
और तीन, ७—सात पाँच करना,
बोल० दुविधा में होना,—सात
समुन्दर=एक खेल का नाम ।

प्रा० सात्त्विक (सं० सत्त्व=सतो-
गुण) गु० सतोगुणी, साधु, सीधा,
सच्चा, सरल ।

प्रा० साथ (सं० सार्थ अथवा
सह) सङ्ग, सहित, समेत, २ पु०
संग, संगति, सोहबत ।

प्रा० साथ देना बोल० मिलना,
मेल रखना, शामिल होना ।

प्रा० साथवाला गु० साथी, सङ्गी ।

प्रा० साथरी स्त्री० पत्नीका बिछौना,
चटाई, आसनी ।

प्रा० साथिन स्त्री० संगिनी, स-
हेली, सखी ।

प्रा० साथी (साथ) गु० सङ्गी,
मेली, मिलापी, मित्र, दोस्त ।

प्रा० साद ((सं० श्रद्धा) स्त्री० इच्छा,
साध) चाह, अभिलाषा ।

सं० सादर (स=साथ, आदर=
सन्मान) क्रि० वि० आदर से,
सन्मान से, खातिर से ।

सं० सादृश्य (सदृश) भा० पु०
बराबरी, समानता, तुल्यता ।

प्रा० साध (सं० साधु) पु० सन्त,
सत्यपुरुष, सज्जन, भला आदमी,
२ बैरागी ।

सं० साधक (साध + प्रक, साध=

सिद्धकरना, पूरा करना) क० पु०
साधनेवाला, अभ्यास करनेवाला,
मन्त्र साधनेवाला, तपस्वी, २ मद-
दगार ।

सं० साधन (साध=सिद्ध करना,
पूरा करना) भा० पु० उपाय, यत्न,
काम सिद्ध करने की तदवीर,
२ अभ्यास, ३ व्याकरण में क-
रणकारक ।

प्रा० साधना (सं० साधन) क्रि०
स० सिद्ध करना, पूरा करना, पक्का
ठहराना, साबित करना, बनाना,
ठीक ठाक करना, २ अभ्यास
करना, स्त्रभाव ढालना, बान
ढालना, सीखना ।

सं० साधनीय (साध + अन्तीय)
धर्म० सिद्ध करने योग्य, पूरा करने
लायक, निष्पाद्य ।

सं० साधारण (स=साथ, धारण=
रखना) गु० सामान्य, सहज, २
बराबर, समान, आम ।

सं० साधारणधर्म पु० “ अहिंसा
सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
दमक्षमाऽर्जवं दानं धर्मं साधारणं
विदुः १ ” अहिंसा, २ सत्य, ३
अस्तेय, चोरी न करना, ४ शौच,
पवित्ररहना, ५ इन्द्रियों को रो-
कना, ६ दम, मनको रोकना, ७
क्षमा, ८ आर्जव, कोमलता, ९
दान ये साधारण धर्म हैं ।

सं० साधित र्म० निष्पादित, सिद्ध किया गया, पूरा किया गया ।

सं० साधु (साध्=सिद्ध करना, पूरा करना) गु० जो शास्त्रविहित कर्मोंको करता है या जो पर के कार्यको सिद्ध करता है वह साधु है, सन्त, उत्तमजन, सत्यपुरुष, सज्जन, सीधा, सच्चा, २ पु० साध, वैरागी, भला आदमी ।

सं० साध्य (साध्=पूरा करना) र्म० पूरा होने योग्य, सिद्ध होने के योग्य, जो होसके, २ सुगम, सहज, आसान, ३ चंगा होने के योग्य, जिसका इलाज होसके, ४ पु० जो बात सिद्ध की जाय, जो बात पक्की ठहराई जाय ।

प्रा० सान(सं० शाण, शान् या शो= तीखा करना) स्त्री० सिल्ली, पथरी, लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने का पत्थर, एक चक्राकार यन्त्र ।

सं० सानन्द (स + आनन्द) गु० आनन्द के साथ, हर्षित, खुश ।

सं० सानुकूल (स + अनुकूल) गु० कृपालु, दयालु, सहायक, मिह्रबान ।

प्रा० साक्षा (सं० सन्धान) क्रि० सं० मिलाना, गूँदना, २ (सं० शानन, शान्=तीखा करना) चोखा करना, तीखा करना, तेज करना, सान लगाना ।

प्रा० साबर } (सं० शम्बर या शा-
सांबर } म्बर, शम्बू=जाना)

पु० एक तरह का बारहसींगा, २ बारहसींगा का चमड़ा ।

सं० साम (सो=नाश करना पापों का) पु० तीसरा वेद, जिसकी ऋचा गाई जाती हैं ।

सं० सामग्री(सामग्र=सब)स्त्री० सामा, सामान, असबाब, चीज, वस्तु ।

सं० सामन्त पु० वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा, मल्ल, २ उपराज, जमींदार, एक लाख रुपये साल की आमदनी जिसको है ।

सं० सामयिक गु० समय पर, कालोचित, अवसर की, बेरापर की ।

सं० सामर्थ्य (समर्थ) स्त्री० बल, प्रा० सामर्थ शक्ति, पराक्रम, योग्यता ।

प्रा० सामर्थी (सं० समर्थ) क० बलवान्, पराक्रमी, प्रतापी, योग्य ।

प्रा० सामा (सं० सामग्री) पु० स्त्री० नाना प्रकार के भोजन, सामान, सामग्री ।

सं० सामाजिक पु० सभासद, सभ्य । प्रा० सामान (सामान) पु० असबाब, अटाला, सामा, सामग्री ।

सं० सामान्य (समान) गु० मध्यम, साधारण, चलनसार, चलनीक, प्रचलित, आम ।

सं० सामान्यतः गु० साधारण से,

आमतौरपर ।

सं० सामान्या (सामान्य) स्त्री०
साधारण नायिका, धन के लालच
से पराये आदमी के पास जाने
वाली, वेश्या, व्यभिचारिणी,
सामान्या, नायिका तीन तरह की
हैं, (१ अन्यसंभोगदुःखिता, २
वक्रोक्तिगर्विता, ३ मानवती) ।

सं० सामीप्य (समीप) भा० पु०
समीपता, समीपी, नजदीकी,
निकटता, पड़ोस ।

सं० सामुद्रिक (स=साथ, मुद्रा=
चिह्न) भा० पु० एक विद्या जिससे
स्त्री पुरुष के हाथ पैर के चिह्नों से
उनके भले बुरे भाग को बतलाते हैं ।

सं० साम्राय गुरुपरम्परागत सदुप-
देश, सलाह ।

प्रा० साम्ना (सं० सम्मुख)
साम्हना } पु० सन्मुख, आगा,
अगवाड़ा ।

सं० साम्प्रत अव्य० अधुना, इदानीं,
योग्य, उचित, अब ।

प्रा० साम्हनाकरना बोल० लड़ाई
करना, लड़ना, चढ़ाई करना,
मुकाबिला करना ।

सं० सायङ्काल (सायम्=सांझ,
सो=नाश करना और काल=
समय) पु० सांझ, सन्ध्या का
समय, दिन का अन्त ।

सं० सायुज्य (स=साथ, युज्=भि-

लना) पु० एक प्रकार की मुक्ति,
परमेश्वर में मिल जाना, एक हो
जाना, एकत्व, अभेद ।

सं० सार (स्मृ=जाना) पु० गूदा,
मज्जा, हीर, सत, सश्व, रस, जल,
मूल, २ बल, जोर, ३ मूलबाट,
असलमतलब, खुलासा, ४ कीमत,
मोल, ५ खाद, खात, ६ लोहा, ७
धन, ८ लाभ, फायदा, फल, ९
गु० बहुत अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ ।

प्रा० सार (सं० शार, अथवा शारि,
शृ=मारना) स्त्री० चौपड़की गोटी ।

सं० सारङ्ग (स्मृ=जाना) पु० एक
राग का नाम, २ मोर, ३ साँप, ४
बादल, ५ मोर की बोली, ६ हरिण,
७ पानी, ८ एक देश का नाम, ९
चातक, पपीहा, १० हाथी, ११
राजहंस, १२ सिंह, १३ कोकिला,
१४ एक पेड़ का नाम, १५ कामदेव,
१६ कई प्रकार के रंग, १७ भौरा,
मधुमक्खी, १८ धनुष, १९ स्त्री,
२० दीपक, २१ वस्त्र, २२ शंख,
२३ चन्दन, २४ कपूर, २५ कमल,
२६ आभरण, शोभा, सुवर्ण, २७
केश, २८ पुष्प, २९ छत्र, ३०
रात्रि, ३१ भूमि, ३२ दीप्ति ।

“ सारङ्गने सारङ्ग गह्यो ।

मोर साँप

सारङ्ग बोल्ह्यो आय ॥

बादल ।

जो सारँग सारँग कहे ।

मोर मोर की बोली ।

सारँग मुँहते जाय ॥”

सौँप ।

अर्थ—मोर ने सौँपको पकड़ा और बादल गर्जा, जो मोर अपनी बोली बोले तो सौँप मुँह से निकल कर भागे । (कहते हैं कि मोर का यह स्वभाव है कि जब बादल को गर्जते सुनता है तो बहुत खुशी से बोलता है और नाचता है) ।

सं० सारङ्गी (सृ=जाना) स्त्री०
एक बाजेका नाम, किंगिरी ।

सं० सारण (सृ=जाना) पु० रा-
वण के एक मन्त्रीका नाम, २
अतिसार रोग ।

सं० सारथि (सृ=जाना या स +
रथ) पु० रथवान्, रथके घोड़े
हांकनेवाला, यन्ता, सूत ।

सं० सारदा (सार=तत्त्व, दा=देने
वाली, दा=देना) स्त्री० सरस्वती,
गु० सार देनेवाली ।

प्रा० सारना (सं० साधन) क्रि०
स० बनाना, करना, पूरा करना,
सिद्ध करना ।

सं० सारस (सरस्=तालाब) पु०
एक तरह का पक्षेक्ष, २ चाँद, ३
कमल, ४ कमर में पहनने का
गहना, ५ गु० सरोवर की बीज ।

सं० सारस्वत (सरस्वती) पु० एक
देश का नाम, २ उस देश का
मनुष्य, पञ्चगौड़ (१ सारस्वत,
२ कान्यकुब्ज, ३ गौड़, ४ उत्कल,
५ मैथिल) ये विन्ध्याचल के उत्तर-
वासी हैं पञ्च द्राविड़ (१ महाराष्ट्र,
२ कर्नाटक, ३ गुरजर, ४ द्राविड़,
५ तैलंग) ये विन्ध्याचल के
दक्षिणवासी हैं, ब्राह्मणों में एक
जात, गु० सरस्वती देवी का,
सरस्वती नदी का ।

प्रा० सारा (सं० सर्व) गु० पूरा,
सम्पूर्ण, सब, समस्त, २ (सं०
श्याल, श्यै=जाना) पु० अपनी
लुगाई का भाई, साला ।

सं० सारिका (सृ=जाना) स्त्री०
मैना पक्षेक्ष ।

प्रा० सारी (सं० शाटी) स्त्री० साड़ी,
स्त्रियों के पहनने अथवा ओढ़ने का
कपड़ा, २ (सं० सार) दूध का
सार, मलाई ।

सं० सार्धक (स + अर्थ) गु० अर्थ
सहित, २ सफल, सिद्ध, मौजूब ।

सं० सावर्ण्य (पु० सवर्णा, सूर्यपत्नी
सावर्णि) में जन्मा या सूर्य का
पुत्र, १४ मनु में अष्टम मनु ।

सं० सार्धम् अव्य० साकम्, साथ ।
सं० साधित्र पु० रुद्र, महादेव, सूर्य,
वसुदेवता, ब्राह्मण ।

सं० सार्वभौम (सर्वभूमि) पु०

सब संसार का राजा, चक्रवर्त्ती
 राजा, २ उत्तर दिशा का हाथी ।
 सं० साल (सल्=जाना) पु० एक पेड़
 और उसकी लकड़ी का नाम साखू ।
 प्रा० साल (सं० शल्य, शल्=जाना)
 पु० गांसी, कांटा, शूल, २ वेद, ३
 (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर,
 ४ पाठशाला, स्कूल, ५ (सं०
 शृगाल) पु० सिंघार, गीदड़ ।
 प्रा० सालन } पु० मांस, मांस की
 सालना } तरकारी, २ साग,
 तरकारी ।
 प्रा० सालना (सं० शल्य, शल्=
 जाना) क्रि० स० वेदना, बेधना,
 धसाना, पैठाना, बर्मा से वेद
 करना, बर्माना, पारकरना, चु-
 भाना, २ क्रि० अ० दुखना, पिराना,
 खटकना, दुखाना ।
 प्रा० सालसा पु० एक तरह की
 औषध जिसका अर्क पीने से शरीर
 का लोह साफ होता है और इस
 को अरबी में 'उशबह' और अंग-
 रेजी में 'सार्सा पैरिद्धा' कहते हैं ।
 प्रा० साला (सं० श्याल, श्यै=
 जाना) पु० स्त्री का भाई, २
 (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर ।
 प्रा० साली (सं० श्याली) स्त्री०
 स्त्री की बहिन ।
 प्रा० सालूर पु० एक तरह का लाल
 कपड़ा ।

सं० सालू (पु० मंदूक) पेड़क ।
 प्रा० सालोतरी (शालि=घोड़ा,
 होत्र=वैद्य) पु० घोड़ों का वैद्य ।
 प्रा० सावक (सं० शावक) पु०
 बच्चा, बालक ।
 प्रा० सावकरन (सं० श्यामकर्ण)
 पु० काले कान का घोड़ा ।
 सं० सावकाश (स=साथ, अवकाश
 =अवसर) पु० अवसर, अवकाश,
 समय, मौका, फुर्सत, सुभीता,
 काम से छुट्टी ।
 सं० सावधान (स=साथ, अवधान
 =चौकसी, अव, धा=रखना) गु०
 चौकस, सचेत, खबरदार, सुचेत,
 अग्रशोची, होशियार, सजग ।
 सं० सावधानी (सावधान) स्त्री०
 चौकसी, चौकसाई, सुचेती, सुरता,
 खबरदारी, होशियारी, चेतौनी,
 अग्रशोच ।
 प्रा० सावन (सं० श्रावण) पु०
 चौथा हिन्दी महीना ।
 प्रा० सावन हरे न भादों सूखे
 बोल० सदा सरीखे, सदा एक से ।
 प्रा० सावन्त (सं० सामन्त) गु०
 वीर, बहादुर, योद्धा, पराक्रमी ।
 प्रा० सास } (सं० श्वश्रू) स्त्री० पति
 सासू } या पत्नी की माँ ।
 प्रा० साह (सं० साधु) पु० महाजन,
 बड़ा सौदामन, कोठीवाल, दूकान-
 दार, थला आदमी ।

सं० साहस्य (संहसा) पु० बल,
जोर, वेग, २ ढारस, हिम्मत,
वीरता, पराक्रम, जुलुसते ।

सं० साहसी (साहस) गु० तेज,
प्रबल, २ हिम्मतवाला, निडर,
पराक्रमी, वीर, ढीठ ।

सं० साहित्य (सहित=मेल) पु०
मेल, मिलान, साथ, २ एकविद्या
जिससे बोलीके बोलने और लिखने
की सुन्दरता जानी जाती है और
इस विद्या के अंग अर्थात् हिस्से
अलङ्कार, रस, वन्द आदि हैं ।
और कवियों के बनाये हुए काव्यों
को भी साहित्य कहते हैं, जैसे
भट्टि, रघुवंश, कुमारसम्भव, माघ,
किरातार्जुनीय, मेघदूत, विदग्ध-
मुखमण्डन और शान्तिशतक
आदि, इत्यम् अदव ।

प्रा० साही (शल्लकी, शल्ल=
सेही) जाना) स्त्री० कण्ट-
की, एक जानवर जिसकी पीठ
पर कांटे ही कांटे होते हैं ।

प्रा० साहूकार (सं० साधुकार,
साधु=सच्चा, कार=करनेवाला,
कृ=करना) पु० महाजन, बैपारी,
हुण्डीवाला, कोठीवाला, बड़ा
दुकानदार, २ ईमानदार, सच्चा
और भला आदमी ।

प्रा० साहूकारी स्त्री० बैपारी, लेन
देन, सौदागरी, कल्लिज, व्यव-

हार, हुण्डी का व्यवहार ।

प्रा० सिंगा (सं० शृङ्ग) पु० तुरही,
रणसिंगा ।

प्रा० सिंगार (सं० शृंगार) पु०
शोभा, गहने कपड़ों की सजावट,
२ नौरसों में का एक रस ।

प्रा० सिंगारना (शृङ्गार) क्रि०
स० सजाना, सँवारना, शोभित
करना ।

प्रा० सिंघाड़ा (सं० शृङ्गाट, शृङ्ग=
बड़ाई, अट्=जाना) पु० एक तरह
का फल जो पानी में पैदा होता
है, पानीफल ।

सं० सिंह (हिंस्=मारमा) पु० शेर,
केशरी, मृगराज, मृगेन्द्र, पशुओंका
राजा, २ पाँचवीं राशि, ३ हिन्दुओं
में एक पदवी, हिंस् का वर्ण वि-
पर्यय होनेसे सिंह बन गया ।

सं० सिंहद्वार पु० पुरद्वार, फाटक ।

सं० सिंहनाद (सिंह + नाद) पु०
शेरका गर्जना, २ लड़ाईका शब्द,
सिंहके ऐसा शब्द, भयानक शब्द ।

सं० सिंहनी (सिंह) स्त्री० शेरनी ।

प्रा० सिंहपौर (सिंह + पौर)
स्त्री० बड़ा दरवाजा अथवा फाटक
जहाँ बहुधा सिंह की मूर्ति रखी
रहती है ।

सं० सिंहेलद्वीप पु० लङ्का, सीलोन ।

सं० सिंहविक्राम्त पु० घोड़ा, अरव ।

सं० सिंहासन (सिंह + आसन)

पु० राजाका आसन, तख्त, पाट ।
 सं० सिंहिका स्त्री० राहु की माता,
 कश्यपपत्नी, २ सिंहनी ।
 सं० सिकता स्त्री० बालू, रेत ।
 प्रा० सिकना क्रि० अ० सेंका जाना,
 धूना जाना ।
 प्रा० सिकरी (सं० शृङ्खला) स्त्री०
 सांकल, संकल, सिकली ।
 सं० सिक्त (सिच्=सींचना) र्म्य०
 सींचा हुआ, कृतसेचन ।
 प्रा० सिख (सं० शिष्य) पु० चेला,
 २ नानक के मतको माननेवाला ।
 प्रा० सिखर (सं० शिखर) पु०
 पहाड़ की चोटी, २ मन्दिरों के
 ऊपर का गुम्बज ।
 प्रा० सिखरन (सं० शिखरिणी)
 पु० दही में चीनी और किशमिश
 मिली हुई खाने की चीज ।
 प्रा० सिखाई (सिखाना) भा०
 स्त्री० पढ़ाई, शिक्षा ।
 प्रा० सिखाना { (सं० शिक्षण,
 सिखलाना) शिष्=सिखाना)
 क्रि० स० पढ़ाना, बतलाना, शि-
 क्षादेना, उपदेश देना, २ डाटना,
 धमकाना, दण्डदेना, ताड़ना
 करना ।
 प्रा० सिगरा } (सं० समग्र) गु०
 सिगरौ } सच, सारा, संपूर्ण,
 सगरा } हरएक ।
 प्रा० सिभाना (सिद्ध) क्रि० स०

पकाना, रींघना, उबालना, २
 मारडालना ।
 प्रा० सिठाई (सीठा) स्त्री० फिकाई,
 मन्दताई ।
 प्रा० सिड़ स्त्री० बौड़ाइट, बावला-
 पन, पागलपन, उन्मत्तता ।
 अ० सिगिडकेट थोड़े म्यम्बर जिन
 को सिनेट नियत करती है काम
 होने के लिये ।
 प्रा० सिड़ा { गु० बावला, बौड़ा,
 सिड़ी } पागल, उन्मत्त, मस्त ।
 सं० सित (सो=नाश करना) गु०
 धौला, सफेद, श्वेत, शुक्लवर्ण ।
 सं० सिद्ध (सिध्=सिद्ध करना,
 पूरा करना) पु० एक प्रकार के
 देवता, २ योगी, व्यास आदि
 मुनि, ऐसा मनुष्य जिसके वश में
 अष्ट सिद्धि हों और जिसको भूत,
 वर्तमान, भविष्यत् की बात मा-
 लूम हो, ज्ञानी, तपस्वी, सन्त, ३
 ज्योतिष में एक योग का नाम, ४
 गु० पूरा, समाप्त, पक्का, बना,
 तैयार, २ प्रसिद्ध, विख्यात, ज्ञा-
 हिर, ३ सफल, ४ साबित किया
 हुआ, पक्का ठहराया हुआ, सच्चा
 ठहराया हुआ, ५ निश्चय किया
 हुआ, निर्णय किया हुआ ।
 सं० सिद्धान्त (सिद्ध + अन्त) पु०
 सच ठहराई हुई बात, सिद्ध की
 हुई बात, तर्क अर्थात् दलील से

जो बात सच ठहराई जाय, फल,
परिणाम, नतीजा, २ सूर्यसिद्धा-
न्त आदि ज्योतिष के शास्त्र ।

सं० सिद्धि (सिध्=सिद्ध करना,
पूरा करना) स्त्री० मन के मनोरथ
का पूराहोना, मनवाञ्छित फल
का मिलना, मन चाही बात का
पूरा होना, २ अणिमा आदि आठ
सिद्धि (अष्टसिद्धि शब्दको देखो) ।

सं० सिद्धियोग पु० कार्यसिद्धि हेतु
योग—(शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा,
शनौ रिक्ता कुजे जया । गुरौ
पूर्णा च संयुक्ता सिद्धियोगः प्र-
कीर्तितः ।) अर्थ—शुक्रवार
परिवा, बुधवार दुइज, शनिवार
चौथि, मङ्गलवार तीज, बृहस्पति
वार पञ्चमी, ज्योतिषमत मे उक्त
वारों में उक्त तिथि होवें तो सिद्धि
योग कहलाते हैं ।

प्रा० सिधारना (सं० सिध्=जाना)
क्रि० अ० जाना, बिदा होना,
खाने होना, चला जाना, क्रि०
स० दुरुस्त करना, सँवारना, ठीक
ठाक करना, तरतीब देना ।

प्रा० सिनकना क्रि० स० नाक
झाड़ना, नाक साफ करना ।

अं० सिनेट युनीवरसिटीके म्यम्बरों
की मण्डली ।

सं० सिन्दूर (स्यन्दू=चूना या टप-
कना) पु० एक तरह का लाल

चूरण जिससे स्त्रियां माँग भरती हैं ।

सं० सिन्धु (स्यन्दू=चूना, या टप-
कना) पु० समुद्र, समंदर, सागर,
२ एक नदी जिसको इंडस और
अटक भी कहते हैं, ३ सिन्धका
देश, ४ हाथी का मद, ५ एक
रागिणी का नाम ।

सं० सिन्दुर (सिन्धू=हाथी का
सिन्धुर) मद, अर्थात् मद
वाला) पु० हाथी, हस्ती ।

सं० सिन्धुरगामिनी (सिन्धुर=
हाथी, गामिनी=चलनेवाली, गम्
=चलना) स्त्री० वह स्त्री जिसकी
हाथीकीसी चाल हो, गजगामिनी ।

सं० सिप्र (सप्=मिलना) पु०
निदाघजल, पसीना, चाँद, घाम ।

सं० सिप्रा (सप्=मिलना) स्त्री०
एक नदी जो उज्जैन के पास है,
२ महिषी, भैंस, कुटनी, कुटनी,
रजस्वला, कपड़ों से हुई स्त्री ।

प्रा० सिमटना क्रि० अ० सिकुड़ना,
इकट्ठा होना, बंदुरना ।

प्रा० सिय (सं० सीता) स्त्री०
सिया) सीता, जानकी, श्री
रामचन्द्र की पत्नी और राजा
जनक की बेटी ।

प्रा० सियपी (सं० सीताप्रिय) पु०
सीतापति श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।

प्रा० सियार (सं० शृगाल)
सियाल) पु० गीदड़ ।

प्रा० सिर (सं० शिर) पु० माथा,
मस्तक ।

प्रा० सिरउठाना बोल० अपने मा-
लिक से फिर जाना, बगावत
करना ।

प्रा० सिरकरना बोल० शुरुआत करना ।

प्रा० सिरकाढ़ना बोल० नामी होना,
प्रसिद्ध होना, मशहूर होना ।

प्रा० सिरकेजोर बोल० अपने जोरसे ।

प्रा० सिरकेभल बोल० औंधा
सिर, मुँहभरा ।

प्रा० सिरखुजलाना बोल० मार
खायाचाहना, सजाचाहना, पिटा
चाहना ।

प्रा० सिरचढ़ा बोल० घमण्डी,
अभिमानिनी ।

प्रा० सिरचढ़ाना बोल० बढ़ाई क-
रना, बढ़ा जानना, माथे पर रखना,
पवित्र समझना, २ इतराना, घमण्डी
होना, ३ आदर मान करना ।

प्रा० सिरभुकाना बोल० नमस्कार
करना, प्रणाम करना ।

प्रा० सिरडुलाना } बोल० दुःख से
सिरधुनना } सिरहिलाना,
घबराना, दुःखी होना ।

प्रा० सिरतोड़ना बोल० बश में
करना, अधीन करना, दबाना ।

प्रा० सिरधरना बोल० बश में होना,
अधीन होना, ताबे होना, आझा-
कारी होना ।

प्रा० सिरनवाना बोल० गरीब
होना, अधीन होना, बश में होना,
नमस्कार करना, शिर झुकाना ।

प्रा० सिरपरधूलडालना बोल०
रोना, विलाप करना ।

प्रा० सिरपर चढ़ाना बोल० लड़के
को बिगाड़ना, इतराना, २ छोटे
आदर्मी को बड़ा करना, ३ आदर
मान करना ।

प्रा० सिरपीठना बोल० रोना,
विलाप करना, दुःख करना ।

प्रा० मिरफिराना बोल० बेफ़ायदह
मिहनत करना, वृथा परिश्रम करना ।

प्रा० सिरफेरना बोल० हुकम नहीं
मानना, आज्ञा नहीं मानना ।

प्रा० मिरमारना बोल० बहुत मिह-
नत उठाना, मिहनत से खोजना ।

प्रा० सिरमुंडाना बोल० सबसे मेल
छोड़कर फ़कीर बनजाना ।

प्रा० सिरकी स्त्री० एक तरह का
सरकण्डा जिसकी चटाई बनती है
और भोंपड़ों की छावनी होती है,
२ एक तरह की चटाई सी चीज़
जिसको मेह के बचाव के लिये
गाड़ी पर ढालते हैं ।

प्रा० सिरजना (सं० सर्जन, सृज्
= पैदा करना) क्रि० स० पैदा
करना, रचना, बनाना ।

प्रा० सिरसींग पु० दंगा करनेवाला,
उपद्रवी, बागी, फ़सादी, बलवाई ।

प्रा० सिरहाना (शिर) पु० सिर
की ओर, सिरकी तरफ, रतकिया ।

प्रा० सिरा (सिर) पु० सिर,
नोक, अन्त ।

प्रा० सिराना (शीत) क्रि० अ०
ठंडा होना, २ क्रि० स० ठंडा करना,
३ (सं० सृ=जाना) क्रि० अ०
बीतना, चलाजाना, ४ बहना, ५
क्रि० स० भेजना, पठाना ।

प्रा० सिरसि (सं० शिरीष, शृ=का
टना, नाश करना) पु० एक पेड़
का नाम, अथवा उसका फूल ।

प्रा० सिल (सं० शिला) स्त्री०
सिला { पत्थर, चट्टान, साफ
और बराबर पत्थर जिस पर सिल
बढ़े से मसाले पीसे जाते हैं ।

प्रा० सिलपट गु० चौपट, उजाड़,
२ चौरस, बड़ाधार ।

प्रा० सिलबद्धा (सं० शिलापट्ट,
शिला=सिल, पट्ट=पीसने का
पत्थर) पु० सिल लोड़ा ।

प्रा० सिली (सं० शिला) स्त्री०
सिल्ली { लोहे के हथियारों पर
धार चढ़ाने का पत्थर, पथरी,
सान ।

प्रा० सिमाना (सं० सीमा) पु०
हद्द, सींच, सीमा, अन्त, ओर ।

प्रा० सिंघार (सं० शैवाल, शी=
सोना) पु० हरी हरी-काई सी चीज
जो तालाबों के पेंदोंमें उगती है ।

अं० सिविल स्त्री० दीवानी का
मोहकमा ।

अं० सिविलसर्विस स्त्री० दीवानी
की नौकरी ।

प्रा० सिसकना क्रि० अ० सिसकी
भरना, दुनकना, बिसुरना ।

प्रा० सिहरना क्रि० अ० काँपना,
थरथराना ।

प्रा० सिहरा (फा० सेइ=तीन, और
सं० हार=माला) पु० मौर, मुकुट,
माला, जो ब्याह में दुलहा और
दुलहिनके शिर पर पहराई जाती है ।

प्रा० सिहराना क्रि० अ० थरथराना,
सनसना, बालों का खड़ा होना,
२ क्रि० स० सहलाना, चुल-
चुलाना, धीरे धीरे मलना, ३
थकाना, उचाटना ।

प्रा० सिहाना क्रि० अ० देखके
संतुष्ट होना, २ किसी अच्छी
चीज को देख कर उसके मिलनेके
लिये मन ललचाना, डाह करना ।

प्रा० सींक स्त्री० एक तरह की घास
जिसकी भाड़ बनती है ।

प्रा० सींग (सं० शृङ्ग) पु० एक
कड़ी चीज जो चौपायों के शिर में
उगती है, शृङ्ग, विषाण ।

प्रा० सींगड़ा (शृङ्ग) पु० बारूद
रखने का बरतन, बारूददान ।

प्रा० सींगा (शृङ्ग) पु० नरसिंगा ।

प्रा० सींचना (सं० सेचन, सिच्=

सींचना) क्रि० स० पानी देना,
पनियाना, पाटना ।

प्रा० सींच (सं० सीमा) स्त्री० हड़,
सिवाना ।

सं० सीकर (सीक्=सींचना) पु०
जलकण, पानी के कण ।

प्रा० सीख { (सं० शिक्षा) स्त्री०
सिखावन } उपदेश, समझ की
धात, नसीहत ।

प्रा० सीखना (सं० शिक्षण, शिक्ष
=सीखना) क्रि०स० पढ़ना, विद्या
का अभ्यास करना, पाना ।

प्रा० सीजना (सं० स्विच्=पसीना
होना) क्रि०अ० पसीजना, पसीना
निकलना, २ उबलना, गलना ।

प्रा० सीटी स्त्री० मुँह से सीसी ऐसी
आवाज निकालना ।

प्रा० सीठा गु० फीका, बेरस, असार ।

प्रा० सीढ़ी (सं० निःश्रेणि) स्त्री०
सोपान, नसेनी, जीना ।

प्रा० सीतला (सं० शीतला, शीत=
ठंडा, ला=लेना) स्त्री० माता,
चेचक, गोटी ।

सं० सीता (सि=बाँधना) स्त्री०
जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा
जनक की बेटी और श्रीरामचन्द्र
की पत्नी, २ हलके नीचे एक लोहे
का फल लगा रहता है उसे भी
सीता कहते हैं—(और जब राजा
जनक यज्ञ के लिये हल जोतकर

धरती को साफ कर रहे थे तब
धरती में से एक घड़ा निकला उस
में से एक लड़की निकली, इसी
कारण से उसका नाम सीता
रक्खा गया) ।

सं० सीतापति (सीता + पति) पु०
श्रीरामचन्द्र ।

प्रा० सीताफल पु० सरीफा, खिरी-
सागर, कुम्हड़ा ।

प्रा० सीधा (सं० साधु) गु०
सोफा, सरल, २ साम्हने, सन्मुख,
३ सादा, भोला, निष्कपट, शुद्ध,
४ सच्चा, साधु, खरा, साफदिल,
धर्मी, ईमानदार, नेक, ५ दहिना,
६ (सं० सिद्ध) पु० कोरा अन्न,
बे पका खाना ।

प्रा० सीना (सं० सीवन, सिव्=
सीना) क्रि० स० टाँकना, टाँका
लगाना, टाँका मारना, गाँठना ।

प्रा० सीप { स्त्री० समंदर के एक
सीपी } जानवर की हड्डी जिसमें
से मोती निकलता है, २ पकाआम ।

सं० सीमन्त पु० केशरचना, माँग
काढ़ना, गर्भवती का छठे या आठवें
महीने का संस्कार ।

सं० सीमा (सि=बाँधना) स्त्री०
सिवाना, हड़, सींच, २ मर्यादा, अवधि ।

सं० सीमाविवाद पु० अठारह प्र-
कार के न्याय का एक न्याय,
सरहद्दी भगड़ा ।

प्रा० सीय (सं० सीता) स्त्री०
जानकी, वैदेही ।

प्रा० सीरा पु० मोहनभोग, हंलुवा ।

प्रा० सीरा } (सं० शीतल) गुं०
सीला } ठंढा, शीतल, गीला ।

प्रा० सीस शीस शब्द को देखो ।

प्रा० सीसा (सं० सीस या सीसक,
सि=बाँधना) पु० एक धातु का नाम ।

प्रा० सीसों (सं० शिशपा) पु०
शीशम का पेड़ या उसकी लकड़ी ।

सं० सु गु० उपस० अच्छा, भला,
सुन्दर, उत्तम, बहुत, कि० वि०
अच्छी तरह से, सुख से, सुन्दरता
से, २ सुगमता से, सहज में, बे-
मिहनत, ३ कभी कभी, ४ पूजा
और आदर और संपदा आदि
अर्थों में भी बोला जाता है ।

प्रा० सुकचाना } (सं० सङ्कोच)
सुकुचाना } कि० अ० ल-
जाना, शर्माना, २ डरना, कि०
स० किसीको लजाना, चपाना ।

प्रा० सुकड़ना (सं० सङ्कोचन)
कि० अ० सिमटना, इकट्ठा होना ।

सं० सुकण्ठ (सु=अच्छा, कण्ठ=
गला) पु० वानरों का राजा
सुग्रीव ।

सं० सुकर्करा स्त्री० कठोर मार्ग ।

सं० सुकर्म (कृ=करना) पु० उत्तम
काम, सत्प्रयोग, विश्वकर्मा ।

सं० सुकाल (सु=अच्छा, काल=

समय) पु० अच्छा समय, अच्छी
चतु, २ सौघाई, सस्ताई, ३ बहु-
तायत ।

सं० सुकुमार (सु=सुन्दर, कुमार=
बालक) गु० कोमल, मनोहर,
सुन्दर, नाजुक ।

सं० सुकृत (सु=भला, कृ=करना)
बोल० धर्म, पुण्य, अच्छा काम,
अच्छी करनी, गु० पुण्यात्मा,
धर्मात्मा, सुशील, भागवान् ।

सं० सुकेतु (सु=अच्छा, केतु=भंडा)
पु० एक राक्षस या यक्ष का नाम
जो ताड़का का बाप था ।

सं० सुकेतुसुता (सुकेतु + सुता)
स्त्री० ताड़का ।

सं० सुख (सुख=सुखी होना, अ-
थवा सु=अच्छी तरह से, खन्=
खोदना-दुःख को) पु० चैन,
आनन्द, आराम, कल, शान्ति, हर्ष ।

प्रा० सुखचैन बोल० आराम,
चैनचान ।

प्रा० सुखपाना बोल० आराम
करना, चैन करना ।

सं० सुखद (सुख=चैन, द=देने
वाला, दा=देना) क० पु० सुख-
दायी, सुख देनेवाला, सुखदायक ।

सं० सुखदायी } (सुख=चैन, दा=
सुखदायक } देना) क० पु०
सुख देनेवाला ।

सं० सुखधाम (सुख=चैन, धाम=

घर) पु० सुख के घर, सुखदायी ।
 सं० सुखपाल (सुख=चैन + पाल
 =पालना) पु० पालकी, डोली ।
 प्रा० सुखमा (सुख=चैन, मा=
 नापना) स्त्री० परमशोभा, बहुतही
 सुन्दरता ।
 प्रा० सुखारी (सं० सुख) गु० सुखाने
 वाला, सुख भोगनेवाला, सुखिया,
 सुखारी ।
 सं० सुगति (सु=अच्छी, गति=चाल)
 स्त्री० अच्छी गति, मुक्ति, छुटकारा ।
 सं० सुगन्ध (सु=अच्छी, गन्ध=
 बास) स्त्री० अच्छी बास, महक,
 खुशबू ।
 सं० सुगन्धित (सुगन्ध) क०
 जिसमें अच्छी बास हो, सुगन्ध
 वाला, खुशबूदार ।
 सं० सुगम (सु=अच्छीतरहसे, गम्
 =जाना) गु० सहज, आसान,
 सरल ।
 सं० सुगमता भा० स्त्री० सरलता,
 आसानी ।
 सं० सुग्रीव (सु=सुन्दर, ग्रीवा=
 गरदन) पु० वानरों का राजा
 और सूर्य का बेटा जो किष्किन्धा-
 पुरी का राजा और श्रीरामचन्द्र

का मित्र और सहायक था, २
 विष्णु के रथ का घोड़ा ।
 प्रा० सुघड़ (सुघट, सु=अच्छा,
 घट=बना हुआ, घट्=वनाना)
 गु० सुन्दर, सुडौल, सुथरा, मनो-
 हर, बहुत अच्छा ।
 सं० सुघटित र्म० सुन्दर रचित ।
 प्रा० सुचकना (सं० सुचकित)
 क्रि० अ० अचंभा करना ।
 सं० सुचरित (चर=जाना, खाना)
 क० पु० श्रेष्ठाचार, शुभाचरण,
 नेकचलन ।
 सं० सुचित् (सु=अच्छा, चित्=मन)
 गु० सुगम, आसान, २ निश्चिन्त, बे-
 फिक्र, निश्चित, ईर्ष्याकम, सावधान ।
 प्रा० सुचिन्ताई भा० स्त्री० निश्चि-
 न्ताई, सावधानी, बेफिक्री ।
 सं० सुचेत (सु=अच्छी, चेत=सुध)
 गु० चौकस, सावधान, होशियार,
 सचेत ।
 सं० सुजन (सु=अच्छा, जन=म-
 नुष्य) गु० साधु, सज्जन, भला
 मानस, भला आदमी ।
 सं० सुजनता भा० स्त्री० सौम्यता,
 सौजन्यता, सीधापन, भलमनसई,
 भलमन्सी ।
 प्रा० सुजान (सं० सुज्ञानी, सु=
 अच्छा, ज्ञानी=जाननेवाला) गु०
 ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, बहुत अच्छा
 जाननेवाला ।

प्रा० सुभाना क्रि० सं० दिखाना,
बताना, समझाना ।

प्रा० सुठि (सं० सुष्ठु, सु=अच्छी
तरह से, स्था=ठहरना) गु० सु-
न्दर, उत्तम, २ बहुत, अत्यन्त ।

प्रा० सुडौल (सु अच्छा, डौल
सुढव) या ढव-रू) गु०
सुघड़, सुथरा, सुन्दर, मनोहर ।

सं० सुन (सु=सँदा होना, जन्मना)
पु० बेटा, पुत्र, लड़का ।

सं० सुता (सुत) स्त्री० बेटी, पुत्री,
कन्या, लड़की ।

प्रा० सुतार (सं० सूत) पु० बहई,
खाती (सं० सुतारा, सु=अच्छा,
तारा=नक्षत्र) अच्छा समय, अव-
काश, घात, दाँव ।

प्रा० सुथरा गु० अच्छा, सुन्दर,
सुडौल, सुहावना ।

प्रा० सुथरासाही पु० नानकसाही
फकीर ।

सं० सुदर्शन (सु=अच्छा, दर्शन=
देखना जो अच्छा देखा जाता है)
पु० त्रिणुका चक्र, २ गु० जो देखने
में अच्छा हो, सुन्दर, सुहावना ।

सं० सुदामा (सु=अच्छा, दा=
देना) पु० एक माली का नाम
जिसने मथुरा में जाते समय श्री-
कृष्ण को माला पहनाई थी, २
श्रीकृष्ण के साथी एक ग्वाल का
नाम, ३ श्रीकृष्ण के एक गरीव

मित्र का नाम जो जाति का ब्राह्मण
था जिसको फिर श्रीकृष्णने बहुत
ही धनवान् बनादिया, ४ बादल,
५ एक पहाड़ का नाम, ६ समुद्र ।

सं० सुदि (सु=अच्छी तरह से,
दिव=चमकना) अ० उजाना
पाख, शुक्लपक्ष ।

सं० सुदिन (सु + दिन) पु० अच्छा
दिन, अच्छा समय ।

प्रा० सुध (सं० सुधी, सु=अच्छी,
सुधि) स्त्री० बुद्धि) स्त्री० चेत,
याद, स्मरण, खबरदारी ।

प्रा० सुधबुध (सं० शुद्धबुद्धि) स्त्री०
समझ, बुझ, चेत, शुद्धज्ञान ।

प्रा० सुधलेना बोल० खबर लेना ।

प्रा० सुधरना (सं० सुधरण, सु=
अच्छी तरह से, धृ=रखना) क्रि०
अ० सही होना, अच्छा होना, २
वनना, सफल होना, ३ संभलना ।

सं० सुधा (सु=अच्छी भाँति से, धे=
पीना या धा=रखना) पु० अमृत,
अमी, पीयूष, आवहयात, २ रस,
जल ।

सं० सुधांशु (सुधा=अमृत, अंशु=
किरण, जिसकी किरणें अमृत के
ऐसी आनन्द देनेवाली हैं) पु०
चाँद, चन्द्रमा, २ कपूर ।

सं० सुधाकर (सुधा=अमृत, कर=
किरण) पु० चाँद, चन्द्रमा, २ कपूर ।

प्रा० सुधारना (सुधरना) क्रि० सं०

सँवारना, बनाना, अच्छा करना,
सही करना, सजाना, ठीक ठाक
करना ।

सं० सुधी (सु=अच्छी, धी=बुद्धि
जिसकी हो) पु० पण्डित, बुद्धि-
मान्, विद्वान्, सुबुद्धि, विज्ञ ।

प्रा० सुन (सं० शून्य) गु० बेहोश,
मूर्च्छित, शीताङ्गी, २ खाली,
छूट्टा, रीता ।

प्रा० सुनसान बोल० उजाड़, २
चुपचाप, ३ एकान्त, निराला ।

प्रा० सुनना (सं० श्रवण) क्रि०
स० कानदेना, श्रवण करना ।

सं० सुनयना स्त्री० सुन्दर नेत्र
वाली, २ जनकपत्नी ।

प्रा० सुनहरा { (सोना) क० सो-
सुनहरी } नहला, सोनेका या
सोना सा ।

प्रा० सुनार (सं० स्वर्णकार, स्वर्ण
=सोना, कार=करनेवाला, कृ=
करना, अर्थात् जो सोनेकी चीज
बनावे) क० पु० सोने चाँदी की
चीज बनानेवाला ।

प्रा० सुनारिन { स्त्री० सुनार की
सुनारनी } स्त्री, सुनार की
लुगाई ।

प्रा० सुनारी स्त्री० सुनार का काम ।

प्रा० सुनावनी (सुनाना) स्त्री०
मरने के समाचार, जो कोई आ-
दमी परदेश में मरजाय उसके मरने

की खबर ।

सं० सुनासीर (सु=अच्छा, नासीर
=सेना का मुँह, अर्थात् जिसकी
सेना अच्छी सजी हुई हो) पु०
इन्द्र, देवताओं का राजा ।

सं० सुन्दर (सु=अच्छी तरह से,
दृ=आदर करना) गु० मनोहर,
मुख्य, बहुत अच्छा, सुडौल,
खूबसूरत ।

सं० सुन्दरता (सुन्दर) भा० स्त्री०
मनोहरता, शोभा, छवि ।

सं० सुन्दरी (सुन्दर) स्त्री० रूपवती,
खूबसूरत स्त्री ।

प्रा० सुन्ना (सं० शून्य) स्त्री० सिफर,
बिन्दी ।

सं० सुपथ (सु=अच्छा, पथ=रास्ता)
पु० अच्छी रास्ता, सुमार्ग, अच्छी
राह, २ अच्छा चलन ।

सं० सुपर्ण (सु=अच्छा, पर्ण=पत्ता,
पल्लव) पु० गरुड़, २ गु० अच्छे
पत्तोंवाला ।

सं० सुपात्र (सु + पात्र) गु० योग्य,
भला मानस, उत्तमजन, २ पु०
अच्छा वरतन, शरीफ ।

प्रा० सुपारी स्त्री० एक कड़ा फल
जिसको पान के साथ खाते हैं,
पूगीफल ।

प्रा० सुपास पु० आराम, सुख,
सुभीता ।

सं० सुपुत्र (सु=अच्छा, पुत्र=बेटा)

पु० सप्त, अच्छा लड़का ।
 सं० सुप्त (स्वप्=सोना) क० पु०
 निद्रित, सोया हुआ ।
 सं० सुप्ति भा० स्त्री० नींद, निद्रा ।
 सं० सुफल (सु + फल) गु० सिद्ध,
 फलदायक, सफल, लाभकारी, २
 पु० अच्छा फलवाला पेड़ ।
 सं० सुबुद्धि (सु + बुद्धि) गु०
 बुद्धिमान्, अच्छी समझवाला,
 चतुर, प्रवीण ।
 सं० सुभग (सु=अच्छा, भग=ऐ-
 श्वर्य) गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा,
 सौभाग्यवान्, ऐश्वर्यवान्, प्रतापी,
 भाग्यवाला ।
 सं० सुभगा (सुभग) स्त्री० सौभा-
 ग्यवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, वह स्त्री
 जिसको उसका पति बहुत चाहे ।
 सं० सुभगता (सुभग) भा० स्त्री०
 उत्तमता, अच्छाई, भलाई ।
 सं० सुभट (सु=अच्छा, भट=ल-
 ड़ाका) पु० वीर, बहादुर ।
 सं० सुभद्रा (सु=अच्छा, भद्र=क-
 ल्याणरूप) स्त्री० श्रीकृष्णकी
 बहन, जिसको संन्यासी का रूप
 धर अर्जुन हर ले गया था, २
 श्रेष्ठ नारी ।
 सं० सुभाव (सु + भाव) पु०
 अच्छा स्वभाव, सुशीलता ।
 प्रा० सुभीता (सं० शुभ + हित,
 शुभ=अच्छा, हित=जैसा चाहिये)

पु० अवकाश, अवसर, फुर्सत ।
 सं० सुभुज (सु + भुज) पु० सु-
 बाहु नाम दैत्य ।
 सं० सुमति (सु=अच्छी, मति=
 बुद्धि) स्त्री० अच्छीबुद्धि, सुमति,
 भलमनसाई ।
 प्रा० सुमन (सं० सुमनस्, सु=
 अच्छा, मनस्=मन, अर्थात् जि-
 ससे मन प्रसन्न होजाय) पु०
 फूल, पुष्प, २ गु० सुन्दर ।
 सं० सुमना स्त्री० चमेली, मालती ।
 प्रा० सुमन्त (सं० सुमन्त्र, सु=
 अच्छी, मन्त्र=सलाह देना) पु०
 राजा दशरथ का सारथि और
 मन्त्री ।
 सं० सुमन्त्रक क० पु० वजीर,
 मुशीर, मन्त्री ।
 प्रा० सुमरण } (सं० स्मरण) पु०
 सुमिरण } याद, नाम लेना,
 सुमरन } स्मरण, २ (सं०
 स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला ।
 प्रा० सुमरना } (सं० स्मरण) क्रि०
 सुमिरना } स० याद करना,
 स्मरण करना, नाम लेना, २ (सं०
 स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला ।
 सं० सुमित्रा (सु=अच्छी तरह से,
 मित्र=प्यार करना) स्त्री० राजा
 दशरथकी पत्नी और लक्ष्मणकी माँ ।
 सं० सुमुखी (सु=सुन्दर, मुख=मुँह,
 स्त्री० सुन्दर मुँहवाली, सुन्दरी ।

सं० सुमेरु (सु + मेरु) पु० मेरु
पहाड़ जिसको हिन्दू सोनेका और
रत्नों का बना हुआ कहते हैं और
जहाँ देवता रहते हैं, २ ज्योतिष में
उत्तर ध्रुव, ३ जपमाला के सिरे
पर का दाना या मनका ।

प्रा० सुम्बा पु० वन्दूकका कागज,
ठसनी ।

सं० सुयश (सु + यश) पु० अच्छा
यश, अच्छा नाम, नामवरी ।

सं० सुयोग (सु + योग) पु० अच्छी
संगति, सुसंगति ।

सं० सुर (सु = अच्छा, रा = देना,
अर्थात् मन चाही चीज को देने
वाला, सुर = ऐश्वर्य रखना या चम-
कना अथवा सु = बहुत बल रखना)
पु० देवता, देव, २ सूर्य ।

प्रा० सुर (सं० स्वर) पु० ताल,
तान, आवाज, राग, गान ।

प्रा० सुरमिलाना बोल० एक सुर
करना, अच्छे सुर से गाना ।

सं० सुरगुरु (सुर + गुरु) पु० देव-
ताओं के गुरु, बृहस्पति ।

सं० सुरङ्ग (सु + रङ्ग) पु० हिंगलू,
२ स्त्री० जमीन के नीचे रास्ता, ३
गु० लाल या तेलिया रंग का
(सुरङ्ग जैसे घोड़ा), ४ सुन्दर,
जिसका रंग अच्छा हो, चमकीला ।

सं० सुरत (सु = अच्छी तरह से,
रम् = खेलना) पु० स्त्रीसंग, मैथुन,

भोग, विलास ।

प्रा० सुरत { (सं० स्मृति) स्त्री०
सुरता } सुध, चेत, खबर,
याद, ध्यान ।

सं० सुरतरु (सुर + तरु) पु० देव-
ताओं का वृक्ष, कल्याणवृक्ष ।

प्रा० सुरता { (सं० स्मर्ता, स्मृ =
सुरतीला } याद करना) गु०
सुचेत, सावधान ।

प्रा० सुरती स्त्री० तमाकू, तम्बाकू ।

सं० सुरधेनु (सुर + धेनु) स्त्री०
कामधेनु, इन्द्र की गाय ।

सं० सुरनदी (सुर + नदी) स्त्री०
विषहङ्गा, आकाशगङ्गा, मन्दा-
किनी, सुरदीर्घिका ।

सं० सुरपति (सुर + पति) पु०
देवताओं का राजा, इन्द्र ।

सं० सुरपुर पु० { (सुर + पुर या
सुरपुरी स्त्री०) पुरी } स्वर्ग, इन्द्र-
लोक, अमरावती ।

सं० सुरभि (सु = अच्छी तरह से,
रम् = बहुत चाहना या शब्द क-
रना) पु० सुगन्ध, २ वसन्त ऋतु,
३ जायफल, ४ चैतका महीना,
५ सोना, ६ (सुरभी) स्त्री० काम-
धेनु, ७ गाय, ८ धरती, जमीन,
९ गु० सुगन्धित, १० विख्यात,
११ अच्छा, सुन्दर, मनोहर ।

सं० सुरलोक (सुर + लोक) पु०
स्वर्ग, इन्द्रलोक, सुरपुरी ।

सं० सुरस (सु=अच्छा, रस=स्वाद)

गु० मीठा, सुस्वाद ।

प्रा० सुरसरि { (सं० सुरसरित्,
सुरसरिता } सुर=देवता, सरित्
=नदी) स्त्री० गंगा ।

सं० सुरसा (सुरस) स्त्री० नागों
की माँ ।

सं० सुरसेनप (सुर + सेन + पा
=वचाना) पु० कार्तिकेय, कीर्ति-
मुख, पटानन ।

सं० सुरा (सुर=चमकना या बहुत
बल रखना) स्त्री० मदिरा, मद,
दारु, शराब ।

सं० सुराङ्गना (सुर=देवता, अ-
ङ्गना=स्त्री) स्त्री० देवताओं की
स्त्री, देवपत्नी, अप्सरा ।

सं० सुराचार्य (सुर + आचार्य)
पु० देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।

सं० सुगारि (सुर + अरि) पु० देव-
ताओं के वैरी, असुर, राक्षस, दैत्य ।

सं० सुरापगा (सुर + आपगा)
स्त्री० देवनदी, गङ्गा ।

सं० सुरूप (सु + रूप) गु० सुन्दर,
सुडौल, मनोहर ।

सं० सुरेन्द्र (सुर + इन्द्र) पु० देव-
ताओं का राजा, सुरपति, इन्द्र ।

सं० सुरेश { (सुर + ईश या ईश्वर)
सुरेश्वर } पु० इन्द्र, २ महादेव,
शिव ।

सं० सुरेश्वरी (सुरेश्वर) स्त्री० देवी,

दुर्गा, महामाया, योगमाया ।

प्रा० सुरैत { (सुरत) स्त्री० वह स्त्री
सुरैतिन } जिसके साथ व्याह
नहीं हुआ हो और ऐसेही घर में
डाल ली जाय, रखनी, उदरी,
उपपत्नी ।

प्रा० सुलगना { (सं० संलग्न) क्रि०
मिलगना } अ० जल उठना,
लहरना, बलना, धुआँ निकलना ।

प्रा० सुलभना क्रि० अ० खुलना,
सुधरना ।

सं० सुलभ (सु=अच्छी तरह से, लभ्
=पाना) गु० सहज, सुगम, आसान,
सहल, २ जो सहज से मिल जाय ।

सं० सुलोचना (सु=अच्छी, लोच-
न=आँख, जिसकी हो) स्त्री० जिस
स्त्री की आँखें अच्छी हों, सुन्दरी,
मनोहर स्त्री, २ रावण के बेटे मेघ-
नाद की स्त्री का नाम ।

प्रा० सुवन (सं० सूनु) पु० बेटा,
पुत्र, लड़का ।

सं० सुवर्ण (सु + वर्ण) पु० सोना,
२ हरिचन्दन, ३ सोना गेरू मिट्टी,
४ गु० सुनाति, अच्छी जात का,
५ सुन्दर, चमकीला, ६ सुरंग,
अच्छे रंग का ।

सं० सुवास (सु + वास) अच्छा
घर, अच्छा मकान, २ स्त्री० सुगन्ध,
खुशबू ।

सं० सुवासिनी (सु=सुखसे, वस्=

रहना) स्त्री० सुहागिन, २ अपने
बाप के घर बहुत रहनेवाली स्त्री ।
सं० सुबाहु (सु + बाहु) पु० एक
राक्षस का नाम ।

सं० सुवेल (सु = अच्छा, वेल = कि-
नारा, जो समुद्र के पास है)
पु० समुद्रतट, त्रिकूट पहाड़ ।

सं० सुशील (सु + शील) गु०
सुस्वभाव, अच्छी चाल चलन
वाला, सीधा, साधु ।

सं० सुषुप्त (स्वप् = सोना) क० पु०
सोनेवाला, ज्ञानशून्य ।

सं० सुषुप्ति स्त्री० सुनिद्रा, नींद,
जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय इन चार
अवस्था में से एक अवस्था का नाम ।

प्रा० सुसकारना क्रि० अ० फन-
फनाना, सिसकारी मारना ।

सं० सुसङ्ग (सु + सङ्ग) पु० अच्छी
संगति, सुसंगति, नेक सुहवत ।

प्रा० सुसत्ताना (सं० स्वस्थ या
सुरथ) क्रि० अ० विश्राम लेना,
ठहरना, साँस लेना, आराम करना ।

प्रा० सुसर { (सं० श्वशुर) पु० पति
सुमरा } या पत्नी का बाप ।

प्रा० सुसरार { सं० (श्वशुरालय,
सुसराल } श्वशुर = ससुर, आ-
लय = घर) स्त्री० ससुरका घर या
घराना ।

सं० सुस्थ (सु = अच्छी तरह से,

स्था = ठहरना) गु० भला चक्का,
नीरोगी, २ सुखी, प्रसन्न, हर्षित ।

सं० सुस्थिर (सु + स्थिर) गु० अटल,
अचल, निश्चल, दृढ़, ठहराऊ ।

सं० सुस्वाद (सु + स्वाद) गु०
जिसमें अच्छा स्वाद हो, मजेदार,
सुरस, मधुर, मीठा ।

प्रा० सुहाग (सं० सौभाग्य) पु०
अच्छा भाग, २ पति का प्यार, ३
पति के जीने रहने की दशा, ४
स्त्री का गहना अर्थात् काजल टीकी
आदि जो पति के जीने का चिह्न है
(यह शब्द 'रंडापा' का उलटा है) ।

प्रा० सुहागन { (सं० सौभागिनी,
सुहागिन } सुभगा, अच्छे भाग
वाली) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति
जीता हो, सधवा स्त्री, सपतिका ।

प्रा० सुहाना { (सं० शोभन) गु०
सुहावना } सुन्दर, मनभावन,
मनोहर, २ क्रि० अ० अच्छा लगना,
मनमाना, फटना, रुचना ।

सं० सुहृद् (सु = अच्छा, हृद् = मन)
प्रत्युपकार की इच्छारहित जो उप-
कार करे उसका नाम सुहृद् है
गु० मित्र, दोस्त, हितू, सखा ।

प्रा० सुअर (सं० सूकर, सू = ऐसा
शब्द, कर = करनेवाला, कृ = करना)
पु० एक जंगली जानवर का नाम,
वराह, शूकर ।

प्रा० सूत्रा } (सं० शुक) पु०
 सूत्रा } तोता, सुगा ।
 सूत्रा }

प्रा० सूत्रा } पु० बड़ी सूई ।
 सूत्रा }

प्रा० सूई (सं० सूची) सूच=जत-
 लाना या सिव=सीना) स्त्री०
 कपड़े सीने की चीज ।

प्रा० सूंघना (सं० सुघ्राण, सु, घ्रा=
 सूंघना) क्रि० स० वास लेना,
 महक लेना, सुगन्ध लेना ।

प्रा० सूंढ स्त्री० चुप, मौन ।

प्रा० सूंढ भरना या मारना बोल०
 चुपचाप रहना ।

प्रा० सूंढमारेजाना बोल० चुपचाप
 चला जाना ।

प्रा० सूंढ (सं० शुण्ड, शुण्=जाना)
 स्त्री० हाथी की नाक ।

प्रा० सूंतना } क्रि० स० तोड़ना
 सूंथना } (जैसे पेड़ से पत्ते),
 २ खींचना (जैसे तलवार) ।

प्रा० सूकी स्त्री० चौअन्नी ।

सं० सूक्त (सु=उक्त, सु=सुन्दर,
 उक्त=कहा, वच्=कहना) पु०
 सुन्दर वार्ता, पुरुषसूक्त ।

सं० सूक्ष्म (सूच=जतलाना) गु०
 थोड़ा, छोटा, पतला, महीन,
 बारीक, पतिल ।

सं० सूक्ष्मता (सूक्ष्म) भा० स्त्री० छोटा-
 पन, पतलाई, बारीकी, पतलापन ।

सं० सूक्ष्मदर्शी (सूक्ष्म + दर्शी=
 देखनेवाला, दृश्=देखना) गु०
 चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, तेज, २
 जिसकी नजर तेज हो, बारीकबीं ।

प्रा० सूखना } (सं० शोषण, शुष्=
 सूकना) सूखना) क्रि० अ०
 शुष्क होना, कड़ा होना, खुरक
 होना, २ मरना, जलना (जैसे
 पेड़ आदि), ३ उड़ना, हवा होना
 (जैसे अर्क आदि), ४ पचकना,
 दूटना (जैसे स्त्री का अथवा गाय
 आदिका दूध), ५ दुबला होना,
 ६ बिगड़ना, गलना, खराब होना,
 कुम्हलाना, मुरझाना, बेरस होना ।

प्रा० सूखा (सं० शुष्क) गु० बेरस,
 शुष्क, गला, सड़ा ।

सं० सूचक (सूच + अक, सूच=
 जतलाना) क० पु० जतलाने
 वाला, बतलानेवाला, सिखाने
 वाला, बोधक, पिशुन, चवाई ।

प्रा० सूचना (सूच=जतलाना) स्त्री०
 जतलाना, चिताना, इत्तिला ।

सं० सूचनापत्र पु० इत्तिलानामा,
 नोटिस, इशितहार ।

सं० सूचिक क० पु० दरजी, खैयात ।

सं० सूचित र्म० जताया गया ।

सं० सूचीपत्र (सूची=जतलाना, पत्र
 =कागज) पु० केहरिस्त, २ बीजक ।

प्रा० सूजना (सं० शोथ या श्वयथु,
 शिव=फूलना) क्रि० अ० फूलना,

- मोटा होना, बढ़ना, किसी रोग से देहका कोई अङ्ग मोटा होजाना ।
- प्रा० सूजी (सं० सूचिक) पु० दरजी, सीनेवाला, २ (सं० सूची) स्त्री० सूई ।
- प्रा० सूजी स्त्री० मोटा आटा, दर-दरा आटा ।
- प्रा० सूझना क्रि० अ० दीखना, नजर आना, दीख पड़ना, दिखाई देना, मालूम होना, प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना ।
- प्रा० सूत (सं० सूत्र) पु० डोरा, तागा, धागा, रूई का डोरा ।
- सं० सूत (सू=चलाना, बहुत बल रखना या पैदा होना) पु० रथवान्, सारथि, २ बढ़ई, ३ भाट, ४ वर्ण-संकर, दोगला, जिसका बाप राजपूत और मां ब्राह्मणी हो, ५ पुराणों का जाननेवाला एक पण्डित जिसका नाम लोमहर्षण था जिसने नैमिषारण्य में बहुत से ऋषियों को पुराण और महाभारत की कथा सुनाई थी और उसको बलदेवजीने मार डाला था ।
- सं० सूतक (सू=पैदा होना) पु० लड़के के पैदा होनेसे या गर्भ के गिरने से या मौत होजानेसे जो अपवित्रता होती है उसे सूतक कहते हैं ।
- प्रा० सूतना (सं० सुप्त) क्रि० अ० सोना ।
- प्रा० सूतली (सूत) स्त्री० सन की डोरी, रस्सी ।
- प्रा० सूती (सं० सूत्रीय) गु० सूत से बना हुआ ।
- सं० सूत्र (सूत्र=गूँथना या सिक्=सीना) पु० सूत, डोरा, धागा, तागा, २ रीति, कायदा, ३ ऐसा वाक्य जिसमें संक्षेप से बहुत से अर्थ का ज्ञान हो जैसे व्याकरण आदि के सूत्र ।
- सं० सूत्रधार (धृ=धरना) पु० प्रधान नट, नाटक के खेल का मुखिया ।
- प्रा० सूथन पु० पायजामा, पाजामा, जांघिया, सुथनी ।
- सं० सूदन (सूद=मारना) पु० मारना, गु० मारनेवाला ।
- प्रा० सूधा (सं० शुद्ध) गु० सीधा, भोला, निष्कपट, शुद्ध ।
- सं० सूदशाला स्त्री० पाकशाला, र-सोईघर, बाबरचीखाना, कुकिरूम ।
- प्रा० सूना (सं० शून्य) गु० खाली, लूझा, रीता, २ उजाड़ ।
- सं० सूनु (सू=पैदा होना) पु० बेटा, पुत्र, लड़का ।
- प्रा० सूप (सं० सूर्प, सूर्प=नापना) पु० छाज, अनाज पछोरनेकी चीज ।
- सं० सूपकार (सूप=रसोई, कार=सूपकारी) करनेवाला) पु० पाचक, रसोईबरदार ।

प्रा० सूम (अ० शूम) पु० कंजूस,
मक्खीचूस, कृपण ।

सं० सूर (सू=चलाना) पु० सूर्य,
२ सूरदास ।

प्रा० सूर (सं० शूर) पु० वीर, बहादुर ।

प्रा० सूरज (सं० सूर्य) पु० रवि,
भानु, दिनेकर, आफताब, खुर्शेद ।

प्रा० सूरजग्रहन (सं० सूर्यग्रहण)
सूरजग्रहण } सूर्यका ग्रहन ।

प्रा० सूरजमुखी (सं० सूर्यमुखी)
पु० एक फूल का नाम ।

प्रा० सूरन (सं० सूरण) पु०
जिमीकन्द, सूरन ।

सं० सूरदास पु० एक हिन्दी कवि
और गवैये का नाम जो अन्धा था
इस लिये अब हिन्दुओं में अन्धे को
सूरदास कहते हैं ।

प्रा० सूरवीर (सं० शूरवीर) पु०
वीर, बहादुर, सामन्त, योद्धा ।

प्रा० सूरमलार पु० एक रागिनी
का नाम ।

प्रा० सूरमा (सं० शूर) गु० बहादुर,
वीर, सामन्त, शूरवीर ।

प्रा० सूरमापन भा० पु० बहादुरी,
वीरता ।

प्रा० सूरा (सं० शूर) पु० बहादुर,
शूरवीर, योद्धा एक आदमी
लड़ाई में जाने के लिये तैयारी
कर रहा था उस समय में उसकी
स्त्रीने कहा कि—

“सूरारण में जायकै
लोहा करो निशङ्क ।
ना मोहिं चढ़े रँडापरो
ना तोहिं चढ़े कलङ्क ॥”

अर्थ—हे धीर ! लड़ाई में जाकर
निडर होके लड़ो जिससे न तो
मैं रौंढ होऊँ और न तुम्हारे नाम
को दाग लगे ।

सं० सूर्य (सू=चलना) पु० सूर्य ।

सं० सूर्यवंशी (सूर्य=सूर्य, वंशी=घ-
रानेके) पु० राजपूतों की एक जात
जिनकी राजधानी अयोध्यापुरी थी ।

सं० सूर्योदय (सूर्य + उदय) पु०
सूर्य का निकलना, दिन चढ़ना,
सवेरा, तड़का, भोर, बिहान,
प्रभात ।

प्रा० सूल (सं० शूल, शूल=बीमार
होना) पु० बावगोला, बावसूल,
एक तरह की बीमारी जिसके होने
से पसलियों में और पेट में बहुत
दर्द होता है, २ त्रिशूल, सेल,
३ भाले की नोक, ४ कांटा ।

प्रा० सूल पु० दशा, हाल, हालत ।

प्रा० सूली (सं० शूल) स्त्री० एक
तरह का कांटा जिस पर अपराधी
लटकाया जाता है ।

प्रा० सूसीस्त्री० एक तरह का कपड़ा ।

प्रा० सूहा (सं० शोण, शोण=लाल
होना) गु० लाल, राता, किर-
मची, २ पु० एक राग का नाम ।

सं० सृष्ट (सृज्=पैदा होना) र्म्मं
रचित, निर्मित ।

सं० सृष्टि (सृज्=पैदा होना) स्त्री०
उत्पत्ति, संसार, जगत्, दुनिया,
स्वभाव, प्रकृति ।

सं० सृष्टिशिरोमणि पु० स्त्री०
संसार में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अशर्क-
लमल्लूकात, मनुष्य, इन्सान ।

प्रा० सेंकना क्रि० सं० गर्म करना,
तत्ता करना, उष्ण करना, भूनना,
भूजना, झुलसना ।

प्रा० सेंट { क्रि० वि० मुफ्त, बिना
सेंतमेत } मोल, बेदाम का ।

प्रा० सेंध (सं० सन्धि) पु० छेद
जिसको चोर चोरी करने के समय
दीवार में करते हैं ।

प्रा० सेंधा (सं० सैन्धव) पु० ला-
हौरी नमक, पहाड़ी नमक ।

प्रा० सेंधिया (सिन्ध) पु० ग्वालियर
के महाराजा की जात जो शायद
सिन्ध नदी के पास के देश से फैले
हों, २ जहर, विष, ३ (सैंध)
सैंध लगानेवाला, चोर, घर फोरने
वाला, सेंधमार, सेंधचोर ।

सं० सेचन (सिच्=सींचना) पु०
सींचना, छिड़काव ।

सं० सेचक क० पु० सींचनेवाला,
भिगोनेवाला ।

सं० सेचित र्म्मं आर्द्राकृत, तर किया
हुआ, सींचा गया, भिगोया गया ।

प्रा० सेज (सं० शय्या) स्त्री०
पलंग, बिछौना ।

प्रा० सेठ (सं० श्रेष्ठ) पु० साहूकार,
महाजन, हुण्डीवाल, धनवान् ।

प्रा० सेत (सं० श्वेत) गु० धौला,
सफेद, उजला ।

सं० सेतु (सि=बाँधना) पु० स्त्री०
पुल, बाँध, बन्ध ।

सं० सेतुबन्ध (सेतु + बन्ध) पु०
वह जगह जहाँ श्रीरामचन्द्र ने
लट्का जानेके लिये नल और नील
वानर से पुल बंधवाया था ।

सं० सेतुबन्धरामेश्वर (सेतुबन्ध
+ रामेश्वर) पु० महादेव जिनको
श्रीरामचन्द्रने लट्का जानेके समय
सेतुबन्धपर स्थापन किया था ।

सं० सेना (स=साथ, इन=मालिक
या सि=बाँधना) स्त्री० कटक,
दल, फौज, लश्कर, सिपाह ।

सं० सेनानी (सेना + नी=लेचल-
ना) क० पु० सेनापति, सिपह-
सालार, कप्तान ।

सं० सेनापति (सेना + पति) पु०
फौज का सरदार ।

प्रा० सेमल (सं० शाल्मली) पु०
एक पेड़का नाम ।

प्रा० सेर पु० सोलह बटाँक की
तौल ।

प्रा० सेल { (सं० शूल) पु० बर्छी,
सेला } बर्छी, बल्लम, भाला ।

प्रा० सेला पु० एक तरह की चदर,
एक तरह का कपड़ा, २ एक
तरह का वाघ ।

प्रा० सेली स्त्री० बद्धी या जाली
जिसको फक्कीर गले में पहने रहते हैं ।

प्रा० सेव स्त्री० एक तरह का फल ।

सं० सेवक (सेव्=सेवा करना) क०
पु० सेवा करनेवाला, पूजा करने
वाला, पुजारी, नौकर, दास,
चाकर ।

प्रा० सेवकाई (सेवक) भा० स्त्री०
नौकरी, चाकरी, टहल, सेवा ।

प्रा० सेवड़ा पु० एक तरह के हिन्दू
फक्कीर, २ जैनमत का भिखारी ।

प्रा० सेवती (सं० सेमन्ती, सिम्=
नाश होना या तोड़ा जाना) स्त्री०
एक फूल का नाम ।

प्रा० सेवना (सं० सेवन, सेव्=
सेवा करना) क्रि० सं० सेवा
करना, २ पालना, अण्डा सेना,
अण्डों को पालना पोसना ।

सं० सेवा (सेव्=सेवा करना) स्त्री०
नौकरी, चाकरी, टहल, सेवकाई,
२ पूजा, सत्कार ।

सं० सेवित (सेव्=सेवा करना)
र्म० उपासित, सेवा किया हुआ,
पूजा किया हुआ ।

सं० सेवी क० पु० पुजारी, नौकर,
दास, चाकर ।

प्रा० सेवै (सं० समिता, सम्=साथ,

इण्=जाना) स्त्री० बहुव० पैदा
की बनी हुई खाने की चीज,
क्रि० सेवा करें ।

सं० सेव्य (सेव्=सेवा करना) र्म०
सेवा करने योग्य, पूजा करने योग्य,
उपास्य, सेवने योग्य, मखदूम ।

प्रा० सैकड़ा (सं० शतक) गु०
शतकड़ा, १०० ।

प्रा० सैंतालीस (सं० सप्तचत्वारि-
शत्) गु० चालीस और सात, ४७ ।

प्रा० सैंतीस (सं० सप्तत्रिंशत्)
गु० तीस और सात, ३७ ।

प्रा० सैन (सं० संज्ञा) स्त्री०
सेन } संकेत, इशारा, चिह्न,
आँख का या अंगुली का इशारा, २
(सं० सैन्य) फौज, कटक, सेना, ३
(सं० शयन) पु० सोना, नींद लेना ।

प्रा० सैनासैनी बोल० आपस में
आँखसे या अंगुलीसे इशारा करना ।

सं० सैन्धव (सिन्धु) गु० सिन्धुनदी
के पास के देशों में पैदा होने
वाला, २ पु० सेंधानमक, ला-
हौरी नमक, ३ घोड़ा ।

सं० सैन्य (सेना) स्त्री० फौज,
कटक, सेना, दल ।

सं० सैन्यनिकेत पु० पदातिस्थान,
सैन्यवास, छावनी ।

सं० सैन्यप्रदर्शनीय स्त्री० फौजी
नुमायश, सेना की सजावट ।

प्रा० सोअर (सं० सूतिकाग्रह,

सूतिका=जन्मा, सू=पैदा होना,
(गृह=घर) पु० कोठरी जिस
में जन्मा अर्थात् वह स्त्री जिसके
बच्चा पैदा हुआ है रहे ।

प्रा० सोआ स्त्री० एक तरह का साग ।

प्रा० सोई सर्वना० वही, आप ।

प्रा० सों से, साथ ।

प्रा० सोंटा पु० लाठी, लट्ट ।

प्रा० सोंठ (सं० शुण्ठी, शुण्ड=
सूखना) स्त्री० सोंठि ।

सं० सोढ (सह=सहना) क० पु०
क्षान्त, सहनशील ।

सं० सोढा (सह=सहना) क० पु०
शान्त, सहनशील, मुतहम्मिल ।

सं० सोंधा (सं० सुगन्ध) पु० सुग-
न्धित मसाला जिससे बाल धोये
जाते हैं, २ सुगन्ध, बास, बू, ३
ऐसी बू जैसी कि मिट्टी के कोरे बर-
तनों को भिगोने से या चने आदि
के सेंकने से निकलती है ।

प्रा० सोंपना } (सं० समर्पण) क्रि०
सोंपना } स० दे देना, हवाले
करना, सुपुर्द करना ।

प्रा० सोंह (सं० शपथ) स्त्री० सौ-
गन्द, शपथ, किरिया, कसम ।

प्रा० सोंहीं (सं० सम्मुख) क्रि०
वि० सामने, आगे, सम्मुख ।

प्रा० सोखना (सं० शोषण, शुष्=
सूखना) क्रि० स० चूसना, पी-
लेना, खींचना ।

प्रा० सोग (सं० शोक) पु० चिन्ता,
फिक्र, शोच, उदासी, दुःख ।

प्रा० सोच (सोचना) पु० ध्यान,
खयाल, विचार, रचिन्ता, फिक्र ।

प्रा० सोचना (सं० शोचना, शुच्=
सोचना) क्रि० खयाल करना,
समझना, विचारना, ध्यानकरना ।

प्रा० सोझा गु० सीधा, खड़ा ।

प्रा० सोत } (सं० स्रोत) पु० धारा,
स्रोत } चश्मा, झरना ।

प्रा० सोध (शोधना) स्त्री० शुद्ध
करना, शोधन, २ खोज, पता,
भेद, खबर ।

प्रा० सोधना (सं० शोधन) क्रि०
स० सही करना, गलती निका-
लना, शुद्ध करना, जाँचना, २
ऋण चुकाना, कर्ज चुकाना, ३
धातु को साफ करना ।

प्रा० सोन (सं० शोण, शोण=
जाना) पु० स्त्री० एक नदी का
नाम, २ रुधिर, रक्त, उदासी,
ब्रह्मचारी ।

प्रा० सोनहरा } (सोना) गु०
सोनहला } सुनहरा, सुनहरी,
सोने का या सोने सा ।

प्रा० सोना (सं० स्वर्ण) पु० बहुत
मोल की धातु, कश्चन, कनक ।

प्रा० सोना } (सं० शयन) क्रि० अ०
सोवना } नींद लेना, पौढ़ना,
सतना ।

सं० सोपान (स=साथ, उप=पास, अन्=जीना, पर उप उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ चढ़ना होजाता है) स्त्री० सीढ़ी, नसेनी ।

प्रा० सोभना (सं० शोभन) क्रि० अ० सोहना, अच्छा दिखाई देना ।

सं० सोम (सू=पैदा होना या फेंकना किरण को) पु० चाँद, चन्द्रमा, २ अमृत, ३ देवताओं का खजानची, कुबेर, ४ हवा, ५ यमराज, ६ कपूर, ७ सोमलताना नाम जड़ी और उसका रस, ८ (स=साथ, उमा=पार्वती) शिव, महादेव, ९ वानरेश, सुग्रीव, १० हव्य, कव्य, ११ आकाश ।

सं० सोमज (सोम + जन्=पैदा होना) पु० बुधग्रह, अमृत, दुग्ध ।

सं० सोमपा (सोम + पा=पीना) क० पु० यज्ञवल्ली का पीनेवाला, याज्ञिक, यजमान ।

सं० सोमवार (सोम=चाँद, वार=दिन) पु० चाँद का दिन, चन्द्रवार ।

सं० सोमवल्क पु० करञ्ज, कंजा, रीठी, श्वेतखदिर, सफेद खैर, कैफरा ।

प्रा० सोरठ स्त्री० एक रागिनी का नाम ।

प्रा० सोरठा पु० हिन्दी बोली में एक छन्द जिसके पहले पद में ११ और दूसरे में १३ फिर तीसरे में ११ और चौथे में १३ मात्रा होती

हैं और यह छन्द दोहेका उलटा है ।

प्रा० सोरह } (सं० षोडश) गु० सोलह } दश और छः, १६ ।

अ० सोशलरिफार्मकमेटी सामाजिक संशोधनसभा, जलसा रिफाहआम ।

प्रा० सोहना (सं० शोभन, शुभ=चमकना) क्रि० अ० शोभना, अच्छा दिखाई देना, फबना, भला दीखना ।

प्रा० सौ (सं० शत) गु० दशदहाई ।

प्रा० सौसिरका होना बोल० बहुत बलवान् या मगरा होना, २ बहुत सहना ।

प्रा० सौगन्द पु० शपथ, किरिया, आन ।

सं० सौगन्ध सुगन्ध, भा० पु० खुशबू, २ कपूर ।

प्रा० सौँघाई (सं० स्वर्घता, सु=अच्छा, अर्घ=मोल) स्त्री० सस्ती, सस्ताई ।

प्रा० सौँफ (सं० शतपुष्पा) स्त्री० एक ठंडी पाचक दवाई ।

सं० सौचि भा० पु० दर्जी, सूची-जीवन, सूचीजीवी ।

सं० सौजन्य } (सुजन) भा० पु० सौजन्यता } सुजनता, भलमन-साहत, साधुपन, सुशीलता, शराफत ।

प्रा० सौत } (सं० सपत्नी, स=एक सौतन } ही, पति=भर्चा है जिस-सवति } का) स्त्री० एकही

पति की दूसरी स्त्री, सौती ।
 प्रा० सौतेला (सौत) गु० सौतसे
 जनमा हुआ ।

सं० सौदामनी } (सुदामन=बादल
 सौदामिनी } अर्थात् बादलों में
 रहनेवाली, सु=बहुत, दा=देना)
 स्त्री० विजली, दामिनी ।

सं० सौध (सुधा=पोतने की एक
 लाल चीज उससे रंगा हुआ,
 सु=अच्छी तरह से, धा=रखना)
 पु० महल, प्रासाद, राजमन्दिर,
 देवमन्दिर ।

सं० सौनिक पु० व्याध, वधिक,
 बहेलिया, हिंसक, कसाई जैसे
 “सौनिकेन यथा पशुः” ।

सं० सौन्दर्य (सुन्दर) भा० पु०
 सुन्दरता, खूबसूरती, चमकदमक,
 रंगरूप ।

सं० सौभरि (पु० एक ऋषि का
 नाम जिसने मान्धाता राजा की
 पचास लड़कियों से ब्याह किया
 था जिसकी कथा विष्णुपुराण में है
 ये ऋषि यमुनानदी के तीर पर बैठे
 तप कर रहे थे वहाँ गरुड़ ने जाय
 एक मञ्जरी मार कर खाई तब
 ऋषि ने गरुड़ को शाप दिया कि
 जो फिर इस जगह आवेगा जीता
 न बचेगा ।

सं० सौभद्र भा० पु० सुभद्रा का
 पुत्र, अभिमन्यु ।

सं० सौभाग्य (सुभग) भा० पु०
 भाग्यवानी, अच्छा भाग्य, २ ज्यो-
 तिष में चौथा योग ।

सं० सौमित्र (सुमित्रा) भा० पु०
 सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण, श्रीराम-
 चन्द्र का छोटा भाई ।

सं० सौम्य पु० बुध, चन्द्र, गु०
 सुशील, सुन्दर, मनोहर, प्रियदर्शन,
 क्रोधरहित, मुतहम्मिल, बुर्दवार ।

सं० सौम्यता भा० स्त्री० सुशीलता,
 सीधापन, संजीदगी ।

सं० सौर (सूर=सूर्य) गु० सूर्य-
 सम्बन्धी, सूरज का (महीना
 दिन आदि), २ पु० शनैश्चर ।

सं० सौरभेय } भा० पु० सुरभीपुत्र
 सौरभेयी } वृषभ, बैल, स्त्री०
 गौ, वशिष्ठ की धेनु, नन्दनी ।

प्रा० सौरज (सं० शौर्य) भा० पु०
 शूरमापन, शूरवीरता, बहादुरी ।

सं० सौरभ (सुरभि) पु० सुगन्ध,
 खुशबू, महक, २ केशर, ३ आम
 का पेड़ ।

सं० सौरि भा० पु० शनैश्चर, कृष्ण,
 वसुदेव ।

सं० सौवर्चल पु० कालानमक ।

सं० सौहार्द भा० पु० मित्रता, दोस्ती ।

सं० स्कन्ध (स्कन्द=ऊपर जाना)
 पु० कंधा, कांधा, २ पेड़ की धड़,
 मोटे गुद्दे, ३ पुस्तक का एक भाग
 जिसमें कई अध्याय हों, ४ वाणासुर

का बेटा, ५ व्यूह, ६ युद्धसमूह ।
 सं० स्खलित (स्खल्=गिरना) क०
 पु० च्युत, गिरा, गिर पड़ा ।
 सं० स्तन (स्तन्=शब्द करना) पु०
 चूंची, छाती, पयोधर ।
 सं० स्तनयित्नु पु० गर्जना, विद्युत्,
 विजली, मृत्यु, रोग ।
 सं० स्तब्ध (स्तम्भ=रोकना) गु०
 रुका हुआ, ठहरा हुआ, मूर्ख,
 सुस्त, नम्रतारहित ।
 सं० स्तब्धत्व पु० अदब, दबाव ।
 सं० स्तम्भ (स्तम्भ=ठहरना, रो-
 कना) पु० खंभा, थंभा, थंभ, थूनी,
 रुकाव, अटकाव ।
 सं० स्तम्भन भा० पु० रोकना, जड़
 करना ।
 सं० स्तव (स्तु=सराहना) पु० स्तुति,
 बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ, सराह ।
 सं० स्तवक पु० गुच्छा, गुलदस्ता ।
 सं० स्तवन भा० पु० स्तुति, प्रशंसा ।
 सं० स्तिमित गु० अचल, स्थिर ।
 सं० स्तुति (स्तु=सराहना) स्त्री०
 सराह, बड़ाई, तारीफ, प्रशंसा, २
 भजन ।
 सं० स्तुत्य र्म० प्रशंसित, स्तवनीय,
 तारीफ के लायक ।
 सं० स्तेन (स्तेन=चोरी करना)
 पु० चोर, चौर, दुज्द ।
 सं० स्तेय पु० चौरकर्म, चोरी, दुज्दी ।
 सं० स्तोता क० पु० प्रशंसक, ता-

रीफ करनेवाला ।
 सं० स्तोत्र (स्तु=सराहना) पु०
 सराह, बड़ाई, स्तुति ।
 सं० स्तोम पु० पुञ्ज, समूह, २ यज्ञ,
 स्तुति, ३ मस्तक, ४ लोहदण्ड ।
 सं० स्त्री (स्तै=इकट्ठा होना) स्त्री०
 लुगाई, नारी, औरत ।
 सं० स्त्रीधन पु० दायज, महेर ।
 सं० स्थपति बृहस्पति, यज्ञकर्ता,
 शिल्पी ।
 सं० स्थल (स्थल्=ठहरना) पु०
 सूखी धरती, खुशकी जगह ।
 सं० स्थाणु पु० शिव, २ पीपल, ३
 गु० मोटा, ४ ढुंडावृक्ष, पत्ररहितवृक्ष ।
 सं० स्थान (स्था=ठहरना) पु० जगह,
 घर, ठौर, ठाँव, ठिकाना ।
 सं० स्थानापन्न (स्थान + आपन्न)
 क० पु० जगहपानेवाला, एवजी,
 क्रायममुकाम ।
 सं० स्थापन (स्था=ठहरना) पु०
 बैठाना, रखना, धरना, ठहराना,
 जमाना ।
 सं० स्थापित (स्था=ठहरना) र्म०
 बैठाया हुआ, ठहराया हुआ, जमाया
 हुआ, स्थापन किया हुआ ।
 सं० स्थायिन् क० पु० ठहरनेवाला ।
 सं० स्थाल पु० थाला, थारा ।
 सं० स्थाली स्त्री० बटलोई, पाक-
 पात्र, हांडी ।
 सं० स्थावर (स्था=ठहरना) गु०

अचल, अटल, ठहरा हुआ, जो चले नहीं, जैसे पेड़, पत्थरआदि ।	छुहावट, परसना, २ एकतरह की बीमारी जो छूने से लगती है ।
सं० स्थिति (स्था=ठहरना) भा० स्त्री० ठहराव, ठिकाव, वास, रहना, पालन, आसन, मर्यादा, सीमा ।	सं० स्पष्ट (स्पृश्=देखना या प्रकट होना) गु० साक, खुला खुला, शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रकट ।
सं० स्थिर (स्था=ठहरना) गु० ठहरा हुआ, अचल, अटल, दृढ़, २ शान्त, ठंडा, कोमल ।	सं० स्पृष्ट (स्पृश् + त, स्पृश्=छूना) स्म० छुआगया, कृतस्पर्श ।
सं० स्थिरपूँजी स्त्री० स्थिरधन, जायदाद गैरमन्कूला ।	सं० स्पृहा (स्पृह=चाहना) स्त्री० चाह, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाष ।
सं० स्थूल (स्थूल्=मोटा होना) गु० मोटा, फूला हुआ, बड़ा ।	सं० स्पृही क० इच्छान्वित, स्वा- हिशमन्द ।
सं० स्नातक (स्ना=न्हाना) क० पु० गृहस्थब्राह्मण, व्रती, स्नानकारी ।	सं० स्फटिक (स्फट्=फटना या खुलना) पु० बिलौर का पत्थर ।
सं० स्नान (स्ना=न्हाना) गु० न्हाना ।	सं० स्फुटन (स्फुट्=विकसना) भा० पु० खिलना, फूटना ।
सं० स्नायी क० पु० स्नानकर्ता, न्हानेवाला ।	सं० स्फुटित क० विकसित, प्रफुल्लित ।
सं० स्नायु स्त्री० नस, रग ।	सं० स्फोटक (स्फुट्=फूटनिकलना) फोड़ा, चेचक ।
सं० स्निग्ध गु० चिकण, चिकना, मेहरवान, दयालु ।	सं० स्फूर्ति (स्फुर्=हिलना) स्त्री० हिलाव, धड़धड़ाहट, स्फुरन ।
सं० स्नेह (स्निह्=प्यार करना या चिकना होना) पु० प्यार, छोह, मोह, प्रेम, नेह, मिताई, २ तेल आदि चिकनी चीज, ३ चिकनाई ।	सं० स्म अव्य० पूर्वसमय, व्यतीत- काल, गुजरगया ।
सं० स्पन्द संकल्प विकल्प, आगा पीछा, पशोपेश ।	सं० स्मर (स्मृ=याद करना) पु० कामदेव, २ याद, स्मरण ।
सं० स्पर्द्धा (स्पर्द्ध=डाह करना) स्त्री० डाह, जलन, हिस्का, द्वेष, विरोध, वैर, ईर्ष्या ।	सं० स्मरण (स्मृ=याद करना) पु० चिन्तन, याद, सुध, चेत, स्मृति ।
सं० स्पर्श (स्पृश्=छूना) पु० छूना,	सं० स्मरहर (स्मर=कामदेव, हर= नाश करनेवाला, हु=नाशकरना) पु० शिव, महादेव ।
	सं० स्मारक (स्मृ + अक, स्मरण

करना) क० पु० स्मृतिज्ञाता,
स्मरण करानेवाला ।
अ० स्मालकाजकोर्ड अल्पन्याया-
लय, अदालतखफीफा ।
सं० स्मित (स्मि=थोड़ा हँसना)
पु० ईषद्धास्य, थोड़ाहँसना, मुस-
क्याना, मुसकिराना, गु० विक-
सित, विस्मित ।
सं० स्मृति (स्मृ=याद करना) स्त्री०
याद, सुमिरन, स्मरण, २ धर्म-
शास्त्र, जैसे मनुस्मृति और याज्ञ-
वल्क्यस्मृति आदि ।
सं० स्यन्दन (स्यन्द=जाना) पु०
रथ, २ सारथी, ३ जल, ४ वृक्ष ।
सं० स्यात् अव्य० विधीर्मान, २
समीचीन, ३ शायद ।
प्रा० स्थानपन (स्थाना) भा० पु०
स्त्री० बुद्धिमानी, चतुराई, निपु-
णता, प्रवीणता ।
प्रा० स्थाना सियाना शब्द को देखो ।
प्रा० स्थार (सं० शृगाल) पु०
स्थाल } गीदड़ ।
सं० स्रक् (सृज्=वनाना) स्त्री०
माला, पुष्पमाला ।
प्रा० स्रवना (सं० स्रवणा, स्रु=व-
हना) क्रि० अ० चूना, बहना,
गिरना ।
सं० स्रोतः (स्रु=बहना) पु० सोता,
बहाव, धारा, नाला ।
सं० स्व सर्वना० अपना, आप,

आपका, निज, निजका, २ पु०
धन, ३ जाति ।
सं० स्वकीय पु० अपना, निजका ।
सं० स्वकीया (स्व=अपना) स्त्री०
अपनी ब्याही हुई स्त्री ।
सं० स्वच्छ (सु=बहुत, अच्छ=साफ)
गु० निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल, साफ़ ।
सं० स्वच्छता (स्वच्छ) भा० स्त्री०
निर्मलता, सफाई, उज्ज्वलता ।
सं० स्वच्छन्द (स्व=अपनी, छन्द=
इच्छा या मतलब) गु० अपनी चाह
के अनुसार चलनेवाला, आप
मौजी, स्वाधीन, इच्छानुसार ।
सं० स्वच्छन्दता स्त्री० स्वतन्त्रता,
स्वेच्छाचारिता, खुद मुस्तारी ।
सं० स्वतन्त्र (स्व=अपने, तन्त्र=वश)
गु० स्वाधीनता, अपने वश ।
सं० स्वतन्त्रता (स्वतन्त्र) स्त्री०
स्वाधीनता ।
सं० स्वतः (स्व) क्रि० वि० आपसे,
आपसे आप, आपही, स्वभाव से ।
सं० स्वत्वस्थापित करना कबजा
करना, दखल करना ।
सं० स्वत्वापहरण भा० पु० बेद-
खली ।
सं० स्वधर्म (स्व + धर्म) पु० अपना
धर्म, अपना काम, (जैसे वेदशास्त्र
पढ़ना-पढ़ाना ब्राह्मणों का धर्म,
देश का प्रबन्ध करना राजपूतों का
धर्म, खेती बनिज करना वैश्यों का

धर्म और नौकरी चाकरी करना शूद्रों का धर्म है) ।	सं० स्वर (स्तृ=शब्द करना) पु० स्वर्ग, आकाश ।
सं० स्वधा (स्वद्=स्वाद लेना या स्व=आप, धा=रखना या धे=पीना) अव्य० पितरों को जब पिएड देते हैं तब यह शब्द बोलकर पिएड देते हैं, २ स्त्री० दुर्गा, देवी, माया ।	सं० स्वरापगा (स्वः=स्वर्ग, आपगा=नदी) स्त्री० आकाशगङ्गा ।
सं० स्वप्न (स्वप्=सोना) पु० सपना, नींद में जो देखा जाय ।	सं० स्वरित गु० उदात्तानुदात्तगुक्त अर्थात् स्वरों की ऊँची नीची आवाज ।
सं० स्वभाव (स्व + भाव) पु० प्रकृति, देव, वान, सुभाव, आदत्त, खू ।	सं० स्वरूप (स्व + रूप) पु० अपना रूप, २ छवि, शोभा, सुन्दरता ।
सं० स्वयम् (स्व या सु=अच्छी तरह से, अय्=जाना) अव्य० आप, निज, अपना, आपसे ।	सं० स्वर्ग (स्वर, गै=गाना या कहलाना, अर्थात् जो स्वर कहलाता है या सु=अच्छी तरह से, ऋज्=जाना अर्थात् जहाँ अच्छी तरह से जाते हैं या रहते हैं) पु० इन्द्रलोक, देवताओं के रहने की जगह, आकाश ।
सं० स्वयंवर (स्वयम्=आपसे, वृ=पसन्द करना) पु० स्त्री का आप से पतिको पसन्द करना ।	सं० स्वर्गीय } (स्वर्ग) गु० स्वर्ग का । स्वर्ग्य }
सं० स्वयम्भू } (स्वयम्=आप से, स्वयम्भू } भू=पैदा होना) पु० ब्रह्मा, आपसे पैदा होनेवाला ।	सं० स्वर्ण (सु=अच्छा, अर्ण या वर्ण=रंग, जिसका रंग अच्छा है या सु=अच्छी तरह से, ऋण या ऋ=जाना) पु० सोना, कञ्चन, कनक, हेम, बहुत मोल की धातु ।
सं० स्वयंसिद्ध (स्वयम्=आपसे, सिद्ध=बना हुआ) गु० आपही सच, जो आपही से पक्का ठहराया जाय ।	सं० स्वर्णकार (स्वर्ण=सोना, कार=करना) पु० सोने का काम करने वाला, सुनार ।
सं० स्वर (स्तृ=शब्द करना) पु० शब्द, आवाज, २ वे अक्षर जो आपसे बोले जायँ और जिनके मिलने से व्यञ्जन भी बोले जायँ, ३ गानविद्या में तान सुर आदि ।	सं० स्वल्प (सु=बहुत, अल्प=थोड़ा) गु० बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, किञ्चित्, जरा ।
	सं० स्वस्ति (सु=अच्छा, भला, अस्=होना) अव्य० कल्याण,

- मङ्गल, अच्छा हो, भला हो, २
ऐसाही हो, तथास्तु ।
- सं० स्वस्तिवाचन (स्वस्ति=कल्याण,
वाचन=कहना, वच्=कहना) पु०
किसी अच्छे काम के शुरूआ में
किसी तरह का बिगाड़ न होने के
लिये और देवताओं की आशिष
पाने के लिये ब्राह्मणों से वेद के
मन्त्र पढ़वाना, शान्ति, मङ्गलाचार ।
- सं० स्वस्तिवाचक (वच् + अक,
वच्=कहना) क० पु० मङ्गलपाठक,
हुआगो ।
- सं० स्वस्त्ययन (स्वस्ति + अयन)
पु० शुभस्थान, शुभ का लाभ,
मङ्गलाचरण ।
- सं० स्वस्थ (स्व=अपने, स्था=रहना)
क० सुखसे रहनेवाला, सावधान ।
- प्रा० स्वांग सवांग शब्द को देखो ।
- सं० स्वागत (सु=अच्छी तरह से,
आगत=आया हुआ) पु० आदर,
सन्मान, सत्कार, कुशल, क्षेम ।
- सं० स्वाति (सु=अच्छी तरह से,
अत्=जाना) स्त्री० पन्द्रहवां न-
क्षत्र, २ चन्द्रमा की एक स्त्री ।
- सं० स्वाद (स्वद् या स्वाद्=स्वाद
लेना) पु० रस, सवाद, चाट,
मजा, लङ्गित, २ मिठास, ३
खुशी, प्यार, प्रीति ।
- सं० स्वादिष्ट { र्म० मजेदार, जाय-
स्वादयुक्त } केदार ।
- सं० स्वादु (स्वद् या स्वाद्=स्वाद
लेना) गु० मीठा, रसीला, सुरस,
मजेदार, २ चाहा हुआ ।
- सं० स्वाधीन (स्व + आधीन)
गु० अपने वश, स्वतन्त्र ।
- सं० स्वाभाविक (स्वभाव) गु०
जो स्वभाव से हो ।
- सं० स्वामित्व (स्वामी) पु० स्वामी-
पन, मालिकियत, अधिकार,
प्रभुता ।
- सं० स्वामी (स्व=धन या आप)
पु० मालिक, धनी, प्रभु, २ भर्ता,
पति, ३ राजा, ४ गुरु, ५ परमहंस ।
- सं० स्वार्थ (स्व=अपना, अर्थ=मत-
लब, अभिप्राय) पु० अपना मत-
लब, अपना काम, अपने लाभ
की चाह ।
- सं० स्वार्थी (स्वार्थ) गु० आप
मतलबी, आप कार्जी, आत्मपा-
लक, खुद गरज ।
- सं० स्वास्थ्य (स्वस्थ) भा० पु०
आरोग्य, तन्दुरुस्ती, संतोष, सुख ।
- सं० स्वाहा (सु=अच्छी तरह से,
आ=सब ओरसे, हे=बुलाना)
अव्य० होम या यज्ञ करते समय
जब देवताओं को बलि देते हैं तब
यह शब्द बोलते हैं, २ स्त्री० आग
की स्त्री, ३ देवी, दुर्गा, माया ।
- सं० स्वीकार (स्व=आप या अपना,
कृ=करना) पु० अङ्गीकार, मानना,

हांमी, हां, मंज़ूर, कबूल ।
 सं० स्वेच्छा (स्व + इच्छा) स्त्री०
 अपनी चाह, स्वाधीनता ।
 सं० स्वेद (श्विद्=पसीना होना)
 पु० पसीना, पसेव, प्रस्वेद, ताप,
 गर्मी ।
 सं० स्वेदज (स्वेद=पसीना या गर्मी,
 जन्=पैदा होना) पु० चिलुआ,
 जुई आदि छोटे छोटे जानवर जो
 पसीने से या भाफ अथवा गर्मी
 से पैदा होजाते हैं ।
 सं० स्वैर (स्व + ईर्=जाना) पु०
 स्वेच्छा, यथेच्छा, स्वतन्त्र, स्व-
 च्छन्द ।
 सं० स्वैरिणी (स्वैर + इन् + ई)
 स्त्री० कुलटा, स्वेच्छाचारिणी ।
 सं० स्वैरन्ध्री { (स्वैर + न्ध्र + ई)
 सैरन्ध्री } क० स्त्री० पराये घर
 में रहनेवाली, २ शिल्पकारिणी ।
 सं० स्वैरी (स्वैर + ई) क० स्त्री०
 स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारिणी ।
 सं० ह (हा=छोड़ना या जाना) पु०
 शिव, २ पानी, ३ आकाश, ४
 स्वर्ग, ५ मङ्गल, ६ लोहू, ७ वि०
 बो० हाथ हो, हाहा, ८ पद पूरा
 करने के लिये, ९ सम्बोधन
 के लिये, १० नियोग, ११ क्षेप,
 फेंकना, १२ निग्रह, १३ प्रसिद्ध ।
 प्रा० हँकाना (हांकना) क्रि० सं०

निकाल देना, चलाना, हांकना ।
 सं० हङ्कार (हम्=ऐसा क्रोध का
 शब्द, कृ=करना) पु० हांक,
 पुकार, चिल्लाहट, २ निकालना,
 हांकना ।
 प्रा० हंडा (सं० हण्ड, हन्=मारना)
 पु० ताँवे पीतल का अथवा मिट्टी
 का बड़ा बरतन, कड़ाह ।
 प्रा० हंडा फोड़ना बोल० भेद
 खोल देना, राज खोल देना ।
 सं० हंस (हन्=मारना या जाना
 अथवा हस्=हँसना) पु० एक
 तरह के पखेरू जो पानी के सरो-
 वरों में रहते हैं, २ आत्मा, जीव,
 ३ परमात्मा, ब्रह्म, ४ नृप, ५
 योगी, ६ तुरङ्ग, श्वेत, सफेद ।
 सं० हंसक क० पु० पादकटक,
 बिलुआ, घुंगुरू ।
 प्रा० हंसगमनी { (सं० हंसगामि-
 हंसगवनी } नी, हंस, गामिनी
 =चलनेवाली, गम्=जाना, च-
 लना) स्त्री० जिस स्त्रीकी चाल
 हंस की सी हो ।
 प्रा० हँसना (सं० हसन, हस्=हँ-
 सना) क्रि० अ० हँसी करना,
 मुसुकुराना, ठट्ठा करना ।
 प्रा० हँसमुख (सं० हास्यमुख) गु०
 जिसके मुँहपर हँसी खुशी जानी
 जाय, मगन, आनन्दी, हँसनेवाला ।

प्रा० हँसा पु० } (सं० हास्य)

हँसी स्त्री० } हाँसी, मुसकुरा-
हट, खुशी, खेल, विनोद ।

प्रा० हँसाई (सं० हास्य) स्त्री०

हँसी, ठट्टा, ठठोली ।

प्रा० हँसिया } पु० दर्राँती, दाँत, दाव ।
हँसुआ }

प्रा० हकराना क्रि० स० बुलाना,

पुकारना, बुलवाना, बुलालेना ।

प्रा० हकबकाना क्रि० अ० घब-
राना, व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।

प्रा० हकला गु० तोतला, लड़बड़ा,

जो तुतला कर बोले ।

प्रा० हकलाना क्रि० अ० तुतलाना,

हिचक २ के बोलना, अटक अ-
टक के बोलना ।

प्रा० हक्काचक्का गु० घबराया हुआ,

परेशान, बेहोश, व्याकुल, अचम्भे
में, चकित, विस्मित ।

प्रा० हगना (सं० हट्=भाड़ा फि-
रना) क्रि० अ० भाड़ा फिरना,

जंगलजाना, दिशाजाना, पाखाने
जाना ।

प्रा० हचका } पु० धक्का, भोंक,

हचकोला } टकर ।

प्रा० हचरमचर पु० वाद विवाद,

भूँटा भगड़ा, २ आगा पीछा,
सोच विचार, पशोपेश ।

प्रा० हटकना क्रि० अ० हकबा, अट-
कना, छँकना, क्रि० स० रोकना ।

प्रा० हटनाल (हट=हाट, ताल

=ताला) स्त्री० किसी दुःख अथवा
अन्याय होने से दूकानों को ताला
लगा देना, बाजारबन्ध ।

प्रा० हटना क्रि० अ० पीछे चला

जाना, पीछे फिर जाना, टलना,
चला जाना, अलग हो जाना, २
हार जाना ।

प्रा० हटवा (हाट) पु० तोलने

वाला, कयाल, दूकानदार ।

प्रा० हटाना क्रि० स० दूर करना,

अलग करना, टाल देना, निकाल
देना, सरकाना, पीछे खेंच लेना ।

सं० हट्ट (हट्ट=चमकना) स्त्री० हाट,

दूकान, बाजार ।

प्रा० हट्टाकट्टा पु० बलवान् और

चालाक, संढमुसंड, पोढ़ा, गाढ़ा,
धाकड़, जोरावर ।

सं० हठ (हट्ट=हठ करना) पु० मग-

राई, मचलाई, अड़, जिद्द, बला-
त्कार, जबरदस्ती ।

प्रा० हठकरना } बोल० मग-

हठकीटेकपरहोना } राईसे किसी
बात को नहीं मानना, जिद्द
करना ।

प्रा० हठधर्मी गु० जिद्दी, हठीला ।

सं० हठात् क्रि० वि० बलात्, बल

से, जबरन् ।

प्रा० हठी } (हठ) गु० मगरा,

हठीला } चिड़चिड़ा ।

प्रा० हड़गिला } (सं० हड़=हड़ी,
हड़गीला } गृ=निगलना)

पु० एक पखेरू का नाम जो पाँच फुट ऊँचा होता है और उसके पंख फैलने से पन्द्रह फुट तक नापा गया है ।

प्रा० हड़फूटन पु० हड़ियों में दर्द ।

प्रा० हड़बड़ाना क्रि० अ० घबराना, व्याकुल होना, हकबकाना, जल्दी करना ।

प्रा० हड़बड़ी स्त्री० खलबली, हुल्लड़, बलवा, हौरा ।

प्रा० हड़हड़ाना क्रि० अ० काँपना, थरथराना, २ खड़खड़ाना, धड़-धड़ाना, आवाज होना ।

प्रा० हड़हड़ाहट स्त्री० खड़खड़ा-हट, आवाज ।

प्रा० हड़ी (सं० हड़) स्त्री० हाड़ ।

प्रा० हत् वि० बो० दुर, दुत ।

प्रा० हतना } (सं० हनन, हन्=
हनना) क्रि० स० मारना, मारडालना ।

सं० हत (हन्=मारना) र्मम० मारा हुआ, नष्ट ।

सं० हति (हन्=मारना) स्त्री० मारना, हनना, गुणना ।

सं० हत्या (हन्=मारना) स्त्री० मारना, हिंसा, खून, पाप ।

सं० हताशा (हत + आशा) गु० विआशा, नाउम्मीद ।

क्रा० हत्तुलइम्कान इच्छा पूर्वक, यथासाध्य ।

प्रा० हत्यारा (सं० हत्याकार) क० पु० हत्या करनेवाला, हिंसक, पापी, दुष्टी ।

प्रा० हथ (सं० हस्त) पु० हाथ ।

प्रा० हथकड़ी स्त्री० हाथ की बेड़ी, एक बड़ा भारी लोहे का कड़ा जो कैदियों के हाथ में डालदिया जाता है ।

प्रा० हथखण्डा (हथ=हाथ, खण्डा =ढब) पु० ढब, टेंब, अभ्यास, करतब, चाल, बान, हथौटी ।

प्रा० हथनी (सं० हस्तिनी) स्त्री० हस्तिनी ।

प्रा० हथफेर बोल० अदलाबदली, एरा फेरी, २ छल, फरेब, खोटे रुपये को चालाकी से अच्छे रुपये से बदल लेना ।

प्रा० हथलेवा (हथ=हाथ, लेवा=लेना) पु० व्याह में दुलहा दुल्हिन का हाथ मिला देना, व्याह की एकरीति ।

प्रा० हथवासना क्रि० स० हाथ में लेना, हाथ में पकड़ना ।

प्रा० हथवासे क्रि० वि० हाथ में, अपने अधिकार में ।

प्रा० हथा } (सं० हस्त) पु० वेंटे, हत्था } कबजा, २ बेलचा, खोदनी ।

प्रा० हथिया (सं० हस्त) पु० ज्यो-
तिष में तेरहवां नक्षत्र ।

प्रा० हथियाना (हाथ) क्रि० स०
पकड़ना, हाथ में लेलेना ।

प्रा० हथियार (हाथ) पु० शस्त्र,
२ कलकांठा, औजार ।

प्रा० हथेली (हाथ) स्त्री० हाथ में
बीचकी जगह ।

प्रा० हथौटी (हाथ) स्त्री० चतुराई,
प्रवीणता, होशियारी, गुण, हुनर ।

प्रा० हथौड़ा पु० घन, बड़ा मार्तूल ।

प्रा० हथौड़ी स्त्री० छोटा हथौड़ा ।

सं० हनन (हन् + अन, हन् = मार-
ना) भा० पु० मारना, घात, हिंसा ।

सं० हननीय (हन् + अनीय, हन्
= मारना) र्भ० मारनेयोग्य ।

सं० हनुमान् (हनु = टुंडी, हन् =
नाश करना, मत् = वाला) पु०
श्रीरामचन्द्र का दूत, पवनका पूत,
हनुमन्त, महावीर ।

सं० हन्तव्य (हन् + तव्य) र्भ०
मारने के लायक, हनने योग्य ।

सं० हन्ता क० पु० मारनेवाला,
घातक ।

सं० हन्यमान (हन्य + मान, हन् =
मारना) क० वध्यमान, मारनेवाला ।

सं० ह्य (ह्य या हि = जाना) पु०
घोड़ा, अश्व, तुरंग ।

सं० हर (ह = लेना) पु० शिव,
महादेव, २ आग, अग्नि, ३ गणित-

विद्या में भाजक, भिन्नगणित में
वह अङ्क जो जतलाता है कि एक
पूरी चीज के कितने टुकड़े किये
गये हैं, नसबनुमा ।

प्रा० हर (सं० हल) पु० हल शब्द
को देखो ।

प्रा० हरख { (सं० हर्ष) पु० आनन्द,
हरष { सुख, खुशी, प्रसन्नता ।

प्रा० हरखना { (सं० हर्षण, हर्ष =
हरषना { खुश होना) क्रि०
अ० प्रसन्न होना, खश होना,
फूलना, खिलना, सुखी होना,
आनन्दित होना ।

सं० हरगिरि (हर + गिरि) पु०
महादेव का पहाड़, कैलासपहाड़ ।

सं० हरण (ह = लेना) भा० पु०
जबरदस्ती से किसी की चीज ले-
लेना, लूट, चोरी ।

प्रा० हरता (सं० हर्ता) क० पु० लेने
वाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला,
२ चोर, लुटेरा, ठग ।

प्रा० हरना (हरण) क्रि० स०
लेलेना, जबरदस्ती से लेना,
लूटना, चुराना ।

सं० हरणीय (ह + अनीय, ह =
हरना) र्भ० हार्य, हरणयोग्य ।

प्रा० हरनौटा { (हरिण) पु०
हिरनौटा { हरिण का बच्चा ।

प्रा० हरमुष्टा गु० बली, बलवान्,
हडाकडा ।

प्रा० हरा (सं० हरित्) गु० सबज
सबुज रंग, २ ताजा, नया ।

प्रा० हराना (हारना) क्रि० सं०
थकाना, शिकस्त देना, हरादेना,
जीतना, जीतपाना ।

प्रा० हराचल पु० स्त्री० आगे की
सेना (यह शब्द तुर्की है), २
अगाड़ी, आगा ।

प्रा० हरास (सं० हास) पु० दुःख,
शोक ।

सं० हरि (ह=लेना, दूर करना) पु०
विष्णु, २ इन्द्र, ३ साँप, ४
मैंडक, ५ सिंह, ६ घोड़ा, ७ सूर्य,
८ चाँद, ९ सूगा, सूवा, तोता, १०
वानर, ११ यमराज, १२ हवा,—
(“हरिविष्णवावहाविन्द्रे,

भेके सिंहे हथे रवौ ।

चन्द्रे कीरे सवङ्गे च,

यमे वाते च कीर्तितः”))

१३ ब्रह्मा, १४ शिव, १५ किरण,

१६ मोर, १७ कोयल, कोकिला,

१८ हंस, १९ आग, २० धनुष, २१

पर्वत, २२ गज, २३ कामदेव गु०,

हरा रंग ।

प्रा० हरिअरे गु० हराहरा, २ हरि
को अरे=शत्रु समझना ।

सं० हरिचन्दन पु० देववृक्ष, गोरो-
चन, मलयगिरिचन्दन, सफेद
चन्दन, ज्योत्स्ना, केशर ।

प्रा० हरिचन्द } (हरि=विष्णु,
सं० हरिचन्द्र } चन्द्र=चाँद) पु०

सं० हरिश्चन्द्र } एक बड़े दानी
राजा का नाम जो अपना सत
और धर्म निबाहने के लिये एक
चंडाल के घर दास होकर रहा था ।

सं० हरिजन (हरि=विष्णु, जन=
भक्त) पु० विष्णु का भक्त, भगवान्
का भक्त, २ प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु
का बेटा ।

सं० हरिण (ह=लेना) पु० एक
जानवर का नाम, मृग, मृगा, कु-
रंग, गु० हरा ।

सं० हरिणी स्त्री० मृगी, २ सुवर्ण
की प्रतिमा, हरे रङ्ग की ।

सं० हरित् (ह=लेना मनको) गु०
हरा, सबज, हरियर, पीला, पु०
हरारंग, २ सूर्य का घोड़ा, ३ सिंह,
४ सूर्य, ५ विष्णु ।

सं० हरिताल (हरित्) स्त्री० पीले
रंग की एक धातु ।

सं० हरितालक (हरित्) पु० हरित्
कपोत, हरा कबूतर, शुक, सुग्गा,
नाटक, हरताल ।

सं० हरितालिका स्त्री० भादों सुदी
तीज का स्त्रियोंका व्रत, दुर्वा, दूब ।

सं० हरिद्रा (हरित्=हरा या पीला
रंग, द्रु=जाना) स्त्री० हल्दी ।

सं० हरिद्वार (हरि=विष्णु, द्वार=

दरवाजा अर्थात् जहाँ गङ्गामें न्हाने से वैकुण्ठ मिलता है) पु० एक शहर का नाम जो गङ्गा के तीर पर है वहाँ गङ्गा में न्हाने का बहुतफल है ।

प्रा० हरिपैड़ी (सं० हरिपंक्ति) स्त्री०

हरिघाट, विष्णुघाट, विष्णुपैड़ी ।

सं० हरिप्रिया (हरि + प्रिया) स्त्री०

लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी ।

सं० हरिभक्त (हरि + भक्त) पु०

विष्णु का भक्त, विष्णुउपासक, वैष्णव ।

प्रा० हरिभजन (हरि + भजन)

पु० विष्णु का भजन सेवन या कीर्तन ।

प्रा० हरियल (हरा) पु० एक तरह

का हरा कबूतर ।

सं० हरियान (हरि=विष्णु, यान=

वाहन) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।

प्रा० हरियाली (हरा) स्त्री० हराई,

हरअरी, सबजी ।

सं० हरिवाहन (हरि + वाहन) पु०

विष्णु की सवारी, गरुड़ ।

सं० हरीश (हरि=वानर, ईश=मा-

लिक) पु० वानरों का राजा सुग्रीव ।

प्रा० हरु {

हरुअ { गु० हलका ।

प्रा० हरुआई स्त्री० हलकाई, हल-

कापन ।

प्रा० हड़ी { (सं० हरीतकी, हरि

हड़ें } =हरा वा पीलारंग,

हरा { इत + क + ई=पाने-

हरें } वाला) स्त्री० एक

दवाई का नाम ।

सं० हर्त्तव्य (ह + तव्य, ह=लेना)

र्म० लेनेयोग्य ।

सं० हर्त्ता (ह=लेना) क० पु०

लेनेवाला, हरनेवाला, दूर करने वाला, पु० चौर ।

सं० हर्म्य पु० अट्टालिका, अटारी,

प्रासाद, अण्डा, ऊपर का कोठा ।

सं० हर्ष (हप्=प्रसन्न होना) पु०

आनन्द, सुख, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० हर्षण (हप् + अन, हप्=प्रसन्न

होना) भा० पु० आनन्द, ज्यो-
तिष का एक योग ।

सं० हर्षित (हर्ष) क० आनन्दित,

प्रसन्न, खुश, मगन, प्रफुल्लित,
आह्लादित ।

सं० हल (हल्=चलना) पु० हर,

नाङ्गल, लाङ्गल, एक चीज जि-
ससे किसान बीज बोते समय

धरती को साफ करते हैं, २ व्यञ्जन
अक्षर ।

सं० हलभूति स्त्री० कृपिष्ठति, खेती

का धन्या ।

प्रा० हलका गु० हौला, हलुक,

फुलका, २ सस्ता, ३ ओझा,
नीच, अधम, तुच्छ ।

प्रा० हलका करना बोल० बोझ उतारना, घटाना, कम करना, २ बे आबरू करना, हेठा करना, पानी उतारना, लतारना, बेइज्जत करना ।	प्रा० हलरावना क्रि० स० बहलाना, बधे को खेलाना ।
प्रा० हलकाजानना बोल० तुच्छ समझना, अयोग्य जानना ।	प्रा० हलवाहा (हल) क० पु० जोता, हल जोतनेवाला ।
प्रा० हलकाना क्रि० स० सहारा देना, उकसाना ।	प्रा० हलहलाहट स्त्री० जर से या डर से काँपना ।
प्रा० हलकोरना क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, समेटना, २ लहराना, फहराना, मौजमारना ।	सं० हलायुध (हल + आयुध) पु० बलराम जिनका हथियार हल है, बलदेव, हलधर ।
प्रा० हलचल पु० खलबली, हड़बड़ी, धवराहट, डर, हुल्लड़, बलवा ।	सं० हलाहल पु० विष, जहर, माहुर, बड़ा जहर ।
प्रा० हलचलमचना बोल० हुल्लड़ होजाना, गदर होना ।	सं० हली (हल + अ + इन्, हल् = जोतना) क० पु० लराम ।
प्रा० हलदिया (हल्दी) पु० एक तरह का जहर, २ कँवलरोग या पाण्डुरोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़जाता है पीलियारोग, २ गु० पीलारंग, हल्दी सा रंग ।	प्रा० हलोरा } (सं० हिल्लोल, हि- हिलोरा } लोल=डोलना, हि- लना) पु० लहर, मौज, तरङ्ग ।
प्रा० हल्दी (सं० हरिद्रा) स्त्री० एक तरह का मसाला ।	प्रा० हल्ला (अ० हमला) पु० धावा, चढ़ाई, रौला, हुल्लड़ ।
सं० हलधर (हल, धृ=रखना) पु० बलदेव, बलराम ।	सं० हवन (हु=होम करना) पु० होम, यज्ञ, आहुति ।
प्रा० हलपना क्रि० अ० तड़फड़ाना, तड़फना, लोट पोट होना, २ जाड़े की तपसे काँपना ।	सं० हविः } (हु=होमना) पु० हविष्य } स्त्री० घी, तिल, चावल आदि होम की सामग्री ।
प्रा० हलफल स्त्री० शिष्टाचार, सन्मान, आदर, २ हड़बड़ी, हलचल ।	सं० हव्य (हु=होमना) पु० देवता को बलि या भेंट, नैवेद्य ।
	सं० हविष्यान्न (हविष्य + अन्न) पु० तिल, चावल, जवादि ।
	सं० हविर्भुज् पु० देवता, अग्नि ।
	सं० हस्त (हस्=हँसना) पु० हाथ, २ हाथी की सूंड, १ तेरहवां

नक्षत्र, ४ कोहनी से लेकर बीचकी अंगुली के सिरे तक का नाम ।

सं० हस्तगत र्म ० हाथ में आया ।

सं० हस्तामलक (हस्त=हाथ, आमलक=आँवला, हाथ में आँवले के ऐसे अर्थात् बहुत सहज या हस्त=हाथ, अमल=निर्मल, क=पानी अर्थात् हाथमें निर्मल पानी की बूंद की तरह) गु० सहज, सुगम, वेमिहनत, २ पु० एक ग्रन्थ का नाम ।

सं० हस्तिदन्त (हस्ती + दन्त) पु० हाथीदाँत ।

सं० हस्तिनापुर (हस्तिन्=एक राजा, पुर=नगर) पु० पुरानी दिल्ली जिसको हस्तिन् नाम राजा ने बसाई थी और जो राजा युधिष्ठिर और उसके भाइयों की राजधानी थी, उसके खण्डहरे और चिह्न दिल्ली से ५७ मील ईशान कोनको गङ्गा की पुरानी नहर पर अवतक हैं ।

सं० हस्तिनी (हस्तिन्) स्त्री० हथिनी ।

सं० हस्ती (हस्तिन्, हस्त=सूँड़) पु० हाथी, गज, मतंग, नाग ।

सं० हस्त (हस् + र, हस्=हँसना) क० मूर्ख, अज्ञ ।

प्रा० हस्ती स्त्री० गले की हड्डी, २ गले में पहनने का सोने या चाँदी का एक गहना ।

सं० हा (हा=छोड़ना या जाना)

वि० बोल० हाय, आह, ओह, दुःख, शोक, पीड़ा, विपाद, प्रसिद्ध, पादपूरण, विस्मय, कुत्सा, निन्दा, यथा "हाहातिकष्टः सुवीरप्रवासः" वीरों में बसना अतिकष्ट है ।

अं० हाईकोर्ट (हाई=बड़ी, कोर्ट=कचहरी) बृहन्न्यायालय ।

अं० हाउस आफ लार्ड्स मजमा मुदबिरान आला, महान् राज्य-प्रबन्धकों की सभा ।

अं० हाउस आफ कामन्स मजमा मुदबिरान आम, सर्वसाधारण राज्यप्रबन्धकों की सभा ।

प्रा० हां (सं० आं, अम्=जाना) क्रि० वि० मान लेने का शब्द, स्वीकार, अङ्गीकार, अंगेज, ठीक ।

प्रा० हांक (सं० हंकार) स्त्री० पुकार, जोर से पुकारना, ललकार, किलकारी, चिल्लाहट, गूँज, गर्ज, २ निकालना ।

प्रा० हांक मारना बोल० जोर से पुकारना, चिल्लाना, ललकारना ।

प्रा० हांकना (हङ्कार) क्रि० स० पुकारना, ललकारना, २ निकालना ।

सं० हाङ्गर (हा=दुःख, अङ्ग=शरीर, रा=लेना अर्थात् जो दुःख देने के लिये । दमीको ले लेता या पकड़ लेता है) पु० मगरमच्छ ।

प्रा० हांड़ी } (सं० हण्डी, हन्=
हांडी } मारना या फोड़ना)

स्त्री० एक तरह का मिट्टी का बरतन।

प्रा० हांपना } क्रि० अ० हफहफाना,
हांपना } हाँकना, ऊँची सांस
लेना ।

प्रा० हांस (सं० हंस) पु० हंस ।

प्रा० हांसी (सं० हास्य) स्त्री०
हँसी, मसखरी, ठट्टा ।

प्रा० हांहीं } क्रि० वि० हाँ, ठीक,
हांहँ } सच, सही ।

अ० हाकिम प्रशास्ता, हुक्म करने
वाला ।

प्रा० हाट } (सं० हट्ट) स्त्री० दूकान,
हाठ } लेन देन की जगह,
बाज़ार, चौक, कटरा ।

सं० हाटक (हट्ट=चमकना) पु०
सोना, कश्चन, धतूरा, गु० सोने
का बना हुआ, सोने का ।

प्रा० हाटकपुर (हाटक + पुर) पु०
सोने का नगर, लङ्का ।

प्रा० हाड़ (सं० हड्ड) पु० हड्डी ।

प्रा० हात } (सं० हस्त) पु० शरीर
हाथ } का एक अङ्ग, हस्त,
कर, २ कोहनी से लेकर बीच की
अंगुली के सिरे तक का नाप,
३ अधिकार, वश, कबज़ा ।

प्रा० हाथ आना } बोल० अपने अ-
हाथ में आना } धिकार में आना,
कबजे में आना, मिलना, हाथ

लगना, मिलजाना ।

प्रा० हाथ उठाना बोल० छोड़देना,
किसी काम के करने से रुकजाना,
२ हाथ शिर पर लगा के सलाम
करना, ३ मारना, ४ भीख देना,
खैरात वाँटना ।

प्रा० हाथ कमर पर रखना बोल०
बहुत निबल होना, बहुत कमजोर
होना ।

प्रा० हाथ कानों पर रखना बोल०
अचम्भेमें होना, २ झटपट इन्कार
कर जाना ।

प्रा० हाथ खैचना बोल० छोड़ना,
मुँह फेरना, दूर भागना, किनारे
होना, अलग होना ।

प्रा० हाथ चाटना बोल० किसी
अच्छे खाने का बहुत स्वाद लेना
या अच्छे खाने को बहुत खुशी से
खाना ।

प्रा० हाथ जोड़ना बोल० विनती
करना, विधियाना ।

प्रा० हाथ डालना बोल० किसी
काम में अपना अधिकार करना,
दस्तअंदाज़ी करना, दखल क-
रना, दबाना ।

प्रा० हाथ धोना बोल० निराश
होना, नाउम्मीद होना ।

प्रा० हाथ पड़ना बोल० अपने अ-
धिकार में आना, कबजे में आना,
हाथ लगना ।

प्रा० हाथ पत्थर तले दबना बोल०

बेवश होना, कुछ नहीं कर सकना ।

प्रा० हाथ पसारना बोल० माँगना,
चाहना ।

प्रा० हाथ पाँव फूल जाना बोल०
घबरा जाना, काम करने से हिच-
किचाना ।

प्रा० हाथ पाँव मारना बोल० मि-
हनत करना, कोशिश करना, २
घबरा जाना, वृथा परिश्रम करना ।

प्रा० हाथ फेंकना बोल० पटा या
लकड़ी चलाना, २ मुफ्त का
माल लेना ।

प्रा० हाथ फेरना बोल० प्यार क-
रना, दुलार करना, छोड़ करना,
गले लगाना, फुसलाना, शाबाशी
देना ।

प्रा० हाथ बन्द होना बोल० काम
में बहुत लगा रहना, कुछ फुर्सत
नहीं पाना, २ गरीब होना, खाली
हाथ होना, तिहीदस्त होना ।

प्रा० हाथ बढ़ाना बोल० किसी
चीजके मिलनेके लिये कोशिश
करना, २ दूसरे आदमी के माल
असबाब पर दखल करना ।

प्रा० हाथ बाँधना बोल० हाथ जो-
ड़ना, बिनती करना ।

प्रा० हाथ बैठना बोल० जमना,
किसी हुनर में खूब अभ्यास होना ।

प्रा० हाथ भरना बोल० हाथ थक

जाना ।

प्रा० हाथ मलना बोल० पछतावा
करना, सोच करना, फिक्र करना ।

प्रा० हाथ मारना बोल० वचन देना,
ताली मारना, २ पाना, लेलेना,
छीन लेना, लूट लेना, ३ तलवार
से घायल करना, वार करना ।

प्रा० हाथ मिलाना बोल० बराबरी
का दावा करना, २ कुश्ती लड़ने
को तैयार होना ।

प्रा० हाथ में रखना बोल० अपने
अधिकार में रखना, अपने अख-
तियार में रखना, वश में होना ।

प्रा० हाथ लगना बोल० हाथ आना,
मिलना, पाना, हासिल होना ।

प्रा० हाथ लगाना बोल० हाथ र-
खना, बूना, २ भिड़कना, सजा
देना, ३ किसी काम में लगना,
किसी काम को शुरू करना ।

प्रा० हाथ समेटना बोल० देनेसे
हाथ को रोक लेना ।

प्रा० हाथ पाई करना } बोल० धक्का
हाथ बाही करना } धक्का करना,
धौल धप्पा चलाना, लात मुक्ती
मारना, आपस में लड़ना ।

प्रा० हाथो हाथ करना बोल० सब
मिलके करना ।

प्रा० हाथों हाथ बोल० तुरन्त, भट-
पट, तुरत, फुरत ।

प्रा० हाथों हाथ ले जाना बोल० भट-

पट लेजाना, तुर्वफुर्त भपट लेना ।
 प्रा० हाथा (सं० हस्त) पु० हाथ,
 २ अधिकार, वश ।
 प्रा० हाथाजोड़ी स्त्री० एक पौधे
 का नाम ।
 प्रा० हाथी (सं० हस्ती) पु० एक
 जानवर का नाम, मत्तंग, गज ।
 प्रा० हाथीदाँत (सं० हस्तीदन्त)
 पु० हाथी का दाँत ।
 प्रा० हाथीवान् पु० महावत् ।
 प्रा० हान { (हा=त्यागना, छोड़ना)
 सं० हानि { स्त्री० घटी, टोटा, नुकसान ।
 प्रा० हाय { (सं० हाहा) वि० बोल०
 हायहाय { आह, ओह, २ स्त्री०
 दुःख, पछतावा ।
 सं० हायन पु० स्त्री० वर्ष, वत्सर,
 वर्ष का दिन ।
 प्रा० हायमारना बोल० पछताना,
 दुःख करना, आह मारना, आह
 भरना, किसी की उन्नति देख
 कर कुढ़ना ।
 प्रा० हायहायकरना बोल० रोना,
 पीटना, दुःख से रोना ।
 सं० हार (ह=लेना) पु० मोती
 अथवा फूलों की माला ।
 प्रा० हार (सं० हारि, ह=लेना)
 स्त्री० शिकस्त, पराजय, घटी, २
 पु० बेलों का झुण्ड, ३ चरने की
 जगह, चरी, चरागाह ।
 सं० हारक (ह+अक, ह=लेना)

क० पु० कितव, चोर, भाजकाङ्क,
 चुरानेवाला ।
 प्रा० हारना (सं० हरण) ह=लेना
 या पकड़ना, क्रि० अ० थकना,
 शिकस्त खाना, पराजित होना, २
 खेल खोना, खेल में मात होना ।
 प्रा० हारमानना { बोल० निराश
 हारमानलेना { होके छोड़देना ।
 सं० हारित र्म० हरगया, छीना
 गया, जबरदस्ती से लिया गया ।
 सं० हार्दिक दुःख भा० पु० चित्त
 ताप, दिली सदमा ।
 सं० हारी क० पु० चोर, ठग ।
 सं० हार्य र्म० हर्तव्य, चुरानेलायक ।
 सं० हाव (हे=बुलाना या कामदेव
 को उठाना) पु० नखरा, चोंचला,
 तावभाव, हावभाव, रावचाव ।
 सं० हावभाव (हाव+भाव) पु०
 रावचाव, रंगरस, दुलार प्यार,
 नखरा, चोंचला ।
 सं० हास्य (हस्=हँसना) पु० हँसी,
 हाँसी, खुशी, कौतुक, खेल, ठट्ठा ।
 सं० हाहा (हा=छोड़ना सुख को)
 क्रि० वि० हाय हाय, आह, ओह,
 २ अचम्भा, वाह, वाहवाह ।
 सं० हाहाकार (हाहा=हाय हाय,
 कृ=करना) पु० हाय हाय करना,
 घबराहट, २ लड़ाई का शब्द, हुल्लाह,
 कोलाहल, शोक का शब्द ।
 प्रा० हाहाहीही स्त्री० हँसी, हँसना ।

प्रा० हाहाहीहीकरना बोल० हँ-
सना, दाँतनिकालना ।

प्रा० हि अव्य० हेतु, निश्चय, अव-
धारण, निकालना, विशेष, प्रश्न,
सम्भ्रम, हेतु, उपदेश, शोक, अ-
सूया, निन्दा, अवश्य ।

प्रा० हिंडोल (सं० हिन्दोल, हि-
छोल=हिलना) स्त्री० एक राग
का नाम जो वसन्त ऋतु में भार
के समय गाया जाता है ।

प्रा० हिंडोला (सं० हिन्दोल,
हिछोल=हिलना) पु० पलना,
भूला, २ गीत जो भूलते समय
गाया जाता है ।

सं० हिंसक } (हिंस् + अक, हिंस्
हिंस्रक } =मारना) क० पु०
मारनेवाला, हिंसा करने वाला,
घातक, अधिक, २ दुर्जन, दुष्ट, पापी,
३ जङ्गली जानवर जैसे बाघ
भेड़िया चीता आदि ।

सं० हिंसन भा० स्त्री० वध करना,
मारना ।

सं० हिंसा (हिंस्=मारना) स्त्री०
मारना, वध, घात, २ नुकसान ।

सं० हिक्का स्त्री० हेचकी, हिचकी,
रोगभेद ।

सं० हिंगु पु० रामठ, हींग ।

सं० हिंगुल (हिंगु एक लालचीज,
ला=लेना) पु० सिन्दूर ऐसी
लालचीज, शिगरफ ।

प्रा० हिचकना क्रि० अ० आगा
पीछा करना, रुकना, दबना,
भ्रमकना, हटना, टलना, ठिठकना ।

प्रा० हिचकाना क्रि० स० धक्का
देना, भोका देना, दिल छोटा
करना, हिम्मत पस्त करना ।

प्रा० हिचकिचाना बोल० संदेह में
पड़ना, दुविधामें होना, आगापीछा
करना, २ हकलाना, लड़बड़ाना ।

प्रा० हिचकी (सं० हिक्का, हिक्=
हिचकी लेना) स्त्री० 'हिच्' ऐसा
शब्द जो गले में से निकलता है ।

प्रा० हिजड़ा पु० नपुंसक, नामर्द ।
सं० हित (हि=जाना या बचना,
अथवा धा=रखना) पु० प्यार,
मित्राई, २ उपकार, भलाई, ३ गु०
उचित, ठीक, योग्य, भला ।

सं० हितकार } (हित=भला, कार
हितकारी } या कारी=करने
वाला, कृ=करना) क० भला करने
वाला, मित्र, सज्जन, उपकारी, हितू ।

प्रा० हितू (हित) क० मित्र, हितकारी ।

सं० हितैषी (हित्=भला, इप्=
चाहना) गु० दूसरे का भला चा-
हनेवाला, परोपकारी, हितकारी ।

सं० हितोपदेश (हित=भला, उप-
देश=शिक्षा) पु० भली शिक्षा,
अच्छी सीख, २ संस्कृत में विष्णु-
शर्मा की बनाई हुई एक पुस्तक जिस
में राजनीति की बातें लिखी हैं ।

प्रा० हिनहिमाना क्रि० अ० घोड़े का बोलना, हँसना ।

प्रा० हिन्द (यह शब्द सिन्धु से निकला है क्योंकि पश्चिमी देशों के लोग 'स' की जगह 'ह' और 'ध' की जगह 'द' बोलते हैं और जब सिकन्दर यहाँ आया तो उसने सिन्धु नदी के इस पार के देश को हिन्द कहा था और आजतक यूनानवाले भी इसे 'इन्द' कहते हैं उसी से 'इण्डिया' शब्द बना है जिस नाम से अंगरेज हिन्दुस्तान को पुकारते हैं) पु० भरतखण्ड, हिन्दुस्तान ।

प्रा० हिन्दी (हिन्द) पु० हिन्दुस्तान का, हिन्दुस्तानी, २ स्त्री० हिन्दुस्तान की बोली ।

प्रा० हिन्दू (हिन्द) पु० हिन्दुस्तान के वासी जो वेदके मत को मानते हैं ।

सं० हिम (हि=जाना या बढ़ना) पु० पाला, वर्ष, शीत, तुषार, गु० ठंढा, जमा हुआ ।

सं० हिमऋतु (हिम + ऋतु) स्त्री० जाड़ा, जाड़े की ऋतु, शीतकाल, सर्दी की ऋतु ।

सं० हिमकर (हिम=ठंढी, कर=किरण) पु० चाँद, २ कपूर ।

सं० हिमकूट पु० शिशिरऋतु, जाड़ा ।

सं० हिमगिरि (हिम + गिरि) पु० हिमालय पहाड़ ।

सं० हिमवत् (हिम=वर्ष, वत्=वाला) पु० हिमालय पहाड़, गु० वर्षवाला, बहुत ठंढा ।

सं० हिमांशु (हिम=ठंढी, अंशु=किरण) पु० चाँद, २ कपूर ।

सं० हिमाद्रि (हिम=वर्ष, अद्रि=पहाड़) हिमालय पहाड़ ।

सं० हिमालय (हिम=वर्ष, आलय=जगह) पु० हिन्दुस्तान का एक पहाड़ जो उत्तर में है और संसार के सारे पहाड़ों से ऊँचा है और जिसको हिमाचल, हिमाद्रि, हिमगिरि भी कहते हैं ।

प्रा० ह्रिय (सं० हृ या हृदय) ह्रिया { पु० हिरदा, मन, ह्रियो } हृदय ।

प्रा० ह्रियाव (सं० हृदय) भा० पु० शूरमापन, शूरवीरता, हिम्मत, साहस ।

प्रा० ह्रियो जब गाय गुरु को बुलाते हैं तब यह शब्द बोलते हैं ।

सं० हिरण (ह=लेना, मन को) हिरण्य { पु० सोना, सुवर्ण ।

सं० हिरण्यकशिपु (हिरण्य=सोना, कशिपु=कपड़ा या शय्या, कश्=शब्द करना) पु० एक दैत्य का नाम जो प्रह्लाद का बाप था जिसको विष्णु ने नृसिंह अवतार लेकर मारा ।

सं० हिरण्यगर्भ (हिरण्य=सोना,

गर्भ=पेट) पु० जिसके पेट में सुवर्ण हो, शालग्राम की मूर्ति, २ ब्रह्मा ।
 सं० हिरण्याक्ष (हिरण्य=सोना, अक्ष=आँख जिसकी आँखें सोने सी लाल चमकती हों) पु० हिरण्यकशिपु का भाई जो फिर कुम्भकर्ण और दन्तवक्र हुआ था ।
 प्रा० हिरद } (सं० हृद् वा हृदय, हिरदा } पु० हिया, हृदय, छाती, मन, अन्तःकरण ।
 प्रा० हिरन (सं० हरिण) पु० एक जानवर का नाम, मृग, मृगा ।
 प्रा० हिराना क्रि० सं० खोना, रख कर भूलजाना ।
 प्रा० हिलकना क्रि० अ० दर्द से ऐंठना ।
 प्रा० हिलकोर स्त्री० } (सं० हिलहिलकोरा पु० } झोल) लहर, तरङ्ग, मौज, २ हिलाव, लहराव ।
 प्रा० हिलकोरना (हिलकोर) क्रि० अ० लहराना, मौजमारना, हिलाना ।
 प्रा० हिलना (हिल्लोल) क्रि० अ० डोलना, काँपना, २ मिलजुल जाना, वश होजाना ।
 प्रा० हिलमिलजाना बोल० मिला जुला रहना, मिलजुल जाना ।
 प्रा० हिलामिला बोल० मिलजुला ।
 प्रा० हिलोरना (हिल्लोल) क्रि०

अ० लहराना, मौज मारना, हिलकोरना ।
 प्रा० हिलोरा (हिल्लोल) पु० लहर, तरङ्ग, मौज, हिलकोरा ।
 प्रा० हिस्का पु० बराबरी, देखा-देखी, बदाबदी, लाग ।
 प्रा० हींग (सं० हिंगु, हिम्=ठंढा, गम्=जाना) स्त्री० एक सुगन्धित चीज जिसको घीमें गर्म करके दाल आदि तरकारी में बघार देते हैं ।
 प्रा० हींसना क्रि० अ० हिनहिनाना ।
 प्रा० हीक स्त्री० उवकाई, मतलाई ।
 सं० हीन (हा=छोड़ना) गु० बिन, छोड़ा हुआ, रहित, कम, २ नीच, अधम, ३ गरीब, दीन ।
 सं० हीनजाति (हीन=नीच, जाति=जात) गु० नीच जात का, २ स्त्री० गणितमें बड़े नामके अङ्कको छोटेनामके अङ्कमें लाना जैसे रुपये को आनेके रूप में लाना आदि ।
 सं० हीनवर्ण (हीन+वर्ण) गु० नीच जाति का, अधम, नीच ।
 सं० हीर (ह=लेना) पु० सार, गुदा, २ वज्र, ३ हीरा, ४ शिव, ५ साँप, ६ हार, ७ सिंह ।
 प्रा० हीर स्त्री० एक स्त्री का नाम जो राँझा को बहुत प्यारी थी ।
 प्रा० हीरा (सं० हीर) पु० एक रत्न का नाम ।
 प्रा० हीरामन पु० एक तरह का

तोता, एकतरह का सुवा ।

प्रा० हीरावल } (सं० हरि + आ-
हीरावली } वली, अर्थात् जिस
पर हरि हरि ऐसा लिखा हो या
हीर=हीरा, अवली=पांत) स्त्री०
एक तरह का कम्बल जिसको
योगी ओढ़ते हैं ।

प्रा० हीही वि० बो० हँसनेका शब्द,
हाहा, हीही, २ अचम्भे का शब्द,
आहा, वाहवाह ।

सं० हुक्कार (हुम् ऐसा शब्द, कृ=
करना) स्त्री० पुकार, गर्जन,
डराने का शब्द ।

प्रा० हुड़दंगा पु० दंगैत, लड़ाक,
उपद्रवी ।

प्रा० हुंडवी } स्त्री० रुपये के पहुँ-
हुंडी } चाने की चिट्ठी ।

प्रा० हुंडाभाड़ा पु० बीमा, जो-
खिम पहुँचावना, किसी चीज
या सोने चाँदी आदिके जेवर को
एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा
देनेके लिये जो कुछ ठहरे ।

प्रा० हुँडार पु० भेड़िया ।

प्रा० हुँडावन } स्त्री० हुंडी का
हुँडियावन } बट्टा, हुंडी के
लिये जो कुछ दियाजाय ।

प्रा० हुंडीवाल पु० कोठीवाल, वह
महाजन जिसके हुंडी का व्यवहार
होता है ।

सं० हुत (हु=होमना) र्म० होमी हुई,

पु० होमनेकी चीज जैसे घी आदि ।

सं० हुतभुक् पु० अग्निदेवता ।

सं० हुताश } (हुत + अश्=भक्षण
हुताशन } करना) अग्नि, वह्नि ।

प्रा० हुमकना क्रि० अ० उछलना ।

प्रा० हुलसना (सं० उल्लसन उत्,
लस्=खेलना, आनन्द करना)
क्रि० अ० खुश होना, प्रसन्न होना,
आनन्दित होना ।

प्रा० हुलसी स्त्री० सुखी, खुशी,
तुलसीदास की माता का नाम ।

प्रा० हुलास (सं० उल्लास) पु०
आनन्द, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता ।

प्रा० हुलड़ पु० रीला, बखेड़ा,
हलबल, हौड़ा ।

प्रा० हूँ क्रि० वि० हां, भी, सही,
भला, ठीक, अच्छा, २ वर्तमानकाल
में एक वचन उत्तमपुरुष का चिह्न ।

प्रा० हूँहां पु० धूमधाम, हुलड़ ।

प्रा० हूक स्त्री० पीड़ा, टसक ।

प्रा० हूकहूकके रोना बोल० सि-
सकी भरके रोना, टसक टसक
के रोना ।

सं० हूति (ह्वे=बुलाना) स्त्री०
आह्वान, बुलावा ।

प्रा० हून पु० मदरास का सोने
का सिका ।

प्रा० हूलना क्रि० स० पेलदेना,
(जैसे हाथी को) चलना, २ चु-
भाना, खींचना, आँकुस मारना ।

सं० हृत् (हृ=लेना) र्म्यं० लिया हुआ ।
 सं० हृद् { (हृ=लेना) पु० मन,
 हृदय } दिल, २ कुण्ड, हिरदा,
 हिया, छाती ।

सं० हृषीकेश (हृषीक=इन्द्रिय, हृप्=
 प्रसन्न होना + ईश=मालिक)
 पु० विष्णु भगवान्, नारायण ।

सं० हृष्ट (हृप्=प्रसन्न होना) क०
 प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, मग्न ।

सं० हृष्टपुष्ट (हृष्ट=प्रसन्न, पुष्ट=
 मोटा ताजा) क० मोटा ताजा,
 प्रसन्न, संढमुसंड, मुश्कड़ ।

सं० हे अव्य० सम्बोधन, बुलाना,
 आह्वान करना, असूया करना,
 निन्दा करना ।

प्रा० हेठ क्रि० वि० नीचे, तले, हेठे ।

प्रा० हेठा (सं० हेठ=रोकना) गु०
 ढरपोकना, २ ढीला, आसकती,
 आलसी, ३ नीच ।

सं० हेति सूर्यका तेज, शस्त्र, अग्नि
 की ज्वाला ।

सं० हेतु (हि=जाना या बढ़ना)
 पु० कारण, सबब, अर्थ, अभि-
 प्राय, मतलब, फल ।

सं० हेम (हि=बढ़ना) पु० सोना,
 सुवर्ण, कञ्चन ।

सं० हेममाली पु० सूर्य, स्वर्णमाली ।

सं० हेमन्त (हि=जाना या बढ़ना)
 पु० जाड़े की ऋतु, एक ऋतु जो
 अगहन और पूस के महीनों में

रहती है, सर्दी ।

सं० हेय (हा=छोड़ना) र्म्यं०
 त्याज्य, छोड़ने योग्य ।

प्रा० हेरना क्रि० सं० खोजना, हूँदना,
 २ देखना, ३ रगेदना, खदेड़ना ।

सं० हेरम्ब (हे=शिव, रवि=जाना)
 पु० गणेश ।

प्रा० हेलना क्रि० अ० पैरना, तैरना,
 पार होना ।

सं० हेला (हेल्=अवज्ञा करना) स्त्री०
 खेल, क्रीड़ा, २ अवज्ञा, अनादर ।

प्रा० होंकना क्रि० अ० हाँपना,
 हफहफाना, ऊँचा साँस लेना ।

प्रा० होंठ { (सं० ओष्ठ) पु० मुँह के
 होठ } बाहर का हिस्सा, ओष्ठ ।

प्रा० होड़ स्त्री० पण, वचन, दाँव,
 पेच, शर्त ।

प्रा० होड़बदना बोल० शर्त लगाना ।

प्रा० होड़लगाना बोल० शर्त ल-
 गाना, वचन करना, पण करना,
 बाजी लगाना ।

प्रा० होड़हारना बोल० बाजी
 हारना ।

प्रा० होत (होना) स्त्री० बश,
 शक्ति, सामर्थ्य, पहुँच ।

प्रा० होतब (सं० भवितव्य) पु०
 भाग, किस्मत, प्रारब्ध ।

प्रा० होतव्यता (सं० भवितव्यता)
 स्त्री० होनहार, संयोग, भाग,
 प्रारब्ध ।

सं० होता (हु=होमना) क० पु०
होम करनेवाला ।

प्रा० होना (सं० भवन, भू=होना)
क्रि० अ० रहना, विद्यमान रहना ।

प्रा० होआना बोल० जाके चला
आना ।

प्रा० होचुकना }
होलेना } बोल० पूरा होना।

प्रा० होजाना बोल० आपड़ना,
संयोग बनना ।

प्रा० होते होते बोल० धीरे-धीरे,
क्रम-क्रम से ।

प्रा० होन्हार } (होना) गु० होने
होनहार } वाला, संभव, जो
होगा ।

सं० होम (हु=होमना) पु० हवन,
यज्ञ, वेद के मन्त्रों से देवताओं
को बलि देने के लिये धी आदि
को आग में डालना ।

सं० होमकुण्ड (होम + कुण्ड) पु० होम
करने के लिये आग रखने का गढ़ा ।

प्रा० होमना (होम) क्रि० सं०
होम करना, धी आदि होमकी
चीज को आग में डालना ।

सं० होमी (हु=होम) क० पु०
होम करनेवाला ।

प्रा० होला (सं० होलका, हु=खाना)
पु० कच्चे चने या आग में सेंके
हुए कच्चे चने, छोला, बूट ।

प्रा० होला पु० एक तरह की नाव ।

प्रा० होली (सं० होला, अथवा
होलिका, हु=होम करना या खाना)
स्त्री० हिन्दुओं का एक बड़ा तेहवार
जो फागुन के महीने में होता है ।

प्रा० होँस (अ० 'हवस') स्त्री०
चाह, चोप, इच्छा, उमंग, बढ़ने
की चाह ।

प्रा० होँले क्रि० वि० धीरे, धीमे ।

सं० ह्यस् अव्य० गत दिन ।

सं० हृद् (हाद्=शब्द करना) पु०
गहरी भील, सरोवर, दह, कुण्ड ।

सं० ह्रस्व (ह्रस्=छोटा होना) पु०
एक मात्रा का स्वर, लघु, २ गु०
छोटा, नाटा, बावना ।

सं० हास (ह्रस्=छोटा होना या
शब्द करना) पु० घटी, कमी,
क्षय, २ शब्द, आवाज ।

सं० ह्री (ह्री=लजाना) स्त्री० लाज,
लज्जा, शर्म ।

सं० ह्लाद् (हाद्=प्रसन्न होना) पु०
आनन्द, हर्ष, संतोष, सुख ।

सं० ह्लादित क० पु० आनन्दित,
प्रसन्न, हर्षित ।

सं० ह्लादिनी स्त्री० बिजली, वज्र,
ईश्वरी शक्ति, गु० आनन्दयुक्त ।

सं० हलन (हल्=जाना) पु० चलना,
महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, गणेश,
स्त्री० सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी ।

कवियों का जीवनचरित्र ।

कबीरदास—संवत् १६१० में उत्पन्न हुआ एक जुलाहे का लड़का था स्वामी रामानन्द के खड़ाऊं की ठोकर खाकर आह का शब्द किया इसको सुन स्वामीजी ने राम राम कहा इसने उनको अपना गुरु गान लिया इनके कबीर की साखी आदि कई ग्रन्थ हैं ॥

केशवदास—सनाढ्य ब्राह्मण देहली के महाप्रतापी अकबर बादशाह के समय में संवत् १६२४ में उत्पन्न हुए थे उस समय से अबतक के और किसी कविने गुरु आशय की जमकदार काव्य की रचना नहीं की है ओड़छा के राजा इन्द्रजीत के यहाँ ये कविजी रहा करते थे वहाँ उन्हीं राजा के नाम से चार पुस्तकें अर्थात् रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया, कविप्रिया, विज्ञानगीता की रचना की थी जिसमें विज्ञानगीता तो ज्ञान के विषय में और शेष तीनों रस के काव्य हैं जिनका आशय कहना बहुत कठिन है इससे जाना जाता है कि केशवदासजी पिहल, नायिकाभेद, अलंकार, लक्षणा, व्यञ्जना, कोष आदि जो काव्य के अङ्ग हैं इनमें बहुत विज्ञ थे प्राचीनलोग कहते चले आते हैं कि रसिकप्रिया के एक कवित्त का एक चरण “मखतूल के भूल भुलावत केशव भानु मनो शनि अङ्क लिये” ऐसा लिखा है जिसमें असम्भव उपमा होगई है जिससे स्वप्न में श्रीराधा महारानीजी ने कहा कि तुम्हारी प्रेतों की सी बुद्धि है तुम प्रेत होगे तिस पीछे कुछ काल व्यतीत कर ओड़छा में प्रेतयज्ञ करके केशवदासजी ने अपना शरीर त्याग किया और प्रेत हुए ॥

क्षेमकरण—सरवरिया ब्राह्मण गाँव धनौली जिला वारहबंकी के वासी संवत् १८३५ में पैदा हुए थे संस्कृत और भाषा दोनों की कविता में बड़े विज्ञ थे इन्होंने श्रीरामरत्नाकर संस्कृत में रामगीतमाला आदि भाषा के ग्रन्थ बनाये और संवत् १९१८ में स्वर्गवासी हुए ॥

खानखाना नब्बाख अब्दुलरहीम—जिनका छाप अर्थात् तखल्लुस् रहीम और रहमन है संवत् १५८० में उत्पन्न हुए थे ये यावनीभाषा तथा संस्कृत और ब्रजभाषा के बड़े पण्डित थे इनकी सभा रात दिन पण्डित जनों से भरी पुरी रहती थी संस्कृत में इनके बनाये हुए श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा में नवो रस के कवित्त, दोहा बहुत सुन्दर हैं संवत् १६५२ में इनका देहान्त हुआ ॥

गिरिधर कविराय—अन्तर्वेद के रहनेवाले संवत् १७७० में उत्पन्न हुए इन की सामयिक नीति सम्बन्धी कुण्डलिया विख्यात हैं ये जयपुर के जयसिंह सवाई की सभा में थे उक्त महाराजा ने इनको कविराय की पदवी दी थी ये एक कुण्डलियों का ग्रन्थ बना रहे थे पर पूरा न हुआ मृत्युवश हुए पश्चात् उनकी स्त्री ने उसे पूरा किया जिन कुण्डलियों में साई का पद पड़ा है लोग कहते हैं कि उनकी स्त्री की कही हैं ॥

देवकीनन्दन, शिवनाथ, गुरुदत्त शुक्ल—ये तीन भाई कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के समीप मकरन्दनगर के वासी हिन्दी में बहुत अच्छे कवि थे इन्होंने फुटकर काव्य तो बहुत की है परन्तु पक्षीविलासनामक एक पुस्तक कही है जिसमें सब पक्षियों का जुदा २ रंग ढंग स्वभाव आदि का वर्णन किया है जिन दिनों पक्षीविलास की रचना करते थे तब कबूतर पक्षी के वर्णन में “गुरुदत्त तुम्हें यह छाँड़वे टोला” यह पद अन्त में कह गये जब पीछे को सोचा तो जाना कि यह काव्याण पढ़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवश्य करके यहाँ का वास छोटेगा दैवयोग से गोरखपुर की ओर किसी राजा के यहाँ गये वहाँ बहुत मान से ठहराये गये दो ग्राम राजा ने नानकार दिये वहाँ गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के संवत् १८६४ में उत्पन्न हुए हैं (पण्डित श्रीधर त्रिपाठी) इनके मान्यों में हैं ॥

गङ्गकवि—एकनौर गांव जिला इटावा के वासी थे संवत् १५६५ में उत्पन्न हुए ये बड़े कवि थे राजा वीरवर ने इनको छप्पय में एक लाख रुपये इनाम दिये इसी प्रकार से अकबर, जहाँगीर, खानखाना, मानसिंह सवाई आदि सबों ने इनका बहुत मान किया और दान दिया ॥

घाघकवि—कान्यकुब्ज अन्तर्वेदनिवासी संवत् १७५३ में उत्पन्न हुए इनके दोहा, छप्पय, लोकोक्ति, अर्थात् जर्बुलमसल तथा नीतिसम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोल चाल में विख्यात हैं ॥

चन्द्रकवि—प्राचीन वन्दीजन सम्भलनिवासी सन् १०६८ में उत्पन्न हुए ये महाराजा वीसलदेव चौहान रणथम्भौरवाले के प्राचीन कवीश्वर के औलाद में थे संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आकर मन्त्री और कवीश्वर दोनों पदों को प्राप्त हुए, इन्होंने संस्कृत में एक लक्ष श्लोकों का पृथ्वीराज रायसानामक एक ग्रन्थ रचा जिसमें ६६ खण्ड हैं और पुरानी बोली हिन्दुओं की है । इस ग्रन्थ में चन्द्रकवि ने संवत् १११० से संवत् ११४६ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविताई के साथ बहुत छन्दों में

वर्णन किया है छप्पयछन्द तो मानों इसी कवि के भाग में थे जैसा चौपाई छन्द श्रीगुसाई तुलसीदास के हिस्से में पड़ी थी इस ग्रन्थ में क्षत्रियों की वंशावली और अनेकगुद्ध और आबू पहाड़ का माहात्म्य और दिल्ली आदि राजधानियों की शोभा और क्षत्रियों के सुभाव, चालचलन, व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ये कवि केवल कवीश्वरही नहीं थे बरन नीति-शास्त्र और चारन के काम काज में महाशूरवीर थे संवत् ११४६ में साथ पृथ्वीराज के ये भी मारेगये इन्हीं की औलाद में शारंगधर कवि थे जिन्होंने हमीरगयरा और हमीरकाव्य भाषा में बनाया है ॥

चिन्तामणि त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुरवाले संवत् १७२६ में उत्पन्न हुए ये महाराज भाषासाहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं अन्तर्वेद में विदित है कि इनके पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजी के स्थान में जाते थे वे देवीजी बन की भुइयां कहाती हैं टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर हैं एक दिन महाराजराजेश्वरी भगवती प्रसन्न हैं चार मुण्ड दिखाय बोली यही चारो तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुआ कि चिन्तामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशङ्कर या नीलकण्ठ ४ चार पुत्र उत्पन्न हुए इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए शेष तीनों भाई संस्कृत काव्य को पढ़कर ऐसे पण्डित हुए कि उनका नाम प्रलयतक बाक़ी रहेगा इन्हीं के वंश में शीतल और विहारीलाल कवि जिनका लालभोग है संवत् १६०१ तक विद्यमान थे निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिनतक नागपुर में सूर्यवंशी भोमला मकरन्दशाह के यहाँ रहे और उन्हीं के नाम छन्दविचार नाम पिङ्गल १ एक बहुत भारी ग्रन्थ बनाया और काव्य-विवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ये पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए हैं ॥

तानसेन कवि—ग्वालियरनिवासी संवत् १५८८ में उत्पन्न हुए ये कवि मकरन्द पांडे गौड़ ब्राह्मण के पुत्र थे प्रथम श्रीगोसाई स्वामी हरिदासजू गोकुलस्थ के शिष्य हुए काव्यविद्या को यथावत् सीख तत्पश्चात् शेख मोहम्मद ग़ौस गवालियरवासी के पास जाय संगीतविद्या के लिये प्रार्थना करी शाहसाहब तन्त्रविद्या में अद्वितीय थे बरन मुसल्मानों में इन्हीं को इस विद्या का आचार्य सब इतिहासों में लिखा है शाहसाहब ने अपनी जीभ तानसेन की जीभ में लगादी उसी समय से तानसेन गानविद्या में महानिपुण होगये इनकी

प्रशंसा आईनअकबरी में ग्रन्थकर्ता फहीम ने लिखी है कि ऐसा गानेवाला पिछले हजारों में कोई नहीं हुआ तानसेन दौलतखां शेरखां बादशाह के पुत्र पर आशिक है उनके ऊपर बहुत सी कविता करी तेहि पीछे दौलतखां के मरने पर श्रीबान्धवनरेश रामसिंह बघेले के यहाँ गये और वहाँ से अकबर बादशाह ने अपने यहाँ बुला लिया तानसेन और सूरदासजी से बहुत मित्रता थी तानसेनजी ने सूरदास की तारीफ में यह दोहा बनाया ॥

दो० किथौ सूरको शर लग्यो, किथौ सूर की पीर ।
किथौ सूरको पद लग्यो, तन मन धुनत शरीर ॥ १ ॥

तब सूरदासजीने यह दोहा कहा ॥

दो० बिधना यह जिय जानिकै, शेष न दीन्हें कान ।
धरा मेरु सब ढोलते, तानसेन की तान ॥ २ ॥

इनके ग्रन्थ रागमाला आदि महाकाव्य उत्तम कई ग्रन्थ हैं ॥

तुलसीदास—संवत् १६०१ में उत्पन्न हुए सरयूपारीण अर्थात् सरवरिया ब्राह्मण चित्रकूट के इलाके में राजापुरनामक ग्राम के रहनेवाले थे प्रथम तो पाण्डित्य के द्वारा अपना निर्वाह करते थे परन्तु अन्त को अपनी स्त्री के उपदेश से संन्यास धारण करके अयोध्यापुरी, चित्रकूट, काशीजी आदि तीर्थों में रहते रहे श्रीरामोपासक इन्होंने इसी संन्यासधर्म में रामायण की रचना की है सात प्रकार से रामायण कवित्तावली दोहावली और विनय-पत्रिका आदि बहुत अन्य काव्य कह मरणसमय से पहले तुलसीदास को यह ज्ञान होगया था कि मैं अमुक दिन इस असार संसार से पधारंगा तब यह दोहा लिख अपने मित्रों को दिखा दिया ॥ दो० ॥ “संवत् सोरहसै असी, असी वरुण के तीर । श्रावणशुक्ला सप्तमी, तुलसी तजे शरीर ॥” उसके लिखने के अनुसार उनका देहान्त हुआ थे पञ्चाश्वी पण्डित थे ॥

द्विजदेव—महाराजा मानसिंह शाकदीपीय अवधनरेश संवत् १८८० के लगभग उत्पन्न हुए ये महाराज संस्कृत, भाषा, फारसी, अंगरेजी आदि विद्या में महानिपुण थे प्रथम संवत् १९०७ के करीब इनको भाषाकाव्य करने की बहुत रुचि थी इसी कारण शृङ्गारलतिका नाम एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर टीका सहित बनाया इनके यहाँ ठाकुरप्रसाद, जगन्नाथ, बलदेवसिंह आदि महान्

कवि थे अन्त में इन दिनों अब कानून अंगरेजी का शौक हुआ था संवत् १६१० में देहान्त हुआ और इस देश के रईसों के भाग फूट गये ॥

पण्डित पुत्तलिल त्रिपाठी—तिरवानिवासी जिला फर्रुखाबादके जो अष्टादश पुराण और कोष काव्यादि में अतिप्रवीण समस्या और कवित्तादि की रचना में अतिनिपुण हैं इन्होंने सामयिक कवित्त व दोहादि बनाये जो कि हिन्दी समाचारपत्रों में बहुधा देखने में आये हैं ये इस ग्रन्थकर्ता के ज्येष्ठभ्राता पण्डित बदरीनाथजी के पुत्र हैं ॥

पद्माकर भट्ट—बांदावाले मोहनभट्ट के पुत्र संवत् १८३८ में उत्पन्न हुए ये कवि प्रथम आपासाहब अर्थात् रघुनाथ राव पेशवा के यहाँ थे जब पद्माकर जी ने यह कवित्त (“गिरत गरेते निज गोदते उतारे ना”) बनाया तो पेशवाने एक लक्ष मुद्रा पद्माकर को इनाम दिया त्पहि पीछे पद्माकरजी जयपुर में जाय सवाई जगत्सिंह के नाम जगदिनोद नाम ग्रन्थ बनाय बहुत रुपया हाथी, घोड़े, रथ, पालकी लाय गङ्गासेवनमें शेष काल व्यतीत किया गङ्गालहरी नाम ग्रन्थ इनका है ॥

ब्रह्मकवि राजा वीरवर का भोग है—ये महाराज कान्यकुब्ज द्विवेदी ब्राह्मण कानपुर से दक्षिण ओर यमुनाजी के समीप बारा अकबरपुर के रहने वाले थे अकबर शाह बादशाह के बड़े नामी मुसाहबों में शिरोमणि थे शास्त्र-विद्या में पण्डित, दान में कर्ण, शील का समुद्र, धर्म-कर्म में जगद्गिन, बुद्धि में बृहस्पति सम, सत्य पूज्य तो राजा वीरवर जी को विप्रवंशावतंसशिरोमणि कहना चाहिये तो थोड़ा है क्योंकि उस समय से अब तक कोई और दूसरा ब्राह्मण ऐसे दर्जे को नहीं पहुँचा और न नाम चलाया जो आजतक कहावत चली जाती है कि उस मनुष्य वा उस लड़के का अथवा उस राजा की बुद्धि को क्या कहना है वे तो मानों दूसरे वीरवर हैं उन्होंने जो काव्य भाषा में की है वह बहुत मनोरञ्जन है ॥

भूषण त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुर संवत् १७१८ में उत्पन्न हुए, रौद्र, वीर, भयानक ये तीनों रस जैसे इनकी काव्य में हैं ऐसे और कवि लोगों की कविता में नहीं पाये जाते ये महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेश के यहाँ छह महीने तक रहे तेहि पीछे महाराज शिवराज सुलझी सितारा गढ़वाले के यहाँ जाय बड़ा मान पाया और जब यह कवित्त भूषणजी ने पढ़ा—(“इन्द्र जिमि जम्भपर”) तब शिवराज ने पाँच हाथी और पचीस

हजार रुपया इनाम दिया इसी प्रकार से भूषण ने बहुत बार बहुत २ रुपया हाथी, घोड़ा, पालकी आदि दान में पाये ऐसे २ शिवराज के कवित्त बनाये हैं जिनकी बराबर किसी कवि ने वीरयश नहीं बनाय पाया निदान जब भूषण अपने घर को चले तो परना होकर राजा छत्रशाल से मिले छत्रशाल ने विचारा अब तो शिवराज ने इनको ऐसा कुछ धन धान्य दिया है कि हम उनका दशवां हिस्सा भी नहीं देसके ऐसा शोच विचार कर चलते समय भूषण की पालकी का बाँस अपने कन्धे पर धरलिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूषणजी ने बहुत प्रसन्न है यह कवित्त पढ़ा ॥

“साहू को सराहों की सराहों छत्रशाल को” ॥ और दूसरा यह कवित्त बनाया ॥ “तेरी वरछी ने वरछीने है खलनके” ॥ और दो दोहा बनाय छत्रशाल को दे घर में आये ॥

दो० एक हाड़ा बूंदी धनी, मरद महेवावाल ।

शालत औरंगजेब के, ये दोनों छत्रशाल ॥ १ ॥

ये देखो छत्ता पता, ये देखो छत्रशाल ।

ये दिल्ली की ढाल ये, दिल्ली टाहनवाल ॥ २ ॥

भूषणजी थोड़े दिन घरमें रह बहुत देशान्तरों में घूम २ रजवाड़ों में शिवराज का यश प्रकट करते रहे जब कुमाऊं में जाय राजा कुमाऊं के यश में यह कवित्त पढ़ा (“उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलद जल”) तब राजा ने शोचा कि ये कुछ दान लेने आये हैं और जो हमने सुना था कि शिवराज ने लाखों रुपया इनको दिया सो सब झूठ है ऐसा विचार हाथी, घोड़े, मुद्रा बहुत कुछ भूषण के आगे किया भूषणजी बोले इसकी अब भूख नहीं इसलिये यहाँ आये थे कि देखें शिवराज का यश यहाँ तक फैला है या नहीं—इनके बनाये हुए ग्रन्थ शिवराजभूषण १ भूषणहजारा २ भूषणउल्लास ३ भूषणउल्लास ४ ये चार ग्रन्थ सुने जाते हैं कालिदासजी ने अपने ग्रन्थहजारा की आदि में ७० कवित्त नौरस के इन्हीं महाराज के बनाये हुए लिखे हैं ॥

मदनगोपाल—ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण पतूहाबाद के निवासी थे इन्होंने संवत् १८७६ में बलिरामपुर के महाराज दिग्विजयसिंहजीके पिता अर्जुन सिंह के नाम से अर्जुनविज्ञासनामक ग्रन्थ बनाया ये अच्छे कवि थे उस ग्रन्थ में इन्होंने सब पदार्थों का वर्णन संक्षेप से किया है और ग्रन्थ बनाने के पश्चात् थोड़ेही दिनों में इस असार संसार को छोड़ दिया ॥

मनिराम—ये महाराज भाषाकाव्य के आचार्यों में गिने जाते हैं हिन्दुस्तान में बहुधा बड़े राजों महाराजों के यहाँ थोड़े थोड़े दिन रहे और राजा उदान्तचन्द्र कुमाऊं नरेश और भाऊसिंह हाड़ा छत्रशाल राजा कोटाबंदी और शम्भुनाथ मुलझी आदि के यहाँ बहुत दिनों तक रहे ललितानाम अलंकार ग्रन्थ राव भाऊसिंह कोटावाले के नाम से बनाया और छन्दसार पिङ्गल फ़तेशाह बुंदेला श्रीनगर के नाम से रचा और रसरजग्रन्थ नायिकाभेद का बहुत सुन्दर बनाया है ॥

यशवन्तसिंह—बघेले क्षत्रिय तिरवानामक ग्राम कान्यकुब्जनगर से वह कोस दक्षिण के राजा थे संस्कृत में पण्डित, काव्यरचना में बड़े कवि, समर में शूर, योग-तप में योगी, पण्डित कवि गुणी लोगों का आदर सत्कार बहुत करते थे संस्कृत के १८ हों पुराण उन्होंने अपने पुस्तकालय में रखे थे वे अब तक उनके पौत्र राजा उदितनारायणजी के यहाँ विद्यमान हैं भाषाकाव्य की रचना करने में बड़े कुशल थे शृंगारशिरोमणि-शालहोत्र दो पुस्तकों की रचना की जिनमें अपना सम्भोग यशवन्त कहा है इन महाराज के कोई पुत्र न था इस कारण अपने भाई का पुत्र गोद लिया था और तालाब और श्रीअन्नपूर्णाजी का मन्दिर बनवाने के मनोरथ से तीन लक्ष रुपये खर्च करनेका संकल्प करके काशीजी से बहुत उत्तम पाषाण का मन्दिर और तालाब का चित्र मगवाकर ताल और मन्दिर बनवाने का प्रारम्भ किया परन्तु तालाब तो महाराजजी के मनमाना बनचुका और मन्दिर पनिर्थासोत से जुड़कर पृथ्वीतल तक आने पाया था कि एक दिन रात्रिसमय महाराज को कुछ ज्वर आया दो चार दिन ज्यों त्यों कर बीते अन्त को अवश होकर विक्रम के संवत् १८७१ में स्वर्ग-वासी हुए उनके पश्चात् छोटे भाई पीतमसिंहजी जो उनके स्थानाधिप हुए उन्होंने उस मन्दिर को पूर्ण किया जिन्होंने देखा है वह कहते हैं कि गङ्गा यमुना के मध्य में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

लालकवि लल्लू लालजी—गुजराती आगरावाले संवत् १८६२ में उत्पन्न हुए महाराज वार्तिकभाषा की बोलचाल में प्रथम आचार्य हैं इनका बनाया हुआ प्रेमसागर ग्रन्थ इस बात का साक्षी है और दोहा चौपाई आदि सीधे २ छन्दों के बनाने में भी निपुण थे सभाविलास २ माधवविलास ३ वार्तिक राजनीति ४ आदि इनके ग्रन्थ बहुत सुन्दर हैं ॥

बन्दीदीन दीक्षित—मसवासी ग्रामनिवासी जिला उन्नाम जो कि संवत् १६२० में उत्पन्न हुए थे जिन्होंने महाभारत भारतखण्ड भाषा आल्हा छन्द में

बनाया उक्त पण्डित भाषा काव्यादि में बड़े प्रवीण थे सूरसागर रामायणादि भाषा के ग्रन्थों में बड़े विद्वान् थे महाभारत आल्हखण्ड के अवलोकन करने से उनकी विद्वत्ता प्रकट होती है कथनकी कोई आवश्यकता नहीं है ॥

बिहारीलाल चौबे व्रजवासी—सं० १६०२ में उत्पन्न थे कवि जयसिंह कछवाहे महाराजा अजमेर के यहाँ थे जयपुर की तारीफ देखनेसे प्रकट है कि ये महाराजा मानसिंह से जो संवत् १६०३ में विद्यमान थे संवत् १८७६ तक तीन जयसिंह होगये हैं पर हमको निश्चय है कि ये कवि महाराजा मानसिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे जो महागुणग्राहक थे और दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह किसी एक थोरी अवस्थावाली रानी पर मोहित हैं रात दिन राज-मन्दिर में रहने लगे राज्य के सम्पूर्ण काम काज बन्द होगये तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाय राजा के पासतक किसी उपाय से पहुँचाया ॥ दोहा ॥ “नहिं पराग नहिं मधुररस, नहिं विकाश यहि काल । अली कलीही सौं बिधियो, आगे कौन हवाल ? ॥” इस दोहापर राजा अत्यन्त प्रसन्न हैं १०० मोहर इनाम दें कहा इसीप्रकार के और दोहा बनावो बिहारीलाल ने ७०० दोहा बनाये और ७०० अशरफी इनाम में पाई यह सतसईग्रन्थ अद्वितीय है, बहुत कविलोगों ने इसके ढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा पर किसी कवि को सुखीसुखी प्राप्त नहीं हुई यह ग्रन्थ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आजतक तृप्ति नहीं है लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो वास्तव में इसी ग्रन्थ के अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरेवाले का तिलक विचित्र है और सब सतसैयोंमें विक्रमसतसई और चन्दनसतसई इसके लगभग हैं ॥

सुखदेवमिश्र—ये कवि भाषासाहित्य के आचार्यों में गिनेजाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजा राजसिंह गौरके यहाँ जाय कविराज की पदवी पाय वृत्तविचार नाम पिङ्गल सब पिङ्गलों में उत्तम ग्रन्थ को रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मतसिंह बंधलगोती अमेठी के यहाँ आय लन्दविचार नाम पिङ्गल बनाया फिर नवाब फ़ाजिलअलीखां मन्त्री औरंगजेब बादशाह के नाम भाषासाहित्य में फ़ाजिलअलीप्रकाश नाम ग्रन्थ महाअद्भुत रचा इन तीनों ग्रन्थों के सिवाय हमने कहीं लिखा देखा है कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथ-राय २ ये दो ग्रन्थ और भी इन्हीं महाराज के किये हुए हैं ॥

सुन्दरकवि—ब्राह्मण ग्वालियरनिवासी संवत् १६८८ में उत्पन्न हुए ये महाराज शाहजहाँ बादशाह के कवि थे पहिले कविराय का पद पाय पीछे महाकविराय की पदवी पाई इनका बनाया हुआ सुन्दरभृङ्गार नाम ग्रन्थ भाषासाहित्य में बहुत सुन्दर है इन्हीं कवि के पद में यह अगन पड़ा था (“सुन्दर कोप नहीं सपने”) यह कवित्त इस ग्रन्थ में है ॥

सबलसिंह—चौहान क्षत्रिय चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इसलिये बहुत से सज्जन तान्त्रिक-मान्त्रिक पण्डित बुलाकर पुत्रोत्पन्न होनेके हेतु देवपूजनका आरम्भ कराया बहुते दिनोंतक पूजन होतारहा परन्तु पुत्र होने की कुछ आश न हुई जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराश हुए तब सब पण्डितों ने एकमत होकर कहा कि आपका नाम चलता यदि आपके पुत्र होता सो उस नामके टूट जानेका संदेह था तिससे उत्तम यह है कि हम सब लोग मिलकर आपके नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हजारों वर्ष आपका नाम इस भूमण्डल पर बना रहै इस बात को राजाने स्वीकार किया और आज्ञा दी कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषाकाव्य में कहो तब सब पण्डितों ने विक्रम के संवत् १८२७ में महाभारत को भाषा छन्दप्रबन्ध में कहनेका आरम्भ किया और कुछ काल में सम्पूर्ण भारत को भाषाकाव्य में सबलसिंह जी के नाम से कहा है ॥

सूरदास ब्राह्मण—व्रजवासी बाबा रामदासके पुत्र वल्लभाचार्य के शिष्य संवत् १६४० में उत्पन्न हुए इन महाराज के जीवनचरित्रों से सब छोटे बड़े आगाह हैं भक्तमाल आदि में इनकी कथा विस्तारपूर्वक है सूरसागर इनका बनाया ग्रन्थ विख्यातहै हमने इनके पद साठहजार तक देखे हैं समस्त ग्रन्थ कहीं नहीं देखा इनकी गिनती अष्टछाप अर्थात् व्रजके आठ महाकवीश्वरों में है ॥

सहजराम—ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाब के रहनेवाले थे और यहाँ सुल्ताना-पुर के जिले में जो बंधुवा ग्राम है वहाँ के रहनेहारे एक नानकसाही ब्राह्मण के शिष्य हुए ये भी बड़े महात्मा हुए हैं और सहजराम रामायण प्रह्लादचरित ये दो ग्रन्थ इन्होंने निर्मित किये और संवत् १२०५ में इस संसार से निराश हो स्वर्गवास किया ॥

नन्ददास ब्राह्मण—रामपुरनिवासी विठ्ठलनाथजीके शिष्य संवत् १५८५ में उत्पन्न हुए इनकी गणना अष्टछाप में है अर्थात् व्रजभूमि के आठ महानन्द कवि सूर १ कृष्णदास २ परमानन्द ३ कुम्भनदास ४ चतुर्थ ५ जी- =

नन्ददास ७ गोविन्ददास ८ में ये भी एक हैं इनकी बाबत यह मसल है (“और सब गढ़िया नन्ददास जढ़िया”) इनके बनाये हुए ग्रन्थों के नाम ये हैं नाममाला १ अनेकार्य २ पञ्चाध्यायी ३ रुक्मिणीमङ्गल ४ दशमस्कन्ध ५ दानलीला ६ मानलीला ७ और इन ग्रन्थों के सिवाय हजारों पद इनके हैं इन आठों महाकवीश्वरों के रचे अनेक ग्रन्थ आजतक ब्रज में मिलते हैं ॥

हुलासराम—ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण जिला बारहबंकी तहसील फतेहपुर ग्राम रामनगर के रहनेवाले थे इनके पिता का नाम प्रयागदत्त था इन्होंने बुद्धिमकाश, वेतालपञ्चविंशतिका, लङ्काकाण्ड आदि ग्रन्थ निर्मित किये १८४५ संवत् में उत्पन्न हुए और १९१२ में मृत्युवश हुए ॥

